

आसान हिन्दी तर्जुमा

हाफ़िज़ नज़र अहमद



Hindi transliteration is done by
a team of
www.understandquran.com

UNDERSTAND QUR'AN ACADEMY

Tel: 0091-6456-4829 / 0091-9908787858

Hyderabad, India

आसान तर्जुमा कुरआने मजीद

तस्वीद व तरतीब : हाफिज़ नज़र अहमद
प्रिन्सिपल तालीमुल कुरआन ख़त व किताबत स्कूल, लाहौर-5

- नज़र सानी
- ★ मौलाना अज़ीज़ जुबैदी
मुदीर मुजल्ला “अहले हदीस”, लाहौर
 - ★ मौलाना प्रोफेसर मुज़म्मिल अहसन शेख, एम॰ ए॰
(अरबी - इस्लामियात - तारीख़)
 - ★ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद हुसैन नईमी
मुहतमिम जामिआ नईमिया, लाहौर
 - ★ मौलाना मुहम्मद सरफ़राज़ नईमी अल-अज़हरी, एम॰ ए॰
फ़ाज़िल दरस-ए-निज़ामी, (अरबी - इस्लामियात)
 - ★ मौलाना अब्दुर्रऊफ़ मलिक
ख़तीब जामअ आस्ट्रेलिया, लाहौर
 - ★ मौलाना सईदुर्रहमान अलवी
ख़तीब जामअ मस्जिदुश शिफ़ा, शाह जमाल, लाहौर

अल्हम्दुलिल्लाह

“आसान तर्जुमा कुरआन मजीद” कई एतिवार से मुन्फ़रिद है:

- हर लफ़्ज़ का जुदा जुदा तर्जुमा और पूरी आयत का आसान तर्जुमा एक्साँ है।
- यह तर्जुमा तीनों मसलक के उलमा-ए-किराम (अहले सुन्नत व अल जमाअत, देव बन्दी, बरेलवी और अहले हदीस) का नज़र सानी शुदा और उन का मुत्ताफ़िकुन अलैह है।

इंशा अल्लाह

अरबी से ना वाकिफ़ भी चन्द पारे पढ़ कर इस की मदद से पूरे कलामुल्लाह का तर्जुमा बखूबी समझ सकेंगे।

ऐ अललाह करीम! इस ख़िदमत को वा बरकत और वाइस-ए-ख़ैर बनादे। खुसुसन तलबह के लिए कुरआन फ़हमी और अमल विल कुरआन का ज़रिया और बन्दा के लिए फ़लाह-ए-दारैन का वसीला बनादे (आमीन).

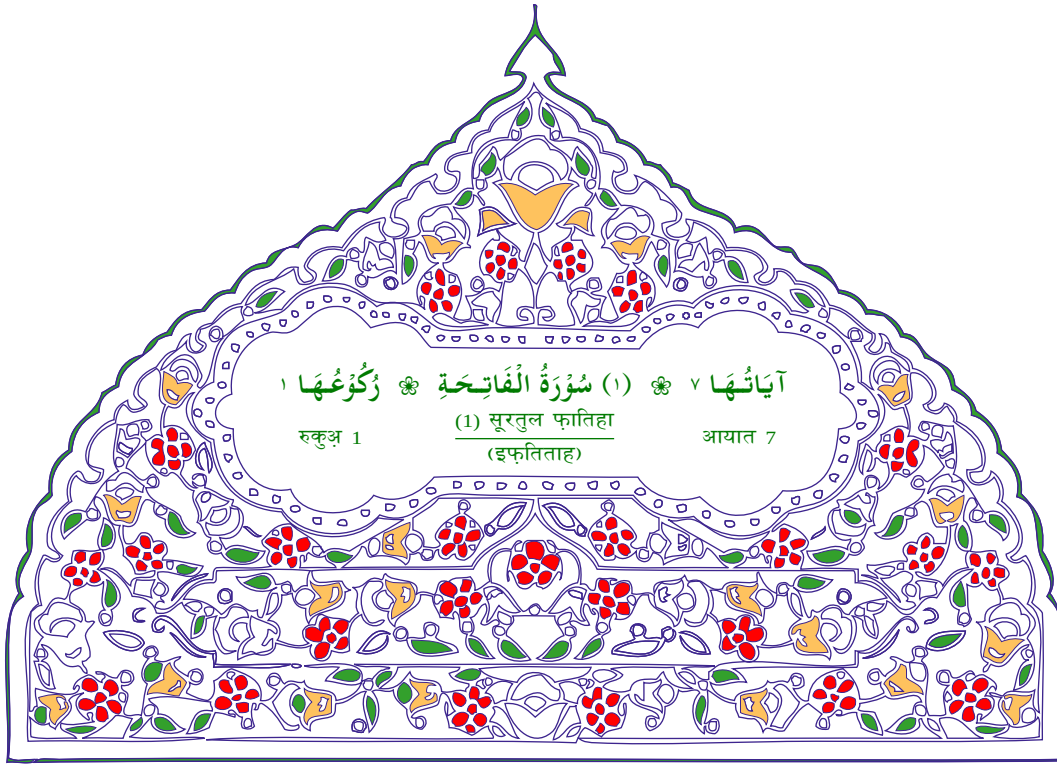
हाफिज़ नज़र अहमद

10 रबी उस्सानी 1408 हिज़्री

3 दिसम्बर 1987

बैतुल्लाह अलहराम, मक्का मुकर्रमह





अल्लाह के नाम से
जो बहुत मेहरबान,
रहम करने वाला है। (1)

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए
हैं जो तमाम जहानों का रब
है, (2)

बहुत मेहरबान, रहम करने
वाला। (3)

बदले के दिन का
मालिक। (4)

हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत
करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से
मदद चाहते हैं। (5)

हमें सीधे रास्ते की हिदायत
दे, (6)

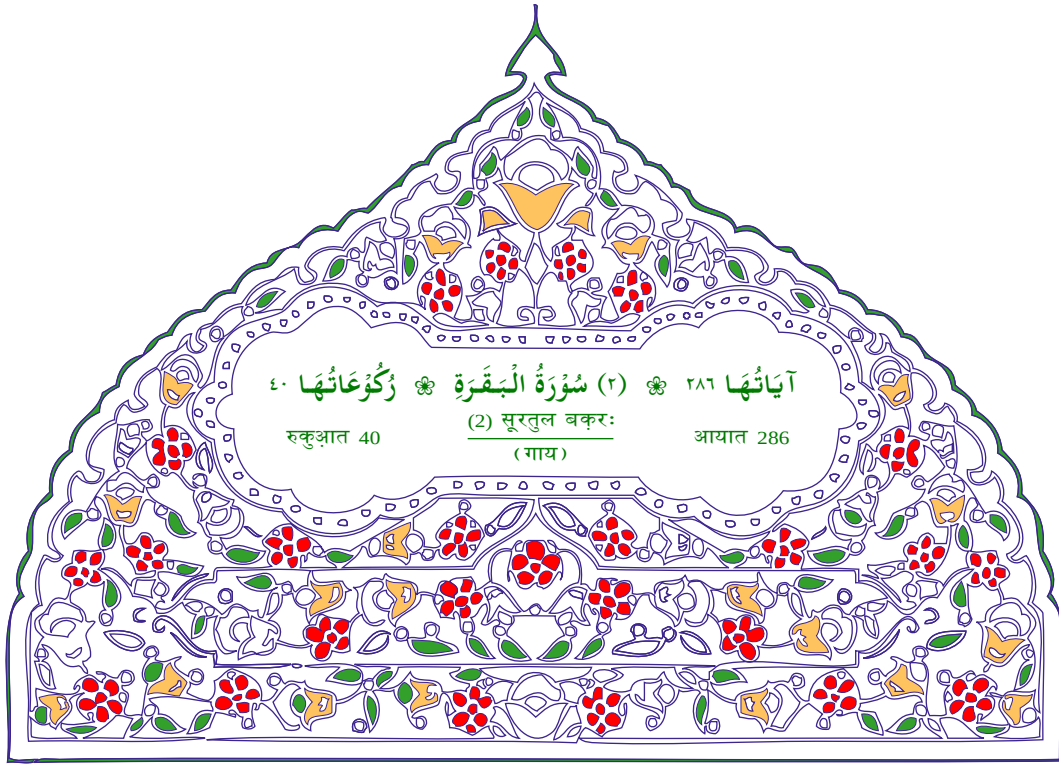
उन लोगों का रास्ता जिन पर
तू ने इन्ज़ाम किया न उन का
जिन पर ग़ज़ब किया गया,
और न उन का जो गुमराह
हुए। (7)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ١

1	रहम करने वाला	बहुत मेहरबान	अल्लाह	नाम से
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ٢ الرَّحْمَنِ				
बहुत मेहरबान	2	तमाम जहान	रब	अल्लाह के लिए
الرَّحِيمِ ٣ مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ٤ إِيَّاكَ نَعْبُدُ				
इबादत करते हैं हम	सिर्फ़ तेरी ही	4	बदला	दिन
रहम करने वाला	3	मालिक	दैन	बदला
وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ٥ اهْدِنَا الصِّرَاطَ				
रास्ता	हमें हिदायत दे	5	हम मदद चाहते हैं	और सिर्फ़ तुझ ही से
الْمُسْتَقِيمَ ٦ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ٧				
उन पर	तू ने इन्ज़ाम किया	उन लोगों का	रास्ता	6
7	जो गुमराह हुए	और न	उन पर	ग़ज़ब किया गया
غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ٧				
न	ग़ज़ब किया गया	उन पर	और न	जो गुमराह हुए

المسز ١

١٢



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

रहम करने वाला बहुत मेहरबान अल्लाह नाम से

अल्लाह के नाम से
जो बहुत मेहरबान,
रहम करने वाला है।

الْم ﴿١﴾ ذَلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ ۚ فِيهِ ۚ هُدًى

हिदायत इस में नहीं शक किताब यह 1 अलिफ-लाम-मीम

अलिफ-लाम-मीम। (1)

لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٢﴾ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ

ग़ैब पर ईमान लाते हैं जो लोग 2 परहेज़गारों के लिए

यह किताब है इस में कोई
शक नहीं, परहेज़गारों के
लिए हिदायत, (2)

وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٣﴾

3 वह खर्च करते हैं हम ने उन्हें दिया और उस से जो नमाज़ और काइम करते हैं

जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं,
और काइम करते हैं नमाज़,
और जो कुछ हम ने उन्हें
दिया उस में से खर्च करते
हैं, (3)

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا

और जो आप की तरफ़ नाज़िल किया गया उस पर जो ईमान रखते हैं और जो लोग

और जो लोग उस पर ईमान
रखते हैं जो आप (स) पर
नाज़िल किया गया और जो
आप (स) से पहले नाज़िल
किया गया और वह आखिरत
पर यकीन रखते हैं। (4)

أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٤﴾

4 यकीन रखते हैं वह और आखिरत पर आप से पहले से नाज़िल किया गया

वही लोग अपने रब की तरफ से हिदायत पर हैं, और वही लोग कामयाब हैं। (5)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया, उन पर बराबर है आप (स) उन्हें डराएं या न डराएं वह ईमान नहीं लाएंगे। (6)

अल्लाह ने उन के दिलों पर और उन के कानों पर मुहर लगा दी। और उन की आँखों पर पर्दा है। और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। (7)

और कुछ लोग हैं जो कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर और वह ईमान वाले नहीं। (8)

वह धोका देते हैं अल्लाह को और ईमान वालों को, हालांकि वह नहीं धोका देते मगर अपने आप को, और वह नहीं समझते। (9)

उन के दिलों में बीमारी है, सो अल्लाह ने उन की बीमारी बढ़ा दी, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। क्योंकि वह झूट बोलते हैं। (10)

और जब उन्हें कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद न फैलाओ तो कहते हैं कि हम सिर्फ़ इस्लाह करने वाले हैं। (11)

सुन रखो वेशक वही लोग फ़साद करने वाले हैं और लेकिन नहीं समझते। (12)

और जब उन्हें कहा जाता है तुम ईमान लाओ जैसे लोग ईमान लाए तो वह कहते हैं क्या हम ईमान लाएं जैसे बेवकूफ़ ईमान लाए ? सुन रखो खुद वही बेवकूफ़ हैं लेकिन वह जानते नहीं (13)

और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो महज़ मज़ाक़ करते हैं। (14)

अल्लाह उन से मज़ाक़ करता है और उन को उन की सरकशी में बढ़ाता है, वह अन्धे हो रहे हैं। (15)

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾								
वही लोग	पर	हिदायत	से	अपना रब	और वही लोग	वह	कामयाब	5
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ								
वेशक	जिन लोगों ने	कुफ़ किया	बराबर	उन पर	खाह आप उन्हें डराएं	या	न	डराएं उन्हें
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ وَعَلَىٰ								
नहीं	ईमान लाएंगे	6	मुहर लगा दी अल्लाह ने	पर	उन के दिल	और पर	उन के कान	और पर
أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ								
उन की आँखें	पर्दा	और उन के लिए	अज़ाब	बड़ा	7	और से	लोग	
مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾								
जो	कहते हैं	हम ईमान लाए	अल्लाह पर	और दिन पर	आखिरत	और नहीं	वह	ईमान वाले
يُخَدِّعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ								
वह धोका देते हैं	अल्लाह	और जो लोग	ईमान लाए	और नहीं	धोका देते	मगर	अपने आप	
وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا								
और नहीं	समझते हैं	9	में	उन के दिल (जमा)	बीमारी	सो अल्लाह ने बढ़ा दी उन की	बीमारी	
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠﴾ وَإِذَا قِيلَ								
और उन के लिए	अज़ाब	दर्दनाक	क्योंकि	वह झूट बोलते हैं	10	और जब	कहा जाता है	
لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾								
उन्हें	न फ़साद फैलाओ	ज़मीन में	वह कहते हैं	सिर्फ़	हम	इस्लाह करने वाले	11	
إِلَّا أَنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِنْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢﴾ وَإِذَا								
सुन रखो	वेशक वह	वही	फ़साद करने वाले	और लेकिन	नहीं समझते	12	और जब	
قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ								
कहा जाता है	उन्हें	तुम ईमान लाओ	जैसे	ईमान लाए	लोग	वह कहते हैं	क्या हम ईमान लाएं	जैसे
السُّفَهَاءُ ۖ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِنْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾								
बेवकूफ़	सुन रखो	खुद वह	वही	बेवकूफ़	और लेकिन	नहीं	वह जानते	13
وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ								
और जब मिलते हैं	जो लोग	ईमान लाए	कहते हैं	हम ईमान लाए	और जब	अकेले होते हैं	पास	
شَيْطَانِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزَءُونَ ﴿١٤﴾								
अपने शैतान	कहते हैं	हम	तुम्हारे साथ	महज़	हम	मज़ाक़ करते हैं	14	
اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٥﴾								
अल्लाह	मज़ाक़ करता है	उन से	और बढ़ाता है उन को	उन की सरकशी में	अन्धे हो रहे हैं	15		

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبَحَتِ تِجَارَتُهُمْ							
उन की तिजारात	तो न फाइदा दिया	हिदायत के बदले	गुमराही	मोल ली	जिन्होंने ने	यही लोग	
وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْفَدَ نَارًا ^١							
आग	भड़काई	वह जिस ने	जैसे मिसाल	उन की मिसाल	16	वह हिदायत पाने वाले	और न थे
فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي							
में	और उन्हें छोड़ दिया	उन की रौशनी	छीन ली अल्लाह ने	उस का इर्द गिर्द	रौशन कर दिया	फिर जब	
ظُلُمٍ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾ صُمُّ بَكْمٌ عُمَىٰ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾							
18	नहीं लौटेंगे	सो वह	अन्धे	गूँगे	वहरे	17	वह नहीं देखते
أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمٌ وَّرَعْدٌ وَبَرْقٌ يَجْعَلُونَ							
वह ठोंस लेते हैं	और बिजली की चमक	और गरज	अन्धेरे	उस में	आस्मान	से	जैसे बारिश
أَصَابِعُهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ وَاللَّهُ مُحِيطٌ							
घेरे हुए	और अल्लाह	मौत	डर	कड़क (बिजली)	सबव	अपने कान	में अपनी उनगलियाँ
بِالْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَحْطِفُ أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ							
उन पर	वह चमकी	जब भी	उन की निगाहें	उचक ले	बिजली	करीब है	19
مَشَوْا فِيهِ ^٢ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ							
छीन लेता	चाहता अल्लाह	और अगर	वह खड़े हुए	उन पर	अन्धेरा हुआ	और जब	उस में चल पड़े
بِسْمِعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾							
20	कादिर	हर चीज़	पर	बेशक अल्लाह	और उन की आँखें	उन की शुनवाई	
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ							
तुम से पहले	से	और वह लोग जो	तुम्हें पैदा किया	जिस ने	अपना रब	तुम इबादत करो	लोगो ऐ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ^٣							
छत	और आस्मान	फर्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	जिस ने	21
وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ^٤							
तुम्हारे लिए	रिज़्क	फल (जमा)	से	उस के ज़रीए	फिर निकाला	पानी	आस्मान से और उतारा
فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾ وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ							
शक	में	तुम हो	और अगर	22	जानते हो	और तुम	कोई शरीक
مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ ^٥ وَادْعُوا							
और बुला लो	इस जैसी	से	एक सूरत	तो ले आओ	अपना बन्दा	पर	हम ने उतारा से जो
شُهَدَاءَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٣﴾							
23	सच्चे	तुम हो	अगर	अल्लाह	सिवा	से	अपने मददगार

यही लोग हैं जिन्होंने ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, तो उन की तिजारात ने कोई फाइदा न दिया, और न वह हिदायत पाने वाले थे। (16)

उन की मिसाल उस शख्स जैसी है जिस ने आग भड़काई, फिर आग ने उस का इर्द गिर्द रौशन कर दिया तो अल्लाह ने छीन ली उन की रौशनी और उन्हें अन्धेरों में छोड़ दिया वह नहीं देखते। (17)

वह वहरे गूँगे और अन्धे हैं सो वह नहीं लौटेंगे। (18)

या जैसे आस्मान से बारिश हो, उस में अन्धेरे हों और गरज और बिजली की चमक, वह अपने कानों में अपनी उनगलियाँ ठोंस लेते हैं कड़क के सबव मौत के डर से, और अल्लाह काफ़िरो को घेरे हुए है। (19)

करीब है कि बिजली उन की निगाहें उचक ले, जब भी वह उन पर चमकी वह उस में चल पड़े और जब उन पर अन्धेरा हुआ वह खड़े हो गए और अगर अल्लाह चाहता तो छीन लेता उन की शुनवाई और उन की आँखें, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (20)

ऐ लोगो! तुम अपने रब की इबादत करो जिस ने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को जो तुम से पहले हुए ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (21)

जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फर्श बनाया और आस्मान को छत, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए फल निकाले तुम्हारे लिए रिज़्क, सो अल्लाह के लिए कोई शरीक न ठहराओ और तुम जानते हो। (22)

और अगर तुम्हें इस (कलाम) में शक हो जो हम ने अपने बन्दे पर उतारा तो इस जैसी एक सूरत ले आओ, और बुला लो अपने मददगार अल्लाह के सिवा अगर तुम सच्चे हो। (23)

फिर अगर तुम न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो उस आग से डरो जिस का ईंधन इन्सान और पत्थर है, काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (24)

और उन लोगों को खुशख़बरी दो जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए उन के लिए बागात है जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जब भी उन्हें उस से कोई फल खाने को दिया जाएगा वह कहेंगे यह वही है जो हमें इस से पहले खाने को दिया गया हालांकि उन्हें उस से मिलता जुलता दिया गया, और उन के लिए उस में वीवियां हैं पाकीज़ा, और वह उस में हमेशा रहेंगे। (25)

वेशक अल्लाह नहीं शर्माता कि कोई मिसाल बयान करे जो मच्छर जैसी हो खाह उस के ऊपर (बढ़ कर) सो जो लोग ईमान लाए वह तो जानते हैं कि वह उन के रब की तरफ़ से हक़ है, और जिन लोगों ने कुफ़ किया वह कहते हैं अल्लाह ने इस मिसाल से क्या इरादा किया, वह इस से बहुत लोगों को गुमराह करता है और इस से बहुत लोगों को हिदायत देता है, और इस से नाफ़रमानों के सिवा किसी को गुमराह नहीं करता, (26)

जो लोग अल्लाह का अहद तोड़ते हैं उस से पुख़्ता इक़्रार करने के बाद, और उस को काटते हैं जिस का अल्लाह ने हुक़म दिया था कि वह उसे जोड़े रखें और वह ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, वही लोग नुक्सान उठाने वाले हैं। (27)

तुम किस तरह अल्लाह का कुफ़ करते हो, और तुम बेजान थे सो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़शी, फिर वह तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें ज़िलाएगा फिर उस की तरफ़ लौटाए जाओगे। (28)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए पैदा किया जो ज़मीन में है सब का सब, फिर उस ने आस्मान की तरफ़ क़सद किया, फिर उन को ठीक बना दिया सात आस्मान, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। (29)

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا						
उस का ईंधन	जिस का	आग	तो डरो	और हरगिज़ न कर सकोगे	तुम न कर सको	फिर अगर
النَّاسِ وَالْحِجَارَةِ ۖ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿٢٤﴾ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا						
ईमान लाए	जो लोग	और खुशख़बरी दो	24	काफ़िरों के लिए	तैयार की गई	इन्सान
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّ لَهُمْ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا						
जब भी	नहरें	उन के नीचे	से	बहती है	बागात	उन के लिए कि नेक और उन्होंने ने अमल किए
رَزَقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا قَالُوا هَذَا الَّذِي رَزَقْنَا مِنْ قَبْلُ						
पहले	से	हमें खाने को दिया गया	वह जो कि	यह	वह कहेंगे	रिज़क कोई फल उस से खाने को दिया जाएगा
وَأَتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا						
उस में	और वह	पाकीज़ा	वीवियां	उस में	और उन के लिए	मिलता जुलता उस से हालांकि उन्हें दिया गया
خَالِدُونَ ﴿٢٥﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعْضُهُ فَمَا						
खाह जो	मच्छर	जो	कोई मिसाल	वह बयान करे	कि	नहीं शर्माता वेशक अल्लाह 25 हमेशा रहेंगे
فَوْقَهَا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ						
उस से ऊपर	सो जो लोग	ईमान लाए	वह जानते हैं	कि वह	हक़	से उन का रब
وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا يُضِلُّ						
वह गुमराह करता है	मिसाल	इस से	इरादा किया अल्लाह ने	क्या	वह कहते हैं	कुफ़ किया और जिन लोगों ने
بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾						
इस से	बहुत लोग	और हिदायत देता है	इस से	बहुत लोग	और नहीं गुमराह करता	इस से 26 नाफ़रमान मगर
الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ						
जो लोग	तोड़ते हैं	अल्लाह से किया गया अहद	से बाद	पुख़्ता इक़्रार	और काटते हैं	
مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ						
जिस का हुक़म दिया अल्लाह ने	उस से	कि	वह जोड़े रखें	और वह फ़साद फैलाते हैं	में	ज़मीन वही लोग
هُمْ الْخَاسِرُونَ ﴿٢٧﴾ كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا						
वह	नुक्सान उठाने वाले	27	किस तरह	तुम कुफ़ करते हो	अल्लाह का	और तुम थे बेजान
فَاحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾						
तो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़शी	फिर	तुम्हें मारेगा	फिर	तुम्हें ज़िलाएगा	फिर	उस की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे 28
هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَىٰ						
वह	जिस ने	पैदा किया	तुम्हारे लिए	जो	में	ज़मीन सब फिर क़सद किया तरफ़
السَّمَاءِ فَسَوَّيْنَهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾						
आस्मान	फिर उन को ठीक बना दिया	सात	आस्मान	और वह	हर	चीज़ जानने वाला 29

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِیْفَةً ۗ قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَیَسْفِكُ الدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۗ قَالَ اِنِّىْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٣٠) وَعَلَّمَ									
और जब	कहा	तुम्हारा रब	फ़रिश्तों से	कि मैं	बनाने वाला	में	ज़मीन	एक नाइब	उन्होंने ने कहा
اَدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلٰى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْبِئُوْنِیْ بِاَسْمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ (٣١) قَالُوْۤا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَا									
आदम (अ)	नाम	सब चीज़ों	फिर	उन्हें सामने किया	पर	फरिश्ते	फिर कहा	मुझ को बतलाओ	
नाम	इन	अगर	तुम हो	सच्चे	31	उन्होंने ने कहा	तू पाक है	इल्म नहीं	हमें
اِلَّا مَا عَلَّمْنَا ۗ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ (٣٢) قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۖ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّىْۤ اَعْلَمُ									
मगर	जो	तू ने हमें सिखाया	तू	बेशक तू	जानने वाला	हिक्मत वाला	32	उस ने फ़रमाया	ऐ आदम
उन के नाम	उन के नाम	सो जब	उस ने उन्हें बतलाए	उन के नाम	उस ने फ़रमाया	क्या नहीं	मैं ने कहा	तुम्हें	कि मैं
غَیْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَاعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ (٣٣) وَادَّٰرَۤاۤاۤ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْۤا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ۗ									
छुपी हुई बातें	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	और मैं जानता हूँ	जो	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो	तुम	छुपाते हो	33
और जब	हम ने कहा	फरिश्तों को	तुम सिज्दा करो	आदम को	तो उन्होंने ने सिज्दा किया	सिवाए	इब्लीस		
اَبٰی وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ (٣٤) وَقُلْنَا یٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ									
उस ने इन्कार किया और तकबुर किया	और हो गया	से	काफ़िर	34	और हम ने कहा	ऐ आदम	तुम रहो	तुम	
وَزَوْجَكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۖ وَلَا تَقْرَبَا									
और तुम्हारी वीवी	जन्नत	और तुम दोनों खाओ	उस से	इत्मिनान से	जहां	तुम चाहो	और न	करीब जाना	
هٰذِهِ الشَّجَرَةُ فَتَكُوْنَا مِنَ الظَّٰلِمِیْنَ (٣٥) فَارْزُقُوْهُمَا الشَّیْطٰنُ									
इस	दरख़्त	फिर तुम हो जाओगे	से	ज़ालिम (जमा)	35	फिर उन दोनों को फुसलाया	शैतान		
عَنْهَا فَاٰخَرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِیْهِ ۚ وَقُلْنَا اهْبِطُوْۤا بَعْضُكُمْ									
उस से	फिर उन्हें निकलवा दिया	से जो	वह थे	उस में	और हम ने कहा	तुम उतर जाओ	तुम्हारे बाज़		
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ اِلٰی حَیْنٍ (٣٦) فَتَلَقٰی									
बाज़ के	दुश्मन	और तुम्हारे लिए	में	ज़मीन	ठिकाना	और सामान	तक	वक़्त	36
اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهِ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَیْهِ ۗ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ (٣٧)									
आदम	से	अपना रब	कुछ कलिमात	फिर उस ने तौबा कुबूल की	उस की	बेशक वह	वह	तौबा कुबूल करने वाला	रहम करने वाला

और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक नाइब बनाने वाला हूँ, उन्होंने ने कहा क्या तू उस में बनाएगा जो उस में फ़साद करेगा और खून बहाएगा? और हम तेरी तारीफ़ के साथ तुझ को बे ऐब कहते हैं और तेरी पाकीज़गी बयान करते हैं, उस ने कहा बेशक मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (30)

और उस ने आदम (अ) को सब चीज़ों के नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने किया, फिर कहा मुझ को उन के नाम बतलाओ अगर तुम सच्चे हो। (31)

उन्होंने ने कहा, तू पाक है, हमें कोई इल्म नहीं मगर (सिर्फ़ वह) जो तू ने हमें सिखा दिया, बेशक तू ही जानने वाला हिक्मत वाला है। (32)

उस ने फ़रमाया ऐ आदम! उन्हें उन के नाम बतला दे, सो जब उस ने उन के नाम बतलाए उस ने फ़रमाया क्या मैं ने नहीं कहा था कि मैं जानता हूँ छुपी हुई बातें आस्मानों और ज़मीन की और मैं जानता हूँ जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (33)

और जब हम ने फ़रिश्तों को कहा तुम आदम को सिज्दा करो तो इब्लीस के सिवाए उन्होंने ने सिज्दा किया, उस ने इन्कार किया और तकबुर किया और वह काफ़िरों में से हो गया। (34)

और हम ने कहा ऐ आदम! तुम रहो और तुम्हारी वीवी जन्नत में, और तुम दोनों उस में से खाओ जहां से चाहो इत्मिनान से, और न करीब जाना उस दरख़्त के (वरना) तुम हो जाओगे ज़ालिमों में से। (35)

फिर शैतान ने उन दोनों को फुसलाया उस से। फिर उन्हें निकलवा दिया उस हालत से जिस में वह थे, और हम ने कहा तुम उतर जाओ, तुम्हारे बाज़, बाज़ के दुश्मन हैं, और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठिकाना है और एक वक़्त तक सामाने (ज़िन्दगी) है। (36)

फिर आदम (अ) ने हासिल कर लिए अपने रब से कुछ कलिमात, फिर उस ने उस (आदम) की तौबा कुबूल की, बेशक वह तौबा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (37)

हम ने कहा तुम सब यहां से उतर जाओ, पस जब तुम्हें मेरी तरफ से कोई हिदायत पहुँचे, सो जो चला मेरी हिदायत पर, न उन पर कोई खौफ होगा न वह ग़मगीन होंगे। (38)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और झुटलाया हमारी आयतों को, वही दोज़ख़ वाले हैं, वह हमेशा उस में रहेंगे। (39)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम्हें बख़शी और पूरा करो मेरे साथ किया गया अ़हद, मैं तुम्हारे साथ किया गया अ़हद पूरा करूँगा, और मुझ ही से डरो। (40)

और उस पर ईमान लाओ जो मैं ने नाज़िल किया, उस की तसदीक़ करने वाला जो तुम्हारे पास है, और सब से पहले उस के काफ़िर न हो जाओ और मेरी आयात के इवज़ थोड़ी कीमत न लो, और मुझ ही से डरो। (41)

और न मिलाओ हक़ को वातिल से, और हक़ को न छुपाओ जब कि तुम जानते हो। (42)

और तुम काइम करो नमाज़ और अदा करो ज़कात और रुकूअ़ करो रुकूअ़ करने वालों के साथ। (43)

क्या तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो? हालाँकि तुम पढ़ते हो किताब, क्या फिर तुम समझते नहीं? (44)

और तुम मदद हासिल करो सब्र और नमाज़ से, और वह बड़ी (दुशवार) है मगर अ़जिज़ी करने वालों पर (नहीं) (45)

वह जो समझते हैं कि वह अपने रब के रूबरू होने वाले हैं और यह कि वह उस की तरफ़ लौटने वाले हैं। (46)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! तुम मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम्हें बख़शी और यह कि मैं ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी ज़माने वालों पर। (47)

और उस दिन से डरो जिस दिन कोई शख्स किसी का कुछ बदला न वनेगा, और न उस से कोई सिफ़ारिश कुबूल की जाएगी, और न उस से कोई मुआवज़ा लिया जाएगा, और न उन की मदद की जाएगी। (48)

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۚ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى فَمَنْ تَبِعَ									
हम ने कहा	तुम उतर जाओ	यहां से	सब	पस जब	तुम्हें पहुँचे	मेरी तरफ़ से	कोई हिदायत	सो जो	चला
هُدًى فَلَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا									
मेरी हिदायत	तो न	कोई खौफ़	उन पर	और न	वह	ग़मगीन होंगे	38	और जिन लोगों ने	कुफ़ किया
وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٩﴾									
और झुटलाया	हमारी आयात	वही	दोज़ख़ वाले	वह	उस में	हमेशा रहेंगे	39		
يُبْنِيٰٓ إِسْرَءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا									
ऐ औलाद	याकूब	तुम याद करो	मेरी नेमत	जो	मैं ने बख़शी	तुम्हें	और पूरा करो		
بِعَهْدِيْٓ أُوفِ بِعَهْدِكُمْ ۖ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٤٠﴾ وَأَمِنُوا بِمَا									
मेरे साथ किया अ़हद	मैं पूरा करूँगा	तुम्हारे साथ किया गया अ़हद	और मुझ ही से	डरो	40	और तुम ईमान लाओ	उस पर जो		
أَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوَّلَ كَافِرٍ بِهِ ۚ وَلَا تَشْتَرُوا									
मैं ने नाज़िल किया	तसदीक़ करने वाला	उस की जो	तुम्हारे पास	और न	हो जाओ	पहले	काफ़िर	उस के	और न
بِآيَاتِيْ ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ									
मेरी आयात	कीमत	थोड़ी	और मुझ ही से	डरो	41	और न	मिलाओ	हक़	वातिल से
وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ									
और न छुपाओ	हक़	जब कि तुम	जानते हो	42	और काइम करो	नमाज़	और अदा करो	ज़कात	
وَارْكَعُوا مَعَ الرُّكَّعِينَ ﴿٤٣﴾ أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ									
और रुकूअ़ करो	साथ	रुकूअ़ करने वाले	43	क्या तुम हुक्म देते हो	लोग	नेकी का	और तुम भूल जाते हो		
أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٤٤﴾ وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ									
अपने आप	हालाँकि तुम	पढ़ते हो	किताब	क्या फिर नहीं	तुम समझते	44	और तुम मदद हासिल करो	सब्र से	
وَالصَّلَاةِ ۚ وَآثَٰهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَٰشِعِينَ ﴿٤٥﴾ الَّذِينَ يَظُنُّونَ									
और नमाज़	और वह	बड़ी (दुशवार)	मगर	पर	अ़जिज़ी करने वाले	45	वह जो	समझते हैं	
أَنَّهُمْ مُّٰلِقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَٰجِعُونَ ﴿٤٦﴾ يٰٓبَنِي إِسْرَءِيلَ									
कि वह	रूबरू होने वाले	अपना रब	और यह कि वह	उस की तरफ़	लौटने वाले	46	ऐ औलादे	याकूब	
اٰذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾									
तुम याद करो	मेरी नेमत	जो	मैं ने बख़शी	तुम पर	और यह कि मैं ने	तुम्हें फ़ज़ीलत दी	पर	ज़माने वाले	47
وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِيٰ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ									
और डरो	उस दिन	न बदला वनेगा	कोई शख्स	से	किसी	कुछ	और न	कुबूल की जाएगी	
مِنْهَا شَفَاعَةٌ ۚ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ ۚ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٨﴾									
उस से	कोई सिफ़ारिश	और न	लिया जाएगा	उस से	कोई मुआवज़ा	और न	उन	मदद की जाएगी	48

وَإِذْ نَجَّيْنَكُمْ مِنَ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ						
और जब	हम ने तुम्हें	से	आले फिरऔन	वह तुम्हें दुख	बुरा	अज़ाब
يُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ						
वह जुबह	तुम्हारे	तुम्हारे	और औरतें	और में	उस	आज़माइश
वह जुबह	तुम्हारे	तुम्हारे	और औरतें	और में	उस	आज़माइश
رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾ وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمْ الْبَحْرَ فَأَنْجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا						
तुम्हारा	बड़ी	49	और जब	हम ने	तुम्हारे	और हम ने
रब	बड़ी	49	और जब	हम ने	तुम्हारे	और हम ने
آلَ فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٠﴾ وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً						
आले फिरऔन	और तुम	देख रहे थे	50	और जब	हम ने	रात
आले फिरऔन	और तुम	देख रहे थे	50	और जब	हम ने	रात
ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعَجَلَ مِنَ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَلِمُونَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا						
फिर	तुम ने	बछड़ा	उन के बाद	और तुम	ज़ालिम	हम ने माफ़
फिर	तुम ने	बछड़ा	उन के बाद	और तुम	ज़ालिम	हम ने माफ़
عَنْكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَىٰ						
तुम से	उस के बाद	यह	ताकि तुम	एहसान	52	और जब
तुम से	उस के बाद	यह	ताकि तुम	एहसान	52	और जब
الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿٥٣﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ						
किताब	और कसौटी	ताकि तुम	हिदायत पा लो	53	और जब	कहा
किताब	और कसौटी	ताकि तुम	हिदायत पा लो	53	और जब	कहा
يَقَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعَجَلَ فَتَوُبُوا						
ऐ कौम	वेशक	तुम ने	अपने ऊपर	तुम ने बना	बछड़ा	सो तुम
ऐ कौम	वेशक	तुम ने	अपने ऊपर	तुम ने बना	बछड़ा	सो तुम
إِلَىٰ بَارِيكُمْ فَاقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ						
तरफ़	पैदा करने	सो तुम	अपनी जानें	यह	बेहतर	नज़दीक
तरफ़	पैदा करने	सो तुम	अपनी जानें	यह	बेहतर	नज़दीक
بَارِيكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٥٤﴾ وَإِذْ						
तुम्हारा	उस ने तौबा	तुम्हारी	वह	वेशक	तौबा	और जब
तुम्हारा	उस ने तौबा	तुम्हारी	वह	वेशक	तौबा	और जब
قُلْتُمْ يَمُوسَىٰ لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَىٰ اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ						
तुम ने	ऐ मूसा	हम हरगिज़ न	तुझे	जब तक	हम देख लें	फिर तुम्हें
तुम ने	ऐ मूसा	हम हरगिज़ न	तुझे	जब तक	हम देख लें	फिर तुम्हें
الطُّعْفَةَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٥﴾ ثُمَّ بَعَثْنَاكُمْ مِنْ بَعْدِ مَوْتِكُمْ						
विजली की	और तुम	तुम देख रहे थे	55	फिर	हम ने तुम्हें	तुम्हारी मौत
विजली की	और तुम	तुम देख रहे थे	55	फिर	हम ने तुम्हें	तुम्हारी मौत
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٦﴾ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا						
ताकि तुम	एहसान	56	और हम ने	तुम पर	बादल	और हम ने
ताकि तुम	एहसान	56	और हम ने	तुम पर	बादल	और हम ने
عَلَيْكُمْ الْمَنَّانَ وَالسَّلَوىٰ كُلُّوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ						
तुम पर	मन्न	और सलवा	तुम खाओ	से	पाक चीज़ें	जो
तुम पर	मन्न	और सलवा	तुम खाओ	से	पाक चीज़ें	जो
وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٥٧﴾						
और नहीं	उन्होंने ने जुल्म	और लेकिन	थे	अपनी जानें	वह जुल्म	57
और नहीं	उन्होंने ने जुल्म	और लेकिन	थे	अपनी जानें	वह जुल्म	57

और जब हम ने तुम्हें आले फिरऔन से रिहाई दी, वह तुम्हें दुख देते थे बुरा अज़ाब। और वह तुम्हारे बेटों को जुबह करते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आजमाइश थी। (49)

और जब हम ने तुम्हारे लिए फाड़ दिया दर्या, फिर हम ने तुम्हें बचा लिया और आले फिरऔन को डुबो दिया, और तुम देख रहे थे। (50)

और जब हम ने मूसा (अ) से चालीस रातों का वादा किया, फिर तुम ने बछड़े को उन के बाद (मावूद) बना लिया, और तुम ज़ालिम हुए। (51)

फिर हम ने तुम्हें उस के बाद माफ़ कर दिया ताकि तुम एहसान मानो। (52)

और जब हम ने मूसा को किताब दी और कसौटी (हक़ और बातिल के दरमियान फ़रक़ करने वाला) ताकि तुम हिदायत पा लो। (53)

और जब मूसा (अ) ने अपनी कौम से कहा, ऐ कौम! वेशक तुम ने अपने ऊपर जुल्म किया बछड़े को (मावूद) बना कर, सो तुम अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रुजूअ करो, अपनों को हलाक करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक, सो उस ने तुम्हारी तौबा कुबूल कर ली, वेशक वह तौबा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (54)

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम तुझे हरगिज़ न मानेंगे जब तक अल्लाह को हम खुल्लम खुल्ला न देख लें, फिर तुम्हें विजली की कड़क ने आ लिया, और तुम देख रहे थे। (55)

फिर हम ने तुम्हें तुम्हारी मौत के बाद ज़िन्दा किया ताकि तुम एहसान मानो। (56)

और हम ने तुम पर बादल का साया किया और हम ने तुम पर मन्न और सलवा उतारा, वह पाक चीज़ें खाओ जो हम ने तुम्हें दी।

और उन्होंने ने हम पर जुल्म नहीं किया और लेकिन वह अपनी जानों पर जुल्म करते थे। (57)

और जब हम ने कहा तुम दाखिल हो जाओ उस बस्ती में, फिर उस में जहां से चाहो बाफरागत खाओ और दरवाज़े से दाखिल हो सिज्दा करते हुए, और कहो वख़्श दे, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं वख़्श देंगे, और अ़नक़रीब ज़ियादा देंगे नेकी करने वालों को। (58)

फिर ज़ालिमों ने दूसरी बात से उस बात को बदल डाला जो कही गई थी उन्हें, फिर हम ने ज़ालिमों पर आस्मान से अज़ाब उतारा, क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। (59)

और जब मूसा (अ) ने अपनी कौम के लिए पानी मांगा, फिर हम ने कहा अपना अ़सा पत्थर पर मारो, तो फूट पड़े उस से बारह चश्मे, हर क़बीले ने अपना घाट जान लिया, तुम खाओ और पियो अल्लाह के रिज़्क से, और ज़मीन में न फिरो फ़साद मचाते। (60)

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम एक खाने पर हरगिज़ सब् र न करेंगे, आप हमारे लिए अपने रब से दुआ करें कि हमारे लिए निकाले जो ज़मीन उगाती है, कुछ तरकारी और ककड़ी और गन्दुम और मसूर और प्याज़। उस ने कहा क्या तुम बदलना चाहते हो? वह जो अदना है उस से जो बेहतर है, तुम शहर में उतरो वेशक तुम्हारे लिए होगा जो तुम मांगते हो, और उन पर ज़िल्लत और मोहताजी डाल दी गई, और वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ, यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और नाहक़ नबियों को क़त्ल करते थे, यह इस लिए हुआ कि उन्होंने ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (61)

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ								
तुम चाहो	जहां	उस से	फिर खाओ	बस्ती	उस	तुम दाखिल हो	हम ने कहा	और जब
رَغَدًا وَاَدْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَغْفِرْ لَكُمْ								
तुम्हें	हम वख़्श देंगे	वख़्शदे	और कहो	सिज्दा करते हुए	दरवाज़ा	और तुम दाखिल हो	बाफरागत	
خَطِيئَتِكُمْ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾ فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا								
बात	जिन लोगों ने जुल्म किया (ज़ालिम)	फिर बदल डाला	58	नेकी करने वाले	और अ़नक़रीब ज़ियादा देंगे	तुम्हारी ख़ताएं		
غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا								
अज़ाब	जिन लोगों ने जुल्म किया (ज़ालिम)	पर	फिर हम ने उतारा	उन्हें	कही गई	वह जो कि	दूसरी	
مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٥٩﴾ وَإِذْ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ								
अपनी कौम के लिए	मूसा (अ)	पानी मांगा	और जब	59	वह नाफ़रमानी करते थे	क्योंकि	आस्मान	से
فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا								
चश्मे	बारह	उस से	तो फूट पड़े	पत्थर	अपना अ़सा	मारो	फिर हम ने कहा	
قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ رِّزْقِ اللَّهِ								
अल्लाह के दिये हुए रिज़्क से	और पियो	तुम खाओ	अपना घाट	हर कौम	जान लिया			
وَلَا تَعَثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٦٠﴾ وَإِذْ قُلْتُمْ يَمُوسَىٰ								
ऐ मूसा	तुम ने कहा	और जब	60	फ़साद मचाते	ज़मीन	में	और न फिरो	
لَنْ نَصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا								
उस से जो	निकाले हमारे लिए	अपना रब	हमारे लिए	दुआ करें	एक	खाना	पर	हरगिज़ न सब् र करेंगे
تُنْبِتُ الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا								
और मसूर	और गन्दुम	और ककड़ी	तरकारी	से (कुछ)	ज़मीन	उगाती है		
وَبَصْلِهَا قَالَ اتَّسَبِدُونِ الَّذِي هُوَ آدَنِي بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ								
बेहतर	वह	उस से जो	वह अदना	जो कि	क्या तुम बदलना चाहते हो	उस ने कहा	और प्याज़	
إِهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُمْ مَّا سَأَلْتُمْ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ								
ज़िल्लत	उन पर	और डाल दी गई	जो तुम मांगते हो	तुम्हारे लिए	पस वेशक	शहर	तुम उतरो	
وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ								
इस लिए कि वह	यह	अल्लाह	से	ग़ज़ब के साथ	और वह लौटे	और मोहताजी		
كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِينَ								
नबियों को	और क़त्ल करते थे	अल्लाह की आयतों का	वह इन्कार करते	वह थे				
بِغَيْرِ الْحَقِّ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٦١﴾								
61	हद से बढ़ते	और थे	उन्होंने ने नाफ़रमानी की	इस लिए कि	यह	नाहक़		

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ						
और साबी	और नसारा	यहूदी हुए	और जो लोग	ईमान लाए	वेशक जो लोग	
مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ						
उन का अजर	तो उन के लिए	नेक	और अमल करे	और रोज़े आखिरत	अल्लाह पर	ईमान लाए जो
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا						
हम ने लिया	और जब	62	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर कोई ख़ौफ़ और न उन का रब पास
مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمْ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَكُمْ بِقُوَّةٍ						
मज़बूती से	जो हम ने तुम्हें दिया	पकड़ो	कोहे तूर	तुम्हारे ऊपर	और हम ने उठाया	तुम से इक्कार
وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ						
उस	बाद	तुम फिर गए	फिर	63	परहेज़गार हो जाओ	ताकि तुम उस में जो और याद रखो
فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾						
64	नुक्सान उठाने वाले	से	तो तुम थे	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़ल पस अगर न
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ						
उन से	तब हम ने कहा	हफ़ते के दिन में	तुम से	ज़ियादती की	जिन्होंने ने	तुम ने जान लिया और अलबत्ता
كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿٦٥﴾ فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا						
सामने वालों के लिए	इव्रत	फिर हम ने उसे बनाया	65	ज़लील	बन्दर	तुम हो जाओ
وَمَا خَلَفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ						
अपनी कौम से	मूसा (अ)	कहा	और जब	66	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत उस के पीछे और जो
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقْرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا						
मज़ाक़	क्या तुम करते हो हम से	वह कहने लगे	एक गाय	तुम जुबह करो	कि	तुम्हें हुक्म देता है वेशक अल्लाह
قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا						
हमारे लिए	दुआ करें	उन्होंने ने कहा	67	जाहिलों से	कि हो जाऊँ	अल्लाह की मैं पनाह लेता हूँ उस ने कहा
رَبِّكَ يُبَيِّنُ لَنَا مَا هِيَ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقْرَةٌ						
गाय	कि वह	फरमाता है	वेशक वह	उस ने कहा	कैसी है वह	हमें बतलाए अपना रब
لَّا فَارِضٌ وَلَا بَكْرٌ عَوَانُ بَيْنَ ذَلِكَ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾						
68	जो तुम्हें हुक्म दिया जाता है	पस करो	उस	दरमियान	जवान	छोटी उम्र और न बूढ़ी
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبِّكَ يُبَيِّنُ لَنَا مَا لَوْنُهَا قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ						
फ़रमाता है	वेशक वह	उस ने कहा	कैसा उस का रंग	हमें	वह बतलादे	अपना रब हमारे लिए दुआ करें उन्होंने ने कहा
إِنَّهَا بَقْرَةٌ صَفْرَاءٌ فَاقْعُ لَوْنَهَا تَسْرُ النَّظِيرِينَ ﴿٦٩﴾						
69	देखने वाले	अच्छी लगती	उस का रंग	गहरा	ज़र्द रंग	एक गाय कि वह

वेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और नसरानी और साबी, जो ईमान लाए अल्लाह पर और रोज़े आखिरत पर और नेक अमल करे तो उन के लिए उन के रब के पास उन का अजर है, और उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जब हम ने तुम से इक्कार लिया, और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर उठाया, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो, और जो उस में है उसे याद रखो ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (63)

फिर उस के बाद तुम फिर गए, पस अगर अल्लाह का फ़ज़ल न होता तुम पर और उस की रहमत तो तुम नुक्सान उठाने वालों में से थे। (64)

और अलबत्ता तुम ने (उन लोगों को) जान लिया जिन्होंने ने तुम में से हफ़ते के दिन में ज़ियादती की, तब हम ने उन से कहा तुम ज़लील बन्दर हो जाओ। (65)

फिर हम ने उसे सामने वालों के लिए और पीछे आने वालों के लिए इव्रत बनाया और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (66)

और जब मूसा (अ) ने अपनी कौम से कहा वेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय जुबह करो, वह कहने लगे क्या तुम हम से मज़ाक़ करते हो? उस ने कहा मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ (इस से) कि मैं जाहिलों से हो जाऊँ। (67)

उन्होंने ने कहा अपने रब से हमारे लिए दुआ करें कि वह हमें बतलाए वह कैसी है? उस ने कहा वेशक वह फ़रमाता है कि वह गाय न बूढ़ी है और न छोटी उम्र की, उस के दरमियान जवान है, पस तुम्हें जो हुक्म दिया जाता है करो। (68)

उन्होंने ने कहा हमारे लिए दुआ करें अपने रब से कि वह हमें बतला दे उस का रंग कैसा है? उस ने कहा वेशक वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है ज़र्द रंग की, उस का रंग खूब गहरा है, देखने वालों को अच्छी लगती है। (69)

उन्होंने ने कहा हमारे लिए अपने रब से दुआ करें वह हमें बतला दे वह कैसी है? क्योंकि गाय में हम पर इशतिवाह हो गया, और अगर अल्लाह ने चाहा तो बेशक हम ज़रूर हिदायत पा लेंगे। (70)

उस ने कहा बेशक वह फरमाता है कि वह एक गाय है न सधी हो, न ज़मीन जोतती न खेती को पानी देती, वे ऐव है, उस में कोई दाग नहीं, वह बोले अब तुम ठीक बात लाए, फिर उन्होंने ने उसे जुबह किया, और वह लगते न थे कि वह (जुबह) करें। (71)

और जब तुम ने एक आदमी को क़त्ल किया फिर तुम उस में झगड़ने लगे और अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था जो तुम छुपाते थे। (72)

फिर हम ने कहा तुम उस (मक़तूल) को गाय का एक टुकड़ा मारो, इस तरह अल्लाह मुर्दा को ज़िन्दा करेगा, वह तुम्हें दिखाता है अपनी निशानियां ताकि तुम ग़ौर करो। (73)

फिर उस के बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए, सो वह पत्थर जैसे हो गए या उस से ज़ियादा सख़्त, और बेशक बाज़ पत्थरों से नहरें फूट निकलती हैं, और बेशक उन में से बाज़ फट जाते हैं तो निकलता है उन से पानी, और उन में से बाज़ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (74)

फिर क्या तुम तबक्को रखते हो? कि वह मान लेंगे तुम्हारी खातिर, और उन में से एक फ़रीक़ अल्लाह का कलाम सुनता है फिर वह उस को बदल डालते हैं उस को समझ लेने के बाद, और वह जानते हैं। (75)

और जब वह उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब उन के बाज़ दूसरों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं क्या तुम उन्हें वह बतलाते हो जो अल्लाह ने तुम पर ज़ाहिर किया ताकि वह उस के ज़रीए तुम्हारे रब के सामने हुज्जत लाएं तुम पर, तो क्या तुम नहीं समझते? (76)

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۚ اِنَّ الْبَقَرَ تَشَبَهَ عَلَيْنَا										
हम पर	इशतिवाह हो गया	गाय	क्योंकि	वह कैसी	हमें	वह बतला दे	अपना रब	हमारे लिए	दुआ करें	उन्होंने ने कहा
وَإِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالَ اِنَّهُ يَقُولُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ										
एक गाय	कि वह	फरमाता है	बेशक वह	उस ने कहा	70	ज़रूर हिदायत पा लेंगे	अल्लाह ने चाहा	अगर	और बेशक हम	
لَا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةً لَا شَيْءَ فِيهَا										
उस में	कोई दाग	नहीं	वे ऐव	खेती	पानी देती	और न	ज़मीन	जोतती	न सधी हुई	
قَالُوا اَلَنْ جِئْتَ بِالْحَقِّ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾										
71	वह करें	और वह लगते न थे	फिर उन्होंने ने जुबह किया उस को	ठीक बात	तुम लाए	अब	वह बोले			
وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَرَأْتُمْ فِيهَا ۗ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ										
जो तुम थे	ज़ाहिर करने वाला	और अल्लाह	उस में	फिर तुम झगड़ने लगे	एक आदमी	तुम ने क़त्ल किया	और जब			
تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾ فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۗ كَذَلِكَ يُحْيِي اللّٰهُ الْمَوْتَى										
मुर्दे	ज़िन्दा करेगा अल्लाह	इस तरह	उस का टुकड़ा	उसे मारो	फिर हम ने कहा	72	छुपाते			
وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِّنْ بَعْدِ										
बाद	तुम्हारे दिल	सख़्त हो गए	फिर	73	गौर करो	ताकि तुम	अपने निशान	और तुम्हें दिखाता है		
ذَلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ										
पत्थर	से	और बेशक	सख़्त	उस से ज़ियादा	या	पत्थर जैसे	सो वह	उस		
لَمَّا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَّا يَنْشَقُّ فَيَخْرُجُ مِنْهُ										
उस से	तो निकलता है	फट जाते हैं	अलबत्ता जो	उस से (बाज़)	और बेशक	नहरें	उस से	फूट निकलती है	अलबत्ता	
الْمَاءِ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَّا يَنْهَشُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ										
बेखबर	और नहीं अल्लाह	अल्लाह का डर	से	अलबत्ता गिरता है	उस से	और बेशक	पानी			
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾ أَفَتَطْمَعُونَ اَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ										
और था	तुम्हारे लिए	मान लेंगे	कि	क्या फिर तुम तबक्को रखते हो	74	तुम करते हो	से जो			
فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللّٰهِ ثُمَّ يَلْحَقُونَ مِنْ بَعْدِ										
बाद	वह बदल डालते हैं उस को	फिर	अल्लाह का कलाम	वह सुनते हैं	उन से	एक फ़रीक़				
مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ اٰمَنُوا قَالُوا										
वह कहते हैं	ईमान लाए	जो लोग	वह मिलते हैं	और जब	75	जानते हैं	और वह	जो उन्होंने ने समझ लिया		
اٰمَنًا ۖ وَإِذَا خَلَا بِعَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوا اتَّخَذْتُمُوهُمْ بِمَا										
जो	क्या बतलाते हो उन्हें	कहते हैं	बाज़	पास	उन के बाज़	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए		
فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۖ اَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٦﴾										
76	तो क्या तुम नहीं समझते	तुम्हारा रब	सामने	उस के ज़रीए	ताकि वह हुज्जत लाएं तुम पर	तुम पर	ज़ाहिर किया अल्लाह ने			

77
वह ज़ाहिर करते हैं
और जो
जो वह छुपाते हैं
जानता है
कि अल्लाह
वह जानते
क्या नहीं

78
गुमान से काम लेते हैं
सो खराबी
उन के लिए जो
लिखते हैं
किताब
अपने हाथों से
फिर

79
वह कमाते हैं
उस से जो
उन के लिए
और खराबी
उन के हाथ
लिखा
उस से जो
उन के लिए

80
तुम जानते
क्यों नहीं
जिस ने
कमाई
कोई बुराई
और घर लिया
उस की ख़ताएँ

81
हमेशा रहेंगे
उस में
वह
आग वाले (दोज़खी)
और जो लोग

82
हमेशा रहेंगे
और जब
हम ने लिया
पुख्ता अहद
बनी इस्राईल

83
तुम फिर गए
सिवाए
चन्द एक
तुम में से
और तुम
फिर जाने वाले

क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (77)

और उन में कुछ अनपढ़ हैं जो किताब नहीं जानते सिवाए चन्द आजूओं के, और वह सिर्फ़ गुमान से काम लेते हैं। (78)

सो उन के लिए खराबी है जो वह किताब लिखते हैं अपने हाथों से, फिर कहते हैं यह अल्लाह के पास से है ताकि उस के ज़रीए हासिल कर लें थोड़ी सी कीमत, सो उन के लिए खराबी है उस से जो उन के हाथों ने लिखा, और उन के लिए खराबी है उस से जो वह कमाते हैं। (79)

और उन्होंने ने कहा कि हमें आग हरगिज़ न छुएगी सिवाए गिनती के चन्द दिन, कह दो, क्या तुम ने अल्लाह के पास से कोई वादा लिया है कि अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के खिलाफ़ नहीं करेगा या तुम अल्लाह पर वह कहते हो जो तुम नहीं जानते? (80)

क्यों नहीं! जिस ने कमाई कोई बुराई और उस को उस की ख़ताओं ने घर लिया पस यही लोग दोज़खी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (81)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (82)

और जब हम ने लिया बनी इस्राईल से पुख्ता अहद कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करना, और माँ बाप से हुस्ने सुलूक करना, और करावतदारों, यतीमों और मस्कीनों से। और तुम कहना लोगों से अच्छी बात, और नमाज़ काइम करना और ज़कात देना, फिर तुम फिर गए तुम में से चन्द एक के सिवा, और तुम फिर जाने वाले हो। (83)

और फिर जब हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया कि तुम अपनों के खून न बहाओगे और न तुम अपनों को अपनी बस्तियों से निकालोगे, फिर तुम ने इकरार किया और तुम गवाह हो। (84)

फिर तुम वह लोग हो जो कत्ल करते हो अपनों को, और अपने एक फरीक को उन के बतन से निकालते हो, तुम चढ़ाई करते हो उन पर गुनाह और सरकशी से, और अगर वह तुम्हारे पास कैदी आए तो बदला दे कर उन्हें छुड़ाते हो, हालांकि उन का निकालना तुम पर हARAM किया गया था, तो क्या तुम किताब के बाज़ हिस्से पर ईमान लाते हो और बाज़ हिस्से का इन्कार करते हो? सो तुम में जो ऐसा करे उस की क्या सज़ा है? सिवाए इस के कि दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई और वह क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बेख़बर नहीं। (85)

यही लोग हैं जिन्होंने ने ख़रीद ली आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी, सो उन से अज़ाब हलका न किया जाएगा, और न वह मदद किए जाएंगे। (86)

और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और हम ने उस के वाद पै दर पै भेजे रसूल, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दी और उस की मदद की जिब्राईल (अ) के ज़रीए, क्या फिर जब तुम्हारे पास कोई रसूल उस के साथ आया जो तुम्हारे नफ्स न चाहते थे तो तुम ने तकव्वुर किया, सो एक गिरोह को तुम ने झुटलाया और एक गिरोह को तुम कत्ल करने लगे। (87)

और उन्होंने ने कहा हमारे दिल पर्दे में हैं, बल्कि उन पर उन के कुफ़ के सबब अल्लाह की लानत है, सो थोड़े हैं जो ईमान लाते हैं। (88)

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ							
तुम निकालोगे	और न	अपनों के खून	न तुम बहाओगे	तुम से पुख्ता अहद	हम ने लिया	और जब	
أَنفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ (٨٤)							
84	गवाह हो	और तुम	तुम ने इकरार किया	फिर	अपनी बस्तियां	से	अपनों
ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا مِّنْكُمْ							
अपने से	एक फरीक	और तुम निकालते हो	अपनों को	कत्ल करते हो	वह लोग	तुम	फिर
مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظْهَرُونَ عَلَيْهِم بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَإِنْ							
और अगर	और सरकशी	गुनाह से	उन पर	तुम चढ़ाई करते हो	उन के बतन	से	
يَأْتُوكُمْ أَسْرَى تُفْدُوهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ							
निकालना उन का	तुम पर	हराम किया गया	हालांकि वह	तुम बदला दे कर छुड़ाते हो उन्हें	कैदी	वह आए तुम्हारे पास	
أَفْتُومِنُونِ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ فَمَا جَزَاءُ							
सज़ा	सो क्या	बाज़ हिस्से	और इन्कार करते हो	किताब	बाज़ हिस्से	तो क्या तुम ईमान लाते हो	
مَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا							
दुनिया	ज़िन्दगी	में	रुसवाई	सिवाए	तुम में से	यह	करे जो
وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ يُرَدُّونَ إِلَى أَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا							
उस से जो	बेख़बर	अल्लाह	और नहीं	सख़्त अज़ाब	तरफ़	वह लौटाए जाएंगे	और क़ियामत के दिन
تَعْمَلُونَ (٨٥) أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ							
आख़िरत के बदले	दुनिया	ज़िन्दगी	ख़रीद ली	वह जिन्होंने ने	यही लोग	85	तम करते हो
فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ (٨٦)							
86	मदद किए जाएंगे	वह	और न	अज़ाब	उन से	सो हलका न किया जाएगा	
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ							
रसूल	उस के बाद	और हम ने पै दर पै भेजे	किताब	मूसा	और अलबत्ता हम ने दी		
وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ							
जिब्राईल (अ) के ज़रीए	और उस की मदद की	खुली निशानियां	मरयम का बेटा	ईसा (अ)	और हम ने दी		
أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى أَنفُسُكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ							
तुम ने तकव्वुर किया	तुम्हारे नफ्स	न चाहते	उस के साथ जो	कोई रसूल	आया तुम्हारे पास	क्या फिर जब	
فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ (٨٧) وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ							
पर्दे में	हमारे दिल	और उन्होंने ने कहा	87	तुम कत्ल करने लगे	और एक गिरोह	तुम ने झुटलाया	सो एक गिरोह
بَلْ لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ (٨٨)							
88	जो ईमान लाते हैं	सो थोड़े	उन के कुफ़ के सबब	उन पर लानत अल्लाह की	बल्कि		

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ^٩							
उन के पास	उस की जो	तसदीक करने वाली	अल्लाह के पास	से	किताब	उन के पास आई	और जब
وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ^{١٠} فَلَمَّا							
सो जब	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)		पर	फ़तह मांगते		इस से पहले	और वह थे
(८९) جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ							
89	काफ़िर (जमा)	पर	सो लानत अल्लाह की	उस के मुन्किर हो गए	वह पहचानते थे	जो	आया उन के पास
بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بَغْيًا							
ज़िद	नाज़िल किया अल्लाह ने	उस से जो	वह मुन्किर हुए	कि	अपने आप	उस के बदले	बुरा है जो
أَنْ يُنْزَلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ^{١١}							
अपने बन्दे	से	जो वह चाहता है		पर	अपना फ़ज़ल	से	नाज़िल करता है अल्लाह
فَبَاءُوا بِغَضَبٍ عَلَى غَضَبٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ							
अज़ाब	और काफ़िरों के लिए		ग़ज़ब	पर	ग़ज़ब	सो वह कमा लाए	
(९०) وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ امْنُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا							
वह कहते हैं	नाज़िल किया अल्लाह ने	उस पर जो	तुम ईमान लाओ	उन्हें	और जब कहा जाता है	90	रुसवा करने वाला
نُؤْمِنُ بِمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ ^{١٢} وَهُوَ الْحَقُّ							
हक़	हालांकि वह	उस के अलावा	उस से जो	और इन्कार करते हैं	हम पर	नाज़िल किया गया	हम ईमान लाते हैं
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ^{١٣} قُلْ فَلِمَ تَقُولُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ							
अल्लाह के नबी (जमा)		तुम क़तल करते रहे	सो क्यों	कह दें	उन के पास	उस की जो	तसदीक करने वाला
مِنْ قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ^(९१) وَلَقَدْ جَاءَكُمْ							
तुम्हारे पास आए	और अलबत्ता	91	मोमिन (जमा)	तुम हो	अगर	इस से पहले	
مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ							
और तुम	उस के बाद		बछड़ा	तुम ने बना लिया	फिर	खुली निशानियों के साथ	मूसा
ظَلِمُونَ ^(९२) وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ ^{١٤}							
कोहे तूर	तुम्हारे ऊपर	और हम ने बुलन्द किया	तुम से पुख्ता अ़हद	हम ने लिया	और जब	92	ज़ालिम (जमा)
خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَأَسْمِعُوا ^{١٥} قَالُوا سَمِعْنَا							
हम ने सुना	वह बोले	और सुनो		मज़बूती से	जो हम ने दिया तुम्हें		पकड़ो
وَعَصَيْنَا ^{١٦} وَأَشْرَبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ^{١٧}							
बसबस उन के कुफ़		बछड़ा	उन के दिल	में	और रचा दिया गया	और नाफ़रमानी की	
(९३) قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيمَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ							
93	मोमिन	अगर तुम हो	ईमान तुम्हारा	उस का	तुम्हें हुक्म देता है	क्या ही बुरा जो	कह दें

और जब उन के पास अल्लाह की तरफ़ से किताब आई, उस की तसदीक करने वाली जो उन के पास है और वह इस से पहले काफ़िरों पर फ़तह मांगते थे, सो जब उन के पास वह आया जो वह पहचानते थे वह उस के मुन्किर हो गए, सो काफ़िरों पर अल्लाह की लानत। (89)

बुरा है जिस के बदले उन्होंने ने अपने आप को बेच डालो कि वह उस के मुन्किर हो गए जो अल्लाह ने नाज़िल किया इस ज़िद से कि अल्लाह नाज़िल करता है अपने फ़ज़ल से अपने जिस बन्दे पर वह चाहता है, सो कमा लाए ग़ज़ब पर ग़ज़ब, और काफ़िरों के लिए रुसवा करने वाला अज़ाब है। (90)

और जब उन से कहा जाता है कि तुम ईमान लाओ उस पर जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो कहते हैं हम उस पर ईमान लाते हैं जो हम पर नाज़िल किया गया और इन्कार करते हैं उस का जो उस के अलावा है, हालांकि वह हक़ है, उस की तसदीक करने वाला जो उन के पास है, आप कह दें सो क्यों तुम अल्लाह के नबियों को इस से पहले क़तल करते रहे हो? अगर तुम मोमिन हो। (91)

और अलबत्ता मूसा (अ) तुम्हारे पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर तुम ने उस के बाद बछड़े को (मावूद) बना लिया और तुम ज़ालिम हो। (92)

और जब हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया और तुम्हारे ऊपर कोहे तूर बुलन्द किया (और कहा) जो हम ने तुम्हें दिया है मज़बूती से पकड़ो और सुनो, तो वह बोले हम ने सुना और नाफ़रमानी की, और उन के दिलों में बछड़ा रचा दिया गया उन के कुफ़ के सबब, कह दें क्या ही बुरा है जिस का तुम्हें हुक्म देता है तुम्हारा ईमान, अगर तुम मोमिन हो। (93)

कह दें अगर तुम्हारे लिए है
आखिरत का घर अल्लाह के पास
खास तौर पर दूसरे लोगों के सिवा,
तो तुम मौत की आर्जू करो अगर
तुम सच्चे हो। (94)

और वह हरगिज़ कभी मौत की
आर्जू न करेंगे उस के सबब जो
उन के हाथों ने आगे भेजा, और
अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला
है। (95)

और अलबत्ता तुम उन्हें दूसरे
लोगों से ज़ियादा ज़िन्दगी पर हरीस
पाओगे, और मुशरिकों से (भी
ज़ियादा), उन में से हर एक चाहता
है काश वह हजार साल की उम्र
पाए, और इतनी उम्र दिया जाना
उसे अज़ाब से दूर करने वाला
नहीं, और अल्लाह देखने वाला है
जो वह करते हैं। (96)

कह दें जो ज़िब्रील (अ) का
दुश्मन हो तो वेशक उस ने यह आप
के दिल पर नाज़िल किया है अल्लाह
के हुक्म से, उस की तस्दीक करने
वाला जो इस से पहले है, और
हिदायत और खुशखबरी ईमान
वालों के लिए। (97)

जो दुश्मन हो अल्लाह का और
उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों
का और ज़िब्रील और मिकाईल का,
तो वेशक अल्लाह काफ़िरों का
दुश्मन है। (98)

और अलबत्ता हम ने आप (स) की
तरफ़ वाज़ेह निशानियां उतारी और
उन का इन्कार सिर्फ़ नाफ़रमान
करते हैं। (99)

क्या (ऐसा नहीं) जब भी उन्होंने ने
कोई अहद किया तो उस को तोड़
दिया उन में से एक फ़रीक़ ने,
बल्कि उन के अक्सर ईमान नहीं
रखते। (100)

और जब उन के पास एक रसूल
आया अल्लाह की तरफ़ से, उस
की तस्दीक करने वाला जो उन के
पास है, तो फेंक दिया एक फ़रीक़
ने अहले किताब के, अल्लाह की
किताब को अपनी पीठ पीछे, गोया
कि वह जानते ही नहीं। (101)

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً						
कह दें	अगर है	तुम्हारे लिए	आखिरत का घर	अल्लाह के पास	खास तौर पर	
مِّنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَتُّوا أَلْمُوتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٤﴾						
सिवाए	लोग	तो तुम आर्जू करो	मौत	अगर	तुम हो	सच्चे
94						
وَلَنْ يَّتَمَنَّوَهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ						
और वह हरगिज़ उस की आर्जू न करेंगे	कभी	वसवव जो आगे भेजा	उन के हाथ	और अल्लाह	जानने वाला	
بِالظَّلْمِ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَى حَيَوةٍ						
ज़ालिमों को	95	और अलबत्ता तुम पाओगे उन्हें	ज़ियादा हरीस	लोग	ज़िन्दगी पर	
وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرَ أَلْفَ سَنَةٍ						
और से	जिन लोगों ने शिर्क किया (मुशरिक)	चाहता है	उन का हर एक	काश वह उम्र पाए	हज़ार	साल
وَمَا هُوَ بِمُزَحَّزَجِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ وَاللَّهُ بَصِيرٌ						
और वह नहीं	उसे दूर करने वाला	से	अज़ाब	कि वह उम्र दिया जाए	और अल्लाह	देखने वाला
जो						
يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ						
वह करते हैं	96	कह दें	जो	हो	दुश्मन	जिब्रील का
यह नाज़िल किया	तो वेशक उस ने					
عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى						
तेरे दिल पर	अल्लाह के हुक्म से	तसदीक करने वाला	उस की जो	इस से पहले	और हिदायत	
وَبُشْرَى لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٧﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ						
और खुशखबरी	ईमान वालों के लिए	97	जो	हो	दुश्मन	अल्लाह का
और उस के फ़रिश्ते						
وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِّلْكَافِرِينَ ﴿٩٨﴾						
और उस के रसूल	और जिब्रील	और मिकाईल	तो वेशक अल्लाह	दुश्मन	काफ़िरों का	98
وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا						
और अलबत्ता	हम ने उतारी	आप की तरफ़	निशानियां वाज़ेह	और नहीं इन्कार करते	उस का	
إِلَّا الْفَاسِقُونَ ﴿٩٩﴾ أَوْ كَلَّمَا عَهْدُوا عَهْدًا نَّبَذَهُ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ						
मगर	नाफ़रमान	99	क्या जब भी	उन्होंने ने अहद किया	कोई अहद	तोड़ दिया उस को
उन में से	एक फ़रीक़					
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾ وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ						
बल्कि	अक्सर उन के	ईमान नहीं रखते	100	और जब	आया उन के पास	एक रसूल
अल्लाह की तरफ़ से						
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ						
तसदीक करने वाला	उस की जो	उन के पास	फेंक दिया	एक फ़रीक़	से	जिन्हें
किताब दी गई (अहले किताब)						
كُتِبَ اللَّهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَانَتْهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾						
अल्लाह की किताब	पीछे	अपनी पीठ	गोया कि वह	जानते नहीं	101	

مَعْلُومَةٌ ۲ عِنْدَ النَّاسِ

۱۱

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيْطَانُ عَلَى مُلْكٍ سَلِيمٍ وَمَا كَفَرُ							
और कुफ़ न किया	सुलेमान (अ)	बादशाहत	में	शैतान	पढ़ते थे	जो	और उन्होंने ने पैरवी की
سَلِيمٍ وَلَكِنَّ الشَّيْطَانِ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ							
जादू	लोग	वह सिखाते	कुफ़ किया	शैतान (जमा)	लेकिन	सुलेमान (अ)	
وَمَا أُنْزِلَ عَلَى الْمَلَائِكِينَ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ							
और मारुत	हारुत	बाविल में	दो फ़रिश्ते	पर	और जो नाज़िल किया गया		
وَمَا يُعَلِّمُونَ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرُ							
पस तू कुफ़ न कर	आज़माइश	हम	सिर्फ़	वह कह देते	यहां तक	किसी को	और वह न सिखाते
فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ							
और उस की वीवी	खाविन्द	दरमियान	उस से	जिस से जुदाई डालते	उन दोनों से	सो वह सीखते	
وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ							
अल्लाह	हुक़्म से	मगर	किसी को	उस से	नुक्सान पहुँचाने वाले	और वह नहीं	
وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوا							
और वह जान चुके	उन्हें नफ़ा दे		और न	जो उन्हें नुक्सान पहुँचाए	और वह सीखते हैं		
لَمَنْ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ وَلَبِئْسَ							
और अलबत्ता बुरा	कोई हिस्सा		आख़िरत में		नहीं उस के लिए	यह ख़रीदा	जिस ने
مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ							
वह	और अगर	102	वह जानते होते		काश	अपने आप को	जो उन्होंने ने बेच दिया
أَمَنُوا وَاتَّقُوا لَمَثُوبَةً مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ							
बेहतर	अल्लाह के पास		से	तो ठिकाना पाते	और परहेज़गार बन जाते		वह ईमान लाते
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا							
राइना	न कहो	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	103	काश वह जानते होते	
وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمَعُوا وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾							
104	दर्दनाक	अज़ाब	और काफ़िरों के लिए		और सुनो	उनजुरना	और कहो
مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ							
मुश्रिक (जमा)		और न	अहले किताब		से	कुफ़ किया	जिन लोगों ने नहीं चाहते
أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِّنْ رَبِّكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ							
खास कर लेता है	और अल्लाह	तुम्हारा रब	से	भलाई	से	तुम पर	नाज़िल की जाए कि
بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿١٠٥﴾							
105	बड़ा		फ़ज़ल वाला		और अल्लाह	जिसे चाहता है अपनी रहमत से	

और उन्होंने ने उस की पैरवी की जो शैतान सुलेमान (अ) की बादशाहत में पढ़ते थे। और कुफ़ नहीं किया सुलेमान (अ) ने लेकिन शैतानों ने कुफ़ किया, वह लोगों को जादू सिखाते, और जो बाविल में हारुत और मारुत दो फ़रिश्तों पर नाज़िल किया गया, और वह न सिखाते किसी को यहां तक कि कह देते हम तो सिर्फ़ आज़माइश हैं पस तू कुफ़ न कर, सो वह सीखते उन दोनों से वह कुछ जिस से खाविन्द और उस की वीवी के दरमियान जुदाई डालते, और वह नुक्सान पहुँचाने वाले नहीं उस से किसी को मगर अल्लाह के हुकम से, और वह सीखते जो उन्हें नुक्सान पहुँचाए और उन्हें नफ़ा न दे, और अलबत्ता वह जान चुके थे कि जिस ने यह ख़रीदा उस के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं, और अलबत्ता बुरा है जिस के बदले उन्होंने ने अपने आप को बेच दिया। काश वह जानते होते। (102)

और अगर वह ईमान ले आते और परहेज़गार बन जाते तो अल्लाह के पास अच्छा बदला पाते, काश वह जानते होते। (103)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! राइना न कहो और उनजुरना (हमारी तरफ़ तवज्जह फ़रमाइए) कहो और सुनो, और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (104)

अहले किताब में से जिन लोगों ने कुफ़ किया वह नहीं चाहते और न मुश्रिक कि तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई भलाई नाज़िल की जाए और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत से खास कर लेता है और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है। (105)

कोई आयत जिसे हम मनसूख करते हैं या उसे हम भुला देते हैं उस से बेहतर या उस जैसी ले आते हैं, क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह हर शौ पर कादिर है। (106)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की वादशाहत, और तुम्हारे लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हामी और न मददगार। (107)

क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवाल करो जैसे सवाल किए गए इस से पहले मूसा (अ) से, और जो ईमान के बदले कुफ़ इख्तियार कर ले सो वह भटक गया सीधे रास्ते से। (108)

बहुत से अहले किताब ने चाहा कि वह काश तुम्हें लौटा दें तुम्हारे ईमान के वाद कुफ़ में, अपने दिल के हसद की वजह से, उस के वाद जब कि उन पर हक़ वाज़ेह हो गया, पस तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (109)

और नमाज़ काइम करो और देते रहो ज़कात, और अपने लिए जो भलाई आगे भेजोगे तुम उसे पा लोगे अल्लाह के पास, बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (110)

और उन्होंने ने कहा हरगिज़ दाख़िल न होगा जन्नत में सिवाए उस के जो यहूदी हो या नसरानी, यह उन की झूटी आर्जूएँ हैं, कह दीजिए तुम लाओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। (111)

क्यों नहीं? जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के लिए झुका दिया और वह नेकोकार हो तो उस के लिए उस का अजर उस के रब के पास है, और उन पर कोई खौफ़ नहीं और न वह ग़मगीन होंगे। (112)

مَا نَنْسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلَهَا									
या उस जैसा		उस से	बेहतर	ले आते हैं	या उसे भुला देते हैं	कोई आयत	जो हम मनसूख करते हैं		
أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٦﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ									
उस के लिए	कि अल्लाह	क्या तू नहीं जानता	106	कादिर	हर शौ	पर	कि अल्लाह	तू जानता	क्या नहीं
مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ مِّنْ									
कोई	अल्लाह के सिवा	से	तुम्हारे लिए	और नहीं	और ज़मीन	आस्मानों	वादशाहत		
وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٠٧﴾ أَمْ تُرِيدُوْنَ أَنْ تَسْأَلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا									
जैसे	अपना रसूल	सवाल करो	कि	क्या तुम चाहते हो	107	और न मददगार	हामी		
سَئِلَ مُوسٰى مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ									
ईमान के बदले		कुफ़	इख़्तियार कर ले	और जो	इस से पहले	मूसा	सवाल किए गए		
فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٠٨﴾ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ									
अहले किताब		से	बहुत	चाहा	108	रास्ता	सीधा	सो वह भटक गया	
لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفٰرًا ۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ									
वजह से		हसद	कुफ़ में	तुम्हारे ईमान	वाद	से	काश तुम्हें लौटा दें		
اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ فَاَعْفُوْا									
पस तुम माफ़ कर दो		हक़	उन पर	वाज़ेह हो गया	जब कि	वाद	अपने दिल		
وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يٰتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖۚ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ									
चीज़	हर	पर	बेशक अल्लाह	अपना हुक्म	लाए अल्लाह	यहां तक	और दरगुज़र करो		
قَدِيْرٌ ﴿١٠٩﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَمَا تُقَدِّمُوْا									
आगे भेजोगे	और जो	ज़कात	और देते रहो	नमाज़	और तुम काइम करो	109	कादिर		
لَاۡنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ									
जो कुछ तुम करते हो		बेशक अल्लाह	अल्लाह के पास	तुम पा लोगे उसे	भलाई	अपने लिए			
بَصِيْرٌ ﴿١١٠﴾ وَقَالُوْا لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَن كَانَ هُوْدًا									
यहूदी	हो	जो	सिवाए	जन्नत	हरगिज़ दाख़िल न होगा	और उन्होंने ने कहा	110	देखने वाला	
اَوْ نَضْرٰى تِلْكَ اَمَانِيْهُمْۖ قُلْ هَاتُوْا بُرْهٰنَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ									
अगर तुम हो		अपनी दलील	तुम लाओ	कह दीजिए	झूटी आर्जूएँ	यह	या नसरानी		
صٰدِقِيْنَ ﴿١١١﴾ بَلٰٓىۤءَ مَنۢ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗ									
तो उस के लिए	नेकोकार	और वह	अल्लाह के लिए	अपना चेहरा	झुका दिया	जिस	क्यों नहीं	111	सच्चे
اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١١٢﴾									
112	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई खौफ़	और न	उस का रब	पास	उस का अज़र

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصْرَى عَلَى شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصْرَى							
नसारा	और कहा	किसी चीज़	पर	नसारा	नहीं	यहूद	और कहा
لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَى شَيْءٍ وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ							
जो लोग	कहा	इसी तरह	किताब	पढ़ते हैं	हालांकि वह	किसी चीज़ पर	यहूद
لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ							
क़ियामत के दिन		फ़ैसला करेगा उन के दरमियान		सो अल्लाह	उन की बात	जैसी	इल्म नहीं रखते
فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٣﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ							
रोका	से-जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	113	इख़तिलाफ़ करते	उस में	वह थे जिस में
مَسْجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۚ							
उस की वीरानी	में	और कोशिश की	उस का नाम	उस में	ज़िक्र किया जाए	कि	अल्लाह की मस्जिदें
أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا							
दुनिया में	उन के लिए	डरते हुए	मगर	वहां दाख़िल होते	कि	उन के लिए	न था यह लोग
خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ							
और मग़रिब	और अल्लाह के लिए मशरूक		114	बड़ा	अज़ाब	आख़िरत में	और उन के लिए रुसवाई
فَإَيْنَمَا تَوَلَّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾							
115	जानने वाला है	बुसज़त वाला	वेशक अल्लाह	अल्लाह का सामना	तो उस तरफ़	तुम मुँह करो	सो जिस तरफ़
وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ سُبْحَنَهُ ۚ بَلْ لَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ							
आस्मानों में		जो	बल्कि उस के लिए	वह पाक है	बेटा	बना लिया अल्लाह ने	और उन्होंने ने कहा
وَالْأَرْضِ ۚ كُلُّ لَّهُ قَنِينٌ ﴿١١٦﴾ بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ							
और ज़मीन	आस्मानों		पैदा करने वाला	116	ज़ेरे फ़रमान	उस के लिए	सब और ज़मीन
وَإِذَا قُضِيَ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِينَ							
जो लोग	और कहा	117	तो वह हो जाता है	“हो जा”	उसे	कहता है	तो यही कोई काम वह फ़ैसला करता है और जब
لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ كَذَلِكَ							
इसी तरह	कोई निशानी	हमारे पास आती	या	हम से कलाम करता अल्लाह		क्यों नहीं	इल्म नहीं रखते
قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ ۚ							
उन के दिल		एक जैसे हो गए	इन की बात	जैसी	इन से पहले	जो लोग	कहा
قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿١١٨﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ							
हक़ के साथ	आप को भेजा	वेशक हम	118	यकीन रखते हैं	लोगों के लिए	निशानियाँ	हम ने बाज़ेह कर दी
بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ﴿١١٩﴾							
119	दोज़ख़ वाले			से	और न आप से पूछा जाएगा	और डराने वाला	खुशख़बरी देने वाला

और यहूद ने कहा नसारा किसी चीज़ पर नहीं, और नसारा ने कहा यहूदी किसी चीज़ पर नहीं हालांकि वह पढ़ते हैं किताब। इसी तरह उन लोगों ने उन जैसी बात कही जो इल्म नहीं रखते, सो अल्लाह उन के दरमियान क़ियामत के दिन फ़ैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़तिलाफ़ करते थे। (113)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिस ने अल्लाह की मस्जिदों से रोका कि उन में अल्लाह का नाम लिया जाए, और उस की वीरानी की कोशिश की, उन लोगों के लिए (हक़) न था कि वहां दाखिल होते मगर डरते हुए, उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अज़ाब है। (114)

और अल्लाह के लिए है मशरूक और मग़रिब, सो जिस तरफ़ तुम मुँह करो उसी तरफ़ अल्लाह का सामना है, वेशक अल्लाह बुसज़त वाला, जानने वाला है। (115)

और उन्होंने ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है, वह पाक है, बल्कि उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के ज़ेरे फ़रमान है। (116)

वह पैदा करने वाला है आस्मानों का और ज़मीन का, और जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उसे यही कहता है “हो जा” तो वह हो जाता है। (117)

और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्होंने ने कहा अल्लाह हम से कलाम क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती? इसी तरह इन से पहले लोगों ने इन जैसी बात कही, इन (अगले पिछले गुमराहों) के दिल एक जैसे हैं। हम ने यकीन रखने वाले लोगों के लिए निशानियाँ बाज़ेह कर दी हैं। (118)

वेशक हम ने आप को भेजा हक़ के साथ, खुशख़बरी देने वाला, डराने वाला, और आप से न पूछा जाएगा दोज़ख़ वालों के बारे में। (119)

और आप से हरगिज़ राज़ी न होंगे यहूदी और न नसारा जब तक आप उन के दीन की पैरवी न करें, कह दें! वेशक अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है, और अगर आप ने उन की खाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आ गया, आप के लिए अल्लाह से कोई हिमायत करने वाला नहीं और न मददगार। (120)

हम ने जिन्हें किताब दी वह उस की तिलावत करते हैं जैसे तिलावत का हक है, वह उस पर ईमान रखते हैं, और जो उस का इन्कार करें वही ख़सारह पाने वाले हैं। (121) ऐ बनी इस्राईल! मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम पर की और यह कि मैं ने तुम्हें ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत दी। (122)

और उस दिन से डरो (जिस दिन) कोई शख्स बदला न हो सकेगा किसी शख्स का कुछ भी, और न उस से कोई मुआवज़ा कुबूल किया जाएगा, और न उसे कोई सिफ़ारिश नफ़ा देगी, और न उन की मदद की जाएगी। (123)

और जब इब्राहीम (अ) को उन के रब ने चन्द बातों से आज़माया तो उन्होंने न वह पूरी कर दी, उस ने फ़रमाया वेशक मैं तुम्हें लोगों का इमाम बनाने वाला हूँ, उस ने कहा और मेरी औलाद को (भी)? उस ने फ़रमाया मेरा अ़हद ज़ालिमों को नहीं पहुँचता। (124)

और जब हम नें खाने क़अबा को बनाया लोगों के लिए (बार बार) लौटने (इज्तिमाअ) की जगह और अमन की जगह, और “मुक़ामे इब्राहीम” को नमाज़ की जगह बनाओ, और हम ने हुक्म दिया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) को कि वह मेरा घर पाक रखें तबाफ़ करने वालों और एतिकाफ़ करने वालों के लिए, और रुकूअ सिज्दा करने वालों के लिए। (125)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! इस शहर को बना अमन वाला, और इस के रहने वालों को फलों की रोज़ी दे जो उन में से ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, उस ने फ़रमाया जिस ने कुफ़ किया उस को थोड़ा सा नफ़ा दूँगा फिर उस को मजबूर कहूँगा दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़, और वह लौटने की बुरी जगह है। (126)

وَلَنْ تَرْضَىٰ عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۚ								
उन का दीन	आप पैरवी (न) करें	जब तक	नसारा	और न	यहूदी	आप से	और हरगिज़ राज़ी न होंगे	
قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ وَلَئِنَّ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي								
वह जो कि (जबकि)	बाद	उन की खाहिशात	आप ने पैरवी की	और अगर	हिदायत	वही	अल्लाह की हिदायत	वेशक कह दें
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۚ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٢٠﴾								
120	मददगार	और न	हिमायत करने वाला	कोई	अल्लाह से	नहीं आप के लिए	इल्म	आप के पास आगया
الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ								
ईमान रखते हैं उस पर		वही लोग	उस की तिलावत	हक़	उस की तिलावत करते हैं	किताब	हम ने दी उन्हें	जिन्हें
وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿١٢١﴾ يٰبَنِي إِسْرَءِيلَ اذْكُرُوا								
तुम याद करो	ऐ बनी इस्राईल		121	ख़सारह पाने वाले	वह	वही	इन्कार करें उस का	और जो
نِعْمَتِي الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ ۖ وَأَنبِئْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِينَ ﴿١٢٢﴾								
122	ज़माने वाले	पर	तुम्हें फज़ीलत दी	और यह कि मैं ने	तुम पर	मैं ने इन्ज़ाम की	जो कि	मेरी नेमत
وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا								
उस से	और न कुबूल किया जाएगा	कुछ	किसी शख्स से	कोई शख्स	बदला न होगा	वह दिन	और डरो	
عَدْلٌ ۚ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذْ ابْتَلَىٰ								
आज़माया	और जब	123	मदद की जाएगी	उन	और न	कोई सिफ़ारिश	उसे नफ़ा देगी	और कोई मुआवज़ा
إِبْرٰهِيْمَ رَبَّهُ بِكَلِمَتٍ فَاتَمَمَّهَنَّ ۚ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا ۚ قَالَ								
उस ने कहा	इमाम	लोगों का	तुम्हें बनाने वाला हूँ	वेशक मैं	उस ने फ़रमाया	तो वह पूरी कर दी	चन्द बातों से	उन का रब
								इब्राहीम (अ)
وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۚ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ ﴿١٢٤﴾ وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ								
खाने क़अ़बा	बनाया हम ने	और जब	124	ज़ालिम (जमा)	मेरा अ़हद	नहीं पहुँचता	उस ने फ़रमाया	मेरी औलाद और से
مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا ۚ وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرٰهِيْمَ مُصَلًّى ۖ وَعَهِدْنَا								
और हम ने हुक्म दिया	नमाज़ की जगह	“मुक़ामे इब्राहीम”		से	और तुम बनाओ	और अमन की जगह	लोगों के लिए	इज्तिमाअ की जगह
إِلَىٰ إِبْرٰهِيْمَ ۖ وَاسْمِعِيْلَ ۚ إِنَّ طَهْرًا بَيْتِي لِّلطَّٰئِفِينَ وَالْعٰكِفِينَ وَالرُّكَّعِ								
और रुकूअ करने वाले	और एतिकाफ़ करने वाले	तवाफ़ करने वालों के लिए		मेरा घर	पाक रखें	कि वह	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ) को
السُّجُودِ ﴿١٢٥﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا آمِنًا وَارْزُقْ								
और रोज़ी दे	अमन वाला	यह शहर	बना	ऐ मेरे रब	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	125
								सिज्दा करने वाले
أَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرَاتِ مَنْ آمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ قَالَ وَمَنْ								
और जो	उस ने फ़रमाया	और आख़िरत का दिन		अल्लाह पर	उन से	ईमान लाए	जो फल (जमा)	से इस के रहने वाले
كَفَرَ فَأَمَتَّعُهُ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُ إِلَىٰ عَذَابِ النَّارِ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٢٦﴾								
126	लौटने की जगह	और बुरी	दोज़ख़ का अज़ाब	तरफ़	मजबूर कहूँगा उस को	फिर	थोड़ा	उसे नफ़ा दूँगा
								उस ने क़फ़ किया

مَنْزِلٌ

١٢

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ									
कुबूल फरमा ले हम से	ऐ हमारे रब	और इस्माईल (अ)	खाने क़ज़वा	से	बुन्यादेँ	इब्राहीम (अ)	उठाते थे	और जब	
إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ									
अपना	फरमावरदार	और हमें बना ले	ऐ हमारे रब	127	जानने वाला	सुनने वाला	तू	वेशक तू	
وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةٌ مُّسْلِمَةٌ لَّكَ ۖ وَإِنَّا مِنَّا مُسْلِمُونَ ۖ									
और हमारी तौवा कुबूल फरमा	हज के तरीक़े	और हमें दिखा	अपनी	फरमावरदार	उम्मत	हमारी औलाद	और से		
إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا									
एक रसूल	उन में	और भेज	ऐ हमारे रब	128	रहम करने वाला	तौवा कुबूल करने वाला	तू	वेशक	
مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ									
और हिक्मत (दानाई)	“किताब”	और उन्हें तालीम दे	तेरी आयतें	उन पर	वह पढ़े	उन से			
وَيُزَكِّيهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَنْ يَّرْغَبْ عَنْ مِّلَّةِ									
दीन	से	मुँह मोड़े	और कौन	129	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तू	वेशक	और उन्हें पाक करे
إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهُ وَلَقَدْ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا ۖ									
दुनिया में	हम ने उसे चुन लिया	और वेशक	अपने आप	बेवकूफ बनाया	जिस ने	सिवाए	इब्राहीम (अ)		
وَأَنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿١٣٠﴾ إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ									
सर झुका दे	उस का रब	उस को	जब कहा	130	नेकोकार (जमा)	से	आखिरत में	और वेशक वह	
قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٣١﴾ وَوَصَّىٰ بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ									
अपने बेटे	इब्राहीम (अ)	उस की	और वसीयत की	131	तमाम जहान	रब के लिए	मैं ने सर झुका दिया	उस ने कहा	
وَيَعْقُوبُ ۚ يَبْنِي إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ لَكُمْ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا									
मगर	पस तुम हरगिज़ न मरना	दीन	तुम्हारे लिए	चुन लिया	वेशक अल्लाह	मेरे बेटो	और याकूब (अ)		
وَأَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٣٢﴾ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ									
मौत	याकूब (अ)	आई	जब	मौजूद	क्या तुम थे	132	मुसलमान (जमा)	और तुम	
إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِن بَعْدِي قَالُوا نَعْبُدُ									
हम इबादत करेंगे	उन्होंने ने कहा	मेरे बाद	किस की तुम इबादत करोगे?	अपने बेटों को	जब उस ने कहा				
إِلَهَكَ وَإِلَهَ آبَائِكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِلَهًا وَاحِدًا ۚ									
वाहिद	माबूद	और इस्हाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तेरे बाप दादा	और माबूद	तेरा माबूद		
وَنَحْنُ لَهُ مُّسْلِمُونَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ									
जो उस ने कमाया	उस के लिए	गुज़र गई	एक उम्मत	यह	133	फरमावरदार	उसी के	और हम	
وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٤﴾									
134	जो वह करते थे	उस के बारे में	और तुम से न पूछा जाएगा	जो तुम ने कमाया	और तुम्हारे लिए				

और जब उठाते थे इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) खाने क़अबा की बुन्यादेँ (यह दुआ करते थे) ऐ हमारे परवरदिगार! हम से कुबूल फ़रमा ले, वेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (127)

ऐ हमारे रब! और हमें अपना फ़रमावरदार बना ले और हमारी औलाद में से एक अपनी फ़रमावरदार उम्मत बना और हमें हज के तरीक़े दिखा और हमारी तौवा कुबूल फ़रमा, वेशक तू ही तौवा कुबूल करने वाला, रहम करने वाला है। (128)

ऐ हमारे रब! और उन में एक रसूल भेज उन में से, वह उन पर तेरी आयतें पढ़े और उन्हें “किताब” और “हिक्मत” (दानाई) की तालीम दे, और उन्हें पाक करे, वेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (129)

और कौन है जो मुँह मोड़े इब्राहीम (अ) के दीन से? सिवाए उस के जिस ने अपने आप को बेवकूफ़ बनाया, और वेशक हम ने उसे दुनिया में चुन लिया। और वेशक वह आखिरत में नेकोकारों में से है। (130)

जब उस को उस के रब ने कहा तू सर झुका दे, उस ने कहा मैं ने तमाम जहानों के रब के लिए सर झुका दिया। (131)

और इब्राहीम (अ) ने अपने बेटों को और याकूब (अ) ने (भी) उसी की वसीयत की, ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने वेशक चुन लिया है तुम्हारे लिए दीन, पस तुम हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान। (132)

क्या तुम थे मौजूद जब याकूब (अ) को मौत आई, जब उस ने अपने बेटों को कहा: मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे? उन्होंने ने कहा हम इबादत करेंगे तेरे माबूद की, और तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इस्हाक़ (अ) के माबूद वाहिद की, और हम उसी के फ़रमावरदार हैं। (133)

यह एक उम्मत थी जो गुज़र गई, उस के लिए जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। (134)

और उन्होंने ने कहा तुम यहूदी या नसरानी हो जाओ हिदायत पा लोगे, कह दीजिए बल्कि (हम पैरवी करते हैं) एक अल्लाह के हो जाने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की और वह मुश्रिकों में से न थे। (135)

कह दो हम ईमान लाए अल्लाह पर और जो हमारी तरफ नाज़िल किया गया और जो नाज़िल किया गया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इसहाक (अ) और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) को और जो दिया गया नबियों को उन के रब की तरफ से, हम उन में से किसी एक के दरमियान फर्क नहीं करते, और हम उसी के फरमांवरदार हैं। (136)

पस अगर वह ईमान ले आएँ जैसे तुम उस पर ईमान लाए हो तो वह हिदायत पा गए, और अगर उन्होंने ने मुँह फेरा तो बेशक वही ज़िद में है, पस अनकरीब उन के मुकाबिले में आप के लिए अल्लाह काफी होगा, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (137)

(हम ने लिया) रंग अल्लाह का, और किस का अच्छा है रंग अल्लाह से? और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। (138)

कह दीजिए, क्या तुम हम से झगड़ते हो अल्लाह के बारे में हालांकि वही है हमारा रब और तुम्हारा रब, और हमारे लिए हमारे अमल और तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, और हम खालिस उसी के हैं। (139)

क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ), और इसहाक (अ), और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) यहूदी थे या नसरानी। कह दीजिए क्या तुम ज़ियादा जानने वाले हो या अल्लाह? और कौन है बड़ा ज़ालिम उस से जिस ने वह गवाही छुपाई जो अल्लाह की तरफ से उस के पास थी, और अल्लाह देखवर नहीं उस से जो तुम करते हो। (140)

यह एक उम्मत थी जो गुज़र चुकी, उस के लिए है जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। (141)

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصْرَى تَهْتَدُوا قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ								
इब्राहीम (अ)	बल्कि दीन	कह दीजिए	तुम हिदायत पा लोगे	नसरानी	या	यहूदी	हो जाओ	और उन्होंने ने कहा
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُسْرِكِينَ ﴿١٣٥﴾ قُولُوا آمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا أُنْزِلَ								
नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कह दो	135	मुश्रिकीन	से	और न थे एक अल्लाह के हो जाने वाले
إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ								
और याकूब (अ)	और इसहाक (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तरफ	नाज़िल किया गया	और जो	हमारी तरफ	
وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ								
उन के रब से	नबियों	दिया गया	और जो	और ईसा (अ)	मूसा (अ)	दिया गया	और जो	और औलादे याकूब (अ)
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾ فَإِنْ								
पस अगर	136	फरमांवरदार	उसी के	और हम	उन से	किसी एक	दरमियान	हम फर्क नहीं करते
أَمِنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ فَقَدْ اهْتَدَوْا ۖ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا								
तो बेशक वही	उन्होंने ने मुँह फेरा	और अगर	तो वह हिदायत पा गए	उस पर	तुम ईमान लाए	जैसे	वह ईमान लाएँ	
هُمْ فِي شِقَاقٍ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٧﴾								
137	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	अल्लाह	पस अनकरीब आप के लिए उन के मुकाबिले में काफी होगा	ज़िद	में	वह
صِبْغَةَ اللّٰهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً وَنَحْنُ لَهُ								
उसी की	और हम	रंग	अल्लाह	से	अच्छा	और किस	रंग अल्लाह का	
عِبْدُونَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ أَتَحَاجُّونَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا								
और हमारे लिए	और तुम्हारा रब	हमारा रब	हालांकि वही	अल्लाह के बारे में	क्या तुम हम से झगड़ा करते हो?	कह दीजिए	138	इबादत करने वाले
أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾ أَمْ تَقُولُونَ								
तुम कहते हो	क्या	139	खालिस	उसी के	और हम	तुम्हारे अमल	और तुम्हारे लिए	हमारे अमल
إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا								
थे	और औलादे याकूब (अ)	और याकूब (अ)	और इसहाक (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	कि		
هُودًا أَوْ نَصْرَى قُلْ ءَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللّٰهُ ۚ وَمَنْ أَظْلَمُ								
बड़ा ज़ालिम	और कौन	या अल्लाह	ज़ियादा जानने वाले	क्या तुम	कह दीजिए	या नसरानी	यहूदी	
مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللّٰهِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ								
बेखबर	और नहीं अल्लाह	अल्लाह से	उस के पास	गवाही	छुपाई	से-जिस		
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ								
उस ने कमाया	जो	उस के लिए	गुज़र चुकी	एक उम्मत	यह	140	तुम करते हो	उस से जो
وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾								
141	वह करते थे	उस से जो	और तुम से न पूछा जाएगा	जो तुम ने कमाया	और तुम्हारे लिए			

٢

سَيَقُولُ الشُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّهُمْ عَن قِبَلَتِهِمْ						
अब कहेंगे	वेवकूफ	से	लोग	किस	उन्हें (मुसलमानों को) फेर दिया	उन का क़िबला
الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ						
वह जिस	वह थे	उस पर	आप कह दें	अल्लाह	मशरिफ़	और मग़रिब
जिस को	चाहता है	वह हिदायत देता है	जिस को	चाहता है	वह हिदायत देता है	और मग़रिब
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (١٤٢) وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ						
तरफ़	रास्ता	सीधा	142	और उसी तरह	हम ने तुम्हें बनाया	उम्मत
गवाह	ताकि तुम हो	मोअतदिल	गवाह	तुम पर	और नहीं मुकर्रर किया हम ने	वह जिस
عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي						
पर	लोग	और हो	रसूल	तुम पर	गवाह	वह जिस
वह जिस	क़िबला	और नहीं मुकर्रर किया हम ने	वह जिस	क़िबला	और नहीं मुकर्रर किया हम ने	वह जिस
كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعِ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبْ عَلَى عَقْبَيْهِ						
आप (स) थे	उस पर	मगर	ताकि हम मालूम कर लें कौन	पैरवी करता है	रसूल (स)	उस से जो
अपनी एड़ियाँ	पर	फिर जाता है	उस से जो	रसूल (स)	पैरवी करता है	ताकि हम मालूम कर लें कौन
وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ وَمَا كَانَ اللَّهُ						
और वेशक	यह थी	भारी बात	मगर	पर	जिन्हें	हिदायत दी
अल्लाह	और नहीं	अल्लाह	हिदायत दी	जिन्हें	पर	और नहीं
لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ (١٤٣) قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ						
कि वह ज़ाया करे	तुम्हारा ईमान	वेशक अल्लाह	लोगों के साथ	बड़ा शफ़ीक़	रहम करने वाला	143
बार बार फिरना	हम देखते हैं	बार बार फिरना	हम देखते हैं	बार बार फिरना	हम देखते हैं	बार बार फिरना
وَجْهَكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُolِيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ						
आप (स) का मुँह	में (तरफ़)	आस्मान	तो ज़रूर हम फेर देंगे आप को	क़िबला	उसे आप (स) पसन्द करते हैं	पस आप फेर लें
अपना मुँह	अपना मुँह	अपना मुँह	अपना मुँह	अपना मुँह	अपना मुँह	अपना मुँह
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ وَإِنَّ الَّذِينَ						
मसजिदे हराम (खाने क़ब़ावा)	और जहाँ कहीं	तुम हो	सो फेर लिया करो	अपने मुँह	उस की तरफ़	और वेशक
जिन्हें	और वेशक	जिन्हें	और वेशक	जिन्हें	और वेशक	जिन्हें
أُوتُوا الْكِتَابَ لِيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا						
दी गई किताब (अहले किताब)	वह ज़रूर जानते हैं	कि यह	हक़	से	उन का रब	और नहीं
उस से जो	वेख़बर	अल्लाह	वेख़बर	अल्लाह	वेख़बर	अल्लाह
يَعْمَلُونَ (١٤٤) وَلَئِنْ آتَيْتِ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَا تَبِعُوا						
वह करते हैं	144	और अगर	आप (स) लाएं	जिन्हें	दी गई किताब (अहले किताब)	तमाम
निशानियाँ	वह पैरवी न करेंगे	निशानियाँ	वह पैरवी न करेंगे	निशानियाँ	वह पैरवी न करेंगे	निशानियाँ
قِبْلَتَكَ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبَلَتِهِمْ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ						
आप (स) का क़िबला	और न	आप (स)	पैरवी करने वाले	उन का क़िबला	और नहीं	उन से कोई
किसी	क़िबला	पैरवी करने वाला	किसी	क़िबला	पैरवी करने वाला	किसी
وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّكَ						
और अगर	आप ने पैरवी की	उन की खाहिशात	उस के बाद	कि आ चुका आप के पास	इल्म	वेशक आप (स)
إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ (١٤٥) الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابُ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ						
अब	से	वे इन्साफ़	145	और जिन्हें	हम ने दी	किताब
वह पहचानते हैं	जैसे	वह उसे पहचानते हैं	जैसे	वह उसे पहचानते हैं	वह पहचानते हैं	जैसे
أَبْنَاءَهُمْ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ (١٤٦)						
अपने बेटे	और वेशक	एक गिरोह	उन से	वह छुपाते हैं	हक़	हालाकि वह
वह जानते हैं	वह जानते हैं	वह जानते हैं	वह जानते हैं	वह जानते हैं	वह जानते हैं	वह जानते हैं

अब वेवकूफ कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज़ ने उस क़िबले से फेर दिया जिस पर वह थे? आप कह दें कि मशरिफ़ और मग़रिब अल्लाह (ही) का है, वह जिस को चाहता है हिदायत देता है सीधे रास्ते की तरफ़। (142)

और उसी तरह हम ने तुम्हें मोअतदिल उम्मत बनाया ताकि तुम हो लोगों पर गवाह, और रसूल (स) तुम पर गवाह हों, और हम ने मुकर्रर नहीं किया था वह क़िबला जिस पर आप (स) थे मगर (इस लिए) कि हम मालूम कर लें कौन रसूल (स) की पैरवी करता है और कौन फिर जाता है अपनी एड़ियों पर (उलटे पावों), और वेशक यह भारी बात थी मगर उन पर (नहीं) जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि तुम्हारा ईमान ज़ाया कर दे, वेशक अल्लाह लोगों के साथ बड़ा शफ़ीक़, रहम करने वाला है। (143)

हम देखते हैं बार बार आप (स) का मुँह आस्मान की तरफ़ फिरना, तो ज़रूर हम आप को उस क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जिसे आप (स) पसन्द करते हैं, पस आप (स) अपना मुँह मसजिदे हराम (खाने क़ब़ावा) की तरफ़ फेर लें, और जहाँ कहीं तुम हो फेर लिया करो अपने मुँह उस की तरफ़, और वेशक अहले किताब ज़रूर जानते हैं कि यह हक़ है उन के रब की तरफ़ से, और अल्लाह उस से वेख़बर नहीं जो वह करते हैं। (144)

और अगर आप (स) लाएं अहले किताब के पास तमाम निशानियाँ वह (फिर भी) आप (स) के क़िबले की पैरवी न करेंगे, और न आप (स) उन के क़िबले की पैरवी करने वाले हैं, और उन में से कोई किसी (दूसरे) के क़िबले की पैरवी करने वाला नहीं, और अगर आप ने उन की खाहिशात की पैरवी की उस के बाद कि आप के पास इल्म आ चुका तो अब वेशक आप वे इन्साफ़ों में से होंगे। (145)

और जिन्हें हम ने किताब दी वह उसे पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं, और वेशक उन में से एक गिरोह हक़ को छुपाता है हालांकि वह जानते हैं। (146)

(यह) हक है आप के रब की तरफ से, पस आप न हो जाएं शक करने वालों में से। (147)

और हर एक के लिए एक सिम्त है जिस तरफ वह रख करता है, पस तुम नेकियों में सबकत ले जाओ, जहां कहीं तुम होगे अल्लाह तुम्हें इकट्ठा कर लेगा, वेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (148)

और जहां से आप (स) निकलें, पस अपना रख मसजिदे हराम की तरफ कर लें, और वेशक आप के रब (की तरफ) से यही हक है और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (149)

और जहां कहीं से आप निकलें, अपना रख मसजिदे हराम की तरफ कर लें, और तुम जहां कहीं हो सो कर लो अपने रख उस की तरफ, ताकि लोगों के लिए तुम पर कोई हुज्जत न रहे, सिवाए उन के जो उन में से बे इन्साफ हैं, सो तुम उन से न डरो, और मुझ से डरो ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दूँ, और ताकि तुम हिदायत पाओ। (150)

जैसा कि हम ने तुम में एक रसूल तुम में से भेजा, वह तुम पर हमारी आयतें पढ़ते हैं और वह तुम्हें पाक करते हैं, और तुम्हें किताब ओ हिक्मत (दानाई) सिखाते हैं, और तुम्हें वह सिखाते हैं जो तुम न थे जानते। (151)

सो मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद रखूंगा, और तुम मेरा शुक्र अदा करो और मेरी नाशुक्री न करो। (152)

ऐ ईमान वालो! तुम सवर और नमाज़ से मदद मांगो, वेशक अल्लाह सवर करने वालों के साथ है। (153)

और जो अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम (उस का) शऊर नहीं रखते। (154)

और हम तुम्हें ज़रूर आजमाएंगे कुछ ख़ौफ से, और भूक से, और माल ओ जान और फलों के नुक़सान से, और आप (स) खुशख़बरी दें सवर करने वालों को। (155)

वह जिन्हें जब कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें: हम अल्लाह के लिए हैं और हम उसी की तरफ लौटने वाले हैं। (156)

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۚ وَلِكُلِّ وُجْهَةً هُوَ								
हक	से	आप का रब	पस आप न हो जाएं	से	शक करने वाले	147	और हर एक के लिए	एक सिम्त
مُؤَيِّدَهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ آيِنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمْ اللَّهُ جَمِيعًا ۖ								
उस तरफ रख करता है	पस तुम सबकत ले जाओ	नेकियां	जहां कहीं	तुम होगे	ले आयागा तुम्हें	अल्लाह	इकट्ठा	
إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ (148) وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ								
वेशक अल्लाह	पर	हर	चीज़	क़ुदरत रखने वाला	148	और से	जहां	आप (स) निकलें
तरफ	मसजिदे हराम	और वेशक यही	हक	आप (स) के रब से	और नहीं	अल्लाह	बेख़बर	उस से जो
تَعْمَلُونَ ۚ (149) وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ								
तुम करते हो	149	और जहां से	आप निकलें	पस कर लें	अपना रख	तरफ	मसजिदे हराम	
وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۖ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ								
और जहां कहीं	तुम हो	सो कर लो	अपने रख	उस की तरफ	ताकि न	रहे	लोगों के लिए	तुम पर
حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۖ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي ۚ وَلَا تَمَّ								
कोई हुज्जत	सिवाए	वह जो कि	वे इन्साफ	उन से	सो तुम न डरो उन से	और डरो मुझ से	और मैं पूरी कर दूँ	ताकि मैं
نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۚ (150) كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ								
अपनी नेमत	तुम पर	और ताकि तुम	हिदायत पाओ	150	जैसा कि	हम ने भेजा	तुम में	एक रसूल
يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا								
वह पढ़ते हैं	तुम पर	हमारे हुक्म	और पाक करते हैं तुम्हें	और सिखाते हैं तुम को	किताब	और हिक्मत	और सिखाते हैं तुम्हें	जो
لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۚ (151) فَادْكُرُونِي أذكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ۚ (152)								
तुम न थे	जानते	151	सो याद करो मुझे	मैं याद रखूंगा तुम्हें	और तुम शुक्र करो मेरा	और न	और नाशुक्री करो मेरी	152
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۚ (153)								
ऐ	जो कि	ईमान लाए	तुम मदद मांगो	सवर से	और नमाज़	वेशक अल्लाह	साथ	सवर करने वाले
وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۚ بَلْ أحيَاءٌ وَلَكِنْ								
और न	कहो	उसे जो	मारे जाएं	में	रास्ता	अल्लाह	मुर्दा	बल्कि
لَا تَشْعُرُونَ ۚ (154) وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ								
तुम शऊर नहीं रखते	154	और ज़रूर हम आजमाएंगे तुम्हें	कुछ	से	ख़ौफ	और भूक	और नुक़सान	
مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۚ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۚ (155) الَّذِينَ إِذَا								
से	माल (जमा)	और जान (जमा)	और फल (जमा)	और खुशख़बरी दें	सवर करने वाले	155	वह जो	जब
أَصَابَتْهُمْ مُّصِيبَةٌ ۖ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَأَنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۚ (156)								
पहुँचे उन्हें	कोई मुसीबत	वह कहें	हम अल्लाह के लिए	और हम	उस की तरफ	लौटने वाले	156	

ع
١
٢
٣
٤
٥
٦
٧
٨
٩
١٠
١١
١٢

ع
١
٢
٣
٤
٥
٦
٧
٨
٩
١٠
١١
١٢

أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾									
157	हिदायत यापता	वह	और यही लोग	और रहमत	उन का रब	से	इनायतें	उन पर	यही लोग
إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ									
उमरा करे	या	खाने कड़ावा	हज करे	पस जो	अल्लाह	निशानात	से	और मरवा	सफा वेशक
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ									
तो वेशक अल्लाह	कोई नेकी	खुशी से करे	और जो	उन दोनों	वह तवाफ करे	कि	उस पर	तो नहीं कोई हर्ज	
شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَى									
और हिदायत	खुली निशानियां	से	जो नाज़िल किया हम ने	छुपाते है	जो लोग	वेशक	158	जानने वाला	कद्रदान
مِّنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ									
लानत करता है उन पर अल्लाह	यही लोग		किताब में		लोगों के लिए	हम ने वाज़ेह कर दिया		उस के बाद	
وَيَلْعَنُهُمُ اللَّعْنُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُّوا									
और वाज़ेह किया	और इस्लाह की	उन्होंने ने तौबा की	वह लोग जो	सिवाए	159	लानत करने वाले		और लानत करते है उन पर	
فَأُولَئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ									
जो लोग	वेशक	160	रहम करने वाला	माफ करने वाला	और मैं	उन्हें	मैं माफ करता हूँ	पस यही लोग है	
كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَئِكَ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ									
और फ़रिश्ते	अल्लाह	लानत	उन पर	यही लोग	काफ़िर	और वह	और वह मर गए	काफ़िर हुए	
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٦١﴾ خُلِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ									
अज़ाब	उन से	न हलका होगा	उस में	हमेशा रहेंगे	161	तमाम		और लोग	
وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿١٦٢﴾ وَالْهَكْمُ إِلَهُ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ									
निहायत मेहरवान	सिवाए उस के	नहीं इबादत के लाइक	(एक) यकता	माबूद	और माबूद तुम्हारा	162	मोहलत दी जाएगी	और न उन्हें	
الرَّحِيمُ ﴿١٦٣﴾ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ									
रात	और बदलते रहना	और ज़मीन	आस्मानों	पैदाइश	में	वेशक	163	रहम करने वाला	
وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا									
और जो कि	लोग	नफ़ा देती है	साथ जो	समन्दर	में	बहती है	जो कि	और कश्ती	और दिन
أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا									
उस के मरने के बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया	पानी	से	आस्मानों से	अल्लाह	उतारा	
وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ وَالسَّحَابِ									
और बादल	हवाएं		और बदलना	हर (किसम) के जानवर	से	उस में		और फैलाए	
الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾									
164	अक़ल वाले	लोगों के लिए	निशानियां	और ज़मीन	आस्मान	दरमियान		ताबे	

यही लोग हैं जिन पर उन के रब की तरफ से इनायतें हैं और रहमत है, और यही लोग हिदायत यापता है। (157)

वेशक सफा और मरवा अल्लाह के निशानात में से हैं, पस जो कोई खाने कड़ा का हज करे या उमरा तो उस पर कोई हर्ज नहीं कि उन दोनों का तवाफ करे, और जो खुशी से कोई नेकी करे तो वेशक अल्लाह कद्रदान, जानने वाला है। (158)

वेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने खुली निशानियां और हिदायत नाज़िल की, उस के बाद कि हम ने उसे किताब में लोगों के लिए वाज़ेह कर दिया, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है, और उन पर लानत करते हैं लानत करने वाले। (159)

सिवाए उन लोगों के जिन्होंने ने तौबा की और इस्लाह की और वाज़ेह कर दिया, पस यही लोग हैं जिन्हें मैं माफ करता हूँ, और मैं माफ करने वाला, रहम करने वाला हूँ। (160)

वेशक जो लोग काफिर हुए और वह (काफिर) ही मर गए, यही लोग हैं जिन पर लानत है अल्लाह की और फरिश्तों की और तमाम लोगों की। (161)

वह उस में हमेशा रहेंगे, उन से अज़ाब हलका न होगा, और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (162)

और तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, उस के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, निहायत मेहरवान, रहम करने वाला। (163)

वेशक ज़मीन और आस्मानों की पैदाइश में, और रात और दिन के बदलते रहने में, और कशती में जो समन्दर में बहती है (उन चीज़ों के) साथ जो लोगों को नफा देती हैं, और जो अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को ज़िन्दा किया उस के मरने के बाद, और उस में हर किसम के जानवर फैलाए, और हवाओं के बदलने में, और आस्मान ओ ज़मीन के दरमियान ताबे बादलों में निशानियां हैं (उन) लोगों के लिए (जो) अक़ल वाले हैं। (164)

और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीक अपनाते हैं वह उन से मुहब्बत करते हैं जैसे अल्लाह से मुहब्बत, और जो लोग ईमान लाए (उन्हें) अल्लाह की मुहब्बत सब से ज़ियादा है, और अगर देख लें जिन्होंने ने जुल्म किया (उस वक्त को) जब यह अज़ाब देखेंगे कि तमाम कुव्वत अल्लाह के लिए है और यह कि अल्लाह का अज़ाब सख्त है। (165)

जब बेज़ार हो जाएंगे वह जिन की पैरवी की गई उन से जिन्होंने ने पैरवी की थी और वह अज़ाब देख लेंगे, और उन से तमाम वसाइल कट जाएंगे। (166)

और वह कहेंगे जिन्होंने ने पैरवी की थी काश हमारे लिए दोबारा (दुन्या में लौट जाना होता) तो हम उन से बेज़ारी करते जैसे उन्होंने ने हम से बेज़ारी की, उसी तरह अल्लाह उन के अमल उन्हें हसरतें बना कर दिखाएगा, और वह आग से निकलने वाले नहीं। (167)

ऐ लोगो! खाओ उस में से जो ज़मीन में है हलाल और पाक, और पैरवी न करो शैतान के कदमों की, वेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (168)

वह तुम्हें हुक्म देता है सिर्फ बुराई और बेहयाई का और यह कि तुम अल्लाह (के बारे में) कहो जो तुम नहीं जानते। (169)

और जब उन्हें कहा जाता है उस की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारा तो वह कहते हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने पाया अपने बाप दादा को, भला अगरचे उन के बाप दादा कुछ न समझते हों और हिदायत याफ़ता न हों। (170)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया उन की मिसाल उस शख्स की हालत के मानिंद है जो उस को पुकारता है जो नहीं सुनता सिवाए पुकारने और चिल्लाने (की आवाज़ के), वह बहरे, गूँगे, अंधे हैं, पस वह नहीं समझते। (171)

ऐ वह लोग जो ईमान लाए हो, तुम पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी है और तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम सिर्फ उस की बन्दगी करते हो। (172)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ									
और से	लोग	जो	अपनाते हैं	से	सिवाए	अल्लाह	शरीक	मुहब्बत करते हैं उन से	
كُحِبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا									
जैसे मुहब्बत	अल्लाह	और जो लोग	ईमान लाए	सब से ज़ियादा	मुहब्बत	अल्लाह के लिए	और अगर	देख लें	वह जिन्होंने ने
إِذْ يَرُونَ الْعَذَابَ إِنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۖ وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ (165)									
जब देखेंगे	अज़ाब	कि	कुव्वत	तमाम	और यह कि	अल्लाह	सख्त	अज़ाब	165
إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوْا الْعَذَابَ									
जब बेज़ार हो जाएंगे	वह लोग जो	वह पैरवी की गई	से	जिन्होंने ने	पैरवी की	और वह देखेंगे	अज़ाब		
وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ (166) وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً									
और कट जाएंगे	उन से	वसाइल	166	और कहेंगे	वह जिन्होंने ने	पैरवी की	काश कि	हमारे लिए	दोबारा
فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا كَذَلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ									
तो हम बेज़ारी करते	उन से	जैसे	उन्होंने ने बेज़ारी की	हम से	उसी तरह	उन्हें दिखाएगा	अल्लाह	उन के अमल	
حَسَرَتْ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ (167) يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا									
हसरतें	उन पर	और नहीं वह	निकलने वाले	आग से	167	ऐ	लोग	तुम खाओ	
مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ الشَّيْطَانِ									
उस से जो	ज़मीन में	हलाल	पाक	और न	पैरवी करो	कदमों	शैतान		
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ (168) إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنَّ									
वेशक वह	तुम्हारा	दुश्मन	खुला	168	सिर्फ	तुम्हें हुक्म देता है	बुराई	और बेहयाई	और यह कि
تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ (169) وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا									
तुम कहो	अल्लाह पर	जो नहीं	तुम जानते	169	और जब	कहा जाता है	उन्हें	पैरवी करो	
مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ									
जो उतारा	अल्लाह	वह कहते हैं	वह कि हम पैरवी करेंगे	जो हम ने पाया	उस पर	अपने बाप दादा	भला अगरचे	हों	
أَبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ (170) وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا									
उन के बाप दादा	न समझते हों	कुछ	और न हिदायत याफ़ता हों	170	और मिसाल	जिन लोगों ने कुफ़ किया			
كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمٌّ بُكْمٌ									
मानिंद हालत	वह जो	पुकारता है	उस को जो	नहीं सुनता	सिवाए	पुकारना	और आवाज़	वहरे	गूँगे
عُمًى فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ (171) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ									
अंधे	पस वह	नहीं समझते	171	ऐ	जो लोग	ईमान लाए	तुम खाओ	से	पाक
مَا رَزَقْنَكُمْ وَأَشْكُرُوا لِلَّهِ إِنَّ كُنتُمْ لَعِبْدُونَ (172)									
जो हम ने तुम्हें दिया	और शुक्र करो	अल्लाह का	अगर तुम हो	सिर्फ उस की	बन्दगी करते हो	172			

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخَنِزِيرِ وَمَا أُهْلَ بِهِ									
उस पर	पुकारा गया	और जो	सुव्वर	और गोशत	और खून	मुर्दार	तुम पर	हराम किया	दर हकीकत
لِغَيْرِ اللَّهِ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ									
वेशक अल्लाह	उस पर	गुनाह	तो नहीं	हद से बढ़ने वाला	और न	न सरकशी करने वाला	लाचार हो जाए	पस जो	अल्लाह के सिवा
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٧٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ									
किताब	से	अल्लाह	जो उतारा	छुपाते हैं	जो लोग	वेशक	173	रहम करने वाला	बख्शने वाला
وَيَسْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ									
अपने पेटों	में	नहीं खाते	यही लोग	थोड़ी	कीमत	उस से	और वसूल करते हैं		
إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ									
अज़ाब	और उन के लिए	पाक करेगा उन्हें	और न	कियामत के दिन	अल्लाह	बात करेगा	और न	आग	मगर (सिर्फ)
أَلِيمٌ ﴿١٧٤﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالََةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابِ									
और अज़ाब	हिदायत के बदले	गुमराही	मोल ली	जिन्होंने ने	यही लोग	174	दर्दनाक		
بِالْمَغْفِرَةِ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَلَ									
नाज़िल की	अल्लाह	इस लिए कि	यह	175	आग	पर	बहुत सवर करने वाले वह	सो किस क़द्र	मग़फ़िरत के बदले
الْكِتَابِ بِالْحَقِّ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي									
में	किताब	में	इख़तिलाफ़ किया	जो लोग	और वेशक	हक़ के साथ	किताब		
شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿١٧٦﴾ لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُولُوا وَجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ									
मशरिफ़	तरफ़	अपने मुँह	तुम कर लो	कि	नेकी	नहीं	176	दूर	ज़िद
وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ									
और फ़रिश्ते	आख़िरत	और दिन	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो	नेकी	और लेकिन	और मगरिब	
وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّنَ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ									
रिशतेदार	उस की मुहब्बत पर	माल	और दे	और नबियों	और किताब				
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ									
और गर्दनों में	और सवाल करने वाले	और मुसाफ़िर	और मस्कीन (जमा)	और यतीम (जमा)					
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ									
अपने अ़हद	और पूरा करने वाले	ज़कात	और अदा करे	नमाज़	और काइम करे				
إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالصَّرَآءِ وَحِينَ الْبَأْسِ									
जंग	और वक़्त	और तकलीफ़	सख़्ती	में	और सवर करने वाले	वह अ़हद करें	जब		
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾									
177	परहेज़गार	वह	और यही लोग	उन्होंने ने सच कहा	वह जो कि	यही लोग			

दर हकीकत (हम ने) तुम पर हराम किया है मुर्दार और खून और सुव्वर का गोशत और जिस पर अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम) पुकारा गया, पस जो लाचार हो जाए मगर न सरकशी करने वाला हो न हद से बढ़ने वाला तो उस पर कोई गुनाह नहीं, वेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (173)

वेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने (बसूरत) किताब नाज़िल किया और उस से वसूल करते हैं थोड़ी कीमत, यही लोग हैं जो अपने पेटों में सिर्फ़ आग भरते हैं और उन से बात नहीं करेगा अल्लाह कियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (174)

यही लोग हैं जिन्होंने ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, और मग़फ़िरत के बदले अज़ाब, सो किस क़द्र ज़यादा वह आग पर सवर करने वाले हैं। (175)

यह इस लिए कि अल्लाह ने हक़ के साथ किताब नाज़िल की, और वेशक जिन लोगों ने किताब में इख़तिलाफ़ किया वह ज़िद में दूर (जा पड़े हैं)। (176)

नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुँह मशरिफ़ या मगरिब की तरफ़ कर लो, मगर नेकी यह है जो ईमान लाए अल्लाह पर और यौमे आखिरत पर और फ़रिशतों और किताबों पर और नबियों पर, और उस (अल्लाह) की मुहब्बत पर माल दे रिशतेदारों को और यतीमों और मस्कीनों को और मुसाफ़िरों को और सवाल करने वालों को और गर्दनों के आज़ाद कराने में, और नमाज़ काइम करे और ज़कात अदा करे, और जब वह अहद करें तो उसे पूरा करें, और सवर करने वाले सख़्ती में और तकलीफ़ में और जंग के वक़्त, यही लोग सच्चे हैं, और यही लोग परहेज़गार हैं। (177)

ऐ ईमान वालो! तुम पर फर्ज किया गया किसास मकतूलों (के वारे) में, आज़ाद के बदले आज़ाद, और गुलाम के बदले गुलाम, और औरत के बदले औरत, पस जिससे उस के भाई की तरफ से कुछ माफ़ किया जाए तो दस्तूर के मुताबिक़ पैरवी करे, और उसे अच्छे तरीके से अदा करे, यह तुम्हारे रब की तरफ़ से आसानी और रहमत है, पस जिस ने उस के बाद ज़ियादती की तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (178)

और तुम्हारे लिए किसास में ज़िन्दगी है, ऐ अक़ल वालो! ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (179)

तुम पर फर्ज किया गया है कि जब तुम में से किसी को मौत आए, अगर वह माल छोड़े तो वसीयत करे माँ बाप के लिए और रिशतेदारों के लिए दस्तूर के मुताबिक़, यह लाज़िम है परहेज़गारों पर। (180)

फिर जो कोई उसे बदल दे उस के बाद कि उस ने उस को सुना तो उस का गुनाह सिर्फ़ उन लोगों पर है जिन्होंने उसे बदला, बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (181)

पस जो कोई वसीयत करने वाले से तरफ़दारी या गुनाह का ख़ौफ़ करे फिर सुलह करा दे उन के दरमियान तो उस में कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (182)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! तुम पर रोज़े फर्ज किए गए हैं जैसे तुम से पहले लोगों पर फर्ज किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (183)

गिनती के चन्द दिन हैं, पस तुम में से जो कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो गिनती पूरी करे बाद के दिनों में, और उन पर है जो ताक़त रखते हैं एक नादार को खाना खिलाना, पस जो खुशी से कोई नेकी करे वह उस के लिए बेहतर है, और अगर तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (184)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ ^ط																
ऐ		वह लोग जो		ईमान लाए		फर्ज किया गया तुम पर		किसास		मकतूलों में						
الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثَى بِالْأُنْثَى ^ط فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتَّبَاعُ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ^ط ذَلِكَ تَخْفِيفٌ																
आज़ाद		आज़ाद के बदले		और गुलाम		गुलाम के बदले		और औरत		औरत के बदले						
पस		जिससे		माफ़ किया जाए		उस के लिए		से		उस का भाई						
कुछ		तो पैरवी करना		मुताबिक़ दस्तूर		और अदा करना		उसे		अच्छा तरीका						
यह		आसानी														
مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ^ط فَمَنِ اعْتَدَى بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ^ع (178)																
से		तुम्हारा रब		और रहमत		पस जो		ज़ियादती की		बाद						
उस		तो उस के लिए		अज़ाब		दर्दनाक		178								
وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ يَّأُولَى الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ^ع (179)																
और तुम्हारे लिए		में		किसास		ज़िन्दगी		ऐ अक़ल वालो		ताकि तुम						
परहेज़गार हो जाओ		179														
كُتِبَ عَلَيْكُمُ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا ^ط الْوَصِيَّةُ																
फर्ज किया गया तुम पर		जब		आए		तुम्हारा कोई		मौत		अगर						
छोड़ा		माल		वसीयत												
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ^ط حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ^ع (180)																
माँ बाप के लिए		और रिशतेदारों		दस्तूर के मुताबिक़		लाज़िम		पर		परहेज़गार						
180																
فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ ^ط																
फिर जो		बदल दे उसे		बाद जो		उस को सुना		तो सिर्फ़		उस का गुनाह						
पर		जो लोग		उसे बदला												
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ^ع (181) فَمَنْ خَافَ مِنْ مَوْصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا																
बेशक अल्लाह		सुनने वाला		जानने वाला		181		पस जो		खौफ़ करे						
से		वसीयत करने वाला		तरफ़दारी		या गुनाह										
فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ^ع إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ^ع (182)																
फिर सुलह करा दे		उन के दरमियान		तो नहीं गुनाह		उस पर		बेशक अल्लाह		बख़्शने वाला						
रहम करने वाला		182														
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ																
ऐ		वह लोग जो		ईमान लाए		फर्ज किए गए		तुम पर		रोज़े						
जैसे		फर्ज किए गए		पर		जो लोग										
مِّن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ^ع (183) أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ^ط فَمَنْ كَانَ																
तुम से पहले		ताकि तुम		परहेज़गार बन जाओ		183		चन्द दिन		गिनती के						
पस जो		हो														
مِّنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ وَعَلَى الَّذِينَ																
तुम में से		बीमार		या		पर		सफ़र		तो गिनती						
से		तुम		से		दूसरे (बाद) के दिन		और पर		जो लोग						
يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ^ط فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا																
ताक़त रखते हों		बदला		खाना		नादार		पस जो		खुशी से करे						
कोई नेकी																
فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ ^ط وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ^ع (184)																
तो वह		बेहतर उस के लिए		और अगर		तुम रोज़ा रखो		बेहतर तुम्हारे लिए		अगर						
तुम हो		जानते हो		184												

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ							
महीना	रमज़ान	जिस	नाज़िल किया गया	उस में	कुरआन	हिदायत	लोगों के लिए
وَبَيَّنْتُ مِّنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ ۖ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ							
महीना	और रौशन दलीलें	से	हिदायत	और फुरकान	पस जो	पाए	तुम में से
فَلْيُصِمُ ۖ وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ							
चाहिए कि रोज़े रखे	और जो	हो	बीमार	या	पर	सफ़र	तो गिनती पूरी करले
يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ							
चाहता है	अल्लाह	तुम्हारे लिए	आसानी	और नहीं चाहता	तुम्हारे लिए	दुश्वारी	और ताकि तुम पूरी करो
وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدٰكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾ وَإِذَا سَأَلَكَ							
और ताकि तुम बड़ाई करो	अल्लाह	पर	जो तुम्हें हिदायत दी	और ताकि तुम	शुक्र अदा करो	185	और जब आप से पूछें
عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ							
मेरे बन्दे	मेरे बारे में	तो मैं	करीब	मैं कुबूल करता हूँ	दुआ	पुकारने वाला	जब मुझ से मांगें
فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾							
पस चाहिए हुकम मानें	मेरा	और ईमान लाएं	मुझ पर	ताकि वह	वह हिदायत पाएं	186	
أَحَلَّ لَكُم لَيْلَةَ الصَّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ۚ هُنَّ							
जाइज़ कर दिया गया	तुम्हारे लिए	रात	रोज़ा	वेपर्दा होना	तरफ़ (से)	अपनी औरतें	वह
لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ							
लिबास	तुम्हारे लिए	और तुम	लिबास	उन के लिए	जान लिया अल्लाह	कि तुम	तुम थे
تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْآنَ							
ख़ियानत करते	अपने तई	सो माफ़ कर दिया	तुम को	और	तुम से	पस अब	
بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ							
उन से मिलो	और तलब करो	जो	लिख दिया अल्लाह	तुम्हारे लिए	और खाओ	और पियो	यहां तक कि
يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۚ							
वाज़ेह हो जाए	तुम्हारे लिए	धारी	सफ़ेद	से	धारी	सियाह	से
ثُمَّ أَتَمُّوا الصَّيَامَ إِلَى الْيَلِ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ							
फिर	तुम पूरा करो	रोज़ा	तक	रात	और न	उन से मिलो	जबकि तुम
عَكْفُونَ فِي الْمَسْجِدِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرُبُوهَا ۚ							
एतिकाफ़ करने वाले	मसजिदों में	यह	हदें	अल्लाह	पस न	उन के करीब जाओ	
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لِنَاسٍ لِّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٨٧﴾							
इसी तरह	वाज़ेह करता है	अल्लाह	अपने हुकम	लोगों के लिए	ताकि वह	परहेज़गार हो जाएं	187

रमज़ान का महीना है जिस में कुरआन नाज़िल किया गया, कुरआन लोगों के लिए हिदायत है, और हिदायत की रौशन दलीलें, और फुरकान (हक़ को वातिल से जुदा करने वाला), पस जो तुम में से यह महीना पाए उसे चाहिए कि रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र पर हो वह बाद के दिनों में गिनती पूरी कर ले, अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और दुश्वारी नहीं चाहता, और ताकि तुम गिनती पूरी करो और ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो उस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत दी, और ताकि तुम शुक्र अदा करो। (185)

और जब मेरे बन्दे आप (स) से मेरे मुतअल्लिक़ पूछें तो मैं करीब हूँ, मैं कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की दुआ जब वह मुझ से मांगें, पस चाहिए कि वह मेरा हुकम मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वह हिदायत पाएं। (186)

तुम्हारे लिए जाइज़ कर दिया गया रोज़े की रात में अपनी औरतों से वेपर्दा होना, वह तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उन के लिए लिबास हो, अल्लाह ने जान लिया कि तुम अपने तई ख़ियानत करते थे सो उस ने तुम को माफ़ कर दिया और तुम से दरगुज़र की, पस अब उन से मिलो और जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है तलब करो, और खाओ और पियो यहां तक कि वाज़ेह हो जाए तुम्हारे लिए फ़ज़र की सफ़ेद धारी सियाह धारी से, फिर तुम रात तक रोज़ा पूरा करो, और उन से न मिलो जब तुम मोतकिफ़ हो मसजिदों में (हालते एतिकाफ़ में), यह अल्लाह की हदें हैं, पस उन के करीब न जाओ, इसी तरह वाज़ेह करता है अल्लाह लोगों के लिए अपने हुकम ताकि वह परहेज़गार हो जाएं। (187)

और अपने माल आपस में न खाओ नाहक, और उस से हाकिमों तक (रिश्वत) न पहुँचाओ ताकि तुम लोगों के माल से कोई हिस्सा खाओ गुनाह से (नाजाइज़ तौर पर) और तुम जानते हो। (188)

और आप (स) से नए चाँद के बारे में पूछते हैं? आप कह दें यह (पैमाना-ए-) औकात लोगों और हज के लिए है, और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ उन की पुश्त से, बल्कि नेक वह है जो परहेज़गारी करे, और घरों में उन के दरवाज़ों से आओ, और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाबी हासिल करो। (189)

और तुम अल्लाह के रास्ते में उन से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं और ज़ियादती न करो, बेशक अल्लाह ज़ियादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता! (190)

और उन्हें मार डालो जहाँ उन्हें पाओ और उन्हें निकाल दो जहाँ से उन्होंने ने तुम्हें निकाला, और फ़ित्ना क़त्ल से ज़ियादा संगीन है, और उन से मसज़िदे हराम (ख़ानाए क़़वा) के पास न लड़ो यहाँ तक कि वह यहाँ तुम से लड़ें, पस अगर वह तुम से लड़ें तो तुम उन से लड़ो, इसी तरह सज़ा है काफ़िरों की! (191)

फिर अगर वह वाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (192)

और तुम उन से लड़ो यहाँ तक कि कोई फ़ित्ना न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए, पस अगर वह वाज़ आ जाएं तो नहीं (किसी पर) ज़ियादती सिवाए ज़ालिमों के। (193)

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا						
और न	खाओ	अपने माल	आपस में	नाहक	और (न) पहुँचाओ	उस से
إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ						
हाकिमों तक		ताकि तुम खाओ	कोई हिस्सा	से	माल	लोग
بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهْلِةِ						
गुनाह से	और तुम	जानते हो	188	वह आप से पूछते हैं	से	नए चाँद
قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ						
आप कह दें	यह	औकात	लोगों के लिए	और हज	और नहीं	नेकी
تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَى						
तुम आओ	घर (जमा)	से	उन की पुश्त	और लेकिन	नेकी	जो परहेज़गारी करे
وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ						
और तुम आओ	घर (जमा)	से	दरवाज़े	और तुम डरो	अल्लाह	ताकि तुम
تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ						
कामयाबी हासिल करो	189	और तुम लड़ो	में	रास्ता	अल्लाह	वह जो कि
يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾						
तुम से लड़ते हैं	और ज़ियादती न करो	बेशक अल्लाह	नहीं पसन्द करता	ज़ियादती करने वाले	190	
وَأَقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِّنْ						
और उन्हें मार डालो	जहाँ	तुम उन्हें पाओ	और उन्हें निकाल दो	से		
حَيْثُ أَخْرِجْتُمْ وَأَلْفِتْنَةً أَشَدَّ مِنَ الْقَتْلِ						
जहाँ	उन्होंने ने तुम्हें निकाला	और फ़ित्ना	ज़ियादा संगीन	से	क़त्ल	
وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَتِّلُوكُمْ						
और न	उन से लड़ो	पास	मसज़िदे हराम (ख़ानाए क़़वा)	यहाँ तक कि	वह तुम से लड़ें	
فِيهِ فَإِنْ قَتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ كَذَلِكَ جَزَاءُ						
उस में	पस अगर	वह तुम से लड़ें	तो तुम उन से लड़ो	इसी तरह	बदला	
الْكَافِرِينَ ﴿١٩١﴾ فَإِنْ أَنْتَهُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٢﴾						
काफ़िर (जमा)	191	फिर अगर	वह वाज़ आ जाएं	तो बेशक	अल्लाह	रहम करने वाला
وَقَتِّلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ						
और तुम उन से लड़ो	यहाँ तक कि	न रहे	कोई फ़ित्ना	और हो जाए	दीन	
لِلَّهِ فَإِنْ أَنْتَهُوا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٩٣﴾						
अल्लाह के लिए	पस अगर	वह वाज़ आ जाएं	तो नहीं	ज़ियादती	सिवाए	ज़ालिम (जमा)
193				पर		

٢٣
٤

الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَتِ قِصَاصٌ فَمَنْ اعْتَدَى									
ज़ियादती की	पस जिस	वदला	और हुर्मतें	वदला हुर्मत वाला महीना			हुर्मत वाला महीना		
عَلَيْكُمْ فَأَعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَى عَلَيْكُمْ									
तुम पर		उस ने ज़ियादती की		जो	जैसी	उस पर	तो तुम ज़ियादती करो		तुम पर
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩٤﴾ وَأَنْفِقُوا فِي									
में	और तुम खर्च करो	194	परहेज़गारों	साथ	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो
سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ وَأَحْسِنُوا									
और नेकी करो		हलाकत		तरफ़	अपने हाथ		डालो	और न	अल्लाह रास्ता
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٩٥﴾ وَاتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ									
अल्लाह के लिए	और उमरा	हज	और पूरा करो	195	नेकी करने वाले		दोस्त रखता है	वेशक अल्लाह	
فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّى									
यहां तक	अपने सर	मुंडवाओ	और न	कुरबानी	से	मयस्सर आए	तो जो	तुम रोक दिए जाओ	फिर अगर
يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ بِهِ آذَى									
तकलीफ	उस के	या	बीमार	तुम में से	हो	पस जो	अपनी जगह	कुरबानी	पहुँच जाए
مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسْكَ فَإِذَا أَمِنْتُمْ									
तुम अमन में हो	फिर जब	कुरबानी	या	सदका	या	रोज़ा	से	तो वदला	उस का सर से
فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ									
कुरबानी से		मयस्सर आए		तो जो	हज	तक	उमरे का	फाइदा उठाए	तो जो
فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ									
जब तुम वापस आजाओ		और सात	हज में		दिन	तीन	तो रोज़ा रखे	न पाए	फिर जो
تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ ذَلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلُهُ حَاضِرًا									
मौजूद		उस के घर वाले	न हों		लिए-जो	यह	पूरे	दस	यह
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾									
196		अज़ाब	सख़्त	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो	मस्जिदे हराम
الْحَجَّ أَشْهُرٌ مَعْلُومَةٌ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ									
और न गाली दे		वेपर्दा हो	तो न	हज	उन में	लाज़िम कर लिया	पस जिस ने	मालूम (मुक़र्रर)	महीने हज
وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمُهُ اللَّهُ وَتَزَوَّدُوا									
और तुम ज़ादेराह ले लिया करो		अल्लाह	उसे जानता है	नेकी से		तुम करोगे	और जो	हज में	और न झगड़ा
فَإِنَّ خَيْرَ الرِّزَادِ التَّقْوَى وَاتَّقُونِ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾									
197		ऐ अक़ल वालो		और मुझ से डरो		तक़वा	ज़ादे राह	वेहतर	पस वेशक

हुर्मत वाला महीना बदला है हुर्मत वाले महीने का, और हुर्मतों का बदला है, पस जिस ने तुम पर ज़ियादती की तो तुम उस पर ज़ियादती करो जैसी उस ने तुम पर ज़ियादती की, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह साथ है परहेज़गारों के। (194)

और अल्लाह की राह में खर्च करो और (अपने आप को) अपने हाथों न डालो हलाकत में, और नेकी करो, वेशक अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (195)

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए, फिर अगर तुम रोक दिए जाओ तो जो कुरबानी मयस्सर आए (पेश करो) और अपने सर न मुंडवाओ यहां तक कि कुरबानी अपनी जगह पहुँच जाए, फिर जो कोई तुम में से बीमार हो या उस के सर में तकलीफ हो तो वह वदला दे रोज़े से या सदक़े से या कुरबानी से, फिर जब तुम अमन में हो तो जो फाइदा उठाए हज के साथ उमरा (मिला कर) तो उसे जो कुरबानी मयस्सर आए (देदे), फिर जो न पाए तो वह रोज़े रख ले तीन दिन हज के अय्याम में और सात जब तुम वापस आजाओ, यह दस पूरे हुए, यह उस के लिए है जिस के घर वाले मस्जिदे हराम में मौजूद न हों (न रहते हों) और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख्त अज़ाब देने वाला है। (196)

हज के महीने मुक़र्रर हैं, पस जिस ने उन में हज लाज़िम कर लिया तो वह न वेपर्दा हो, न गाली दे, न झगड़ा करे हज में, और तुम जो नेकी करोगे अल्लाह उसे जानता है, और तुम ज़ादेराह ले लिया करो, पस वेशक बेहतर ज़ादे राह तक़वा है, और ऐ अक़ल वालो! मुझ से डरते रहो। (197)

तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम अपने रब का फज़ल तलाश करो (तिज़ारत करो), फिर जब तुम अरफ़ात से लौटो तो अल्लाह को याद करो मशअरे हराम के नज़दीक (मुज़दलिफ़ा में), और अल्लाह को याद करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत दी और वेशक उस से पहले तुम नावाक़िफ़ों में से थे। (198)

फिर तुम लौटो जहाँ से लोग लौटें, और अल्लाह से मग़फ़िरत चाहो, वेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (199)

फिर जब तुम हज़ के मरासिम अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो जैसा कि तुम अपने बाप दादा को याद करते थे या उस से भी ज़ियादा याद करो, पस कोई आदमी कहता है ऐ हमारे रब! हमें दुन्या में (भलाई) दे और उस के लिए नहीं है आख़िरत में कुछ हिस्सा। (200)

और उन में से कोई कहता है ऐ हमारे रब! हमें दे दुन्या में भलाई और आख़िरत में भलाई, और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले। (201)

यही लोग हैं उन के लिए हिस्सा है उस में से जो उन्होंने ने कमाया, और अल्लाह हिसाब लेने में तेज़ है। (202)

और तुम अल्लाह को याद करो गिनती के चन्द (मुकर्रर) दिनों में, पस जो दो दिन में जल्दी चला गया तो उस पर कोई गुनाह नहीं और जिस ने ताख़ीर की उस पर कोई गुनाह नहीं (यह उस के लिए है) जो डरता रहा, और तुम अल्लाह से डरो, और जान लो कि तुम उस की तरफ़ जमा किए जाओगे। (203)

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ							
अपना रब	से	फ़ज़ल	तलाश करो	अगर तुम	कोई गुनाह	तुम पर	नहीं
فَإِذَا أَقَضْتُمْ مِّنْ عَرَفَتٍ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ عِندَ							
नज़दीक	अल्लाह	तो याद करो	अ़रफ़ात	से	तुम लौटो	फिर जब	
الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَأَذْكُرُوهُ كَمَا هَدَيْتُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ							
तुम थे	और वेशक	उस ने तुम्हें हिदायत दी	जैसे	और उसे याद करो	मशअरे हराम		
مِّن قَبْلِهِ لَمَنِ الضَّالِّينَ ﴿١٩٨﴾ ثُمَّ أَفِيضُوا مِّنْ حَيْثُ							
से - जहाँ	तुम लौटो	फिर	198	नावाकिफ़	ज़रूर - से	उस से पहले	
أَفَاصَ النَّاسِ وَأَسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ							
अल्लाह	वेशक	अल्लाह	और मग़फ़िरत चाहो		लोग	लौटें	
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٩﴾ فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ							
हज़ के मरासिम	तुम अदा कर चुको	फिर जब	199	रहम करने वाला	बख़्शने वाला		
فَأَذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا							
याद	ज़ियादा	या	अपने बाप दादा	जैसी तुम्हारी याद	अल्लाह	तो याद करो	
فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا							
दुन्या	में	हमें दे	ऐ हमारे रब	कहता है	जो	पस - से - आदमी	
وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَقٍ ﴿٢٠٠﴾ وَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ							
कहता है	जो	और उन से	200	कुछ हिस्सा	आख़िरत	में	उस के लिए और नहीं
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً							
भलाई	और आख़िरत में		भलाई	दुन्या में	हमें दे	ऐ हमारे रब	
وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا							
उन्होंने ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	उन के लिए	यही लोग	201	आग (दोज़ख़)	और हमें बचा
وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾ وَأَذْكُرُوا اللَّهَ فِي							
में	अल्लाह	और तुम याद करो	202	हिसाब लेने वाला	तेज़	और अल्लाह	
أَيَّامٍ مَّعْدُودَتٍ فَمَن تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ							
गुनाह	तो नहीं	दो दिन	में	जल्द चला गया	पस जो	दिन गिनती के	
عَلَيْهِ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ لِمَنِ اتَّقَىٰ							
डरता रहा	लिए - जो	उस पर	गुनाह	तो नहीं	ताख़ीर की	और जिस	उस पर
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٠٣﴾							
203	जमा किए जाओगे	उस की तरफ़	कि तुम	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो	

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ								
और वह गवाह बनाता है अल्लाह को	दुन्या	ज़िन्दगी	में	उस की बात	तुम्हे भली मालूम होती है	जो	लोग	और से
عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ ۚ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾ وَإِذَا تَوَلَّى سَعَىٰ								
दौड़ता फिरे	वह लौटे	और जब	204	झगड़ालू	सख्त	हालांकि वह	उस के दिल में	जो पर
فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ								
और नस्ल	खेती	और तबाह करे	उस में	ताकि फ़साद करे	ज़मीन	में		
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفُسَادَ ﴿٢٠٥﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ								
अल्लाह	डर	उस को	कहा जाए	और जब	205	फ़साद	न पसन्द करता है	और अल्लाह
أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾								
उसे आमादा करे	इज़्ज़त (गुरुर)	गुनाह पर	तो काफी है उस को	जहन्नम	और अलवत्ता बुरा	ठिकाना	206	
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ								
और से	लोग	जो	बेच डालता है	अपनी जान	हासिल करना	अल्लाह की रज़ा		
وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا								
और अल्लाह	मेहरबान	बन्दों पर	207	ऐ	जो लोग ईमान लाए	तुम दाखिल हो जाओ		
فِي السِّلْمِ كَآفَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ								
में	इस्लाम	पूरे पूरे	और न	पैरवी करो	क़दम	शैतान		
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٠٨﴾ فَإِنْ زَلَلْتُمْ مِنْ بَعْدِ								
वेशक वह	तुम्हारा	दुश्मन	खुला	208	फिर अगर	तुम डगमगा गए	उस के बाद	
مَا جَاءَتْكُمْ الْبَيِّنَاتُ فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٠٩﴾								
जो	तुम्हारे पास आए	वाज़ेह अहकाम	तो जान लो	कि	अल्लाह	ग़ालिब	हिक्मत वाला	209
هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ								
क्या	वह इन्तिज़ार करते हैं	सिवाए (यही)	कि	आए उन के पास	अल्लाह	सायबानों में		
مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ								
से	बादल	और फ़रिश्ते	और चुका दिया जाए	मामला				
وَالَى اللَّهُ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٢١٠﴾ سَلْ بَنِي إِسْرَءِيلَ								
और तरफ़	अल्लाह	लौटेंगे	तमाम मामलात	210	पूछो	बनी इस्राईल		
كَمْ اتَيْنَهُم مِّنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ								
किस क़द्र	हम ने उन्हें दी	से	निशानियाँ	खुली	और जो	बदल डाले	नेमत	अल्लाह
مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾								
उस के बाद	जो	आई उस के पास	तो बेशक	अल्लाह	सख्त	अज़ाब	211	

और लोगों में (कोई ऐसा भी है) कि उस की बात तुम्हें भली मालूम होती है दुनयवी ज़िन्दगी (के उमूर) में और वह अल्लाह को गवाह बनाता है अपने दिल की बात पर, हालांकि वह सख्त झगड़ालू है। (204)

और जब वह लौटे तो ज़मीन (मुल्क) में दौड़ता फिरे ताकि उस में फ़साद करे, और तबाह करे खेती और नस्ल, और अल्लाह फ़साद को नापसंद करता है। (205)

और जब उस को कहा जाए कि अल्लाह से डर, तो उस को इज़्ज़त (गुरुर) गुनाह पर आमादा करे, तो उस के लिए जहन्नम काफी है, और अलवत्ता वह बुरा ठिकाना है। (206)

और लोगों में (एक वह है) जो अपनी जान बेच डालता है अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है। (207)

ऐ ईमान वालो! तुम इस्लाम में पूरे पूरे दाखिल हो जाओ, और शैतान के कदमों की पैरवी न करो, वेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (208)

फिर अगर तुम उस के बाद डगमगा गए जबकि तुम्हारे पास वाज़ेह अहकाम आ गए तो जान लो कि अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (209)

क्या वह सिर्फ़ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि अल्लाह उन के पास आए सायबानों में बादल के, और फ़रिश्ते, और मामला चुका दिया जाए, और तमाम मामलात अल्लाह की तरफ़ लौटेंगे। (210)

पूछो बनी इस्राईल से हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दीं? और जो अल्लाह की नेमत बदल डाले उस के बाद कि वह उस के पास आ गई तो वेशक अल्लाह सख्त अज़ाब देने वाला है। (211)

आरास्ता की गई काफ़िरों के लिए दुन्या की ज़िन्दगी, और वह हैंसते हैं उन पर जो ईमान लाए, और जो परहेज़गार हुए वह क़यामत के दिन उन से बालातर होंगे, और अल्लाह जिसे चाहता है रिज़्क देता है वेशुमार। (212)

लोग एक उम्मत थे, फिर अल्लाह ने नबी भेजे खुशख़बरी देने वाले और डराने वाले, और उन के साथ बरहक़ किताब नाज़िल की ताकि फ़ैसला करे लोगों के दरमियान जिस में उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया, और जिन्हें (किताब) दी गई थी उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया मगर उस के बाद जब कि उन के पास बाज़ेह अहक़ाम आ गए आपस की ज़िद की वजह से, पस अल्लाह ने उन लोगों को हिदायत दी अपने इज़्ज़न से जो ईमान लाए उस सच्ची बात पर जिस में उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया था, और अल्लाह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़। (213)

क्या तुम ख़याल करते हो कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे और जबकि (अभी) तुम पर (ऐसी हालत) नहीं आई जैसे तुम से पहले लोगों पर गुज़री, उन्हें पहुँची सख़्ती और तकलीफ़, और वह हिला दिए गए यहां तक कि रसूल और वह जो उन के साथ ईमान लाए कहने लगे अल्लाह की मदद कब आएगी? आगाह रहो वेशक़ अल्लाह की मदद क़रीब है। (214)

वह आप (स) से पूछते हैं क्या कुछ ख़र्च करें? आप कह दें जो माल तुम ख़र्च करो, सो माँ बाप के लिए और क़राबतदारों के लिए, और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों के लिए, और तुम जो नेकी करोगे तो वेशक़ अल्लाह उसे जानने वाला है। (215)

رُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ							
आरास्ता की गई	वह लोग जो कुफ़ किया	ज़िन्दगी	दुन्या	और वह हैंसते हैं	से	जो लोग	
آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ							
ईमान लाए	और जो लोग	परहेज़गार हुए	उन से बालातर	क़यामत के दिन	और अल्लाह	रिज़्क देता है	
مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ (٢١٢) كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً							
जिसे	वह चाहता है	बग़ैर	हिसाब	212	थे	लोग	उम्मत
एक							
فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنْزَلَ							
फिर भेजे	अल्लाह	नबी	खुशख़बरी देने वाले	और डराने वाले	और नाज़िल की		
مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا							
उन के साथ	किताब	बरहक़	ताकि फ़ैसला करे	दरमियान	लोग	जिस में	उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया
فِيهِ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ بَعْدِ							
उस में	और नहीं	इख़्तिलाफ़ किया	उस में	मगर	जिन्हें	दी गई	बाद
مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا							
जो - जब	आए उन के पास	बाज़ेह अहक़ाम	ज़िद	उन के दरमियान (आपस की)	पस हिदायत दी	अल्लाह	जो लोग
ईमान लाए							
لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِآدَانِهِ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ							
लिए - जो	उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया	उस में	से (पर)	सच	अपने इज़्ज़न से	और अल्लाह	हिदायत देता है
जिसे	वह चाहता है						
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (٢١٣) أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ							
तरफ़	रास्ता	सीधा	213	क्या	तुम ख़याल करते हो	कि	तुम दाख़िल हो जाओगे
जन्नत							
وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ							
और जब कि नहीं	आई तुम पर	जैसे	जो	गुज़रे	से	तुम से पहले	
مَسَّتْهُمْ الْبَأْسَاءُ وَالصَّرَاءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ							
पहुँची उन्हें	सख़्ती	और तकलीफ़	और वह हिला दिए गए	यहां तक	कहने लगे	रसूल	
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصُرُ اللَّهُ إِلَّا أَنْ نَصُرَ اللَّهُ							
और वह जो	ईमान लाए	उन के साथ	कब	अल्लाह की मदद	आगाह रहो	वेशक़	मदद
अल्लाह							
قَرِيبٌ (٢١٤) يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ مَا أَنْفَقْتُ مِنْ							
क़रीब	214	वह आप से पूछते हैं	क्या कुछ	ख़र्च करें	आप कह दें	जो	तुम ख़र्च करो
से							
خَيْرٍ فَلِلَّوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَى وَالْمَسْكِينِ							
माल	सो माँ बाप के लिए	और क़राबतदार (जमा)	और यतीम (जमा)	और मोहताज (जमा)			
وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ (٢١٥)							
और मुसाफ़िर	और जो	तुम करोगे	कोई नेकी	तो वेशक़	अल्लाह	उसे	जानने वाला
215							

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهُ لَكُمْ وَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا								
एक चीज़	तुम नापसन्द करो	कि	और मुमकिन है	तुम्हारे लिए	नागवार	और वह	जंग	तुम पर फर्ज की गई
وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسَى أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ								
तुम्हारे लिए	बुरी	और वह	एक चीज़	तुम पसन्द करो	कि	और मुमकिन है	तुम्हारे लिए	बेहतर और वह
وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ								
महीना	हुर्मत वाला	से	वह आप से सवाल करते हैं	216	नहीं जानते	और तुम	जानता है	और अल्लाह
قِتَالٍ فِيهِ قُلٌ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ وَصَدُّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ								
अल्लाह	रास्ता	से	और रोकना	बड़ा	उस में	जंग	आप कह दें	जंग
وَكُفْرٌ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ								
अल्लाह के नज़दीक	बहुत बड़ा	उस से	उस के लोग	और निकाल देना	और मस्जिद हाराम	उस का	और न मानना	
وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ								
वह तुम से लड़ेंगे	और वह हमेशा रहेंगे	कतल	से	बहुत बड़ा	और फित्ना			
حَتَّى يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا وَمَنْ يَرْتَدِدْ								
फिर जाए	और जो	वह कर सकें	अगर	तुम्हारा दीन	से	तुम्हें फेर दें	यहां तक कि	
مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ								
ज़ाया हो गए	तो यही लोग	काफिर	और वह	फिर मर जाए	अपना दीन	से	तुम में से	
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ								
दोज़ख़	वाले	और यही लोग	और आखिरत	दुन्या	में	उन के अमल		
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢١٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا								
उन्होंने ने हिज़्रत की	और वह लोग जो	ईमान लाए	जो लोग	वेशक	217	हमेशा रहेंगे	उस में	वह
وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ								
अल्लाह की रहमत	उम्मीद रखते हैं	यही लोग	अल्लाह का रास्ता	में	और उन्होंने ने जिहाद किया			
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢١٨﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ								
और जुआ	शराब	से (बारे में)	वह पूछते हैं आप से	218	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह	
قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنْفَعٌ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ								
बहुत बड़ा	और उन दोनों का गुनाह	लोगों के लिए	ओर फ़ाइदे	बड़ा	गुनाह	उन दोनों में	आप कह दें	
مِنْ نَّفْعِهِمَا وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ قُلِ الْعَفْوَ								
ज़ाईद अज़ ज़रूरत	आप कह दें	वह खर्च करें	क्या कुछ	वह पूछते हैं आप (स) से	उन का फ़ाइदा	से		
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١٩﴾								
219	गौर ओ फ़िक्र करो	ताकि तुम	अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह	

तुम पर जंग फर्ज की गई और वह तुम्हें नागवार है, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ नापसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ पसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (216)

वह आप से सवाल करते हैं हुर्मत वाले महीने में जंग (के बारे) में, आप (स) कह दें उस में जंग करना बड़ा (गुनाह) है, और अल्लाह के रास्ते से रोकना और उस (अल्लाह) को न मानना और मस्जिद हाराम (से रोकना) और उस के लोगों को वहां से निकालना अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा गुनाह है और फित्ना कतल से (भी) बड़ा गुनाह है, और वह हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि अगर वह कर सकें तो तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें, और तुम में से जो फिर जाए अपने दीन से और वह मर जाए (उस हाल में कि) वह काफिर हो तो यही लोग हैं जिन के अमल ज़ाया हो गए दुन्या में और आखिरत में और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (217)

वेशक जो ईमान लाए और जिन लोगों ने हिज़्रत की और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, यही लोग अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (218)

वह आप (स) से पूछते हैं शराब और जुआ के बारे में, आप कह दें कि उन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए फ़ाइदे (भी) हैं (लेकिन) उन का गुनाह उन के फ़ाइदे से बहुत बड़ा है, और वह आप (स) से पूछते हैं कि वह क्या कुछ खर्च करें? आप कह दें ज़ाईद अज़ ज़रूरत, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम गौर ओ फ़िक्र करो (219)

दनिया में और आखिरत में, और वह आप (स) से यतीमों के बारे में पूछते हैं, आप कह दें उन की इस्लाह बेहतर है, और अगर उन को मिला लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, और अल्लाह खराबी करने वाले और इस्लाह करने वाले को खूब जानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम को जरूर मुशक़क़त में डाल देता, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (220)

और मुशरिफ़ औरतों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान न लाएं, और अलबत्ता मुसलमान लौंडी बेहतर है मुशरिफ़ औरत से अगरचे तुम्हें वह भली लगे, और मुशरिफ़ों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान न लाएं, और अलबत्ता मुसलमान गुलाम बेहतर है मुशरिफ़ से अगरचे वह तुम्हें भला लगे, यह लोग दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं, और अल्लाह बुलाता है अपने हुक्म से जन्नत और बख़्शिश की तरफ़, और लोगों के लिए अपने अहकाम बाज़ेह करता है ताकि वह नसीहत पकड़ें। (221)

वह आप (स) से हालते हैज़ के बारे में पूछते हैं, आप कह दें कि वह गन्दगी है, पस तुम औरतों से अलग रहो हालते हैज़ में और उन के करीब न जाओ यहां तक कि वह पाक हो जाएं, पस जब वह पाक हो जाएं तो तुम उन के पास आओ जहां से अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है, बेशक अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और दोस्त रखता है पाक रहने वालों को। (222)

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं, पस तुम अपनी खेती में आओ जहां से चाहो और अपने लिए आगे भेजो (आगे की तदबीर करो) और अल्लाह से डरो, और तुम जान लो कि तुम अल्लाह से मिलने वाले हो, और खुशख़बरी दें ईमान वालों को। (223)

और अपनी कस्मों के लिए अल्लाह (के नाम) को निशाना न बनाओ कि तुम हुस्ने सुलूक और परहेज़गारी और लोगों के दरमियान सुलह कराने (से बाज़ रहो) और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (224)

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (٢٢٠)							
इस्लाह	आप कह दें	यतीम (जमा)	से (बारे में)	और वह आप (स) से पूछते हैं	और आखिरत	दुनिया में	
खराबी करने वाला	जानता है	और अल्लाह	तो भाई तुम्हारे	मिला लो उन को	और अगर	बेहतर	उन की
وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكَ حَتَّىٰ يُؤْمِنَ وَلَا مِمَّنْ مُّؤْمِنَةٍ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ							
से	बेहतर	मुसलमान	और अलबत्ता लौंडी	वह ईमान लाएं	यहां तक कि	मुश्रिक औरतें	निकाह करो और न
वह ईमान लाएं	यहां तक कि	मुश्रिकों	निकाह करो	और न	वह भली लगे तुम्हें	अगरचे	मुश्रिक औरत
بِإِذْنِهِ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ (٢٢١)							
221	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	लोगों के लिए	अपने अहकाम	और बाज़ेह करता है	अपने हुक्म से	
وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ قُلْ هُوَ أَذًى فَأَعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ وَلَا تَقْرُبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَظْهَرْنَ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ (٢٢٢)							
औरतें	पस तुम अलग रहो	गन्दगी	वह	आप कह दें	हालते हैज़	से (बारे में)	और वह पूछते हैं आप (स) से
तो आओ उन के पास	वह पाक हो जाएं	पस जब	वह पाक हो जाएं	यहां तक कि	करीब जाओ उन के	और न	हालते हैज़ में
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ (٢٢٣)							
कि	अपनी कस्मों के लिए	निशाना	अल्लाह	बनाओ	और न	223	ईमान वाले और खुशख़बरी दें
تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (٢٢٤)							
224	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	लोग	दरमियान	और सुलह कराओ	तुम हुस्ने सुलूक करो

२५
११

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ							
पकड़ता है तुम्हें	और लेकिन	कस्में तुम्हारी	में	लगू (बेहूदा)	अल्लाह	नहीं पकड़ता तुम्हें	
بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ							
कस्म खाते हैं	उन लोगों के लिए जो	225	बुर्दवार	बख़्शने वाला	और अल्लाह	दिल तुम्हारे	कमाया पर-जो
مِنْ نِّسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ فَإِنْ فَاءُوا فَإِنَّ اللَّهَ							
तो बेशक अल्लाह	रुजूअ करलें	फिर अगर	महीने	चार	इन्तिज़ार	औरतें अपनी	से
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ							
सुनने वाला	अल्लाह	तो बेशक	तलाक़	उन्होंने ने इरादा किया	और अगर	226	रहम करने वाला बख़्शने वाला
عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ							
मुद्दते हैज़	तीन	अपने तई	इन्तिज़ार करें	और तलाक़ यापता औरतें	227	जानने वाला	
وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ							
अगर	उन के रहम (जमा)	में	अल्लाह पैदा किया	जो	वह छुपाएँ	कि उन के लिए	और जाइज़ नहीं
كُنَّ يُؤْمِنَنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَبَعُولَتْهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ							
वापसी उन की	ज़ियादा हक़दार	और खाविन्द उन के	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	ईमान रखती है		
فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ							
औरतों पर (फ़र्ज़)	जो	जैसे	और औरतों के लिए	बेहतरी (हुस्ने सुलूक)	वह चाहें	अगर	उस में
بِالْمَعْرُوفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ							
ग़ालिब	और अल्लाह	एक दर्जा	उन पर	और मर्दों के लिए	दस्तूर के मुताबिक़		
حَكِيمٌ ﴿٢٢٨﴾ الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ							
या	दस्तूर के मुताबिक़	फिर रोक लेना	दो बार	तलाक़	228	हिक्मत वाला	
تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوا مِمَّا							
उस से जो	तुम ले लो	कि	तुम्हारे लिए	जाइज़	और नहीं	हुस्ने सुलूक से	ख़सत करना
اتَّيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ							
अल्लाह कि हुदूद	काइम रख सकेंगे	कि न	दोनों अन्देशा करें	कि सिवाए	कुछ	तुम ने दिया उन को	
فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا							
उन दोनों पर	तो गुनाह नहीं	अल्लाह की हुदूद	कि वह काइम न रख सकेंगे	तुम डरो	फिर अगर		
فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا							
आगे बढ़ो उस से	पस न	अल्लाह की हुदूद	यह	उस का	औरत बदला दे	उस में जो	
وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٢٩﴾							
229	ज़ालिम	वह	पस वही लोग	अल्लाह की हुदूद	आगे बढ़ता है	और जो	

तुम्हें नहीं पकड़ता अल्लाह तुम्हारी बेहूदा कस्मों पर, लेकिन तुम्हें पकड़ता है उस पर जो तुम्हारे दिलों ने कमाया (इरादे से किया) और अल्लाह बख़्शने वाला, बुर्दवार है। (225)

उन लोगों के लिए जो अपनी औरतों के (पास न जाने की) कस्म खाते हैं इन्तिज़ार करना है चार माह, फिर अगर वह रुजूअ कर लें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (226)

और अगर उन्होंने ने तलाक़ का इरादा कर लिया तो बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (227)

और तलाक़ यापता औरतें अपने तई इन्तिज़ार करें तीन हैज़ तक, और उन के लिए जाइज़ नहीं कि वह छुपाएँ जो अल्लाह ने उन के रहमों में पैदा किया अगर वह अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखती हैं, और उन के खाविन्द उन की वापसी के ज़ियादा हक़दार है उस (मुद्दत) में अगर वह बेहतरी (हुस्ने सुलूक) करना चाहें, और औरतों के लिए (हक़) है जैसे औरतों पर (मर्दों का) हक़ है दस्तूर के मुताबिक़, और मर्दों का उन पर एक दर्जा (बरतरी) है और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (228)

तलाक़ दो बार है, फिर रोक लेना है दस्तूर के मुताबिक़ या ख़सत कर देना हुस्ने सुलूक से, और नहीं तुम्हारे लिए जाइज़ कि जो तुम ने उन्हें दिया है उस से कुछ वापस ले लो सिवाए उस के कि दोनों अन्देशा करें कि अल्लाह की हुदूद काइम न रख सकेंगे, फिर अगर तुम डरो कि वह दोनों अल्लाह की हुदूद काइम न रख सकेंगे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर कि औरत उस का बदला (फ़िदया) देदे, यह अल्लाह की हुदूद है, पस उन के आगे न बढ़ो, और जो अल्लाह की हुदूद से आगे बढ़ता है पस वही लोग ज़ालिम है। (229)

पस अगर उस को तलाक़ दे दी तो जाइज़ नहीं उस के लिए उस के बाद यहां तक कि वह उस के अलावा किसी (दूसरे) ख़ाबिन्द से निकाह कर ले, फिर अगर वह उसे तलाक़ देदे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर अगर वह रुज़ूअ कर लें, वशर्त यह कि वह ख़याल करें कि वह अल्लाह की हुदूद काइम रखेंगे, और यह अल्लाह की हुदूद है, वह उन्हें जानने वालों के लिए बाज़ेह करता है। (230)

और जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो फिर वह अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उन को दस्तूर के मुताबिक़ रोको या दस्तूर के मुताबिक़ रुख़सत कर दो और तुम उन्हें नुक़सान पहुँचाने के लिए न रोको ताकि तुम ज़ियादती करो, और जो यह करेगा वेशक़ उस ने अपने ऊपर जुल्म किया, और अल्लाह के अहक़ाम को मज़ाक़ न ठहराओ, और तुम पर जो अल्लाह की नेमत है उसे याद करो, और जो उस ने तुम पर किताब और हिक़मत उतारी, वह उस से तुम्हें नसीहत करता है, और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (231)

और जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो, फिर वह पूरी कर लें अपनी इद्दत तो उन्हें अपने ख़ाबिन्दों से निकाह करने से न रोको जब वह राज़ी हों आपस में दस्तूर के मुताबिक़, यह उस को नसीहत की जाती है जो तुम में से ईमान रखता है अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा सुथरा और ज़ियादा पाकीज़ा है, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (232)

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّى تَنْكِحَ						
वह निकाह कर ले	यहां तक कि	उस के बाद	उस के लिए	तो जाइज़ नहीं	तलाक़ दी उस को	फिर अगर
زَوْجًا غَيْرَهُ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ						
अगर	उन दोनों पर	तो गुनाह नहीं	तलाक़ देदे उस को	फिर अगर	उस के अलावा	खाबिन्द
يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ وَتِلْكَ						
और यह	अल्लाह की हुदूद	वह काइम रखेंगे	कि	वह खयाल करें	वशर्त यह कि	वह रुज़ूअ कर लें
حُدُودَ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣٠﴾ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ						
तुम तलाक़ दो	और जब	230	जानने वालों के लिए	उन्हें बाज़ेह करता है	अल्लाह की हुदूद	
النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ						
दस्तूर के मुताबिक़	तो रोको उन को	अपनी इद्दत	फिर वह पूरी कर लें	औरतें		
أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضَرَارًا						
नुक़सान	और तुम न रोको उन्हें	दस्तूर के मुताबिक़	रुख़सत कर दो	या		
لِتَعْتَدُوا وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ						
अपनी जान	तो वेशक़ उस ने जुल्म किया	यह	करेगा	और जो	ताकि तुम ज़ियादती करो	
وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوعًا وَادْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ						
अल्लाह की नेमत	और याद करो	मज़ाक़	अल्लाह के अहक़ाम	ठहराओ	और न	
عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ						
और हिक़मत	किताब	से	तुम पर	उस ने उतारा	और जो	तुम पर
يُعِظُكُمْ بِهِ وَآتُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ						
चीज़	हर	अल्लाह कि	और जान लो	अल्लाह और तुम डरो	उस से	वह नसीहत करता है तुम्हें
عَلِيمٌ ﴿٢٣١﴾ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ						
अपनी इद्दत	फिर वह पूरी कर लें	औरतें	तुम तलाक़ दो	और जब	231	जानने वाला
فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا						
वह राज़ी हों	जब	खाबिन्द अपने	वह निकाह करें	कि	रोको उन्हें	तो न
بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ذَلِكَ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ						
हो	जो	उस से	नसीहत की जाती है	यह	दस्तूर के मुताबिक़	आपस में
مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَمِ آيَاتُ						
ज़ियादा सुथरा	यही	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान रखता	तुम में से	
لَكُمْ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٢﴾						
232	जानते	नहीं	और तुम	जानता है	और अल्लाह	और ज़ियादा पाकीज़ा तुम्हारे लिए

وَالْوَالِدَتُ يُرْضَعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ						
चाहे	जो कोई	पूरे	दो साल	अपनी औलाद	दूध पिलाएं	और माएँ
أَنْ يُتِمَّ الرِّضَاعَةَ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ						
दस्तूर के मुताबिक	और उन का लिबास	उन का खाना	जिस का बच्चा (बाप)	और पर	दूध पिलाने कि मुद्दत	कि वह पूरी करे
لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ						
जिस का बच्चा (बाप)	और न	उस के बच्चे के सबब	माँ	न नुकसान पहुँचाया जाए	उस की वुस्अत	कोई शख्स मगर नहीं तक्लीफ दी जाती
بِوَلَدِهِ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَلِكَ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ						
आपस की रज़ामन्दी से	दूध छुड़ाना	दोनों चाहें	फिर अगर	यह-उस	ऐसा	वारिस और पर
مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ						
कि	तुम चाहो	और अगर	उन दोनों पर	गुनाह	तो नहीं	और बाहम मशवरा दोनों से
تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُمْ						
तुम ने दिया था	जो	तुम हवाले कर दो	जब	तुम पर	तो गुनाह नहीं	अपनी औलाद तुम दूध पिलाओ
بِالْمَعْرُوفِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (२३३)						
233	देखने वाला	तुम करते हो	से-जो	अल्लाह	कि	और जान लो
وَالَّذِينَ يُتَوَقَّفُونَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ						
अपने आप को	वह इन्तिज़ार में रखें	बीवियाँ	और छोड़ जाएँ	तुम से	वफात पा जाएँ	और जो लोग
أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ						
तुम पर	तो नहीं गुनाह	अपनी मुद्दत (इद्दत)	वह पहुँच जाएँ	फिर जब	और दस (दिन)	महीने चार
فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (२३४)						
234	वाख़बर	जो तुम करते हो उस से	और अल्लाह	दस्तूर के मुताबिक	अपनी जानें (अपने हक)	में वह करें में-जो
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنُتُمْ						
तुम छुपाओ	या	औरतों को	पैग़ामे निकाह	उस से	इशारे में	में-जो तुम पर और नहीं गुनाह
فِي أَنْفُسِكُمْ عِلْمَ اللَّهِ أَنْكُمْ سَتَذَكَّرُوْنَهُنَّ وَلَكِنْ لَا تُؤَاعِدُوْهُنَّ						
न वादा करो उन से	और लेकिन	जल्द ज़िक्र करोगे उन से	कि तुम	जानता है अल्लाह	अपने दिलों में	
سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَّعْرُوفًا وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ						
निकाह	गिरह	इरादा करो	और न	दस्तूर के मुताबिक	बात तुम कहो	मगर यह कि छुप कर
حَتَّى يَبْلُغَ الْكِتْبُ أَجَلَهُ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي						
में	जो	जानता है	अल्लाह	कि	और जान लो	उस की मुद्दत इद्दत पहुँच जाए यहाँ तक
أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ (२३५)						
235	तहम्मुल वाला	बख़शने वाला	अल्लाह	कि	और जान लो	सो डरो उस से अपने दिल

और माएँ अपनी औलाद को पूरे दो साल दूध पिलाएँ जो कोई दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे, और उन (माओं) का खाना और उन का लिबास बाप पर (वाजिब है) दस्तूर के मुताबिक, और किसी को तक्लीफ नहीं दी जाती मगर उस की वुस्अत (बरदाशत) के मुताबिक, माँ को नुकसान न पहुँचाया जाए उस के बच्चे के सबब और न बाप को उस के बच्चे के सबब, और वारिस पर भी ऐसा ही (वाजिब) है, फिर अगर वह दोनों दूध छुड़ाना चाहें आपस की रज़ामन्दी और मशवरे से तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, और अगर तुम चाहो कि अपनी औलाद को दूध पिलाओ (गैर औरत से) तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जब तुम दस्तूर के मुताबिक (उन के) हवाले कर दो जो तुम ने देना ठहराया था, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे देखने वाला है। (233)

और तुम में से जो लोग वफात पा जाएँ और छोड़ जाएँ बीवियाँ, वह (वेवाएँ) अपने आप को इन्तिज़ार में रखें चार माह दस दिन, फिर जब वह अपनी मुद्दत को पहुँच जाएँ (इद्दत पूरी कर लें) तो उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने हक में करें दस्तूर के मुताबिक, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से वाख़बर है। (234)

और तुम पर उस में कोई गुनाह नहीं कि तुम औरतों को इशारे कनाए में निकाह का पैग़ाम दो या अपने दिलों में छुपाओ, अल्लाह जानता है तुम जल्द उन से ज़िक्र कर दोगे, लेकिन उन से छुप कर (निकाह का) वादा न करो, मगर यह कि तुम दस्तूर के मुताबिक बात करो, और निकाह की गिरह बाँधने का इरादा न करो यहाँ तक कि इद्दत अपनी मुद्दत तक पहुँच जाए, और जान लो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह जानता है, सो तुम उस से डरो और जान लो कि अल्लाह बख़शने वाला, तहम्मुल वाला है। (235)

तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम औरतों को तलाक़ दो जब कि तुम ने उन्हें हाथ न लगाया हो या उन के लिए मेहर मुकर्रर न किया हो, और उन्हें खर्च दो, खुशहाल पर उस की हैसियत के मुताबिक़ और तंगदस्त पर उस की हैसियत के मुताबिक़, खर्च दस्तूर के मुताबिक़ (देना) नेकोकारों पर लाज़िम है। (236)

और अगर तुम उन्हें तलाक़ दो इस से पहले कि तुम ने उन्हें हाथ लगाया हो और उन के लिए तुम मेहर मुकर्रर कर चुके हो तो उस का निस्फ़ (दे दो) जो तुम ने मुकर्रर किया सिवाए उस के कि वह माफ़ कर दें या वह माफ़ कर दे जिस के हाथ में अक़दे निकाह है, और अगर तुम माफ़ कर दो तो यह परहेज़गारी के करीब तर है, और बाहम एहसान करना न भूलो, वेशक़ जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (237)

तुम नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो (खुसूसन) दरमियानी नमाज़ की और अल्लाह के लिए फ़रमांवरदार (बन कर) खड़े रहो। (238)

फिर अगर तुम्हें डर हो तो प्यादापा या सवार (अदा करो), फिर जब अमन पाओ तो अल्लाह को याद करो जैसा कि उस ने तुम्हें सिखाया है जो तुम न थे जानते। (239)

और जो लोग तुम में से वफ़ात पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं तो अपनी बीवियों के लिए एक साल तक नान नफ़का की वसीयत करें निकाले बग़ैर, फिर अगर वह खुद निकल जाएं तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने तई दस्तूर के मुताबिक़ करें, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (240)

और मुतल्लका औरतों के लिए दस्तूर के मुताबिक़ नान नफ़का लाज़िम है परहेज़गारों पर। (241) इसी तरह तुम्हारे लिए अल्लाह अपने अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम समझो। (242)

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمْسُوهُنَّ أَوْ							
या	तुम ने उन्हें हाथ लगाया	जो न	औरतें	तुम तलाक़ दो	अगर	तुम पर	नहीं गुनाह
تَفَرِّضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۖ وَمَتَّعُوهُنَّ عَلَى الْمَوْسِعِ قَدَرُهُ							
उस की हैसियत	खुशहाल	पर	और उन्हें खर्च दो	मेहर	उन के लिए	मुकर्रर किया	
وَعَلَى الْمُقْتَرِ قَدَرُهُ ۖ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ (٢٣٦)							
236	नेकोकार	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	खर्च	उस की हैसियत	तंगदस्त और पर
وَإِنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ							
और तुम मुकर्रर कर चुके हो	उन्हें हाथ लगाओ	कि	पहले	तुम उन्हें तलाक़ दो	और अगर		
لَهُنَّ فَرِيضَةٌ فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ							
या	वह माफ़ कर दें	यह कि	सिवाए	तुम ने मुकर्रर किया	जो	तो निस्फ़	मेहर उन के लिए
يَعْفُوا ۚ الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ							
परहेज़गारी के	ज़ियादा करीब	तुम माफ़ कर दो	और अगर	निकाह की गिरह	उस के हाथ में	वह जो	माफ़ कर दे
وَلَا تَنْسُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (٢٣٧)							
237	देखने वाला	तुम करते हो	उस से जो	वेशक़ अल्लाह	बाहम	एहसान करना	और न भूलो
حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ							
अल्लाह के लिए	और खड़े रहो	दरमियानी	और नमाज़	नमाज़ों की	तुम हिफ़ाज़त करो		
قَبِيلَيْنِ (٢٣٨) فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ زُكْبَانًا ۖ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ							
अल्लाह	तो याद करो	तुम अमन पाओ	फिर जब	सवार	या	तो प्यादापा	तुम्हें डर हो फिर अगर 238 फ़रमांवरदार (जमा)
كَمَا عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ (٢٣٩) وَالَّذِينَ يُتَوَقَّؤْنَ							
वफ़ात पा जाएं	और जो लोग	239	जानते	तुम न थे	जो	उस ने तुम्हें सिखाया	जैसा कि
مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا ۖ وَصِيَّةً لِأَزْوَاجِهِمْ مَتَاعًا							
नान नफ़का	अपनी बीवियों के लिए	वसीयत	बीवियां	और छोड़ जाएं	तुम में से		
إِلَى الْحَوْلِ غَيْرِ إِخْرَاجٍ ۖ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي							
में	तुम पर	गुनाह	तो नहीं	वह निकल जाएं	फिर अगर	निकाले	बग़ैर एक साल तक
مَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوفٍ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (٢٤٠)							
240	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	दस्तूर	से	अपने तई	में जो वह करें
وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ (٢٤١)							
241	परहेज़गारों	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	नान नफ़का	और मुतल्लका औरतों के लिए	
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ (٢٤٢)							
242	समझो	ताकि तुम	अपने अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ									
क्या तुम ने नहीं देखा	तरफ़	वह लोग जो	निकले	से	अपने घर (जमा)	और वह	हज़ारों	डर	मौत
فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ									
सो कहा	उन्हें	अल्लाह	तुम मर जाओ	फिर	उन्हे ज़िन्दा किया	वेशक अल्लाह	फ़ज़ल वाला		
عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ									
लोगों पर	और लेकिन	अक्सर	लोग	शुक्र अदा नहीं करते	243	और तुम लड़ो	में	अल्लाह का रास्ता	
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ									
और जान लो	कि	अल्लाह	सुनने वाला	जानने वाला	244	कौन	वह	जो कि	कर्ज़ दे अल्लाह
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضْعِفُهُ لَهُ أَصْعَافًا كَثِيرَةً وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُطُ									
कर्ज़ अच्छा	पस वह उसे बढ़ा दे	उस के लिए	कई गुना ज़ियादा	और अल्लाह	और करता है	तंगी करता है	और फ़राखी करता है		
وَأَلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ مِنْ بَعْدِ									
और उस की तरफ़	तुम लौटाए जाओगे	245	क्या तुम ने नहीं देखा	तरफ़	सरदारों	से	बनी इस्राईल	से	वाद
مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا لِنَبِيِّ لَهُمْ ابْعَثْ لَنَا مَلَكًا يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ									
मूसा (अ)	जब	उन्होंने ने कहा	अपने नबी से	मुक़र्रर कर दें	हमारे लिए	एक बादशाह	हम लड़ें	में	अल्लाह का रास्ता
قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا									
उस ने कहा	क्या	हो सकता है कि तुम	अगर	तुम पर फ़र्ज़ की जाए	जंग	कि तुम न लड़ो			
قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ									
वह कहने लगे	और हमें क्या हुआ	कि न	हम लड़ेंगे	में	अल्लाह की राह	और अलबत्ता	हम निकाले गए	से	
دِيَارِنَا وَأَبْنَاءِنَا فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا									
अपने घर	और अपनी आल औलाद	फिर जब	उन पर फ़र्ज़ की गई	जंग	वह फिर गए	सिवाए	चन्द		
مِّنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ									
उन में से	और अल्लाह	जानने वाला	ज़ालिमों को	246	और कहा	उन्हें	उन का नबी	वेशक अल्लाह	
قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلَكًا قَالُوا اتِّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ									
मुक़र्रर कर दिया है	तुम्हारे लिए	तालूत	बादशाह	वह बोले	कैसे	हो सकती है	उस के लिए	बादशाहत	
عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ									
हम पर	और हम	ज़ियादा हक़दार	बादशाहत के	उस से	और नहीं दी गई	वुस्त्रत	से	माल	
قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ									
उस ने कहा	वेशक अल्लाह	उसे चुन लिया	तुम पर	और उसे ज़ियादा दी	वुस्त्रत	में	इल्म		
وَالْجِسْمِ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾									
और जिस्म	और अल्लाह	देता है	अपना मुल्क	जिसे	चाहता है	और अल्लाह	वुस्त्रत वाला	जानने वाला है	247

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से निकले मौत के डर से? और वह हज़ारों थे, सो अल्लाह ने उन्हें कहा तुम मर जाओ, फिर उन्हें ज़िन्दा किया, वेशक अल्लाह फ़ज़ल वाला है लोगों पर, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (243)

और तुम अल्लाह के रास्ते में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (244)

कौन है जो अल्लाह को कर्ज़ दे अच्छा कर्ज़, फिर वह उसे कई गुना ज़ियादा बढ़ा दे, अल्लाह तंगी (भी) देता है और फ़राखी (भी) देता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (245)

क्या तुम ने बनी इस्राईल के सरदारों की तरफ़ नहीं देखा मूसा के बाद? जब उन्होंने ने अपने नबी से कहा हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दें ताकि हम लड़ें अल्लाह के रास्ते में, उस ने कहा:

हो सकता है कि अगर तुम पर जंग फ़र्ज़ की जाए तो तुम न लड़ो, वह कहने लगे और हमें क्या हुआ कि हम अल्लाह की राह में न लड़ेंगे, और अलबत्ता हम अपने घरों से और अपनी आल औलाद से निकाले गए हैं, फिर जब उन पर जंग फ़र्ज़ की गई तो उन में से चन्द एक के सिवा (सब) फिर गए, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। (246)

और कहा उन्हें उन के नबी ने वेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह मुक़र्रर कर दिया है, वह बोले कैसे हम पर उस की बादशाहत हो सकती है? हम उस से ज़ियादा बादशाहत के हक़दार हैं, और उसे वुस्त्रत नहीं दी गई माल से, उस ने कहा वेशक अल्लाह ने उसे तुम पर चुन लिया है और उसे ज़ियादा वुस्त्रत दी है इल्म और ज़िस्म में, और अल्लाह जिसे चाहता है अपना मुल्क देता है, और अल्लाह वुस्त्रत वाला जानने वाला है। (247)

और उन्हें उन के नबी ने कहा वेशक उस की हुकूमत की निशानी यह है कि तुम्हारे पास ताबूत आएगा, उस में तुम्हारे रब की तरफ से सामाने तसकीन होगा और बची हुई चीज़ें जो आले मूसा और आले हारून ने छोड़ी थीं उसे फरिश्ते उठा लाएंगे, वेशक उस में तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान वाले हो। (248)

फिर जब तालूत लश्कर के साथ बाहर निकला, उस ने कहा वेशक अल्लाह एक नहर से तुम्हारी आजमाइश करने वाला है, पस जिस ने उस से (पानी) पी लिया वह मुझ से नहीं, और जिस ने उसे न चखा वह वेशक मुझ से है सिवाए उस के जो अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले, फिर चन्द एक के सिवा उन्होंने ने उसे पी लिया, पस जब वह (तालूत) और जो उस के साथ ईमान लाए थे उस के पार हुए, उन्होंने ने कहा आज हमें ताकत नहीं जालूत और उस के लश्कर के साथ (मुक़ाबिले की), जो लोग यकीन रखते थे कि वह अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्होंने ने कहा, बारहा छोटी जमाअतें ग़ालिब हुई हैं अल्लाह के हुकम से बड़ी जमाअतों पर, और अल्लाह सब् र करने वालों के साथ है। (249)

और जब जालूत और उस के लश्कर आमने सामने हुए तो उन्होंने ने कहा ऐ हमारे रब! हमारे (दिलों में) सब् र डाल दे, और हमारे क़दम जमादे, और हमारी मदद कर काफ़िर कौम पर। (250)

फिर उन्होंने ने अल्लाह के हुकम से उन्हें शिकस्त दी और दाऊद (अ) ने जालूत को क़तल किया, और अल्लाह ने उसे मुल्क और हिक्मत अता की और उसे सिखाया जो चाहा, और अगर अल्लाह न हटाता बाज़ लोगों को बाज़ लोगों के ज़रीए तो ज़मीन ज़रूर ख़राब हो जाती और लेकिन अल्लाह तमाम ज़हानों पर फ़ज़ल वाला है। (251)

यह अल्लाह के अहकाम हैं, हम वह आप को ठीक ठीक सुनाते हैं और वेशक आप (स) ज़रूर रसूलों में से है। (252)

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ									
और कहा	उन्हें	उन का नबी	वेशक	निशानी	उस की हुकूमत	कि	आएगा तुम्हारे पास	ताबूत	उस में
سَكِينَةً مِنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ									
सामाने तसकीन	से	तुम्हारा रब	और बची हुई	उस से जो	छोड़ा	आले मूसा	और आले हारून		
تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾									
उठाएंगे उसे	फरिश्ते	वेशक	उस में	निशानी	तुम्हारे लिए	अगर	तुम हो	ईमान वाले	248
فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ									
फिर जब	बाहर निकला	तालूत	लश्कर के साथ	उस ने कहा	वेशक अल्लाह	तुम्हारी आजमाइश करने वाला	एक नहर से		
فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا									
पस जिस	पी लिया	उस से	तो नहीं	मुझ से	और जिस	उसे न चखा	तो वेशक वह	मुझ से	सिवाए
مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ									
जो	चुल्लू भर ले	एक चुल्लू	अपने हाथ से	फिर उन्होंने ने पी लिया	उस से	सिवाए	चन्द एक	उन से	पस जब
هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ									
वह	और वह जो	ईमान लाए	उस के साथ	उन्होंने ने कहा	नहीं ताकत	हमारे लिए	आज	जालूत के साथ	और उस का लश्कर
قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُّلْقُوا اللَّهَ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ									
कहा	जो लोग	यकीन रखते थे	कि वह	मिलने वाले	अल्लाह	बारहा	से	जमाअतें	छोटी
غَلَبَتْ فِئَةٌ كَثِيرَةٌ بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الضَّالِّينَ ﴿٢٤٩﴾ وَلَمَّا									
ग़ालिब हुई	जमाअतें	बड़ी	अल्लाह के हुकम से	और अल्लाह	साथ	सब्र करने वाले	249	और जब	
بَرَزُوا لَجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبَّتْ									
आमने सामने हुए	जालूत के	और उस का लश्कर	उन्होंने ने कहा	ऐ हमारे रब	डाल दे	हम पर	सब्र	और जमादे	
أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٥٠﴾ فَهَزَمُوهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ									
हमारे क़दम	और हमारी मदद कर	पर	कौम	काफ़िर (जमा)	250	फिर उन्होंने ने शिकस्त दी उन्हें	अल्लाह के हुकम से		
وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَاتَّهَ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ									
और क़तल किया	दाऊद (अ)	जालूत	और उसे दिया	अल्लाह	मुल्क	और हिक्मत	और उसे सिखाया		
مِمَّا يَشَاءُ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ									
जो	चाहा	और अगर न	हटाता	अल्लाह	लोग	बाज़ लोग	बाज़ के ज़रीए		
لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٢٥١﴾ تِلْكَ									
ज़रूर ख़राब हो जाती	ज़मीन	और लेकिन	अल्लाह	फज़ल वाला	पर	तमाम जहान	251	यह	
آيَةُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾									
अल्लाह के अहकाम	हम सुनाते हैं उन को	आप पर	ठीक ठीक	और वेशक आप (स)	ज़रूर-से	रसूल (जमा)	252		

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ مِنْهُمْ					
यह रसूल (जमा)	हम ने फज़ीलत दी	उन के बाज़	पर	बाज़	उन में
مَنْ كَلَّمَ اللَّهَ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ					
जिस से अल्लाह ने कलाम किया	और बुलन्द किए	उन के बाज़	दरजे	और हम ने दी	ईसा (अ) का बेटा
الْبَيِّنَاتِ وَآيَدْنَاهُ بَرْوَحِ الْقُدُسِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ					
खुली निशानियां	और उस की ताईद की हम ने	रुहुल कुदुस (जिब्राईल अ) से	और अगर	चाहता अल्लाह	न
مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنْ اخْتَلَفُوا					
उन के बाद	वाद से	जो (जब) आ गई उन के पास	खुली निशानियां	और लेकिन	उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया
فَمِنْهُمْ مَّنْ آمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلُوا					
फिर उन से	जो - कोई	ईमान लाया	और उन से	कोई - बाज़	वह बाहम न लड़ते
وَلَكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا					
और लेकिन अल्लाह	करता है	जो वह चाहता है	253	ऐ	जो ईमान लाए (ईमान वाले)
مِمَّا رَزَقْنَكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ					
से जो	हम ने दिया तुम्हें	से पहले	कि	आजाए	वह दिन
وَلَا شَفَاعَةٌ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٥٤﴾ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ					
और न सिफारिश	और काफिर (जमा)	वही	ज़ालिम (जमा)	254	अल्लाह
الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا					
ज़िन्दा	थामने वाला	न उसे आती है	ऊन्ध	और न	नीन्द
فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا					
ज़मीन में	कौन जो	वह जो	सिफारिश करे	उस के पास	उस की इजाज़त से
بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا					
उन के सामने	और जो	उन के पीछे	और नहीं	वह अहाता करते हैं	किसी चीज़ का
بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا					
जितना वह चाहे	समा लिया	उस की कुर्सी	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	और नहीं
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾ لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ					
और वह	बुलन्द मरतबा	अज़मत वाला	255	नहीं ज़बरदस्ती	में
مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ					
से	गुमराही	पस जो	न माने	गुमराह करने वाले को	और ईमान लाए
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥٦﴾					
हलके को	मज़बूती	टूटना नहीं	उस को	और अल्लाह	सुनने वाला
256					

यह रसूल है! हम ने उन में से बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत दी। उन में (बाज़) से अल्लाह ने कलाम किया और उन में से बाज़ के दरजे बुलन्द किए, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दी और हम ने रुहुल कुदुस (अ) से उस की ताईद की, और अगर अल्लाह चाहता तो वह बाहम न लड़ते जो उन के बाद हुए, उस के बाद जबकि उन के पास खुली निशानियां आगई, लेकिन उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया, फिर उन में से कोई ईमान लाया और उन में से किसी ने कुफ़ किया, और अगर अल्लाह चाहता तो वह बाहम न लड़ते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है करता है। (253)

ऐ ईमान वालो! जो हम ने तुम्हें दिया उस में से खर्च करो इस से पहले कि वह दिन आजाए जिस में न ख़रीद ओ फ़रोख़्त होगी, न दोस्ती और न सिफारिश, और काफिर वही ज़ालिम है। (254)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िन्दा, सब को थामने वाला, न उसे ऊन्ध आती है और न नीन्द, उसी का है जो आस्मानों और ज़मीन में है, कौन है जो सिफारिश करे उस के पास उस की इजाज़त के बग़ैर, वह जानता है जो उन के सामने है और जो उन के पीछे है, और वह नहीं अहाता कर सकते उस के इल्म में से किसी चीज़ का मगर जितना वह चाहे, उस की कुर्सी समाए हुए है आस्मानों और ज़मीन को, उस को उन की हिफ़ाज़त नहीं थकाती, और वह बुलन्द मरतबा, अज़मत वाला है। (255)

ज़बरदस्ती नहीं दीन में, वेशक हिदायत से गुमराही जुदा हो गई है, पस जो गुमराह करने वाले को न माने और अल्लाह पर ईमान लाए, पस तहकीक़ उस ने हलके को मज़बूती से थाम लिया, टूटना नहीं उस को, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (256)

जो लोग ईमान लाए अल्लाह उन का मददगार है, वह उन्हें निकालता है अन्धेरो से रौशनी की तरफ, और जो लोग काफिर हुए उन के साथी गुमराह करने वाले हैं, वह उन्हें निकालते हैं रौशनी से अन्धेरो की तरफ, यही लोग दोज़खी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (257)

क्या आप ने उस शख्स की तरफ नहीं देखा जिस ने इब्राहीम (अ) से उन के रब के बारे में झगड़ा किया कि अल्लाह ने उसे बादशाहत दी थी, जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरा रब वह है जो ज़िन्दा करता है और मारता है। उस ने कहा मैं ज़िन्दा करता हूँ और मारता हूँ, इब्राहीम (अ) ने कहा वेशक अल्लाह सूरज को मशरिफ़ से निकालता है, पस तू उसे ले आ मशरिफ़ से, तो वह काफिर हैरान रह गया, और अल्लाह नाइन्साफ़ लोगों को हिदायत नहीं देता। (258)

या उस शख्स के मानिंद जो एक बस्ती से गुज़रा, और वह अपनी छतों पर गिरी पड़ी थी, उस ने कहा अल्लाह उस के मरने के बाद उसे क्योंकर ज़िन्दा करेगा? तो अल्लाह ने उसे एक सौ साल मुर्दा रखा, फिर उसे उठाया (ज़िन्दा किया), अल्लाह ने पूछा तू कितनी देर रहा? उस ने कहा मैं एक दिन या दिन से कुछ कम रहा, उस ने फरमाया बल्कि तू एक सौ साल रहा है, पस तू अपने खाने पीने की तरफ़ देख, वह सड़ नहीं गया, और अपने गधे की तरफ़ देख, और हम तुझे लोगों के लिए एक निशानी बनाएंगे, और हड्डियों की तरफ़ देख हम उन्हें किस तरह जोड़ते हैं, फिर उन्हें गोश्त चढ़ाते हैं, फिर जब उस पर वाज़ेह हो गया तो उस ने कहा मैं जान गया कि अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। (259)

اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ							
रौशनी	तरफ़	अन्धेरो	से	वह उन्हें निकालता है	जो लोग ईमान लाए	मददगार	अल्लाह
وَالَّذِينَ كَفَرُوا أُولَئِهِمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ مِنَ النُّورِ							
रौशनी	से	और उन्हें निकालते हैं	शैतान	उन के साथी	और जो लोग काफिर हुए		
إِلَى الظُّلُمَاتِ أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٥٧﴾							
257	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़खी	यही लोग	अन्धेरे (जमा)	तरफ़
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ آتَاهُ اللَّهُ							
अल्लाह ने उसे दी	कि	उस का रब	बारे (में)	इब्राहीम (अ)	झगड़ा किया	वह शख्स जो	क्या नहीं देखा आप (स) ने
الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا							
मैं	उस ने कहा	और मारता है	ज़िन्दा करता है	जो कि	मेरा रब	इब्राहीम	कहा जब बादशाहत
أُحْيِي وَأُمِيتُ قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ							
सूरज को	लाता है	वेशक अल्लाह	इब्राहीम	कहा	और मैं मारता हूँ	ज़िन्दा करता हूँ	
مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ							
जिस ने कुफ़ किया (काफिर)	तो वह हैरान रह गया	मशरिफ	से	पस तू उसे ले आ	मशरिफ़	से	
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥٨﴾ أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ							
एक बस्ती	पर (से)	गुज़रा	उस शख्स के मानिंद जो	या	258	नाइन्साफ़ लोग	नहीं हिदायत देता और अल्लाह
وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّى يُحْيِي هَذِهِ اللَّهُ بَعْدَ							
बाद	अल्लाह	इस	ज़िन्दा करेगा	क्योंकर	उस ने कहा	अपनी छतों पर	गिर पड़ी थी और वह
مَوْتِهَا فَاِمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ قَالَ كَمْ لَبِثْتُ							
कितनी देर रहा	उस ने पूछा	उसे उठाया	फिर	साल	एक सौ	तो अल्लाह ने उस को मुर्दा रखा	इस का मरना
قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بَلْ لَبِثْتُ							
तू रहा	बल्कि	उस ने कहा	दिन से कुछ कम	या	एक दिन	मैं रहा	उस ने कहा
مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ وَانْظُرْ							
और देख	वह नहीं सड़ गया	और अपना पीना	अपना खाना	तरफ़	पस तू देख	एक सौ साल	
إِلَى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَ آيَةً لِلنَّاسِ وَانْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ							
हड्डियां	तरफ़	और देख	लोगों के लिए	एक निशानी	और हम तुझे बनाएंगे	अपना गधा	तरफ़
كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوها لَحْمًا فَلَمَّا تَبَيَّنَ							
वाज़ेह हो गया	फिर जब	गोश्त	हम उसे पहनाते हैं	फिर	हम उन्हें जोड़ते हैं	किस तरह	
لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾							
259	कुदरत वाला	हर चीज़	पर	कि अल्लाह	मैं जान गया	उस ने कहा	उस पर

۳۲
ع۲

۳۳
ع۲

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ ارْنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ قَالَ أُولَٰئِكَ									
क्या नहीं	उस ने कहा	मुर्दा	तू ज़िन्दा करता है	क्योंकर	मुझे दिखा	मेरे रब	इब्राहीम	कहा	और जब
تُؤْمِنُ ۚ قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِنْ لَّيَظْمَنُ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً									
चार (4)	पस पकड़ ले	उस ने कहा	मेरा दिल	ताकि इत्मिनान हो जाए	और लेकिन	क्यों नहीं	उस ने कहा	यकीन किया	
مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ									
उन से (उन के)	पहाड़	हर	पर	रख दे	फिर	अपने साथ	फिर उन को हिला	परिन्दे	से
جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ									
गालिव	कि अल्लाह	और जान ले	दौड़ते हुए	वह तेरे पास आएंगे	उन्हें बुला	फिर	टुकड़े		
حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ									
अल्लाह का रास्ता	में	अपने माल	खर्च करते हैं	जो लोग	मिसाल	260	हिक्मत वाला		
كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۚ									
दाने	सौ (100)	हर बाल	में	वाले	सात	उगें	एक दाना	मानिंद	
وَاللَّهُ يُضْعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾ الَّذِينَ									
जो लोग	261	जानने वाला	बुझत वाला	और अल्लाह	चाहता है	जिस के लिए	बढ़ाता है	और अल्लाह	
يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا									
जो उन्होंने ने खर्च किया	बाद में नहीं रखते	फिर	अल्लाह का रास्ता	में	अपने माल	खर्च करते हैं			
مِّنَّا وَلَا آذَىٰ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ									
उन पर	कोई खौफ	और न	उन का रब	पास	उन का अजर	उन के लिए	कोई तकलीफ	और न एहसान	
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ									
खैरात	से	बेहतर	और दरगुज़र	अच्छी	वात	262	ग़मगीन होंगे	वह और न	
يَتَّبِعُهَا آذَىٰ ۚ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ﴿٢٦٣﴾ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا									
ईमान वालो	ऐ	263	बुर्दवार	बेनियाज़	और अल्लाह	ईज़ा देना (सताना)	उस के बाद हो		
لَا تُبْطِلُوا صَدَقَتَكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ ۚ كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ									
अपना माल	खर्च करता	उस शख्स की तरह जो	और सताना	एहसान जतला कर	अपने खैरात	न ज़ाया करो			
رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ									
जैसी मिसाल	पस उस की मिसाल	और आखिरत का दिन	अल्लाह पर	और ईमान नहीं रखता	लोग	दिखलावा			
صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۚ لَا يَقْدِرُونَ									
वह कुदरत नहीं रखते	साफ़	तो उसे छोड़ दे	तेज़ बारिश	फिर उस पर बरसे	मिट्टी	उस पर	चिकना पत्थर		
عَلَىٰ شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦٤﴾									
264	काफ़ि़रों की कौम	राह नहीं दिखाता	और अल्लाह	उन्होंने ने कमाया	उस से जो	कोई चीज़	पर		

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरे रब! मुझे दिखा दे तू क्योंकर मुर्दा को ज़िन्दा करता है, अल्लाह ने कहा

क्या तू ईमान नहीं रखता? उस ने कहा क्यों नहीं? बल्कि (चाहता हूँ) ताकि मेरे दिल को इत्मिनान हो जाए, उस ने कहा पस तू चार परिन्दे पकड़ ले, फिर उन को अपने साथ हिला ले, फिर रख दे हर पहाड़ पर उन के टुकड़े, फिर उन्हें बुला वह तेरे पास दौड़ते हुए आएंगे, और जान ले कि अल्लाह ग़ालिव हिक्मत वाला है। (260)

उन लोगों की मिसाल जो खर्च करते हैं अपने माल अल्लाह के रास्ते में, एक दाने के मानिंद है जिस से सात बालें उगें, हर बाल में सौ दाने हों, और अल्लाह जिस के लिए चाहता है बढ़ाता है, और अल्लाह बुझत वाला जानने वाला है। (261)

जो लोग अपने माल अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हैं, फिर नहीं रखते खर्च करने के बाद कोई एहसान, न कोई तकलीफ़ (पहुँचाते हैं) उन के लिए उन के रब के पास अजर है, न कोई खौफ़ उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (262)

अच्छी बात करना और दरगुज़र करना बेहतर है उस खैरात से जिस के बाद ईज़ा देना हो, और अल्लाह बेनियाज़ बुर्दवार है। (263)

ऐ ईमान वालो! अपने खैरात एहसान जतला कर और सता कर ज़ाया न करो उस शख्स की तरह जो अपना माल लोगों के दिखलावे को खर्च करता है और अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखता, पस उस की मिसाल उस साफ़ पत्थर जैसी है जिस पर मिट्टी हो, फिर उस पर तेज़ बारिश बरसे तो उसे छोड़ दे बिलकुल साफ़, वह उस पर कुछ कुदरत नहीं रखते जो उन्होंने ने कमाया, और अल्लाह राह नहीं दिखाता काफ़ि़रों को। (264)

और (उन की) मिसाल जो अपने माल खर्च करते हैं खुशनूदी हासिल करने अल्लाह की, और अपने दिलों के पूरे सवात ओ करार के साथ, (ऐसी है) जैसे बुलन्दी पर एक बाग़ है, उस पर तेज़ बारिश पड़ी तो उस ने दुगना फल दिया, फिर अगर तेज़ बारिश न पड़ी तो फूवार (ही काफी है), और अल्लाह जो तुम करते हो देखने वाला है। (265)

क्या तुम में से कोई पसन्द करता है कि उस का एक बाग़ हो खजूर और अंगूरों का, उस के नीचे नहरें बहती हों, उस के लिए उस में हर किसम के फल हों, और उस पर बुढ़ापा आ गया हो और उस के बच्चे बहुत कमज़ोर हों, तब उस पर एक बगोला आ पड़ा, उस में आग थी तो वह (बाग़) जल गया, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए निशानियां बाज़ेह करता है ताकि तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करो। (266)

ऐ ईमान वालो! खर्च करो उस में से पाकीज़ा चीज़ें जो तुम कमाओ और उस में से जो हम ने निकाला तुम्हारे लिए ज़मीन से, और उस में से गन्दी चीज़ खर्च करने का इरादा न करो, जबकि तुम खुद उस को लेने वाले नहीं मगर यह कि तुम चशम पोशी कर जाओ, और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़, खूबियों वाला है। (267)

शैतान तुम को तंगदस्ती से डराता है और तुम्हें बेहयाई का हुक्म देता है, और अल्लाह तुम से अपनी बख़्शिश और फ़ज़ल का वादा करता है, और अल्लाह वुस्अत वाला जानने वाला है। (268)

वह जिसे चाहता है हिक्मत (दानाई) अता करता है, और जिसे हिक्मत दी गई तहकीक़ उसे दी गई बहुत भलाई, और अक़ल वालों के सिवा कोई नसीहत कुबूल नहीं करता। (269)

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ											
और मिसाल		जो लोग		खर्च करते हैं		अपने माल		हासिल करना		अल्लाह की खुशनुदी	
وَتَثْبِيٓتًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ											
और सवात ओ यकीन		से		अपने दिल (जमा)		जैसे		एक बाग़		बुलन्दी पर	
उस पर पड़ी		तेज़ बारिश		उस का		एक बाग़		से		तेज़ बारिश	
فَأَتَتْ أَكْلَهَا ضِعْفَيْنِ فَإِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ وَاللَّهُ											
तो उस ने दिया		फल		दुगना		फिर अगर		न पड़ी		तेज़ बारिश	
तो फूवार		और अल्लाह									
بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٦٥﴾ أَيُّودٌ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ											
जो		तुम करते हो		देखने वाला		265		क्या पसन्द करता है		तुम में से कोई	
कि		हो		उस का		एक बाग़		से		(का)	
نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِنْ											
खजूर		और अंगूर		बहती हों		से		उस के नीचे		नहरें	
उस के लिए		उस में		से							
كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاءٌ فَأَصَابَهَا											
हर किसम के फल		और उस पर आ गया		बुढ़ापा		और उस के		बच्चे		बहुत कमज़ोर	
तब उस पर पड़ा											
إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ											
एक बगोला		उस में		आग		तो वह जल गया		इसी तरह		अल्लाह बाज़ेह करता है	
तुम्हारे लिए		निशानियां									
لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٦٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ											
ताकि तुम		गौर ओ फ़िक्र करो		266		ऐ		जो ईमान लाए (ईमान वालो)		तुम खर्च करो	
से											
طَيِّبَتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ											
पाकीज़ा		जो		तुम कमाओ		और से-जो		हम ने निकाला		तुम्हारे लिए	
से		ज़मीन									
وَلَا تَيْمَمُوا الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِآخِذِيهِ											
और न		इरादा करो		गन्दी चीज़		से-जो		तुम खर्च करते हो		जब कि तुम नहीं हो	
उस को लेने वाले											
إِلَّا أَنْ تُغْمِضُوا فِيهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٢٦٧﴾											
मगर		यह कि		चश्म पोशी करो		उस में		और तुम जान लो		कि अल्लाह	
खूबियों वाला		267		बेनियाज़		खूबियों वाला					
الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ وَاللَّهُ											
शैतान		तुम को डराता है		तंगदस्ती		और तुम्हें हुक्म देता है		बेहयाई का		और अल्लाह	
يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦٨﴾											
तुम से वादा करता है		बख़्शिश		उस से (अपनी)		और फज़ल		और अल्लाह		वुस्अत वाला	
जानने वाला		268									
يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَاءُ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ											
वह अता करता है		हिक्मत, दानाई		जिसे		वह चाहता है		और जिसे		दी गई	
हिक्मत											
فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾											
तहकीक़ दी गई		भलाई		बहुत		और नहीं		नसीहत कुबूल करता		सिवाए	
अक़ल वाले		269									

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ						
और जो	तुम खर्च करोगे	से	कोई ख़ैरात	या	तुम नज़र मानो	कोई नज़र
فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ (٢٧٠)						
तो बेशक अल्लाह	उसे जानता है	और नहीं	ज़ालिमों के लिए	कोई मददगार	270	
إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَإِنْ تُخْفُوهَا						
अगर	ज़ाहिर (अलानिया) दो	ख़ैरात	तो अच्छी बात	यह	और अगर	उस को छुपाओ
وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمُ						
और वह पहुँचाओ	तंगदस्त (जमा)	तो वह	बेहतर	तुम्हारे लिए	और दूर कर देगा	तुम से
مِّنْ سَيِّئَاتِكُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (٢٧١) لَيْسَ						
से, कुछ	तुम्हारी बुराइयाँ	और अल्लाह	जो कुछ तुम करते हो	बाख़बर	271	नहीं
عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا						
आप पर (आप का ज़िम्मा)	उन की हिदायत	और लेकिन अल्लाह	हिदायत देता है	जिसे	वह चाहता है	और जो
تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنْفُسِكُمْ ۖ وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ						
तुम खर्च करोगे	माल से	तो अपने वासते	और न	खर्च करो	मगर	हासिल करना
وَجْهِ اللَّهِ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُؤَفِّ إِلَيْكُمْ						
अल्लाह की रज़ा	और जो	तुम खर्च करोगे	माल से	पूरा मिलेगा	तुम्हें	
وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ (٢٧٢) لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أَحْصَرُوا						
और तुम	न ज़ियादती की जाएगी तुम पर	272	तंगदस्तों के लिए	जो	रुके हुए	
فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ						
में	अल्लाह का रास्ता	नहीं कर सकते	चलना फिरना	ज़मीन (मुल्क) में		
يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۖ تَعْرِفُهُمْ بِسِيمَاهُمْ ۚ						
उन्हें समझे	नावाक़िफ़	मालदार	सवाल न करने से	तू पहचानता है उन्हें	उन के चहरे से	
لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ						
वह सवाल नहीं करते	लोग	लिपट कर	और जो	तुम खर्च करोगे	माल से	
فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ (٢٧٣) الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ						
तो बेशक अल्लाह	उस को	जानने वाला	273	जो लोग	खर्च करते हैं	अपने माल
بِالْأَيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً ۖ فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ						
रात में	और दिन	पोशीदा	और ज़ाहिर	पस उन के लिए है	उन का अजर	
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (٢٧٤)						
पास	उन का रब	और न	कोई ख़ौफ़	उन पर	और न	वह
				ग़मगीन होंगे	274	

और जो तुम खर्च करोगे कोई ख़ैरात या तुम कोई नज़र मानोगे तो बेशक अल्लाह उसे जानता है, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (270)

अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर (अलानिया) दो तो यह अच्छी बात है, और अगर तुम उस को छुपाओ और तंगदस्तों को पहुँचाओ तो वह तुम्हारे लिए (ज़ियादा) बेहतर है, और वह दूर करेगा तुम्हारी कुछ बुराइयाँ, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (271)

उन की हिदायत आप का ज़िम्मा नहीं, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और तुम जो माल खर्च करोगे तो अपने (ही) वासते, और खर्च न करो मगर अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और तुम जो माल खर्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा मिलेगा, और तुम पर ज़ियादती न की जाएगी। (272)

तंगदस्तों के लिए जो रुके हुए हैं अल्लाह की राह में, वह मुल्क में चलने फिरने की ताक़त नहीं रखते, उन्हें समझे नावाक़िफ़ उन के सवाल न करने की वजह से मालदार, तूम उन्हें उन के चहरे से पहचान सकते हो, वह सवाल नहीं करते लोगों से लिपट लिपट कर, और तुम जो माल खर्च करोगे तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (273)

जो लोग अपने माल खर्च करते हैं रात में और दिन को, पोशीदा और ज़ाहिर, पस उन के लिए है उन का अजर उन के रब के पास, न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (274)

जो लोग सूद खाते हैं वह न खड़े होंगे मगर जैसे वह शख्स खड़ा होता है जिस को पागल बना दिया हो शैतान ने छू कर, यह इस लिए कि उन्होंने ने कहा तिजारत दर हकीकत सूद के मानिंद है। हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया और सूद को हराम किया, पस जिस को नसीहत पहुँची उस के रब की तरफ से फिर वह बाज़ आ गया तो उस के लिए है जो हो चुका, और उस का मामला अल्लाह के सुपुर्द है और जो फिर (सूद की तरफ) लौटे तो वही दोज़ख वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (275)

अल्लाह सूद को मिटाता है और ख़ैरात को बढ़ाता है, और अल्लाह हर एक (किसी) नाशुके गुनाहगार को पसन्द नहीं करता। (276)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, और नमाज़ काइम की और ज़कात अदा की, उन के लिए उन का अजर है उन के रब के पास, और न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (277)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो, और जो सूद बाकी रह गया वह छोड़ दो अगर तुम ईमान वाले हो। (278)

फिर अगर तुम न छोड़ोगे तो अल्लाह और उस के रसूल से जंग के लिए ख़बरदार हो जाओ, और अगर तुम ने तौबा कर ली तो तुम्हारा असल ज़र तुम्हारे लिए है, न तुम जुल्म करो न तुम पर जुल्म किया जाएगा। (279)

और अगर वह तंगदस्त हो तो कुशादगी होने तक मोहलत दे दो, और अगर (क़र्ज़) बख़श दो तो तुम्हारे लिए ज़ियादा बेहतर है अगर तुम जानते हो। (280)

और उस दिन से डरो (जस दिन) तुम अल्लाह की तरफ लौटाए जाओगे, फिर हर शख्स को पूरा पूरा दिया जाएगा जो उस ने कमाया और उन पर जुल्म न होगा। (281)

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي							
जो लोग	खाते हैं	सूद	न खड़े होंगे	मगर	जैसे	खड़ा होता है	वह शख्स जो
يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ							
उस को पागल बना दिया	शैतान	छूने से	यह	इस लिए कि वह	उन्होंने ने कहा	दर हकीकत	तिजारत
مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ							
मानिंद	सूद	हालांकि अल्लाह ने हलाल किया	तिजारत	और हराम किया	सूद	पस जिस	पहुँचे उस को
مَوْعِظَةً مِّن رَّبِّهِ فَانْتَهَى فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ							
नसीहत	से	उस का रब	उस का रब	फिर वह बाज़ आ गया	तो उस के लिए	जो हो चुका	और उस का मामला
وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧٥﴾							
और जो	फिर करे	तो वही	दोज़ख वाले	वह	उस में	हमेशा रहेंगे	275
يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُزْبِي الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ							
मिटता है अल्लाह	सूद	और बढ़ाता है	ख़ैरात	और अल्लाह	पसन्द नहीं करता		
كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿٢٧٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ							
हर एक नाशुका	गुनाहगार	276	वेशक	जो लोग ईमान लाए	और उन्होंने ने अमल किए	नेक	
وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ							
और उन्होंने ने काइम की	नमाज़	और अदा की	ज़कात	उन के लिए	उन का अजर	पास	उन का रब
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا							
और न	कोई खौफ़	उन पर	और न वह	ग़मगीन होंगे	277	ऐ	जो ईमान लाए (ईमान वाले)
اللَّهُ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٧٨﴾							
अल्लाह	और छोड़ दो	जो बाकी रह गया	से	सूद	अगर	तुम हो	ईमान वाले
فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنْ تُبْتُمْ							
फिर अगर	तुम न छोड़ोगे	तो खबरदार हो जाओ	जंग के लिए	से	अल्लाह	और उस का रसूल	और अगर
فَلَكُمْ رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٩﴾							
तो तुम्हारे लिए	तुम्हारी असल पूंजी	न तुम जुल्म करो	और न तुम पर जुल्म किया जाएगा	279			
وَإِنْ كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ وَأَنْ تَصَدَّقُوا							
और अगर	हो	तंगदस्त	सुहलत	तक	कुशादगी	और अगर	तुम बख़्शदो
خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾ وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ							
बेहतर	तुम्हारे लिए	अगर	तुम हो	जानते	280	और तुम डरो	वह दिन
إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُؤَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٨١﴾							
अल्लाह की तरफ	फिर	पूरा दिया जाएगा	हर शख्स	जो	उस ने कमाया	और वह	जुल्म न किये जाएंगे
281							

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى							
मुकर्ररा	एक मुददत	तक	उधार का	तुम मामला करो	जब	ईमान लाए	वह जो कि
فَاكْتُبُوهُ وَلْيَكْتُب بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ وَلَا يَأْب كَاتِبٌ							
कातिब	और न इन्कार करे	इन्साफ से	कातिब	तुम्हारे दरमियान	और चाहिए कि लिख दे	तो उसे लिख लिया करो	
أَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ							
उस पर हक	वह जो	और लिखाता जाए	चाहिए कि लिख दे	अल्लाह ने उस को सिखाया	जैसे	कि वह लिखे	
وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا فَإِنْ كَانَ الَّذِي							
वह जो	है	फिर अगर	कुछ	उस से	कम करे	और न	अपना रब
عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهَا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَنْ يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ							
तो चाहिए कि लिखाए	लिखाए वह	कि	न कर सकता हो	या	कमजोर	या	बेअकल
وَلِيَّهِ بِالْعَدْلِ وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ							
अपने मर्द	से	दो गवाह	और गवाह कर लो	इन्साफ से	उस का सरपरस्त		
فَإِنْ لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ							
तुम पसन्द करो	से-जो	और दो औरतें	तो एक मर्द	दो मर्द	न हों	फिर अगर	
مِنَ الشَّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ							
दूसरी	उन में से एक	तो याद दिला दे	उन में से एक	भूल जाए	अगर	गवाह (जमा)	से
وَلَا يَأْب الشَّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا وَلَا تَسْمُؤَا أَنْ تَكْتُبُوهُ							
तुम लिखो	की	सुस्ती करो	और न	वह बुलाए जाएं	जब	गवाह	और न इन्कार करें
صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ذَلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ							
और ज़ियादा मज़बूत	अल्लाह के नज़दीक	ज़ियादा इन्साफ़	यह	एक मीज़ाद	तक	बड़ा	या छोटा
لِلشَّهَادَةِ وَأَذْنَىٰ آلَا تَرْتَابًا إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً							
हाज़िर (हाथों हाथ)	सौदा	हो	सिवाए कि	शुबा में पड़ो	कि न	और ज़ियादा करीब	गवाही के लिए
تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا							
कि तुम वह न लिखो	तुम पर कोई गुनाह	तो नहीं	आपस में	जिसे तुम लेते रहते हो			
وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ							
गवाह	और न	लिखने वाला	और न नुक़सान पहुँचाया जाये	जब तुम सौदा करो	और तुम गवाह कर लो		
وَإِنْ تَفْعَلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ							
और अल्लाह से तुम डरो	तुम पर	गुनाह	तो वेशक यह	तुम करोगे	और अगर		
وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (२८२)							
282	जानने वाला	हर चीज़	और अल्लाह	और अल्लाह सिखाता है तुम्हें			

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो!) जब तुम एक मुकर्ररा मुददत तक (के लिए) उधार का मामला करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि लिख दे लिखने वाला तुम्हारे दरमियान इन्साफ़ से, और कातिब लिखने से इन्कार न करे, जैसे उस को सिखाया है अल्लाह ने, उसे चाहिए कि लिख दे, और जिस पर हक (कर्ज़) है वह लिखाता जाए, और अपने रब अल्लाह से डरे, और न उस से कुछ कम करे, फिर अगर वह जिस पर हक (कर्ज़) है वह बेअकल या कमजोर है या न लिखा सकता हो बोल कर तो चाहिए कि उस का सरपरस्त इन्साफ़ से लिखा दे और अपने मर्दों में से दो गवाह कर लो, फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें जिन को तुम गवाह पसन्द करो (ताकि) अगर उन में से एक भूल जाए तो उन में से एक (दूसरी) याद दिला दे, और गवाह इन्कार न करें जब बुलाए जाएं, और तुम लिखने में सुस्ती न करो (खाह मामला) छोटा हो या बड़ा, वापस लौटाने का वक़्त, यह ज़ियादा इन्साफ़ है और गवाही के लिए ज़ियादा मज़बूत है अल्लाह के नज़दीक, और ज़ियादा करीब है कि तुम शुबा में न पड़ो, उस के सिवाए कि सौदा हाथों हाथ का हो जिसे तुम आपस में लेते रहते हो, तो कोई गुनाह नहीं कि तुम वह न लिखो और जब तुम सौदा करो तो गवाह कर लिया करो, और न नुक़सान पहुँचाया जाये कातिब को और न गवाह को, और अगर तुम ऐसा करोगे तो यह वेशक तुम पर गुनाह है, और तुम अल्लाह से डरो, और अल्लाह तुम्हें सिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (282)

और अगर तुम सफ़र पर हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो गिरवी रखना चाहिए कब्ज़े में, फिर अगर तुम में कोई किसी का एतिबार करे तो जिस शख्स को अमीन बनाया गया है उसे चाहिए कि लौटा दे उस की अमानत और अपने रब अल्लाह से डरे, और तुम गवाही न छुपाओ, और जो शख्स उसे छुपाएगा तो बेशक उस का दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे जानने वाला है। (283)

अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और अगर तुम ज़ाहिर करो जो तुम्हारे दिलों में है या तुम उसे छुपाओ, अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा, फिर जिस को वह चाहे बख़्श दे और जिसको वह चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (284)

रसूल ने मान लिया जो कुछ उस की तरफ़ उतरा उस के रब की तरफ़ से और मोमिनो ने (भी), सब ईमान लाए अल्लाह पर और उस के फ़रिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर, हम उस के रसूलों में से किसी एक के दरमियान फ़र्क नहीं करते, और उन्होंने ने कहा हम ने सुना और हम ने इताअत की, तेरी बख़्शिश चाहिए ऐ हमारे रब! और तेरी तरफ़ लौट कर जाना है। (285)

अल्लाह किसी को तकलीफ़ नहीं देता मगर उस की गुनजाइश (के मुताबिक), उस के लिए (अज़र) है जो उस ने कमाया और उस पर (अज़ाब) है जो उस ने कमाया, ऐ हमारे रब! हमें न पकड़ अगर हम भूल जाएं या हम चूकें, ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डाल जैसे तू ने डाला हम से पहले लोगों पर, ऐ हमारे रब! हम से न उठवा जिस की हम को ताक़त नहीं, और दरगुज़र फ़रमा हम से, और हमें बख़्श दे, और हम पर रहम कर, तू हमारा आका है, पस हमारी मदद कर काफ़िरो की कौम पर। (286)

وَأَنْ كُنْتُمْ عَلَى سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهْنِ مَقْبُوضَةً								
और अगर	तुम हो	पर	सफ़र	और न	तुम पाओ	कोई लिखने वाला	तो गिरवी रखना	कब्ज़े में
فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُم بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي أُؤْتِمِنَ أَمَانَتَهُ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ إِثْمٌ قَلْبُهُ								
फिर अगर	एतिबार करे	तुम्हारा कोई	किसी का	तो चाहिए कि लौटा दे	जो शख्स	अमीन बनाया गया	उस की अमानत	और अल्लाह से डरे
अपना रब	और तुम न छुपाओ	गवाही	और जो	उसे छुपाएगा	तो बेशक	गुनाहगार	उस का दिल	
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨٣﴾ اللَّهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ								
और अल्लाह	उसे जो	तुम करते हो	जानने वाला	283	अल्लाह के लिए	जो	में	आस्मानों और ज़मीन में
وَأَنْ تُبَدُّوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخَفُّوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ								
और अगर	तुम ज़ाहिर करो	जो	में	तुम्हारे दिल	या	तुम उसे छुपाओ	तुम्हारा हिसाब लेगा	उस का अल्लाह
فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٨٤﴾ أَمِنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ								
हर चीज़	कुदरत रखने वाला	284	मान लिया	रसूल	कुछ	जो उतरा	उस की तरफ़	उस से उस का रब
وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ أَمِنَ بِاللَّهِ وَمَلَكَاتِهِ وَكُتِبَ لَهُ								
और मोमिन (जमा)	सब	ईमान लाए	अल्लाह पर	और उस के फ़रिश्ते	और उस की किताबें	और उस के रसूल		
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا								
नहीं हम फ़र्क करते	दरमियान	किसी एक	उस के रसूल के	और उन्होंने ने कहा	हम ने सुना	और हम ने इताअत की		
غُفِرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا								
तेरी बख़्शिश	हमारे रब	और तेरी तरफ़	लौट कर जाना	285	नहीं जिम्मदारी का बोझ डालता अल्लाह	किसी पर	मगर	
وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا								
उस की गुनजाइश	उस के लिए	जो	उस ने कमाया	और उस पर	जो उस ने कमाया	ऐ हमारे रब		
لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا								
तो न पकड़ हमें	अगर	हम भूल जाएं	या	हम चूकें	ऐ हमारे रब	और न	डाल	हम पर
إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا								
बोझ	जैसे	तू ने डाला	पर	जो लोग	हम से पहले	ऐ हमारे रब	और न	हम से उठवा
مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاعْفِرْ لَنَا								
जो	न ताक़त	हम को	उस की	और दरगुज़र कर तू हम से	और बख़्श दे हमें			
وَإَرْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾								
और हम पर रहम कर	तू	हमारा आका	पस मदद कर हमारी	पर	कौम	काफ़िर (जमा)	286	

२९
८

२०
८

آيَاتُهَا ٢٠٠ ﴿٢﴾ سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ ﴿٢٠﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢٠

रुकुआत 20

(3) सूरह आले इमरान
(इमरान का घराना)

आयात 200

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

الْم ۝ (١) اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۝ (٢) نَزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابُ

किताब	आप (स) पर	उस ने उतारी	2	संभालने वाला	हमेशा ज़िन्दा	उस के सिवा	नहीं माबूद	अल्लाह	1	अलिफ-लाम-मीम

بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۝ (٣)

3	और इन्जील	तौरत	और उस ने उतारी	उस से पहली	उस के लिए जो	तसदीक करती	हक के साथ

مِّن قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

इन्कार किया	जिन्होंने ने	वेशक	फुरकान	और उतारा	लोगों के लिए	हिदायत	उस से पहले

بِأَيِّ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۝ (٤)

4	वदला लेने वाला	ज़बरदस्त	और अल्लाह	सख्त	अज़ाब	उन के लिए	अल्लाह की आयतों से

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۝ (٥)

5	आस्मान में	और न	ज़मीन में	कोई चीज़	उस पर	नहीं छुपी हुई	वेशक अल्लाह

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ لَا إِلَهَ

नहीं माबूद	वह चाहे	जैसे	रहम (जमा)	में	सूरत बनाता है तुम्हारी	जो कि	वही है

إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ (٦) هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ

उस से (में)	किताब	आप पर	नाज़िल की	जिस	वही	6	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	उस के सिवा

آيَاتٌ مُّحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَبِهَاتٌ فَأَمَّا الَّذِينَ

जो लोग	पस जो	मुताशाबेह	और दूसरी	किताब की असल	वह	मुहक्कम (पुख्ता)	आयतें

فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ

चाहना (गर्ज)	उस से	मुताशाबिहात	सो वह पैरवी करते हैं	कजी	उन के दिल	में

الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ ۝

सिवाए अल्लाह	उस का मतलब	जानता है	और नहीं	उस का मतलब	ढूंडना	फ़साद-गुमराही

وَالرُّسُخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۝

हमारा रब	से-पास (तरफ़)	सब	उस पर	हम ईमान लाए	कहते हैं	इल्म में	और मज़बूत

وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۝ (٧) رَبَّنَا لَا تَزِرْ قُلُوبَنَا بَعْدَ

वाद	हमारे दिल	फेर	न	ऐ हमारे रब	7	अक़ल वाले	मगर	समझते	और नहीं

إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ (٨)

8	सब से बड़ा देने वाला	तू	वेशक तू	रहमत	अपने पास	से	हमें	और इनायत फ़रमा	तू ने हमें हिदायत दी	जब

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

अलिफ-लाम-मीम (1)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हमेशा ज़िन्दा, (सब का) संभालने वाला। (2)

उस ने आप (स) पर किताब उतारी हक के साथ जो उस से पहली (किताबों) की तसदीक करती है, और उस ने तौरत और इन्जील उतारी (3)

उस से पहले लोगों की हिदायत के लिए, और उस ने फुरकान (हक को वातिल से जुदा करने वाला) उतारा, वेशक जिन्होंने ने अल्लाह की आयतों से इन्कार किया उन के लिए सख्त अज़ाब है, और अल्लाह ज़बरदस्त है, वदला लेने वाला। (4)

वेशक अल्लाह पर छुपी हुई नहीं कोई चीज़ ज़मीन में और न आस्मान में, (5)

वही तो है जो तुम्हारी सूरत बनाता है (माँ के) रहम में जैसे वह चाहे, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बरदस्त हिक्मत वाला। (6)

वही तो है जिस ने आप (स) पर किताब नाज़िल की, उस में मुहक्कम (पुख्ता) आयतें हैं वह किताब की असल है, और दूसरी मुताशाबेह (कई मज़ने देने वाली), पस जिन लोगों के दिलों में कजी है सो वह उस से मुताशाबिहात की पैरवी करते हैं, फ़साद (गुमराही) की गर्ज से और उस का (ग़लत) मतलब ढूंडने की गर्ज से, और उस का मतलब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और मज़बूत (पुख्ता) इल्म वाले कहते हैं हम उस पर ईमान लाए सब हमारे रब की तरफ़ से है। और नहीं समझते मगर अक़ल वाले (सिर्फ़ अक़ल वाले समझते हैं) (7)

ऐ हमारे रब! हमारे दिल न फेर इस के बाद जब कि तू ने हमें हिदायत दी और हमें इनायत फ़रमा अपने पास से रहमत, वेशक तू सब से बड़ा देने वाला है। (8)

ऐ हमारे रब! वेशक तू लोगों को उस दिन जमा करने वाला है कोई शक नहीं जिस में, वेशक अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करता। (9)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया, हरगिज़ न उन के माल उन के काम आएंगे और न उन की औलाद अल्लाह के सामने कुछ भी, और वही वह दोज़ख़ का ईंधन है। (10)

जैसे फिरऔन वालों का मामला हुआ और वह जो उन से पहले थे, उन्होंने ने हमारी आयतों को झुटलाया तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (11)

जिन लोगों ने कुफ़ किया उन्हें कह दें तुम अनकरीब मग़लूब होगे और जहन्नम की तरफ़ हाँके जाओगे, और वह बुरा ठिकाना है। (12)

अलबत्ता तुम्हारे लिए उन दो गिरोहों में निशानी है जो बाहम मुक़ाबिल हुए, एक गिरोह लड़ता था अल्लाह की राह में और दूसरा काफ़िर था, वह उन्हें खुली आँखों से अपने से दो चन्द दिखाई देते थे, और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है ताईद करता है, वेशक उस में देखने वालों (अक्लमन्दों) के लिए एक इव़रत है। (13)

लोगों के लिए मरगूब चीज़ों की सुहव्वत खुशनुमा कर दी गई, मसलन औरतें और बेटे, और ढेर जमा किए हुए सोने और चाँदी के, और निशान ज़दा घोड़े, और मवेशी, और खेती, यह दुनिया की ज़िन्दगी का साज़ ओ सामान है, और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। (14)

कह दें, क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर बताऊँ? उन लोगों के लिए जो परहेज़गार हैं, उन के रब के पास बागात हैं जिन के नीचे नहरें जारी (रवाँ) हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और पाक बीवियाँ और अल्लाह की खुशनूदी, और अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (15)

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ

नहीं ख़िलाफ़ करता	वेशक अल्लाह	उस में	नहीं शक	उस दिन	लोगों	जमा करने वाला	वेशक तू	ऐ हमारे रब

الْمِيعَادِ (٩) إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ

उन के माल	उन के	काम आएंगे	हरगिज़ न	उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो	वेशक	9	वादा

وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ (١٠)

और न	उन की औलाद	अल्लाह से	कुछ	और वही	वह	ईंधन	आग (दोज़ख़)	10

كَذَّابٍ أَلٍ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَآخَذَهُمْ

जैसे - मामला	फिरऔन वाले	और वह जो कि	उन से पहले	उन्होंने ने झुटलाया	हमारी आयतें	सो उन्हें पकड़ा

اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ (١١) قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا

अल्लाह	उन के गुनाहों पर	और अल्लाह	सख़्त	अज़ाब	11	कह दें	वह जो कि	उन्होंने ने कुफ़ किया

سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمِهَادُ (١٢) قَدْ كَانَ

अनकरीब तुम मग़लूब होगे	और तुम हाँके जाओगे	तरफ़	जहन्नम	और बुरा	ठिकाना	12	अलबत्ता	है

لَكُمْ آيَةٌ فِي فِتْنَتِي الثَّقَاتِ فِتْنَةً تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ

तुम्हारे लिए	एक निशानी	में	दो गिरोह	वह बाहम मुक़ाबिल हुए	एक गिरोह	लड़ता था	में	अल्लाह की राह	और दूसरा

كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُمْ مِّثْلِهِمْ رَأَىٰ الْعَيْنُ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصَرِهِ

काफ़िर	वह उन्हें दिखाई देते	उन के दो चन्द	खुली आँखें	और अल्लाह	ताईद करता है	अपनी मदद

مَنْ يَشَاءُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ (١٣)

जिसे	वह चाहता है	वेशक	में	उस	एक इव़रत	देखने वालों के लिए	13

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ

खुशनुमा कर दी गई	लोगों के लिए	सुहव्वत	मरगूब चीज़ें	से (मसलन)	औरतें	और बेटे	और ढेर

الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ

जमा किए हुए	से	सोना	और चाँदी	और घोड़े	निशान ज़दा	और मवेशी

وَالْحَرْثِ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِنْدَهُ

और खेती	यह	साज़ ओ सामान	ज़िन्दगी	दुनिया	और अल्लाह	उस के पास

حُسْنُ الْمَاَبِ (١٤) قُلْ أُوْنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذَٰلِكُمْ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا

अच्छा	ठिकाना	14	कह दें	क्या मैं तुम्हें बताऊँ	बेहतर	से	उस	उन लोगों के लिए जो	परहेज़गार हैं

عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ

पास	उन का रब	बागात	जारी है	से	उन के नीचे	नहरें	हमेशा रहेंगे	उस में	और बीवियाँ

مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ (١٥)

पाक	और खुशनूदी	से	अल्लाह	और अल्लाह	देखने वाला	बन्दों को	15

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اِنَّا اَمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا						
जो लोग	कहते हैं	ऐ हमारे	वेशक	ईमान	सो बख़्शदे हमें	हमारे गुनाह
और हमें	बचा					
عَذَابِ النَّارِ (16) الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَالْمُنْفِقِينَ						
अज़ाब	दोज़ख़	16	सब्र करने वाले	और सच्चे	और हुक्म	और खर्च
					बजा लाने वाले	करने वाले
وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ (17) شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ						
और बख़्शिष मांगने वाले	रात के आखिर	17	अल्लाह ने	कि वह	नहीं माबूद	
	हिस्से में		गवाही दी			
إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُوا الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ						
सिवाए-उस	और फ़रिश्ते	और इल्म वाले	काईम (हाकिम)	इन्साफ़ के साथ		
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (18) إِنَّ الدِّينَ						
नहीं माबूद	सिवाए उस	ज़बरदस्त	हिक्मत वाला	18	वेशक	दीन
عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا						
अल्लाह के	इस्लाम	और नहीं	इख़तिलाफ़	वह जिन्हें	किताब दी गई	मगर
			किया			
مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَمَنْ يَكْفُرْ						
वाद से	जब आ गया	इल्म	ज़िद	आपस में	और जो	इन्कार करे
	उन के पास					
بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ (19) فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ						
अल्लाह की	तो वेशक	तेज़	हिसाब	19	फिर	तो
आयात का	अल्लाह				अगर	कह दें
أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ وَقُلْ لِلَّذِينَ						
मैं ने झुका दिया	अपना मुँह	अल्लाह	और	मेरी पैरवी की	और कह दें	वह जो कि
	के लिए	जो-जिस				
أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأَمِّينَ ؕ أَسْلَمْتُمْ ؕ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوْا						
किताब दिए गए	और अन्पढ़	क्या तुम	पस	वह इस्लाम	तो उन्होंने ने	
(अहले किताब)		इस्लाम लाए	अगर	लाए	राह पा ली	
وَأَنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ (20)						
अगर	वह	तो सिर्फ़	आप पर	पहुँचा देना	और	वन्दों को
और	मुँह फेरें				अल्लाह	देखने वाला
إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيْنَ						
वेशक	वह जो	इन्कार करते हैं	अल्लाह की	और क़त्ल करते हैं	नवियों को	
			आयात का			
بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ						
नाहक़	और क़त्ल	जो लोग	हुक्म करते हैं	इन्साफ़ का	लोगों से	
	करते हैं					
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ (21) أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ						
सो उन्हें	अज़ाब	दर्दनाक	21	यही	वह जो कि	जाया हो गए
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّصِيرٍ (22)						
उन के अमल	दुनिया में	और आखिरत	और नहीं	उन का	कोई	मददगार

जो लोग कहते हैं ऐ हमारे रब!

वेशक हम ईमान लाए, सो हमें हमारे गुनाह बख़्शदे और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। (16)

सब्र करने वाले और सच्चे, हुक्म बजा लाने वाले, खर्च करने वाले और बख़्शिष मांगने वाले रात के आखिर हिस्से में। (17)

अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और फ़रिश्तों और इल्म वालों ने (भी), (वही) हाकिम है इन्साफ़ के साथ, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बरदस्त हिक्मत वाला। (18)

वेशक दीन अल्लाह के नज़दीक इस्लाम है, और जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) ने इख़तिलाफ़ नहीं किया मगर उस के बाद जब कि उन के पास आ गया इल्म, आपस की ज़िद से, और जो अल्लाह की आयात (हुक्मों) का इन्कार करे तो वेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (19)

फिर अगर वह आप (स) से झगड़ें तो कह दें मैं ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और जिस ने मेरी पैरवी की, और आप (स) अहले किताब और अन्पढ़ों से कह दें क्या तुम इस्लाम लाए? पस अगर वह इस्लाम ले आए तो उन्होंने ने राह पा ली, और अगर वह मुँह फेर लें तो आप पर सिर्फ़ पहुँचा देना है, और अल्लाह देखने वाला है (अपने) वन्दों को। (20)

वेशक जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं और नवियों को क़त्ल करते हैं नाहक़, और उन्हें क़त्ल करते हैं जो लोग इन्साफ़ का हुक्म करते हैं, सो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दें। (21)

यही वह लोग हैं जिन के अमल ज़ाया हो गए दुनिया में और आखिरत में, और उन का कोई मददगार नहीं। (22)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें दिया गया किताब का एक हिस्सा, वह अल्लाह की किताब की तरफ बुलाए जाते हैं ता कि वह उन के दरमियान फ़ैसला करे, फिर उन का एक फ़रीक़ फिर जाता है, और वह मुँह फेरने वाले हैं। (23)

यह इस लिए है कि वह कहते हैं हमें (दोज़ख़) की आग़ हरगिज़ न छुएगी मगर गिनती के चन्द दिन, और उन्हें उन के दीन (के बारे) में धोके में डाल दिया उस ने जो वह घड़ते थे। (24)

सो क्या (हाल होगा) जब हम उन्हें उस दिन जमा करेंगे जिस में कोई शक़ नहीं, और हर शख्स पूरा पूरा पाएगा जो उस ने कमाया और उन की हक़ तलफ़ी न होगी। (25)

आप कहें ऐ अल्लाह! मालिके मुल्क तू जिसे चाहे मुल्क दे, तू मुल्क छीन ले जिस से तू चाहे, और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील कर दे, तेरे हाथ में तमाम भलाई है, बेशक़ तू हर चीज़ पर कादिर है। (26)

तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दाख़िल करता है दिन को रात में, और तू बेजान से जानदार निकालता है और जानदार से बेजान निकालता है, और जिसे चाहे बेहिसाब रिज़ूक़ देता है। (27)

मोमिन न बनाएं मोमिनो को छोड़ कर काफ़िरो को दोस्त, और जो ऐसा करे तो उस का अल्लाह से कोई तअल्लुक़ नहीं सिवाए इस के कि तुम उन से बचाव करो, और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी ज़ात से, और अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है। (28)

कह दें जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अगर तुम छुपाओ या उसे ज़ाहिर करो अल्लाह उसे जानता है, और वह जानता है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (29)

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ								
तरफ़	बुलाए जाते हैं	किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया	वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या नहीं देखा
كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾								
23	मुँह फेरने वाले	और वह	उन से	एक फ़रीक़	फिर जाता है	फिर	उन के दरमियान	अल्लाह की किताब
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ								
गिनती के		चन्द दिन	मगर	आग	हमें हरगिज़ न छुएगी	कहते हैं	इस लिए कि वह	यह
وَعَرَّهْمُ فِي دِينِهِمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾ فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَاهُمْ لِيَوْمٍ								
उस दिन	उन्हें हम जमा करेंगे	जब	सो क्या	24	वह घड़ते थे	जो	उन का दीन	और उन्हें धोके में डाल दिया
لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ وَوَفَّيْتُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٥﴾								
25	हक़ तलफ़ी न होगी	और वह	उस ने कमाया	जो	शख्स	हर	और पूरा पाएगा	उस में शक नहीं
قُلِ اللَّهُمَّ مِلْكَ الْمَلِكِ تُؤْتِي الْمَلِكَ مَن تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمَلِكَ								
मुल्क	और छीन ले	तू चाहे	जिसे	मुल्क	तू दे	मुल्क	मालिक	ऐ अल्लाह आप कहें
مِمَّن تَشَاءُ وَتُعْزِزُ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ ۚ بِيَدِكَ الْخَيْرُ								
तमाम भलाई	तेरे हाथ में	तू चाहे	जिसे	और ज़लील कर दे	तू चाहे	जिसे	और इज़्ज़त दे	जिस से
إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٦﴾ تُوَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوَلِّجُ النَّهَارَ								
दिन	और दाख़िल करता है तू	दिन में	रात	तू दाख़िल करता है	26	कादिर	चीज़	हर पर वेशक़ तू
فِي اللَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَمِيتِ وَتُخْرِجُ الْمَمِيتَ مِنَ الْحَيِّ								
जानदार	से	बेजान	और तू निकालता है	बेजान	से	जानदार	और तू निकालता है	रात में
وَتَرْزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ								
मोमिन (जमा)	न बनाएं	27	बे हिसाब	तू चाहे	जिसे	और तू रिज़ूक़ देता है		
الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ ۚ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ								
ऐसा	करे	और जो	मोमिन (जमा)	अलावा (छोड़ कर)	दोस्त (जमा)	काफ़िर (जमा)		
فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاةً								
बचाव	उन से	बचाव करो	कि	सिवाए	कोई तअल्लुक़	अल्लाह	से	तो नहीं
وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۚ وَاللَّهُ الْمَصِيرُ ﴿٢٨﴾ قُلْ إِنْ								
अगर तुम	कह दें	28	लौट जाना	और अल्लाह की तरफ़	अपनी ज़ात	और अल्लाह डराता है तुम्हें		
تُخَفُّوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمُهُ اللَّهُ ۚ وَيَعْلَمُ مَا								
जो	और वह जानता है	अल्लाह उसे जानता है	तुम ज़ाहिर करो	या	तुम्हारे सीने (दिल)	में	जो	छुपाओ
فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾								
29	कादिर	चीज़	हर	पर	और अल्लाह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۖ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ											
से - कोई	उस ने की	और जो	मौजूद	नेकी	से (कोई)	उस ने की	जो	शख्स	हर	पाएगा	दिन
سُوءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا ۚ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ											
और अल्लाह तुम्हें डराता है			दूर	फासला	और उस के दरमियान		उस के दरमियान	काश कि	आरजू करेगा	बुराई	
نَفْسَهُ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾ قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي											
तो मेरी पैरवी करो		अल्लाह	मुहब्बत रखते	अगर तुम हो	आप कह दें	30	बन्दों पर	शफ़क़त करने वाला	और अल्लाह	अपनी ज़ात	
يُحِبِّكُمْ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣١﴾											
31	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह	गुनाह तुम्हारे	और तुम्हें बख़्शदेगा			तुम से मुहब्बत करेगा अल्लाह			
قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾											
32	काफ़िर (जमा)	नहीं दोस्त रखता	तो बेशक अल्लाह	वह फिर जाएं	फिर अगर	और रसूल	अल्लाह	तुम इताअत करो	आप कह दें		
إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ											
और इमरान का घराना			और इब्राहीम (अ) का घराना		और नूह (अ)	आदम (अ)	चुन लिया	बेशक अल्लाह			
عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٣﴾ ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾											
34	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	दूसरे	से	वह एक	औलाद	33	सारे जहान	पर	
إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي											
मेरे पेट में			जो	तेरे लिए	मैं ने नज़र किया	वेशक मैं	ऐ मेरे रब	इमरान की वीवी		कहा जब	
مُحْزَرًا فَتَقَبَّلَ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا											
उस ने उस को जन्म दिया		सो जब	35	जानने वाला	सुनने वाला	तू	वेशक तू	मुझ से	सो तू कुबूल कर ले	आज़ाद किया हुआ	
قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ											
उस ने जना			जो	खूब जानता है	और अल्लाह	लड़की	जन्म दी	मैं ने	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	
وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ ۖ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ ۖ وَإِنِّي أُعِيذُهَا											
पनाह में देती हूँ उस को			और मैं	मरयम	उस का नाम रखा	और मैं	मानिंद लड़की	लड़का	और नहीं		
بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ											
कुबूल	उस का रब	तो कुबूल किया उस को	36	मरदूद	शैतान	से	और उस की औलाद	तेरी			
حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۖ وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا											
उस के पास		दाखिल होता	जिस वक़्त भी	ज़करिया (अ)	और सुपुर्द किया उस को	अच्छा	बढ़ाना	और परवान चढ़ाया उस को	अच्छा		
زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۖ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ يَمْرِئُ اتِّ لَكَ هَذَا											
यह	तेरे लिए	कहां	ऐ मरयम	उस ने कहा	खाना	उस के पास	पाया	मेहराब (हुजरा)	ज़करिया (अ)		
قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾											
37	वे हिसाब	चाहे	जिसे	रिज़क़ देता है	वेशक अल्लाह	पास अल्लाह	से	यह	उस ने कहा		

जिस दिन हर शख्स (मौजूद) पाएगा जो उस ने की कोई नेकी, और जो उस ने कोई बुराई की। वह आरजू करेगा काश उस के दरमियान और उस (बुराई) के दरमियान दूर का फासला होता, और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराता है, और अल्लाह शफ़क़त करने वाला है बन्दों पर। (30)

आप कह दें अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्शदेगा, और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (31)

आप कह दें तुम इताअत करो अल्लाह की और रसूल की, फिर अगर वह फिर जाएं तो बेशक अल्लाह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (32)

बेशक अल्लाह ने चुन लिया आदम (अ) और नूह (अ) को और इब्राहीम (अ) ओ इमरान के घराने को सारे जहान पर। (33)

वह औलाद थे एक दूसरे की, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (34)

जब इमरान की वीवी ने कहा ऐ मेरे रब! जो मेरे पेट में है, मैं ने तेरी नज़र किया (सब से) आज़ाद रख कर, सो तू मुझ से कुबूल कर ले, बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (35)

सो जब उस ने उस (मरयम) को जन्म दिया तो वह बोली ऐ मेरे रब! मैं ने जन्म दी है लड़की, और अल्लाह खूब जानता है जो उस ने जन्म दिया, और लड़का लड़की के मानिंद नहीं होता और मैं ने उस का नाम मरयम रखा, और मैं उस को और उस की औलाद को तेरी पनाह में देती हूँ शैतान मरदूद से। (36)

तो उस को उस के रब ने अच्छी तरह कुबूल किया और उस को अच्छी तरह परवान चढ़ाया और ज़करिया (अ) को उस का कफ़ील बनाया। जब भी ज़करिया (अ) उस के पास हुजरे में दाखिल होते उस के पास खाना पाते, उस (ज़करिया (अ) ने कहा ऐ मरयम! यह तेरे पास कहां से आया? उस ने कहा यह अल्लाह के पास से है, बेशक अल्लाह जिसे चाहे बेहिसाब रिज़क़ देता है। (37)

वही ज़करिया (अ) ने अपने रब से दुआ की। ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से पाक औलाद अता कर, तू वेशक दुआ सुनने वाला है। (38)

तो उन्हें आवाज़ दी फ़रिश्तों ने जब वह हुजरे में खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे कि अल्लाह तुम्हें यहया (अ) की खुशखबरी देता है अल्लाह के कलिमे की तस्दीक करने वाला, सरदार, और नफ्स को काबू रखने वाला, और नबी (होगा) नेकोकारों में से। (39)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कहां से होगा? जब कि मुझे बुढ़ापा पहुँच चुका है, और मेरी औरत बांझ है, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है। (40)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुक़र्रर फ़रमा दे मेरे लिए कोई निशानी? उस ने कहा तेरी निशानी यह है कि तू लोगों से तीन दिन बात न करेगा मगर इशारे से, तू अपने रब को बहुत याद कर, और सुबह ओ शाम तस्वीह कर। (41)

और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! वेशक अल्लाह ने तुझ को चुन लिया और तुझ को पाक किया और तुझ को बरगुज़ीदा किया औरतों पर तमाम जहान की। (42)

ऐ मरयम! तू अपने रब की फ़रमावरदारी कर और सिज्दा कर और रुकूअ कर रुकूअ करने वालों के साथ। (43)

यह ग़ैब की ख़बरें हैं, हम आप की तरफ़ वहि करते हैं, और आप उन के पास न थे जब वह (कुरआ के लिए) अपने कलम डाल रहे थे कि उन में से कौन मरयम की पर्वरिश करेगा? और आप (स) उन के पास न थे जब वह झगड़ते थे। (44)

जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! वेशक अल्लाह तुझे अपने एक कलमे की वशारत देता है, उस का नाम मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम है, दुनिया और आखिरत में वाआबरू, और मुक़र्रिबों से होगा, (45)

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۖ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً									
औलाद	अपने पास	से	अता कर मुझे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	अपना रब	ज़करिया	दुआ की	वही
طَيِّبَةً ۚ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ									
खड़े हुए	और वह	फ़रिश्ते	तो आवाज़ दी उस को	38	दुआ	सुनने वाला	वेशक तू	पाक	
يُصَلِّي فِي الْمَحَارِبِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ									
कलिमा	तस्दीक करने वाला	यहया (अ)	तुम्हें खुशखबरी देता है	कि अल्लाह	मेहराब (हुजरा)	में	नमाज़ पढ़ते		
مِّنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٣٩﴾ قَالَ رَبِّ									
ऐ मेरे रब	उस ने कहा	39	नेकोकार (जमा)	से	और नबी	और नफ्स को काबू में रखने वाला	और सरदार	अल्लाह	से
أَنِّي يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ									
बांझ	और मेरी औरत	बुढ़ापा	जब कि मुझे पहुँच गया	लड़का	मेरे लिए	होगा	कहां		
قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّي آيَةً									
कोई निशानी	मेरे लिए	मुक़र्रर फ़रमा दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	40	जो वह चाहता है	करता है	अल्लाह	इसी तरह
قَالَ آيَتُكَ إِلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا ۚ وَادْكُرْ رَبَّكَ									
अपना रब	और तू याद कर	इशारा	मगर	तीन दिन	लोग	कि न बात करेगा	तेरी निशानी	उस ने कहा	
كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٤١﴾ وَادُّ قَالَتِ الْمَلِكَةُ									
फ़रिश्ते	कहा	और जब	41	और सुबह	शाम	और तस्वीह कर	बहुत		
يَمْرِي ۚ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ عَلَىٰ									
पर	और बरगुज़ीदा किया तुझ को	और पाक किया तुझ को	चुन लिया तुझ को	वेशक अल्लाह	ऐ मरयम				
نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ﴿٤٢﴾ يَمْرِي ۚ أَفْنِي لِرَبِّكِ وَاسْجُدِي وَارْكَعِي									
और रुकूअ कर	और सिज्दा कर	अपने रब की	तू फ़रमावरदारी कर	ऐ मरयम	42	तमाम जहान	औरतें		
مَعَ الرُّكْعَيْنِ ﴿٤٣﴾ ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ									
तेरी तरफ़	हम यह वहि करते हैं	ग़ैब	ख़बरें	से	यह	43	रुकूअ करने वाले	साथ	
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ أَقْلَامَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ									
मरयम	पर्वरिश करे	कौन-उन	अपने कलम	वह डालते थे	जब	उन के पास	और तू न था		
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٤﴾ إِذْ قَالَتِ الْمَلِكَةُ يَمْرِي									
ऐ मरयम	फ़रिश्ते	जब कहा	44	जब वह झगड़ते थे	उन के पास	और तू न था			
إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ									
इब्ने मरयम	ईसा	मसीह (अ)	उस का नाम	अपने	एक कलिमा की	तुझे वशारत देता है	वेशक अल्लाह		
وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٥﴾									
45	मुक़र्रिब (जमा)	और से	और आखिरत	दुनिया	में	वा आबरू			

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٤٦﴾ قَالَتْ							
वह बोली	46	नेकोकार	और से	और पुख्ता उम्र	पालने में	लोग	और बातें करेगा
رَبِّ اَنِّي يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمَسِّنِي بَشَرٌ قَالَ كَذَلِكِ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ اِذَا قَضَىٰ اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾							
अल्लाह	इसी तरह	उस ने कहा	कोई मर्द	हाथ लगाया मुझे	और नहीं	बेटा	होगा मेरे हां
ऐ मेरे रब	कैसे	होगा मेरे हां	बेटा	और नहीं	हाथ लगाया मुझे	कोई मर्द	उस ने कहा
وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُولًا اِلَىٰ							
तरफ़	और एक रसूल	48	और इन्जील	और तौरत	और दानाई	और वह सिखाएगा उस को किताब	
بَنِي إِسْرَءِيلَ اَنِّي قَدْ جِئْتُكُمْ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ اَنِّي اَخْلُقُ							
बनाता हूँ	कि मैं	तुम्हारा रब	से	एक निशानी के साथ	आया हूँ तुम्हारी तरफ़	कि मैं	बनी इस्राईल
لَكُمْ مِّنَ الطَّيْنِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِاِذْنِ							
हुकम से	परिन्दा	तो वह हो जाता है	उस में	फिर फूंक मारता हूँ	परिन्दा	मानिंद-शकल	गारा
तुम्हारे लिए	से	गारा	मानिंद-शकल	परिन्दा	फिर फूंक मारता हूँ	उस में	तो वह हो जाता है
اللَّهِ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَةَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِاِذْنِ اللّٰهِ							
अल्लाह	अल्लाह के हुकम से	मुर्दे	और मैं ज़िन्दा करता हूँ	और कोढ़ी को	मादरज़ाद अन्ध	और मैं अच्छा करता हूँ	
وَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ							
और तुम्हें बताता हूँ	जो	तुम खाते हो	और जो	तुम ज़खीरा करते हो	मैं	घरों अपने	वेशक में
لَاٰيَةٍ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ							
एक निशानी	तुम्हारे लिए	अगर	तुम हो	ईमान वाले	49	और तसदीक करने वाला	जो
مِّنَ التَّوْرَةِ وَاِلٰحٰلَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ							
से	तौरत	और ता कि हलाल कर दूँ	तुम्हारे लिए	बाज़	वह जो कि	हराम की गई	तुम पर
और आया हूँ तुम्हारे पास	तुम पर	हराम की गई	वह जो कि	बाज़	तुम्हारे लिए	और ता कि हलाल कर दूँ	तौरत
بَاٰيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاَطِيعُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ							
एक निशानी	से	तुम्हारा रब	तुम्हारा रब	सो तुम अल्लाह से डरो	और मेरा कहा मानो	50	वेशक अल्लाह
और तुम्हारा रब	मेरा रब	वेशक अल्लाह	50	और मेरा कहा मानो	सो तुम अल्लाह से डरो	तुम्हारा रब	से
فَاعْبُدُوْهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٥١﴾ فَلَمَّا اَحْسَ عِيْسٰى							
सो तुम इबादत करो उस की	यह	रास्ता	सीधा	51	फिर जब	महसूस किया	ईसा (अ)
مِنْهُمْ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْ اِلَى اللّٰهِ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ							
उन से	कुफ़	उस ने कहा	कौन	मेरी मदद करने वाला	अल्लाह की तरफ़	कहा	हवारी (जमा)
نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَاَشْهَدُ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾ رَبَّنَا اٰمَنَّا							
हम	अल्लाह की मदद करने वाले	हम ईमान लाए	अल्लाह पर	तू गवाह रह	कि हम	फ़रमांबरदार	52
हम	हम	हम ईमान लाए	अल्लाह पर	तू गवाह रह	कि हम	फ़रमांबरदार	52
بِمَا اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾							
जो	तू ने नाज़िल किया	और हम ने पैरवी की	रसूल	सो तू हमें लिख ले	साथ	गवाही देने वाले	53

और लोगों से गहवारे में और पुख्ता उम्र में बातें करेगा और नेकोकारों में से होगा। (46)

वह बोली ऐ मेरे रब! मेरे हां बेटा कैसे होगा? और किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, जब वह किसी काम का इरादा करता है तो वह कहता है उस को “हो जा” सो वह हो जाता है। (47)

और वह उस को सिखाएगा किताब और दानाई और तौरत और इन्जील। (48)

और बनी इस्राईल की तरफ़ एक रसूल, (उस ने कहा) कि मैं तुम्हारी तरफ़ एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब की तरफ़ से, मैं तुम्हारे लिए गारे से परिन्दे जैसी शकल बनाता हूँ, फिर उस में फूंक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुकम से परिन्दा हो जाता है, और मैं अच्छा करता हूँ मादरज़ाद अन्ध और कोढ़ी को, और मैं अल्लाह के हुकम से मुर्दे ज़िन्दा करता हूँ, और मैं तुम्हें बताता हूँ जो तुम खाते हो और जो तुम अपने घरों में ज़खीरा करते हो, वेशक उस में तुम्हारे लिए एक निशानी है अगर तुम हो ईमान वाले। (49)

और मैं अपने से पहली (किताब) तौरत की तसदीक करने वाला हूँ और ता कि तुम्हारे लिए बाज़ वह चीज़ें हलाल कर दूँ जो तुम पर हराम की गई थी, और तुम्हारे पास एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब से, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (50)

वेशक अल्लाह (ही) मेरा और तुम्हारा रब है, सो तुम उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है। (51)

फिर जब ईसा (अ) ने महसूस किया उन से कुफ़ (तो) कहा कौन है अल्लाह की तरफ़ मेरी मदद करने वाला? हवारीयों ने कहा हम अल्लाह की मदद करने वाले हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, और गवाह रह कि हम फ़रमांबरदार हैं, (52)

ऐ हमारे रब! हम उस पर ईमान लाए जो तू ने नाज़िल किया और हम ने रसूल की पैरवी की, सो तू हमें गवाही देने वालों के साथ लिख ले। (53)

और उन्होंने ने मक्कर किया और अल्लाह ने खुफिया तदबीर की, और अल्लाह (सब) तदबीर करने वालों से बेहतर है। (54)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ): मैं तुझे कब्ज़ कर लूँगा और तुझे अपनी तरफ उठा लूँगा और तुझे पाक कर दूँगा उन लोगों से जिन्होंने ने कुफ़ किया, और जिन्होंने ने तेरी पैरवी की उन्हें ऊपर (ग़ालिब) रखूँगा उन के जिन्होंने ने कुफ़ किया क़ियामत के दिन तक। फिर तुम्हें मेरी तरफ लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करूँगा जिस (बारे) में तुम इख़तिलाफ़ करते थे। (55)

पस जिन लोगों ने कुफ़ किया, सो उन्हें सख़्त अज़ाब दूँगा दुनिया और आख़िरत में, और उन का कोई मददगार न होगा। (56)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक काम किए तो (अल्लाह) उन के अजर उन्हें पूरे देगा, और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को। (57)

हम आप (स) पर यह आयतें और हिक्मत वाली नसीहत पढ़ते हैं। (58)

वेशक अल्लाह के नज़दीक ईसा (अ) की मिसाल आदम (अ) जैसी है, उसे मिट्टी से पैदा किया, फिर कहा उस को “हो जा” तो वह हो गया। (59)

हक़ आप के रब की तरफ़ से है, पस शक करने वालों में से न होना। (60)

जो आप (स) से इस बारे में झगड़े उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आगया तो आप (स) कह दें! आओ हम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे, और अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें, और हम खुद और तुम खुद (भी), फिर हम सब इलतिजा करें, फिर झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें। (61)

वेशक यही सच्चा बयान है, और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और वेशक अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (62)

وَمَكِّرُوا وَمَكَّرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكِّرِينَ ﴿٥٤﴾ إِذْ قَالَ اللَّهُ						
अल्लाह ने कहा	जब	54	तदबीर करने वाले	बेहतर	और अल्लाह ने खुफिया तदबीर की	और उन्होंने ने मक्कर किया
يُعِيسَى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ						
वह लोग जो	से	और पाक कर दूँगा तुझे	अपनी तरफ़	और उठा लूँगा तुझे	कब्ज़ कर लूँगा तुझे	मैं ऐ ईसा (अ)
كَفَرُوا وَجَاعِلِ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى						
तक	कुफ़ किया	जिन्होंने ने	ऊपर	तेरी पैरवी की	वह जिन्होंने ने	और रखूँगा उन्होंने ने कुफ़ किया
يَوْمِ الْقِيَمَةِ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ						
तुम थे	जिस में	तुम्हारे दरमियान	फिर मैं फ़ैसला करूँगा	तुम्हें लौट कर आना है	मेरी तरफ़	फिर क़ियामत का दिन
فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأَعَذِّبُهُمْ عَذَابًا						
अज़ाब	सो उन्हें अज़ाब दूँगा	कुफ़ किया	जिन लोगों ने	पस	55	इख़तिलाफ़ करते में
شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٥٦﴾						
56	मददगार	से	उन का	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में सख़्त
وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ						
उन के अजर	तो पूरा देगा	नेक	और उन्होंने ने काम किए	ईमान लाए	जो लोग	और जो
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٥٧﴾ ذَلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ						
आयतें	से	आप (स) पर	हम पढ़ते हैं	यह	57	ज़ालिम (जमा) दोस्त नहीं रखता और अल्लाह
وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾ إِنَّ مَثَلَ عِيسَى عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ						
उस को पैदा किया	आदम	मिसाल जैसी	अल्लाह के नज़दीक	ईसा	मिसाल वेशक	58 हिक्मत वाली और नसीहत
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا						
पस न	आप का रब	से	हक़	59	सो वह हो गया	हो जा उस को कहा फिर मिट्टी से
تَكُنْ مِنَ الْمُؤْمِرِينَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ						
जब आगया	बाद	से	इस में	आप (स) से झगड़े	सो जो	60 शक करने वाले से हो
مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا						
और अपनी औरतें	और तुम्हारे बेटे	अपने बेटे	हम बुलाएं	तुम आओ	तो कह दें	इल्म से
وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللَّهِ						
अल्लाह की लानत	फिर करें (डालें)	हम इलतिजा करें	फिर	और तुम खुद	और हम खुद	और तुम्हारी औरतें
عَلَى الْكَذِبِينَ ﴿٦١﴾ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ وَمَا						
और नहीं	सच्चा	बयान	यही	यह	वेशक	61 झूठे पर
مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾						
62	हिक्मत वाला	ग़ालिब	वही	और वेशक अल्लाह	अल्लाह के सिवा	कोई माबूद

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٣﴾ قُلْ						
फिर अगर	वह फिर जाएं	वह फ़साद अल्लाह	तो बेशक	जानने वाला	फ़साद करने वालों को	63 आप कह दें
يَاهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ						
ऐ अहले किताब	आओ	तरफ़ (पर)	एक बात	बराबर	हमारे दरमियान	और तुम्हारे दरमियान कि न हम इबादत करें
إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا						
सिवाए अल्लाह	और न हम शरीक करें	उस के साथ	कुछ	और न बनाए	हम में से कोई	किसी को रब (जमा)
مَنْ دُونِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾						
अल्लाह के सिवा	फिर अगर	वह फिर जाएं	तो कह दो तुम	तुम गवाह रहो	कि हम	64 मुसल्लिम (फ़रमावरदार)
يَاهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرَةُ						
ऐ अहले किताब	क्यों	तुम झगड़ते हो	में	इब्राहीम (अ)	और नहीं	नाज़िल की गई तौरत
وَالْإِنْجِيلَ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٥﴾ هَآنَتْكُمْ						
और इन्ज़ील	मगर	उस के बाद	तो क्या तुम अक्ल नहीं रखते	65	हां तुम	
هَؤُلَاءِ حَاجَّجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ						
वह लोग	तुम ने झगड़ा किया	जिस में	तुम्हें	उस का	इल्म	अब क्यों
تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ						
तुम झगड़ते हो	उस में	नहीं	तुम्हें	उस का	कुछ इल्म	और अल्लाह जानता है और तुम
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا						
नहीं	जानते	66	न थे	इब्राहीम (अ)	यहूदी	और न नसरानी
وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٦٧﴾						
और लेकिन	वह थे	एक रुख	मुसल्लिम (फ़रमावरदार)	और न थे	से	67 मुश्रिक (जमा)
إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا						
बेशक	सब से ज़ियादा मुनासिबत	लोग	इब्राहीम (अ)	उन लोग	उन्होंने ने पैरवी की उन की	और इस
النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾						
नबी	और वह लोग जो	ईमान लाए	और अल्लाह	कारसाज़	मोमिनीन	68
وَدَّتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّوكُمْ						
चाहती है	एक जमाअत	से (की)	अहले किताब	काश	वह गुमराह कर दें तुम्हें	
وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٩﴾						
और नहीं वह गुमराह करते	मगर	अपने आप	और नहीं	वह समझते	69	
يَاهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٧٠﴾						
ऐ अहले किताब	क्यों	तुम इन्कार करते हो	अल्लाह की आयतों का	हालाकि तुम	गवाह हो	70

फिर अगर वह फिर जाएं तो बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को खूब जानता है। (63)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! उस एक बात पर आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर (मुशतरिक) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएं और हम में से कोई किसी को न बनाए रब अल्लाह के सिवा, फिर अगर वह फिर जाएं तो तुम कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम तो मुसल्लिम (फ़रमावरदार) हैं। (64)

ऐ अहले किताब! तुम इब्राहीम (अ) के बारे में क्यों झगड़ते हो? और नहीं नाज़िल की गई तौरत और इन्ज़ील मगर उन के बाद, तो क्या तुम अक्ल नहीं रखते? (65)

हां! तुम वही लोग हो कि तुम ने उस (बारे) में झगड़ा किया जिस का तुम्हें इल्म था तो अब क्यों झगड़ते हो उस (बारे) में जिस का तुम्हें कुछ इल्म नहीं, और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (66)

इब्राहीम (अ) न यहूदी थे न नसरानी, (बल्कि) वह हनीफ़ (सब से रुख मोड़ कर अल्लाह के हो जाने वाले) मुसल्लिम (फ़रमावरदार) थे, और वह मुश्रिकों में से न थे। (67)

बेशक सब लोगों से ज़ियादा मुनासिबत है इब्राहीम (अ) से उन लोगों को जिनमें ने उन की पैरवी की, और इस नबी को और वह लोग जो ईमान लाए, और अल्लाह मोमिनों का कारसाज़ है। (68)

अहले किताब की एक जमाअत चाहती है काश! वह तुम्हें गुमराह कर दें, और वह अपने सिवा किसी को गुमराह नहीं करते, और वह समझते नहीं। (69)

ऐ अहले किताब! तुम क्यों इन्कार करते हो अल्लाह की आयतों का? हालांकि तुम गवाह हो। (70)

ऐ अहले किताब! तुम क्यों मिलते हो सच को झूट के साथ और तुम हक को छुपाते हो हालांकि तुम जानते हो। (71)

और एक जमाअत ने कहा अहले किताब की कि जो कुछ मुसलमानों पर नाज़िल किया गया है, उसे दिन के अक्वल हिस्से में मान लो और मुन्किर हो जाओ उस के आखिर हिस्से में (शाम को) शायद कि वह फिर जाए। (72)

और तुम (किसी की बात) न मानो सिवाए उस के जो पैरवी करे तुम्हारे दीन की, आप (स) कह दें वेशक हिदायत अल्लाह ही की हिदायत है कि किसी को दिया गया जैसा कि तुम्हें दिया गया था, या वह तुम से तुम्हारे रब के सामने हुज्जत करें, आप (स) कह दें, वेशक फ़ज़ल अल्लाह के हाथ में है, वह देता है जिस को वह चाहता है, और अल्लाह वुस्अत वाला, जानने वाला है। (73)

वह जिस को चाहता है अपनी रहमत से ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है। (74)

और अहले किताब में कोई (ऐसा है) कि अगर आप (स) उस के पास अमानत रखें ढेरों माल तो वह आप (स) को अदा करदे, और उन में से कोई (ऐसा है) अगर आप उस के पास एक दीनार अमानत रखें तो वह अदा न करे मगर जब तक आप (स) उस के सर पर खड़े रहें, यह इस लिए है कि उन्होंने ने कहा हम पर उम्मियों के (वारे) में (इल्ज़ाम की) कोई राह नहीं, और वह अल्लाह पर झूट बोलते हैं, और वह जानते हैं। (75)

क्यों नहीं? जो कोई अपना इक़रार पूरा करे और परहेज़गार रहे तो वेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (76)

वेशक जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क़स्मों से हासिल करते हैं थोड़ी कीमत, यही लोग हैं जिन के लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं और न अल्लाह उन से कलाम करेगा और न उन की तरफ़ नज़र करेगा क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (77)

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ									
हक	और तुम छुपाते हो	झूट के साथ	सच	तुम उलझाते हो	क्यों	ऐ अहले किताब			
وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٧١﴾ وَقَالَتْ طَافِيَّةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ آمِنُوا بِالَّذِي									
जो कुछ	तुम मान लो	अहले किताब	से (की)	एक जमाअत	और कहा	71	जानते हो	हालांकि तुम	
أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوا آخِرَهُ لَعَلَّهُمْ									
शायद	उस का आखिर (शाम)	और मुन्किर हो जाओ	दिन का अव्वल हिस्सा	जो लोग ईमान लाए (मुसलमान)	पर	नाज़िल किया गया			
يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَى									
हिदायत	वेशक	कह दें	तुम्हारा दीन	पैरवी करे	उस की जो	सिवाए	मानो तुम और न	72	वह फिर जाएं
هُدَى اللَّهِ أَنْ يُؤْتَى أَحَدٌ مِّثْلَ مَا أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَاجُّوكُمْ									
वह हुज्जत करें तुम से	या	कुछ तुम्हें दिया गया	जैसा	किसी को	दिया गया	कि	अल्लाह की हिदायत		
عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ									
वह चाहता है	जिसे	वह देता है	अल्लाह के हाथ में	फ़ज़ल	वेशक	कह दें	तुम्हारा रब	सामने	
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ									
वह चाहता है	जिसे	अपनी रहमत से	वह ख़ास कर लेता है	73	जानने वाला	वुस्अत वाला	और अल्लाह		
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِنْ تَأْمَنَهُ									
अगर अमानत रखें उस को	जो	अहले किताब	और से	74	बड़ा-बड़े	फ़ज़ल वाला	और अल्लाह		
بِقِنْطَارٍ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ إِنْ تَأْمَنَهُ بَدِينَارٍ									
एक दीनार	आप अमानत रखें उस को	अगर	और उन से जो	आप को	अदा करे	ढेर माल			
لَا يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَائِمًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا									
उन्होंने ने कहा	इस लिए कि	यह	खड़े	उस पर	तक रहें	मगर जब	आप को	वह अदा न करे	
لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ									
झूट	अल्लाह पर	और वह बोलते हैं	कोई राह	उम्मी (जमा)	में	हम पर	नहीं		
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ									
तो वेशक अल्लाह	और परहेज़गार रहे	अपना इक़रार	पूरा करे	जो	क्यों नहीं?	75	जानते हैं	और वह	
يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا									
कीमत	और अपनी क़स्में	अल्लाह का इक़रार	खरीदते (हासिल करते) हैं	जो लोग	वेशक	76	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है	
قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا									
और न	उन से कलाम करेगा अल्लाह	और न	आखिरत में	उन के लिए	हिस्सा	नहीं	यही लोग	थोड़ी	
يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٧﴾									
77	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए	उन्हें पाक करेगा	और न	क़ियामत के दिन	उन की तरफ	नज़र करेगा	

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلُونُ السِّنْتَهِمْ بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ						
और	उन से (उन में)	एक फरीक	मरोड़ते हैं	अपनी ज़बानें	किताब में	ता कि तुम समझो
مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ						
से	किताब	और नहीं	वह	से	किताब	और वह कहते हैं
عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبُ						
अल्लाह की तरफ	हालांकि नहीं	वह	से	अल्लाह की तरफ	और वह बोलते हैं	झूट
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ						
और वह	वह जानते हैं	78	नहीं	किसी आदमी के लिए	कि	उसे अता करे अल्लाह
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولُ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِي						
और हिक्मत	और नुबूहत	फिर	वह कहे	लोगों को	तुम हो जाओ	मेरे बन्दे
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّيْنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ						
सिवा (बजाए)	अल्लाह	और लेकिन	तुम हो जाओ	अल्लाह वाले	इस लिए कि	तुम सिखाते हो
وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ﴿٧٩﴾ وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا						
और इस लिए कि	तुम पढ़ते हो	79	और न	हुकम देगा तुम्हें	कि	तुम ठहराओ
الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّنَ أَرْبَابًا أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ						
फरिश्ते	और नबी	परवरदिगार	क्या वह तुम्हें हुकम देगा?	कुफ़ का	वाद	
إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٨٠﴾ وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّنَ لَمَا						
जब	तुम	मुसलमान	80	और जब	अल्लाह ने लिया	अहद (जमा)
اتَّبِعْتُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحْكَمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ						
मैं तुम्हें दूँ	से	किताब	और हिक्मत	फिर	आए तुम्हारे पास	रसूल
لَمَّا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنَنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ						
जो	तुम्हारे पास	तुम ज़रूर ईमान लाओगे	उस पर	उस ने ज़रूर मदद करोगे उस की	उस ने फरमाया	क्या तुम ने इकरार किया
عَلَىٰ ذَلِكُمْ إِصْرِي قَالُوا أَقْرَرْنَا قَالَ فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُمْ						
पर	इस	मेरा अहद	उन्होंने ने कहा	हम ने इकरार किया	उस ने फरमाया	पस तुम गवाह रहो
مِّنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨١﴾ فَمَنْ تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُم						
से	गवाह (जमा)	81	फिर जो	फिर जाए	वाद	इस
الْفَاسِقُونَ ﴿٨٢﴾ أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَنْ						
नाफरमान	82	क्या? सिवा	अल्लाह का दीन	वह ढूँढते हैं	और उस के लिए	फरमावरदार है
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾						
में	आस्मानों	और ज़मीन	खुशी से	और नाखुशी से	और उस की तरफ	वह लौटाए जाएंगे

और वेशक उन में एक फरीक है जो किताब (पढ़ते वक़्त) अपनी ज़बानें मरोड़ते हैं, ताकि तुम समझो कि वह किताब से है, हालांकि वह किताब से नहीं (होता), और वह कहते हैं कि वह अल्लाह की तरफ से है, हालांकि वह नहीं अल्लाह की तरफ से, और अल्लाह पर झूट बोलते हैं और वह जानते हैं। (78)

किसी आदमी के लिए (यह शायान) नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और नुबूहत अता करे, फिर वह लोगों को कहे कि तुम अल्लाह के बजाए मेरे बन्दे हो जाओ, लेकिन (वह यह कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले हो जाओ, इस लिए कि तुम किताब सिखाते हो और तुम खुद (भी) पढ़ते हो। (79)

और न वह तुम्हें हुकम देगा कि तुम फरिश्तों और नबियों को परवरदिगार ठहराओ, क्या वह तुम्हें हुकम देगा कुफ़ का? इस के बाद कि तुम मुसलमान (फरमावरदार) हो चुके। (80)

और जब अल्लाह ने अहद लिया नबियों से कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब और हिक्मत दूँ, फिर तुम्हारे पास रसूल आए उस की तसदीक करता हुआ जो तुम्हारे पास है तो तुम उस पर ज़रूर ईमान लाओगे, और ज़रूर उस की मदद करोगे, उस ने फरमाया क्या तुम ने इकरार किया और तुम ने इस पर मेरा अहद कुबूल किया? उन्होंने ने कहा कि हम ने इकरार किया, उस ने फरमाया पस तुम गवाह रहो और मैं तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ। (81)

फिर जो इस के बाद फिर जाए तो वही नाफरमान हैं। (82)

क्या वह अल्लाह के दीन के सिवा (कोई और दीन) चाहते हैं? और उसी का फरमावरदार है जो आस्मानों और ज़मीन में है, चार ओ नाचार, और उसी की तरफ वह लौटाए जाएंगे। (83)

कह दें हम ईमान लाए अल्लाह पर,
और जो हम पर नाज़िल किया गया
और जो नाज़िल किया गया

इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ),
इस्हाक़ (अ), याकूब (अ) और
उन की औलाद पर, और जो दिया
गया मूसा (अ) और ईसा (अ) और
नबियों को उन के रब की तरफ़
से, हम फ़र्क़ नहीं करते उन में से
किसी एक के दरमियान, और हम
उसी के फ़रमावरदार हैं। (84)

और जो कोई चाहेगा इस्लाम के
सिवा कोई और दीन तो उस से
हरगिज़ कुबूल न किया जाएगा,
और वह आखिरत में नुक़सान
उठाने वालों में से होगा। (85)

अल्लाह ऐसे लोगों को क्योंकर
हिदायत देगा जो काफ़िर हो गए
अपने ईमान के बाद और गवाही
दे चुके कि यह रसूल सच्चे हैं,
और उन के पास खुली निशानियां
आ गई, और अल्लाह ज़ालिम लोगों
को हिदायत नहीं देता। (86)

ऐसे लोगों की सज़ा है कि उन पर
लानत है अल्लाह की और फ़रिश्तों
की और तमाम लोगों की। (87)

वह उस में हमेशा रहेंगे। न उन से
अज़ाब हलका किया जाएगा और न
उन्हें मुहलत दी जाएगी। (88)

मगर जिन लोगों ने इस के बाद
तौबा की और इस्लाह की, तो
वेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम
करने वाला है। (89)

वेशक जो लोग काफ़िर हो गए
अपने ईमान के बाद, फिर बढ़ते
गए कुफ़्र में, उन की तौबा हरगिज़
न कुबूल की जाएगी, और वही
लोग गुमराह हैं। (90)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया
और वह मर गए हालते कुफ़्र में,
तो हरगिज़ न कुबूल किया जाएगा
उन में से किसी से ज़मीन भर सोना
भी, अगरचे वह उस को बदले
में दे, यही लोग हैं उन के लिए
दर्दनाक अज़ाब है और उन के लिए
कोई मददगार नहीं। (91)

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا اُنْزِلَ عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ									
इब्राहीम (अ)	पर	नाज़िल किया गया	और जो	हम पर	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कह दें
وَاسْمٰعِيْلَ وَاسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَا اُوْتِيَ مُوسٰى									
मूसा (अ)	दिया गया	और जो	और औलाद	और याकूब (अ)	और इस्हाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)			
وَعِيسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ									
और हम	उन से	कोई एक	दरमियान	फर्क करते	नहीं	उन का रब	से	और नबी (जमा)	और ईसा (अ)
لَهُ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ									
उस से	कुबूल किया जाएगा	तो हरगिज़ न	कोई दीन	इस्लाम	सिवा	चाहेगा	और जो	84	फ़रमावरदार
وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِى اللّٰهُ									
हिदायत देगा अल्लाह	क्योंकर	85	नुक़सान उठाने वाले	से	आखिरत	में	और वह		
قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْا اَنَّ الرّٰسُوْلَ حَقٌّ وَجَآءَهُمْ									
और आए उन के पास	सच्चे	रसूल	कि	और उन्होंने ने गवाही दी	उन का (अपना) ईमान	बाद	ऐसे लोग जो काफ़िर हो गए		
الْبَيِّنٰتُ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَاؤُهُمْ									
उन की सज़ा	ऐसे लोग	86	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत देता	नहीं	और अल्लाह	खुली निशानियां	
اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾									
87	तमाम	और लोग	और फ़रिश्ते	अल्लाह की लानत	उन पर	कि			
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾									
88	मुहलत दी जाएगी	उन्हें	और न	अज़ाब	उन से	हलका किया जाएगा	न	उस में	हमेशा रहेंगे
اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۖ فَاِنَّ اللّٰهَ									
तो वेशक अल्लाह	और इस्लाह की	इस	बाद	तौबा की	जो लोग	मगर			
غَفُوْرٌ رّٰحِيْمٌ ﴿٨٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ									
फिर	अपने ईमान	बाद	काफ़िर हो गए	जो लोग	वेशक	89	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	
اَزْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضّٰلُّوْنَ ﴿٩٠﴾									
90	गुमराह	वह	और वही लोग	उन की तौबा	कुबूल की जाएगी	हरगिज़ न	कुफ़्र में	बढ़ते गए	
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفّٰرٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ									
कुबूल किया जाएगा	तो हरगिज़ न	हालते कुफ़्र	और वह	और वह मर गए	कुफ़्र किया	जो लोग	वेशक		
مِّنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوْ اَفْتَدٰى بِهٖ									
उस को	बदला दे	अगरचे	सोना	ज़मीन	भरा हुआ	उन में कोई	से		
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾									
91	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	यही लोग	

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ وَمَا تُنْفِقُوا							
तुम खर्च करोगे	और जो	तुम मुहब्बत रखते हो	उस से जो	तुम खर्च करो	जब तक	नेकी	तुम हरगिज़ न पहुँचोगे
مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ (92) كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حَلَالًا							
हलाल	थे	खाने	तमाम	92	जानने वाला	उस को	तो वेशक अल्लाह
لَبَنَىٰ إِسْرَءِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَءِيلُ عَلَىٰ نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرَةُ قُلْ فَاتَّبِعُوا بِالتَّوْرَةِ فَاتَّبِعُوا إِن كُنْتُمْ							
कि	क़व्ल	से	अपनी जान	पर	इसाईल (याकूब अ)	जो हराम कर लिया	मगर
صَادِقِينَ (93) فَمَنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ							
तुम हो	अगर	फिर उस को पढ़ो	तौरत	सो तुम लाओ	आप कह दें	तौरत	नाज़िल की जाए (उतरे)
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ (94) قُلْ صَدَقَ اللَّهُ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ							
इब्राहीम (अ)	दीन	पस पैरवी करो	अल्लाह ने सच फ़रमाया	आप कह दें	94	ज़ालिम (जमा)	वह
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ (95) إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ							
लोगों के लिए	मुक़र्रर किया गया	घर	पहला	वेशक	95	मुश्रिक (जमा)	से थे और न
لِلَّذِي بُكِّعَ مَبْرُكًا وَهُدًى لِلْعَالَمِينَ (96) فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مِّمَّا							
मुक़ामे	खुली	निशानियाँ	उस में	96	तमाम जहानों के लिए	और हिदायत	बरकत वाला
إِبْرَاهِيمَ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ							
ख़ानाए क़अबा का हज करना	लोग	पर	और अल्लाह के लिए	अमन में	हो गया	दाखिल हुआ उस में	और जो
مَنْ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ							
से	वेनियाज़	तो वेशक अल्लाह	कुफ़ किया	और जो-जिस	राह	उस की तरफ़	इस्तिताअत रखता हो
الْعَالَمِينَ (97) قُلْ يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	अल्लाह की आयतों से	तुम कुफ़ करते हो	क्यों	ऐ अहले किताब	कह दें	97	जहान वाले
شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ (98) قُلْ يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَنِ							
से	क्यों रोकते हो?	ऐ अहले किताब	कह दें	98	जो तुम करते हो	पर	गवाह
سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ تَبْغُوثَهَا عَوَجًا وَأَنْتُمْ شُهَدَاءُ وَمَا اللَّهُ							
अल्लाह	और नहीं	गवाह (जमा)	और तुम खुद	कजी	तुम ढूँढते हो उस में	ईमान लाए	जो
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ (99) يَٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تُطِيعُوا فَرِيقًا							
एक गिरोह	तुम कहा मानोगे	अगर	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ	99	तुम करते हो
مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كُفْرِينَ (100)							
100	हालते कुफ़	तुम्हारे ईमान	बाद	वह फेर देंगे तुम्हें	दी गई किताब	वह लोग जो	से

तुम हरगिज़ नेकी को न पहुँचोगे जब तक उस में से खर्च न करो जिस से तुम मुहब्बत रखते हो, और जो तुम खर्च करोगे कोई चीज़ तो वेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (92)

तमाम खाने हलाल थे वनी इस्राईल के लिए, मगर जो याकूब (अ) ने अपने आप पर हराम कर लिया था उस से क़व्ल कि तौरत उतरे, आप कह दें कि तुम तौरत लाओ, फिर उस को पढ़ो अगर तुम सच्चे हो। (93)

फिर जो कोई अल्लाह पर इस के बाद झूट बाँधे तो वही लोग ज़ालिम हैं। (94)

आप कह दें अल्लाह ने सच फ़रमाया, पस तुम इब्राहीम हनीफ़ (एक के हो जाने वाले) के दीन की पैरवी करो और वह मुश्रिकों में से न थे। (95)

वेशक सब से पहले जो घर मुक़र्रर किया गया लोगों के लिए वह जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहानों के लिए हिदायत। (96)

उस में निशानियाँ हैं खुली (जैसे) मुक़ामे इब्राहीम (अ), और जो उस में दाखिल हुआ वह अमन में हो गया, और अल्लाह के लिए (अल्लाह का हक़ है) लोगों पर ख़ानाए क़अबा का हज करना जो उस की तरफ़ राह (चलने की) इस्तिताअत रखता हो, और जिस ने कुफ़ किया तो वेशक अल्लाह जहान वालों से वेनियाज़ है। (97)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! क्यों तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हो? और अल्लाह उस पर गवाह है (वाख़बर है) जो तुम करते हो। (98)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह के रास्ते से क्यों रोकते हो (उस को) जो अल्लाह पर ईमान लाए, तुम उस में कजी ढूँढते हो, और तुम खुद गवाह हो, और अल्लाह उस से वेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (99)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो!) अगर कहा मानोगे उन लोगों के एक फ़रीक़ का जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें (हालते) कुफ़ में फेर देंगे। (100)

और तुम कैसे कुफ़ करते हो जबकि तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम्हारे दरमियान उस का रसूल (स) मौजूद है, और जो कोई मज़बूती से पकड़ेगा अल्लाह (की रस्सी) को तो उसे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी गई। (101)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो)! अल्लाह से डरो जैसा कि उस से डरने का हक़ है और तुम हरगिज़ न मरना मगर (उस हाल में) कि तुम मुसलमान हो। (102)

और मज़बूती से पकड़ लो अल्लाह की रस्सी को सब मिल कर और आपस में फूट न डालो, और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो, जब तुम (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो उस ने तुम्हारे दिलों में उलफ़त डाल दी तो तुम उस के फज़ल से भाई भाई हो गए, और तुम आग के गढ़े के किनारे पर थे तो उस ने तुम्हें उस से बचा लिया, इसी तरह वह तुम्हारे लिए अपनी आयात वाज़ेह करता है ताकि तुम हिदायत पाओ। (103)

और चाहिए कि तुम में से एक जमाअत रहे, वह भलाई की तरफ़ बुलाए और अच्छे कामों का हुक्म दे और बुराई से रोके, और यही लोग कामयाब होने वाले हैं। (104)

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो मुतफ़र्रिक़ हो गए और वाहम इख़तिलाफ़ करने लगे उस के बाद कि उन के पास वाज़ेह हुक्म आगए, और यही लोग हैं जिन के लिए है अज़ाब बहुत बड़ा। (105)

जिस दिन बाज़ चेहरे सफ़ेद होंगे और बाज़ चेहरे सियाह होंगे, पस जिन लोगों के सियाह हुए चेहरे (उन से कहा जाएगा) क्या तुम ने अपने ईमान के बाद कुफ़ किया? तो अब अज़ाब चखो क्यों कि तुम कुफ़ करते थे। (106)

और अलबत्ता जिन लोगों के चेहरे सफ़ेद होंगे वह अल्लाह की रहमत में होंगे, वह उस में हमेशा रहेंगे। (107)

यह अल्लाह की आयात है, हम आप पर ठीक ठीक पढ़ते हैं, और अल्लाह जहान वालों पर कोई जुल्म नहीं चाहता। (108)

وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ تُثَلِّىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتِ اللَّهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهُ							
और कैसे	तुम कुफ़ करते हो	जबकि तुम	पढ़ी जाती है	तुम पर	अल्लाह की आयतें	और तुम्हारे दरमियान	उस का रसूल
وَمَنْ يَعْصِمْ بِاللَّهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (١٠١)							
और जो	मज़बूत पकड़ेगा	अल्लाह को	तो उसे हिदायत दी गई	तरफ़	सीधा रास्ता	101	
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ (١٠٢) وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا ۚ وَادْكُرُوا							
ऐ	वह जो कि	ईमान लाए	तुम डरो अल्लाह से	हक़	उस से डरना	और तुम हरगिज़ न मरना	और तुम मगर
मुसलमान (जमा)	102	और मज़बूती से पकड़ लो	अल्लाह की रस्सी को	सब मिल कर	और न	आपस में फूट डालो	और याद करो
अल्लाह की नेमत	तुम पर	जब तुम थे	दुश्मन (जमा)	तो उलफ़त डाल दी	तुम्हारे दिलों में	तो तुम हो गए	
بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُم مِّنْهَا ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ (١٠٣) وَلْتَكُن							
उस के फज़ल से	भाई भाई	और तुम थे	पर	किनारा	गढ़ा	से (के)	आग
उस से	इसी तरह	वाज़ेह करता है अल्लाह	तुम्हारे लिए	अपनी आयात	ताकि तुम	हिदायत पाओ	103
तुम से (में)	एक जमाअत	वह बुलाए	तरफ़	भलाई	और वह हुक्म दे	अच्छे कामों का	और वह रोके
عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (١٠٤) وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ							
बुराई से	और यही लोग	वह	कामयाब होने वाले	104	और न हो जाओ	उन की तरह जो	
تَفَرَّقُوا وَآخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ							
मुतफ़र्रिक़ हो गए	और वाहम इख़तिलाफ़ करने लगे	उस के बाद	कि	उन के पास आगए	वाज़ेह हुक्म	और यही लोग	उन के लिए
عَذَابٍ عَظِيمٍ (١٠٥) يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ							
अज़ाब	बड़ा	105	दिन	सफ़ेद होंगे	बाज़ चेहरे	और सियाह होंगे	बाज़ चेहरे
فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكْفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ							
पस जो	लोग	सियाह हुए	उन के चेहरे	क्या तुम ने कुफ़ किया	बाद	अपने ईमान	
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ (١٠٦) وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ							
तो चखो	अज़ाब	क्यों कि	तुम थे	कुफ़ करते	106	और अलबत्ता	वह लोग जो
فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (١٠٧) تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ							
सो - में	अल्लाह की रहमत	वह	उस में	हमेशा रहेंगे	107	यह	अल्लाह की आयात
نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ (١٠٨)							
हम पढ़ते हैं वह	आप (स) पर	ठीक ठीक	और नहीं अल्लाह	चाहता	कोई जुल्म	जहान वालों के लिए	108

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَالّٰى اللّٰهُ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ (109)							
और अल्लाह के लिए जो	आस्मानों में	और जो	ज़मीन में	और अल्लाह की तरफ़	लौटाए जाएंगे	तमाम काम	109
كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ							
तुम हो	बेहतरीन	उम्मत	भेजी गई	लोगों के लिए	तुम हुक्म करते हो	अच्छे कामों का	
وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَوْ اٰمَنَ							
और मना करते हो	से	बुरे काम	और ईमान लाते हो	अल्लाह पर	और अगर	ईमान ले आते	
اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لّٰهُمْ مِنْهُمْ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمْ							
अहले किताब	तो था	बेहतर	उन के लिए	उन से	ईमान वाले	और उन के अक्सर	
الْفٰسِقُوْنَ (110) لَنْ يَّصْرُوْكُمْ اِلَّا اَذٰى وَاَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمْ الْاَدْبَارَ							
नाफरमान	110	हरगिज़ न	बिगाड़ सकेंगे तुम्हारा	सिवाए	सताना	और अगर	वह तुम से लड़ेंगे
							वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे
ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ (111) ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذَّلٰةُ اَيْنَ مَا							
फिर	उन की मदद न होगी	111	चस्पां कर दी गई	उन पर	ज़िल्लत	जहां कहीं	
تُحْفُوْا اِلَّا بِحَبْلِ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلِ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ							
वह पाए जाएं	सिवाए	उस (अहद)	अल्लाह से	और उस (अहद)	लोगों से	वह लौटे	ग़ज़ब के साथ
مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا							
अल्लाह से (के)	और चस्पां कर दी गई	उन पर	मोहताजी	यह	इस लिए कि वह	थे	
يَكْفُرُوْنَ بِآيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ذٰلِكَ							
कुफ़ करते	अल्लाह की आयतों से	और क़त्ल करते थे	नबी (जमा)	नाहक़	यह	यह	
بِمَا عَصَوْا وَكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ (112) لَيْسُوْا سَوَآءٌ مِّنْ							
इस लिए	उन्होंने ने नाफरमानी की	और थे	हद से बढ़ जाते	112	नहीं	बराबर	से (में)
اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قٰآِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِنَّآ الْيَلِ							
अहले किताब	एक जमाअत	काइम	वह पढ़ते हैं	अल्लाह की आयात	रात के औकात		
وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ (113) يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ							
और वह	सिज्दा करते हैं	113	ईमान रखते हैं	अल्लाह पर	और दिन	आखिरत	
وَيَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ							
और हुक्म करते हैं	अच्छी बात का	और मना करते हैं	से	बुरे काम	और वह दौड़ते हैं		
فِي الْخَيْرٰتِ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ (114) وَمَا يَفْعَلُوْا							
में	नेक काम	और यही लोग	से	नेकोकार (जमा)	और जो	वह करेंगे	
مِّنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوْهُ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ (115)							
से (कोई)	नेकी	तो हरगिज़ नाक़्द्री न होगी उस की	और अल्लाह	जानने वाला	परहेज़गारों को	115	

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और तमाम काम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (109)

तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए भेजी गई (पैदा की गई) तुम अच्छे कामों का हुक्म करते हो और बुरे कामों से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो, और अगर अहले किताब ईमान ले आते तो उन के लिए बेहतर था, उन में (कुछ) ईमान वाले हैं और उन में से अक्सर नाफरमान हैं। (110)

वह सताने के सिवा तुम्हारा हरगिज़ कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर वह तुम से लड़ेंगे तो वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे, फिर उन की मदद न होगी, (111)

उन पर ज़िल्लत चस्पां कर दी गई जहां कहीं वह पाए जाएं सिवाए उस के कि अल्लाह के अहद में आ जाएं और लोगों के अहद में, वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उन पर चस्पां कर दी गई मोहताजी, यह इस लिए कि वह अल्लाह की आयात का इन्कार करते थे और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते थे, यह इस लिए (था) कि उन्होंने ने नाफरमानी की और वह हद से बढ़ जाते थे। (112)

अहले किताब में सब बराबर नहीं, एक जमाअत (सीधी राह पर) काइम है और रात के औकात में अल्लाह की आयात पढ़ते हैं और वह सिज्दा करते हैं। (113)

वह ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर और वह अच्छी बात का हुक्म करते हैं और बुरे काम से रोकते हैं और वह नेक कामों में दौड़ते हैं, और यही लोग नेकोकारों में से हैं। (114)

और वह जो करेंगे कोई नेकी तो हरगिज़ उस की नाक़्द्री न होगी, और अल्लाह परहेज़गारों को जानने वाला है। (115)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया, हरगिज़ अल्लाह के आगे उन के माल और न उन की औलाद कुछ भी काम आएंगे, और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (116)

उन की मिसाल जो खर्च करते हैं इस दुनिया में ऐसी है जैसे हवा हो, उस में पाला हो, वह जा लगे खेती को उस कौम की जिन्हों ने अपनी जानों पर जुल्म किया, फिर उस को तबाह कर दे, अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर खुद जुल्म करते हैं। (117)

ऐ ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को राज़दार न बनाओ, वह तुम्हारी खराबी में कमी नहीं करते, वह चाहते हैं कि तुम तकलीफ़ पाओ, (उन की) दुश्मनी ज़ाहिर हो चुकी है उन के मुँह से, और जो उन के सीनों में छुपा हुआ है वह (उस से भी) बड़ा है, हम ने तुम्हारे लिए आयात खोल कर बयान कर दी हैं अगर तुम अक़ल रखते हो। (118)

सुन लो! तुम वह लोग हो जो उन को दोस्त रखते हो और वह तुम्हें दोस्त नहीं रखते और तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो, और जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब अकेले होते हैं तो वह तुम पर गुस्से से उंगलियां चबाते हैं, कह दीजिए! तुम अपने गुस्से में मर जाओ, वेशक अल्लाह दिल की बातों को (खूब) जानने वाला है। (119)

अगर तुम्हें कोई भलाई पहुँचे तो उन्हें बुरी लगती है, और अगर तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह उस से खुश होते हैं, और अगर तुम सबर करो और परहेज़गारी करो, तुम्हारा न बिगाड़ सकेगा उन का फ़रेब कुछ भी, वेशक जो कुछ वह करते हैं अल्लाह उसे घेरे हुए है। (120)

और जब आप सुबह सवेरे निकले अपने घर से, मोमिनों को जंग के मोर्चों पर बिठाने लगे, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (121)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ							
वह लोग जो	कुफ़ किया	हरगिज़ काम न आएगा	उन से (के)	उन के माल	और न	उन की औलाद	वेशक
مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٦﴾							
अल्लाह से (के आगे)	कुछ	और यही लोग	आग (दो़ख़) वाले	वह	उस में	हमेशा रहेंगे	116
مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ							
मिसाल	जो	खर्च करते हैं	में	इस	ज़िन्दगी	दुनिया	हवा
فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ وَمَا							
उस में	पाला	वह जा लगे	खेती	कौम	उन्हों ने जुल्म किया	जानें अपनी	और फिर उस को हलाक कर दे नहीं
ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا							
जुल्म किया उन पर अल्लाह	बल्कि	अपनी जानें	वह जुल्म करते हैं	117	ऐ	जो ईमान लाए (ईमान वाले)	
لَا تَتَّخِذُوا بَطَانَةً مِّنْ دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ							
न बनाओ	दोस्त (राज़दार)	से	सिवाए- अपने	वह कमी नहीं करते	खराबी	वह चाहते हैं	तुम तकलीफ़ पाओ
قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفَىٰ صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ							
अलबत्ता ज़ाहिर हो चुकी	दुश्मनी	से	उन के मुँह	और जो	छुपा हुआ	उन के सीने	बड़ा
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَٰأَن تُمْ أَوْلَٰءِ							
हम ने खोल कर बयान कर दिया	तुम्हारे लिए	आयात	अगर	तुम हो	अक़ल रखते	118	सुन लो-तुम
تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا لَقُوكُمْ							
तुम दोस्त रखते हो उन को	और नहीं	वह दोस्त रखते हैं तुम्हें	और तुम ईमान रखते हो	किताब पर	सब	और जब	वह तुम से मिलते हैं
قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَصَوْا عَالِيَكُمْ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ							
कहते हैं	हम ईमान लाए	और जब	अकेले होते हैं	वह काटते हैं	तुम पर	उंगलियां	गुस्से से
قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾							
कह दीजिए	तुम मर जाओ	अपने गुस्से में	वेशक अल्लाह	जानने वाला	सीने वाली (दिल की बातें)	119	
إِنْ تَمَسَّكُمْ حَسَنَةٌ تَسُوهُمْ وَإِنْ تَصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا							
अगर	पहुँचे तुम्हें	कोई भलाई	उन्हें बुरी लगती है	और अगर	तुम्हें पहुँचे	कोई बुराई	वह खुश होते हैं
وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا							
और अगर	तुम सबर करो	और परहेज़गारी करो	न बिगाड़ सकेगा तुम्हारा	उन का फ़रेब	कुछ		
إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾ وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ							
वेशक अल्लाह	जो कुछ	वह करते हैं	घेरे हुए है	120	और जब	आप (स) सुबह सवेरे निकले	अपने घर से
تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢١﴾							
बिठाने लगे	मोमिन (जमा)	ठिकाने	जंग के	और अल्लाह	सुनने वाला	जानने वाला	121

إِذْ هَمَّتْ طَّائِفَتَيْنِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا ۖ وَاللَّهُ وَلِيُهُمَا ۖ وَعَلَى اللَّهِ								
और अल्लाह पर	उनका मददगार	और अल्लाह	हिम्मत हार दें	कि	तुम से	दो गिरोह	इरादा किया	जब
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرِ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ ۚ								
कमज़ोर	जबकि तुम	बदर में	मदद कर चुका तुम्हारी अल्लाह	और अलबत्ता	122	मोमिन	चाहिए भरोसा करें	
فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ								
मोमिनों को		जब आप कहने लगे	123	शुक्रगुज़ार हो		ताकि तुम	तो डरो अल्लाह से	
أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُمَدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ أَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ								
फ़रिश्ते	से	तीन हज़ार से		तुम्हारा रब	मदद करे तुम्हारी	कि	क्या काफी नहीं तुम्हारे लिए	
مُنْزَلِينَ ﴿١٢٤﴾ بَلَىٰ إِنَّ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُمْ مِنْ فُورِهِمْ								
फौरन-वह	से	और तुम पर आएँ	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	अगर	क्यों नहीं	124	उतारे हुए
هَذَا يُمَدِّدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ أَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٥﴾								
125	निशान ज़दा	फ़रिश्ते	से	पाँच हज़ार		तुम्हारा रब	मदद करेगा तुम्हारी	यह
وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ بِهِ ۖ								
उस से	तुम्हारे दिल	और इस लिए कि इत्मीनान हो		तुम्हारे लिए	खुशख़बरी	मगर (सिर्फ)	उस को बनाया अल्लाह ने	और नहीं
وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٢٦﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا								
गिरोह	ताकि काट डाले	126	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह के पास	से	मगर (सिवाए)	मदद और नहीं
مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتُهُمْ فَيَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ ﴿١٢٧﴾ لَيْسَ لَكَ								
नहीं - आप (स) के लिए		127	नामुराद	तो वह लौट जाएँ	उन्हें ज़लील करे	या	उन्होंने कुफ़ किया	वह लोग जो
مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبُهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٢٨﴾								
128	ज़ालिम (जमा)	क्यों कि वह	उन्हें अज़ाब दे	या	उन की	खाह तौबा कुबूल कर ले	कुछ	काम (दख़ल)
وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ								
चाहे		जिस को	वह बख़्श दे	ज़मीन में		और जो	आस्मानों में और अल्लाह के लिए जो	
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٩﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ								
जो		ऐ	129	मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	चाहे	जिस और अज़ाब दे
أَمْنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ								
और डरो अल्लाह से		दुगना हुआ (चौगना)		दुगना	सूद	न खाओ		ईमान लाए (ईमान वाले)
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٣٠﴾ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ								
तैयार की गई		जो कि	आग	और डरो	130	फ़लाह पाओ		ताकि तुम
لِلْكَافِرِينَ ﴿١٣١﴾ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٣٢﴾								
132	रहम किया जाए	ताकि तुम पर		और रसूल	अल्लाह	और हुक्म मानो तुम	131	काफ़िरों के लिए

जब तुम में से दो गिरोहों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें, और अल्लाह उन का मददगार था, और अल्लाह पर चाहिए कि मोमिन भरोसा करें। (122)

और अलबत्ता अल्लाह तुम्हारी बदर में मदद कर चुका है जबकि तुम कमज़ोर (समझे जाते) थे, तो अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो। (123)

जब आप मोमिनों को कहते थे क्या तुम्हारे लिए यह काफी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़रिश्तों से उतारे हुए। (124)

क्यों नहीं अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी करो, और वह (दुश्मन) तुम पर चढ़ आएँ तो फौरन तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करेगा पाँच हज़ार निशान ज़दा फ़रिश्तों से। (125)

और यह अल्लाह ने सिर्फ तुम्हारी खुशख़बरी के लिए किया और इस लिए कि उस से तुम्हारे दिलों को इत्मीनान हो, और नहीं मदद मगर (सिर्फ) अल्लाह के पास से है जो ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (126)

ताकि वह उन लोगों के एक गिरोह को काट डाले जिन्होंने ने कुफ़ किया या उन्हें ज़लील कर दे तो वह नामुराद लौट जाएं। (127)

आप (स) का इस में दखल नहीं कुछ भी, खाह (अल्लाह) उन की तौबा कुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे क्यों कि वह ज़ालिम हैं। (128)

और अल्लाह ही के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और जिस को चाहे बख़्श दे और अज़ाब दे जिस को चाहे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरवान है। (129)

ईमान वालो! न खाओ सूद दुगना चौगना, और अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (130)

और डरो उस आग से जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (131)

और तुम अल्लाह और रसूल (स) का हुक्म मानो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (132)

और दौड़ो अपने रब की बख्शिश और जन्नत की तरफ जिस का अर्ज आस्मानों और ज़मीन (के बराबर) है, तैयार की गई है परहेज़गारों के लिए। (133)

जो खर्च करते हैं खुशी (खुशहाली) और तकलीफ में और पी जाते हैं गुस्सा और माफ़ कर देते हैं लोगों को, और अल्लाह दोस्त रखता है एहसान करने वालों को। (134)

और वह लोग जो बेहयाई करें या अपने तई कोई जुल्म कर बैठें तो वह अल्लाह को याद करें, फिर अपने गुनाहों के लिए बख्शिश मांगें, और कौन गुनाह बख़्शता है अल्लाह के सिवा? और जो उन्हीं ने (ग़लत) किया उस पर जानते बूझते न अड़ें। (135)

ऐसे ही लोगों की जज़ा उन के रब की तरफ़ से बख्शिश और वागात है जिन के नीचे बहती हैं नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे, और कैसा अच्छा बदला है काम करने वालों का! (136)

गुज़र चुके हैं तुम से पहले तरीके (वाकिफ़ात) तो ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झुटलाने वालों का! (137)

यह बयान है लोगों के लिए और हिदायत और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (138)

और तुम सुस्त न पड़ो और ग़म न खाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम ईमान वाले हो। (139)

अगर तुम को ज़ख़्म पहुँचा तो अलबत्ता पहुँचा है उस कौम को (भी) उस जैसा ही ज़ख़्म, और यह (खुशी और ग़म के) दिन हैं जो हम लोगों के दरमियान बारी बारी बदलते रहते हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले उन लोगों को जो ईमान लाए और तुम में से (वाज़ को) शहीद बनाए (दरजए शहादत दे), और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (140)

وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمُوتُ							
आस्मान (जमा)	उस का अर्ज	और जन्नत	अपना रब	से	बख्शिश	तरफ़	और दौड़ो
وَالْأَرْضِ أَعَدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٣﴾ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ							
खुशी में	खर्च करते हैं	जो लोग	133	परहेज़गारों के लिए	तैयार की गई	और ज़मीन	
وَالضَّرَّاءِ وَالْكُظُمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ							
लोग	से	और माफ़ करते हैं	गुस्सा	और पी जाते हैं	और तकलीफ़		
وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣٤﴾ وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا							
जुल्म करें	या	कोई बेहयाई	वह करें	जब	और वह लोग जो	134	एहसान करने वाले
दोस्त रखता है	और अल्लाह						
أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرِ الذُّنُوبَ							
गुनाह	बख़्शता है	और कौन	अपने गुनाहों के लिए	फिर बख्शिश मांगें	वह अल्लाह को याद करें	अपने तई	
إِلَّا اللَّهُ ۚ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٣٥﴾							
135	जानते हैं	और वह	उन्हीं ने किया	जो	पर	वह अड़ें	अल्लाह के सिवा
أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّتْ							
और वागात	उन का रब	से	बख्शिश	उन की जज़ा	यही लोग		
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَنَعْمَ							
और कैसा अच्छा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उस के नीचे	से	बहती है	
أَجْرُ الْعَمَلِينَ ﴿١٣٦﴾ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۖ فَسِيرُوا							
तो चलो फिरो	तरीके (वाकिफ़ात)	तुम से पहले	गुज़र चुके	136	काम करने वाले	बदला	
فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿١٣٧﴾							
137	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	फिर देखो	ज़मीन में	
هَٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٨﴾							
138	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	और हिदायत	लोगों के लिए	बयान	यह	
وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾							
139	ईमान वाले	अगर तुम हो	ग़ालिब	और तुम	और ग़म न खाओ	और सुस्त न पड़ो	
إِنْ يَمَسُّكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ							
अय्याम	और यह	उस जैसा	ज़ख़्म	कौम	पहुँचा	तो अलबत्ता	ज़ख़्म
तुम्हें पहुँचा	अगर						
نُذَوِلُّهَا بِإِنِّ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا							
ईमान लाए	जो लोग	और ताकि मालूम कर ले अल्लाह	लोगों के दरमियान	हम बारी बारी बदलते हैं इस को			
وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٠﴾							
140	ज़ालिम (जमा)	दोस्त नहीं रखता	और अल्लाह	शहीद (जमा)	तुम से	और बनाए	

وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكَافِرِينَ (141)						
और ताकि पाक साफ कर दे	जो लोग	ईमान लाए	और मिटा दे	काफिर (जमा)	141	
أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ (142)						
क्या तुम समझते हो?	कि	तुम दाखिल होगे	जन्नत	और अभी नहीं	अल्लाह ने मालूम किया	जिहाद करने वाले
तुम में से	और मालूम किया	सब्र करने वाले	142	और अलबत्ता	तुम तमन्ना करते थे	मौत
قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَآيْتُمُوهُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ (143)						
कबल	कि	तुम उस से मिलो	तो अब तुम ने उसे देख लिया	और तुम	देखते हो	143
وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (144)						
और नहीं	मुहम्मद (स)	मगर (तो)	एक रसूल	अलबत्ता गुज़रे	उन से पहले	रसूल (जमा)
क्या फिर अगर	वह वफात पा लें	या	कत्ल हो जाएं	तुम फिर जाओगे	अपनी एड़ियों पर	और जो
عَلَىٰ عَقْبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ (145)						
अपनी एड़ियों पर	तो हरगिज़ न बिगाड़ेगा अल्लाह का	कुछ भी	और जल्द जज़ा देगा अल्लाह	शुक्र करने वाले	144	
وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كِتَابًا مُّؤَجَّلًا (146)						
और नहीं	किसी शख्स के लिए	कि	वह मरे	बगैर	अल्लाह के हुक्म से	लिखा हुआ
وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا وَسَنَجْزِي الشَّاكِرِينَ (147)						
और जो	चाहेगा	इनज़ाम	दुनिया	हम देंगे उस को	उस से	और जो
وَكَايْنِ مَنْ نَبِيٍّ قَتَلَ مَعَهُ رِبِّيُّونَ كَثِيرٌ فَمَا وَهَنُوا لِمَا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا (148)						
व सबब-जो	उन्हें पहुँचे	में	अल्लाह की राह	और न	उन्होंने कमजोरी की	और न दब गए
وَاللَّهُ يُحِبُّ الصَّابِرِينَ (149)						
और अल्लाह	दोस्त रखता है	सब्र करने वाले	146	और न था	उन का कहना	कि
قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا (150)						
उन्होंने दुआ की	ऐ हमारे रब	बख्शदे हम को	हमारे गुनाह	और हमारी ज़ियादती	हमारे काम में	
وَتَبَتِ أَقْدَامُنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ (151)						
और साबित रख	हमारे कदम	और हमारी मदद फ़रमा	पर	कौम	काफिर (जमा)	147

और ताकि अल्लाह पाक साफ़ कर दे उन लोगों को जो ईमान लाए और मिटा दे काफ़िरों को। (141)

क्या तुम यह समझते हो कि तुम जन्नत में दाखिल हो जाओगे और अभी अल्लाह ने मालूम नहीं किया (इमतिहान नहीं लिया) कि कौन तुम में से जिहाद करने वाले हैं और सब्र करने वाले हैं। (142)

और अलबत्ता तुम मौत से मिलने से कबल उस की तमन्ना करते थे, तो अब तुम ने उसे (मौत को) देख लिया और तुम उसे (अपनी आँखों से) देख रहे हो। (143)

और मुहम्मद (स) तो एक रसूल हैं, अलबत्ता गुज़र चुके हैं उन से पहले बहुत से रसूल, फिर अगर वह वफात पा लें या कत्ल हो जाएं तो क्या तुम अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) लौट जाओगे? और जो अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फिर जाए तो वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेगा, और अल्लाह जल्द जज़ा देगा शुक्र करने वालों को। (144)

और किसी शख्स के लिए (मुमकिन) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बगैर मर जाए, लिखा हुआ है एक मुक़ररा वक़्त, और जो दुनिया का इन्ज़ाम चाहेगा हम उसे उस में से दे देंगे, और जो चाहेगा आखिरत का बदला हम उसे उस में से देंगे, और हम शुक्र करने वालों को जल्द जज़ा देंगे। (145)

और बहुत से नबी (हुए हैं) उन के साथ (मिल कर) बहुत से अल्लाह वाले लड़े, पस वह सुस्त न पड़े (उन मुसीबतों) के सबब जो उन्हें अल्लाह की राह में पहुँची और न उन्होंने ने कमजोरी (ज़ाहिर) की और न दब गए, और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है। (146)

और उन का कहना न था उस के सिवाए कि उन्होंने ने दुआ की: ऐ हमारे रब! हमें बख़शदे हमारे गुनाह, और हमारी ज़ियादती हमारे काम में, और साबित रख हमारे कदम और काफ़िरों की कौम पर हमारी मदद फ़रमा। (147)

तो अल्लाह ने उन्हें इन्आम दिया दुनिया का और आखिरत का अच्छा इन्आम, और अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (148)

ऐ ईमान वाले! अगर तुम काफिरों का कहा मानोगे तो वह तुम्हें एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फेर देंगे फिर तुम घाटे में पलट जाओगे। (149)

बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सब से बेहतर मददगार है। (150)

हम अनकरीब काफिरों के दिलों में रुझ डाल देंगे इस लिए कि उन्होंने ने अल्लाह का शरीक किया जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और बुरा ठिकाना है ज़ालिमों का। (151)

और अलबत्ता अल्लाह ने तुम से अपना वादा सच्चा कर दिखाया जब तुम उन्हें उस के हुक्म से क़त्ल करने लगे यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली की और काम में झगड़ा किया और उस के बाद नाफ़रमानी की जबकि तुम्हें दिखाया जो तुम चाहते थे, तुम में से कोई दुनिया चाहता था और तुम में से कोई आखिरत चाहता था, फिर उस ने तुम्हें उन से पस्या कर दिया ताकि तुम्हें आज़माएँ, और तहकीक़ उस ने तुम्हें माफ़ कर दिया, और अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़ल करने वाला है। (152)

जब तुम (मुँह उठा कर) चढ़ते जाते थे और किसी को पीछे मुड़ कर न देखते थे और रसूल (स) तुम्हारे पीछे से तुम्हें पुकारते थे, फिर तुम्हें ग़म पर ग़म पहुँचा ताकि तुम रंज न करो उस पर जो (तुम्हारे हाथ से) निकल गया और न (उस पर) जो तुम्हें पेश आए, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (153)

فَاتَهُمُ اللَّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْآخِرَةِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ (١٤٨)							
तो उन्हें दिया अल्लाह	इन्आम	दुनिया	और अच्छा	इन्आम-ए-आखिरत			
और अल्लाह	दोस्त रखता है	एहसान करने वाले	148	ऐ	लोग जो	ईमान लाए	
إِنْ تُطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا يَزِيدُوا كُفْرَكُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ (١٤٩)							
अगर तुम कहा मानोगे	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	वह तुम्हें फेर देंगे	पर	तुम्हारी एड़ियाँ	तुम पलट जाओगे	फिर तुम	
घाटे में	149	बल्कि अल्लाह	तुम्हारा मददगार	और वह	बेहतर	मददगार (जमा)	150
سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانٌ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۚ وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ (١٥١)							
अनकरीब हम डाल देंगे	में	दिल (जमा)	जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	रुझ	इस लिए कि उन्होंने ने शरीक किया	अपना वादा	
अल्लाह का	जिस	नहीं उतारी	उस की	कोई सनद	और उन का ठिकाना	दोज़ख़	
और बुरा	ठिकाना	ज़ालिम (जमा)	151	और अलबत्ता	सच्चा कर दिया तुम से अल्लाह	अपना वादा	
إِذْ تَحْسُونَهُمْ بِإِذْنِهِ حَتَّىٰ إِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِمَّنْ بَعْدَ مَا أَرْكُم مَّا تُحِبُّونَ ۚ							
जब	तुम क़त्ल करने लगे उन्हें	उस के हुक्म से	यहां तक कि	जब	तुम ने बुज़दिली की	और झगड़ा किया	
काम में	और तुम ने नाफ़रमानी की	उस के बाद	जब तुम्हें दिखाया	जो	तुम चाहते थे	तुम	
مِنْكُمْ مَّنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ (١٥٢)							
तुम से	जो चाहता था	दुनिया	और तुम से	जो चाहता था	आखिरत	तुम	
फिर	तुम्हें फेर दिया	उन से	ताकि तुम्हें आज़माएँ	और तहकीक़	माफ़ किया	तुम से (तुम्हें)	
और अल्लाह	फ़ज़ल करने वाला	पर	मोमिन (जमा)	152	जब	तुम चढ़ते थे	और न
सुड़ कर देखते थे	किसी को	और रसूल (स)	तुम्हें पुकारते थे	तुम्हारे पीछे से	ग़म पर ग़म	पहुँचा ताकि तुम रंज न करो उस पर जो (तुम्हारे हाथ से) निकल गया और न (उस पर) जो तुम्हें पेश आए, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (153)	
और न	जो	तुम्हें पेश आए	और अल्लाह	बाख़बर	उस से जो तुम करते हो	153	

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَغْشَى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۖ										
तुम में से	एक जमाअत	ढाँक लिया	ऊँघ	अमन	ग़म	बाद	तुम पर	उस ने उतारा	फिर	
وَطَآئِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ										
वे हकीकत		अल्लाह के बारे में		वह गुमान करते थे		अपनी जानें		उन्हें फ़िक्र पड़ी थी		और एक जमाअत
ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةُ يَقُولُونَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ										
गुमान	जाहिलियत	वह कहते थे		क्या	हमारे लिए	से	काम	कुछ	आप कह दें	कि
كُلَّهُ لِلّٰهِ يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ										
तमाम - अल्लाह के लिए		वह छुपाते हैं		में	अपने दिल	जो	ज़ाहिर नहीं करते		आप के लिए (पर)	वह कहते हैं
لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَا قُتِلْنَا هُنَا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ										
हमारे लिए		थोड़ा सा इख़्तियार		हम न मारे जाते		यहां	आप कह दें	अगर तुम होते	में	अपने घर (जमा)
لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ										
ज़रूर निकल खड़े होते वह लोग		लिखा था		उन पर	मारा जाना	तरफ़	अपनी क़त्लगाह (जमा)		और ताकि आज़माए अल्लाह	
مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحَّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ										
जो	तुम्हारे सीनों में		और ताकि साफ़ कर दे		जो	में	तुम्हारे दिल		और अल्लाह	जानने वाला
بِذَاتِ الصُّدُورِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ ۖ										
सीनों वाले (दिलों के भेद)		154	वेशक	जो लोग	पीठ फेरेंगे	तुम में से	दिन	आमने सामने हुई दो जमाअतें		
إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۗ										
दरहकीकत उन को फिसला दिया		शैतान		बाज़ की वजह से		जो उन्होंने ने कमाया (आमाल)		और अलबत्ता	माफ़ कर दिया अल्लाह	
إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝۱०० يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا										
वेशक अल्लाह		बख़्शने वाला	हिलम वाला	155	ऐ	जो लोग	ईमान वालो (ईमान लाए)		न हो जाओ	
كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ										
उन लोगों की तरह		काफ़िर		और वह कहते हैं		अपने भाइयों को		जब	वह सफ़र करें ज़मीन (राह) में	
أَوْ كَانُوا غَزَىٰ لَوْ كَانُوا عِندَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللّٰهُ										
या	जंग में हों		अगर वह होते		हमारे पास		न	वह मरते	और न मारे जाते	
ذَلِكَ حَسْرَةٌ فِي قُلُوبِهِمْ وَاللّٰهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ										
यह - उस		हसरत		में	उन के दिल		और अल्लाह	ज़िन्दा करता है		और मारता है
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝۱०१ وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ										
और अल्लाह	जो कुछ	तुम करते हो		देखने वाला	156	और अलबत्ता अगर	तुम मारे जाओ	में	अल्लाह की राह	
أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝۱०२										
या तुम मर जाओ		यकीनन बख़्शिश		अल्लाह (की तरफ़) से		और रहमत		बेहतर	उस से जो	वह जमा करते हैं

फिर उस ने तुम पर ग़म के बाद अमन ऊँघ (की सूरत में) उतारी, एक जमाअत को ढाँक लिया तुम में से, और एक जमाअत को अपनी जान की फ़िक्र पड़ी थी, वह अल्लाह के बारे में वे हकीकत गुमान करते थे जाहिलियत के गुमान, वह कहते थे क्या कोई काम कुछ हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) है? आप (स) कह दें, कि तमाम काम अल्लाह के लिए (अल्लाह के इख़्तियार में) है, वह अपने दिलों में छुपाते हैं जो आप के लिए (आप पर) ज़ाहिर नहीं करते, वह कहते हैं अगर कुछ काम हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) होता तो हम यहां न मारे जाते, आप कह दें अगर तुम अपने घरों में होते तो जिन पर (जिन की किस्मत में) मारा जाना लिखा था वह ज़रूर निकल खड़े होते अपनी कतलगाहों की तरफ़, ताकि अल्लाह आज़माए जो तुम्हारे सीनों में है, और ताकि साफ़ कर दे जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह दिलों के भेद खूब जानने वाला है। (154)

वेशक जो लोग तुम में से पीठ फेर गए जिस दिन दो जमाअतें आमने सामने हुई, दरहकीकत उन्हें शैतान ने फिसलाया उन के बाज़ आमाल की वजह से, और अलबत्ता अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, वेशक अल्लाह बख़्शने वाला बुरदवार है। (155)

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह न हो जाओ जो काफ़िर हुए और वह कहते हैं अपने भाइयों को जब वह सफ़र करें ज़मीन में या जंग में शरीक हों, अगर वह होते हमारे पास तो वह न मरते और न मारे जाते, ताकि अल्लाह उस को हसरत बना दे उन के दिलों में, और अल्लाह (ही) ज़िन्दा करता है और मारता है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखने वाला है। (156)

और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या तुम मर जाओ तो यकीनन बख़्शिश और रहमत है अल्लाह की तरफ़ से, (यह) उस से बेहतर है जो वह (दौलत) जमा करते हैं। (157)

और अगर तुम मर गए या मार दिए गए तो यकीनन अल्लाह की तरफ़ इकट्ठे किए जाओगे। (158)

पस अल्लाह की रहमत (ही) से है कि आप (स) उन के लिए नरम दिल हैं, और अगर तुन्दखू सख़्त दिल होते तो वह आप (स) के पास से मुन्तशिर हो जाते, पस आप (स) माफ़ कर दें उन्हें और उन के लिए बख़्शिश मांगें, और काम में उन से मश्वरा कर लिया करें, फिर जब आप (स) (पुख़्ता) इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें, वेशक अल्लाह भरोसा करने वालों को दोस्त रखता है। (159)

अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं, और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो तुम्हारी मदद करे उस के बाद, और चाहिए कि ईमान वाले अल्लाह पर भरोसा करें। (160)

और नबी के लिए (शायान) नहीं कि वह छुपाए, और जो छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज़ क़ियामत के दिन लाएगा, फिर पूरा पूरा पाएगा हर शख्स जो उस ने कमाया (अमल किया) और वह जुल्म नहीं किए जाएंगे। (161)

तो क्या जिस ने पैरवी की रज़ाए इलाही (अल्लाह की खुशनुदी की) उस के मानिन्द है जो अल्लाह के गुस्से के साथ लौटा? और उस का ठिकाना जहन्नम है, और (बहुत) बुरा ठिकाना है। (162)

उन के (मुखतलिफ़) दरजे हैं अल्लाह के पास, और वह जो कुछ करते हैं अल्लाह देखने वाला है। (163)

वेशक अल्लाह ने ईमान वालों (मोमिनीन) पर एहसान किया जब उन में एक रसूल (स) भेजा उन में से, वह उन पर उस की आयतें पढ़ता है, और उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब ओ हिक्मत सिखाता है, और वेशक वह उस से क़व्ल अलवत्ता खुली गुमराही में थे। (164)

क्या जब तुम्हें पहुँची कोई मुसीबत, अलवत्ता तुम उस से दो चंद पहुँचा चुके थे, तुम कहते हो यह कहाँ से आई? आप कह दें वह तुम्हारे अपने (ही) पास से, वेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (165)

وَلَيْنَ مُتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ﴿١٥٨﴾ فَبِمَا رَحْمَةٍ							
और अगर	तुम मर गए	या	तुम मार दिए गए	यकीनन अल्लाह की तरफ़	तुम इकट्ठे किए जाओगे	158	पस - से
مِّنَ اللَّهِ لَئِنْ لَّهُمْ ۖ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ ۚ							
अल्लाह (की तरफ़) से	नरम दिल	उन के लिए	और अगर आप (स) होते	तुन्दखू	सख़्त दिल	तो वह मुन्तशिर हो जाते	आप (स) के पास से
فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ ۚ							
आप (स) माफ़ कर दें	उन से (उन्हें)	और बख़्शिश मांगें	उन के लिए	और मश्वरा करें उन से	में	काम	
فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٥٩﴾							
फिर जब	आप (स) इरादा कर लें	तो भरोसा करें	अल्लाह पर	वेशक अल्लाह	दोस्त रखता है	भरोसा करने वाले	159
إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ يَخْذَلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي							
अगर	वह मदद करे तुम्हारी	अल्लाह	तो नहीं ग़ालिब आने वाला	तुम पर	और अगर	वह तुम्हें छोड़ दे	तो कौन?
يَنْصُرْكُم مِّنْ بَعْدِهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٦٠﴾ وَمَا كَانَ							
वह तुम्हारी मदद करे	उस के बाद	और अल्लाह पर	चाहिए कि भरोसा करें	ईमान वाले	160	और नहीं है	था - है
لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ ۚ وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ							
नबी के लिए	कि छुपाए	और जो	छुपाएगा	लाएगा	जो उस ने छुपाया	क़ियामत के दिन	
ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦١﴾ أَفَمَنِ اتَّبَعَ							
फिर	पूरा पाएगा	हर शख्स	जो	उस ने कमाया	और वह	जुल्म न किए जाएंगे	तो क्या जिस
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَمَنْ بَاءَ بِسَخِطٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۚ							
रज़ा (खुशनुदी)	अल्लाह	मानिन्द - जो	लौटा	गुस्से के साथ	अल्लाह के	और उस का ठिकाना	जहन्नम
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ بِصِيرٍ بِمَا							
और बुरा	ठिकाना	162	वह - उन	दरजे	अल्लाह के पास	और अल्लाह	देखने वाला
يَعْمَلُونَ ﴿١٦٣﴾ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا							
वह करते हैं	163	अलवत्ता वेशक	अल्लाह ने एहसान किया	पर	ईमान वाले (मोमिनीन)	जब भेजा	उन में
مِّنْ أَنْفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ							
से	उन की जानें (उन के दरमियान)	वह पढ़ता है	उन पर	उस की आयतें	और उन्हें पाक करता है	और उन्हें सिखाता है	किताब
وَالْحِكْمَةَ ۚ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١٦٤﴾							
और हिक्मत	और वेशक	वह थे	उस से क़व्ल	अलवत्ता - में	गुमराही	खुली	164
أَوَلَمَّا أَصَابَتْكُمْ مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّى هَذَا ۖ							
क्या जब	तुम्हें पहुँची	कोई मुसीबत	अलवत्ता तुम ने पहुँचाई	उस से दो चंद	तुम कहते हो	कहाँ से यह?	
قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾							
आप कह दें	वह	से	पास	तुम्हारी जानें (अपने पास)	वेशक अल्लाह	पर	हर शै

وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ التَّقَى الْجَمْعَيْنِ فَبِأَذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾									
और जो	तुम्हें पहुँचा	दिन	मुडभेड़ हुई	दो जमाअतें	तो अल्लाह के हुक्म से	और ताकि वह मालूम कर ले	ईमान वाले	166	
وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا ۖ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا									
और ताकि जान ले	वह जो कि	मुनाफ़िक हुए	और कहा गया	उन्हें	आओ	लड़ो			
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ ادْفَعُوا ۚ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَا تَبْعُنَكُمُ									
में	अल्लाह की राह	या	दिफ़ाअ करो	वह बोले	अगर हम जानते	जंग	ज़रूर तुम्हारा साथ देते		
هُمْ لِلْكَفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ									
वह	कुफ़ के लिए (कुफ़ से)	उस दिन	ज़ियादा करीब	उन से	व निसबत ईमान	वह कहते हैं	अपने मुँह से		
مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾ الَّذِينَ قَالُوا									
जो नहीं	उन के दिलों में	और अल्लाह	खूब जानने वाला	जो	वह छुपाते हैं	167	वह लोग जो	उन्होंने ने कहा	
لَاخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا ۚ قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ									
अपने भाइयों के बारे में	और वह बैठे रहे	अगर	वह हमारी मानते	वह न मारे जाते	कह दीजिए	तुम हटा दो	से		
أَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا									
अपनी जानें	मौत	अगर	तुम हो	सच्चे	168	और न	हरगिज़ खयाल करो	जो लोग	मारे गए
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾									
में	अल्लाह का रास्ता	मुर्दा (जमा)	बल्कि	ज़िन्दा (जमा)	पास	अपना रब	वह रिज़्क दिए जाते हैं	169	
فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ									
खुश	से-जो	उन्हें अल्लाह ने दिया	अपने फ़ज़ल से	और खुश वक़्त हैं	उन की तरफ़ से जो	नहीं			
يَلْحَقُوا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۖ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾									
मिले	उन से	से	उन के पीछे	यह कि नहीं	कोई खौफ़	उन पर	और न	ग़मगीन होंगे	170
يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ									
वह खुशियां मना रहे हैं	नेमत से	से	अल्लाह	और फ़ज़ल	और यह कि अल्लाह	ज़ाया नहीं करता			
أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا									
अजर	ईमान वाले	171	जिन लोगों ने	कुबूल किया	अल्लाह का	और रसूल	वाद	कि	
أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقُوا أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٢﴾									
पहुँचा उन्हें	ज़ख़म	उन के लिए जो	उन्होंने ने नेकी की	उन में से	और परहेज़गारी की	अजर	बड़ा	172	
الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ									
वह लोग जो	कहा	उन के लिए	लोग	कि	लोग	जमा किया है	तुम्हारे लिए	पस उन से डरो	
فَرَادَهُمْ إِيمَانًا ۚ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾									
तो ज़ियादा हुआ उन का	ईमान	और उन्होंने ने कहा	हमारे लिए काफी है अल्लाह	और कैसा अच्छा	कारसाज़	173			

और तुम्हें जो (तक्लीफ़) पहुँची जिस दिन दो जमाअतों में मुडभेड़ हुई तो अल्लाह के हुक्म से (पहुँची) ताकि वह मालूम कर ले ईमान वालों को। (166)

और ताकि जान ले उन लोगों को जो मुनाफ़िक् हुए, और उन्हें कहा गया: आओ! अल्लाह की राह में लड़ो या दिफ़ाअ करो, तो वह बोले अगर हम जंग जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते, वह उस दिन कुफ़ से ज़ियादा करीब थे व निसबत ईमान के, वह अपने मुँह से कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, और अल्लाह खूब जानने वाला है जो वह छुपाते हैं। (167)

वह लोग जिन्होंने ने अपने भाइयों के बारे में कहा और खुद बैठे रहे अगर वह हमारी बात मानते तो वह न मारे जाते, कह दीजिए! तुम अपनी जानों से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो। (168)

जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें हरगिज़ खयाल न करो मुर्दा, बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने रब के पास से वह रिज़्क पाते हैं। (169)

खुश है उस से जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़ल से दिया, और वह उन लोगों की तरफ़ से खुश वक़्त हैं जो नहीं मिले उन से उन के पीछे, उन पर न कोई खौफ़ है और न वह ग़मगीन होंगे। (170)

वह खुशियाँ मना रहे हैं अल्लाह की नेमत और फ़ज़ल से, और यह कि अल्लाह ज़ाया नहीं करता ईमान वालों का अजर। (171)

जिन लोगों ने अल्लाह और उस के रसूल का (हुक्म) कुबूल किया उस के बाद कि उन्हें ज़ख़म पहुँचा, उन में से जिन लोगों ने नेकी और परहेज़गारी की उन के लिए बड़ा अजर है। (172)

जिन्हें लोगों ने कहा कि लोगों ने तुम्हारे (मुक़ाबले के लिए सामान) जमा कर लिया है, पस उन से डरो तो उन का ईमान ज़ियादा हुआ, और उन्होंने ने कहा हमारे लिए अल्लाह काफी है और वह कैसा अच्छा कारसाज़ है! (173)

फिर वह लौटे अल्लाह की नेमत और फज़ल के साथ, उन्हें कोई बुराई न पहुँची, और उन्होंने ने पैरवी की रज़ाए इलाही की, और अल्लाह बड़े फज़ल वाला है। (174)

इस के सिवा नहीं कि शैतान तुम्हें डराता है अपने दोस्तों से, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (175)

और आप को ग़मगीन न करें वह लोग जो कुफ़्र में दौड़ धूप करते हैं, यकीनन वह हरगिज़ अल्लाह का न बिगाड़ सकेंगे कुछ, अल्लाह चाहता है कि उन को आखिरत में कोई हिस्सा न दे, और उन के लिए अज़ाब है बड़ा। (176)

वेशक जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया वह हरगिज़ नहीं बिगाड़ सकते अल्लाह का कुछ, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (177)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह हरगिज़ गुमान न करें कि हम जो उन्हें ढील दे रहे हैं यह उन के लिए बेहतर है, दरहकीकत हम उन्हें ढील देते हैं ताकि वह गुनाह में बढ जाएं, और उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (178)

अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि ईमान वालों को (इस हाल पर) छोड़ दे जिस पर तुम हो यहां तक कि नापाक को पाक से जुदा कर दे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि तुम्हें ग़ैब की ख़बर दे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिस को चाहे चुन लेता है, तो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिए बड़ा अजर है। (179)

और वह लोग हरगिज़ यह ख़याल न करें जो उस (माल) में बुख़ल करते हैं जो अल्लाह ने अपने फज़ल से उन्हें दिया कि वह बेहतर है उन के लिए, बल्कि वह उन के लिए बुरा है, जिस (माल) में उन्होंने ने बुख़ल किया अन्नकरीब क़ियामत के दिन तौक़ (बना कर) पहनाया जाएगा, और अल्लाह ही वारिस है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (180)

فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةِ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوءٌ ۚ وَاتَّبَعُوا							
और उन्होंने ने पैरवी की	कोई बुराई	उन्हें नहीं पहुँची	और फज़ल	अल्लाह	से	नेमत के साथ	फिर वह लौटे
رِضْوَانَ اللَّهِ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ (١٧٤) إِنَّمَا ذِكُّمُ الشَّيْطَانِ							
शैतान	यह तुम्हें	इस के सिवा नहीं	174	बड़ा	फज़ल वाला	और अल्लाह	अल्लाह की रज़ा
يُخَوِّفُ أَوْلِيَآءَهُ ۚ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونَ إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ (١٧٥)							
175	ईमान वाले	तुम हो	अगर	और डरो मुझ से	उन से डरो	सो न	अपने दोस्त डराता है
وَلَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۗ							
कुछ	अल्लाह	हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे	यकीनन वह	कुफ़्र में	दौड़ धूप करते हैं	जो लोग	आप को ग़मगीन करें और न
يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حِزًّا فِي الْآخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (١٧٦)							
176	बड़ा	अज़ाब	और उन के लिए	आखिरत	में	कोई हिस्सा	उन को दे कि न चाहता है अल्लाह
إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۚ وَلَهُمْ							
और उन के लिए	कुछ	बिगाड़ सकते अल्लाह का	हरगिज़ नहीं	ईमान के बदले	कुफ़्र	उन्होंने ने मोल लिया	वह लोग जो वेशक
عَذَابٌ أَلِيمٌ (١٧٧) وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمِلُّ لَهُمْ خَيْرٌ							
बेहतर	उन्हें	हम ढील देते हैं	यह कि	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	हरगिज़ गुमान करें	और न	177 दर्दनाक अज़ाब
لَّأَنفُسِهِمْ ۖ إِنَّمَا نُمِلُّ لَهُمْ لِيَزِدُوا إِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ (١٧٨)							
178	ज़लील करने वाला	अज़ाब	और उन के लिए	गुनाह	ताकि वह बढ जाएं	उन्हें	हम ढील देते हैं दरहकीकत उन के लिए
مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ							
यहां तक कि	उस पर	तुम	जो	पर	ईमान वाले	कि छोड़े	अल्लाह नहीं है
يَمَيِّزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ							
ग़ैब	पर	कि तुम्हें ख़बर दे	अल्लाह	और नहीं है	पाक	से	नापाक जुदा कर दे
وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِيٰ مِنْ رُّسُلِهِ مَنْ يَّشَاءُ ۚ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ							
और उस के रसूल	अल्लाह पर	तो तुम ईमान लाओ	वह चाहे	जिस को	अपने रसूल	से	चुन लेता है और लेकिन अल्लाह
وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ (١٧٩) وَلَا يَحْسَبَنَّ							
हरगिज़ ख़याल करें	और न	179	बड़ा	अजर	तो तुम्हारे लिए	और परहेज़गारी करो	तुम ईमान लाओ और अगर
الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا أَنَّهُمْ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرٌ لَّهُمْ							
उन के लिए	बेहतर	वह	अपने फज़ल से	उन्हें दिया अल्लाह ने	में-जो	बुख़ल करते हैं	जो लोग
بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۖ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ							
क़ियामत	दिन	उस में	उन्होंने ने बुख़ल किया	जो	अन्नकरीब तौक़ पहनाया जाएगा	उन के लिए	बुरा वह बल्कि
وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (١٨٠)							
180	बाख़बर	जो तुम करते हो	और अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए मीरास	

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ									
मालदार	और हम	फ़कीर	कि अल्लाह	कहा	जिन लोगों ने	कौल (वात)	अलबत्ता सुन लिया अल्लाह ने		
سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ									
नाहक		नबी (जमा)		और उन का क़त्ल करना		जो उन्होंने ने कहा		अब हम लिख रखेंगे	
وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿١٨١﴾ ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ									
आगे भेजा	बदला - जो	यह	181	जलाने वाला	अज़ाब	तुम चखो	और हम कहेंगे		
أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿١٨٢﴾ الَّذِينَ قَالُوا									
कहा	जिन लोगों ने	182	बन्दों पर	जुल्म करने वाला	नहीं	और यह कि अल्लाह	तुम्हारे हाथ		
إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا أَلاَّ نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ حَتَّى يَأْتِيَنَا									
वह लाए हमारे पास	यहां तक कि	किसी रसूल पर	हम ईमान लाएं	कि न	हम से	अहद किया	कि अल्लाह		
بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّن قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ									
निशानियों के साथ	मुझ से पहले	बहुत से रसूल	अलबत्ता तुम्हारे पास आए	आप कह दें	आग	जिसे खा ले	कुरबानी		
وَبِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٨٣﴾									
183	सच्चे	तुम हो	अगर	तुम ने उन्हें क़त्ल किया	फिर क्यों	तुम कहते हो	और उस के साथ जो		
فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ جَاءُوا									
वह आए	आप से पहले		बहुत से रसूल	झुटलाए गए	तो अलबत्ता	वह झुटलाए आप (स) को	फिर अगर		
بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿١٨٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ									
मौत	चखना	जान	हर	184	रौशन	और किताब	और सहीफे	खुली निशानियों के साथ	
وَأَنَّمَا تُوقَفُونَ أَجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَمَن									
फिर जो	क़ियामत के दिन			तुम्हारे अजर		पूरे पूरे मिलेंगे		और वेशक	
زُحِرَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا									
दुनिया	ज़िन्दगी	और नहीं	पस मुराद को पहुँचा	जन्नत	और दाख़िल किया गया	दोज़ख़	से	दूर किया गया	
إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿١٨٥﴾ لَتُبْلَوْنَ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ									
और अपनी जानें		अपने माल		में	तुम ज़रूर आज़माए जाओगे	185	धोका	सौदा	सिबाए
وَلَتَسْمَعَنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ									
तुम से पहले		किताब दी गई			वह लोग जिन्हें	से	और ज़रूर सुनोगे		
وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَدَّى كَثِيرًا									
बहुत		दुख देने वाली	जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)					और - से	
وَأَن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٨٦﴾									
186	काम (जमा)	हिम्मत	से	यह	तो वेशक	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	और अगर	

अलबत्ता अल्लाह ने उन की बात सुन ली जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह फ़कीर है और हम मालदार हैं। अब हम लिख रखेंगे जो उन्होंने ने कहा और उन का नवियों को नाहक क़त्ल करना, और कहेंगे: चखो जलाने वाला अज़ाब। (181)

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और यह कि अल्लाह बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं। (182)

जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह ने हम से अहद कर रखा है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएं यहां तक कि वह हमारे पास कुरबानी लाए जिसे आग खा ले, आप (स) कह दें अलबत्ता तुम्हारे पास मुझ से पहले बहुत से रसूल आए निशानियों के साथ और उस के साथ भी जो तुम कहते हो, फिर क्यों तुम ने उन्हें क़त्ल किया अगर तुम सच्चे हो, (183)

फिर अगर वह आप को झुटलाए तो अलबत्ता झुटलाए गए हैं आप (स) से पहले बहुत से रसूल जो आए खुली निशानियों के साथ, और सहीफ़े और रौशन किताब (ले कर)। (184)

हर जान को मौत (का ज़ाइका) चखना है, और क़ियामत के दिन तुम्हारे अजर पूरे पूरे मिलेंगे, फिर जो कोई दोज़ख़ से दूर किया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया पस वह मुराद को पहुँचा, और दुनिया की ज़िन्दगी (कुछ) नहीं एक धोके के सौदे के सिवा। (185)

तुम अपने मालों और अपनी जानों में ज़रूर आज़माए जाओगे, और तुम ज़रूर सुनोगे उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और मुश्रिकों से (भी) दुख देने वाली (वातें) बहुत सी, और अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी करो तो वेशक यह बड़े हिम्मत के कामों में से है। (186)

और (याद करो) जब अल्लाह ने अहले किताब से अहद लिया कि तुम उसे लोगों के लिए ज़रूर बयान करना और न उसे छुपाना, उन्होंने ने उसे अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और उस के बदले थोड़ी कीमत हासिल की, तो कितना बुरा है जो वह खरीदते हैं! (187)

आप हरगिज़ न समझें जो लोग खुश होते हैं जो उन्होंने ने किया (अपने किए पर) और चाहते हैं कि उस पर उन की तारीफ़ की जाए जो उन्होंने ने नहीं किया, पस आप (स) उन्हें रिहा शुदा न समझें अज़ाब से, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (188)

और अल्लाह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह हर शै पर क़दिर है। (189)

वेशक पैदाइश में आस्मानों की और ज़मीन की, और रात दिन के आने जाने में अक़ल वालों के लिए निशानियाँ हैं। (190)

जो लोग अल्लाह को खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर याद करते हैं, और ग़ौर करते हैं आस्मानों की और ज़मीन की पैदाइश में, ऐ हमारे रब! तू ने यह बेमक़सद पैदा नहीं किया, तू पाक है, तू बचा ले हमें दोज़ख़ के अज़ाब से। (191)

ऐ हमारे रब! तू ने जिस को दोज़ख़ में दाख़िल किया तो ज़रूर तू ने उस को रुसवा किया, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (192)

ऐ हमारे रब! वेशक हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ़ पुकारता है कि अपने रब पर ईमान ले आओ, सो हम ईमान लाए, ऐ हमारे रब! तो हमें बख़श दे हमारे गुनाह, और हम से हमारी बुराइयाँ दूर कर दे, और हमें नेकों के साथ मौत दे। (193)

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَبُئْسَ مَا يَشْتَرُونَ (187) لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا آتَوْا وَيُحْرِضُونَ أَنَّ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (188) وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (189) إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ (190) الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَمًا وَقَعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا سُبْحَنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (191) رَبَّنَا إِنَّا أَتَيْنَاكَ مِنْ تَدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ (192) رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ (193)						
और जब	अल्लाह ने लिया	अहद	वह लोग जिन्हें	किताब दी गई	उसे ज़रूर बयान कर देना	
लोगों के लिए	और न	छुपाना उसे	तो उन्होंने ने उसे फेंक दिया	पीछे	अपनी पीठ (जमा)	हासिल की उस के बदले
कीमत	थोड़ी	तो कितना बुरा है जो	वह खरीदते हैं	187	आप हरगिज़ न समझें	जो लोग
खुश होते हैं	उस पर जो	उन्होंने ने किया	और वह चाहते हैं	कि	उन की तारीफ़ की जाए	उस पर जो
उन्होंने ने नहीं किया	पस न	समझें आप उन्हें	रिहा शुदा	से	अज़ाब	और उन के लिए
अज़ाब	दर्दनाक	188	और अल्लाह के लिए बादशाहत	आस्मानों	और ज़मीन	और अल्लाह
पर	हर शै	क़दिर	189	वेशक	में	पैदाइश
आना जाना	रात	और दिन	और निशानियाँ हैं	अक़ल वालों के लिए	190	
जो लोग	याद करते हैं अल्लाह को	खड़े	और बैठे	और पर	अपनी करवटें	
और वह ग़ौर करते हैं	पैदाइश में	आस्मानों	और ज़मीन	ऐ हमारे रब	नहीं	
तू ने पैदा किया	यह	बे मक़सद	तू पाक है	तू हमें बचा ले	अज़ाब	आग (दोज़ख़)
ऐ हमारे रब	वेशक तू	जो-जिस	दाख़िल किया	आग (दोज़ख़)	तो ज़रूर	तू ने उस को रुसवा किया
और नहीं	और	ज़ालिमों के लिए				
कोई	मददगार	192	ऐ हमारे रब	वेशक हम ने	सुना	पुकारने वाला
ईमान के लिए	कि ईमान ले आओ	अपने रब पर	सो हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब	तो बख़श दे	हमें
हमारे गुनाह	और दूर कर दे हम से	हमारी बुराइयाँ	और हमें मौत दे	नेकों के साथ	193	

رَبَّنَا وَاتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسْلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۝									
क़ियामत के दिन	और न रुसवा कर हमें	अपने रसूल (जमा)	पर (ज़रीज़ा)	तू ने हम से वादा किया	जो	और हमें दे	ऐ हमारे रब		
إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿١٩٤﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ									
मेहनत	ज़ाया नहीं करता	कि मैं	उन का रब	उन के लिए	पस कुबूल की	194	वादा	नहीं खिलाफ़ करता	वेशक तू
عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ ۖ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ									
बाज़ से (आपस में)		तुम में से बाज़		या औरत		मर्द से		तुम में से	
								कोई मेहनत करने वाला	
فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُودُوا فِي سَبِيلِي									
मेरी राह में		और सताए गए	अपने शहरों		से	और निकाले गए		उन्होंने ने हिज़्रत की	सो लोग
وَقَتَلُوا وَقُتِلُوا لَا كُفْرَانَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَا دُخْلَنَّهُمْ									
और ज़रूर उन्हें दाख़िल करूँगा		उन की बुराइयां		उन से		मैं ज़रूर दूर करूँगा		और मारे गए	और लड़े
جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ									
अल्लाह के पास (तरफ़)		से	सवाब	नहरें		उन के नीचे		से	बहती है
								बागात	
وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّتْكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا									
जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)		चलना फिरना		न धोका दे आप (स) को		195	सवाब	अच्छा	उस के पास
								और अल्लाह	
فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ۖ ثُمَّ مَأْوُهُمْ جَهَنَّمُ									
दोज़ख़		उन का ठिकाना		फिर		थोड़ा		फ़ाइदा	196
								शहर (जमा)	
وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّتٌ تَجْرِي									
बहती है		बागात	उन के लिए	अपना रब		डरते रहे	जो लोग	लेकिन	197
								बिछौना (आराम गाह)	
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خُلْدَيْنِ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا									
और जो	अल्लाह के पास	से	मेहमानी	उस में		हमेशा रहेंगे		नहरें	उन के नीचे
								से	
عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ									
बाज़ वह जो		अहले किताब		से		और वेशक	198	नेक लोगों के लिए	
								बेहतर	
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خُشْعِينَ ۚ									
अल्लाह के आगे	आजिज़ी करते हैं	उन की तरफ़		नाज़िल किया गया		और जो	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो
								अल्लाह पर	
لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ									
उन का अजर		उन के लिए	यही लोग		थोड़ा		मोल	अल्लाह की आयतों का	
								मोल नहीं लेते	
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا									
तुम सब्र करो		ईमान वालो		ऐ		199	हिसाब	तेज़	वेशक अल्लाह
								उन का रब	
وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٢٠٠﴾									
200		सुराद को पहुँचो		ताकि तुम		और डरो अल्लाह से		और जंग की तैयारी करो	
								और मुकाबले में मजबूत रहो	

ऐ हमारे रब! और हमें दे जो तू ने अपने रसूलों के ज़रीए हम से वादा किया और हमें कियामत के दिन रुसवा न कर, वेशक तू नहीं खिलाफ़ करता (अपना) वादा। (194)

पस उन के रब ने (उन की दुआ) कुबूल की कि मैं किसी मेहनत करने वाले की मेहनत ज़ाया नहीं करता तुम में से मर्द हो या औरत, तुम आपस में (एक हो), सो जिन लोगों ने हिज़्रत की और अपने शहरों से निकाले गए, और मेरी राह में सताए गए और लड़े और मारे गए, मैं उन की बुराइयां उन से ज़रूर दूर करदूँगा और उन्हें बागात में दाखिल करूँगा, बहती है जिन के नीचे नहरें, (यह) अल्लाह की तरफ़ से सवाब है, और अल्लाह के पास अच्छा सवाब है। (195)

शहरों में काफ़िरों का चलना फिरना आप (स) को धोका न दे। (196)

(यह) थोड़ा सा फाइदा है, फिर उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और वह कितनी बुरी आराम गाह है? (197)

जो लोग अपने रब से डरते रहे उन के लिए बागात है जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, मेहमानी है अल्लाह के पास से, और जो अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए बेहतर है। (198)

और वेशक अहले किताब में से बाज़ वह है जो ईमान लाए हैं अल्लाह पर और जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो उन की तरफ़ नाज़िल किया गया, अल्लाह के आगे आजिज़ी करते हैं, अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ा मोल नहीं लेते, यही लोग हैं उन के लिए उन के रब के पास अजर है, वेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (199)

ऐ ईमान वालो! तुम सब्र करो, और मुकाबले में मजबूत रहो, और जंग की तैयारी करो, और अल्लाह से डरो, ताकि तुम मुराद को पहुँचो। (200)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान (आदम अ) से पैदा किया और उसी से उस का जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से फैलाए बहुत से मर्द और औरतें, और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर तुम आपस में मांगते हो और (खयाल रखो) रिश्तों का, बेशक अल्लाह है तुम पर निगहवान। (1)

और यतीमों को उन के माल दो और न बदलो नापाक (हराम) को पाक (हलाल) से, और उन के माल न खाओ अपने मालों के साथ (मिला कर), बेशक यह बड़ा गुनाह है। (2)

और अगर तुम को डर हो कि यतीम (के हक) में इन्साफ़ न कर सकोगे तो निकाह कर लो जो औरतें तुम्हें भली लगें, दो दो और तीन तीन और चार चार, फिर अगर तुम्हें अन्देशा हो कि इन्साफ़ न कर सकोगे तो एक ही, या जिस लौडी के तुम मालिक हो, यह उस के करीब है कि न झुक पड़ोगे। (3)

और औरतों को उन के मेहर खुशी से दे दो, फिर अगर वह खुशी से तुम्हें छोड़ दें उस में से कुछ तो उसे मज़ेदार खुशगवार समझ कर खाओ। (4)

और न दो बेज़क़लों को अपने माल जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए सहारा (गुज़रान का ज़रीज़ा) बनाया है और उन्हें उस से खिलाते और पहनाते रहो, और कहो उन से मज़रूफ़ बात। (5)

آيَاتُهَا ١٧٦ ﴿٤﴾ سُورَةُ النَّسَاءِ ﴿٢٤﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢٤							
(4) सूरतुन निसा (औरतें)				आयात 176			
रुकुआत 24							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ							
ए	लोगो	डरो	अपना रब	वह जिस ने	तुम्हें पैदा किया	से	जान
وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا							
एक	और पैदा किया	उस से	जोड़ा उस का	और फैलाए	दोनों से	मर्द (जमा)	बहुत
وَنِسَاءً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ							
और औरतें	और अल्लाह से डरो	वह जो	आपस में मांगते हो	उस से (उस के नाम पर)	और रिश्ते		
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ﴿١﴾ وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ							
बेशक अल्लाह	है	तुम पर	निगहवान	1	और दो	यतीम (जमा)	उन के माल
وَلَا تَبَدَّلُوا الْخَبِيثَ بِالطَّيِّبِ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ							
और न	बदलो	नापाक	पाक से	और न	खाओ	उन के माल	
إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ ۖ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ﴿٢﴾ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا							
तरफ़ (साथ)	अपने माल	बेशक	है	गुनाह	बड़ा	2	और अगर तुम डरो कि न
تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ							
इन्साफ़ कर सकोगे	में	यतीमों	तो निकाह कर लो	जो	पसन्द हो	तुम्हें	
مِّنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَثُلَّةَ وَرُبْعَ ۚ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا							
से	औरतें	दो, दो	और तीन, तीन	और चार, चार	फिर अगर	तुम्हें अन्देशा हो	कि न इन्साफ़ कर सकोगे
فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا تَعُولُوا ﴿٣﴾							
तो एक ही	जो	लौडी जिस के तुम मालिक हो	यह	करीब तर	कि न	झुक पड़ो	3
وَآتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِنْ طِبَّنَ لَكُمْ							
और दे दो	औरतें	उन के मेहर	खुशी से	फिर अगर	खुशी से छोड़ दें	तुम को	
عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَّرِيئًا ﴿٤﴾ وَلَا تُؤْتُوا							
कुछ	उस से	दिल से	तो उसे खाओ	मज़ेदार, खुशगवार	4	और न दो	
السُّفَهَاءَ أَمْوَالِكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَمًا وَارْزُقُوهُمْ							
बेज़क़ल (जमा)	अपने माल	जो	अल्लाह ने बनाया	तुम्हारे लिए	सहारा	और उन्हें खिलाते रहो	
فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ﴿٥﴾							
उस में	और उन्हें पहनाते रहो	और कहो	उन से	वात	मज़रूफ़	5	

وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَإِنْ أَنْتُمْ						
तुम पाओ	फिर अगर	निकाह	वह पहुँचें	जब	यहां तक कि	और आजमाते रहो
مِنْهُمْ زُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَأْكُلُوهَا						
वह खाओ	और न	उन के माल	उन के	तो हवाले कर दो	सलाहियत	उन में
إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا						
गनी	हो	और जो	वह बड़े हो जाएंगे	कि	और जल्दी जल्दी	ज़रूरत से ज़ियादा
فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ ۚ						
दस्तूर के मुताबिक	तो खाए	हाजत मन्द	हो	और जो	वचता रहे	
فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهَدُوا عَلَيْهِمْ ۚ						
उन पर	तो गवाह कर लो	उन के माल	उन के	हवाले करो	फिर जब	
وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۖ (6)						
छोड़ा	उस से जो	हिस्सा	मर्दों के लिए	6	हिसाब लेने वाला	अल्लाह और काफी
الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا						
उस से जो	हिस्सा	और औरतों के लिए	और कराबतदार	माँ बाप		
تَرَكَ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ						
ज़ियादा	या	उस से	थोड़ा	उस में से	और कराबतदार	माँ बाप छोड़ा
نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۖ (7)						
तकसीम के वक़्त	हाज़िर हों	और जब	7	मुक़रर किया हुआ	हिस्सा	
أُولُوا الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينُ فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ						
उस से	तो उन्हें खिला दो (दे दो)	और मिसकीन	और यतीम	रिश्तेदार		
وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۚ وَلِيَخَشَّ الَّذِينَ						
वह लोग	और चाहिए कि डरें	8	अच्छी	बात	उन से	और कहो
لَوْ تَرَكَوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعْفًا خَافُوا						
उन्हें फ़िक्र हो	नातवां	औलाद	अपने पीछे	से	छोड़ जाएं	अगर
عَلَيْهِمْ ۚ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۖ (9)						
9	सीधी	बात	और चाहिए कि कहें	पस चाहिए कि वह डरें अल्लाह से	उन का	
إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا						
उस के सिवा कुछ नहीं	जुल्म से	यतीमों	माल	खाते हैं	जो लोग	वेशक
يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۖ (10)						
10	आग (दोज़ख़)	और अन्नकरीब दाख़िल होंगे	आग	अपने पेट	में	वह भर रहे हैं

और यतीमों को आजमाते रहो यहाँ तक कि वह निकाह की उम्र को पहुँच जाएं, फिर अगर उन में सलाहियत (हुस्ने तदवीर) पाओ तो उन के माल उन के हवाले कर दो, और उन का माल न खाओ ज़रूरत से ज़ियादा और जल्दी (इस ख़याल से) कि वह बड़े हो जाएंगे, और जो गनी हो वह (माले यतीम से) बचता रहे, और जो हाजत मन्द हो वह दस्तूर के मुताबिक खाए, फिर जब उन के माल उन के हवाले करो तो उन पर गवाह कर लो, और अल्लाह काफी है हिसाब लेने वाला। (6)

मर्दों के लिए हिस्सा है उस में से जो माँ बाप ने और कराबतदारों ने छोड़ा, और औरतों के लिए हिस्सा है उस में से जो छोड़ा माँ बाप ने और कराबतदारों ने, खाह थोड़ा हो या ज़ियादा, हिस्सा मुक़रर किया हुआ है। (7)

और जब हाज़िर हों तकसीम के वक़्त रिश्तेदार और यतीम और मिसकीन तो उस में से उन्हें भी (कुछ) दे दो और कहो उन से अच्छी बात। (8)

और चाहिए कि वह लोग डरें कि अगर वह छोड़ जाएं अपने पीछे नातवां औलाद तो उन्हें उन के तअल्लुक से कैसा कुछ डर होता, पस चाहिए कि वह अल्लाह से डरें और चाहिए कि बात कहें सीधी। (9)

वेशक जो लोग जुल्म से यतीमों का माल खाते हैं, कुछ नहीं बस वह अपने पेटों में आग भर रहे हैं, और अन्नकरीब दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। (10)

अल्लाह तुम्हें वसीयत करता है तुम्हारी औलाद (के बारे) में, मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है, फिर अगर औरतें हों दो से ज़ियादा तो उन के लिए (उस में से) दो तिहाई है जो (वारिस ने) छोड़ा, और अगर एक ही हो तो उस के लिए निसफ़ है, और उस के माँ बाप के लिए दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा है उस में से जो (मय्यत ने) छोड़ा अगर उस की औलाद हो। फिर अगर उस की औलाद न हो और माँ बाप ही उस के वारिस हों तो उस की माँ का तिहाई हिस्सा है, फिर अगर उस (मय्यत) के कई भाई बहन हों तो उस की माँ का छटा हिस्सा है उस वसीयत के बाद जो वह कर गया या (बाद अदाए) कर्ज़, तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तो तुम को नहीं मालूम उन में से कौन तुम्हारे लिए नफ़ा (पहुँचाने में) नज़दीक तर है, यह अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ हिस्सा है, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (11)

और तुम्हारे लिए आधा है जो छोड़ मरें तुम्हारी बीवियां अगर उन की कोई औलाद न हो, फिर अगर उन की औलाद हो तो तुम्हारे लिए उस में से जो वह छोड़ें चौथाई हिस्सा है वसीयत के बाद जिस की वह वसीयत कर जाएं या (बाद अदाए) कर्ज़, और उस में से उन के लिए चौथाई हिस्सा है जो तुम छोड़ जाओ अगर न हो तुम्हारी औलाद, फिर अगर तुम्हारी औलाद हो तो जो तुम छोड़ जाओ उस में से उन का आठवां (1/8) हिस्सा है उस वसीयत (के निकालने) के बाद जो तुम वसीयत कर जाओ या (अदाए) कर्ज़, और अगर ऐसे मर्द की मीरास है या ऐसी औरत की जो “कलाला” है (उस का बाप बेटा नहीं) और उस के भाई बहन हों तो उन दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा है, फिर अगर वह एक से ज़ियादा हों तो वह सब शरीक हैं एक तिहाई में उस वसीयत के बाद जो वसीयत कर दी जाए या (बाद अदाए) कर्ज़ (बशर्त यह कि किसी को) नुक्सान न पहुँचाया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, और अल्लाह जानने वाला, हिल्म वाला है। (12)

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ فَإِنْ كُنَّ								
हों	फिर अगर	दो औरतें	हिस्सा	मानिंद (बराबर)	मर्द को	तुम्हारी औलाद	में	तुम्हें वसीयत करता है अल्लाह
نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا								
तो उस के लिए	एक	हो	और अगर	जो छोड़ा (तरका)	दो तिहाई (2/3)	तो उन के लिए	दो	ज़ियादा औरतें
النِّصْفُ وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ								
अगर हो	छोड़ा (तरका)	उस से जो	छटा हिस्सा (1/6)	उन दोनों में से	हर एक के लिए	और माँ बाप के लिए	निसफ़ (1/2)	
لَهُ وَلَدٌ فَإِنْ لَّمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوُهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ								
तिहाई (1/3)	तो उस की माँ का	माँ बाप	और उस के वारिस हों	उस की औलाद	न हो	फिर अगर	उस की औलाद	
فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ الشُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ								
वसीयत	बाद	से	छटा (1/6)	तो उस की माँ का	कई भाई बहन	उस के हों	फिर अगर	
يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ								
नज़दीक तर तुम्हारे लिए	उन में से कौन	तुम को नहीं मालूम	और तुम्हारे बेटे	तुम्हारे बाप	या कर्ज़	उस की वसीयत की हो		
نَفْعًا فَرِيضَةٌ مِنَ اللَّهِ إِنْ اللَّهُ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا (11)								
11	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह	अल्लाह का	हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है	नफ़ा	
وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ								
हो	फिर अगर	उन की कोई औलाद	न हो	अगर	तुम्हारी बीवियां	जो छोड़ मरें	आधा (1/2)	और तुम्हारे लिए
لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمْ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ يُوصِيَنَّ بِهَا								
उस की	वह वसीयत कर जाएं	वसीयत	बाद	उस में से जो वह छोड़ें	चौथाई (1/4)	तो तुम्हारे लिए	उन की औलाद	
أَوْ دَيْنٍ وَلَهُنَّ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَتُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ فَإِنْ								
फिर अगर	तुम्हारी औलाद	न हो	अगर	तुम छोड़ जाओ	उस में से जो	चौथाई (1/4)	और उन के लिए	या कर्ज़
كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكَتُمْ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ								
वसीयत	बाद	से	उस में से जो तुम छोड़ जाओ	आठवां (1/8)	तो उन के लिए	औलाद	हो तुम्हारी	
تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَلَةً أَوْ امْرَأَةً								
या औरत	जिस का बाप बेटा न हो	मीरास हो	ऐसा मर्द	हो	और अगर	या कर्ज़	उस की	तुम वसीयत करो
وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتُ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّدُسُ فَإِنْ كَانُوا أَكْثَرَ								
ज़ियादा	हों	फिर अगर	छटा (1/6)	उन में से हर एक	तो तमाम के लिए	या बहन	भाई	और उस
مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ يُوصَى بِهَا								
जिस की वसीयत की जाए	वसीयत	उस के बाद	तिहाई (1/3) में	शरीक	तो वह सब	उस से (एक से)		
أَوْ دَيْنٍ غَيْرِ مُضَارٍّ وَصِيَّةً مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ (12)								
12	हिल्म वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अल्लाह से	हुक्म	नुक्सान दह न हो	या कर्ज़	

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ						
बागात	वह उसे दाखिल करेगा	और उस का रसूल	अल्लाह की इताअत करे	और जो	अल्लाह की (मुर्करर कर दह) हदें	यह
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ						
कामयाबी	और यह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती है
الْعَظِيمُ (١٣) وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ						
उस की हदें	और बढ़ जाए	और उस का रसूल	अल्लाह	नाफरमानी करे	और जो	13 बड़ी
يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ (١٤) وَالَّتِي						
और जो औरतें	14	ज़लील करने वाला	अज़ाब	और उस के लिए	उस में	हमेशा रहेगा
يَأْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نَسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ						
उन पर	तो गवाह लाओ	तुम्हारी औरतें	से	बदकारी	मुर्तकिब हों	
أَرْبَعَةً مِنْكُمْ فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ						
घरों में	उन्हें बन्द रखो	वह गवाही दें	फिर अगर	अपनों में से	चार	
حَتَّى يَتَوَفَّيَهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا (١٥)						
15	कोई सबील	उन के लिए	कर दे अल्लाह	या	मौत	उन्हें उठा ले
وَالَّذِينَ يَأْتِيَنَهَا مِنْكُمْ فَاذْهُبُوا فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا						
और इसलाह कर लें	फिर अगर वह तौबा करें	तो उन्हें ईज़ा दो	तुम में से	मुर्तकिब हों	और जो दो	
فَاعْرِضُوا عَنْهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَحِيمًا (١٦)						
16	निहायत मेहरवान	तौबा कुबूल करने वाला	है	बेशक अल्लाह	उन का	तो पीछा छोड़ दो
إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ الشُّوَّاءَ بِجَهَالَةٍ						
नादानी से	बुराई	वह करते हैं	उन लोगों के लिए	अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे)	तौबा कुबूल करना	उस के सिवा नहीं
ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ						
तौबा कुबूल करता है अल्लाह	पस यही लोग हैं	जल्दी से	तौबा करते हैं	फिर		
عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا (١٧) وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ						
तौबा	और नहीं	17	हिक्मत वाला	जानने वाला	और है अल्लाह	उन की
لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ حَتَّى إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ						
उन में से किसी को	सामने आ जाए	जब	यहां तक	बुराइयां	वह करते हैं	उन के लिए (उन की)
الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْيُسْرَى وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ						
मर जाते हैं	वह लोग जो	और न	अब	तौबा करता हूँ	कि मैं	कहे मौत
وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا (١٨)						
18	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	हम ने तैयार किया	यही लोग	काफिर और वह

यह अल्लाह की (मुर्करर करदा) हदें हैं, और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करेगा वह उसे बागात में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और यह बड़ी कामयाबी है। (13)

और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफरमानी करेगा और बढ़ जाएगा उस की हदों से तो वह उसे आग में दाखिल करेगा, वह उस में हमेशा रहेंगे, और उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (14)

और तुम्हारी औरतों में से जो बदकारी की मुर्तकिब हों उन पर गवाह लाओ चार अपनों में से, फिर अगर वह गवाही दें तो उन औरतों को घरों में बन्द रखो यहां तक कि मौत उन्हें उठा ले या अल्लाह उन के लिए कोई सबील कर दे (कोई राह निकाले)। (15)

और जो दो मुर्तकिब हों तुम में से तो उन्हें ईज़ा दो, फिर अगर वह तौबा कर लें और अपनी इसलाह कर लें तो उन का पीछा छोड़ दो, बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला निहायत मेहरवान है। (16)

इस के सिवा नहीं कि तौबा कुबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे उन ही लोगों के लिए है जो करते हैं बुराई नादानी से, फिर जल्दी से तौबा कर लेते हैं, पस यही लोग हैं अल्लाह तौबा कुबूल करता है उन की, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (17)

और उन लोगों के लिए तौबा नहीं जो बुराइयां (गुनाह) करते रहते हैं यहां तक कि जब मौत उन में से किसी के सामने आ जाए तो कहे कि मैं अब तौबा करता हूँ और न उन लोगों की जो मर जाते हैं हालते कुफ़ में, यही लोग हैं हम ने तैयार किया है उन के लिए दर्दनाक अज़ाब। (18)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए हलाल नहीं कि तुम वारिस बन जाओ औरतों के ज़बरदस्ती, और न उन्हें रोके रखो कि उन से अपना दिया हुआ कुछ (वापस) ले लो मगर यह कि वह खुली बेहयाई की मुर्तकिब हों, और उन औरतों के साथ दस्तूर के मुताबिक गुज़रान करो, फिर अगर वह तुम्हें नापसन्द हों तो ऐन मुमकिन है कि तुम्हें एक चीज़ नापसन्द हो और अल्लाह रखे उस में बहुत भलाई। (19)

और अगर बदल लेना चाहो एक वीवी की जगह दूसरी वीवी, और तुम ने उन में से किसी एक को ख़ज़ाना दिया है तो उस से कुछ वापस न लो, क्या तुम वह लेते हो बुहतान (लगा कर) और सरीह (खुले) गुनाह से? (20)

और तुम वह कैसे वापस लोगे? और अलबत्ता तुम में से एक दूसरे तक पहुँच चुका (सुहवत कर चुका), और उन्होंने ने तुम से पुख़्ता अहद लिया। (21)

और उन औरतों से निकाह न करो जिन से तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो मगर जो (पहले) गुज़र चुका, बेशक यह बेहयाई और ग़ज़ब की बात थी और बुरा रास्ता (ग़लत तरीक़ा) था। (22)

तुम पर हराम की गई तुम्हारी माँ और तुम्हारी बेटियाँ और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फूफियाँ और तुम्हारी ख़ालाएँ, और भतीजियाँ और बेटियाँ बहन की (भाजियाँ), और तुम्हारी रज़ाई माँ जिन्होंने ने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी दूध शरीक बहनें, और तुम्हारी औरतों की माँ (सास), और तुम्हारी वह बेटियाँ जो तुम्हारी पर्वरिश में हैं तुम्हारी उन वीवियों से जिन से तुम ने सुहवत की, पस अगर तुम ने उन से सुहवत नहीं की तो कुछ गुनाह नहीं है तुम पर, और तुम्हारे उन बेटों की वीवियाँ जो तुम्हारी पुशत से हैं, और यह कि तुम दो बहनों को जमा करो मगर जो पहले गुज़र चुका, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (23)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرِهًا وَلَا							
और न	ज़बरदस्ती	औरतें	कि वारिस बन जाओ	तुम्हारे लिए	हलाल नहीं	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ
تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ							
मुर्तकिब हों	यह कि	मगर	उन को दिया हो	जो	कुछ	कि ले लो	उन्हें रोके रखो
بِفَاحِشَةٍ مُبَيَّنَةٍ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ							
वह नापसन्द हों	फिर अगर	दस्तूर के मुताबिक	और उन से गुज़रान करो	खुली हुई	बेहयाई		
فَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ﴿١٩﴾							
19	बहुत	भलाई	उस में	और रखे अल्लाह	एक चीज़	कि तुम को नापसन्द हो	तो मुमकिन है
وَأِنْ أَرَدْتُمْ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَكَانَ زَوْجٍ وَآتَيْتُمْ إِحْدَهُنَّ قِنْطَارًا							
खज़ाना	उन में से एक को	और तुम ने दिया है	दूसरी वीवी	जगह (बदले)	एक वीवी	बदल लेना	तुम चाहो और अगर
فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا أَتَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُبِينًا ﴿٢٠﴾							
20	सरीह (खुला)	और गुनाह	बुहतान	क्या तुम वह लेते हो	कुछ	उस से	तो न (वापस) लो
وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَى بَعْضُكُمْ إِلَى بَعْضٍ وَأَخَذْنَ مِنْكُمْ							
तुम से	और उन्होंने ने लिया	दूसरे तक	तुम में एक	पहुँच चुका	और अलबत्ता	तुम उसे लोगे	और कैसे
مِيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٢١﴾ وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا							
मगर	औरतें	से	तुम्हारे बाप	जिस से निकाह किया	निकाह करो	और न	21 पुख्ता अहद
مَا قَدْ سَلَفَ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٢٢﴾ حُرِّمَتْ							
हराम की गई	22	रास्ता (तरीक़ा)	और बुरा	और ग़ज़ब की बात	बेहयाई	था	बेशक वह जो गुज़र चुका
عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ							
और भतीजियां	और तुम्हारी ख़ालाएँ	और तुम्हारी फूफियां	और तुम्हारी बहनें	और तुम्हारी बेटियां	तुम्हारी माएँ	तुम पर	
وَبَنَاتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَتُكُمُ مِنَ الرَّضَاعَةِ							
दूध शरीक	से	और तुम्हारी बहनें	तुम्हें दूध पिलाया	वह जिन्होंने ने	और तुम्हारी माएँ	और बहन कि बेटियां	
وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي حُجُورِكُمْ مِنْ نِسَائِكُمُ اللَّاتِي							
जिन से	तुम्हारी वीवियां	से	तुम्हारी पर्वरिश	में	जो कि	और तुम्हारी बेटियां	और तुम्हारी औरतों की माएँ
دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ							
तुम पर	तो नहीं गुनाह	उन से	तुम ने नहीं की सुहवत	पस अगर	उन से	तुम ने सुहवत की	
وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ							
दो बहनों को	तुम जमा करो	और यह कि	तुम्हारी पुश्त	से	जो	तुम्हारे बेटे	और वीवियां
إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٢٣﴾							
23	मेहरबान	बख़्शने वाला	है	बेशक अल्लाह	पहले गुज़र चुका	मगर जो	

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ							
और खावन्द वाली औरतें	से	औरतें	मगर	जो - जिस	मालिक हो जाएं	तुम्हारे दाहने हाथ	
كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَأُحِلَّ لَكُمْ مَا وَرَاءَ ذَلِكَ أَنْ تَبْتَغُوا							
अल्लाह का हुक्म	तुम पर	और हलाल की गई	तुम्हारे लिए	सिवा	उन के	कि	तुम चाहो
بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصِنِينَ غَيْرِ مُسْفِحِينَ ۖ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ							
अपने मालों से	कैदे (निकाह) में लाने को	न	हवसरानी को	पस जो	तुम नफा (लज्जत) हासिल करो	उस से	उन में से
أُجُورَهُنَّ فَرِيضَةً ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرْضَيْتُمْ بِهِ مِنْ بَعْدِ							
और नही	गुनाह	तुम पर	उस में जो	तुम बाहम रज़ामन्द हो जाओ	उस से	उस के बाद	
الْفَرِيضَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا (24) وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ							
मुक़र्रर किया हुआ	वेशक अल्लाह	है	जानने वाला	हिक्मत वाला	24	और जो	न
مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمَنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ							
तुम में से मक़दूर	कि निकाह करे	वीवियां	मोमिन (जमा)	तो-से	जो	तुम्हारे हाथ मालिक हो जाएं	
مِنْ فَتَيَاتِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَيْمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ							
से	तुम्हारी कनीज़ें	मोमिन मुसलमान	और अल्लाह	खूब जानता है	तुम्हारे ईमान को	तुम्हारे बाज़	से
فَانكِحُوهُنَّ بِأَذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ مُحْصَنَاتٌ							
सो उन से निकाह करो	इजाज़त से	उन के मालिक	और उन को दो	उन के मेहर	दस्तूर के मुताबिक़	कैदे (निकाह) में आने वालियां	
غَيْرِ مُسْفِحَاتٍ وَلَا تُتَّخَذُتِ أَحْدَانُ ۚ فَإِذَا أُحْصِنَّ فَإِنْ أَتَيْنَ							
न कि	मस्ती निकालने वालियां	और न	आशनाई करने वालियां	चोरी छुपे	पस जब	निकाह में आजाएं	फिर अगर
بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ ۚ ذَلِكَ							
वेहयाई	तो उन पर	निस्फ़	जो	पर	आज़ाद औरतें	से	(सज़ा) अज़ाब
لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۚ وَأَنْ تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ							
उस के लिए जो	डरा	तक़लीफ़ (ज़िना)	तुम में से	और अगर	तुम सवर करो	बेहतर	तुम्हारे लिए
رَحِيمٌ (25) يُرِيدُ اللَّهُ لِيُبينَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنْنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ							
रहम करने वाला	25	चाहता है अल्लाह	ताकि बयान कर दे	तुम्हारे लिए	और तुम्हें हिदायत दे	तरीके	वह जो कि
وَيُثِّبُ عَلَيْكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ (26) وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ							
और तबज़ुह करे	तुम पर	और अल्लाह	जानने वाला	हिक्मत वाला	26	और अल्लाह	कि
عَلَيْكُمْ ۚ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَنْ تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا (27)							
तुम पर	और चाहते हैं	जो लोग पैरवी करते हैं	खाहिशात	कि	फिर जाओ	फिर जाना	बहुत ज़ियादा
يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيفًا (28)							
चाहता है अल्लाह	कि	हलका कर दे	तुम से	और पैदा किया गया	इन्सान	कमज़ोर	28

और खावन्द वाली औरतें (हराम हैं) मगर (काफ़िरों की औरतें) जिन के मालिक तुम्हारे दाहने हाथ हो जाएं (तुम मालिक हो जाओ), यह तुम पर अल्लाह का हुक्म है, और उन के सिवा सब औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं वशर्त यह कि तुम चाहो अपने मालों से कैदे (निकाह) में लाने को, न कि हवसरानी को, पस तुम में से जो उन से नफा (लज्जत) हासिल करें तो उन को उन के मुक़र्रर किए हुए मेहर दें और तुम पर उस में कुछ गुनाह नहीं जिस पर तुम बाहम रज़ामन्द हो जाओ उस के मुक़र्रर कर लेने के बाद, वेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (24)

और जिस को तुम में से मक़दूर न हो कि वह (आज़ाद) मुसलमान वीवियों से निकाह करे तो जो मुसलमान कनीज़ें तुम्हारे हाथ की मिल्क हों (कब्ज़े में हों), और अल्लाह तुम्हारे ईमान को खूब जानता है, तुम एक दूसरे के (हम ज़िन्स हो), सो उन के मालिक की इजाज़त से उन से निकाह कर लो, और उन को दे दो उन के मेहर दस्तूर के मुताबिक़, कैदे निकाह में आने वालियां न कि मस्ती निकालने वालियां न आशनाई करने वालियां चोरी छुपे, पस जब निकाह में आजाएं फिर अगर वह वेहयाई का काम करें तो उन पर निस्फ़ सज़ा है जो आज़ाद औरतों पर है, यह उस के लिए जो तुम में से डरे (बदकारी की) तक़लीफ़ में पड़ने से, और अगर तुम सवर करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (25)

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए बयान कर दे और तुम्हें हिदायत दे तुम से पहले लोगों के तरीकों की, और तुम पर तबज़ुह करे (तौबा क़बूल करे) और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (26)

और अल्लाह चाहता है कि वह तबज़ुह करे तुम पर, और जो लोग ख़ाहिशात की पैरवी करते हैं वह चाहते हैं कि तुम (राहे हिदायत से) फिर जाओ बहुत ज़ियादा। (27)

अल्लाह चाहता है कि तुम से (बोझ) हलका कर दे, और इन्सान पैदा किया गया है कमज़ोर। (28)

ऐ मोमिनों अपने माल आपस में न खाओ नाहक (तौर पर) मगर यह कि तुम्हारी आपस की खुशी से कोई तिजारत हो, और क़त्ल न करो एक दूसरे को, वेशक अल्लाह तुम पर बहुत मेहरबान है। (29)

और जो शख्स यह करेगा सरकशी (ज़ोर) और जुल्म से, पस अनकरीब हम उस को आग में डाल देंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। (30)

अगर तुम बड़े गुनाहों से बचते रहे जो तुम्हें मना किए गए हैं तो हम तुम से दूर कर देंगे तुम्हारे छोटे गुनाह और हम तुम्हें इज़्ज़त के मुक़ाम में दाख़िल कर देंगे। (31)

और आज़ू न करो (उस की) जो बड़ाई दी अल्लाह ने तुम में से बाज़ को बाज़ पर, मर्दों के लिए हिस्सा है उस से जो उन्होंने ने कमाया, और औरतों के लिए हिस्सा है उस से जो उन्होंने ने कमाया, और अल्लाह से उस का फ़ज़ल मांगो, वेशक अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। (32)

और हम ने हर एक के लिए वारिस मुक़र्रर कर दिए हैं उस (माल) के लिए जो छोड़ मरें वालिदैन् और क़राबतदार, और जिन लोगों से तुम्हारा अ़हद ओ पैमान बन्ध चुका तो उन को उन का हिस्सा दे दो, वेशक अल्लाह हर चीज़ पर ग़वाह (मुत्तला) है। (33)

मर्द औरतों पर हाकिम (निगरान) है इस लिए कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस लिए कि उन्होंने ने अपने माल ख़र्च किए, पस जो नेकोकार हैं (मर्द की) तावे फ़रमान हैं, पीठ पीछे (अ़दम मौज़ूदगी में) हिफ़ाज़त करने वाली हैं अल्लाह की हिफ़ाज़त से। और तुम्हें डर हो जिन औरतों की वद ख़ूई का पस उन को समझाओ और ख़ावगाहों में उन को तन्हा छोड़ दो और उन को मारो, फिर अगर वह तुम्हारा कहा मानें तो उन पर (इलज़ाम की) कोई राह तलाश न करो। वेशक अल्लाह सब से आला (बुलन्द) सब से बड़ा है। (34)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ					
नाहक	आपस में	अपने माल	न खाओ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ
إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ۚ					
अपने नस्फ़ (एक दूसरे)	और न क़त्ल करो	तुम से	आपस की खुशी से	कोई तिजारत	यह कि हो मगर
إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۚ (29) وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا					
और जुल्म से	सरकशी (ज़ोर)	यह	करेगा	और जो	29 बहुत मेहरबान तुम पर है वेशक अल्लाह
فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا ۚ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۚ (30) إِنْ					
अगर	30 आसान	अल्लाह पर	यह	और है	आग उस को डालेंगे पस अनकरीब
تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلَكُمْ					
और हम तुम्हें दाख़िल कर देंगे	तुम्हारे छोटे गुनाह	तुम से	हम दूर कर देंगे	उस से	जो मना किए गए बड़े गुनाह तुम बचते रहो
مُدْخَلًا كَرِيمًا ۚ (31) وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ ۚ					
बाज़	पर	तुम में से बाज़	उस से	जो बड़ाई दी अल्लाह	आज़ू करो और न 31 इज़्ज़त मुक़ाम
لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۚ					
उन्होंने ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	और औरतों के लिए	उन्होंने ने कमाया	उस से जो हिस्सा मर्दों के लिए
وَسَأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۚ (32) وَلِكُلِّ					
और हर एक के लिए	32 जानने वाला	चीज़	हर	है	वेशक अल्लाह उस के फ़ज़ल से और अल्लाह से सवाल करो (मांगो)
جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ					
बन्ध चुका	और वह जो कि	और क़राबतदार	वालिदैन्	छोड़ मरें	उस से जो वारिस हम ने मुक़र्रर किए
أَيْمَانُكُمْ فَاتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۚ (33)					
33 ग़वाह (मुत्तला)	हर चीज़	ऊपर	है	वेशक अल्लाह	उन का हिस्सा तो उन को दे दो तुम्हारा अ़हद
الرِّجَالُ قَوُّمُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَى					
उन में से बाज़ पर	अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	इस लिए कि	औरतें	पर	हाकिम (निगरान) मर्द
بَعْضٍ وَبِمَا أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ۚ فَالْصَّالِحَاتُ قَنِتٌ حَفِظَتْ					
निगहबानी करने वालियां	तावे फ़रमान	पस नेकोकार औरतें	अपने माल	से	उन्होंने ने ख़र्च किए और इस लिए कि बाज़
لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ ۚ وَالَّتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ					
पस उन को समझाओ	उन की वद ख़ूई	तुम डरते हो	और वह जो	अल्लाह	हिफ़ाज़त की उस से जो पीठ पीछे
وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاصْرَبُوهُنَّ ۚ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ					
वह तुम्हारा कहा मानें	फिर अगर	और उन को मारो	ख़ावगाहों में	और उन को तन्हा छोड़ दो	
فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا كَبِيرًا ۚ (34)					
34 सब से बड़ा	सब से आला	है	वेशक अल्लाह	कोई राह	उन पर तो न तलाश करो

وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ									
मर्द का खानदान	से	एक मुन्सिफ	तो मुक़रर करदो	उन के दरमियान	ज़िद (कशमकश)	तुम डरो	और अगर		
وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا إِنْ يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا									
उन दोनों में	अल्लाह	सुवाफ़क़्त कर देगा	सुलह कराना	दोनों चाहेंगे	अगर	औरत का खानदान	से	और एक मुन्सिफ़	
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ﴿٣٥﴾ وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ									
और न शरीक करो उस के साथ	और तुम अल्लाह की इबादत करो	35	बहुत बाख़बर	बड़ा जानने वाला	है	वेशक अल्लाह			
شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ									
और यतीम (जमा)	और कराबतदारों से	अच्छा सुलूक	और माँ बाप से	कुछ-किसी को					
وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ									
अजन्वी	और हमसाया	कराबत वाले	और हमसाया	और मोहताज (जमा)					
وَالصَّاحِبِ بِالْجَنُبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ									
वेशक अल्लाह	तुम्हारी मिल्क (कनीज़-ग़ुलाम)	और जो	और मुसाफ़िर	और पास बैठने वाले (हम मजलिस) से					
لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَلًا فَخُورًا ﴿٣٦﴾ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ									
और हुक्म करते (सिखाते) हैं	बुख़ल करते हैं	जो लोग	36	बड़ मारने वाला	इतराने वाला	हो	जो	दोस्त नहीं रखता	
النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ									
अपना फ़ज़ल	से	अल्लाह ने उन्हें दिया	जो	और छुपाते हैं	बुख़ल	लोग			
وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٣٧﴾ وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ									
खर्च करते हैं	और जो लोग	37	ज़िल्लत वाला	अज़ाब	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार कर रखा है			
أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ									
आख़िरत के दिन पर	और न	अल्लाह पर	ईमान लाते	और नहीं	लोग	दिखावे को	अपने माल		
وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ﴿٣٨﴾ وَمَاذَا									
और क्या	38	साथी	तो बुरा	साथी	उस का	शैतान	हो	और जो-जिस	
عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَانْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ									
अल्लाह	उन्हें दिया	उस से जो	और वह खर्च करते	और यौमे आख़िरत पर	अल्लाह पर	अगर वह ईमान लाते	उन पर		
وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ﴿٣٩﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ وَإِنْ تَكُ									
हो	और अगर	ज़र्रा	बराबर	ज़ुल्म नहीं करता	वेशक अल्लाह	39	खूब जानने वाला	उन को	अल्लाह और है
حَسَنَةً يُضَعِفَهَا وَيُوتِ مِنْ لَّدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾ فَكَيْفَ									
फिर कैसा-क्या	40	बड़ा	सवाब	अपने पास से	और देता है	उस को कई गुना करता है	कोई नेकी		
إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَؤُلَاءِ شَهِيدًا ﴿٤١﴾									
41	गवाह	इन के	पर	आप को	और बुलाएंगे	एक गवाह	हर उम्मत	से	हम बुलाएंगे जब

और अगर तुम डरो उन दोनों के दरमियान ज़िद (कशमकश) से तो मुक़रर कर दो एक मुन्सिफ मर्द के खानदान से और एक मुन्सिफ औरत के खानदान से, अगर वह दोनों सुलह कराना चाहेंगे तो अल्लाह उन दोनों के दरमियान सुवाफ़क़्त कर देगा, वेशक अल्लाह बड़ा जानने वाला बहुत बाख़बर है। (35)

और अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ शरीक न करो किसी को और अच्छा सुलूक करो माँ बाप से और कराबतदारों से और यतीमों और मोहताजों से और कराबत वाले हमसाया से और अजन्वी हमसाया से और पास बैठने वाले (हम मजलिस) से और मुसाफ़िर से और जो तुम्हारी मिल्क हों (कनीज़ गुलाम), वेशक अल्लाह उसे दोस्त नहीं रखता जो इतराने वाला, बड़ मारने वाला हो, (36)

और जो बुख़ल करते हैं और लोगों को बुख़ल सिखाते हैं और वह छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़ल से दिया, और हम ने काफ़िरों के लिए तैयार कर रखा है ज़िल्लत वाला अज़ाब। (37)

और जो लोग अपने माल लोगों के दिखावे को खर्च करते हैं और ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और न आख़िरत के दिन पर, और जिस का शैतान साथी हो तो वह बुरा साथी है। (38)

और उन का क्या (नुक़सान) होता अगर वह ईमान ले आते अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर और उस से खर्च करते जो अल्लाह ने उन्हें दिया, और अल्लाह उन को खूब जानने वाला है। (39)

वेशक अल्लाह ज़र्रा बराबर ज़ुल्म नहीं करता, और अगर कोई नेकी हो तो उसे कई गुना कर देता है और देता है अपने पास से बड़ा सवाब। (40)

फिर क्या (कैफ़ियत होगी) जब हम हर उम्मत से एक गवाह बुलाएंगे और आप (स) को इन पर गवाह बना कर बुलाएंगे। (41)

उस दिन आर्जू करेंगे वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया और रसूल की नाफ़रमानी की, काश! (उन्हें मिट्टी में दबा कर) ज़मीन बराबर कर दी जाए, और वह अल्लाह से न छुपा सकेंगे कोई बात। (42)

ऐ ईमान वाले! तुम नमाज़ के नज़दीक न जाओ जब तुम नशे (की हालत में) हो, यहां तक कि समझने लगे जो (ज़बान से) कहते हो, और न (उस वक़्त जब कि) गुस्ल की हाज़त हो सिवाए हालते सफ़र के, यहां तक कि तुम गुस्ल कर लो, और अगर तुम मरीज़ हो या सफ़र में या तुम में से कोई जाए ज़रूर (बैतुलख़ला) से आए या तुम औरतों के पास गए (हम सुहबत हुए) फिर तुम ने पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मूम करो, मसह कर लो अपने मुँह और हाथों का, वेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़शने वाला है। (43)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया, वह मोल लेते हैं (इख़्तियार करते हैं) गुमराही, और चाहते हैं कि तुम रास्ते से भटक जाओ। (44)

और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है और अल्लाह काफ़ी है हिमायती, और अल्लाह काफ़ी है मददगार। (45)

बाज़ यहूदी लोग कलिमात ओ अलफ़ाज़ को उन की जगह से बदल देते हैं (तहरीफ़ करते हैं) और कहते हैं “हम ने सुना” और “नाफ़रमानी की” (कहते हैं हमारी) सुनो (तुम्हें) न सुनवाया जाए। और राइना (कहते हैं) अपनी ज़बानों को मोड़ कर दीन में ताने की नीयत से, और अगर वह कहते “हम ने सुना और इताअत की” (और कहते) “सुनिए और हम पर नज़र कीजिए” तो यह उन के लिए बेहतर होता और ज़ियादा दुरुस्त होता, लेकिन अल्लाह ने उन के कुफ़ के सबब उन पर लानत की, पस वह ईमान नहीं लाते मगर थोड़े। (46)

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصُوا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا (٤٢) يَأْتِيهَا الَّذِينَ							
उस दिन	आर्जू करेंगे	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया	और नाफ़रमानी की	रसूल	काश बराबर कर दी जाए		
उन पर	ज़मीन	और न	छुपाएंगे	अल्लाह	कोई बात	42	ऐ
أَمِنُوا لَا تَقْرُبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَرَىٰ حَتَّى تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنْبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّى تَغْتَسِلُوا							
ईमान लाए	न नज़दीक जाओ	नमाज़	जब कि तुम	नशे	यहां तक कि	समझने लगे	
जो	तुम कहते हो	और न	गुस्ल की हाज़त में	सिवाए	हालते सफ़र	यहां तक कि	तुम गुस्ल कर लो
और अगर	तुम हो	मरीज़	या	पर-में	सफ़र	या आए	कोई
से	तुम में	कोई	या आए	सफ़र	पर-में	या	तुम में
الْغَايِبِ أَوْ لِمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا							
जाए ज़रूर	या	तुम पास गए	औरतें	फिर तुम ने न पाया	पानी	तो तयम्मूम करो	
صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوْهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ							
मिट्टी	पाक	मसह कर लो	अपने मुँह	और अपने हाथ	वेशक अल्लाह	है	
عَفْوًا غَفُورًا (٤٣) أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ							
माफ़ करने वाला	बख़शने वाला	43	क्या तुम ने नहीं देखा	तरफ़	वह लोग जो	दिया गया	एक हिस्सा
से	किताब						
يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَنْ تَضِلُّوا السَّبِيلَ (٤٤) وَاللَّهُ							
मोल लेते हैं	गुमराही	और वह चाहते हैं	कि	भटक जाओ	रास्ता	44	और अल्लाह
أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَىٰ بِاللَّهِ نَصِيرًا (٤٥)							
खूब जानता है	तुम्हारे दुश्मनों को	और काफ़ी	अल्लाह	हिमायती	और काफ़ी	मददगार	45
مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ							
से (बाज़)	वह लोग जो	यहूदी हो गए	तहरीफ़ करते हैं (बदल देते हैं)	कलिमात	से	उस की जगह	
وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمِعْ غَيْرَ مُسْمِعٍ وَزَاعِنَا							
और कहते हैं	हम ने सुना	और हम ने नाफ़रमानी की	और सुनो	न	सुनवाया जाए	और राइना	
لَيًّا بِالسِّنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا							
मोड़ कर	अपनी ज़बानों को	ताने की नीयत से	दीन में	और अगर	वह	कहते	हम ने सुना
وَأَطَعْنَا وَاسْمِعْ وَأَنْظُرْنَا لَكَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَقْوَمُ							
और हम ने इताअत की	और सुनिए	और हम पर नज़र कीजिए	तो होता	बेहतर	उन के लिए	और ज़ियादा दुरुस्त	
وَلَكِنْ لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا (٤٦)							
और लेकिन	उन पर लानत की	अल्लाह	उन के कुफ़ के सबब	पस ईमान नहीं लाते	मगर	थोड़े	46

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِمَا							
जो	तस्दीक करने वाला	हम ने नाज़िल किया	उस पर जो	ईमान लाओ	किताब दिए गए (अहले किताब)	वह लोग जो	ऐ
مَعَكُمْ مِّن قَبْلِ أَنْ نَطْمِسَ وُجُوهًا فَنَرُدَّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا							
उन की पीठ	पर	फिर उलट दें	चेहरे	हम मिटा दें	कि	इस से पहले	तुम्हारे पास
أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٤٧﴾							
47	होकर (रहने वाला)	अल्लाह का हुक्म	और है	हफ़ते वाले	हम ने लानत की	जैसे	हम उन पर लानत करें या
إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ							
जिस को	उस के सिवा	जो	और बख़्शता है	शरीक ठहराए उस का	कि	नहीं बख़्शता	बेशक अल्लाह
يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ﴿٤٨﴾							
48	बड़ा	गुनाह	पस उस ने बान्धा	अल्लाह का	शरीक ठहराया	और जो-जिस	वह चाहे
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنْفُسَهُمْ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَنْ							
जिसे	पाक करता है	बल्कि अल्लाह	अपने आप को	पाक मुक़द्दस कहते हैं	वह जो कि	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा
يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٤٩﴾ أَنْظِرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ							
अल्लाह पर	बान्धते हैं	कैसा	देखो	49	धागे के बराबर	और उन पर जुल्म न होगा	वह चाहता है
الْكَذِبِ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٠﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ							
वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा	50	सरीह	गुनाह	यही	और काफी है झूट
أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ							
और सरकश (शैतान)	बुत (जमा)	वह मानते हैं	किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया	
وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا							
जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	से	राहे रास्त पर	यह लोग	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहते हैं		
سَبِيلًا ﴿٥١﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَمَنْ يَلْعَنِ							
लानत करे	और जिस पर	उन पर अल्लाह ने लानत की	वह लोग जो	यही लोग	51	राह	
اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ﴿٥٢﴾ أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ							
सलतनत	से	कोई हिस्सा	उन का	क्या	52	कोई मददगार	तो हरगिज़ नहीं अल्लाह
فَإِذَا لَا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ﴿٥٣﴾ أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ							
लोग	वह हसद करते हैं	या	53	तिल बराबर	लोग	न दें	फिर उस वक़्त
عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ فَقَدْ آتَيْنَا							
सो हम ने दिया	अपना फ़ज़ल	से	जो अल्लाह ने उन्हें दिया	पर			
أَلْ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُمْ مُلْكًا عَظِيمًا ﴿٥٤﴾							
54	बड़ा	मुल्क	और उन्हें दिया	और हिक्मत	किताब	आले इब्राहीम (अ)	

ऐ अहले किताब! ईमान लाओ उस पर जो हम ने नाज़िल किया उस की तस्दीक करने वाला जो तुम्हारे पास है उस से पहले कि हम चहरे मिटा डालें (मसख़ कर दें) फिर उन (चहरों) को उलट दें उन की पीठ की तरफ़ या हम उन पर लानत करें जैसे “हफ़ते वालों” पर लानत की, और अल्लाह का हुक्म (पूरा) हो कर रहने वाला है। (47)

बेशक अल्लाह (उस को) नहीं बख़्शता जो उस का शरीक ठहराए, और उस के सिवा जिस को चाहे बख़्श दे, और जिस ने अल्लाह का शरीक ठहराया पस उस ने बड़ा गुनाह (बुहतान) बान्धा। (48)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? वह जो अपने आप को मुक़द्दस कहते हैं, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है मुक़द्दस बनाता है और उन पर खजूर की गुठली के रेशे (धागे) के बराबर भी जुल्म न होगा। (49)

देखो! अल्लाह पर कैसा झूट (बुहतान) बान्धते हैं, और यही सरीह गुनाह काफी है। (50)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया, वह मानते हैं बुतों को और शैतान को, और काफ़िरों को कहते हैं कि यह मोमिनों से ज़ियादा राह (रास्त) पर है। (51)

यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, और जिस पर अल्लाह लानत करे तो हरगिज़ तू उस का कोई मददगार नहीं पाएगा। (52)

क्या उन के पास सलतनत का कोई हिस्सा है? फिर उस वक़्त यह न दें लोगों को तिल बराबर भी। (53)

या लोगों से उस पर हसद करने हैं जो अल्लाह ने उन्हें दिया अपने फ़ज़ल से, सो हम ने दी है आले इब्राहीम (अ) को किताब और हिक्मत और उन्हें दिया है बड़ा मुल्क। (54)

फिर उन में से कोई उस पर ईमान लाया और उन में से कोई रुका (ठटका) रहा, और जहन्नम काफी है भड़कती हुई आग। (55)

जिन लोगों ने हमारी आयतों का कुफ़ किया वेशक उन्हें हम अनकरीब आग में डाल देंगे, जिस वक़्त उन की खालें पक (गल) जाएंगी हम उस के अलावा (दूसरी) बदल देंगे ताकि वह अज़ाब चखें, वेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (56)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, हम अनकरीब उन्हें बागात में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती हैं और उस में रहेंगे हमेशा हमेशा, उन के लिए उस में पाक सुथरी वीवियां हैं, और हम उन्हें घनी छाऊँ (साया) में दाख़िल करेंगे। (57)

वेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें अमानत वालों को पहुँचा दो, और जब तुम लोगों के दरमियान फ़ैसला करने लगे तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो, वेशक अल्लाह तुम्हें अच्छी नसीहत करता है, वेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। (58)

ऐ ईमान वालो! इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल (स) की और उन की जो तुम में से साहिबे हुक्मत हैं, फिर अगर तुम झगड़ पड़ो किसी बात में तो उस को अल्लाह और रसूल (स) की तरफ़ रुजूअ करो अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यह बेहतर है और उस का अन्जाम बहुत अच्छा है। (59)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वह उस पर ईमान ले आए जो आप (स) पर नाज़िल किया गया और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया वह चाहते हैं कि (अपना) मुक़दमा तागूत (सरकश) शैतान के पास ले जाएं हालाँकि उन्हें हुक्म हो चुका है कि वह उस को न मानें और शैतान चाहता है कि उन्हें बहका कर दूर गुमराही (में डाल दे)। (60)

فَمِنْهُمْ مَّنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ								
जहन्नम	और काफी	उस से	रुका रहा	कोई	और उन में से	उस पर	कोई ईमान लाया	फिर उन में से
سَعِيرًا ﴿٥٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كَلَّمَا								
जिस वक़्त	आग	हम उन्हें डालेंगे	अनकरीब	हमारी आयतों का	कुफ़ किया	जो लोग	वेशक	55 भड़कती हुई आग
نَضَبَتْ جُلُودَهُمْ بَدَلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ								
अज़ाब	ताकि वह चखें	उस के अलावा	खालें	हम बदल देंगे	उन की खालें	पक जाएंगी		
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٦﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ								
नेक	और उन्होंने ने अमल किए	ईमान लाए	और वह लोग जो	56	हिकमत वाला	ग़ालिब	है	वेशक अल्लाह
سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا								
हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बागात	अनकरीब हम उन्हें दाख़िल करेंगे	
لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ﴿٥٧﴾ إِنَّ اللَّهَ								
वेशक अल्लाह	57	घनी	छाऊँ	और हम उन्हें दाख़िल करेंगे	पाक सुथरी	बीवियां	उस में	उन के लिए
يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ								
लोग	दरमियान	तुम फैसला करने लगे	और जब	अमानत वाले	तरफ़ (को)	अमानतें	पहुँचा दो	कि तुम्हें हुक्म देता है
أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ								
है	वेशक अल्लाह	इस से	नसीहत करता है तुम्हें	अच्छी	वेशक अल्लाह	इन्साफ़ से	तुम फैसला करो	तो
سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا								
और इताअत करो	इताअत करो अल्लाह की	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	58	देखने वाला	सुनने वाला		
الرَّسُولَ وَأُولَى الْأَمْرِ مِنْكُمْ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ								
तो उस को रुजूअ करो	किसी बात में	तुम झगड़ पड़ो	फिर अगर	तुम में से	और साहिबे हुक्मत	रसूल		
إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ								
और रोज़े आख़िरत	अल्लाह पर	तुम ईमान रखते हो	अगर	और रसूल (स)	अल्लाह की तरफ़			
ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٥٩﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ								
दावा करते हैं	वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा	59	अन्जाम	और बहुत अच्छा	बेहतर	यह
أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ								
वह चाहते हैं	आप (स) से पहले	और जो नाज़िल किया गया	आप (स) की तरफ़	उस पर जो नाज़िल किया गया	ईमान लाए	कि वह		
أَنْ يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا								
वह न मानें	कि	हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका	तागूत (सरकश)	तरफ़ (पास)	मुक़दमा ले जाएं	कि		
بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾								
60	दूर	गुमराही	उन्हें बहका दे	कि	शैतान	और चाहता है	उस को	

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ							
रसूल (स)	और तरफ	जो अल्लाह ने नाज़िल किया	तरफ	आओ	उन्हें	कहा जाता है	और जब
رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ٦١ فَكَيْفَ إِذَا							
जब	फिर कैसी	61	रुक कर	आप से	हटते हैं	मुनाफ़िकीन	आप देखेंगे
أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ							
फिर वह आएँ	आप (स) के पास	उन के हाथ	आगे भेजा	उस के सबब जो	कोई मुसीबत	उन्हें पहुँचे	
يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا أَحْسَنًا وَتَوْفِيقًا ٦٢ أُولَٰئِكَ							
यह लोग	62	और मुवाफ़क़त	भलाई	सिवाए (सिर्फ)	हम ने चाहा	कि	अल्लाह की क़सम खाते हुए
الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ							
और उन को नसीहत करें	उन से	तो आप (स) तगाफ़ुल करें	उन के दिलों में	जो	अल्लाह जानता है	वह जो कि	
وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ٦٣ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ							
कोई रसूल	हम ने भेजा	और नहीं	63	असर कर जाने वाली बात	उन के हक़ में	उन से	और कहें
إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ							
अपनी जानों पर	जब उन्होंने ने जुल्म किया	यह लोग	और अगर	अल्लाह के हुक्म से	ताकि इताअत की जाए	मगर	
جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ							
रसूल	उन के लिए	और मग़फ़िरत चाहता	फिर अल्लाह से बख़्शीश चाहते वह	वह आते आप (स) के पास			
لَوْجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ٦٤ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ							
वह मोमिन न होंगे	पस क़सम है आप के रब की	64	मेहरबान	तौबा कुबूल करने वाला	तो वह ज़रूर पाते अल्लाह को		
حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ							
अपने दिलों में	वह न पाएँ	फिर	उन के दरमियान	झगड़ा उठे	उस में जो	आप को मुनसिफ़ बनाएँ	जब तक
حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ٦٥ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا							
हम लिख देते (हुक्म करते)	और अगर	65	खुशी से	और तसलीम कर लें	आप (स) फैसला करें	उस से जो	कोई तंगी
عَلَيْهِمْ أَنْ أَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَخْرَجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ							
अपने घर	से	या निकल जाओ	अपने आप	क़त्ल करो तुम	कि	उन पर	
مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ							
नसीहत की जाती है	जो	करते	यह लोग	और अगर	उन से	सिवाए चन्द एक	वह यह न करते
بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَشَدَّ ثَبَاتًا ٦٦ وَإِذَا لَا تَأْتِنُهُمْ							
हम उन्हें देते	और उस सूरत में	66	साबित रखने वाला	और ज़ियादा	उन के लिए	बेहतर	अलबत्ता होता उस की
مِّنْ لَّدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ٦٧ وَلَهْدَيْنَهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ٦٨							
68	सीधा	रास्ता	और हम उन्हें हिदायत देते	67	बड़ा (ज़ज़ीम)	अजर	अपने पास से

और जब उन्हें कहा जाता है कि जो अल्लाह ने नाज़िल किया उस की तरफ़ आओ और रसूल (स) की तरफ़ तो आप (स) मुनाफ़िकों को देखेंगे कि वह रुक कर आप (स) से हटते हैं (पहलु तही करते हैं)। (61)

फिर कैसी (नदामत होगी) जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचे उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा फिर वह आप (स) के पास अल्लाह की क़सम खाते हुए आएँ कि हम ने सिर्फ़ भलाई चाही थी और मुवाफ़क़त। (62)

यह लोग हैं कि अल्लाह जानता है जो उन के दिलों में है, तो आप (स) तगाफ़ुल करें उन से। और आप (स) उन को नसीहत करें और उन से उन के हक़ में असर कर जाने वाली बात कहें। (63)

और हम ने नहीं भेजा कोई रसूल मगर इस लिए कि अल्लाह के हुक्म से उस की इताअत की जाए, और यह लोग जब उन्होंने ने अपनी जानों पर जुल्म किया था अगर वह आप (स) के पास आते, फिर अल्लाह से बख़्शीश चाहते और उन के लिए रसूल (स) अल्लाह से मग़फ़िरत चाहते तो वह ज़रूर पाते अल्लाह को तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान। (64)

पस क़सम है आप (स) के रब की वह मोमिन न होंगे जब तक आप (स) को मुनसिफ़ न बनाएँ उस झगड़े में जो उन के दरमियान उठे, फिर वह अपने दिलों में आप (स) के फैसले से कोई तंगी न पाएँ और उस को खुशी से (पूरी तरह) तसलीम कर लें। (65)

और अगर हम उन पर लिख देते (फ़र्ज़ कर देते) कि अपने आप को क़त्ल कर डालो या अपने घर वार (छोड़ कर) निकल जाओ तो उन में से चन्द एक के सिवा वह (क़भी ऐसा) न करते, और अगर यह लोग वह करें जिस की उन्हें नसीहत की जाती है तो यह उन के लिए बेहतर होता और (दीन में) ज़ियादा साबित रखने वाला होता। (66)

और उस सूरत में हम उन्हें अपने पास से बड़ा अजर देते। (67) और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देते। (68)

और जो इताअत करे अल्लाह और रसूल (स) की तो यही लोग हैं उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह तआला ने इन्आम किया (यानी) अंबिया और सिद्दीकीन और शुहदा और सालिहीन (नेक बन्दे), और यह अच्छे साथी हैं। (69)

यह अल्लाह की तरफ़ से फ़ज़ल है, और अल्लाह काफी है जानने वाला। (70)

ऐ ईमान वालो! अपने बचाओ (का सामान, हथियार) ले लो, फिर जुदा जुदा (दस्तों की सूरत में) या सब इकट्ठे हो कर कूच करो। (71)

वेशक तुम में (कोई ऐसा भी है) जो ज़रूर देर लगादेगा, फिर अगर तुम्हें पहुँचे कोई मुसीबत तो कहे कि अल्लाह ने मुझ पर इन्आम किया कि मैं उन के साथ न था। (72)

और तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से कोई फ़ज़ल (नेमत) पहुँचे तो ज़रूर कहेगा, गोया (जैसे) कि न थी तुम्हारे और उस के दरमियान कोई दोस्ती, “ऐ काश! मैं उन के साथ होता तो बड़ी मुराद पाता”। (73)

सो चाहिए कि अल्लाह के रास्ते में लड़ें वह लोग जो दुनिया की ज़िन्दगी बेचते (कुरवान करते) हैं आखिरत के बदले, और जो अल्लाह के रास्ते में लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब आए हम अ़नक़रीब उसे बड़ा अज़र देंगे। (74)

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में नहीं लड़ते कमज़ोर (बेबस) मर्दों और औरतों और बच्चों (की खातिर) जो दुआ कर रहे हैं: ऐ हमारे रब! हमें इस बस्ती से निकाल जिस के रहने वाले ज़ालिम हैं और बनादे हमारे लिए अपने पास से हिमायती और बनादे हमारे लिए अपने पास से मददगार। (75)

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ ٦٩							
और जो	इताअत करे	अल्लाह	और रसूल	तो यही लोग	उन लोगों के साथ	इन्आम किया	
وَحَسَنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ٧٠ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ وَكَفَىٰ							
और अच्छे	यह लोग	साथी	69	यह	फ़ज़ल	अल्लाह से	और काफी
بِاللَّهِ عَلِيمًا ٧١ يَٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوا							
अल्लाह	जानने वाला	70	ऐ	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वालो)	ले लो	अपने बचाओ (हथियार)	फिर निकलो
ثَبَاتٍ أَوْانْفِرُوا جَمِيعًا ٧٢ وَإِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيَبْطِئَنَّ فَإِنْ							
जुदा जुदा	या निकलो (कूच करो)	सब	71	और वेशक	तुम में	वह है जो	ज़रूर देर लगादेगा
أَصَابَتْكُمْ مُّصِيبَةٌ قَالُوا قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْنَا إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ							
तुम्हें पहुँचे	कोई मुसीबत	कहे		वेशक अल्लाह ने इन्आम किया	मुझ पर	जब	मैं न था
شَهِيدًا ٧٣ وَلَٰئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَن لَّمْ تَكُنْ							
हाज़िर- मौजूद	72	और अगर	तुम्हें पहुँचे	कोई फ़ज़ल	अल्लाह से	तो ज़रूर कहेगा	गोया
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يُّلَيْتَنِي كُنْتُ مَعَهُمْ فَأَفُوزَ							
तुम्हारे दरमियान	और उस के दरमियान	कोई दोस्ती	ऐ काश मैं	मैं होता	उन के साथ	तो मुराद पाता	
فَوْزًا عَظِيمًا ٧٤ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ							
मुराद	बड़ी	73	सो चाहिए कि लड़ें	मैं	अल्लाह का रास्ता	वह जो कि	बेचते हैं
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ							
ज़िन्दगी	दुनिया	आखिरत के बदले	और जो	लड़ें	मैं	अल्लाह का रास्ता	
فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ٧٥ وَمَا لَكُمْ							
फिर मारा जाए	या	ग़ालिब आए	अ़नक़रीब	हम उसे देंगे	बड़ा अज़र	74	और क्या
لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ							
तुम नहीं लड़ते	मैं	अल्लाह का रास्ता	और कमज़ोर (बेबस)	से	मर्द (जमा)		
وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا							
और औरतें	और बच्चे	जो	कहते हैं (दुआ)	ऐ हमारे रब	हमें निकाल		
مِنْ هَذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِن							
से	इस	बस्ती	ज़ालिम	उस के रहने वाले	और बनादे	हमारे लिए	से
لَدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِن لَّدُنْكَ نَصِيرًا ٧٥							
अपने पास	(हिमायती) दोस्त	और बनादे	हमारे लिए	से	अपने पास	मददगार	75

٩
٦

الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا						
वह लोग जिन्होंने कुफ़ किया (काफ़िर)	अल्लाह का रास्ता	में	वह लड़ते हैं	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)		
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ						
शैतान	दोस्त (साथी)	सो तुम लड़ो	तागूत (सरकश)	रास्ता	में	वह लड़ते हैं
إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ						
कहा गया	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	76	कमज़ोर (बोदा)	है
لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا						
फिर जब	ज़कात	और अदा करो	नमाज़	और काइम करो	अपने हाथ	रोक लो
كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ						
जैसे अल्लाह का डर	लोग	डरते हैं	उन में से	एक फ़रीक़	जब	लड़ना (जिहाद)
أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ						
लड़ना (जिहाद)	हम पर	तू ने क्यों लिखा	ऐ हमारे रब	और वह कहते हैं	डर	ज़ियादा
لَوْ لَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ						
और आख़िरत	थोड़ा	दुनिया	फ़ाइदा	कह दें	थोड़ी	मुद्दत
خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧٧﴾ أَيْنَ مَا تَكُونُوا						
तुम होगे	जहाँ कहीं	77	धागे बराबर	और न तुम पर जुल्म होगा	परहेज़गार के लिए	बेहतर
يُذَرِّكُمْ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشِيدَةٍ وَإِنْ تُصِبْهُمْ						
उन्हें पहुँचे	और अगर	मज़बूत	बुर्जों में	अगरचे तुम हो	मौत	तुम्हें पा लेगी
حَسَنَةٌ يَّقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ						
कुछ बुराई	उन्हें पहुँचे	और अगर	अल्लाह के पास (तरफ़)	से	यह	वह कहते हैं
يَّقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِنْدِكَ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ فَمَالِ						
तो क्या हुआ	अल्लाह के पास (तरफ़)	से	सब	कह दें	आप (स) की तरफ़ से	यह
هَٰؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ﴿٧٨﴾ مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ						
कोई भलाई	तुझे पहुँचे	जो	78	बात	कि समझें	नहीं लगते
فَمِنَ اللَّهِ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنَ نَفْسِكَ وَأَرْسَلْنَاكَ						
और हम ने तुम्हें भेजा	तो तेरे नफ़्स से	कोई बुराई	तुझे पहुँचे	और जो	सो अल्लाह से	
لِلنَّاسِ رَسُولًا وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿٧٩﴾ مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ						
रसूल (स)	इताअत की	जो-जिस	79	गवाह	अल्लाह	और काफी है
فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِظًا ﴿٨٠﴾						
80	निगहवान	उन पर	हम ने आप (स) को भेजा	तो नहीं	रू गर्दानी की	और जो-जिस

ईमान लाने वाले अल्लाह के रास्ते में लड़ते हैं और काफ़िर लड़ते हैं तागूत (सरकश मुफ़सिद) के रास्ते में, सो तुम शैतान के साथियों से लड़ो, बेशक शैतान की चाल कमज़ोर (बोदा) है! (76)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कहा गया अपने हाथ रोक लो और काइम करो नमाज़ और ज़कात अदा करो, फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ तो उन में से एक फ़रीक़ लोगों से डरता है जैसे अल्लाह का डर हो या उस से भी ज़ियादा डर, और वह कहते हैं ऐ हमारे रब! तू ने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया, हमें और थोड़ी मुद्दत क्यों न मुहलत दी? कह दें, दुनिया का फ़ाइदा थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है परहेज़गार के लिए, और तुम पर जुल्म न होगा धागे बराबर (भी), (77)

तुम जहाँ कहीं होगे तुम्हें मौत पा लेगी अगरचे तुम होगे बुर्जों में मज़बूत, और अगर उन्हें कोई भलाई पहुँचे तो वह कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से है, और अगर उन्हें कुछ बुराई पहुँचे तो कहते हैं कि यह आप (स) की तरफ़ से है। आप (स) कह दें सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है, उस कौम को (उन लोगों को) क्या हो गया है कि यह बात समझते नहीं लगते (बात समझते मज़लूम नहीं होते) (78)

जो तुम्हें कोई भलाई पहुँचे सो वह अल्लाह की तरफ़ से है, और जो तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह तुम्हारे नफ़्स से है, और हम ने तुम्हें लोगों के लिए रसूल बना कर भेजा है, और अल्लाह काफी है गवाह। (79)

जिस ने रसूल की इताअत की पस तहकीक़ उस ने अल्लाह की इताअत की, और जिस ने रू गर्दानी की तो हम ने आप (स) को उन पर निगहवान नहीं भेजा। (80)

वह (मुँह से तो) यह कहते हैं कि हम ने माना, फिर जब बाहर जाते हैं आप (स) के पास से तो उन में से एक गिरोह रात को उस के खिलाफ़ मशवरा करता है जो वह कह चुके, और अल्लाह लिख लेता है जो वह रात को मशवरे करते हैं, आप (स) उन से मुँह फेर लें और अल्लाह पर भरोसा करें, और अल्लाह काफी है कारसाज़। (81)

फिर क्या वह कुरआन पर ग़ौर नहीं करते? और अगर अल्लाह के सिवा किसी और के पास से होता तो उस में ज़रूर बहुत इख़्तिलाफ़ पाते। (82)

और जब उन के पास कोई अमन की ख़बर आती है या ख़ौफ़ की तो उसे मशहूर कर देते हैं और अगर उसे पहुँचाते रसूल की तरफ़ और अपने हाकिमों की तरफ़ तो जो लोग उन में से तहकीक़ कर लिया करते हैं उस को जान लेते। और अगर अल्लाह का फ़ज़ल न होता तुम पर और उस की रहमत (न होती) तो चन्द एक के सिवा तुम शैतान के पीछे लग जाते। (83)

पस आप (स) अल्लाह की राह में लड़ें, आप (स) मुकल्लफ़ नहीं मगर अपनी जान के, और मोमिनों को आमादा करें, क़रीब है कि अल्लाह रोक दे काफ़िरों की जंग (का ज़ोर) और अल्लाह की जंग सख़्त तरीन है और उस की सज़ा सब से सख़्त है। (84)

जो कोई नेक बात में सिफ़ारिश करे उस के लिए उस से हिस्सा होगा, और जो कोई सिफ़ारिश करे बुरी बात में उस को उस का बोझ (हिस्सा) मिलेगा, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (85)

और जब तुम्हें कोई दुआ दे (सलाम करे) तो तुम उस से बेहतर दुआ दो या वही कह दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब करने वाला है। (86)

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह ज़रूर तुम्हें क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा जिस में कोई शक़ नहीं, और कौन ज़ियादा सच्चा है बात में अल्लाह से। (87)

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَرُوا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ							
एक गिरोह	रात को मशवरा करता है	आप (स) के पास	से	बाहर जाते हैं	फिर जब	(हम ने) हुक्म माना	और वह कहते हैं
مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ فَأَعْرِضْ							
मुँह फेर लें	जो वह रात को मशवरे करते हैं	लिख लेता है	और अल्लाह	कहते हैं	उस के खिलाफ़ जो	उन से	
عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا (٨١) أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ							
फिर क्या वह ग़ौर नहीं करते?	81	कारसाज़	अल्लाह	और काफी है	अल्लाह पर	और भरोसा करें	उन से
الْقُرْآنَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا							
इख़्तिलाफ़	उस में	ज़रूर पाते	अल्लाह के सिवा	पास	से	और अगर होता	कुरआन
كَثِيرًا (٨٢) وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ							
उसे	मशहूर कर देते हैं	ख़ौफ़	या	अमन	से (की)	कोई ख़बर	उन के पास आती है
وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَى أُولَى الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ							
जो लोग	तो उस को जान लेते	अपने में से	हाकिम	और तरफ़	रसूल की तरफ़	उसे पहुँचाते	और अगर
يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ							
तुम पीछे लग जाते	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़ल	और अगर न	उन से	सही नतीजा निकाल लिया करते हैं	
الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا (٨٣) فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا							
मगर	मुकल्लफ़ नहीं	अल्लाह की राह	में	पस लड़ें	83	चन्द एक	सिवाए
نَفْسِكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَن يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ							
जिन लोगों ने	जंग	रोक दे	कि	क़रीब है कि अल्लाह	मोमिन (जमा)	और आमादा करें	अपनी ज़ात
كَفَرُوا وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنكِيلًا (٨٤) مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً							
सिफ़ारिश	सिफ़ारिश करे	जो	84	सज़ा देना	और सब से सख़्त	जंग	सख़्त तरीन
حَسَنَةً يَّكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِّنْهَا وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَهُ							
होगा - उस के लिए	बुरी बात	सिफ़ारिश	सिफ़ारिश करे	और जो	उस में से	हिस्सा	होगा - उस के लिए
كُفْلٌ مِّنْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيتًا (٨٥) وَإِذَا حُيِّتُمْ							
तुम्हें दुआ दे	और जब	85	कुदरत रखने वाला	हर चीज़	पर	अल्लाह	और है
بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنِ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى							
पर (का)	है	बेशक अल्लाह	या वही लौटा दो (कह दो)	उस से	बेहतर	तो तुम दुआ दो	किसी दुआ (सलाम) से
كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا (٨٦) اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لِيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَى							
तरफ़	वह तुम्हें ज़रूर इकट्ठा करेगा	उस के सिवा	नहीं इबादत के लाइक़	अल्लाह	86	हिसाब करने वाला	हर चीज़
يَوْمَ الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا (٨٧)							
87	बात में	अल्लाह से	ज़ियादा सच्चा	और कौन?	इस में	नहीं शक	रोज़े क़ियामत

सो तुम्हें क्या हो गया है? मुनाफिकीन के बारे में दो गिरोह (हो रहे हो) और अल्लाह ने उन्हें औन्धा कर दिया उस के सबब जो उन्होंने ने किया, क्या तुम चाहते हो कि उसे राह पर लाओ जिस को अल्लाह ने गुमराह किया? और जिस को अल्लाह गुमराह करे तुम हरगिज़ उस के लिए कोई राह न पाओगे। (88)

वह चाहते हैं काश तुम (भी) काफ़िर हो जाओ जैसे वह काफ़िर हुए तो तुम बराबर हो जाओ। पस तुम उन में से (किसी को) दोस्त न बनाओ यहां तक कि वह हिज़त करें अल्लाह की राह में, फिर अगर वह मुँह मोड़ें तो तुम जहां कहीं उन्हें पाओ पकड़ो और क़तल करो, और उन में से (किसी को) न दोस्त बनाओ न मददगार, (89)

मगर जो लोग तअ़लूक़ रखते हैं (ऐसी) क़ौम से कि तुम्हारे और उन के दरमियान मुआहदा है, या तुम्हारे पास आएँ (उस हाल में) कि तंग हो गए हैं उन के दिल (उस बात से) कि तुम से लड़ें या अपनी क़ौम से लड़ें, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर मुसल्लत कर देता तो वह तुम से ज़रूर लड़ते, फिर अगर वह तुम से किनारा क़श रहें फिर तुम से न लड़ें और तुम्हारी तरफ़ सुलह (का पयाम) डालें, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उन पर (सताने की) कोई राह नहीं रखी। (90)

अब तुम और लोग पाओगे जो चाहते हैं कि वह तुम से (भी) अमन् में रहें और अपनी क़ौम से (भी) अमन् में रहें, जब कभी फ़ित्ना (फ़साद) की तरफ़ बुलाए जाते हैं तो उस में पलट जाते हैं, पस अगर तुम से किनारा क़शी न करें और वह न डालें तुम्हारी तरफ़ (पैग़ामे) सुलह, और (न) रोकें अपने हाथ, तो उन्हें पकड़ो और क़तल करो जहां कहीं तुम उन्हें पाओ, और यही लोग हैं जिन पर हम ने तुम्हें खुली सनद (हज़्जत) दी। (91)

और नहीं किसी मुसलमान के (शाया) कि वह किसी मुसलमान को क़त्ल कर दे मगर ग़लती से। और जो किसी मुसलमान को क़त्ल करे ग़लती से तो वह एक गुलाम आज़ाद करे और खून बहा उस के वारिसों के हवाले कर दे मगर यह कि वह माफ़ कर दें। फिर अगर वह तुम्हारी दुश्मन क़ौम से हो और वह खुद मुसलमान हो तो आज़ाद करे एक मुसलमान गुलाम। और अगर ऐसी क़ौम से हो कि उन के और तुम्हारे दरमियान मुआहदा है तो खून बहा उस के वारिसों के हवाले कर दे और एक मुसलमान गुलाम को आज़ाद कर दे। सो जो न पाए (मयस्सर न हो) तो दो माह लगातार रोज़े रखे, यह तौबा है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (92)

और जो कोई किसी मुसलमान को दानिस्ता क़त्ल कर दे तो उस की सज़ा ज़हननम है, वह हमेशा रहेगा उस में, और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उस की लानत, और उस के लिए (अल्लाह ने) बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है (93)

ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) सफ़र करो तो तहकीक़ कर लिया करो, और जो तुम्हें सलाम करे उसे न कहो कि तू मुसलमान नहीं है, तुम चाहते हो दुनिया की ज़िन्दगी का सामान, फिर अल्लाह के पास बहुत ग़नीमतें हैं, तुम उसी तरह थे इस से पहले तो अल्लाह ने तुम पर एहसान किया, सो तहकीक़ कर लिया करो, बेशक जो तुम करते हो उस से अल्लाह ख़ूब बाख़्बर है। (94)

बग़ैर उज़्र बैठ रहने वाले मोमिनीन और वह बराबर नहीं जो अल्लाह की राह में अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद करने वाले हैं, अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी दरजे में अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर, और हर एक को अल्लाह ने अच्छा वादा दिया है, और अल्लाह ने मुजाहिदों को बैठ रहने वालों पर फ़ज़ीलत दी है अजरे अज़ीम (के एतबार से)। (95)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَاً وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَاً									
ग़लती से	किसी मुसलमान	क़त्ल करे	और जो	मगर ग़लती से	किसी मुसलमान	कि वह क़त्ल करे	किसी मुसलमान के लिए	है	और नहीं
فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهَا إِلَّا أَنْ يَصَّدَّقُوا فَإِنْ									
फिर अगर	वह माफ़ कर दें	यह कि	मगर	उस के वारिसों को	हवाले करना	और खून बहा	मुसलमान	एक गर्दन (गुलाम)	तो आज़ाद करे
كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَإِنْ									
और अगर	मुसलमान	एक गर्दन (गुलाम)	तो आज़ाद कर दे	मुसलमान	और वह	तुम्हारी	दुश्मन क़ौम	से	हो
كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهَا									
उस के वारिसों को	हवाले करना	खून बहा	अहद (मुआहदा)	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	ऐसी क़ौम से	हो		
وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ									
लगातार	दो माह	तो रोज़े रखे	न पाए	सो जो	मुसलमान	एक गर्दन (गुलाम)	और आज़ाद करना		
تَوْبَةً مِنَ اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ٩٢ وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا									
दानिस्ता (क़स्दन)	किसी मुसलमान को	क़त्ल कर दे	और जो कोई	92	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह और है	अल्लाह से	तौबा
فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ									
उस के लिए तैयार कर रखा है	और उस की लानत	उस पर	और अल्लाह का ग़ज़ब	उस में	हमेशा रहेगा	जहननम	तो उस की सज़ा		
عَذَابًا عَظِيمًا ٩٣ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ									
अल्लाह की राह	में	तुम सफ़र करो	जब	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	93	बड़ा	अज़ाब
فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ									
तुम चाहते हो	मुसलमान	तू नहीं है	सलाम	तुम्हारी तरफ़	डाले (करे)	जो कोई	तुम कहो	और न	तो तहकीक़ कर लो
عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ مَغَانِمٌ كَثِيرَةٌ كَذَلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ									
इस से पहले	तुम थे	उसी तरह	बहुत	ग़नीमतें	फिर अल्लाह के पास	दुनिया की ज़िन्दगी	असबाब (सामान)		
فَمَنْ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ٩٤									
94	ख़ूब बाख़्बर	तुम करते हो	उस से जो	है	बेशक अल्लाह	सो तहकीक़ कर लो	तुम पर	तो एहसान किया अल्लाह	
لَا يَسْتَوِي الْقُعْدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولَى الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ									
और मुजाहिद (जमा)	उज़्र वाले (मअज़ूर)	बग़ैर	मोमिनीन	से	बैठ रहने वाले	बराबर नहीं			
فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ									
जिहाद करने वाले	अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	और अपनी जानें	अपने मालों से	अल्लाह की राह	में				
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقُعْدِينَ دَرَجَةً وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ									
अल्लाह ने वादा दिया	और हर एक	दरजे	बैठ रहने वाले	पर	और अपनी जानें	अपने मालों से			
الْحُسْنَىٰ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقُعْدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ٩٥									
95	अजरे अज़ीम	बैठ रहने वाले	पर	मुजाहिदीन	और अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	अच्छा			

१२
१०
११

دَرَجَاتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا					
दरजे	उस की तरफ़ से	और बख्शिश	और रहमत	और है	अल्लाह बख़शने वाला
رَّحِيمًا (٩٦) إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّيْتُمُ الْمَلَائِكَةَ ظَالِمِينَ					
मेहरबान	96	वेशक	वह लोग जो	उन की जान निकालते हैं	फरिश्ते
أَنفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ					
अपनी जानें	वह कहते हैं	किस (हाल) में	तुम थे	वह कहते हैं हम थे	वेबस
فِي الْأَرْضِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضَ اللَّهِ وَاسِعَةً					
में	ज़मीन (मुल्क)	वह कहते हैं	क्या न थी	अल्लाह की ज़मीन	वसीज़
فَتُهَاجِرُوا فِيهَا فَأُولَٰئِكَ مَأْوَهُمْ جَهَنَّمُ وَسَاءَتْ مَصِيرًا (٩٧)					
पस तुम हिज़त कर जाते उस में	सो यह लोग	उन का ठिकाना	जहन्नम	और बुरा है	पहुँचने की जगह
إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ					
मगर	वेबस	से	मर्द (जमा)	और औरतें	और बच्चे
لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا (٩٨)					
नहीं कर सकते	कोई तदवीर	और न	पाते हैं	कोई रास्ता	98
فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُو عَنْهُمْ وَكَانَ اللَّهُ					
सो ऐसे लोग हैं	उम्मीद है कि अल्लाह	कि माफ़ फ़रमाए	उन से (उन को)	और है अल्लाह	
عَفُورًا غَفُورًا (٩٩) وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ					
माफ़ करने वाला	बख़शने वाला	99	और जो	हिज़त करे	में
فِي الْأَرْضِ مُرْغَمًا كَثِيرًا وَسِعَةً وَمَنْ يَخْرُجْ					
में	ज़मीन	बहुत (वाफ़िर) जगह	और कुशादगी	और जो	निकले
مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكُهُ					
से	अपना घर	हिज़त कर के	अल्लाह की तरफ़	और उस का रसूल	फिर
الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا					
मौत	तो साबित हो गया	उस का अजर	अल्लाह पर	और है	अल्लाह बख़शने वाला
رَّحِيمًا (١٠٠) وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ					
मेहरबान	100	और जब	तुम सफ़र करो	ज़मीन में	पस नहीं
جُنَاحٌ أَنْ تَقْضُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمْ					
कोई गुनाह	कि	कसर करो	से	नमाज़	अगर
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِينًا (١٠١)					
वह लोग जिन्होंने ने कूफ़ किया (काफ़िर)	वेशक	काफ़िर (जमा)	हैं	तुम्हारे	दुश्मन खुले

उस की तरफ़ से दरजे हैं और बख्शिश और रहमत है, और अल्लाह है बख़शने वाला मेहरबान। (96)

वेशक वह लोग जिन की फ़रिश्ते जान निकालते हैं (उस हाल में कि वह) जुल्म करते थे अपनी जानों पर, वह (फ़रिश्ते) कहते हैं तुम किस हाल में थे? वह कहते हैं कि हम वेबस थे इस मुल्क में, (फ़रिश्ते) कहते हैं क्या अल्लाह की ज़मीन वसीज़ न थी? पस तुम उस में हिज़त कर जाते, सो यही लोग हैं उन का ठिकाना जहन्नम है और वह पहुँचने (पलटने) की बुरी जगह है। (97)

मगर जो वेबस हैं मर्द और औरतें और बच्चे कि कोई तदवीर नहीं कर सकते और न कोई रास्ता पाते हैं, (98)

सो उम्मीद है कि ऐसे लोगों को अल्लाह माफ़ फ़रमाए, और अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़शने वाला। (99)

और जो अल्लाह के रास्ते में हिज़त करे वह पाएगा ज़मीन में बहुत (वाफ़िर) जगह और कुशादगी, और जो अपने घर से हिज़त कर के निकले अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़, फिर उस को मौत आ पकड़े तो उस का अजर अल्लाह पर साबित हो गया, और अल्लाह बख़शने वाला, मेहरबान है। (100)

और जब तुम मुल्क में सफ़र करो, पस नहीं तुम पर कोई गुनाह कि तुम नमाज़ कसर करो (कम कर लो) अगर तुम को डर हो कि तुम्हें सताएंगे काफ़िर, वेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं। (101)

और जब आप (स) उन में मौजूद हों, फिर उन के लिए नमाज़ काइम करें (नमाज़ पढ़ाने लगे) तो चाहिए कि उन में से एक जमाअत आप के साथ खड़ी हो और चाहिए कि वह अपने हथियार ले लें, फिर जब वह सिज्दा कर लें तो तुम्हारे पीछे हो जाएं, और (अब) आए दूसरी जमाअत (जिस ने) नमाज़ नहीं पढ़ी, पस वह आप (स) के साथ नमाज़ पढ़ें, और चाहिए कि वह लिए रहें अपना बचाओ और अपना अस्लिहा, काफिर चाहते हैं कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने सामान से ग़ाफ़िल हो तो तुम पर यकवारगी झुक पड़ें (हमला कर दें), और तुम पर गुनाह नहीं अगर तुम्हें बारिश के सबब तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो कि तुम अपना अस्लिहा उतार रखो, और अपना बचाओ ले लो, वेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (102)

फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुए, फिर जब तुम मुत्मइन (खातिर जमा) हो जाओ तो (हस्बे दस्तूर) नमाज़ काइम करो, वेशक नमाज़ मोमिनों पर (वक़दे वक़्त) मुक़र्ररा औकात में फ़र्ज़ है। (103)

और कुपफ़ार का पीछा (तज़ाकुब) करने में हिम्मत न हारो, अगर तुम्हें दुख पहुँचता है तो वेशक उन्हें (भी) दुख पहुँचता है जैसे तुम्हें दुख पहुँचता है, और तुम अल्लाह से उम्मीद रखते हो जो वह उम्मीद नहीं रखते, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (104)

वेशक हम ने आप (स) की तरफ़ किताब नाज़िल की सच्ची ताकि आप लोगों के दरमियान फ़ैसला कर दें जो आप को अल्लाह दिखा दे (सुझा दे) और आप न हों दगाबाज़ों के तरफ़दार। (105)

وَإِذَا كُنْتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ							
और जब	आप हों	उन में	उन के लिए	फिर काइम करें	नमाज़	तो चाहिए कि खड़ी हो	एक जमाअत
مِنْهُمْ مَعَكَ وَلِيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا							
उन में से	आप (स) के साथ	और चाहिए कि वह ले लें	अपने हथियार	फिर जब	वह सिज्दा कर लें	तो हो जाएं	
مِنْ وَرَائِكُمْ وَلَتَأْتِ طَآئِفَةٌ أُخْرَى لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا							
तुम्हारे पीछे	और चाहिए कि आए	जमाअत	दूसरी	नमाज़ नहीं पढ़ी	पस वह नमाज़ पढ़ें		
مَعَكَ وَلِيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ وَذَ الَّذِينَ							
आप (स) के साथ	और चाहिए कि लें	अपना बचाओ	और अपना अस्लिहा	चाहते हैं जिन लोगों ने			
كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ							
कुफ़ किया (काफ़िर)	कहीं तुम ग़ाफ़िल हो	से	अपने हथियार (जमा)	और अपने सामान	तो वह झुक पड़ें (हमला करें)		
عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَاحِدَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ							
तुम पर	झुकना	एक बार (यकवारगी)	और नहीं	गुनाह	तुम पर	अगर	तो
أَذَى مِنْ مَّطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَّرْضَى أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ							
तकलीफ़	बारिश से	या तुम हो	बीमार	कि उतार रखो	अपना अस्लिहा		
وَأْخُذُوا حِذْرَكُمْ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا (102)							
और ले लो	अपना बचाओ	वेशक अल्लाह	तैयार किया	काफ़िरों के लिए	अज़ाब	ज़िल्लत वाला	102
فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَمًا وَقُعُودًا							
फिर जब	तुम अदा कर चुको	नमाज़	तो अल्लाह को याद करो	खड़े	और बैठे		
وَعَلَى جُنُوبِكُمْ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ إِنَّ							
और पर	अपनी करवटें	फिर जब	तुम मुत्मइन हो जाओ	तो काइम करो	नमाज़	वेशक	
الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْفُوتًا (103)							
नमाज़	है	पर	मोमिनीन	फ़र्ज़	मुक़र्ररा औकात में		103
وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ إِنْ تَكُونُوا تَأْلُمُونَ فَإِنَّهُمْ							
और हिम्मत न हारो	में	पीछा करने	कौम (कुपफ़ार)	अगर	तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है	तो वेशक उन्हें	
يَأْلُمُونَ كَمَا تَأْلُمُونَ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ							
तकलीफ़ पहुँचती है	जैसे तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है	और तुम उम्मीद रखते हो	से	अल्लाह	जो नहीं	वह उम्मीद रखते	
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا (104) إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ							
और है अल्लाह	जानने वाला	हिक्मत वाला	104	वेशक हम	हम ने नाज़िल किया	आप (स) की तरफ़	किताब
بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَبَكَ اللَّهُ وَلَا تَكُنْ لِلْخَائِبِينَ خَصِيمًا (105)							
दरमियान	लोग	जो दिखाए आप को	अल्लाह	और न	हैं	ख़ियानत करने वालों (दगाबाज़ों) के लिए	झगड़ने वाला (तरफ़दार)
							105

وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٠٦﴾ وَلَا تُجَادِلْ عَنْ							
से	और न झगड़ें	106	मेहरबान	बढ़शने वाला	है	वेशक अल्लाह	और अल्लाह से बख्शिश मांगें
الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنْفُسَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ							
जो लोग	खियानत करते हैं	अपने तई	वेशक अल्लाह	दोस्त नहीं रखता	जो हो		
خَوَانًا آثِمًا ﴿١٠٧﴾ يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ							
खाइन (दगाबाज़)	गुनाहगार	107	हैं	वह छुपते (शर्माते)	से	लोग	और नहीं छुपते (शर्माते)
مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَى							
अल्लाह से	हालांकि वह	उन के साथ	जब रातों को मशवरा करते हैं	जो नहीं	पसन्द करता		
مِنَ الْقَوْلِ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ﴿١٠٨﴾ هَآنَتْكُمْ							
से	बात	और है	अल्लाह	उसे जो	वह करते हैं	अहाता किए (घेरे) हुए	108
هَؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُجَادِلُ							
वह	तुम ने झगड़ा किया	उन (की तरफ़) से	में	दुनियावी ज़िन्दगी	सो - कौन	झगड़ेगा	
اللَّهُ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَمْ مَنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿١٠٩﴾							
अल्लाह	उन (की तरफ़) से	रोज़े कियामत	या	कौन?	होगा	उन पर (उन का)	वकील
وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ							
और जो	काम करे	बुरा काम	या जुल्म करे	अपनी जान	फिर अल्लाह से बख्शिश चाहे	वह पाएगा	
اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١١٠﴾ وَمَنْ يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ							
अल्लाह	बढ़शने वाला	मेहरबान	110	और जो	कमाए	गुनाह	वह कमाता है
عَلَى نَفْسِهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيئَةً							
अपनी जान पर	और है	अल्लाह	जानने वाला	हिक्मत वाला	111	और जो	कमाए
أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدْ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿١١٢﴾							
या गुनाह	फिर	उस की तुहमत लगा दे	किसी बेगुनाह	तो उस ने लादा	भारी बुहतान	और गुनाह	सरीह (खुला)
وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ							
और अगर न	अल्लाह का फ़ज़ल	आप पर	और उस की रहमत	तो क़स्द किया ही था	एक जमाअत	उन में से	
أَنْ يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّونَكَ							
कि आप को बहका दें	और नहीं	बहका रहे हैं	मगर	अपने आप	और नहीं बिगाड़ सकते आप (स) का		
مِنْ شَيْءٍ وَأَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ							
कुछ भी	और अल्लाह ने नाज़िल की	आप (स) पर	किताब	और हिक्मत	और आप को सिखाया		
مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ﴿١١٣﴾							
जो नहीं थे	तुम जानते	और है	अल्लाह का फ़ज़ल	आप (स) पर	बड़ा	113	

और अल्लाह से बख्शिश मांगें, वेशक अल्लाह है बढ़शने वाला मेहरबान। (106)

आप उन लोगों की तरफ से न झगड़ें जो अपने तई खियानत करते हैं, वेशक अल्लाह उसे दोस्त नहीं रखता जो खाइन (दगाबाज़) गुनाहगार हो। (107)

वह लोगों से छुपते (शर्माते) हैं और अल्लाह से नहीं छुपते (शर्माते) हालाकि वह उन के साथ है जब कि वह रातों को मशवरा करते हैं जो बात (अल्लाह को) पसन्द नहीं, और जो वह करते हैं अल्लाह उसे अहाता किए (घेरे) हुए है। (108)

हाँ (सुनो) तुम वह लोग हो तुम ने उन (की तरफ) से दुनियावी ज़िन्दगी में झगड़ा किया, सो कौन अल्लाह से झगड़ेगा रोज़े कियामत उन की तरफ से, या कौन उन का वकील होगा? (109)

और जो कोई करे बुरा काम या अपनी जान पर जुल्म करे, फिर अल्लाह से बख्शिश चाहे तो वह अल्लाह को बढ़शने वाला मेहरबान पाएगा। (110)

और जो कोई गुनाह कमाए तो वह फ़क़त अपनी जान पर (अपने हक़ में) कमाता है। और अल्लाह है जानने वाला, हिकमत वाला। (111)

और जो कोई खता या गुनाह कमाए, फिर उस की तुहमत लगा दे किसी बेगुनाह पर तो उस ने भारी बुहतान और सरीह (खुला) गुनाह लादा। (112)

और अगर अल्लाह का फ़ज़ल और उस की रहमत आप (स) पर न होती तो उन की एक जमाअत ने क़स्द कर ही लिया था कि आप को बहका दें, और वह नहीं बहका रहे हैं मगर अपने आप को, और आप (स) का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, और अल्लाह ने आप (स) पर नाज़िल की किताब और हिकमत, और आप (स) को सिखाया जो आप (स) न जानते थे, और है आप (स) पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल। (113)

उन के अक्सर मशवरों (सरगोशियों) में कोई भलाई नहीं मगर यह कि जो हुकम दे खैरात का या अच्छी बात का या लोगों के दरमियान इस्लाह कराने का, और जो यह करे अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, सो अनक़रीब हम उसे बड़ा सवाब देंगे। (114)

और जो कोई उस के बाद रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करे जब कि उस पर हिदायत ज़ाहिर हो चुकी है, और सब मोमिनों के रास्ते के ख़िलाफ़ चले हम उस के हवाले कर देंगे जो उस ने इख़्तियार किया और हम उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे, और यह पलटने की बुरी जगह है। (115)

वेशक अल्लाह उस को नहीं बख़्शता कि उस का शरीक ठहराया जाए और बख़्श देगा उस के सिवा जिस को चाहे, और जिस ने अल्लाह का शरीक ठहराया, सो वह गुमराह हुआ, गुमराही में बहुत दूर निकल गया। (116)

वह उस (अल्लाह) के सिवा नहीं पुकारते (परस्तिश करते) मगर औरतों को, और नहीं पुकारते मगर सरकश शैतान को, (117)

अल्लाह ने उस पर लानत की। उस (शैतान) ने कहा मैं तेरे बन्दों से अपना हिस्सा ज़रूर लूंगा मुक़र्ररा। (118)

और मैं उन्हें ज़रूर बहकाऊंगा, और ज़रूर उम्मीदें दिलाऊंगा, और उन्हें ज़रूर सिखाऊंगा तो वह ज़रूर चीरेंगे (बुतों की खातिर) जानवरों के कान, और मैं उन्हें सिखाऊंगा तो वह अल्लाह की (बनाई हुई) सूरतें बदलेंगे, और जो बनाए अल्लाह के सिवा शैतान को दोस्त तो वह सहीह नुक़सान में पड़ गया। (119)

वह उन को वादे करता है और उम्मीदें दिलाता है और शैतान उन्हें वादे नहीं करता मगर सिर्फ़ फ़रेब (निरा धोका) (120)

यही लोग हैं जिन का ठिकाना जहन्नम है और वह उस से भागने की जगह न पाएंगे। (121)

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ								
या	खैरात का	हुकम दे	मगर	उन की सरगोशियों	से	अक्सर	में	नहीं कोई भलाई
يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ								
यह	करे	और जो	लोगों के दरमियान	या इस्लाह कराना	अच्छी बात का			
ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُوْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾ وَمَنْ								
और जो	114	बड़ा	सवाब	हम उसे देंगे	सो अनकरीब	अल्लाह की रज़ा	हासिल करना	
وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ								
और हम उसे दाखिल करेंगे	जो उस ने इख़्तियार किया	हम हवाले कर देंगे	मोमिनों का रास्ता	ख़िलाफ़	और चले			
جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ								
कि शरीक ठहराया जाए	नहीं बख़्शता	वेशक अल्लाह	115	पहुँचने (पलटने) की जगह	और बुरी जगह	जहन्नम		
بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۖ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ								
अल्लाह का	शरीक ठहराया	और जिस	वह चाहे	जिस को	उस	सिवा	जो	और बख़्शेगा उस का
فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾ إِنَّ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ								
उस के सिवा	वह नहीं पुकारते	116	दूर	गुमराही	सो गुमराह हुआ			
إِلَّا إِنْثَاءً وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَّرِيدًا ﴿١١٧﴾ لَعَنَهُ اللَّهُ								
अल्लाह ने उस पर लानत की	117	सरकश	शैतान	मगर	पुकारते हैं	और नहीं	मगर औरतें	
وَقَالَ لَا تَخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ﴿١١٨﴾								
118	मुक़र्ररा	हिस्सा	तेरे बन्दे	से	मैं ज़रूर लूँगा	और उस ने कहा		
وَلَا ضَلَالَتَهُمْ وَلَا مَنِيَّتَهُمْ وَلَا أُمُوتَتَهُمْ فَلْيُبَيِّكُنْ أَذَانَ								
कान	तो वह ज़रूर चीरेंगे	और उन्हें हुकम दूँगा	और उन्हें ज़रूर उम्मीदें दिलाऊँगा	और उन्हें ज़रूर बहकाऊँगा				
الْأَنْعَامِ وَلَا أُمُوتَتَهُمْ فَلْيَغْيِرَنَّ خَلْقَ اللَّهِ وَمَنْ يَتَّخِذِ								
पकड़े (बनाए)	और जो	अल्लाह की (बनाई हुई) सूरतें	तो वह ज़रूर बदलेंगे	और उन्हें हुकम दूँगा	जानवर (जमा)			
الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِّنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِينًا ﴿١١٩﴾								
119	सरीह	नुक़सान	तो वह पड़ा नुक़सान में	अल्लाह के सिवा	दोस्त	शैतान		
يَعِدُّهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُّهُمْ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾								
120	सिर्फ़ फ़रेब	मगर	शैतान	और उन्हें वादे नहीं देता	और उन्हें उम्मीद दिलाता है	वह उन को वादा देता है		
أُولَٰئِكَ مَاؤُهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ﴿١٢١﴾								
121	भागने की जगह	उस से	और वह न पाएँगे	जहन्नम	जिन का ठिकाना	यही लोग		

۱۲
ع
۱۲

۱۲
ع
۱۲

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ								
बागात	हम अनकरीब उन्हें दाखिल करेंगे	अच्छे		और उन्होंने ने अमल किए		ईमान लाए	और जो लोग	
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَعَدَ اللَّهُ								
अल्लाह का वादा	हमेशा हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें		उन के नीचे	से	बहती है
حَقًّا وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ﴿١٢٢﴾ لَيْسَ بِأَمَانِيكُمْ								
तुम्हारी आर्जूओं पर	न	122	वात में	अल्लाह	से	सच्चा	और कौन	सच्चा
وَلَا أَمَانِي أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ								
उस की सज़ा पाएगा	बुराई	जो करेगा		अहले किताब		आर्जूएं	और न	
وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ يَعْمَلْ								
करेगा	और जो	123	और न मददगार	कोई दोस्त	अल्लाह के सिवा	अपने लिए	और न पाएगा	
مِنَ الصَّالِحِينَ مَنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْشَى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَئِكَ								
तो ऐसे लोग	मोमिन	वशर्त यह कि वह	या औरत	मर्द	से	अच्छे काम	से	
يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ﴿١٢٤﴾ وَمَنْ أَحْسَنُ								
ज़ियादा बेहतर	और कौन	124	तिल बराबर	उन पर जुल्म होगा	और न	जन्नत	दाखिल होंगे	
دِينًا مِمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ								
दीन	और उस ने पैरवी की	नेकोकार	और वह	अल्लाह के लिए	अपना मुँह	झुका दिया	से-जिस	दीन
إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا ﴿١٢٥﴾ وَلِلَّهِ مَا								
और अल्लाह के लिए जो	125	दोस्त	इब्राहीम (अ)	और अल्लाह ने बनाया		एक का हो कर रहने वाला	इब्राहीम (अ)	
فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُحِيطًا ﴿١٢٦﴾								
126	अहाता किए हुए	चीज़	हर	और है अल्लाह	ज़मीन	में	और जो	आस्मानों में
وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا								
और जो	उन के बारे में	तुम्हें हुक्म देता है	अल्लाह	आप कहें	औरतों के बारे में		और वह आप से हुक्म दरयाफ्त करते हैं	
يُثَبِّتُ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِيمَا يَتَمَى النِّسَاءِ الَّتِي								
वह जिन्हें	औरतें	यतीम	(बारे) में	किताब (कुरआन) में		तुम्हें	सुनाया जाता है	
لَا تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ								
उन को निकाह में ले लो	कि	और नहीं चाहते हो		उन के लिए	जो लिखा गया (मुकर्रर)		तुम उन्हें नहीं देते	
وَالْمُسْتَضَعْفِينَ مِنَ الْوِلْدَانِ وَأَنْ تَقُومُوا لِلْيَتَامَى								
यतीमों के बारे में	काइम रहो	और यह कि	बच्चे	से (बारे में)	और वेबस			
بِالْقِسْطِ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا ﴿١٢٧﴾								
127	उस को जानने वाला	है	तो वेशक अल्लाह	कोई भलाई	और जो तुम करोगे		इन्साफ़ पर	

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए हम अनकरीब उन्हें वागात में दाखिल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती हैं वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और कौन है अल्लाह से ज़ियादा सच्चा वात में? (122)

(अज़ाब ओ सवाब) न तुम्हारी आर्जूओं पर है और न अहले किताब की आर्जूओं पर, जो कोई बुराई करेगा उस की सज़ा पाएगा और अपने लिए नहीं पाएगा अल्लाह के सिवा कोई दोस्त और न मददगार। (123)

और जो अच्छे काम करेगा, मर्द हो या औरत, वशर्त यह कि वह मोमिन हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे, और उन पर तिल बराबर जुल्म न होगा। (124)

और किस का दीन उस से बेहतर? जिस ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और वह नेकोकार भी है, और उस ने एक के हो रहने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की पैरवी की, और अल्लाह ने इब्राहीम (अ) को दोस्त बनाया। (125)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ को अहाता किए हुए है। (126)

आप (स) से औरतों के बारे में हुक्म दर्याफ्त करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें उन के बारे में हुक्म (इजाज़त) देता है, और जो तुम्हें कुरआन मजीद में सुनाया जाता है यतीम औरतों के बारे में, जिन्हें तुम नहीं देते उन का मुक़रर किया हुआ (मेहर) और नहीं चाहते कि उन को निकाह में ले लो, और वेबस बच्चों के बारे में, और यह कि तुम यतीमों के बारे में इन्साफ़ पर काइम रहो, और तुम जो भलाई करोगे तो वेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (127)

और अगर कोई औरत डरे (अन्देशा करे) अपने ख़ाबन्द (की तरफ़) से ज़ियादती या बेरग़बती तो उन दोनों पर गुनाह नहीं कि वह सुलह कर लें आपस में, और सुलह बेहतर है, और तबीज़तों में बुख़ल हाज़िर किया गया है (मौजूद होता ही है), और अगर तुम नेकी करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो तो बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (128)

और हरगिज़ न कर सकोगे अगरचे तुम वोहतेरा चाहो कि औरतों के दरमियान बराबरी रखो, पस न झुक पड़ो बिलकुल (एक ही तरफ़) कि एक को (आध में) लटकती हुई डाल रखो, और अगर तुम इस्लाह करते रहो और परहेज़गारी करो तो बेशक अल्लाह वरुशाने वाला, मेहरबान है। (129)

और अगर दोनों (मियां बीवी) जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को बेनियाज़ कर देगा अपनी कशाइश से, और अल्लाह कशाइश वाला हिक्मत वाला है। (130)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और हम ने ताकीद कर दी है उन लोगों को जिन्हें किताब दी गई तुम से पहले और तुम्हें (भी) कि अल्लाह से डरते रहो, और अगर तुम कुफ़्र करोगे तो बेशक अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह बेनियाज़ है, सब ख़ूबियों वाला। (131)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और काफ़ी है अल्लाह कारसाज़। (132)

अगर (अल्लाह) चाहे कि तुम्हें ले जाए (फ़ना कर दे) ऐ लोगो! और दूसरों को ले आए (ला बसाए), और अल्लाह उस पर क़ादिर है। (133)

जो कोई दुनिया का सवाब चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया और आख़िरत का सवाब है, और अल्लाह सुनने वाला, और देखने वाला है। (134)

وَإِنْ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا						
और अगर	कोई औरत	डरे	अपने ख़ाबन्द से	ज़ियादती	या	बे रग़बती
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ						
तो नहीं गुनाह	उन दोनों पर	कि वह सुलह कर लें	आपस में	सुलह	और सुलह	बेहतर
وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ وَإِنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ						
और हाज़िर किया गया (मौजूद है)	तबीज़तें	बुख़ल	और अगर	तुम नेकी करो	और परहेज़गारी करो	तो बेशक अल्लाह
كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا (128) وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا						
है	जो तुम करते हो	बाख़बर	128	और हरगिज़ न	कर सकोगे	कि बराबरी रखो
بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمِيلِ فَتَدْرُوهَا						
औरतों के दरमियान	अगरचे	वोहतेरा चाहो	पस न झुक पड़ो	बिलकुल झुक जाना	कि एक को डाल रखो	
كَالْمُعَلَّقَةِ وَإِنْ تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا						
जैसे लटकती हुई	और अगर	इस्लाह करते रहो	और परहेज़गारी करो	तो बेशक अल्लाह	है	वरुशाने वाला
رَحِيمًا (129) وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا مِنْ سَعَتِهِ وَكَانَ						
मेहरबान	129	और अगर	दोनों जुदा हो जाएं	अल्लाह बेनियाज़ कर देगा	हर एक को	से अपनी कशाइश से और है
اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا (130) وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ						
अल्लाह	कशाइश वाला	हिक्मत वाला	130	और अल्लाह के लिए जो	में आस्मानों	और जो ज़मीन में
وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ						
और हम ने ताकीद कर दी है	वह लोग	जिन्हें किताब दी गई	से	तुम से पहले	और तुम्हें	
أَنْ اتَّقُوا اللَّهَ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا						
कि डरते रहो अल्लाह से	और अगर	तुम कुफ़्र करोगे	तो बेशक अल्लाह के लिए	जो आस्मानों में	और जो	
فِي الْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا (131) وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ						
ज़मीन में	और है	अल्लाह बेनियाज़	सब ख़ूबियों वाला	131	और अल्लाह के लिए जो	में आस्मानों
وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا (132) إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ						
और जो	ज़मीन में	और काफ़ी	अल्लाह	कारसाज़	132	अगर वह चाहे तुम्हें ले जाए
أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِآخِرِينَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى ذَلِكَ						
ऐ लोगो	और ले आए	दूसरों को	और है अल्लाह	उस पर		
قَدِيرًا (133) مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ						
क़ादिर	133	जो चाहता है	दुनिया का सवाब	तो अल्लाह के पास		
ثَوَابِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا (134)						
सवाब	दुनिया	और आख़िरत	और है अल्लाह	सुनने वाला	देखने वाला	134

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوْمِينَ بِالْقِسْطِ شُهِدَاءَ لِلَّهِ						
गवाही देने वाले अल्लाह के लिए	इन्साफ़ पर	काइम रहने वाले	हो जाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	
وَلَوْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ ۚ إِنَّ يَكُنْ غَنِيًّا						
कोई मालदार	अगर (चाहे) हो	और करावतदार	माँ बाप	या	खुद तुम्हारे ऊपर (खिलाफ़)	अगरचे
أَوْ فَقِيرًا فَاللَّهُ أَوْلَىٰ بِهِمَا ۖ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَنْ تَعْدِلُوا ۚ						
की इन्साफ़ करो	खाहिश	पैरवी करो	सो-न	उन का	खैर खाह	पस अल्लाह
وَأَنْ تَلَوْا أَوْ تُعْرِضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا (135)						
135	बाख़बर	तुम करते हो	जो	है	तो बेशक अल्लाह	या पहलूतही करोगे
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ						
जो उस ने नाज़िल की	और किताब	और उस का रसूल	अल्लाह पर	ईमान लाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ
عَلَىٰ رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ						
अल्लाह का	इन्कार करे	और जो	इस से क़ब्ल	जो उस ने नाज़िल की	और किताब	अपने रसूल पर
وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا						
गुमराही	तो वह भटक गया	और रोज़े आख़िरत	और उस के रसूलों	और उस की किताबों	और उस के फ़रिशतों	
بَعِيدًا (136) إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ						
फिर	फिर काफ़िर हुए	ईमान लाए	फिर	फिर काफ़िर हुए	जो लोग ईमान लाए	बेशक 136
أَزْدَادُوا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيُغْفِرْ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا (137)						
137	राह	और न दिखाएगा	उन्हें	कि बख़्शदे	अल्लाह	नहीं है
بَشَرِ الْمُنْفِقِينَ بَأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا (138) الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ						
पकड़ते हैं (बनाते हैं)	जो लोग	138	दर्दनाक अज़ाब	उन के लिए	कि	मुनाफ़िक (जमा)
الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيْبَتُغُونَ عَنْهُمْ						
उन के पास	क्या ढूँढते हैं?	मोमिनीन	सिवाए (छोड़ कर)	दोस्त	काफ़िर (जमा)	
الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا (139) وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ						
किताब में	तुम पर	उतार चुका	और तहकीक	139	सारी	अल्लाह के लिए
أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا						
तो न बैठो	उस का	मज़ाक उड़ाया जाता है	उस का	इन्कार किया जाता है	अल्लाह की आयतें	जब तुम सुनो
مَعَهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ إِنَّكُمْ إِذَا مَثَلْتُمْ						
उन जैसे	उस सूरत में	यकीनन तुम	उस के सिवा	बात	में	वह मशगूल हों
إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنْفِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا (140)						
140	तमाम	जहन्नम में	और काफ़िर (जमा)	मुनाफ़िक (जमा)	जमा करने वाला	बेशक अल्लाह

ऐ ईमान वालो! हो जाओ इन्साफ़ पर काइम रहने वाले अल्लाह के लिए गवाही देने वाले अगरचे खुद तुम्हारे खिलाफ़ या माँ बाप और करावतदारों (के खिलाफ़) हो, चाहे कोई मालदार हो या मोहताज (बहर हाल) अल्लाह उन का (सब से बड़ कर) खैर खाह है, सो तुम खाहिश (नफ़्स) की पैरवी न करो इन्साफ़ करने में, और अगर तुम (गवाही में) ज़वान दबाओगे या पहलूतही करोगे तो बेशक अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (135)

ऐ ईमान वालो! तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर और उस किताब पर जो उस ने अपने रसूल (स) पर नाज़िल की (कुरआन) और उन किताबों पर जो उस से क़ब्ल नाज़िल की, और जो इन्कार करे अल्लाह का, और उस के फ़रिशतों, उस की किताबों, उस के रसूलों और रोज़े आख़िरत का तो भटक गया दूर की गुमराही में। (136)

बेशक जो लोग ईमान लाए, फिर काफ़िर हुए, फिर ईमान लाए, फिर काफ़िर हुए, फिर कुफ़्र में बढ़ते रहे, अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा और न उन्हें (सीधी) राह दिखाएगा। (137)

मुनाफ़िकों को खुशख़बरी दें कि उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (138)

जो लोग मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वह उन के पास इज़्ज़त ढूँढते हैं? बेशक सारी इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए है। (139)

और तहकीक (अल्लाह) किताब (कुरआन) में तुम पर (यह हुक्म) उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इन्कार किया जाता है और उन का मज़ाक उड़ाया जाता है तो उन के साथ न बैठो यहां तक कि वह मशगूल हों उस के सिवा (किसी और) बात में, यकीनन उस सूरत में तुम उन जैसे होगे, बेशक अल्लाह जमा करने वाला है तमाम मुनाफ़िकों और काफ़िरों को जहन्नम में (एक जगह)। (140)

जो लोग तकते (इन्तिज़ार करते) रहते हैं तुम्हारा, फिर अगर तुम को अल्लाह की तरफ़ से फ़तह हो तो कहते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफ़िरों के लिए हिस्सा हो (फ़तह हो) तो कहते हैं क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं आए थे? और हम ने तुम्हें बचाया था मुसलमानों से। सो अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा, और हरगिज़ न देगा अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानों पर राह (ग़लबा)। (141)

वेशक मुनाफ़िक़ धोका देते हैं अल्लाह को, और वह उन को धोके (का जवाब) देगा, और जब नमाज़ को खड़े हों तो सुस्ती से खड़े हों, वह दिखाते हैं लोगों को और अल्लाह को याद नहीं करते मगर बहुत कम। (142)

उस के दरमियान अधर में लटके हुए हैं न इन की तरफ़ न उन की तरफ़, और जिस को अल्लाह गुमराह करे तू हरगिज़ उस के लिए न पाएगा कोई राह। (143)

ऐ ईमान वालो! काफ़िरों को दोस्त न वानओ मुसलमानों को छोड़ कर, क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने ऊपर अल्लाह का सरीह इल्ज़ाम लो? (144)

वेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से निचले दरजे में होंगे, और तू हरगिज़ उन का कोई मददगार न पाएगा। (145)

मगर जिन लोगों ने तौबा की और (अपनी) इस्लाह कर ली और मज़बूती से अल्लाह (की रस्सी) को पकड़ लिया और अपना दीन अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लिया तो ऐसे लोग मोमिनों के साथ होंगे, और अल्लाह जल्द मोमिनों को बड़ा सबाब देगा। (146)

अगर तुम शुक्र करोगे और ईमान लाओगे तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा? और अल्लाह क़द्रदान, ख़ूब जानने वाला है। (147)

الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا							
कहते हैं	अल्लाह (की तरफ़) से	फ़तह	तुम को	फिर अगर हो	तुम्हें	तकते रहते हैं	जो लोग
أَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَإِنْ كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوا							
कहते हैं	हिस्सा	काफ़िरों के लिए	हो	और अगर	तुम्हारे साथ	क्या हम न थे?	
أَلَمْ نَسْتَحِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعَكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ							
तुम्हारे दरमियान	फ़ैसला करेगा	सो अल्लाह	मोमिनीन	से	और हम ने मना किया था (बचाया था) तुम्हें	तुम पर	क्या हम ग़ालिब नहीं आए थे
يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَلَن يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا (١٤١)							
141	राह	मोमिनों पर	काफ़िरों को	अल्लाह	और हरगिज़ न देगा	क़ियामत के दिन	
إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۖ وَإِذَا قَامُوا							
खड़े हों	और जब	उन्हें धोका देगा	और वह	धोका देते हैं अल्लाह को	वेशक मुनाफ़िक़		
إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالَىٰ ۖ يُرَآؤُنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ							
याद करते	और नहीं	लोग	वह दिखाते हैं	खड़े हों सुस्ती से	नमाज़	तरफ़ (को)	
اللَّهِ إِلَّا قَلِيلًا (١٤٢) ۚ مُذَبِّبِينَ بَيْنَ ذَلِكَ ۚ لَا إِلَىٰ هَؤُلَاءِ وَلَا							
और न	इन की तरफ़	न	उस	दरमियान	अधर में लटके हुए	142	मगर बहुत कम
إِلَىٰ هَؤُلَاءِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا (١٤٣) ۚ يَا أَيُّهَا							
ऐ	143	कोई राह	उस के लिए	तू हरगिज़ न पाएगा	गुमराह करे अल्लाह	और जो-जिस	उन की तरफ़
الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ							
सिवाए	दोस्त	काफ़िर (जमा)	न पकड़ो (न बनाओ)	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)			
الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَتُرِيدُونَ أَن تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا (١٤٤)							
144	सरीह	इल्ज़ाम	तुम पर (अपने ऊपर)	अल्लाह का	कि तुम करो (लो)	क्या तुम चाहते हो	मोमिनीन
إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرَكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَن تَجِدَ							
और हरगिज़ न पाएगा	दोज़ख़	से	सब से नीचे का दरजा	में	मुनाफ़िक़ (जमा)	वेशक	
لَهُمْ نَصِيرًا (١٤٥) ۚ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ							
अल्लाह को	और मज़बूती से पकड़ा	और इस्लाह की	जिन्होंने ने तौबा की	मगर	145	कोई मददगार	उन के लिए
وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَسَوْفَ							
और जल्द	मोमिनों के साथ	तो ऐसे लोग	अल्लाह के लिए	अपना दीन	और ख़ालिस कर लिया		
يُؤْتِ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا (١٤٦) ۚ مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ							
तुम्हारे अज़ाब से	अल्लाह	क्या करेगा	146	बड़ा सबाब	मोमिन (जमा)	देगा अल्लाह	
إِنْ شَكَرْتُمْ وَأَمْنِئْتُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا (١٤٧)							
147	खूब जानने वाला	क़द्रदान	अल्लाह	और है	और ईमान लाओगे	अगर तुम शुक्र करोगे	

١٤

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالشُّوْءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظَلِمَ ط									
जुल्म हुआ हो	जो - जिस	मगर	वात	बुरी	ज़ाहिर करना	अल्लाह	पसन्द नहीं करता		
وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ﴿١٤٨﴾ إِنْ تُبْدُوا خَيْرًا أَوْ تُخْفُوهُ أَوْ تَعْفُوا									
या माफ़ कर दो	या उसे छुपाओ	कोई भलाई	अगर तुम खुल्लम खुल्ला करो	148	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह	और है	
عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا ﴿١٤٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ									
इन्कार करते हैं	जो लोग	वेशक	149	कुदरत वाला	माफ़ करने वाला	है	अल्लाह	तो वेशक	से
بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ									
और उस के रसूल	अल्लाह	दरमियान	फर्क निकालें	कि	और चाहते हैं	और उस के रसूलों	अल्लाह का		
وَيَقُولُونَ نُوْمُنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ									
कि	और वह चाहते हैं	वाज़ को	और नहीं मानते	वाज़ को	हम मानते हैं	और कहते हैं			
يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ﴿١٥٠﴾ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا									
असल	काफ़िर (जमा)	वह	यही लोग	150	एक राह	उस के दरमियान	पकड़ें (निकालें)		
وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٥١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ									
अल्लाह पर	और जो लोग ईमान लाए	151	ज़िल्लत का	अज़ाब	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार किया है			
وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أَجْرُهُمْ ط									
उन के अजर	उन्हें देगा	अनक़रीब	यही लोग	उन में से	किसी के	और फर्क नहीं करते दरमियान	और उस के रसूलों पर		
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٥٢﴾ يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَنْ تُنَزِّلَ									
उतार लाए	कि	अहले किताब	आप (स) से सवाल करते हैं	152	निहायत मेहरबान	बख़शने वाला	अल्लाह	और है	
عَلَيْهِمْ كِتَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىٰ أَكْبَرَ مِنْ ذَلِكَ									
उस से	बड़ा	मूसा (अ)	सो वह सवाल कर चुके हैं	आस्मान	से	किताब	उन पर		
فَقَالُوا أَرِنَا اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الصَّعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ؕ ثُمَّ									
फिर	उन के जुल्म के वाइस	विजली	सो उन्हें आ पकड़ा	अलानिया	अल्लाह	हमें दिखा दे	उन्होंने ने कहा		
اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا									
सो हम ने दरगुज़र किया	निशानियां	उन के पास आई	कि	उस के बाद	बछड़ा (गौशाला)	उन्होंने ने बना लिया			
عَنْ ذَلِكَ ؕ وَآتَيْنَا مُوسَىٰ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿١٥٣﴾ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُم									
उन के ऊपर	और हम ने बुलन्द किया	153	ज़ाहिर (सरीह)	ग़लबा	मूसा (अ)	और हम ने दिया	उस से (उस को)		
الطُّورَ بِمِيثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمْ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا									
और हम ने कहा	सिज्दा करते	दरवाज़ा	तुम दाख़िल हो	उन के लिए (उन से)	और हम ने कहा	उन से अ़हद लेने की गर्ज़ से	तूर		
لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيثَاقًا غَلِيظًا ﴿١٥٤﴾									
154	मज़बूत	अ़हद	उन से	और हम ने लिया	हफ़्ते का दिन	में	न ज़ियादती करो	उन से	

अल्लाह (किसी की) बुरी बात का ज़ाहिर करना पसन्द नहीं करता मगर जिस पर जुल्म हुआ हो, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (148)

अगर तुम कोई भलाई खुल्लम खुल्ला करो या उसे छुपाओ या माफ़ कर दो कोई बुराई तो वेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, कुदरत वाला है। (149)

वेशक जो लोग इन्कार करते हैं अल्लाह का और उस के रसूलों का और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के दरमियान फर्क निकालें, और कहते हैं कि हम वाज़ को मानते हैं और वाज़ को नहीं मानते, और वह चाहते हैं कि कुफ़ और ईमान के दरमियान निकालें एक राह। (150)

यही लोग असल काफिर हैं, और हम ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (151)

और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए और उन में से किसी के दरमियान फर्क नहीं करते यही वह लोग हैं अनक़रीब उन्हें (अल्लाह) उन के अजर देगा, और अल्लाह बख़शने वाला, निहायत मेहरबान है। (152)

अहले किताब आप (स) से सवाल करते हैं कि उन पर आस्मान से किताब उतार लाएं, सो वह सवाल कर चुके हैं मूसा (अ) से उस से भी बड़ा, उन्होंने ने कहा

हमें अल्लाह को अलानिया (खुल्लम खुल्ला) दिखादे, सो उन्हें बिजली ने आ पकड़ा उन के जुल्म के वाइस, फिर उन्होंने ने बछड़े (गौशाला) को (माबूद) बना लिया उस के बाद कि उन के पास निशानियां आगई, उस पर भी हम ने उन से दरगुज़र किया, और हम ने मूसा (अ) को सरीह ग़लबा दिया। (153)

और हम ने उन के ऊपर बुलन्द किया “तूर” पहाड़ उन से अहद लेने की गर्ज़ से, और हम ने उन से कहा दरवाज़े में सिज़्दा करते हुए दाख़िल हो, और हम ने उन से कहा हफ़्ते के दिन में ज़ियादती न करो, और हम ने उन से मज़बूत अहद लिया। (154)

٢١

(उन को सज़ा मिली) बसबव उन के अहद ओ पैमान तोड़ने, और उन के अल्लाह की आयतों का इन्कार करने, और उन के नबियों को नाहक़ क़त्ल करने, और उन के यह कहने (के सबव) कि हमारे दिल पर्दे में (महफूज़) है, बल्कि अल्लाह ने उन पर उन के कुफ़ के सबव मोहर कर दी, सो ईमान नहीं लाते मगर कम। (155)

(और उन को सज़ा मिली) उन के कुफ़ और मरयम (अ) पर बड़ा बुहतान बान्धने के सबव। (156) और उन के यह कहने (के सबव) कि हम ने क़त्ल किया अल्लाह के रसूल ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को, और उन्होंने ने उस को क़त्ल नहीं किया और उन्होंने ने उस को सूली नहीं दी बल्कि उन के लिए (उन जैसी) सूत बना दी गई और वेशक जो लोग उस (वारे) में इख़्तिलाफ़ करते हैं वह अलबत्ता उस वारे में शक में हैं, अटकल की पैरवी के सिवा उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, और उस (अ) को उन्होंने ने यकीनन क़त्ल नहीं किया, (157)

बल्कि अल्लाह ने उस (अ) को अपनी तरफ़ उठा लिया, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (158) और कोई अहले किताब से न रहेगा मगर उस (अ) पर अपनी मौत से पहले ज़रूर ईमान लाएगा, और क़ियामत के दिन वह (अ) उन पर गवाह होंगे। (159)

सो हम ने यहूदियों पर (बहुत सी) पाक चीज़ों जो उन के लिए हलाल थीं हाराम कर दी उन के जुल्म की वजह से और उन के अल्लाह के रास्ते से बहुत रोकने की वजह से, (160) और उन के सूद लेने (की वजह से) हालांकि वह उस से रोक दिए गए थे और (इस वजह से) कि वह खाते थे लोगों के माल नाहक़, और हम ने उन में से काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (161) लेकिन उन में से जो इल्म में पुख़्ता हैं, और जो मोमिन हैं वह उस को मानते हैं जो नाज़िल किया गया आप (स) की तरफ़ और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया, और नमाज़ काइम रखने वाले हैं और अदा करने वाले हैं ज़कात और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने वाले हैं, ऐसे लोगों को हम ज़रूर बड़ा अजर देंगे। (162)

فَبِمَا نَفْسِهِمْ مِّيشَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بَايَتِ اللَّهِ وَقَتْلِهِمُ الْأَنْبِيَاءَ						
नबियों (जमा)	और उन का क़त्ल करना	अल्लाह की आयत	और उन का इन्कार करना	अपना अहद ओ पैमान	उन का तोड़ना	बसबव
بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا غُلْفٌ بَلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ						
उन के कुफ़ के सबव	उन पर	मोहर कर दी अल्लाह ने	बल्कि	पर्दे में	हमारे दिल (जमा)	और उन का कहना
فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝۱۵۵ وَبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَىٰ مَرْيَمَ						
मरयम (अ)	पर	और उन का कहना (बान्धना)	और उन के कुफ़ के सबव	155	कम	मगर
بُهْتَانًا عَظِيمًا ۝۱۵۶ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَىٰ ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ						
रसूल	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)	मसीह (अ)	हम ने क़त्ल किया	हम	और उन का कहना
اللَّهُ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا						
जो लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं	और वेशक	उन के लिए	सूत बना दी गई	और बल्कि	और नहीं सूली दी उस को	और नहीं क़त्ल किया उस को
فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ						
पैरवी	मगर	कोई इल्म	उस का	नहीं उन को	उस से	अलबत्ता शक में
الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۝۱۵۷ بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا						
ग़ालिब	अल्लाह	और है	अपनी तरफ़	अल्लाह	उस को उठा लिया	बल्कि
حَكِيمًا ۝۱۵۸ وَإِنْ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ						
अपनी मौत	पहले	उस पर	ज़रूर ईमान लाएगा	मगर	अहले किताब	से
وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۝۱۵۹ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا						
जो यहूदी हुए (यहूदी)	से	सो जुल्म के सबव	159	गवाह	उन पर	होगा
حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ						
अल्लाह का रास्ता	से	और उन के रोकने की वजह से	उन के लिए	हलाल थी	पाक चीज़ें	उन पर
كَثِيرًا ۝۱۶۰ وَأَخَذَهُمُ الرُّبُوبُ وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ						
लोग	माल (जमा)	और उन का खाना	उस से	हालांकि वह रोक दिए गए थे	सूद	और उन का लेना
بِالْبَاطِلِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝۱۶۱ لَكِنِ						
लेकिन	161	दर्दनाक	अज़ाब	उन में से	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार किया
الرُّسُخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ						
आप की तरफ़	नाज़िल किया गया	जो	वह मानते हैं	और मोमिनीन	उन में से	इल्म में
وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ						
ज़कात	और अदा करने वाले	नमाज़	और काइम रखने वाले	आप (स) से पहले	से	नाज़िल किया गया
وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ۝۱۶۲						
162	बड़ा	अजर	हम ज़रूर देंगे उन्हें	यही लोग	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِنْ بَعْدِهِ							
उस के बाद	और नवियों	नूह (अ)	तरफ़	हम ने वहि भेजी	जैसे	आप (स) की तरफ़	हम ने वहि भेजी वेशक हम
وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ							
और याकूब (अ)	और इसहाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तरफ़	और हम ने वहि भेजी		
وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَنَ							
और सुलैमान (अ)	और हारून (अ)	और यूनस (अ)	और अय्यूब (अ)	और ईसा (अ)	और औलादे याकूब		
وَاتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ﴿١٦٣﴾ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ							
आप (स) पर (आप से)	हम ने उन का अहवाल सुनाया		और ऐसे रसूल (जमा)	163	ज़बूर	दाऊद (अ)	और हम ने दी
مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ							
मूसा (अ)	अल्लाह	और कलाम किया	आप पर (आप को)	हम ने हाल बयान किया	नहीं	और ऐसे रसूल	इस से कब्ल
تَكْلِيمًا ﴿١٦٤﴾ رُسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ							
लोगों के लिए	ताकि न रहे	और डराने वाले	खुशखबरी सुनाने वाले	रसूल (जमा)	164	कलाम करना (खूब)	
عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾							
165	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	रसूलों के बाद	हुज्जत	अल्लाह	पर
لَكِنَّ اللَّهَ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ وَالْمَلَكُ							
और फ़रिश्ते	अपने इल्म के साथ	वह नाज़िल किया	आप (स) की तरफ़	उस ने नाज़िल किया	उस पर जो	गवाही देता है	अल्लाह लैकीन
يَشْهَدُونَ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا							
उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो	वेशक	166	गवाह	अल्लाह	और काफी है	गवाही देते हैं
وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾ إِنَّ							
वेशक	167	दूर	गुमराही	तहकीक़ वह गुमराही में पड़े	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्होंने ने रोका
الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيُغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ							
उन्हें हिदायत दे	और न	उन्हें	कि बख़्शदे	अल्लाह	नहीं है	और जुल्म किया	वह लोग जो
طَرِيقًا ﴿١٦٨﴾ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَكَانَ ذَلِكَ							
यह	और है	हमेशा	उस में	रहेंगे	जहन्नम	रास्ता	168 रास्ता (सीधा)
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٦٩﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ							
हक़ के साथ	रसूल	तुम्हारे पास आया	लोग	ऐ	169	आसान	अल्लाह पर
مِنْ رَبِّكُمْ فَآمِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ ۖ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا							
जो	अल्लाह के लिए	तो वेशक	तुम न मानोगे	और अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	सो ईमान लाओ तुम्हारा रब से
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧٠﴾							
170	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	और ज़मीन	आस्मानों में	

वेशक हम ने आप (स) की तरफ़ वहि भेजी है जैसे हम ने वहि भेजी थी नूह (अ) की तरफ़ और उस के बाद नवियों की तरफ़ और हम ने वहि भेजी इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इसहाक़ (अ), याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ़ और ईसा (अ) अय्यूब (अ) यूनस (अ) हारून (अ) और सुलैमान (अ) (की तरफ़ वहि भेजी) और हम ने दाऊद (अ) को दी ज़बूर। (163)

और ऐसे रसूल (भेजे) हैं जिन के अहवाल हम ने उस से कब्ल आप (स) से बयान किए और ऐसे रसूल (भी भेजे) जिनके अहवाल हम ने आप (स) से बयान नहीं किए, और अल्लाह ने मूसा (अ) से (खूब) कलाम किया (164)

(हम ने भेजे) रसूल खुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले ताकि रसूलों के बाद लोगों को अल्लाह पर कोई हुज्जत न रहे, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (165)

लेकिन अल्लाह उस पर गवाही देता है जो उस ने आप (स) की तरफ़ नाज़िल किया, वह अपने इल्म से नाज़िल किया और फ़रिश्ते (भी) गवाही देते हैं, और गवाह (तो) अल्लाह ही काफी है। (166)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, तहकीक़ वह गुमराही में दूर जा पड़े। (167)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और जुल्म किया, अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा और न उन्हें हिदायत देगा (सीधे) रास्ते की, (168)

मगर जहन्नम का रास्ता, उस में हमेशा रहेंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। (169)

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ रसूल (स) आगया है, सो ईमान ले आओ तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम न मानोगे तो वेशक जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (170)

वेशक हम ने आप (स) की तरफ़ वहि भेजी है जैसे हम ने वहि भेजी थी नूह (अ) की तरफ़ और उस के बाद नवियों की तरफ़ और हम ने वहि भेजी इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इसहाक (अ), याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ़ और ईसा (अ) अय्यूब (अ) यूनस (अ) हारून (अ) और सुलैमान (अ) (की तरफ़ वहि भेजी) और हम ने दाऊद (अ) को दी ज़बूर। (163)

और ऐसे रसूल (भेजे) हैं जिन के अहवाल हम ने उस से कबल आप (स) से बयान किए और ऐसे रसूल (भी भेजे) जिनके अहवाल हम ने आप (स) से बयान नहीं किए, और अल्लाह ने मूसा (अ) से (खूब) कलाम किया (164)

(हम ने भेजे) रसूल खुशखबरी सुनाने वाले और डराने वाले ताकि रसूलों के बाद लोगों को अल्लाह पर कोई हुज्जत न रहे, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (165)

लेकिन अल्लाह उस पर गवाही देता है जो उस ने आप (स) की तरफ़ नाज़िल किया, वह अपने इल्म से नाज़िल किया और फ़रिश्ते (भी) गवाही देते हैं, और गवाह (तो) अल्लाह ही काफी है। (166)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, तहकीक़ वह गुमराही में दूर जा पड़े। (167)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और जुल्म किया, अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा और न उन्हें हिदायत देगा (सीधे) रास्ते की, (168)

मगर जहन्नम का रास्ता, उस में हमेशा रहेंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। (169)

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ रसूल (स) आगया है, सो ईमान ले आओ तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम न मानोगे तो वेशक जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (170)

ऐ अहले किताब! अपने दीन में गुलू न करो (हद से न बढ़ो) और न कहो अल्लाह के बारे में हक के सिवा, इस के सिवा नहीं कि मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम अल्लाह के रसूल हैं और उस का कलिमा, जिस को मरयम की तरफ डाला और उस (की तरफ) से आत्मा है, सो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और न कहो (खुदा) तीन हैं, (उस से) बाज़ रहो, तुम्हारे लिए बेहतर है, इस के सिवा नहीं (वेशक) कि अल्लाह माबूदे वाहिद है और उस से पाक है कि उस की औलाद हो। जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है उस का है, और अल्लाह कारसाज़ काफी है। (171)

मसीह (अ) को हरगिज़ आर (शर्म) नहीं कि वह अल्लाह का बन्दा हो, और न मुक़रिब फ़रिशतों को (आर है) और जो कोई उस (अल्लाह) की बन्दगी से आर और तकब्बुर करे तो वह अ़नक़रीब उन्हें अपने पास जमा करेगा सब को। (172)

फिर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अ़मल किए वह उन्हें उन के अज़र पूरे पूरे देगा और उन्हें ज़ियादा देगा अपने फ़ज़ल से, और जिन लोगों ने (बन्दगी को) आर समझा और तकब्बुर किया तो वह उन्हें अ़ज़ाब देगा, दर्दनाक अ़ज़ाब। और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा न पाएंगे कोई दोस्त और न मदद्गार। (173)

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रौशन दलील आ चुकी और हम ने तुम्हारी तरफ नाज़िल की है वाज़ेह रौशनी। (174)

पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने ने उस को मज़बूती से पकड़ा, वह उन्हें अ़नक़रीब दाख़िल करेगा अपनी रहमत और फ़ज़ल में, और उन्हें अपनी तरफ सीधे रास्ते की हिदायत देगा। (175)

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ											
पर (बारे में) अल्लाह		और न कहो		अपने दीन में		गुलू न करो		ऐ अहले किताब			
إِلَّا الْحَقُّ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ											
और उस का कलिमा		अल्लाह	रसूल	इब्ने मरयम (अ)		ईसा	मसीह	इस के सिवा नहीं	हक़		सिवाए
الْقَهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَلَا											
और न	और उस के रसूल	अल्लाह पर	सो ईमान लाओ		उस से	और रूह	मरयम (अ)		तरफ़	उस को डाला	
تَقُولُوا ثَلَاثَةً انْتَهُوا خَيْرًا لَّكُمْ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهُ وَاحِدٌ											
माबूदे वाहिद		अल्लाह	इसके सिवा नहीं	तुम्हारे लिए	बेहतर	बाज़ रहो		तीन		कहो	
سُبْحَنَهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا											
और जो	आस्मानों में			जो	उस का	औलाद	उस की	हो	कि	वह पाक है	
فِي الْأَرْضِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿١٧١﴾ لَنْ يَسْتَنْكِفَ الْمَسِيحُ أَنْ											
कि	मसीह (अ)		हरगिज़ आर नहीं		171	कारसाज़	अल्लाह	और काफी है		ज़मीन में	
يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ وَمَنْ يَسْتَنْكِفَ											
आर करे		और जो		मुकर्रब (जमा)		फ़रिश्ते		और न	अल्लाह का	बन्दा	हो
عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ جَمِيعًا ﴿١٧٢﴾ فَمَا											
फिर जो	172	सब	अपने पास	तो अ़नक़रीब उन्हें जमा करेगा		और तकब्बुर करे		उस की इबादत		से	
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ											
उन के अज़र		उन्हें पूरा देगा		नेक		ईमान लाए और उन्होंने ने अ़मल किए		लोग			
وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنْكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا											
और उन्होंने ने तकब्बुर किया		उन्होंने ने आर समझा		वह लोग जो		और फिर	अपना फ़ज़ल	से	और उन्हें ज़ियादा देगा		
فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ											
अल्लाह के सिवा		से (के)	अपने लिए	और वह न पाएंगे		दर्दनाक		अज़ाब		तो उन्हें अज़ाब देगा	
وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧٣﴾ يَأْتِيهَا النَّاسُ قَدْ جَاءُكُمْ بُرْهَانٌ											
रौशन दलील		तुम्हारे पास आ चुकी		ऐ लोगो!			173	मदद्गार		और न	दोस्त
مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا ﴿١٧٤﴾ فَمَا الَّذِينَ آمَنُوا											
जो लोग ईमान लाए		पस	174	वाज़ेह	रौशनी	तुम्हारी तरफ़	और हम ने नाज़िल किया		तुम्हारा रब		से
بِاللَّهِ وَاعْتَصِمُوا بِهِ فَيَدْخُلَهُمْ فِي رَحْمَةٍ											
रहमत में		वह उन्हें अ़नक़रीब दाख़िल करेगा				उस को		और मज़बूत पकड़ा		अल्लाह पर	
مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿١٧٥﴾											
175	सीधा		रास्ता		अपनी तरफ़	और उन्हें हिदायत देगा		और फ़ज़ल		उस से (अपनी)	

١٧٣
ع

يَسْتَفْثُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ إِنْ امْرُؤًا هَلَكَ									
मर जाए	कोई मर्द	अगर	कलाला (के बारे) में	तुम्हें हुक्म बताता है	अल्लाह	कह दें	आप से हुक्म दरयापत करते हैं		
لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتُ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا									
उस का वारिस होगा	और वह	जो उस ने छोड़ा (तर्का)	निसफ़ (1/2)	तो उस के लिए	एक बहन	और उस की हो	उस की कोई औलाद	न हो	
إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثُ مِمَّا									
उस से जो	दो तिहाई (2/3)	तो उन के लिए	दो बहनें	हों	फिर अगर	कोई औलाद	उस की	न हो	अगर
تَرَكَ وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلَّذَكَرِ مِثْلُ حَظِّ									
हिस्सा	बराबर	तो मर्द के लिए	और कुछ औरतें	कुछ मर्द	भाई बहन	हों	और अगर	उस ने छोड़ा (तर्का)	
الْأُنثَيْنِ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٦﴾									
176	जानने वाला	चीज़	हर	और अल्लाह	ताकि भटक न जाओ	तुम्हारे लिए	अल्लाह	खोल कर बयान करता है	दो औरत
آيَاتُهَا ١٢٠ ﴿٥﴾ سُورَةُ الْمَائِدَةِ ﴿١٧٦﴾ زُكُوعَاتُهَا ١٦									
रुकुआत 16			(5) सूरतुल माइदा खान				आयात 120		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيمَةُ									
चौपाए	हलाल किए गए तुम्हारे लिए	अहद-कौल		पूरा करो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)		ऐ		
الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ غَيْرِ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ إِنَّ اللَّهَ									
वेशक अल्लाह	एहराम में हो	जब कि तुम	हलाल जाने हुए शिकार	मगर	पढ़े जाएंगे (सुनाए जाएंगे) तुम्हें	जो	सिवाए	मवेशी	
يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ﴿١﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا									
और न	अल्लाह की निशानियां	हलाल न समझो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)		ऐ	1	जो चाहे	हुक्म करता है	
الشَّهْرِ الْحَرَامِ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِينَ الْبَيْتِ الْحَرَامِ									
एहताराम वाला घर (खाने कअवा)	कसद करने वाले (आने वाले)	और न	गले में पट्टा डाले हुए	और न	नियाजे कअवा	और न	महीने अदब वाले		
يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا									
तो शिकार कर लो	एहराम खोल दो	और जब	और खुशनुदी		अपने रब से	फज़ल	वह चाहते हैं		
وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَا نَقَوْمٍ أَنْ صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ									
मसजिद हराम (खाने कअवा)		से	तुम को रोकती थी	जो	कौम	दुश्मनी	तुम्हारे लिए बाइस हो	और न	
أَنْ تَعْتَدُوا وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ									
गुनाह	पर (में)	और एक दूसरे की मदद न करो		और तक्रवा (परहेज़गारी)	नेकी पर (में)	और एक दूसरे की मदद करो	कि तुम ज़ियादती करो		
وَالْعُدْوَانِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢﴾									
2	अज़ाब	सख़्त		वेशक अल्लाह	और डरो अल्लाह से		और ज़ियादती (सरकशी)		

आप (स) से हुक्म दरयापत करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें कलाला के बारे में हुक्म बताता है। अगर कोई (ऐसा) मर्द मर जाए जिस की कोई औलाद न हो और उस की एक बहन हो तो उस (बहन) को उस के तरके का निसफ़ मिलेगा, और वह उस का वारिस होगा अगर उस (बहन) की कोई औलाद न हो, फिर अगर (मरने वाले की) दो बहनें हों तो उन के लिए दो तिहाई है उस (भाई) के तरके में से, और अगर भाई बहन कुछ मर्द और कुछ औरतें हों तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए खोल कर बयान करता है ताकि तुम भटक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (176)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

ऐ ईमान वालो! अपने अहद पूरे करो, तुम्हारे लिए चौपाए मवेशी हलाल किए गए सिवाए उन के जो तुम्हें सुनाए जाएंगे, मगर शिकार को हलाल न जानो जबकि तुम (हालते) एहराम में हो, वेशक अल्लाह जो चाहे हुक्म करता है। (1)

ऐ ईमान वालो! शआएर अल्लाह (अल्लाह की निशानियां) हलाल न समझो और न अदब वाले महीने (जुलकअदह, जुलहिज्जह, मोहर्रम, रज्जब) और न नियाजे कअवा (के जानवर) और न गले में (कुरबानी के) पट्टा डाले हुए, और न आने वाले खाने कअवा को जो अपने रब का फज़ल और खुशनुदी चाहते हैं। और जब एहराम खोलदो (चाहो) तो शिकार करलो, और (उस) कौम की दुश्मनी जो तुम को रोकती थी मसजिदे हराम (खाने कअवा) से (उस का) बाइस न बने कि तुम ज़ियादती करो। और एक दूसरे की मदद करो नेकी और परहेज़गारी में, और एक दूसरे की मदद न करो गुनाह और सरकशी में, और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है। (2)

हराम कर दिया गया तुम पर मुर्दार और खून और सुव्वर का गोश्त और जिस पर पुकारा गया अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम), और गला घोटने से मरा हुआ और चोट खाकर मरा हुआ और गिर कर मरा हुआ और सींग मारा हुआ, और जिस को दरिन्दे ने खाया हो मगर जो तुम ने जुवह कर लिया, और (हराम किया गया) जो आसथाने (परस्तिश गाहों) पर जुवह किया गया, और यह कि तुम तीरों से (पांसे डाल कर) तकसीम करो, यह गुनाह है। आज काफिर तुम्हारे दिन से मायूस हो गए, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो, आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दिन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और मैं ने तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हेसियत से पसन्द किया। फिर जो भूक में लाचार हो जाए (लेकिन) माइल न हो गुनाह की तरफ (उस के लिए गुंजाइश है) वेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है। (3)

आप (स) से पूछते हैं उन के लिए क्या हलाल किया गया है? कह दें तुम्हारे लिए पाक चीजें हलाल की गई हैं और जो तुम शिकारी जानवर सधाओ शिकार पर दौड़ाने को कि तुम उन्हें सिखाते हो उस से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है, पस उस में से खाओ जो वह तुम्हारे लिए पकड़ रखें, और उस पर अल्लाह का नाम लो (जुवह कर लो) और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (4)

आज तुम्हारे लिए पाक चीजें हलाल की गई, और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है, और तुम्हारा खाना उन के लिए हलाल है, और पाक दामन मोमिन औरतें और पाक दामन औरतें उन में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई (हलाल हैं), जब तुम उन्हें उन के मेहर दे दो (कैदे निकाह) में लाने को, न कि मस्ती निकालने को और न चोरी छुपे आशनाई करने को, और जो ईमान का मुन्किर हुआ उस का अमल जाया हुआ, और वह आखिरत में नुकसान उठाने वालों में से है। (5)

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالْدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أَهْلٌ						
पुकारा गया	और जो-जिस	और सुव्वर का गोश्त	और खून	मुर्दार	तुम पर	हराम कर दिया गया
لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا						
और जो-जिस	और सींग मारा हुआ	और गिर कर मरा हुआ	और चोट खाकर मरा हुआ	और गला घोटने से मरा हुआ	उस पर	अल्लाह के सिवा
أَكَلَ السَّبْعِ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۖ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ ۚ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا						
तुम तकसीम करो	और यह कि	थानों पर	जुवह किया गया	और जो	तुम ने जुवह कर लिया	मगर जो
بِالْأَزْلَامِ ۚ ذَلِكُمْ فَسْقُ الْيَوْمِ الْيَسِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ						
तुम्हारे दिन से	जिन लोगो ने कुफ़ किया (काफिर)	मायूस हो गए	आज	गुनाह	यह	तीरों से
فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ۚ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتِمَمْتُ						
और पूरी कर दी	तुम्हारा दिन	तुम्हारे लिए	मैं ने मुकम्मल कर दिया	आज	और मुझ से डरो	सो तुम उन से न डरो
عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ فِي						
मैं	लाचार हो जाए	फिर जो	दीन	इस्लाम	तुम्हारे लिए	और मैं ने पसन्द किया
مَخْمَصَةٍ غَيْرِ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣﴾ يَسْأَلُونَكَ						
आप (स) से पूछते हैं	3	मेहरबान	बख्शने वाला	तो वेशक अल्लाह	गुनाह की तरफ	माइल हो
مَاذَا أَحَلَّ لَهُمْ ۚ قُلْ أَحَلَّ لَكُمْ الطَّيِّبُ ۚ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ						
शिकारी जानवर	से	तुम सुधाओ	और जो	पाक चीजें	तुम्हारे लिए	हलाल की गई
مُكَلِّبِينَ تَعْلَمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۖ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ						
तुम्हारे लिए	वह पकड़ रखें	उस से जो	पस तुम खाओ	अल्लाह	तुम्हें सिखाया	उस से जो
وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤﴾						
4	तेज़ हिसाब लेने वाला	वेशक अल्लाह	अल्लाह	और डरो	उस पर	अल्लाह
الْيَوْمَ أَحَلَّ لَكُمْ الطَّيِّبُ ۚ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَلٌّ						
हलाल	किताब दिए गए (अहले किताब)	वह लोग जो	और खाना	पाक चीजें	तुम्हारे लिए	हलाल की गई
لَكُمْ ۚ وَطَعَامُكُمْ حَلٌّ لَهُمْ ۚ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ						
और पाक दामन	मोमिन औरतें	से	और पाक दामन औरतें	उन के लिए	हलाल	और तुम्हारा खाना
مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ ۚ إِذَا اتَّيَمُّوهُنَّ أَجُورُهُنَّ						
उन के मेहर	तुम उन्हें देदो	जब	तुम से पहले	किताब दी गई	वह लोग जो	से
مُحْصَنِينَ غَيْرِ مُسْفَحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ						
मुन्किर हुआ	और जो	छुपी आशनाई	और न बनाने को	न कि मस्ती निकालने को	कैद में लाने को	
بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ ۚ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٥﴾						
5	नुकसान उठाने वाले	से	आखिरत में	और वह	उस का अमल	तो जाया हुआ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا						
तो धो लो	नमाज़ के लिए	तुम उठो	जब	वह जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	
وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ						
और अपने पाऊँ	अपने सरों का	और मसह करो	कुहनियाँ	तक	और अपने हाथ	अपने मुँह
إِلَى الْكَعْبَيْنِ وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا وَإِنْ كُنْتُمْ						
तुम हो	और अगर	तो खूब पाक हो जाओ	नापाक	तुम हो	और अगर	टखनों तक
مَرْضَى أَوْ عَلَى سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ						
बैतुलखला से	तुम में से	कोई	आए	और	सफ़र पर (में)	या बीमार
أَوْ لِمَسْتُمُ النِّسَاءِ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا						
मिट्टी	तो तयम्मूम कर लो	पानी	फिर न पाओ	औरतों से	या तुम मिलो (सुहबत की)	
طَيِّبًا فَاْمَسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ مِنْهُ مَا يُرِيدُ اللَّهُ						
अल्लाह	नहीं चाहता	उस से	और अपने हाथ	अपने मुँह	तो मसह करो	पाक
لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ						
कि तुम्हें पाक करे	चाहता है	और लेकिन	तंगी	कोई	तुम पर	कि करे
وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٦﴾ وَاذْكُرُوا						
और याद करो	6	एहसान मानो	ताकि तुम	तुम पर	अपनी नेमत	और यह कि पूरी करे
نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الّذِي وَاثَقَكُمْ بِهِ						
उस से	तुम ने बान्धा	जो	और उस का अहद	तुम पर (अपने ऊपर)	अल्लाह की नेमत	
إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ						
वात	जानने वाला	वेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो	और हम ने माना	हम ने सुना	जब तुम ने कहा
الصُّدُورِ ﴿٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوِّمِينَ لِلَّهِ						
अल्लाह के लिए	खड़े होने वाले	हो जाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	7	दिलों की
شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلَى						
पर	किसी क़ौम	दुशमनी	और तुम्हें न उभारे	इन्साफ़ के साथ	गवाह	
أَلَّا تَعْدِلُوا ۖ إِعْدِلُوا ۖ هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا						
और डरो	तक़्वा के	ज़ियादा करीब	वह (यह)	तुम इन्साफ़ करो	कि इन्साफ़ न करो	
اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا						
जो लोग ईमान लाए	अल्लाह	वादा किया	8	जो तुम करते हो	खूब बाख़्बर	वेशक अल्लाह
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٩﴾						
9	बड़ा	और अजर	बख़्शिश	उन के लिए	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए

ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो धो लो अपने मुँह और अपने हाथ कुहनियों तक और अपने सरों का मसह करो और अपने पाऊँ (धो) टखनों तक, और अगर तुम नापाक हो (गुस्ल की हाज़त हो) तो खूब पाक हो जाओ (गुस्ल कर लो) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई बैतुलखला से आए या तुम ने औरतों से सुहबत की, फिर न पाओ पानी तो पाक मिट्टी से तयम्मूम कर लो (यानी) उस से अपने मुँह और हाथों का मसह करो, अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी करे लेकिन चाहता है कि तुम्हें पाक करे और यह कि अपनी नेमत पूरी करे तुम पर ताकि तुम एहसान मानो। (6)

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो और उस का अहद जो तुम ने उस से बान्धा जब तुम ने कहा हम ने सुना और हम ने माना, और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह दिलों की बात जानने वाला है। (7)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए खड़े होने वाले हो जाओ इन्साफ़ की गवाही देने को, और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें (उस पर) न उभारे कि इन्साफ़ न करो, तुम इन्साफ़ करो यह तक़्वा के ज़ियादा करीब है, और अल्लाह से डरो, वेशक तुम जो करते हो अल्लाह उस से खूब बाख़्बर है। (8)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए अल्लाह ने वादा किया कि उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (9)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही जहन्नम वाले हैं। (10)

ऐ ईमान वाले! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (एहसान) याद करो जब एक गिरोह ने इरादा किया कि वह बढ़ाएं तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ (दस्त दराज़ी करने को) तो उस ने तुम से उन के हाथ रोक दिए, और अल्लाह से डरो, और चाहिए कि अल्लाह पर भरोसा करें ईमान वाले। (11)

और अलबत्ता अल्लाह ने बनी इस्राईल से अ़हद लिया, और हम ने उन में से मुक़र्रर किए बारह (12) सरदार, और अल्लाह ने कहा मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ काइम रखोगे और देते रहोगे ज़कात और मेरे रसूलों पर ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और अल्लाह को कर्ज़ हसना (अच्छा कर्ज़) दोगे, मैं तुम्हारे गुनाह ज़रूर दूर करदूंगा और तुम्हें (उन) बागात में ज़रूर दाख़िल करूंगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, फिर उस के बाद तुम में से जिस ने कुफ़ किया वेशक वह सीधे रास्ते से गुमराह हुआ। (12)

सो उन के अ़हद तोड़ने पर हम ने उन पर लानत की और उन के दिलों को सख़्त कर दिया, वह कलाम को उस के मवाक़े से फेर देते हैं (बदल देते) हैं और वह भूल गए (फ़रामोश कर बैठे) उस का बड़ा हिस्सा जिस की उन्हें नसीहत की गई थी, और आप (स) उन में से थोड़ों के सिवा हमेशा उनकी ख़ियानत पर ख़बर पाते रहते हैं, सो उन को माफ़ कर दें और दरगुज़र करें, वेशक अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (13)

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ (١٠)					
और जिन लोगों ने कुफ़ किया	और झुटलाया	हमारी आयतें	यही	जहन्नम वाले	10
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ					
ऐ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	तुम याद करो	नेमत	अल्लाह	अपने ऊपर
إِذْ هُمْ قَوْمٌ أَنْ يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ					
जब इरादा किया	एक गिरोह	कि	बढ़ाएं	तुम्हारी तरफ़	अपने हाथ
أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ					
उन के हाथ	तुम से	और डरो	अल्लाह	और पर	अल्लाह
الْمُؤْمِنُونَ (١١) وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ					
ईमान वाले	11	और अलबत्ता	अल्लाह ने लिया	अ़हद	बनी इस्राईल
وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ					
और हम ने मुक़र्रर किए	उन से	बारह (12)	सरदार	और कहा	अल्लाह
لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ					
अगर	काइम रखोगे	नमाज़	और देते रहोगे	ज़कात	और ईमान लाओगे
بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا					
मेरे रसूलों पर	और उन की मदद करोगे	और कर्ज़ दोगे	अल्लाह	कर्ज़	हसना
لَا كُفْرَانَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَا دُخْلَكُمْ جَنَّتٍ تَجْرِي					
मैं ज़रूर दूर करदूंगा	तुम से	तुम्हारे गुनाह	और ज़रूर दाख़िल कर दूंगा तुम्हें	बागात	बहती हैं
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ					
से	उन के नीचे	नहरें	फिर जो-जिस	कुफ़ किया	उस के बाद
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ (١٢) فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ					
वेशक गुमराह हुआ	सीधा	रास्ता	12	सो बसबव (पर)	उनका तोड़ना
لَعْنُهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ					
हम ने उन पर लानत की	और हम ने कर दिया	उन के दिल (जमा)	सख़्त	वह फेर देते हैं	कलाम
مَوَاضِعِهِ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ وَلَا تَزَالُ					
उस के मवाक़े	और वह भूल गए	एक बड़ा हिस्सा	उस से जो	उन्हें जिस की नसीहत की गई	और हमेशा
تَطَّلِعُ عَلَى خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ					
आप ख़बर पाते रहते हैं	पर	ख़ियानत	उन से	सिवाए	थोड़े
فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ (١٣)					
सो माफ़ कर	उन को	और दरगुज़र कर	वेशक अल्लाह	दोस्त रखता है	एहसान करने वाले

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ					
उन का अहद	हम ने लिया	नसारा	हम	जिन लोगो ने कहा	और से
فَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ					
उन के दरमियान	तो हम ने लगा दी	जिस की नसीहत की गई थी	उस से जो	एक बड़ा हिस्सा	फिर वह भूल गए
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ وَسَوْفَ					
और जल्द	रोज़े कियामत	तक	और बुग़ज़	अ़दावत	
يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٤﴾ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ					
ऐ अहले किताब	14	करते थे	जो वह	अल्लाह	उन्हें जता देगा
قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا					
बहुत सी बातें जो	तुम्हारे लिए	वह ज़ाहिर करते हैं	हमारे रसूल	यकीनन तुम्हारे पास आगए	
كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ					
बहुत उमूर से	और वह दरगुज़र करता है	किताब से	छुपाते	तुम थे	
قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ ﴿١٥﴾					
15	रौशन	और किताब	नूर	अल्लाह से	तहकीक तुम्हारे पास आगया
يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ					
सलामती	राहें	उस की रज़ा	जो तावे हुआ	अल्लाह	उस से हिदायत देता है
وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ					
अपने हुक्म से	नूर की तरफ़	अन्धेरे	से	और वह उन्हें निकालता है	
وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ					
तहकीक काफ़िर हो गए	16	सीधा	रास्ता	तरफ़	और उन्हें हिदायत देता है
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ					
इब्ने मरयम	वही मसीह (अ)		बेशक अल्लाह	जिन लोगो ने कहा	
قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ					
हलाक कर दे	अगर वह चाहे कि	कुछ भी	अल्लाह के आगे	बस चलता है	तो किस कह दीजिए
الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا					
सब	ज़मीन	में	और जो	और उस की माँ	इब्ने मरयम मसीह (अ)
وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا يَخْلُقُ					
वह पैदा करता है	उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए सल्तनत
مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾					
17	कादिर	हर शै	पर	और अल्लाह	जो वह चाहता है

और उन लोगों से जिन्होंने ने कहा हम नसारा हैं, हम ने उन का अहद लिया, फिर वह उस का बड़ा हिस्सा भूल गए जिस की उन्हें नसीहत की गई थी तो हम ने उन के दरमियान लगा दिया (डाल दिया) रोज़े कियामत तक अदावत और बुग़ज़, और अल्लाह जल्द उन्हें जता देगा जो वह करते थे। (14)

ऐ अहले किताब! यकीनन तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आगए, वह तुम्हारे लिए (तुम पर) बहुत सी बातें ज़ाहिर करते हैं जो तुम किताब में से छुपाते थे और वह बहुत उमूर से दरगुज़र करते हैं, तहकीक तुम्हारे पास आगया अल्लाह की तरफ़ से नूर और रौशन किताब। (15)

उस से अल्लाह सलामती की राहों की उसे हिदायत देता है जो उस की रज़ा के तावे हुआ और वह उन्हें निकालता है अन्धेरों से नूर की तरफ़ अपने हुकम से और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देता है। (16)

तहकीक काफ़िर हो गए वह जिन लोगों ने कहा अल्लाह वही मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) है। कह दीजिए: तो किस का बस चलता है अल्लाह के आगे कुछ भी। अगर वह चाहे कि मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) को और उस की माँ को हलाक कर दे और जो ज़मीन में है सब को। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, वह पैदा करता है जो वह चाहता है, और अल्लाह हर शै पर कादिर है। (17)

और यहूद ओ नसारा ने कहा हम अल्लाह के बेटे और उस के प्यारे हैं, कह दीजिए फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सज़ा क्यों देता है? (नहीं) बल्कि तुम भी एक बशर हो उस की मख़लूक में से, वह जिस को चाहता है बख़्श देता है और जिस को चाहता है अज़ाब देता है। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (18)

ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आ गए वह नवियों का सिलसिला टूट जाने के बाद तुम पर खोल कर बयान करते हैं कि कहीं तुम यह कहो हमारे पास कोई खुशख़बरी सुनाने वाला नहीं आया और न डराने वाला, तहकीक़ तुम्हारे पास (मुहम्मद (स) खुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले आगए, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (19)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम को कहा: ऐ मेरी क़ौम! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो जब उस ने तुम में नबी बनाए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें दिया जो ज़हानों में किसी को नहीं दिया। (20)

ऐ मेरी क़ौम! अर्ज़ मुक़द्दस में दाख़िल हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है और अपनी पीठ फेरते हुए न लौटो वरना तुम नुक़सान में जा पड़ोगे। (21)

उन्होंने कहा ऐ मूसा (अ)! बेशक उस में एक ज़बरदस्त क़ौम है, और हम वहाँ हरगिज़ दाख़िल न होंगे यहाँ तक कि वह उस में से निकल जाएं, फिर अगर वह उस में से निकले तो हम ज़रूर उस में दाख़िल होंगे। (22)

डरने वालों में से दो आदमियों ने कहा, उन दोनों पर अल्लाह ने इन्शाम किया था: कि तुम उन पर दरवाज़े से (हमला कर के) दाख़िल हो जाओ, जब तुम उस में दाख़िल होंगे तो तुम ही ग़ालिब होंगे, और अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम ईमान वाले हो। (23)

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصْرَىٰ نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبَّاؤُهُ قُل فَلِمَ يُعَذِّبُكُم بِذُنُوبِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ								
और कहा	यहूद	और नसारा	हम	बेटे	अल्लाह	और उस के प्यारे	कह दीजिए	फिर क्यों
तुम्हें अज़ाब देता है	तुम्हारे गुनाहों पर	बल्कि	तुम	वशर	उन में से	उस ने पैदा किया (मखलूक)	वह बख़्श देता है	जिस को चाहता है
وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۖ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا								
और अज़ाब देता है	जिस को वह चाहता है	और अल्लाह के लिए	सल्तनत	आस्मानों	और ज़मीन	और जो		
بَيْنَهُمَا ۚ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا								
उन दोनों के दरमियान	और उसी की तरफ़	लौट कर जाना है	18	ऐ अहले किताब	तहकीक़ तुम्हारे पास आए	हमारे रसूल		
वह खोल कर बयान करते हैं	तुम्हारे लिए	पर (बाद)	सिलसिला टूट जाना	से (के)	रसूल (जमा)	कि कहीं	तुम कहो	हमारे पास नहीं आया
وَلَا نَذِيرٌ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ								
और न	डराने वाला	तहकीक़ तुम्हारे पास आगए	खुशख़बरी सुनाने वाले	और डराने वाले	और अल्लाह	पर	हर शै	
قَدِيرٌ ﴿١٩﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ								
क़ादिर	19	और जब	कहा	मूसा	अपनी कौम को	ऐ मेरी कौम	तुम याद करो	अल्लाह की नेमत
عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوكًا ۚ وَآتَاكُمْ								
अपने ऊपर	जब	उस ने बनाया	तुम में	नबी (जमा)	और तुम्हें बनाया	बादशाह	और तुम्हें दिया	
مَا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٠﴾ يُقَوْمِ ادْخُلُوا								
जो नहीं	दिया	किसी को	से	जहानों में	20	ऐ मेरी कौम	दाख़िल हो जाओ	
الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَىٰ اَدْبَارِكُمْ								
अर्ज़े मुक़द़स (उस पाक सर ज़मीन)	जो	अल्लाह ने लिख दी	तुम्हारे लिए	और न	लौटो	पर	अपनी पीठ	
فَتَنْقَلِبُوا خٰسِرِيْنَ ﴿٢١﴾ قَالُوا يٰمُوسَىٰ اِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبّٰرِيْنَ ۚ								
वरना तुम जा पड़ोगे	नुक्सान में	21	उन्हों ने कहा	ऐ मूसा (अ)	बेशक उस में	एक कौम	ज़बरदस्त	
وَآتَا لَّنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوا مِنْهَا ۚ فَاِذَا يَخْرُجُوا مِنْهَا								
और हम बेशक	हरगिज़ दाख़िल न होंगे	यहाँ तक कि	वह निकल जाएं	उस से	फिर अगर	वह निकले	उस से	
فَاِنَّا دُخِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ قَالَ رَجُلَيْنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنۡعَمَ اللَّهُ								
तो हम ज़रूर	दाख़िल होंगे	22	कहा	दो आदमी	उन लोगों से जो	डरने वाले	अल्लाह ने इन्शाम किया था	
عَلَيْهِمَا اَدْخِلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلُوْهُ فَاِنَّكُم								
उन दोनों पर	तुम दाख़िल हो उन पर (हमला कर दो)	दरवाज़ा	पस जब	तुम दाख़िल होगे उस में	तो तुम			
غٰلِبُوْنَ ۗ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَتَوَكَّلُوْا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٣﴾								
ग़ालिब आओगे	और अल्लाह पर	भरोसा रखो	अगर तुम हो	ईमान वाले	23			

قَالُوا يَمُوسَى إِنَّا لَن نَدْخُلَهَا أَبَدًا مَّا دَامُوا فِيهَا فَادْهَبْ							
उन्होंने ने कहा	ऐ मूसा	वेशक हम	हरगिज़ वहां दाखिल न होंगे	कभी भी	जब तक वह हैं	उस में	सो जा
أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَهُنَا قُعْدُونَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي							
तू	और तेरा रब	तुम दोनों लड़ो	हम	यही	बैठे हैं	मूसा (अ) ने कहा	ऐ मेरे रब
لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ							
इख्तियार नहीं रखता	अपनी जान के सिवा	और अपना भाई	पस जुदाई कर दे	हमारे दरमियान	और दरमियान	कौम	
الْفَاسِقِينَ ﴿٢٥﴾ قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً							
नाफरमान	25	उस ने कहा	पस यह	हराम कर दी गई	उन पर	चालीस	साल
يَتِيَهُونَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾							
भटकते फिरेंगे	ज़मीन में	तू अफसोस न कर	पर	कौम	नाफरमान	26	
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَى آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ							
और सुना	उन्हें	खबर	आदम के दो बेटे	अहवाल-ए-वाक़्ज़ी	जब दोनों ने पेश की	कुछ नियाज़	तो कुबूल कर ली गई
مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ							
से	उन में से एक	और न कुबूल की गई	दूसरे से	उस ने कहा	मैं तुझे ज़रूर मार डालूंगा	उस ने कहा	
إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾ لَبِئْسَ بَسِطَتِ إِلَيَّ يَدَكَ							
वेशक सिर्फ़	कुबूल करता है	अल्लाह	से	परहेज़गार (जमा)	27	अलबत्ता अगर तू बढ़ाएगा	मेरी तरफ़
لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَنَّكَ إِنِّي أَخَافُ							
कि मुझे क़त्ल करे	मैं नहीं	बढ़ाने वाला	अपना हाथ	तेरी तरफ़	कि तुझे क़त्ल करूँ	वेशक मैं	डरता हूँ
اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوءَ بِإِثْمِي							
अल्लाह	परवरदिगार सारे जहान का	28	वेशक मैं	चाहता हूँ	कि तू हासिल करे	मेरे गुनाह	
وَأِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾							
और अपने गुनाह	फिर तू हो जाए	से	जहनन्म वाले	और यह	सज़ा	ज़ालिम (जमा)	29
فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٣٠﴾							
फिर राज़ी किया	उस को	उस का नफ्स	क़त्ल	अपना भाई	सो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	तो वह हो गया	से
فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُورَى							
फिर भेजा	अल्लाह	एक कव्वा	कुरेदता था	ज़मीन में	ताकि उसे दिखाए	कैसे	वह छुपाए
سَوْءَةَ أَخِيهِ قَالَ يُؤَيِّلَتِي أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا							
लाश	अपना भाई	उस ने कहा	हाए अफसोस मुझ पर	मुझ से न हो सका	कि मैं हो जाऊँ	जैसा	इस-यह
الْغُرَابِ فَأَوْارَى سَوْءَةَ أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ ﴿٣١﴾							
कव्वा	फिर छुपाऊँ	लाश	अपना भाई	पस वह हो गया	से	नादिम होने वाले	31

उन्होंने ने कहा ऐ मूसा (अ)! जब तक वह उस में हैं हम वहां कभी भी हरगिज़ दाखिल न होंगे, सो तू जा और तेरा रब, तुम दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं। (24)

मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! वेशक मैं इख्तियार नहीं रखता सिवाए अपनी जान के और अपने भाई के, पस हमारे और हमारी नाफरमान कौम के दरमियान जुदाई डाल दे (फैसला कर दे)। (25)

अल्लाह ने कहा पस यह सरज़मीन हराम कर दी गई उन पर चालीस साल, वह ज़मीन में भटकते फिरेंगे, तू नाफरमान कौम पर अफसोस न कर। (26)

उन्हें आदम (अ) के दो बेटों का हाले वाक़्ज़ी सुनाओ, जब दोनों ने कुछ नियाज़ पेश की तो उन में से एक की कुबूल कर ली गई और दूसरे से कुबूल न की गई, उस ने (भाई को) कहा मैं तुझे ज़रूर मार डालूंगा, उस ने कहा अल्लाह सिर्फ़ कुबूल करता है परहेज़गारों से। (27)

अलबत्ता अगर तू मेरी तरफ़ अपना हाथ मुझे क़त्ल करने के लिए बढ़ाएगा, मैं (फिर भी) अपना हाथ तेरी तरफ़ बढ़ाने वाला नहीं कि तुझे क़त्ल करूँ, वेशक मैं सारे जहान के परवरदिगार अल्लाह से डरता हूँ। (28)

वेशक मैं चाहता हूँ कि तू हासिल करे (ज़िम्मेदार हो जाए) मेरे गुनाह का और अपने गुनाह का, फिर तू जहनन्म वालों में से होजाए और ज़ालिमों की यही सज़ा है। (29)

फिर उस को उस के नफ्स ने अपने भाई के क़त्ल पर आमादा कर लिया, उस ने उस को क़त्ल कर दिया तो नुक़्सान उठाने वालों में से हो गया। (30)

फिर अल्लाह ने भेजा एक कव्वा ज़मीन कुरेदता ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश कैसे छुपाए। उस ने कहा हाए अफसोस! मुझ से इतना न हो सका कि उस कव्वे जैसा हो जाऊँ कि अपने भाई की लाश को छुपाऊँ, पस वह नादिम (पशेमाँ) होने वालों में से होगया। (31)

उस वजह से हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया कि जिस ने किसी एक जान को किसी जान के (बदले के) बगैर या मुल्क में फ़साद करने के बगैर क़त्ल किया तो गोया उस ने क़त्ल किया तमाम लोगों को, और जिस ने (किसी एक को) ज़िन्दा रखा (बचाया) तो गोया उस ने तमाम लोगों को ज़िन्दा रखा (बचा लिया), और उन के पास आ चुके हमारे रसूल रौशन दलाइल के साथ, फिर उस के बाद उन में से अक्सर ज़मीन में हद से बढ़ जाने वाले हैं। (32)

यही सज़ा है (उन की) जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से जंग करते हैं और सज़ाई करते हैं मुल्क में फ़साद बर्पा करने की कि वह क़त्ल किए जाएं या सूली दिए जाएं या उन के हाथ और पाऊँ काटे जाएं मुख़ालिफ़ जानिव से (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ), या मुल्क बदर कर दिए जाएं, यह उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अज़ाब है। (33)

मगर वह लोग जिन्होंने उस से पहले तौबा कर ली कि तुम काबू पाओ उन पर, तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (34)

ऐ ईमान वालो! डरो अल्लाह से और उस की तरफ़ (उस का) कुर्व तलाश करो और उस के रास्ते में जिहाद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (35)

जिन लोगों ने कुफ़्र किया जो कुछ ज़मीन में है अगर सब का सब और उस के साथ और इतना ही उन के पास हो कि वह उस को क़ियामत के दिन अज़ाब के फ़िदये (बदला) में दें तो वह उन से कुबूल न किया जाएगा, और उन के लिए अज़ाब है दर्दनाक। (36)

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ							
से	वजह	उस	हम ने लिख दिया	पर	बनी इस्राईल	कि जो-जिस	
مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ							
कोई क़त्ल करे	कोई जान	किसी जान के बगैर	या फ़साद करना	ज़मीन (मुल्क) में	तो गोया	उस ने क़त्ल किया	
النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا							
लोग	तमाम	और जो-जिस	उस को ज़िन्दा रखा	तो गोया	उस ने ज़िन्दा रखा	लोग	तमाम
وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ							
आ चुके और उन के पास	हमारे रसूल	रौशन दलाइल के साथ	फिर	बेशक	अक्सर	उन में से	
بَعْدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمْسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾ إِنَّمَا جَزَأُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ							
उस के बाद	ज़मीन (मुल्क) में	हद से बढ़ने वाले	32	यही	सज़ा	जो लोग	जंग करते हैं
اللَّهِ وَرُسُولَهُ وَيَسْعُونَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا							
अल्लाह	और उस का रसूल (स)	और कोशिश करते हैं	जमीन (मुल्क) में	फ़साद करने	कि वह क़त्ल किए जाएं		
أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ							
या	वह सूली दिए जाएं	या	काटे जाएं	उन के हाथ	और उन के पाऊँ	से	एक दूसरे के मुख़ालिफ़ से
أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا							
या मुल्क बदर कर दिए जाएं	मुल्क से	यह	उन के लिए	रुसवाई	दुनिया में		
وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا							
और उन के लिए	आख़िरत में	अज़ाब	बड़ा	33	मगर	वह लोग जिन्होंने ने तौबा कर ली	
مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ							
उस से पहले	कि	तुम काबू पाओ	उन पर	तो जान लो	कि	अल्लाह	बख़्शने वाला
رَحِيمٌ ﴿٣٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا							
मेहरबान	34	ऐ	जो लोग ईमान लाए	डरो	अल्लाह	और तलाश करो	
إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ							
उस की तरफ़	कुर्व	और जिहाद करो	में	उस का रास्ता	ताकि तुम		
تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا							
फ़लाह पाओ	35	बेशक	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	अगर	यह कि	उन के लिए	जो
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ							
ज़मीन में	सब का सब	और इतना	उस के साथ	कि फ़िदया (बदले में) दें	उस के साथ	से	अज़ाब
يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾							
क़ियामत का दिन	न	कुबूल किया जाएगा	उन से	और उन के लिए	अज़ाब	दर्दनाक	36

يُرِيدُونَ أَنْ يُخْرِجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخُرْجِينَ						
निकलने वाले	हालांकि नहीं वह	आग	से	वह निकल जाएं	कि	वह चाहेंगे
مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ (37) وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا						
काट दो	और चोर औरत	और चोर मर्द	37	हमेशा रहने वाला	अज़ाब	और उन के लिए
أَيْدِيَهُمَا جِزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَزِيزٌ						
ग़ालिब	और अल्लाह	से	इव्रत	उस की जो उन्होंने ने किया	सज़ा	उन दोनों के हाथ
حَكِيمٌ (38) فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ						
तो वेशक अल्लाह	और इसलाह की	अपना जुल्म	बाद	से	पस जो-जिस तौबा की	38
يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (39) أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ						
उसी की	अल्लाह	कि	क्या तू नहीं जानता	39	मेहरबान	वहशने वाला
مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ						
और वहशदे	जिसे चाहे	अज़ाब दे	और ज़मीन	आस्मानों	सल्तनत	
لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (40) يَأْتِيهَا الرُّسُولُ						
रसूल (स)	ऐ	40	कादिर	हर शै	पर	और अल्लाह
لَا يَحْزُنُكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا						
उन्होंने ने कहा	जो लोग	से	कुफ़	में	भाग दौड़ करते हैं	जो लोग
أَمَنًا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوبُهُمْ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا						
वह लोग जो यहूदी हुए	और से	उन के दिल	और मोमिन नहीं	अपने मुँह से (जमा)	हम ईमान लाए	
سَمِعُونَ لِكَذِبٍ سَمْعُونَ لِقَوْمٍ آخِرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ						
वह आप (स) तक नहीं आए	दूसरी	क़ौम के लिए	वह जासूस है	झूट के लिए	जासूसी करते हैं	
يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ يَقُولُونَ						
कहते हैं	उस का ठिकाना	बाद	कलाम	वह फेर देते हैं		
إِنْ أُوتِيتُمْ هَذَا فَخُذُوهُ وَإِنْ لَمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا						
तो उस से बचो	यह तुम्हें न दिया जाए	और अगर	उस को कुबूल कर लो	यह	अगर तुम्हें दिया जाए	
وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا						
कुछ	अल्लाह	से	उस के लिए	तू हरगिज़ न आ सकेगा	गुमराह करना	और जो-जिस
أُولَئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ لَهُمْ						
उन के लिए	उन के दिल	पाक करे	कि	अल्लाह	नहीं चाहा	वह लोग जो
فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ (41)						
41	बड़ा	अज़ाब	आखिरत	में	और उन के लिए	दुनिया में

वह चाहेंगे कि वह आग से निकल जाएं हालांकि वह उस से निकलने वाले नहीं, और उन के लिए हमेशा रहने वाला (दाइमी) अज़ाब है। (37)

चोर मर्द और चोर औरत दोनों के हाथ काट दो यह सज़ा है उस की जो उन्होंने ने किया, इव्रत है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (38)

पस जिस ने तौबा की अपने जुल्म के बाद और इसलाह कर ली तो वेशक अल्लाह उस की तौबा कुबूल करता है, वेशक अल्लाह वहशने वाला मेहरबान है। (39)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह ही की है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की? वह जिसे चाहे अज़ाब दे और जिस को चाहे वहशदे, और अल्लाह हर शै पर कादिर है। (40)

ऐ रसूल (स)! आप (स) को वह लोग ग़मगीन न करें जो कुफ़ में भाग दौड़ करते हैं, वह लोग जो अपने मुँह से कहते हैं हम ईमान लाए हालांकि उन के दिल मोमिन नहीं, वह जो यहूदी हुए वह झूट के लिए जासूसी करते हैं, वह जासूस हैं एक दूसरी जमाअत के जो आप (स) तक नहीं आए, कलाम को फेर देते (बदल डालते) हैं उस के ठिकाने के बाद (ठिकाना छोड़ कर), कहते हैं अगर तुम्हें यह दिया जाए तो उस को कुबूल कर लो और अगर तुम्हें न दिया जाए तो उस से बचो, और जिस को अल्लाह गुमराह करना चाहे तो उस के लिए तू अल्लाह के हाँ कुछ न कर सकेगा, यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने नहीं चाहा कि उन के दिल पाक करे, उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आखिरत में बड़ा अज़ाब है। (41)

झूट के लिए जासूसी करने वाले, हARAM खाने वाले, पस अगर वह आप (स) के पास आएँ तो आप (स) उन के दरमियान फैसला कर दें या उन से मुँह फेर लें, और अगर आप (स) उन से मुँह फेर लें तो हरगिज़ आप (स) का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर आप (स) फैसला करें तो उन के दरमियान इन्साफ़ से फैसला करें, वेशक़ अल्लाह दोस्त रखता है इन्साफ़ करने वालों को। (42)

और वह आप (स) को कैसे मुन्सिफ़ बनाते हैं जबकि उन के पास तौरात है जिस में अल्लाह का हुक्म है, फिर उस के बाद वह फिर जाते हैं, और वह मानने वाले नहीं। (43)

वेशक़ हम ने नाज़िल की तौरात। उस में हिदायत और नूर है, उस के ज़रीआ हमारे नबी जो फ़रमांवरदार थे हुक्म देते थे यहूद को, और दर्वेश और उलमा (भी) इस लिए कि वह अल्लाह की किताब के निगहवान मुक़र्रर किए गए थे और उस पर निगरान थे, पस तुम लोगों से न डरो और मुझ (ही) से डरो और न हासिल करो मेरी आयतों के बदले थोड़ी कीमत, और जो उस के मुताबिक़ फैसला न करे जो अल्लाह ने नाज़िल किया है सो यही लोग काफ़िर हैं। (44)

और हम ने उस (किताब) में उन पर फ़र्ज़ कर दिया कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत है, और ज़ख़्मों का क़िसास (बदला) है, फिर जिस ने उस (क़िसास) को माफ़ कर दिया तो वह उस के लिए कफ़फ़ारा है, और जो उस के मुताबिक़ फैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो यही लोग ज़ालिम हैं। (45)

سَمْعُونَ لِكَذِبٍ أَكْلُونَ لِلشُّحِّ فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَصْرِوْكَ شَيْئًا ۖ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٤٢﴾							
जासूसी करने वाले	झूट के लिए	बड़े खाने वाले	हराम	पस अगर	आप (स) के पास आएँ	तो फैसला कर दें आप (स)	
उन के दरमियान	या	मुँह फेर लें	उन से	और अगर	आप (स) मुँह फेर लें	तो हरगिज़ न	आप (स) का बिगाड़ सकेंगे
कुछ	और अगर	आप फैसला करें	तो फैसला करें	उन के दरमियान	इन्साफ़ से	वेशक़ अल्लाह	दोस्त रखता है
इन्साफ़ करने वाले	42	और कैसे	वह आप (स) को मुन्सिफ़ बनाएंगे	जबकि उन के पास	तौरात	उस में	
حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٣﴾							
अल्लाह का हुक्म	फिर	फिर जाते हैं	बाद	उस	और नहीं	वह लोग	
मानने वाले	43	वेशक़ हम	हम ने नाज़िल की	तौरात	उस में	हिदायत	और नूर
يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَادُوا ۚ وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنَ اللَّهَ ۚ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنَ اللَّهَ ۚ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنَ اللَّهَ ۚ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ							
हुक्म देते थे	उस के ज़रीआ	नबी (जमा)	जो फ़रमांवरदार थे	उन लोगों के लिए जो यहूदी हुए (यहूद को)			
अल्लाह वाले (दर्वेश)	और उलमा	इस लिए कि	वह निगहवान किए गए	से (की)	अल्लाह की किताब		
और थे	उस पर	निगरान (मुहाफ़िज़)	पस न डरो	लोग	और डरो मुझ से		
وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٤٤﴾							
और न ख़रीदो (न हासिल करो)	मेरी आयतों के बदले	कीमत	थोड़ी	और जो	फैसला न करे	उस के मुताबिक़ जो	
अल्लाह ने नाज़िल किया	सो यही लोग	वह	काफ़िर (जमा)	44	और हम ने लिखा (फ़र्ज़ किया)	उन पर	
فِيهَا أَنْ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٥﴾							
उस में	कि	जान	जान के बदले	और आँख	आँख के बदले	और नाक	
नाक के बदले	और कान	कान के बदले	और दाँत	दाँत के बदले	और ज़ख़्मों		
बदला	फिर जो - जिस	माफ़ कर दिया	उस को	तो वह	कफ़फ़ारा	उस के लिए	और जो
फैसला नहीं करता	उस के मुताबिक़ जो	नाज़िल किया	अल्लाह	तो यही लोग	वह	ज़ालिम (जमा)	45

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا						
और हम ने	पर	उन के	ईसा (अ)	इब्ने मरयम	तस्दीक	उस की जो
पीछे भेजा		निशाने कदम		करने वाला		
بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ ۚ وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ						
उस से पहले	से	तौरात	और हम ने	इंजील	उस में	और नूर
			उसे दी		हिदायत	
وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً						
और तस्दीक	उस की जो	उस से पहले	से	तौरात	और	और नसीहत
करने वाली				हिदायत		
لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٦﴾ وَلِيَحْكُمَ أَهْلَ الْإِنْجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ۖ وَمَنْ						
परहेज़गारों	46	और फैसला	इंजील वाले	उस के	नाज़िल	और
के लिए	करें		साथ जो	अल्लाह	किया	जो
لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٤٧﴾ وَأَنْزَلْنَا						
फैसला नहीं करता	उस के	नाज़िल	अल्लाह	तो यही	वह	और हम ने
मुताबिक जो	मुताबिक जो	किया		लोग	फासिक (नाफरमान)	नाज़िल की
إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ						
आप की	किताब	सच्चाई के	तस्दीक	उस की जो	उस से पहले	से
तरफ़		साथ	करने वाली			किताब
وَمُهِمَّنَا عَلَيْهِ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ						
और निगहवान	उस पर	सो फैसला करें	उन के	उस से	नाज़िल	और न पैरवी करें
ओ मुहाफिज़			दरमियान	जो	किया	अल्लाह
أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شُرْعَةً						
उन की	उस से	तुम्हारे पास	से	हक	हर एक	दस्तूर
खाहिशात		आगया			के लिए	तुम में से
وَمِنْهَا جَا ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ						
और रास्ता	और	अल्लाह चाहता	तो तुम्हें	उम्मत	वाहिदा (एक)	और
	अगर		कर देता			लेकिन
فِي مَا آتَاكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ						
में	जो	उस ने	उस से	पस सबक़त	नेकियां	वह तुम्हें
	दिया	करो	तरफ़	अल्लाह	तुम्हें	बतलादेगा
بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِنْ أَحْكَمْتُمْ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ						
जो	तुम थे	उस में	इख़तिलाफ़ करते	48	और फैसला करें	उन के
						दरमियान
وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَنْ يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا						
और न चलो	उन की	और उन से	कि	वहका	से	जो
	खाहिशें	बचते रहो		न दें		वाज़ (किसी)
أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُصِيبَهُمْ						
नाज़िल	अल्लाह	आप की	फिर	वह सुँह	तो	सिर्फ़
किया	तरफ़	अगर	फेर लें	जान लो	चाहता है	अल्लाह
بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ﴿٤٩﴾ أَفَحُكْمَ						
बसबव	उन के	और	से	लोग	नाफरमान	49
वाज़	गुनाह	वशक	अक्सर			क्या हुक़म
الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٥٠﴾						
जाहिलियत	वह चाहते	और	से	हुक़म	लोगों के	यकीन
	हैं	किस	बेहतर	अल्लाह	लिए	रखते हैं
50						

और हम ने ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को उन के निशाने कदम पर भेजा, उस की तस्दीक करने वाला जो उस (ईसा (अ) से पहले तौरात से थी, और हम ने उसे इंजील दी, उस में हिदायत और नूर है और उस की तस्दीक करने वाली जो उस से पहले तौरात से थी और परहेज़गारों के लिए हिदायत ओ नसीहत थी। (46)

और इंजील वाले उस के साथ फैसला करें जो अल्लाह ने उस में नाज़िल किया, और जो उस के मुताबिक़ फैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तो यही लोग फासिक (नाफरमान) हैं। (47)

और हम ने आप (स) की तरफ़ किताब सच्चाई के साथ नाज़िल की अपने से पहली किताबों की तस्दीक करने वाली और उस पर निगहवान ओ मुहाफिज़, सो उन के दरमियान फैसला करें उस से जो अल्लाह ने नाज़िल किया और उन की खाहिशात की पैरवी न करें उस के बाद (जबकि) तुम्हारे पास हक़ आगया, हम ने मुकर्रर किया है तुम में से हर एक के लिए (अलग) दस्तूर और (जुदा) रास्ते, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें उम्मत वाहिदा (एक उम्मत) कर देता, लेकिन (वह चाहता है) ताकि वह तुम्हें उस से आजमाए जो उस ने तुम्हें दिया है, पस नेकियों में सबक़त करो, तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है वह तुम्हें बतला देगा जिस बात में तुम इख़तिलाफ़ करते थे। (48)

और उन के दरमियान फैसला करें उस से जो नाज़िल किया अल्लाह ने, और उन कि खाहिशों पर न चलो और उन से बचते रहो कि तुम्हें वहका न दें किसी ऐसे (हुक़म) से जो नाज़िल किया है अल्लाह ने आप (स) की तरफ़, फिर अगर वह सुँह फेर लें तो जान लो कि अल्लाह सिर्फ़ यही चाहता है कि उन्हें (सज़ा) पहुँचाए उन के वाज़ गुनाहों के सबब, और उन में से अक्सर लोग नाफरमान हैं। (49)

क्या वह (दौरे) जाहिलियत का हुक़म (रस्म ओ रिवाज़) चाहते हैं? और अल्लाह से बेहतर हुक़म किस का है उन लोगों के लिए जो यकीन रखते हैं? (50)

ऐ ईमान वालो! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ, उन में से बाज़ दोस्त हैं बाज़ के (एक दूसरे के दोस्त हैं) और तुम में से जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो बेशक वह उन में से होगा, बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (51)

पस तू देखेगा जिन लोगों के दिलों में रोग है वह उन (यहूद ओ नसारा) की तरफ़ दौड़ते हैं, वह कहते हैं हमें डर है कि हम पर गर्दिशे (ज़माना) न आजाए, सो क़रीब है कि अल्लाह फ़तह लाए या अपने पास से कोई हुक़म (लाए) तो वह अपने दिलों में जो छुपाते थे उस पर पछताते रह जाएं। (52)

और मोमिन कहेंगे क्या यह वही लोग हैं जो अल्लाह की पक्की क़स्में खाते थे कि वह तुम्हारे साथ है। उन के अमल अकारत गए, पस वह नुक़सान उठाने वाले (हो कर) रह गए। (53)

ऐ ईमान वालो! तुम में से जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़नक़रीब अल्लाह ऐसी क़ौम लाएगा जिन्हें वह मेहबूब रखता है और वह उसे मेहबूब रखते हैं, वह मोमिनों पर नरम दिल है काफ़िरों पर ज़बरदस्त है, अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते, यह अल्लाह का फ़ज़ल है वह जिस को चाहता है देता है, और अल्लाह वुस्त्रत वाला, इल्म वाला है। (54)

तुम्हारे रफ़ीक़ तो सिर्फ़ अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले हैं, और वह जो नमाज़ काइम करते हैं और ज़कात देते हैं और (अल्लाह के हुज़ूर) झुकने वाले हैं। (55)

जो दोस्त रखें अल्लाह और उस के रसूल (स) को और ईमान वालों को, तो बेशक अल्लाह की जमाअत ही (सब पर) ग़ालिब होगी। (56)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ ۚ						
ऐ	जो लोग	ईमान लाए	न बनाओ	यहूद	और नसारा	दोस्त
بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ ۗ						
उन में से बाज़	दोस्त	बाज़ (दूसरे)	और जो	उन से दोस्ती रखेगा	तुम में से	तो बेशक वह
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥١﴾ فَتَرَى الَّذِينَ فِي						
बेशक अल्लाह	हिदायत नहीं देता	लोग	ज़ालिम	51	पस तू देखेगा	वह लोग जो
قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَنْ						
उन के दिल	रोग	दौड़ते हैं	उन में (उन की तरफ़)	कहते हैं	हमें डर है	कि
تُصِيبَنَا دَآيِرَةٌ ۖ فَعَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهِ						
हम पर (न) आजाए	गर्दिश	सो क़रीब है	कि	लाए फ़तह	या कोई हुक़म	से अपने पास
فَيُضْبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسْرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ نَدِمِينَ ﴿٥٢﴾ وَيَقُولُ						
तो रह जाएं	पर	जो	वह छुपाते थे	में	अपने दिल (जमा)	पछताने वाले
الَّذِينَ آمَنُوا أَهْلَاءَ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ إِنَّهُمْ						
जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	क्या यह वही हैं	जो लोग	क़स्में खाते थे	अल्लाह की	पक्की	अपनी क़स्में
لَمَعَكُمْ ۖ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَاصْبَحُوا خُسْرِينَ ﴿٥٣﴾ يَأْتِيهَا						
तुम्हारे साथ	अकारत गए	उन के अमल	पस रह गए	नुक़सान उठाने वाले	53	ऐ
الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِيَ اللَّهُ بِقَوْمٍ						
जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	जो	फिरेगा	तुम से	से	अपना दीन	तो अ़नक़रीब
يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ ۖ أَذِلَّةٌ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۗ						
वह उन्हें मेहबूब रखता है	और वह उसे मेहबूब रखते हैं	नर्म दिल	पर	मोमिनीन	ज़बरदस्त	पर
يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ۚ ذَلِكَ						
जिहाद करते हैं	में रास्ता	अल्लाह	और नहीं डरते	मलामत	कोई मलामत करने वाला	यह
فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ						
फ़ज़ल	अल्लाह	वह देता है	जिसे चाहता है	और अल्लाह	वुस्त्रत वाला	इल्म वाला
اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ						
अल्लाह	और उस का रसूल	और जो लोग ईमान लाए	जो लोग	काइम करते हैं	नमाज़	
وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ زَكَاةُونَ ﴿٥٥﴾ وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ						
और देते हैं	ज़कात	और वह	रुकुअ करने वाले	55	और जो	दोस्त रखते हैं
وَرَسُولَهُ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٥٦﴾						
और उस का रसूल	और जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	तो बेशक	तो	अल्लाह की जमाअत	वह	ग़ालिब (जमा)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ					
तुम्हारा दीन	जो लोग ठहराते हैं	न बनाओ	ईमान लाए (ईमान वाले)	जो लोग	ऐ
هُزُوا وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ					
तुम से कब्ल	किताब दिए गए	वह लोग - जो	से	और खेल	एक मज़ाक
وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾					
57	ईमान वाले	अगर तुम हो	अल्लाह	और डरो	दोस्त और काफ़िर
وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا هُزُواً وَلَعِبًا ذَٰلِكَ					
यह	और खेल	एक मज़ाक	वह उसे ठहराते हैं	नमाज़	तरफ़ (लिए)
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٥٨﴾ قُلْ يَاهُلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنقِمُونَ					
क्या ज़िद रखते हो	ऐ अहले किताब	आप (स) कह दें	58	अक़ल नहीं रखते हैं (बेअक़ल)	लोग इस लिए कि वह
مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلُ					
उस से कब्ल	नाज़िल किया गया	और जो	हमारी तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो
وَأَنْ أَكْثَرُكُمْ فَسِقُونَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذَٰلِكَ					
उस	से	बद तर	तुम्हें बतलाऊँ	क्या	आप कह दें
مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ مَن لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ					
और बना दिया	उस पर	और गुज़ब किया	अल्लाह	उस पर लानत की	जो - जिस
مِنْهُمْ الْقِرْدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتِ أُولَٰئِكَ شَرٌّ					
बद तरीन	वही लोग	तागूत	और गुलामी	और खिन्ज़ीर (जमा)	बन्दर (जमा)
مَكَانًا وَأَضَلُّ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٦٠﴾ وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا					
कहते हैं	तुम्हारे पास आएँ	और जब	60	रास्ता	सीधा
آمَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكَفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ وَاللَّهُ					
और अल्लाह	उस (कुफ़) के साथ	निकले चले गए	और वह	कुफ़ की हालत में	हालांकि वह दाख़िल हुए (आएँ)
أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾ وَتَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يُسَارِعُونَ					
वह भाग दौड़ करते हैं	उन से	बहुत	और तू देखेगा	61	छुपाते
فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَآكَلِهِمُ الشَّحْتِ لِبَيْسٍ مَا كَانُوا					
जो वह	बुरा है	हराम	और उन का खाना	और ज़ियादती	गुनाह
يَعْمَلُونَ ﴿٦٢﴾ لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبُّنِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ					
से	और उल्मा	अल्लाह वाले (दर्वेश)	क्यों उन्हें मना नहीं करते	62	कर रहे हैं
قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَآكَلِهِمُ الشَّحْتِ لِبَيْسٍ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿٦٣﴾					
63	वह कर रहे हैं	जो	बुरा है	हराम	और उन का खाना

ऐ ईमान वालो! उन लोगों को जो तुम्हारे दीन को एक मज़ाक और खेल ठहराते हैं (यानी वह) जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और काफ़िरों को दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (57)

और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो (अज़ान देते हो) तो वह उसे एक मज़ाक और खेल ठहराते हैं, यह इस लिए है कि वह लोग अक़ल नहीं रखते। (58)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! क्या तुम हम से यही ज़िद रखते हो (इन्तिकाम लेते हो) कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो उस से कब्ल नाज़िल किया गया, और यह कि तुम में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (59)

आप (स) कह दें क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ उस से बदतर जज़ा (किस की है) अल्लाह के हाँ (वही) जिस पर अल्लाह ने लानत की और उस पर गुज़ब किया और उन में से बना दिए बन्दर और खिन्ज़ीर, और (उन्होंने) तागूत (सरकश - शैतान) की गुलामी की। वही लोग बदतरीन दरजे में हैं, और सीधे रास्ते से सब से ज़ियादा बहके हुए हैं। (60)

और जब तुम्हारे पास आएँ तो कहते हैं हम ईमान लाए हालांकि आए थे कुफ़ की हालत में और निकले तो कुफ़ के साथ, और अल्लाह खूब जानता है जो वह छुपाते हैं। (61)

और तू देखेगा उन में से बहुत से भाग दौड़ करते हैं गुनाह और ज़ियादती में और हराम खाने में, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (62)

उन्हें क्यों मना नहीं करते दर्वेश और उल्मा गुनाह (की बात) कहने से और उन के हराम खाने से, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (63)

और यहूद कहते हैं अल्लाह का हाथ बन्धा हुआ है (अल्लाह बखील है), बाँध दिए गए उन के हाथ, और जो उन्होंने ने कहा उस से उन पर लानत की गई। बल्कि अल्लाह के हाथ कुशादा हैं, वह खर्च करता है जैसे वह चाहता है, और जो आप (स) पर आप (स) के खर्च की तरफ से नाज़िल किया गया उस से उन में से बहुतों की सरकशी ज़रूर बढ़ेगी और कुफ़, और हम ने उन के अन्दर कियामत के दिन तक के लिए दुश्मनी और बैर डाल दिया है, वह जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है, और वह मुल्क में फ़साद करते हुए दौड़ते हैं (फ़साद बर्पा करते हैं), और अल्लाह फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता। (64)

और अगर अहले किताब ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो हम अलबत्ता उन से उन की बुराइयां दूर कर देते और नेमत के बागात में ज़रूर दाखिल करते। (65)

और अगर वह तौरेत और इंजील काइम रखते और जो उन के खर्च की तरफ से उन पर नाज़िल किया गया तो वह खाते अपने ऊपर से और अपने पाऊँ के नीचे से, उन में से एक जमाअत मियांन रो है, और उन में से अक्सर बुरे काम करते हैं। (66)

ऐ रसूल (स) पहुँचादो जो आप (स) के खर्च की तरफ से आप (स) पर नाज़िल किया गया है, और अगर यह न किया तो (गोया) आप (स) ने उस का पैगाम नहीं पहुँचाया, और अल्लाह आप (स) को लोगों से बचा लेगा, वेशक अल्लाह कौमे कुफ़ार को हिदायत नहीं देता। (67)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! तुम कुछ भी नहीं हो जब तक तुम (न) काइम करो तौरात और इंजील और जो तुम्हारे खर्च की तरफ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और ज़रूर बढ़ जाएगी उन में से अक्सर की सरकशी और कुफ़ उस की वजह से जो आप (स) पर आप (स) के खर्च की तरफ से नाज़िल किया गया है तो आप (स) अफ़सोस न करें (ग़म न खाएं) कौमे कुफ़ार पर। (68)

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلَعْنُوا بِمَا							
उस से जो	और उन पर लानत की गई	उन के हाथ	बाँध दिए जाएं	बन्धा हुआ	अल्लाह का हाथ	यहूद	और कहा (कहते हैं)
قَالُوا بَلْ يَئِذْهُ مَبْسُوطَتْنِ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا							
बहुत से	और ज़रूर बढ़ेगी	वह चाहता है	जैसे	वह खर्च करता है	कुशादा है	उस (अल्लाह) के हाथ	बल्कि उन्होंने ने कहा
مِنْهُمْ مَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا وَالْقَيْنَا بَيْنَهُمُ							
उन के अन्दर	और हम ने डाल दिया	और कुफ़	सरकशी	आप का खर्च	से	आप की तरफ	जो नाज़िल किया गया
الْعَدَاوَةِ وَالْبَغْضَاءِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ كُلَّمَا أَوقَدُوا نَارًا							
आग	भड़काते हैं	जब कभी	कियामत का दिन	तक	और बुग़ज़ (बैर)	दुश्मनी	
لِلْحَرْبِ أَطْفَاَهَا اللَّهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا وَاللَّهُ							
और अल्लाह	फ़साद करते	ज़मीन (मुल्क) में	और वह दौड़ते हैं	अल्लाह	उसे बुझा देता है	लड़ाई की	
لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٦٤﴾ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا							
अलबत्ता हम दूर कर देते	और परहेज़गारी करते	ईमान लाते	अहले किताब	यह कि	और अगर	64	फ़साद करने वाले
عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَادْخَلْنَاهُمْ جَنَّتِ النَّعِيمِ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ							
काइम रखते	वह	और अगर	65	नेमत के बागात	और ज़रूर हम उन्हें दाखिल करते	उन की बुराइयां	उन से
التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أَنْزَلَ إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكْلُوا مِنْ							
से	तो वह खाते	उन का खर्च	से	उन की तरफ (उन पर)	नाज़िल किया गया	और जो	और इंजील
فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ مِنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ وَكَثِيرٌ							
और अक्सर	सीधी राह पर (मियांन रो)	एक जमाअत	उन से	अपने पाऊँ	नीचे	और से	अपने ऊपर
مِنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ ﴿٦٦﴾ يَا أَيُّهَا الرُّسُولُ بَلِّغْ مَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ							
तुम्हारी तरफ (तुम पर)	जो नाज़िल किया गया	पहुँचा दो	रसूल (स)	ऐ	66	जो वह करते हैं	बुरा
مِنْ رَبِّكَ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ							
आप (स) को बचाले गा	और अल्लाह	उस का पैगाम	आप (स) ने पहुँचाया	तो नहीं	यह न किया	और अगर	तुम्हारा खर्च
مِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٦٧﴾ قُلْ							
आप कह दें	67	कौमे कुफ़ार	हिदायत नहीं देता	वेशक अल्लाह	लोग	से	
يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا							
और जो	और इंजील	तौरात	तुम काइम करो	जब तक	किसी चीज़ पर (कुछ भी)	तुम नहीं हो	ऐ अहले किताब
أَنْزَلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ							
आप की तरफ (आप पर)	जो नाज़िल किया गया	उन से	अक्सर	और ज़रूर बढ़ जाएगी	तुम्हारा खर्च	से	तुम्हारी तरफ (तुम पर)
مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾							
68	कौमे कुफ़ार	पर	तो अफ़सोस न करें	और कुफ़	सरकशी	आप के खर्च की तरफ से	

وَقَالَتِ الْيَهُودُ

يَا أَيُّهَا الرُّسُولُ

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئُونَ وَالنَّصَارَى																			
और नसारा		और साबी		यहूदी हुए		और जो लोग		जो लोग ईमान लाए		वेशक									
مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ																			
और न वह		उन पर		तो कोई खौफ नहीं		अच्छे		और उस ने अमल किए		और आखिरत के दिन	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो						
يَحْزَنُونَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَارْسَلْنَا إِلَيْهِمْ																			
उन की तरफ		और हम ने भेजे		बनी इसाईल		पुख्ता अहद		हम ने लिया		वेशक	69	ग़मगीन होंगे							
رُسُلًا ۖ كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى أَنْفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا																			
झुटलाया		एक फ़रीक		उन के दिल		न चाहते थे		उस के साथ जो		कोई रसूल	आया उन के पास	जब भी	रसूल (जमा)						
وَفَرِيقًا يَّقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوا ۖ إِلَّا تَكُونُ فِتْنَةً فَاعْمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ																			
तो		और बहरे हो गए		सो वह अन्धे हुए		कोई ख़राबी		कि न होगी		और उन्होंने ने गुमान किया		70	क़त्ल कर डालते	और एक फ़रीक					
تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِّنْهُمْ ۖ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا																			
जो		देख रहा है		और अल्लाह		उन से		अक्सर		और बहरे होगए		अँधे होगए	फिर	उन की	अल्लाह	तौबा कुबूल की			
يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ																			
इब्ने मरयम		मसीह (अ)		वही		अल्लाह		तहकीक		वह जिन्होंने ने कहा		वेशक काफ़िर हुए	71	वह करते हैं					
وَقَالَ الْمَسِيحُ يَبْنَىٰ إِسْرَءِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ																			
वेशक वह		और तुम्हारा रब		मेरा रब		अल्लाह		इबादत करो		ऐ बनी इसाईल		मसीह (अ)		और कहा					
مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ																			
दोज़ख़		और उस का ठिकाना		जन्नत		उस पर		अल्लाह ने हराम कर दी		तो तहकीक		अल्लाह का		शरीक ठहराए		जो			
وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ																			
तीन का		वेशक अल्लाह		वह लोग जिन्होंने ने कहा		अलबत्ता काफ़िर हुए		72	मददगार		कोई		ज़ालिमों के लिए		और नहीं				
ثَلَاثَةٌ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا إِلَهُ وَاحِدٌ ۚ وَإِنْ لَمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ																			
वह कहते हैं		उस से जो		वह बाज़ न आएँ		और अगर		वाहिद		माबूद		सिवाए		माबूद		कोई	और नहीं	तीसरा (एक)	
لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ أَفَلَا يَتُوبُونَ																			
पस वह क्यों तौबा नहीं करते		73	दर्दनाक		अज़ाब		उन से		जिन्होंने ने कुफ़ किया		ज़रूर पहुँचेगा								
إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٤﴾ مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ																			
इब्ने मरयम		मसीह (अ)		नहीं		74	मेहरबान		बख़्शाने वाला		और अल्लाह	और उस से बख़्शिश मांगते		अल्लाह की तरफ़ (आगे)					
إِلَّا رَسُولٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۖ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَنِ																			
खाते थे		वह दोनों		सिददीका (सच्ची - वली)		और उस की माँ		रसूल		उस से पहले		गुज़र चुके		रसूल		मगर			
الطَّعَامِ ۖ أَنْظِرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ أَنْظِرْ أَنِّي يُؤْفَكُونَ ﴿٧٥﴾																			
75	औन्धे जा रहे हैं		कहाँ (कैसे)		देखो		फिर		आयात (दलाइल)		उन के लिए		हम बयान करते हैं		कैसे		देखो		खाना

वेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और साबी (सितारा परस्त) और नसारा, जो भी ईमान लाए अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर और अच्छे अमल करे तो कोई ख़ौफ़ नहीं उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (69)

वेशक हम ने बनी इस्राईल से पुख्ता अहद लिया और हम ने उन की तरफ़ रसूल भेजे, जब भी उन के पास कोई रसूल आया उस (हुक़्म) के साथ जो उन के दिल न चाहते थे तो एक फ़रीक को झुटलाया और एक फ़रीक को क़त्ल कर डाला, (70)

और उन्होंने ने गुमान किया कि कोई ख़राबी न होगी, सो वह अन्धे हो गए और वहरे हो गए, फिर अल्लाह ने उन्हें माफ़ किया, फिर उन में से अक्सर अन्धे और वहरे हो गए, सो अल्लाह देख रहा है जो वह करते हैं। (71)

वेशक वह काफ़िर हुए जिन्होंने ने कहा तहकीक अल्लाह वही है मसीह (अ) इब्ने मरयम, और मसीह (अ) ने कहा ऐ बनी इस्राईल! अल्लाह की इबादत करो जो मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, वेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो तहकीक अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (72)

अलबत्ता वह लोग काफ़िर हुए जिन्होंने ने कहा वेशक अल्लाह तीन में का एक है। और माबूद वाहिद के सिवा कोई माबूद नहीं, और अगर वह उस से बाज़ न आए जो वह कहते हैं तो उन में से जिन्होंने ने कुफ़ किया उन्हें ज़रूर दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा। (73)

और वह तौबा क्यों नहीं करते अल्लाह के आगे और उस से गुनाहों की बख़्शिश क्यों नहीं मांगते? और अल्लाह बख़्शाने वाला मेहरबान है। (74)

मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) नहीं मगर रसूल (वह सिर्फ़ एक रसूल है) उस से पहले रसूल गुज़र चुके हैं, और उस की माँ सिददीका (सच्ची - वली) है, वह दोनों खाना खाते थे, देखो! हम उन के लिए कैसे दलाइल बयान करते हैं, फिर देखो ये कैसे औन्धे जा रहे हैं? (75)

कह दें: क्या तुम अल्लाह के सिवा उसे पूजते हो जो तुम्हारे लिए मालिक नहीं किसी नुकसान का और न नफा का, और अल्लाह ही सुनने वाला जानने वाला है। (76)

कह दें: ऐ अहले किताब! अपने दीन में नाहक मुवालिगा न करो और उन लोगों की खाहिशात की पैरवी न करो जो उस से कबल गुमराह हो चुके हैं और उन्होंने ने बहुत सों को गुमराह किया और (खुद भी) बहक गए सीधे रास्ते से। (77)

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़ किया वह मलऊन हुए दाऊद (अ) और ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) की ज़बानी, यह इस लिए कि उन्होंने ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (78)

वह एक दूसरे को बुरे काम से जो वह कर रहे थे न रोकते थे, अलबत्ता बुरा है जो वह करते थे। (79)

आप (स) देखेंगे उन में से अक्सर काफ़िरों से दोस्ती करते हैं।

अलबत्ता बुरा है जो आगे भेजा खुद उन्होंने ने अपने लिए कि उन पर अल्लाह ग़ज़वनाक हुआ और वह हमेशा अज़ाब में रहने वाले हैं। (80)

और अगर (काश) वह अल्लाह और रसूल पर ईमान ले आते और उस पर जो उस की तरफ़ नाज़िल किया गया तो उन्हें दोस्त न बनाते लेकिन उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (81)

तुम सब लोगों से ज़ियादा दुश्मन पाओगे अहले ईमान (मुसलमानों) का यहूद को और मुशरिकों को, और अलबत्ता तुम मुसलमानों के लिए दोस्ती में सब से क़रीब पाओगे (उन लोगों को) जिन लोगों ने कहा हम नसारा हैं, यह इस लिए कि उन में अ़लम और दर्वेश है, और यह कि वह तकब्वुर नहीं करते। (82)

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا								
कह दें	क्या तुम पूजते हो	से	अल्लाह के सिवा	जो नहीं	मालिक	तुम्हारे लिए	नुकसान	और न नफा
وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٧٦﴾ قُلْ يَاهَا اَلْكُتُبِ لَا تَغْلُوا فِي								
और अल्लाह	वही	सुनने वाला	जानने वाला	76	कह दें	ऐ अहले किताब	गुलू (मुवालिगा) न करो	में
دِينَكُمْ غَيْرِ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِنْ قَبْلُ								
अपना दीन	नाहक	और न	पैरवी करो	खाहिशात	वह लोग	गुमराह हो चुके	इस से कबल	
وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٧٧﴾ لَعْنِ								
और उन्होंने ने गुमराह किया	बहुत से	और भटक गए	से	सीधा	रास्ता	77	लानत किए गए (मलऊन हुए)	
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى								
जिन लोगों ने कुफ़ किया	से	बनी इस्राईल	पर	ज़वान	दाऊद (अ)	और ईसा (अ)		
ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٧٨﴾ كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ								
इब्ने मरयम	यह	इस लिए कि	उन्होंने ने नाफ़रमानी की	और वह थे	हद से बढ़ते	78	एक दूसरे को न रोकते थे	
عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧٩﴾								
से	बुरे काम	वह करते थे	अलबत्ता बुरा है	जो वह थे	करते	79		
تَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ								
आप (स) देखेंगे	अक्सर	उन से	दोस्ती करते हैं	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	अलबत्ता बुरा है	जो आगे भेजा		
لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ								
अपने लिए	उन की जानें	कि	ग़ज़वनाक हुआ अल्लाह	उन पर	और अज़ाब में	वह		
خَالِدُونَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنْزِلَ								
हमेशा रहने वाले	80	और अगर	वह ईमान लाए	अल्लाह	और रसूल	और जो	नाज़िल किया गया	
إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ								
उस की तरफ़	न	उन्हें बनाते	दोस्त	और लेकिन	अक्सर	उन से		
فَاسْقُونِ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا								
नाफ़रमान	81	तुम ज़रूर पाओगे	सब से ज़ियादा	लोग	दुश्मनी	अहले ईमान (मुसलमानों) के लिए		
إِلَى الْيَهُودِ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً								
यहूद	और जिन लोगों ने शिर्क किया	और अलबत्ता ज़रूर पाओगे	सब से ज़ियादा करीब	दोस्ती				
لِلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَضْرِيْ ذَٰلِكَ بِأَنَّ								
उन के लिए जो	ईमान लाए (मुसलमान)	जिन लोगों ने कहा	हम	नसारा	यह	इस लिए कि		
مِنْهُمْ فَسَيَسِينُ وَرُهْبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٨٢﴾								
उन से	अ़लम	और दर्वेश	और यह कि वह	तकब्वुर नहीं करते	82			

٨٣

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَى أَعْيُنُهُمْ						
और जब	सुनते हैं	जो नाज़िल किया गया	तरफ़	रसूल	तू देखे	उन की आँखें
تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا						
वह पड़ती है	से	आँसू	इस (वजह से)	उन्होंने ने पहचान लिया	हक़	वह हमारे रब
فَاكْتُتِبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨٣﴾ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا						
पस हमें लिख ले	साथ	गवाह (जमा)	83	हम को	हम ईमान न लाएँ	अल्लाह पर
مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٨٤﴾						
से-पर	हक़	और हम तमझ रखते हैं	कि	हमें दाखिल करें	हमारा रब	साथ
فَاتَّبَعَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ						
पस दिए उन को	अल्लाह	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	बागात	वहती है	से	उस के नीचे
فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٥﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا						
उस (उन) में	और यह	जज़ा	नैकोकार (जमा)	85	और जो लोग	उन्होंने ने कुफ़ किया
بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٨٦﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا						
हमारी आयात	यही लोग	साथी (वाले)	दोड़ख	86	ऐ	वह लोग जो
لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ						
न हराम ठहराओ	पाकीज़ा चीज़ें	जो	हलाल की अल्लाह ने	तुम्हारे लिए	और हद से न बढ़ो	बेशक अल्लाह
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٨٧﴾ وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا						
नहीं पसन्द करता	हद से बढ़ने वाले	87	और खाओ	उस से जो	तुम्हें दिया अल्लाह ने	पाकीज़ा
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ						
और डरो अल्लाह से	वह जिस	तुम	उस को	मानते हो	88	नहीं
بِالْعَوْفِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَدْتُمُ الْإِيمَانَ						
में-पर	तुम्हारी कसमें	और लेकिन	मुआख़ज़ा करता है तुम्हारा	उस पर जो	मज़बूत बांधा	कसम
فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشْرَةِ مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعَمُونَ						
सो उस का कफ़ारा	खाना खिलाना	दस	मोहताज (जमा)	से-का	औसत	जो
أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ						
अपने घर वाले	या उन्हें कपड़े पहनाना	या आज़ाद करना	एक गर्दन	पस जो	न पाए	तो रोज़ा रखे
ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ذَلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ وَاحْفَظُوا						
तीन दिन	यह	कफ़ारा	तुम्हारी कसमें	जब	तुम कसम खाओ	और हिफाज़त करो
أَيْمَانَكُمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٨٩﴾						
अपनी कसमें	इसी तरह	बयान करता है अल्लाह	तुम्हारे लिए	अपने अहकाम	ताकि तुम	शुक्र करो

٨٤

और जब वह सुनते हैं जो रसूल (स) की तरफ़ नाज़िल किया गया, तू देखे कि उन की आँखें आँसूओं से वह पड़ती हैं (उबल पड़ती हैं) इस वजह से कि उन्होंने ने हक़ को पहचान लिया, वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, पस हमें गवाहों (ईमान लाने वालों) के साथ लिख ले। (83)

और हम को क्या हुआ कि हम ईमान न लाएँ अल्लाह पर और उस हक़ पर जो हमारे पास आया, और हम तमझ रखते हैं कि हमें दाखिल करें हमारा रब नेक लोगों के साथ। (84)

पस जो उन्होंने ने कहा उस के बदले अल्लाह ने उन्हें बागात दिए जिन के नीचे नहरें वहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और यह नेकोकारों की जज़ा है। (85)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और हमारी आयात को झुटलाया, यही लोग दोड़ख वाले हैं। (86)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए: पाकीज़ा चीज़ें जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की वह हराम न ठहराओ, और हद से न बढ़ो, बेशक अल्लाह नहीं पसन्द करता हद से बढ़ने वालों को। (87)

और जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाकीज़ा खाओ और अल्लाह से डरो वह जिस को तुम मानते हो। (88)

अल्लाह तुम्हारा मुआख़ज़ा नहीं करता (नहीं पकड़ता) तुम्हारी वेहूदा कसमों पर लेकिन तुम्हारा मुआख़ज़ा करता है (पकड़ता है) जिस कसम को तुम ने मज़बूत बांधा (पुख़ता कसम पर), सो उस का कफ़ारा दस मोहताजों को खाना खिलाना है औसत (दरजे) का जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उन्हें कपड़े पहनाना या एक गर्दन (गुलाम) आज़ाद करना, पस जो यह न पाए वह तीन दिन के रोज़े रखे, यह तुम्हारी कसमों का कफ़ारा है जब तुम कसम खाओ, और अपनी कसमों की हिफाज़त करो, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान करता है ताकि तुम शुक्र करो। (89)

ऐ ईमान वालो! इस के सिवा नहीं कि शराब, जुआ और बुत और पांसे (फ़ाल के तीर) नापाक है, शैतानी काम हैं, सो उन से बचो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी और नजात) पाओ। (90)

इस के सिवा नहीं कि शैतान चाहता है कि तुम्हारे दरमियान शराब और जुए से दुश्मनी डाले और तुम्हें रोके अल्लाह की याद से और नमाज़ से, पस क्या तुम बाज़ आओगे? (91)

और तुम इताअत करो अल्लाह की और रसूल (स) की, और बचते रहो, फिर अगर तुम फिर जाओगे तो जान लो कि हमारे रसूल (स) के ज़िम्मे सिर्फ़ खोल कर (बाज़ेह तौर पर) पहुँचा देना है। (92)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए उन पर उस में कोई गुनाह नहीं जो वह खा चुके जबकि (आइन्दाह) उन्होंने ने परहेज़ किया और ईमान लाए और नेक अमल किए, फिर वह डरे और ईमान लाए, फिर वह डरे और उन्होंने ने नेकोकारी की, और अल्लाह नेकोकारों को दोस्त रखता है। (93)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें ज़रूर आजमाएगा किसी क़द्र (उस) शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुँचते हैं ताकि अल्लाह मालूम कर ले कौन उस से बिन देखे डरता है, सो इस के बाद जिस ने ज़ियादती की उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (94)

ऐ ईमान वालो! न मारो शिकार जब कि तुम हालते एहराम में हो, और तुम में से जो उस को जान बूझ कर मारे तो जो वह मारे उस के बराबर बदला है मवेशियों में से, जिस का तुम में से दो मोतबर फ़ैसला करें, खाने क़ड़ाब नियाज़ पहुँचाए या (इस का) कफ़ारा है खाना चन्द मोहताजों का, या उस के बराबर रोज़े रखना ताकि वह अपने किए की सज़ा चखे, अल्लाह ने माफ़ किया जो पहले हो चुका और जो फिर करे तो अल्लाह उस से बदला लेगा, और अल्लाह ग़ालिब बदला लेने वाला है। (95)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ					
और पांसे	और बुत	और जुआ	इस के सिवा नहीं कि शराब	ईमान वालो	ऐ
رِجْسٍ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ٩٠ إِنَّمَا					
इस के सिवा नहीं	90	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	सो उन से बचो	शैतान
नापाक	से	काम	शैतान	चाहता है	क़ि डाले
يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقَعَ بَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ					
शराब	में-से	और बैर	दुश्मनी	तुम्हारे दरमियान	कि डाले
وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنتَهُونَ ٩١					
और जुआ	और तुम्हें रोके	से	अल्लाह की याद	और नमाज़ से	पस क्या
91	तुम	बाज़ आओगे	और तुम्हें रोके	तुम	पस क्या
وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا إِنَّمَا					
और इताअत करो	अल्लाह	और इताअत करो	रसूल	और बचते रहो	और अगर
सिर्फ़	तो जान लो	तुम फिर जाओगे	फिर अगर	और बचते रहो	और अगर
عَلَى رَسُولِنَا الْبَلْغُ الْمُبِينُ ٩٢ لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ					
पर (ज़िम्मा)	हमारा रसूल (स)	पहुँचा देना	खोल कर	92	नहीं
पर	हमारा रसूल (स)	पहुँचा देना	खोल कर	92	नहीं
جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ					
कोई गुनाह	में-जो	वह खा चुके	जब	उन्होंने ने परहेज़ किया	और वह ईमान लाए
और उन्होंने ने अमल किए नेक	और उन्होंने ने अमल किए नेक	और वह ईमान लाए	उन्होंने ने परहेज़ किया	जब	वह खा चुके
ثُمَّ اتَّقُوا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقُوا وَاحْسِنُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ٩٣					
और फिर वह डरे	और ईमान लाए	और फिर वह डरे	वह डरे	और उन्होंने ने नेकोकारी की	और अल्लाह
93	और ईमान लाए	और फिर वह डरे	वह डरे	और उन्होंने ने नेकोकारी की	और अल्लाह
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَبْلُوَكُمُ اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالَهُ أَيْدِيكُمْ					
ऐ	ईमान वालो	ज़रूर तुम्हें आजमाएगा अल्लाह	कुछ (किसी क़द्र)	से	शिकार
तुम्हारे हाथ	उस तक पहुँचते हैं	शिकार	से	कुछ (किसी क़द्र)	ज़रूर तुम्हें आजमाएगा अल्लाह
وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ					
और तुम्हारे नेज़े	ताकि अल्लाह मालूम करले	कौन	उस से डरता है	बिन देखे	सो जो-जिस
इस के बाद	ज़ियादती की	जिस के बाद	ज़ियादती की	जिस के बाद	ज़ियादती की
فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ٩٤ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ					
और उसके लिए	अज़ाब	दर्दनाक	94	ऐ	ईमान वालो
और तुम्हारे नेज़े	ताकि अल्लाह मालूम करले	कौन	उस से डरता है	बिन देखे	सो जो-जिस
حُرْمٌ وَمَنْ قَتَلَهُ مِنْكُمْ مُتَعَمِّدًا فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ					
हालते एहराम में	और जो	उस को मारे	तुम में से	जान बूझ कर	तो बदला
मवेशी से	जो वह मारे	बराबर	तो बदला	जान बूझ कर	तो बदला
يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا بَلِغَ الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ					
फ़ैसला करें	उस का	दो मोतबर	तुम से	नियाज़	पहुँचाए
खाना	या कफ़ारा	क़ड़ाब	पहुँचाए	नियाज़	पहुँचाए
مَسْكِينٍ أَوْ عَدْلٌ ذَلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهُ عَفَا اللَّهُ عَمَّا سَلَفُ					
मोहताज (जमा)	या बराबर	उस	रोज़े	ताकि चखे	अपने काम (किए) की सज़ा
पहले हो चुका	उस से जो	अल्लाह ने माफ़ किया	अपने काम (किए) की सज़ा	ताकि चखे	रोज़े
وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ٩٥					
और जो	फिर करे	तो अल्लाह बदला लेगा	उस से	और अल्लाह	ग़ालिब
95	और जो	फिर करे	तो अल्लाह बदला लेगा	उस से	और अल्लाह

أَحْلَلْ لَكُمْ صَيْدَ الْبَحْرِ وَطَعَامَهُ مَتَاعًا لَكُمْ وَلِلْسَيَّارَةِ وَحَرَّمَ							
और हलल किया गया	और मूसाफ़िरोँ के लिए	तुम्हारे लिए	फाइदा	और उस का खाना	दर्या का शिकार	तुम्हारे लिए	हलल किया गया
عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ							
उस की तरफ़	वह जो	अल्लाह	और डरो	हालते एहराम में	जब तक तुम हो	खुशकी का शिकार	तुम पर
تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَمًا لِلنَّاسِ							
लोगों के लिए	क़ियाम का वाइस	एहतिराम वाला घर	कअ़बा	अल्लाह	बनाया	96	तुम जमा किए जाओगे
وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ذَلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ							
कि अल्लाह	ताकि तुम जान लो	यह	और पट्टे पड़े हुए जानवर	और कुर्बानी	और हुर्मत वाले महीने		
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ							
चीज़	हर	और यह कि अल्लाह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	उसे मालूम है
عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾ اَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ							
बख़्शने वाला	और यह कि अल्लाह	अज़ाब	सख़्त	अल्लाह	कि	जान लो	97
رَحِيمٌ ﴿٩٨﴾ مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ							
जो तुम ज़ाहिर करते हो	जानता है	और अल्लाह	मगर पहुँचा देना	रसूल (स) पर-रसूल के ज़िम्मे	नहीं	98	मेहरबान
وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾ قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ							
खाह	और पाक	नापाक	बराबर नहीं	कह दीजिए	99	तुम छुपाते हो	और जो
أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَأُولَى الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ							
ताकि तुम	ऐ अक़ल वालो	सो डरो अल्लाह से	नापाक	कसूरत	तुम्हें अच्छी लगे		
تُفْلِحُونَ ﴿١٠٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءٍ إِنْ تُبَدَ							
जो ज़ाहिर की जाएँ	चीज़ें	से-मुतअल्लिक	न पूछो	ईमान वाले	ऐ	100	फ़लाह पाओ
لَكُمْ تَسْأَلُكُمْ وَإِنْ تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ تُبَدَ لَكُمْ							
ज़ाहिर कर दी जाएंगी तुम्हारे लिए	नाज़िल किया जा रहा है कुरआन	जब	उनके मुतअल्लिक	तुम पूछोगे	और अगर	तुम्हें बुरी लगे	तुम्हारे लिए
عَفَا اللَّهُ عَنْهَا وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٠١﴾ قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ							
एक कौम	उस के मुतअल्लिक पूछा	101	बुर्दवार	बख़्शने वाला	और अल्लाह	उस से	अल्लाह ने दरगुज़र की
مِّن قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كُفْرِينَ ﴿١٠٢﴾ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ							
बहीरा	अल्लाह	नहीं बनाया	102	इन्कार करने वाले (मुन्किर)	उस से	वह हो गए	तुम से क़व्ल
وَلَا سَابِئَةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا							
जिन लोगों ने कुफ़ किया	और लेकिन	और न हाम	और न वसीला	और न साइबा			
يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَكَثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٣﴾							
103	नहीं रखते अक़ल	और उन के अक़सर	झूटे	अल्लाह पर	वह बुहतान बान्धते हैं		

तुम्हारे लिए हलल किया गया दर्या का शिकार और उस का खाना तुम्हारे फाइदे के लिए है और मूसाफ़िरोँ के लिए, और तुम पर खुशकी (जंगल) का शिकार हलल किया गया जब तक तुम हालते एहराम में हो, और अल्लाह से डरो जिस की तरफ़ तुम जमा किए जाओगे। (96)

अल्लाह ने बनाया कअ़बा एहतिराम वाला घर, लोगों के लिए क़ियाम का वाइस, और हुर्मत वाले महीने और कुर्बानी और गले में पट्टा (कुर्बानी की अ़लामत) पड़े हुए जानवर। यह इस लिए है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (97)

जान लो कि अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है और यह कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (98)

रसूल (स) के ज़िम्मे सिर्फ़ (पैग़ाम) पहुँचा देना है, और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (99)

कह दीजिए! बराबर नहीं नापाक और पाक, खाह तुम्हें नापाक की कसूरत अच्छी लगे, सो ऐ अक़ल वालो! अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी और नजात) पाओ। (100)

ऐ ईमान वालो! न पूछो उन चीज़ों के मुतअल्लिक जो तुम्हारे लिए ज़ाहिर की जाएँ तो तुम्हें बुरी लगे, और अगर उन के मुतअल्लिक (ऐसे वक़्त) पूछोगे जब कुरआन नाज़िल किया जा रहा है तो तुम्हारे लिए ज़ाहिर कर दी जाएगी, अल्लाह ने उस से दरगुज़र की, और अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दवार है। (101)

इसी किस्म के सवालात तुम से क़व्ल एक कौम ने पूछा, फिर वह उस से मुन्किर हो गए। (102)

अल्लाह ने नहीं बनाया बहीरा और न साइबा, और न वसीला और न हाम, लेकिन जिन लोगों ने कुफ़ किया वह अल्लाह पर झूट बान्धते हैं, और उन के अक़सर अक़ल नहीं रखते। (103)

और जब उन से कहा जाए आओ उस की तरफ जो अल्लाह ने नाज़िल किया और रसूल (स) की तरफ (तो) वह कहते हैं हमारे लिए वह काफी है जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, तो क्या (उस सूरत में भी कि) उन के बाप दादा कुछ न जानते हों और न हिदायत याफ़ता हों। (104)

ऐ ईमान वालो! तुम पर अपनी जानों (की फ़िक्र लाज़िम) है, जब तुम हिदायत पर हो तो जो गुमराह हुआ तुम्हें नुक्सान न पहुँचा सकेगा। तुम सब को अल्लाह की तरफ लौटना है, फिर वह तुम्हें ज़तला देगा जो तुम करते थे। (105)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे दरमियान गवाही (का तरीका यह है) कि जब तुम में से किसी को मौत आए वसीयत के वक़्त तुम में से दो मोतबर शख्स हों या तुम्हारे सिवा दो और, अगर तुम ज़मीन में सफ़र कर रहे हो, फिर तुम्हें मौत की सुसीबत पहुँचे, उन दोनों को रोक लो नमाज़ के बाद, अगर तुम्हें शक हो तो दोनों अल्लाह की क़सम खाएँ कि हम उस के इवज़ कोई कीमत मोल नहीं लेते खाह रिशतेदार हों, और हम अल्लाह की गवाही नहीं छुपाते (वरना) हम वेशक गुनाहगारों में से हैं। (106)

फिर अगर उस की ख़बर हो जाए कि वह दोनों गुनाह के सज़ावार हुए हैं तो उन की जगह उन में से दो और खड़े हों जिन का हक़ मारना चाहा जो सब से ज़ियादा (मय्यत के) करीब हों, फिर वह अल्लाह की क़सम खाएँ कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़ियादा सही है और हम ने ज़ियादती नहीं की (वरना) उस सूरत में हम वेशक ज़ालिमों में से होंगे। (107)

यह करीब तर है कि वह गवाही उस के सही तरीके पर अदा करें या वह डरें कि (हमारी) क़सम उन की क़सम के बाद रद्द कर दी जाएगी, और अल्लाह से डरो और सुनो और अल्लाह नहीं हिदायत देता नाफ़रमान कौम को। (108)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا									
वह कहते हैं	रसूल	और तरफ़	अल्लाह ने नाज़िल किया	जो	तरफ़	आओ तुम	उन से	कहा जाए	और जब
حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ									
जानते	न	उन के बाप दादा	क्या खाह हों	अपने बाप दादा	उस पर	जो हम ने पाया	हमारे लिए काफी		
شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٠٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسُكُمْ									
अपनी जानें	तुम पर	ईमान वाले	ऐ	104	और न हिदायत याफ़ता हों			कुछ	
لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيَنْبِئُكُمْ									
फिर वह तुम्हें जतला देगा	सब	तुम्हें लौटना है	अल्लाह की तरफ़	हिदायत पर हो	जब	गुमराह हुआ	जो	न नुक्सान पहुँचाएगा	
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنَكُمْ إِذَا									
जब	तुम्हारे दरमियान	गवाही	ईमान वाले	ऐ	105	तुम करते थे		जो	
خَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ									
तुम से	इन्साफ़ वाले (मोतबर)	दो	वसीयत	वक़्त	मौत	तुम में से किसी को		आए	
أَوْ آخَرٍ مِّنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ									
फिर तुम्हें पहुँचे	ज़मीन में	सफ़र कर रहे हो	तुम	अगर	तुम्हारे सिवा	से	और दो	या	
مُصِيبَةُ الْمَوْتِ تَحْسِبُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمْنَ بِاللَّهِ									
अल्लाह की	दोनों कसम खाएँ	नमाज़	बाद	उन दोनों को रोक लो		मौत	मुसीबत		
إِنْ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِ بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَلَا نَكْتُمُ									
और हम नहीं छुपाते	रिशतेदार	खाह हों	कोई कीमत	इस के इवज़	हम मोल नहीं लेते	तुम्हें शक हो	अगर		
شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذَا لَمِنَ الْأَثِمِينَ ﴿١٠٦﴾ فَإِنْ غُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا									
दोनों सज़ावार हुए	कि वह दोनों	उस पर	खबर हो जाए	फिर अगर	106	गुनाहगारों	से	उस वक़्त	वेशक हम
إِثْمًا فَاخْرَجْنِ يَقُومُنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمْ									
उन पर	मुसतहिक़ (जिन का हक़ मारना चाहा)	वह लोग	से	उन की जगह	खड़े हों	तो दो और	गुनाह		
الْأُولَيْنِ فَيُقْسِمْنَ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا									
उन दोनों की गवाही	से	ज़ियादा सही	कि हमारी गवाही	अल्लाह की	फिर वह कसम खाएँ	सब से ज़ियादा करीब			
وَمَا اعْتَدَيْنَا إِنَّا إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٧﴾ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ									
कि	ज़ियादा करीब	यह	107	ज़ालिम (जमा)	अलबत्ता - से	उस सूरत में	वेशक हम	हम ने ज़ियादती की	और नहीं
يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ وَجْهٍ أَوْ يَخَافُوا أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ									
उन की कसम	बाद	कसम	कि रद्द कर दीजाएगी	वह डरें	या	उस का रख (सही तरीका)	पर	वह लाएँ (अदा करें) गवाही	
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿١٠٨﴾									
108	नाफ़रमान (जमा)	कौम	नहीं हिदायत देता	और अल्लाह	और सुनो		और डरो अल्लाह से		

يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ قَالُوا لَا عِلْمَ							
नहीं खबर	वह कहेंगे	तुम्हें जवाब मिला	क्या	फिर कहेगा	रसूल (जमा)	जमा करेगा अल्लाह	दिन
لَنَا إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ (109) إِذْ قَالَ اللَّهُ يَعْيسَى ابْنُ مَرْيَمَ							
इवने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)	अल्लाह ने कहा	जब	109	छुपी बातें	जानने वाला	तू वेशक तू हमें
اذْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالِدَتِكَ إِذْ أَيَّدْتُكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ							
रुहे पाक से	जब मैं ने तेरी मदद की	तेरी (अपनी) वालिदा	और पर	तुझ (आप) पर	मेरी नेमत	याद कर	
تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتَابَ							
किताब	तुझे सिखाई	और जब	और बड़ी उमर	पन्धोड़े में	लोग	तू बातें करता था	
وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ							
मिट्टी	से	तू बनाता था	और जब	और इन्जील	और तौरात	और हिक्मत	
كَهَيَّةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنْفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي							
मेरे हुक्म से	उड़ने वाला	तो वह हो जाता	फिर फूंक मारता था उस में	मेरे हुक्म से	परिन्दे की सूरत		
وَتُبْرِئُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي							
मेरे हुक्म से	मुर्दा	निकाल खड़ा करता	और जब	मेरे हुक्म से	और कोढ़ी	मादरज़ाद अन्धा	और शिफा देता
وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُم بِالْبَيِّنَاتِ							
निशानियों के साथ	जब तू उन के पास आया	तुझ से	बनी इस्राईल	मैं ने रोका	और जब		
فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ (110)							
110	खुला	जादू	मगर (सिर्फ)	यह	नहीं	उन से	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)
وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّنَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرُسُولِي قَالُوا							
उन्होंने ने कहा	और मेरे रसूल (अ) पर	ईमान लाओ मुझ पर	कि	हवारी (जमा)	तरफ़	मैं ने दिल में डाल दिया	और जब
أَمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ (111) إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ							
हवारी (जमा)	जब कहा	111	फरमांवरदार	कि वेशक हम	और आप गवाह रहें	हम ईमान लाए	
يَعْيسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنْزِلَ							
उतारे	कि वह	तुम्हारा रब	कर सकता है	क्या	इवने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)	
عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ							
तुम हो	अगर	अल्लाह से डरो	उस ने कहा	आस्मान	से	खान	हम पर
مُؤْمِنِينَ (112) قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا							
हमारे दिल	और मुत्मईन हों	उस से	हम खाएं	कि	हम चाहते हैं	उन्होंने ने कहा	112 मोमिन (जमा)
وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَّقَتْنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ (113)							
113	गवाह (जमा)	से	उस पर	और हम रहें	तुम ने हम से सच कहा	कि	और हम जान लें

अल्लाह जिस दिन रसूलों को जमा करेगा, फिर कहेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था? वह कहेंगे हमें खबर नहीं, वेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। (109)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इवने मरयम (अ)! मेरी नेमत अपने ऊपर और अपनी वालिदा पर याद करो जब मैं ने रुहे पाक (जिब्राईल) से तुम्हारी मदद की, तुम लोगों से पन्धोड़े में और बुढ़ापे में बातें करते थे, और जब मैं ने तुम्हें सिखाई किताब और हिक्मत और तौरात और इन्जील, और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी से परिन्दे की सूरत बनाते थे, फिर उस में फूंक मारते थे तो वह हो जाता मेरे हुक्म से उड़ने वाला, और तुम मादरज़ाद अन्धे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से शिफा देते थे, और जब तुम मुर्दे को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे, और जब मैं ने बनी इस्राईल को तुम से रोका जब तुम खुली निशानियों के साथ उन के पास आए तो काफ़िरों ने उन में से कहा यह सिर्फ़ खुला जादू है। (110)

और जब मैं ने हवारियों के दिल में डाल दिया कि मुझ पर और मेरे रसूल (अ) पर ईमान लाओ, उन्होंने ने कहा हम ईमान लाए और आप गवाह रहें वेशक हम फरमांवरदार हैं। (111)

जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा इवने मरयम (अ)! क्या तेरा रब यह कर सकता है कि हम पर आस्मान से खान उतारे? उस ने कहा अल्लाह से डरो अगर तुम मोमिन हो। (112)

उन्होंने ने कहा हम चाहते हैं कि उस में से खाएं और हमारे दिल मुत्मईन हों और हम जान लें कि तुम ने हम से सच कहा और हम उस पर गवाह रहें। (113)

ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) ने कहा ऐ अल्लाह! हमारे रब! हम पर आस्मान से खान उतार कि हमारे पहलों और पिछलों के लिए ईद हो और तेरी तरफ से निशानी हो, और हमें रोज़ी दे, तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (114)

अल्लाह ने कहा बेशक मैं वह तुम पर उतारूंगा। फिर उस के बाद तुम में से जो नाशुक्री करेगा तो मैं उस को ऐसा अज़ाब दूंगा जो न अज़ाब दूंगा जहान वालों में से किसी को। (115)

और जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ)! क्या तू ने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा दो माबूद ठहरा लो, उस ने कहा तू पाक है, मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं (ऐसी बात) कहूँ जिस का मुझे हक़ नहीं। अगर मैं ने यह कहा होता तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता, तू जानता है जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो तेरे दिल में है। बेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। (116)

मैं ने उन्हें नहीं कहा मगर सिर्फ़ वह जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है, और मैं जब तक उन में रहा उन पर ख़बरदार (बाख़बर) था। फिर जब तू ने मुझे उठा लिया तो उन पर तू निगरान था और तू हर शै से बाख़बर है। (117)

अगर तू उन्हें अज़ाब दे तो बेशक वह तेरे बन्दे हैं, और अगर तू बख़्श दे उन को तो बेशक तू ग़ालिब हिक्मत वाला है। (118)

अल्लाह ने फ़रमाया यह दिन है कि सच्चों को नफ़ा देगा उन का सच, उन के लिए बागात हैं जिन के नीचे नेहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, अल्लाह राज़ी हुआ उन से और वह राज़ी हुए उस से, यह बड़ी कामयाबी है। (119)

अल्लाह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और वह हर शै पर कादिर है। (120)

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ									
आस्मान	से	खान	हम पर	उतार	हमारे रब	ऐ अल्लाह	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)	कहा
تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ									
और तू	और हमें रोज़ी दे	तुझ से	और निशानी	और हमारे पिछले	हमारे पहलों के लिए	ईद	हमारे लिए	हो	
خَيْرُ الرُّزْقَيْنِ ۚ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۖ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدَ									
बाद	नाशुक्री करेगा	फिर जो	तुम पर	वह उतारूंगा	बेशक मैं	कहा अल्लाह ने	114	रोज़ी देने वाला	बेहतर
مِنْكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ ۚ									
115	जहान वाले	से	किसी को	अज़ाब दूंगा	न	उसे अज़ाब दूंगा ऐसा अज़ाब	तो मैं	तुम से	
وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَعْيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ءَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي									
मुझे ठहरा लो	लोगों से	तू ने कहा	क्या तू	इब्ने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)	अल्लाह ने कहा	और जब		
وَأُمِّي إِلَهَيْنِ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ قَالَ سُبْحَنَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ									
मैं कहूँ	कि	मेरे लिए	है	नहीं	तू पाक है	उस ने कहा	अल्लाह के सिवा	से	दो माबूद और मेरी माँ
مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ إِن كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۖ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي									
मेरा दिल	में	जो	तू जानता है	तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता	मैं ने यह कहा होता	अगर	हक़	मेरे लिए	नहीं
وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۚ مَا قُلْتُ لَهُمْ									
उन्हें	मैं ने नहीं कहा	116	छुपी बातें	जानने वाला	तू	बेशक तू	तेरे दिल में	जो	और मैं नहीं जानता
إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنْ أَعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ									
उन पर	और मैं था	और तुम्हारा रब	मेरा रब	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि	उस का	जो तू ने मुझे हुक्म दिया	मगर	
شَهِيدًا ۚ مَا دُمْتُ فِيهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ									
उन पर	निगरान	तू	तो था	तू ने मुझे उठा लिया	फिर जब	उन में	जब तक मैं रहा	ख़बरदार	
وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۚ إِنَّ تُعَذِّبُهُمْ فَإِنَّهُمْ عَبَادُكَ ۚ وَإِنْ									
और अगर	तेरे बन्दे	तो बेशक वह	तू उन्हें अज़ाब दे	अगर	117	बाख़बर	हर शै	पर-से	और तू
تَغْفِرَ لَهُمْ فَاِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۚ قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ									
नफ़ा देगा	दिन	यह	अल्लाह ने फ़रमाया	118	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तू	तो बेशक तू	उन को
الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ									
हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती है	बागात	उन के लिए	उन का सच	सच्चे		
فِيهَا أَبَدًا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۚ									
119	बड़ी	कामयाबी	यह	उस से	और वह राज़ी हुए	उन से	अल्लाह राज़ी हुआ	हमेशा	उन में
لِلَّهِ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ									
120	कुदरत वाला - कादिर	हर शै	पर	और वह	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	बादशाहत आस्मानो की	अल्लाह के लिए

١٥
ع
٥

١٦
ع
٦

آيَاتُهَا ١٦٥ ﴿٦﴾ سُورَةُ الْأَنْعَامِ ﴿٦﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢٠									
रुकुआत 20				(6) सूरतुल अनआम मवेशी			आयात 165		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ									
अन्धेरों		और बनाया		और ज़मीन		आस्मान (जमा)		पैदा किया वह जिस ने तमाम तारीफें अल्लाह के लिए	
وَالنُّورِ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِي									
जिस ने		वह		1		बराबर करते हैं		अपने रब के साथ कुफ़ किया (काफ़िर) जिन्होंने ने फिर और रौशनी	
خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهُ ثُمَّ أَنْتُمْ									
तुम		फिर		उस के हैं		मुक़र्रर		और एक वक़्त एक वक़्त मुक़र्रर किया फिर मिट्टी से तुम्हें पैदा किया	
تَمْتَرُونَ ﴿٢﴾ وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمُوتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ									
तुम्हारा बातिन		वह जानता है		ज़मीन		और में		आस्मान (जमा) में अल्लाह और वह 2 शक करते हो	
وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ﴿٣﴾ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ									
निशानियाँ		से		निशानी		से - कोई		और उन के पास नहीं आई 3 जो तुम कमाते हो और जानता है और तुम्हारा ज़ाहिर	
رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤﴾ فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ									
उन के पास आया		जब		हक़ को		पस वेशक उन्होंने ने झुटलाया		4 मुँह फेरने वाले उस से होते हैं वह मगर उन का रब	
فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٥﴾ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ									
कितनी		क्या उन्होंने ने नहीं देखा		5		मज़ाक़ उड़ाते		उस का जो वह थे ख़बर (हकीकत) उन के पास आजाएगी सो जल्द	
أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ مَكَّنَّهِمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمْكِنْ لَكُمْ									
तुम्हें		नहीं जमाया		जो		ज़मीन (मुल्क) में		हम ने उन्हें जमा दिया था उम्मतें से उन से क़व्ल से हम ने हलाक कर दी	
وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ مِدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِنْ									
से		बहती है		नहरें		और हम ने बनाई		मूसलाधार उन पर बादल और हम ने भेजा	
تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ﴿٦﴾									
6		दूसरी		उम्मतें		उन के बाद		से और हम ने खड़ी की उन के गुनाहों के सबब फिर हम ने उन्हें हलाक किया उन के नीचे	
وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ									
अलबत्ता कहेंगे		अपने हाथों से		फिर उसे छू लें		कागज़		में कुछ लिखा हुआ तुम पर और अगर हम उतारें	
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾ وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ									
क्यों नहीं उतारा गया		और कहते हैं		7		खुला		जादू मगर नहीं यह जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	
عَلَيْهِ مَلَكٌ وَلَوْ أُنْزِلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُونَ ﴿٨﴾									
8		उन्हें मोहलत न दी जाती		फिर		काम		तो तमाम हो गया होता फरिश्ता हम उतारते और अगर फ़रिश्ता उस पर	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और अन्धेरों और रौशनी को बनाया, फिर काफ़िर अपने रब के साथ बराबर करते हैं (औरों को बराबर ठहराते हैं)। (1)

वह जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर ज़िन्दगी की मुददत मुक़र्रर कि, और उस के हाँ एक वक़्त (क़ियामत का) मुक़र्रर है, फिर तुम शक करते हो। (2)

और वही है अल्लाह आस्मानों में और ज़मीन में, वह तुम्हारा बातिन और तुम्हारा ज़ाहिर जानता है और जानता है जो तुम कमाते हो (करते हो)। (3)

और उन के पास नहीं आई उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी मगर वह उस से मुँह फेर लेते हैं। (4)

पस वेशक उन्होंने ने हक़ को झुटलाया जब उन के पास आया। सो जल्द ही उस की हकीकत उन के सामने आजाएगी जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (5)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा? हम ने उन से क़व्ल कितनी उम्मतें हलाक की? हम ने उन्हें मुल्क में जमाया था (इक़्तिदार दिया था) जितना तुम्हें नहीं जमाया (इक़्तिदार दिया) और हम ने उन पर मूसलाधार (बरस्ता) बादल भेजा, और हम ने नहरें बनाई जो उन के नीचे बहती थीं, फिर हम ने उन के गुनाहों के सबब उन्हें हलाक किया और उन के बाद हम ने दूसरी उम्मतें खड़ी की (वदल दी)। (6)

और अगर हम उतारें तुम पर कागज़ में लिखा हुआ, फिर वह उसे अपने हाथों से छू (भी) लें। अलबत्ता काफ़िर कहेंगे यह नहीं है मगर (सिर्फ़) खुला जादू। (7)

और कहते हैं उस पर फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया? और अगर हम फ़रिश्ता उतारते तो काम तमाम हो गया होता, फिर उन्हें मोहलत न दी जाती। (8)

और अगर हम उसे फ़रिश्ता बनाते तो हम उसे आदमी (ही) बनाते, और हम उन पर शुबा डालते (जिस में वह अब) पड़ रहे हैं। (9)

और अल्वत्ता आप (स) से पहले रसूलों के साथ हँसी की गई, तो घेर लिया उन में से हँसी करने वालों को (उस चीज़ ने) जिस पर वह हँसी करते थे। (10)

आप (स) कह दें मुल्क में सैर करो (चल फिर कर देखो) फिर देखो झुटलाने वालों का अन्जाम कैसा हुआ? (11)

आप (स) पूछें किस के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है? कह दें (सब) अल्लाह के लिए है, अल्लाह ने अपने ऊपर रहमत लिख ली है (अपने ज़िम्में ले ली है), क़ियामत के दिन तुम्हें ज़रूर जमा करेगा जिस में कोई शक नहीं, जिन लोगों ने अपने आप को ख़सारे में डाला तो वही ईमान नहीं लाएंगे। (12)

और उस के लिए है जो बस्ता है रात में और दिन में, और वह सुनने वाला जानने वाला है। (13)

आप (स) कह दें क्या मैं अल्लाह के सिवाए (किसी और को) कारसाज़ बनाऊँ? (जो) आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला है, वह (सब को) ख़िलाता है और वह खुद नहीं खाता। आप (स) कह दें वेशक मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहला हो जाऊँ जिस ने हुक्म माना, और तुम हरगिज़ शिर्क करने वालों से न होना। (14)

आप (स) कह दें वेशक अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (15)

उस दिन जिस से (अज़ाब) फेर दिया जाए, तहक़ीक़ उस पर अल्लाह ने रहम किया और यह खुली कामयाबी है। (16)

और अगर अल्लाह तुम्हें सख़्ती पहुँचाए तो कोई दूर करने वाला नहीं उस को उस के सिवा, और अगर वह कोई भलाई पहुँचाए तुम्हें तो वह हर शै पर कादिर है। (17)

और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है, और वह हिक्मत वाला (सब की) ख़बर रखने वाला है। (18)

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم مَّا يَلِبَسُونَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ اسْتَهْزَأُ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ						
और अगर हम उसे फ़रिश्ता बनाते	हम उसे बनाते	और	तो हम उसे बनाते	आदमी	और हम शुबा डालते	उन पर
जो वह शुबा करते हैं	9	और अल्वत्ता	हँसी की गई	रसूलों के साथ	से	आप (स) से पहले
بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٠﴾ قُلْ						
उन लोगों को जिनमें ने	हँसी की	उन से	जो - जिस	वह थे	उस पर	आप कह दें
10	हँसी करते	10	हँसी करते	उस पर	वह थे	जो - जिस
سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾						
सैर करो	ज़मीन (मुल्क) में	फिर	देखो	कैसा	हुआ	अन्जाम
11	झुटलाने वाले	11	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा
قُلْ لِّمَن مَّا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ قُلْ لِلَّهِ كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ						
आप पूछें	किस के लिए	जो	आस्मानों में	और ज़मीन	कह दें अल्लाह के लिए	लिखी है
अपने (नफ्स) आप पर	11	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	हुआ
الرَّحْمَةِ لِيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ الَّذِينَ						
रहमत	तुम्हें ज़रूर जमा करेगा	क़ियामत का दिन	नहीं शक	उस में	जो लोग	12
12	ईमान नहीं लाएंगे	और उस के लिए	जो	बस्ता है	में	रात
خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٣﴾ وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ						
ख़सारे में डाला	अपने आप	तो वही	ईमान नहीं लाएंगे	12	और उस के लिए	जो
12	ईमान नहीं लाएंगे	और उस के लिए	जो	बस्ता है	में	रात
وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣﴾ قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ اتَّخَذُ وَلِيًّا						
और दिन	और वह	सुनने वाला	जानने वाला	13	आप (स) कह दें	क्या सिवाए
कारसाज़	मैं बनाऊँ	अल्लाह	मैं बनाऊँ	कारसाज़	मैं बनाऊँ	अल्लाह
فَاطِرِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُهُ وَلَا يُطْعَمُ قُلْ						
बनाने वाला	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	और वह	खिलाता है	और खाता नहीं	आप (स) कह दें
13	जानने वाला	सुनने वाला	13	जानने वाला	सुनने वाला	और वह
إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ						
वेशक मुझे हुक्म दिया गया	कि	मैं हो जाऊँ	सब से पहला	जो - जिस	हुक्म माना	और तू हरगिज़ न हो
से	और तू हरगिज़ न हो	हुक्म माना	जो - जिस	सब से पहला	मैं हो जाऊँ	कि
الْمُشْرِكِينَ ﴿١٤﴾ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ						
शिर्क करने वाले	14	आप (स) कह दें	वेशक मैं	मैं डरता हूँ	अगर	मैं नाफ़रमानी करूँ
अज़ाब	अपना रब	मैं नाफ़रमानी करूँ	अगर	मैं डरता हूँ	वेशक मैं	आप (स) कह दें
يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُضَرْفُ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ						
बड़ा दिन	15	जो - जिस	फेर दिया जाए	उस से	उस दिन	तहक़ीक़
उस पर रहम किया	15	जो - जिस	फेर दिया जाए	उस से	उस दिन	तहक़ीक़
وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾ وَإِنْ يَمَسَّكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ						
और यह	कामयाबी खुली	16	और अगर	तुम्हें पहुँचाए अल्लाह	कोई सख़्ती	तो नहीं
दूर करने वाला	तो नहीं	कोई सख़्ती	तुम्हें पहुँचाए अल्लाह	और अगर	16	कामयाबी खुली
لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يَمَسَّكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ						
उस का	उस के सिवा	और अगर	वह पहुँचाए तुम्हें	कोई भलाई	तो वह	पर
हर शै	पर	तो वह	कोई भलाई	वह पहुँचाए तुम्हें	और अगर	16
قَدِيرٌ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿١٨﴾						
कादिर	17	और वह	ग़ालिब	ऊपर	अपने बन्दे	और वह
ख़बर रखने वाला	18	ख़बर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वह	अपने बन्दे	ऊपर
18	ख़बर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वह	अपने बन्दे	ऊपर	ग़ालिब

قُلْ أَتَى شَيْءٌ أَكْبَرُ شَهَادَةً قُلِ اللَّهُ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ									
आप (स)	कौन सी	चीज़	सब से बड़ी	गवाही	आप (स) कह दें	अल्लाह	गवाह	मेरे दरमियान	और तुम्हारे दरमियान
وَأَوْحَىٰ إِلَيْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ أَتَيْنَاكُمْ									
और वहि किया गया	मुझ पर	यह	कुरआन	ताकि मैं तुम्हें डराऊँ	इस से	और जिस	पहुँचे	क्या तुम वेशक	
لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ إِلَهَةً أُخْرَىٰ قُلْ لَا أَشْهَدُ قُلْ إِنَّمَا									
तुम गवाही देते हो	कि	अल्लाह के साथ	कोई माबूद	दूसरा	आप (स) कह दें	मैं गवाही नहीं देता	आप (स) कह दें	सिर्फ	
هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ وَإِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ اتَّيْنَاهُمْ									
वह	माबूद	यकता	और वेशक मैं	वेज़ार	उस से जो	तुम शिर्क करते हो	19	वह जिन्हें	हम ने दी उन्हें
الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۚ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ									
किताब	वह उस को पहचानते हैं	जैसे	वह पहचानते हैं	वह	अपने बेटे	वह जिन्हें ने	ख़सारे में डाला	अपने आप	
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا									
सो वह	ईमान नहीं लाते	20	और कौन	सब से बड़ा ज़ालिम	उस से जो	बुहतान बान्धे	अल्लाह पर	झूट	
أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢١﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا									
या झुटलाए	उस की आयतें	बिला शुवा वह	फुलाह नहीं पाते	ज़ालिम (जमा)	21	और जिस दिन	उन को जमा करेंगे	सब	
ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا آيِنَ شُرَكَائِكُمْ الَّذِينَ كُنْتُمْ									
फिर	हम कहेंगे	उन को जिन्हें ने	शिर्क किया (मुशरिकों)	कहाँ	तुम्हारे शरीक	जिन का	तुम थे		
تَزْعُمُونَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فَتَنَّهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبَّنَا مَا كُنَّا									
दावा करते	22	फिर	न होगी- न रही	उन की शरारत	सिवाए	कि	वह कहें	कसम अल्लाह की	हमारा रब
مُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾ أَنْظِرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ									
शिर्क करने वाले	23	देखो	कैसे	उन्होंने ने झूट बान्धा	पर	अपनी जानों	और खोई गई	उन से	
مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۖ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ									
जो	वह बातें बनाते थे	24	और उन से	जो	कान लगाता था	आप (स) की तरफ़	और हम ने डाल दिया	पर	
فُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِنْ يَرَوْا كُلَّ									
उन के दिल	पर्दे	कि	वह (न) समझें उसे	और उन के कानों में	बोझ	और अगर	वह देखें	तमाम	
آيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ									
निशानी	न ईमान लाएंगे उस पर	यहां तक कि	जब	आप (स) के पास आते हैं	आप (स) से झगड़ते हैं	कहते हैं	जिन लोगों ने		
كَفَرُوا ۚ إِنَّ هَٰذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ									
उन्होंने ने कुफ़ किया	नहीं	यह	मगर (सिर्फ)	कहानियां	पहले लोग (जमा)	25	और वह	रोकते हैं	उस से
وَيَنْهَوْنَ عَنْهُ ۚ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾									
और भागते हैं	उस से	और नहीं	हलाक करते हैं	मगर (सिर्फ)	अपने आप	और वह शऊर नहीं रखते	26		

आप (स) कहें सब से बड़ी गवाही किस की? आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह है, और मुझ पर यह कुरआन वहि किया गया है ताकि मैं तुम्हें इस से डराऊँ और जिस तक यह पहुँचे, क्या तुम (वाकई) गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ कोई और भी माबूद है! आप (स) कह दें मैं (ऐसी) गवाही नहीं देता, आप (स) कह दें सिर्फ वह माबूद यकता है, और मैं उस से वेज़ार हूँ जो तुम शिर्क करते हो। (19)

वह लोग जिन्हें हम ने किताब दी वह उस को पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगो ने ख़सारे में डाला अपने आप को सो वह ईमान नहीं लाते। (20)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बुहतान बन्धे या झुटलाए उस की आयतों को, वेशक ज़ालिम फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाते। (21)

और जिस दिन हम उन सब को जमा करेंगे, फिर हम कहेंगे मुशरिकों को: कहाँ हैं तुम्हारे शरीक जिन का तुम दावा करते थे। (22)

फिर न होगी उन की शरारत (उन का उज़र) इस के सिवा कि वह कहेंगे: हमारे रब अल्लाह की कसम हम मुशरिक न थे। (23)

देखो! उन्होंने ने कैसे झूट बान्धा अपनी जानों पर और वह जो बातें बनाते थे उन से खोई गई। (24)

और उन से (वाज़) आप की तरफ़ कान लगाए रखते हैं और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह उसे न समझें और उन के कानों में बोझ है, और अगर वह देखें तमाम निशानियां (फिर भी) उस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब आप (स) के पास आते हैं तो आप (स) से झगड़ते हैं, कहते हैं वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर): यह सिर्फ़ पहलों की कहानियां हैं। (25)

और वह उस से (दूसरों को) रोकते हैं और (खुद भी) उस से भागते हैं, और वह सिर्फ़ अपने आप को हलाक करते हैं और शऊर नहीं रखते। (26)

और कभी तुम देखो जब वह आग (दोज़ख़) पर खड़े किए जाएंगे तो कहेंगे ऐ काश! हम वापस भेजे जाएं और अपने रब की आयतों को न झुटलाएं और हो जाएं ईमान वालों में से। (27)

बल्कि वह उस से क़बल जो छुपाते थे उन पर ज़ाहिर हो गया और वह अगर वापस भेजे जाएं तो फिर (वही) करने लगे जिस से वह रोके गए और बेशक वह झूटे हैं। (28)

और कहते हैं हमारी सिर्फ़ यही दुनिया की ज़िन्दगी है और हम उठाए जाने वाले नहीं (हमें फिर ज़िन्दा नहीं होना)। (29)

और कभी तुम देखो जब वह अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। वह फ़रमाएगा क्या यह नहीं सच, वह कहेंगे हां हमारे रब की कसम (क्यों नहीं), वह फ़रमाएगा पस अज़ाब चखो इस लिए कि तुम कुफ़ करते थे। (30)

तहकीक़ वह लोग घाटे में पड़े ज़िन्हों ने अल्लाह के मिलने को झुटलाया यहां तक कि जब अचानक उन पर क़ियामत आ पहुँची कहने लगे हाए हम पर अफ़सोस! जो हम ने उस में कोताही की, और वह अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए होंगे। आगाह रहो बुरा है जो वह उठाएंगे। (31)

और दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ़ खेल और जी का वेहलावा है, और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो परहेज़गारी करते हैं, सो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते। (32)

बेशक हम जानते हैं आप (स) को वह (बात) ज़रूर रंजीदा करती है जो वह कहते हैं, सो वह यकीनन आप (स) को नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। (33)

और अलबत्ता रसूल झुटलाए गए आप (स) से पहले, पस उन्हीं ने सब्र किया उस पर जो वह झुटलाए गए और सताए गए यहां तक कि उन पर हमारी मदद आगई, और (कोई) बदलने वाला नहीं अल्लाह की बातों को, और अलबत्ता आप (स) के पास रसूलों की कुछ ख़बरें पहुँच चुकी हैं। (34)

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يُقْفَوْنَ عَلَى النَّارِ فَقَالُوا يَلَيْتَنَّا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبُ

और न झुटलाएं हम	वापस भेजे जाएं हम	ऐ काश हम	तो कहेंगे	आग	पर	जब खड़े किए जाएंगे	तुम देखो	और अगर (कभी)

بَايَتِ رَبِّنَا وَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَا

जो	ज़ाहिर हो गया उन पर	बल्कि	27	ईमान वाले	से	और हो जाएं हम	अपना रब	आयतों को

كَانُوا يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ

और बेशक वह	उस से	वही रोके गए	तो फिर करने लगे	वापस भेजे जाएं	और अगर	उस से पहले	वह छुपाते थे

لَكَذِبُونَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوا إِن هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ

हम	और नहीं	दुनिया	हमारी ज़िन्दगी	मगर (सिर्फ़)	है	नहीं	और कहते हैं	28	झूटे

بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يُقْفَوْنَ عَلَى رَبِّهِمْ قَالَ أَلَيْسَ

क्या नहीं	वह फ़रमाएगा	अपना रब	पर (सामने)	खड़े किए जाएंगे	तुम देखो	और अगर (कभी)	29	उठाए जाने वाले

هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا

इस लिए कि	अज़ाब	पस चखो	वह फ़रमाएगा	कसम हमारे रब की	हां	वह कहेंगे	सच	यह

كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ حَتَّىٰ

यहां तक कि	अल्लाह से मिलना	वह लोग ज़िन्हों ने झुटलाया	घाटे में पड़े	तहकीक़	30	तुम कुफ़ करते थे

إِذَا جَاءَتْهُمْ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَحْسِرْتُنَا عَلَىٰ مَا فَرَطْنَا فِيهَا ۖ

इस में	जो हम ने कोताही की	पर	हाए हम पर अफ़सोस	वह कहने लगे	अचानक	क़ियामत	आ पहुँची उन पर	जब

وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۖ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٣١﴾

31	जो वह उठाएंगे	बुरा	आगाह रहो	अपनी पीठ (जमा)	पर	अपने बोझ	उठाए होंगे	और वह

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهُمْ وَلَهُ ۖ وَلِلْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلِلَّذِينَ

उन के लिए	बेहतर	और आख़िरत का घर	और जी का वेहलावा	खेल	मगर (सिर्फ़)	दुनिया	ज़िन्दगी	और नहीं

يَتَّقُونَ أَفْلا تَعْقِلُونَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي

जो वह	आप को ज़रूर रंजीदा करती है	कि वह	बेशक हम जानते हैं	32	सो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते	परहेज़गारी करते हैं

يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ بَايَتِ اللَّهَ

अल्लाह की आयतों का	ज़ालिम लोग	और लेकिन (बल्कि)	नहीं झुटलाते आप (स) को	सो वह यकीनन	कहते हैं

يَجْحَدُونَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ

पर	पस सब्र किया उन्हीं ने	आप (स) से पहले	रसूल (जमा)	और अलबत्ता झुटलाए गए	33	इन्कार करते हैं

مَا كُذِّبُوا وَأُودُوا حَتَّىٰ أَتَاهُمْ نَصْرُنَا ۖ وَلَا مُبَدِّلَ

और नहीं बदलने वाला	हमारी मदद	उन पर आगई	यहां तक कि	और सताए गए	जो वह झुटलाए गए

لِكَلِمَتِ اللَّهِ ۚ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِنْ نَبَائِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٤﴾

34	रसूल (जमा)	ख़बर	से (कुछ)	आप के पास पहुँची	और अलबत्ता	अल्लाह की बातों को

وَإِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ								
और अगर	है	गरां	आप (स) पर	उन का मुँह फेरना	तो अगर	तुम से हो सके	कि	ढूँड लो
نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بَأْيَةٌ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ								
कोई सुरंग	ज़मीन में	या	कोई सीढ़ी	आस्मान में	फिर ले आओ उन के पास	कोई निशानी	और अगर	चाहता अल्लाह
لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَى فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ (35) إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ								
तो उन्हें जमा कर देता	हिदायत पर	सो आप (स) न हों	से	वे ख़बर (जमा)	35	सिर्फ़ वह	मानते हैं	लज्जत
الَّذِينَ يَسْمَعُونَ وَالْمَوْتَى يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ (36)								
जो लोग	सुनते हैं	और मुर्दे	उन्हें उठाएगा अल्लाह	फिर	उस की तरफ़	वह लौटाए जाएंगे	36	وقف منزل
وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ								
और वह कहते हैं	क्यों नहीं उतारी गई	उस पर	कोई निशानी	से	उस का रब	आप (स) कह दें	बेशक अल्लाह	कादिर
يُنْزِلَ آيَةً وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (37) وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ								
उतारे	निशानी	और लेकिन	उन में अक्सर	नहीं जानते	37	और नहीं	कोई चलने वाला	ज़मीन में
وَلَا طَيْرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُمْ مَا فَرَّطْنَا								
और न	परिन्दा	है	उड़ता है	अपने परों से	मगर	उम्मतें (जमाअतें)	तुम्हारी तरह	नहीं छोड़ी हम ने
فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ (38) وَالَّذِينَ كَذَّبُوا								
किताब में	कोई चीज़	फिर	तरफ़	अपना रब	जमा किए जाएंगे	38	और वह लोग जो कि	उन्होंने ने झुटलाया
بَايْتَنَا صُومًا وَبُكْمًا فِي الظُّلُمَاتِ مَنْ يَشَأِ اللَّهُ يُضِلَّهُ وَمَنْ يَشَأِ								
हमारी आयत	बहरे	और गूंगे	में	अन्धेरे	जो - जिस	अल्लाह चाहे	उसे गुमराह कर दे	और जिसे चाहे
يَجْعَلُهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (39) قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابٌ								
उसे कर दे (चला दे)	पर	रास्ता	सीधा	39	आप (स) कह दें	भला देखो	अगर	तुम पर आए
اللَّهُ أَوْ أَتَاكُمْ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ (40)								
अल्लाह	या आए तुम पर	क़ियामत	क्या अल्लाह के सिवा	तुम पुकारोगे	अगर	तुम हो	सच्चे	40
بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ وَتَنْسَوْنَ								
बल्कि	उसी को	तुम पुकारते हो	पस खोल देता है (दूर कर देता है)	जिसे पुकारते हो	उस के लिए	अगर	वह चाहे	और तुम भूल जाते हो
مَا تُشْرِكُونَ (41) وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِنْ قَبْلِكَ فَآخَذْنَاهُمْ بِالْبَأْسَاءِ								
जो - जिस	तुम शरीक करते हो	41	और तहकीक हम ने भेजे (रसूल)	तरफ़	उम्मतें	तुम से पहले	पस हम ने उन्हें पकड़ा	सख़्ती में
وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ (42) فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا								
और तक्लीफ़	ताकि वह	गिड़गिड़ाएं	42	फिर क्यों न	जब	आया उन पर	हमारा अज़ाब	वह गिड़गिड़ाए
وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (43)								
और लेकिन	सख़्त हो गए	दिल उन के	आरास्ता कर दिखाया	उन को	शैतान	जो	वह करते थे	43

और अगर आप (स) पर गरां है उन का मुँह फेरना तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग या आस्मान में कोई सीढ़ी ढूँड निकालो फिर तुम उन के पास कोई निशानी ले आओ, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर जमा कर देता, सो आप (स) वे ख़बरो में से न हों। (35)

मानते सिर्फ़ वह हैं जो सुनते हैं, और मुर्दे को अल्लाह उठाएगा (दोबारा ज़िन्दा करेगा) फिर वह उस की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (36)

और वह कहते हैं कि उस पर उस के रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई? आप (स) कह दें बेशक अल्लाह उस पर कादिर है कि वह उतारे निशानी, लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (37)

और ज़मीन में कोई चलने वाला (हैवान) नहीं और न कोई परिन्दा जो अपने परों से उड़ता है मगर (उन की भी) तुम्हारी तरह जमाअतें हैं, हम ने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी, फिर अपने रब की तरफ़ जमा किए जाएंगे। (38)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया वह बहरे और गूंगे हैं, अन्धेरो में हैं, जिस को अल्लाह चाहे गुमराह कर दे, और जिस को चाहे सीधे रास्ते पर चलादे। (39)

आप (स) कह दें भला देखो अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब आय या तुम पर क़ियामत आजाए, क्या तुम अल्लाह के सिवा (किसी और को) पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो। (40)

बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, पस जिस (दुख) के लिए उसे पुकारते हो अगर वह चाहे तो वह उसे दूर कर देता है, और तुम भूल जाते हो जिस को तुम शरीक करते हो। (41)

तहकीक हम ने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे फिर हम ने (उन की नाफ़रमानी के सबब) उन्हें पकड़ा सख़्ती और तक्लीफ़ में ताकि वह गिड़गिड़ाएं। (42)

फिर जब उन पर हमारा अज़ाब आया वह क्यों न गिड़गिड़ाए लेकिन उन के दिल सख़्त हो गए और जो वह करते थे शैतान ने उन को आरास्ता कर दिखाया। (43)

फिर जब वह भूल गए वह नसीहत जो उन्हें की गई तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए यहां तक कि जब वह उस से खुश हो गए जो उन्हें दी गई तो हम ने उन को अचानक पकड़ा (धर लिया) पस उस वक़्त वह मायूस हो कर रह गए। (44)

फिर ज़ालिम कौम की जड़ काट दी गई, और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे ज़हानों का रब है। (45)

आप (स) कह दें भला देखो, अगर अल्लाह तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगादे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम को यह चीज़ें ला दे (वापस करदे), देखो हम कैसे बदल बदल कर आयतें बयान करते हैं फिर वह किनारा करते हैं। (46)

आप (स) कह दें देखो तो सही अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब अचानक या खुल्लम खुल्ला आए क्या ज़ालिम लोगों के सिवा (और कोई) हलाक होगा? (47)

और हम रसूल नहीं भेजते मगर खुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले। पस जो ईमान लाया और संवर गया तो उन पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वह ग़मगीन होंगे। (48)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें अज़ाब पहुँचेगा इस लिए कि वह नाफ़रमानी करते थे। (49)

आप (स) कह दें, मैं नहीं कहता तुम से कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब को जानता हूँ, और न मैं तुम से कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं पैरवी नहीं करता मगर (सिर्फ़ उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, आप (स) कह दें क्या नाबीना और बीना बराबर हो सकते हैं? सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (50)

और उस से उन लोगों को डरावें जो ख़ौफ़ रखते हैं कि अपने रब के सामने जमा किए जाएंगे, उस के सिवा उन का न होगा कोई हिमायती और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, ताकि वह बचते रहें। (51)

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِم أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ							
हर चीज़	दरवाज़े	उन पर	तो हम ने खोल दिए	उस के साथ	जो नसीहत की गई	वह भूल गए	फिर जब
حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ							
वह	पस उस वक़्त	अचानक	हम ने पकड़ा उन को	उन्हें दी गई	उस से जो	खुश हो गए	जब यहाँ तक कि
مُبْلِسُونَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ							
और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए	जिन लोगों ने जुल्म किया (ज़ालिम)	कौम	जड़	फिर काट दी गई	44	मायूस रह गए	
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٥﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ							
तुम्हारे कान	ले (छीन ले) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो	आप (स) कह दें	45	सारे ज़हानों का रब	
وَأَبْصَارَكُمْ وَخَمَّ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مِنَ إِلَهِ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيَكُمْ بِهِ أَنْظُرْ							
देखो	यह	तुम को लादे	अल्लाह	सिवाए	माबूद	कौन	तुम्हारे दिल पर और मुहर लगा दे और तुम्हारी आँखें
كَيْفَ نَصْرَفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْذِفُونَ ﴿٤٦﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ							
अगर	तुम देखो तो सही	आप (स) कह दें	46	किनारा करते हैं	वह	फिर	आयतें बदल बदल कर बयान करते हैं कैसे
آتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ							
लोग	सिवाए	हलाक होगा	क्या	या खुल्लम खुल्ला	अचानक	अज़ाब अल्लाह का	तुम पर आए
الظَّالِمُونَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مَبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ							
और डर सुनाने वाले	खुशख़बरी देने वाले	मगर	रसूल (जमा)	और नहीं भेजते हम	47	ज़ालिम (जमा)	
فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٨﴾							
48	ग़मगीन होंगे	और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	और संवर गया	ईमान लाया	पस जो
وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا							
इस लिए कि	अज़ाब	उन्हें पहुँचे गा	हमारी आयतों को	उन्होंने ने झुटलाया	और वह लोग जो		
كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ							
मैं जानता	और नहीं	अल्लाह के ख़ज़ाने	मेरे पास	तुम से नहीं कहता मैं	आप कह दें	49	वह करते थे नाफ़रमानी
الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ۚ إِنْ أَتَّبِعْ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ							
मेरी तरफ़	जो वहि किया जाता है	मगर	मैं नहीं पैरवी करता	फ़रिश्ता	कि मैं	तुम से	और नहीं कहता मैं ग़ैब
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾							
50	सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते	और बीना	नाबीना	बराबर है	क्या	आप कह दें	
وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْ يُحْشَرُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ							
नहीं	अपना रब	तरफ़ (सामने)	वह जमा किए जाएंगे	कि	खौफ़ रखते हैं	वह लोग जो	उस से और डरावें
لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾							
51	बचते रहें	ताकि वह	सिफ़ारिश करने वाला	और न	कोई हिमायती	उस के सिवा	कोई उन के लिए

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْعَدْوَةِ وَالْعَشِيِّ							
और शाम		सुबह	अपना रब	पुकारते हैं	वह लोग जो	और दूर न करें आप	
يُرِيدُونَ وَجْهَهُ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ							
कुछ		उन का हिसाब	से	आप (स) पर	नहीं	उस का रख (रज़ा)	वह चाहते हैं
وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ							
से	तो हो जाओगे	कि तुम उन्हें दूर करोगे	कुछ	उन पर	आप (स) का हिसाब	से	और नहीं
الظَّالِمِينَ ﴿٥٢﴾ وَكَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوا أَهَؤُلَاءِ							
क्या यही है	ताकि वह कहें	बाज़ से	उन के बाज़	आज़माया हम ने	और इसी तरह	52	ज़ालिम (जमा)
مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنْ بَيْنِنَا أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ﴿٥٣﴾							
53	शुक्र गुज़ार (जमा)	खूब जानने वाला	क्या नहीं अल्लाह	हमारे दरमियान से	उन पर	अल्लाह ने फ़ज़ल किया	
وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ							
लिख ली	तुम पर	सलाम	तो कह दें	हमारी आयतों पर	ईमान रखते हैं	वह लोग	आप के पास आएँ और जब
رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةُ ۚ أَنَّهُ مِنْ عَمَلٍ مِنْكُمْ سُوءٌ بِجَهَالَةٍ							
नादानी से	कोई बुराई	तुम से	करे	जो	कि	रहमत	अपनी ज़ात पर तुम्हारा रब
ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ ۚ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٤﴾ وَكَذَلِكَ نَفْصَلُ							
और इसी तरह हम तफ़सील से बयान करते हैं		54	मेहरबान	बख़्शने वाला	तो वेशक अल्लाह	और नेक हो जाए	उस के बाद तौबा कर ले फिर
الْأَيِّتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٥٥﴾ قُلْ إِنِّي							
वेशक मैं	कह दें	55	गुनाहगार (जमा)	रास्ता - तरीका	और ताकि ज़ाहिर हो जाए	आयतें	
نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ قُلْ							
कह दें	अल्लाह के सिवा	से	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें	कि मैं बन्दगी करूँ	मुझे रोका गया है	
لَا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ قَدْ ضَلَلْتُ إِذَا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾							
56	हिदायत पाने वाले	से	और मैं नहीं	उस सूरत में	वेशक मैं बहक जाऊँगा	तुम्हारी खाहिशात	मैं पैरवी नहीं करता
قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ ۚ مَا عِنْدِي مَا							
जिस	नहीं मेरे पास	उस को	और तुम झुटलाते हो	अपना रब	से	रौशन दलील	पर वेशक मैं आप कह दें
تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ ۚ يَقْضُ الْحَقُّ وَهُوَ							
और वह	हक्	बयान करता है	सिर्फ अल्लाह के लिए	हुक्म	मगर	उस की	तुम जल्दी कर रहे हो
خَيْرُ الْفَصْلِينَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَّوْ أَنَّ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ							
उस की	तुम जल्दी करते हो	जो	मेरे पास	होती अगर	कह दें	57	फ़ैसला करने वाला बेहतर
لَقَضَىٰ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿٥٨﴾							
58	ज़ालिमों को	खूब जानने वाला	और अल्लाह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	फ़ैसला	अलबत्ता हो चुका होत

और आप (स) उन लोगों को दूर न करें जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं और आप (स) पर (आप (स) के ज़िम्मे) उन के हिसाब में से कुछ नहीं, और न आप (स) के हिसाब में से उन पर कुछ है। अगर उन्हें दूर करोगे तो ज़ालिमों से हो जाओगे। (52)

और इसी तरह हम ने उन में से बाज़ को बाज़ से आज़माया ताकि वह कहें क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने फज़ल किया हम में से? क्या अल्लाह शुक्र गुज़ारों को खूब जानने वाला नहीं? (53)

और जब आप (स) के पास वह लोग आएँ जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप (स) कह दें तुम पर सलाम है, तुम्हारे रब ने अपने आप पर रहमत लिख ली (लाज़िम कर ली) है कि तुम में जो कोई बुराई करे नादानी से फिर उस के बाद तौबा कर ले और नेक हो जाए तो वेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (54)

और इसी तरह हम तफ़सील से बयान करते हैं आयतें और (यह इस लिए कि) गुनाहगारों का तरीका ज़ाहिर हो जाए। (55)

आप कह दें मुझे (इस बात से) रोका गया है कि मैं उन की बन्दगी करूँ जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा, आप कह दें मैं तुम्हारी खाहिशात की पैरवी नहीं करता, उस सूरत में वेशक मैं बहक जाऊँगा और हिदायत पाने वालों में से न हों गा। (56)

आप (स) कह दें वेशक मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ और तुम उस को झुटलाते हो, तुम जिस (अज़ाब) की जल्दी कर रहे हो मेरे पास नहीं। हुक्म सिर्फ़ अल्लाह के लिए है, वह हक् बयान करता है और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (57)

आप (स) कह दें अगर मेरे पास होती (वह चीज़) जिस की तुम जल्दी करते हो तो अलबत्ता मेरे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला हो चुका होता, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानने वाला है। (58)

और उस के पास ग़ैब की कुनजियां हैं, उन को उस के सिवा कोई नहीं जानता, वह जानता है जो खुशकी और तरी में है, और नहीं गिरता कोई पत्ता मगर वह उस को जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन के अन्धेरों में, और न कोई तर न कोई खुशक, मगर सब रौशन किताब (लौहे महफूज़) में है। (59)

और वही तो है जो रात में तुम्हारी (रूह) कब्ज़ कर लेता है और जानता है जो तुम दिन में कमा चुके हो, फिर तुम्हें उस (दिन) में उठाता है ताकि मुददत मुकर्ररा पूरी हो, फिर तुम्हें उसी की तरफ़ लौटना है, फिर तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। (60)

और वही अपने बन्दों पर ग़ालिव है, और तुम पर निगेहबान भेजता है यहां तक कि जब तुम में से किसी को मौत आ पहुँचे तो हमारे फ़रिश्ते उस की (रूह) कब्ज़े में ले लेते हैं और वह कोताही नहीं करते। (61)

फिर लौटाए जाएंगे अपने सच्चे मौला की तरफ़, सुन रखो! हुक्म उसी का है और वह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है। (62)

आप (स) कह दें तुम्हें खुशकी और दर्या के अन्धेरों से कौन बचाता है? (उस वक़्त) तुम उस को गिड़गिड़ा कर और चुपके से पुकारते हो (और कहते हो) कि अगर हमें इस से बचाले तो हम शुक्र अदा करने वालों में से होंगे। (63)

आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें उस से बचाता है और हर सख्ती से, फिर तुम शिर्क करते हो। (64)

आप (स) कह दें वह क़ादिर है कि तुम पर भेजे अज़ाब तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पाऊँ के नीचे से या तुम्हें फ़िर्का-फ़िर्का कर के बिड़ा दे, और तुम मे से एक को चखा दे दूसरे की लड़ाई (का मज़ा), देखो हम किस तरह आयात फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि वह समझ जाएं। (65)

और तुम्हारी क़ौम ने उस को झुटलाया हालांकि वह हक़ है, आप (स) कह दें मैं तुम पर दारोगा नहीं। (66)

हर ख़बर के लिए एक ठिकाना (मकर्ररा वक़्त) है और तुम जल्द जान लोगे। (67)

وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ									
और उस के पास	कुनजियां	ग़ैब	नहीं	उन को जानता	सिवा	वह	और जानता है	जो	खुशकी में
وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٌ فِي ظُلْمَتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٌ									
और नहीं	गिरता	कोई	पत्ता	मगर	वह उस को जानता है	और न कोई दाना	में	अन्धेरे	ज़मीन
وَلَا يَابِسُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ٥٩ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ									
और न	खुशक	मगर	में	किताब	रौशन	59	और वह	जो कि	कब्ज़ कर लेता है तुम्हारी (रूह)
وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى									
और जानता है	जो तुम कमा चुके हो	दिन में	फिर	तुम्हें उठाता है	उस में	ताकि पूरी हो	मुददत	मुकर्ररा	
ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ٦٠ وَهُوَ الْقَاهِرُ									
फिर	उस की तरफ़	तुम्हारा लौटना	फिर	तुम्हें जता देगा	जो	तुम करते थे	60	और वही	ग़ालिव
فَوْقَ عِبَادِهِ يُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمْ									
पर	अपने बन्दे	और भेजता है	तुम पर	निगेहबान	यहाँ तक के	जब	आ पहुँचे	तुम में से एक-किसी	
الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ٦١ ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ									
मौत	कब्ज़े में लेते हैं उस को	हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते)	और वह	नहीं करते कोताही	61	फिर	लौटाए जाएंगे	अल्लाह की तरफ़	
مَوْلَاهُمُ الْحَقُّ إِلَّا لَهُ الْحُكْمُ ۖ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحُسَيْنِ ٦٢ قُلْ مَنْ									
उन का मौला	सच्चा	सुन रखो	उसी का	हुक्म	और वह	बहुत तेज़	हिसाब लेने वाला	62	आप कह दें
يُنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلْمَتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ لَّيْنٌ									
बचाता है तुम्हें	से	अन्धेरे	खुशकी	और दर्या	तुम पुकारते हो उस को	गिड़गिड़ा कर	और चुपके से	कि अगर	
أَنْجَيْنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ٦٣ قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيْكُمْ									
हमें बचा ले	से	इस	तो हम हों	से	शुक्र अदा करने वाले	63	आप (स) कह दें	अल्लाह	तुम्हें बचाता है
مِنْهَا وَمَنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُونَ ٦٤ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ									
उस से	और से	हर सख्ती	फिर	तुम	शिर्क करते हो	64	आप कह दें	वह	क़ादिर
أَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ									
कि	भेजे	तुम पर	अज़ाब	से	तुम्हारे ऊपर	या	से	नीचे	तुम्हारे पाऊँ
أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيْعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ ۚ أَنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ									
या बिड़ा दे तुम्हें	फ़िर्का - फ़िर्का	और चखाए	तुम में से एक	लड़ाई	दूसरा	देखो	किस तरह	हम फेर फेर कर बयान करते हैं	
الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ٦٥ وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ قُلْ									
आयात	ताकि वह	समझ जाएं	65	और झुटलाया	उस को	तुम्हारी क़ौम	हालांकि वह	हक़	आप कह दें
لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ٦٦ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۖ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ٦٧									
मैं नहीं	तुम पर	दारोगा	66	हर एक के लिए	ख़बर	एक ठिकाना	और जल्द	तुम जान लोगे	67

ع ١٢

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ								
यहां तक कि	उन से	तो किनारा कर ले	हमारी आयतें	में	झगड़तें हैं	वह लोग जो कि	तू देखे	और जब
يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ								
तो न बैठ	शैतान	भुलादे तुझे	और अगर	उस के अलावा	कोई बात	में	वह मशगूल हों	
بَعْدَ الذِّكْرِ ۚ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ								
परहेज़ करते हैं	वह लोग जो	पर	और नहीं	68	ज़ालिम (जमा)	कौम (लोग)	साथ (पास)	याद आना
مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۚ وَلَكِنْ ذِكْرِي لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ								
और छोड़ दे	69	डरें	ताकि वह	नसीहत करना	लेकिन	चीज़	कोई	उन का हिसाब से
الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا								
दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	और तमाशा	खेल	अपना दीन	उन्होंने ने बना लिया	वह लोग जो	
وَذَكِّرْ بِهِ ۚ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ								
सिवाए अल्लाह	से	उस के लिए	नहीं	उस ने किया	बसवव जो	कोई	पकड़ा (न) जाए	ताकि इस से और नसीहत करो
وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ۚ وَإِنْ تَعْدِلْ كُلُّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا ۚ أُولَٰئِكَ								
यही लोग	उस से	न लिए जाएं	मुआवज़े	तमाम	बदले में दे	और अगर	कोई सिफारिश करने वाला	और न कोई हिमायती
الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ								
और अज़ाब	गर्म	से	पीना (पानी)	उन के लिए	जो उन्होंने ने कमाया (अपना लिया)	पकड़े गए	वह लोग जो	
أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾ قُلْ أَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا								
जो	सिवाए अल्लाह	से	क्या हम पुकारें	कह दें	70	वह कुफ़र करते थे	इस लिए कि	दर्दनाक
لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْنَا اللَّهَ								
अल्लाह	जब हिदायत दी हमें	बाद	अपनी एड़ियां (उलटे पाऊँ)	पर	और हम फिर जाएं	और न नुक़सान करे हमें	न हमें नफ़ा दे	
كَأَلَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ ۚ لَهُ أَصْحَابٌ								
साथी	उस के	हैरान	ज़मीन	में	शैतान	भुला दिया उस को	उस की तरह जो	
يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَىٰ ۚ إِنَّ هُدَىٰ اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۚ								
हिदायत	वही	अल्लाह की हिदायत	वेशक	कह दें	हमारे पास आ	हिदायत	तरफ़	बुलाते हों उस को
وَأْمُرْنَا لِنُسَلِّمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾ وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ								
नमाज़	काइम करो	और यह कि	71	तमाम जहान	परवरदिगार के लिए	कि फ़रमांवरदार रहें	और हुकम दिया गया हमें	
وَاتَّقُوهُ ۚ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧٢﴾ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ								
पैदा किया	वह जो-जिस	और वही	72	तुम इकट्ठे किए जाओगे	उस की तरफ़	वह जिस की	और वही	और उस से डरो
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ ۚ وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ								
तो वह हो जाएगा	हो जा	कहेगा वह	और जिस दिन	ठीक तौर पर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)		

और जब तू उन लोगों को देखे जो हमारी आयतों में झगड़तें हैं तो उन से किनारा कर ले यहाँ तक कि वह मशगूल हो जाएँ उस के अलावा किसी और बात में, और अगर तुझे शैतान भुलादे तो याद आने के बाद न बैठ ज़ालिम लोगों के पास। (68)

और जो लोग परहेज़ करते हैं (परहेज़गार हैं) उन पर उन (झगड़ने वालों) के हिसाब में से कोई चीज़ नहीं, लेकिन नसीहत करना ताकि वह डरें (बाज़ आजाएँ)। (69)

और उन लोगों को छोड़ दें जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल दिया है, और उस (कुरआन) से नसीहत करो ताकि कोई अपने किए (अपने अमल) से पकड़ा न जाए, उस के लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हिमायती और न कोई सिफारिश करने वाला, और अगर बदले में तमाम मुआवज़े दें तो उस से न लिए जाएं (कुबूल न हों), यही वह लोग हैं जो अपने किए पर पकड़े गए, उन्हें गर्म पानी पीना है और दर्दनाक अज़ाब है इस लिए कि वह कुफ़र करते थे। (70)

कह दें क्या हम अल्लाह के सिवा उस को पुकारें जो हमें न नफ़ा दे सके न हमारा नुक़सान कर सके और (क्या) हम उलटे पाऊँ फिर जाएँ उस के बाद जब कि अल्लाह ने हमें हिदायत दे दी उस शख्स की तरह जिसे शैतान ने भुला दिया ज़मीन (जंगल) में, वह हैरान हो, उस के साथी उस को हिदायत की तरफ़ बुलाते हों कि हमारे पास आ। आप (स) कह दें वेशक अल्लाह की हिदायत ही हिदायत है और हमें हुकम दिया गया है कि तमाम जहानों के परवरदिगार के फ़रमांवरदार रहें। (71)

और यह कि नमाज़ काइम करो और उस से डरो, और वही है जिस की तरफ़ तुम इकट्ठे किए जाओगे। (72)

और वही है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को ठीक तौर पर पैदा किया। और जिस दिन कहेगा “हो जा” तो वह “हो जाएगा”,

उस की बात सच्ची है, और मुल्क उसी का है, जिस दिन सूर फूँका जाएगा, ग़ैब और ज़ाहिर का जानने वाला, और वही है हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (73)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा अपने बाप आज़र को: क्या तू बुतों को माबूद बनाता है? वेशक मैं तुझे और तेरी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ। (74)

और इस तरह हम इब्राहीम (अ) को आस्मानों और ज़मीन की बादशाही (अज़ाइवात) दिखाने लगे ताकि वह यकीन करने वालों में से हो जाए। (75)

फिर जब उस पर रात अन्धेरा कर लिया तो एक सितारा देखा, कहा यह मेरा रब है। फिर जब गाइब हो गया तो (इब्राहीम अ) कहने लगे मैं दोस्त नहीं रखता गाइब होने वालों को। (76)

फिर जब चमकता हुआ चाँद देखा तो बोले यह मेरा रब है, फिर जब वह गाइब हो गया तो कहा अगर मुझे हिदायत न दे मेरा रब तो मैं भटकने वाले लोगों में से हो जाऊँ। (77)

फिर जब उस ने जगमगाता हुआ सूरज देखा तो बोले यह मेरा रब है, यह सब से बड़ा है। फिर जब वह गाइब हो गया तो कहा ऐ मेरी क़ौम! वेशक मैं उन से बेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो। (78)

वेशक मैं ने अपना मुँह यक रुख़ हो कर उस की तरफ़ मोड़ लिया जिस ने ज़मीन और आस्मान बनाए और मैं शिर्क करने वालों से नहीं। (79)

और उस की क़ौम ने उस से झगड़ा किया तो उस ने कहा क्या तुम मुझ से अल्लाह (के बारे) में झगड़ते हो? उस ने मुझे हिदायत दे दी है और मैं उन से नहीं डरता जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो उस का, मगर यह कि मेरा रब कुछ (तक्लीफ़) पहुँचाना चाहे, मेरे रब के इल्म ने हर चीज़ का अहाता कर लिया है, सो क्या तुम सोचते नहीं? (80)

और मैं तुम्हारे शरीक से क्योंकर डरूँ? और तुम (इस से) नहीं डरते कि अल्लाह का शरीक करते हो जिस की उस ने नहीं उतारी तुम पर कोई दलील, सो दोनों फ़रीक़ में से अमन (दिलजमई) का कौन ज़ियादा हक़दार है? (बताओ) अगर तुम जानते हो। (81)

قَوْلُهُ الْحَقُّ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ عِلْمُ الْغَيْبِ									
उस की बात	सच्ची	और उस का	मुल्क	जिस दिन	फूँका जाएगा	सूर	जानने वाला	ग़ैब	
وَالشَّهَادَةُ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ (٧٣) وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ أَرَرِ									
और ज़ाहिर	और वही	हिक्मत वाला	ख़बर रखने वाला	73	और जब	कहा	इब्राहीम (अ)	अपने बाप को	आज़र
اتَّخِذْ أَصْنَامًا إِلَهَةً إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (٧٤)									
क्या तू बनाता है	बुत (जमा)	माबूद	वेशक मैं	तुझे देखता हूँ	और तेरी क़ौम	गुमराही में	खुली	74	
وَكَذَلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ									
और इसी तरह	हम दिखाने लगे	इब्राहीम (अ)	बादशाही	आस्मानों (जमा)	और ज़मीन	और ताकि हो जाए वह			
مِنَ الْمُوقِنِينَ (٧٥) فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى كَوْكَبًا قَالَ هَذَا									
से	यकीन करने वाले	75	फिर जब	अन्धेरा कर लिया	उस पर	रात	उस ने देखा	एक सितारा	उस ने कहा
رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْإِفْلِينَ (٧٦) فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا									
मेरा रब	फिर जब	गाइब हो गया	उस ने कहा	नहीं	मैं दोस्त रखता	गाइब होने वाले	76	फिर जब देखा	चाँद
قَالَ هَذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ									
बोले	यह	मेरा रब	फिर जब	गाइब होगया	कहा	अगर	मुझे न हिदायत दे	मेरा रब	तो मैं हो जाऊँ
مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ (٧٧) فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِعَةً قَالَ هَذَا رَبِّي									
से	क़ौम-लोग	भटकने वाले	77	फिर जब उस ने देखा	सूरज	जगमगाता हुआ	बोले	यह	मेरा रब
هَذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ (٧٨)									
यह	सब से बड़ा	फिर जब	वह गाइब हो गया	कहा	ऐ मेरी क़ौम	वेशक मैं	बेज़ार	उस से जो	तुम शिर्क करते हो
إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا									
वेशक मैं	मैं ने मुँह मोड़ लिया	अपना मुँह	उस की तरफ़ जिस	बनाए	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	यक रुख़ हो कर	और नहीं मैं	
مِنَ الْمُشْرِكِينَ (٧٩) وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ قَالَ أَتُحَاجُّونَنِي فِي اللَّهِ									
से	शिर्क करने वाले	79	और उस से झगड़ा किया	उस की क़ौम	उस ने कहा	क्या तुम मुझ से झगड़ते हो	अल्लाह (के बारे) में		
وَقَدْ هَدِنْتُ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا									
और उस ने मुझे हिदायत दे दी है	और नहीं डरता मैं	जो तुम शरीक करते हो	उस का	मगर	यह कि	चाहे	मेरा रब	कुछ	
وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ (٨٠) وَكَيْفَ أَخَافُ									
अहाता कर लिया	मेरा रब	हर चीज़	इल्म	सो क्या तुम नहीं सोचते	80	और क्योंकर	मैं डरूँ		
مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ									
जो तुम शरीक करते हो (तुम्हारे शरीक)	और तुम नहीं डरते	कि तुम	शरीक करते हो	अल्लाह का	जो	नहीं उतारी	उस की	तुम पर	
سُلْطَانًا فَإِنَّهُ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ (٨١)									
कोई दलील	सो कौन	दोनों फ़रीक़	ज़ियादा हक़दार	अमन का	अगर	तुम	जानते हो	81	

9
15

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمَنُ							
अमन (दिलजमई)	उन के लिए	यही लोग	जुल्म से	अपना ईमान	और न मिलाया	ईमान लाए	जो लोग
وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ							
उस की कौम	पर	इब्राहीम (अ)	हम ने यह दी	हमारी दलील	और यह	82	हिदायत यापता और वही
نَزَعُ دَرَجَتٍ مِّنْ نَّشَاءٍ ۚ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا							
और बख़शा हम ने	83	जानने वाला	हिक्मत वाला	तुम्हारा रब	वेशक हम चाहें	जो - जिस	हम वुलन्द करते हैं
لَهُ إِسْحَاقُ وَيَعْقُوبُ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ							
उस से कब्ल	हम ने हिदायत दी	और नूह (अ)	हिदायत दी हम ने	सब को	और याकूब (अ)	इसहाक (अ)	उस को
وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ							
और हारून (अ)	और मूसा (अ)	और यूसुफ़ (अ)	और अय्यूब (अ)	और सुलेमान (अ)	दाऊद (अ)	उन की औलाद	और से
وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِيلَاسَ							
और इलयास (अ)	और ईसा (अ)	और यहया (अ)	और ज़करिया (अ)	84	नेक काम करने वाले	हम बदला देते हैं	और इसी तरह
كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِينَ ﴿٨٥﴾ وَاسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيُونُسَ وَلُوطًا							
और लूत (अ)	और यूनस (अ)	और अलयासअ (अ)	और इस्माईल (अ)	85	नेक बन्दे	से	सब
وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَىٰ الْعَالَمِينَ ﴿٨٦﴾ وَمِنَ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ							
और उन की औलाद	उन के बाप दादा	और से (कुछ)	86	तमाम जहान वाले	पर	हम ने फज़ीलत दी	और सब
وَإِخْوَانِهِمْ ۖ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٨٧﴾							
87	सीधा	रास्ता	तरफ़	हम ने हिदायत दी उन्हें	और हम ने चुना उन्हें	और उन के भाई	
ذَٰلِكَ هُدَىٰ اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ مِّنْ عِبَادِهِ							
अपने बन्दे	से	चाहे	जिसे	इस से	हिदायत देता है	अल्लाह की रहनुमाई	यह
وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٨﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ							
वह लोग जो	यह	88	वह करते थे	जो कुछ	उन से	तो ज़ाया हो जाते	और शिर्क करते
آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَإِنْ يَكْفُرْ بِهَا هَٰؤُلَاءِ							
यह लोग	इस का	इन्कार करें	पस अगर	और नबूवत	और शरीअत	किताब	हम ने दी उन्हें
فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا بِكَافِرِينَ ۚ أُولَٰئِكَ							
यही लोग	89	इन्कार करने वाले	इस के	वह नहीं	ऐसे लोग	इन के लिए	तो हम मुक़र्र कर देते हैं
الَّذِينَ هَدَىٰ اللَّهُ فَهَدَاهُمْ ۚ أَفْتَدَهُ ۚ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ							
नहीं मांगता मैं तुम से	आप (स) कह दें	चलो	सो उन की राह पर	अल्लाह ने हिदायत दी	वह जो		
عَلَيْهِ أَجْرًا ۚ إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْعَالَمِينَ ﴿٩٠﴾							
90	तमाम जहान वाले	नसीहत	मगर	यह	नहीं	कोई उज़्रत	इस पर

10
16

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अपने ईमान को जुल्म से न मिलाया, उन्हीं लोगों के लिए दिलजमई है और वही हिदायत यापता है। (82)

और यह हमारी दलील है जो हम ने इब्राहीम (अ) को उन की कौम पर दी, हम जिस के दरजे चाहें वुलन्द करते हैं। वेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, जानने वाला। (83)

और हम ने उन (इब्राहीम अ) को बख़शा इसहाक (अ) और याकूब (अ), हम ने सब को हिदायत दी और नूह (अ) को हम ने हिदायत दी उस से कब्ल, और उन की औलाद में से दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) और अय्यूब (अ) और यूसुफ़ (अ) और मूसा (अ) और हारून (अ) को, और इसी तरह हम नेक काम करने वालों को बदला देते हैं। (84)

और ज़करिया (अ) और यहया (अ) और ईसा (अ) और इलयास (अ), सब नेक बन्दों में से हैं। (85)

और इस्माईल (अ) और अलयासअ (अ) और यूनस (अ) और लूत (अ), और सब को हम ने तमाम जहान वालों पर फज़ीलत दी। (86)

और कुछ उन के बाप दादा और उन की औलाद और उन के भाइयों को, और हम ने उन्हें चुना और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी। (87)

यह अल्लाह की रहनुमाई है। वह इस से हिदायत देता है अपने बन्दों में से जिसे चाहे, और अगर वह शिर्क करते तो जो कुछ वह करते थे ज़ाया हो जाता। (88)

यह वह लोग हैं जिन्हें हम ने किताब दी और शरीअत और नबूवत दी, पस अगर यह लोग इस का इन्कार करें तो हम ने इन (बातों) के लिए मुक़र्र कर दिए हैं ऐसे लोग जो इस के इन्कार करने वाले नहीं। (89)

यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, सो उन की राह पर चलो, आप कह दें मैं उस पर तुम से कोई उज़्रत नहीं मांगता, यह तो नहीं मगर नसीहत तमाम जहान वालों के लिए। (90)

और उन्होंने ने अल्लाह की कद्र न की (जैसे) उस की कद्र का हक था जब उन्होंने ने कहा कि अल्लाह ने किसी इन्सान पर कोई चीज़ नहीं उतारी, आप (स) कहें (वह) किताब किस ने उतारी जो मूसा (अ) ले कर आए लोगों के लिए रौशनी और हिदायत। तुम ने उसे बरक़ बरक़ कर दिया है, तुम उसे ज़ाहिर करते हो और अक्सर छुपा लेते हो, और उस ने तुम्हें सिखाया जो न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा, आप (स) कह दें अल्लाह (ने नाज़िल की), फिर उन्हें छोड़ दें अपने बेहूदा शुग़ल में खेलते रहें। (91)

और यह (कुरआन) किताब है बरक़त वाली, हम ने नाज़िल की, अपने से पहली (किताबों) की तसदीक करने वाली ताकि तुम डराओ अहले मक्का को और जो उस के इर्द गिर्द हैं (तमाम आस पास वाले), और जो लोग आखिरत पर ईमान रखते हैं वह उस पर ईमान लाते हैं और वह अपनी नमाज़ की हिफाज़त करते हैं। (92)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट (बुहतान) बान्धे, या कहे मेरी तरफ़ वहि की गई है और उसे कुछ वहि नहीं की गई, (उसी तरह वह) जो कहे मैं अभी उतारता हूँ उस के मिस्ल जो अल्लाह ने नाज़िल किया। और अगर तू देखे जब ज़ालिम मौत की सख्तियों में हों और फ़रिश्ते अपने हाथ फैलाए हों कि अपनी जानें निकालो, आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब दिया जाएगा उस सबब से कि तुम अल्लाह के बारे में झूटी बातें कहते थे और उस की आयतों से तकब्बुर करते थे। (93)

और अलबत्ता तुम हमारे पास अकेले अकेले आगए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और जो हम ने तुम्हें (माल ओ असबाब) दिया था छोड़ आए अपनी पीठ पछि, और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे वह सिफ़ारिश करने वाले नहीं देखते (जिन की निसबत) तुम गुमान करते थे कि वह तुम में (तुम्हारे) साझी हैं, अलबत्ता तुम्हारे दरमियान (रिशता) कट गया और तुम जो दावे करते थे सब जाते रहे। (94)

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى بَشَرٍ								
कोई इन्सान	पर	अल्लाह ने उतारी	नहीं	जब उन्होंने ने कहा	उस की कद्र	हक़	उन्होंने ने अल्लाह की कद्र जानी	और नहीं
مِنْ شَيْءٍ قُلْ مَنْ أَنْزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَى نُورًا								
रौशनी	मूसा (अ)	लाए उस को	वह जो	किताब	उतारी	किस	आप (स) कह दें	कोई चीज़
وَهَدَى لِلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا								
अक्सर	और तुम छुपाते हो	तुम जाहिर करते हो उस को	वरक़ वरक़	तुम ने कर दिया उस को	लोगों के लिए	और हिदायत		
وَعَلَّمْتُمْ مَا لَمْ تَعْلَمُوا أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ قُلِ اللَّهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ								
उन्हें छोड़ दें	फिर	अल्लाह	आप कह दें	तुम्हारे बाप दादा	और न	तुम	तुम न जानते थे	जो और सिखाया तुम्हें
فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩١﴾ وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبْرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي								
जो	तसदीक करने वाली	बरकत वाली	हम ने नाज़िल की	किताब	और यह	91	वह खेलते रहें	अपने बेहूदा शुग़ल में
بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَى وَمَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ								
ईमान रखते हैं	और जो लोग	उस के इर्द गिर्द	और जो	अहले मक्का	और ताकि तुम डराओ	अपने से पहली (किताबें)		
بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ								
और कौन	92	हिफाज़त करते हैं	अपनी नमाज़	पर (की)	और वह	इस पर	ईमान लाते हैं	आखिरत पर
أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ								
और नहीं वहि की गई	मेरी तरफ़	वहि की गई	कहे	या	झूट	अल्लाह पर	घड़े (बान्धे)	से-जो बड़ा ज़ालिम
إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَنْ قَالَ سَأُنْزِلُ مِثْلَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَوْ تَرَى إِذِ								
जब	तू देखे	और अगर	अल्लाह	जो नाज़िल किया	मिस्ल	मैं अभी उतारता हूँ	कहे और जो	कुछ उस की तरफ़
الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُوا أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا								
निकालो	अपने हाथ	फैलाए हों	और फ़रिश्ते	मौत	सख्तियों में	ज़ालिम (जमा)		
أَنْفُسَكُمْ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ								
अल्लाह पर (के बारे में)	तुम कहते थे	बसबब	ज़िल्लत	अज़ाब	आज तुम्हें बदला दिया जाएगा	अपनी जानें		
غَيْرِ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٩٣﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا								
तुम आगए हमारे पास	और अलबत्ता	93	तकब्बुर करते	उस की आयतें	से	और तुम थे	झूट	
فِرَادَى كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُمْ مَا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ								
अपनी पीठ	पीछे	हम ने दिया था तुम्हें	जो	और तुम छोड़ आए	बार	पहली	हम ने तुम्हें पैदा किया	जैसे एक एक (अकेले)
وَمَا نَرَى مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ								
साझी है	तुम में	कि वह	तुम गुमान करते थे	वह जो	सिफारिश करने वाले तुम्हारे	तुम्हारे साथ	हम देखते	और नहीं
لَقَدْ تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَا كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٩٤﴾								
94	तुम दावा करते थे	जो	तुम से	और जाते रहे	तुम्हारे दरमियान	अलबत्ता कट गया		

إِنَّ اللَّهَ فَلِئُلَى الْحَبِّ وَالنَّوَى يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ								
वेशक अल्लाह	फाड़ने वाला	दाना	और गुठली	निकालता है	ज़िन्दा	से	मुर्दा	और निकालने वाला
الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ذَلِكُمْ اللَّهُ فَإِنِّي تُؤَفِّكُونَ ٩٥ فَالِقُ الْإِصْبَاحِ								
मुर्दा	से	ज़िन्दा	यह है तुम्हारा अल्लाह	पस कहां	तुम वहके जा रहे हो	95	चौर कर (चाक करके) निकालने वाला सुबह	
وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ حُسْبَانًا ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ								
और उस ने बनाया	रात	सुकून	और सूरज	और चाँद	हिसाब	यह	अन्दाज़ा	ग़ालिब
الْعَلِيمِ ٩٦ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي								
इल्म वाला	96	और वही	वह जिस	बनाए	तुम्हारे लिए	सितारे	ताकि तुम रास्ता मालूम करो	उन से
ظُلُمَتِ اللَّيْلِ وَالْبَحْرِ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ٩٧								
अन्धेरे	खुशकी	और दर्या	वेशक हम ने खोल कर बयान कर दी है आयतें	लोगों के लिए	इल्म रखते हैं	97		
وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ								
और वही	वह जो - जिस	पैदा किया तुम्हें	से	वजूद - शख्स	एक	फिर एक ठिकाना	और अमानत की जगह	
قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ ٩٨ وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ								
वेशक हम ने खोल कर बयान कर दी है आयतें	लोगों के लिए	जो समझते हैं	98	और वही	वह जो - जिस	उतारा	से	
السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ نَبَاتٍ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا								
आस्मान	पानी	फिर हम ने निकाली	उस से	उगने वाली	हर चीज़	फिर हम ने निकाली	उस से	सबज़ी
تُخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِنَ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ								
हम निकालते हैं	उस से	दाने	एक पर एक चढ़ा हुआ	और	खजूर	से	गाभा	खोशे झुके हुए
وَجَنَّاتٍ مِنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ								
और बागात	अंगूर के	और ज़ैतून	और अनार	मिलते जुलते	और नहीं भी मिलते			
أَنْظُرُوا إِلَى ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ إِنَّ فِي ذَلِكُمْ								
देखो	तरफ़	उस का फल	जब	फलता है	और उस का पकना	वेशक	में	उस
لَايَةٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ٩٩ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ								
निशानियां	लोगों के लिए	ईमान रखते हैं	99	और उन्होंने ने ठहराया	अल्लाह का	शरीक	जिन	हालांकि उस ने उन्हें पैदा किया
وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُصِفُونَ ١٠٠								
और तराशते हैं	उस के लिए	बेटे	और बेटियां	इल्म के बग़ैर (जहालत से)	वह पाक है	और बुलन्द तर	उस से जो	वह बयान करते हैं
بَدِيعُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَتَى يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ								
नई तरह बनाने वाला	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	क्योंकर	हो सकता है	उस का	बेटा	जबकि नहीं	उस की
صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ١٠١								
बीबी	और उस ने पैदा की	हर चीज़	और वह	हर चीज़	जानने वाला			

वेशक अल्लाह फाड़ने वाला दाने और गुठली का, वह मुर्दा से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दा निकालने वाला, यह है तुम्हारा अल्लाह, पस तुम कहां वहके जा रहे हो? (95)

(रात की तारीकी) चाक कर के सुबह निकालने वाला, और उस ने रात को (ज़रीज़ा) सुकून बनाया और सूरज और चाँद को (ज़रीज़ा) हिसाब, यह अन्दाज़ा है ग़ालिब, इल्म वाले का। (96)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उन से खुशकी और दर्या के अन्धेरे में रास्ते मालूम करो, वेशक हम ने आयतें खोल खोल कर बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। (97)

और वही है जिस ने तुम्हें एक वजूद से पैदा किया, फिर तुम्हारा एक ठिकाना है और अमानत रहने की जगह। वेशक हम ने आयात खोल कर बयान कर दी हैं समझ वालों के लिए। (98)

और वही है जिस ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर हम ने उस से निकाली उगने वाली हर चीज़, फिर हम ने उस से हरे हरे केत और दरखत निकाले जिस से एक पर एक चढ़े हुए दाने निकालते हैं, और खजूरों के गाभे से झुके हुए खोशे, और अंगूर और ज़ैतून और अनार के बागात एक दूसरे से मिलते जुलते और नहीं भी मिलते, उस के फल की तरफ़ देखो जब वह फलता है और उस का पकना (देखो), वेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (99)

और उन्होंने ने जिनको अल्लाह का शरीक ठहराया हालांकि उस ने उन्हें पैदा किया है और वह उस के लिए बेटे और बेटियां तराशते हैं जहालत से, वह पाक है और उस से बुलन्द तर है जो वह बयान करते हैं। (100)

नई तरह (नमूने के बग़ैर) आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला, उस के बेटा क्योंकि हो सकता है? जबकि उस की बीबी नहीं और उस ने हर चीज़ पैदा की है, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। (101)

यही अल्लाह तुम्हारा रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला, सो तुम उस की इबादत करो, और वह हर चीज़ का कारसाज़ और निगहवान है। (102)

(मखलूक की) आँखें उस को नहीं पा सकती और वह आँखों को पा सकता है और वह भेद जानने वाला खबरदार है। (103)

तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानियाँ आ चुकीं। तो जिस ने देख लिया सो अपने बास्ते, और जो अन्धा रहा तो (उस का बवाल) उस की जान पर, और मैं तुम पर निगहवान नहीं। (104)

और उसी तरह हम आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि वह कहें: तू ने (किसी से) पढ़ा है, और ताकि हम जानने वालों के लिए वाज़ेह कर दें। (105)

उस पर चलो जो वहि आए तुम्हारे रब से तुम्हारी तरफ़, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और मुश्रिकों से मुँह फेर लो। (106)

अगर अल्लाह चाहता तो वह शिर्क न करते और हम ने तुम्हें उन पर निगहवान नहीं बनाया, और तुम उन पर दारोगा नहीं। (107)

और अल्लाह के सिवा वह जिन्हें पुकारते हैं तुम उन्हें गाली न दो, पस वह अल्लाह को वे समझे बूझे गुस्ताखी से बुरा कहेंगे, उसी तरह हम ने हर फिरके को उस का अमल भला दिखाया, फिर उन्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, वह फिर उन को जता देगा जो वह करते थे। (108)

और वह ताकीद से अल्लाह की कसम खाते हैं कि अगर उन के पास कोई निशानी आए तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे, आप (स) कह दें कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं, और तुम्हें क्या खबर कि जब आ भी जाएं तो यह ईमान न लाएंगे। (109)

और हम उन के दिल और उन की आँखें उलट देंगे, जैसे वह उन (निशानियों) पर पहली बार ईमान नहीं लाए, और हम उन्हें छोड़ देंगे उन की सरकशी में कि वह बहकते रहें। (110)

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ							
सो तुम उस की इबादत करो	हर चीज़	पैदा करने वाला	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	तुम्हारा रब	यही अल्लाह	
وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٠٢﴾ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ							
पा सकता है	और वह	आँखें	नहीं पा सकती उस को	102	कारसाज़ - निगहवान	हर चीज़	पर और वह
الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللّٰطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٠٣﴾ قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِنْ							
से	निशानियाँ	आ चुकी तुम्हारे पास	103	खबरदार	भेद जानने वाला	और वह	आँखें
رَبِّكُمْ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا وَمَا اَنَا عَلَيْكُمْ							
तुम पर	मैं	और नहीं	तो उस की जान पर	अन्धा रहा	और जो	सो अपने बास्ते	देख लिया सो जो - जिस
بَحْفِیْظٍ ﴿١٠٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُّصَرِّفُ الْاٰیٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ							
तू ने पढ़ा है	और ताकि वह कहें	आयतें	हम फेर फेर कर बयान करते हैं	और उसी तरह	104	निगहवान	
وَلِنُبَيِّنَ لِقَوْمٍ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اَتَّبِعْ مَا اُوْحٰی اِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ							
तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़	जो वहि आए	तुम चलो	105	जानने वालों के लिए	और ताकि हम वाज़ेह कर दें
لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَاءَ اللّٰهُ							
चाहता अल्लाह	और अगर	106	मुश्रिकीन	से	और मुँह फेर लो	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद
مَا اَشْرَكُوْا وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِیْظًا وَمَا اَنْتَ عَلَيْهِمْ							
उन पर	तुम	और नहीं	निगहवान	उन पर	बनाया तुम्हें	और नहीं	न शिर्क करते वह
بَوْكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾ وَلَا تَسُبُّوْا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوْا							
पस वह बुरा कहेंगे	अल्लाह के सिवा	से	वह परस्तिश करते है	वह जिन्हें	और तुम न गाली दो	107	दारोगा
اللّٰهُ عَدُوًّا بِغَيْرِ عِلْمٍ كَذٰلِكَ زَيْنًا لِّكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلُهُمْ ثُمَّ							
फिर	उन का अमल	फिर्का	हम ने भला दिखाया हर एक	उसी तरह	वे समझे बूझे	गुस्ताखी से	अल्लाह
اِلٰی رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا							
और वह कसम खाते थे	108	करते थे	जो वह	वह फिर उन को जता देगा	उन को लौटना	अपना रब	तरफ़
بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْْمَانِهِمْ لَبِنَ جَاءَتْهُمْ اٰیَةٌ لِّیُّوْمِنُنَّ بِهَا قُلْ							
आप कह दें	उस पर	तो ज़रूर ईमान लाएंगे	कोई निशानी	उन के पास आए	अलबत्ता अगर	ताकीद से	अल्लाह की
اِنَّمَا الْاٰیٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ اَنَّهَا اِذَا جَاءَتْ							
जब आएँ	कि वह	खबर तुम्हें	और क्या	अल्लाह के पास	निशानियाँ	कि	
لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْئِدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ یُؤْمِنُوْا							
वह ईमान नहीं लाए	जैसे	और उन की आँखें	उन के दिल	और हम उलट देंगे	109	ईमान न लाएंगे	
بِهٖ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَنْذَرُهُمْ فِی طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾							
110	वह बहकते रहें	उन की सरकशी	में	और हम छोड़ देंगे उन्हें	पहली बार	उस पर	

وَلَوْ أَنَّا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَىٰ						
और अगर	हम	उतारते	उन की तरफ	फरिश्ते	और उन से बातें करते	मुर्दे
وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا إِلَّا أَنْ						
और हम जमा कर देते	उन पर	हर शै	सामने	न	वह ईमान लाते	मगर कि
يَشَاءَ اللَّهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ﴿١١١﴾ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ						
चाहे अल्लाह	और लेकिन	उन में अक्सर	जाहिल (नादान) है	111	और इसी तरह	हम ने बनाया हर नबी के लिए
عَدُوًّا شَاطِئِينَ الْإِنْسِ وَالْجِنَّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ						
दुश्मन	शैतान (जमा)	इन्सान	और जिन	डालते हैं	उन के बाज़	तरफ बाज़
زُحْرَفِ الْقَوْلِ غُرُورًا وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ						
मुलम्मा की हुई	बातें	वहकाने के लिए	और अगर	चाहता	तुम्हारा रब	वह न करते पस छोड़ दें उन्हें
وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٢﴾ وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفِيدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ						
और जो	वह झूट घड़ते हैं	112	और ताकि माइल हो जाएं	उस की तरफ	दिल (जमा)	वह लोग जो ईमान नहीं रखते
بِالْآخِرَةِ وَلِيَرَضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُونَ ﴿١١٣﴾ أَفَعَيَّرَ اللَّهُ						
आखिरत पर	और ताकि वह उस को पसन्द करलें	और ताकि वह करते रहें	जो	वह	बुरे काम करते हैं	113 तो क्या अल्लाह के सिवा
أَبْتَغَىٰ حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا						
मैं ढूँढ़ूँ	कोई मुनसिफ	और वह	जो-जिस	नाज़िल की	तुम्हारी तरफ	किताब मुफससिल (वाज़ेह)
وَالَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَبِّكَ						
और वह लोग जिन्हें	हम ने उन्हें दी	किताब	वह जानते हैं	कि यह	उतारी गई है	से तुम्हारा रब
بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ						
हक के साथ	सो तुम न होना	से	शक करने वाले	114	और पूरी है	वात तेरा रब
صِدْقًا وَعَدْلًا لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَتِهِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١١٥﴾						
सच	और इन्साफ	नहीं बदलने वाला	उस के कलिमात	और वह	सुनने वाला	115 जानने वाला
وَإِنْ تُطِيعُوا أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ						
और अगर	तू कहा माने	अक्सर	जो	ज़मीन में	वह तुझे भटका देंगे	से अल्लाह का रास्ता
إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١١٦﴾ إِنَّ رَبَّكَ						
नहीं	पैरवी करते	मगर (सिर्फ)	गुमान	और नहीं	वह	मगर वेशक तेरा रब
هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٧﴾						
वह	खूब जानता है	जो	वहकता है	से	उस का रास्ता	और वह
117	हिदायत याफ़ता लोगों को	खूब जानता है	और वह	उस की आयतों पर	ईमान वाले	118
فَكُلُوا مِمَّا ذَكَرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾						
सो तुम खाओ	उस से जो	लिया गया	अल्लाह का नाम	उस पर	अगर	तुम हो

और अगर हम उन की तरफ फरिश्ते उतारते, और उन से मुर्दे बातें करते, और हम जमा कर देते उन पर (उन के सामने) हर चीज़ तो भी वह ईमान न लाते मगर यह कि अल्लाह चाहे, और लेकिन उन में अक्सर नादान हैं। (111)

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए इन्सानों और जिनों के शयातीन को दुश्मन बना दिया, एक दूसरे की तरफ मुलम्मा की हुई बातें वहकाने के लिए इलका करते रहते हैं, और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह ऐसा न करते, पस उन्हें छोड़ दें (उस के साथ) जो वह झूट घड़ते हैं। (112)

और ताकि उन लोगों के दिल उस की तरफ माइल हो जाएं जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते, और ताकि वह उस को पसन्द करें, और ताकि वह करते रहें जो वह बुरे काम करते हैं। (113)

क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और मुनसिफ ढूँढ़ूँ? और वही है जिस ने तुम्हारी तरफ मुफससिल (वाज़ेह) किताब नाज़िल की है, और जिन्हें हम ने किताब दी है (अहले किताब) वह जानते हैं कि यह तुम्हारे रब की तरफ से हक के साथ उतारी गई है, सो तुम शक करने वालों में से न होना। (114)

और कामिल है तेरे रब की बात सच और इन्साफ के ऐतिवार से, उस के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (115)

और ज़मीन में अक्सर (ऐसे हैं) अगर तू उन का कहा माने तो वह तुझे अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे, वह नहीं पैरवी करते मगर सिर्फ गुमान की, और वह सिर्फ अटकल दौड़ाते हैं। (116)

वेशक तेरा रब उसे खूब जानता है जो वहकता है उस के रास्ते से, और वह हिदायत याफ़ता लोगों को खूब जानता है। (117)

सो तुम उस में से खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो। (118)

और तुम्हें क्या हुआ कि तुम उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है हालांकि वह तुम्हारे लिए वाज़ेह कर चुका है जो उस ने तुम पर हाराम किया है मगर यह कि तुम लाचार हो जाओ, और बहुत से (लोग) अपनी खाहिशात से इल्म (तहकीक) के बग़ैर गुमराह करते हैं, वेशक तुम्हारा रब हद से बढ़ने वालों को खूब जानता है। (119)

और छोड़ दो खुला गुनाह और छुपा हुआ, वेशक जो लोग गुनाह करते हैं अनक़रीब उस की सज़ा पाएंगे जो वह बुरे काम करते थे। (120)

और उस से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया और वेशक यह गुनाह है, और वेशक शैतान अपने दोस्तों के (दिलों में वसवसा) डालते हैं ताकि वह तुम से झगड़ा करें, और अगर तुम ने उन का कहा माना तो वेशक तुम मुशर्रिक होगे। (121)

क्या (वह शख्स) जो मुर्दा था फिर हम ने उस को ज़िन्दा क्या और हम ने उस के लिए नूर बनाया, वह चलता है उस (नूर की रौशनी) से लोगों में, (क्या) उस जैसा हो जाएगा जो अन्धेरो में है? उस से निकलने वाला नहीं, इसी तरह काफ़िरो के लिए उन के अमल ज़ीनत दिए गए। (122)

और इसी तरह हम ने हर बस्ती में बनाए उस के बड़े मुज़्रिम ताकि वह उस में मकर करें, और वह मकर नहीं करते मगर अपनी जानों पर, (अपनी ही जानों पर चालें चलते हैं), ओर वह शऊर नहीं रखते। (123)

और जब उन के पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि हम हरगिज़ न मानेंगे जब तक हमें उस जैसा न दिया जाए जो अल्लाह के रसूलों को दिया गया, अल्लाह खूब जानता है कि अपनी रिसालत कहाँ भेजे, अनक़रीब उन लोगों को पहुँचेगी जिन्होंने ने जुर्म किया, अल्लाह के हौ ज़िल्लत और सख़्त अज़ाब, उस का बदला कि वह मकर करते थे। (124)

وَمَا لَكُمْ إِلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَاءِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾ وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لِيُؤْخِذَ إِلَى أُولِيهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾ أَوْ مَن كَانَ مَيِّتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرًا مُّجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ حَتَّى نُؤْتَى مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۗ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾							
हालांकि वह वाज़ेह कर चुका है	उस पर	नाम अल्लाह का	लिया गया	उस से जो	कि तुम न खाओ	और क्या हुआ तुम्हें	
बहुत से	और वेशक	उसकी तरफ़ (उस पर)	तुम लाचार हो जाओ	जिस मगर	तुम पर	जो उस ने हाराम किया	तुम्हारे लिए
खूब जानता है	वह	तेरा रब	वेशक	इल्म के बग़ैर	अपनी खाहिशात से	गुमराह करते हैं	
जो लोग	वेशक	और उस का छुपा हुआ	खुला गुनाह	और छोड़ दो	119	हद से बढ़ने वालों को	
और न खाओ	120	वह बुरे काम करते थे	उस की जो	अनक़रीब सज़ा पाएंगे	गुनाह	कमाते (करते) हैं	
शैतान (जमा)	और वेशक	अलबत्ता गुनाह	और वेशक यह	उस पर	अल्लाह का नाम	नहीं लिया गया	उस से जो
तो वेशक तुम	तुम ने उन का कहा माना	और अगर	ताकि वह झगड़ा करें तुम से	अपने दोस्त	तरफ़ (में)	डालते हैं	
नूर	उस के लिए	और हम ने बनाया	फिर हम ने उस को ज़िन्दा किया	मुर्दा था	क्या जो	121	मुशर्रिक होगे
निकलने वाला	नहीं	अन्धेरे	में	उस जैसा जो	लोग	में	उस से वह चलता है
और इसी तरह	122	जो वह करते थे (अमल)	जो	काफ़िरो के लिए	ज़ीनत दिए गए	इसी तरह	उस से
और नहीं	उस में	ताकि वह मकर करें	उस के मुज़्रिम	बड़े	बस्ती	हर	में हम ने बनाए
उन के पास आती है	और जब	123	वह शऊर रखते	और नहीं	अपनी जानों पर	मगर	वह मकर करते
अल्लाह	रसूल (जमा)	दिया गया	उस जैसा जो	हम को दिया जाए	जब तक	हम हरगिज़ न मानेंगे	कोई आयत
उन्होंने ने जुर्म किया	वह लोग जो	अनक़रीब पहुँचेगी	अपनी रिसालत	रखे (भेजे)	कहाँ	खूब जानता है	अल्लाह
124	वह मकर करते थे	उस का बदला	सख़्त	और अज़ाब	अल्लाह के हौ	ज़िल्लत	

۱۲۴

وقتی منزل

فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِإِسْلَامٍ						
पस जिस	अल्लाह चाहता है	कि उसे हिदायत दे	खोल देता है	उस का सीना	इस्लाम के लिए	
وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَانَمَا						
और जिस	चाहता है	कि	उसे गुमराह करे	कर देता है	उस का सीना	तंग
गोया कि	भींचा हुआ					
يَصْعَدُ فِي السَّمَاءِ كَذَلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ						
जोर से चढ़ता है	आस्मानों में- आस्मान पर	इसी तरह	कर देता है	नापाकी (अज़ाब)	पर	जो लोग
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢٥﴾ وَهَذَا صِرَاطٌ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا قَدْ فَصَّلْنَا						
ईमान नहीं लाते	125	और यह	रास्ता	तुम्हारा रब	सीधा	हम ने खोल कर बयान कर दी है
الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَكِّرُونَ ﴿١٢٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ						
आयात	उन लोगों के लिए	जो नसीहत पकड़ते हैं	126	उन के लिए	उन के लिए	उन का रब
وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٧﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ						
और वह	दोस्त दार- कारसाज़	उसका सिला जो	वह करते थे	127	और जिस दिन	वह जमा करेगा
جَمِيعًا يَمْعَشَرُ الْجِنَّ قَدْ اسْتَكْثَرْتُمْ مِنَ الْإِنْسِ وَقَالَ						
सब	ऐ जिन्नात के गिरोह	तुम ने बहुत घेर लिए (अपने ताबे कर लिए)	से	इन्सान- आदमी	और कहेंगे	
أُولَئِهِمْ مِنَ الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَّغْنَا						
उन के दोस्त	से	इन्सान	ऐ हमारे रब	हम ने फाड़दा उठाया	हमारे बाज़	बाज़ से
और हम पहुँचे						
أَجَلْنَا الَّذِي أَجَلْت لَنَا قَالَ النَّارُ مَثْوَكُمْ خَلِدِينَ						
मीज़ाद	जो	तू ने मुर्कर की थी	हमारे लिए	फरमाएगा	आग	तुम्हारा ठिकाना
हमेशा रहोगे						
فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٨﴾ وَكَذَلِكَ						
उस में	जिसे	अल्लाह चाहे	वेशक	तुम्हारा रब	हिकमत वाला	जानने वाला
128						और इसी तरह
نُؤَلِّى بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٢٩﴾						
हम मुसल्लत कर देते हैं	बाज़	ज़ालिम (जमा)	बाज़ पर	उसके सबब	जो वह करते थे (उन के आमाल)	129
يَمْعَشَرُ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ						
ऐ गिरोह	जिन्नात	और इन्सान	क्या नहीं आए तुम्हारे पास	रसूल (जमा)	तुम में से	
يَقْضُونَ عَلَيْكُمْ أَيْتَى وَيُذَوِّنْكُمْ لِقَاءِ رُسُلِهِمْ يَوْمَئِذٍ						
सुनाते थे (बयान करते थे)	तुम पर	मेरी आयात	और तुम्हें डराते थे	सुलाकात (देखना)	तुम्हारा दिन	
هَذَا قَالُوا شَهِدْنَا عَلَى أَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمْ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا						
इस	वह कहेंगे हम गवाही देते हैं	पर (खिलाफ)	अपनी जानें	और उन्हें धोके में डाल दिया	ज़िन्दगी	दुनिया
وَشَهِدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ﴿١٣٠﴾						
और उन्होंने ने गवाही दी	पर (खिलाफ)	अपनी जाने (अपने)	कि वह	कुफ़ करने वाले थे		130

पस अल्लाह जिस को हिदायत देना चाहता है, उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिस को चाहता है कि उसे गुमराह करे, उस का सीना तंग भींचा हुआ (निहायत तंग) कर देता है। गोया कि वह जोर से (बमुश्किल) आस्मान पर चढ़ रहा है, इसी तरह अल्लाह उन लोगों पर अज़ाब डालेगा जो ईमान नहीं लाते। (125)

यह रास्ता है तुम्हारे रब का सीधा, हम ने आयात खोल कर बयान कर दी है उन लोगों के लिए जो नसीहत पकड़ते हैं, (126)

उन के लिए उन के रब के पास सलामती का घर है और वह उन का कारसाज़ है उस के सिले में जो वह करते थे। (127)

और जिस दिन वह जमा करेगा उन सब को (फरमाएगा) ऐ गिरोह जिन्नात! तुम ने बहुत से आदमी अपने ताबे कर लिए, और इन्सानों में से उन के दोस्त कहेंगे ऐ हमारे रब! हमारे बाज़ ने बाज़ (एक दूसरे) से फाड़दा उठाया और हम उस मीज़ाद (घड़ी) को पहुँच गए जो तू ने मुर्कर की थी। फरमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है, उस में हमेशा रहोगे मगर जिसे अल्लाह चाहे, वेशक तुम्हारा रब हिकमत वाला, जानने वाला है। (128)

और इसी तरह हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ पर (एक दूसरे पर) मुसल्लत कर देते हैं उन के आमाल के सबब। (129)

ऐ गिरोहे जिन्नात ओ इन्सान! क्या तुम्हारे पास तुम में से हमारे रसूल नहीं आए? वह तुम पर हमारे अहकाम बयान करते थे और तुम्हें डराते थे यह दिन देखने से। वह कहेंगे हम अपनी जानों के खिलाफ (अपने खिलाफ) गवाही देते हैं, और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल दिया और उन्होंने ने अपने खिलाफ गवाही दी कि वह काफ़िर थे। (130)

यह इस लिए है कि तेरा रब जुल्म की सज़ा में बस्तियों को हलाक करने वाला नहीं जब कि उन के लोग बेख़बर हों। (131)

और हर एक के लिए उन के आमाँल के दरजे हैं और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो वह करते हैं। (132)

और तुम्हारा रब बेनियाज़ है, रहमत वाला, अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए (हलाक कर दे) और जिस को चाहे तुम्हारे बाद जानशीन कर दे, जैसे उस ने तुम्हें उठाया औलाद से एक दूसरी कौम की। (133)

वेशक जिस का तुम से वादा किया जाता है वह ज़रूर आने वाली है और तुम आज़िज़ करने वाले नहीं। (134)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरी कौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो, मैं भी काम कर रहा हूँ, पस तुम अन्नकरीब जान लोगे किस के लिए है आक़िबत का घर। वेशक ज़ालिम (दो जहान की) कामयाबी नहीं पाते। (135)

और (अल्लाह ने) जो खेती और मवेशी पैदा किए हैं उस से उन्होंने ने ठहराया है अल्लाह के लिए एक हिस्सा, पस उन्होंने ने अपने ख़याल में कहा यह अल्लाह के लिए है और यह हमारे शरीकों के लिए है, पस जो उन के शरीकों के लिए है तो वह नहीं पहुँचता अल्लाह को। और जो अल्लाह के लिए है वह उन के शरीकों को पहुँच जाता है, बुरा है जो वह फ़ैसला करते हैं। (136)

और इसी तरह बहुत से मुश्रिकों के लिए उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल अरास्ता कर दिया है ताकि वह उन्हें हलाक कर दें, और उन पर उन का दीन गुड मड कर दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वह (ऐसा) न करते, सो तुम उन्हें छोड़ो और वह जो झूट बान्धते हैं (वह जानें और उन का झूट)। (137)

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا							
जब कि उन के लोग	जुल्म से	वस्तियाँ	हलाक कर डालने वाला	तेरा रब	नहीं है	इस लिए कि	यह
غٰفِلُوْنَ (131) وَلِكُلِّ دَرَجَتٍ مِّمَّا عَمِلُوْا وَمَا رَبُّكَ							
तुम्हारा रब	और नहीं	उन्होंने ने किया (उन के आमाँल)	उस से जो	दरजे	और हर एक के लिए	131	बेख़बर हों
بِغٰفِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ (132) وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ							
रहमत वाला	बेनियाज़	और तुम्हारा रब	132	वह करते हैं	उस से जो		बेख़बर
اِنْ يَّشَأْ يُّذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَا							
जैसे	जिस को चाहे	तुम्हारे बाद	और जानशीन बनादे	तुम्हें ले जाए	वह चाहे	अगर	
اَنْشَاَكُمْ مِنْۢ ذُرِّيَّةٍ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ (133) اِنَّ مَا تُوعَدُوْنَ							
तुम से वादा किया जाता है	जिस	वेशक	133	दूसरी	कौम	औलाद	उस ने तुम्हें उठाया
لَاۤتٍ وَمَا اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ (134) قُلْ يَقَوْمِ اَعْمَلُوْا عَلٰٓى							
पर	काम करते रहो	ऐ कौम	फ़रमा दें	134	आज़िज़ करने वाले	तुम	और नहीं ज़रूर आने वाली है
مَكَانَتِكُمْ اِنِّىۡ عَامِلٌۭ فَاَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ							
उस का	होता है	किस	तुम जान लोगे	पस जल्द	काम कर रहा हूँ	मैं	अपनी जगह
عَاقِبَةُ الدَّارِۚ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظَّٰلِمُوْنَ (135) وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ							
और उन्होंने ने ठहराया अल्लाह के लिए	135	ज़ालिम	फ़लाह नहीं पाते	वेशक	घर	आख़िरत	
مِمَّا ذَرَا مِنْ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا							
पस उन्होंने ने कहा	एक हिस्सा	और मवेशी	खेती से	उस ने पैदा किए	उस से जो		
هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَاۙ فَمَا كَانَ							
है	पस जो	हमारे शरीकों के लिए	और यह	उन के झूटे ख़याल के मूताबिक	यह अल्लाह के लिए		
لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُۙ اِلٰى اللّٰهِ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهٗو							
तो वह	अल्लाह के लिए है	और जो	अल्लाह	तरफ़ को	पहुँचता	तो नहीं	उन के शरीकों के लिए
يَصِلُۙ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْۙ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ (136) وَكَذٰلِكَ							
और इसी तरह	136	जो वह फ़ैसला करते हैं	बुरा है	उन के शरीक	तरफ़ (को)	पहुँचता है	
زَيِّنَ لِّكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتَلَۙ اَوْلَادِهِمْ							
उन की औलाद	क़त्ल	मुश्रिक (जमा)	से	अकसर के लिए	अरास्ता कर दिया है		
شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنََهُمْ							
उन का दीन	उन पर	और गुड मड कर दें	ताकि वह उन्हें हलाक करदें	उन के शरीक			
(137) وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ							
137	वह झूट बान्धते हैं	और जो	सो तुम उन्हें छोड़ दो	वह न करते	अल्लाह	और अगर चाहता	

وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرِّتْ حِجْرًا لَا يَطْعُمُهَا إِلَّا مَنْ							
जिस को	मगर	उसे न खाए	ममनूअ (मना किए हुए)	और खेती	मवेशी	यह	और उन्होंने ने कहा
نَشَاءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ							
और कुछ मवेशी	उन की पीठ (जमा)	हराम की गई	और कुछ मवेशी	उन के ग़लत खयाल के मुताबिक	हम चाहें		
لَا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ سَيَجْزِيهِمْ							
हम जल्द उन्हें सज़ा देंगे	उस पर	झूट बान्धते हैं	उस पर	नाम अल्लाह का	वह नहीं लेते		
بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾ وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ							
मवेशी (जमा)	इन	पेट में	जो	और उन्होंने ने कहा	138	झूट बान्धते थे	उस की जो
خَالِصَةً لِّذِكْرِنَا وَمَحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا وَإِنْ يَكُنْ							
हो	और अगर	हमारी औरतें	पर	और हराम	हमारे मर्दों के लिए	ख़ालिस	
مَيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ سَيَجْزِيهِمْ وَصَفَهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ							
हिक्मत वाला	वेशक वह	उन का बातें बनाना	वह जल्द उन को सज़ा देगा	शरीक	उस में	तो वह सब	मुर्दा
عَلِيمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا							
वेवकूफी से	अपनी औलाद	उन्होंने ने क़त्ल किया	वह लोग जिन्होंने ने	अलबत्ता घाटे में पड़े	139	जानने वाला	
بَغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ							
अल्लाह पर	झूट बान्धते हुए	अल्लाह ने उन्हें दिया	जो	और हराम ठहराया	बेख़बरी (नादानी से)		
قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾ وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ							
पैदा किए	जिस ने	और वह	140	हिदायत पाने वाले	और वह न थे	यकीनन वह गुमराह हुए	
جَنَّتِ مَعْرُوشَتٍ وَغَيْرِ مَعْرُوشَتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ							
और खेती	और खजूर	और न चढ़ाए हुए			चढ़ाए हुए	बागात	
مُخْتَلِفًا أَكْلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ							
और ग़ैर मुशाबह (जुदा जुदा)	मुशाबह (मिलते जुलते)	और अनार	और ज़ैतून	उस के फल	मुखतलिफ़		
كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ							
उस के काटने के दिन	उस का हक़	और अदा करो	वह फल लाए	जब	उस के फल	से	खाओ
وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٤١﴾ وَمَنْ							
और से	141	बेजा खर्च करने वाले	पसन्द नहीं करता	वेशक वह	और बेजा खर्च न करो		
الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ							
अल्लाह ने तुम्हें दिया	उस से जो	खाओ	और ज़मीन से लगे हुए	वार बरदार (बड़े बड़े)	चौपाए		
وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٤٢﴾							
142	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	वेशक वह	शैतान	क़दम (जमा)	और न पैरवी करो

और उन्होंने ने कहा यह मवेशी और खेती ममनूअ है, उसे कोई न खाए मगर जिस को हम चाहें उन के (झूटे) खयाल के मुताबिक और कुछ मवेशी हैं कि उन की पीठ पर (सवारी) हराम की है और कुछ मवेशी हैं (जुबू करतें वक़्त) उन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते, (यह) झूट बान्धना है उस (अल्लाह) पर, हम जल्द उन्हें उस की सज़ा देंगे जो वह झूट बान्धते थे। (138)

और उन्होंने ने कहा जो उन मवेशियों के पेट में है वह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों पर हराम है, और अगर मुर्दा हो तो सब उस में शरीक है, वह जल्द उन्हें उन के बातें बनाने की सज़ा देगा, वह वेशक हिक्मत वाला जानने वाला है। (139)

अलबत्ता वह लोग घाटे में पड़े जिन्होंने ने बेवकूफी, नादानी से अपनी औलाद को क़त्ल किया और जो अल्लाह ने उन्हें दिया वह हराम ठहरा लिया झूट बान्धते हुए अल्लाह पर, यकीनन वह गुमराह हुए, और वह हिदायत पाने वाले न थे। (140)

और वही (ख़ालिक) है जिस ने बागात पैदा किए (छतरियों पर) चढ़ाए हुए (जैसे अंगूर) और (छतरियों पर) न चढ़ाए हुए, और खजूर और खेती, उस के फल मुखतलिफ़ (किस्म के) और ज़ैतून और अनार मिलते जुलते और जुदा जुदा, जब वह फल लाए तो उस के फल खाओ, और उस के काटने के दिन उस का हक़ (उशर) अदा कर दो, और वेजा खर्च न करो, वेशक अल्लाह वेजा खर्च करने वालों को पसन्द नहीं करता। (141)

और चौपायों में से (पैदा किए) वार बरदार (बड़े बड़े) और ज़मीन पर लगे हुए (छोटे छोटे), जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से खाओ और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, वेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (142)

आठ जोड़े (नर और मादा पैदा किए) दो भेड़ से दो बकरी से, आप पूछें क्या (अल्लाह ने) दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या वह जो दोनों मादा के रहम में लिपटा हुआ (अभी पेट में) हो? मुझे किसी इल्म से बताओ अगर तुम सच्चे हो। (143)

और दो ऊँट से और दो गाए से (पैदा किए), आप (स) पूछें क्या अल्लाह ने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या जो दोनों के रहमों में लिपटा हुआ हो (अभी पेट में हो)? क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें उस का हुक्म दिया था? पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर बुहतान बान्धे झूट ताकि लोगों को इल्म के बग़ैर (जहालत से) गुमराह करे, वेशक अल्लाह जुल्म करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देता। (144)

आप (स) फ़रमा दीजिए, जो वहि मुझे दी गई है उस में किसी खाने वाले पर कोई खाना हराम नहीं पाता मगर यह कि वह मुर्दार हो या बहता हुआ खून या सुव्वर का गोश्त, पस वह नापाक है, या गुनाह का (नाजाइज़ ज़बीहा) जिस पर ग़ैर अल्लाह का नाम पुकारा गया हो, पस जो लाचार हो जाए, न नाफ़रमानी करने वाला हो और न सरकश हो तो वेशक तेरा रब बख़शने वाला निहायत मेहरबान है। (145)

और उन लोगों पर जो यहूदी हुए, हम ने हराम कर दिया हर नाखुन वाला जानवर, और हम ने गाए और बकरी की चरवी उन पर हराम कर दी, सिवाए उस के जो उन की पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या हड्डियों के साथ मिली हो, यह हम ने उन को बदला दिया उन की सरकशी का, और वेशक हम सच्चे हैं। (146)

ثُمَّ نَبِيَّةَ أَزْوَاجٍ ^٤ مِنَ الصَّانِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْرِ اثْنَيْنِ ^٥							
आठ (8)	जोड़े	से	भेड़	दो (2)	और से	बकरी	दो (2)
قُلْ ذَا الذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ							
पूछें	क्या दोनों नर	हराम किए	या दोनों मादा	या जो	लिपट रहा हो	उस पर	
أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ^٦							
रहम (जमा)	दोनों मादा	मुझे बताओ	किसी इल्म से	अगर	तुम	सच्चे	143
وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ ذَا الذَّكَرَيْنِ							
और से	ऊँट	दो (2)	और से	गाय	दो (2)	आप पूछें	क्या दोनों नर
حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ^٧							
उस ने हराम किए	या	दोनों मादा	या जो	लिपट रहा हो	उस पर	रहम (जमा)	दोनों मादा
أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَضَعَكُمُ اللَّهُ فِي هَذَا ^٨ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن							
क्या	तुम थे	मौजूद	जब	अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया	इस का	पस कौन	बड़ा ज़ालिम
افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ اللَّهَ							
बुहतान बान्धे	अल्लाह पर	झूट	ताकि गुमराह करे	लोग	बग़ैर	इल्म	वेशक अल्लाह
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ^٩ قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوْحِيَ إِلَيَّ							
हिदायत नहीं देता	लोग	जुल्म करने वाले	144	फ़रमा दीजिए	मैं नहीं पाता	में	जो वहि की गई
مُحَرَّمًا عَلَى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا							
हराम	पर	कोई खाने वाला	इस को खाए	मगर	यह कि हो	मुर्दार	या खून
مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنْزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا							
बहता हुआ	या गोश्त	सुव्वर	पस वह	नापाक	या गुनाह की चीज़		
أَهْلٍ لِّغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ^{١٠} فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ							
पुकारा गया	ग़ैर अल्लाह का नाम	उस पर	पस जो	लाचार हो जाए	न नाफ़रमानी करने वाला	और न सरकश	तो वेशक
رَبِّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ^{١١} وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا							
तेरा रब	बख़शने वाला	निहायत मेहरबान	145	और पर	वह जो कि	यहूदी हुए	हम ने हराम कर दिया
كُلَّ ذِي ظُفْرِ ^{١٢} وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا							
हर एक	नाखुन वाला जानवर	और गाय से	और बकरी	हम ने हराम कर दिया	उन पर	उन की चरवियां	
إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوْ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ							
सिवाए	जो उठाती हो (लगी हो)	उन की पीठ (जमा)	या अंतड़ियां	या	जो मिली हो		
بِعَظْمٍ ^{١٣} ذَلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِبَغْيِهِمْ ^{١٤} وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ^{١٥}							
हड्डी से	यह	हम ने उन को बदला दिया	उनकी सरकशी का	और वेशक हम	सच्चे हैं	146	

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ						
और टाला नहीं जाता	वसीअ	रहमत वाला	तुम्हारा रब	तो आप (स) कह दें	आप को झुटलाएं	पस अगर
بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٧﴾ سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا						
जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)		जल्द कहेंगे	147	मुजरिमों की कौम		उस का अज़ाव
لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ شَيْءٍ						
कोई चीज़	हम हराम ठहराते	और न	हमारे बाप दादा	और न	हम शिर्क न करते	चाहता अल्लाह अगर
كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّى ذَاقُوا بَأْسَنَا						
हमारा अज़ाव	उन्हों ने चखा	यहां तक कि	इन से पहले	जो लोग	झुटलाया	इसी तरह
قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا إِنْ تَتَّبِعُونَ						
तुम पीछे चलते हो	नहीं	तो उस को निकालो (ज़ाहिर करो) हमारे लिए	कोई इल्म (यकीनी बात)	तुम्हारे पास	क्या	फरमा दीजिए
إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٨﴾ قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ						
पूरी	हुज्जत	अल्लाह ही के लिए	फरमा दें	148	अटकल चलाते हो	सिर्फ़ तुम और अगर (नहीं) मगर (सिर्फ़) गुमान
فَلَوْ شَاءَ لَهْدْيَكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٤٩﴾ قُلْ هَلْ هُمْ شُهَدَاءُكُمْ						
अपने गवाह	लाओ	फरमा दें	149	सब को	तो तुम्हें हिदायत देता	पस अगर वह चाहता
الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَذَا فَإِنْ شَهِدُوا						
वह गवाही दें	फिर अगर	यह	हराम किया	कि अल्लाह	गवाही दें	जो
فَلَا تَشْهَدُ مَعَهُمْ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَبُوا						
झुटलाया	जो लोग	खाहिशात	और न पैरवी करना	उन के साथ	तो तुम गवाही न देना	
بِأَيِّتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٠﴾ قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ						
तुम पर	तुम्हारा रब	जो हराम किया	मैं पढ़ कर सुनाऊँ	आओ	फरमा दें	150 बराबर ठहराते हैं
أَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا						
और न क़त्ल करो	नेक सुलूक	और वालिदैन के साथ	कुछ-कोई	उस के साथ	कि न शरीक ठहराओ	
أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا						
और करीब न जाओ	और उन को	तुम्हें रिज़ूक देते हैं	हम	सुफ़लिसी	से	अपनी औलाद
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنٌ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي						
जो-जिस	जान	और न क़त्ल करो	छुपी हो	और जो	जो ज़ाहिर हो उस से (उन में)	वेहयाई (जमा)
حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ وَصَّيْكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٥١﴾						
151	अक्ल से काम लो (समझो)	ताकि तुम	इस का	तुम्हें हुक्म दिया है	यह	मगर हक़ पर अल्लाह ने हर्मत दी

पस अगर वह आप (स) को झुटलाएं तो आप (स) कहें तुम्हारा रब वसीअ रहमत वाला है, और उस का अज़ाव मुजरिमों की कौम से टाला नहीं जाता। (147)

मुश्रिक जल्द कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा, और न हम कोई चीज़ हराम ठहराते, इसी तरह (उन लोगों ने) झुटलाया जो उन से पहले थे यहां तक कि उन्होंने न हमारा अज़ाव चखा, आप (स) फरमा दीजिए क्या तुम्हारे पास कोई यकीनी बात है? तो उस को हमारे सामने ज़ाहिर करो, तुम सिर्फ़ गुमान के पीछे चलते हो और तुम सिर्फ़ अटकल चलाते हो। (148)

आप (स) फरमा दें: अल्लाह ही की हुज्जत पूरी (ग़ालिब) है, अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत दे देता। (149)

आप (स) फरमा दें: लाओ अपने गवाह जो गवाही दें कि अल्लाह ने यह हराम किया है, फिर अगर वह गवाही दे दें तो भी तुम उन के साथ गवाही न देना, और उन की खाहिशात की पैरवी न करना जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया और वह लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते और वह (माबूदाने वातिल को) अपने रब के बराबर ठहराते हैं। (150)

आप (स) फरमा दें आओ मैं पढ़ कर सुनाऊँ जो हराम किया है तुम पर तुम्हारे रब ने कि उस के साथ शरीक न ठहराओ और वालिदैन के साथ नेक सुलूक करो, और क़त्ल न करो अपनी औलाद को मुफ़लिसी (के डर) से, हम तुम्हें रिज़ूक देते हैं और उन को (भी), और वेहयाइयों के करीब न जाओ जो उन में खुली हो और जो छुपी हो, और जिस जान को अल्लाह ने हुर्मत दी है उसे क़त्ल न करो मगर हक़ पर, यह तुम्हें इस का हुक्म दिया है ताकि तुम समझो। (151)

और यतीम के माल के करीब न जाओ मगर इस तरह कि वह बेहतरीन हो यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए, और इन्साफ़ के साथ माप तोल पूरा करो, हम किसी को तकलीफ़ नहीं देते (बोझ नहीं डालते) मगर उस के मक़दूर के मुताबिक़, और जब बात करो तो इन्साफ़ की करो, खाह रिश्तेदार (का मामला) हो। और अल्लाह का अ़हद पूरा करो, उस ने तुम्हें यह हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (152)

और यह मेरा रास्ता सीधा है, पस उस पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वह तुम्हें इस रास्ते से जुदा कर देंगे, उस ने तुम्हें इस का हुक्म दिया ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो। (153)

फिर हम ने मूसा (अ) को किताब दी, उस पर अपनी नेमत पूरी करने को जो नेकोकार है, और हर चीज़ की तफ़सील के लिए, और हिदायत ओ रहमत के लिए, ताकि वह अपने रब से मुलाक़ात पर ईमान ले आए। (154)

और हम ने यह किताब उतारी है बरकत वाली, पस इस की पैरवी करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (155)

कि (कहें) तुम कहो कि हम से पहले दो ग़िरोहों पर किताब उतारी गई, और यह कि हम उन के पढ़ने पढ़ाने से बेख़बर थे। (156)

या कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम ज़ियादा हिदायत पर होते उन से, सो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील और हिदायत और रहमत आ गई, पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह की आयतों को झुटलादे और उन से कतराए, हम उन लोगों को जल्द सज़ा देंगे जो कतराते हैं हमारी आयतों से, बुरा अज़ाब उस के बदले कि वह कतराते थे। (157)

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ							
यहां तक कि	बेहतरीन	वह	ऐसे जो	मगर	यतीम	माल	और करीब न जाओ
يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۖ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ							
हम तकलीफ़ नहीं देते	इन्साफ़ के साथ	और तोल	माप	और पूरा करो	अपनी जवानी	पहुँच जाए	
نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ							
रिश्तेदार	खाह हो	तो इन्साफ़ करो	तुम बात करो	और जब	उस की वसूअत (मक़दूर)	मगर	किसी को
وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۚ ذَلِكُمْ وَصَّكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٢﴾							
152	नसीहत पकड़ो	ताकि तुम	इस का	उस ने तुम्हें हुक्म दिया	यह	पूरा करो	और अल्लाह का अ़हद
وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ فَاتَّبِعُوهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ							
रास्ते	और न चलो	पस उस पर चलो	सीधा	मेरा रास्ता	यह	और यह कि	
فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ذَلِكُمْ وَصَّكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٣﴾							
153	परहेज़गारी इख़्तियार करो	ताकि तुम	तुम्हें हुक्म दिया इस का	यह	उस का रास्ता	से	तुम्हें पस जुदा कर दें
ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا							
और तफ़सील	नेकोकार है	जो	पर	नेमत पूरी करने को	किताब	मूसा (अ)	फिर हम ने दी
لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٤﴾							
154	ईमान लाएं	अपना रब	मुलाक़ात पर	ताकि वह	और रहमत	और हिदायत	हर चीज़ की
وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ							
ताकि तुम पर	और परहेज़गारी इख़्तियार करो	पस उसकी पैरवी करो	बरकत वाली	हम ने नाज़िल की	किताब	और यह	
تُرْحَمُونَ ﴿١٥٥﴾ أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتَابُ عَلَى طَائِفَتَيْنِ							
दो ग़िरोह	पर	किताब	उतारी गई थी	इस के सिवा नहीं	तुम कहो	कि	155 रहम किया जाए
مِنْ قَبْلِنَا ۚ وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَفْلِينَ ﴿١٥٦﴾ أَوْ تَقُولُوا							
या तुम कहो	156	बेख़बर	उन के पढ़ने पढ़ाने	से	और यह कि हम थे	हम से पहले	
لَوْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاءَكُمْ							
पस आ गई तुम्हारे पास	उन से	ज़ियादा हिदायत पर	अलबत्ता हम होते	किताब	हम पर	उतारी जाती	अगर हम
بَيِّنَةٍ ۚ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ							
बड़ा ज़ालिम	पस कौन	और रहमत	और हिदायत	तुम्हारा रब	से	रौशन दलील	
مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۚ سَنَجْزِي الَّذِينَ							
उन लोगों को जो	हम जल्द सज़ा देंगे	उस से	और कतराए	अल्लाह की आयतों को	झुटलादे	उस से जो	
يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ﴿١٥٧﴾							
157	वह कतराते थे	उस के बदले	अज़ाब	बुरा	हमारी आयतें	से	कतराते हैं

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ									
या आए	तुम्हारा रब	या आए	फरिश्ते	उन के पास आए	यह	मगर	क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं		
بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا									
किसी को	न काम आएगा	तुम्हारा रब	निशानी	कोई	आई	जिस दिन	तुम्हारा रब	निशानियां	कुछ
إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا قُلْ									
फरमा दें	कोई भलाई	अपने ईमान में	कमाई	या	उस से पहले	ईमान लाया	न था	उस का ईमान	
اَنْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا									
गिरोह दर गिरोह	और हो गए	अपना दीन	तफरक़ा डाला	वह लोग जिन्होंने	वैशक	158	मुन्तज़िर है	हम	इन्तिज़ार करो तुम
لَسْتُ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا									
वह जो	वह जतला देगा उन्हें	फिर	अल्लाह के हवाले	उन का मामला	फ़क़त	किसी चीज़ में (कोई तअल्लुक)	उन से	नहीं	आप (स)
كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَمَنْ									
और जो	उस के बराबर	दस	तो उस के लिए	लाए कोई नेकी	जो	159	करते थे		
جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٠﴾ قُلْ إِنِّي									
वैशक मुझे	कह दीजिए	160	न जुल्म किए जाएंगे	और वह	मगर उस के बराबर	तो न बदला पाएगा	कोई बुराई लाए		
هَدَيْتَنِي رَبِّي إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ دِينًا قِيمًا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ									
इब्राहीम (अ)	मिल्लत	दुरुस्त	दीन	सीधा	रास्ता	तरफ़	मेरा रब	राह दिखाई	
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦١﴾ قُلْ إِنْ صَلَاتِي وَنُسُكِي									
मेरी कुरबानी	मेरी नमाज़	वैशक	आप कह दें	161	मुश्रिक (जमा)	से	और न थे	एक का हो कर रहने वाला	
وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ									
मुझे हुक्म दिया गया	और उसी का	उस का	नहीं कोई शरीक	162	सारे जहान का	रब	अल्लाह के लिए	और मेरा मरना	और मेरा जीना
وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾ قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغَى رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ									
हर शै	रब	और वह	कोई रब	मैं ढूँढ़ूँ	क्या सिवाए अल्लाह	आप कह दें	163	मुसलमान (फ़रमावरदार)	सब से पहला और मैं
وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى ثُمَّ إِلَىٰ									
तरफ़	फिर	बोझ दूसरा	उठाएगा कोई उठाने वाला	और न	उस के ज़िम्मे	मगर (सिर्फ़)	हर शख्स	और न कमाएगा	
رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٤﴾ وَهُوَ الَّذِي									
जिस ने	और वह	164	तुम इख़तिलाफ़ करते	उस में	तुम थे	वह जो	पस वह तुम्हें जतला देगा	तुम्हारा लौटना	तुम्हारा (अपना) रब
جَعَلَكُمْ خَلِيفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ									
ताकि तुम्हें आजमाए	दरजे	वाज़	पर-ऊपर	तुम में से वाज़	और बुलन्द किए	ज़मीन	नाइव	तुम्हें बनाया	
فِي مَا آتَاكُمْ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ ﴿١٦٥﴾ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٦٥﴾									
165	निहायत मेहरबान	यकीनन बख़शने वाला	और वैशक वह	सज़ा देने वाला	तेज़	तुम्हारा रब	वैशक	जो उस ने तुम्हें दिया	में

क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं मगर यह कि उन के पास फ़रिश्ते आएँ या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे रब की बाज़ निशानी आए, जिस दिन आएगी तुम्हारे रब की बाज़ निशानी, किसी के काम न आएगा उस का ईमान लाना जो पहले से ईमान न लाया था या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी, आप (स) फ़रमा दें इन्तिज़ार करो हम (भी) मुन्तज़िर हैं। (158) वैशक जिन लोगों ने तफ़रका डाला अपने दीन में और गिरोह दर गिरोह हो गए, आप (स) का उन से कोई तअल्लुक नहीं, उन का मामला फ़क़त अल्लाह के हवाले है, फिर वह उन्हें जतला देगा वह जो कुछ करते थे। (159) जो शख्स कोई नेकी लाए तो उस के लिए उस का दस बराबर (दस गुना अजर) है, और जो कोई बुराई लाए तो वह बदला न पाएगा मगर उस के बराबर (सिर्फ़ उस के बराबर), और वह जुल्म न किए जाएंगे। (160) आप (स) कह दीजिए वैशक मुझे मेरे रब ने सीधे रास्ते की तरफ़ राह दिखाई है, दुरुस्त दीन, इब्राहीम (अ) की मिल्लत, जो एक (अल्लाह) के हो रहने वाले थे, और वह मुश्रिकों में से न थे। (161) आप (स) कह दें वैशक मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का रब है। (162) उस का कोई शरीक नहीं, मुझे उसी का हुक्म दिया गया है, और मैं सब से पहला मुसलमान (फ़रमावरदार) हूँ। (163) आप (स) कह दें क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब ढूँढ़ूँ? और वही है हर शै का रब, हर शख्स जो कुछ कमाएगा (उस का गुनाह) सिर्फ़ उस के ज़िम्मे (होगा), कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा, फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, पस वह तुम्हें जतला देगा जिस में तुम इख़तिलाफ़ करते थे। (164) और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में नाइव बनाया, और बुलन्द किए तुम में से बाज़ के दरजे बाज़ पर, ताकि वह तुम्हें उस में आजमाए जो उस ने तुम्हें दिया, वैशक तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है, और वह वैशक यकीनन बख़शने वाला, निहायत मेहरबान है। (165)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम-साँद (1)

यह किताब तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है तो इस से तुम्हारे सीने में कोई तंगी न हो ताकि तुम उस (के ज़रीए) से डराओ, और ईमान वालों के लिए नसीहत है। (2)

उस की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और पीछे न लगो उस के सिवा (और) रफ़ीकों के, बहुत कम तुम नसीहत कुबूल करते हो। (3)

और हम ने कितनी ही बस्तियां हलाक कीं, पस उन पर हमारा अज़ाब रात को सोते में आया या दोपहर को आराम करते। (4)

पस उन की पुकार (इस के सिवा) न थी जब उन पर आया हमारा अज़ाब, तो उन्होंने ने कहा कि वेशक ज़ालिम हम ही थे। (5)

सो हम उन से ज़रूर पूछेंगे जिन की तरफ़ रसूल भेजे गए और हम रसूलों से (भी) ज़रूर पूछेंगे। (6)

अलबत्ता हम उन को अपने इल्म से अहवाल सुना देंगे और हम गाइब न थे। (7)

और उस दिन (आमाल का) वज़न होना बरहक़ है, तो जिन की नेकियों के वज़न भारी हुए, वही फ़लाह (नजात) पाने वाले हैं। (8)

और जिन के (नेकियों के) वज़न हलके हुए तो वही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों का नुक़सान किया, क्यों कि वह हमारी आयतों से ना इन्साफ़ी करते थे। (9)

और वेशक हम ने तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया और हम ने उस में तुम्हारे लिए ज़िन्दगी के सामान बनाए, बहुत कम है जो शुक्र करते हैं। (10)

और अलबत्ता हम ने तुम्हें पैदा किया और फिर हम ने तुम्हारी शक़ल ओ सूरत बनाई, फिर हम ने फ़रिश्तों को कहा आदम (अ) को सिज्दा करो तो उन्होंने ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के, वह सिज्दा करने वालों में से न था। (11)

آيَاتُهَا ٢٠٦ ﴿٧﴾ سُورَةُ الْأَعْرَافِ ﴿٢٤﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢٤

रुकुआत 24

(7) सूरतुल आराफ़
बुलनदियां

आयात 206

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

الْمَصِّ ١ كِتَابٌ أُنْزِلَ إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ حَرَجٌ

कोई तंगी	तुम्हारे सीने में	सो न हो	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल की गई	किताब	1	अलिफ़-लाम-मीम-साद

مِنْهُ لِنُنْذِرَ بِهِ وَذِكْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ٢ اتَّبِعُوا مَا أُنْزِلَ

जो नाज़िल किया गया	पैरवी करो	2	ईमान वालों के लिए	और नसीहत	इस से	ताकि तुम डराओ	इस से

إِلَيْكُمْ مِّن رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ قَلِيلًا مَّا

जो	बहुत कम	रफ़ीक़ (जमा)	उस के सिवा	से	और पीछे न लगो	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़ (तुम पर)

تَذَكَّرُونَ ٣ وَكَمْ مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَهَا بَأْسُنَا بَيَاتًا

रात में सोते	हमारा अज़ाब	पस उन पर आया	हम ने हलाक कीं	बस्तियां	से	और कितनी ही	3	नसीहत कुबूल करते हो

أَوْ هُمْ قَائِلُونَ ٤ فَمَا كَانَ دَعْوُهُمْ إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا إِلَّا أَنْ

मगर यह कि (तो)	हमारा अज़ाब	उन पर आया	जब	उन का कहना (उन की पुकार)	पस न था	4	कैलूला करते (दोपहर को आराम करते)	या वह

قَالُوا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ٥ فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	भेजे गए (रसूल)	उन से जो	सो हम ज़रूर पूछेंगे	5	ज़ालिम (जमा)	वेशक हम थे	उन्होंने ने कहा

وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ ٦ فَلَنَقْصِّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَمَا كُنَّا

और हम न थे	इल्म से	उन को	अलबत्ता हम अहवाल सुना देंगे	6	रसूल (जमा)	और हम ज़रूर पूछेंगे

غَافِينَ ٧ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ

मीज़ान (नेकियों के वज़न)	भारी हुए	तो जिस	बरहक़	उस दिन	और वज़न	7	गाइब

فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٨ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ

तो वही लोग	वज़न	हलके हुए	और जिस	8	फ़लाह पाने वाले	वह	तो वही

الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ٩ وَلَقَدْ

और वेशक	9	ना इन्साफ़ी करते	हमारी आयतों से	क्यों कि थे	अपनी जानें	नुक़सान किया	वह जिन्होंने ने

مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشٌ قَلِيلًا

बहुत कम	ज़िन्दगी के सामान	उस में	तुम्हारे लिए	और हम ने बनाए	ज़मीन में	हम ने तुम्हें ठिकाना दिया

مَا تَشْكُرُونَ ١٠ وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَكَةِ

फ़रिश्तों को	फिर हम ने कहा	हम ने तुम्हारी शक़ल ओ सूरत बनाई	फिर	हम ने तुम्हें पैदा किया	और अलबत्ता	10	जो तुम शुक्र करते हो

اسْجُدُوا لِآدَمَ ۖ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ لَمْ يَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ١١

11	सिज्दा करने वाले	से	वह न था	इब्लीस	सिवाए	तो उन्होंने ने सिज्दा किया	आदम को	सिज्दा करो

قَالَ مَا مَنَّكَ إِلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقْتَنِي							
तू ने मुझे पैदा किया	उस से	बेहतर	मैं	वह बोला	जब मैं ने तुझे हुक्म दिया	कि तू सिज्दा न करे	किस ने तुझे मना किया
مِنْ نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ (١٢) قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ							
तेरे लिए	है	तो नहीं	इस (यहां) से	पस तू उतर जा	फरमाया	12	मिट्टी से और तू ने उसे पैदा किया
أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصُّغَرَيْنِ (١٣) قَالَ أَنْظِرْنِي							
मुझे मोहलत दे	वह बोला	13	जलील (जमा)	से	वेशक तू	पस निकल जा	इस में (यहां) तू तकबुर करे
إِلَى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ (١٤) قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ (١٥) قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي							
तू ने मुझे गुमराह किया	तो जैसे	वह बोला	15	मोहलत मिलने वाले	से	वेशक तू	फरमाया
لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ (١٦) ثُمَّ لَا تَنتَهُهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ							
उन के सामने	से	मैं ज़रूर उन तक आऊंगा	फिर	16	सीधा	तेरा रास्ता	उन के लिए
وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ							
उन के अक्सर	और तू न पाएगा	उन के बाएं	और से	उन के दाएं	और से	और पीछे से उन के	
شَاكِرِينَ (١٧) قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْذُومًا مَدْحُورًا لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ							
उन से	तेरे पीछे लगा	अलबत्ता जो	मर्दूद हो कर	जलील	यहां से	निकल जा	फरमाया
لَا مَلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ (١٨) وَيَادَا أَسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ							
जन्नत	और तेरी वीवी	तू	रहो	और ऐ आदम (अ)	18	सब	तुम से
فَكَلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ							
से	पस हो जाओगे	दरख्त	उस	और करीब न जाना	तुम चाहो	जहां से	तुम दोनों खाओ
الظَّالِمِينَ (١٩) فَوَسَّسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِنْ							
से	उन से	जो पोशीदा थी	उन के लिए	ताकि ज़ाहिर कर दे	शैतान	उन के लिए	पस वस्वसा डाला
سَوَاتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا							
तुम हो जाओ	इस लिए कि	मगर	दरख्त	उस से	तुम्हारा रब	तुम्हें मना किया	और वह बोला
مَلَائِكَةٍ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ (٢٠) وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لَمِنَ							
अलबत्ता - से	तुम्हारे लिए	मैं	और उन से	कसम खागया	20	हमेशा रहने वाले	से
النَّاصِحِينَ (٢١) فَدَلَّاهُمَا بِغُرُورٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوَاتُهُمَا							
उन की सत्र की चीजें	उन के लिए	खुल गई	दरख्त	उन दोनों ने चखा	पस जब	धोके से	पस उन को माइल कर लिया
وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ وَنَادَاهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنْهَكُمَا							
क्या तुम्हें मना न किया था	उन का रब	और उन्हें पुकारा	जन्नत	पत्ते	से	अपने ऊपर	जोड़ जोड़ कर रखने
عَنْ تَلْكُمَا الشَّجَرَةَ وَأَقُلْ لَكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُبِينٌ (٢٢)							
22	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	शैतान	वेशक	तुम से	और कहा

उस ने फरमाया जब मैं ने तुझे हुक्म दिया तो तुझे किस ने मना किया कि तू सिज्दा न करे? वह बोला मैं उस से बेहतर हूँ, तू ने मुझे आग से पैदा किया और उसे मिट्टी से पैदा किया। (12)

फरमाया पस तू यहां से उतर जा, तेरे लिए (लाइक) नहीं कि तू गुरूर ओ तकबुर करे यहां, पस निकल जा, वेशक तू जलीलों में से है। (13)

वह बोला मुझे उस दिन तक मोहलत दे (जिस दिन मुर्दे) उठाए जाएंगे। (14)

फरमाया वेशक तू मोहलत मिलने वालों में से है (तुझे मोहलत दी गई) (15)

वह बोला जैसे तू ने मेरे गुमराह (होने का फ़ैसला) किया है। मैं ज़रूर बैटूंगा उन के लिए (गुमराह करने के लिए) तेरे सीधे रास्ते पर। (16)

फिर मैं उन तक ज़रूर आऊंगा उन के सामने से और उन के पीछे से, और उन के दाएं से और उन के बाएं से, और तू उन में से अक्सर को शुक्र करने वाले न पाएगा। (17)

फरमाया यहां से निकल जा जलील मर्दूद हो कर। उन में से जो तेरे पीछे लगा, अलबत्ता मैं ज़रूर जहन्नम को भर दूंगा तुम सब से। (18)

ऐ आदम (अ)! तुम और तुम्हारी वीवी (हव्वा) जन्नत में रहो, पस खाओ जहां से तुम चाहो और उस दरख्त के करीब न जाना, (अगर ऐसा करोगे) तो ज़ालिमों में से हो जाओगे। (19)

पस वस्वसा डाला शैतान ने उन के लिए (उन के दिल में) ताकि उन के सत्र की चीजें जो उन से पोशीदा थीं उन के लिए ज़ाहिर कर दे, और बोला तुम्हारे रब ने तुम्हें उस दरख्त से मना नहीं किया मगर इस लिए कि (कहीं) तुम फ़रिश्ते हो जाओ या हो जाओ हमेशा रहने वालों में से। (20)

और उन से कसम खागया कि मैं वेशक तुम्हारे लिए ख़ैर खाहों से हूँ। (21)

पस उस ने उन को माइल कर लिया धोके से, पस जब उन्होंने ने दरख्त चखा तो उन के लिए उन की सत्र की चीजें खुल गईं और वह अपने ऊपर जोड़ जोड़ कर रखने लगे (सत्र छुपाने के लिए)

जन्नत के पत्ते, और उन के रब ने उन्हें पुकारा क्या मैं ने तुम्हें उस दरख्त से मना नहीं किया था? और कहा था तुम्हें कि वेशक शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। (22)

उन दोनों ने कहा ऐ हमारे रब! हम ने अपने ऊपर जुल्म किया, और अगर तू ने हमें न बख़्शा और हम पर रहम न किया तो हम ज़रूर ख़सारा पाने वालों में से हो जाएंगे। (23)

फ़रमाया तुम उतरो, तुम में से बाज़ बाज़ के दुश्मन हैं, और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक वक़्त (मुऐयन) तक ठिकाना और सामाने ज़ीस्त है। (24)

फ़रमाया उस में तुम ज़ियोगे और उस में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। (25)

ऐ औलादे आदम (अ)! हम ने तुम पर उतारा लिबास जो ढाँके तुम्हारे सत्तर और (मौजिबे) ज़ीनत हो, और परहेज़गारी का लिबास सब से बेहतर है, यह (लिबास) अल्लाह की निशानियों में से है ताकि वह ग़ौर करें। (26)

ऐ औलादे आदम (अ)! कहीं शैतान तुम्हें वहका न दे, जैसे उस ने निकाला तुम्हारे माँ बाप (आदम ओ हव्वा) को जन्नत से, उन के लिबास उतरवा दिए ताकि उन के सत्तर ज़ाहिर कर दे, वेशक तुम्हें देखता है वह और उस का कबीला उस जगह से जहाँ तुम उन्हें नहीं देखते, वेशक हम ने शैतानों को उन लोगों का रफ़ीक़ बना दिया जो ईमान नहीं लाते। (27)

और जब वह बेहयाई करें तो कहें हम ने अपने बाप दादा को उस पर पाया है और अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है उस का, आप (स) फ़रमा दें, वेशक अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं देता, क्या तुम अल्लाह पर (वह बात) लगाते हो जो तुम नहीं जानते। (28)

आप (स) फ़रमा दें मेरे रब ने मुझे इन्साफ़ का हुक्म दिया है, और अपने चहरे हर नमाज़ के वक़्त सीधे करो, और उसे पुकारो ख़ालिस उस के हुक्म के फ़रमावरदार हो कर, जैसे तुम्हें (पहले) पैदा किया तुम दोबारा भी (पैदा किए जाओगे)। (29)

एक फ़रीक़ को हिदायत दी और एक फ़रीक़ पर गुमराही साबित हो गई, वेशक उन्होंने ने अल्लाह के सिवा शैतानों को अपना रफ़ीक़ बना लिया है और समझते हैं कि वह वेशक हिदायत पर है। (30)

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾ قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ								
उन दोनों ने कहा	ऐ हमारे रब	हम ने जुल्म किया	अपने ऊपर	और अगर	न बख़्शा तू ने हमें	और हम पर रहम (न) किया	हम ज़रूर हो जाएंगे	से
ख़सारा पाने वाले	23	फ़रमाया	उतरो	तुम में से बाज़	वाज़	दुश्मन	और तुम्हारे लिए	ज़मीन में
مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا								
ठिकाना	और सामान	एक वक़्त तक	24	फ़रमाया	उस में	तुम ज़ियोगे	और उस में	
तुम मरोगे	और उस से	तुम निकाले जाओगे	25	ऐ औलादे आदम (अ)	हम ने उतारा	तुम पर	लिबास	
يُؤَارِي سَوَاتِكُمْ وَرِيْشًا وَلِبَاسُ التَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ذَٰلِكَ مِنْ								
ढाँके	तुम्हारे सत्तर	और ज़ीनत	और लिबास	परहेज़गारी	यह	बेहतर	यह	से
آيَةِ اللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٢٦﴾ يُبْنَىٰ آدَمَ لَا يَفْتِنَنَّ الشَّيْطَانُ								
अल्लाह की निशानियाँ	ताकि वह	वह ग़ौर करें	26	ऐ औलादे आदम (अ)	न वहका दे तुम्हें	शैतान		
जैसे	उस ने निकाला	तुम्हारे माँ बाप	से	जन्नत	उतरवा दिए	उन से	उन के लिबास	ताकि ज़ाहिर कर दे
वेशक	तुम्हें देखता है वह	वह	और उस का कबीला	से	जहाँ	तुम उन्हें नहीं देखते	वेशक हम ने बनाया	शैतान (जमा)
أَوْلِيَآءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٧﴾ وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا وَجَدْنَا								
दोस्त - रफ़ीक़	उन लोगों के लिए	ईमान नहीं लाते	27	और जब	वह करें	कोई बेहयाई	कहें	हम ने पाया
इस पर	अपने बाप दादा	और अल्लाह	हमें हुक्म दिया	उस का	फ़रमा दें	वेशक अल्लाह	हुक्म नहीं देता	बेहयाई का
أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾ قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ								
क्या तुम कहते हो (लगाते हो)	अल्लाह पर	जो	28	फ़रमा दें	हुक्म दिया	मेरा रब	इन्साफ़ का	
और काइम करो (सीधे करो)	अपने चहरे	नज़दीक (वक़्त)	हर मसज़िद (नमाज़)	और पुकारो	ख़ालिस हो कर			
उस के लिए	दीन (हुक्म)	जैसे	तुम्हारी इब्तिदा की (पैदा किया)	दोबारा (पैदा) होगे	29	एक फ़रीक़	उस ने हिदायत दी	
और एक फ़रीक़	साबित हो गई	उन पर	गुमराही	वेशक वह	उन्होंने ने बना लिया	शैतान (जमा)		
रफ़ीक़	से	अल्लाह के सिवा	और समझते हैं	कि वह वेशक	हिदायत पर है	30		

٢
ع
١٠

يَبْنِيْ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا						
और पियो	और खाओ	हर मसजिद (नमाज़)	करीब (वक़्त)	अपनी ज़ीनत	लेलो (इख्तियार करलो)	ऐ औलादे आदम
وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ						
अल्लाह की ज़ीनत	हराम किया	किस	फ़रमा दें	31	फुजूल खर्च करने वाले	और बेजा खर्च न करो
الَّتِيْ اَخْرَجَ لِعِبَادِهِۦ وَالطَّيِّبَتِ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا						
ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	यह	फ़रमा दें	रिज़्क	से	और पाक अपने बन्दों के लिए
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيَمَةِ ۗ كَذٰلِكَ نَفْصَلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ						
गिरोह के लिए	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	इसी तरह	क़ियामत के दिन	ख़ालिस तौर पर	दुनिया ज़िन्दगी में
يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَّبِّيْ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ						
पोशीदा और जो	उन से	ज़ाहिर है	जो	बेहयाई	मेरा रब	हराम सिर्फ़ (तो) फ़रमा दें
وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطٰنًا						
कोई सनद	उस की	नहीं नाज़िल की	जो - जिस	अल्लाह के साथ	तुम शरीक करो	और यह कि
وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلٰى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ						
आएगा	पस जब	एक मुददत मुक़र्रर	और हर उम्मत के लिए	33	तुम नहीं जानते	जो
اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَخِرُوْنَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾ يَبْنِيْ اٰدَمَ اِمًا						
अगर	ऐ औलादे आदम	34	आगे बढ़ सकेंगे	और न	एक घड़ी	न वह पीछे हो सकेंगे
يَاْتِيْنَكُمْ رُّسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۖ فَمَنْ اَتَقٰی وَاصْلَحَ						
और इसलाह कर ली	डरा	तो जो	मेरी आयात	तुम पर (तुम्हें)	बयान करें (सुनाएं)	तुम में से
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا						
हमारी आयात को	झुटलाया	और वह लोग जो	35	ग़मगीन होंगे	वह	और न
وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا ۚ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾ فَمَنْ						
पस कौन	36	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	यही लोग
اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلٰى اللّٰهِ كَذِبًا ۖ اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۚ اُولٰٓئِكَ						
यही लोग	उस की आयतों को	या झुटलाया	झूट	अल्लाह पर	बुहतान बान्धा	उस से जो
يَنٰلُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ۚ حَتّٰى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُّسُلُنَا						
हमारे भेजे हुए	उन के पास आएंगे	जब	यहाँ तक कि	किताब (लिखा हुआ)	से	उन का नसीब (हिस्सा)
يَتَوْفُّوْنَهُمْ ۚ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ ۚ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ						
अल्लाह के सिवा	से	पुकारते	तुम थे	कहाँ जो	वह कहेंगे	उन की जान निकालने
قَالُوْٓا ضَلُّوْٓا عَنَّا وَشَهِدُوْٓا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾						
37	काफ़िर थे	कि वह	अपनी जानें	पर	और गवाही देंगे	हम से

ऐ औलादे आदम (अ)! अपनी ज़ीनत हर नमाज़ के वक़्त इख्तियार करो और खाओ और पियो और बेजा खर्च न करो, बेशक अल्लाह फुजूल खर्च करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (31)

आप (स) फ़रमा दें किस ने हराम की है अल्लाह की (वह) ज़ीनत जो उस ने अपने बन्दों के लिए निकाली (पैदा) की है, और पाक रिज़्क, आप (स) फ़रमा दें यह दुनिया की ज़िन्दगी में उन लोगों के लिए है जो ईमान लाए और ख़ालिस तौर पर क़ियामत के दिन (उन्हीं का हिस्सा है), इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उस गिरोह के लिए जो जानते हैं। (32)

आप फ़रमा दें मेरे रब ने तो हराम क़रार दिया है बेहयाइयों को, उन में जो ज़ाहिर हैं और जो पोशीदा हैं, और गुनाह और सरकशी नाहक़ को, और यह कि तुम अल्लाह के साथ शरीक करो जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह पर लगाओ (वह बात) जो तुम नहीं जानते। (33)

और हर उम्मत के लिए एक मुददत मुक़र्रर है, पस जब उन का मुक़र्रर वक़्त आजाएगा तो न वह पीछे हो सकेंगे एक घड़ी और न आगे बढ़ सकेंगे। (34)

ऐ औलादे आदम (अ)! अगर तुम्हारे पास तुम ही से मेरे रसूल आएँ, सुनाएँ तुम्हें मेरी आयात तो जो डरा और उस ने इसलाह कर ली, उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (35)

और जिन लोगों ने हमारी आयात को झुटलाया और उन से तक़ब्बुर किया यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (36)

पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिस ने अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धा या उस की आयतों को झुटलाया, यही वह लोग हैं जिन्हें उन का हिस्सा किताब (लौहे महफूज़) में लिखा हुआ पहुँचेगा, यहाँ तक जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उन के पास उन की जान निकालने आएंगे वह कहेंगे कहाँ हैं वह जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह (जवाब में) कहेंगे वह हम से गुम हो गए, और वह अपनी जानों पर (अपने ख़िलाफ़) गवाही देंगे कि वह काफ़िर थे। (37)

(अल्लाह) फ़रमाएगा तुम दाख़िल हो जाओ जहन्नम में उन उम्मतों के हमराह जो गुज़र चुकीं तुम से क़व्व, जिन्नों और इन्सानों में से, जब कोई उम्मत दाख़िल होगी वह अपनी साथी (पहली उम्मत) पर लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उस में दाख़िल हो जाएंगे तो उन के पिछले अपने पहलों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब! यह है जिन्नों ने हम को गुमराह किया, पस उन्हें आग का दो गुना अज़ाब दे। (अल्लाह तआला) फ़रमाएगा हर एक के लिए दो गुना है, लेकिन तुम जानते नहीं। (38)

और उन के पहले अपने पिछलों को कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई बड़ाई नहीं, लिहाज़ा चखो अज़ाब उस के बदले जो तुम करते थे। (39)

वेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उन से तक़बुर किया, उन के लिए आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे और जन्नत में दाख़िल न होंगे जब तक ऊँट दाख़िल (न) हो जाए सुई के नाके में (जो मुमकिन नहीं), इसी तरह हम मुज़्रिमों को बदला देते हैं। (40)

उन के लिए जहन्नम का बिछौना है और उन के ऊपर से (जहन्नम ही का) ओढ़ना है, इसी तरह हम ज़ालिमों को बदला देते हैं। (41)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, हम किसी पर बोझ नहीं डालते मगर उस की विसात के मुताबिक़, यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (42)

और हम ने उन के सीनों से कीने खींच लिए, उन (जन्नतों) के नीचे नहरें बहती हैं, और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें इस की तरफ़ रहनुमाई की, और अगर अल्लाह हमें हिदायत न देता (रहनुमाई न फ़रमाता) तो हम हिदायत पाने वाले न थे। अलबत्ता हमारे रब के रसूल हक़ के साथ आए, और उन्हें निदा दी जाएगी कि तुम इस जन्नत के वारिस बनाए गए (उन आमाल के) सिले में जो तुम करते थे। (43)

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ									
और इन्सान	जिन्नात	से	तुम से क़व्व	गुज़र चुकी	उम्मतों में (हमराह)	तुम दाख़िल हो जाओ	फरमाएगा		
فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّى إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا									
उस में	मिल जाएंगे	जब	यहां तक	अपनी साथी	लानत करेगी	कोई उम्मत	दाख़िल होगी	जब भी	आग (दोज़ख़) में
جَمِيعًا ۚ قَالَتْ أَخْرِبُهُمْ لِأُولِهِمْ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ أَصْلُونَا فَاثِمُهُمْ									
पस दे उन को	उन्होंने ने हमें गुमराह किया	यह है	ऐ हमारे रब	अपने पहलों के बारे में	उन की पिछली कौम	कहेगी	सब		
عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۚ قَالَ لِكُلِّ ضِعْفٌ وَلَكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾									
38	तुम जानते	नहीं	और लेकिन	दो गुना	हर एक के लिए	फरमाएगा	आग का	दो गुना	अज़ाब
وَقَالَتْ أُولَهُمْ لِأَخْرِبُهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ									
कोई बड़ाई	हम पर	है तुम्हें	पस नहीं	अपने पिछलों को	उन के पहले	और कहेंगे			
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا									
झुटलाया	वह लोग जो	वेशक	39	तुम कमाते थे (करते थे)	उस का बदला	अज़ाब	चखो		
بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتِّحْ لَهُمْ أَبْوَابَ السَّمَاءِ وَلَا									
और न	आस्मान	दरवाज़े	उन के लिए	न खोले जाएंगे	उन से	और तक़बुर किया उन्होंने ने	हमारी आयतों को		
يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَلِكَ									
और इसी तरह	सुई	नाका	में	ऊँट	दाख़िल होजाए	यहां तक (जब तक)	जन्नत	दाख़िल होंगे	
نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٌ									
ओढ़ना	उन के ऊपर	और से	बिछौना	जहन्नम का	उन के लिए	40	मुज़्रिम (जमा)	हम बदला देते हैं	
وَكَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ									
अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	ईमान लाए	और जो लोग	41	ज़ालिम (जमा)	हम बदला देते हैं	और इसी तरह		
لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا									
उस में	वह	जन्नत वाले	यही लोग	उस की वुस्अत	मगर	किसी पर	हम बोझ नहीं डालते		
خَالِدُونَ ﴿٤٢﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِنْ									
से	बहती है	कीने	उन के सीने	में	जो	और खींच लिए हम ने	42	हमेशा रहेंगे	
تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا ۖ وَمَا كُنَّا									
हम थे	और न	इस की तरफ़	हमारी रहनुमाई की	जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	और वह कहेंगे	नहरें	उन के नीचे
لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنَّ هَدَانَا اللَّهُ ۖ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلٌ رَبِّنَا بِالْحَقِّ									
हक़ के साथ	हमारा रब	रसूल	आए	अलबत्ता	अल्लाह	कि हमें हिदायत देता	अगर न	कि हम हिदायत पाते	
وَنُودُوا أَنْ تِلْكَ الْجَنَّةُ أَوْرِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾									
43	करते थे	तुम थे	सिले में	तुम उस के वारिस होंगे	जन्नत	यह कि तुम	कि	और उन्हें निदा दी जाएगी	

ع ۱۱

۱۱

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا						
हम से वादा किया	जो	तहकीक हम ने पा लिया	कि	दोज़ख़ वालों को	जन्नत वाले	और पुकारेंगे
رَبَّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ ۖ فَادْنُ						
तो पुकारेगा	हाँ	वह कहेंगे	सच्चा	तुम्हारा रब	जो वादा किया	तुम ने पाया तो क्या सच्चा हमारा रब
مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾ الَّذِينَ يَصُدُّونَ						
रोकते थे	जो लोग	44	ज़ालिम (जमा)	पर	अल्लाह की लानत	कि उन के दरमियान एक पुकारने वाला
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَفُورُونَ ﴿٤٥﴾						
45	काफिर (जमा)	आखिरत के	और वह	कजी	और उस में तलाश करते थे	अल्लाह का रास्ता से
وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۖ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمِهِمْ ۖ وَنَادُوا						
और पुकारेंगे	उन की पेशानी से	हर एक	पहचान लेंगे	कुछ आदमी	आराफ़	और पर एक हिजाव और उन के दरमियान
أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۖ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ﴿٤٦﴾						
46	उम्मीदवार है	और वह	वह उस में दाखिल नहीं हुए	तुम पर	सलाम	कि जन्नत वाले
وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا						
हमें न कर	ऐ हमारे रब	कहेंगे	दोज़ख़ वाले	तरफ़	उन की निगाहें	और फिरगी और जब
مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٧﴾ وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُمْ						
वह उन्हें पहचान लेंगे	कुछ आदमी	आराफ़ वाले	और पुकारेंगे	47	ज़ालिम (जमा)	लोग साथ
بِسِيمِهِمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٨﴾						
48	तुम तकबुर करते थे	और जो	तुम्हारा जल्था	तुम्हें	न फाइदा दिया	वह कहेंगे उन की पेशानी से
أَهْوُلَاءِ الَّذِينَ أَفْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۖ						
अपनी कोई रहमत	अल्लाह	उन्हें न पहुँचाएगा	तुम कसम खाते थे	वह जो कि	क्या अब यह वही	
أَدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٤٩﴾ وَنَادَىٰ						
और पुकारेंगे	49	गमगीन होंगे	तुम	और न	तुम पर कोई खौफ़	न जन्नत तुम दाखिल हो जाओ
أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا						
उस से जो	या	पानी	से	हम पर	बहाओ (पहुँचाओ)	कि जन्नत वाले दोज़ख़ वाले
رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾ الَّذِينَ						
वह लोग जो	50	काफिर (जमा)	पर	उसे हराम कर दिया	बेशक अल्लाह	वह कहेंगे अल्लाह तुम्हें दिया
اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا ۖ وَغَرَّتْهُمْ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ فَالْيَوْمَ						
पस आज	दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	और कूद	खेल	अपना दीन उन्होंने ने बना लिया
نَنْسَهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا ۖ وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٥١﴾						
51	इन्कार करते	हमारी आयतों से	और जैसे-थे	यह-इस	उन का दिन	मिलना जैसे उन्होंने ने भुलाया हम उन्हें भुलादेंगे

और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे कि तहकीक हम ने पालिया जो हम से वादा किया था हमारे रब ने सच्चा, तुम से तुम्हारे रब ने जो वादा किया था क्या तुम ने भी पालिया सच्चा? वह कहेंगे हाँ! तो एक पुकारने वाला पुकारेगा उन के दरमियान कि (उन) ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत। (44)

जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते थे और उस में कजी तलाश करते थे, और वह आखिरत के काफिर (मुन्किर) थे। (45)

और उन के दरमियान एक हिजाव (पर्दा) है, आराफ़ पर कुछ आदमी होंगे, वह हर एक को उस की पेशानी से पहचान लेंगे, और जन्नत वालों को पुकारेंगे कि सलाम हो तुम पर, वह (आराफ़ वाले) जन्नत में दाखिल नहीं हुए, और वह उम्मीदवार हैं। (46)

और जब उन की निगाहें फिरगी दोज़ख़ वालों की तरफ़ तो कहेंगे ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिमों के साथ न कर। (47)

और पुकारेंगे आराफ़ वाले कुछ आदमियों को कि उन्हें उन की पेशानी से पहचान लेंगे, वह कहेंगे तुम्हें कुछ फाइदा न दिया तुम्हारे जल्थे ने और जिन पर तुम तकबुर करते थे। (48)

क्या अब यह वही लोग नहीं है कि तुम कसम खाया करते थे कि अल्लाह उन्हें अपनी कोई रहमत न पहुँचाएगा, आज उन्हें से कहा गया कि तुम जन्नत में दाखिल हो जाओ, न तुम पर कोई खौफ़ है न तुम गमगीन होंगे। (49)

और दोज़ख़ वाले पुकारेंगे जन्नत वालों को कि हम पर (थोड़ा) पानी बहाओ (पहुँचाओ) या उस में से (कुछ) जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, वह कहेंगे बेशक अल्लाह ने यह काफिरों पर हराम कर दिया है। (50)

जिन्होंने ने अपने दीन को खेल कूद बना लिया और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल दिया, पस आज हम उन्हें भुलादेंगे जैसे उन्होंने ने (आज के) इस दिन का मिलना फ़रामोश कर दिया था, और जैसे हमारी आयतों से इन्कार करते थे। (51)

और हम उन के पास एक किताब लाए जिसे हम ने तफ़सील से बयान किया इल्म (की बुन्याद) पर ईमान लाने वाले लोगों के लिए हिदायत और रहमत। (52)

क्या वह यही इन्तिज़ार कर रहे हैं कि उस का कहा हुआ पूरा हो जाए, जिस दिन उस का कहा हुआ हो जाएगा, तो वह लोग जिन्होंने उसे पहले भुला दिया था वह कहेंगे, बेशक हमारे रब के रसूल हक़ बात लाए थे, तो क्या हमारे लिए कोई सिफ़ारिश करने वाले हैं कि हमारी सिफ़ारिश करें, या हम (दुनिया) में लौटाए जाएं कि हम उस के खिलाफ़ अमल करें जो हम (पहले) करते थे, बेशक उन्होंने ने अपनी जानों का (अपना) नुक़सान किया, और उन से गुम हो गया जो वह झूट घड़ते थे। (53)

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिस ने आस्मानो और ज़मीन छः दिन में बनाए, और फिर करार फ़रमाया अर्श पर, रात को दिन पर ढांक देता है, उस के पीछे (दिन) दौड़ता हुआ आता है, और सूरज और चाँद और सितारे उस के हुक़म से मुसख़्ख़र हैं, याद रखो उसी के लिए है पैदा करना और हुक़म देना, अल्लाह बरक़त वाला है सारे ज़हानों का रब। (54)

अपने रब को पुकारो गिड़ गिड़ा कर और आहिस्ता से, बेशक वह हद से गुज़रने वालों को दोस्त नहीं रखता। (55)

और फ़साद न मचाओ ज़मीन में उस की इस्लाह के बाद, और उसे पुकारो डरते और उम्मीद रखते हुए, बेशक अल्लाह की रहमत क़रीब है नेकी करने वालों के। (56)

और वही है जो अपनी रहमत (वारिश) से पहले हवाएं बतौरे खुशख़बरी भेजता है, यहां तक कि जब वह भारी बादल उठा लाएं तो हम ने उन्हें किसी मुर्दा शहर की तरफ़ हांक दिया, फिर उस से पानी उतारा (बरसाया) फिर हम ने निकाले उस से हर किस्म के फल, इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे ताकि तुम ग़ौर करो। (57)

وَلَقَدْ جِئْنَهُمْ بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً									
और रहमत		हिदायत	इल्म	पर	हम ने उसे तफ़सील से बयान किया		एक किताब	और अलवत्ता हम लाए उन के पास	
لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ يَوْمَ يَأْتِي									
आएगा	जिस दिन	उस का कहना पूरा हो जाए	मगर (यही कि)	वह इन्तिज़ार कर रहे हैं	क्या	52	जो ईमान लाए हैं	लोगों के लिए	
تَأْوِيلَهُ يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ									
रसूल (जमा)	वेशक लाए		पहले से		उन्होंने ने भुला दिया	वह लोग जो		कहेंगे	उस का कहा हुआ
رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَلْ لَنَا مِنْ شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلْ									
सो हम करें	या हम लौटाए जाएं	हमारी	कि सिफारिश करें	सिफारिश करने वाले	कोई	हमारे लिए	तो क्या है	हक़	हमारा रब
غَيْرِ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا									
जो	उन से	और गुम हो गया	अपनी जानें		वेशक नुक़सान किया उन्होंने ने		हम करते थे		उस के खिलाफ़ जो
كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٥٣﴾ إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ									
आस्मान (जमा)		पैदा किया	वह जो - जिस	अल्लाह	तुम्हारा रब	वेशक	53	वह इफ़तिरा करते (झूट घड़ते) थे	
وَالْأَرْضِ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشَى اللَّيْلُ									
रात	ढांकता है	अर्श	पर	करार फ़रमाया	फिर	दिन	छः (6)	में	और ज़मीन
النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ									
मुसख़्ख़र		और सितारे	और चाँद	और सूरज	दौड़ता हुआ	उस के पीछे आता है		दिन	
بِأَمْرِهِ إِلَّا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبَرَّكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٤﴾ اُدْعُوا									
पुकारो	54	तमाम ज़हान	रब	बरक़त वाला है अल्लाह	और हुक्म देना	पैदा करना	उस के लिए	याद रखो	उस का हुक्म
رَبَّكُمْ تَضَرَّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٥﴾ وَلَا تُفْسِدُوا									
और न फ़साद मचाओ		55	हद से गुज़रने वाले	दोस्त नहीं रखता		वेशक वह	और आहिस्ता	गिड़ गिड़ा कर	अपने रब को
فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ									
अल्लाह की रहमत		वेशक	और उम्मीद रखते	डरते	और उसे पुकारो	उस की इस्लाह		बाद	ज़मीन में
قَرِيبٌ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾ وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيْحَ									
हवाएं	भेजता है	जो - जिस	और वह	56	एहसान (नेकी) करने वाले		से	करीब	
بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا									
भारी	बादल	उठा लाएं	जब	यहां तक कि	अपनी रहमत (वारिश)		आगे	बतौरे खुशख़बरी	
سُقْنُهُ لِبَلَدٍ مَيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِنْ									
से	उस से	फिर हम ने निकाला		पानी	उस से	फिर हम ने उतारा	मुर्दा	किसी शहर की तरफ़	हम ने उन्हें हांक दिया
كُلِّ الثَّمَرَاتِ كَذَلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾									
57	ग़ौर करो		ताकि तुम	सुर्दे	हम निकालेंगे	इसी तरह		हर फल	

٦
ع
١٣

ع ١٢

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرِجُ نَبَاتَهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ وَالَّذِي خَبُثَ							
ना पाकीज़ा (ख़राब)	और वह जो	उस का रब	हुक्म से	उस का सबज़ह	निकलता है	पाकीज़ा	और ज़मीन
لَا يَخْرِجُ إِلَّا نَكِدًا كَذَلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾							
58	वह शुक्र अदा करते हैं	लोगों के लिए	आयतें	फेर फेर कर बयान करते हैं	इसी तरह	नाकिस	मगर नहीं निकलता
لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا							
नहीं	अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी कौम	पस उस ने कहा	उस की कौम	तरफ़	नूह (अ)	अलबत्ता हम ने भेजा
لَكُمْ مِّنْ إِلَهِ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾							
59	एक बड़ा दिन	अज़ाब	तुम पर	डरता हूँ	वेशक मैं	उस के सिवा	कोई माबूद तुम्हारे लिए
قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرِكَ فِي صَالٍ مُّبِينٍ ﴿٦٠﴾ قَالَ							
उस ने कहा	60	खुली	गुमराही	में	अलबत्ता तुझे देखते हैं	वेशक हम	उस की कौम से सरदार बोले
يَقَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦١﴾							
61	सारे जहान	रब	से	भेजा हुआ	और लेकिन मैं	कुछ भी गुमराही	मेरे अन्दर नहीं ऐ मेरी कौम
أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾							
62	तुम जानते	जो नहीं	अल्लाह (की तरफ़) से	और जानता हूँ	तुम्हें	और नसीहत करता हूँ	अपना पैग़ाम (जमा) मैं पहुँचाता हूँ तुम्हें
أَوْعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنْكُمْ							
तुम में से	एक आदमी	पर	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तुम्हारे पास आई	कि क्या तुम्हें तअज़्जुब हुआ
لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ							
तो हम ने उसे बचा लिया	पस उन्होंने ने उसे झुटलाया	63	रहम	और ताकि तुम पर	और ताकि तुम परहेज़गारी	ताकि वह डराए तुम्हें	
وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلِكِ وَاعْرِفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا							
हमारी आयतें	उन्होंने ने झुटलाया	वह लोग जो	और हम ने गर्क कर दिया	कशती में	उस के साथ	और जो लोग	
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ﴿٦٤﴾ وَإِلَىٰ عَادِ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ							
उस ने कहा	हूद (अ)	उन के भाई	आद	और तरफ़	64	अन्धे	लोग थे वेशक वह
يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهِ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٦٥﴾							
65	तो क्या तुम नहीं डरते	उस के सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए नहीं	अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी कौम
قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرِكَ فِي							
में	अलबत्ता हम तुझे देखते हैं	उस की कौम	से	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	सरदार	बोले	
سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَذِبِينَ ﴿٦٦﴾ قَالَ يَقَوْمِ							
ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	66	झूटे	से	और हम वेशक तुझे गुमान करते हैं	वेवकूफी	
لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٧﴾							
67	तमाम जहान	रब	से	भेजा हुआ	और लेकिन मैं	कोई वेवकूफी	मुझ में नहीं

और पाकीज़ा ज़मीन से उस का सबज़ह उस के रब के हुक्म से (पाकीज़ा ही) निकलता है, और जो ख़राब है उस से नहीं निकलता मगर नाकिस, उसी तरह हम शुक्र गुज़ार लोगों के लिए आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं। (58)

अलबत्ता हम ने नूह (अ) को उस की कौम की तरफ़ भेजा, पस उस ने कहा ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, वेशक मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से। (59)

उस की कौम के सरदार बोले: हम तुझे खुली गुमराही में देखते हैं। (60)

उस ने कहा, ऐ मेरी कौम! मेरे अन्दर कुछ भी गुमराही (की बात) नहीं लेकिन मैं भेजा हुआ (रसूल) हूँ सारे जहानों के रब की तरफ़ से। (61)

मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हें नसीहत करता हूँ और अल्लाह (की तरफ़) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (62)

क्या तुम्हें तअज़्जुब हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत तुम में से एक आदमी पर आई ताकि वह तुम्हें डराए, और ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो, और ताकि तुम पर रहम किया जाए। (63)

पस उन्होंने ने उसे झुटलाया तो हम ने उसे और उन लोगों को जो कशती में उस के साथ थे बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें हम ने गर्क कर दिया, वेशक वह लोग (हक़ शनासी से) अन्धे थे। (64)

और आद की तरफ़ (भेजा) उन के भाई हूद (अ) को, और उस ने कहा ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं? (65)

उस की कौम के काफ़िर सरदार बोले अलबत्ता हम तुझे देखते हैं वेवकूफी में और हम वेशक तुझे झूटों में से गुमान करते हैं। (66)

उस ने कहा ऐ मेरी कौम! मुझ में वेवकूफी (की कोई बात) नहीं, लेकिन मैं तमाम जहानों के रब का भेजा हुआ (रसूल) हूँ। (67)

मैं तुम्हें अपने रब का पैगाम पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा ख़ैर खाह, अमीन हूँ। (68)

क्या तुम्हें तअज़्जुब हुआ कि तुम्हारे पास आई तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत तुम में से एक आदमी पर ताकि वह तुम्हें डराए, और तुम याद करो जब उस ने तुम्हें कौमे नूह (अ) के बाद जानशीन बनाया, और तुम्हें ज़ियादा दिया जिस्म में फैलाओ (डेल डोल), सो अल्लाह की नेमतें याद करो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी) पाओ। (69)

वह बोले, क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि हम अल्लाह वाहिद की इबादत करें और छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप दादा पूजते थे, तो ले आ जिस का तू हम से वादा करता है (धमकाता है) अगर तू सच्चे लोगों में से है। (70)

उस ने कहा अलबत्ता तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से पड़ गया अज़ाब और ग़ज़ब, क्या तुम मुझ से उन नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, नहीं नाज़िल की अल्लाह ने उस के लिए कोई सनद, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। (71)

तो हम ने उस को बचा लियो और उन को जो उस के साथ थे अपनी रहमत स, और हम ने उन लोगों की जड़ काट दी जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह न थे ईमान लाने वाले। (72)

और समूद की तरफ़ (भेजा) उन के भाई सालेह (अ) को, उस ने कहा ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारा उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तहकीक़ तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी आ चुकी है, यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, सो उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए, और उसे बुराई से हाथ न लगाओ वरना तुम्हें दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा। (73)

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَتِ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ﴿٦٨﴾ أَوْعَجِبْتُمْ								
क्या तुम्हें तअज्जुब हुआ	68	अमीन	खैर खाह	तुम्हारा	और मैं	अपना रब	पैगाम (जमा)	मैं तुम्हें पहुँचाता हूँ
أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۖ								
ताकि वह तुम्हें डराए	तुम में से	एक आदमी	पर	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तुम्हारे पास आई	कि
وَأَذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ								
और तुम्हें ज़ियादा दिया	कौमे नूह	वाद	जानशीन	उस ने तुम्हें बनाया	जब	और तुम याद करो		
فِي الْخَلْقِ بَصُطَةً ۖ فَادْكُرُوا الْآءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾								
69	फ़लाह (कामयाबी) पाओ	ताकि तुम	अल्लाह की नेमतें	सो याद करो	फैलाओ	खलक़त (जिस्म)	में	
قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ								
पूजते थे	जो - जिस	और हम छोड़ दें	वाहिद (अकेले)	अल्लाह	कि हम इबादत करें	क्या तू हमारे पास आया	वह बोले	
آبَائِنَا ۖ فَاتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٧٠﴾								
70	सच्चे लोग	से	तू है	अगर	जिस का हम से वादा करता है	तो ले आ हम पर	हमारे बाप दादा	
قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَبِّكُمْ رِجْسٌ وَغَضَبٌ								
और ग़ज़ब	अज़ाब	तुम्हारा रब	से	तुम पर	अलबत्ता पड़ गया	उस ने कहा		
أَتَجَادِلُونَنِي فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مِّمَّا								
नहीं	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	तुम ने उन के रख लिए हैं	नाम (जमा)	में	क्या तुम झगड़ते हो मुझ से		
نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۖ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿٧١﴾								
से	तुम्हारे साथ	वेशक मैं	सो तुम इन्तिज़ार करो	सनद	कोई	उस के लिए	अल्लाह ने नाज़िल की	
الْمُنْتَظِرِينَ ﴿٧١﴾ فَانْجَيْنَهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا								
अपनी	रहमत से	उस के साथ थे	और वह लोग जो	तो हम ने उसे नजात दी (बचा लिया)	71	इन्तिज़ार करने वाले		
وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٧٢﴾								
72	ईमान लाने वाले	और न थे	हमारी आयात	उन्होंने ने झुटलाया	वह लोग जो	जड़	और हम ने काट दी	
وَالِى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۖ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ								
तुम अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	सालेह (अ)	उन के भाई	समूद	और तरफ़		
مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهُ ۚ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَبِّكُمْ ۖ								
तुम्हारा रब	से	निशानी	तहकीक़ आ चुकी तुम्हारे पास	उस के सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए नहीं	
هٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ ۖ فَذُرُّوهَا تَأْكُلْ فِي								
में	कि खाए	सो उसे छोड़ दो	एक निशानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह की ऊँटनी	यह		
أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ ٱلْيَمِّ ﴿٧٣﴾								
73	दर्दनाक	अज़ाब	वरना पकड़ लेगा तुम्हें	बुराई से	उसे हाथ लगाओ	और न	अल्लाह की ज़मीन	

وَادْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا فَاذْكُرُوا الْآءَ اللَّهِ وَلَا تَعْسُوا فِي الْأَرْضِ						
और तुम्हें ठिकाना दिया	आद	वाद	जानंशीन	तुम्हें बनाया उस ने	जब	और तुम याद करो
और तराशते हो	महल (जमा)	उस की नर्म जगह	से	बनाते हो	जमीन	में
مُفْسِدِينَ ﴿٧٤﴾ قَالَ الْمَلَأَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ						
उस की कौम	से	तकबुर किया (मुतकबिर)	वह जिन्होंने ने	सरदार	बोले	74 फ़साद करने वाले (फ़साद करते)
لِلَّذِينَ اسْتَظْعَفُوا لِمَنْ أَمَنَ مِنْهُمْ اتَّعْلَمُونَ أَنْ صَلِحًا						
सालेह (अ)	कि	क्या तुम जानते हो	उन से	ईमान लाए	उन से जो	जईफ़ (कमज़ोर) बनाए गए
مُرْسَلٍ مِنْ رَبِّهِ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٧٥﴾						
75	ईमान रखते हैं	उस के साथ भेजा गया	उस पर जो	बेशक हम	उन्होंने ने कहा	अपना रब से भेजा हुआ
قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنُتُمْ بِهِ						
तुम ईमान लाए उस पर	वह जिस पर	हम	तकबुर किया	वह जिन्होंने ने	बोले	
كُفْرُونَ ﴿٧٦﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ						
अपना रब	हुक्म	से	और सरकशी की	ऊँटनी	उन्होंने ने कूचें काट दी	76 कुफ़र करने वाले (मुनक़िर)
وَقَالُوا يُصْلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنْ						
से	तू है	अगर	जिस का तू हम से वादा करता है	ले आ	ऐ सालेह (अ)	और बोले
الْمُرْسَلِينَ ﴿٧٧﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ						
अपने घर	में	तो रह गए	ज़लज़ला	पस उन्हें आ पकड़ा	77	रसूल (जमा)
جَثَمِينَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَاقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ						
तहकीक़ मैं ने तुम्हें पहुँचा दिया	ऐ मेरी कौम	और कहा	उन से	फिर मुँह फेरा	78	औन्धे
رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُحِبُّونَ النَّصِيحَ ﴿٧٩﴾						
79	ख़ैर खाह (जमा)	तुम पसन्द नहीं करते	और लेकिन	तुम्हारी	और ख़ैर खाही की	अपना रब पैग़ाम
وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ						
जो तुम से पहले नहीं की	क्या आते हो बेहयाई के पास (बेहयाई करते हो)	अपनी कौम से	कहा	जब	और लूत (अ)	
بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ						
मर्द (जमा)	जाते हो	बेशक तुम	80	सारे जहान	से	किसी ने ऐसी
شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَاءِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿٨١﴾						
81	हद से गुज़र जाने वाले	लोग	तुम	बल्कि	औरतें	अलावा (छोड़ कर) शहवत से

और याद करो जब तुम्हें आद के बाद जानंशीन बनाया और तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया, बनाते हो उस की नर्म जगह में महल और तराशते हो पहाड़ों के मकानात, सो अल्लाह की नेमतें याद करो, और मुल्क में फ़साद मचाते न फ़िरो। (74)

सरदार बोले उन की कौम के जो मुतकबिर थे, उन ग़रीब लोगों से जो उन में से ईमान ला चुके थे: क्या तुम जानते हो कि सालेह (अ) अपने रब की तरफ़ से भेजा हुआ है (रसूल है), उन्होंने ने कहा बेशक वह जो कुछ दे कर भेजा गया है हम उस पर ईमान रखते हैं। (75)

वह जिन्होंने ने तकबुर किया (सरदार) बोले तुम जिस पर ईमान लाए हो हम उस के मुनक़िर हैं। (76)

उन्होंने ने ऊँटनी की कूचें काट दी और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले ऐ सालेह (अ)! ले आ जिस का तू हम से वादा करता है (धमकाता है) अगर तू रसूलों में से है। (77)

पस ज़लज़ले ने उन्हें आ पकड़ा तो अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (78)

फिर (सालेह (अ) ने उन से मुँह फेरा और कहा ऐ मेरी कौम! मैं ने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाया और तुम्हारी ख़ैर खाही की, लेकिन तुम ख़ैर खाहों को पसन्द नहीं करते। (79)

लूत (अ) (को भेजा) जब उस ने अपनी कौम से कहा, क्या तुम वह बेहयाई करते हो जो तुम से पहले सारे जहान में किसी ने नहीं की। (80)

बेशक तुम मर्दों के पास शहवत से जाते हो औरतों को छोड़ कर, बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। (81)

और उस की कौम का जवाब न था मगर यह कि उन्होंने ने कहा: उन्हें (लूत (अ) को) अपनी बस्ती से निकाल दो, यह लोग पाकीज़गी चाहते हैं। (82)

सो हम ने नजात दी उस को और उस के घर वालों को सिवाए उस की वीवी के जो पीछे रह जाने वालों में से थी। (83)

और हम ने उन पर (पत्थरों की) एक बारिश बरसाई, पस देखो मुज़्रिमों का कैसा अन्जाम हुआ? (84)

और हम नें मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (को भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तहकीक़ तुम्हारे पास एक दलील पहुँच चुकी है तुम्हारे रब (की तरफ़) से, पस नाप और तोल पूरा करो और लोगों की अशिया न घटाओ, (घटा कर न दो) और मुल्क में इसलाह के बाद फ़साद न (मचाओ), तुम्हारे लिए यह बेहतर है अगर तुम ईमान वाले हो। (85)

और हर रास्ते पर न बैठो कि तुम (राहगीरों को) डराओ और उसे अल्लाह के रास्ते से रोको जो उस पर ईमान लाया, और उस में कज़ी ढूँडो, और याद करो जब तुम थोड़े थे तो उस ने तुम्हें बढ़ा दिया, और देखो! फ़साद करने वालों का अन्जाम कैसा हुआ? (86)

और अगर तुम में एक गिरोह है जो उस पर ईमान लाया जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह (है जो) ईमान नहीं लाया तो तुम सब्र करो यहां तक कि फैसला कर दे अल्लाह हमारे दरमियान, और वह बेहतरीन फैसला करने वाला है। (87)

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ							
और न	था	जवाब	उस की कौम	मगर	यह कि	उन्होंने ने कहा	उन्हें निकाल दो
مِّن قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ﴿٨٢﴾ فَأَنجَيْنَاهُ							
से	अपनी बस्ती	वेशक	यह लोग	पाकीज़गी चाहते हैं	82	हम ने नजात दी उस को	
وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٨٣﴾ وَأَمْطَرْنَا							
और उस के घर वाले	मगर	उस की वीवी	वह थी	से	पीछे रहने वाले	83	और हम ने बारिश बरसाई
عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾							
उन पर	एक बारिश	पस देखो	कैसा हुआ	हुआ	अन्जाम	मुज़्रिमिन	84
وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ قَالَ يَبْنَؤُا عِبَادُوا اللَّهَ							
और तरफ़	मदयन	उन के भाई	शुऐब (अ)	उस ने कहा	ऐ मेरी कौम	अल्लाह की इबादत करो	
مَا لَكُمْ مِّن إِلَهِ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّن							
नहीं तुम्हारा	से	कोई माबूद	उस के सिवा	तहकीक़ पहुँच चुकी तुम्हारे पास	एक दलील	से	
رَبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ							
तुम्हारा रब	पस पूरा करो	नाप	और तोल	और न घटाओ	लोग		
أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا							
उन की अशिया	और न	फ़साद मचाओ	ज़मीन (मुल्क) में	बाद	उस की इसलाह		
ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾ وَلَا تَقْعُدُوا							
यह	बेहतर	तुम्हारे लिए	अगर	तुम हो	ईमान वाले	85	और न बैठो
بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ							
हर	रास्ता	तुम डराओ	और तुम रोको	से	अल्लाह का रास्ता		
مِّنْ أَمْنٍ بِهِ وَتُبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ وَأَذْكُرُوا إِذْ كُنْتُمْ							
जो	ईमान लाया	उस पर	और ढूँडो उस में	कज़ी	और याद करो	जब	तुम थे
قَلِيلًا فَكَثَرَكُمْ ۖ وَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ							
थोड़े	तो उस ने तुम्हें बढ़ा दिया	और देखो	कैसा	हुआ	अन्जाम		
الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾ وَإِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ أَمْنُوا							
फ़साद करने वाले	86	और अगर	है	एक गिरोह	तुम से	ईमान लाया	
بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا							
उस पर जो	मैं भेजा गया	जिस के साथ	और एक गिरोह	ईमान नहीं लाया	तुम सब्र कर लो		
حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٨٧﴾							
यहां तक कि	फैसला कर दे अल्लाह	हमारे दरमियान	और वह	बेहतर	फैसला करने वाला	87	

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ						
हम तुझे ज़रूर निकाल देंगे	उस की कौम	से	तकव्वुर करते थे (बड़े बनते थे)	वह जो कि	सरदार	बोले
يُسْعِيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُوْدَنَّ فِي مِلَّتِنَا						
हमारे दीन	में	या यह कि तुम लौट आओ	हमारी बस्ती	से	तेरे साथ ईमान लाए	और वह जो ऐं शुऐब (अ)
قَالَ أَوْلَوْ كُنَّا كَرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَدْ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنَّ عُدْنَا						
हम लौट आएँ	अगर	झूटा	अल्लाह पर	अलबत्ता हम ने बुहतान बान्धा (बान्धेंगे)	88	नापसन्द करते हों हम हों क्या खाह उस ने कहा
فِي مِلَّتِكُمْ بَعْدَ إِذْ نَجَّيْنَا اللَّهَ مِنْهَا وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُوْدَ فِيهَا						
उस में	कि हम लौट आएँ	हमारे लिए	और नहीं है	उस से	हम को बचा लिया अल्लाह	जब बाद तुम्हारा दीन में
إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا عَلَى اللَّهِ						
अल्लाह पर	इल्म में	हर शै	हमारा रब	अहाता कर लिया है हमारा रब	अल्लाह	यह कि चाहे मगर
تَوَكَّلْنَا رَبُّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ						
बेहतर	और तू	हक के साथ	हमारी कौम	और दरमियान	हमारे दरमियान	फैसला कर दे हमारा रब हम ने भरोसा किया
الْفَتْحِيْنَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنْ اتَّبَعْتُمْ						
तुम ने पैरवी की	अगर	उस की कौम	से	कुफ़ किया	वह जिन्हों ने	सरदार और बोले 89 फैसला करने वाला
شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذَا لَخَسِرُونَ ﴿٩٠﴾ فَآخَذَتْهُمْ الرِّجْفَةُ فَاصْبَحُوا						
सुबह के वक़्त रह गए	ज़लज़ला	तो उन्हें आ लिया	90	ख़सारे में होंगे	उस सूरत में	तो तुम ज़रूर शुऐब (अ)
فِي دَارِهِمْ جَثِمَيْنِ ﴿٩١﴾ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَنْ لَّمْ يَعْنُوا						
न बस्ते थे	गोया	शुऐब (अ)	झुटलाया	वह जिन्हों ने	91	औन्धे पड़े अपने घर में
فِيهَا الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلَّى						
फिर मुहँ फेरा	92	ख़सारा पाने वाले	वही	वह हुए	शुऐब झुटलाया	उस में वहां वह जिन्हों ने
عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلَتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ						
तुम्हारी	और खैर खाही की	अपना रब	पैग़ाम (जमा)	मैं ने पहुँचा दिए तुम्हें	अलबत्ता	ऐ मेरी कौम और कहा उन से
فَكَيْفَ اٰسٰى عَلَى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَمَا اَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ						
नबी	कोई	किसी बस्ती	में	और न भेजा हम ने	93	काफिर (जमा) कौम पर ग़म खाऊँ तो कैसे
إِلَّا اٰخَذْنَا اَهْلَهَا بِالْبَاسِءِ وَالطَّوْرَةِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ ﴿٩٤﴾						
मगर	हम ने पकड़ा	वहां के लोग	सख़्ती में	और तकलीफ	ताकि वह	आजिज़ी करें 94
ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوْا وَقَالُوا قَدْ مَسَّ						
फिर	हम ने बदली	जगह	बुराई	भलाई	यहां तक कि	वह बढ़ गए और कहने लगे पहुँच चुकी है
اٰبَاءَنَا الطَّوْرَةِ وَالسَّرَّاءِ فَآخَذْنَهُمْ بِغَتَةٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٩٥﴾						
हमारे बाप दादा	तकलीफ	और खुशी	पस हम ने उन्हें पकड़ा	अचानक	और वह	वेख़बर थे 95

उस की कौम के वह सरदार जो बड़े बनते थे बोले ऐं शुऐब (अ)! हम ज़रूर निकाल देंगे तुझे और उन्हें जो तेरे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से या यह कि तुम हमारे दीन में लौट आओ, फरमाया खाह हम नापसन्द करते हों (फिर भी?)। (88)

अलबत्ता हम अल्लाह पर झूटा बुहतान बान्धेंगे अगर हम उस के बाद तुम्हारे दीन में लौट आएँ जबकि अल्लाह ने हमें उस से बचा लिया है और हमारा काम नहीं कि हम उस में लौट आएँ मगर यह कि अल्लाह हमारा रब चाहे, हमारे रब ने अपने इल्म में हर शै का अहाता कर लिया है, हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! फैसला कर दे हमारे दरमियान और हमारी कौम के दरमियान हक के साथ और तू बेहतर फैसला करने वाला है। (89)

और वह सरदार बोले जिन्हों ने कुफ़ किया उस की कौम के, अगर तुम ने शुऐब (अ) की पैरवी की तो उस सूरत में तुम खुद ख़सारे में होंगे। (90)

तो उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया, पस वह सुबह के वक़्त अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (91)

जिन्हों ने शुऐब (अ) को झुटलाया (वह ऐसे मिटे) गोया (कभी) बस्ते न थे वहां। जिन्हों ने शुऐब (अ) को झुटलाया वही ख़सारा पाने वाले हुए। (92)

फिर उन से उस ने मुहँ फेरा और कहा ऐ मेरी कौम! मैं ने तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचा दिए और तुम्हारी खैर खाही कर चुका तो (अब) काफ़िर कौम पर कैसे ग़म खाऊँ? (93)

और हम ने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर हम ने वहां के लोगों को सख़्ती में पकड़ा और तकलीफ में ताकि वह आजिज़ी करें। (94)

फिर हम ने बुराई की जगह भलाई से बदली यहां तक कि वह बढ़ गए और कहने लगे तकलीफ और खुशी हमारे बाप दादा को पहुँच चुकी है, पस हम ने उन्हें अचानक पकड़ा और वह वेख़बर थे। (95)

और अगर बसतियों वाले ईमान ले आते और परहेज़गारी इख्तियार करते तो अलबत्ता हम उन पर बरकतें खोल देते ज़मीन और आस्मान से, लेकिन उन्होंने ने झुटलाया तो हम ने उन्हें पकड़ा उस के नतीजे में जो वह करते थे। (96)

क्या अब वे ख़ौफ़ हैं बसतियों वाले कि उन पर हमारा अज़ाब रातों रात आ जाए और वह सोए हुए हों। (97)

क्या बसतियों वाले उस से वे ख़ौफ़ हैं कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आ जाए और वह खेल कूद रहे हों। (98)

क्या वह अल्लाह की तदबीर से वे ख़ौफ़ हो गए? सो वे ख़ौफ़ नहीं होते अल्लाह की तदबीर से मगर ख़सारा उठाने वाले। (99)

किया उन लोगों को हिदायत न मिली जो ज़मीन के वारिस हुए वहां के रहने वालों के बाद, अगर हम चाहते तो उन के गुनाहों के सबब उन पर मुसीबत डालते, और हम उन के दिलों पर मुहर लगाते हैं, सो वह सुनते नहीं। (100)

यह बसतियां हैं जिन की ख़बरें हम तुम पर बयान करते हैं, और अलबत्ता उन के पास आए उन के रसूल निशानियां ले कर, सो वह ईमान न लाए क्योंकि उस से पहले उन्होंने ने झुटलाया था, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगाता है। (101)

और हम ने उन के अक्सर में अहद का कोई पास न पाया और दरहकीक़त हम ने उन में अक्सर नाफ़रमान वद किर्दार पाए। (102)

फिर हम ने उन के बाद मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरज़ौन की तरफ़ और उस के सरदारों की तरफ़ तो उन्होंने ने उन (निशानियों का) इन्कार किया, सो तुम देखो फ़साद करने वालों का अन्जाम क्या हुआ? (103)

और कहा मूसा (अ) ने, ऐ फ़िरज़ौन! वेशक़ मैं तमाम ज़हानों के रब की तरफ़ से रसूल हूँ। (104)

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ							
बरकतें	उन पर	तो अलबत्ता हम खोल देते	और परहेज़गारी करते	ईमान लाते	वसतियों वाले	यह होता कि	और अगर
مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا							
उस के नतीजे में	तो हम ने उन्हें पकड़ा	उन्होंने ने झुटलाया	और लेकिन	और ज़मीन	आस्मान	से	
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٦﴾ أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ							
उन पर आए	कि	वसतियों वाले	क्या बेखौफ है	96	जो वह करते थे		
بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿٩٧﴾ وَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ							
कि	वसतियों वाले	क्या बेखौफ है	97	सोए हुए हों	और वह	रातों रात	हमारा अज़ाब
يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩٨﴾ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ							
अल्लाह की तदबीर	किया वह बेखौफ हो गए	98	खेल कूद रहे हों	और वह	दिन चढ़े	हमारा अज़ाब	उन पर आ जाए
فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٩٩﴾ أَوَلَمْ يَهْدِ							
हिदायत मिली	क्या न	99	खसारा उठाने वाले	लोग	मगर	अल्लाह की तदबीर	बेखौफ नहीं होते
لِّلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَّوْ شَاءَ							
अगर हम चाहते	कि	वहां के रहने वाले	बाद	ज़मीन	वारिस हुए	वह लोग जो	
أَصْبَنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۖ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾							
100	नहीं सुनते हैं	सो वह	उन के दिल	पर	और हम मुहर लगाते हैं	उन के गुनाहों के सबब	तो हम उन पर मुसीबत डालते
تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِهَا ۖ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ							
आए उन के पास	और अलबत्ता	उन की कुछ ख़बरें	से	तुम पर	हम बयान करते हैं	वसतियां	यह
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ ۖ							
उस से पहले	उन्होंने ने झुटलाया	क्योंकि	वह ईमान लाते	सो न	निशानियां ले कर	उन के रसूल	
كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ﴿١٠١﴾ وَمَا وَجَدْنَا							
हम ने पाया	और न	101	काफिर (जमा)	दिल (जमा)	पर	मुहर लगाता है अल्लाह	इसी तरह
لَا كَثْرَتَهُمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ﴿١٠٢﴾							
102	नाफरमान - बद किर्दार	उन में अक्सर	हम ने पाए	और दरहकीकत	अहद का पास	उन के अक्सर में	
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ							
और उसके सरदार	तरफ फिरऔन	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	उन के बाद	हम ने भेजा	फिर	
فَطَلَمُوا بِهَا ۖ فَاَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾							
103	फसाद करने वाले	अन्जाम	हुआ	क्या	सो तुम देखो	उन का	तो उन्होंने ने जुल्म (इन्कार) किया
وَقَالَ مُوسَىٰ يُفْرِعُونَ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾							
104	तमाम जहान	रब	से	रसूल	वेशक मैं	ऐ फिरऔन	मूसा और कहा

حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ							
शायां	पर	कि	मैं न कहूँ	अल्लाह पर	मगर हक़	तहकीक़ तुम्हारे पास लाया हूँ निशानियां	
مِّن رَّبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٠٥﴾ قَالَ إِنْ كُنْتَ							
से	तुम्हारा रब	पस भेज दे	मेरे साथ	वनी इस्राईल	105	बोला	तू अगर
جِئْتَ بِآيَةٍ فَاتِّبِعْهَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿١٠٦﴾ فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ							
लाया है कोई निशानी	तो वह ले आ	अगर तू है	से	सच्चे	106	पस उस ने डाला	अपना असा
فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾ وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ							
पस वह अचानक	अज़दहा	सरीह (साफ़)	107	और निकाला	अपना हाथ	पस नागाह वह	नूरानी
لِنُظْرَيْنَ ﴿١٠٨﴾ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ							
नाज़िरीन के लिए	108	बोले	सरदार	से	कौम	फिरऔन	वेशक यह जादूगर
عَلَيْمٌ ﴿١٠٩﴾ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾							
इल्म वाला (माहिर)	109	चाहता है	कि	तुम्हें निकाल दे	से	तुम्हारी सरज़मीन	तो अब क्या कहते हो 110
قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿١١١﴾ يَأْتُوكَ							
वह बोले	रोक ले	और उस का भाई	और भेज	शहरों में	इकट्ठा करने वाले (नकीब)	111	तेरे पास ले आएँ
بِكُلِّ سِحْرٍ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾ وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا							
हर	जादूगर	इल्म वाला (माहिर)	112	और आए	जादूगर (जमा)	फिरऔन	वह बोले यकीनन हमारे लिए कोई अजर (इन्आम)
إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾							
अगर	हुए	हम	ग़ालिब (जमा)	113	उस ने कहा	हाँ और तुम वेशक	अलबत्ता - से 114 मुकर्बीन
قَالُوا يَمُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقَىٰ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ﴿١١٥﴾							
वह बोले	ऐ मूसा (अ)	या	यह कि	तू डाल	और या (वरना)	यह कि	हैं हम डालने वाले 115
قَالَ الْقَوْمَ فَلَمَّا آلَقُوا سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ							
कहा	तुम डालो	पस जब	उन्होंने ने डाला	सिहर कर दिया	आँखें	लोग	और उन्हें डराया
وَجَاءُوا بِسِحْرِ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ							
और वह लाए जादू	बड़ा	116	और हम ने वहि भेजी	तरफ़	मूसा (अ)	कि	डालो अपना असा
فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا							
तो नागाह	वह	निगलने लगा	जो उन्होंने ने ढकोस्ला बनाया था	117	पस साबित हो गया	हक़	और वातिल हो गया जो
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾ فَعَلِبُوا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا صُغْرَيْنَ ﴿١١٩﴾							
वह करते थे	118	पस मगलूब हो गए	वही	और लौटे	ज़लील	119	
وَأَلْقَى السَّحَرَةُ سَجْدِينَ ﴿١٢٠﴾ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢١﴾							
और गिर गए	जादूगर	सिज्दा करने वाले	120	वह बोले	हम ईमान लाए	रब पर	तमाम जहान (जमा) 121

शायां है कि मैं न कहूँ अल्लाह पर मगर हक़, तहकीक़ मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानियां लाया हूँ, पस मेरे साथ वनी इस्राईल को भेज दे। (105)

बोला अगर तू कोई निशानी लाया है तो वह ले आ, अगर तू सच्चों में से है। (106)

पस उस (मूसा अ) ने डाला अपना असा, पस अचानक वह साफ़ अज़दहा हो गया। (107)

और अपना हाथ (गरेवान) से निकाला तो नागाह वह नाज़िरीन के लिए नूरानी हो गया। (108)

फिरऔन की कौम के सरदार बोले वेशक यह तो माहिर जादूगर है। (109)

चाहता है कि तुम्हें निकाल दे तुम्हारी सरज़मीन से, तो अब क्या कहते हो (क्या मश्वरा है)? (110)

वह बोले उस को और उस के भाई को रोक ले और शहरों में भेज दे नकीब। (111)

तेरे पास हर माहिर जादूगर ले आएँ। (112)

और जादूगर फिरऔन के पास आए, वह बोले यकीनन हमारे लिए कोई इन्आम हो गा अगर हम ग़ालिब हुए। (113)

उस ने कहा हौ! तुम वेशक (मेरे) मुकर्बीन में से होंगे। (114)

वह बोले, ऐ मूसा (अ)! या तू डाल वरना हम डालने वाले हैं। (115)

(मूसा अ) ने कहा तुम डालो, पस जब उन्होंने ने डाला लोगों की आँखों पर सिहर कर दिया और उन्हें डराया और वह बड़ा जादू लाए थे। (116)

और हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी कि अपना असा डालो, नागाह वह निगलने लगा जो ढकोस्ला उन्होंने ने बनाया था। (117)

पस हक़ साबित हो गया और वह जो करते थे वातिल हो गया। (118)

पस वह वहीं मगलूब हो गए और लौटे ज़लील हो कर। (119)

और जादूगर सिज्दे में गिर गए, (120) वह बोले कि हम तमाम जहानों के रब पर ईमान ले आए। (121)

(यानी) मूसा (अ) और हारून (अ) के रब पर। (122)

फ़िरऔन बोला क्या तुम उस पर ईमान ले आए इस से क़ब्ल कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? वेशक यह एक चाल है कि शहर में तुम ने चली है ताकि उस के रहने वालों को यहां से निकाल दो, तुम जल्द (उस का नतीजा) मालूम कर लोगे। (123)

मैं ज़रूर काट डालूंगा तुम्हारे (एक तरफ़ के) हाथ और दूसरी तरफ़ के पाऊँ, फिर मैं तुम सब को ज़रूर सूली दूँगा। (124)

वह बोले वेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। (125)

और तुझ को हम से दुश्मनी नहीं मगर सिर्फ़ यह कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वह हमारे पास आ गई, ऐ हमारे रब! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें मौत दे (उस हाल में कि हम) मुसलमान हों। (126)

और सरदार बोले फ़िरऔन की कौम के, क्या तू मूसा (अ) और उस की कौम को छोड़ रहा है कि वह ज़मीन में फ़साद करें और वह (मूसा अ) तुझे छोड़ दे और तेरे माबूदों को, उस ने कहा हम अ़नक़रीब उन के बेटों को क़त्ल कर डालेंगे और बेटियों को ज़िन्दा छोड़ देंगे, और हम उन पर ज़ोर आवर हैं। (127)

मूसा (अ) ने अपनी कौम से कहा कि तुम अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो, वेशक ज़मीन अल्लाह की है, वह अपने बन्दों में से जिस को चाहता है उस का वारिस बना देता है, और अन्जाम कार परहेज़गारों के लिए है। (128)

वह बोले हम अज़ीयत दिए गए इस से क़ब्ल कि आप हम में आए और उस के बाद कि आप हम में आए, (मूसा (अ) ने) कहा करीब है तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा (नाइव) बना दे, फिर देखेगा तुम कैसे काम करते हो। (129)

और अलबत्ता हम ने पकड़ा फ़िरऔन वालों को क़हतों में और फलों के नुक़सान में ताकि वह नसीहत पकड़ें। (130)

رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ﴿١٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ اَمَنْتُمْ بِهِ قَبْلَ اَنْ									
रब	मूसा (अ)	और हारून	122	बोला	फ़िरऔन	क्या तुम ईमान लाए	उस पर	पहले	कि
اِذْنَكُمْ اِنَّ هَذَا لَمَكْرٌ مَّكْرْتُمُوهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِيُخْرِجُوْا مِنْهَا									
मैं इजाज़त दूँ तुम्हें	वेशक	यह	एक चाल है	जो तुम ने चली	में	शहर	ताकि निकाल दो	यहां से	
اَهْلَهَا فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾ لَّا قِطْعَنَ اَيْدِيكُمْ وَاَرْجُلُكُمْ									
उस के रहने वाले	पस जल्द	तुम मालूम कर लोगे	123	मैं ज़रूर काट डालूंगा	तुम्हारे हाथ	और तुम्हारे पाऊँ			
مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَّا صَلْبَنَكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾ قَالُوْا اِنَّا اِلَى رَبِّنَا									
से	दूसरी तरफ़	फिर	मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा	सब को	124	वह बोले	वेशक हम	तरफ़	अपना रब
مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّا اِلَّا اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا									
लौटने वाले	125	और नहीं	तुझ को दुश्मनी	हम से	मगर	यह कि	हम ईमान लाए	निशानियां	अपना रब
جَآءَتَنَا رَبَّنَا اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ									
वह हमारे पास आए	हमारा रब	दहाने खोल दे	हम पर	सब्र	और हमें मौत दे	मुसलमान (जमा)	126	और बोले	
الْمَلَا مِنْ قَوْمٍ فِرْعَوْنُ اَتَذَرُ مُوسٰى وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوْا									
सरदार	से (के)	कौम	फ़िरऔन	क्या तू छोड़ रहा है	मूसा	और उस की कौम	ताकि वह फ़साद करें		
فِي الْاَرْضِ وَيَذَرُكَ وَالْهٰتِكَ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَاءَهُمْ									
में	ज़मीन	और वह छोड़ दे तुझे	और तेरे माबूद	उस ने कहा	हम अ़नक़रीब क़त्ल कर देंगे	उन के बेटे			
وَنَسْتَحْيِ نِسَاءَهُمْ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوسٰى									
और ज़िन्दा छोड़ देंगे	उन की औरतें (बेटियां)	और हम	उन पर	ज़ोर आवर (जमा)	127	कहा	मूसा (अ)		
لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاَصْبِرُوْا اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ									
अपनी कौम से	तुम मदद मांगो	अल्लाह से	और सब्र करो	वेशक	ज़मीन	अल्लाह की			
يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهِ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾									
वह उस का वारिस बनाता है	जिस	चाहता है	से	अपने बन्दे	और अन्जाम कार	परहेज़गारों के लिए	128		
قَالُوْا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيْنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا									
वह बोले	हम अज़ीयत दिए गए	से	क़ब्ल	कि	आप (अ) हम में आते	और बाद	आप आए हम में		
قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوْكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي									
उस ने कहा	करीब है	तुम्हारा रब	कि	हलाक कर दे	तुम्हारा दुश्मन	और तुम्हें ख़लीफ़ा बना दे	में		
الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَلَقَدْ اٰخَذْنَا									
ज़मीन	फिर देखेगा	कैसे	तुम काम करते हो	129	और अलबत्ता	हम ने पकड़ा			
اِلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقَصِ مِنَ الثَّمَرِ لَعَلَّهُمْ يَذَكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾									
फ़िरऔन वाले	क़हतों में	और नुक़सान	से (में)	फल (जमा)	ताकि वह	नसीहत पकड़ें	130		

١٢
ع
٢

١٥
ع
٥

فَإِذَا جَاءَتْهُمْ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَذِهِ وَإِنْ تُصِيبْهُمْ سَيِّئَةٌ									
कोई बुराई	पहुँचती	और अगर	यह	हमारे लिए	वह कहने लगे	भलाई	आई उन के पास	फिर जब	
يَظَّيِّرُوا بِمُوسَى وَمَنْ مَّعَهُ إِلَّا إِنَّمَا ظَنُّهُمْ عِنْدَ اللَّهِ									
अल्लाह के पास	उन की बदनसीबी	इस के सिवा नहीं	याद रखो	और जो उन के साथ (साथी)	मूसा से	बदशगूनी लेते			
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣١﴾ وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ									
हम पर तू लाएगा	जो कुछ	और वह कहने लगे	131	नहीं जानते	उन के अक्सर	और लेकिन			
مِنْ آيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۖ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾ فَأَرْسَلْنَا									
फिर हम ने भेजे	132	ईमान लाने वाले	तुझ पर	हम	तो नहीं	उस से	कि हम पर जादू करे	कैसी भी निशानी	
عَلَيْهِمُ الطُّوفَانُ وَالْجَرَادُ وَالْقُمَّلُ وَالضَّفَادِعُ وَالِدَّمَائِ									
निशानियां	और खून	और मेंडक	और जुएं-चच्छी	और टिड्डी	तूफान	उन पर			
مُفَصَّلَاتٍ ۖ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿١٣٣﴾ وَلَمَّا									
और जब	133	मुजरिम (जमा)	एक कौम (लोग)	और वह थे	तो उन्होंने ने तकव्वुर किया	जुदा जुदा			
وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرَّجْزُ قَالُوا يُمُوسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ									
अहद	सबब-जो	अपना रब	हमारे लिए	दुआ कर	ऐ मूसा	कहने लगे	अज़ाब	उन पर	वाक़े हुआ
عِنْدَكَ ۚ لَبِئْسَ كَاشِفَتِ عَنَّا الرَّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ									
और हम ज़रूर भेज देंगे	तुझ पर	हम ज़रूर ईमान लाएंगे	अज़ाब	हम से	तू ने खोल दिया (उठा लिया)	अगर	तेरे पास		
مَعَكَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿١٣٤﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرَّجْزَ									
अज़ाब	उन से	हम ने खोल दिया (उठा लिया)	फिर जब	134	बनी इस्राईल	तेरे साथ			
إِلَىٰ أَجَلٍ هُمْ بَلِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿١٣٥﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ									
उन से	फिर हम ने इन्तिकाम लिया	135	अहद तोड़ देते	वह	उसी वक़्त	उस तक पहुँचना था	उन्हें	एक मुद्दत तक	
فَاغْرَقْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا									
उन से	और वह थे	हमारी आयतों को	झुटलाया	क्योंकि उन्होंने	दर्या में	पस उन्हें गर्क कर दिया			
غَافِلِينَ ﴿١٣٦﴾ وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ									
कमज़ोर समझे जाते	थे	वह जो	कौम	और हम ने वारिस किया	136	गाफ़िल (जमा)			
مَشَارِقِ الْأَرْضِ وَمَغَارِبِهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا وَتَمَّتْ كَلِمَتُ									
वादा	और पूरा हो गया	उस में	हम ने बरकत रखी	वह जिस	और उस के मशरिब (जमा)	ज़मीन	मशरिब (जमा)		
رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ بِمَا صَبَرُوا ۖ وَدَمَّرْنَا									
और हम ने बरबाद कर दिया	उन्होंने ने सबर किया	बदले में	बनी इस्राईल	पर	अच्छा	तेरा रब			
مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ﴿١٣٧﴾									
137	वह ऊँचा फैलाते थे	और जो	और उस की कौम	फिराइन	बनाते थे (बनाया था)	जो			

जब उन के पास आई भलाई तो वह कहने लगे यह हमारे लिए है, और कोई बुराई पहुँचती तो मूसा (अ) और उन के साथियों से बदशगुनी (बद नसीबी) लेते, याद रखो! इस के सिवा नहीं कि उन की बदनसीबी अल्लाह के पास है, लेकिन उन के अक्सर नहीं जानते। (131)

और वह कहने लगे तू हम पर कैसी भी निशानी लाएगा कि उस से हम पर जादू करे तो (भी) हम तुझ पर ईमान लाने वाले नहीं। (132)

फिर हम ने उन पर भेजे तूफान, और टिड्डी, और जुएँ, और मेंडक, और खून, जुदा जुदा निशानियाँ, तो उन्होंने ने तकव्वुर किया और वह मुजरिम कौम के लोग थे। (133)

और जब उन पर अज़ाब बाँके हुआ तो कहने लगे कि ऐ मूसा (अ): तू हमारे लिए दुआ कर अपने रब से (अल्लाह के) उस अहद के सबब जो तेरे पास है, अगर तू ने हम से अज़ाब उठा लिया तो हम ज़रूर तुझ पर ईमान ले आएंगे और बनी इस्राईल को तेरे साथ ज़रूर भेज देंगे। (134)

फिर जब हम ने उन से अज़ाब उठा लिया एक मुद्दत तक (जिसे आखिर कार) उन्हें पहुँचना था, उसी वक़्त वह अहद तोड़ देते। (135)

फिर हम ने उन से इन्तिकाम लिया और उन्हें दर्या में गर्क कर दिया क्योंकि उन्होंने ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह उन से गाफिल थे। (136)

और हम ने उस कौम को वारिस कर दिया जो कमज़ोर समझे जाते थे, (उस) ज़मीन के मशरिब ओ मशरिब का जिस में हम ने बरकत रखी है (सर ज़मीने फलसतीन ओ शाम), और बनी इस्राईल पर तेरे रब का वादा पूरा हो गया उस के बदले में कि उन्होंने ने सबर किया, और हम ने बरबाद कर दिया जो फिराइन और उस की कौम ने बनाया था और जो वह ऊँचा फैलाते थे (उन के बुलन्द ओ वाला महल्लात)। (137)

और हम ने उतारा बनी इस्राईल को बहरे (कुलजुम) के पार, पस वह एक ऐसी कौम के पास आए जो अपने बुतों (की पूजा) पर जमे बैठे थे, वह बोले ऐ मूसा (अ)! हमारे लिए ऐसे बुत बना दे जैसे उन के हैं, (मूसा अ) ने कहा वेशक तुम लोग जहल (नादानी) करते हो। (138)

वेशक यह लोग जिस (बुत परस्ती) में लगे हुए हैं वह तबाह होने वाली है और वातिल है वह जो यह कर रहे हैं। (139)

मूसा (अ) ने कहा: किया अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और माबूद तलाश करूँ? हालांकि उस ने तुम्हें सारे जहान पर फज़ीलत दी। (140)

और (याद करो) जब हम ने तुम्हें फ़िरअोन वालों से नजात दी, वह तुम्हें बुरे अज़ाब से तकलीफ़ देते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी बेटियों को जीता छोड़ देते थे। और उस में तुम्हारे लिए तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आजमाइश थी। (141)

और हम ने मूसा (अ) से वादा किया तीस (30) रातों का और उस को दस (10) (और बढ़ा कर) पूरा किया तो उस के रब की मुदत चालीस (40) रात पूरी हुई, और मूसा (अ) ने अपने भाई हारून (अ) से कहा मेरे नाइब रहो मेरी कौम में और इस्लाह करना और मुफ़्सिदों के रास्ते की पैरवी न करना। (142)

और जब मूसा (अ) आए हमारी वादा गाह पर और अपने रब से कलाम किया, मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि मैं तुझे देखूँ, अल्लाह ने कहा तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा, अलबत्ता पहाड़ की तरफ़ देख, पस अगर वह अपनी जगह ठहरा रहा तो तभी मुझे देख लेगा, पस जब उस के रब ने तजल्ली की पहाड़ की तरफ़ (तो) उस को रेज़ा रेज़ा कर दिया और मूसा (अ) बेहोश हो कर गिर पड़े, फिर जब होश आया तो उस ने कहा, तू पाक है, मैं ने तौबा की तेरी तरफ़ और मैं ईमान लाने वालों में सब से पहला हूँ। (143)

وَجُورُنَا بِنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَاتُوا عَلَى قَوْمٍ يَّعْكُفُونَ						
जमे बैठे थे	एक कौम	पर (पास)	पस वह आए	बहरे (कुलजुम)	बनी इस्राईल को	और हम ने पार उतारा
عَلَى أَصْنَامٍ لَهُمْ ۖ قَالُوا يُمُوسَى اجْعَلْ لَنَا إِلَهًا كَمَا لَهُمْ						
उन के लिए	जैसे	बुत	हमारे लिए	बना दे	ऐ मूसा (अ)	वह बोले अपने सनम (जमा) बुत पर
الِهَةُ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ (١٣٨) إِنَّ هَؤُلَاءِ مُتَّبَرُّ مَا هُمْ						
वह जो	तबाह होने वाली है	यह लोग	वेशक	138	जहल करते हो	तुम लोग वेशक तुम उस ने कहा माबूद (जमा) बुत
فِيهِ وَبِطْلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (١٣٩) قَالَ أَغَيَّرَ اللَّهُ أَبْغِيَكُمْ						
तलाश करूँ तुम्हारे लिए	क्या अल्लाह के सिवा	उस ने कहा	139	वह कर रहे हैं	जो	और वातिल उस में
إِلَهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَلَمِينَ (١٤٠) وَإِذْ أَنْجَيْنَاكُمْ مِنْ						
से	हम ने तुम्हें नजात दी	और जब	140	सारे जहान	पर	फज़ीलत दी तुम्हें हालांकि वह कोई माबूद
إِلَ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۖ يَقْتُلُونَ أَبْنَاءَكُمْ						
तुम्हारे बेटे	मार डालते थे	अज़ाब	बुरा	तुम्हें तकलीफ़ देते थे	फ़िरअोन वाले	
وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۖ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ (١٤١)						
141	बड़ा - बड़ी	तुम्हारा रब	से	आजमाइश	और उस में तुम्हारे लिए	तुम्हारी औरतें (बेटियाँ) और जीता छोड़ देते थे
وَوَعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَاهَا بِعَشْرِ فِتْمَ						
तो पूरी हुई	दस (10) से	और उस को हम ने पूरा किया	रात	तीस (30)	मूसा (अ)	और हम ने वादा किया
مِيقَاتٍ رَبِّهِ أَزْبَعِينَ لَيْلَةً ۖ وَقَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ						
अपने भाई से	मूसा	और कहा	रात	चालीस (40)	उस का रब	मुदत
هَارُونَ أَخْلَفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ						
रास्ता	और न पैरवी करना	और इस्लाह करना	मेरी कौम में	मेरा खलीफ़ा (नाइब) रह	हारून (अ)	
الْمُفْسِدِينَ (١٤٢) وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ ۖ قَالَ						
उस ने कहा	अपना रब	और उस ने कलाम किया	हमारी वादा गाह पर	मूसा (अ)	आया	और जब 142 मुफ़्सिद (जमा)
رَبِّ أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْكَ ۖ قَالَ لَنْ تَرِنِي وَلَكِنِ انْظُرْ إِلَى						
तरफ़	तू देख	और लेकिन (अलबत्ता)	तू मुझे हरगिज़ न देखेगा	उस ने कहा	तेरी तरफ़	मैं देखूँ मुझे दिखा ऐ मेरे रब
الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرِنِي ۖ فَلَمَّا تَجَلَّى						
तजल्ली की	पस जब	तू मुझे देख लेगा	तो तभी	अपनी जगह	वह ठहरा रहा	पस अगर पहाड़
رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَى صَعِقًا ۖ فَلَمَّا أَفَاقَ						
होश आया	फिर जब	बेहोश	मूसा (अ)	और गिरा	रेज़ा रेज़ा	उसको कर दिया पहाड़ की तरफ़ उस का रब
قَالَ سُبْحَنَكَ ثُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ (١٤٣)						
143	ईमान लाने वाले	सब से पहला	और मैं	तेरी तरफ़	मैं ने तौबा की	तू पाक है उस ने कहा

١٦
١٢
٦

قَالَ يَمُوسَىٰ إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَتِي							
कहा	ऐ मूसा	मैं ने तुझे चुन लिया	पर	लोग	अपने पैगामात से		
وَبِكَلَامِي ۖ فَخُذْ مَا آتَيْتُكَ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٤﴾ وَكَتَبْنَا							
और अपने कलाम से	पस पकड़ ले	जो मैं ने तुझे दिया	और रहो	से	शुक्र गुज़ार (जमा)	और हम ने लिख दी	144
لَهُ فِي الْأَلْوَاخِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةٌ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۖ							
उस के लिए	में	तख्तीयां	से	हर चीज़	नसीहत	और तफ़सील	हर चीज़ की
فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا بِأَحْسَنِهَا ۖ							
पस तू उसे पकड़ ले	कुव्वत से	और हुक्म दे अपनी कौम	वह पकड़ें (इख्तियार करें)		उस की अच्छी बातें		
سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفَاسِقِينَ ﴿١٤٥﴾ سَاصِرْفُ عَنْ آيَتِي الَّذِينَ							
अनकरीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा	नाफरमानों का घर	145	मैं अनकरीब फेर दूंगा	से	अपनी आयात	वह लोग जो	
يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنْ يَرَوْا كَلَّا آيَةٍ							
तकब्वुर करते हैं	ज़मीन में	नाहक		और अगर	वह देख लें	हर निशानी	
لَّا يُؤْمِنُوا بِهَا ۖ وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۖ							
न ईमान लाएं उस पर	और अगर	देख लें	रास्ता	हिदायत	न पकड़ें (इख्तियार करें)		रास्ता
وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ							
और अगर	देख लें	रास्ता	गुमराही	इख्तियार कर लें उसे	रास्ता	यह	इस लिए कि उन्होंने ने
كَذَّبُوا بِآيَتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿١٤٦﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا							
झुटलाया	हमारी आयात	और थे	उस से	गाफिल (जमा)	146	और जो लोग	झुटलाया
بِآيَتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۖ هَلْ يُجْزَوْنَ							
हमारी आयात को	और मुलाकात	आखिरत	जाया हो गए	उन के अमल	क्या	वह बदला पाएंगे	
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٧﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنۢ بَعْدِهِ							
जो मगर	वह करते थे	147	और बनाया	कौम	मूसा	उस के बाद	
مِّنۢ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا ۚ لَهُ خُورٌ ۚ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ							
से	अपने ज़ेवर	एक बछड़ा	एक धड़	उस में	गाय की आवाज़	क्या न देखा उन्होंने ने	कि वह नहीं कलाम करता उन से
وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۚ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا							
और नहीं दिखाता उन्हें	रास्ता	उन्होंने ने बना लिया	और वह ज़ालिम थे		148	और जब	
سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا ۚ قَالُوا لَئِنْ							
गिरे अपने हाथों में (नादिम हुए)	और देखा उन्होंने ने	कि वह	तहकीक गुमराह हो गए		वह कहने लगे	अगर	
لَّمۡ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿١٤٩﴾							
हम पर रहम न किया हम पर	हमारा रब	और (न) बड़श दिया	ज़रूर हो जाएंगे हम		से	खसारा पाने वाले	149

अल्लाह ने कहा ऐ मूसा (अ)!

वेशक मैं ने तुझे लोगों पर चुन लिया अपने पैगामों और अपने कलाम से, पस जो मैं ने तुझे दिया है (कुव्वत से) पकड़ ले और शुक्र गुज़ारों में से रहो। (144)

और हम ने उस के लिए लिख दी तख्तीयों में हर चीज़ की नसीहत, हर चीज़ की तफ़सील, पस तू उसे कुव्वत से पकड़ ले और हुक्म दे अपनी कौम को कि वह उस के बेहतर मफ़हूम की पैरवी करें, अनकरीब मैं तुझे नाफरमानों का घर (अनज़ाम) दिखाऊंगा। (145)

मैं अनकरीब फेर दूंगा उन लोगों को अपनी आयतों से जो ज़मीन में नाहक तकब्वुर करते हैं, और अगर वह हर निशानी देख लें (फिर भी) उस पर ईमान न लाएं, और अगर हिदायत का रास्ता देख लें तो भी उस रास्ते को इख्तियार न करें, और अगर देख लें गुमराही का रास्ता तो इख्तियार कर लें, यह इस लिए कि उन्होंने ने हमारी आयात को झुटलाया और वह उस से गाफिल थे। (146)

और जिन लोगों ने झुटलाया हमारी आयात को और आखिरत की मुलाकात को, उन के अमल जाया हो गए, वह क्या बदला पाएंगे मगर (वही) जो वह करते थे। (147)

और मूसा (अ) की कौम ने उस के बाद बनाया अपने ज़ेवर से एक बछड़ा, (महज़) एक धड़ जिस में गाय की आवाज़ थी, क्या उन्होंने ने न देखा कि न वह उन से कलाम करता है न उन्हें दिखाता है रास्ता? उन्होंने ने उसे (माबूद) बना लिया और वह ज़ालिम थे। (148)

और जब वह नादिम हुए और उन्होंने ने देखा कि वह गुमराह हो गए तो कहने लगे अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बड़श दिया तो हम ज़रूर हो जाएंगे खसारा पाने वालों में से। (149)

और जब मूसा (अ) लौटा अपनी कौम की तरफ़ गुस्से में भरा हुआ, रंजीदा, उस ने कहा किस कद्र बुरी मेरी जानंशीनी की तुम ने मेरे बाद! क्या तुम ने अपने परवरदिगार के हुक्म से जल्दी की? और उस (मूसा अ) ने तख्तीयाँ डाल दी और सर (वालों से) पकड़ा अपने भाई का और उसे अपनी तरफ़ खींचने लगा, वह (हारून अ) बोला ऐ मेरे माँ जाए! लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और करीब था कि मुझे क़त्ल कर डाले, पस मुझ पर दुश्मनों को खुश न कर और मुझे ज़ालिम लोगों के साथ शामिल न कर। (150)

उस ने (मूसा अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत में दाख़िल कर, और तू सब से ज़ियादा रहम करने वाला है। (151)

वेशक जिन लोगों ने बछड़े को (माबूद) बना लिया, अन्नकरीब उन्हें उन के रब का गुज़ब पहुँचेगा और ज़िल्लत दुनिया की ज़िन्दगी में, और इसी तरह हम बुहतान बान्धने वालों को सज़ा देते हैं। (152)

और जिन लोगों ने बुरे अमल किए फिर उस के बाद तौबा की और वह ईमान ले आए, वेशक तुम्हारा रब उस (तौबा) के बाद बख़्शने वाला, मेहरबान है। (153)

और जब मूसा (अ) का गुस्सा फ़रू हुआ, उस ने तख्तीयों को उठा लिया, और उन की तहरीर में हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं। (154)

और मूसा (अ) ने अपनी कौम से हमारे वादे के लिए सत्तर (70) आदमी चुन लिए, फिर जब उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया, उस ने कहा ऐ मेरे रब! तू अगर चाहता तो इस से पहले इन्हें और मुझे हलाक कर देता, क्या तू हमें उस पर हलाक कर देगा जो हम में से बेवकूफ़ों ने किया! यह नहीं मगर (सिर्फ़) तेरी आजमाइश है, तू उस से जिस को चाहे गुमराह करे और तू जिस को चाहे हिदायत दे, तू हमारा कारसाज़ है, सो हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा और तू बहतरीन बख़्शने वाला है। (155)

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا							
और जब	मूसा (अ)	अपनी कौम की तरफ़	गुस्से में भरा हुआ	रंजीदा	उस ने कहा	क्या बुरी	
خَلَفْتُمُونِي مِنْ بَعْدِي ۚ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَأَلْقَى الْأُتُوحَ							
तुम ने मेरी जानंशीनी की	मेरे बाद	क्या जल्दी की तुम ने	हुक्म	अपना परवरदिगार	डाल दें	तख्तीयाँ	
وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۚ قَالَ ابْنَ أُمِّ إِنَّ الْقَوْمَ							
और पकड़ा	सर	अपना भाई	उसे खींचने लगा	अपनी तरफ़	वह बोला	ऐ मेरे माँ जाए	वेशक
اسْتَضَعْفُونِي ۖ وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ							
मुझे कमज़ोर समझा मुझे	और करीब थे	मुझे क़त्ल कर डालें	पस खुश न कर	मुझ पर	दुश्मन (जमा)		
وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٥٠﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي							
और मुझे न बना (शामिल न कर)	साथ	कौम (लोग)	ज़ालिम (जमा)	150	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	मुझे बख़्श दे
وَادْخُلْنَا فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٥١﴾ إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا							
और हमें दाख़िल कर	अपनी रहमत में	और तू	सब से ज़ियादा रहम करने वाला	151	वेशक	वह लोग जो	उन्होंने ने बना लिया
الْعِجْلَ سَيْنَالَهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا							
बछड़ा	अन्नकरीब उन्हें पहुँचेगा	गुज़ब	उन के रब का	और ज़िल्लत	में	ज़िन्दगी	दुनिया
وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾ وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا							
और इसी तरह	हम सज़ा देते हैं	बुहतान बान्धने वाले	152	और जिन लोगों ने	अमल किए	बुरे	फिर
مِّنْ بَعْدِهَا وَأَمْنُوا ۚ إِنَّ رَبَّكَ مِنَ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥٣﴾							
उस के बाद	और ईमान लाए	वेशक	तुम्हारा रब	उस के बाद	बख़्शने वाला	मेहरबान	153
وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبَ أَخَذَ الْأُتُوحَ ۖ وَفِي نُسْخَتِهَا							
और जब	ठहरा (फ़रू हुआ)	से - का	मूसा (अ)	गुस्सा	लिया - उठा लिया	तख्तीयाँ	और उन की तहरीर में
هُدًى وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ﴿١٥٤﴾ وَاخْتَارَ مُوسَىٰ							
हिदायत	और रहमत	उन लोगों के लिए जो	वह	अपने रब से	डरते हैं	154	और चुन लिए
قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ							
अपनी कौम	सत्तर (70)	मर्द	हमारे वादे के वक़्त के लिए	फिर जब	उन्हें पकड़ा (आ लिया)	ज़लज़ला	उस ने कहा
لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّاي ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ							
अगर तू चाहता	इन्हें हलाक कर देता	इस से पहले	और मुझे	क्या तू हमें हलाक करेगा	उस पर जो	किया	बेवकूफ़ (जमा)
مِّنَّا ۚ إِنَّ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ ۖ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن							
हम में से	यह नहीं	मगर	तेरी आजमाइश	तू गुमराह करे	उस से	जिस	और तू हिदायत दे
تَشَاءُ ۖ أَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ﴿١٥٥﴾							
तू चाहे	तू	हमारा कारसाज़	सो हमें बख़्श दे	और हम पर रहम फ़रमा	और तू	बहतरीन	बख़्शने वाला

١٨
ع
٨

وَكَتُبْنَا لَنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا							
वैशक हम	और आखिरत में	भलाई	दुनिया	इस	में	हमारे लिए	और लिख दे
هُدًى إِلَيْكَ ۖ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۚ وَرَحْمَتِي							
और मेरी रहमत	मैं चाहूँ	जिस	उस को	मैं पहुँचाता हूँ (हूँ)	अपना अज़ाब	उस ने फ़रमाया	हम ने रज़ूअ किया
وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَاكُتُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ							
और देते हैं	डरते हैं	उन के लिए जो	सो मैं अनकरीब	वह लिख दूँगा	हर शौ	वसीअ है	
الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٦﴾ الَّذِينَ							
वह लोग जो	156	ईमान रखते हैं	हमारी आयात पर	वह	और वह जो	ज़कात	
يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا							
लिखा हुआ	उसे पाते हैं	वह जो - जिस	उम्मी	नबी	रसूल	पैरवी करते हैं	
عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ							
भलाई	वह हुक्म देता है उन्हें	और इंजील	तौरेत	में	अपने पास		
وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمْ							
उन पर	और हराम करता है	पाकीज़ा चीज़ें	उन के लिए	और हलाल करता है	बुराई	से	और रोकता है उन्हें
الْخَبِيثَاتِ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ							
थे	जो	और तौक	उन के बोझ	उन से	और उतारता है	नापाक चीज़ें	
عَلَيْهِمْ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ							
और उस की मदद की	और उस की रफ़ाक़त (हिमायत) की	ईमान लाए उस पर	पस जो लोग	उन पर			
وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٥٧﴾							
157	फ़लाह पाने वाले	वह	वही लोग	उस के साथ	उतारा गया	जो	नूर और पैरवी की
قُلْ يَٰأَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا							
सब	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल	वैशक मैं	लोगो	ऐ	कह दें	
إِلَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي							
ज़िन्दा करता है	वह	मगर	माबूद नहीं	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बादशाहत	उस की वह जो
وَيُمِيتُ ۚ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي							
वह जो	उम्मी	नबी	और उस का रसूल	अल्लाह पर	सो तुम ईमान लाओ	और मारता है	
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٨﴾							
158	हिदायत पाओ	ताकि तुम	और उस की पैरवी करो	और उस के सब कलाम	अल्लाह पर	ईमान रखता है	
وَمِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٩﴾							
159	इन्साफ़ करते हैं	और उस के मुताबिक़	हक़ की	हिदायत देता है	एक गिरोह	कौमे मूसा	और से (में)

और हमारे लिए इस दुनिया में और आखिरत में भलाई लिख दे, वैशक हम ने तेरी तरफ़ रज़ूअ किया, उस ने फ़रमाया मैं अपना अज़ाब जिस को चाहूँ दूँ, और मेरी रहमत हर शौ पर वसीअ है, सो मैं वह अनकरीब लिख दूँगा उन के लिए जो डरते हैं और ज़कात देते हैं और हमारी आयात पर ईमान रखते हैं। (156)

वह लोग जो पैरवी करते हैं (हमारे) रसूल (मुहम्मद स) नबी उम्मी की, जिसे वह लिखा हुआ पाते हैं अपने पास तौरेत में और इंजील में, वह उन्हें हुक्म देता है भलाई का और उन्हें रोकता है बुराई से, और उन के लिए हलाल करता है पाकीज़ा चीज़ें और उन पर हराम करता है नापाक चीज़ें, और उतारता है उन (के सरो) से बोझ और (उन की गर्दनो से) तौक जो उन पर थे, पस जो लोग उस पर ईमान लाए और उन्होंने ने उस की हिमायत की और उस की मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उस के साथ उतारा गया है, वही फ़लाह पाने वाले हैं। (157)

आप कह दें, ऐ लोगो! वैशक मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, वह जिस की बादशाहत है आस्मानों पर और ज़मीन में, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दा करता है और मारता है, सो तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल नबी उम्मी (मुहम्मद स) पर, वह जो ईमान रखता है अल्लाह पर और उस के सब कलामों पर, और उस की पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ। (158)

और मूसा (अ) की कौम में एक गिरोह है जो हक़ की हिदायत देता है और वह उसी के मुताबिक़ इन्साफ़ करते हैं, (159)

और हम ने उन्हें जुदा कर दिया (तक़सीम कर दिया) बारह कबीले (गिरोह गिरोह की सूरत में) और जब उस की कौम ने उस से पानी मांगा, हम ने मूसा की तरफ़ वहि भेजी कि मारो अपनी लाठी उस पत्थर पर, तो उस से बारह चश्मे फूट निकले, हर शख्स ने पहचान लिया अपना घाट, और हम ने उन पर अब्र का साया किया और उन पर मन्न (एक किस्म का गोन्द) और सलवा (बटेर जैसा परिन्दा) उतारा, तुम खाओ पाकीज़ा चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें दी और उन्होंने ने हमारा कुछ न बिगाड़ा लेकिन वह अपनी जानों पर जुल्म करते थे। (160)

और जब उन से कहा गया तुम इस शहर में रहो और इस से खाओ जैसे तुम चाहो और “हित्तुन” (वख़श दे) कहो और दरवाज़े (में) सिज्दा करते हुए दाक़िल हो, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं वख़श देंगे, हम अ़नक़रीब नेकी करने वालों को ज़ियादा देंगे। (161)

पस बदल डाला उन में से ज़ालिमों ने उस के सिवा लफ़्ज़ जो उन्हें कहा गया था, सो हम ने उन पर अज़ाब भेजा आस्मान से क्योंकि वह जुल्म करते थे। (162)

और उन से उस बस्ती के बारे में पूछो जो दर्या के किनारे पर थी, जब वह “सव्त” (हफ़ता) के हुक्म के बारे में हद से बढ़ने लगे, उन के सव्त (हफ़ते) के दिन मछलियां उन के सामने आजाती और जिस दिन “सव्त” न होता न आती, इसी तरह हम उन्हें आज़माते क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। (163)

وَقَطَّعْنَهُمْ اِثْنَتَى عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمًّا وَاَوْحَيْنَا اِلَى							
तरफ़	और वहि भेजी हम ने	गिरोह गिरोह	बाप दादा की औलाद (कबीले)	बारह (12)		और हम ने जुदा कर दिया उन्हें	
مُوسَى اِذْ اسْتَسْقٰهُ قَوْمُهٗ اِنْ اَضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ							
पत्थर	अपनी लाठी	मारो	कि	उसकी कौम	उस ने पानी मांगा	जब	मूसा
فَانْبَجَسَتْ مِنْهُ اِثْنَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ							
शख्स	हर	जान लिया (पहचान लिया)	चश्मे	बारह (12)		उस से	तो फूट निकले
مَّشْرَبَهُمْ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ							
उन पर	और हम ने उतारा	अब्र	उन पर	और हम ने साया किया	अपना घाट		
الْمَنْ وَالسَّلٰوَى كُلُّوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ							
जो हम ने तुम्हें दी		पाकीज़ा	से	तुम खाओ	और सलवा	मन्न	
وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلَكِنْ كَانُوْا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَاِذْ قَبِلَ							
कहा गया	और जब	160	जुल्म करते	अपनी जानों पर	वह थे	और लेकिन	और हमारा कुछ न बिगाड़ा उन्होंने ने
لَهُمْ اَسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ							
जैसे	इस से	और खाओ	शहर	इस	तुम रहो	उन से	
شِئْتُمْ وَقُولُوْا حِطَّةً وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ							
हम वख़श देंगे तुम्हें	सिज्दा करते हुए	दरवाज़ा	और दाख़िल हो	हित्ता (वख़श दे)	और कहो	तुम चाहो	
خَطِيْئَتِكُمْ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٦١﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ							
वह जिन्हों ने	पस बदल डाला	161	नेकी करने वाले	अनक़रीब हम ज़ियादा देंगे	तुम्हारी ख़ताएं		
ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ							
उन्हें	कहा गया	वह जो	सिवा	लफ़्ज़	उन से	जुल्म किया (ज़ालिम)	
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْجًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا							
क्योंकि	आस्मान	से	अज़ाब	उन पर	सो हम ने भेजा		
كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٢﴾ وَسَلَّلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ							
थी	वह जो कि	बस्ती	से (बारे में)	और पूछो उन से	162	वह जुल्म करते थे	
حَاضِرَةَ الْبَحْرِ اِذْ يَّعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ							
उन के सामने आजाती	जब	हफ़ते में	हद से बढ़ने लगे	जब	दर्या	सामने (किनारे)	
حِيَتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ							
सव्त न होता		और जिस दिन	खुल्लम खुल्ला (सामने)	उन का सव्त	दिन	मछलियां उन की	
لَا تَاْتِيْهِمْ كَذٰلِكَ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾							
163	वह नाफ़रमानी करते थे		क्योंकि	हम उन्हें आज़माते थे	इसी तरह	वह न आती थी	

ع ٢٠
ع ١٠

وقفت
ع ١٢

عند المتأخرين ١٢
معانقة ٦
النفص

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۚ اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ								
या	उन्हें हलाक करने वाला	अल्लाह	ऐसी कौम	क्यों नसीहत करते हो	उन में से	एक गिरोह	कहा	और जब
مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۚ قَالُوا مَعَذَرَةٌ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ								
और शायद कि वह	तुम्हारा रब	तरफ़	माज़िरत	वह बोले	सख्त	अज़ाब	उन्हें अज़ाब देने वाला	
يَتَّقُونَ ﴿١٦٤﴾ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ								
मना करते थे	वह जो कि	हम ने बचा लिया	उन्हें समझाई गई थी	जो	वह भूल गए	फिर जब	164	डरें
عَنِ السُّوءِ ۖ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَّيْسٍ بِمَا								
क्योंकि	बुरा	अज़ाब में	जुल्म किया	वह लोग जिन्होंने ने	और हम ने पकड़ लिया	बुराई से		
كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٥﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا								
उन को हो जाओ	हम ने हुक्म दिया	उस से	जिस से मना किए गए थे	से	सरकशी करने लगे	फिर जब	165	नाफरमानी करते थे
قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٦٦﴾ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَىٰ								
तक	उन पर	अलबत्ता ज़रूर भेजता रहेगा	तुम्हारा रब	खबर दी	और जब	166	ज़लील ओ ख़ार	बन्दर
يَوْمِ الْقِيَمَةِ ۚ مَنْ يَسْؤُمُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ								
तुम्हारा रब	वेशक	बुरा अज़ाब	तकलीफ़ दे उन्हें		जो	रोज़े कियामत		
لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۚ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٦٧﴾ وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ۚ								
गिरोह दर गिरोह	ज़मीन में	और परागन्दा कर दिया हम ने उन्हें	167	मेहरबान	बख़्शने वाला	और वेशक वह	जल्द अज़ाब देने वाला	
مِنْهُمْ الصّٰلِحُونَ وَمِنْهُمْ دُونَ ذٰلِكَ ۚ وَبَلَّوْنَاهُمْ بِالْحَسَنَاتِ								
अच्छाइयों में		और आजमाया हम ने उन्हें	उस	सिवा	और उन से	नेकोकार	उन से	
وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٦٨﴾ فَخَلَفَ مِنْ بَعدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا								
वह वारिस हुए	नाख़लफ़	उन के बाद	पीछे आए	168	रूजूअ करें	ताकि वह	और बुराइयों में	
الْكِتٰبَ يَأْخُذُونَ عَرَضَ هٰذَا الْاٰدٰى وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ								
अब हमें बख़्श दिया जाएगा		और कहते हैं	इस अदना ज़िन्दगी		मताअ (असबाब)	वह लेते हैं	किताब	
وَإِنْ يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهُ يَأْخُذُوهُ ۚ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيثَاقُ								
अहद	उन पर (उन से)	क्या नहीं लिया गया	उस को ले लें	उस जैसा	माल ओ असबाब	आए उन के पास	और अगर	
الْكِتٰبِ اَنْ لَا يَقُولُوا عَلَىٰ اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۚ وَدَرَسُوا مَا فِيْهِ ۚ وَالْاٰدٰى								
और घर	जो उस में	और उन्होंने ने पढ़ा	सच	मगर	अल्लाह पर (के बारे में)	वह न कहें	कि	किताब
الْاٰخِرَةُ ۚ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۚ اَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦٩﴾ وَالَّذِينَ يُمَسِّكُونَ								
मज़बूत पकड़े हुए हैं	और जो लोग	169	क्या तुम समझते नहीं	परहेज़गार	उन के लिए जो	बेहतर	आखिरत	
بِالْكِتٰبِ ۚ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّا لَا نُضِيعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٧٠﴾								
170	नेकोकार (जमा)	अजर	ज़ाया नहीं करते	वेशक हम	नमाज़	और काइम रखते हैं	किताब को	

और जब उन में से एक गिरोह ने कहा तुम ऐसी कौम को क्यों नसीहत करते हो जिसे अल्लाह हलाक करने वाला है या अज़ाब देने वाला है सख्त अज़ाब, वह बोले तुम्हारे रब के पास माज़िरत पेश करने के लिए और (इस उम्मीद पर) कि शायद वह डरें। (164)

फिर जब वह भूल गए जो उन्हें समझाई गई थी, जो बुराई से रोकते थे हम ने उन्हें बचा लिया, और जिन लोगों ने जुल्म किया हम ने उन्हें बुरे अज़ाब में पकड़ लिया क्योंकि वह नाफरमानी करते थे। (165)

फिर जब वह उस से सरकशी करने लगे जिस से मना किए गए थे तो हम ने हुक्म दिया उन को ज़लील ओ खार बन्दर हो जाओ। (166)

और जब तुम्हारे रब ने खबर दी कि अलबत्ता वह इन (यहूद) पर ज़रूर भेजता रहेगा रोज़े कियामत तक (ऐसे अफ़राद) जो उन्हें बुरे अज़ाब से तक्लीफ़ दें, वेशक तुम्हारा रब सज़ा देने में तेज़ है, और वेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (167)

फिर हम ने उन्हें ज़मीन में परागन्दा कर दिया गिरोह दर गिरोह, उन में से (कुछ) नेकोकार हैं और उन में से (कुछ) उस के सिवा हैं, और हम ने उन्हें आजमाया अच्छाइयों और बुराइयों में ताकि वह रुजूअ करें। (168)

पीछे आए उन के बाद नाख़लफ़ जो किताब के वारिस हुए, वह इस अदना ज़िन्दगी का असबाब लेते हैं और कहते हैं अब हमें बख़्श दिया जाएगा, और अगर उन के पास उस जैसा माल ओ असबाब (फिर) आए तो उस को ले लें, क्या नहीं लिया गया उन से अहद (जो) किताब (तौरेत) में है कि वह अल्लाह के बारे में न कहे मगर सच और उन्होंने ने पढ़ा है जो उस (तौरेत) में है, और आखिरत का घर बेहतर है उन के लिए जो परहेज़गार हैं, क्या तुम समझते नहीं? (169)

और जो लोग मज़बूत पकड़ते हैं किताब को और नमाज़ काइम करते हैं, वेशक हम नेकोकारों का अजर ज़ाया नहीं करते। (170)

और (याद करो) जब हम ने उठाया पहाड़ उन के ऊपर गोया कि वह साइवान है और उन्होंने ने गुमान किया गोया कि वह उन के ऊपर गिरने वाला है, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो और जो उस में है याद करो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (174)

और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने निकाली आदम की पुश्त से उन की औलाद, और उन्हें उन की जानों पर (उन पर) गवाह बनाया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? वह बोले क्यों नहीं! हम गवाह हैं, कभी तुम क्रियामत के दिन कहो वेशक हम इस से ग़ाफ़िल (बेख़बर) थे। (172)

या तुम कहो शिर्क तो इस से क़व्ल हमारे बाप दादा ने किया और उन के बाद हम (उन की) औलाद हुए, सो क्या तू हमें हलाक करता है उस पर जो ग़लत कारों ने किया। (173)

और इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं ताकि वह रुजूअ करें (लौट आएँ)। (174)

और उन्हें उस शख्स की खबर सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दी तो वह उस से साफ़ निकल गया तो शैतान उस के पीछे लग गया, सो वह हो गया गुमराहों में से। (175)

और अगर हम चाहते तो उसे उन (आयतों) के ज़रीए बुलन्द करते, लेकिन वह ज़मीन की तरफ़ माइल हो गया, और उस ने पैरवी की अपनी खाहिशात की, तो उस का हाल कुत्ते जैसा है, अगर तू उस पर हमला करे तो हांपे या उसे छोड़ दे तो (फिर भी) हांपे, यह मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया, सो (यह) अहवाल बयान कर दो ताकि वह ग़ौर करें। (176)

बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया और अपनी जानों पर जुल्म करते थे। (177)

अल्लाह जिस को हिदायत दे वही हिदायत याफ़ता है, और जिस को गुमराह कर दे सो वही लोग घाटा पाने वाले हैं। (178)

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ ؕ								
और उन के ऊपर	गोया कि वह	साइवान	और उन्होंने ने गुमान किया	कि वह	गिरने वाला	उन पर	और जब	उठाया हम ने
خُذُوا مَا آتَيْنَكُم بِقُوَّةٍ وَّادْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾								
तुम पकड़ो	जो	दिया हम ने तुम्हें	मज़बूती से	और याद करो	जो उस में	ताकि तुम	परहेज़गार बन जाओ	171
وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ								
और जब	लिया (निकाली)	तुम्हारा रब	से (की)	वनी आदम	से	उन की पुश्त	उन की औलाद	
وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ ۖ أَلَسَتْ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ ۖ شَهِدْنَا ۚ أَن تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ ﴿١٧٢﴾ أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّن بَعْدِهِمْ ۖ فَتُهلِكُنَا								
और गवाह बनाया उन को	पर	उन की जानें	क्या नहीं हूँ मैं	तुम्हारा रब	वह बोले	हां, क्यों नहीं	हम गवाह है	कि (कभी)
تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ ﴿١٧٢﴾ أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّن بَعْدِهِمْ ۖ فَتُهلِكُنَا								
तुम कहो	क्रियामत के दिन	वेशक हम	थे	से	उस	ग़ाफ़िल (जमा)	172	या तुम कहो
بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾ وَكَذَلِكَ نَفْصِلُ الْآيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٧٤﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ الْكِتَابَ فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿١٧٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ ۖ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ الْكَلْبِ إِن تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثُ ۚ								
शिर्क किया	हमारे बाप दादा	उस से क़व्ल	और थे हम	औलाद	उन के बाद	हलाक करता है	सो क्या तू हमें	
ذَلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧٦﴾ سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا ۖ وَأَنفُسُهُمْ كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٧٧﴾								
यह	मिसाल	लोग	वह जो कि	उन्होंने ने झुटलाया	हमारी आयात	पस बयान कर दो	यह	
فَهُوَ الْمُهْتَدِىٌّ وَمَنْ يُضِلِلْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٧٨﴾								
तो वही	हिदायत याफ़ता	और जिस	गुमराह कर दे	सो वही लोग	वह	घाटा पाने वाले	178	

ع ١١

عند المائدة ١٢

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ لَهُمْ قُلُوبٌ									
और हम ने पैदा किए	जहन्नम के लिए	बहुत से	से	जिन	और इन्सान	उन के	दिल		
لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ									
समझते नहीं	उन से	और उन के लिए	आँखें	नहीं देखते	उन से	और उन के लिए	कान	नहीं सुनते	
بِهَا أُولَئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ (179)									
उन से	यही लोग	चौपायों के मानिंद	बल्कि	वह	बदतरीन गुमराह	यही लोग	वह	गाफ़िल (जमा)	179
وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ									
और अल्लाह के लिए नाम (जमा)	अच्छे	पस उस को पुकारो	उन से	और छोड़ दो	वह लोग जो	कज रवी करते हैं			
فِي أَسْمَائِهِ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (180) وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةً									
मैं	उस के नाम	अनकरीब वह बदला पाएंगे	जो	वह करते थे	180	और से - जो	हम ने पैदा किया	एक उम्मत (गिरोह)	
يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ (181) وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا									
वह बतलाते हैं	हक के साथ (ठीक)	और उस के मुताबिक	फैसला करते हैं	181	और वह लोग जो	उन्होंने झुटलाया	हमारी आयात को		
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ (182) وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي									
आहिस्ता आहिस्ता उन को पकड़ेंगे	इस तरह	वह न जानेंगे (ख़बर न होगी)	182	और मैं ढील दूँगा	उन के लिए	वेशक	मेरी खुफ़िया तदबीर		
مَتِينٌ (183) أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جَنَّةٍ إِن هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ									
पुख्ता	183	क्या वह ग़ौर नहीं करते	नहीं उन के साहिब को	से	जुनून	नहीं	वह मगर	डराने वाले	
مُبِينٌ (184) أَوَلَمْ يَنْظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ									
साफ़	184	क्या वह नहीं देखते	मैं	बादशाहत	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	और जो पैदा किया		
اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ فَبَآئٍ									
अल्लाह	कोई चीज़	और यह कि	शायद	कि	हो	क़रीब आगई हो	उनकी अजल (मौत)	तो किस	
حَدِيثٌ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ (185) مَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ									
बात	इस के बाद	वह ईमान लाएंगे	185	जिस	गुमराह करे अल्लाह	तो नहीं	हिदायत देने वाला	उस को	
وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ (186) يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا									
वह छोड़ देता है उन्हें	मैं	उन की सरकशी	वह करते हैं	186	वह आप (स) से पूछते हैं	से (वारे में)	घड़ी (क़ियामत)	कब है	उस का काइम होना
قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي لَا يُجَلِّيهَا لِوَقَّتِهَا إِلَّا هُوَ ثَقُلَتْ									
कह दें	सिर्फ	उस का इल्म	पास	मेरा रब	उस को ज़ाहिर न करेगा	उस के वक़्त पर	सिवा (अल्लाह)	वह भारी है	
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَا تَأْتِيكُمُ إِلَّا بَعَثَةٌ يَسْأَلُونَكَ كَانَتْ حَفِيٍّ									
मैं	आस्मानों	और ज़मीन	न	आएगी तुम पर	मगर	अचानक	आप (स) से पूछते हैं	गोया कि आप	मुतलाशी
عَنْهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (187)									
उस के	कह दें	सिर्फ	उस का इल्म	अल्लाह के पास	और लेकिन	अक्सर	लोग	नहीं जानते	187

और हम ने जहन्नम के लिए बहुत से जिन और इन्सान पैदा किए, उन के दिल हैं उन से समझते नहीं, और उन की आँखें हैं उन से वह देखते नहीं, और उन के कान हैं वह सुनते नहीं उन से, यही लोग चौपायों की मानिंद हैं बल्कि (उन से भी) बदतरीन गुमराह हैं, यही लोग ग़ाफ़िल हैं। (179)

और अल्लाह के लिए हैं अच्छे नाम, सो तुम उस को उन (ही) से पुकारो, और उन लोगों को छोड़ दो जो उस के नामों में कज रवी करते हैं, जो वह करते थे अनक़रीब वह उस का बदला पाएंगे। (180)

और जो लोग हम ने पैदा किए (उन में) एक गिरोह है जो ठीक राह बतलाते हैं और उस के मुताबिक़ फैसला करते हैं। (181)

और जिन लोगों ने हमारी आयातों को झुटलाया, आहिस्ता आहिस्ता हम उन को पकड़ेंगे कि उन्हें ख़बर भी न होगी। (182)

और मैं उन के लिए ढील दूँगा, वेशक़ मेरी खुफ़िया तदबीर पुख्ता है। (183)

क्या वह ग़ौर नहीं करते? कि उन के साहिब (महुम्मद स) को कुछ जुनून नहीं, वह नहीं मगर साफ़ साफ़ डराने वाले। (184)

क्या वह नहीं देखते? बादशाहत आस्मानों और ज़मीन की और जो अल्लाह ने कोई चीज़ (भी) पैदा की है, और यह कि शायद क़रीब आगई हो उन की अजल (मौत की घड़ी), तो इस के बाद किस बात पर वह ईमान लाएंगे? (185)

जिस को अल्लाह गुमराह करे तो कोई हिदायत देने वाला नहीं उस को। और वह उन्हें उन की सरकशी में बहकते छोड़ देता है। (186)

वह आप (स) से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि कब है उस के काइम होने (का वक़्त)? आप (स) कह दें उस का इल्म सिर्फ़ मेरे रब के पास है, उस को उस के वक़्त पर अल्लाह के सिवा कोई ज़ाहिर न करेगा। भारी है आस्मानों और ज़मीन में, और तुम पर न आएगी (वाक़े होगी) मगर अचानक, आप (स) से (यूँ) पूछते हैं गोया कि आप (स) उस के मुतलाशी हैं, आप (स) कह दें: इस का इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (187)

आप (स) कह दें: मैं मालिक नहीं अपनी ज़ात के लिए नफ़ा का न नुक़सान का मगर जो अल्लाह चाहे, और अगर मैं ग़ैब जानता होता तो मैं बहुत भलाई जमा कर लेता, और मुझे कोई बुराई न पहुँचती, मैं बस डराने वाला खुशख़बरी सुनाने वाला हूँ उन लोगों के लिए (जो) ईमान रखते हैं। (188)

वही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, उस से बनाया उस का जोड़ा ताकि उस के पास सुकून हासिल करे, फिर जब मर्द ने उसे ढांप लिया तो उसे हलका सा हमल रहा, फिर वह उस को लिए फिरी, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने अपने रब अल्लाह को पुकारा, अगर तू ने हमें सालेह बच्चा दिया तो हम ज़रूर तेरे शुक्र करने वालों में से होंगे। (189)

फिर जब अल्लाह ने उन्हें सालेह बच्चा दिया तो जो अल्लाह ने उन्हें दिया था उन्होंने ने उस में शरीक ठहराए, सो अल्लाह उस से बरतर है जो वह शरीक ठहराते हैं। (190)

क्या वह उन्हें शरीक ठहराते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह पैदा किए जाते हैं (ख़ालिक नहीं, मख़लूक हैं)। (191)

और वह उन की मदद की कुदरत नहीं रखते और न खुद अपनी मदद कर सकते हैं। (192)

और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वह तुम्हारी पैरवी न करें, तुम्हारे लिए बराबर है ख़ाह तुम उन्हें बुलाओ या ख़ामोश रहो। (193)

वेशक तुम जिन्हें पुकारते हो अल्लाह के सिवा, वह तुम्हारे जैसे बन्दे हैं, फिर उन्हें पुकारो तो चाहिए था कि वह तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो। (194)

क्या उन के पाऊँ हैं जिन से वह चलते हैं, या उन के हाथ हैं जिन से वह पकड़ते हैं, या उन की आँखें हैं जिन से वह देखते हैं, या उन के कान हैं जिन से वह सुनते हैं, कह दें, पुकारो अपने शरीकों को, फिर मुझ पर दाओ चलो, पस मुझे मोहलत न दो। (195)

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسْنِيَ السُّوءُ ۚ إِنَّ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ (١٨٨) هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ فَلَمَّا أَثْقَلَتْ دَعَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنُكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ (١٨٩) فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا فَتَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ (١٩٠) أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ (١٩١) وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنْفُسُهُمْ يَنْصُرُونَ (١٩٢) وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ (١٩٣) إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَلُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ (١٩٤) أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا قُلِ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُوا فَلَا تُنْظَرُونَ (١٩٥)									
और अगर	अल्लाह चाहे	जो	मगर	नुक़सान	और न	नफ़ा	अपनी ज़ात के लिए	मैं मालिक नहीं	कह दें
पहुँचती मुझे	और न	बहुत भलाई	से	मैं अलबत्ता जमा कर लेता	ग़ैब	जानता	मैं होता		
जो - जिस	वह	188	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	और खुशख़बरी सुनाने वाला	डराने वाला	मगर (सिर्फ)	मैं	कोई बुराई
उस की तरफ़ (पास)	ताकि वह सुकून हासिल करे	उस का जोड़ा	उस से	और बनाया	एक	जान	से	पैदा किया तुम्हें	
बोझल हो गई	फिर जब	उस के साथ (उसको)	फिर वह लिए फिरी	हलका सा	हमल	उसे हमल रहा	मर्द ने उस को ढांप लिया	फिर जब	
189	शुक्र करने वाले	से	हम ज़रूर होंगे	सालेह	तू ने हमें दिया	अगर	दोनों का (अपना) रब	दोनों ने पुकारा अल्लाह को	
सो अल्लाह बरतर	उन्हें दिया	उस में जो	शरीक	उस के	उन दोनों ने ठहराए	सालेह बच्चा	उस ने दिया उन्हें	फिर जब	
191	पैदा किए जाते हैं	और वह	कुछ भी	नहीं पैदा करते	जो	क्या वह शरीक ठहराते हैं	190	वह शरीक करते हैं	उस से जो
और अगर	192	मदद करते हैं	खुद अपनी	और न	मदद	उन की	वह कुदरत नहीं रखते		
खाह तुम उन्हें बुलाओ	तुम पर (तुम्हारे लिए)	बराबर	न पैरवी करें तुम्हारी	हिदायत	तरफ़	तुम उन्हें बुलाओ			
सिवाए अल्लाह	से	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें	वेशक	193	ख़ामोश रहो	या तुम		
तुम हो	अगर	तुम्हें	फिर चाहिए कि वह जवाब दें	पस पुकारो उन्हें	तुम्हारे जैसे	बन्दे			
वह पकड़ते हैं	उन के हाथ	या	उन से	वह चलते हैं	क्या उन के पाऊँ	194	सच्चे		
सुनते हैं	कान	या उन के	उन से	देखते हैं	आँखें	उन की	या	उन से	
195	पस न दो मुझे मोहलत	मुझ पर दाओ चलो	फिर	अपने शरीक	पुकारो	कह दें	उन से		

عند التّأخّر ١٣
معاينة ٨
١٣

إِنَّ وَلِيَ اللَّهِ الَّذِي نَزَلَ الْكِتَابُ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١٩٦﴾									
वेशक	मेरा कारसाज़	अल्लाह	वह जिस	नाज़िल कि	किताब	और वह	हिमायत करता है	नेक बन्दे	196
وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسُهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿١٩٧﴾ وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَسْمَعُوا ۖ									
और जो लोग	पुकारते हैं	उस के सिवा	नहीं	कुदरत रखते वह	तुम्हारी मदद	और न			
खुद अपनी	वह मदद करें	197	और अगर	तुम पुकारो उन्हें	तरफ़	हिदायत	न सुनें वह		
وَتَرْبُهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٨﴾ خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ									
और तू उन्हें देखता है	वह तकते हैं	तेरी तरफ़	हालाकि	नहीं देखते हैं	198	पकड़ें (करें)	दरगुज़र	और हुक्म दें	
بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿١٩٩﴾ وَإِنَّمَا يَنْزِعُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢००﴾ إِنَّ الَّذِينَ									
भलाई का	और मुँह फेर लें	से	जाहिल (जमा)	199	और अगर	तुझे उभारे	से		
शैतान	कोई छेड़	तो पनाह में आजा	अल्लाह की	वेशक वह	सुनने वाला	जानने वाला	200	वेशक	जो लोग
اتَّقُوا إِذَا مَسَّهُمْ طَافٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ ﴿٢०१﴾ وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿٢०२﴾									
डरते हैं	जब	उन्हें छूता है (पहुँचता है)	कोई गुज़रने वाला (वस्वसा)	से	शैतान	वह याद करते हैं	तो फौरन	वह	
देख लेते हैं	201	और उन के भाई	वह उन्हें खींचते हैं	में	गुमराही	फिर	वह कमी नहीं करते	202	
وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بَايَةٌ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُؤْحَىٰ إِلَيَّ مِنْ رَبِّي هَذَا بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى									
और जब	तुम न लाओ उन के पास	कोई आयत	कहते हैं	क्यों नहीं	उसे घड़ लिया	कह दें	सिर्फ	मैं पैरवी करता हूँ	
وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢०३﴾ وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢०४﴾ وَاذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ									
और शाम	और न हो	से	मेरा रब	यह	सूझ की बातें	से	तुम्हारा रब	और हिदायत	
उस को	और चुप रहो	ताकि तुम पर	रहम किया जाए	204	और याद करो	अपना रब	में	अपना दिल	
تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُؤُنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ ﴿٢०५﴾ إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ									
आजिज़ी से	और डरते हुए	और बग़ैर	बुलन्द	से	आवाज़	सुवह			
और शाम	और न हो	से	वेख़्बर (जमा)	205	वेशक	जो लोग	नज़्दीक	तेरा रब	
तक़ब्बुर नहीं करते	से	उस की इबादत	और उस की तसवीह करते हैं	और उसी को	सिज़्दा करते हैं	206			

वेशक मेरा कारसाज़ अल्लाह है, जिस ने किताब नाज़िल की और वह नेक बन्दों की हिमायत करता है। (196)

और उस (अल्लाह) के सिवा जिन को तुम पुकारते हो, वह कुदरत नहीं रखते तुम्हारी मदद की और न खुद अपनी मदद ही करने के क़ाबिल हैं। (197)

और अगर तुम उन्हें पुकारो हिदायत की तरफ़ तो वह (कुछ) न सुनें और तू उन्हें देखता है कि वह तेरी तरफ़ तकते हैं हालांकि वह (कुछ) नहीं देखते। (198)

आप (स) दरगुज़र करें और भलाई का हुक्म दें और जाहिलों से मुँह फेर लें। (199)

और अगर तुझे उभारे शैतान की तरफ़ से कोई छेड़ तो अल्लाह की पनाह में आजा, वेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (200)

वेशक जो लोग (अल्लाह से) डरते हैं जब उन्हें पहुँचता है शैतान (की तरफ़ से) कोई वस्वसा, वह (अल्लाह को) याद करते हैं तो वह फौरन (राहे सबाब) देख लेते हैं। (201)

और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींचते हैं, फिर वह कमी नहीं करते। (202)

और जब तुम उन के पास कोई आयत न लाओ तो वह कहते हैं:

तू क्यों नहीं (खुद) घड़ लेता, आप (स) कह दें मैं तो सिर्फ़ उस की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की तरफ़ से मेरी तरफ़ वहि की जाती है, यह (कुरआन) सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से, और हिदायत ओ रहमत उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (203)

और जब कुरआन पढ़ा जाए तो (पूरी तवज़ूह) से सुनो उस को और चुप रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (204)

और अपने रब को याद करो अपने दिल में आजिज़ी से और डरते हुए और बुलन्द आवाज़ के बग़ैर सुवह ओ शाम, और वेखवरों से न हो। (205)

वेशक जो लोग तेरे रब के नज़्दीक हैं, वह उस की इबादत से तकव्वुर नहीं करते और उस की तस्वीह करते हैं और उसी को सिज्दा करते हैं। (206)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

आप (स) से ग़नीमत के बारे में पूछते हैं, कह दें ग़नीमत अल्लाह और रसूल (स) के लिए है, पस अल्लाह से डरो और दुरुस्त करो आपस में (तअल्लुकात) और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करो अगर तुम मोमिन हो। (1)

दरहकीक़त मोमिन वह लोग हैं जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उन के दिल डर जाएं और उन पर (उन के सामने) उस की आयतें पढ़ी जाएं तो वह (आयात) उन का ईमान ज़ियादा करें, और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (2)

वह लोग जो नमाज़ काइम करते हैं और जो हम ने दिया उस में से खर्च करते हैं। (3)

यही लोग सच्चे मोमिन हैं, उन के लिए उन के रब के पास दरजे हैं और बख़्शिश और रिज़्क इज़्जत वाला। (4)

जैसा कि आप (स) को आप (स) के रब ने आप (स) के घर से हक़ (दुरुस्त तदवीर) के साथ निकाला, और वेशक़ अहले ईमान की एक जमाअत नाख़ुश थी। (5)

वह आप (स) से हक़ के मामले में झगड़ते थे जबकि वह ज़ाहिर हो चुका, गोया कि वह हाँके जा रहे हैं मौत की तरफ़, और वह (उसे) देख रहे हैं। (6)

और (याद करो) अल्लाह तुम्हें वादा देता था कि (अबू जहल और अबू सुफ़ियान के) दो गिरोहों में से एक तुम्हारे लिए और तुम चाहते थे कि (जिस में) कांटा न लगे तुम्हारे लिए हो, और अल्लाह चाहता था कि साबित कर दे हक़ अपने कलिमात से, और काफ़िरों की जड़ काट दे। (7)

ताकि हक़ को हक़ साबित कर दे और वातिल को वातिल, खाह मुज़्रिम नापसन्द करें। (8)

آيَاتُهَا ٧٥ ﴿٨﴾ سُورَةُ الْأَنْفَالِ ﴿١٠﴾ زُكُوعَاتُهَا									
रुकुआत 10			(8) सूरतुल अंफाल (गनाइम)				आयात 75		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ فَاتَّقُوا									
पस डरो	और रसूल	अल्लाह के लिए	गनीमत	कह दें	गनीमत	से (बारे में)	आप (स) से पूछते हैं		
اللَّهُ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنْ كُنْتُمْ									
तुम हो	अगर	और उस का रसूल	और अल्लाह की इताअत करो	आपस में	अपने तई	और दुरुस्त करो	अल्लाह		
مُؤْمِنِينَ ﴿١﴾ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ									
डर जाएं	ज़िक्र किया जाए अल्लाह का	जब	वह लोग	मोमिन (जमा)	दरहकीक़त	1	मोमिन (जमा)		
قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا									
ईमान	वह ज़ियादा करें	उस की आयात	उन पर	पढ़ी जाएं	और जब	उन के दिल			
وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٢﴾ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا									
और उस से जो	नमाज़	काइम करते हैं	वह लोग जो	2	भरोसा करते हैं	और वह अपने रब पर			
رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٣﴾ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ									
उन के लिए	सच्चे	मोमिन (जमा)	वह	यही लोग	3	वह खर्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया		
دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٤﴾ كَمَا									
जैसा कि	4	इज़्ज़त वाला	और रिज़्क	और बख्शिश	उन का रब	पास	दरजे		
أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ									
अहले ईमान	से (का)	एक जमाअत	और वेशक	हक के साथ	आप का घर	से	आप का रब	आप (स) को निकाला	
لَكَرِهُونَ ﴿٥﴾ يُجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ									
हांके जा रहे हैं	गोया कि वह	वह ज़ाहिर हो चुका	जबकि	वाद	हक	में	वह आप (स) से झगड़ते थे	5	नाखुश
إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٦﴾ وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى									
एक का	अल्लाह	तुम्हें वादा देता था	और जब	6	देख रहे हैं	और वह	मौत	तरफ़	
الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكََةِ									
बग़ैर कांटे वाला			कि	और चाहते थे	तुम्हारे लिए	कि वह	दो गिरोह		
تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُحَقِّقَ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ									
जड़	और काट दे	अपने कलिमात से	हक	साबित कर दे	कि	और चाहता था अल्लाह	तुम्हारे लिए	हो	
الْكَافِرِينَ ﴿٧﴾ لِيَحَقِّقَ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨﴾									
8	मुज़्रिम (जमा)	नापसन्द करें	खाह	वातिल	और वातिल साबित करदे	हक	ताकि हक साबित करदे	7	काफ़िर (जमा)

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَبَ لَكُمْ أَتَىٰ مُمِدَّتْكُمْ بِأَلْفٍ							
जब	तुम फर्याद करते थे	अपना रब	तो उस ने कुबूल करली	तुम्हारी	कि मैं	मदद करूँगा तुम्हारी	एक हज़ार
مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدَفِينَ ﴿٩﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ							
से	फरिश्ते	एक दूसरे के पीछे (लगातार)	9	और नहीं	अल्लाह ने बनाया उसे	मगर	खुशखबरी और ताकि मुत्तमइन हों
بِهِ قُلُوبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ							
उस से	तुम्हारे दिल	और नहीं	मदद	मगर	से	अल्लाह के पास	वेशक अल्लाह ग़ालिब
حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ							
हिक्मत वाला	10	जब	तुम्हें ढाँप लिया (तारी कर दी)	ऊँघ	तस्कीन	उस से	और उतारा उस ने तुम पर
مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ عَنْكُم رِجْزَ							
से	आस्मान	पानी	ताकि पाक कर दे तुम्हें	उस से	और दूर कर दे	तुम से	पलीदी (नापाकी)
الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ﴿١١﴾							
शैतान	और ताकि बान्ध दे (मज़बूत करदे)	पर	तुम्हारे दिल	और जमा दे	उस से	क़दम	11
إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَتَىٰ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا							
जब वहि भेजी	तेरा रब	तरफ़ (को)	फरिश्ते	कि मैं	तुम्हारे साथ	तुम सावित रखो	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)
سَالِقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ							
अनकरीब डाल दूँगा	में	दिल (जमा)	जिन लोगों ने	कुफ़ किया (काफ़िर)	रुअब	सो तुम ज़र्व लगाओ	ऊपर
الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ							
गर्दन	और ज़र्व लगाओ	उन से (उन की)	हर	पूर	12	यह इस लिए	कि वह
شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ							
मुख़ालिफ़ हुए	अल्लाह	और उस का रसूल	और जो	मुख़ालिफ़ होगा	अल्लाह	और उस का रसूल	तो वेशक
اللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذَلِكَم فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ							
अल्लाह	सख़्त	अज़ाब (मार)	13	तो तुम	पस चखो	और यकीनन	काफ़िरों के लिए
عَذَابِ النَّارِ ﴿١٤﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ الَّذِينَ							
अज़ाब	दोज़ख़	14	ऐ	जो लोग	ईमान लाए	जब	तुम्हारी मुडभेड़ हो उन लोगों से
كَفَرُوا زَحَفًا فَلَا تُولُوهُمْ الْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾ وَمَنْ يُولِهِمْ يَوْمَئِذٍ							
कुफ़ किया	(मैदाने जंग में) लड़ने को	तो उन से न फेरो	पीठ (जमा)	15	और जो कोई	उन से फेरे	उस दिन
دُبْرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ							
अपनी पीठ	सिवाए	घात लगाता हुआ	जंग के लिए	या जा मिलने को	तरफ़	अपनी जमाअत	पस वह लौटा
بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦﴾							
ग़ज़ब के साथ	से	अल्लाह	और उस का ठिकाना	जहन्नम	और बुरी	पलटने की जगह (ठिकाना)	16

(याद करो) जब तुम अपने रब से फर्याद करते थे तो उस ने तुम्हारी (दुआ) कुबूल कर ली कि मैं तुम्हारी मदद करूँगा एक हज़ार लगातार आने वाले फरिश्तों से। (9)

और अल्लाह ने उस को नहीं बनाया मगर खुशखबरी, और ताकि उस से मुत्तमइन हों तुम्हारे दिल, और मदद नहीं है मगर अल्लाह के पास से, वेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (10)

(याद करो) जब उस ने तुम पर ऊँघ तारी कर दी, यह उस (अल्लाह) की तरफ़ से तस्कीन (थी) और तुम पर आस्मान से पानी उतारा ताकि तुम्हें पाक कर दे उस से, और तुम से शैतान की डाली हुई नापाकी दूर कर दे, और ताकि तुम्हारे दिल मज़बूत कर दे, और उस से जमा दे (तुम्हारे) क़दम। (11)

(याद करो) जब तुम्हारे रब ने फरिश्तों को वहि भेजी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम सावित रखो मोमिनों के (दिल), मैं अनकरीब काफ़िरों के दिलों में रुअब डाल दूँगा, तुम उन की गर्दनों के ऊपर ज़र्व लगाओ और उन के एक एक पूर पर ज़र्व लगाओ। (12)

यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह और उस के रसूल के मुख़ालिफ़ हुए और जो अल्लाह और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ होगा (वह याद रखे) वेशक अल्लाह की मार सख़्त है। (13)

तो तुम यह चखो और यकीनन काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अज़ाब है। (14)

ऐ ईमान वालो, जब उन से तुम्हारी मुडभेड़ हो जिन्होंने कुफ़ किया मैदाने जंग में तो उन से पीठ न फेरो। (15)

और जो कोई उस दिन उन से अपनी पीठ फेरे सिवाए उस के कि घात लगाता हो जंग के लिए या अपनी जमाअत की तरफ़ जा मिलने को, पस वह लौटा अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उस का ठिकाना जहन्नम है, और यह बुरा ठिकाना है। (16)

सो तुम ने उन्हें क़तल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़तल किया, और आप (स) ने (मुट्ठी भर खाक) नहीं फेंकी जब आप (स) ने फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी, और ताकि मोमिनों को एक बेहतरीन आजमाइश से कामयाबी के साथ गुज़ार दे। वेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (17)

यह तो हुआ, और यह कि अल्लाह काफ़िरों का दाओ सुस्त करने वाला है। (18)

(काफ़िरो!) अगर तुम फ़ैसला चाहते हो तो अलबत्ता तुम्हारे पास फ़ैसला (इस्लाम की फ़तह की सूरत में) आगया है, और अगर तुम वाज़ आजाओ तो वह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर फिर (यही) करोगे तो हम (भी) फिर करेंगे और तुम्हारा ज़त्था हरगिज़ तुम्हारे काम न आएगा खाह उस की कसूरत हो और वेशक अल्लाह मोमिनों के साथ है। (19)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो, और उस से न फिरो जबकि तुम सुनते हो। (20)

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने ने कहा हम ने सुना, हालांकि वह सुनते नहीं। (21)

वेशक जानवरों से बदतरीन अल्लाह के नज़्दीक (वह है जो) बहरे गूंगे है, जो समझते नहीं। (22)

और अगर अल्लाह उन में कोई भलाई जानता तो उन्हें ज़रूर सुना देता, और अगर अल्लाह उन्हें सुना दे तो ज़रूर फिर जाएं, और वह मुँह फेरने वाले हैं। (23)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल (की दावत) कुबूल करो जब वह तुम्हें उस के लिए बुलाएँ जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शे और जान लो कि अल्लाह हाइल हो जाता है आदमी और उस के दिल के दरमियान, और यह कि तुम उसी की तरफ़ (रोज़े हशर) उठाए जाओगे। (24)

और उस फ़ितने से डरो जो न पहुँचेगा तुम में से खास तौर पर उन लोगों को जिन्होंने ने जुल्म किया, और जान लो कि अल्लाह शदीद अज़ाब देने वाला है। (25)

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ								
आप ने फेंकी	जब	और आप (स) ने न फेंकी थी	उन्हें क़तल किया	अल्लाह	बल्कि	सो तुम ने नहीं क़तल किया उन्हें		
وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا إِنَّ اللَّهَ								
वेशक अल्लाह	अच्छा	आज़माइश	अपनी तरफ़ से	मोमिन (जमा)	और ताकि आज़माए	फेंकी	अल्लाह	बल्कि
سَمِيعٌ عَلِيمٌ (١٧) ذَلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنٌ كَيْدَ الْكَافِرِينَ (١٨) إِنَّ								
अगर	18	काफ़िर (जमा)	मक्क-दाओ	सुस्त करने वाला	और यह कि अल्लाह	यह तो हुआ	17	जानने वाला सुनने वाला
تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمْ الْفَتْحُ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ								
तुम्हारे लिए	बेहतर	तो वह	तुम बाज़ आजाओ	और अगर	फैसला	आगया तुम्हारे पास	तो अलबत्ता	तुम फैसला चाहते हो
وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ								
और खाह कसूरत हो	कुछ	तुम्हारा जत्था	तुम्हारे	काम आएगा	और हरगिज़ न	हम फिर करेंगे	फिर करोगे	और अगर
وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ (١٩) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اطِيعُوا								
हुक्म मानो	ईमान लाए	वह लाग जो	ऐ	19	मोमिन (जमा)	साथ	और वेशक अल्लाह	
اللَّهُ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ (٢٠) وَلَا تَكُونُوا								
और न हो जाओ	20	सुनते हो	जबकि तुम	उस से	और मत फिरो	अल्लाह और उस का रसूल		
كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ (٢١) إِنَّ								
वेशक	21	वह नहीं सुनते	हालांकि	हम ने सुना	उन्होंने ने कहा	उन लोगों की तरह जो		
شَرَّ السَّادَاتِ عِنْدَ اللَّهِ الضُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ								
जो कि	गूंगे	बहरे	अल्लाह के नज़्दीक	जानवर (जमा)	बदतरीन			
لَا يَعْقِلُونَ (٢٢) وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَّاسْمَعَهُمْ وَلَوْ								
और अगर	तो ज़रूर सुना देता उन को	कोई भलाई	उन में	जानता अल्लाह	और अगर	22	समझते नहीं	
أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُّعْرِضُونَ (٢٣) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا								
ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	23	मुँह फेरने वाले	और वह	वह ज़रूर फिर जाएं	उन्हें सुना दे	
اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ								
उस के लिए जो ज़िन्दगी बख़्शे तुम्हें	वह बुलाएं तुम्हें	जब	और उसके रसूल का	अल्लाह का	कुबूल कर लो			
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ								
उस की तरफ़	और यह कि	और उस का दिल	आदमी	दरमियान	हाइल हो जाता है	कि अल्लाह	और जान लो	
تُحْشَرُونَ (٢٤) وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا								
उन्होंने ने जुल्म किया	वह लोग जो	न पहुँचेगा	वह फित्ना	और डरो	24	तुम उठाए जाओगे		
مِنْكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ (٢٥)								
25	अज़ाब	शदीद	कि अल्लाह	और जान लो	खास तौर पर	तुम में से		

ع ١٦

وَادْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ							
तुम डरते थे	ज़मीन	में	जईफ़ (कमज़ोर) समझे जाते थे	थोड़े	तुम	जब	और याद करो
أَنْ يَتَخَفَكُمُ النَّاسُ فَارْكُمُ وَآيِدُكُمْ بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُمْ							
और तुम्हें रिज़क़ दिया	अपनी मदद से	और तुम्हें कुव्वत दी	पस ठिकाना दिया उस ने तुम्हें	लोग	उचक ले जाएं तुम्हें	कि	
مِّنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٢٦﴾ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا							
ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	26	शुक्र गुज़ार हो जाओ	ताकि तुम	पाकीज़ा चीज़ें	से
لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمْنَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾							
27	जानते हो	जब कि तुम	अपनी अमानतें	और न ख़ियानत करो	और रसूल	अल्लाह	ख़ियानत न करो
وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ							
और यह कि अल्लाह	बड़ी आजमाइश	और तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल	दरहकीकत	और जान लो		
عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ							
तुम अल्लाह से डरोगे	अगर	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	28	बड़ा	अजर
يَجْعَلَ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ							
और बख़्श देगा तुम्हें	तुम्हारी बुराइयां	तुम से	और दूर कर देगा	फुरकान	तुम्हारे लिए	वह बना देगा	
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾ وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا							
कुफ़ किया (काफ़िर)	वह लोग जिन्होंने ने	खुफ़िया तदवीरें करते थे	और जब	29	बड़ा	फज़ल वाला	और अल्लाह
لِيُثْبِتُوا أَوْ يَقْتُلُوا أَوْ يُخْرِجُوا وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ							
और खुफ़िया तदवीर करता है अल्लाह	और वह खुफ़िया तदवीरें करते थे	या निकाल दें तुम्हें	या क़त्ल कर दें तुम्हें	तुम्हें कैद कर लें			
وَاللَّهُ خَيْرُ الْمُكِرِينَ ﴿٣٠﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا							
वह कहते हैं	हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती है	और जब	30	तदवीर करने वाला	वैहतरिन और अल्लाह
قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَذَا إِنْ هَذَا إِلَّا							
मगर (सिर्फ़)	यह	नहीं	उस	मिस्ल	कि हम कह लें	अगर हम चाहें	अलबत्ता हम ने सुन लिया
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَذَا							
यह	है	अगर	ऐ अल्लाह	वह कहने लगे	और जब	31	पहले (अगले)
هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَابًا مِنَ السَّمَاءِ							
आस्मान	से	पत्थर	हम पर	तो बरसा	तेरी तरफ़	से	हक़
أَوَانْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ							
जबकि आप (स)	कि उन्हें अज़ाब दे	अल्लाह	और नहीं है	32	दर्दनाक	अज़ाब	या ले आ हम पर
فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾							
33	बख़्शिश मांगते हों	जबकि वह	उन्हें अज़ाब देने वाला	अल्लाह	है	और नहीं	उन में

और याद करो जब तुम ज़मीन में थोड़े थे, कमज़ोर समझे जाते थे, तुम डरते थे कि तुम्हें उचक ले जाएंगे लोग, पस उस ने तुम्हें ठिकाना दिया और अपनी मदद से कुव्वत दी और पाकीज़ा चीज़ों से तुम्हें रिज़क़ दिया ताकि तुम शुक्र गुज़ार हो जाओ। (26)

ऐ ईमान वालो! ख़ियानत न करो अल्लाह की और रसूल (स) की, और ख़ियानत न करो अपनी अमानतों में जब कि तुम जानते हो (दीदा ओ दानिस्ता)। (27)

और जान लो कि दरहकीकत तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद बड़ी आजमाइश हैं, और यह कि अल्लाह के पास बड़ा अजर है। (28)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए बना देगा (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला) फुरकान और तुम से तुम्हारी बुराइयां दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बड़े फज़ल वाला है। (29)

और (याद करो) जब काफ़िर आप (स) के बारे में खुफ़िया तदवीरें करते थे कि आप (स) को कैद कर लें या क़त्ल कर दें या (मक्के से) निकाल दें, और वह खुफ़िया तदवीरें करते थे और अल्लाह (भी) खुफ़िया तदवीर करता है, और अल्लाह वैहतरिन तदवीर करने वाला है। (30)

और जब उन पर पढ़ी जाती है हमारी आयात तो वह कहते हैं अलबत्ता हम ने सुन लिया, अगर हम चाहें तो हम भी इस जैसी (आयात) कह लें, यह तो सिर्फ़ किस्से कहानियां हैं अगलों की। (31)

और जब वह कहने लगे ऐ अल्लाह! अगर तेरी तरफ़ से यही हक़ है तो बरसा हम पर आस्मान से पत्थर या हम पर दर्दनाक अज़ाब ले आ। (32)

और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि उन्हें अज़ाब दे जबकि आप (स) उन में हैं, और अल्लाह उन्हें अज़ाब देने वाला नहीं जबकि वह बख़्शिश मांग रहे हों। (33)

और उन में क्या है? कि अल्लाह उन्हें अज़ाब न दे जबकि वह मस्जिदे हराम से रोकते हैं, और वह नहीं है उस के मुतवल्ली। उस के मुतवल्ली तो सिर्फ़ मुत्तकी है, लेकिन उन में से अक्सर नहीं जानते। (34)

और खाने क़ावा के नज़दीक उन की नमाज़ क्या होती है मगर सिर्फ़ सीटियां और तालियां, पस अज़ाब चखो उस के बदले जो तुम कुफ़ करते थे। (35)

वेशक काफ़िर अपने माल खर्च करते हैं ताकि रोकें अल्लाह के रास्ते से, सो अब वह खर्च करेंगे, फिर उन पर हसरत होगी, फिर वह मग़लूब होंगे, और काफ़िर जहन्नम की तरफ़ इकट्ठे किए जाएंगे। (36)

ताकि अल्लाह गन्दे को पाक से जुदा कर दे और गन्दे को एक दूसरे पर रखे, फिर सब को एक ढेर कर दे, फिर उस को जहन्नम में डाल दे, यही लोग हैं ख़सारा पाने वाले। (37)

काफ़िरों से कह दें अगर वह बाज़ आजाएं तो उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा जो गुज़र चुका, और अगर वह फिर वही करें तो तहकीक़ पहलों की रविश गुज़र चुकी है। (38)

और उन से जंग करो यहां तक कि कोई फ़ित्ना न रहे और दीन पूरा का पूरा अल्लाह का हो जाए, फिर अगर वह बाज़ आजाएं तो वेशक अल्लाह देखने वाला है जो वह करते हैं। (39)

और अगर वह मुँह मोड़ लें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा साथी है, क्या खूब साथी और क्या खूब मददगार है! (40)

وَمَا لَهُمْ آلَا يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ							
और क्या	उन के लिए (उन में)	कि न	अल्लाह उन्हें अज़ाब दे	जबकि वह	रोकते हैं	से	मस्जिदे हराम
وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنَّ أَوْلِيَاءَهُ إِلَّا الْمُتَفَقُّونَ							
और नहीं	वह है	उस के मुतवल्ली	नहीं	उस के मुतवल्ली	मगर (सिर्फ़)	मुत्तकी (जमा)	
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (३४) وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ							
और लेकिन	उन में से अक्सर	नहीं जानते	34	और नहीं	थी	उन की नमाज़	
عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصَدِيَةً فَذُوقُوا الْعَذَابَ							
नज़दीक	खाने क़ावा	मगर	सीटियां	और तालियां	पस चखो	अज़ाब	
بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ (३५) إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ							
उस के बदले जो	तुम कुफ़ करते थे	35	वेशक	जिन लोगों ने	कुफ़ किया (काफ़िर)	खर्च करते हैं	
أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ							
अपने माल	ताकि रोकें	से	रास्ता अल्लाह का	सो अब खर्च करेंगे	फिर		
تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ وَالَّذِينَ كَفَرُوا							
होगा	उन पर	हसरत	फिर	वह मग़लूब होंगे	और जिन लोगों ने	कुफ़ किया (काफ़िर)	
إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ (३६) لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ							
तरफ़	जहन्नम	इकट्ठे किए जाएंगे	36	ताकि अल्लाह जुदा करदे	गन्दा	से	पाक
وَيَجْعَلِ الْخَبِيثَ بَعْضُهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا							
और रखे	गन्दा	उस के एक	पर	दूसरे	फिर ढेर कर दे	सब	
فَيَجْعَلُهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ (३७) قُلْ لِلَّذِينَ							
फिर डाल दे उस को	में	जहन्नम	यही लोग	वह	ख़सारा पाने वाले	37	कहदें
كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَإِنْ يَعُودُوا							
उन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	अगर	वह बाज़ आजाएं	माफ़ कर दिया जाए	उन्हें	जो	गुज़र चुका	और अगर करें
فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ (३८) وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ							
तो तहकीक़	गुज़र चुकी है	सुन्नत (रविश)	पहले लोग	38	और उन से जंग करो	यहां तक कि	
لَا تَكُونُ فِتْنَةً وَيَكُفَّ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ فَإِنْ انْتَهُوا							
न रहे	कोई फ़ित्ना	और हो जाए	दीन	सब	अल्लाह का	फिर अगर	वह बाज़ आजाएं
فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (३९) وَإِنْ تَوَلَّوْا فَاَعْلَمُوا							
तो वेशक अल्लाह	जो वह	वह करते हैं	देखने वाला	39	और अगर	वह मुँह मोड़ लें	तो जान लो
أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ نِعَمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعَمَ النَّصِيرِ (४०)							
कि अल्लाह	तुम्हारा साथी	खूब	साथी	और खूब	मददगार	40	

وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ									
उस का पांचवा हिस्सा		अल्लाह के वास्ते	सो	किसी चीज़	से	तुम ग़नीमत लो	जो कुछ	और तुम जान लो	
وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ									
और मुसाफ़िरो			और मिस्कीनों		और यतीमों	और कराबतदारों के लिए		और रसूल के लिए	
إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ									
फैसले के दिन		अपना बन्दा	पर	हम ने नाज़िल किया	और जो	अल्लाह पर	ईमान रखते	तुम हो	अगर
يَوْمَ اتَّقَىٰ الْجَمْعُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤١﴾									
41	कुदरत वाला	हर चीज़	पर	और अल्लाह	दोनों फौजें भिड़ गईं			जिस दिन	
إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدُوَّةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدُوَّةِ الْقُصْوَىٰ									
परला		किनारे पर		और वह	इधर वाला	किनारे पर		तुम	जब
وَالرَّكْبِ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لِاخْتِلَافْتُمْ فِي الْمِيعَادِ									
वादे में		अलबत्ता तुम इख़तिलाफ़ करते		तुम वाहम वादा करते	और अगर	तुम से	नीचे	और काफ़िला	
وَلَكِنْ لِّيَقْضَىٰ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِّيَهْلِكَ									
ताकि हलाक हो		हो कर रहने वाला		था	जो काम	अल्लाह	ताकि पूरा कर दे		और लेकिन
مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيٍّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَإِنَّ									
और वेशक	दलील	से	ज़िन्दा रहना है	जिस	और ज़िन्दा रहे	दलील	से	हलाक हो	जो
اللَّهُ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٢﴾ إِذْ يُرِيكُهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا									
थोड़ा	तुम्हारी खाब	में	अल्लाह	तुम्हें दिखाया उन्हें	जब	42	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह
وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ									
मामले में		और तुम झगड़ते		तो तुम बुज़दिली करते	बहुत ज़ियादा	तुम्हें दिखाता उन्हें	और अगर		
وَلَكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾									
43	दिलों की बात			जानने वाला	वेशक वह	बचा लिया	अल्लाह	और लेकिन	
وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَفَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ									
और तुम्हें थोड़े करके दिखलाए	थोड़ा	तुम्हारी आँखें	में	तुम आमने सामने हुए	जब - तो	वह तुम्हें दिखलाए	और जब		
فِي أَعْيُنِهِمْ لِّيَقْضَىٰ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا وَاللَّهُ									
और अल्लाह की तरफ़	हो कर रहने वाला	था	काम	ताकि पूरा कर दे अल्लाह	उन की आँखें	में			
تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً									
कोई जमाअत	तुम्हारा आमना सामना हो	जब	ईमान वाले	ऐ	44	काम (जमा)	लौटना (बाज़गशत)		
فَاتَّبِعُوا وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾									
45	फ़लाह पाओ		ताकि तुम	बकसूरत	और अल्लाह को याद करो			तो साबित क़दम रहो	

और जान लो कि तुम जो कुछ किसी चीज़ से ग़नीमत हासिल किया है उस का पांचवा हिस्सा अल्लाह के लिए और रसूल के लिए, और (उन के) कराबतदारों के लिए, और यतीमों और मस्कीनों और मुसाफ़िरो के लिए, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और जो हम ने अपने बन्दे पर फ़ैसला (बदर) के दिन नाज़िल किया। जिस दिन (कुफ़ ओ इस्लाम की) दोनों फ़ौजें भिड़ गईं, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। (41)

जब तुम इधर वाले किनारे पर थे और वह परले किनारे पर थे, और काफ़िला तुम से नीचे (तराई में) था, अगर (तुम और काफ़िर) वाहम ते करलेते तो अलबत्ता तुम वादे में इख़तिलाफ़ करते (वक़्त पर न पहुँचते) लेकिन (अल्लाह ने जमा किया) ताकि पूरा कर दे अल्लाह वह काम जो हो कर रहने वाला था, ताकि जो हलाक हो वह दलील से हलाक हो और जिस को ज़िन्दा रहना है वह ज़िन्दा रहे दलील से, और वेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (42)

और जब अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी खाब में उन (काफ़िरो) को दिखाया थोड़ा, और अगर तुम्हें उन (की तादाद) को बहुत दिखाता तो तुम वुज़दिली करते, और (जंग के) मामले में झगड़ते, लेकिन अल्लाह ने बचा लिया, वेशक वह दिलों की बात जानने वाला है। (43)

और जब तुम आमने सामने हुए तो वह (अल्लाह) तुम्हें दिखलाए तुम्हारी आँखों में (दुश्मन को) थोड़े, और तुम्हें उन की आँखों में दिखलाया थोड़ा ताकि अल्लाह पूरा कर दे वह काम जो हो कर रहने वाला था, और तमाम कामों की बाज़गशत अल्लाह की तरफ़ है। (44)

ऐ ईमान वालों! जब किसी जमाअत (कुफ़ार) से तुम्हारा आमना सामना हो तो साबित कदम रहो और अल्लाह को बकसूरत याद करो ताकि तुम फ़लाह (दो ज़हान में कामयाबी) पाओ। (45)

और इताअत करो अल्लाह की और उस के रसूल (स) की, और आपस में झगड़ा न करो कि बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा जाती रहेगी (उखड़ जाएगी) और सव्र करो, वेशक अल्लाह साथ है सव्र करने वालों के। (46)

और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से निकले इतराते और लोगों के दिखावे को, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हुए, और वह जो करते हैं अल्लाह अहाता किए हुए है। (47)

और जब शैतान ने उन के काम खुशनुमा कर के दिखाए, और कहा आज लोगों में से तुम पर कोई ग़ालिब (आने वाला) नहीं, और मैं तुम्हारा रफ़ीक़ (हिमायती) हूँ, फिर जब दोनों लशकर आमने सामने हुए तो अपनी एड़ियों पर उलटा फिर गया और बोला मैं तुम से ला तअल्लुक हूँ, मैं देखता हूँ जो तुम नहीं देखते, मैं अल्लाह से डरता हूँ (कि मुझे हलाक न कर दे) और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (48)

जब मुनाफ़िक़ और वह लोग जिन के दिलों में मरज़ था कहने लगे कि उन्हें (मुसलमानों को) उन के दीन ने ख़व्त में मुव्तला कर रखा है, और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (49)

और अगर तू देखे जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं, मारते (जाते) हैं उन के चहरों और उन की पीठों पर और (कहते जाते हैं) दोज़ख़ का अज़ाब चखो। (50)

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने (आमाल) आगे भेजे हैं और यह कि अल्लाह बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं। (51)

जैसा कि फ़िरअौन वालों का और उन से पहले लोगों का दस्तूर था, उन्होंने ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, और अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, वेशक अल्लाह कुव्वत वाला सख़्त अज़ाब देने वाला है। (52)

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٤٦﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾						
और जाती रहेगी	पस बुज़दिल हो जाओगे	और आपस में झगड़ा न करो	और उस का रसूल	अल्लाह	और इताअत करो	
और न हो जाना	46	सव्र करने वाले	साथ	वेशक अल्लाह	और सव्र करो	तुम्हारी हवा
وَإِذْ زَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآتِ الْفِئْتَنَ نَكَصَ عَلَى عَقَبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنْكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ ۚ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هَؤُلَاءِ دِينُهُمْ ۖ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٩﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۖ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٥٠﴾ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٥١﴾ كَذَابِ الْفِرْعَوْنَ ۖ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَآخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾						
लोग	और दिखावा	इतराते	अपने घर	से	निकले	उन की तरह जो
तुम्हारे लिए (तुम पर)	कोई ग़ालिब नहीं	और कहा	उन के काम	शैतान	उन के लिए	खुशनुमा कर दिया और जब
दोनों लशकर	आमने सामने हुए	फिर जब	तुम्हारा	रफ़ीक़	और वेशक मैं	लोग से आज
नहीं जो	देखता हूँ	मैं वेशक	तुम से	जुदा, ला तअल्लुक	वेशक मैं	और अपनी एड़ियाँ पर उलटा फिर गया
कहने लगे	जब	48	अज़ाब	सख़्त	और अल्लाह	अल्लाह से डरता हूँ मैं वेशक तुम देखते
उन का दीन	उन्हें	धोका दे दिया	मरज़	उन के दिलों में	और वह जो कि	मुनाफ़िक़ (जमा)
49	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तो वेशक अल्लाह	अल्लाह पर	भरोसा करे	और जो
मारते हैं	फ़रिश्ते	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	जान निकालते हैं	जब	तू देखे	और अगर
यह	50	भड़कता हुआ (दोज़ख़)	अज़ाब	और चखो	और उन की पीठ (जमा)	उन के चहरे
51	बन्दों पर	जुल्म करने वाला	नहीं	और यह कि अल्लाह	तुम्हारे हाथ	आगे भेजे बदला जो
अल्लाह की आयतों का	उन्होंने ने इन्कार किया	उन से पहले	और जो लोग	फ़िरअौन वाले	जैसा कि दस्तूर	
52	अज़ाब	सख़्त	कुव्वत वाला	वेशक अल्लाह	उनके गुनाहों पर	तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ा

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ							
जब तक	किसी कौम को	उसे दी	कोई नेमत	बदलने वाला	नहीं है	इस लिए कि अल्लाह	यह
يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٣﴾ كَذَابٌ							
जैसा कि दस्तूर	53	जानने वाला	सुनने वाला	और यह कि अल्लाह	उन के दिलों में	जो	वह बदलें
إِلٰ فِرْعَوْنَ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ							
तो हम ने उन्हें हलाक कर दिया	अपना रब	आयतों को	उन्होंने झुटलाया	उन से पहले	और वह लोग जो	फिरऔन वाले	
بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَاعْرِفْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٥٤﴾							
54	ज़ालिम	थे	और सब	फिरऔन वाले	और हम ने गर्क कर दिया	उन के गुनाहों के सबब	
إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٥﴾							
55	ईमान नहीं लाते	सो वह	कुफ़ किया	वह जिन्होंने	अल्लाह के नज़दीक	जानवर (जमा)	बदतरिन वेशक
الَّذِينَ عَاهَدَتْ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ							
हर बार	में	अपना मुआहदा	तोड़ देते हैं	फिर	उन से	तुम ने मुआहदा किया	वह लोग जो
وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ﴿٥٦﴾ فِيمَا تَثَقَّفَتْهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِدَ بِهِمْ							
उन के ज़रीए	तो भगा दो	जंग में	तुम उन्हें पाओ	पस अगर	56	डरते नहीं	और वह
مَنْ خَلَفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٥٧﴾ وَأَمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ							
किसी कौम	से	तुम्हें खौफ़ हो	और अगर	57	इब्रत पकड़ें	अज़ब नहीं कि वह	उन के पीछे जो
خِيَانَةً فَأَبْذِلْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿٥٨﴾							
58	दगाबाज़ (जमा)	पसन्द नहीं करता	वेशक अल्लाह	बराबरी	पर	उन की तरफ़	तो ख़ियानत (दगाबाज़ी)
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبْقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ﴿٥٩﴾							
59	वह आज़िज़ न कर सकेंगे	वेशक वह	बाज़ी ले गए	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और हरगिज़ ख़याल न करें		
وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ							
पले हुए घोड़े	और से	कुव्वत	से	तुम से हो सके	जो	उन के लिए	और तैयार रखो
تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ ۚ وَآخَرِينَ مِنْ دُونِهِمْ							
उन के सिवा	से	और दूसरे	और तुम्हारे (अपने) दुश्मन	अल्लाह के दुश्मन	उस से	धाक बिठाओ	
لَا تَعْلَمُونَهُمْ ۚ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ							
अल्लाह का रास्ता	में	कुछ	तुम खर्च करोगे	और जो	अल्लाह जानता है उन्हें	तुम उन्हें नहीं जानते	
يُؤَفِّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٦٠﴾ وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلَامِ							
सुलह की तरफ़	वह झुकें	और अगर	60	तुम्हारा नुक़सान न किया जाएगा	और तुम	तुम्हें	पूरा पूरा दिया जाएगा
فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾							
61	जानने वाला	सुनने वाला	वह	वेशक	अल्लाह पर	और भरोसा रखो	तो सुलह कर लो

यह इस लिए है कि अल्लाह (कभी) उस नेमत को बदलने वाला नहीं जो उस ने किसी कौम को दी जब तक वह (न) बदल डालें जो उन के दिलों में है (अपना अक़ीदा ओ अहवाल) और यह कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (53)

जैसा कि दस्तूर था फिरऔन वालों का और उन लोगों का जो उन से पहले थे, उन्होंने ने अपने रब की आयतों को झुटलाया तो हम ने उन्हें उन के गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और फिरऔन वालों को गर्क कर दिया, और वह सब ज़ालिम थे। (54)

वेशक अल्लाह के नज़दीक सब जानवरों से बदतर वह लोग हैं जिन्होंने ने कुफ़ किया, सो वह ईमान नहीं लाते। (55)

वह लोग जिन से तुम ने मुआहदा किया, फिर वह अपना मुआहदा तोड़ देते हैं हर बार, और वह डरते नहीं। (56)

पस अगर तुम उन्हें जंग में पाओ तो (उन्हें ऐसी सज़ा दो कि) उन के ज़रीए भगा दो उन को जो उन के पीछे हैं, अज़ब नहीं कि वह इब्रत पकड़ें। (57)

अगर तुम्हें किसी कौम से दगा बाज़ी का डर हो तो (उन का मुआहदा) फ़ेंक दो उन की तरफ़ बराबरी पर (बराबरी का जवाब दो), वेशक अल्लाह दगाबाज़ों को पसन्द नहीं करता। (58)

और काफ़िर हरगिज़ ख़याल न करें कि वह बाज़ी ले गए, वेशक वह आज़िज़ न कर सकेंगे। (59)

और उन के (मुक़ाबले के) लिए तैयार रखो कुव्वत जो तुम से हो सके और पले हुए घोड़े, उस से धाक बिठाओ अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों पर, और दूसरों पर उन के सिवा जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें जानता है, और तुम जो कुछ अल्लाह के रास्ते में खर्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम्हारा नुक़सान न किया जाएगा। (60)

और अगर वह सुलह की तरफ़ झुकें तो (तुम भी) उस (सुलह) की तरफ़ झुको, और अल्लाह पर भरोसा रखो, वेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (61)

और अगर वह तुम्हें धोका देना चाहें तो बेशक तुम्हारे लिए अल्लाह काफी है, वह जिस ने तुम्हें अपनी मदद से और मुसलमानों से ज़ोर दिया। (62)

और उल्फ़त डाल दी उन के दिलों में, अगर तुम सब कुछ खर्च कर देते जो ज़मीन में है उन के दिलों में उल्फ़त न डाल सकते थे लेकिन अल्लाह ने उन के दरमियान उल्फ़त डाल दी, बेशक वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (63)

ऐ नबी (स)! अल्लाह काफी है तुम्हें और तुम्हारे पैरू मोमिनों के लिए। (64)

ऐ नबी (स)! मोमिनों को जिहाद पर तरगीब दो, अगर तुम में से बीस (20) सबर वाले (साबित क़दम) होंगे तो वह दो सो (200) पर ग़ालिब आएंगे, और अगर तुम में से एक सो (100) हों तो वह एक हज़ार (1000) काफ़िरों पर ग़ालिब आएंगे, इस लिए कि वह लोग (काफ़िर) समझ नहीं रखते। (65)

अब अल्लाह ने तुम से तख़फ़ीफ़ कर दी, और मालूम कर लिया कि तुम में कमज़ोरी है, पस अगर तुम में से एक सो (100) सबर वाले हों तो वह दो सो (200) पर ग़ालिब आएंगे, अगर तुम में से एक हज़ार (1000) हों तो वह अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार (2000) पर ग़ालिब रहेंगे और अल्लाह सबर करने वालों के साथ है। (66)

किसी नबी के लिए (लाइक़) नहीं कि उस के (कब्ज़े में) कैदी हूँ जब तक वह ज़मीन में दुश्मनों को अच्छी तरह कुचल न दे, तुम दुनिया का माल चाहते हो, और अल्लाह आख़िरत चाहता है, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (67)

अगर अल्लाह (की तरफ़) से पहले ही लिखा हुआ न होता तो उस (फ़िदया) के लेने की वजह से तुम्हें पहुँचता बड़ा अज़ाब। (68)

पस उस में से खाओ जो तुम्हें ग़नीमत में हलाल पाक मिला, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (69)

وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي								
और अगर	वह चाहें	कि	तुम्हें धोका दें	तो बेशक	तुम्हारे लिए काफी है अल्लाह	वह	जिस ने	
أَيْدِكَ بِنَصْرِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾ وَالْأَلْفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ لَوْ أَنْفَقْتَ								
तुम्हें ज़ोर दिया	अपनी मदद से	और मुसलमानों से	62	और उल्फ़त डाल दी	दरमियान (में)	उन के दिल	अगर	तुम खर्च करते
مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَّا أَلْفَتْ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ								
जो	में	ज़मीन	सब कुछ	न	उल्फ़त डाल सकते	में	उन के दिल	और लेकिन
أَلْفَ بَيْنَهُمْ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٣﴾ يَأْتِيهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ								
उल्फ़त डाल दी	उन के दरमियान	वेशक वह	ग़ालिब	हिक्मत वाला	63	ऐ	नबी (स)	काफी है तुम्हें
وَمَنْ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٤﴾ يَأْتِيهَا النَّبِيُّ حَرِصٌ الْمُؤْمِنِينَ								
और जो	तुम्हारे पैरू हैं	से	मोमिन (जमा)	64	ऐ	नबी (स)	तरगीब दो	मोमिन (जमा)
عَلَى الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عَشْرُونَ صَبْرُونَ يَغْلِبُوا								
पर	क़िताल (जिहाद)	अगर	हों	तुम में से	बीस (20)	सबर वाले	ग़ालिब आएंगे	
مِائَتَيْنِ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِّن								
दो सो (200)	और अगर	हों	तुम में से	एक सो (100)	वह ग़ालिब आएंगे	एक हज़ार (1000)	से	
الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾ أَلَنْ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ								
वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	इस लिए कि वह	लोग	समझ नहीं रखते	65	अब	अल्लाह ने तख़फ़ीफ़ कर दी	तुम से	
وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا								
और मालूम कर लिया	कि	तुम में	कमज़ोरी	हों अगर पस	तुम में से	एक सो (100)	सबर वाले	वह ग़ालिब आएंगे
مِائَتَيْنِ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفِينَ بِإِذْنِ اللَّهِ								
दो सो (200)	और अगर	हों	तुम में से	एक हज़ार (1000)	वह ग़ालिब रहेंगे	दो हज़ार (2000)	अल्लाह के हुक्म से	
وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّىٰ								
और अल्लाह	साथ	सबर वाले	66	नहीं है	किसी नबी के लिए	कि	हों	उस के
जब तक	कैदी							
يُثَخِّنَ فِي الْأَرْضِ تُرِيدُونَ عَرَصَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ								
खूनरेज़ी कर ले	में	ज़मीन	तुम चाहते हो	माल	दुनिया	और अल्लाह	चाहता है	
الْآخِرَةَ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتَابٌ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ								
आख़िरत	और अल्लाह	ग़ालिब	हिक्मत वाला	67	अगर न	लिखा हुआ	अल्लाह से	पहले ही
لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ								
तुम्हें पहुँचता	उस में जो	तुम ने लिया	अज़ाब	बड़ा	68	पस खाओ	उस से जो	तुम्हें ग़नीमत में मिला
حَلَالًا طَيِّبًا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٩﴾								
हलाल	पाक	और अल्लाह से डरो	बेशक अल्लाह	बख़्शने वाला	निहायत मेहरबान	69		

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ إِنَّ يَعْلَمَ اللَّهُ فِي										
ऐ	नबी	कह दें	उन से जो	में	तुम्हारे हाथ	से	कैदी	अगर	मालूम कर लेगा अल्लाह	में
قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرَ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ										
तुम्हारे दिल	कोई भलीई	तुम्हें देगा बेहतर	उस से जो	लिया गया	तुम से	और वरुशदेगा	तुम्हें	और अल्लाह	वरुशने वाला	
رَحِيمٌ (۷۰) وَإِنْ يُرِيدُوا حَيَاتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ										
निहायत मेहरबान	70	और अगर	वह इरादा करेंगे	आप (स) से खियानत का	तो उन्होंने ने खियानत की अल्लाह से	इस से कबल				
فَأَمَّا كُنْ مِنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ (۷۱) إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا										
तो कब्जे में दे दिया	उन से (उन्हें)	और अल्लाह	जानने वाला	हिक्मत वाला	71	वशक	जो लोग	ईमान लाए	और उन्होंने ने हिज्रत की	
وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوُوا										
और जिहाद किया	अपने मालों से	और अपनी जानें	में	अल्लाह का रास्ता	और वह लोग जो	ठिकाना दिया				
وَنَصَرُوا أَوْلِيَّكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا										
और मदद की	वही लोग	उन के बाज़	रफ़ीक़	बाज़ (दूसरे)	और वह लोग जो	ईमान लाए				
وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُمْ مِنْ وَلَايَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا										
और उन्होंने ने हिज्रत न की	तुम्हें नहीं	से	उन की रफ़ाक़त	कुछ शै (सरोकार)	यहां तक कि	वह हिज्रत करें				
وَإِنْ اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ										
और अगर	वह तुम से मदद मांगें	दीन में	तो तुम पर (लाज़िम है)	मदद	मगर	पर (ख़िलाफ़)	वह क़ौम			
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (۷۲) وَالَّذِينَ										
तुम्हारे दरमियान	और उन के दरमियान	सुआहदा	और अल्लाह	जो	तुम करते हो	देखने वाला	72	और वह लोग		
كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٌ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ										
जिन्होंने ने कुफ़ किया	उन के बाज़	रफ़ीक़	बाज़ (दूसरे)	अगर तुम ऐसा न करोगे	होगा	फ़ित्ना	ज़मीन में			
وَفَسَادٌ كَبِيرٌ (۷۳) وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهِدُوا فِي										
और फ़साद	बड़ा	73	और वह लोग जो	ईमान लाए	और उन्होंने ने हिज्रत की	और जिहाद किया उन्होंने ने	में			
سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوُوا وَنَصَرُوا أَوْلِيَّكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ										
अल्लाह का रास्ता	और वह लोग जो	ठिकाना दिया	और मदद की	वही लोग	वह	मोमिन (जमा)				
حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (۷۴) وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدُ										
सच्चे	उन के लिए	वख़शिश	और रोज़ी	इज़्ज़त	74	और वह लोग जो	ईमान लाए	उस के बाद		
وَهَاجَرُوا وَجَاهِدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنْكُمْ وَأُولَٰئِكَ الْأَرْحَامُ										
और उन्होंने ने हिज्रत की	और उन्होंने ने जिहाद किया	तुम्हारे साथ	पस वही लोग	तुम में से	और कराबतदार					
بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (۷۵)										
उन के बाज़	क़रीब (ज़ियादा हक़ दार)	बाज़ (दूसरे) के	में (रू से)	अल्लाह का हुक्म	वशक अल्लाह	हर चीज़	जानने वाला	75		

ऐ नबी (स)! आप (स) के हाथ (कब्जे) में जो कैदी हैं, उन से कह दें कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई मालूम कर लेगा तो तुम्हें उस से बेहतर देगा जो तुम से लिया गया और वह तुम्हें वरुश देगा, और अल्लाह वरुशने वाला निहायत मेहरबान है। (70)

और अगर आप (स) से खियानत का इरादा करेंगे तो उन्होंने ने उस से कबल अल्लाह से खियानत की तो अल्लाह ने उन्हें (तुम्हारे) कब्जे में दे दिया, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (71)

वशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने हिज्रत की और अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, और जिन लोग ने ठिकाना दिया और मदद की वही लोग एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने हिज्रत न की, तुम्हें नहीं है कुछ सरोकार उन की रफ़ाक़त से, यहां तक कि वह हिज्रत करें, और अगर वह तुम से दीन में मदद मांगें तो तुम पर मदद लाज़िम है, मगर उस क़ौम के ख़िलाफ़ नहीं जिस के और तुम्हारे दरमियान सुआहदा हो, और जो तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (72)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया वह एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, अगर तुम ऐसा न करोगे तो फ़ित्ना होगा ज़मीन में और बड़ा फ़साद (होगा)। (73)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने हिज्रत की और जिहाद किया अल्लाह के रास्ते में, और जिन लोगों ने ठिकाना दिया और मदद की वही लोग सच्चे मोमिन हैं, उन के लिए वख़शिश और इज़ज़त की रोज़ी है। (74)

और जो लोग उस के बाद ईमान लाए और उन्होंने ने हिज्रत की और तुम्हारे साथ (मिल कर) जिहाद किया पस वही तुम में से हैं, और कराबतदार (आपस में) एक दूसरे के ज़ियादा हक़ दार हैं अल्लाह के हुक्म से, वशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (75)

अल्लाह और उस के रसूल (स) (की तरफ) से क़तअ तअल्लुक है उन मुश्रिकों से जिन्होंने ने तुम से अहद किया हुआ था। (1)

पस (मुश्रिकों) ज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और जान लो कि तुम अल्लाह को अज़िज़ करने वाले नहीं, और यह कि अल्लाह काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है। (2)

और अल्लाह और उस के रसूल (की तरफ) से हज़-ए-अक्बर के दिन लोगों के लिए एलान है कि अल्लाह और उस के रसूल का मुश्रिकों से क़तअ तअल्लुक है, पस अगर तुम तौबा कर लो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम ने मुँह फेर लिया तो जान लो कि तुम अल्लाह को अज़िज़ करने वाले नहीं, और आगाह कर दो उन लोगों को जिन्होंने ने कुफ़ किया अज़ाब दर्दनाक से। (3)

सिवाए उन मुश्रिक लोगों के जिन से तुम ने अहद किया था, फिर उन्होंने ने तुम से (अहद में) कुछ भी कमी न की और न उन्होंने ने तुम्हारे खिलाफ़ किसी की मदद की, तो उन से उन का अहद उन की (मुक़ररा) मुदत तक पूरा करो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (4)

फिर जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएं तो मुश्रिकों को क़त्ल करो जहां तुम उन्हें पाओ, और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेर लो, और उन के लिए हर घात में बैठो, फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ काइम करें और ज़कात अदा करें तो उन का रास्ता छोड़ दो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (5)

और अगर मुश्रिकीन हि से कोई आप (स) से पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दें यहां तक कि वह सुन ले अल्लाह का कलाम, फिर उसे उस की अमन की जगह पहुँचा दें, यह इस लिए है कि वह इल्म नहीं रखते (नादान हैं)। (6)

آيَاتُهَا ۱۲۹ ﴿ (۹) سُورَةُ التَّوْبَةِ ﴾ رُكُوعَاتُهَا ۱۶									
रुक़ात 16			(9) सूरतुत तौबा				आयात 129		
بَرَاءَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿۱﴾									
1	मुश्रिकीन	से	तुम से अहद किया	वह लोग जिन्हों ने	तरफ़	और उस का रसूल (स)	अल्लाह	से	एलान-ए-बरात
فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۖ									
अल्लाह को आजिज़ करने वाले		नहीं	कि तुम	और जान लो	महीने	चार	ज़मीन में	पस चल फिर लो	
وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ ﴿۲﴾ وَأَذَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى									
तरफ़ (लिए)	और उस का रसूल	अल्लाह से		और एलान	2	काफिर (जमा)	रुस्वा करने वाला	और यह कि अल्लाह	
النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۖ									
मुश्रिक (जमा)		से	क़तअ तअल्लुक़	कि अल्लाह	हज-ए-अक्बर		दिन	लोग	
وَرَسُولُهُ ۚ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ									
कि तुम	तो जान लो	तुम ने मुँह फेर लिया	और अगर	तुम्हारे लिए बेहतर	तो यह	तुम तौबा करो	पस अगर	और उस का रसूल	
غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۖ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابِ آلِيمٍ ۖ إِلَّا									
सिवाए	3	दर्दनाक	अज़ाब से	उन्हों ने कुफ़ किया	वह लोग जो	और खुशख़बरी दो (आगाह कर दो)	अल्लाह	आजिज़ करने वाले	न
الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ									
और न	कुछ भी	उन्हों ने तुम से कमी न की		फिर	मुश्रिक (जमा)	से	तुम ने अहद किया था	वह लोग जो	
يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۗ									
उन की मुदत	तक	उन का अहद	उन से	तो पूरा करो	किसी की	तुम्हारे खिलाफ़	उन्हों ने मदद की		
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿۴﴾ فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرْمُ فَاقْتُلُوا									
तो क़त्ल करो	हुर्मत वाले	महीने	गुज़र जाएं	फिर जब	4	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	
الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَأَحْضُرُوهُمْ									
और उन्हें घेर लो		और उन्हें पकड़ो		तुम उन्हें पाओ		जहां	मुश्रिक (जमा)		
وَأَقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ									
नमाज़		और काइम करें		वह तौबा कर लें	फिर अगर	हर घात		उन के लिए	और बैठो
وَاتُوا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿۵﴾ وَإِنْ									
और अगर	5	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उन का रास्ता	तो छोड़ दो	और ज़कात अदा करें		
أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّى يَسْمَعَ كَلِمَ اللَّهِ									
अल्लाह का कलाम		वह सुन ले	यहां तक कि	तो उसे पनाह दे दो	आप से पनाह मांगे	मुश्रिकीन		से	कोई
ثُمَّ أَبْلَغُهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۶﴾									
6	इल्म नहीं रखते		लोग	इस लिए कि वह	यह	उस की अमन की जगह	उसे पहुँचा दें	फिर	

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ						
क्यों कर	हो	मुश्रिकों के लिए	अहद	अल्लाह के पास	और उस के रसूल के पास	
إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ فَمَا اسْتَقَامُوا						
सिवाए	वह लोग जो	तुम ने अहद किया	पास	मस्जिदे हराम	सो जब तक	वह काइम रहें
لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧﴾ كَيْفَ وَإِنْ						
तुम्हारे लिए	तो तुम काइम रहो	उन के लिए	वेशक अल्लाह	दोस्त रखता है	परहेज़गार (जमा)	7 कैसे और अगर
يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلَّا وَلَا ذِمَّةً يُرْضُونَكُمْ						
वह ग़ालिब आजाएँ	तुम पर	न लिहाज़ करें	तुम्हारी	करावत	और न अहद	वह तुम्हें राज़ी कर देते हैं
بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ ۚ وَكَثَرُهُمْ فَسِقُونَ ﴿٨﴾						
अपने मुहँ से (जमा) से	लेकिन नहीं मानते	उन के दिल	और उन के अक्सर	नाफ़रमान	8	
إِشْتَرَوْا بِآيَةِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِهِ						
उन्होंने ने ख़रीद ली	अल्लाह की आयात से	कीमत	थोड़ी	फिर उन्होंने ने रोका	से	उस का रास्ता
إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩﴾ لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا						
वेशक वह	बुरा	जो	वह करते हैं	9	लिहाज़ नहीं करते	(बारे) में किसी मोमिन करावत
وَلَا ذِمَّةً ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ﴿١٠﴾ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا						
और न	अहद	और वही लोग	वह	हद से बढ़ने वाले	10	और और काइम करें और तौबा कर लें फिर अगर वह
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَنُفَصِّلُ						
नमाज़	और अदा करें ज़कात	तो तुम्हारे भाई	में	दीन	और खोल कर बयान करते हैं	
الْأَيْتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١١﴾ وَإِنْ نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ						
आयात	लोगों के लिए	इल्म रखते हैं	11	और अगर	वह तोड़ दें	अपनी कस्में
مِّنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعْنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا						
के बाद से	अपना अहद	और ऐव निकालें	में	तुम्हारा दीन	तो जंग करो	
أَيِّمَةَ الْكُفْرِ ۚ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ						
कुफ़ के सरदार	वेशक वह	नहीं कस्म	उन की	शायद वह		
يَنْتَهُونَ ﴿١٢﴾ أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ						
बाज़ आजाएँ	12	क्या तुम न लड़ोगे?	ऐसी कौम	उन्होंने ने तोड़ डाला	अपना अहद	
وَهُمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ						
और इरादा किया	निकालने का	रसूल (स)	और वह	तुम से पहल की	पहली बार	
أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَإِنَّهُمْ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾						
क्या तुम उन से डरते हो?	तो अल्लाह	ज़ियादा हक़दार	कि	तुम उस से डरो	अगर तुम हो	ईमान वाले 13

क्यों कर हो मुश्रिकों के लिए अल्लाह के पास और उस के रसूल (स) के पास कोई अहद सिवाए उन लोगों के जिन से तुम ने अहद किया मस्जिदे हराम (खाने क़़बा) के पास, सो जब तक वह तुम्हारे लिए (अहद पर) काइम रहें तुम (भी) उन के लिए काइम रहो, वेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (7)

कैसे (सुलह हो जब हाल यह है कि) अगर वह तुम पर ग़ालिब आजाएँ तो न लिहाज़ करें तुम्हारी करावत का और न अहद का, वह तुम्हें अपने मुहँ से (महेज़ ज़बानी) राज़ी कर देते हैं, लेकिन उन के दिल नहीं मानते, और उन में अक्सर नाफ़रमान हैं। (8)

उन्होंने ने अल्लाह की आयात से थोड़ी कीमत ख़रीद ली, फिर उन्होंने ने उस के रास्ते से रोका, वेशक बुरा है जो वह करते हैं। (9)

वह किसी मोमिन के बारे में न करावत का लिहाज़ करते हैं न अहद का, और वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (10)

फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ काइम करें और ज़कात अदा करें तो तुम्हारे भाई हैं दीन में, और हम आयात खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। (11)

और अगर वह अपनी कस्में तोड़ दें अपने अहद के बाद और तुम्हारे दीन में ऐव निकालें, तो कुफ़ के सरदारों से जंग करो, वेशक उन की कस्में कुछ नहीं, शायद वह (ताक़्त के ज़ोर ही से) बाज़ आजाएँ। (12)

क्या तुम ऐसी कौम से न लड़ोगे? जिन्होंने ने अपना अहद तोड़ डाला और उन्होंने ने रसूल (स) को निकालने (जिला वतन करने) का इरादा किया और उन्होंने ने तुम से पहल की, क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह ज़ियादा हक़ रखता है कि तुम उस से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (13)

तुम उन से लड़ो (ताकि) अल्लाह उन्हें अज़ाब दे तुम्हारे हाथों से और उन्हें रसूवा करे और तुम्हें उन पर ग़ालिब करे, और दिल ठन्डे करे मोमिन लोगों के, (14)

और उन के दिलों से गुस्सा दूर करे, और अल्लाह जिस की चाहे तौबा कुबूल करता है, और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत वाला है। (15)

क्या तुम गुमान करते हो कि तुम छोड़ दिए जाओगे? (जबकि) अल्लाह ने अभी उन को मालूम नहीं किया तुम में से जिन्होंने ने जिहाद किया, और उन्होंने ने नहीं बनाया अल्लाह के सिवा और उस के रसूल (स) और मोमिनों (के सिवा) राज़दार। और अल्लाह उस से बाख़्बर है जो तुम करते हो। (16)

मुश्रिकों का (काम) नहीं कि वह आबाद करें अल्लाह की मस्जिदें (जबकि) अपने ऊपर कुफ़ को तसलीम करते हों, वही लोग हैं जिन के अमल अकारत गए, और वह हमेशा जहन्नम में रहेंगे। (17)

अल्लाह की मस्जिदें सिर्फ़ वही आबाद करता है जो अल्लाह और यौमे आखिरत पर ईमान लाया, और उस ने नमाज़ काइम की और ज़कात अदा की और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा, सो उम्मीद है कि वही लोग हिदायत पाने वालों में से हों। (18)

क्या तुम ने हाजियों को पानी पिलाना और मस्जिद हराम (ख़ाना क़अबा) की मुजावरी करने को ठहराया है उस के मानिंद जो अल्लाह पर और यौमे आखिरत पर ईमान लाया और उस ने अल्लाह की राह में जिहाद किया, वह बराबर नहीं है अल्लाह के नज़दीक, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (19)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने हिज़्रत की और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया (उन के) दरजे अल्लाह के हां बहुत बड़े हैं, और वही लोग मुराद को पहुँचने वाले हैं। (20)

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ							
उन पर	और तुम्हें ग़ालिब करे	और उन्हें रुसवा करे	तुम्हारे हाथों से	उन्हें अज़ाब दे अल्लाह	तुम उन से लड़ो		
وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ۖ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ							
उन के दिल (जमा)	गुस्सा	और दूर कर दे	14	मोमिनीन	लोग	सीने (दिल)	और शिफा व़ख़शे (ठन्डे करे)
وَيُتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝١٥ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ							
कि	क्या तुम समझते हो	15	हिक्मत वाला	इल्म वाला	और अल्लाह	जिसे चाहे	पर और अल्लाह तौबा कुबूल करता है
تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا							
और उन्होंने ने नहीं बनाया		तुम में से	उन्होंने ने जिहाद किया	वह लोग जो	मालूम किया अल्लाह	और अभी नहीं	तुम छोड़ दिए जाओगे
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ							
बाख़्बर	और अल्लाह	राज़दार	और न मोमिनीन		और न उस का रसूल (स)	अल्लाह	सिवा
بِمَا تَعْمَلُونَ ۖ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ							
अल्लाह की मस्जिदें		वह आबाद करें	कि	मुश्रिकों के लिए	नहीं है	16	उस से जो तुम करते हो
شَاهِدِينَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۚ							
उन के आमाल	अकारत गए	वही लोग	कुफ़ को	अपनी जानें (अपने ऊपर)	पर	तसलीम करते हों	
وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ۝١٧ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ							
अल्लाह पर	ईमान लाया	जो	अल्लाह की मस्जिदें	वह आबाद करता है	सिर्फ़	17	हमेशा रहेंगे
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ ۚ							
अल्लाह	सिवाए	और वह न डरा	और ज़कात अदा की	और उस ने नमाज़ काइम की		और आख़िरत का दिन	
فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۖ أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ							
पानी पिलाना	क्या तुम ने बनाया (ठहराया)	18	हिदायत पाने वाले	से	हों	कि	वही लोग सो उम्मीद है
الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ							
और यौमे आख़िरत		अल्लाह पर	ईमान लाया	उस के मानिंद	मस्जिदे हराम		और आबाद करना हाजी (जमा)
وَجِهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوْنَ عِنْدَ اللَّهِ							
अल्लाह के नज़दीक		वह बराबर नहीं		अल्लाह की राह		में	और उस ने जिहाद किया
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝١٩ الَّذِينَ آمَنُوا							
ईमान लाए	जो लोग	19	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता		और अल्लाह
وَهَاجَرُوا وَجْهَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۖ							
और अपनी जानें		अपने मालों से		अल्लाह का रास्ता	में	और जिहाद किया	और उन्होंने ने हिज़्रत की
أَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝٢٠							
20	मुराद को पहुँचने वाले	वह	और वही लोग		अल्लाह के हां	दरजे	बहुत बड़े

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَّتٍ لَهُمْ فِيهَا							
उन में	उन के लिए	और बागात	और खुशनुदी	अपनी तरफ़ से	रहमत की	उन का रब	उन्हें खुशख़बरी देता है
نَعِيمٌ مُّقِيمٌ ﴿٢١﴾ خَلِيدِينَ فِيهَا أَبَدًا إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ							
उस के हाँ	वेशक अल्लाह	हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	21	दाइमी	नेमत
أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٢﴾ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ							
अपने बाप दादा	तुम न बनाओ	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	22	अज़ीम	अजर	
وَإِخْوَانَكُمْ أُولِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ وَمَنْ							
और जो	ईमान पर (ईमान के मुक़ाबिल)	कुफ़	अगर वह पसन्द करें	रफ़ीक़	और अपने भाई		
يَتَوَلَّاهُمْ مِنْكُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ إِنْ كَانَ							
हों	अगर	कहे दें	23	ज़ालिम (जमा)	वह	तो वही लोग	दोस्ती करेगा उन से
أَبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ							
और तुम्हारे कुंवे	और तुम्हारी वीवियां	और तुम्हारे भाई	और तुम्हारे बेटे	तुम्हारे बाप दादा			
وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا							
उस का नुक़सान	तुम डरते हो	और तिजारात	जो तुम ने कमाए	और माल			
وَمَسْكِنٌ تَرْضَوْنَهَا أَحَبُّ إِلَيْكُمْ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ							
और उस का रसूल	अल्लाह से	तुम्हारे लिए (तुम्हें)	ज़ियादा प्यारे	जो तुम पसन्द करते हो	और घर		
وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	उस का हुक्म	ले आए अल्लाह	यहाँ तक कि	इन्तिज़ार करो	उस की राह में	और जिहाद	
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي							
में	अल्लाह ने तुम्हारी मदद की	अलबत्ता	24	नाफ़रमान	लोग	हिदायत नहीं देता	
مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ							
अपनी कसूरत	तुम खुश हुए (इतरा गए)	जब	और हुनैन के दिन	बहुत से	मैदान (जमा)		
فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ							
फ़राख़ी के बावजूद	ज़मीन	तुम पर	और तंग हो गई	कुछ	तुम्हें	तो न फ़ाइदा दिया	
ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ							
अपनी तस्कीन	अल्लाह ने नाज़िल की	फिर	25	पीठ दे कर	तुम फिर गए	फिर	
عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا							
वह तुम ने न देखे	लशकर	और उतारे उस ने	मोमिनीन	और पर	अपने रसूल (स)	पर	
وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦﴾							
26	काफ़िर (जमा)	सज़ा	और यही	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और अज़ाब दिया		

उन का रब उन्हें अपनी तरफ़ से रहमत और खुशनुदी और बागात की खुशख़बरी देता है, उन में उन के लिए दाइमी नेमत है। (21)

वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, वेशक अल्लाह के (हां) अजरे अज़ीम है। (22)

ऐ ईमान वालो! अपने बाप दादा को और अपने भाइयों को रफ़ीक़ न बनाओ अगर वह लोग ईमान के खिलाफ़ कुफ़ को पसन्द करें, और तुम में से जो उन से दोस्ती करेगा तो वही लोग ज़ालिम हैं। (23)

कह दें, अगर तुम्हारे बाप दादा, तुम्हारे बेटे, और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी वीवियां, और तुम्हारे कुंवे, और माल जो तुम ने कमाए, और तिजारात जिस के नुक़सान से तुम डरते हो, और घर जिन को तुम पसन्द करते हो, तुम्हें अल्लाह से और उस के रसूल से और उस की राह में जिहाद से ज़ियादा प्यारे हों तो इन्तिज़ार करो यहाँ तक

कि अल्लाह का हुक्म आजाए, और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (24)

अलबत्ता अल्लाह ने तुम्हारी मदद की बहुत से मैदानों में, और हुनैन के दिन, जब तुम अपनी कसूरत पर इतराए तो उस (कसूरत) ने तुम्हें कुछ फ़ाइदा न दिया, और तुम पर ज़मीन फ़राख़ी के बावजूद तंग हो गई, फिर तुम पीठ दे कर फिर गए। (25)

फिर अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर और मोमिनों पर अपनी तस्कीन नाज़िल की, और उस ने लशकर उतारे जो तुम ने न देखे और काफ़िरों को अज़ाब दिया, और यही सज़ा है काफ़िरों की। (26)

फिर उस के बाद अल्लाह जिस की चाहे तौबा कुबूल करेगा, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (27)

ऐ मोमिनो! इस के सिवा नहीं कि मुश्रिक पलीद है, लिहाज़ा वह करीब न जाए उस साल के बाद मसजिदे हराम (खाने क़़बा) के। और अगर तुम्हें मोहताजी का डर हो तो अल्लाह तुम्हें जल्द ग़नी कर देगा अपने फ़ज़ल से अगर चाहे, वेशक़ अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (28)

तुम उन लोगों से लड़ो जो ईमान नहीं लाए अल्लाह पर और न यौमे आख़िरत पर, और न हराम जानते हैं वह जो अल्लाह और उस के रसूल (स) ने हराम ठहराया है, और न दीने हक़ को कुबूल करते हैं उन लोगों में से जो अहले किताब हैं, यहां तक कि वह जिज़या दें अपने हाथ से ज़लील हो कर। (29)

यहूद ने कहा ऊज़ैर (अ) अल्लाह का बेटा है और कहा नसारा ने मसीह (अ) अल्लाह का बेटा है, यह बातें है उन के मुँह की, वह रीस करते हैं पहले काफ़िरों की बात की। अल्लाह उन्हें हलाक करे, कहाँ वहके जा रहे हैं? (30)

उन्होंने ने बना लिया अपने उल्मा और अपने दर्वेशों को ख़ब अल्लाह के सिवा, और मसीह (अ) इब्ने मरयम को (भी), और उन्हें हुक्म नहीं दिया गया मगर यह कि वह माबूदे वाहिद की इबादत करें, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वह उस से पाक है जो वह शिर्क करते हैं। (31)

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَلَى مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	जिस की चाहे	पर	इस	बाद	तौबा कुबूल करेगा अल्लाह	फिर	
غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٧﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ							
मुश्रिक (जमा)	इस के सिवा नहीं	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	27	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	
نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَذَا ۖ							
इस	साल	बाद	मसजिदे हराम	लिहाज़ा वह करीब न जाए	पलीद		
وَأَنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيَكُمْ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ إِنْ شَاءَ ۗ							
अगर वह चाहे	अपना फ़ज़ल	से	तुम्हें ग़नी कर देगा अल्लाह	तो जल्द	मोहताजी	तुम्हें डर हो	और अगर
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ							
अल्लाह पर	ईमान नहीं लाए	वह लोग जो	तुम लड़ो	28	हिक्मत वाला	जानने वाला	वेशक़ अल्लाह
وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ							
जो हराम ठहराया अल्लाह ने	और न हराम जानते हैं	यौमे आख़िरत पर	और न				
وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ							
वह लोग जो	से	दीने हक़	और न कुबूल करते हैं	और उस का रसूल (स)			
أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ							
और वह	हाथ	से	जिज़या	दें	यहां तक	किताब दिए गए (अहले किताब)	
صَغِيرُونَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرُ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ							
और कहा	अल्लाह का बेटा	ऊज़ैर	यहूद	और कहा	29	ज़लील हो कर	
النَّصْرَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ ۖ							
उन के मुँह की	उन की बातें	यह	अल्लाह का बेटा	मसीह (अ)	नसारा		
يُضَاهِيُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ ۗ							
पहले	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	बात	वह रीस करते हैं				
قَاتِلَهُمُ اللَّهُ ۖ إِنَّهُ يُؤْفِكُكُمْ ۖ اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ							
अपने एहबार (उल्मा)	उन्होंने ने बना लिया	30	वहके जाते हैं	कहां	हलाक करे उन्हें अल्लाह		
وَرُءْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ							
और मसीह (अ)	अल्लाह के सिवा	से	ख़ब (जमा)	और अपने राहेब (दर्वेश)			
ابْنَ مَرْيَمَ ۖ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَهًا وَاحِدًا ۖ							
माबूदे वाहिद	यह कि वह इबादत करें	मगर	उन्हें हुक्म दिया गया	और नहीं	इब्ने मरयम		
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ سُبْحَنَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾							
31	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	वह पाक है	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद		

ع १०

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ					
और न मानेगा अल्लाह	अपने मुँह से (जमा)	अल्लाह का नूर	वह बुझा दें	कि	वह चाहते हैं
إِلَّا أَنْ يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٣٢﴾ هُوَ					
वह	32	काफिर (जमा)	पसन्द न करें	खाह	अपना नूर पूरा करे यह कि मगर
الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ					
ताकि उसे ग़ल्व दे	और दिने हक़	हिदायत के साथ	अपना रसूल	भेजा	वह जिस ने
عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾ يَأَيُّهَا الَّذِينَ					
वह लोग जो	ऐ	33	मुश्रिक (जमा)	पसन्द न करें	खाह तमाम पर दिन पर
أَمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ					
खाते हैं	और राहेब (दर्वेश)	उल्मा	से	बहुत	वेशक ईमान लाए
أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ					
अल्लाह का रास्ता	से	और रोकते हैं	नाहक़ तीर पर	लोग (जमा)	माल (जमा)
وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا ينفِقُونَهَا فِي					
में	और वह उसे खर्च नहीं करते	और चाँदी	सोना	जमा कर के रखते हैं	और वह लोग जो
سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا					
उस पर	दहकाएंगे	जिस दिन	34	दर्दनाक	अज़ाब सो उन्हें खुशख़बरी दो अल्लाह की राह
فِي نَارٍ جَهَنَّمَ ۖ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَأُخْفَاؤُهُمْ					
और उन की पीठ (जमा)	और उनके पहलू (जमा)	उन की पेशानी	उस से	फिर दागा जाएगा	जहन्नम की आग में
هَذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُونَ ﴿٣٥﴾					
35	जो तुम जमा कर के रखते थे	जो	पस मज़ा चखो	अपने लिए	तुम ने जमा कर के रखा जो यह है
إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي					
में	महीने	बारह (12)	अल्लाह के नज़दीक	महीने	तादाद वेशक
كُتِبَ اللَّهُ يَوْمَ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا					
उन से (उन में)	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया	जिस दिन	अल्लाह का हुक्म
أَرْبَعَةٌ حُرْمٌ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ فَلَا تَظْلِمُوا					
फिर न जुल्म करो	सीधा (दुरुस्त) दिन	यह	हुर्मत वाले	चार (4)	
فِيهِنَّ أَنْفُسُكُمْ ۖ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا					
जैसे	सब के सब	मुश्रिकों	और लड़ो	अपने ऊपर	उन में
يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٦﴾					
36	परहेज़गार (जमा)	साथ	कि अल्लाह	और जान लो	सब के सब वह तुम से लड़ते हैं

वह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह (की फूँकों) से बुझा दें और अल्लाह न मानेगा मगर यह कि अपने नूर को पूरा करे, खाह काफिर पसन्द न करें। (32)

वह जिस ने अपना रसूल (स) भेजा हिदायत के साथ और दिने हक़ के साथ ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ल्व दे, खाह मुश्रिक पसन्द न करें। (33)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! वेशक बहुत से उल्मा और दर्वेश लोगों के माल नाहक़ तीर पर खाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और वह लोग जो सोना चाँदी जमा कर के रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते, सो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दो (आगाह कर दो)। (34)

जिस दिन हम उसे दहकाएंगे जहन्नम की आग में, फिर उस से उन की पेशानियों और उन के पहलूओं और उन की पीठों को दागा जाएगा कि यह है वह जो तुम ने अपने लिए जमा कर के रखा था, पस मज़ा चखो जो तुम जमा कर के रखते थे। (35)

वेशक महिनों की तादाद अल्लाह के नज़दीक अल्लाह की किताब में बारह महीने हैं जब से उस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, उन में चार हुर्मत वाले (अदब के) महीने हैं, यही है दुरुस्त दिन, पस तुम उन में अपने ऊपर जुल्म न करो, और तुम सब के सब मुश्रिकों से लड़ो जैसे वह सब के सब तुम से लड़ते हैं, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (36)

यह जो महीने का हटा कर (आगे पीछे करना) कुफ़्र में इज़ाफ़ा है, इस से काफ़िर गुमराह होते हैं, वह उसे (उस महीने को) एक साल हलाल कर लेते हैं और दूसरे साल उसे हराम कर लेते हैं ताकि वह गिनती पूरी कर ले उस की जो अल्लाह ने हराम किए। सो वह हलाल करते हैं जो अल्लाह ने हराम किया है, उन के बुरे अमल उन्हें मुज़ैयन कर दिए गए हैं और अल्लाह काफ़िरों की क़ौम को हिदायत नहीं देता। (37)

ऐ मोमिनो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम्हें कहा जाता है कि अल्लाह की राह में कूच करो तो तुम गिरे जाते हो ज़मीन पर, क्या तुम ने आखिरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया? सो (कुछ भी) नहीं है दुनिया की ज़िन्दगी का सामान आखिरत के मुक़ाबले में मगर थोड़ा। (38)

अगर तुम (राहे खुदा) में न निकलोगे तो (अल्लाह) तुम्हें अज़ाब देगा दर्दनाक, और तुम्हारे सिवा कोई और क़ौम बदले में ले आएगा, और तुम उस का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (39)

अगर तुम उस (नबी पाक (स) की मदद न करोगे तो अलबत्ता अल्लाह ने मदद की है जब काफ़िरों ने उन्हें निकाला था, वह दूसरे थे दोनों में, जब वह दोनों ग़ारे (सूर) में थे, जब वह अपने साथी (अबू बक्र सिद्दीक) से कहते थे, घबराओ नहीं, यकीनन अल्लाह हमारे साथ है, तो उस ने उन पर तस्कीन नाज़िल की और ऐसे लशकरों से उन की मदद की जो तुम ने नहीं देखे और काफ़िरों की बात पस्त कर दी, और अल्लाह का कलिमा (बोल) वाला है, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (40)

तुम निकलो हलके हो या भारी, और अपने मालों से ज़िहाद करो और अपनी जानों से अल्लाह की राह में, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (41)

إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا							
यह जो	महीने का हटा देना	इज़ाफ़ा	कुफ़्र में	गुमराह होते हैं	इस से	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	
يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِّيُوَاطِّئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ							
वह उस को हलाल करते हैं	एक साल	और उस को हराम कर लेते हैं	एक साल	ताकि वह पूरी कर लें	गिनती	जो	हराम किया
اللَّهُ فَيُحِلُّونَهُ مَا حَرَّمَ اللَّهُ زَيْنَ لَهُمْ شَوْءَ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ							
अल्लाह	तो वह हलाल करते हैं	जो	अल्लाह ने हराम किया	मुज़ैयन कर दिए गए	उन्हें	बुरे	उन के आमाल
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٧﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ							
हिदायत नहीं देता	क़ौम	काफ़िर (जमा)	37	ऐ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	तुम्हें किया हुआ	
إِذَا قِيلَ لَكُمْ أَنْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَثْقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ							
जब	कहा जाता है	तुम्हें	कूच करो	में	अल्लाह की राह	तुम गिरे जाते हो	तरफ़ (पर)
أَرْضَيْتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا							
क्या तुम ने पसन्द कर लिया	ज़िन्दगी को	दुनिया	से (मुक़ाबला)	आखिरत	सो नहीं	सामान	दुनिया
فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾ إِلَّا تَنْفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا							
में	आखिरत	मगर	थोड़ा	38	अगर न निकलोगे	तुम्हें अज़ाब देगा	अज़ाब
وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّهُ شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَى							
और बदले में ले आएगा	और क़ौम	तुम्हारे सिवा	और न बिगाड़ सकोगे उस का	कुछ भी	और अल्लाह	पर	
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾ إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ							
हर चीज़	कुदरत रखने वाला	39	अगर तुम मदद न करोगे उस की	तो अलबत्ता अल्लाह ने उस की मदद की है	जब	उस को निकाला	
الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ							
वह लोग	वह काफ़िर हुए (काफ़िर)	दूसरा	दो में	जब वह दोनों	में	ग़ार	जब
لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ							
अपने साथी से	घबराओ नहीं	यकीनन अल्लाह	हमारे साथ	तो अल्लाह ने नाज़िल की	अपनी तस्कीन		
عَلَيْهِ وَآيَدُهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا							
उस पर	और उस की मदद की	ऐसे लशकरों से	जो तुम ने नहीं देखे	और कर दी	वात	वह लोग जो	उन्होंने ने कुफ़्र किया
السُّفْلَىٰ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾							
पस्त (नीची)	और अल्लाह का कलिमा (बोल)	वह	बाला	और अल्लाह	ग़ालिब	हिक्मत वाला	40
انْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ							
तुम निकलो	हलका-हलके	और भारी	और ज़िहाद करो	अपने मालों से	और अपनी जानों		
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾							
में	अल्लाह की राह	यह तुम्हारे लिए	बेहतर	तुम्हारे लिए	अगर	तुम हो	जानते हो

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَا تَبْعُوكَ						
तो आप (स) के पीछे हो लेते	आसान	और सफ़र	करीब	माल (ग़नीमत)	होता	अगर
وَلَكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللّهِ						
अल्लाह की	और अब कस्में खाएंगे	रास्ता	उन पर	दूर नज़र आया	और लेकिन	
لَوْ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ						
अपने आप	वह हलाक कर रहे हैं	तुम्हारे साथ	हम ज़रूर निकलते	अगर हम से हो सकता		
وَاللّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ (٤٢) عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ						
क्यों	तुम्हें	माफ़ करे अल्लाह	42	यकीनन झूटे हैं	कि वह	जानता है और अल्लाह
أَذْنَتْ لَهُمْ حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ						
और आप जान लेते	सच्चे	वह लोग जो	आप पर	ज़ाहिर हो जाए	यहां तक कि	तुम ने इजाज़त दी
الْكَاذِبِينَ (٤٣) لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللّهِ						
अल्लाह पर	जो ईमान रखते हैं	वह लोग	नहीं मांगते आप से रुख़सत	43	झूटे	
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ						
और अपनी जान (जमा)	अपने मालों से	वह ज़िहाद करें	कि	और यौमे आख़िरत पर		
وَاللّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ (٤٤) إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ						
वह लोग जो	आप से रुख़सत मांगते हैं	वही सिर्फ़	44	मुत्तकियों को	खूब जानता है	और अल्लाह
لَا يُؤْمِنُونَ بِاللّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ						
उन के दिल	और शक में पड़े हैं	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान नहीं रखते		
فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ (٤٥) وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ						
निकलने का	वह इरादा करते	और अगर	45	भटक रहे हैं	अपने शक में	सो वह
لَاَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انْبِعَاثَهُمْ						
उन का उठना	अल्लाह ने नापसन्द किया	और लेकिन	कुछ सामान	उस के लिए	ज़रूर तैयार करते	
فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْفَعِيدِينَ (٤٦)						
46	बैठने वाले	साथ	बैठ जाओ	और कहा गया	सो उन को रोक दिया	
لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا						
ख़राबी	मगर (सिवाए)	तुम्हें बढ़ाते	न	तुम में	वह निकलते	अगर
وَلَا أَوْضَعُوا خِلَافَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ						
बिगाड़	तुम्हारे लिए चाहते हैं	तुम्हारे दरमियान	और दौड़े फिरते			
وَفِيكُمْ سَمْعُونَ لَهُمْ وَاللّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ (٤٧)						
47	ज़ालिमों को	खूब जानता है	और अल्लाह	उन के	सुनने वाले	और तुम में

अगर माले ग़नीमत करीब और सफ़र आसान होता तो वह आप (स) के पीछे हो लेते, लेकिन दूर नज़र आया उन्हें रास्ता, और अब अल्लाह की कस्में खाएंगे कि अगर हम से हो सकता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकलते, वह अपने आप को हलाक कर रहे हैं, और अल्लाह जानता है कि वह यकीनन झूटे हैं। (42)

अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, आप (स) ने (उस से पेशतर) उन्हें क्यों इजाज़त दे दी, यहां तक कि आप पर ज़ाहिर हो जाते वह लोग जो सच्चे हैं और आप (स) जान लेते झूटों को। (43)

आप (स) से वह लोग रुख़सत नहीं मांगते जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हैं कि वह ज़िहाद करें अपने मालों से अपनी जानों से, और अल्लाह मुत्तकियों (डरने वाले, परहेज़गारों) को खूब जानता है। (44)

आप (स) से सिर्फ़ वह लोग रुख़सत मांगते हैं जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और उन के दिल शक में पड़े हैं, सो वह अपने शक में भटक रहे हैं। (45)

और अगर वह निकलने का इरादा करते तो उस के लिए ज़रूर तैयार करते कुछ सामान, लेकिन अल्लाह ने उन का उठना नापसन्द किया, सो उन को रोक दिया और कह दिया गया (माज़ूर) बैठने वालों के साथ बैठ जाओ। (46)

और अगर वह तुम में (तुम्हारे साथ) निकलते तो तुम्हारे लिए ख़राबी के सिवा कुछ न बढ़ाते, और तुम्हारे दरमियान दौड़े फिरते, चाहते हुए तुम्हारे लिए बिगाड़, और तुम में उन की बातें सुनने वाले मौजोद हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है। (47)

अलबल्ला उन्होंने ने चाहा था इस से कब्ल भी बिगाड़, और उन्होंने ने तुम्हारे लिए तद्वीरें उलट पलट कीं यहां तक कि हक आगया, और गालिब आगया अमरे इलाही और वह पसन्द न करने वाले (ना खुश) रहे। (48)

और उन में से कोई कहता है मुझे इजाज़त दें और मुझे आजमाइश में न डालें, याद रखो वह आजमाइश में पड़ चुके हैं, और वेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है। (49)

अगर तुम्हें पहुँचे कोई भलाई तो उन्हें बुरी लगे, और तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें: हम ने अपना काम पहले ही संभाल लिया था और वह खुशियां मनाते लौट जाते हैं। (50)

आप (स) कह दें हमें हरगिज़ न पहुँचेगा मगर (वही) जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है, वही हमारा मौला है। और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (51)

आप (स) कह दें: किया तुम दो खूबियों में से हम पर एक का इन्तिज़ार करते हो, और हम तुम्हारे लिए इन्तिज़ार कर रहे हैं कि तुम्हें पहुँचे अल्लाह के पास से कोई अज़ाब या हमारे हाथों से, सो तुम इन्तिज़ार करो, हम (भी) तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं। (52)

आप (स) कह दें: तुम खुशी से खर्च करो या नाखुशी से, हरगिज़ तुम से कुबूल न किया जाएगा, वेशक तुम हो कौमे-फ़ासिकीन (नाफ़रमानों की कौम)। (53)

और उन के खर्च कुबूल न होने की कोई वजह इस के सिवा नहीं कि उन्होंने ने अल्लाह और रसूल से कुफ़र किया है, और वह नमाज़ को नहीं आते मगर सुस्ती से और वह खर्च नहीं करते मगर नाखुशी से। (54)

لَقَدْ ابْتَغُوا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ															
तद्वीरें		तुम्हारे लिए		उन्होंने ने उलट पलट की		इस से कब्ल		बिगाड़		अलबत्ता चाहा था उन्होंने ने					
﴿ ६४ ﴾ حَتَّى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَرِهُونُ															
48		पसन्द न करने वाले		और वह		अमरे इलाही		और ग़ालिब आगया		हक़		आगया		यहाँ तक कि	
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُولُ اِئْذَنْ لِّي وَلَا تَفْتِنِّي اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿ ६५ ﴾															
49		काफ़िरों को		घेरे हुए		जहन्नम		और वेशक		वह पड़ चुके हैं		आज़माइश			
اِنْ تُصِيبَكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَاِنْ تُصِيبَكَ مُصِيبَةٌ يَّقُولُوا قَدْ اَخَذْنَا اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ فَرِحُونَ ﴿ ५० ﴾ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا اِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿ ५१ ﴾															
51		मोमिन (जमा)		भरोसा करना चाहिए		और अल्लाह पर		हमारा मौला		वही					
قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا اِلَّا اِحْدَى الْحُسْنَيْنِ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُصِيبَكُمْ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهِ اَوْ بِاَيْدِنَا فَتَرَبَّصُوا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُونَ ﴿ ५२ ﴾															
52		इन्तिज़ार करने वाले		तुम्हारे साथ		हम		सो तुम इन्तिज़ार करो		हमारे हाथों से		या			
قُلْ اَنْفِقُوا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَلَ مِنْكُمْ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فَسِقِينَ ﴿ ५३ ﴾ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ اِلَّا اَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالَى وَلَا يُنْفِقُونَ اِلَّا وَهُمْ كَرِهُونُ ﴿ ५४ ﴾															
53		फ़ासिक (जमा)		कौम		और न		उन के लिए रुकावट बना		कि		कुबूल किया जाए		उन से	
54		नाखुशी से		और वह		मगर		और वह खर्च नहीं करते		सुस्त		और वह		मगर	

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ						
कि अज़ाब दे उन्हें	चाहता है अल्लाह	यही	उन की औलाद	और न	उन के माल	सो तुम्हें तअज़्जुब न हो
بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَفِرُونَ ﴿٥٥﴾						
55	काफ़िर हों	और वह	उन की जानें	और निकलें	दुनिया की ज़िन्दगी	में उस से
وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ وَمَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ﴿٥٦﴾ لَوْ يَجِدُونَ مَلَجًا أَوْ مَغْرَبًا أَوْ مُدْخَلًا						
लोग	और लेकिन वह	तुम में से	वह	हालाकि नहीं	अलबत्ता तुम में से	वेशक वह अल्लाह की और कस्में खाते हैं
لَوْ لَوْكُوا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ﴿٥٧﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَلْمِزُكَ						
घुसने की जगह	या	ग़ार (जमा)	या	पनाह की जगह	वह पाएं	अगर 56 डरते हैं
تَتَذَكَّرُ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِنْ لَمْ يُعْطُوا						
तअन करते हैं आप पर	जो (बाज़)	और उन में से	57	रस्सियां तुड़ाते हैं	और वह	उस की तरफ़ तो वह फिर जाएं
مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ﴿٥٨﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ						
अल्लाह	उन्हें दिया	जो	राज़ी हो जाते	अगर वह	क्या अच्छा होता	58 नाराज़ हो जाते हैं वह उसी वक़्त
وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ						
अपना फ़ज़ल	से	अल्लाह	अब हमें देगा	हमें काफ़ी है अल्लाह	और वह कहते	और उस का रसूल
وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ﴿٥٩﴾ إِنَّمَا الصَّدَقَتُ لِلْفُقَرَاءِ						
मुफ़लिस (जमा)	ज़कात	सिर्फ़	59	रग़बत रखते हैं	अल्लाह की तरफ़	वेशक हम और उस का रसूल
وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي						
और में	उन के दिल	और उल्फ़त दी जाए	उस पर	और काम करने वाले	मिस्कीन (जमा) मोहताज	
الرِّقَابِ وَالْغَرَمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً						
फ़रीज़ा (ठहराया हुआ)	और मुसाफ़िर	अल्लाह की राह	और में	तावान भरने वाले, कर्ज़दार	गर्दनों (के छुड़ाने)	
مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٦٠﴾ وَمِنْهُمْ الَّذِينَ يُؤْذُونَ						
ईज़ा देते (सताते) हैं	जो लोग	और उन में से	60	हिक्मत वाला	इल्म वाला	और अल्लाह से
النَّبِيِّ وَيَقُولُونَ هُوَ أَدْنَىٰ قُلْ أَذُنٌ خَيْرٌ لَّكُمْ يُؤْمِنُ						
वह ईमान लाते हैं	भलाई तुम्हारे लिए	कान	आप कह दें	कान	वह (यह)	और कहते हैं नबी
بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ						
तुम में	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	और रहमत	मोमिनों पर	और यकीन रखते हैं	अल्लाह पर
وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦١﴾						
61	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	अल्लाह का रसूल	सताते हैं	और जो लोग

सो तुम्हें तअज़्जुब न हो उन के मालों पर और न उन की औलाद पर, अल्लाह यही चाहता है कि उन्हें उस से दुनिया की ज़िन्दगी में अज़ाब दे, और उन की जानें निकलें तो (उस वक़्त) भी वह काफ़िर हों। (55)

और वह अल्लाह की कस्में खाते हैं कि वेशक वह तुम में से हैं, हालांकि वह तुम में से नहीं, लेकिन वह लोग डरते हैं। (56)

अगर वह पाएं कोई पनाह की जगह, या ग़ार या घुसने (सर समाने) की जगह तो वह उस की तरफ़ फिर जाएं रस्सियां तुड़ाते हुए। (57)

और उन में से बाज़ आप (स) पर सदकात (की तकसीम में) तअन करते हैं, सो अगर उन में से उन्हें दे दिया जाए तो वह राज़ी हो जाएं और अगर उन्हें उस से न दिया जाए तो वह उसी वक़्त नाराज़ हो जाते हैं। (58)

क्या अच्छा होता अगर वह (उस पर) राज़ी हो जाते जो अल्लाह ने और उस के रसूल (स) ने उन्हें दिया, और वह कहते हमें अल्लाह काफ़ी है, अब हमें देगा अल्लाह अपने फ़ज़ल से और उस का रसूल, वेशक हम अल्लाह की तरफ़ रग़बत रखते हैं। (59)

ज़कात (हक़ है) सिर्फ़ मुफ़लिसों का, और मोहताजों का, और उस पर काम करने वाले (कारकुनों का), और (उन लोगों का) जिन्हें (इस्लाम की) उल्फ़त दी जाए, और गर्दनों के छुड़ाने (आज़ाद कराने) में और कर्ज़दारों (का कर्ज़ अदा करने में), और अल्लाह की राह में, और मुसाफ़िरों का, (यह) अल्लाह की तरफ़ से ठहराया हुआ फ़रीज़ा है, और अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (60)

और उन में से बाज़ लोग नबी को सताते हैं और कहते हैं यह तो कान है (कानों का कच्चा है), कह दें कि तुम्हारी भलाई के लिए आप (स) ऐसे हैं, वह अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मोमिनों पर यकीन रखते हैं और उन लोगों के लिए रहमत हैं जो तुम में से ईमान लाए, और जो लोग अल्लाह के रसूल (स) को सताते हैं उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (61)

वह तुम्हारे लिए (तुम्हारे सामने) अल्लाह की कस्में खाते हैं ताकि तुम्हें खुश करें, और अल्लाह और उस के रसूल (स) का ज़ियादा हक है कि वह उन्हें खुश करें अगर वह ईमान वाले हैं। (62)

क्या वह नहीं जानते? कि जो मुकाबला करेगा अल्लाह का और उस के रसूल (स) का तो वेशक उस के लिए दोज़ख की आग है वह उस में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी रुसवाई है। (63)

मुनाफ़िक्कीन डरते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी सूरत नाज़िल (न) हो जाए जो उन्हें (मुसलमानों को) जता दे जो उन (मुनाफ़िक्कीनों) के दिलों में है, आप (स) कह दें: तुम ठठे (हँसी मज़ाक) करते रहो, वेशक तुम जिस से डरते हो अल्लाह उसे खोलने वाला है (खोल कर रहेगा)। (64)

और अगर तुम उन से पूछो तो वह ज़रूर कहेंगे: हम तो सिर्फ़ दिल्लगी और खेल करते हैं, आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह से, और उस की आयात से, और उस के रसूल (स) से हँसी करते थे? (65)

वहाने न बनाओ, तुम अपने ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए, और हम तुम में से एक गिरोह को माफ़ कर दें तो दूसरे गिरोह को अज़ाब देंगे, इस लिए कि वह मुजरिम हैं। (66)

मुनाफ़िक् मर्द और मुनाफ़िक् औरतें उन में से बाज़, बाज़ के (एक दूसरे के हम जिनस) हैं, बुराई का हुक्म देते हैं और नेकी से रोकते हैं, और अपने हाथ (मुठियाँ खर्च करने से) बन्द रखते हैं, वह अल्लाह को भूल बैठे तो अल्लाह ने उन्हें भुला दिया, वेशक मुनाफ़िक् नाफ़रमान हैं। (67)

अल्लाह ने मुनाफ़िक् मर्दों और मुनाफ़िक् औरतों, और काफ़िरों को जहन्नम की आग का वादा दिया है, उस में हमेशा रहेंगे, वही उन के लिए काफ़ी है, और उन पर अल्लाह की लानत है, और उन के लिए हमेशा रहने वाला अज़ाब है। (68)

يَحْلِفُونَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيَرْضَوْكُمْ ۖ وَاللّٰهُ وَرَسُولُهُ						
और उस का रसूल	और अल्लाह	ताकि तुम्हें खुश करें	तुम्हारे लिए	अल्लाह की	वह कस्में खाते हैं	
أَحَقُّ أَنْ يُرْضَوْهُ إِنَّ كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾ أَلَمْ يَعْلَمُوا						
क्या वह नहीं जानते	62	वह ईमान वाले हैं	अगर	वह उन को खुश करें	कि	ज़ियादा हक़
أَنَّهُ مِنْ يُحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ						
दोज़ख़ की आग	उस के लिए	तो वेशक	और उस के रसूल	अल्लाह	मुकाबला करेगा	जो कि वह
خَالِدًا فِيهَا ذَٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ						
मुनाफ़िक् (जमा)	डरते हैं	63	बड़ी	रुसवाई	यह	उस में हमेशा रहेंगे
أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ						
उन के दिल (जमा)	में	वह जो	उन्हें जता दे	सूरत	उन (मुसलमानों) पर	कि नाज़िल हो
قُلِ اسْتَهِزُّوْا ۖ إِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُونَ ﴿٦٤﴾ وَلَئِنْ						
और अगर	64	जिस से तुम डरते हो	खोलने वाला	वेशक अल्लाह	ठठे करते रहो	आप कह दें
سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللّٰهِ						
क्या अल्लाह के	आप (स) कह दें	और खेल करते	दिल्लगी करते	हम थे	कुछ नहीं (सिर्फ़)	तो वह ज़रूर कहेंगे
وَأَيْتِهِ وَرَسُولِهِ كُنتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ						
तुम काफ़िर हो गए हो	न बनाओ वहाने	65	हँसी करते	तुम थे	और उस के रसूल	और उस की आयात
بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ إِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ						
तुम में से	एक ग़िरोह	से (को)	हम माफ़ कर दें	अगर	तुम्हारा (अपना) ईमान	बाद
نُعَذِّبُ طَآئِفَةً ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٦٦﴾ أَلْمُنَافِقُونَ						
मुनाफ़िक् मर्द (जमा)	66	मुज़्रिम (जमा)	थे	इस लिए कि वह	एक (दूसरा) ग़िरोह	हम अज़ाब दें
وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ						
बुराई का	वह हुक्म देते हैं	बाज़ के	से	उन में से बाज़	और मुनाफ़िक् औरतें	
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا						
वह भूल बैठे	अपने हाथ	और बन्द रखते हैं	नेकी	से	और मना करते हैं	
اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۚ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٦٧﴾ وَعَدَ اللّٰهُ						
अल्लाह ने वादा किया	67	नाफ़रमान (जमा)	वह (ही)	मुनाफ़िक् (जमा)	वेशक	तो उस ने उन्हें भुला दिया
الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارِ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ						
उस में	हमेशा रहेंगे	जहन्नम की आग	और काफ़िर (जमा)	और मुनाफ़िक् औरतें	मुनाफ़िक् मर्द (जमा)	
هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٦٨﴾						
68	हमेशा रहने वाला	अज़ाब	और उन के लिए	और अल्लाह ने उन पर लानत की	उन के लिए काफ़ी	वही

كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَآكَثَرَ						
और ज़ियादा	कुव्वत	तुम से	बहुत ज़ोर वाले	वह थे	तुम से कव्वत	जिस तरह वह लोग जो
أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا ۖ فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلْقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ						
सो तुम फाइदा उठा लो		अपने हिस्से से		सो उन्होंने ने फाइदा उठाया		और औलाद माल में
بِخَلْقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلْقِهِمْ						
अपने हिस्से से		तुम से पहले		वह लोग जो		फाइदा उठाया जैसे अपने हिस्से से
وَحُضُّتُمْ كَالَّذِي خَاضُوا أُولَئِكَ حِطَّتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا						
दुनिया में	उन के आमाल	अकारत गए	वही लोग	घुसे	जैसे वह	और तुम घुसे (बुरी बातों में)
وَالْآخِرَةِ ۚ وَأُولَئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٦٩﴾ أَلَمْ يَأْتِهِمْ						
क्या इन तक न आई		69	ख़सारा उठाने वाले	वह	और वही लोग	और आखिरत
نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرٰهِيْمَ						
और कौमे इब्राहीम (अ)		और समूद	और आद	कौमे नूह	इन से पहले	वह लोग जो ख़बर
وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَاتِ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ						
वाज़ेह अहकाम ओ दलाइल के साथ		उन के रसूल (जमा)	उन के पास आए	और उलटी हुई बस्तियां		और मदयन वाले
فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا اَنْفُسَهُمْ						
अपने ऊपर		वह थे	लेकिन	कि वह उन पर जुल्म करता		अल्लाह था सो नहीं
يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ						
रफ़ीक़ (जमा)	उन में से बाज़	और मोमिन औरतें		और मोमिन मर्द (जमा)		70 जुल्म करते
بَعْضٍ يَّأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ						
बुराई		से	और रोकते हैं		भलाई का	वह हुकम देते हैं बाज़
وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيعُوْنَ اللّٰهَ						
अल्लाह	और इताअत करते हैं		ज़कात	और अदा करते हैं		नमाज़ और वह काइम करते हैं
وَرَسُوْلَهُ ۚ اُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾						
71	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	कि उन पर अल्लाह रहम करेगा		वही लोग और उस का रसूल
وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنَّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا						
उन के नीचे		जारी है	जन्नतें	और मोमिन औरतों		मोमिन मर्द (जमा) वादा किया अल्लाह
اَلَاَنْهٰرٌ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسْكَنٌ طَيِّبَةٌ ۚ فِيْ جَنَّٰتٍ عَدْنٍ ۚ						
हमेशा रहने के बागात		में	पाकीज़ा	और मकानात	उन में	हमेशा रहेंगे नहरें
وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾						
72	बड़ी	कामयाबी	वह	यह	सब से बड़ी अल्लाह	से और खुशनूदी

जिस तरह वह लोग जो तुम से कव्वत थे, वह तुम से बहुत ज़ोर वाले थे कुव्वत में और ज़ियादा थे माल में और औलाद में, सो उन्होंने ने अपने हिस्से से फाइदा उठाया, सो तुम अपने हिस्से से फाइदा उठा लो जैसे उन्होंने ने अपने हिस्से से फाइदा उठाया जो तुम से पहले थे, और तुम (बुरी बातों में) घुसे जैसे वह घुसे थे, वही लोग हैं जिन के अमल दुनिया और आखिरत में अकारत गए, और वही लोग हैं ख़सारा उठाने वाले। (69)

क्या इन तक उन लोगों की ख़बर न आई (न पहुँची) जो इन से पहले थे, कौमे नूह और आद और समूद, और कौमे इब्राहीम (अ) और मदयन वाले, और वह बस्तियां जो उलट दी गईं, उन के पास उन के रसूल आए वाज़ेह अहकाम ओ दलाइल के साथ, सो अल्लाह ऐसा न था कि उन पर जुल्म करता लेकिन वह अपने ऊपर जुल्म करते थे। (70)

और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें उन में से बाज़, बाज़ के (एक दूसरे के) रफ़ीक़ हैं, वह भलाई का हुकम देते हैं और बुराई से रोकते हैं, और वह नमाज़ काइम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करते हैं, वही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (71)

अल्लाह ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से जन्नतों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उन में हमेशा रहेंगे, और सदा बहार बागात में पाकीज़ा मकानात, और अल्लाह की खुशनूदी सब से बड़ी बात है, यह बड़ी कामयाबी है। (72)

ऐ नबी (स)! काफ़िरों और मुनाफ़िकों से ज़िहाद करें और उन पर सख़्ती करें, और उन का ठिकाना जहन्नम है, और वह पलटने की बुरी जगह है। (73)

वह अल्लाह की कस्में खाते हैं कि उन्होंने ने नहीं कहा, हालांकि उन्होंने ने ज़रूर कुफ़ का कलिमा कहा, और अपने इस्लाम (लाने के) बाद उन्होंने ने कुफ़ किया, और उन्होंने ने वह कुछ करने का इरादा किया जिसे कर न सके, और उन्होंने ने बदला न दिया मगर (सिर्फ़ उस बात का) कि अल्लाह और उस के रसूल (स) ने उन्हें अपने फ़ज़ल से ग़नी कर दिया, सो अगर वह तौबा कर लें तो उन के लिए बेहतर होगा, और अगर वह फिर जाएं तो अल्लाह उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा दुनिया में और आख़िरत में, और उन के लिए न होगा ज़मीन में कोई हिमायती और न मददगार। (74)

और उन में से (बाज़ वह है) जिन्होंने ने अल्लाह से अ़हद किया कि अगर वह हमें अपने फ़ज़ल से दे तो हम ज़रूर सदका देंगे और हम ज़रूर हो जाएंगे सालिहीन (नेकोकारों) में से। (75)

फिर जब उस ने उन्हें अपने फ़ज़ल से दिया तो उन्होंने ने उस में बुख़ल किया और वह फिर गए, वह रूग़र्दानी करने वाले हैं। (76)

तो (अल्लाह ने) उस का अन्जाम कार उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया रोज़े (क़ियामत) तक कि वह उस से मिलेंगे, क्यों कि उन्होंने ने जो अल्लाह से वादा किया था उस के ख़िलाफ़ किया और क्यों कि वह झुट बोलते थे। (77)

क्या वह नहीं जानते? कि अल्लाह उन के भेद और उन की सरगोशियों को जानता है, और यह कि अल्लाह ग़ैब की बातों को ख़ूब जानने वाला है। (78)

वह लोग जो उन मोमिनो पर ऐब लगाते हैं जो खुशी से ख़ैरात करते हैं, और वह लोग जो नहीं पाते मगर अपनी मेहनत (का सिला), वह (मुनाफ़िक़) उन से मज़ाक़ करते हैं, अल्लाह ने उन के मज़ाक़ (का जवाब) दिया। और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (79)

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ						
ऐ	नबी (स)	जिहाद करें	काफ़िर (जमा)	और मुनाफ़िकीन	और सख़्ती करें	उन पर
وَمَا لَهُمْ بِهِمْ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾ يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا						
और उन का ठिकाना	जहन्नम	और बुरी	पलटने की जगह	73	वह कस्में खाते हैं	अल्लाह की
وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوا						
हालांकि ज़रूर उन्होंने ने कहा	कलिमा	कुफ़ का	और उन्होंने ने कुफ़ किया	वाद	उन का (अपना) इस्लाम	और कसद किया उन्होंने ने
بِمَا لَمْ يَنَالُوا وَمَا نَقَمُوا إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ						
उस का जो	उन्हें न मिली	और उन्होंने ने बदला न दिया	मगर	यह कि	उन्हें ग़नी कर दिया अल्लाह	और उस का रसूल
مِنْ فَضْلِهِ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ خَيْرًا لَهُمْ ۖ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا						
से	अपना फ़ज़ल	सो अगर	वह तौबा कर लें	होगा	बेहतर	उन के लिए
और अगर	वह फिर जाएं					
يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ						
अज़ाब देगा उन्हें अल्लाह	अज़ाब	दर्दनाक	दुनिया में	और आख़िरत	और नहीं	उन के लिए
فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيِّ وَلَا نَصِيرٌ ﴿٧٤﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللَّهُ لَئِنْ						
ज़मीन में	कोई	हिमायती	और न	कोई मददगार	74	और उन से
अलबत्ता - अगर	अहद किया अल्लाह से	जो				
اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهِ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿٧٥﴾						
हमें दे वह	से	अपना फ़ज़ल	ज़रूर सदका दें हम	और हम ज़रूर हो जाएंगे	से	सालिहीन
75						
فَلَمَّا اٰتٰهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٧٦﴾						
फिर जब	उस ने दिया उन्हें	से	अपना फ़ज़ल	उन्होंने ने बुख़ल किया	उस में	और फिर गए
76						
فَاعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ اِلٰى يَوْمٍ يَلْقَوْنَهُ بِمَا اٰخَلَفُوا						
तो उस ने उन का अन्जाम कार किया	निफ़ाक़	में	उन के दिल	तक	उस रोज़	वह उस से मिलेंगे
उन्होंने ने ख़िलाफ़ किया	क्यों कि					
اللَّهُ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوا						
अल्लाह	जो	उस से उन्होंने ने वादा किया	और क्यों कि	वह झूट बोलते थे	77	क्या नहीं
वह जानते						
اَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۖ وَاَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ						
कि अल्लाह	जानता है	उन के भेद	और उन की सरगोशियां	और यह कि अल्लाह	ख़ूब जानने वाला	
الْغُيُوبِ ﴿٧٨﴾ الَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ						
ग़ैब की बातें	78	वह लोग जो	ऐब लगाते हैं	खुशी से करते हैं	से (जो)	मोमिन (जमा)
فِي الصّٰدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ						
में	और सदका (जमा) ख़ैरात	और वह लोग जो	जो वह नहीं पाते	मगर	अपनी मेहनत	
فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۖ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيمٌ ﴿٧٩﴾						
वह मज़ाक़ करते हैं	उन से	अल्लाह ने मज़ाक़ (का जवाब) दिया	उन से	और उन के लिए	अज़ाब	दर्दनाक
79						

إِسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً									
बार	सत्तर (70)	उन के लिए	आप (स) बख़्शिश मांगें	अगर	उन के लिए	बख़्शिश न मांग	या	उन के लिए	तू बख़्शिश मांग
فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ									
और उस का रसूल	अल्लाह से	उन्होंने ने कुफ़ किया	क्योंकि वह	यह	उन को	बख़्शेगा अल्लाह	तो	हरगिज़ न	
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ (٨٠) فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ									
अपने बैठ रहने से	पीछे रहने वाले	खुश हुए	80	नाफ़रमान (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	और	अल्लाह	
خَلَفَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ									
और अपनी जानें	अपने मालों से	वह जिहाद करें	कि	और उन्होंने ने नापसन्द किया	अल्लाह का रसूल	पीछे			
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ									
सब से ज़ियादा	जहनन्म की आग	आप कह दें	गर्मी	में	ना कूच करो	और उन्होंने ने कहा	अल्लाह की राह	में	
حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ (٨١) فَلْيُضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا									
ज़ियादा	और रोएं	थोड़ा	चाहिए वह हसें	81	वह समझ रखते	काश	गर्मी में		
جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ (٨٢) فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ									
किसी गिरोह	तरफ़	अल्लाह आप को वापस ले जाए	फिर अगर	82	वह कमाते थे	उस का जो	वदला		
مِنْهُمْ فَاسْتَأْذِنُواكَ لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا									
कभी भी	मेरे साथ	तुम हरगिज़ न निकलोगे	तो आप कह दें	निकलने के लिए	फिर वह आप (स) से इजाज़त मांगें	उन से			
وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ									
बार	पहली	बैठ रहने को	तुम ने पसन्द किया	वेशक तुम	दुश्मन	मेरे साथ	और हरगिज़ न लड़ोगे		
فَأَقْعُدُوا مَعَ الْخُلَفَاءِ (٨٣) وَلَا تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ									
मर गया	उन से	कोई	पर	और न पढ़ना नमाज़	83	पीछे रह जाने वाले	साथ	सो तुम बैठो	
أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا									
और वह मरे	और उस का रसूल	अल्लाह से	उन्होंने ने कुफ़ किया	वेशक वह	उस की कब्र	पर	और न खड़े होना	कभी	
وَهُمْ فَسِقُونَ (٨٤) وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ									
चाहता है	सिर्फ़	और उन की औलाद	उन के माल	और आप (स) को तज़जुब में न डालें	84	नाफ़रमान	जब कि वह		
اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ (٨٥)									
85	काफ़िर हों	जब कि वह	उन की जानें	और निकलें	दुनिया में	उस से	उन्हें अज़ाब दे	कि	अल्लाह
وَإِذَا أَنْزَلَتْ سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ									
उस का रसूल	साथ	और जिहाद करो	अल्लाह पर	ईमान लाओ	कि	कोई सूरत	नाज़िल की जाती है	और जब	
اسْتَأْذَنَكَ أُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُنْ مَعَ الْقَعْدِينَ (٨٦)									
86	बैठ रह जाने वाले	साथ	हम हो जाएं	छोड़ दे हमें	और कहते हैं	उन से	मक़दूर वाले (मालदार)	आप से इजाज़त चाहते हैं	

आप (स) उन के लिए बख़्शिश मांगें या उन के लिए बख़्शिश न मांगें (बराबर है), अगर आप (स) उन के लिए सत्तर (70) बार

(भी) बख़्शिश मांगें तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा, यह इस लिए कि उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से कुफ़ किया, और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (80)

पीछे रह जाने वाले अपने बैठ रहने से खुश हुए, रसूल (स) (तबूक के लिए निकलने) के बाद, और उन्होंने ने नापसन्द किया कि वह जिहाद करें अपने मालों से और अपनी जानों से अल्लाह कि राह में, और उन्होंने ने कहा गर्मी में कूच न करो, आप (स) कह दें जहनन्म की आग गर्मी में सब से ज़ियादा है, काश वह समझ सकते। (81)

चाहिए कि वह हसें थोड़ा और रोएं ज़ियादा, यह उस का वदला है जो वह कमाते थे। (82)

फिर अगर अल्लाह आप को किसी गिरोह कि तरफ़ वापस ले जाए उन में से, फिर वह आप (स) से (जिहाद के लिए) निकलने की इजाज़त मांगें तो आप (स) कह दें:

तुम मेरे साथ कहीं भी हरगिज़ न निकलोगे, और हरगिज़ न लड़ोगे दुश्मन से मेरे साथ (मिल कर), वेशक तुम ने पहली बार बैठ रहने को पसन्द किया, सो तुम पीछे रहजाने वालों के साथ बैठो। (83)

उन में से कोई मर जाए तो कभी उस पर नमाज़े (जनाज़ा) न पढ़ना और न उस कि कब्र पर खड़े होना, वेशक उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से कुफ़ किया और वह (उस हाल में) मरे जब कि वह नाफ़रमान थे। (84)

और आप (स) को तज़जुब में न डालें उन के माल और उन की औलाद, अल्लाह तो सिर्फ़ यह चाहता है कि उन्हें उस से दुनिया में अज़ाब दे और (उस हाल में) उन की जानें निकलें जब कि वह काफ़िर हों। (85)

और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के रसूल (स) के साथ (मिल कर) जिहाद करो तो उन में से मक़दूर वाले आप से इजाज़त चाहते हैं, और कहते हैं हमें छोड़ दे कि हम बैठ रह जाने वालों के साथ हो जाएं। (86)

वह राज़ी हुए कि पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ हो जाएं, और मुहर लग गई उन के दिलों पर, सो वह समझते नहीं। (87)

लेकिन रसूल (स) और वह लोग जो उन के साथ ईमान लाए उन्होंने ने अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद किया, और उन्हीं लोगों के लिए भलाइयां हैं, और यही लोग फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले हैं। (88)

अल्लाह ने उन के लिए बागात तैयार किए हैं, उन के नीचे नहरे जारी हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (89)

और देहातियों में से बहाना बनाने वाले आए कि उन को रुख़सत दी जाए, और वह लोग बैठ रहे जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल (स) से झूट बोला, अन्करीब पहुँचेगा उन लोगों को दर्दनाक अज़ाब जिन्होंने ने कुफ़ किया। (90)

नहीं कोई हर्ज ज़ईफ़ो पर और न मरीज़ों पर, न उन लोगों पर जो नहीं पाते कि वह खर्च करें, जब कि वह ख़ैर खाह हों अल्लाह और उस के रसूल के, नेकी करने वालों पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (91)

और न उन लोगों पर (कोई हर्ज है) कि जब आप (स) के पास आए कि आप उन्हें सवारी दें, तो आप (स) ने कहा कि (कोई सवारी) नहीं कि उस पर तुम्हें सवार करूँ, तो वह (उस हाल में) लौटे और ग़म से उन की आँखों से आंसू बह रहे थे कि वह कुछ नहीं पाते जो वह खर्च कर सकें। (92)

इल्ज़ाम सिर्फ़ उन लोगों पर है जो आप (स) से इजाज़त चाहते हैं और वह ग़नी (माल दार) हैं, वह उस से खुश हुए कि वह रह जाएं पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ, और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, सो वह कुछ नहीं जानते। (93)

رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ							
उन के दिल	पर	और मुहर लग गई	पीछे रह जाने वाली औरतें	साथ	हो जाएं	कि वह	वह राज़ी हुए
فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٨٧﴾ لَكِنَّ الرِّسُولَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ							
उस के साथ	ईमान लाए	और वह लोग जो	रसूल	लेकिन	87	समझते नहीं	सो वह
جَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ وَأَوْلِيَّكَ لَهُمُ الْخَيْرُ							
भलाइयां	उन के लिए	और यही लोग	और अपनी जानें	अपने मालों से		उन्होंने ने जिहाद किया	
وَأَوْلِيَّكَ هُمْ الْمُفْلِحُونَ ﴿٨٨﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي							
जारी है	बागात	उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया	88	फ़लाह पाने वाले	वह	और यही लोग
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٨٩﴾							
89	बड़ी	कामयाबी	यह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे
وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ							
वह लोग जो	बैठ रहे	उन को	कि रुख़सत दी जाए	देहाती (जमा)	से	बहाना बनाने वाले	और आए
كَذَّبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ							
उन से	उन्हो ने कुफ़ किया	वह लोग जो	अनकरीब पहुँचेगा	और उस का रसूल	अल्लाह	झूट बोला	
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا							
और न	मरीज़ (जमा)	पर	और न	ज़ईफ़ (जमा)	पर	नहीं	90 दर्दनाक अज़ाब
عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ							
अल्लाह के लिए	वह ख़ैर खाह हों	जब	कोई हर्ज	वह खर्च करें	जो	नहीं पाते	वह लोग जो पर
وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩١﴾							
91	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	कोई राह (इल्ज़ाम)	नेकी करने वाले	पर	नहीं और उस के रसूल
وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ							
मैं नहीं पाता	आप ने कहा	ता कि आप (स) उन्हें सवारी दें	आप के पास आए		जब	वह लोग जो	पर और न
مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَأَعْيَيْنُهُمْ تَفِيضٌ مِنَ الدَّمْعِ							
आंसू (जमा)	से	वह रहे थे	और उन की आँखें	वह लौटे	उस पर	तुम्हें सवार करूँ	
حَزَنًا إِلَّا يَجِدُوا مَا يُنْفِقُونَ ﴿٩٢﴾ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ							
वह लोग जो	पर	रास्ता (इल्ज़ाम)	इस के सिवा नहीं (सिर्फ)	92	वह खर्च करें	जो	कि वह नहीं पाते ग़म से
يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْيَاءٌ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا							
वह हो जाएं	कि	वह खुश हुए	ग़नी (जमा)	और वह	आप (स) से इजाज़त चाहते हैं		
مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٣﴾							
93	नहीं जानते	सो वह	उन के दिल	पर	और अल्लाह ने मुहर लगादी	पीछे रह जाने वाली औरतें	साथ

يَعِزُّدِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ										
उन की तरफ		तुम लौट कर जाओगे		जब	तुम्हारे पास		उज़र लाएंगे			
قُلْ لَا تَعْتَذِرُوا لَنْ تُؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ										
तुम्हारी सब ख़बरें (हालात)		अल्लाह	हमें बता चुका है		तुम्हारा	हरगिज़ हम यकीन न करेंगे		उज़र न करो		आप (स) कह दें
وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَى عِلْمِ الْغَيْبِ										
पोशीदा	जानने वाले	तरफ	तुम लौटाए जाओगे	फिर	और उस का रसूल		तुम्हारे अमल	अल्लाह	और अभी देखेगा	
وَالشَّهَادَةِ فَيَنْبِئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾ سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ										
अल्लाह की	अब कस्में खाएंगे		94	तुम करते थे		वह जो	फिर वह तुम्हें जता देगा		और ज़ाहिर	
لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِيُخْبِرُوا عَنْهُمْ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ										
उन से	सो तुम मुँह मोड़ लो		उन से	ताकि तुम दरगुज़र करो		उन की तरफ	वापस जाओगे तुम		जब तुम्हारे आगे	
إِنَّهُمْ رَجَسٌ وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٥﴾										
95	वह कमाते		थे	उस का जो	बदला	जहन्नम	और उन का ठिकाना		वेशक वह	
يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِيَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ										
तो वेशक अल्लाह		उन से	तुम राज़ी हो जाओ	सो अगर	उन से	ताकि तुम राज़ी हो जाओ		तुम्हारे आगे	वह कस्में खाते हैं	
لَا يَرْضَى عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٩٦﴾ الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا										
कुफ़ में	बहुत सख़्त		देहाती	96	नाफरमान		लोग	से	राज़ी नहीं होता	
وَنِفَاقًا وَاجْدُرُ إِلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى										
पर	अल्लाह	नाज़िल किए	जो	एहकाम		कि वह न जानें		और ज़ियादा लाइक	और निफाक में	
رَسُولِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٩٧﴾ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ										
लेते हैं (समझते हैं)		जो	देहाती	और से (वाज़)	97	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपना रसूल (स)	
مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمْ الدَّوَائِرُ عَلَيْهِمْ										
उन पर		गर्दिशें		तुम्हारे लिए	और इन्तिज़ार करते हैं		तावान	जो वह खर्च करते हैं		
دَائِرَةُ السَّوْءِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ										
जो	देहाती	और से (वाज़)	98	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	बुरी	गर्दिश		
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبًا										
नज़्दीकियां		जो वह खर्च करें		और समझते हैं		और आख़िरत का दिन		अल्लाह पर	ईमान रखते हैं	
عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوَاتُ الرَّسُولِ إِلَّا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَهُمْ										
उन के लिए		नज़्दीकी	यकीनन वह	हां हां	रसूल	और दुआएं		अल्लाह से		
سَيَدْخُلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩٩﴾										
99	निहायत मेहरबान	बख़शने वाला	वेशक अल्लाह	अपनी रहमत		में	अल्लाह	जल्द दाख़िल करेगा उन्हें		

जब तुम उन की तरफ़ लौट कर जाओगे तो वह तुम्हारे पास उज़र लाएंगे। कह दो कि उज़र न करो, हम हरगिज़ यकीन न करेंगे तुम्हारा, अल्लाह हमें तुम्हारी सब ख़बरें बता चुका है, और अभी अल्लाह तुम्हारे अमल देखेगा और उस का रसूल (स), फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर वह तुम्हें जता देगा तुम जो करते थे। (94)

जब तुम उन की तरफ़ वापस जाओगे तब तुम्हारे आगे अल्लाह की कस्में खाएंगे ताकि तुम उन से दरगुज़र करो, सो तुम उन से मुँह मोड़ लो, वेशक वह पलीद हैं, और उन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (95)

वह तुम्हारे आगे कस्में खाते हैं ताकि तुम उन से राज़ी हो जाओ, सो अगर तुम उन से राज़ी (भी) हो जाओ तो वेशक अल्लाह राज़ी नहीं होता नाफ़रमान लोगों से। (96)

देहाती कुफ़ और निफ़ाक में बहुत सख़्त हैं, और ज़ियादा इमकानात हैं कि वह न जानें जो एहकाम अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर नाज़िल किए, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (97)

और बाज़ देहाती हैं जो (अल्लाह की राह में) जो खर्च करते हैं उसे तावान समझते हैं और तुम्हारे लिए गर्दिशों का इन्तिज़ार करते हैं, उन्हीं पर है बुरी गर्दिश, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (98)

और बाज़ देहाती हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो वह खर्च करते हैं उसे अल्लाह से नज़्दीकियों और रसूल (स) की दुआएं (लेने का ज़रीआ) समझते हैं, हां हां! यकीनन वह नज़्दीकी का (ज़रीआ) है उन के लिए, अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, वेशक अल्लाह बख़शने वाला निहायत मेहरबान है। (99)

और सब से पहले (ईमान और इस्लाम में) सबक़त करने वाले मुहाजरीन और अनुसार में से, और जिन्होंने ने नेकी के साथ पैरवी की, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह उस से राज़ी हुए, और उस ने उन के लिए बागात तैयार किए हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (100)

और जो देहाती तुम्हारे इर्द गिर्द हैं उन में से बाज़ मुनाफ़िक़ है, और मदीने वालों में से बाज़ निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं और हम जल्द उन्हें दो बार अज़ाब देंगे, फिर वह अज़ाबे अज़ीम की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (101)

और कुछ और हैं जिन्होंने ने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया, उन्होंने ने एक अच्छा और दूसरा बुरा अमल मिला लिया, करीब है कि अल्लाह उन्हें माफ़ करदे, बेशक़ अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (102)

आप (स) उन के मालों में से ज़कात ले लें, आप (स) उन्हें पाक और साफ़ कर दें उस से, और उन पर दुआए (ख़ैर) करें, बेशक़ आप (स) की दुआ उन के लिए (वाइसे) सुकून है और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (103) क्या उन्हें इल्म नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा कुबूल करता है, और कुबूल करता है सदकात और यह कि अल्लाह ही तौबा कुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (104)

और आप (स) कहें तुम अमल किए जाओ, पस अब देखेगा अल्लाह और उस का रसूल (स) और मोमिन तुम्हारे अमल, और तुम जल्द पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, सो वह तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। (105)

और कुछ और हैं वह अल्लाह के हुक्म पर मौकूफ़ रखे गए हैं, ख़्वाह वह उन्हें अज़ाब दे और ख़्वाह उन की तौबा कुबूल कर ले, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (106)

وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهِجَرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ																	
और जिन लोगों		और अनुसार		मुहाजरीन		से		सब से पहले		और सबक़त करने वाले							
اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ																	
उन के लिए		और तैयार किया उस ने		उस से		और वह राज़ी हुए		राज़ी हुआ अल्लाह उन से		नेकी के साथ		उस की पैरवी की					
جَنَّتِ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ																	
यह		हमेशा		उन में		हमेशा रहेंगे		नहरें		उन के नीचे		बहती है		बागात			
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنْفِقُونَ وَمِنْ																	
और से (बाज़)		मुनाफ़िक़ (जमा)		देहाती		से बाज़		तुम्हारे इर्द गिर्द		और उन में जो		100		कामयाबी बड़ी			
أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَرَدُّوا عَلَى النَّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ																	
हम		तुम नहीं जानते उन को		निफ़ाक़		पर		अड़े हुए हैं		मदीने वाले							
نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾																	
101		अज़ीम		अज़ाब		तरफ़		वह लौटाए जाएंगे		फिर		दो बार		जल्द हम उन्हें अज़ाब देंगे		जानते हैं उन्हें	
وَأَخْرُوجُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا																	
बुरा		और दूसरा		एक अमल अच्छा		उन्होंने मिलाया		अपने गुनाहों का		उन्होंने एतराफ़ किया		और कुछ और					
عَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠٢﴾ خُذْ																	
ले लें आप (स)		102		निहायत मेहरबान		बख़्शने वाला		बेशक अल्लाह		माफ़ कर दे उन्हें		कि		अल्लाह करीब है			
مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلَّ عَلَيْهِمْ																	
उन पर		और दुआ करो		उस से		और साफ़ कर दो		तुम पाक कर दो		ज़कात		उनके माल (जमा)		से			
إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٣﴾ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ																	
कि		क्या उन्हें इल्म नहीं		103		जानने वाला		सुनने वाला		और अल्लाह		उन के लिए		सुकून आप (स) की दुआ		बेशक	
اللَّهُ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ																	
सदकात		और कुबूल करता है		अपने बन्दे		से - की		तौबा		कुबूल करता है		वह		अल्लाह			
وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمٌ ﴿١٠٤﴾ وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ																	
अल्लाह		पस अब देखेगा		तुम किए जाओ अमल		और कह दें आप (स)		104		निहायत मेहरबान		तौबा कुबूल करने वाला		वह		और यह कि अल्लाह	
عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَيُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ																	
जानने वाला पोशीदा		तरफ़		और जल्द लैटाए जाओग		और मोमिन (जमा)		और उसका रसूल (स)		तुम्हारे अमल							
وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾ وَأَخْرُوجُونَ مُرْجُونَ																	
मौकूफ़ रखे गए		और कुछ और		105		तुम करते थे		वह जो		सो वह तुम्हें जता देगा		और ज़ाहिर					
لَا مَرَّ لِلَّهِ إِلَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِنَّمَا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠٦﴾																	
106		हिक्मत वाला		जानने वाला		और अल्लाह		तौबा कुबूल कर ले उन की		और ख़्वाह		वह उन्हें अज़ाब दे		ख़्वाह		अल्लाह के हुक्म पर	

عند التّائيبين
وقيل منزل

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ						
और वह लोग जो	उन्होंने ने बनाई	मस्जिद	नुक्सान पहुँचाने को	और कुफ़ के लिए	और फूट डालने को	दरमियान
الْمُؤْمِنِينَ وَإِزْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ						
मोमिनों (जमा)	और घात की जगह बनाने के लिए	उस के वासते जो	उस ने जंग की	अल्लाह	और उस का रसूल (स)	से पहले
وَلِيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ						
और वह अलबत्ता कस्में खाएंगे	नहीं	हम ने चाहा	मगर (सिर्फ)	भलाई	और अल्लाह	वह यकीनन
لَكَذِبُونَ ﴿١٠٧﴾ لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ						
झूटे हैं	107	आप (स) न खड़े होना	उस में	कभी	वेशक वह मस्जिद	बुन्याद रखी गई
مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ						
से पहले दिन	ज़ियादा लाइक	कि	आप (स) खड़े हों उस में	उस में	ऐसे लोग	वह चाहते हैं कि
يَتَّظَهُرُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ ﴿١٠٨﴾ أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ						
वह पाक रहें	और अल्लाह	महबूब रखता है	पाक रहने वाले	108	सो क्या वह जो	बुन्याद रखी
عَلَى تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ						
पर तक्वा (खौफ)	अल्लाह से	और खुशनूदी	वेहतर	या	जो - जिस	बुन्याद रखी
عَلَى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ وَاللَّهُ						
पर किनारा	खाई	गिरने वाला	गिर पड़ी	सो गिर	उस को लेकर	में और अल्लाह
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٩﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا						
हिदायत नहीं देता	लोग	ज़ालिम (जमा)	109	हमेशा रहेगी	उन की इमारत	जो कि बुन्याद रखी
رِيْبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾						
में	उन के दिल	मगर	यह कि टुकड़े हो जाएं	उन के दिल	और अल्लाह	जानने वाला
إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ						
वेशक अल्लाह	खरीद लिए	से	मोमिन (जमा)	उन की जानें	और उन के माल	
بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ						
उस के बदले	उन के लिए	जन्नत	वह लड़ते हैं	में	अल्लाह की राह	सो वह मारते हैं
وَيُقْتَلُونَ وَعَدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ						
और मारे जाते हैं	वादा	उस पर	सच्चा	तौरात में	और इंजील	
وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا						
और कुरआन	और कौन	ज़ियादा पूरा करने वाला	अपना वादा	अल्लाह से	पस खुशियां मनाओ	
بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾						
सो अपने सौदे पर	जो कि	तुम ने सौदा किया	उस से	और यह	वह	कामयाबी

और वह लोग जिन्होंने ने मस्जिद ज़रार (नुक्सान पहुँचाने के लिए) बनाई और कुफ़ करने के लिए, और मोमिनों के दरमियान फूट डालने के लिए और उस के वासते घात की जगह बनाने के लिए जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से जंग की उस से पहले, और वह अलबत्ता कस्में खाएंगे कि हम ने सिर्फ भलाई चाही, और अल्लाह गवाही देता है वह यकीनन झूटे हैं। (107)

आप (स) उस में कभी न खड़े होना, वेशक वह मस्जिद जिस की बुन्याद पहले दिन से तक्वे पर रखी गई है ज़ियादा लाइक है कि आप (स) उस में खड़े हों, उस में ऐसे लोग हैं जो चाहते हैं कि वह पाक रहें, और अल्लाह महबूब रखता है पाक रहने वालों को। (108)

सो क्या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद अल्लाह के खौफ और (उस की) खुशनूदी पर रखी, वह वेहतर है? या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद गिरने वाली खाई (गढ़े) के किनारे पर रखी? सो वह उसको लेकर दोज़ख की आग में गिर पड़ी, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (109)

वह इमारत जिस की उन्होंने ने बुन्याद रखी है हमेशा शक डालती रहेगी उन के दिलों में, मगर यह कि उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (110)

वेशक अल्लाह ने खरीद ली मोमिनों से उन की जानें और उन के माल, उस के बदले कि उन के लिए जन्नत है, वह लड़ते हैं अल्लाह की राह में, सो वह मारते हैं और मारे (भी) जाते हैं, उस पर सच्चा वादा है तौरात में, और इंजील और कुरआन में, और अल्लाह से ज़ियादा कौन अपना वादा पूरा करने वाला है? पस अपने उस सौदे पर खुशियां मनाओ जो तुम ने उस से सौदा किया है, और यह अज़ीम कामयाबी है। (111)

तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द ओ सना करने वाले, (अल्लाह की राहे में) सफ़र करने वाले, रुकूअ करने वाले, सिज्दा करने वाले, नेकी का हुक्म देने वाले, और बुराई से रोकने वाले, और अल्लाह की (काइम करदा) हुदूद की हिफाज़त करने वाले, और मोमिनों को खुशख़बरी दो। (112) नबी (स) के लिए और मोमिनों के लिए (शायों) नहीं कि वह मुश्रिकों के लिए बख़्शिश चाहें, अगरचे वह उन के करावतदार हों, उस के बाद जब कि उन पर ज़ाहिर हो गया कि वह दोज़ख़ वाले हैं। (113) और इब्राहीम (अ) का अपने बाप के लिए बख़्शिश चाहना न था मगर एक वादे के सबब जो वह उस (बाप) से कर चुके थे, फिर जब उन पर ज़ाहिर हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उस से बेज़ार हो गए, बेशक इब्राहीम (अ) नर्म दिल बुरदवार थे। (114) और अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी को उस के बाद गुमराह करे, जबकि उस ने उन्हें हिदायत दे दी जब तक उन पर वाज़ेह न कर दे जिस से वह परहेज़ करें, बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (115) बेशक अल्लाह ही के लिए है वादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, वह ज़िन्दगी देता है और (वही) मारता है, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई हीमायती है और न मददगार। (116) अलबत्ता तबज्जुह फ़रमाई अल्लाह ने नबी (स) पर, और मुहाजरीन ओ अनुसार पर, वह जिन्होंने तंगी की घड़ी में उस की पैरवी की, उस के बाद जबकि करीब था कि उन में से एक फ़रीक़ के दिल फिर जाएं, फिर वह उन पर मुतबज्जुह हुआ, बेशक वह उन पर इन्तिहाई शफ़ीक़, निहायत मेहरबान है। (117)

التَّائِبُونَ الْعَبْدُونَ الْحَمِيدُونَ الشَّائِحُونَ الرُّكْعُونَ					
रुकूअ करने वाले	सफ़र करने वाले	हम्द ओ सना करने वाले	इबादत करने वाले	तौबा करने वाले	
السَّجِدُونَ الْأَمْرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ					
सिज्दा करने वाले	हुक्म देने वाले	नेकी का	और रोकने वाले	से	बुराई
وَالْحَفِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾ مَا كَانَ					
और हिफाज़त करने वाले	अल्लाह की हुदूद की	और खुशख़बरी दो	मोमिन (जमा)	112	नहीं है
لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ					
नबी के लिए	और जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	कि	वह बख़्शिश चाहें	मुश्रिकों के लिए	
وَلَوْ كَانُوا أَوْلَىٰ قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ					
ख़्वाह	वह हों	करावतदार	उस के बाद	जब ज़ाहिर हो गया	उन पर कि वह
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ					
दोज़ख़ वाले	113	और न था	बख़्शिश चाहना	इब्राहीम (अ)	अपने बाप के लिए
إِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ					
मगर	एक वादे के सबब	जो उस ने वादा किया	उस से	फिर जब	ज़ाहिर हो गया उस पर कि वह
عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَمَا كَانَ اللَّهُ					
अल्लाह का दुश्मन	वह बेज़ार हो गया	उस से	बेशक	इब्राहीम (अ)	नर्म दिल
لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَيْهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ					
कि वह गुमराह करे	कोई कौम	वाद	जब उन्हें हिदायत दे दी	जब तक	वाज़ेह करदे उन पर
مَا يَتَّقُونَ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ					
जिस	वह परहेज़ करें	बेशक अल्लाह	हर शै का	जानने वाला	115
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَمَا لَكُمْ					
आस्मानों	और ज़मीन	वही ज़िन्दगी देता है	और वह मारता है	और तुम्हारे लिए नहीं	
مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيِّ وَلَا نَصِيرٌ ﴿١١٦﴾ لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَىٰ					
कोई	अल्लाह के सिवा	से	कोई हीमायती	और न मददगार	116
النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي					
नबी (स)	और मुहाजरीन	और अनुसार	वह जिन्होंने ने	उस की पैरवी की	में
سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبَ فَرِيقٍ					
घड़ी	तंगी	उस के बाद	जब करीब था	फिर जाएं	दिल (जमा) एक फ़रीक़
مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٧﴾					
उन से	फिर वह मुतबज्जुह हुआ	उन पर	बेशक वह	उन पर	117

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا حَتَّى إِذَا صَاقَتْ عَلَيْهِمُ							
और पर	वह तीन	वह जो	पीछे रखा गया	यहां तक कि	जब	तंग होगई	उन पर
الْأَرْضِ بِمَا رَحِبَتْ وَصَاقَتْ عَلَيْهِمُ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَنْ							
ज़मीन	बावजूद कुशादगी	और वह तंग हो गई	उन पर	उन की जानें	और उन्होंने ने जान लिया	कि	
لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا							
नहीं पनाह	से	अल्लाह	मगर	उस की तरफ़	फिर	वह मुतबज़्जुह हुआ उन पर	ताकि वह तौबा करें
إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١١٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ							
बेशक अल्लाह	वह	तौबा कुबूल करने वाला	निहायत मेहरबान	118	ऐ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	डरो अल्लाह से
وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ﴿١١٩﴾ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ							
और हो जाओ	साथ	सच्चे लोग	119	न था	मदीने वालों को	और जो	
حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ							
उन के इर्द गिर्द	देहातियों में से	कि वह पीछे रहजाते	से	अल्लाह के रसूल (स)			
وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ							
और यह कि ज़ियादा चाहें वह	अपनी जानों को	से	उन की जान	यह	इस लिए कि वह	नहीं पहुँचती उन को	
ظَمًا وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطْئُونَ							
कोई पयास	और न कोई मुशक्कत	और न	कोई भूख	में	अल्लाह की राह	और न वह कदम रखते हैं	
مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نِيْلًا إِلَّا							
ऐसा कदम	गुस्सा हों	काफिर (जमा)	और न वह छीनते हैं	से	दुश्मन	कोई चीज़	मगर
كُتِبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾							
लिखा जाता है उन के लिए	उस से	नेक अमल	बेशक अल्लाह	ज़ाया नहीं करता	अजर	नेकोकार (जमा)	120
وَلَا يُنْفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ							
और न	वह खर्च करते हैं	खर्च	छोटा	और न बड़ा	और न तै करते हैं		
وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا							
कोई वादी (मैदान)	मगर	लिखा जाता है उन के लिए	ताकि जज़ा दे उन्हें	अल्लाह	बेहतरीन	जो	
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً فَلَوْلَا نَفَرَ							
वह करते थे (उन के आमाल)	121	और नहीं है	मोमिन (जमा)	कि वह कूच करें	सब के सब	पस क्यों न कूच करे	
مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ							
से	हर गिरोह	उन से (उन की)	एक जमाअत	ताकि वह समझ हसिल करें	दीन में		
وَلِيُنْذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾							
और ताकि वह डर सुनाएं	अपनी कौम	जब	वह लौटें	उन की तरफ़	ताकि वह (अजब नहीं)	बचते रहें	122

और उन तीन पर (ज़िन का मामला) पीछे रखा गया था, यहां तक कि उन पर तंग होगई ज़मीन अपनी कुशादगी के बावजूद, और उन पर उन की जानें तंग हो गई (अपनी जानों से तंग आगए) और उन्होंने ने जान लिया कि अल्लाह से कोई पनाह नहीं मगर उसी कि तरफ़ है, फिर वह उन पर (अपनी रहमत से) मुतबज़्जुह हुआ ताकि वह तौबा करें, बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (118) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ। (119) (लाइक) न था मदीने वालों को (और उन्हें) जो उन के इर्द गिर्द देहाती हैं कि वह अल्लाह के रसूल (स) से पीछे रहजाएं, और यह कि वह ज़ियादा चाहें अपनी जानों को उन (स) की जान से, यह इस लिए कि उन को नहीं पहुँचती कोई प्यास, और न कोई मुशक्कत, और न कोई भूख, अल्लाह की राह में, और न वह ऐसा कदम रखते हों कि काफिर गुस्सा हों और न वह छीनते हैं दुश्मन से कोई चीज़, मगर उस से (उस के बदले) उन के लिए नेक अमल लिखा जाता है, बेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकोकारों का। (120) और वह कोई छोटा या बड़ा (कम या ज़ियादा) खर्च नहीं करते और न वह तै करते हैं कोई मैदान, मगर उन के लिए लिख दिया जाता है, ताकि अल्लाह उन के आमाल की उन्हें बेहतरीन जज़ा दे। (121) और (ऐसे तो) नहीं कि मोमिन सब के सब कूच करें। पस क्यों न उन के हर गिरोह में से एक जमाअत कूच करे ताकि वह समझ हसिल करें दीन में, और ताकि वह अपनी कौम को डर सुनाएं जब उन की तरफ़ लौटें, अजब नहीं कि वह बचते रहें। (122)

ऐ मोमिनो! अपने नज़दीक के काफ़िरों से लड़ो, और चाहिए कि वह तुम्हारे अन्दर पाएँ सख्ती, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (123)

और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है तो उन में से बाज़ कहते हैं उस ने तुम में से किस का ईमान ज़ियादा कर दिया है? सो जो लोग ईमान लाए हैं उस ने ज़ियादा कर दिया है उन का ईमान, और वह खुशियां मनाते हैं, (124)

और वह लोग जिन के दिलों में बीमारी है, उस ने ज़ियादा कर दी उन की गन्दगी पर गन्दगी, और वह मरने तक काफ़िर ही रहे। (125)

क्या वह नहीं देखते कि वह हर साल आज़माए जाते हैं? एक बार या दो बार, फिर न वह तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं। (126)

और जब उतारी जाती है कोई सूरत तो उन में से एक दूसरे को देखने लगता है, क्या तुम्हें कोई (मुसलमान) देखता है? फिर वह फिर जाते हैं, अल्लाह ने उन के दिल फेर दिए, क्योंकि वह लोग समझ नहीं रखते। (127)

अलबत्ता तुम्हारे पास आया एक रसूल (स) तुम में से, जो तुम्हें तकलीफ़ पहुँचे उस पर ग़रां है, तुम्हारी (भलाई) का बहुत ख़ाहिशमन्द है, मोमिनो पर शफ़ीक़, निहायत मेहरबान है। (128)

फिर अगर वह मुँह मोड़ें तो आप (स) कह दें मुझे काफ़ी है अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया, और वह अर्श अज़ीम का मालिक है। (129)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ									
नज़दीक तुम्हारे		वह जो		लड़ो		वह जो ईमान लाए (मोमिन)	ऐ		
مِّنَ الْكُفَّارِ وَلِيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ									
कि अल्लाह		और जान लो		सख्ती		तुम्हारे अन्दर	और चाहिए कि वह पाएं	कुपफ़ार से (काफ़िर)	
مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ									
कहते हैं		बाज़	तो उन में से	कोई सूरत	नाज़िल की जाती	और जब	123	परहेज़गारों के साथ	
أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَذِهِ إِيمَانًا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا									
वह लोग जो ईमान लाए			सो जो		ईमान	उस ने	ज़ियादा कर दिया (उस का)	तुम में से किस	
فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾ وَأَمَّا									
और जो		124	खुशियां मनाते हैं			और वह	ईमान	उस ने ज़ियादा कर दिया उन का	
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ									
तरफ़ (पर)	गन्दगी	उस ने ज़ियादा कर दी उन की		बीमारी		उन के दिल (जमा)		में वह लोग जो	
رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿١٢٥﴾ أَوَلَا يَرَوْنَ									
क्या नहीं वह देखते		125	काफ़िर (जमा)		और वह	और वह मरे		उन की गन्दगी	
أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ									
फिर	दो बार		या	एक बार	हर साल में		आज़माए जाते हैं	कि वह	
لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذْكُرُونَ ﴿١٢٦﴾ وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ									
कोई सूरत	और उतारी जाती है		और जब		126	नसीहत पकड़ते हैं	वह	और न न वह तौबा करते हैं	
نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرِيكُمْ مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ									
फिर	कोई		देखता है तुम्हें		क्या	बाज़ (दूसरे)	को	उन में से (कोई एक)	देखता है
انصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ									
लोग		क्योंकि वह		उन के दिल		अल्लाह	फेर दिए	वह फिर जाते हैं	
لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ									
गरां		तुम्हारी जानें (तुम)		से	एक रसूल (स)	अलबत्ता तुम्हारे पास आया		127	समझ नहीं रखते
عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ									
इन्तिहाई शफ़ीक़		मोमिनों पर			तुम पर		हरीस (बहुत खाहिशमन्द)	तुम्हें तकलीफ़ पहुँचे	जो उस पर
رَحِيمٌ ﴿١٢٨﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ									
उस के सिवा		कोई माबूद	नहीं	अल्लाह	मुझे काफ़ी है		तो कह दें	फिर अगर वह मुंह मोड़ें	128 निहायत मेहरबान
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾									
129		अज़ीम			अर्श		मालिक	और वह	मैं ने भरोसा किया उस पर

آيَاتُهَا ۱۰۹ ﴿ (۱۰) سُورَةُ يُونُس ﴿ رُكُوعَاتُهَا ۱۱										
रुकुआत 11			(10) सूरह यूनुस यूनुस (अ)				आयात 109			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है										
الرَّ ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ﴿ ۱ ۝ أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا										
हम ने वहि भेजी	कि	तअज़्जुब	लोगों को	क्या हुआ	1	हिक्मत वाली	किताब	आयतें	यह	अलिफ लाम रा
إِلَى رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ										
उन के लिए	कि	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	और खुशखबरी दे	लोग	वह डराए	कि	उन से	एक आदमी	तरफ- पर	
قَدَمٌ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿ ۲ ۝										
2	खुला	जादूगर	यह	वेशक	काफिर (जमा)	बोले	उन का रब	पास	सच्चा	पाया
إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ										
दिन	छः (6)	में	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	वह जिस ने	अल्लाह	वेशक तुम्हारा रब		
ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا										
मगर	सिफारिशी	कोई	नहीं	काम	तदबीर करता है	अर्श पर	काइम हुआ	फिर		
مِّنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ۚ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿ ۳ ۝										
उसी की तरफ़	3	सो क्या तुम ध्यान नहीं करते	पस उस की बन्दगी करो	तुम्हारा रब	अल्लाह	वह है	उस की इजाज़त	वाद		
مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۖ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا ۚ إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ										
दोबारा पैदा करेगा	फिर	पहली बार पैदा करता है	वेशक वही	सच्चा	अल्लाह	वादा	सब	तुम्हारा लौट कर जाना		
لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا										
कुफ़ किया	और वह लोग जो	इन्साफ़ के साथ	नेक (जमा)	और उन्होंने ने अमल किए	ईमान लाए	वह लोग जो	ताकि जज़ा दे			
لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿ ۴ ۝										
4	वह कुफ़ करते थे	क्यों कि	दर्दनाक	और अज़ाब	खौलता हुआ	से	पीना है (पानी)	उन के लिए		
هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ										
मन्ज़िलें	और मुक़र्र कर दी उस की	नूर (चमकता)	और चाँद	जगमगाता	सूरज	बनाया	जिस ने	वह		
لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ										
हक़ (दुरुस्त तदबीर) से	मगर	यह	अल्लाह	नहीं पैदा किया	और हिसाब	बरस (जमा)	गिनती	ताकि तुम जान लो		
يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿ ۵ ۝ إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ										
और दिन	रात	बदलना	में	वेशक	5	इल्म वालों के लिए	निशानियां	वह खोल कर बयान करता है		
وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَّقُونَ ﴿ ۶ ۝										
6	परहेज़गारों के लिए	निशानियां हैं	और ज़मीन	आस्मानों में	अल्लाह ने पैदा किया	और जो				

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा, यह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं। (1) क्या लोगों को तअज़्जुब हुआ? कि हम ने वहि भेजी एक आदमी पर उन में से कि वह लोगों को डराए, और ईमान वालों को खुशख़बरी दे कि उन के लिए सच्चा पाया (मक़ाम) है उन के रब के पास। काफ़िर बोले वेशक यह तो खुला जादूगर है। (2) वेशक तुम्हारा रब अल्लाह है, जिस ने पैदा किया छः (6) दिनों में आस्मानों को और ज़मीन को, फिर वह अर्श पर काइम हुआ, काम की तदबीर करता है, कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं मगर उस की इजाज़त के बाद, वह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस उस की बन्दगी करो, सो क्या तुम ध्यान नहीं देते? (3) उस की तरफ़ तुम सब को लौट कर जाना है, अल्लाह का वादा सच्चा है, वेशक वही पहली बार पैदा करता है फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, ताकि उन लोगों को इन्साफ़ के साथ जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, और जिन लोगों ने कुफ़ किया उन के लिए खौलता हुआ पानी है और दर्दनाक अज़ाब है, क्योंकि वह कुफ़ करते थे। (4) वही है जिस ने सूरज को जगमगाता और चाँद को चमकता बनाया और उस की मन्ज़िलें मुक़रर कर दी ताकि तुम बरसों की गिनती जान लो और हिसाब, अल्लाह ने यह नहीं पैदा किया मगर दुरुस्त तदबीर से, वह इल्म वालों के लिए निशानियां खोल कर बयान करता है। (5) वेशक रात और दिन के बदलने में, और जो अल्लाह ने आस्मानों में और ज़मीन में पैदा किया (उस में) निशानियां हैं परहेज़गारों के लिए। (6)

वेशक जो लोग हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते, और वह दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए और उस पर मुतमइन हो गए, और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं, (7)

यही लोग हैं जिन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (8)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, उन का रब उन्हें राह दिखाएगा उन के ईमान की बदौलत (ऐसे महलात की) जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, नेमत के बागात में। (9)

उस में उन की दुआ (हो गी) ऐ अल्लाह! तू पाक है, और उस में उन की वक़्ते मुलाक़ात की दुआ “सलाम” है, और उन की दुआ का ख़ातिमा है तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारे ज़हानों का रब है। (10)

और अगर अल्लाह लोगों को जल्द बुराई भेजता जैसे वह जल्द भलाई चाहते हैं तो पूरी हो चुकी होती उन की उम्र की मीज़ाद, पस हम उन लोगों को जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते सरकशी में बहकते छोड़ देते हैं। (11)

और जब इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह लेटा हुआ, और बैठा हुआ, और खड़ा हुआ हमें पुकारता है, फिर जब हम दूर कर दें उस से उस की तकलीफ़, (यूँ) चल पड़ा गोया कि किसी तकलीफ़ में जो उसे पहुँची, उस ने हमें पुकारा ही न था, उसी तरह हद से बढ़ने वालों को भला कर दिखाया वह काम जो वह करते थे। (12)

और हम ने तुम से पहले कई उम्मतें हलाक कर दीं जब उन्होंने ने जुल्म किया, और उन के पास आए उन के रसूल खुली निशानियों के साथ, और वह ईमान न लाते थे, उसी तरह हम मुज़्रिमों की क़ौम को बदला देते हैं। (13)

फिर हम ने तुम्हें ज़मीन में उन के वाद जानशीन बनाया ताकि हम देखें तुम कैसे काम करते हो। (14)

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا							
दुनिया	ज़िन्दगी पर	और वह राज़ी हो गए	हमारा मिलना	उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	वेशक	
وَاطْمَأْنَنُوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَفْلُونَ ﴿٧﴾ أُولَٰئِكَ							
यही लोग	7	ग़ाफ़िल (जमा)	हमारी आयात	से	वह	और जो लोग	उस पर और वह मुतमइन हो गए
مَاؤْلَهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا							
जो लोग ईमान लाए	वेशक	8	वह कमाते थे	उस का बदला जो	जहन्नम	उन का ठिकाना	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِآيَاتِهِمْ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ							
उन के नीचे	से	बहती होंगी	उन के ईमान की बदौलत	उन का रब	उन्हें राह दिखाएगा	नेक	और उन्होंने ने अमल किए
الْأَنْهَارُ فِي جَنَّتِ النَّعِيمِ ﴿٩﴾ دَعْوُهُمْ فِيهَا سُبْحَنَكَ اللَّهُمَّ							
ऐ अल्लाह	पाक है तू	उस में	उन की दुआ	9	नेमत	बागात	में नहरें
وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۖ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ							
रब	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	कि	उन की दुआ	और ख़ातिमा	सलाम	उस में और मुलाक़ात के वक़्त की दुआ
الْعَالَمِينَ ﴿١٠﴾ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ							
भलाई	जल्द चाहते हैं	बुराई	लोगों को	अल्लाह	जल्द भेज देता	और अगर	10 सारे ज़हान
لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ ۖ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي							
में	हमारी मुलाक़ात	वह उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	पस हम छोड़ देते हैं	उन की उम्र की मीज़ाद	उन की तरफ	तो फिर हो चुकी होती
طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١﴾ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا							
वह हमें पुकारता है	कोई तकलीफ़	इन्सान	पहुँचती है	और जब	11	वह बहकते हैं	उन की सरकशी
لِجَنَّةٍ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَابِئًا ۖ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ							
चल पड़ा	उस की तकलीफ़	उस से	हम दूर कर दें	फिर जब	खड़ा हुआ	या बैठा हुआ (और)	या अपने पहलू पर (लेटा हुआ)
كَانَ لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرِّ مَسَّهُ ۚ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ							
हद से बढ़ने वालों को	भला कर दिखाया	उसी तरह	उसे पहुँची	तकलीफ़	किसी	हमें पुकारा न था	गोया कि
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِنْ قَبْلِكُمْ							
तुम से पहले	से	उम्मतें	और हम ने हलाक कर दीं	12	वह करते थे (उन के काम)	जो	
لَمَّا ظَلَمُوا ۖ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا							
और न	खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	और उन के पास आए	उन्होंने ने जुल्म किया	जब		
كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ							
हम ने बनाया तुम्हें	फिर	13	मुज़्रिमों की क़ौम	हम बदला देते हैं	उसी तरह	ईमान लाते थे	
خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾							
14	तुम काम करते हो	कैसे	ताकि हम देखें	उन के बाद	ज़मीन में	जानशीन	

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ								
उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	कहते हैं	वाज़ेह	हमारी आयात	उन पर (उन के सामने)	पढ़ी जाती है	और जब	
لِقَاءِنَا أَنتَ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَذَا أَوْ بَدِّلْهُ قُلْ مَا يَكُونُ لِي								
मेरे लिए	नहीं है	आप कह दें	बदलदो इसे	या	इस के अलावा	कोई कुरआन	तुम ले आओ	हम से मिलने की
أَنْ أَبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَائِي نَفْسِي إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ								
मेरी तरफ़	वहि की जाती है	मगर जो	मैं नहीं पैरवी करता	अपनी	जानिव	से	उसे बदलूँ	कि
إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾ قُلْ								
आप कह दें	15	बड़ा	दिन	अज़ाब	अपना ख़	मैं ने नाफ़रमानी की	अगर डरता हूँ	वेशक मैं
لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرِكُكُمْ بِهِ فَقَدْ لَبِثْتُ								
तहकीक़ मैं रह चुका हूँ	उस की	और न ख़बर देता तुम्हें	तुम पर	न पढ़ता मैं उसे	अगर चाहता अल्लाह			
فِيكُمْ عُمَرًا مِّن قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦﴾ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن								
उस से जो	बड़ा ज़ालिम	सो कौन	16	अक़ल से काम लेते तुम	सो क्या न	इस से पहले	एक उम्र	तुम में
أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ								
फ़लाह नहीं पाते	वेशक वह	उस की आयतों को	या झुटलाए	झूट	अल्लाह पर	बान्धे		
الْمُجْرِمُونَ ﴿١٧﴾ وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ								
न ज़रूर पहुँचा सके उन्हें	जो	अल्लाह के सिवा	से	और वह पूजते हैं	17	मुज़रिम (जमा)		
وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شَفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ								
अल्लाह के पास	हमारे सिफ़ारिशी	यह सब	और वह कहते हैं	और न नफ़ा दे सके उन्हें				
قُلْ أَتَنْبِئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ								
ज़मीन में	और न	आस्मानों में	वह नहीं जानता	उस की जो	अल्लाह	क्या तुम ख़बर देते हो	आप (स) कह दें	
سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ								
लोग	और न थे	18	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	और बालातर	वह पाक है		
إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ								
से	पहले हो चुकी	बात	और अगर न	फिर उन्होंने न इख़तिलाफ़ किया	उम्मत	वाहिद	मगर	
رَبِّكَ لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾ وَيَقُولُونَ								
और वह कहते हैं	19	वह इख़तिलाफ़ करते हैं	उस में	उस में जो	उन के दरमियान	तो फ़ैसला हो जाता	तेरा ख़	
لَوْ لَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ آيَةً مِّن رَّبِّهِ فَقُلْ إِنَّمَا								
इस के सिवा नहीं	तो कह दें	उस के ख़ से	कोई निशानी	उस पर	क्यों न उतरी			
الْغَيْبِ لِلَّهِ فَانْتَبِهُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظَرِينَ ﴿٢٠﴾								
20	इन्तिज़ार करने वाले	से	तुम्हारे साथ	मैं	सो तुम इन्तिज़ार करो	अल्लाह के लिए	ग़ैब	

और जब पढ़ी जाती है उन के सामने हमारी वाज़ेह आयतें, तो जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते वह कहते हैं, उस के अलावा तुम कोई और कुरआन ले आओ या उसे बदल दो, आप (स) कह दें मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं अपनी जानिव से बदलूँ, मैं पैरवी नहीं करता मगर (उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, अगर मैं अपने ख़ की नाफ़रमानी करूँ तो मैं बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (15)

आप (स) कह दें अगर अल्लाह चाहता तो मैं उसे तुम पर (तुम्हारे सामने) न पढ़ता, और न तुम्हें उस की ख़बर देता, मैं उस से पहले तुम में एक उम्र रह चुका हूँ, सो क्या तुम अक़ल से काम नहीं लेते? (16)

सो उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जो अल्लाह पर झूट बान्धे या उस की आयतों को झुटलाए, वेशक मुज़रिम फ़लाह (दो ज़हान की कामयाबी) नहीं पाते, (17)

और वह अल्लाह के सिवा उन्हें पूजते हैं जो उन्हें न ज़रूर पहुँचा सके और न नफ़ा दे सकें, और वह कहते हैं यह सब अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिशी है।

आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह को उस की ख़बर देते हो जो वह नहीं जानता आस्मानों में और न ज़मीन में, वह पाक है और वह बालातर है उस से जो वह शिर्क करते हैं। (18)

और लोग न थे मगर उम्मत वाहिद, फिर उन्होंने न इख़तिलाफ़ किया, और अगर तेरे ख़ की तरफ़ से पहले बात न हो चुकी होती तो फ़ैसला हो जाता उन के दरमियान (उस बात का) जिस में वह इख़तिलाफ़ करते हैं। (19)

और वह कहते हैं उस के ख़ की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? तो आप (स) कह दें उस के सिवा नहीं कि ग़ैब अल्लाह के लिए है, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (20)

और जब हम चखाएं लोगों को रहमत (का मज़ा) एक तकलीफ़ के बाद जो उन्हें पहुँची थी तो उसी वक़्त वह हमारी आयात में हीले (बनाने लगे) आप (स) कह दें अल्लाह सब से तेज़ खुफ़िया तदवीर (बना सकता है), वेशक़ तुम जो हीले साज़ी करते हो हमारे फ़रिश्ते लिखते हैं। (21)

वही है जो तुम्हें चलाता है खुशकी में और दर्या में, यहां तक कि जब तुम कश्ती में हो, और वह उन के साथ (उन्हें ले कर) पाकीज़ा हवा के साथ चलें, और वह उस से खुश हुए, उस (कश्ती) पर एक तुन्द ओ तेज़ हवा आई, और उन पर हर तरफ़ से मौजें आगई, और उन्होंने ने जान लिया कि उन्हें घेर लिया गया है, वह अल्लाह को पुकारने लगे उस की बन्दगी में ख़ालिस हो कर, कि अगर तू ने हमें इस से नजात दे दी तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुज़ारों में से होंगे। (22)

फिर जब उस ने उन्हें नजात दे दी उस वक़्त वह ज़मीन में नाहक़ सरकशी करने लगे, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि तुम्हारी शरारत (का बवाल) तुम्हारी जानों पर है, दुनिया की ज़िन्दगी के फ़ाइदे (चन्द रोज़ा है) फिर तुम्हें हमारी तरफ़ लौटना है फिर हम तुम्हें बतला देंगे जो तुम करते थे। (23)

इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल पानी जैसी है, हम ने उसे आस्मान से उतारा तो उस से ज़मीन का सब्ज़ा मिला जुला निकला, जिस से लोग और चौपाए खाते हैं, यहां तक कि जब ज़मीन ने अपनी रौनक़ पकड़ ली, और वह मुज़ैयन हो गई, और ज़मीन वालों ने ख़याल किया कि वह उस पर कुदरत रखते हैं तो (अचानक) हमारा हुक्म रात में या दिन के वक़्त आया, तो हम ने उसे कटा हुआ ढेर कर दिया गोया वह कल थी ही नहीं, इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर ओ फ़िक्क़ करते हैं। (24)

और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है। और जिसे चाहे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (25)

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَتْهُمْ إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ									
और जब	हम चखाएं	लोग	रहमत	बाद	तकलीफ़	उन्हें पहुँची	उसी वक़्त	उन के लिए	हीला
فِي آيَاتِنَا قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ (21)									
में	हमारी आयात	आप (स) कह दें	अल्लाह	सब से जल्द	खुफ़िया तदवीर	वेशक	हमारे फ़रिश्ते	वह लिखते हैं	जो तुम हीले साज़ी करते हो
هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّى إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ									
वही	जो कि	तुम्हें चलाता है	खुशकी में	और दर्या	यहां तक	जब	तुम हो	कश्ती में	
وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ									
और वह चलें	उन के साथ	हवा के साथ	पाकीज़ा	और वह खुश हुए	उस से	उस पर आई	एक हवा	तुन्द ओ तेज़	
وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا									
और उन पर आई	मौज	से	हर जगह (हर तरफ़)	और उन्होंने ने जान लिया	कि वह	घेर लिया गया	उन्हें	वह पुकारने लगे	
اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنْجَيْنَا مِنْ هَذِهِ لَنُكَوِّنَنَّ									
अल्लाह	ख़ालिस हो कर	उस के	दीन (बन्दगी)	अलबत्ता अगर	तू नजात दे हमें	से	उस	तो हम ज़रूर होंगे	
مِنَ الشَّاكِرِينَ (22) فَلَمَّا أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ									
से	शुक्रगुज़ार (जमा)	22	फिर जब	उन्हें नजात दे दी	उस वक़्त	वह	सरकशी करने लगे	में	ज़मीन
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا									
ऐ लोगो	इस के सिवा नहीं	तुम्हारी शरारत	पर	तुम्हारी जानों	फाइदे	ज़िन्दगी	दुनिया		
ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ (23) إِنَّمَا مَثَلُ									
फिर	हमारी तरफ़	तुम्हें लौटना	फिर हम बतला देंगे तुम्हें	वह जो	तुम करते थे	23	इस के सिवा नहीं	मिसाल	
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ									
दुनिया की ज़िन्दगी	जैसे पानी	हम ने उसे उतारा	आस्मान से	तो मिला जुला निकला	उस से	ज़मीन का सब्ज़ा			
مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّى إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ									
जिस से	खाते हैं	लोग	और चौपाए	यहां तक कि	जब	पकड़ ली	ज़मीन		
زُحْرَفَهَا وَارْيَيْنَتْ وَطَنَ أَهْلِهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا									
अपनी रौनक	और मुज़ैयन हो गई	और ख़याल किया	ज़मीन वाले	कि वह	कुदरत रखते हैं	उस पर	आया		
أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَنْ لَّمْ تَغْنِ									
हमारा हुक्म	रात में	या दिन के वक़्त	तो हम ने कर दिया	कटा हुआ ढेर	गोया कि	वह न थी			
بِالْأَمْسِ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ (24) وَاللَّهُ									
कल	इसी तरह	हम खोल कर बयान करते हैं	आयतें	लोगों के लिए	जो ग़ौर ओ फ़िक्क़ करते हैं	24	और अल्लाह		
يَدْعُوا إِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (25)									
बुलाता है	तरफ़	सलामती का घर	और हिदायत देता है	जिसे वह चाहे	तरफ़	रास्ता	सीधा	25	

لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ							
और न ज़िल्लत	सियाही	उन के चहरे	और न चढ़ेगी	और ज़ियादा	भलाई है	उन्होंने भलाई की	वह लोग जो कि
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (26) وَالَّذِينَ كَسَبُوا							
उन्होंने कमाई	और वह लोग जो	26	हमेशा रहेंगे	उस में	वह सब	जन्नत वाले	वही लोग
السَّيِّئَاتِ جزَاءَ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ							
अल्लाह से	उन के लिए नहीं	ज़िल्लत	और उन पर चढ़ेगी	उस जैसा	बुराई	बदला	बुराईयां
مِنْ عَاصِمٍ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطْعًا مِنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا							
तारीक	रात	से	टुकड़े	उन के चहरे	ढांक दिए गए	गोया कि	बचाने वाला
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (27) وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ							
हम इकट्ठा करेंगे उन्हें	और जिस दिन	27	हमेशा रहेंगे	उस में	वह सब	जहन्नम वाले	वही लोग
جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ							
और तुम्हारे शरीक	तुम	अपनी जगह	जिन्होंने शिर्क किया	उन लोगों को	हम कहेंगे	फिर	सब
فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِلَّا نَا تَعْبُدُونَ (28)							
28	बन्दगी करते	हमारी	तुम न थे	उन के शरीक	और कहेंगे	उन के दरमियान	फिर हम जुदाई डाल देंगे
فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ							
तुम्हारी बन्दगी	से	हम थे	कि	और तुम्हारे दरमियान	हमारे दरमियान	गवाह	अल्लाह
لَغَفْلِينَ (29) هُنَالِكَ تَبْلُوا كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ وَرُدُّوْا إِلَى اللَّهِ							
अल्लाह की तरफ	और वह लौटाए जाएंगे	उस ने भेजा	जो	हर कोई	जांच लेगा	वहां	29
مَوْلَاهُمْ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ (30) قُلْ مَنْ							
कौन	आप (स) पूछें	30	वह झूट बान्धते थे	जो	उन से	और गुम हो जाएगा	उन का (अपना) मौला
يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمْنَ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ							
और आँखें	कान	मालिक है	या कौन	और ज़मीन	आस्मान	से	रिज़क देता है तुम्हें
وَمَنْ يُخْرِجِ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجِ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرِ الْأَمْرَ							
तदबीर करता है	और कौन	ज़िन्दा	से	मुर्दा	और निकालता है	मुर्दा	से
काम	कौन	ज़िन्दा	निकालता है	मुर्दा	से	ज़िन्दा	निकालता है
فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ (31) فَذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ الْحَقُّ							
सच्चा	तुम्हारा रब	अल्लाह	पस यह है तुम्हारा	31	क्या फिर तुम नहीं डरते	आप कह दें	सो वह बोल उठेंगे
فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ (32) كَذَلِكَ							
उसी तरह	32	तुम फिरे जाते हो	पस किधर	गुमराही	सिवाए	सच के बाद	फिर क्या रह गया
حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ (33)							
33	ईमान न लाएंगे	कि वह	उन्होंने नाफ़रमानी की	वह लोग जो	पर	तेरा रब	सच्ची हुई

जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए भलाई है और (उस से भी) ज़ियादा, और उन के चहरों पर न सियाही चढ़ेगी और न ज़िल्लत, वही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (26)

और जिन लोगों ने बुराईयां कमाई (उन का) बदला उस जैसी बुराई है, और उन पर ज़िल्लत चढ़ेगी, उन के लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं, गोया उन के चहरे ढांक दिए गए तारीक रात के टुकड़े से, वही लोग जहन्नम वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (27)

और जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे फिर उन लोगों को कहेंगे जिन्होंने शिर्क किया अपनी अपनी जगह (रहो) तुम और तुम्हारे शरीक, फिर हम उन के दरमियान जुदाई डाल देंगे, और उन के शरीक कहेंगे, तुम हमारी बन्दगी न करते थे। (28)

पस हमारे और तुम्हारे दरमियान काफ़ी है अल्लाह गवाह, कि हम तुम्हारी बन्दगी से बेख़बर थे। (29)

वहां हर कोई जांच लेगा जो उस ने आगे भेजा था और वह अपने सच्चे मौला अल्लाह की तरफ लौटाए जाएंगे और उन से गुम हो जाएगा जो वह झूट बान्धते थे। (30)

आप (स) पूछें कौन आस्मान और ज़मीन से तुम्हें रिज़क देता है? या कौन कान और आँखों का मालिक है? और कौन ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है? और निकालता है मुर्दे को ज़िन्दा से? और कौन कामों की तदबीर करता है? सो वह बोल उठेंगे, अल्लाह! आप (स) कहें क्या फिर तुम डरते नहीं? (31)

पस यह है अल्लाह! तुम्हारा सच्चा रब, सच के बाद गुमराही के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिरे जाते हो? (32)

उसी तरह तेरे रब की बात उन लोगों पर जिन्होंने नाफ़रमानी की, सच्ची हुई कि वह ईमान न लाएंगे, (33)

आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई है? जो पहली बार पैदा करे फिर उसे लौटाए, आप (स) कह दें अल्लाह पहली बार पैदा करता है फिर उसे लौटाएगा, पस तुम किधर पलटे जाते हो? (34) आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से (कोई) है जो सहीह राह बताए? आप (स) कह दें अल्लाह सहीह राह बताता है, क्या जो सहीह राह बताता है ज़ियादा हकदार है कि उस की पैरवी की जाए? या वह जो (खुद भी) राह नहीं पाता मगर यह कि उसे राह दिखाई जाए, सो तुम्हें क्या हो गया है? कैसा फ़ैसला करते हो? (35) और उन में से अकसर पैरवी नहीं करते मगर गुमान की, वेशक गुमान हक (की मुअरिफ़त) का कुछ भी काम नहीं देता, वेशक अल्लाह खूब जानता है जो वह करते हैं। (36) और यह कुरआन (ऐसा) नहीं कि कोई अल्लाह के (हुकम के) बग़ैर (अपनी तरफ़ से) बना ले, लेकिन उस की तसदीक़ करने वाला है जो उस से पहले (नाज़िल हुआ) और किताब की तफ़्सील है, उस में कोई शक़ नहीं कि यह तमाम ज़हानों के रब (की तरफ़) से है। (37) क्या वह कहते हैं? कि वह उसे बना लाया है, आप (स) कह दें पस उस जैसी एक ही सूरत ले आओ और जिसे तुम बुला सको, बुला लो, अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। (38) बल्कि उन्होंने ने उसे झुटलाया जिस के इल्म पर उन्होंने ने काबू नहीं पाया, और उस की हकीक़त अभी उन के पास नहीं आई, उसी तरह उन से पहलों ने झुटलाया, पस आप (स) देखें कैसा हुआ ज़ालिमों का अन्जाम? (39) और उन में से बाज़ उस पर ईमान लाएंगे, और उन में से बाज़ उस पर ईमान न लाएंगे, और तेरा रब फ़साद करने वालों को खूब जानता है। (40) और अगर वह आप (स) को झुटलाए तो आप (स) कह दें मेरे लिए मेरे अमल, और तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, तुम उस के जवाबदह नहीं जो मैं करता हूँ, और मैं उस का जवाबदह नहीं जो तुम करते हो। (41)

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدُوا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ قُلِ اللَّهُ									
अल्लाह	आप (स) कह दें	फिर उसे लौटाए	मख़लूक	पहली बार पैदा करे	जो	तुम्हारे शरीक	से	क्या	आप (स) पूछें
يَبْدُوا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنْتُمْ تُؤْفَكُونَ (34) قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ									
तुम्हारे शरीक	से	क्या	आप (स) पूछें	34	पलटे जाते हो तुम	पस किधर	उसे लौटाएगा	फिर	मख़लूक पहली बार पैदा करता है
مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ أَفَمَنْ يَهْدِي									
राह बताता है	पस क्या जो	सहीह	राह बताता है	अल्लाह	आप कह दें	हक की तरफ़ (सहीह)	राह बताए	जो	
إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يَهْدِيَ فَمَا لَكُمْ									
सो तुम्हें क्या हुआ	उसे राह दिखाई जाए	यह कि	मगर	वह राह नहीं पाता	या जो	पैरवी की जाए	कि	ज़ियादा हक़ दार	हक़ की तरफ़ (सही)
كَيْفَ تَحْكُمُونَ (35) وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي									
नहीं काम देता	गुमान	वेशक	मगर गुमान	उन के अकसर	और पैरवी नहीं करते	35	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा	
مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ (36) وَمَا كَانَ هَذَا									
यह - इस	और नहीं है	36	वह करते हैं	वह जो	खूब जानता है	वेशक अल्लाह	कुछ भी	हक़	से (का)
الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَى مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقُ الَّذِينَ									
उस की जो	तसदीक़	और लेकिन	अल्लाह के बग़ैर	से	कि वह बनाले	कुरआन			
بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ (37)									
37	तमाम ज़हानों	रब	से	उस में	कोई शक़ नहीं	किताब	और तफ़्सील	उस से पहले	
أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنْ									
जिसे	और बुला लो तुम	उस जैसी	एक ही सूरत	पस ले आओ तुम	आप (स) कह दें	वह उसे बना लाया है	वह कहते हैं	क्या	
اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ (38) بَلْ كَذَّبُوا									
उन्होंने ने झुटलाया	बल्कि	38	सच्चे	तुम हो	अगर	अल्लाह के सिवा	से	तुम बुला सको	
بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ كَذَبَ									
झुटलाया	उसी तरह	उस की हकीक़त	उन के पास आई	और अभी नहीं	उस के इल्म पर	नहीं काबू पाया	वह जो		
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ (39)									
39	ज़ालिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	पस आप (स) देखें	उन से पहले	वह लोग जो		
وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ									
खूब जानता है	और तेरा रब	उस पर	नहीं ईमान लाएंगे	जो (बाज़)	और उन में से	उस पर	ईमान लाएंगे	जो (बाज़)	और उन में से
بِالْمُفْسِدِينَ (40) وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ									
तुम्हारे अमल	और तुम्हारे लिए	मेरे अमल	मेरे लिए	तो कह दें	वह तुम्हें झुटलाए	और अगर	40	फ़साद करने वालों को	
أَنْتُمْ بَرِيءُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ (41)									
41	तुम करते हो	उस का जो	जवाबदह नहीं	और मैं	मैं करता हूँ	उस के जो	जवाबदह नहीं	तुम	

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْى وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ﴿٤٣﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ							
और उन में से	जो (बाज़)	कान लगाते हैं	आप (स) की तरफ़	तो क्या तुम	सुनाओगे	वहरे	ख़्वाह
النَّاسِ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾ وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ كَانُ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَبُوا							
वह अक्ल न रखते हों	42	और उन से	जो (बाज़)	देखते हैं	आप (स) की तरफ़	पस क्या तुम	राह दिखा दोगे
بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾ وَإِنَّا لَنُرِيكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَى							
ख़्वाह	वह देखते न हों	43	वेशक अल्लाह	जुल्म नहीं करता	लोग	कुछ भी	और लेकिन
مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ							
लोग	अपने आप पर	जुल्म करते हैं	44	और जिस दिन	जमा करेगा उन्हें	गोया	वह न रहे थे
بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا							
एक घड़ी	दिन से (की)	वह पहचानेंगे	आपस में	अलबत्ता ख़सारे में रहे	वह लोग	उन्होंने ने झुटलाया	
شَاءَ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً							
अल्लाह से मिलने को	वह न थे	हिदायत पाने वाले	45	और अगर	हम तुझे दिखा दें	बाज़ (कुछ)	वह जो
وَلَا يَسْتَفْهِمُونَ ﴿٤٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا							
चाहे अल्लाह	हर एक उम्मत के लिए	एक वक़्त मुक़र्रर	जब	आजाएगा	उन का वक़्त	पस न ताख़ीर करेंगे वह	एक घड़ी
مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾ أَتَمَّ إِذَا مَا وَقَعَ أَمْنْتُمْ بِهِ							
और न	जल्दी करेंगे वह	49	आप (स) कह दें	भला तुम देखो	अगर तुम पर आए	उस का अज़ाब	रात को
آلَيْنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا							
क्या है वह	जल्दी करते हैं	उस से - उस की	मुज़्रिम (जमा)	50	क्या फिर	वाक़े होगा	तुम ईमान लाओगे
دُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾							
अब	और अलबत्ता तुम थे	उस की	तुम जल्दी मचाते	51	फिर	कहा जाएगा	उन लोगों को जो
تُؤْتُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾							
तुम ख़ो	अज़ाब	हमेशगी	क्या नहीं	तुम्हें बदला दिया जाता	मगर	वह जो	तुम कमाते थे

और उन में से बाज़ कान लगाते हैं आप (स) की तरफ़, तो क्या तुम वहरों को सुनाओगे? अगरचे वह अक्ल न रखते हों। (42) और उन में से बाज़ देखते हैं आप(स) की तरफ़, तो क्या आप(स) अन्धों को राह दिखा देंगे? अगरचे वह देखते न हों। (43) वेशक अल्लाह जुल्म नहीं करता लोगों पर कुछ भी, लेकिन लोग अपने आप पर जुल्म करते हैं। (44) और जिस दिन (योमे हश्र) वह उन्हें जमा करेगा गोया वह (दुनिया में) न रहे थे मगर दिन की एक घड़ी, आपस में पहचानेंगे, अलबत्ता वह ख़सारे में रहे जिन्होंने ने झुटलाया अल्लाह से मिलने को, और वह हिदायत पाने वाले न थे। (45) और अगर हम तुम्हें बाज़ वादे दिखा दें जो हम उन से कर रहे हैं या हम तुम्हें (दुनिया से) उठा लें, पस उन्हें हमारी तरफ़ लौटना है, फिर अल्लाह उस पर गवाह है जो वह करते हैं। (46) हर एक उम्मत के लिए एक रसूल है, पस जब उन का रसूल आगया, उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया, और उन पर जुल्म नहीं किया जाता। (47) और वह कहते हैं यह वादा कब (पूरा) होगा? अगर तुम सच्चे हो। (48) आप (स) कह दें मैं अपनी जान के लिए मालिक नहीं हूँ किसी नुक्सान का न नफ़ा का, मगर जो अल्लाह चाहे, हर एक उम्मत के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, जब उन का वक़्त आजाएगा पस न वह एक घड़ी ताख़ीर करेंगे न जल्दी कर सकेंगे। (49) आप (स) कह दें भला तुम देखो अगर तुम पर उस का अज़ाब आए रात को या दिन के वक़्त, तो वह क्या है जिस की मुज़्रिम जल्दी कर रहे हैं? (50) क्या फिर जब वाक़े हो जाएगा (उस वक़्त) तुम उस पर ईमान लाओगे? अब (मानते हो) अलबत्ता तुम उस की जल्दी मचाते थे। (51) फिर ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम हमेशगी का अज़ाब ख़ो, तुम्हें वही बदला दिया जाता है जो तुम कमाते थे। (52)

और आप (स) से पूछते हैं क्या वह सच है? आप (स) कहें हां! मेरे रब की कसम! वेशक वह ज़रूर सच है, और तुम आजिज़ करने वाले नहीं। (53)

और अगर हर ज़ालिम शख्स के लिए (वह सब कुछ) हो जो ज़मीन में है, वह उस को फिदये में देदे, और वह चुपके चुपके पशेमान होंगे जब अज़ाब देखेंगे, और उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला होगा, और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (54)

याद रखो! अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, याद रखो! वेशक अल्लाह का वादा सच है, लेकिन उन के अक्सर जानते नहीं। (55)

वही ज़िन्दगी देता है, और वही मारता है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (56)

ऐ लोगो! तहकीक़ तुम्हारे पास आ गई नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से, और शिफ़ा उस (रोग) के लिए जो दिलों में है, और मोमिनों के लिए हिदायत ओ रहमत। (57)

आप (स) कहें, अल्लाह के फ़ज़ल से, और उस की रहमत से, सो वह उस पर खुशी मनाएँ, यह उन (सब) से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। (58)

आप (स) कह दें, भला देखो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए रिज़्क उतारा, फिर तुम ने उस में से कुछ हARAM बना लिया और कुछ हलाल, आप (स) कह दें, क्या अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया? या अल्लाह पर झूट बान्धते हो? (59)

और उन लोगों का क्या खयाल है? जो घड़ते हैं अल्लाह पर झूट, क़ियामत के दिन (उन का क्या हाल होगा) वेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़ल करने वाला है, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र नहीं करते। (60)

और तुम नहीं होते किसी हाल में, और न उस में से कुछ कुरआन पढ़ते हो, और न कोई अमल करते हो, मगर हम तुम पर गवाह (बाख़्बर) होते हैं जब तुम उस में मशगूल होते हो, और नहीं तुम्हारे रब से ग़ाइब एक ज़री बराबर भी ज़मीन में और न आस्मान में, और न उस से छोटा और न बड़ा, मगर रौशन किताब में हैं। (61)

وَيَسْتَبِئُونَكَ أَحَقُّ هُوَ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقُّ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ٥٣										
53	आजिज़ करने वाले	तुम हो	और नहीं	ज़रूर सच	वेशक वह	मेरे रब की कसम	हां	आप कह दें	वह सच है	और आप (स) से पूछते हैं
وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ وَأَسْرُوا التَّدَامَةَ										
	पशेमान	और वह चुपके चुपके होंगे	उस को	अलबत्ता फिदया देदे	ज़मीन में	जो कुछ	उस ने जुल्म किया (ज़ालिम)	हर एक शख्स के लिए	हो	और अगर
لَمَّا رَأَوْا الْعَذَابَ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ٥٤										
54	जुल्म न किए जाएंगे	और वह	इन्साफ़ के साथ	उन के दरमियान	और फ़ैसला होगा	अज़ाब	वह देखेंगे	जब		
أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ٥٥										
	और लेकिन	सच	अल्लाह का वादा	वेशक	याद रखो	और ज़मीन में	आस्मानों में	अल्लाह के लिए जो	वेशक	याद रखो
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ٥٥ هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَالْيَهُ تُرْجَعُونَ ٥٦										
56	तुम लौटाए जाओगे	और उस की तरफ़	और मारता है	ज़िन्दगी देता है	वही	55	जानते नहीं	उन के अक्सर		
يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ										
	सीनों (दिलों) में	उस के लिए जो	और शिफ़ा	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तहकीक़ आगई तुम्हारे पास	लोगो	ऐ	
وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ٥٧ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ										
	और उस की रहमत से	अल्लाह	फ़ज़ल से	आप कह दें	57	मोमिनों के लिए	ओ रहमत	और हिदायत		
فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ٥٨ قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ										
	जो उस ने उतारा	भला देखो	आप कह दें	58	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	वह-यह	वह खुशी मनाएँ	सो उस पर
اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ اللَّهُ أَدْنٰ										
	हुक्म दिया	क्या अल्लाह	आप (स) कह दें	और कुछ हलाल	कुछ हराम	उस से	फिर तुम ने बना लिया	रिज़्क	से	तुम्हारे लिए अल्लाह
لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ٥٩ وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ										
	अल्लाह पर	घड़ते हैं	वह लोग जो	खयाल	और क्या	59	तुम झूट बान्धते हो	अल्लाह पर	या	तुम्हें
الْكَذِبِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ										
	और लेकिन	लोगों पर	फ़ज़ल करने वाला	वेशक अल्लाह	क़ियामत के दिन	झूट				
أَكْثَرُهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ٦٠ وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ										
	से - कुछ	उस से	और नहीं पढ़ते	किसी हाल में	और नहीं होते तुम	60	शुक्र नहीं करते	उन के अक्सर		
قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ										
	जब तुम मशगूल होते हो	गवाह	तुम पर	हम होते हैं	मगर	कोई अमल	और नहीं करते	कुरआन		
فِيهِ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا										
	और न	ज़मीन में	एक ज़री	बराबर	से	तुम्हारा रब	से	ग़ाइब	और नहीं	उस में
فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ٦١										
61	किताबे रौशन	में	मगर	बड़ा	और न	उस से	छोटा	और न	आस्मान	में

آلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾							
याद रखो	वेशक	अल्लाह के दोस्त	न कोई खौफ़	उन पर	और न	वह	ग़मगीन होंगे
62							
الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا							
वह लोग जो	ईमान लाए	और वह तक्वा करते रहे	63	उन के लिए	वशाहत	में	दुनिया कि ज़िन्दगी
وَفِي الْأَخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ							
और में	आखिरत	तबदीली नहीं	वातों में	अल्लाह	यह	वह	
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزَنكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ							
कामयाबी	बड़ी	64	और न	तुम्हें ग़मगीन करे	उन की बात	वेशक	ग़लबा
							अल्लाह के लिए
جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾ آلا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ							
तमाम	वह	सुनने वाला	जानने वाला	65	याद रखो	वेशक	अल्लाह के लिए
							जो कुछ आस्मानों में
وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ							
और जो	ज़मीन में	क्या - किस	पैरवी करते हैं	वह लोग जो	पुकारते हैं	सिवाए	
اللَّهِ شُرَكَاءَ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا							
अल्लाह	शरीक (जमा)	वह नहीं पैरवी करते	मगर	गुमान	और नहीं	वह	मगर (सिर्फ)
يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْآيِلَ لِتَسْكُنُوا							
अटकलें दौड़ाते हैं	66	वही	जो - जिस	बनाया	तुम्हारे लिए	रात	ताकि तुम सुकून हासिल करो
فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾							
उस में	और दिन	दिखाने वाला (रौशन)	वेशक	उस में	अलबत्ता निशानियाँ	सुनने वाले लोगों के लिए	67
قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ هُوَ الْغَنِيُّ لَهُ مَا							
वह कहते हैं	बना लिया	अल्लाह	बेटा	वह पाक है	वह	वेनियाज़	उस के लिए
							जो
فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ إِنَّ عِنْدَكُمْ مِّنْ							
आस्मानों में	और जो	ज़मीन में	नहीं	तुम्हारे पास	कोई		
سُلْطَنٍ بِهَذَا أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾							
दलील	उस के लिए	क्या तुम कहते हो	अल्लाह पर	जो	तुम नहीं जानते		68
قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ							
आप (स) कह दें	वेशक	वह लोग जो	घड़ते हैं	अल्लाह पर	झूट		
لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ							
वह फ़लाह नहीं पाएंगे	69	कुछ फ़ाइदा	दुनिया में	फिर	हमारी तरफ़	उन को लौटना	फिर
نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾							
हम चखाएंगे उन्हें	अज़ाब	शदीद	उस के बदले	वह कुफ़ करते थे			70

याद रखो! वेशक (जो) अल्लाह के दोस्त हैं न कोई खौफ़ उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जो लोग ईमान लाए और तक्वा (खौफ़े खुदा और परहेज़गारी) करते रहे। (63)

उन के लिए वशाहत है दुनिया की ज़िन्दगी में और आखिरत में, अल्लाह की वातों में कोई तबदीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है। (64)

और उन की बात तुम्हें ग़मगीन न करे। वेशक तमाम ग़लबा अल्लाह के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है। (65)

याद रखो! वेशक जो आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और किसी की पैरवी (नहीं) करते वह लोग जो अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं मगर (सिर्फ) गुमान की पैरवी करते हैं, और वह सिर्फ अटकलें दौड़ाते हैं। (66)

वही है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन रौशन, वेशक उस में सुनने वाले लोगों के लिए निशानियाँ हैं। (67)

वह कहते हैं अल्लाह ने बना लिया (अपना) बेटा। वह पाक है, वह वेनियाज़ है, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तुम्हारे पास नहीं है उस के लिए कोई दलील, क्या तुम अल्लाह पर वह बात कहते हो जो तुम जानते नहीं? (68)

आप (स) कह दें, वेशक वह लोग जो अल्लाह पर झूट घड़ते हैं फ़लाह (दो ज़हान की कामयाबी) नहीं पाएंगे। (69)

दुनिया में कुछ फ़ाइदा है, फिर उन को हमारी तरफ़ लौटना है, फिर हम उन्हें शदीद अज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे उस के बदले जो वह कुफ़ करते थे। (70)

और आप (स) उन्हें नूह (अ) का किस्सा पढ़ कर सुनाएं, जब उस ने अपनी कौम से कहा, ऐ मेरी कौम! अगर तुम पर गारा है मेरा कियाम और मेरा अल्लाह की आयतों से नसीहत करना, तो मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, पस तुम और तुम्हारे शरीक अपना काम मुर्कर कर लो (ताकि) फिर तुम्हें अपने काम पर कोई शुबाह न रहे, फिर मेरे साथ कर गुज़रो, और मुझे मोहलत न दो। (71) फिर अगर तुम मुँह फेर लो तो मैं ने तुम से कोई अजर नहीं मांगा, मेरा अजर तो सिर्फ अल्लाह पर है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं रहूँ फरमावरदारों में से। (72) तो उन्होंने ने उसे (नूह अ) को झुटलाया, सो हम ने बचा लिया उसे और उन्हें जो उस के साथ कश्ती में थे, और हम ने उन्हें जॉनशीन बनाया, और उन लोगों को गुर्क कर दिया जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया, सो देखो (उन लोगों का) अन्जाम कैसा हुआ? जिन्हें डराया गया था। (73) फिर हम ने उस (नूह अ) के बाद कई रसूल उन की कौमों की तरफ भेजे तो वह उन के पास रौशन दलीलों के साथ आए, सो उन से न हुआ के वह ईमान ले आएँ उस (बात) पर जिसे वह उस से कब्ल झुटला चुके थे, इसी तरह हम हद से बढ़ने वालों के दिलों पर मुहर लगाते हैं। (74) फिर हम ने भेजा उन के बाद मूसा (अ) और हारून (अ) को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उस के सरदारों (दरबारियों) की तरफ, तो उन्होंने ने तकबुर किया और वह गुनाहगार लोग थे। (75) तो जब उन के पास हमारी तरफ से हक पहुँचा तो वह कहने लगे, बेशक यह अलबत्ता खुला जादू है। (76) मूसा (अ) ने कहा, क्या तुम हक की निस्वत (ऐसा) कहते हो? जब वह तुम्हारे पास आगया, क्या यह जादू है? और जादूगर कामयाब नहीं होते। (77) वह बोले क्या तू हमारे पास (इस लिए) आया है कि हमें उस से फेर दे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, और हो जाए तुम दोनों के लिए ज़मीन में बड़ाई (सरदारी मिल जाए) और हम तुम दोनों के मानने वालों में से नहीं। (78)

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ اِنَّ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ									
तुम पर	गरां	अगर है	ऐ मेरी कौम	अपनी कौम से	जब उस ने कहा	नूह (अ)	ख़बर (किस्सा)	उन पर (उन्हें)	और पढ़ो
مَقَامِي وَتَذَكِيرِي بِآيَةِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا									
पस तुम मुर्कर कर लो	मैं ने भरोसा किया	पस अल्लाह पर	अल्लाह की आयतों से	और मेरा नसीहत करना	मेरा क़ियाम				
أَمْرُكُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غَمَةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ									
मेरे साथ	तुम कर गुज़रो	फिर	कोई शुबाह	तुम पर	तुम्हारा काम	न रहे	फिर	और तुम्हारे शरीक	अपना काम
وَلَا تُنْظِرُونَ ﴿٧١﴾ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجَرِي									
मेरा अजर	तो - सिर्फ़	कोई अजर	तो मैं ने नहीं मांगा तुम से	तुम मुँह फेर लो	फिर अगर	71	और मुझे मोहलत न दो		
إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوهُ									
तो उन्होंने ने उसे झुटलाया	72	फरमावरदार (जमा)	से	मैं रहूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	अल्लाह पर	मगर (सिर्फ़)	
فَنَجَّيْنَاهُ وَمَنْ مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَ وَأَعْرَفْنَا									
और हम ने गुर्क कर दिया	जांशीन	और हम ने बनाया उन्हें	कश्ती में	उस के साथ	और जो	सो हम ने बचा लिया उसे			
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٧٣﴾									
73	डराए गए लोग	अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखो	हमारी आयतों को	उन्होंने ने झुटलाया	वह लोग जो	
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ									
रौशन दलीलों के साथ	वह आए उन के पास	उन की कौम	तरफ़	कई रसूल	उस के बाद	हम ने भेजे	फिर		
فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۖ كَذَلِكِ نَطْبَعُ عَلَىٰ									
पर	हम मुहर लगाते हैं	उसी तरह	उस से कब्ल	उस को	उन्होंने ने झुटलाया	उस पर जो	सो उन से न हुआ कि वह ईमान ले आएँ		
قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ									
तरफ़	और हारून (अ)	मूसा (अ)	उन के बाद	हम ने भेजा	फिर	74	हद से बढ़ने वाले	दिल (जमा)	
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٧٥﴾									
75	गुनाहगार (जमा)	लोग	और वह थे	तो उन्होंने ने तकबुर किया	अपनी निशानियों के साथ	उस के सरदार	फिरऔन		
فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٦﴾									
76	खुला	अलबत्ता जादू	यह	बेशक	वह कहने लगे	हमारी तरफ़	से	हक़	आया उन के पास तो जब
قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۖ أَسِحْرٌ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ									
और कामयाब नहीं होते	यह	क्या जादू	वह आगया तुम्हारे पास	हक़ के लिए (निस्वत) जब	क्या तुम कहते हो	मूसा (अ)	कहा		
السَّحَرُونَ ﴿٧٧﴾ قَالُوا أَجِئْنَا لِنُلْفِتَنَّا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا									
उस पर अपने बाप दादा	पाया हम ने	उस से जो	कि फेर दे हमें	क्या तू आया हमारे पास	वह बोले	77	जादूगर		
وَتَكُونُ لَكُمْ الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ ۖ وَمَا نَحْنُ لَكُمْ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٧٨﴾									
78	ईमान लाने वालों में से	तुम दोनों के लिए	हम	और नहीं	ज़मीन में	बड़ाई	तुम दोनों के लिए	और हो जाए	

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ									
जादूगर	आ गए	फिर जब	79	इल्म वाला	जादूगर	हर	ले आओ मेरे पास	फिरऔन	और कहा
قَالَ لَهُمْ مُوسَى اَلْقُوا مَا اَنْتُمْ مُلْفُونَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّا اَلْقَوْا قَالَ مُوسَى									
मूसा (अ)	कहा	उन्होंने डाला	फिर जब	80	डालने वाले हो	तुम	जो	तुम डालो	मूसा (अ)
مَا جِئْتُمْ بِهِ السَّحَرُ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ									
काम	नहीं दुरुस्त करता	बेशक अल्लाह	अभी वातिल कर देगा उसे	बेशक अल्लाह	जादू	तुम लाए हो	जो		
الْمُفْسِدِينَ ﴿٨١﴾ وَيُحَقِّقُ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨٢﴾									
82	मुजरिम (गुनाहगार)	नापसन्द करें	ख्वाह	अपने हुक्म से	हक्	अल्लाह	और हक् कर देगा	81	फ़साद करने वाले
فَمَا اٰمَنَ لِمُوسَى اِلَّا ذُرِيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهِ عَلَىٰ خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ									
फिरऔन	से (के)	खौफ की वजह से	उस की कौम	से	चन्द लड़के	मगर	मूसा (अ) पर	ईमान लाया	सो न
وَمَلَايِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ وَاِنَّهٗ									
और बेशक वह	ज़मीन	में	सरकश	फिरऔन	और बेशक	वह आफ़त में डाले उन्हें	कि	और उन के सरदार	
لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ مُوسَى يَقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ									
अल्लाह पर	ईमान लाए	तुम	अगर	ऐ मेरी कौम	मूसा (अ)	और कहा	83	हद से बढ़ने वाले	अलबत्ता-से
فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِينَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوا عَلَىٰ اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا									
हम ने भरोसा किया	अल्लाह पर	तो उन्होंने ने कहा	84	फरमांबरदार (जमा)	तुम हो	अगर	भरोसा करो	तो उस पर	
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِّنْ									
से	अपनी रहमत से	और हमें छुड़ादे	85	ज़ालिम (जमा)	कौम का	तख़्ता-ए-मशक़	न बना हमें	ऐ हमारे रब	
الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾ وَاَوْحَيْنَا اِلٰى مُوسٰى وَاَخِيهِ اَنْ تَبَوّٰا									
कि घर बनाओ	और उस का भाई	मूसा (अ)	तरफ़	और हम ने वहि भेजी	86	काफ़िर (जमा)	कौम		
لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا وَّاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيمُوا									
और काइम करो	किबला रू	अपने घर	और बनाओ	घर	मिसर में	अपनी कौम के लिए			
الصَّلٰوةَ وَّبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوسٰى رَبَّنَا اِنَّكَ									
बेशक तू	ऐ हमारे रब	मूसा (अ)	और कहा	87	मोमिनीन	और खुशख़बरी दो	नमाज़		
اَتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاةَ زَيْنَةً وَّامْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا									
दुनिया की ज़िन्दगी	में	और माल (जमा)	ज़ीनत	और उस के सरदार	फिरऔन	तू ने दिए			
رَبَّنَا لِیُضِلُّوْا عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰی اَمْوَالِهِمْ وَاَشْدُدْ									
और मुहर लगा दे	उन के माल	पर	तू मिटा दे	ऐ हमारे रब	तेरा रास्ता	से	कि वह गुमराह करें	ऐ हमारे रब	
عَلٰی قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰی يَرَوْا الْعَذَابَ الْاَلِیْمَ ﴿٨٨﴾									
88	दर्दनाक	अज़ाब	वह देख लें	यहां तक कि	कि वह ईमान न लाएं	उन के दिलों पर			

और फिरऔन ने कहा मेरे पास हर इल्म वाला जादूगर ले आओ। (79) फिर जब जादूगर आगए तो मूसा (अ) ने उन से कहा तुम डालो, जो डालने वाले हो (तुम्हें डालना है)। (80) फिर उन्होंने ने डाला तो मूसा (अ) ने कहा तुम जो लाए हो जादू है, बेशक अल्लाह अभी उसे वातिल करदेगा, बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों के काम दुरुस्त नहीं करता। (81) और अल्लाह हक् को अपने हुक्म से हक् (साबित) कर देगा अगरचे गुनाहगार नापसन्द करें। (82) सो मूसा (अ) पर कोई ईमान न लाया मगर उस की कौम के चन्द लड़के खौफ़ की वजह से फिरऔन और उन के सरदारों के, कि वह उन्हें आफ़त में न डाल दे, और बेशक फिरऔन ज़मीन (मुल्क) में सरकश था, और बेशक वह हद से बढ़ने वालों में से था। (83) और मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरी कौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर भरोसा करो अगर तुम फ़रमांबरदार हो। (84) तो उन्होंने ने कहा हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! हमें न बना ज़ालिमों की कौम का तख़्ता-ए-मशक़। (85) और हमें अपनी रहमत से काफ़िरों की कौम से छुड़ादे। (86) और हम ने मूसा (अ) और उस के भाई की तरफ़ वहि भेजी कि अपनी कौम के लिए मिसर में घर बनाओ और बनाओ अपने घर किबला रू (नमाज़ की जगह), और नमाज़ काइम करो, और मोमिनों को खुशख़बरी दो। (87) और मूसा (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बेशक तू ने फिरऔन और उस के लशकर को दुनिया की ज़िन्दगी में ज़ीनत और बहुत से माल दिए हैं, ऐ हमारे रब! कि वह तेरे रास्ते से गुमराह करें, ऐ हमारे रब! उन के माल मिटा दे, और उन के दिलों पर मुहर लगा दे कि वह ईमान न लाएं यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब देख लें। (88)

अगरचे उन के पास हर निशानी
आजाए, यहां तक कि वह दर्दनाक
अजाव देख लें। (97)

97	दर्दनाक	अजाब	वह है	यहां तक कि	हर दिलाली	आजाए उन के पास	ख्वाह	96	वह ईमान न लाए

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ أَمَنَتْ فَتَنْفَعَهَا إِيْمَانُهَا إِلَّا قَوْمٌ يُنُوسُ لَمَّا								
जब	कौम यूनस (अ)	मगर	उस का ईमान	तो नफ़ा देता उस को	कि वह ईमान लाती	कोई बस्ती	होई	पस क्यों न
أَمْنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ								
और नफ़ा पहुँचाया उन्हें	दुनिया की ज़िन्दगी	में	रुसवाई	अज़ाब	उन से	हम ने उठा लिया	वह ईमान लाए	
إِلَىٰ حِينٍ ۖ (98) وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ جَمِيعًا								
वह सब के सब	ज़मीन में	जो	अलबत्ता ईमान ले आते	तेरा रब	चाहता	और अगर	98	एक सुददत तक
أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۚ (99) وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ								
किसी शख्स के लिए	और नहीं है	99	मोमिन (जमा)	वह हो जाए	यहां तक कि	लोग	मजबूर करेगा	पस क्या तू
أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ								
वह लोग जो	पर	गन्दगी	और वह डालता है	हुक्म इलाही	मगर (बग़ैर)	ईमान लाए	कि	
لَا يَعْقِلُونَ ۚ (100) قُلْ أَنْظَرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُغْنِي								
और नहीं फाइदा देती	और ज़मीन	आस्मानों	में	क्या है	देखो	आप कह दें	100	अक्ल नहीं रखते
الْآيَاتِ وَالنُّذُرِ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ (101) فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا								
मगर	वह इन्तिज़ार करते हैं	तो क्या	101	वह नहीं मानते	लोग	से	और डराने वाले	निशानियाँ
مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ								
तुम्हारे साथ	बेशक मैं	पस तुम इन्तिज़ार करो	आप (स) कह दें	उन से पहले	जो गुज़र चुके	वह लोग	दिन (वाकिफ़ात)	जैसे
مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ۚ (102) ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ								
उसी तरह	वह ईमान लाए	और वह लोग जो	अपने रसूल (जमा)	हम बचालेते हैं	फिर	102	इन्तिज़ार करने वाले	से
حَقًّا عَلَيْنَا نُنَجِّ الْمُؤْمِنِينَ ۚ (103) قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ								
अगर तुम हो	ऐ लोगो!	आप (स) कह दें	103	मोमिनीन	हम बचालेंगे	हक हम पर		
فِي شَكٍّ مِّن دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ								
अल्लाह	सिवाए	तुम पूजते हो	वह जो कि	तो मैं इबादत नहीं करता	मेरे दिन	से	किसी शक में	
وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّكُم ۚ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ								
से	मैं हूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	तुम्हें उठा लेता है	वह जो	मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ	और लेकिन	
الْمُؤْمِنِينَ ۚ (104) وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ وَلَا تَكُونَنَّ								
और हरगिज़ न होना	सब से सुँह मोड़ कर	दिन के लिए	अपना सुँह	सीधा रख	और यह कि	104	मोमिनीन	
مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ (105) وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ								
न तुझे नफ़ा दे	जो	अल्लाह	सिवाए	और न पुकार	105	मुश्रिकीन	से	
وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا مِّنَ الظَّالِمِينَ ۚ (106)								
106	ज़ालिम (जमा)	से	उस वक़्त	तो बेशक तू	तू ने किया	फिर अगर	नुक़सान पहुँचाए	और न

पस क्यों न हुई कोई बस्ती कि वह ईमान लाती तो उस को उस का ईमान नफ़ा देता, मगर यूनस(अ) की कौम (कि वह ईमान ले आई), जब वह ईमान लाए तो हम ने उन से दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई का अज़ाब उठा लिया, और उन्हें एक सुददत तक नफ़ा पहुँचाया। (98) और अगर चाहता तेरा रब अलबत्ता जो ज़मीन में है सब के सब ईमान ले आते, पस क्या तू लोगों को मजबूर करेगा? यहां तक कि वह मोमिन हो जाए। (99) और किसी शख्स के लिए (अपने इख़्तियार में) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ईमान ले आए, और वह डालता है (कुफ़ की) गन्दगी उन लोगों पर जो अक्ल नहीं रखते। (100) आप (स) कह दें देखो क्या कुछ है? आस्मानों में और ज़मीन में। और निशानियाँ और डराने वाले (रसूल) उन लोगों को फाइदा नहीं देते जो नहीं मानते। (101) तो क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं मगर उन्हीं लोगों जैसे वाकिफ़ात का जो उन से पहले गुज़र चुके, आप (स) कह दें पस तुम इन्तिज़ार करो बेशक मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (102) फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को, और उसी तरह उन को जो ईमान लाए, हम पर हक़ (ज़िम्मा) है हम बचालेंगे मोमिनों को। (103) आप (स) कह दें, ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दिन (के मुतअल्लिक) किसी शक में हो तो मैं इबादत नहीं करता उन की जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, लेकिन मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें (दुनिया से) उठा लेता है, और मुझे हुक्म दिया गया कि मोमिनों में से रहूँ। (104) और यह कि अपना सुँह सब से मोड़ कर दिन के लिए सीधा रख, और हरगिज़ मुश्रिकों में से न होना। (105) और अल्लाह के सिवा उसे न पुकार जो न तुझे नफ़ा दे सके, और न कोई नुक़सान पहुँचा सके, फिर अगर तू ने (ऐसा) किया तो उस वक़्त तू बेशक ज़ालिमों में से होगा। (106)

और अगर अल्लाह तुझे पहुँचाए कोई नुकसान तो उस के सिवा कोई उस को हटाने वाला नहीं, और अगर वह तेरा भला चाहे तो कोई उस के फज़ल को रोकने वाला नहीं, वह पहुँचाता है उस को अपने बन्दों में से जिस को चाहता है, और वह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (107)

आप (स) कह दें, ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ पहुँच चुका, तो जिस ने हिदायत पाई सिर्फ़ अपनी जान के लिए हिदायत पाई, और जो गुमराह हुआ तो सिर्फ़ अपने बुरे को गुमराह हुआ, और मैं तुम पर सुख़्तार नहीं हूँ, (108)

और (उस की) पैरवी करो जो तुम्हारी तरफ़ बहि हुई है, और सबर करो यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (109)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा, यह किताब है, इस की आयात मज़बूत की गई, फिर तफ़सील की गई हिक्मत वाले, ख़बरदार के पास से। (1)

यह कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, वेशक़ मैं उस (की तरफ़) से तुम्हारे लिए डराने वाला और खुशख़बरी देने वाला हूँ। (2)

और यह कि मग़फ़िरत तलब करो अपने रब की, फिर उस की तरफ़ रुज़ूअ करो वह तुम्हें फ़ाइदा पहुँचाएगा अच्छा सामान, एक मुक़र्रर वक़्त तक, और देगा हर फ़ज़ल वाले को अपना फ़ज़ल, और अगर तुम फिर जाओ तो वेशक़ मैं तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (3)

अल्लाह की तरफ़ तुम्हें लौटना है, और वह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। (4) याद रखो! वेशक़ वह अपने सीने दोहरे करते हैं ताकि उस (अल्लाह) से छुपालें, याद रखो! जब वह अपने कपड़े पहनते हैं वह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं, वेशक़ वह दिलों के भेद जानने वाला है। (5)

وَأَنْ يَّمْسَسَكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يُرِدْكَ								
और अगर	पहुँचाए तुझे	अल्लाह	कोई नुक़्सान	तो नहीं हटाने वाला	उस का	उस के सिवा	और अगर	तेरा चाहे
بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ								
और वह	भला	तो नहीं कोई रोकने वाला	उस के फ़ज़ल को	वह पहुँचाता है	उस को	जिसे चाहता है	से	अपने बन्दे
الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ								
वख़्शने वाला	निहायत मेहरबान	107	आप (स) कह दें	ऐ लोगो!	पहुँच चुका तुम्हारे पास	हक़	से	
رَبِّكُمْ فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا								
तुम्हारा रब	तो जो	हिदायत पाई	तो सिर्फ़	उस ने हिदायत पाई	अपनी जान के लिए	और जो	गुमराह हुआ	तो सिर्फ़
يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿١٠٨﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ								
वह गुमराह हुआ	उस पर (बुरे को)	और नहीं	मैं	तुम पर	सुख़्तार	108	और पैरवी करो	जो
إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿١٠٩﴾								
तुम्हारी तरफ़	और सबर करो	यहां तक कि	फ़ैसला कर दे	अल्लाह	और वह	बेहतरीन	फ़ैसला करने वाला	109
آيَاتُهَا ۚ ﴿١١﴾ سُورَةُ هُودٍ ﴿ ١٠ ۝ رُكُوعَاتُهَا ١٠ ۝								
आयात 123			हूद (अ)			रुक़ूआत 10		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ								
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है								
الرَّحْمَنُ كَتَبَ أَحْكَمَتْ آيَتُهُ ثُمَّ فَصَّلَتْ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ خَبِيرٍ ﴿١﴾								
अलिफ़ लाम रा	यह किताब	मज़बूत की गई	इस की आयात	फिर	तफ़सील की गई	से	पास	1
إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۚ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ﴿٢﴾ وَإِنْ اسْتَغْفَرُوا								
यह कि न	इबादत करो	अल्लाह के सिवा	वेशक़ मैं	तुम्हारे लिए	उस से	डराने वाला	और खुशख़बरी देने वाला	2
رَبِّكُمْ ثُمَّ تَوَبُّوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى								
अपना रब	फिर	उस की तरफ़ रुज़ूअ करो	वह फ़ाइदा पहुँचाएगा तुम्हें	मताअ	अच्छी	तक	वक़्त	मुक़र्रर
وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ								
और देगा	हर	फ़ज़ल वाला	अपना फ़ज़ल	और अगर तुम	फिर जाओ	तो वेशक़ मैं	डरता हूँ	तुम पर
يَوْمٍ كَبِيرٍ ﴿٣﴾ إِلَىٰ اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤﴾ إِلَّا								
एक दिन	बड़ा	3	अल्लाह की तरफ़	लौटना है तुम्हें	और वह	पर	हर शै	4
إِنَّهُمْ يَشْتُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ ۚ إِلَّا حِينَ يَسْتَغْشُونَ ثِيَابَهُمْ								
वेशक़ वह	दोहरे करते हैं	अपने सीने	ताकि छुपालें	उस से	याद रखो	जब	पहनते हैं	अपने कपड़े
يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٥﴾								
वह जानता है	जो वह छुपाते हैं	और जो वह ज़ाहिर करते हैं	वेशक़ वह	जानने वाला	दिलों के भेद	5		

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا							
और नहीं	से (कोई)	चलने वाला	में (पर)	ज़मीन	मगर	पर	अल्लाह
وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلُّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٦﴾							
और वह जानता है	उस का ठिकाना	और उस के सोंपे जाने की जगह	सब कुछ	में	रौशन किताब	6	
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِنْ قُلْتُمْ أَنْتُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٧﴾ وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَى أُمَّةٍ مَعْدُودَةٍ لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ إِلَّا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٨﴾ وَلَئِنْ أَدْقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ رَحْمَةٍ ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَكُفِّرُ ۖ وَلَئِنْ أَدْقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتِ عَنِّي إِنَّهُ لَفَرِحَ فَخُورٌ ۖ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١١﴾ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۖ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٢﴾							
और वही	जो - जिस	पैदा किया	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	में	छः (6) दिन	और था
उस का अर्थ	पानी पर	ताकि तुम्हें आजमाए	तुम में कौन	बेहतर	अमल में	और अगर	आप कहें
कि तुम	उठाए जाओगे	वाद	मौत - मरना	तो ज़रूर कहेंगे वह	वह लोग जो	उन्होंने न कुफ़ किया	नहीं यह
मगर (सिर्फ)	जादू	खुला	7	और अगर	हम रोक रखें	उन से	अज़ाब तक एक मुदत
- गिनी हुई - मुऐयन	तो वह ज़रूर कहेंगे	क्या रोक रही है उसे	याद रखो	जिस दिन	उन पर आएगा	न	टाला जाएगा
उन से	और घेरलेगा	उन्हें	जिस	थे	उस का	मज़ाक उड़ाते	8 और अगर हम चखा दें
इनसान को	अपनी तरफ़ से	कोई रहमत	फिर	हम छीन लें वह	उस से	वेशक वह	अलबत्ता मायूस
और अगर	उसे चखा दें	नमत (आराम)	सख्ती के बाद	उसे पहुँची	तो वह ज़रूर कहेगा	जाती रही	
बुराइयाँ	मुझ से	वेशक वह	इतराने वाला	10 मगर	जिन लोगों ने सब्र किया		
और अमल किए	नेक	यही लोग	उन के लिए	वख़्शिश	और सबाब	बड़ा	11
तो शायद (क्या) तुम	छोड़ दोगे	कुछ हिस्सा	जो	बहि किया गया	तेरी तरफ़	और तंग होगा	उस से
तेरा सीना (दिल)	कि वह कहते हैं	क्यों न	उतरा	उस पर	खज़ाना	या	उस के साथ
फ़रिश्ता	इसके सिवा नहीं	कि तुम	डराने वाले	और अल्लाह	पर	हर शै	12 इख़्तियार रखने वाला

और कोई ज़मीन पर चलने (फिरने) वाला नहीं, मगर उस का रिज़क अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे) है, और वह जानता है उस का ठिकाना और उस के सोंपे जाने की जगह, सब कुछ रौशन किताब (लौहे महफूज़) में है। (6) और वही है जिस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन छः दिन में, और उस का अर्थ पानी पर था, ताकि तुम्हें वह आजमाए कि तुम में कौन बेहतर है अमल में? और अगर आप (स) कहें कि तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो वह लोग ज़रूर कहेंगे जिन्होंने न कुफ़ किया कि यह सिर्फ़ खुला जादू है। (7) और अगर हम उन से अज़ाब रोक रखें एक मुदते मुऐयन तक वह ज़रूर कहेंगे क्या चीज़ उसे रोक रही है? याद रखो! जिस दिन उन पर (अज़ाब) आएगा उन से न टाला जाएगा, और उन्हें घेर लेगा जिस का वह मज़ाक उड़ाते थे। (8) और अगर हम इनसान को अपनी तरफ़ से किसी रहमत का मज़ा चखा दें फिर वह उस से छीन लें, तो वेशक वह मायूस, नाशुक्रा हो जाता है। (9) और अगर हम उसे सख्ती के बाद आराम चखा दें जो उसे पहुँची हो तो वह ज़रूर कहेगा मुझ से बुराइयाँ जाती रही, वेशक वह इतराने वाला शेखी ख़ोर है। (10) मगर जिन लोगों ने सब्र किया और नेक अमल किए यही लोग हैं जिन के लिए वख़्शिश और बड़ा सबाब है। (11) तो क्या तुम छोड़ दोगे (उस का) कुछ हिस्सा जो तुम्हारी तरफ़ वहि किया गया है, और उस से तुम्हारा दिल तंग होगा कि वह कहते हैं कि उस पर क्यों न उतरा कोई खज़ाना या उस के (साथ) फ़रिश्ता (क्यों न) आया? इस के सिवा नहीं कि तुम डराने वाले हो और अल्लाह हर शै पर इख़्तियार रखने वाला है। (12)

क्या वह कहते हैं? कि उस ने इस (कुरआन) को खुद घड़ लिया है, आप (स) कह दें तो तुम भी इस जैसी दस (10) सूरतें घड़ी हुई ले आओ और जिस को तुम (मदद के लिए) बुला सको बुला लो अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। (13)

फिर अगर वह तुम्हारे (उस चैलेंज का) जवाब न दे सकें तो जान लो कि यह तो अल्लाह के इल्म से नाज़िल किया गया है, और यह कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस क्या तुम इस्लाम लाते हो? (14) जो कोई चाहता है दुनिया की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत, हम उन के लिए उन के अमल इस (दुनिया) में पूरे कर देंगे और उस में उन की कमी न की जाएगी। (15) यही लोग हैं जिन के लिए आखिरत में आग के सिवा कुछ नहीं, और अकारत गया जो इस (दुनिया) में उन्होंने ने किया और जो वह करते थे नाबूद हुए। (16)

पस क्या (यह उस के बराबर है) जो अपने रब के खुले रास्ते पर हो और उस के साथ उस (अल्लाह की तरफ़) से गवाह हो, और उस से पहले मूसा (अ) की किताब इमाम (रहनुमा) और रहमत (थी) यही लोग इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं और गिरोहों में से जो इस का मुन्किर हो तो दोज़ख़ उस का ठिकाना है, पस तू शक में न हो इस से, वेशक वह तेरे रब (की तरफ़) से हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (17) और कौन है उस से बढ़ कर ज़ालिम? जो अल्लाह पर झूट बान्धे, यह लोग अपने रब के सामने पेश किए जाएंगे और गवाह कहेंगे कि यही हैं जिन्होंने अपने रब पर झूट बोला, याद रखो! ज़ालिमों पर अल्लाह की फटकार है। (18)

जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कज़ी ढूँडते हैं, और वह आखिरत के मुन्किर हैं। (19)

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيَاتٍ							
घड़ी हुई	इस जैसी	दस सूरतें	तो तुम ले आओ	आप (स) कहें	उस को खुद घड़ लिया है	क्या वह कहते हैं	
وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٣﴾							
13	सच्चे	हो	अगर तुम	अल्लाह	सिवाए	जिस को तुम बुला सकी	और तुम बुला लो
فَالَمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّمَا أُنْزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَنْ لَا إِلَهَ							
कोई माबूद नहीं	और यह कि	अल्लाह के इल्म से	नाज़िल किया गया है	कि यह तो	तो जान लो	तुम्हारा	फिर अगर वह जवाब न दे सकें
إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا							
दुनिया कि ज़िन्दगी	चाहता है	जो	14	तुम इस्लाम लाते हो	पस क्या	उस के सिवा	
وَزِينَتَهَا نُوفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾							
15	कमी किए जाएंगे (नुक्सान न होगा)	न	इस में	और वह	इस में	उन के अमल	उन के लिए हम पूरा कर देंगे और उस की ज़ीनत
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا							
जो	और अकारत गया	आग के सिवा	आखिरत में		उन के लिए	वह जो कि	यही लोग
صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ							
पर	हो	पस क्या जो	16	वह करते थे	जो	और नाबूद हुए	उस में उन्होंने ने किया
بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كُتِبَ مُوسَىٰ							
मूसा (अ) की किताब	उस से पहले	और	उस से	गवाह	और उस के साथ हो	अपने रब के	खुला रास्ता
إِمَامًا وَرَحْمَةً ۖ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنْ							
से	मुन्किर हो इस का	और जो	उस पर	ईमान लाते हैं	यही लोग	और रहमत	इमाम
الْأَحْزَابِ فَاَلْتَارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ إِنَّهُ الْحَقُّ							
वेशक वह हक	उस से	शक में	पस तू न हो	तो आग (दोज़ख)	उस का ठिकाना	गिरोहों में	
مِّنْ رَبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ							
सब से बड़ा ज़ालिम	और कौन	17	ईमान नहीं लाते	अक्सर लोग	और लेकिन	तेरे रब से	
مِّمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ							
अपने रब के सामने	पेश किए जाएंगे	यह लोग	झूट	अल्लाह पर	बान्धे	उस से जो	
وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا							
याद रखो	अपने रब पर	झूट बोला	वह जिन्होंने ने	यही है	गवाह (जमा)	और वह कहेंगे	
لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٨﴾ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ							
अल्लाह का रास्ता	से	रोकते हैं	वह लोग जो	18	ज़ालिम (जमा)	पर	अल्लाह की फटकार
وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿١٩﴾							
19	मुन्किर (जमा)	वह	आखिरत से	और वह	कजी	और उस मे ढून्डते हैं	

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ							
उन के लिए	और नहीं है	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले, थकाने वाले	नहीं है	यह लोग		
مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أُولِيَآءٍ يُضَعْفُ لَهُمُ الْعَذَابُ مَا							
न	अज़ाब	उन के लिए	दुगना	हिमायती	कोई	अल्लाह	सिवा से
كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ﴿٢٠﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ							
वह जिन्होंने ने	यही लोग	20	वह देखते थे	और न	सुनना	वह ताक़त रखते थे	
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ							
शक नहीं	21	वह इफ़तिरा करते थे (झूट बान्धते थे)	जो	उन से	और गुम हो गया	अपनी जानों का (अपना)	नुक्सान किया
أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْآخَسِرُونَ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا							
और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	वेशक	22	सब से ज़ियादा नुक्सान उठाने वाले	वह	आख़िरत में	कि वह
الصَّالِحَاتِ وَآخَبَتْهُوَ إِلَىٰ رَبِّهِمْ ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ							
उस में	वह	जन्नत वाले	यही लोग	अपने रब के आगे	और आजिज़ी की	नेक	
فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصْمَىٰ							
और देखता	और बहरा	जैसे अन्धा	दोनों फ़रीक़	मिसाल	23	हमेशा रहेंगे	
وَالسَّمِيعِ ۖ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا							
और हम ने भेजा	24	क्या तुम ग़ौर नहीं करते	मिसाल (हालत) में	क्या दोनों बराबर हैं	और सुनता		
نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾ أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا							
सिवाए	न परसतिश करो तुम	कि	25	खुला	डराने वाला	तुम्हारे लिए	वेशक मैं उस की कौम
तरफ़	नूह (अ)						
اللَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ الْيَمِّ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ الْمَلَأُ							
सरदार	तो बोले	26	दुख देने वाला दिन	अज़ाब	तुम पर	वेशक मैं डरता हूँ	अल्लाह
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا نَرِكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرِكَ							
और हम नहीं देखते तुझे	हमारे अपने जैसा	एक आदमी	मगर	हम तुझे नहीं देखते	उस की कौम के	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	
اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ ۖ وَمَا نَرَىٰ							
हम देखते	और नहीं	सरसरी नज़र से	नीच लोग हम में	वह	वह लोग जो	सिवाए	तेरी पैरवी करें
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ ۖ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَذِبِينَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ							
तुम देखो तो	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	27	झूटे	बल्कि हम खयाल करते हैं तुम्हें	फज़ीलत	कोई हम पर तुम्हारे लिए
إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَيْنِي رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهِ							
अपने पास से	रहमत	और उस ने दी मुझे	अपने रब से	वाज़ह दलील	पर	मैं हूँ	अगर
فَعَمِيَتْ عَلَيْكُمْ أَنْزِلُكُمْوهَا وَأَنْتُمْ لَهَا كَرِهُونَ ﴿٢٨﴾							
28	वेज़ार हो	उस से	और तुम	क्या हम वह तुम्हें ज़बरदस्ती मनवाएँ	तुम्हें	वह दिखाई नहीं देती	

यह लोग ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं, और उन के लिए नहीं है अल्लाह के सिवा कोई हिमायती, उन के लिए दुगना अज़ाब है, वह न सुनने की ताक़त रखते थे और न वह देखते थे। (20)

यही लोग हैं जिन्होंने ने अपनी जानों का नुक्सान किया और उन से गुम हो गया जो वह झूट बान्धते थे। (21)

कोई शक नहीं कि वह आखिरत में सब से ज़ियादा नुक्सान उठाने वाले हैं। (22)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, और अपने रब के आगे आजिज़ी की, यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (23)

दोनों फ़रीक़ की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक अन्धा और बहरा और (दूसरा) देखता और सुनता है, क्या वह दोनों बराबर हैं हालत में? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (24)

और हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा कि बेशक मैं तुम्हारे लिए (तुम्हें) डराने वाला हूँ खुला (खोल कर) (25)

कि अल्लाह के सिवा किसी की परसतिश न करो, बेशक मैं तुम पर एक दुख देने वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (26)

तो उस क़ौम के वह सरदार जिन्होंने ने कुफ़्र किया, बोले हम तुझे नहीं देखते मगर हमारे अपने जैसा एक आदमी, और हम नहीं देखते कि किसी ने तेरी पैरवी की हो उन के सिवा जो हम में नीच लोग हैं (वह भी) सरसरी नज़र से (वे सोचे समझे) और हम नहीं देखते तुम्हारे लिए अपने ऊपर कोई फज़ीलत, बल्कि हम तुम्हें झूटा खयाल करते हैं। (27)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! देखो तो, अगर मैं वाज़ह दलील पर हूँ अपने रब (की तरफ़) से और उस ने मुझे अपने पास से रहमत दी है, वह तुम्हें दिखाई नहीं देती, तो क्या हम वह तुम्हें ज़बरदस्ती मनवाएँ? और तुम उस से वेज़ार हो। (28)

और ऐ मेरी कौम! मैं तुम से उस पर कुछ माल नहीं मांगता, मेरा अज़र तो सिर्फ़ अल्लाह पर है, और जो ईमान लाए हैं मैं उन्हें हांकने वाला (दूर करने वाला) नहीं, वेशक वह अपने रब से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम एक कौम हो कि जहालत करते हो। (29) और ऐ मेरी कौम! अगर मैं उन्हें हांक दूँ तो मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (30)

और मैं नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब (की बातें) जानता हूँ, और मैं नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ, और जिन लोगों को तुम्हारी आँखें हकीर समझती हैं (तुम हकीर समझते हो) मैं नहीं कहता अल्लाह उन्हें हरगिज़ कोई भलाई न देगा, जो कुछ उन के दिलों में है अल्लाह ख़ूब जानता है (अगर ऐसा कहूँ तो) उस वक़्त अलबत्ता मैं ज़ालिमों से होंगा। (31)

वह बोले ऐ नूह (अ)! तू ने हम से झगड़ा किया, सो हम से बहुत झगड़ा किया, पस वह (अज़ाब) ले आ जिस का तू हम से वादा करता है, अगर तू सच्चाओं में से है। (32)

उस ने कहा तुम पर लाएगा सिर्फ़ अल्लाह उस (अज़ाब) को अगर वह चाहेगा, और तुम आजिज़ कर देने वाले नहीं हो। (33)

और मेरी नसीहत तुम्हें नफ़ा न देगी अगर मैं चाहूँ कि मैं तुम्हें नसीहत करूँ जब कि अल्लाह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, वही तुम्हारा रब है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (34)

क्या वह कहते हैं इस (कुरआन) को बना लाया है? आप (स) कह दें अगर मैं ने इस को बना लिया है तो मुझ पर है मेरा गुनाह, और मैं उस से बरी हूँ जो तुम गुनाह करते हो। (35) और नूह (अ) की तरफ़ वहि की गई कि तेरी कौम से (अब) हरगिज़ कोई ईमान न लाएगा, सिवाए उस के जो ईमान ला चुका, पस तू उस पर ग़मगीन न हो जो वह करते हैं। (36) और तू हमारे सामने कशती बना और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों (के हक़) में मुझ से बात न करना, वेशक वह डूबने वाले हैं। (37)

وَيَقُومُ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا إِنْ أَجَرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا								
और नहीं	अल्लाह पर	मगर	मेरा अजर	नहीं	कुछ माल	इस पर	मैं नहीं मांगता तुम से	और ऐ मेरी कौम
أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُمْ مُُلْقُوا رَبِّهِمْ وَلَكِنِّي أَرِكُمْ قَوْمًا								
एक कौम	देखता हूँ तुम्हें	और लेकिन मैं	अपना रब	मिलने वाले	वेशक वह	वह जो ईमान लाए	मैं हांकने वाला	
تَجْهَلُونَ (29) وَيَقُومُ مَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ طَرَدْتُهُمْ								
मैं हांक दूँ उन्हें	अगर	अल्लाह	से	कौन बचाएगा मुझे	और ऐ मेरी कौम	29	जहालत करते हो	
أَفَلَا تَذَكَّرُونَ (30) وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ								
और मैं नहीं जानता	अल्लाह के ख़ज़ाने	मेरे पास	तुम्हें	और मैं नहीं कहता	30	क्या तुम ग़ौर नहीं करते		
الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ								
तुम्हारी आँखें	हकीर समझती हैं	उन लोगों को जिन्हें	और मैं नहीं कहता	फ़रिश्ता	कि मैं	और मैं नहीं कहता	ग़ैब	
لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ إِنِّي								
वेशक मैं	उन के दिलों में	जो कुछ	ख़ूब जानता है	अल्लाह	कोई भलाई	अल्लाह	हरगिज़ न देगा उन्हें	
إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ (31) قَالُوا يُنُوحُ قَدْ جَادَلْتَنَا فَكُتِرَتْ جِدَالُنَا								
हम से झगड़ा किया	सो बहुत	तू ने झगड़ा किया हम से	ऐ नूह (अ)	वह बोले	31	अलबत्ता ज़ालिमों से	उस वक़्त	
فَاتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ (32) قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيَكُمْ								
सिर्फ़ लाएगा तुम पर	उस ने कहा	32	सच्चे (जमा)	से	अगर तू है	वह जो तू हम से वादा करता है	पस ले आ	
بِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ (33) وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ								
अगर	मेरी नसीहत	और न नफ़ा देगी तुम्हें	33	आजिज़ कर देने वाले	और तुम नहीं	अगर चाहेगा वह	अल्लाह	उस को
أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ								
तुम्हारा रब	वह	कि गुमराह करे तुम्हें	अल्लाह चाहे	है	अगर (जबकि)	तुम्हें	कि मैं नसीहत करूँ	मैं चाहूँ
وَالَيْهِ تُرْجَعُونَ (34) أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ								
अगर मैं ने उसे बना लिया है	कह दें	बना लाया है उस को	वह कहते हैं	क्या	34	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	
فَعَلَيْ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَجْرِمُونَ (35) وَأُوحِيَ إِلَى نُوحٍ								
नूह (अ) की तरफ़	और वहि भेजी गई	35	तुम गुनाह करते हो	उस से जो	बरी	और मैं	मेरा गुनाह	तो मुझ पर
أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ								
पस तू ग़मगीन न हो	ईमान लाचुका	जो	सिवाए	तेरी कौम	से	हरगिज़ ईमान न लाएगा	कि वह	
بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ (36) وَاصْنَعِ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحِينَا								
और हमारे हुक्म से	हमारे सामने	कशती	और तू बना	36	वह करते हैं	उस पर जो		
وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ (37)								
37	डूबने वाले	वेशक वह	जिन लोगों ने जुल्म किया (ज़ालिम)	में	और न बात करना मुझ से			

وَيَصْنَعُ الْفُلَكَ ۚ وَكَلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۚ									
और वह बनाता था	कशती	और जब भी	गुज़रते	उस पर	सरदार	से (के)	उस की कौम	वह हैंसते	उस से (पर)
قَالَ إِنَّ تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ۚ فَسَوْفَ									
उस ने कहा	अगर	तुम हैंसते हो	हम से (पर)	तो वेशक हम	हमेंगे	तुम से (पर)	जैसे	तुम हैंसते हो	38
सो अनकरीब	अनकरीब	38							
تَعْلَمُونَ ۚ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۚ									
तुम जान लोगे	किस पर आता है	ऐसा अज़ाव	उस को रुस्वा करे	और उतरता है	उस पर	उस पर	अज़ाव	दाइमी	39
तुम जान लोगे	39								
حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۖ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ									
यहां तक कि	जब आया	हमारा हुकम	और जोश मारा	तन्नूर	हम ने कहा	चढ़ा ले	उस में	से	
كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ									
हर एक जोड़ा	दो (नर मादा)	और अपने घर वाले	मगर	जो	हो चुका	उस पर	हुकम		
وَمَنْ أَمِنٌ وَمَا أَمِنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ۚ وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا									
और जो	ईमान लाया	और न	ईमान लाए	उस पर	मगर थोड़े	40	और उस ने कहा	सवार हो जाओ	इस में
और जो	40								
بِسْمِ اللَّهِ مَجَرَّهَا وَمُرْسَهَآ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ وَهِيَ تَجْرِي									
अल्लाह के नाम से	उस का चलना	उस का	और उसका ठहरना	वेशक	मेरा रव	अलबत्ता बख़शने वाला	निहायत मेहरवान	41	और वह
और वह	41								
بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۚ وَنَادَىٰ نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ									
उन को ले कर	लहरों में	पहाड़ जैसी	और पुकारा	नूह (अ)	अपना बेटा	और था	किनारे में		
يُبْنَىٰ اِرْكَبْ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ۚ قَالَ سَاوِي									
ऐ मेरे बेटे	सवार हो जा	हमारे साथ	और न रहो	काफ़िरों के साथ	42	उस ने कहा	मैं जल्द पनाह ले लेता हूँ		
ऐ मेरे बेटे	42								
إِلَىٰ جَبَلٍ يَعْصِمُنِي مِنَ الْمَاءِ ۚ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ									
किसी पहाड़ की तरफ़	वह बचा लेगा मुझे	पानी से	उस ने कहा	कोई बचाने वाला नहीं	आज	से	अल्लाह का हुकम		
إِلَّا مَنْ رَحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ۚ									
सिवाए	जिस पर वह रहम करे	और आगई	उन के दरमियान	मौज	तो वह हो गया	से	डूबने वाले	43	
सिवाए	43								
وَقِيلَ يَا رَأْسُ اِبْلَعِي مَاءَكَ وَيَسْمَاءُ أَفْلَعِي وَغِيضَ الْمَاءِ									
और कहा गया	ऐ ज़मीन	निगल ले	अपना पानी	और ऐ आस्मान	थम जा	और खुशक कर दिया गया	पानी		
وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَأَسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ									
और पूरा हो चुका (तमाम हो गया)	काम	और जा लगी	जूदी पहाड़ पर	और कहा दूरी (लानत)	दूरी	लोगों के लिए			
الظَّالِمِينَ ۚ وَنَادَىٰ نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي									
ज़ालिम (जमा)	44	और पुकारा	नूह (अ)	अपना रव	पस उस ने कहा	ऐ मेरे रव	वेशक	मेरा बेटा	
ज़ालिम (जमा)	44								
مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَكَمِينَ ۚ									
मेरे घर वालों में से	और वेशक	तेरा वादा	सच्चा	और तू	सब से बड़ा हाकिम	हाकिम (जमा)	45		
मेरे घर वालों में से	45								

और वह (नूह अ) कशती बनाता था और जब भी उस की कौम के सरदार उस (के पास) से गुज़रते तो वह उस पर हैंसते, उस (नूह अ) ने कहा अगर तुम हम पर हैंसते हो तो वेशक हम (भी) तुम पर हैंसेंगे जैसे तुम हैंसते हो। (38)

सो अनकरीब तुम जान लोगे किस पर ऐसा अज़ाव आता है जो उस को रुस्वा करे और उतरता है उस पर दाइमी अज़ाव। (39)

यहां तक कि जब हमारा हुकम आया, और तन्नूर ने जोश मारा (उबल पड़ा) हम ने कहा उस (कशती) में चढ़ा ले हर एक का जोड़ा, नर और मादा, और अपने घर वाले उस के सिवाए जिस पर (गर्कावी का) हुकम हो चुका है और जो ईमान लाया (उसे भी सवार कर ले) और उस पर ईमान न लाए थे मगर थोड़े। (40)

और उस ने कहा इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से है इस का चलना और इस का ठहरना, वेशक अलबत्ता मेरा रव बख़शने वाला, निहायत मेहरवान है। (41)

और वह (कशती) उन को ले कर पहाड़ जैसी लहरों में चली और नूह (अ) ने अपने बेटे को पुकारा, और वह (उस से) किनारे था, ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ सवार हो जा, और काफ़िरों के साथ न रहो। (42)

उस ने कहा मैं किसी पहाड़ की तरफ़ जल्दी पनाह ले लेता हूँ, वह मुझे पानी से बचा लेगा, उस ने कहा आज कोई बचाने वाला नहीं अल्लाह के हुकम से, सिवाए उस के जिस पर वह रहम करे, और उन के दरमियान मौज आगई (हाइल हो गई) तो वह भी डूबने वालों में (शमिल) हो गया। (43)

और कहा गया ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल ले, और ऐ आस्मान थम जा, और पानी को खुशक कर दिया गया, और तमाम हो गया काम, और (कशती) जा लगी जूदी पहाड़ पर, और कहा दूरी (लानत) हो ज़ालिम लोगों के लिए। (44)

और पुकारा नूह (अ) ने अपने रव को, पस उस ने कहा ऐ मेरे रव! वेशक मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है, और वेशक तेरा वादा सच्चा है, और तू हाकिमों में सब से बड़ा हाकिम है। (45)

उस ने फरमाया, ऐ नूह (अ)!
 वेशक वह तेरे घर वालों में
 से नहीं, वेशक उस के अमल
 नाशाइस्ता हैं, सो मुझ से ऐसी बात
 का सवाल न कर जिस का तुझे
 इल्म नहीं, वेशक मैं तुझे नसीहत
 करता हूँ कि तू नादानों में से (न)
 हो जाए, (46)
 उस ने कहा ऐ मेरे रब! मैं तेरी
 पनाह चाहता हूँ कि मैं तुझ से
 ऐसी बात का सवाल करूँ जिस का
 मुझे इल्म न हो, और अगर तू मुझे
 न बख़्शे और मुझ पर रहम न करे
 तो मैं नुक़सान पाने वालों में से
 हो जाऊँ। (47)
 कहा गया, ऐ नूह (अ)! हमारी
 तरफ़ से सलामती के साथ उतर
 जाओ और बरकतें हों तुझ पर,
 और उन गिरोहों पर जो तेरे साथ
 हैं और कुछ गिरोह हैं कि हम उन्हें
 जल्द (दुनिया में) फाड़दा देंगे,
 फिर उन्हें हम से पहुँचेगा अज़ाब
 दर्दनाक। (48)
 यह ग़ैब की ख़बरें जो हम तुम्हारी
 तरफ़ वहि करते हैं, न तुम उन
 को जानते थे इस से पहले और न
 तुम्हारी क़ौम (जानती थी), पस
 सब्द करो, वेशक परहेज़गारों का
 अन्जाम अच्छा है। (49)
 क़ौमे आद की तरफ़ उन के भाई
 हूद (अ) (आए), उस ने कहा
 ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत
 करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई
 माबूद नहीं, तुम सिर्फ़ झूट वान्धते
 हो (इफ़तिरा करते हो) (50)
 ऐ मेरी क़ौम! उस पर मैं तुम से
 कोई सिला नहीं मांगता, मेरा सिला
 सिर्फ़ उसी पर है जिस ने मुझे
 पैदा किया, फिर क्या तुम समझते
 नहीं? (51)
 और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से
 बख़्शिश मांगो, फिर उसी की
 तरफ़ रुज़ूअ करो (तौबा करो),
 वह तुम पर आस्मान से ज़ोर की
 वारिश भेजेगा, और तुम्हें कुव्वत
 पर कुव्वत बढ़ाएगा और मुज़रिम
 हो कर रूग़दानी न करो। (52)
 वह बोले ऐ हूद (अ)! तू हमारे पास
 कोई सनद ले कर नहीं आया, और
 हम छोड़ने वाले नहीं अपने माबूदों
 को तेरे कहने से, और हम तुझ पर
 ईमान लाने वाले नहीं। (53)

قَالَ يٰ نُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ								
उस ने	ऐ नूह (अ)	वेशक वह	नहीं	से	तेरे घर वाले	वेशक वह	अमल	नाशाइस्ता
فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنِّي أَعِظُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ								
सो मुझ से सवाल न कर	ऐसी बात कि नहीं	तुझ को	उस का	इल्म	वेशक मैं नसीहत करता हूँ तुझे	कि	तू हो जाए	से
الْجَاهِلِينَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي								
नादान (जमा)	46	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	मैं पनाह चाहता हूँ	तुझ से	कि	मैं सवाल करूँ तुझ से	ऐसी बात कि नहीं
بِهِ عِلْمٌ وَلَا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُنْ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٤٧﴾								
उस का	इल्म	और अगर तू न बख़्शे मुझे	और तू मुझ पर रहम न करे	हो जाऊँ	से	नुक़सान पाने वाले	47	मुझे
قِيلَ يٰ نُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ								
कहा गया	ऐ नूह (अ)	उतर जाओ तुम	सलामती के साथ	हमारी तरफ़ से	और बरकतें	तुझ पर	और गिरोह पर	
مِمَّنْ مَّعَكَ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٨﴾								
से - जो	तेरे साथ	और कुछ गिरोह	हम उन्हें जल्द फाड़दा देंगे	फिर	उन्हें पहुँचेगा	हम से	अज़ाब	दर्दनाक
تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ								
यह	से	ग़ैब की ख़बरें	हम वहि करते हैं उसे	तुम्हारी तरफ़	न	तुम उन को जानते थे	तुम	
وَلَا قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ هَٰذَا فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾								
और न	तुम्हारी क़ौम	से	इस से पहले	पस सब्द करो	वेशक	अच्छा अन्जाम	परहेज़गारों के लिए	49
وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهِ								
और तरफ़	क़ौमे आद	उन के भाई	हूद (अ)	उस ने कहा	ऐ मेरी क़ौम	तुम इबादत करो	अल्लाह	कोई माबूद नहीं
غَيْرُهُ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ يَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ								
उस के सिवा	नहीं	तुम	मगर (सिर्फ़)	झूट वान्धते हो	50	ऐ मेरी क़ौम	मैं तुम से नहीं मांगता	उस पर
أَجْرًا إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾								
कोई अजर (सिला)	नहीं	मेरा सिला	मगर (सिर्फ़)	पर	जिस ने मुझे पैदा किया	क्या फिर तुम समझते नहीं	51	
وَيَقَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ								
और ऐ मेरी क़ौम	तुम बख़्शिश मांगो	अपना रब	फिर	उसी की तरफ़ रुज़ूअ करो	वह भेजेगा	आस्मान		
عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا								
तुम पर	ज़ोर की वारिश	और तुम्हें बढ़ाएगा	कुव्वत (पर)	तुम्हारी कुव्वत	और रुग़दानी न करो			
مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا يٰ هُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ								
मुज़रिम हो कर	52	वह बोले	ऐ हूद (अ)	तू नहीं आया हमारे पास	कोई दलील (सनद) ले कर	और नहीं	हम	
بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾								
छोड़ने वाले	अपने माबूद	तेरे कहने से	और नहीं	हम	तेरे लिए (तुझ पर)	ईमान लाने वाले	53	

إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرِكَ بَعْضُ الْهَيْئَةِ بِسُوءٍ قَالَ إِنِّي أَشْهَدُ اللَّهَ									
अल्लाह	गवाह करता हूँ	वेशक मैं	उस ने कहा	बुरी तरह	हमारा माबूद	किसी	तुझे आसेव पहुँचाया है	मगर	हम कहते हैं
وَأَشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾ مِنْ دُونِهِ فَكِدُونِي جَمِيعًا									
सब	सो मकर (बुरी तदबीर) करो मेरे बारे में	उस के सिवा	54	तुम शरीक करते हो	उन से	वेज़ार हूँ	वेशक मैं	और तुम गवाह रहो	
ثُمَّ لَا تُنْظَرُونَ ﴿٥٥﴾ إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ									
कोई	चलने नहीं	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह पर	मैं ने भरोसा किया	वेशक मैं	55	मुझे मोहलत न दो	फिर
إِلَّا هُوَ أَخِذْ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾ فَإِنْ									
फिर अगर	56	सीधा	रास्ता	पर	मेरा रब	वेशक	उस को चोटी से	पकड़ने वाला	वह मगर
تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا									
कोई और कौम	मेरा रब	और काइम मुकाम कर देगा	तुम्हारी तरफ़	उस के साथ	जो मुझे भेजा गया	मैं ने तुम्हें पहुँचा दिया	तुम रूगदानी करोगे		
غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا إِنَّ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيزٌ ﴿٥٧﴾									
57	निगहवान	हर शै	पर	मेरा रब	वेशक	कुछ	और तुम न बिगाड़ सकोगे उस का	तुम्हारे सिवा	
وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا									
अपनी	रहमत से	उस के साथ	और वह लोग जो ईमान लाए	हूद (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	आया	और जब	
وَنَجَّيْنَاهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ									
अपना रब	आयतों का	उन्होंने ने इन्कार किया	आद	और यह	58	सख्त	अज़ाब	से	और हम ने उन्हें बचा लिया
وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾ وَأَتَّبَعُوا فِي									
मैं	और उन के पीछे लगादी गई	59	ज़िददी	हर सरकश	हुक्म	और पैरवी की	अपने रसूल	और उन्होंने ने नाफरमानी की	
هَذِهِ الدُّنْيَا لَعَنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ إِلَّا إِنْ عَادَا كَفَرُوا رَبَّهُمْ									
अपना रब	वह मुन्किर हुए	आद	वेशक	याद रखो	और रोज़े कियामत	लानत	इस दुनिया		
إِلَّا بُعْدًا لِعََادٍ قَوْمٍ هُودٍ ﴿٦٠﴾ وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَقُومُ									
ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	सालेह (अ)	उन का भाई	और समूद की तरफ़	60	हूद की कौम	आद के लिए	फटकार	याद रखो
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ هُوَ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ									
ज़मीन से	पैदा किया तुम्हें	वह - उस	उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए	नहीं	अल्लाह की इबादत करो		
وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تَوَبُّوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ									
नज़्दीक	मेरा रब	वेशक	रुजूअ करो उस की तरफ़ (तौबा करो)	फिर	सो उस से बख्शिश मांगो	उस में	और बसाया तुम्हें उस ने		
مُجِيبٌ ﴿٦١﴾ قَالُوا يَصْلِحْ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَذَا أَتَنْهِنَا									
क्या तू हमें मना करता है	इस से कब्ल	मरकज़े उम्मीद	हम में (हमारे दरमियान)	तू था	ऐ सालेह (अ)	वह बोले	61	कुबूल करने वाला	
أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ﴿٦٢﴾									
62	कवी शुवाह में	उस की तरफ़	तू हमें बुलाता है	उस से जो	शक में है	और	हमारे बाप दादा	उसे जिस की परस्तिश करते थे	कि हम परस्तिश करें

हम यही कहते हैं कि तुझे आसेव पहुँचाया है हमारे किसी माबूद ने बुरी तरह, उस ने कहा वेशक मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम (भी) गवाह रहो, मैं उन से वेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो (54) उस के सिवा, सो मेरे बारे में सब मकर (बुरी तदबीर) कर लो, फिर मुझे मोहलत न दो। (55) मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया (जो) मेरा रब है और तुम्हारा रब है, कोई चलने (फिरने) वाला नहीं मगर वह उस को चोटी से पकड़ने वाला है (कब्जे में लिए हुए है) वेशक मेरा रब है रास्ते पर सीधे। (56) फिर अगर तुम रूगदानी करोगे तो जिस के साथ मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया वह मैं तुम्हें पहुँचा चुका, और काइम मुकाम कर देगा मेरा रब तुम्हारे सिवा किसी और कौम को, और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे, वेशक मेरा रब हर शै पर निगहवान है। (57) और जब हमारा हुक्म आया, हम ने हूद (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से बचा लिया, और हम ने उन्हें बचा लिया सख्त अज़ाब से। (58) और यह आद थे और उन्होंने ने अपने रब की आयतों का इन्कार किया, और अपने रसूलों की नाफरमानी की, और हर सरकश ज़िददी की पैरवी की। (59) और लानत उन के पीछे लगादी गई, इस दुनिया में और रोज़े कियामत, याद रखो! आद अपने रब के मुन्किर हुए, याद रखो! हूद (अ) की कौम आद पर फटकार है। (60) और समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अ) को (भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया, और तुम्हें उस में बसाया, पस उस से बख्शिश मांगो, फिर उस से तौबा करो, वेशक मेरा रब नज़्दीक है, कुबूल करने वाला है। (61) वह बोले ऐ सालेह (अ)! तू हमारे दरमियान इस से कब्ल मरकज़े उम्मीद था (तुझ से बड़ी उम्मीदें थी) क्या तू हमें मना करता है कि हम उन की परस्तिश (न) करें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, तो जिस की तरफ़ तू हमें बुलाता है उस में हम कवी शुवाह में हैं। (62)

उस ने कहा, ऐ मेरी कौम! तुम क्या देखते हो (भला देखो तो) अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से रहमत दी है तो अगर मैं उस की नाफ़रमानी करूँ, मुझे अल्लाह से कौन बचाएगा? तुम मेरे लिए नुक़सान के सिवा कुछ नहीं बढ़ाते। (63)

और ऐ मेरी कौम! यह अल्लाह की ऊंटनी है, तुम्हारे लिए निशानी, पस उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती (फिरे) और उस को न छुओ (न पहुँचाओ) कोई बुराई (नुक़सान) पस तुम्हें बहुत जल्द अज़ाब पकड़लेगा। (64)

फिर उन्होंने ने उस की कूँचें काट दी तो उस (सालेह अ) ने कहा, तुम अपने घरों में बरत लो तीन दिन और, यह झूटा न होने वाला वादा है (पूरा हो कर रहेगा)। (65)

फिर जब हमारा हुक्म आया हम ने सालेह (अ) को बचा लिया और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत (के ज़रीए), और उस दिन की रसुवाई से, वेशक तुम्हारा रब कबी, ग़ालिब है। (66)

और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, पस उन्होंने ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (67)

गोया वह कभी यहाँ बसे ही न थे, याद रखो! वेशक कौमे समूद अपने रब के मुन्किर हुए, याद रखो! समूद पर फटकार है। (68)

और हमारे फ़रिश्ते अलबत्ता इब्राहीम (अ) के पास खुशख़बरी ले कर आए, वह सलाम बोले, उस (इब्राहीम अ) ने सलाम कहा, फिर उस ने देर न की एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। (69)

फिर जब उस (इब्राहीम अ) ने देखा कि उन के हाथ खाने की तरफ़ नहीं पहुँचते तो वह उन से डरा और दिल में उन से खौफ़ महसूस किया, वह बोले डरो मत, वेशक हम कौमे लूत (अ) की तरफ़ भेजे गए हैं। (70)

और उस की बीवी खड़ी हुई थी तो वह हँस पड़ी सो हम ने उसे खुशख़बरी दी इसहाक (अ), और इसहाक (अ) के बाद याकूब (अ) की। (71)

वह बोली अए है! क्या मेरे बच्चा होगा? हालाँकि मैं बुढ़या हूँ और यह मेरा ख़ावन्द बूढ़ा है, वेशक यह एक अजीब बात है। (72)

قَالَ يَقُومُ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَنِىٰ مِنْهُ							
अपनी तरफ़ से	और उस ने मुझे दी	अपने रब से	रौशन दलील पर	अगर मैं हूँ	क्या देखते हो तुम	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा
رَحْمَةً فَمَنْ يَنْصُرُنِى مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ ۖ فَمَا تَزِيدُونِى غَيْرَ							
सिवाए	तुम मेरे लिए बढ़ाते	तो नहीं	मैं उस की नाफ़रमानी करूँ	अगर	अल्लाह से	मेरी मदद करेगा (बचाएगा)	तो कौन रहमत
تَخْسِيرٍ ۚ وَيَقُومُ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِى							
मैं	खाए	पस उस को छोड़ दो	निशानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह की ऊंटनी	यह	और ऐ मेरी कौम 63 नुक़सान
أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذْكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۖ							
64	करीब (बहुत जल्द)	अज़ाब	पस तुम्हें पकड़ लेगा	बुराई से	और उस को न छुओ तुम	अल्लाह की ज़मीन	
فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوا فِى دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ۖ ذَٰلِكَ وَعَدٌ							
वादा	यह	तीन दिन	अपने घरों में	बरत लो	उस ने कहा	उन्होंने ने उस की कूँचें काट दी	
غَيْرِ مَكْدُوبٍ ۚ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا							
और वह लोग जो ईमान लाए	सालेह (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	आया	फिर जब	65	न झूटा होने वाला
مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيزُ ۖ							
66	ग़ालिब	कबी	वह	तुम्हारा रब	वेशक	उस दिन की	और अपनी रुस्वाई से
وَأَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِى دِيَارِهِمْ جِثَمِينَ ۖ							
67	औन्धे पड़े रह गए	अपने घर	में	पस उन्होंने ने सुबह की	चिंघाड़	वह जिन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)	और आ पकड़ा
كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِىهَا ۖ آلَا إِنَّ ثَمُودَ كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۖ آلَا بُعْدًا							
फटकार	याद रखो	अपने रब के	मुन्किर हुए	समूद	वेशक	याद रखो	उस में
لِّثَمُودَ ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا سَلَامًا ۖ							
सलाम	वह बोले	खुशख़बरी ले कर	इब्राहीम (अ)	हमारे फ़रिश्ते	और अलबत्ता आए	68	समूद पर
قَالَ سَلَامٌ ۖ فَمَا لَبِثَ أَنْ جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِידٍ ۚ فَلَمَّا رَآ أَيْدِيَهُمْ							
उस ने देखे उन के हाथ	फिर जब	69	भुना हुआ	एक बछड़ा ले आया	कि	फिर उस ने देर न की	सलाम
لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكْرَهُمْ وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ							
तुम डरो मत	वह बोले	खौफ़	उन से	और महसूस किया	वह उन से डरा	उस की तरफ़	नहीं पहुँचते
إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ قَوْمِ لُوطٍ ۖ وَامْرَأَتُهُ قَابِئَةُ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنَاهَا							
सो हम ने उसे खुशख़बरी दी	तो वह हँस पड़ी	खड़ी हुई	और उस की बीवी	70	कौमे लूत	तरफ़	वेशक हम भेजे गए हैं
بِإِسْحَاقَ ۖ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبُ ۖ قَالَتْ يُوَيْلَتِىٓ ءَالِدُ							
क्या मेरे बच्चा होगा	ऐ ख़राबी (अए है)	वह बोली	71	याकूब (अ)	इसहाक (अ)	और से (के) बाद	इसहाक (अ) की
وَأَنَا عَجُوزٌ ۖ وَهَٰذَا بَعْلِى شَيْخًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ۖ							
72	अजीब	एक चीज़ (बात)	यह	वेशक	बूढ़ा	मेरा ख़ावन्द	और यह बुढ़या
هَٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ۖ							
هَٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ۖ							
है							

قَالُوا اتَّعَجِبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ رَحِمَتْ اللَّهُ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ										वह बोले क्या तू अल्लाह के हुक्म से (अल्लाह की कुदरत पर)		
तुम पर	और उस की बरकतें	अल्लाह की रहमत	अल्लाह का हुक्म	से	क्या तू तअज्जुब करती है	वह बोले					तअज्जुब करती है? तुम पर अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें ऐ घर वालो! वेशक वह खूबियों वाला, बुजर्गी वाला है। (73)	
أَهْلَ الْبَيْتِ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ											फिर जब इब्राहीम (अ) का खौफ़ जाता रहा, ओर उस के पास खुशखबरी आगई, वह हम से कौमे लूत (अ) (के बारे) में झगड़ने लगा। (74)	
खौफ़	इब्राहीम (अ)	से (का)	जाता रहा	फिर जब	73	बुजर्गी वाला	खूबियों वाला	वेशक वह	ऐ घर वालो			
وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَى يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٤﴾ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ											और उस के पास आगई खुशखबरी हम से झगड़ने लगा। (74)	
इब्राहीम (अ)	वेशक	74	कौमे लूत	में	हम से झगड़ने लगा	खुशखबरी	और उस के पास आगई				वेशक इब्राहीम (अ) बुर्दवार, नर्म दिल रुज़्ज़ करने वाला। (75)	
आचुका	वेशक यह	इस से	ऐराज़ कर	ऐ इब्राहीम (अ)	75	रुज़्ज़ करने वाला	नर्म दिल	बुर्दवार			ऐ इब्राहीम (अ)! उस से ऐराज़ कर (यह खयाल छोड़ दे) वेशक तेरे रब का हुक्म आचुका, और वेशक उन पर न टलाया जाने वाला अज़ाब आने वाला है (आया ही चाहता है)। (76)	
أَمْرُ رَبِّكَ وَأَنْتَهُمْ أَتَيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ﴿٧٦﴾ وَلَمَّا											और जब हमारे फ़रिश्ते लूत (अ) के पास आए वह उस से ग़मगीन हुआ और तंग दिल हुआ उन (की तरफ़) से और बोला यह बड़ा सख्ती का दिन है। (77)	
और जब	76	न टलाया जाने वाला	अज़ाब	उन पर आगया	और वेशक उन	तेरे रब का हुक्म					और उस के पास उस की कौम दौड़ती हुई आई, ओर वह उस से क़व्ल बुरे काम करते थे, उस ने कहा ऐ मेरी कौम! यह मेरी बेटियां (मौजूद) हैं, यह तुम्हारे लिए निहायत पाकीज़ा हैं, पस अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों में रुस्वा न करो, क्या तुम में एक आदमी (भी) नेक चलन नहीं? (78)	
جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سَيِّئًا بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَذَا											वह बोले तू तो जानता है, तेरी बेटियों में हमारे लिए कोई हक़ (राज़) नहीं, और वेशक तू खूब जानता है हम किया चाहते हैं? (79)	
यह	और बोला	दिल में	उन से	और तंग हुआ	उन से	वह ग़मगीन हुआ	लूत (अ) के पास	हमारे फ़रिश्ते	आए		उस ने कहा काश मेरा तुम पर कोई ज़ोर होता, या मैं किसी मज़बूत पाए की पनाह लेता। (80)	
يَوْمَ عَصِيبٍ ﴿٧٧﴾ وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا											वह (फ़रिश्ते) बोले, ऐ लूत (अ)! वेशक हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं वह तुम तक हरगिज़ न पहुँच सकेंगा, सो तुम अपने घर वालों के साथ रात के किसी हिस्से में (रातों रात) निकलो, और मुड़ कर न देखे तुम में से तुम्हारी बीबी के सिवा कोई, वेशक जो उन को पहुँचेगा उस को पहुँचने वाला है (पहुँच कर रहेगा), वेशक उन पर (अज़ाब के) वादे का वक़्त सुबह है, क्या सुबह नज़दीक नहीं? (81)	
और उस से क़व्ल		उस की तरफ़	दौड़ती हुई	उस की कौम	और उस के पास आई	77	बड़ा सख्ती का दिन					नज़दीक
निहायत पाकीज़ा	यह	मेरी बेटियां	यह	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	बुरे काम	वह करते थे					सुबह
لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ فِي ضَيْفِي أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ											क्या नहीं	
एक आदमी	तुम से (तुम में)	क्या नहीं	मेरे मेहमानों में	और न रुस्वा करो मुझे	अल्लाह	पस डरो	तुम्हारे लिए					सुबह
رَّشِيدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ											उन का वादा	
हक़	कोई	तेरी बेटियों में	हमारे लिए	नहीं	तू तो जानता है	वह बोले	78	नेक चलन			वेशक	
وَأَنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ﴿٧٩﴾ قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ												
कोई ज़ोर	तुम पर	मेरे लिए (मेरा)	काश कि	उस ने कहा	79	चाहते हैं?	हम क्या	खूब जानता है	और वेशक तू			
أَوْ آوَىٰ إِلَىٰ زُكْنٍ شَدِيدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوا يَلُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ												
तुम्हारा रब	भेजे हुए	वेशक हम	ऐ लूत (अ)	वह बोले	80	मज़बूत पाया	तरफ़	या मैं पनाह लेता				
لَنْ يَصِلُوا إِلَيْكَ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ												
और न मुड़ कर देखे	रात	से (का)	कोई हिस्सा	अपने घर वालों के साथ	सो ले निकल	तुम तक	वह हरगिज़ नहीं पहुँचेंगे					
مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا أَمْرَاتَكَ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ												
उन को पहुँचेगा	जो	उस को पहुँचने वाला	वेशक वह	तुम्हारी बीबी	सिवा	कोई	तुम में से					
إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾												
81	नज़दीक	सुबह	क्या नहीं	सुबह	उन का वादा	वेशक						

पस जब हमारा हुक्म आया, हम ने उन का वुलन्द पस्त कर दिया (ज़ेर ज़बर कर दिया) और हम ने बरसाए उस (बस्ती) पर संगरेज़े के पत्थर तह ब तह (लगातार)। (82) तेरे रब के पास निशान किए हुए, और यह नहीं है ज़ालिमों से कुछ दूर। (83) और मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (आए), उस ने कहा: ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और माप तोल में कमी न करो, वेशक मैं तुम्हें आसूदा हाल देखता हूँ, और वेशक मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (84) और ऐ मेरी कौम! इन्साफ़ से माप तोल पूरा करो, लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो, और ज़मीन में फ़साद करते न फ़िरो। (85) अल्लाह (का दिया हुआ जो) बच रहे तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम ईमान वाले हो, और मैं तुम पर निगहबान नहीं हूँ। (86) वह बोले ऐ शुऐब (अ)! क्या तेरी नमाज़ तुझे हुक्म देती है (सिखाती है)? कि उन्हें छोड़ दें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, या अपने मालों में हम जो चाहें न करें, (ताने भरे अंदाज़ में बोले) वेशक तुम ही बाबिकार, नेक चलन हो? (87) उस ने कहा ऐ मेरी कौम! तुम्हारा क्या खयाल है? मैं अपने रब की तरफ़ से अगर रौशन दलील पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी दी है, और मैं नहीं चाहता कि मैं (खुद) उस के खिलाफ़ करूँ जिस से तुम्हें रोकता हूँ, जिस क़द्र मुझ से हो सके मैं सिर्फ़ इसलाह चाहता हूँ और मेरी तौफ़ीक़ सिर्फ़ अल्लाह ही से है, उसी पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूँ। (88)

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا							
उस पर	और हम ने बरसाए	उस का नीचा (पस्त)	उस का ऊपर (वुलन्द)	हम ने करदिया	हमारा हुक्म	आया	पस जब
حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مِّنْضُودٍ ﴿٨٢﴾ مُسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ							
तेरे रब के पास	निशान किए हुए	82	तह ब तह	कंकर (संगरेज़े)		पत्थर	
وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾ وَإِلَى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا							
शुऐब (अ)	उन का भाई	और मदयन की तरफ़	83	कुछ दूर	ज़ालिम (जमा)	से	यह और नहीं
قَالَ يَاقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَهِ غَيْرُهُ							
उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए नहीं	अल्लाह	इबादत करो	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	
وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ إِنِّي أَرَبُّكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنِّي							
और वेशक मैं	आसूदा हाल	तुम्हें देखता हूँ	वेशक मैं	और तोल	माप	और न कमी करो	
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُحِيطٍ ﴿٨٤﴾ وَيَقَوْمِ أَوفُوا							
पूरा करो	और ऐ मेरी कौम	84	एक घेरलेने वाला दिन	अज़ाब	तुम पर	डरता हूँ	
الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ							
उन की चीज़	लोग	और न घटाओ	इन्साफ़ से	और तोल	माप		
وَلَا تَعَثُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾ بَقِيَتْ اللَّهُ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن							
अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	अल्लाह	बचा हुआ	85	फ़साद करते हुए	ज़मीन में और न फ़िरो
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوا يُشْعِبُ							
ऐ शुऐब (अ)	वह बोले	86	निगहबान	तुम पर	मैं	और नहीं	ईमान वाले तुम हो
أَصْلَوْثُكَ تَأْمُرُكَ أَنْ نَتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَنْ نَفْعَلَ							
हम न करें	या	हमारे बाप दादा	जो परस्तिश करते थे	हम छोड़ दें	कि	तुझे हुक्म देती है	क्या तेरी नमाज़
فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ							
उस ने कहा	87	नेक चलन	बुर्दवार (बाबिकार)	अलबत्ता तू	वेशक तू	जो हम चाहें	अपने मालों में
يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَرَزَقْنِي مِنْهُ							
अपनी तरफ़ से	उस ने मुझे रोज़ी दी	अपना रब	से	रौशन दलील	पर	मैं हूँ	अगर क्या तुम देखते हो (क्या खयाल है) ऐ मेरी कौम
رِزْقًا حَسَنًا وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنْتُمْكُمْ							
जिस से मैं तुम्हें रोकता हूँ	तरफ़	मैं उस के खिलाफ़ करूँ	कि	और मैं नहीं चाहता	अच्छी	रोज़ी	
عَنْهُ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا							
और नहीं	मुझ से हो सके	जो (जिस क़द्र)	इस्लाह	मगर (सिर्फ़)	मैं चाहता	नहीं	उस से
تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿٨٨﴾							
88	मैं रुजूअ करता हूँ	और उसी की तरफ़	मैं ने भरोसा किया	उस पर	अल्लाह से	मगर (सिर्फ़)	मेरी तौफ़ीक़

قَالَ
يَا
يَا
يَا

وَيَقُومُ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَ					
जो पहुँचा	उस जैसा	कि तुम्हें पहुँचे	मेरी ज़िद	तुम्हें आमादा न करदे	और ऐ मेरी कौम
قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ وَمَا قَوْمَ لُوطٍ مِّنْكُمْ					
तुम से	कौमे लूत	और नहीं	कौमे सालेह	या	कौमे हूद या कौमे नूह (अ)
بَعِيدٍ ۝۸۹ وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ					
निहायत मेहरबान	मेरा रब	वेशक	उस की तरफ रुजूअ करो	फिर	अपना रब और वख़्शिश मांगो 89 कुछ दूर
وَدُودٌ ۝۹۰ قَالُوا يَشْعِبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا تَقُولُ وَإِنَّا					
और वेशक हम	उन से जो तू कहता है	बहुत	हम नहीं समझते	ऐ शुऐब (अ)	उन्होंने ने कहा 90 मुहब्बत वाला
لَنَزِكَ فِينَا ضَعِيفًا وَلَوْ لَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا					
हम पर	तू	और नहीं	तुझ पर पथराओ करते	और अगर तेरा कुम्बा न होता	जईफ (कमज़ोर) अपने दरमियान तुझे देखते हैं
بَعَزٍ ۝۹۱ قَالَ يَقُومُ أَرْهَطِي أَعَزُّ عَلَيْكَ مِنَ اللَّهِ					
अल्लाह	से	तुम पर	ज़ियादा ज़ोर वाला	क्या मेरा कुम्बा	ऐ मेरी कौम उस ने कहा 91 ग़ालिब
وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَاءَكُمْ ظَهْرِيًّا إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝۹۲					
92	अहाता किए हुए	उसे जो तुम करते हो	मेरा रब	वेशक	पीठ पीछे अपने से परे और तुम ने उसे लिया (डाल रखा)
وَيَقُومُ اْعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝					
तुम जान लोगे	जल्द	काम करता हूँ	वेशक मैं	अपनी जगह	पर तुम काम करते रही ऐ मेरी कौम
مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ وَارْتَقِبُوا					
और तुम इन्तिज़ार करो	झूटा	वह	और कौन?	उस को रुस्वा कर देगा	अज़ाब उस पर आता है कौन - किस?
إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ۝۹۳ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا					
शुऐब (अ)	हम ने वचा लिया	हमारा हुकम	और जब आया	93	इन्तिज़ार तुम्हारे साथ मैं वेशक
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَاحْذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ					
कड़क (चिंघाड़)	उन्होंने ने जुल्म किया	वह लोग जो	और आलिया	अपनी से अपनी रहमत से	उस के साथ और जो लोग ईमान लाए
فَاصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جَثِمِينَ ۝۹۴ كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا أَلَا					
याद रखो	उस में (वाहां)	वह नहीं बसे	गोया	94	औन्धे पड़े हुए अपने घरों में सो सुबह की उन्होंने ने
بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ۝۹۵ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ					
मूसा (अ)	और हम ने भेजा	95	समूद	जैसे दूर हुए	मदयन के लिए दूरी है
بِأَيِّنَّا وَسلَطْنِ مُبِينٍ ۝۹۶ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ					
और उस के सरदार	फिरज़ौन कि तरफ़	96	रौशन	और दलील	अपनी निशानियों के साथ
فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ۝۹۷					
97	दुरुस्त	फिरज़ौन का हुकम	और न	फिरज़ौन का हुकम	तो उन्होंने ने पैरवी की

और ऐ मेरी कौम! तुम्हें मेरी ज़िद आमादा न कर दे कि तुम्हें (अज़ाब) पहुँचे उस जैसा जो कौमे नूह (अ) या कौमे हूद (अ) या कौमे सालेह (अ) को, और कौमे लूत (अ) नहीं है तुम से कुछ दूर। (89) और अपने रब से वख़्शिश मांगो, फिर उस की तरफ़ रुजूअ करो, वेशक मेरा रब निहायत मेहरबान, मुहब्बत वाला है। (90) उन्होंने ने कहा ऐ शुऐब (अ)! तू जो कहता है उन में से हम बहुत (सी बातें) नहीं समझते और वेशक हम तुझे देखते हैं अपने दरमियान कमज़ोर, और तेरा कुम्बा (भाई बन्द) न होते तो हम तुझ पर पथराओ करते और तू हम पर ग़ालिब नहीं। (91) उस ने कहा ऐ मेरी कौम! क्या मेरा कुम्बा तुम पर अल्लाह से ज़ियादा ज़ोर वाला है? और तुम ने उसे अपनी पीठ पीछे डाल रखा है, वेशक मेरा रब जो तुम करते हो उसे अहाता (काबू) किए हुए है। (92) और ऐ मेरी कौम! तुम अपनी जगह काम करते रही मैं (अपना) काम करता हूँ, तुम जल्द जान लोगे किस पर वह अज़ाब आता है जो उस को रुस्वा कर देगा? और कौन झूटा है? और तुम इन्तिज़ार करो, वेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ। (93) और जब हमारा हुकम आया, हम ने शुऐब (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से वचा लिया, और जिन लोगों ने जुल्म किया उन्हें चिंघाड़ ने आलिया, सो उन्होंने ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (94) गोया वह वहां बसे (ही) न थे, याद रखो! (रहमत से) दूरी हो मदयन के लिए जैसे दूर हुए समूद। (95) और हम ने भेजा मूसा (अ) को अपनी निशानियों और रौशन दलील के साथ, (96) फिरज़ौन और उसके सरदारों की तरफ़, तो उन्होंने ने फिरज़ौन के हुकम की पैरवी की और फिरज़ौन का हुकम दुरुस्त न था। (97)

क़ियामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे होगा, तो वह उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा और बुरा है घाट (उन के) उतरने का मुक़ाम। (98) और इस (दुनिया) में उन के पीछे लानत लगादी गई और क़ियामत के दिन, बुरा है (यह) इन्ज़ाम जो उन्हें दिया गया। (99)

यह बसतियों की ख़बरें हैं कि हम तुझ को बयान करते हैं, उन में कुछ मौजूद हैं और (कुछ की जड़ें) कट चुकी हैं। (100)

और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने ने अपनी जानों पर जुल्म किया, सो उन के कुछ काम न आए वह माबूद जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकारते थे, जब तेरे रब का हुक़म आया, और उन्हें हलाकत के सिवा उन्होंने ने कुछ न बढ़ाया। (101)

और ऐसी ही है तेरे रब की पकड़ जब वह बसतियों को पकड़ता है और वह जुल्म करते हों, वेशक उस की पकड़ दर्दनाक, सख़्त है। (102)

वेशक इस में अलवत्ता उस के लिए निशानी है जो डरा आख़िरत के अज़ाब से, यह एक दिन है जिस में सब लोग जमा होंगे, और यह एक दिन है पेश होने (हाज़री) का। (103)

और हम पीछे नहीं हटाते (मुलतवी नहीं करते) मगर (सिर्फ़) एक मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिए। (104)

जब वह दिन आएगा कोई शख्स बात न कर सकेगा, मगर उस की इजाज़त से, सो कोई उन में बदबख़्त है और कोई खुश बख़्त। (105)

पस जो बदबख़्त हुए वह दोज़ख़ में हैं, उन के लिए उस में चीख़ना और दहाड़ना है। (106)

वह उस में हमेशा रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, वेशक तेरा रब जो चाहे कर गुज़रने वाला है। (107)

और जो लोग खुश बख़्त हुए सो वह हमेशा जन्नत में रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, (यह) बख़्शिश है ख़तम न हाने वाली। (108)

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَبِئْسَ						
और बुरा	दोज़ख़	तो ला उतारेगा उन्हें	क़ियामत के दिन	अपनी क़ौम	आगे होगा	
الْوَرْدُ الْمَوْرُودُ (98) وَأَتَّبِعُوا فِي هَذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ بِئْسَ						
बुरा	और क़ियामत के दिन	लानत	इस में	और उन के पीछे लगादी गई	98	घाट (उतरने का मुक़ाम)
الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ (99) ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَى نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا						
उन से	तुझ पर (को)	हम यह बयान करते हैं	बसतियों की ख़बरें	से	यह	99
فَأَيُّمْ وَحْصِيدٌ (100) وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ						
अपनी जानों पर	उन्होंने ने जुल्म किया	और लेकिन (बल्कि)	और हम ने जुल्म नहीं किया उन पर	100	और कट चुकी	क़ाइम (मौजूद)
فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ						
अल्लाह	अलावा	वह पुकारते थे	वह जो	उन के माबूद	उन से (के)	सो न काम आए
مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٌ (101)						
101	सिवाए हलाकत	और न बढ़ाया उन्हें	तेरे रब का हुक़म	आया	जब	कुछ भी
وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَى وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ						
उस की पकड़	वेशक	जुल्म करते हों	और वह	बसतियां	जब उस ने पकड़ा (पकड़ता है)	तेरा रब
الْيَمِّ شَدِيدٌ (102) إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ						
دَلِيلٌ يَوْمَ مَجْمُوعٍ لَهُ النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمُ مَشْهُودٍ (103)						
103	पेश होने का	एक दिन	और यह	सब लोग	उस में	जमा होंगे
وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مُّعَدُّودٍ (104) يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلِّمُ نَفْسٌ إِلَّا						
मगर	कोई शख्स	न बात करेगा	वह आएगा	जिस दिन	104	गिनी हुई (मुक़र्ररा)
بِأَذْنِهِ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ (105) فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُّوا فِي النَّارِ						
दोज़ख़	सो में	बदबख़्त	जो लोग	पस	105	और कोई खुश बख़्त
لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ (106) خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ						
आस्मान (जमा)	जब तक है	उस में	हमेशा रहेंगे	106	और दहाड़ना	चीख़ना
وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ (107)						
107	जो वह चाहे	कर गुज़रने वाला	तेरा रब	वेशक	तेरा रब	जितना चाहे
وَأَمَّا الَّذِينَ سَعِدُوا فِي الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ						
जब तक है	उस में	हमेशा रहेंगे	सो जन्नत में	खुश बख़्त हुए	वह लोग जो	और जो
السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ عَطَاءٌ غَيْرَ مَجْذُودٍ (108)						
108	ख़तम न हाने वाली	अता - बख़्शिश	तेरा रब	जितना चाहे	मगर	और ज़मीन

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا							
जैसे	मगर	वह नहीं पूजते	यह लोग	पूजते हैं	उस से जो	शक ओ शुबह में	पस तू न रह
يَعْبُدُ آبَاءَهُمْ مِنْ قَبْلُ وَإِنَّا لَمُوقُّوهُمْ نَصِيبُهُمْ							
उन का हिस्सा		उन्हें पूरा फेर देंगे	और वेशक हम	उस से कबल		उन के बाप दादा	पूजते थे
غَيْرَ مَنْقُوصٍ ۚ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ							
उस में	सो इख्तिलाफ़ किया गया	किताब	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दी		109	घटाए बग़ैर
وَلَوْ لَا كَلِمَةُ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ وَلَهُمْ لَفِي شَكٍّ							
अलबत्ता शक में	और वेशक वह	उन के दरमियान	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	तेरा रब	से	पहले हो चुकी	एक बात और अगर न
مِنْهُ مُرِيبٌ ۚ وَإِنْ كَلَّا لَمَّا لِيُوفِيْنَهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ							
उन के अमल		तेरा रब	उन्हें पूरा बदला देगा	जब	सब	और वेशक	110 धोके में डालने वाला उस से
إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ							
तौबा की	और जो	तुम्हें हुक्म दिया गया	जैसे	सो तुम काइम रहो	111	वाख़बर	जो वह करते हैं वेशक वह
مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ وَلَا تَزْكُتُوا إِلَىٰ							
तरफ़	और न झुको		112	देखने वाला	तुम करते हो	उस से जो	वेशक वह और सरकशी न करो तुम्हारे साथ
الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ							
कोई	अल्लाह	सिवा	तुम्हारे लिए	और नहीं	आग	पस तुम्हें छुएगी	जुल्म किया उन्होंने ने वह जिन्होंने ने
أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُونَ ۚ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَزُلْفًا							
कुछ हिस्सा	दिन	दोनों तरफ़	नमाज़	और काइम रखो	113	न मदद दिए जाओगे	फिर मददगार - हिमायती
مِّنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرِي							
नसीहत	यह	बुराइयां	मिटा देती है	नेकियां		वेशक	रात से (के)
لِلذِّكْرِينَ ۚ وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۚ							
115	नेकी करने वाले	अजर	ज़ाया नहीं करता	अल्लाह	वेशक	और सब्र करो	114 नसीहत मानने वालों के लिए
فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ							
से	रोकते	साहवे ख़ैर	तुम से पहले	से	कौमें	से	पस क्यों न हुए
الْفُسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ							
और पीछे रहे	उन से	हम ने बचा लिया	से - जो	थोड़े	मगर	ज़मीन में	फ़साद
الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أَتَرَفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ۚ							
116	गुनाहगार	और वह थे	उस में	जो उन्हें दी गई	उन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)		वह लोग जो
وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ۚ							
117	नेकीकार	जब कि वहां के लोग	जुल्म से	बस्तियां	कि हलाक कर दे	तेरा रब	और नहीं है

पस उस से शक ओ शुबह में न रहो जो यह (काफ़िर) पूजते हैं, वह नहीं पूजते मगर जैसे उस से कबल उन के बाप दादा पूजते थे, और वेशक हम उन्हें उन का हिस्सा घटाए बग़ैर पूरा फेर देंगे। (109) और हम ने अलबत्ता मूसा (अ) को किताब दी, सो उस में इख्तिलाफ़ किया गया, और अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती तो अलबत्ता उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और अलबत्ता वह इस (कुरआन की तरफ़) से धोके में डालने वाले शक में हैं। (110) और वेशक जब (वक़्त आएगा) सब को पूरा पूरा बदला देगा तेरा रब उन के आमाल का, वेशक जो वह करते हैं वह उस से वाख़बर है। (111) सो तुम काइम रहो जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है, और वह भी जिस ने तौबा की तुम्हारे साथ, और सरकशी न करो, वेशक जो तुम करते हो वह उस को देख रहा है। (112) और उन की तरफ़ न झुको जिन्होंने ने जुल्म किया, पस तुम्हें आग छुएगी (आ लगेगी), और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं, फिर मदद न दिए जाओगे (मदद न पाओगे)। (113) और नमाज़ काइम रखो दिन के दोनों तरफ़ (सुबह ओ शाम) और रात के कुछ हिस्से में, वेशक नेकियाँ मिटा देती हैं बुराइयों को, यह नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए। (114) और सब्र करो, वेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का। (115) पस तुम से पहले जो कौमें हुई उन में साहबाने ख़ैर क्यों न हुए? कि रोकते ज़मीन में फ़साद से, मगर थोड़े से जिन्हें हम ने उन से बचा लिया और ज़ालिम (उन्हीं लज़ज़तों के) पीछे पड़े रहे जो उन्हें दी गई थी, और वह गुनाहगार थे। (116) और तेरा रब ऐसा नहीं है कि वस्तियों को जुल्म से हलाक कर दे जबकि वहाँ के लोग नेकीकार हों। (117)

और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक (ही) उम्मत कर देता और वह हमेशा इख्तिलाफ़ करते रहेंगे। (118)

मगर जिस पर तेरे रब ने रहम किया, और उसी लिए उन्हें पैदा किया, और पूरी हुई तेरे रब की बात, अलबत्ता जहन्नम को भर दूँगा जिनों और इन्सानों से इकट्ठे। (119)

और हर बात हम तुम से रसूलों के अहवाल की बयान करते हैं ताकि उस से तुम्हारे दिल को तसल्ली दें, और तुम्हारे पास आया इस में हक़, और मोमिनों के लिए नसीहत और याद दिहानी। (120)

और उन लोगों को कह दें जो ईमान नहीं लाते, तुम अपनी जगह काम किए जाओ, हम (अपनी जगह) काम करते हैं। (121)

और तुम इन्तिज़ार करो, हम भी मुन्तज़िर हैं। (122)

और अल्लाह के पास है आस्मानों और ज़मीन के ग़ैब (छुपी हुई बातें), और उस की तरफ़ तमाम कामों की बाज़ग़शत है, सो उस की इबादत करो, और उस पर भरोसा करो, और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (123)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा, यह रौशन किताब की आयतें हैं। (1)

वेशक हम ने उसे कुरआन अरबी ज़बान में नाज़िल किया, ताकि तुम समझो। (2)

हम तुम पर बहुत अच्छा किस्सा बयान करते हैं, इस लिए कि हम ने तुम्हारी तरफ़ यह कुरआन भेजा और तहकीक़ तुम उस से क़व्ल अलबत्ता बेख़बरों में से थे। (3)

(याद करो) जब यूसुफ़ (अ) ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे बाप! वेशक मैं ने ग्यारह (11) सितारों और सूरज चाँद को (सपने में) देखा, मैं ने उन्हें अपने लिए सिज्दा करते देखा। (4)

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَا يَزَالُونَ							
और	चाहता	तेरा रब	तो कर देता	लोग (जमा)	उम्मत	एक	और वह हमेशा रहेंगे
مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾ إِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ							
इख्तिलाफ़ करते हुए	118	मगर	जो - जिस	रहम किया	तेरा रब	और उसी लिए	पैदा किया उन्हें
رَبِّكَ لَا مَلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾ وَكُلًّا							
तेरा रब	अलबत्ता भर दूँगा	जहन्नम	से	जिन (जमा)	और इन्सान	इकट्ठे	119
نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاءَكَ							
हम बयान करते हैं	तुझ पर	से	ख़बरें (अहवाल)	रसूल (जमा)	कि हम साबित करें (तसल्ली दें)	उस से	तेरा दिल
فِي هَذِهِ الْحَقِّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِلَّذِينَ							
में	इस	हक़	और नसीहत	और याद दिहानी	मोमिनों के लिए	120	और कह दें
لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ ۚ إِنَّا عَمِلُونَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوا ۚ إِنَّا							
ईमान नहीं लाते	तुम काम किए जाओ	पर	अपनी जगह	हम	काम करते हैं	121	और तुम इन्तिज़ार करो
مُنْتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾ وَاللَّهُ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ							
मुन्तज़िर (जमा)	122	और अल्लाह के पास	ग़ैब	आस्मानों	और ज़मीन	और उसी की तरफ़	बाज़ग़शत
كُلُّهُ فَاَعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾							
तमाम	सो उस की इबादत करो	और भरोसा करो	उस पर	और नहीं	तुम्हारा रब	गाफ़िल (बेख़बर)	उस से जो तुम करते हो
آيَاتِهَا ۚ ﴿١٢﴾ سُورَةُ يُوسُفَ ۝ زُكُوعَاتُهَا ١٢							
111 आयत 12 रुक़ात (12) सूरह यूसुफ़ यूसुफ़ (अ)							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
الرَّ ۚ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿١﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا							
अलिफ़ लाम रा	यह	आयतें	किताब	रौशन	1	वेशक हम ने	उसे नाज़िल किया
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا							
ताकि तुम	समझो	2	हम	बयान करते हैं	तुम पर	बहुत अच्छा	किस्सा
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَذَا الْقُرْآنَ ۚ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمَنَّ							
हम ने भेजा	तुम्हारी तरफ़	यह	कुरआन	और तहकीक़	तू था	इस से क़व्ल	अलबत्ता - से
الْغُفْلِينَ ﴿٣﴾ إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ							
बेख़बर (जमा)	3	जब	कहा	यूसुफ़ (अ)	अपने बाप से	ऐ मेरे बाप	वेशक मैं
أَحَدَ عَشَرَ كُوكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَجْدِينَ ﴿٤﴾							
ग्यारह (11)	सितारे	और सूरज	और चाँद	मैं ने उन्हें देखा	अपने लिए	सिज्दा करते	4

قَالَ يَبْنَىٰ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ٥ وَكَذَلِكَ							
उस ने कहा	ऐ मेरे बेटे	न बयान करना	अपना ख्वाब	पर (से)	अपने भाई	वह चाल चलेगा	तेरे लिए
وَجَبَّتْكَ رَبُّكَ وَيَعْلَمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۖ							
चुन लेगा तुझे	तेरा रब	और सिखाएगा तुझे	से	अन्जाम निकालना	वातों	और मुकम्मल करेगा	अपनी नेमत
إِبْرَاهِيمَ وَاسْحَقَ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ٦ لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ							
इब्राहीम (अ)	और इसहाक (अ)	वेशक	तेरा रब	इल्म वाला	हिक्मत वाला	6	वेशक है
وَإِخْوَتَهُ أَيُّ لِّلْسَالِينَ ٧ إِذْ قَالُوا لِيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ							
और उस के भाई	निशानियां	पूछने वालों के लिए	7	जब	उन्होंने ने कहा	ज़रूर यूसुफ (अ)	और उस का भाई
إِلَىٰ آبِنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ آبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ٨							
तरफ़ (को)	हमारा बाप	हम से	जब कि हम	एक जमाअत	वेशक	हमारा बाप	अलबत्ता ग़लती में
إِفْتُلُوا يُوسُفُ أَوْ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ							
मार डालो	यूसुफ (अ)	या	उसे डाल आओ	किसी सर ज़मीन	खाली हो जाए	तुम्हारे लिए	मुँह (तबज्जुह)
وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ٩ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا							
और तुम हो जाओ	से	उस के बाद	लोग	नेक (जमा)	9	कहा	एक कहने वाला
يُوسُفَ وَالْقَوْمُ فِي غَيِّبِ الْجُبِّ يَلْتَقِطُهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ							
यूसुफ (अ)	और उसे डाल आओ	में	अन्धा (गहरा)	कुआं	उठाले उस को	कोई	चलता (मुसाफ़िर)
إِنْ كُنْتُمْ فَعَلِينَ ١٠ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ							
अगर	तुम करने वाले हो (करना ही है)	10	कहने लगे	ऐ हमारे अब्बा	क्या हुआ तुझे	तू हमारा भरोसा नहीं करता	पर (वारे में)
وَأَنَا لَهُ لَنَصْحُونَ ١١ أَرْسَلَهُ مَعَنَا غَدًا يَزْتَعُ وَيَلْعَبُ وَنَا							
और वेशक हम	उस के	अलबत्ता ख़ैर ख्वाह	11	उसे भेज दे	हमारे साथ	कल	वह खाए
لَهُ لَحَفِظُونَ ١٢ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ							
उस के	अलबत्ता मुहाफिज़	12	उस ने कहा	वेशक मुझे	ग़मगीन करता है	कि	तुम लेजाओ
أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُونَ ١٣ قَالُوا لَئِنْ							
कि	उसे खाजाए	भेड़िया	और तुम	उस से	वेखवर (जमा)	13	वह बोले
أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذَا لَخٰسِرُونَ ١٤							
उसे खा जाए	भेड़िया	और हम	एक जमाअत	वेशक हम	उस सूरत में	ज़ियांकार	14

उस ने कहा ऐ मेरे बेटे! अपना सपना अपने भाइयों से बयान न करना कि वह तेरे लिए कोई चाल चलेगा, वेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (5)

और तेरा रब उसी तरह तुझे चुन लेगा, और तुझे सिखाएगा बातों का अन्जाम निकालना (ख्वाबों की तावीर) और तुझ पर अपनी नेमत पूरी करदेगा, और याकूब (अ) के घर वालों पर, जैसे उस ने इस से पहले तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इसहाक (अ) पर उसे पूरा किया, वेशक तेरा रब इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (6)

वेशक यूसुफ (अ) और उस के भाइयों में पूछने वालों के लिए खुली निशानियां हैं। (7)

जब उन्होंने ने कहा ज़रूर यूसुफ (अ) और उस का भाई हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारे हैं, जब कि हम एक जमाअत (कबी) हैं, वेशक हमारे अब्बा सरीह ग़लती में हैं। (8)

यूसुफ (अ) को मार डालो, या उसे किसी सर ज़मीन में डाल आओ कि तुम्हारे बाप की तबज्जुह तुम्हारे लिए खाली (खास) हो जाए और तुम हो जाओ (हो जाना) उस के बाद नेक लोग। (9)

उन में से एक कहने वाले ने कहा, यूसुफ (अ) को क़त्ल न करो, और उसे डाल आओ अन्धे कुआं में कि उसे कोई मुसाफ़िर उठा ले (जाए), अगर तुम्हें करना ही है। (10)

कहने लगे ऐ हमारे अब्बा! तुझे क्या हुआ है? तू यूसुफ (अ) के बारे में हमारा एतबार नहीं करता, और वेशक हम तो उस के ख़ैर खाह हैं। (11)

कल उसे हमारे साथ भेज दे वह (जंगल के फल) खाए और खेले कूदे, और वेशक हम उस के मुहाफिज़ हैं। (12)

उस ने कहा वेशक मुझे यह ग़मगीन (फ़िक्रमन्द) करता है कि तुम उसे ले जाओ और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया खाजाए, और तुम उस से वेखवर रहो। (13)

वह बोले अगर उसे भेड़िया खाजाए जब कि हम एक कबी जमाअत हैं, उस सूरत में वेशक हम ज़ियांकार ठहरे। (14)

फिर जब वह उसे लेगा और उन्होंने ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि उसे अन्धे कुआं में डाल दें, और हम ने उस की तरफ़ वहि भेजी कि तू उन्हें उन के इस काम को ज़रूर जताएगा और वह न जानते (तुझे न पहचानते) होंगे। (15)

और अन्धेरा पड़े वह अपने बाप के पास रोते हुए आए। (16)

बोले! ऐ हमारे अब्बा! हम लगे दौड़ने आगे निकलने को, और हम ने यूसुफ़ (अ) को अपने असबाब के पास छोड़ दिया तो उसे भेड़िया खा गया, और तू नहीं हम पर बावर करने वाला अगरचे हम सच्चे हों। (17)

और वह उस की कमीस पर झूटा खून (लगा कर) लाए, उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे लिए तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है, पस (सब्र) ही अच्छा है और जो तुम बयान करते हो उस पर अल्लाह (ही) से मदद चाहता हूँ। (18)

और (उधर) एक काफ़िला आया, पस उन्होंने ने अपना पानी भरने वाला भेजा, उस ने अपना डोल डाला, उस ने कहा, आहा खुशी की बात है, यह एक लड़का है और उन्होंने ने उसे माले तिजारात समझ कर छुपा लिया, और अल्लाह खूब जानता है जो वह करते थे। (19)

और उन्होंने ने उसे बेच दिया खोटे दामों गिनती के चन्द दिरहमों में, और वह उस से बेज़ार हो रहे थे। (20)

और मिसर के जिस शाख्स ने उस को खरीदा उस ने कहा अपनी औरत को: इसे इज़ज़त ओ इकराम से रख, शायद कि हमें नफ़ा पहुँचाए, या हम इसे बेटा बना लें, और इस तरह हम ने यूसुफ़ (अ) को मुल्क (मिसर) में जगह दी, और ताकि हम उसे बातों का अनुज्ञाम निकालना (खाबों की तावीर) सिखाएं और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (21)

और जब वह (यूसुफ़ अ) अपनी कुव्वत (जवानी) को पहुँच गया हम ने उसे हुक्म और इल्म अता किया, और उसी तरह हम नेकी करने वालों को जज़ा देते हैं। (22)

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيْبَتِ الْجُبِّ							
फिर जब	वह उस को ले गए	और उन्होंने ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया	कि	उसे डाल दें	में	अन्धा	कुआं
وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٥﴾							
और हम ने वहि भेजी	उस की तरफ़	जताएगा	कि तू उन्हें ज़रूर	उन का काम	उस	और वह	न जानते होंगे
وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ﴿١٦﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا							
और वह आए	अपने बाप के पास	अन्धेरा पड़े	रोते हुए	16	वह बोले	ऐ हमारे अब्बा	हम
نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ وَمَا							
आगे निकलने	और हम ने छोड़ दिया	यूसुफ़ (अ)	पास	अपना असबाब	तो उसे खा गया	भेड़िया	और नहीं
أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ﴿١٧﴾ وَجَاءُوا عَلَى قَمِيصِهِ							
तू	बावर करने वाला	हम पर	और ख़्वाह हों हम	सच्चे	17	और वह आए (लाए)	पर
بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ							
खून के साथ	झूटा	उस ने कहा	बल्कि	बना ली	तुम्हारे लिए	तुम्हारे दिल	एक बात
جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾ وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ							
अच्छा	और अल्लाह	मदद चाहता हूँ	पर	जो तुम बयान करते हो	18	और आया	एक काफ़िला
فَارْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوَهُ قَالَ يَبُشْرَى هَذَا غُلْمٌ							
पस उन्होंने ने भेजा	अपना पानी भरने वाला	पस उस ने डाला	अपना डोल	उस ने कहा	आहा - खुशी की बात	यह	एक लड़का
وَأَسْرُوهُ بِضَاعَةً وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَشَرَوْهُ							
और उसे छुपा लिया	माले तिजारात समझ कर	और अल्लाह	जानने वाला	उसे जो	वह करते थे	19	और उन्होंने ने उसे बेच दिया
بِثَمَنِ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ﴿٢٠﴾							
दाम	खोटे	दिरहम	गिनती के	और वह थे	उस में	से	20
وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ							
और बोला	वह जो, जिस	उसे खरीदा	से	मिसर	अपनी औरत को	उसे इज़ज़त ओ इकराम से रख	उसे
عَسَى أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ							
शायद	कि	हम को नफ़ा पहुँचाए	या	हम उसे बना लें	बेटा	और इस तरह	हम ने जगह दी
فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ غَالِبٌ							
में	ज़मीन (मुल्क)	और ताकि उसे सिखाएं	से	अनुज्ञाम निकालना	बातें	और अल्लाह	ग़ालिब
عَلَى أَمْرِهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ							
अपने काम पर	और लेकिन	अक्सर	लोग	नहीं जानते	21	और जब	पहुँच गया
أَشَدَّهُ اتِّينَهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾							
अपनी कुव्वत	हम ने उसे अता किया	हुक्म	और इल्म	और उसी तरह	हम जज़ा देते हैं	नेकी करने वाले	22

وَرَأَوْتُهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَقَتِ الْأَبْوَابَ							
और उसे फुसलाया	वह औरत जो	उस	में	उस का घर	अपने आप को रोकने से	और बन्द कर दिए	दरवाज़े
وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ							
और बोली	आजा जल्दी कर	उस ने कहा	अल्लाह की पनाह	वेशक वह	मेरा मालिक	बहुत अच्छा	और रहना सहना
إِنَّهُ لَا يَفْلِحُ الظَّالِمُونَ (23) وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنْ							
वेशक	भलाई नहीं पाते	ज़ालिम (जमा)	23	और वेशक उस औरत ने इरादा किया	उस का	और वह इरादा करते	उस का
رَأَى بُرْهَانَ رَبِّهِ كَذَلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ							
वह देखे	दलील	अपना रब	उसी तरह	हम ने फेर दिया	उस से	बुराई	और बेहयाई
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ (24) وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ							
वेशक वह	से	हमारे बन्दे	बरगुज़ीदा	24	और दानों दौड़े	और दानों	और औरत ने फाड़ दी
فَمِصَّةُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ قَالَتْ مَا جَزَاءُ							
उस की कमीस	पीछे से	और दोनों को मिला	औरत का खाबन्द	दरवाज़े के पास	वह कहने लगी	क्या सज़ा?	
مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (25)							
जो - जिस	इरादा किया	तेरी बीबी से	बुराई	सिवाए	यह कि	कैद किया जाए	या दर्दनाक अज़ाब
قَالَ هِيَ رَأَوْتَنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَا							
उस ने कहा	उस	मुझे फुसलाया	से	मेरा नफ्स	और गवाही दी	एक गवाह	से
إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ (26)							
अगर	है	उस की कमीस	फटी हुई	आगे से	तो वह सच्ची	और वह	से झूटे
وَأِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ							
और अगर	है	उस की कमीस	फटी हुई	पीछे से	तो वह झूटी	और वह	से
الصَّادِقِينَ (27) فَلَمَّا رَأَى قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ							
सच्चे	27	तो जब	देखा	उस की कमीस	फटी हुई	पीछे से	उस ने कहा
كَيْدُكُمْ إِنَّ كَيْدَكُمْ عَظِيمٌ (28) يُوسُفُ أَعْرَضَ عَنْ هَذَا							
तुम औरतों का फरेब	वेशक	तुम्हारा फरेब	बड़ा	28	यूसुफ (अ)	जाने दे	से - को
وَاسْتَغْفِرِي لِذَنْبِكِ إِنَّكَ كُنتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ (29) وَقَالَ							
और ऐ औरत बख्शिश मांग	अपने गुनाह की	वेशक तू	तू है	से	ख़ताकार (जमा)	29	और कहा
نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ							
औरतें	शहर में	अज़ीज़ की बीबी	फुसला रही है	अपना गुलाम	से		
نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا إِنَّا لَنَرِيهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (30)							
उस का नफ्स	जगह पकड़ गई है	उस की मुहब्बत	वेशक हम उसे देखती है	में	गुमराही	खुली	30

उसे (यूसुफ़ अ को) उस औरत ने फुसलाया वह जिस के घर में थे अपने आप को रोकने (काबू रखने) से, और दरवाज़े बन्द कर दिए और बोली आजा जल्दी कर, उस ने कहा अल्लाह की पनाह! वेशक वह (अज़ीज़े मिस्त्र) मेरा मालिक है, उस ने मेरा रहना सहना बहुत अच्छा (रखा), वेशक ज़ालिम भलाई नहीं पाते। (23)

और वेशक उस औरत ने उस का इरादा किया और वह भी उस का इरादा करते, अगर यह न होता कि वह अपने रब की दलील देख लेते, उस तरह हम ने उस से फेर दी बुराई और बेहयाई, वेशक वह हमारे बरगुज़ीदा बन्दों में से था। (24)

और दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े, और उस औरत ने उस की कमीस फाड़ दी पीछे से, और दोनों को उस का खाबन्द दरवाज़े के पास मिला, वह कहने लगी उस की क्या सज़ा जिस ने तेरी बीबी से बुरा इरादा किया? सिवाए उस के कि वह कैद किया जाए या दर्दनाक अज़ाब दिया जाए। (25)

उस (यूसुफ़ अ) ने कहा उस ने मुझे मेरे नफ्स (की हिफाज़त) से फुसलाया और गवाही दी उस के लोगों में से एक गवाह ने कि अगर उस की कमीस आगे से फटी हुई है तो वह सच्ची है और वह (यूसुफ़ अ) झूटों में से है। (26)

और अगर उस की कमीस पीछे से फटी हुई है तो वह झूटी है और वह (यूसुफ़ अ) सच्चों में से है। (27)

तो जब उस की कमीस पीछे से फटी हुई देखी तो उस ने कहा यह तुम औरतों का फरेब है, वेशक तुम्हारा फरेब बड़ा है। (28)

यूसुफ़ (अ)! उस (ज़िक्र) को जाने दे और ऐ औरत! अपने गुनाह की बख्शिश मांग, वेशक तू ही ख़ताकारों में से है। (29)

और शहर में औरतों ने कहा, अज़ीज़ की बीबी ने फुसलाया है अपने गुलाम को उस के नफ्स (की हिफाज़त) से, उस की मुहब्बत (उस के दिल में) जगह पकड़ गई है, वेशक हम उसे खुली गुमराही में देखती हैं। (30)

फिर जब उस ने उन के फरेब (का ज़िक्र) सुना तो उन्हें दावत भेजी, और उन के लिए एक महफ़िल तैयार की, और (फल काटने को) दी उन में से हर एक को एक एक छुरी, और कहा उन के सामने निकल आ, फिर जब उन्होंने (यूसुफ़ अ) को देखा उन पर उस का रुझ (हूस्न) छागया और उन्होंने (फलों की जगह) अपने हाथ काट लिए और कहने लगी अल्लाह की पनाह! यह बशर नहीं, मगर यह तो बुजुर्ग फरिश्ता है। (31) वह बोली सो यह वही है जिस (के बारे) में तुम ने मुझे मलामत की, और मैं ने उसे उस के नफ्स (की हिफ़ाज़त से) फुसलाया, तो उस ने (अपने आप को) बचा लिया और जो मैं कहती हूँ अगर उस ने ना किया तो अलबत्ता वह कैद कर दिया जाएगा और बेइज़ज़त लोगों में से होगा। (32) उस (यूसुफ़ अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे कैद उस से ज़ियादा पसन्द है जिस की तरफ़ वह मुझे बुलाती है, अगर तू ने मुझ से उन का फरेब न फेरा तो मैं माइल हो जाऊंगा उन की तरफ़, और जाहिलों में से होंगा। (33) सो उस के रब ने उस की दुआ कुबूल करली, पस उस से उन का फरेब फेर दिया, वेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (34) फिर निशानियां देख लेने के बाद उन्हें सूझा कि उसे ज़रूर कैद में डाल दें एक मुद्दत तक। (35) और उस के साथ दो जवान कैद खाने में दाखिल हुए, उन में से एक ने कहा वेशक मैं (ख़ाब में) देखता हूँ कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ, और दूसरे ने कहा मैं (ख़ाब में) देखता हूँ कि अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूँ, परिन्दे उस से खा रहे हैं, हमें उस की ताबीर बतलाइए, वेशक हम आप को नेकोकारों में से देखते हैं। (36) उस (यूसुफ़ अ) ने कहा तुम्हारे पास खाना नहीं आया जो तुम्हें दिया जाता है, मगर मैं तुम्हें उस की ताबीर तुम्हारे पास उस के आने से पहले बतलादूंगा, यह उस (इल्म) से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है, वेशक मैं ने उस कौम का दीन छोड़ दिया जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, और वह (रोज़े) आख़िरत से इन्कार करते हैं। (37)

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَكًا							
एक महफ़िल	उन के लिए	और तैयार की	उन की तरफ़	दावत भेजी	उन का फरेब	उस ने सुना	फिर जब
وَأَتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سَكِينًا وَقَالَتْ أُخْرِجْ عَلَيْنَ فَلَمَّا							
फिर जब	उन पर (उनके सामने)	निकल आ	और कहा	एक एक छुरी	उन में से	हर एक को	और दी
رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَاهُ وَقَطَعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا							
बशर	नहीं यह	अल्लाह की	पनाह	और कहने लगी	अपने हाथ	और उन्होंने ने काट लिए	उन पर उस का रुझ छागया
إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ (31) قَالَتْ فَذِلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ							
उस में	तुम ने मलामत की मुझे	जो कि	सो यह वही है	वह बोली	31	बुजुर्ग	फरिश्ता
وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَا أَمَرُهُ							
मैं कहती हूँ उसे	जो	उस ने न किया	और अगर	तो उस ने बचा लिया	उस का नफ्स	से	और मैं ने उसे फुसलाया
لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونَا مِنَ الصَّغِيرِينَ (32) قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ							
ज़ियादा पसन्द	कैद	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	32	बेइज़ज़त (जमा)	से	और अलबत्ता होजाएगा
إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ							
माइल हो जाऊंगा	उन का फरेब	मुझ से	और अगर न फेरा	उस की तरफ़	मुझे बुलाती है	उस से जो	मुझ को
إِلَيْهِنَّ وَأَكُنْ مِنَ الْجَاهِلِينَ (33) فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ							
उस से	पस फेर दिया	उस का रब	उस की (दुआ)	सो कुबूल कर ली	33	जाहिल (जमा)	से
كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (34) ثُمَّ بَدَأَ لَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا رَأَوُا							
उन्होंने जब	बाद	उस के	उन्हें सूझा	फिर	34	जानने वाला	सुनने वाला
الْآيَاتِ لَيَسْجُنَنَّهُ حَتَّىٰ حِينٍ (35) وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيْنِ قَالَ							
कहा	दो जवान	कैद खाना	उस के साथ	और दाखिल हुए	35	एक मुद्दत तक	उसे ज़रूर कैद में डालें
أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرِنِّي أَخَصِرُ خَمْرًا وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرِنِّي أَحْمِلُ فَوْقَ							
ऊपर	उठाए हुए हूँ	मैं देखता हूँ	दूसरा	और कहा	शराब	निचोड़ रहा हूँ	वेशक मैं देखता हूँ
رَأْسِي خُبْرًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ إِنَّا نَرَاكَ مِنْ							
से	वेशक हम तुझे देखते हैं	उस की ताबीर	हमें बतलाइए	उस से	परिन्दे	खा रहे हैं	रोटी अपना सर
الْمُحْسِنِينَ (36) قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقْنِي إِلَّا نَبَأُكُمَا							
मैं तुम्हें बतलादूंगा	मगर	जो तुम्हें दिया जाता है	खाना	तुम्हारे पास नहीं आया	उस ने कहा	36	नेकोकार (जमा)
بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ذَلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي إِنِّي تَرَكْتُ							
मैं ने छोड़ा	वेशक मैं	मेरा रब	मुझे सिखाया	उस से जो	यह	वह आए तुम्हारे पास	कि कबल उस की ताबीर
مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَفَرُونَ (37)							
37	इन्कार करते हैं	वह	आख़िरत से	और वह	अल्लाह पर	जो ईमान नहीं लाते	वह कौम दीन

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ مَا كَانَ									
नहीं है	और याकूब (अ)	और इसहाक (अ)	इब्राहीम (अ)	अपने बाप दादा	दीन	और मैं ने पैरवी की			
لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ذَلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا									
हम पर	अल्लाह का फ़ज़ल	से	यह	कोई - किसी शै	अल्लाह का	हम शरीक ठहराएं	कि	हमारे लिए	
وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾ يَصْحَابِي									
ऐ मेरे साथियो!	38	शुक्र अदा नहीं करते	लोग	अक्सर	और लेकिन	और लोगों पर			
السِّجْنِ عَزَابٌ مُّتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾									
39	ज़बरदस्त - ग़ालिब	एक, यकता	या अल्लाह	बेहतर	जुदा जुदा	क्या कई माबूद	कैद खाना		
مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءُ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ									
तुम	तुम ने रख लिए हैं		नाम	मगर	उस के सिवा		तुम पूजते	नहीं	
وَأَبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ إِنْ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ									
अल्लाह का	मगर	हुकम	नहीं	कोई सनद	उस के लिए	अल्लाह ने उतारी	नहीं	और तुम्हारे बाप दादा	
أَمَرَ إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ									
और लेकिन	सीधा दीन			यह	सिर्फ उस की	मगर	इबादत करो तुम	कि न	उस ने हुकम दिया
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾ يَصْحَابِي السِّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمَا									
तुम में से एक	जो	कैद ख़ाना	ऐ मेरे साथियो	40	नहीं जानते		अक्सर लोग		
فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ									
परिन्दे	पस खाएंगे	तो सूली दिया जाएगा	दूसरा	और जो	शराब	अपना मालिक	सो वह पिलाएगा		
مِنْ رَأْسِهِ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِينَ ﴿٤١﴾ وَقَالَ									
और कहा	41	तुम पूछते थे	उस में	वह जो	काम - बात	फैसला हो चुका	उस के सर से		
لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنَسَهُ									
पस उस को भुला दिया	अपना मालिक	पास	मेरा ज़िक्र करना	उन दोनों से	बचेगा वह	कि वह	उस ने गुमान किया	उस से जिस	
الشَّيْطَانُ ذَكَرَ رَبَّهُ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ﴿٤٢﴾									
42	चन्द बरस		कैद में	तो रहा	अपने मालिक से ज़िक्र करना		शैतान		
وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ									
वह खाती हैं	मोटी ताज़ी	गाएं	सात	मैं देखता हूँ	कि मैं	बादशाह	और कहा		
سَبْعُ عِجَافٍ وَسَبْعُ سُبُلَاتٍ خُضِرٍ وَأُخْرَى يَبْسُتُ يَأْيُهَا الْمَلَأَ									
ऐ मेरे सरदारो	खुश्क	और दूसरे	सब्ज़	ख़ोशे	और सात	दुबली पतली	सात		
أَفْتُونِي فِي رُءْيَايَ إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُونَ ﴿٤٣﴾									
43	तावीर देने वाले	ख़्वाब की	तुम हो	अगर	मेरे ख़्वाब	मैं (की)	बतलाओ मुझे तावीर		

और मैं ने अपने बाप दादा इब्राहीम (अ), और इसहाक (अ) और याकूब (अ) के दीन की पैरवी की, हमारा (काम) नहीं कि हम शरीक ठहराएं अल्लाह का किसी शै को, यह हम पर और लोगों पर अल्लाह का फ़ज़ल है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (38)

ऐ मेरे कैद के साथियो! क्या जुदा जुदा कई माबूद बेहतर हैं? या एक अल्लाह? (सब पर) ग़ालिब। (39)

उस के सिवा तुम कुछ नहीं पूजते मगर नाम हैं जो तुम ने रख लिए (तराश लिए) हैं, और तुम्हारे बाप दादा ने, अल्लाह ने उन की कोई सनद नहीं उतारी, हुकम सिर्फ अल्लाह का है, उस ने हुकम दिया कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो, यह सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (40)

ऐ मेरे कैद खाने के साथियो! तुम में से एक अपने मालिक को शराब पिलाएगा, और जो दूसरा है तो सूली दिया जाएगा, पस परिन्दे उस के सर से खाएंगे। उस बात का फैसला हो चुका जिस (के बारे) में तुम पूछते थे। (41)

और यूसुफ़ (अ) ने उन दोनों में से जिस (के मुतअज़़िक्) गुमान किया कि वह बचेगा, उस से कहा अपने मालिक के पास मेरा ज़िक्र करना, पस शैतान ने उसे भुला दिया अपने मालिक से उस का ज़िक्र करना, तो वह कैद में चन्द बरस रहा। (42)

और बादशाह ने कहा कि मैं देखता हूँ सात मोटी ताज़ी गाएं, उन्हें सात दुबली पतली गाएं खा रही हैं, और सात सब्ज़ ख़ोशे और दूसरे खुश्क, ऐ सरदारो! मुझे मेरे ख़्वाब की तावीर बतलाओ, अगर तुम ख़्वाब की तावीर देने वाले हो (तावीर देना जानते हो)। (43)

उन्होंने कहा (यह) परेशान
ख़्वाब हैं और हम (ऐसे) ख़्वाबों
की तावीर जानने वाले नहीं (नहीं
जानते)। (44)

और वह जो उन दोनों (में) से बचा था
और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया,
उस ने कहा मैं तुम्हें उस की तावीर
बतलाऊंगा, सो मुझे भेज दो। (45)

ऐ यूसुफ़ (अ)! ऐ बड़े सच्चे! हमें
(ख़्वाब की तावीर) बता, सात मोटी
ताज़ी गायों को खा रही हैं सात
दुबली पतली गाएँ, और सात ख़ोशे
सब्ज़ हैं और दूसरे खुश्क, ताकि
मैं लोगों के पास लौट कर जाऊँ
शायद वह आगाह हों। (46)

उस ने कहा तुम सात साल
लगातार खेती बाड़ी करोगे, फिर
जो तुम काटो तो उसे उस के खोशे
में छोड़ दो, मगर थोड़ा जितना जो
तुम उस में से खालो। (47)

फिर उस के बाद आएंगे सात
(7) सख्त साल, खा जाएंगे जो
तुम ने उन के लिए (बचा) रखा,
सिवाए उस के जो तुम थोड़ा
बचाओगे। (48)

फिर उस के बाद एक साल आएगा
उस में लोगों पर बारिश बरसाई
जाएगी और वह उस में (रस)
निचोड़ेंगे। (49)

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास
ले आओ, पस जब क़ासिद उस के
पास आया तो उस ने कहा अपने
मालिक के पास लौट जाओ और
उस से पूछो उन औरतों का क्या
हाल है? जिन्होंने अपने हाथ काटे
थे, वेशक मेरा रब उन के फ़रेब
से खूब वाक़िफ़ है। (50)

बादशाह ने (उन औरतों से) कहा
तुम्हारा क्या हाले (वाक़ी) था जब
तुम ने यूसुफ़ (अ) को उस के
नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से फुसलाया
वह बोली अल्लाह की पनाह! हन
ने उस में कोई बुराई नहीं मालूम
की (नहीं पाई) अज़ीज़े (मिसर) की
औरत बोली अब हकीकत ज़ाहिर
हो गई है, मैं ने (ही) उसे उस के
नफ़्स की हिफ़ाज़त से फुसलाया
और वह वेशक सच्चों में से है
(सच्चा है)। (51)

(यूसुफ़ अ ने कहा) यह (इस लिए
था) ताकि वह जान ले कि मैं ने
पीठ पीछे उस की ख़ियानत नहीं
की, और वेशक अल्लाह चलने नहीं
देता दगाबाज़ों का फ़रेब। (52)

قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۖ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعَلَمِينَ ﴿٤٤﴾								
44	जानने वाले	ख़्वाब (जमा)	तावीर देना	हम	और नहीं	ख़्वाब	परेशान	उन्होंने ने कहा
وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنْتَبِئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ								
उस की तावीर	मैं बतलाऊंगा तुम्हें	एक मुद्दत	बाद	और उसे याद आया	उन दो से	बचा	वह जो	और उस ने कहा
فَارْسَلُونِ ﴿٤٥﴾ يُوسُفَ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ								
गाएँ	सात	में	हमें बता	ऐ बड़े सच्चे	ऐ यूसुफ़ (अ)	45	सो मुझे भेज दो	
سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعُ عَجَافٍ وَسَبْعِ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ								
और दूसरे	सब्ज़	खोशे	और सात	दुबली पतली	सात	वह खा रही है	मोटी ताज़ी	
يَبْسُتٍ ۖ لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُونَ								
खेती बाड़ी करोगे	उस ने कहा	46	आगाह हों	शायद वह	लोगों की तरफ़ (पास)	मैं लौटूँ	ताकि	खुश्क
سَبْعَ سِنِينَ دَابًّا ۖ فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا								
थोड़ा जितना	मगर	उस के खोशे में	तो उसे छोड़ दो	तुम काटो	फिर जो	लगातार	साल	सात
مِمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعُ شِدَادٍ يَأْكُلْنَ مَا								
जो	खाजाएंगे	सख्त	सात	उस के बाद में	आएंगे	फिर	47	तुम खालो से - जो
قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ								
उस के बाद	आएगा	फिर	48	तुम बचाओगे	से - जो	थोड़ा सा	सिवाए	उन के लिए
عَامٍ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي								
मेरे पास ले आओ	बादशाह	और कहा	49	वह निचोड़ेंगे	और उस में	लोग	बारिश बरसाई जाएगी	उस में एक साल
بِهِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسْأَلُهُ مَا بَالُ								
क्या हाल?	पस उस से पूछो	अपना मालिक	तरफ़ (पास)	लौट जा	उस ने कहा	क़ासिद	उस के पास आया	पस जब उसे
النِّسْوَةِ الَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾								
50	वाक़िफ़	उन का फ़रेब	मेरा रब	वेशक	अपने हाथ	उन्होंने ने काटे	वह जो	औरतें
قَالَ مَا خَطْبُكَ ۖ إِذْ رَأَوْتُكَ يُوْسُفُ عَنْ نَفْسِهِ ۖ قُلْنَ حَاشَ								
पनाह	वह बोली	उस का नफ़्स	से	यूसुफ़ (अ)	तुम ने फुसलाया	जब	क्या हाल था तुम्हारा	उस ने कहा
لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ ۚ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ النَّ حَصْحَصَ								
ज़ाहिर हो गई	अब	अज़ीज़	औरत	बोली	कोई बुराई	उस पर (में)	हन ने मालूम की	नहीं अल्लाह की
الْحَقُّ أَنَا رَأَوْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ ۚ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٥١﴾ ذَلِكَ لِيَعْلَمَ								
ताकि वह जान ले	यह	51	सच्चे	अलबत्ता - से	और वह वेशक	उस का नफ़्स	से	उसे फुसलाया मैं ने
أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْخَآئِنِينَ ﴿٥٢﴾								
52	दगाबाज़ (जमा)	फ़रेब	नहीं चलने देता	और वेशक अल्लाह	पीठ पीछे	नहीं उस की ख़ियानत की	वेशक मैं	

وَمَا أَبْرَىٰ نَفْسِي إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ إِلَّا						
मगर	बुराई	सिखाने वाला	नफ्स	वेशक	अपना नफ्स	और पाक (बेकुसूर) नहीं कहता
مَا رَحِمَ رَبِّي إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي						
ले आओ मेरे पास	बादशाह	और कहा	53	निहायत मेहरबान	बख्शने वाला	मेरा रब वेशक मेरा रब जिस पर रहम किया
بِهِ اسْتَحْلِصْهُ لِنَفْسِي فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدِينَا						
हमारे पास	आज	वेशक तुम	उस ने कहा	उस से बात की	फिर जब अपनी ज्ञात के लिए	उस को खास करूँ उस को
مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ						
हिफाजत करने वाला	वेशक मैं	ज़मीन (मुल्क)	खज़ाने	पर	मुझे कर दे	कहा 54 अमीन बाविकार
عَلَيْمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَّبُوا مِنْهَا حَيْثُ						
जहाँ	उस से (में)	वह रहते	ज़मीन में (मुल्क पर)	यूसुफ (अ) को	हम ने कुदरत दी	और उसी तरह 55 इल्म वाला
يَشَاءُ ۚ نَصِيبٌ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾						
56	नेकी करने वाले	बदला	और हम ज़ाए नहीं करते	जिस को हम चाहते हैं	अपनी रहमत	हम पहुँचा देते हैं चाहते वह
وَلَا جُزْءَ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾ وَجَاءَ						
और आए	57	परहेज़गारी करते	और थे वह	ईमान लाए	उन के लिए जो	और आखिरत का बदला अलबत्ता
إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٥٨﴾						
58	वह न पहचाने	उस को	और वह	तो उन्हें पहचान लिया	उस के पास	पस वह दाखिल हुए यूसुफ (अ) भाई
وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِآخِ لَكُمْ مِّنْ أَبِيكُمْ ۖ أَلَا تَرَوْنَ						
क्या तुम नहीं देखते	तुम्हारे बाप से	तुम्हारा (अपना)	भाई	लाओ मेरे पास	कहा उन का सामान	जब उन्हें तैयार कर दिया और जब
أَنِّي أُوْفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٥٩﴾ فَإِنْ لَّمْ تَأْتُونِي						
मेरे पास न लाए	फिर अगर	59	उतारने वाला (मेहमान नवाज़)	बेहतरीन	और मैं पैमाना	पूरा करता हूँ कि मैं
بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي وَلَا تَقْرُبُونِ ﴿٦٠﴾ قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ						
उस के सुतझलिक	हम खाहिश करेंगे	वह बोले	60	और न आना मेरे पास	मेरे पास तुम्हारे लिए	तो कोई नाप नाप नहीं उस को
أَبَاهُ ۖ وَأَنَا لَفَعْلُونَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفَتْنِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ						
उन की पूजी	और तुम रख दो	अपने खिदमतगारों को	और उस ने कहा	61	ज़रूर करने वाले हैं (करना है)	और हम उस का बाप
فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ						
शायद वह	अपने लोग	तरफ़	जब वह लौटें	उसको मालूम कर लें	शायद वह	उन के बोरों में
يَرْجِعُونَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا						
हम से	रोक दिया गया	ऐ हमारे अब्बा	वह बोले	अपना बाप तरफ़	वह लौटे पस जब	62 फिर आजाएँ
الْكَيْلُ فَأَرْسَلْ مَعَنَا أَخَانًا نَّكْتُلُ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ﴿٦٣﴾						
63	निगहबान है	उस के	और वेशक हम	नाप (गुल्ला) लाएँ	हमारा भाई हमारे साथ	पस भेज दें नाप

और मैं अपने नफ्स को पाक नहीं कहता, वेशक नफ्स बुराई सिखाने वाला है, मगर जिस पर मेरे रब ने रहम किया, वेशक मेरा रब बख्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (53)

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास ले आओ कि उसे अपनी (खिदमत) के लिए खास करूँ, फिर जब (मालिक) ने उस से बात की कहा वेशक तुम आज हमारे पास बाविकार, अमीन (साहबे एतिबार) हो। (54)

उस ने कहा मुझे (मुकर्रर) कर दे मुल्क के खज़ानों पर, वेशक मैं हिफाज़त करने वाला, इल्म वाला हूँ। (55)

और उसी तरह हम ने यूसुफ (अ) को मुल्क पर कुदरत दी, वह उस में जहाँ चाहते रहते, हम जिस को चाहते हैं अपनी रहमत पहुँचा देते हैं, और हम बदला ज़ाए नहीं करते नेकी करने वालों का। (56)

और जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे, उन के लिए आखिरत का बदला बेहतर है। (57)

और यूसुफ (अ) के भाई आए, पस वह उस के पास दाखिल हुए तो उस ने उन्हें पहचान लिया और वह उस को न पहचाने। (58)

और जब उन का सामान उन्हें तैयार कर दिया तो कहा अपने भाई को मेरे पास लाओ जो तुम्हारे बाप (की तरफ़) से है, क्या तुम नहीं देखते कि मैं पैमाना पूरा (भर) कर देता हूँ और मैं बेहतरीन मेहमान नवाज़ हूँ। (59)

फिर अगर तुम उस को मेरे पास न लाए तो तुम्हारे लिए कोई नाप (गुल्ला) नहीं मेरे पास, और न मेरे पास आना। (60)

वह बोले हम उसके बारे में उस के बाप से खाहिश करेंगे और हमें (यह काम) ज़रूर करना है। (61)

और उस ने अपने खिदमतगारों को कहा उन की पूजी (गुल्ले की कीमत) उन के बोरों में रख दो, शायद वह उस को मालूम कर लें जब वह लौटें अपने लोगों की तरफ़, शायद वह फिर आजाएँ। (62)

पस जब वह अपने बाप की तरफ़ लौटे, बोले ऐ हमारे अब्बा! हम से नाप (गुल्ला) रोक दिया गया, पस हमारे साथ हमारे भाई को भेज दें कि हम गुल्ला लाएँ, और वेशक उसके निगहबान है। (63)

उस ने कहा मैं उस के मुतअल्लिक तुम्हारा क्या एतिवार करूँ मगर जैसे इस से पहले मैं ने उस के भाई के मुतअल्लिक तुम्हारा एतिवार किया, सो अल्लाह बेहतर निगहवान है, और वह तमाम मेहरवानों से बड़ा मेहरवानी करने वाला है। (64)

और जब उन्होंने ने अपना सामान खोला तो उन्होंने ने अपनी पूंजी पाई जो वापस कर दी गई थी उन्हें, बोले, ऐ हमारे अब्बा! (और) हम क्या चाहते हैं? यह हमारी पूंजी है, हमें लौटा दी गई है, और हम अपने घर गल्ला लाएंगे और हम अपने भाई की हिफाज़त करेंगे, और एक ऊंट का बोझ ज़ियादा लेंगे, यह (जो हम लाए हैं) थोड़ा गल्ला है। (65)

उस ने कहा मैं उसे हरगिज़ न भेजूंगा तुम्हारे साथ, यहां तक कि तम मुझे अल्लाह का पुख्ता अहद दो कि तुम उसे मेरे पास ज़रूर ले कर आओगे, मगर यह कि तुम्हें घेर लिया जाए, फिर जब उन्होंने ने उसे (याकूब अ) को पुख्ता अहद दिया, उसने कहा जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह ज़ामिन है। (66)

और कहा ऐ मेरे बेटो! तुम सब दाखिल न होना एक (ही) दरवाज़े से, (बल्कि) जुदा जुदा दरवाज़ों से दाखिल होना, और मैं तुम्हें बचा नहीं सकता अल्लाह की किसी बात से, अल्लाह के सिवा किसी का हुक्म नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया, पस चाहिए उस पर भरोसा करें भरोसा करने वाले। (67)

और जब वह दाखिल हुए जहां से उन्हें उन के बाप ने हुक्म दिया था, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से, मगर याकूब (अ) के दिल में एक ख़ाहिश थी सो वह उस ने पूरी कर ली, और वेशक वह साहबे इल्म था उस का जो हम ने उसे सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (68)

और जब वह यूसुफ़ के पास दाखिल हुए उस ने अपने भाई को अपने पास जगह दी, कहा वेशक मैं तेरा भाई हूँ, जो वह करते थे तू उस पर ग़मगीन न हो। (69)

قَالَ هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا آمَنُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ							
इस से पहले	उस के भाई के मुतअल्लिक	मैं ने तुम्हारा एतिवार किया	जैसे	मगर	उस के मुतअल्लिक	क्या मैं तुम्हारा एतिवार करूँ	उस ने कहा
فَاللَّهُ خَيْرٌ حِفْظًا وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِمِينَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوا							
उन्होंने ने खोला	और जब	64	तमाम मेहरवानों से बड़ा मेहरवानी करने वाला	और वह	निगहवान	बेहतर	सो अल्लाह
مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا بَنَا							
ऐ हमारे अब्बा	बोले	उन की तरफ़ (उन्हें)	वापस कर दी गई	अपनी पूंजी	उन्होंने ने पाई	अपना सामान	
مَا نَبْغِي هَذِهِ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا							
अपना भाई	और हम हिफाज़त करेंगे	अपने घर	और हम गल्ला लाएंगे	हमारी तरफ़	लौटा दी गई	हमारी पूंजी	यह क्या चाहते हैं हम
وَنَزِدَادُ كَيْلٍ بَعِيرٍ ذَلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ							
हरगिज़ न भेजूंगा उसे	उस ने कहा	65	आसान (थोड़ा)	बोझ (गल्ला)	यह	एक ऊंट	बोझ और ज़ियादा लेंगे
مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُوا مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَن							
यह कि	मगर	तुम ले आओगे ज़रूर मेरे पास उस को	अल्लाह से (का)	पुख्ता अहद	तुम दो मुझे	यहां तक	तुम्हारे साथ
يُحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٦٦﴾							
66	निगहवान (ज़ामिन)	जो हम कहते हैं	पर	अल्लाह कहा उस ने	अपना पुख्ता अहद	उन्होंने ने उसे दिया	फिर जब तुम्हें घेर लिया जाए
وَقَالَ يَبْنَئِي لَا تَدْخُلُوا مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ							
से	और दाखिल होना	एक दरवाज़ा	से	तुम न दाखिल होना	ऐ मेरे बेटो	और उस ने कहा	
أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ							
किसी चीज़ (बात) से	अल्लाह से (की)	तुम से (को)	और मैं नहीं बचा सकता	जुदा जुदा	दरवाजे से		
إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ							
पस चाहिए भरोसा करें	और उस पर	मैं ने भरोसा किया	उस पर	अल्लाह का	सिवा	हुक्म	नहीं
الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ							
नहीं था	उन का बाप	उन्हें हुक्म दिया	जहां से	वह दाखिल हुए	और जब	67	भरोसा करने वाले
يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ							
दिल	में	एक ख़ाहिश	मगर	किसी चीज़ (बात)	से	अल्लाह से (की)	उन से (उन्हें)
يَعْقُوبَ قُضِيَ وَأَنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ							
अक्सर	और लेकिन	हम ने उसे सिखाया	उस का जो	साहबे इल्म	और वेशक वह	वह उसे पूरी कर ली	याकूब (अ)
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾ وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ							
अपने पास	उस ने जगह दी	यूसुफ़ (अ) के पास	वह दाखिल हुए	और जब	68	नहीं जानते	लोग
أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾							
69	वह करते थे	उस पर जो	सो तू ग़मगीन न हो	मैं तेरा भाई	वेशक मैं	उस ने कहा	अपना भाई

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السَّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ							
अपना भाई	सामान	में	पीने का प्याला	रख दिया	उन का सामान	उन्हें तैयार कर दिया	फिर जब
ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيُّهَا الْعِزْرُ إِنَّكُمْ لَسْرِفُونَ ﴿٧٠﴾							
70	अलबत्ता चोर हो	बेशक तुम	ऐ काफ़ले वालो	सुनादी करने वाला	एलान किया	फिर	
قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقِدُونَ ﴿٧١﴾ قَالُوا نَفَقْدُ صَوَاعَ							
पैमाना	हम गुम कर बैठे (नहीं पाते)	उन्होंने ने कहा	71	तुम गुम कर बैठे	क्या है जो	उन की तरफ़	और उन्होंने ने मुँह किया
الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٧٢﴾							
72	ज़ामिन	उस का	और मैं	एक ऊंट	बोझ	जो वह लाए	और उस के लिए
قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ							
ज़मीन (मुल्क) में	कि हम फ़साद करें	हम नहीं आए	तुम खूब जानते हो	अल्लाह की कसम	वह बोले		
وَمَا كُنَّا سَرِقِينَ ﴿٧٣﴾ قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَذِبِينَ ﴿٧٤﴾							
74	झूटे	तुम हो	अगर	सज़ा उस की	फिर क्या	उन्होंने ने कहा	73
قَالُوا جَزَاؤُهُ مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ كَذَلِكَ نَجْزِي							
हम सज़ा देते हैं	उसी तरह	उस का बदला	पस वही	उस के सामान में	पाया जाए	जो - जिस	उस कि सज़ा
الظَّالِمِينَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَأَ بِأَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ							
फिर	अपना भाई	ख़रजी (बोरा)	पहले	उन की ख़रजियों (बोरों) से	पस शुरू किया	75	ज़ालिमों को
اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ كَذَلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ مَا كَانَ							
न था	यूसुफ़ के लिए	हम ने तदबीर की	इसी तरह	अपना भाई	बोरा	से	उस को निकाला
لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ نَرْفَعُ							
हम बुलन्द करते हैं	अल्लाह चाहे	यह कि	मगर	बादशाह का दीन	में	अपना भाई	वह ले सकता
دَرَجَتٍ مِّنْ نَّشَاءٍ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوا إِنْ							
अगर	बोले	76	एक इल्म वाला	साहबे इल्म	हर	और ऊपर	चाहें हम
يَسْرِقَ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ فَأَسْرَهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ							
अपने दिल में	यूसुफ़ (अ)	पस उसे छुपाया	उस से कब्ल	उस का भाई	तो चोरी की थी	उस ने चुराया	
وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ مَّكَانٍ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ							
खूब जानता है	और अल्लाह	दरजे में	बदतर	तुम	कहा	उन पर	और वह ज़ाहिर न किया
بِمَا تَصِفُونَ ﴿٧٧﴾ قَالُوا يَٰأَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبَا شَيْخَا							
बूढ़ा	बाप	उस का	बेशक	अज़ीज़	ऐ	कहने लगे	77
كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا مَكَانَهُ إِنَّا نَرُكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٧٨﴾							
78	एहसान करने वाले	से	हम देखते हैं बेशक तुझे	उस की जगह	हम में से एक	पस ले (रख ले)	बड़ी उम्र का

फिर जब उन का सामान तैयार कर दिया अपने भाई के सामान में (पानी) पीने का प्याला रखदिया, फिर एक मुनादी करने वाले न एलान किया ऐ काफ़ले वालो! तुम अलबत्ता चोर हो। (70)

वह उन की तरफ़ मुँह कर के बोले, क्या है जो तुम गुम कर बैठे हो? (71)

उन्होंने ने कहा, हम बादशाह का पैमाना नहीं पाते, और जो कोई वह लाएगा उस के लिए एक ऊंट का बोझ है (बारे शुतुर मिलेगा) और मैं उस का ज़ामिन हूँ। (72)

वह बोले अल्लाह की कसम! तुम खूब जानते हो हम (इस लिए) नहीं आए कि मुल्क में फ़साद करें, और हम चोर नहीं। (73)

फिर उन्होंने ने कहा अगर तुम झूटे हो (झूटे निकले) फिर उस की क्या सज़ा है? (74)

कहने लगे उस की सज़ा यह है कि पाया जाए जिस के सामान में पस वही है उस का बदला, उस तरह हम ज़ालिमों को सज़ा देते हैं। (75)

पस उन की बोरों से (तलाश करना) शुरू किया अपने भाई के बोरे से पहले, फिर उस को अपने भाई के बोरे से निकाल लिया। इसी तरह हम ने यूसुफ़ (अ) के लिए तदबीर की वह बादशाह के दीन में (क़ानून के मुताबिक) अपने भाई को न ले सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे (अल्लाह की मशियत हो) हम दरजे बुलन्द करते हैं जिस के हम चाहें, और हर साहबे इल्म के ऊपर एक इल्म वाला है। (76)

बोले अगर उस ने चुराया तो चोरी कि थी उस से कब्ल उस के भाई ने, पस यूसुफ़ (अ) ने (उस बात को) अपने दिल में छुपाया और उन पर ज़ाहिर न किया, कहा तुम बदतर दरजे में हो और तुम जो बयान करते हो अल्लाह खूब जानता है। (77)

कहने लगे, ऐ अज़ीज़! बेशक उस का बाप बड़ी उम्र का बूढ़ा है, पस उस की जगह हम में से एक को रख ले, हम देखते हैं कि तू एहसान करने वालों में से है। (78)

उस ने कहा अल्लाह की पनाह कि उसके सिवा हम (किसी और) को पकड़ें, जिस के पास हम ने अपना सामान पाया (उस सूरत में) हम ज़ालिमों से होंगे, (79)

फिर जब वह उस से मायूस हो गए तो मशवरा करने के लिए अकेले हो बैठे, उन के बड़े (भाई) ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का पुख्ता अ़हद लिया, और उस से क़ब्ल तुम ने यूसुफ़ (अ) के बारे में तक्सीर की, पस मैं हरगिज़ न टलूंगा ज़मीन से (यहां से), यहां तक के मेरा बाप मुझे इजाज़त दे या अल्लाह मेरे लिए कोई तदवीर निकाले, और वह सब से बेहतर फैसला करने वाला है। (80)

अपने बाप के पास लौट जाओ, पस कहो ऐ हमारे बाप! तुम्हारे बेटे ने चोरी की और हम ने गवाही नहीं दी थी (सिर्फ वही कहा था) जो हमें मालूम था, और हम ग़ैब के निगहवान (वाख़वर) न थे। (81) और पृछ लें उस वस्ति से जिस में हम थे, और उस काफ़ले से जिस में हम आए हैं, और वेशक हम सच्चे हैं। (82)

उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे दिल ने बना ली है एक बात, पस सब्र ही अच्छा है, शायद अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आए, वेशक वह जानने वाला है, हिक्मत वाला है। (83)

और उन से मुँह फेर लिया और कहा हाए अफ़सोस! यूसुफ़ (अ) पर, और उस की आँखें सफ़ेद हो गईं ग़म से, पस वह घुट रहा था (ग़म ज़व्त कर रहा था)। (84)

वह बोले अल्लाह की क़सम! तुम हमेशा यूसुफ़ (अ) को याद करते रहोगे यहां तक कि तुम हो जाओ बीमार या हलाक हो जाओ। (85)

उस ने कहा मैं तो अपनी बेकरारी और अपना ग़म बयान करता हूँ सिर्फ़ अल्लाह के सामने और अल्लाह (की तरफ़) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (86)

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهُ ۖ								
उस के पास	अपना सामान	हम ने पाया	जिस को	सिवाए	हम पकड़ें	कि	अल्लाह की पनाह	उस ने कहा
إِنَّا إِذَا لَظَلِمُونَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا اسْتَيْسَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا ۖ								
मशवरा किया	अकेले हो बैठे	उस से	वह मायूस हो गए	फिर जब	79	अलबत्ता ज़ालिमों से	वेशक हम जब	
قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ								
तुम से	लिया है	तुम्हारा बाप	कि	क्या तुम नहीं जानते	उन का बड़ा	कहा		
مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ فَلَنْ								
पस हरगिज़ न	यूसुफ (अ)	बारे में	जो तक्सीर की तुम ने	और उस से क़ब्ल	अल्लाह से (का)	पुख्ता अ़हद		
أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّىٰ يَأْذَنَ لِيَ أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِيَ وَهُوَ								
और वह	हुक्म दे (तदवीर निकाले) अल्लाह मेरे लिए	या	मेरा बाप	मुझे	इजाज़त दे	यहां तक	ज़मीन	टलूंगा
خَيْرُ الْحَكَمِينَ ﴿٨٠﴾ ارْجِعُوا إِلَىٰ أَبِيكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ								
वेशक	ऐ हमारे बाप	पस कहो	अपना बाप	तरफ़ (पास)	लौट जाओ तुम	80	सब से बेहतर फैसला करने वाला	
ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا								
और हम न थे	हमें मालूम था	जो	मगर	और नहीं गवाही दी हम ने	चोरी की	तुम्हारा बेटा		
لِلْغَيْبِ حَفِظِينَ ﴿٨١﴾ وَسَأَلَ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا								
उस में	हम थे	जो - जिस	बस्ती	और पूछ लें	81	निगहवान	ग़ैब के	
وَالْعِيرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ								
बल्कि	उस ने कहा	82	सच्चे	और वेशक हम	उस में	हम आए	जो - जिस	और काफ़ला
سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۚ عَسَىٰ اللَّهُ								
अल्लाह	शायद	अच्छा	पस सब्र	एक बात	तुम्हारा दिल	तुम्हारे लिए	बना ली है	
أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٨٣﴾ وَتَوَلَّىٰ								
और मुँह फेर लिया	83	हिक्मत वाला	जानने वाला	वह	वेशक वह	सब को	उन्हें	कि मेरे पास ले आए
عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَفَىٰ عَلَىٰ يُوسُفَ ۖ وَأَبِصَّتْ عَيْنُهُ مِنْ								
से	उस की आँखें	और सफ़ेद हो गईं	यूसुफ़ (अ)	पर	हाए अफ़सोस	और कहा	उन से	
الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتَوْا تَذْكُرُ يُوسُفَ حَتَّىٰ								
यहां तक कि	यूसुफ़ (अ)	याद करता	तू हमेशा रहेगा	अल्लाह की क़सम	वह बोले	84	घुट रहा था	पस वह ग़म
تَكُونُ حَرْصًا أَوْ تَكُونُ مِنَ الْهَالِكِينَ ﴿٨٥﴾ قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا								
बयान करता हूँ	मैं तो सिर्फ़	उस ने कहा	85	हलाक होने वाले	से	या हो जाओ	बीमार	तुम हो जाओ
بَثِّي وَحُزْنِي إِلَىٰ اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾								
86	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह से	और जानता हूँ	अल्लाह	तरफ़ सामने	और अपना ग़म	अपनी बेकरारी

يَبْنِي أَذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَأْيَسُوا							
और न मायूस हो	और उस का भाई	यूसुफ (अ)	से (का)	पस खोज निकालो	तुम जाओ	ऐ मेरे बेटो	
مِنْ رَّوْحِ اللَّهِ إِنَّهُ لَا يَأْتِيَنَّكَ مِنْ رَّوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ							
लोग	मगर	अल्लाह की रहमत	से	मायूस नहीं होते	वेशक वह	अल्लाह की रहमत	से
الْكَافِرُونَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا							
हमें पहुँची	अज़ीज़	ऐ	उन्होंने ने कहा	उस पर - सामने	वह दाखिल हुए	फिर जब	87 काफिर (जमा)
وَأَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُزْجَاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ							
नाप (गुल्ला)	हमें	पस पूरी दें	निकम्मी (नाकिस)	पूँजी के साथ (ले कर)	और हम आए	सख्ती	और हमारे घर
وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٨﴾ قَالَ							
कहा	88	सदका करने वाले	जज़ा देता है	वेशक अल्लाह	हम पर (हमें)	सदका करें	
هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ﴿٨٩﴾							
89	नादान	जब तुम	और उस का भाई	यूसुफ (अ) के साथ	क्या तुम ने किया है?	क्या तुम्हें ख़बर है	
قَالُوا إِنَّكَ لَأَنْتَ يُوسُفُ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَذَا أَخِي							
मेरा भाई	और यह	मैं यूसुफ (अ)	उस ने कहा	यूसुफ (अ)	तुम ही	क्या तुम ही	वह बोले
قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ							
तो वेशक अल्लाह	और सब्र करता है	जो डरता है	वेशक वह	हम पर	अल्लाह	अलबत्ता एहसान किया है	
لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٠﴾ قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ أَثَرَكَ							
तुझे पसन्द किया (फज़ीलत दी)	अल्लाह की कसम	कहने लगे	90	नेकी करने वाले	अजर	ज़ाए नहीं करता	
اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخَطِئِينَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِبَ عَلَيْكُمْ							
तुम पर	मलामत नहीं	उस ने कहा	91	ख़ताकार	हम थे	और वेशक	हम पर अल्लाह
الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٩٢﴾ إِذْهَبُوا							
तुम जाओ	92	मेहरबानी करने वाले	सब से ज़ियादा मेहरबान	और वह	तुम को	अल्लाह	बख़्शे आज
بِقَمِيصِي هَذَا فَالْقُوهُ عَلَى وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا							
वीना हो कर	आएगा	मेरे बाप	चेहरा	पर	पस उस को डालो	यह	मेरी कमीस ले कर
وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ							
काफ़ला	जुदा जुदा (रवाना हुआ)	और जब	93	तमाम (सारे)	अपने घर वालों को	और मेरे पास आओ (ले आओ)	
قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ							
कि	अगर न	यूसुफ	हवा (खुशबू)	अलबत्ता पाता हूँ	वेशक मैं	उन का बाप	कहा
تُفَنِّدُونَ ﴿٩٤﴾ قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾							
95	पुराना	अपना वहम	में	वेशक तू	अल्लाह की कसम	वह कहने लगे	94 मुझे वहक गया जानो

ऐ मेरे बेटो! तुम जाओ पस खोज निकालो यूसुफ (अ) का और उस के भाई का, और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, वेशक अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होते मगर काफ़िर लोग। (87)

फिर जब वह उस के सामने दाखिल हुए उन्होंने ने कहा ऐ अज़ीज़! हमें और हमारे घर को पहुँची है सख्ती, और हम नाकिस पूँजी ले कर आए हैं, हमें पूरा नाप (गुल्ला) दें, और हम पर सदका करें, वेशक अल्लाह सदका करने वालों को जज़ा देता है। (88)

(यूसुफ अ) ने कहा क्या तुम्हें खबर है? तुम ने यूसुफ (अ) और उस के भाई के साथ क्या (सुलूक) किया? जब तुम नादान थे। (89)

वह बोले क्या तुम ही यूसुफ (अ) हो? उस ने कहा मैं यूसुफ (अ) हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने अलबत्ता हम पर एहसान किया है, वेशक जो डरता है और सब्र करता है तो वेशक अल्लाह ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का अजर। (90)

कहने लगे अल्लाह की कसम! अल्लाह ने तुझे हम पर फज़ीलत दी है और हम वेशक ख़ताकार थे। (91)

उस ने कहा आज तुम पर कोई मलामत (इल्ज़ाम) नहीं, अल्लाह तुम्हें बख़्शे, वह सब से ज़ियादा मेहरबान है मेहरबानी करने वालों में। (92)

तुम मेरी यह कमीज़ ले कर जाओ पस उस को मेरे बाप के चहरे पर डालो, वह बीना हो जाएंगे, और मेरे पास अपने तमाम घर वालों को ले आओ। (93)

और जब काफ़ला रवाना हुआ उन के बाप ने कहा, वेशक मैं यूसुफ (अ) की खुशबू पा रहा हूँ अगर न जानो (न कहो) कि बूढ़ा वहक गया है। (94)

वह कहने लगे अल्लाह की कसम! वेशक तू अपने पुराने वहम में है। (95)

फिर जब खुशखबरी देने वाला आया और उस ने कुर्ता उस (याकूब अ) के मुँह पर डाला तो वह लौट कर देखने वाला (बीना) हो गया, बोला क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था? कि मैं अल्लाह की तरफ़ से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (96)

वह बोले ऐ हमारे बाप! हमारे लिए बख़्शीश मांगिए हमारे गुनाहों की, वेशक हम ख़ताकार थे। (97)

उस ने कहा मैं जल्द अपने रब से तुम्हारे गुनाहों की बख़्शीश मांगूंगा, वेशक वह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (98)

फिर जब वह यूसुफ़ (अ) के पास दाख़िल हुए तो उस ने अपने माँ बाप को अपने पास ठिकाना दिया, और कहा अगर अल्लाह चाहे तो तुम मिस्र में दिलजमई के साथ दाख़िल हो। (99)

और अपने माँ बाप को तख़्त पर ऊँचा बिठाया, और वह उस के आगे गिरगए सिज्दे में और उस ने कहा ऐ मेरे अब्बा! यह है मेरे उस से पहले ख़्वाब की ताबीर, उस को मेरे रब ने सच्चा कर दिया, और वेशक उस ने मुझे पर एहसान किया जब मुझे कैद खाने से निकाला, और तुम सब को गाऊँ से ले आया उस के बाद कि मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान शैतान ने झगड़ा (फ़साद) डाल दिया था, वेशक मेरा रब जिस के लिए चाहे उमदा तदवीर करने वाला है, वेशक वह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (100)

ऐ मेरे रब! तू ने मुझे एक मुल्क अता किया और मुझे सिखाया बातों का अन्जाम (ख़्वाबों की ताबीर) निकालना, ऐ आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने वाला! तू मेरा कारसाज़ है दुनिया में और आख़िरत में, मुझे (दुनिया से) फ़रमावरदारी की हालत में उठाना और मुझे नेक बन्दों के साथ मिलाना। (101)

यह ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारी तरफ़ बहि करते हैं और तुम उन के पास न थे जब उन्होंने ने अपना काम पुख़्ता किया और वह चाल चल रहे थे। (102)

فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَى وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۚ								
देखने वाला	तो लौट कर होगया	उस का मुँह	पर	उस ने वह (कुर्ता) डाला	खुशखबरी देने वाला	आया	कि	फिर जब
(96) قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ								
96	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह (तरफ) से	वेशक मैं जानता हूँ	तुम से	क्या मैं ने नहीं कहा था		बोला
(97) قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خُطِئِينَ								
97	ख़ताकार (जमा)	थे	वेशक हम	हमारे गुनाह	हमारे लिए बख़्शीश मांग	ऐ हमारे बाप		वह बोले
(98) قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ								
98	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	वह	वेशक वह	अपना रब	तुम्हारे लिए मैं बख़्शीश मांगूंगा	जल्द	उस ने कहा
فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ أَبَوَاهُ وَقَالَ ادْخُلُوا مِن مَّصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ أَمِينٌ ۚ								
(99) وَرَفَعَ أَبَوَاهُ عَلَى الْعَرْشِ								
तख़्त	पर	अपने माँ बाप	और ऊँचा बिठाया	99	अमन (दिलजमई) के साथ	अल्लाह ने चाहा	अगर	मिस्र
وَحَرُّوْا لَهُ سَجْدًا ۖ وَقَالَ يَٰأَبَتِ هَٰذَا تَاوِيلُ رُءْيَايَ								
मेरा ख़्वाब	ताबीर	यह	ऐ मेरे अब्बा	और उस ने कहा	सिज्दे में	उस के लिए (आगे)	और वह गिरगए	
مِّن قَبْلُ ۚ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ۖ وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي								
मुझे निकाला	जब	मुझे पर	और वेशक उस ने एहसान किया	सच्चा	मेरा रब	उस को कर दिया	उस से पहले	
مِّنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنۢ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ								
झगड़ा डाल दिया	कि	उस के बाद	गाऊँ	से	तुम सब को	और ले आया	कैद खाना	से
الشَّيْطٰنُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۚ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۚ								
जिस के लिए चाहे	उमदा तदवीर करता है	मेरा रब	वेशक	और मेरे भाइयों के दरमियान	मेरे दरमियान	शैतान		
إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۚ (100) رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ								
मुल्क	से - एक	तू ने मुझे अता किया	ऐ मेरे रब	100	हिक्मत वाला	जानने वाला	वह	वेशक वह
وَعَلَّمْتَنِي مِمَّن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ								
और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा करने वाला	बातें (ख़्वाब)	अन्जाम निकालना (ताबीर)	से	और मुझे सिखाया		
أَنْتَ وَلِيٌّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا ۖ وَأَلْحَقْنِي								
और मुझे मिला	फ़रमावरदारी की हालत में	मुझे उठा	और आख़िरत	दुनिया में	मेरा कारसाज़	तू		
(101) بِالصَّٰلِحِينَ ۚ ذٰلِكَ مِنْ أَنْبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيهِ إِلَيْكَ ۚ								
तुम्हारी तरफ़	हम बहि करते हैं	ग़ैब की ख़बरें	से	यह	101	सालेह (नेक बन्दों) के साथ		
(102) وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ								
102	चाल चल रहे थे	और वह	अपना काम	उन्होंने ने जमा किया (पुख़्ता किया)	जब	उन के पास	और तुम न थे	

११
ع
५وَقَالَ
النَّبِيُّ
وَقَالَ

وَمَا أَكْثَرَ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ							
और नहीं	अक्सर लोग	अगरचे	तुम चाहो	ईमान लाने वाले	103	और तुम नहीं मांगते उन से	उस पर
مِنْ أَجْرٍ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾ وَكَأَيِّنْ مِنْ آيَةٍ							
कोई अजर	यह नहीं	मगर	नसीहत	सारे जहानों के लिए	104	और कितनी ही	निशानियां
فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿١٠٥﴾							
आस्मानों में	और ज़मीन	वह गुज़रते हैं	उन पर	लेकिन वह	उन से	मुँह फेरने वाले	105
وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٦﴾ أَفَأَمِنُوا							
और ईमान नहीं लाते	उन में अक्सर	अल्लाह पर	मगर	और वह	मुश्रिक (जमा)	106	पस किया वह बेखौफ हो गए
أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً							
कि उन पर आए	छा जाने वाली (आफ़त)	से	अल्लाह का अज़ाब	या	उन पर आजाए	घड़ी (क़ियामत)	अचानक
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ							
और वह	उन्हें ख़बर न हो	107	आप कह दें	यह	मेरा रास्ता	मैं बुलाता हूँ	अल्लाह की तरफ़
عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي وَسُبْحَنَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٨﴾							
दानाई पर (समझ)	मैं	और जो-जिस	मेरी पैरवी की	और अल्लाह	और मैं नहीं	से	मुश्रिक (जमा)
وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ							
और हम ने नहीं भेजा	तुम से पहले	मगर-सिर्फ़	मर्द	हम वहि भेजते थे	उन की तरफ़	से	वसतियों वाले
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ							
क्या पस उन्होंने ने सैर नहीं की	ज़मीन (मुल्क) में	पस वह देखते	कैसा - क्या	हुआ	अनज़ाम	वह लोग जो	
مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ اتَّقَوْا أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠٩﴾							
उन से पहले	और अलबत्ता आखिरत का घर	वेहतर	उन के लिए जो	जिन्होंने ने परहेज़ किया	पस क्या तुम समझते नहीं	109	
حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا جَاءَهُمْ							
यहां तक	जब	मायूस होने लगे	रसूल (जमा)	और उन्होंने ने गुमान किया	कि वह	उन से झूट कहा गया	उन के पास आई
نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَاءُ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١١٠﴾							
हमारी मदद	पस बचा दिए गए	हम ने जिन्हें चाहा	और नहीं फेरा जाता	हमारा अज़ाब	से	कौम	मुजरिम (जमा)
لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ مَا كَانَ							
अलबत्ता	है	में	उन के किस्से	इव्रत (नसीहत)	अक्लमन्दों के लिए	नहीं है	
حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ							
वात	बनाई हुई	और लेकिन (बल्कि)	तसदीक	वह जो	उस से (अपने से) पहली		
وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّلْقَوْمِ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾							
और तफ़सील (बयान)	हर बात	और हिदायत	और रहमत	लोगों के लिए	जो ईमान लाते हैं	111	

१२
ع
६

अगरचे तुम (कितना ही) चाहो और अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। (103)

और तुम उन से उस पर कोई अजर नहीं मांगते, यह (और कुछ) नहीं, सारे जहानों के लिए नसीहत है। (104)

और आस्मानों में और ज़मीन में कितनी ही निशानियां हैं वह उन पर गुज़रते हैं, लेकिन वह उन से मुँह फेरने वाले हैं। (105)

और उन में से अक्सर अल्लाह पर ईमान नहीं लाते मगर वह मुश्रिक हैं। (106)

पस किया वह (उस से) बेखौफ हो गए कि उन पर अल्लाह के अज़ाब की आफ़त आजाए, या उन पर आजाए अचानक क़ियामत, और उन्हें ख़बर (भी) न हो। (107)

आप (स) कह दें यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, समझ बूझ के मुताबिक़, मैं (भी) और वह (भी) जिस ने मेरी पैरवी की, और अल्लाह पाक है, और मैं मुश्रिकों में से नहीं। (108)

और हम ने तुम से पहले वसतियों में रहने वाले लोगों में से सिर्फ़ मर्द (नबी) भेजे जिन की तरफ़ हम वही भजते थे, पस क्या उन्होंने ने सैर नहीं की मुल्क में? कि वह देखते उन से पहले लोगों का अनज़ाम क्या हुआ? और अलबत्ता आखिरत का घर उन लोगों के लिए वेहतर है जिन्होंने ने परहेज़ किया, पस क्या तुम नहीं समझते? (109)

यहां तक कि जब (ज़ाहिरी असबाब से) रसूल मायूस होने लगे और उन्होंने ने गुमान किया कि उन से झूट कहा गया था, उन के पास हमारी मदद आगई, पस जिन्हें हम ने चाहा वह बचा दिए गए और हमारा अज़ाब नहीं फेरा जाता मुजरिमों की कौम से। (110)

अलबत्ता उन के किस्सों में अक्लमन्दों के लिए इव्रत है यह बनाई हुई बात नहीं, बल्कि तसदीक है अपने से पहलों की, और बयान है हर बात का, और हिदायत ओ रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। (111)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ-लाम-मीम-रा - यह किताब (कुरआन) की आयतें हैं, और जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी तरफ उतारा गया हक है, मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (1) अल्लाह जिस ने आस्मानों को बुलन्द किया किसी सुतून (सहारे) के बगैर तुम देखते हो उसे, फिर अर्श पर करार पकड़ा, और सूरज और चाँद को मुख़्ख़र किया (काम पर लगाया) हर एक चलता है एक मुदत मुकर्ररा तक, अल्लाह काम की तदवीर करता है, वह निशानियां बयान करता है ताकि तुम अपने रब से मिलने का यकीन कर लो। (2)

और वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया, और उस में पहाड़ बनाए और नहरें (चलाई) और हर किस्म के फल (पैदा किए) और उस में दो, दो किस्म के (तलख़ ओ शिरीन) फल बनाए, और वह दिन को रात से ढांपता है, बेशक उस में निशानियां हैं ग़ौर ओ फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए। (3)

और ज़मीन में पास पास क़त्आत हैं, और बागात हैं अंगूरों के, और खेतियां और खजूर एक जड़ से दो शाखों वाली और बगैर दो शाखों की, एक ही पानी से (हालाकि) सैराब की जाती है, और हम बेहतर बना देते हैं उन में से एक को दूसरे पर ज़ाड़के में, इस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल से काम लेते हैं। (4)

और अगर तुम तअज़्जुब करो तो उन का यह कहना अज़ब है: जब हम मिट्टी हो गए क्या हम (अज़ सरे नौ) नई ज़िन्दगी पाएंगे? वही लोग हैं जो अपने रब के मुन्किर हुए, और वही हैं जिन की गर्दनो में तौक होंगे, और वही दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (5)

آيَاتُهَا ٤٣ ﴿١٣﴾ سُورَةُ الرَّعْدِ ﴿١٣﴾ رُكُوعَاتُهَا ٦									
रुक़आत 6				(13) सूरतुर रअद गरज			आयात 43		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
الْمَرْءُ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ وَالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ									
हक्	तुम्हारे रब की तरफ से	तुम्हारी तरफ	उतारा गया	और वह जो कि	किताब	आयतें	यह	अलिफ लाम मीम रा	
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١﴾ اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمُوتِ									
आस्मान (जमा)	बुलन्द किया	वह जिस ने	अल्लाह	1	ईमान नहीं लाते	अक्सर लोग	और लेकिन (मगर)		
بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ									
और चाँद	सूरज	और काम पर लगाया	अर्श पर	करार पकड़ा	फिर	तुम उसे देखते हो	किसी सुतून के बगैर		
كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ									
ताकि तुम	निशानियां	वह बयान करता है	काम	तदवीर करता है	मुकर्ररा	एक मुदत	चलता है	हर एक	
بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ﴿٢﴾ وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا									
उस में	और बनाया	ज़मीन	फैलाया	वह - जिस	और वही	2	तुम यकीन कर लो	अपना रब	मिलने का
رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ									
दो, दो किस्म	जोड़े	उस में	बनाया	हर एक फल (जमा)	और से	और नहरें	पहाड़ (जमा)		
يُعْشَى الْيَلِ النَّهَارُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣﴾									
3	जो गौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	दिन	रात	वह ढांपता है
وَفِي الْأَرْضِ قِطْعٌ مُّتَجَوِّزٌ وَجَنَّتْ مِنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ									
और खजूर	और खेतियां	अंगूर (जमा)	से - के	और बागात	पास पास	क़त्आत	ज़मीन	और में	
صِنَوَانٌ وَغَيْرُ صِنَوَانٍ يُسْقَى بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُفِضَ لِبَعْضِهَا									
उन का एक	और हम फज़ीलत देते हैं	एक	पानी से	सैराब किया जाता है	दो शाखों वाली	और बगैर	एक जड़ से दो शाखों वाली		
عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٤﴾									
4	अक्ल से काम लेते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	ज़ाड़का	में	दूसरा पर
وَأَنْ تَعْجَبَ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ إِذَا كُنَّا ثَرْبًا عَائًا لَفِي خَلْقٍ									
ज़िन्दगी पाएंगे	क्या हम	मिट्टी	हो गए हम	क्या जब	उन का कहना	तो अज़ब	तुम तअज़्जुब करो	और अगर	
جَدِيدُهُ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ الْأَغْلَالُ فِي									
में	तौक (जमा)	और वही है	अपने रब के	मुन्किर हुए	जो लोग	वही	नई		
أَعْنَاقِهِمْ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥﴾									
5	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	और वही है	उन की गर्दनो			

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ							
से	और (हालांकि) गुज़र चुकी	भलाई (रहमत) से पहले	बुराई (अज़ाब)	और वह तुम से जल्दी मांगते हैं			
قَبْلِهِمُ الْمَثَلُ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِلنَّاسِ عَلَى							
पर	लोगों के लिए	अलबत्ता मग़फ़िरत वाला	तुम्हारा रब	और वेशक	सज़ाएं	उन से क़ब्ल	
ظَلَمِهِمْ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا							
जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहते हैं	6	अलबत्ता सख़्त अज़ाब देने वाला	तुम्हारा रब	और वेशक	उन का जुल्म	
لَوْلَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ آيَةً مِنْ رَبِّهِ إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ							
डराने वाले	तुम	उस के सिवा नहीं	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	क्यों न उतरी
وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿٧﴾ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَى وَمَا تَغِيصُ							
सुकड़ता है	और जो	हर मादा	जो पेट में रखती है	जानता है	अल्लाह	7	हादी और हर कौम के लिए
الْأَرْحَامِ وَمَا تَزْدَادُ ۖ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ﴿٨﴾ عِلْمُ الْغَيْبِ							
जानने वाला हर ग़ैब	8	एक अन्दाज़े से	उस के नज़्दीक	चीज़	और हर	बढ़ता है	और जो रहम (जमा)
وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرِ الْمُتَعَالِ ﴿٩﴾ سَوَاءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ أَسَرَ الْقَوْلَ							
वात	आहिस्ता कहे	जो	तुम में	बराबर	9	बुलन्द मरतवा	सब से बड़ा और ज़ाहिर
وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ﴿١٠﴾							
10	दिन में	और चलने वाला	रात में	छुप रहा है	वह	और जो	पुकार कर - उस को और जो
لَهُ مُعَقِّبٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ							
वह उसकी हिफाज़त करते हैं		और उस के पीछे		उस (इन्सान) के आगे से		पहरेदार उस के	
مِّنْ أَمْرِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّى يُغَيِّرُوا مَا							
जो	वह बदल लें	यहां तक कि	किसी कौम के पास (अच्छी हालत)	जो	नहीं बदलता	अल्लाह वेशक	अल्लाह का हुक्म से
بِأَنفُسِهِمْ ۚ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ ۚ وَمَا لَهُمْ							
उन के लिए	और नहीं	उस के लिए	तो नहीं फिरना	बुराई	किसी कौम से	इरादा करता है अल्लाह	और जब अपने दिलों में (अपनी हालत)
مِّنْ دُونِهِ مِنْ وَّالٍ ﴿١١﴾ هُوَ الَّذِي يُرِيكُم الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا							
उम्मीद दिलाने को	डराने को	विजली	तुम्हें दिखाता है	वह जो कि	वह	11	कोई मददगार उस के सिवा
وَيُنشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿١٢﴾ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَكُ							
और फ़रिश्ते	उस की तारीफ़ के साथ	गरज	और पाकीज़गी वयान करती है	12	बोझल	बादल	और उठाता है
مِّنْ خِيفَتِهِ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَن							
जिस	उसे	फिर गिराता है	गरजने वाली विजलियां	और वह भेजता है	उस के डर से	से	
يَشَاءُ ۚ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾							
13	पकड़	सख़्त	और वह	अल्लाह (के वारे) में	झगड़ते हैं	और वह	वह चाहता है

और वह तुम से रहमत से पहले जल्द अज़ाब मांगते हैं, हालांकि गुज़र चुकी है उन से क़ब्ल (इब्रत नाक) सज़ाएं, और वेशक तुम्हारा रब उनके जुल्म के बावजूद लोगों के लिए मग़फ़िरत वाला है, और वेशक तुम्हारा रब सख़्त अज़ाब देने वाला है। (6)

और काफ़िर कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? उस के सिवा नहीं के तुम डराने वाले हो, और हर क़ौम के लिए हादी हुआ है। (7)

अल्लाह जानता है जो हर मादा पेट में रखती है और जो रहम में सुकड़ता और बढ़ता है, और उस के नज़्दीक हर चीज़ एक अन्दाज़े से है। (8)

जानने वाला है हर ग़ैब और ज़ाहिर का, सब से बड़ा, बुलन्द मरतवा है। (9)

(उस के लिए) बराबर है तुम में से जो आहिस्ता वात कहे और जो उस को पुकार कर कहे और जो रात में छुप रहा है और जो दिन में चलने (फिरने) वाला है। (10)

उस के पहरेदार हैं इन्सान के आगे से और उस के पीछे से, वह अल्लाह के हुक्म से उस की हिफ़ाज़त करते हैं, वेशक अल्लाह किसी क़ौम की अच्छी हालत नहीं बदलता यहां तक कि वह खुद अपनी हालत बदल लें, और जब अल्लाह किसी क़ौम से बुराई का इरादा करता है तो उस के लिए फिरना नहीं (वह टल नहीं सकती) और उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं। (11)

वही है जो तुम्हें विजली दिखाता है डराने को और उम्मीद दिलाने को और उठाता है बोझल बादल। (12)

और गरज उस की तारीफ़ के साथ पाकी वयान करती है और फ़रिश्ते उस के डर से (उस की तस्वीह करते हैं) और वह गरजने वाली विजलियां भेजता है, फिर उन्हें जिस पर चाहता है गिराता है और वह (काफ़िर) अल्लाह के वारे में झगड़ते हैं और वह सख़्त पकड़ वाला है। (13)

उस को पुकारना हक है, और उस के सिवा वह जिन को पुकारते हैं वह उन्हें कुछ भी जवाब नहीं देते मगर जैसे (कोई) अपनी दोनों हथेलियां पानी की तरफ फैलादे ताकि (पानी) उस के मुंह तक पहुँच जाए, और वह उस तक हरगिज़ पहुँचने वाला नहीं, और काफ़िरों की पुकार गुमराही के सिवा कुछ नहीं। (14) और अल्लाह ही को सिज्दा करता है जो आस्मानों और ज़मीन में है, खुशी से या न खुशी से, और सुबह ओ शाम उन के साए (भी)। (15) आप (स) पूछें आस्मानों और ज़मीन का रब कौन है? कह दें, अल्लाह है, कह दें तो क्या तुम उस के सिवा बनाते हो हिमायती जो अपनी जानों के लिए (भी) बस नहीं रखते कुछ नफ़ा का और न नुक़सान का, कह दें क्या बराबर होता है अन्धा और देखने वाला? या क्या उजाला और अन्धेरे बराबर हो जाएंगे? क्या वह अल्लाह के लिए जो शरीक बनालेते हैं उन्होंने (मख़लूक) पैदा की है उस के पैदा करने की तरह? सो पैदाइश उन पर मुशतबह हो गई, कह दें अल्लाह हर शै का पैदा करने वाला है और वह यकता ग़ालिब है। (16) उस ने आस्मानों से पानी उतारा, सो नदी नाले अपने अपने अन्दाज़े से वह निकले, फिर उठा लाया (ऊपर ले आया) नाला फूला हुआ झाग, और जो आग में तपाते हैं ज़ेवर बनाने को या और असबाब बनाने को, (उस में भी) उस जैसा झाग (मैल) होता है, उसी तरह अल्लाह हक़ और बातिल को बयान करता है, सो झाग दूर हो जाता है (जाया हो जाता है) सूख कर, लेकिन जो लोगों को नफ़ा पहुँचाता है वह ज़मीन में ठहरा रहता है (बाकी रहेता है) इसी तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है। (17)

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ									
उस को	पुकारना	हक्	और जिन को	वह पुकारते हैं	उस के सिवा	वह जवाब नहीं देते			
لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطٍ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ									
उन को	कुछ भी	मगर	जैसे फैला दे	अपनी हथेलियां	पानी की तरफ	ताकि पहुँच जाए	उस के मुँह तक	और नहीं	वह
بِبَالِغِهِ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَلٍ ﴿١٤﴾ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ									
उस तक पहुँचने वाला	और नहीं	पुकार	काफिर (जमा)	सिवाए	में	गुमराही	14	और अल्लाह ही को सिज्दा करता है	और अल्लाह ही को
مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَّلُهُمْ بِالْغُدُوِّ									
जो	में	आस्मानों	और ज़मीन	खुशी से	या नाखुशी से	और उन के साए	सुबह		
وَالْأَصَالِ ﴿١٥﴾ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ									
और शाम	15	पूछें	कौन	आस्मानों का रब	और ज़मीन	कह दें	अल्लाह		
قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ نَفْعًا									
कह दें	तो क्या तुम बनाते हो	उस के सिवा	हिमायती	वह बस नहीं रखते	अपनी जानों के लिए	कुछ नफ़ा			
وَلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ									
और न नुक़सान	कह दें	क्या	बराबर होता है	नाबीना (अन्धा)	और बीना (देखने वाला)	या	क्या		
تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا									
बराबर हो जाएगा	अन्धेरे (जमा)	और उजाला	क्या	वह बनाते हैं	अल्लाह के लिए	शरीक	उन्होंने ने पैदा किया है		
كَخَلَقَهُ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ									
उस के पैदा करने की तरह	तो मुशतबह होगई	पैदाइश	उन पर	कह दें	अल्लाह	पैदा करने वाला	हर शै		
وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ									
और वह	यकता	ज़बरदस्त (ग़ालिब)	16	उस ने उतारा	आस्मानों से	पानी	सो वह निकले		
أَوْدِيَةً بِقُدْرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَابِيًا وَمِمَّا									
नदी नाले	अपने अपने अन्दाज़े से	फिर उठा लाया	नाला	झाग	फूला हुआ	और उस से जो			
يُوقَدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حُلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ									
तपाए है	उस पर	आग में	हासिल करने (बनाने) को	ज़ेवर	या	असबाब	झाग		
مِثْلُهُ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ فَأَمَّا									
उसी जैसा	उसी तरह	बयान करता है	अल्लाह	हक्	और बातिल	सो			
الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ									
झाग	दूर हो जाता है	सूख कर	और लेकिन	जो नफ़ा पहुँचाता है	लोग				
فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾									
तो ठहरा रहता है	ज़मीन में	इसी तरह	बयान करता है	अल्लाह	मिसालें	17			

١
٢
٣
٤
٥
٦
٧
٨
٩
١०
١१
١२
١३
١४
١५
١६
١७
١८
١९
٢०
٢१
٢२
٢३
٢४
٢५
٢६
٢७
٢८
٢९
٣०
٣१
٣२
٣३
٣४
٣५
٣६
٣७
٣८
٣९
٤०
٤१
٤२
٤३
٤४
٤५
٤६
٤७
٤८
٤९
٥०
٥१
٥२
٥३
٥४
٥५
٥६
٥७
٥८
٥९
٦०
٦१
٦२
٦३
٦४
٦५
٦६
٦७
٦८
٦९
٧०
٧१
٧२
٧३
٧४
٧५
٧६
٧७
٧८
٧९
٨०
٨१
٨२
٨३
٨४
٨५
٨६
٨७
٨८
٨९
٩०
٩१
٩२
٩३
٩४
٩५
٩६
٩७
٩८
٩९
१००

١
٢
٣
٤
٥
٦
٧
٨
٩
١०
١१
١२
١३
١४
١५
١६
١७
١८
١९
٢०
٢१
٢२
٢३
٢४
٢५
٢६
٢७
٢८
٢९
٣०
٣१
٣२
٣३
٣४
٣५
٣६
٣७
٣८
٣९
٤०
٤१
٤२
٤३
٤४
٤५
٤६
٤७
٤८
٤९
٥०
٥१
٥२
٥३
٥४
٥५
٥६
٥७
٥८
٥९
٦०
٦१
٦२
٦३
٦४
٦५
٦६
٦७
٦८
٦९
٧०
٧१
٧२
٧३
٧४
٧५
٧६
٧७
٧८
٧९
٨०
٨१
٨२
٨३
٨४
٨५
٨६
٨७
٨८
٨९
٩०
٩१
٩२
٩३
٩४
٩५
٩६
٩७
٩८
٩९
१००

لِّلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ الْخُسْنَىٰ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۖ وَمَأْوَهُمُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ (١٨) ۚ	उन के लिए जिन्होंने ने	उन्होंने ने	अपने रब (का हुक्म)	भलाई	और जिन लोगों ने	न माना	उस का (हुक्म)	अगर	यह कि
أَنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) ۚ	उन के लिए (उन का)	जो कुछ ज़मीन में	सब	और उस जैसा	उस के साथ	कि फ़िदये में दें	उस को	वही है	उन के लिए
وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ (٢١) ۚ	बुरा	हिसाब	और उन का ठिकाना	जहन्नम	और बुरा	विछाना (जगह)	18	पस क्या जो	जानता है
وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَكَانُوا بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ إِيثَارًا ۚ	कि जो	उतारा गया	तुम्हारी तरफ़	से	तुम्हारा रब	हक्	उस जैसा	वह	अन्धा
بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابُ الدَّارِ الْآخِرَةِ ۖ جَنَّتٌ عَدْنٍ ۖ	अक्ल वाले	19	और वह जो कि	पूरा करते हैं	अल्लाह का अहद	और वह नहीं तोड़ते	पुख्ता कौल ओ इकरार	20	
يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ	और वह जो कि	जोड़े रखते हैं	जो	अल्लाह ने हुक्म दिया	उस का	कि	जोड़ा जाए	और वह डरते हैं	अपना रब
يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ (٢٣) ۚ	और ख़ौफ़ खाते हैं	बुरा	हिसाब	21	और वह लोग जो	उन्होंने ने सब्र किया	हासिल करने के लिए	खुशी	अपना रब
عُقْبَى الدَّارِ (٢٤) ۚ	और उन्होंने ने काइम की	नमाज़	और खर्च किया	उस से जो	हम ने उन्हें दिया	पोशीदा	और ज़ाहिर	और टाल देते हैं	और
وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ	नेकी से	बुराई	वही है	उन के लिए	आख़िरत का घर	22	बागात	हमेशगी	
لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ (٢٥) ۚ	वह उस में दाख़िल होंगे	और जो	नेक हुए	से (में)	उन के बाप दादा	और उन की वीवियां	और उन की औलाद	और फ़रिश्ते	और
وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ (٢٦) ۚ	दाख़िल होंगे	उन पर	से	हर दरवाज़ा	23	सलामती	तुम पर	इस लिए कि	तुम ने सब्र किया
وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ	आख़िरत का घर	24	और वह लोग जो	तोड़ते हैं	अल्लाह का अहद	उस के बाद	उस को पुख्ता करना		
وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ	और वह काटते हैं	जो	अल्लाह ने हुक्म दिया	उस का	कि वह जोड़ा जाए	और वह फ़साद करते हैं	ज़मीन में	यही है	
لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ (٢٥) ۚ	उन के लिए	लानत	और उनके लिए	बुरा घर	25	अल्लाह	कुशादा करता है	रिज़्क	जिस के लिए वह चाहता है
وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ (٢٦) ۚ	और वह खुश है	ज़िन्दगी से	दुनिया	और नहीं	दुनिया की ज़िन्दगी	आख़िरत (के मुक़ाबले) में	मगर (सिर्फ़)	मताअ हकीर	26

जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म मान लिया उन के लिए भलाई है, और जिन्होंने ने उस का हुक्म न माना अगर जो कुछ ज़मीन में है सब उन का हो और उस के साथ उस जैसा (और भी हो) कि वह उस को फ़िदये में दें (फिर भी बचाओ न होगा), उन्हीं लोगों के लिए हिसाब बुरा है, और उन का ठिकाना जहन्नम है और (वह) बुरी जगह है। (18) क्या जो शख्स जानता है कि जो उतारा गया तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से, वह हक् है उस जैसा (हो सकता है) जो अन्धा हो, इस के सिवा नहीं कि अक्ल वाले ही समझते हैं। (19) वह जो कि अल्लाह का अहद पूरा करते हैं, और पुख्ता कौल ओ इकरार नहीं तोड़ते। (20) और वह लोग जो जोड़े रखते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुक्म दिया कि जोड़ा जाए, और वह अपने रब से डरते हैं, और बुरे हिसाब का ख़ौफ़ खाते हैं। (21) और जिन लोगों ने अपने रब की खुशी हासिल करने के लिए सब्र किया, और उन्होंने ने नमाज़ काइम की, और जो हम ने उन्हें दिया उस से खर्च किया पोशीदा और ज़ाहिर, और वह नेकी से बुराई को टाल देते हैं, वही है जिन के लिए आख़िरत का घर है। (22) हमेशगी के बागात (हैं) उन में वह दाख़िल होंगे, और वह जो उन के बाप दादा, और उन की वीवियों, और औलाद में से नेक हुए और उन पर हर दरवाज़े से फ़रिश्ते दाख़िल होंगे, (23) (यह कहते हुए कि) तुम पर सलामती हो इस लिए कि तुम ने सब्र किया पस खूब है आख़िरत का घर। (24) और जो लोग अल्लाह का अहद उस को पुख्ता करने के बाद तोड़ते हैं, और वह काटते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुक्म दिया जो उसे जोड़ा जाए, और वह ज़मीन (मुल्क) में फ़साद करते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए लानत है और उन के लिए बुरा घर है। (25) अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क कुशादा करता है, और (जिस के लिए चाहता है) तंग करता है, और वह दुनिया की ज़िन्दगी से खुश हैं, और दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में मताअ हकीर है। (26)

और काफ़िर कहते हैं उस पर उस के रब (की तरफ़) से कोई निशानी क्यों न उतारी गई? आप (स) कह दें वेशक अल्लाह गुमराह करता है जिस को चाहता है, और अपनी तरफ़ उस को राह दिखाता है जो (उस की तरफ़) रुजूअ करे। (27)

जो लोग ईमान लाए और इत्मीनान पाते हैं जिन के दिल अल्लाह की याद से, याद रखो! अल्लाह की याद (ही) से दिल इत्मीनान पाते हैं। (28)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अमल किए नेक, उन के लिए खुशहाली है और अच्छा ठिकाना। (29)

इसी तरह हम ने तुम्हें उस उम्मत में भेजा है, गुज़र चुकी है इस से पहले उम्मतें ताकि जो हम ने तुम्हारी तरफ़ वहि किया है तुम उन को पढ़ कर (सुनाओ) और वह (अल्लाह) रहमान के मुन्किर होते हैं आप (स) कहें वह मेरा रब है उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ मेरा रुजूअ है (रुजूअ करता हूँ)। (30)

और अगर ऐसा कुरआन होता कि उस से पहाड़ चल पड़ते, या उस से ज़मीन फट जाती, या उस से मुर्दे वात करने लगते (फिर भी यह ईमान न लाते) बल्कि अल्लाह ही के लिए है तमाम कामों (का इख़्तियार), तो क्या मोमिनों को (उस से) इत्मीनान नहीं हुआ कि अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को हिदायत दे देता और काफ़िरों को उन के आमाल के बदले हमेशा सख़्त मुसीबत पहुँचती रहेगी, या उतरेगी करीब उन के घर के, यहां तक कि अल्लाह का वादा आजाए और वेशक अल्लाह वादे के खिलाफ़ नहीं करता। (31)

और अलबत्ता तुम से पहले रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया, तो मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर मैं ने उन की पकड़ की सो मेरा बदला (अज़ाब) कैसा था? (32)

पस क्या जो हर शख्स के आमाल का निगरान है (वह बुतों की तरह हो सकता है?) और उन्होंने ने बना लिए अल्लाह के शरीक, आप (स) कहें उन के नाम तो लो या तुम (अल्लाह) को वह बतलाते हो जो पूरी ज़मीन में उस के इल्म में नहीं, या महज़ ज़ाहिरी (ऊपरी) वात करते हो, बल्कि जिन लोगों ने कुफ़ किया उन के लिए उन के फ़रेब खुशनुमा बना दिए गए और वह राहे (हिदायत) से रोक दिए गए और जिस को अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं। (33)

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ									
वेशक अल्लाह	आप कह दें	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	उतारी गई	क्यों न	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहते हैं
يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أُنَابَ ۚ ۝۲۷ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ									
और इत्मीनान पाते हैं	ईमान लाए	जो लोग	27	रुजूअ करे	जो	अपनी तरफ़	और राह दिखाता है	जिस को चाहता है	गुमराह करता है
قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝۲۸ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا									
ईमान लाए	जो लोग	28	दिल (जमा)	इत्मीनान पाते हैं	अल्लाह के ज़िक्र से	याद रखो	अल्लाह के ज़िक्र से	जिन के दिल	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَى لَهُمْ وَحَسُنَ مَا بَ ۝۲۹ ۚ كَذَلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي									
मैं	हम ने तुम्हें भेजा	इसी तरह	29	ठिकाना	और अच्छा	उन के लिए	खुशहाली	नेक (जमा)	और उन्होंने ने अमल किए
أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لَتَتْلُوْا عَلَيْهِمُ الذِّكْرَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ									
तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि किया	वह जो कि	उन पर (उन को)	ताकि तुम पढ़ो	उम्मतें	उस से पहले	गुज़र चुकी है	उस उम्मत	
وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَنِ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ									
और उस की तरफ़	मैं ने भरोसा किया	उस पर	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	मेरा रब	वह	कह दें	रहमान के	मुन्किर होते हैं
مَتَابِ ۝۳۰ وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ									
ज़मीन	उस से	फट जाती	या	पहाड़	उस से	चलाए जाते	ऐसा कुरआन (होता)	यह के अग़र	30 मेरा रुजूअ
أَوْ كَلِمَةٍ بِهِ الْمَوْتُ بَلْ لِلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۖ أَفَلَمْ يَأْيَسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ									
कि	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन)	तो क्या इत्मीनान नहीं हुआ	तमाम	काम	अल्लाह के लिए	बल्कि	मुर्दे	उस से	या बात करने लगते
لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهْدَى النَّاسَ جَمِيعًا وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ									
उन्हें पहुँचगी	वह लोग जो काफ़िर हुए (काफ़िर)	और हमेशा	सब	लोग	तो हिदायत दे देता	अगर अल्लाह चाहता			
بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةً أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِنْ دَارِهِمْ حَتَّى يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ									
अल्लाह का वादा	आजाए	यहां तक	उन के घर	से (के)	करीब	या उतरेगी	सख़्त मुसीबत	उस के बदले जो उन्होंने ने किया (आमाल)	
إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝۳۱ ۚ وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَامْلَيْتُ									
तो मैं ने ढील दी	तुम से पहले	रसूलों का	मज़ाक़ उड़ाया गया	और अलबत्ता	31	वादा	खिलाफ़ नहीं करता	वेशक अल्लाह	
لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝۳۲ ۚ أَفَمَنْ هُوَ قَابِ									
निगरान	वह	पस क्या जो	32	मेरा बदला	था	सो कैसा	मैं ने उन की पकड़ की	फिर	जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)
عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۖ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ ۖ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ									
तुम उसे बतलाते हो	या	उन के नाम लो	आप कहें	शरीक (जमा)	अल्लाह और उन्होंने ने	जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख्स	पर	
بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَمْ بَظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۚ بَلْ زِينِ لِلَّذِينَ كَفَرُوا									
उन लोगों के लिए जिन्होंने ने कुफ़ किया	बल्कि खुशनुमा बना दिए गए	वात	से	महज़ ज़ाहिरी	या	ज़मीन में	उस के इल्म में नहीं	वह जो	
مَكْرُهُمْ وَصَدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝۳۳ ۚ									
33	कोई हिदायत देने वाला	उस के लिए	तो नहीं	गुमराह करे अल्लाह	और जो - जिस	राह	से	और वह रोक दिए गए	उन के फ़रेब

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ وَمَا						
उन के लिए	अज़ाब	में	दुनिया की ज़िन्दगी	और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब	निहायत तकलीफ़दह नहीं	और नहीं
لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ (٣٤) مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ						
उन के लिए	अल्लाह से	कोई बचाने वाला	34	कैफ़ियत	जन्नत	और जो कि
उन के लिए	अल्लाह से	कोई बचाने वाला	34	कैफ़ियत	जन्नत	और जो कि
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ أَكْلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى						
बहती है	उस के नीचे	नहरें	उस के फल	दाइम	और उस का साया	यह
الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ (٣٥) وَالَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ						
परहेज़गारों (जमा)	और अनुजाम	और	काफ़िरों	जहन्नम	35	और वह लोग जो
परहेज़गारों (जमा)	और अनुजाम	और	काफ़िरों	जहन्नम	35	और वह लोग जो
الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ						
किताब	वह खुश होते हैं	उस से जो	नाज़िल किया गया	तुम्हारी तरफ़	और बाज़	जो
किताब	वह खुश होते हैं	उस से जो	नाज़िल किया गया	तुम्हारी तरफ़	और बाज़	जो
بَعْضَهُ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ إِلَيْهِ						
उस की बाज़	आप कहें	इस के सिवा नहीं	मुझे हुकम दिया गया	कि	मैं इबादत करूँ	अल्लाह
उस की बाज़	आप कहें	इस के सिवा नहीं	मुझे हुकम दिया गया	कि	मैं इबादत करूँ	अल्लाह
أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَابِ (٣٦) وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَئِنْ						
मैं बुलाता हूँ	और उसी की तरफ़	मेरा ठिकाना	36	और उसी तरह	हम ने उस को नाज़िल किया	हक़म
मैं बुलाता हूँ	और उसी की तरफ़	मेरा ठिकाना	36	और उसी तरह	हम ने उस को नाज़िल किया	हक़म
اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ						
तू ने पैरवी की	उन की खाहिशात	बाद	जब कि तेरे पास आगया	इल्म (वहि)	तेरे लिए नहीं	अल्लाह से
तू ने पैरवी की	उन की खाहिशात	बाद	जब कि तेरे पास आगया	इल्म (वहि)	तेरे लिए नहीं	अल्लाह से
مِنْ وَلِيِّي وَلَا وَاقٍ (٣٧) وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ						
कोई हिमायती	और न कोई बचाने वाला	37	और अलबत्ता हम ने भेजे	रसूल (जमा)	तुम से पहले	
कोई हिमायती	और न कोई बचाने वाला	37	और अलबत्ता हम ने भेजे	रसूल (जमा)	तुम से पहले	
وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ						
और हम ने दी	उन को	बीवियां	और औलाद	और नहीं हुआ	किसी रसूल के लिए	कि
और हम ने दी	उन को	बीवियां	और औलाद	और नहीं हुआ	किसी रसूल के लिए	कि
بَايَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ (٣٨) يَمْحُوا اللَّهُ مَا يَشَاءُ						
कोई निशानी	बग़ैर	अल्लाह की इजाज़त से	हर वादे के लिए	एक तहरीर	38	मिटा देता है अल्लाह
कोई निशानी	बग़ैर	अल्लाह की इजाज़त से	हर वादे के लिए	एक तहरीर	38	मिटा देता है अल्लाह
وَيُثْبِتُ وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ (٣٩) وَإِنْ مَا نُرِيَنَّكَ بَعْضُ						
और बाकी रखता है	उस के पास	असल किताब (लौहे महफूज़)	39	और अगर	तुम्हें दिखा दें हम	कुछ हिस्सा
और बाकी रखता है	उस के पास	असल किताब (लौहे महफूज़)	39	और अगर	तुम्हें दिखा दें हम	कुछ हिस्सा
الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفِّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَالُ وَعَلَيْنَا						
वह जो कि	हम ने उन से वादा किया	या	हम तुम्हें वफ़ात दें	तो इस के सिवा नहीं	तुम पर (तुम्हारे ज़िम्मे)	पहुँचाना
वह जो कि	हम ने उन से वादा किया	या	हम तुम्हें वफ़ात दें	तो इस के सिवा नहीं	तुम पर (तुम्हारे ज़िम्मे)	पहुँचाना
الْحِسَابِ (٤٠) أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا						
हिसाब लेना	40	क्या वह नहीं देखते	कि हम चले आते हैं	ज़मीन	उस को घटाते	से
हिसाब लेना	40	क्या वह नहीं देखते	कि हम चले आते हैं	ज़मीन	उस को घटाते	से
وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ (٤١)						
और अल्लाह	हुक़म फ़रमाता है	कोई पीछे डालने वाला नहीं	उस के हुक़म को	और वह	जल्द	हिसाब लेने वाला
और अल्लाह	हुक़म फ़रमाता है	कोई पीछे डालने वाला नहीं	उस के हुक़म को	और वह	जल्द	हिसाब लेने वाला

उन के लिए दुनिया की ज़िन्दगी में अज़ाब है, अलबत्ता आखिरत का अज़ाब निहायत तकलीफ़दह है और उन के लिए कोई अल्लाह से बचाने वाला नहीं। (34)

और उस जन्नत की कैफ़ियत जिस का परहेज़गारों से वादा किया गया है (यह है) उस के नीचे नहरें बहती हैं, उस के फल दाइम (हमेशा) हैं और उस का साया (भी) यह है अनुजाम परहेज़गारों का, और काफ़िरों का अनुजाम जहन्नम है। (35)

और जिन लोगों को हम ने दी है किताब (अहले किताब) वह उस से खुश होते हैं जो तुम्हारी तरफ़ उतारा गया, और बाज़ गिरोह उस की बाज़ (वातों) का इन्कार करते हैं। आप (स) कहें उस के सिवा नहीं कि मुझे हुक़म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ, और उस का शरीक न ठहराऊँ, मैं उस की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मेरा ठिकाना है। (36)

और उसी तरह हम ने इस (कुरआन) को अरबी ज़बान में हुक़म नाज़िल किया है, और अगर तू ने उन की खाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि तेरे पास आगया इल्म, न तेरे लिए अल्लाह से (अल्लाह के सामने) कोई हिमायती होगा, न कोई बचाने वाला। (37)

और अलबत्ता हम ने रसूल भेजे तुम से पहले, और हम ने उन को दी बीवियां और औलाद, और किसी रसूल के लिए (इख़्तियार में) नहीं हुआ कि वह लाए कोई निशानी अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर, हर वादे के लिए एक तहरीर है। (38)

और अल्लाह जो चाहता है मिटा देता है और बाकी रखता है (जो वह चाहता है) और उस के पास लौहे महफूज़ है। (39)

और अगर हम तुम्हें कुछ हिस्सा (उस अज़ाब का) दिखा दें जिस का हम ने उन से वादा किया है, या तुम्हें वफ़ात दे दें, तो इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे ज़िम्मे पहुँचाना है और हिसाब लेना हमारा काम है। (40)

क्या वह नहीं देखते? कि हम चले आते हैं ज़मीन को उस के किनारों से घटाते, और अल्लाह हुक़म फ़रमाता है, कोई उस के हुक़म को पीछे डालने वाला नहीं, और वह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (41)

और जो उन से पहले थे उन्होंने ने चालें चलीं तो सारी चाल तो अल्लाह ही की है, वह जानता है जो कमाता है हर शख्स, और अ़नक़रीब काफ़िर जान लेंगे आक़िवत का घर किस के लिए है। (42)

और काफ़िर कहते हैं: तू रसूल नहीं, आप (स) कह दें, मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह काफी है, और वह जिस के पास किताब का इल्म है। (43)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा - यह एक किताब है, हम ने तुम्हारी तरफ़ उतारी, ताकि तुम लोगों को निकालो उन के रव के हुक्म से अन्धे़रों से नूर की तरफ़, ग़ालिब, खूबियों वाले अल्लाह के रास्ते की तरफ़, (1) उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और ज़मीन में है, और काफ़िरों के लिए सख़्त अज़ाब से ख़राबी है। (2) जो दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हैं अख़िरत पर, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कज़ी ढून्डते हैं, यही लोग दूर की गुमराही में हैं। (3)

और हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर उस की क़ौम की ज़बान में, ताकि वह उन के लिए (अल्लाह के अहक़ाम) खोल कर बयान कर दे फिर अल्लाह जिस को चाहता है गुमराह करता है, और जिस को चाहता है हिदायत देता है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (4)

और अलवत्ता हम ने मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को अन्धे़रों से रोशनी की तरफ़ निकाल, और उन्हें अल्लाह के (अज़ीम वाक़िआत के) दिन याद दिला, वेशक़ उस में हर इन्तिहाई सबर करने वाले, शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं। (5)

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا يَعْلَمُ						
वह जानता है	सब	चाल (तदबीर)	तो अल्लाह के लिए	उन से पहले	उन लोगों ने जो	और चालें चलीं
مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ (42)						
42	आक़िवत का घर	किस के लिए	काफ़िर	और अ़नक़रीब जान लेंगे	हर नफ़्स (शख्स)	जो कमाता है
وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسَتْ مُرْسَلًا قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا						
गवाह	अल्लाह	काफ़ी है	आप (स) कहें	रसूल	तू नहीं	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ (43)						
43	किताब का इल्म	उस के पास	और जो	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	
آيَاتُهَا ٥٢ ﴿١٤﴾ سُورَةُ إِبْرَاهِيمَ ﴿٧﴾ زُكُوعَاتُهَا ٧						
रुक़आत 7 (14) सूरह इब्राहीम आयात 52						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
الرَّ كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ						
नूर की तरफ़	अन्धे़रों से	लोग	ताकि तुम निकालो	तुम्हारी तरफ़	हम ने उस को उतारा	एक किताब
بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ (1) اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا						
जो कुछ	उसी के लिए	वह जो कि	अल्लाह	1	खूबियों वाला	ज़बरदस्त
فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَوَيْلٌ لِلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ (2)						
2	सख़्त	अज़ाब	से	काफ़िरों के लिए	और ख़राबी	ज़मीन में
إِلَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَنْ						
से	और रोकते हैं	अख़िरत पर	दुनिया	ज़िन्दगी	पसन्द करते हैं	वह जो कि
سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا أُولَئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ (3)						
3	दूर	गुमराही	में	वही लोग	कज़ी	और उस में ढून्डते हैं
وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ فَيُضِلُّ اللَّهُ						
फिर गुमराह करता है	अल्लाह	उन के लिए	ताकि खोल कर बयान करदे	उस की क़ौम की	ज़बान में	मगर
مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (4)						
4	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	जिस को चाहता है	और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَى بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ						
नूर की तरफ़	अन्धे़रों से	अपनी क़ौम	तू निकाल	कि	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)
وَذَكِّرْهُمْ بِآيَمِ اللَّهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ (5)						
5	शुक्र गुज़ार	हर सबर करने वाले के लिए	अलवत्ता निशानियां	उस में	वेशक़	अल्लाह के दिन
और याद दिला उन्हें						

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ							
अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	अपनी कौम को	मूसा (अ)	कहा	और जब	
إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ							
बुरा अज़ाब		वह तुम्हें पहुँचाते थे		फिरऔन की कौम		से	जब उस ने नजात दी तुम्हें
وَيَذَّبَحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ							
आज़माइश	उस	और में	तुम्हारी औरतें	और ज़िन्दा छोड़ते थे	तुम्हारे बेटे	और जुवह करते थे	
مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٦﴾ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ							
तुम शुक्र करोगे	अलबत्ता अगर	तुम्हारा रब	और जब आगाह किया	6	बड़ी	तुम्हारा रब	से
لَا زِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ﴿٧﴾ وَقَالَ							
और कहा	7	बड़ा सख्त	मेरा अज़ाब	वेशक	तुम ने नाशुकी की	और अलबत्ता अगर	तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा
مُوسَى إِنَّ تَكْفُرُوا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ							
तो वेशक अल्लाह	सब	ज़मीन में	और जो	तुम	नाशुकी करोगे	अगर	मूसा (अ)
لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٨﴾ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ							
तुम से पहले	वह लोग जो	ख़बर	क्या तुम्हें नहीं आई	8	सब ख़ूबियों वाला	बेनियाज़	
قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ							
उन की ख़बर नहीं	उन के बाद		और वह जो	और समूद	और आद	नूह (अ) की कौम	
إِلَّا اللَّهُ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ							
अपने हाथ	तो उन्होंने ने लौटाए	निशानियों के साथ		उन के रसूल	उन के पास आए	अल्लाह के सिवाए	
فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ							
उस के साथ	तुम्हें भेजा गया	वह जो	वेशक हम नहीं मानते	और वह बोले	उन के मुँह	में	
وَأَنَّا لَفِي شَكٍّ مِمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ﴿٩﴾ قَالَتْ رُسُلُهُمْ							
उन के रसूल	कहा	9	तरदुद में डालते हुए	उस की तरफ	तुम हमें बुलाते हो	उस से जो	शक अलबत्ता में और वेशक हम
أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَدْعُوكُمْ							
वह तुम्हें बुलाता है		और ज़मीन	आस्मानों	बनाने वाला	शुवाह - शक	क्या अल्लाह में	
لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُخْرِجَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ							
एक मुद्दत मुक़र्ररा		तक	और मोहलत दे तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	से (कुछ)	ता कि बख़्शदे तुम्हें	
قَالُوا إِن أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيدُونَ أَنْ تَضَدُّونَا							
हमें रोक दो	कि	तुम चाहते हो	हम जैसे	वशर	सिर्फ	तुम	नहीं वह बोले
عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأَثُونَا بِسُلْطَنِ مُّبِينٍ ﴿١٠﴾							
10	रौशन	दलील, मोज़िज़ा	पस लाओ हमारे पास	हमारे बाप दादा	पूजते थे		उस से जो

और (याद करो) जब कहा मूसा (अ) ने अपनी कौम को, तुम अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो, जब उस ने तुम्हें फिरऔन की कौम से नजात दी, वह तुम्हें बुरा अज़ाब पहुँचाते थे, और तुम्हारे बेटों को जुवह करते थे, और तुम्हारी औरतों (लड़कियों) को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उस में तुम्हारे रब की तरफ से बड़ी आज़माइश थी। (6) और जब तुम्हारे रब ने आगाह किया, अलबत्ता अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा, अलबत्ता अगर तुम ने नाशुकी की तो वेशक मेरा अज़ाब बड़ा सख्त है। (7) और मूसा (अ) ने कहा अगर नाशुकी करोगे तुम और जो ज़मीन में है सब के सब, तो वेशक अल्लाह बेनियाज़, सब खूबियों वाला है। (8) क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं आई जो तुम से पहले थे (मिसल के लिए) कौम नूह (अ), आद और समूद, और वह जो उन के बाद हुए, उन की ख़बर (किसी को) नहीं अल्लाह के सिवा, उन के पास उन के रसूल निशानियों के साथ आए, तो उन्होंने ने अपने हाथ उन के मुँह में लौटाए (ख़ामोश कर दिया) और बोले तुम्हें जिस (रिसालत) के साथ भेजा गया है हम नहीं मानते, और अलबत्ता तुम हमें जिस की तरफ बुलाते हो हम शक में हैं तरदुद में डालते हुए। (9) उन के रसूलों ने कहा क्या तुम्हें ज़मीन और आस्मान के बनाने वाले अल्लाह के बारे में शक है? वह तुम्हें बुलाता है ताकि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श दे, और एक मुद्दत मुक़र्ररा तक तुम्हें मोहलत दे, वह बोले नहीं तुम सिर्फ हम जैसे वशर हो, तुम चाहते हो कि हमें रोक दो जिन को हमारे बाप दादा पूजते थे, पस हमारे पास रौशन दलील (मोजिज़ा) लाओ। (10)

उन के रसूलों ने उन से कहा (वेशक) हम सिर्फ़ तुम जैसे वशर हैं लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे एहसान करता है, और हमारे लिए (हमारा काम) नहीं कि हम अल्लाह के हुक्म के वग़ैर तुम्हारे पास कोई दलील (मोज़िज़ा) लाएं, और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (11) और हमें क्या हुआ? कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, और उस ने हमें हमारी राहें दिखा दी हैं, और तुम हमें जो ईज़ा देते हो हम उस पर ज़रूर सब्र करेंगे, और भरोसा करने वालों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (12) और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम तुम्हें ज़रूर निकाल देंगे अपनी ज़मीन (मुल्क) से, या तुम हमारे दिन में लौट आओ तो उन के रब ने उन की तरफ़ वही भेजी कि हम ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे। (13) और अलबत्ता हम तुम्हें उन के बाद ज़मीन में ज़रूर आबाद कर देंगे, यह इस लिए है जो डरा मेरे रूबरू खड़ा होने से, और डरा मेरे एलाने अज़ाब से। (14) और उन्होंने ने (अबिया ने) फ़तह मांगी, और नामुराद हुआ हर सरकश, ज़िद्दी। (15) उस के पीछे जहन्नम है, और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा। (16) वह उसे घूट घूट पिएगा, और उसे गले से न उतार सकेगा, और उसे मौत आएगी हर तरफ़ से और वह मरेगा नहीं, और उस के पीछे सख़्त अज़ाब है। (17) उन लोगों की मिसाल जो अपने रब के मुन्किर हुए, उन के अमल राख की तरह हैं कि उस पर आन्धी के दिन ज़ोर की हवा चली (और सब उड़ा ले गई) जो उन्होंने ने कमाया उन्हें उस से किसी चीज़ पर कुदरत न होगी, यही है दूर की (परले दरजे की) गुमराही। (18) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया हक़ के साथ (ठक़ि ठीक) अगर वह चाहे तुम्हें ले जाए और ले आए कोई नई मख़लूक। (19) और यह अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं। (20)

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ										
एहसान करता है	अल्लाह	और लेकिन	तुम जैसे	वशर	सिर्फ	हम	नहीं	उन के रसूल	उन से	कहा
عَلَىٰ مَنْ يَّشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَنٍ										
कोई दलील	तुम्हारे पास लाएं	कि	हमारे लिए	और नहीं है	अपने बन्दे	से	जिस पर चाहे			
إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾ وَمَا لَنَا										
हमारे लिए	और क्या	11	मोमिन (जमा)	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	अल्लाह के हुक्म से	मगर (वग़ैर)			
أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا										
जो	पर	और हम ज़रूर सब्र करेंगे	हमारी राहें	और उस ने हमें दिखा दी	अल्लाह पर	कि हम न भरोसा करें				
أَذِيتُمُونَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿١٢﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا										
जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा	12	भरोसा करने वाले	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	तुम हमें ईज़ा देते हो				
لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُوذُنَّ فِي مِلَّتِنَا										
हमारे दिन में	तुम लौट आओ	या	अपनी ज़मीन	से	ज़रूर हम तुम्हें निकाल देंगे	अपने रसूलों को				
فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ﴿١٣﴾ وَلَنُسَكِّنَنَّكُمْ الْأَرْضَ										
ज़मीन	और अलबत्ता हम तुम्हें आबाद करदेंगे	13	ज़ालिम (जमा)	ज़रूर हम हलाक कर देंगे	उन का रब	उन की तरफ़	तो वही भेजी			
مِّنْ بَعْدِهِمْ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ﴿١٤﴾ وَاسْتَفْتَحُوا										
और उन्होंने ने फतह मांगी	14	वईद (एलाने अज़ाब)	और डरा	मेरे रूबरू खड़ा होना	डरा	उस के लिए जो	यह	उन के बाद		
وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿١٥﴾ مِّنْ وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِنْ مَّاءٍ										
पानी	से	और उसे पिलाया जाएगा	जहन्नम	उस के पीछे	15	ज़िद्दी	सरकश	हर	और नामुराद हुआ	
صَدِيدٍ ﴿١٦﴾ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ										
से	मौत	और आएगी उसे	गले से उतार सकेगा उसे	और न	उसे घूट घूट पिएगा	16	पीप वाला			
كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ										
मिसाल	17	सख़्त	अज़ाब	और उस के पीछे	मरने वाला	और न वह	हर तरफ़			
الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ										
आन्धी वाला	दिन	में	हवा	उस पर	ज़ोर की चली	राख की तरह	उन के अमल	अपने रब के	वह लोग जो मुन्किर हुए	
لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ذَٰلِكَ هُوَ الصَّلَاةُ الْبَعِيدُ ﴿١٨﴾										
18	दूर	गुमराही	वह	यह	किसी चीज़ पर	उन्होंने ने कमाया	उस से जो	उन्हें कुदरत न होगी		
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ										
तुम्हें लेजाए	वह चाहे	अगर	हक़ के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	अल्लाह	कि	क्या तू ने न देखा	
وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٩﴾ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿٢٠﴾										
20	कुछ दुश्वार	अल्लाह पर	यह	और नहीं	19	नई	मख़लूक	और लाए		

وَبَرُّوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعْفُوْ لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا اِنَّا كُنَّا							
वेशक हम थे	बड़े बनते थे	उन लोगों से जो	कमज़ोर	फिर कहेंगे	सब	अल्लाह के आगे	और वह हाज़िर होंगे
لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ							
किसी कद	अल्लाह का अज़ाब	से	हम से	दफ़ा करते हो	तुम	तो क्या	ताबे तुम्हारे
قَالُوْا لَوْ هَدٰنَا اللّٰهُ لَهٰدِيْنٰكُمْ سَوَآءٌ عَلَيْنَا اَجْزَعْنَا اَمْ							
या	ख़्वाह हम घबराएं	हम पर (हमारे लिए)	बराबर	अलबत्ता हम हिदायत करते तुम्हें	अल्लाह	हमें हिदायत करता	अगर वह कहेंगे
صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ (२१) وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ							
अमर	फैसला हो गया	जब	शैतान	और बोला	21	कोई छुटकारा	हम सबूर करें
اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعَدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ فَاحْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ							
था	और न	फिर मैं ने उस के खिलाफ़ किया तुम से	और मैं ने वादा किया तुम से	सच्चा वादा	वादा किया तुम से	वेशक अल्लाह	
لِيْ عَلَيَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ							
मेरा	पस तुम ने कहा मान लिया	मैं ने बुलाया तुम्हें	यह कि	मगर	कोई ज़ोर	तुम पर	मेरा
فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْا اَنْفُسَكُمْ مَا اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيْ							
फ़र्याद रसी कर सकते हो मेरी	तुम	और न	फ़र्याद रसी कर सकता तुम्हारी	नहीं मैं	अपने ऊपर	और इल्ज़ाम लगाओ तुम	लिहाज़ा न लगाओ मुझ पर इल्ज़ाम तुम
اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَا اَشْرَكْتُمْوْنَ مِنْ قَبْلُ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ							
उन के लिए	ज़ालिम (जमा)	वेशक	उस से क़व्ल	तुम ने शरीक बनाया मुझे	उस से जो	वेशक मैं इन्कार करता हूँ	
عَذَابٌ اَلِيْمٌ (२२) وَاَدْخَلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ							
नेक	और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	और दाख़िल किए गए	22	दर्दनाक अज़ाब		
جَنَّتْ تَجْرٰى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ							
अपना रव	हुक़्म से	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती है	बागात
تَحِيّٰتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ (२३) اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا							
मिसाल	बयान की अल्लाह ने	कैसी	क्या तुम ने नहीं देखा	23	सलाम	उस में	उन का तुहफ़ा-ए-मुलाक़ात
كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ (२४)							
24	आस्मान	में	और उस की शाख़	मज़बूत	उस की जड़	जैसे दरख़्त	कलिमाए तय्यबा (पाक बात)
تُوْتِيْ اُكْلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ							
मिसाल	अल्लाह	और बयान करता है	अपना रव	हुक़्म से	हर वक़्त	अपना फल	वह देता है
لِلنّٰسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ (२५) وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ							
नापाक बात	और मिसाल	25	वह ग़ौर ओ फ़िक्क करें	ताकि वह	लोगों के लिए		
كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةٍ اِجْثُثَتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ (२६)							
26	कुछ भी करार	नहीं उस के लिए	ज़मीन	ऊपर	से	उखाड़ दिया गया	मानिंद दरख़्त नापाक

वह सब अल्लाह के आगे हाज़िर होंगे, फिर कहेंगे कमज़ोर उन लोगों से जो बड़े बनते थे, वेशक हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम हम से दफ़ा कर सकते हो? किसी कद अल्लाह का अज़ाब, वह कहेंगे अगर अल्लाह हमें हिदायत करता तो अलबत्ता हम तुम्हें हिदायत करते, अब हमारे लिए बराबर है हम घबराएं या सबूर करें, हमारे लिए कोई छुटकारा नहीं। (21) और (रोज़े हिसाब) जब तमाम अमूर (कामों) का फैसला हो गया शैतान बोला वेशक अल्लाह ने तुम से सच्चा वादा किया था, और मैं ने (भी) तुम से वादा किया, फिर मैं ने तुम से उस के खिलाफ़ किया, और न था मेरा तुम पर कोई ज़ोर, मगर यह कि मैं ने तुम्हें बुलाया, और तुम ने मेरा कहा मान लिया, लिहाज़ा तुम मुझ पर कुछ इल्ज़ाम न लगाओ, इल्ज़ाम अपने ऊपर लगाओ, न मैं तुम्हारी फ़र्याद रसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी फ़र्याद रसी कर सकते हो, वेशक मैं इन्कार करता हूँ उस का जो तुम ने इस से क़व्ल मुझे शरीक बनाया, वेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (22) और दाख़िल किए गए वह लोग जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए बागात में, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वह हमेशा रहेंगे उस में अपने रव के हुक़्म से, उस में उन का तुहफ़ाए मुलाक़ात “सलाम” है। (23) क्या तुम ने नहीं देखा? अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान की है पाक बात की? जैसे पाकीज़ा पेड़, उस की जड़ मज़बूत और उस की शाख़ आस्मान में, (24) वह देता है हर वक़्त अपना फल अपने रव के हुक़्म से, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्क करें। (25) और नापाक बात की मिसाल नापाक पेड़ की तरह है जिसे ज़मीन के ऊपर से उखाड़ दिया गया, उस के लिए कुछ भी करार नहीं। (26)

अल्लाह मोमिनों को मज़बूत बात से मज़बूत रखता है, दुनिया की ज़िन्दगी में और आखिरत में (भी), और अल्लाह ज़ालिमों को भटका देता है, और अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (27)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जिन्होंने ने अल्लाह की नेमत को नाशुकी से बदल दिया, और अपनी कौम को उतारा तवाही के घर में। (28)

वह जहनन्म है वह उस में दाखिल होंगे और वह बुरा ठिकाना है। (29)

और उन्होंने ने अल्लाह के लिए शरीक ठहराए ताकि वह उस के रास्ते से गुमराह करें, आप (स) कह दें, फाइदा उठा लो, वेशक तुम्हारा लौटना (बाज़गशत) जहनन्म की तरफ है। (30)

आप (स) मेरे उन बन्दों से कह दें जो ईमान लाए कि वह नमाज़ काइम करें और उस में से खर्च करें जो मैं ने उन्हें दिया है छुपा कर और ज़ाहिरी तौर पर, उस से क़ब्ल कि वह दिन आजाए जिस में न खरीद ओ फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती। (31)

अल्लाह है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से निकाला तुम्हारे लिए फलों से रिज़्क, और तुम्हारे लिए कश्ती को मुसख़्बर (तावे फ़रमान) किया ताकि उस (अल्लाह) के हुक्म से दर्या में चले और मुसख़्बर किया तुम्हारे लिए नहरों को। (32)

और तुम्हारे लिए मुसख़्बर किया सूरज और चाँद को कि वह एक दस्तूर पर चल रहे हैं, और तुम्हारे लिए मुसख़्बर किया रात और दिन को, (33)

और उस ने तुम्हें दी हर चीज़ जो तुम ने उस से मांगी, और अगर तुम अल्लाह की नेमत गिनने लगे तुम उसे शुमार में न लासकोगे, वेशक इन्सान बड़ा ज़ालिम, नाशुक्रा है। (34)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बनादे इस शहर को अमन की जगह, और मुझे और मेरी औलाद को उस से दूर रख कि हम बुतों की परस्तिश करने लगे। (35)

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا							
दुनिया की ज़िन्दगी	में	मज़बूत	बात से	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन)	अल्लाह	मज़बूत रखता है	
وَفِي الْآخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ ۖ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ (٢٧)							
27	जो चाहता है	अल्लाह	और करता है	ज़ालिम (जमा)	अल्लाह	और भटका देता है	और आखिरत में
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَآحَلُّوا قَوْمَهُمْ							
अपनी कौम	और उतारा	नाशुकी से	अल्लाह की नेमत	बदल दिया	वह जिन्होंने ने	को	क्या तुम ने नहीं देखा
دَارَ الْبَوَارِ (٢٨) جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَبِئْسَ الْقَرَارُ (٢٩) وَجَعَلُوا لِلَّهِ							
और उन्होंने ने ठहराए अल्लाह के लिए	29	ठिकाना	और बुरा	उस में दाखिल होंगे	जहनन्म	28	तवाही का घर
أَنذَادًا لِّيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِن مَصِيرَكُمْ							
तुम्हारा लौटना	फिर वेशक	फाइदा उठा लो	कह दें	उस का रास्ता	से	ताकि वह गुमराह करें	शरीक
إِلَى النَّارِ (٣٠) قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ							
नमाज़	काइम करें	ईमान लाए	वह जो कि	मेरे बन्दों से	कह दें	30	जहनन्म तरफ
وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَاجِلَةً مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ							
कि आजाए	उस से क़ब्ल	और ज़ाहिर	छुपा कर	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	और खर्च करें	
يَوْمٌ لَا بَيْعُ فِيهِ وَلَا خِلَالٌ (٣١) اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ							
उस ने पैदा किया	वह जो	अल्लाह	31	और न दोस्ती	उस में	न खरीद ओ फ़रोख़्त	वह दिन
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ							
उस से	फिर निकाला	पानी	आस्मान से	और उतारा	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	
مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ							
दर्या में	ताकि चले	कश्ती	तुम्हारे लिए	और मुसख़्बर किया	तुम्हारे लिए	रिज़्क (जमा)	से
بِأَمْرِهِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْإِنْهَارَ (٣٢) وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ							
और चाँद	सूरज	तुम्हारे लिए	और मुसख़्बर किया	32	नहरें (नदियाँ)	तुम्हारे लिए	उस के हुक्म से
دَابِّينَ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ (٣٣) وَأَتَكُمْ مِّن كُلِّ مَآ							
जो	हर चीज़	से	और उस ने तुम्हें दी	33	और दिन	रात	तुम्हारे लिए
سَالَتْ مُوَهُ ۖ وَإِنْ تُعَدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُحْصَوْهَا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ							
इन्सान	वेशक	उसे शुमार में न लासकोगे	अल्लाह	नेमत	गिनने लगे तुम	और अगर	तुम ने उस से मांगी
لَظَلُّومٌ كَفَّارٌ (٣٤) وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ							
बना दे	ऐ हमारे रब	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	34	नाशुक्रा	वेशक बड़ा ज़ालिम
هَذَا الْبَلَدِ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ (٣٥)							
35	बुत (जमा)	हम परस्तिश करें	कि	और मेरी औलाद	और मुझे दूर रख	अमन की जगह	यह शहर

رَبِّ اِنَّهُمْ اَضَلُّنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ						
पस जो - जिस	लोग	से	बहुत	उन्हों ने गुमराह किया	वेशक वह	ऐ मेरे रब
تَبَعْنِي ۚ فَاِنَّهُ مِيّٰ وَمِنْ عَصَانِي ۚ فَاتَّكَ غُفُوْرٌ						
बख्शने वाला	तो वेशक तू	मेरी नाफरमानी की	और जो - जिस	मुझ से	वेशक वह	मेरी पैरवी की
رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَا اِنِّیْ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ						
बगैर	मैदान	अपनी ओलाद	से - कुछ	मैं ने बसाया	वेशक मैं	ऐ हमारे रब 36 निहायत मेहरबान
ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۚ رَبَّنَا لِیُقِیْمُوا						
ताकि काइम करें	ऐ हमारे रब	एहतिराम वाला	तेरा घर	नज़दीक	खेती वाली	
الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفِیْدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِیْ اِلَیْهِمْ						
उन की तरफ़	वह माइल हों	लोग	से	दिल (जमा)	पस कर दे	नमाज़
وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ یَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَا						
ऐ हमारे रब	37	शुक्र करें	ताकि वह	फल (जमा)	से	और उन्हें रिज़ूक दे
اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِیْ وَمَا نُعْلِنُ ۚ وَمَا یَخْفٰی عَلٰی اللّٰهِ						
अल्लाह पर	छुपी हुई	और नहीं	हम ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो हम छुपाते हैं	तू जानता है वेशक तू
مِّنْ شَیْءٍ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمٰوٰتِ ﴿٣٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ						
वह जो - जिस	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफें	38	आस्मान	में और न	जमीन में चीज़ से - कोई
وَهَبْ لِیْ عَلٰی الْكَبْرِ اِسْمٰعِیْلَ ۚ وَاسْحَقُ ۚ اِنَّ رَبِّیْ لَسَمِیْعٌ						
अलबत्ता सुनने वाला	मेरा रब	वेशक	और इसहाक (अ)	इस्माइल (अ)	बुढ़ापा	पर - मैं वख़शा मुझे
الدُّعَاۗءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِیْ ۚ						
मेरी औलाद	और से - को	नमाज़	काइम करने वाला	मुझे बना	ऐ मेरे रब 39	दुआ
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاۗءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَلِیِّ						
और मेरे माँ बाप को	मुझे वख़शदे	ऐ हमारे रब	40	दुआ	और कुबूल फ़रमा	ऐ हमारे रब
وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ						
तुम हरगिज़ गुमान करना	और न	41	हिसाब	काइम होगा	जिस दिन	और मोमिनों को
اللّٰهُ غَافِلًا عَمَّا یَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۚ اِنَّمَا یُؤَخَّرُهُمْ						
उन्हें मोहलत देता है	सिर्फ़	ज़ालिम (जमा)	वह करते हैं	उस से जो	बेख़बर	अल्लाह
لِیَوْمٍ تَشْخَصُ فِیْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِیْنَ مُقْنِعِیْ						
उठाए हुए	वह दौड़ते होंगे	42	आँखें	उस में	खुली रह जाएगी	उस दिन तक
رُءُوسِهِمْ لَا یَرْتَدُّ اِلَیْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَافِیْدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿٤٣﴾						
43	उड़े हुए	और उन के दिल	उन की निगाहें	उन की तरफ़	न लौट सकेंगी	अपने सर

ऐ मेरे रब! वेशक उन्होंने ने बहुत से लोगों को गुमराह किया, पस जिस ने मेरी पैरवी की, वेशक वह मुझ से है, और जिस ने मेरी नाफरमानी की तो वेशक तू बख्शने वाला निहायत मेहरबान है। (36)

ऐ हमारे रब! वेशक मैं ने अपनी कुछ औलाद को एक बगैर खेती वाले मैदान में बसाया है तेरे एहतिराम वाले घर के नज़दीक, ऐ हमारे रब! ताकि वह नमाज़ काइम करें, पस लोगों के दिलों को (ऐसा) कर दे कि वह उन की तरफ़ माइल हों, और उन्हें फलों से रिज़ूक दे, ताकि वह शुक्र करें। (37)

ऐ हमारे रब! वेशक तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं, और अल्लाह पर कोई चीज़ छुपी हुई नहीं ज़मीन में और न आस्मान में। (38)

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने मुझे बुढ़ापे में वख़शा इस्माइल (अ) और इसहाक (अ), वेशक मेरा रब दुआ सुनने वाला है। (39)

ऐ मेरे रब! मुझे बना नमाज़ काइम करने वाला, और मेरी औलाद को भी, ऐ हमारे रब! मेरी दुआ कुबूल फ़रमा ले। (40)

ऐ हमारे रब! जिस दिन हिसाब काइम होगा (रोज़े हिसाब) मुझे और मेरे माँ बाप को, और मोमिनों को वख़शदे। (41)

और तुम हरगिज़ गुमान न करना कि अल्लाह उस से बेख़बर है जो वह ज़ालिम करते हैं। वह सिर्फ़ उन्हें उस दिन तक मोहलत देता है, जिस में खुली रह जाएगी आँखें। (42)

वह अपने सर (ऊपर को) उठाए हुए दौड़ते होंगे, उन की निगाहें उन की तरफ़ न लौट सकेंगी, और उन के दिल (ख़ौफ़ से) उड़े हुए होंगे। (43)

और लोगों को उस दिन से डराओ जब उन पर अज़ाब आएगा, तो कहेंगे ज़ालिम, ऐ हमारे रब! हमें एक थोड़ी मुदत के लिए मोहलत दे दे कि हम तेरी दावत कुबूल कर लें, और हम पैरवी करें रसूलों की, क्या तुम उस से क़बूल कस्में न खाते थे? कि तुम्हारे लिए कोई ज़वाल नहीं। (44)

और तुम रहे थे उन लोगों के घरों में जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया था, और तुम पर ज़ाहिर हो गया था कि हम ने उन से कैसा सुलूक किया और हम ने तुम्हारे लिए मिसालें बयान कीं। (45)

और उन्होंने न अपने दाओ चले, और अल्लाह के आगे है उन के दाओ, अगरचे उन का दाओ ऐसा था कि उस से पहाड़ टल जाते। (46)

पस तू हरगिज़ ख़याल न कर कि अल्लाह ख़िलाफ़ करेगा अपने रसूलों से अपना वादा, वेशक अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेने वाला है। (47)

जिस दिन (उस) ज़मीन से बदल दी जाएगी और ज़मीन और (बदले जाएंगे) आस्मान, और वह सब अल्लाह यकता सख़्त क़हर वाले के आगे निकल खड़े होंगे। (48)

और तू देखेगा मुज़्रिम उस दिन बाहम ज़न्जीरों में जकड़े होंगे। (49)

उन के कुर्ते गन्धक के होंगे, और आग उन के चहरे ढांपे होगी। (50)

ताकि अल्लाह हर जान को उस की कमाई (आमाल) का बदला दे, वेशक अल्लाह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (51)

यह (कुरआन) लोगों के लिए पैग़ाम है, और ताकि वह उस से डराए जाएं, और ताकि वह जान लें कि वही माबूद यकता है, और ताकि अक्ल वाले नसीहत पकड़ें। (52)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा - यह आयतें हैं किताब की, और वाज़ेह (रौशन) कुरआन की। (1)

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا							
और डराओ	लोग	वह दिन	उन पर आएगा	अज़ाब	तो कहेंगे	वह लोग जो	उन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)
رَبَّنَا أَخْرِجْنَا إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ نَجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرَّسُولَ							
ऐ हमारे रब	हमें मोहलत दे	तरफ़	एक मुदत	थोड़ी	हम कुबूल कर लें	तेरी दावत	और हम पैरवी करें
أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلِ مَا لَكُم مِّنْ زَوَالٍ ۚ وَسَكَنتُمْ							
या - क्या न	तुम थे	तुम कस्में खाते	इस से क़बूल	तुम्हारे लिए नहीं	कोई ज़वाल	44	और तुम रहे थे
فِي مَسْكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ							
में	घर (जमा)	जिन लोगों	ने जुल्म किया	अपनी जानों पर	और ज़ाहिर हो गया	तुम पर	हम ने (सुलूक) किया कैसा
وَضَرَبْنَا لَكُمْ الْأَمْثَالَ ۚ وَقَدْ مَكَرُوا مَكَرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكَرُهُمْ							
और हम ने बयान की	तुम्हारे लिए	मिसालें	45	और उन्होंने ने दाओ चले	अपने दाओ	और अल्लाह के आगे	उन के दाओ
وَإِنْ كَانَ مَكَرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۖ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلَفَ							
और अगरचे	था	उन का दाओ	कि टल जाए	उस से	पहाड़	46	पस तू हरगिज़ ख़याल न कर
وَعْدِهِ رَسُولَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۖ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ							
अपना वादा	अपने रसूल	वेशक अल्लाह	ज़बरदस्त	बदला लेने वाला	47	जिस दिन	बदल दी जाएगी
غَيْرِ الْأَرْضِ وَالسَّمُوتِ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۚ وَتَرَى							
मुख़्तलिफ़ ज़मीन	और आस्मान (जमा)	वह निकल खड़े होंगे	अल्लाह के आगे	यकता	सख़्त क़हर वाला	48	और तू देखेगा
الْمُجْرِمِينَ يَوْمِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۚ سَرَابِيلُهُمْ مِّنْ							
मुज़्रिम (जमा)	उस दिन	वाहम जकड़े हुए	में	ज़न्जीरें	49	उन के कुर्ते	से - के
فَطِرَانٍ وَتَغْشَىٰ وُجُوهَهُمُ النَّارُ ۖ لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا							
गन्धक	और ढांप लेगी	उन के चहरे	आग	50	ताकि बदला दे	अल्लाह	हर जान
كَسَبَتْ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۖ هَذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنذَرُوا							
उस ने कमाया (कमाई)	वेशक अल्लाह	तेज़ हिसाब लेने वाला	51	यह पहुँचा देना (पैग़ाम)	लोगों के लिए	और ताकि वह डराए जाएं	
بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۚ							
उस से	और ताकि वह जान लें	उस के सिवा नहीं	वह माबूद	यकता	और ताकि नसीहत पकड़ें	अक्ल वाले	52
آيَاتُهَا ۙ ۙ سُورَةُ الْحَجَرِ ۝ زُكُوعَاتُهَا ۖ							
99 आयत सूरतुल हिज्र (15) पत्थर 6 रुक़आत							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
الرَّ ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُّبِينٍ ۝							
अलिफ़ लाम रा	यह	आयतें	किताब	और कुरआन	वाज़ेह - रौशन	1	

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٢﴾					
2	मुसलमान	काश वह होते	वह लोग जो काफिर हुए	आजू करंगे	बसा औकात
ذَرُهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ					
पस अनकरीब	उम्मीद	और गफूलत में रखे उन्हें	और फाइदा उठा लें	वह खाएं	उन्हें छोड़ दो
يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ					
एक लिखा हुआ	उस के लिए	मगर	बस्ती	किसी	हम ने हलाक किया और नहीं 3
مَّعْلُومٌ ﴿٤﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٥﴾					
5	वह पीछे रहते हैं	और न	अपना मुकर्ररा वक़्त	कोई उम्मत	न सबक़त करती है 4
وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ﴿٦﴾					
6	दीवाना	बेशक तू	याद दिहानी (कुरआन)	उस पर	वह जो कि उतारा गया ऐ वह और वह बोले
لَوْ مَا تَأْتِيَنَا بِالْمَلِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٧﴾ مَا نُنَزِّلُ					
हम नाज़िल नहीं करते	7	सच्चा	से	तू है	अगर
الْمَلِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذَا مُنْظَرِينَ ﴿٨﴾ إِنَّا نَحْنُ					
हम	बेशक	8	मोहलत दिए गए	उस वक़्त	और न होंगे
نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ					
से	और यकीनन हम ने भेजे	9	निगहवान	उस के	और बेशक हम
قَبْلِكَ فِي شَيْعِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٠﴾ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا					
मगर	कोई रसूल	और नहीं आया उन के पास	10	पहले	गिरोह
كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١١﴾ كَذَلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٢﴾					
12	मुज़्रिमों	दिल (जमा)	में	हम उसे डाल देते हैं	उसी तरह 11
لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ فَتَحْنَا					
हम खोल दें	और अगर	13	पहले	रस्म - रविश	और पड़ चुकी है
عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكَّرَتْ					
बान्ध दी गई	इस के सिवा नहीं	तो कहेंगे	14	चढ़ते	उस में
أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَسْحُورُونَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ					
आस्मान	में	और यकीनन हम ने बनाए	15	सिहर ज़दह	लोग
بُرُوجًا وَزَيَّنَّهَا لِلنَّظِيرِينَ ﴿١٦﴾ وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ					
शैतान	हर	से	और हम ने हिफ़ाज़त की उस की	16	देखने वालों के लिए
رَّجِيمٍ ﴿١٧﴾ إِلَّا مَنْ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ شَهَابٌ مُبِينٌ ﴿١٨﴾					
18	चमकता हुआ	शोला	तो उस का पीछा करता है	सुनना	चोरी करे

बाज़ औकात काफिर आजू करंगे काश वह मुसलमान होते! (2) उन्हें छोड़ दो, वह खाएं और फाइदा उठा लें, और उम्मीद उन्हें गफूलत में डाले रखे, पस अनकरीब वह जान लेंगे। (3) और नहीं हलाक किया हम ने किसी बस्ती को, मगर उस के लिए एक लिखा हुआ वक़्त मुकर्रर था। (4) न कोई उम्मत सबक़त करती है अपने मुकर्ररा वक़्त से, और न वह पीछे रहते हैं। (5) और वह (काफिर) बोले ऐ वह शख्स जिस पर कुरआन उतारा गया है बेशक तू दीवाना है, (6) तू हमारे पास फ़रिशतों को क्यों नहीं ले आता? अगर तू सच्यों में से है। (7) हम नाज़िल नहीं करते फ़रिशते मगर हक़ के साथ, और वह उस वक़्त मोहलत न दिए जाएंगे। (8) बेशक हम ही ने कुरआन नाज़िल किया और बेशक हम ही उस के निगहवान हैं। (9) और यकीनन हम ने तुम से पहले गिरोहों में (रसूल) भेजे, (10) और उन के पास कोई रसूल नहीं आया मगर वह उस से इस्तिहज़ा करते थे। (11) उसी तरह हम उसे डाल देते हैं मुज़्रिमों के दिलों में। (12) वह इस (कुरआन) पर ईमान नहीं लाएंगे, और यह पहलों की रस्म पड़ चुकी है। (13) और अगर हम उन पर आस्मान का कोई दरवाज़ा खोल दें, और वह उस में (दिन भर) चढ़ते रहें। (14) तो (यही) कहेंगे कि इस के सिवा नहीं कि हमारी आँखें बान्ध दी गई हैं (हमारी नज़र बन्दी कर दी गई है) बल्कि हम सिहर ज़दह हैं। (15) और यकीनन हम ने आस्मानों में बुर्ज बनाए और उसे देखने वालों के लिए ज़ीनत दी, (16) और हम ने हर मर्दूद शैतान से उस की हिफ़ाज़त की, (17) मगर जो चोरी कर के (चोरी से) सुन ले, तो चमकता हुआ शोला उस का पीछा करता है। (18)

और हम ने ज़मीन को फैला दिया, और हम ने उस पर पहाड़ रखे, और उस में हर चीज़ मुनासिब उगाई। (19)

और हम ने तुम्हारे लिए इस में रोज़ी रोटी के सामाने बनाए (और उस के लिए भी) जिसे तुम रिज़्क देने वाले नहीं। (20)

और कोई चीज़ नहीं जिस के ख़ज़ाने हमारे पास न हों, और हम नहीं उतारते मगर एक मुनासिब अन्दाज़े से। (21)

और हम ने हवाएं भेजी (पानी से) भरी हुई, फिर हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर वह हम ने तुम्हें पिलाया, और तुम उस के ख़ज़ाने (जमा) करने वाले नहीं। (22)

और वेशक हम (ही) ज़िन्दगी देते हैं, और हम ही मारते हैं, और हम ही वारिस हैं। (23)

और तहकीक़ हमें मालूम है तुम में से आगे गुज़र जोने वाले, और तहकीक़ हमें मालूम है पीछे रह जाने वाल। (24)

और वेशक तेरा रब (ही) उन्हें (रोज़े क़ियामत) जमा करेगा, वेशक वह हिक्मत वाला, इल्म वाला है। (25)

और तहकीक़ हम ने इन्सानों को पैदा किया एक खनकनाते हुए, सियाह सड़े हुए गारे से। (26)

और जिनों को उस से पहले हम ने वे धुएँ की आग से पैदा किया। (27)

और जब तेरे रब ने फ़रिशतों से कहा वेशक मैं इन्सान को बनाने वाला हूँ, एक खनकनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से। (28)

फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूँ, और उस में अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उस के लिए सिज्दे में गिर पड़ो। (29)

पस सिज्दा किया सब के सब फ़रिशतों ने, (30)

इब्लीस के सिवा। उस ने (उस से) इन्कार किया कि वह सिज्दा करने वालों के साथ हो। (31)

अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ इब्लीस!

तुझे क्या हुआ? कि तू सिज्दा करने वालों के साथ न हुआ। (32)

उस ने कहा मैं (वह) नहीं हूँ कि सिज्दा करूँ इन्सान को, तू ने उस को खनकनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से पैदा किया है। (33)

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا

और ज़मीन	हम ने उस को फैला दिया	और हम ने रखे	उस में (पर)	पहाड़	और हम ने उगाई	उस में

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ﴿١٩﴾ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ

से	हर शै	मौज़ू	19	और हम ने बनाए	तुम्हारे लिए	उस में	सामाने मईशत	और जो-जिस

لَسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ﴿٢٠﴾ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا

तुम नहीं	उस के लिए	रिज़्क देने वाले	20	और नहीं	कोई चीज़	मगर	हमारे पास	उस के ख़ज़ाने	और नहीं

نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢١﴾ وَأَرْسَلْنَا الرِّيْحَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا

हम उस को उतारते	मगर	अन्दाज़े से	मालूम - मुनासिब	21	और हम ने भेजी	हवाएं	भरी हुई	फिर हम ने उतारा

مِنْ السَّمَاءِ مَاءً فَاسْقَيْنُكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٢﴾

से	आस्मान	पानी	फिर हम ने वह तुम्हें पिलाया	और नहीं	तुम	उस के	ख़ज़ाने करने वाले	22

وَأَنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

और वेशक हम	और	अलवत्ता हम	ज़िन्दगी देते हैं	और हम मारते हैं	और हम	वारिस (जमा)	23	और तहकीक़ हमें मालूम है

الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾ وَإِنَّ

आगे गुज़रने वाले	तुम में से	और तहकीक़ हमें मालूम है	पीछे रह जाने वाले	24	और वेशक

رَبِّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا

तेरा रब	वह	उन्हें जमा करेगा	वेशक वह	हिक्मत वाला	इल्म वाला	25	और तहकीक़ हम ने पैदा किया

الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٦﴾ وَالْجَانَّ

इन्सान	से	खनकनाता हुआ	सियाह गारे से	सड़ा हुआ	26	और जिन (जमा)

خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ

हम ने उसे पैदा किया	उस से पहले	से	आग वे धुएँ की	27	और जब	कहा	तेरा रब

لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٨﴾

फ़रिशतों को	वेशक मैं	बनाने वाला	इन्सान	से	खनकनाता हुआ	से	सियाह गारा	सड़ा हुआ	28

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٢٩﴾

फिर जब	मैं उसे दुरुस्त कर लूँ	और फूँकूँ	उस में	अपनी रूह से	तो गिर पड़ो	उस के लिए	सिज्दा करते हुए	29

فَسَجَدَ الْمَلَكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾ إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى أَنْ يَكُونَ مَعَ

पस सिज्दा किया	फ़रिशतों	वह सब	सब के सब	30	सिवाए	इब्लीस	उस ने इन्कार किया कि	वह हो	साथ

السَّاجِدِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ

सिज्दा करने वाले	31	उस ने फ़रमाया	ऐ इब्लीस	तुझे क्या हुआ	कि तू न हुआ	साथ	सिज्दा करने वाले	32	उस ने कहा

لَمْ أَكُنْ لَأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٣٣﴾

मैं नहीं हूँ	कि सिज्दा करूँ	इन्सान को	तू ने उस को पैदा किया	से	खनकनाता हुआ	से	सियाह गारा	सड़ा हुआ	33

قَالَ فَاحْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَإِنَّ عَلَيْكَ							
उस ने कहा	पस निकल जा	यहां से	वेशक तू	मर्दूद	34	और वेशक	तुझ पर
اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى							
लानत	तक	रोज़े इन्साफ़	35	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	मुझे मोहलत दे	तक
يَوْمٍ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٣٧﴾ إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ							
जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे	36	उस ने कहा	वेशक तू	से	मोहलत दिए जाने वाले	37	तक दिन वक़्त
الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ							
मालूम (मुकर्रर)	38	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	जैसा कि	तू ने मुझे गुमराह किया	तो मैं ज़रूर आरास्ता करूंगा	उन के लिए
فِي الْأَرْضِ وَلَا أَغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ							
ज़मीन में	और मैं ज़रूर गुमराह करूंगा उनको	सब	39	सिवाए	तेरे बन्दे	उन में से	
الْمُخْلِصِينَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾ إِنَّ							
मुखलिस (जमा)	40	उस ने फ़रमाया	यह	रास्ता	मुझ तक	सीधा	वेशक 41
عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَنٌ إِلَّا مَنْ اتَّبَعَكَ							
मेरे बन्दे	नहीं	तेरे लिए (तेरा)	उन पर	कोई ज़ोर	मगर	जो - जिस	तेरी पैरवी की
مِنَ الْغَوِينَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾							
से	वहके हुए (गुमराह)	42	और वेशक	जहन्नम	उन के लिए वादा गाह	सब	43
لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾							
उस के लिए	सात	दरवाज़े	हर दरवाज़े के लिए	उन से	एक हिस्सा	तकसीम शुदह	44
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾ أُدْخِلُوها بِسَلَامٍ							
वेशक	परहेज़गार	में	वागात	और चश्मे	45	तुम उन में दाखिल हो जाओ	सलामती के साथ
أَمِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ							
वेखौफ़ ओ ख़तर	46	और हम ने खींच लिया	जो	में	उन के सीने	से	कीता भाई भाई पर
سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا							
तख़्त (जमा)	आमने सामने	47	उन्हें न छुएगी	उस में	कोई तकलीफ़	और न वह	उस से
بِمُخْرِجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِيٍّ عِبَادِي آتَىٰ أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَإِنَّ							
निकाले जाएंगे	48	ख़बर दे दो	मेरे बन्दों	कि वेशक	मैं	बख़शने वाला	निहायत मेहरबान 49 और यह कि
عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئُهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥١﴾							
मेरा अज़ाब	वह (ही)	अज़ाब	दर्दनाक	50	और उन्हें ख़बर दो (सुना दो)	से - का	मेहमान इब्राहीम (अ) 51
إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾							
जब	वह दाखिल हुए (आए)	उस पर (पास)	तो उन्होंने ने कहा	सलाम	उस ने कहा	हम	तुम से डरने वाले (डरते हैं) 52

अल्लाह ने फ़रमाया पस यहां (जन्मत) से निकल जा वेशक तू मर्दूद है। (34) और वेशक तुझ पर रोज़े इन्साफ़ (कियामत) तक लानत है। (35) उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन मुर्दे उठाए जाएंगे। (36) उस ने फ़रमाया वेशक तू मोहलत दिए जाने वालों में से है, (37) उस दिन तक जिस का वक़्त मुकर्रर है। (38) उस ने कहा ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझे गुमराह किया तो मैं ज़रूर उन के लिए (गुनाह को) ज़मीन में आरास्ता करूंगा, और मैं ज़रूर उन सब को गुमराह करूंगा। (39) सिवाए उन में से जो तेरे मुखलिस बन्दे हैं। (40) उस ने फ़रमाया यह रास्ता सीधा मुझ तक (आता है)। (41) वेशक वह मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, मगर गुमराहों में से जिस ने तेरी पैरवी की। (42) और वेशक उन सब के लिए जहन्नम वादागाह है। (43) उस के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन का बांटा हुआ हिस्सा है। (44) वेशक परहेज़गार बागों और चश्मों में (होंगे)। (45) तुम उन में सलामती के साथ वेखौफ़ ओ ख़तर दाखिल हो जाओ। (46) और हम ने उन के सीनों से खींच लिए कीने, भाई भाई (बन कर) तख़्तों पर आमने सामने (बैठे होंगे)। (47) उस में उन्हें कोई तकलीफ़ न छुएगी, और न वह उस से निकाले जाएंगे। (48) मेरे बन्दों को ख़बर दे दो कि वेशक मैं बख़शने वाला, निहायत मेहरबान हूँ। (49) और यह कि मेरा ही अज़ाब दर्दनाक अज़ाब है। (50) और उन्हें इब्राहीम (अ) के मेहमानों का (हाल) सुना दो। (51) जब वह उस के पास आए तो उन्होंने ने सलाम कहा, उस ने कहा हम तुम से डरते हैं। (52)

उन्होंने ने कहा डरो नहीं, हम तुम्हें एक लड़के की खुशखबरी देते हैं इल्म वाले की। (53)

उस (इब्राहीम अ) ने कहा क्या तुम मुझे इस हाल में खुशखबरी देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुँच गया है? सो किस बात की खुशखबरी देते हो? (54)

वह बोले हम ने तुम्हें खुशखबरी दी है सच्चाई के साथ, आप मायूस होने वालों में से न हों। (55)

उस ने कहा अपने रब की रहमत से कौन मायूस होगा? गुमराहों के सिवा। (56)

उस ने कहा ऐ फ़रिश्तो! पस तुम्हारी मुहिम क्या है? (57)

वह बोले वेशक हम भेजे गए हैं मुज्रिमों की एक कौम की तरफ, (58)

सिवाए लूत (अ) के घर वालों के, अलबत्ता हम उन सब को बचा लेंगे, (59)

सिवाए उस की औरत के, हम ने फैसला कर लिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में से है। (60)

पस जब फ़रिश्ते लूत (अ) के घर वालों के पास आए, (61)

उस ने कहा वेशक तुम नाआशना लोग हो। (62)

वह बोले बल्कि हम तुम्हारे पास उस (अज़ाब) के साथ आए हैं जिस में वह शक करते थे। (63)

और हम तुम्हारे पास हक के साथ आए हैं और वेशक हम सच्चे हैं। (64)

पस अपने घर वालों को रात के एक हिस्से में (कुछ रात रहे) ले निकलें और खुद उन के पीछे पीछे चलें, और न तुम में से कोई पीछे मुड़ कर देखे, और चले जाओ जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है। (65)

और हम ने उस की तरफ उस बात का फैसला भेज दिया कि सुबह होते उन लोगों की जड़ कट जाएगी। (66)

और शहर वाले खुशियाँ मनाते आए। (67)

उस (लूत अ) ने कहा यह मेरे मेहमान हैं, मुझे तुम रुस्वा न करो। (68)

और अल्लाह से डरो और मुझे ख़वार न करो। (69)

वह बोले क्या हम ने तुझे सारे जहान (की हिमायत से) मना नहीं किया? (70)

उस ने कहा यह मेरी बेटियाँ हैं (इन से निकाह कर लो) अगर तुम्हें करना है। (71)

(ऐ मुहम्मद स) तुम्हारी जान की कसम यह लोग वेशक अपने नशे में मदहोश थे। (72)

قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ أَبَشْرُتُمُونِي

क्या तुम मुझे खुशखबरी देते हो	उस ने कहा	53	इल्म वाला	एक लड़का	वेशक हम तुम्हें खुशखबरी देते हैं	डरो नहीं	उन्होंने ने कहा

عَلَى أَنْ مَسْنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تَبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾ قَالُوا بِشَرِّكَ

हम ने तुम्हें खुशखबरी दी	वह बोले	54	तुम खुशखबरी देते हो	सो किस बात	बुढ़ापा	मुझे पहुँच गया	कि	पर - में

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْقَنِطِينَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ

से	मायूस होगा	और कौन	उस ने कहा	55	मायूस होने वाले	से	आप न हों	सच्चाई के साथ

رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا

ऐ	पस क्या है तुम्हारा काम (मुहिम)	उस ने कहा	56	गुमराह (जमा)	सिवाए	अपना रब	रहमत

الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾ إِلَّا

सिवाए	58	मुज्रिम (जमा)	एक कौम	तरफ	भेजे गए	हम वेशक	वह बोले	57	भेजे हुए (फ़रिश्तो)

إِلَّا لُوطٌ إِنَّا لَمَنْجُوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَرْنَا لَهَا

से	वेशक वह	हम ने फैसला कर लिया है	उस की औरत	सिवाए	59	सब	अलबत्ता हम उन्हें बचा लेंगे	हम	घर वाले लूत के

الْغَيْرِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ

लोग	वेशक तुम	उस ने कहा	61	भेजे हुए (फ़रिश्ते)	लूत (अ) के घर वाले	आए	पस जब	60	पीछे रह जाने वाले

مُنْكَرُونَ ﴿٦٢﴾ قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٦٣﴾

63	शक करते	उस में	वह थे	उस के साथ जो	हम आए हैं तुम्हारे पास	बल्कि	वह बोले	62	ऊपर (ना आशना)

وَأَتَيْنَكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٦٤﴾ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ

से	एक हिस्सा	अपने घर वालों को	पस ले निकलें आप	64	अलबत्ता सच्चे	और वेशक हम	हक के साथ	और हम तुम्हारे पास आए हैं

الَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا

और चले जाओ	कोई	तुम में से	पीछे मुड़ कर देखे	और न	उन के पीछे	और खुद चलें	रात

حَيْثُ تُمْرُونَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَؤُلَاءِ

यह लोग	जड़	कि	बात	उस	उस की तरफ	और हम ने फैसला भेजा	65	तुम्हें हुक्म दिया गया	जैसे

مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ﴿٦٦﴾ وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٧﴾

67	खुशियाँ मनाते	शहर वाले	और आए	66	सुबह होते	कटी हुई

قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزَوْنَ ﴿٦٩﴾

69	और मुझे ख़वार न करो	अल्लाह	और डरो	68	पस मुझे रुस्वा न करो तुम	मेरे मेहमान	यह लोग	कि	उस ने कहा

قَالُوا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعُلَمِينَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ

अगर	मेरी बेटियाँ	यह	उस ने कहा	70	सारे जहान	से	हम ने तुझे मना किया	क्या नहीं	वह बोले

كُنْتُمْ فَعِلِينَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٢﴾

72	मदहोश थे	अपने नशे	अलबत्ता में	वेशक वह	तुम्हारी जान की कसम	71	करने वाले (करना है)	तुम हो

فَاخَذَتْهُمْ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَلَيْهَا سَافِلَهَا						
उस के नीचे का हिस्सा	उस के ऊपर का हिस्सा	पस हम ने उसे कर दिया	73	सूरज निकलते वक़्त	चिंघाड़	पस उन्हें आ लिया
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ ﴿٧٤﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً						
निशानियाँ	उस	में	वेशक	74	संगे गिल (खिंगर)	से पत्थर उन पर और हम ने बरसाए
لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ﴿٧٥﴾ وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ﴿٧٦﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً						
निशानी	उस	में	वेशक	76	सीधा	रास्ते पर और वेशक वह गौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए
لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾ وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا						
हम ने बदला लिया	78	ज़ालिम (जमा)	एयका (वन) वाले (कौमे शुऐब)	थे	और तहकीक	ईमान वालों के लिए
مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحَجَرِ						
उन से	और वेशक वह दोनों	रास्ते पर	खुले	79	और अलबत्ता झुटलाया	हिज्र वाले
الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٠﴾ وَاتَيْنَهُمُ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾						
रसूल (जमा)	80	और हम ने उन्हें दी	अपनी निशानियाँ	पस वह थे	उस से	सुँह फेरने वाले
وَكَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ﴿٨٢﴾						
और वह तराशते थे	से	पहाड़ (जमा)	घर	82	बेखौफ़ ओ ख़तर	
فَاخَذَتْهُمْ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ﴿٨٣﴾ فَمَا أَغْنَى عَنْهُمْ مَا						
पस उन्हें आ लिया	चिंघाड़	सुबह होते	83	तो न काम आया	उन के	जो
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٤﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا						
वह कमाया करते थे	84	और नहीं	पैदा किया हम ने	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	और जो
بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ						
उन के दरमियान	मगर	हक के साथ	और वेशक	क़ियामत	ज़रूर आने वाली	पस दरगुज़र करो
الْجَمِيلِ ﴿٨٥﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ						
अच्छा	85	वेशक	तुम्हारा रब	वह	पैदा करने वाला	जानने वाला
سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ﴿٨٧﴾ لَا تُمَدِّنْ						
सात	से	बार बार दोहराई जाने वाली	और कुरआन	अज़मत वाला	87	हरगिज़ न बढ़ाएं आप
عَيْنِيكَ إِلَى مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ						
अपनी आँखें	तरफ़	जो हम ने बरतने को दिया	उस को	कई जोड़े	उन के	और न ग़म खाएं
عَلَيْهِمْ وَآخِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ إِنِّي أَنَا						
उन पर	और झुका दें	अपने बाजू	मोमिनों के लिए	88	और कह दें	मैं वेशक मैं
النَّذِيرِ الْمُبِينِ ﴿٨٩﴾ كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩٠﴾						
डराने वाला अलानिया	89	जैसे	हम ने नाज़िल किया	पर	तक़सीम करने वाले	90

पस उन्हें सूरज निकलते चिंघाड़ ने आ लिया। (73)

पस हम ने उस (वस्ती) का ऊपर का हिस्सा नीचे (उल्टा पुल्टा) कर दिया, और हम ने उन पर खिंगर के पत्थर बरसाए। (74)

वेशक उस में गौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियाँ हैं। (75)

और वेशक वह (वस्ती) सीधे रास्ते पर (वाक़े) है। (76)

वेशक उस में ईमान वालों के लिए निशानी है। (77)

और तहकीक़ कौमे शुऐब (अ) के लोग ज़ालिम थे। (78)

और हम ने उन से बदला लिया, और वह दोनों (बसतियाँ वाक़े हैं) एक खुले रास्ते पर। (79)

और अलबत्ता “हिज्र” के रहने वालों ने रसूलों को झुटलाया। (80)

और हम ने उन्हें अपनी निशानियाँ दी पस वह उन से सुँह फेरने वाले थे। (81)

और वह पहाड़ों से बेखौफ़ ओ ख़तर घर तराशते थे। (82)

पस उन्हें सुबह होते चिंघाड़ ने आ लिया। (83)

तो जो वह कमाया करते थे (उन का क्या धरा) उन के काम न आया। (84)

और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है नहीं पैदा किया मगर हक़ (हिक्मत) के साथ, और वेशक़ क़ियामत ज़रूर आने वाली है पस अच्छी तरह माफ़ करो। (85)

वेशक तुम्हारा रब ही पैदा करने वाला, जानने वाला है। (86)

और तहकीक़ हम ने तुम्हें (सूरह-ए-फ़ातिहा की) बार बार दोहराई जाने वाली सात (आयात) दी और अज़मत वाला कुरआन। (87)

आप (स) हरगिज़ अपनी आँखें न बढ़ाएं (आँख उठा कर भी न देखें) (उन चीज़ों की) तरफ़ जो हम ने उन के कई जोड़ों (गिरोहों) को दी, और उन पर ग़म न खाएं, और आप (स) अपने बाजू झुका दें मोमिनों के लिए। (88)

और कह दें वेशक मैं अलानिया डराने वाला हूँ। (89)

जैसे हम ने तक़सीम करने वालों (तफ़रिका परदाज़ों) पर अज़ाब नाज़िल किया। (90)

जिन लोगों ने कुरआन को टुकड़े टुकड़े कर डाला (कुछ को माना कुछ को न माना)। (91)

सो तेरे रब की कसम हम उन सब से ज़रूर पूछेंगे। (92)

उस की बावत जो वह करते थे। (93)

पस जिस बात का आप (स) को हुक्म दिया गया है साफ़ साफ़ कह दें और मुश्रिकों से एराज़ करें (मुँह फेर लें)। (94)

वेशक मज़ाक़ उड़ाने वालों (के खिलाफ़) तुम्हारे लिए हम काफी हैं। (95)

जो लोग अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद बनाते हैं पस वह अनकरीब जान लेंगे। (96)

और अलबत्ता हम जानते हैं कि वह जो कहते हैं उस से आप (स) का दिल तंग होता है, (97)

तो तस्वीह करें (पाकीज़गी बयान करें) अपने रब की हमद के साथ, और सिज्दा करने वालों में से हों, (98)

और अपने रब की इबादत करते रहें यहाँ तक कि आप (स) के पास यकीनी बात (मौत) आ जाए। (99)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

आपहुँचा अल्लाह का हुक्म सो उस की जल्दी न करो, वह पाक है

और उस से बरतर जो वह (अल्लाह का) शरीक बनाते हैं। (1)

वह फ़रिश्ते अपने हुक्म से वहि के साथ नाज़िल करता है अपने बन्दों में से जिस पर वह चाहता है कि तुम डराओ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मुझ ही से डरो। (2)

उस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन हिक्मत के साथ, वह उस से बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (3)

उस ने इन्सान को पैदा किया नुतफ़े से, फिर वह नागहां खुला झगड़ालू हो गया। (4)

और उस ने चौपाए पैदा किए तुम्हारे लिए, उन में गर्म सामान (गर्म कपड़े) और फ़ाइदे हैं, और उन में से (वाज़ को) तुम खाते हो। (5)

और तुम्हारे लिए उन में खूबसूरती और शान है जिस वक़्त शाम को चरा कर लाते हो, और जिस वक़्त सुबह को चराने ले जाते हो। (6)

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۖ فَوَرِّبَكَ لَنَسَلْتَهُمْ

हम ज़रूर पूछेंगे उन से	सो तेरे रब की कसम	91	टुकड़े टुकड़े	कुरआन	उन्होंने ने कर दिया	वह लोग जो

أَجْمَعِينَ ۚ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ

तुम्हें हुक्म दिया गया	जिस का	पस साफ़ साफ़ कह दें आप (स)	93	वह करते थे	उस की बावत जो	92	सब

وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۚ إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ۚ الَّذِينَ

जो लोग	95	मज़ाक़ उड़ाने वाले	काफी हैं तुम्हारे लिए	वेशक हम	94	मुश्रिक (जमा)	से	और एराज़ करें

يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۚ وَلَقَدْ نَعْلَمُ

हम जानते हैं	और अलबत्ता	96	वह जान लेंगे	पस अनकरीब	कोई दूसरा	माबूद	अल्लाह के साथ	बनाते हैं

أَنَّكَ يَصِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۚ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ

और हो	अपना रब	हमद के साथ	तो तस्वीह करें	97	जो वह कहते हैं	उस से	तुम्हारा सीना (दिल)	तंग होता है	वेशक तुम

مِّنَ السَّجِدِينَ ۚ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۚ

99	यकीनी बात	आए आप (स) के पास	यहाँ तक कि	अपना रब	और इबादत करें	98	सिज्दा करने वाले	से

آيَاتُهَا ۚ ۝ (١٦) سُورَةُ النَّحْلِ ۝ رُكُوعَاتُهَا ١٦

रुक़आत 16 (16) सूरतुन नहल शहद की मक्खी आयात 128

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا

उस से जो	और बरतर	वह पाक है	सो उस की जल्दी न करो	आ पहुँचा अल्लाह का हुक्म

يُشْرِكُونَ ۚ يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ

जिसे चाहता है	पर	अपने हुक्म	से	वहि के साथ	फ़रिश्ते	वह नाज़िल करता है	1	वह शरीक बनाते हैं

مِّنْ عِبَادَةٍ أَنْ أُنْذِرُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ۚ خَلَقَ

उस ने पैदा किए	2	पस मुझ से डरो	मेरे	सिवाए	कोई माबूद नहीं	कि वह	तुम डराओ	कि	अपने बन्दे	से

السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ ۚ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۚ خَلَقَ

पैदा किया उस ने	3	वह शरीक करते हैं	उस से जो	बरतर	हक़ (हिक्मत) के साथ	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۚ وَالْأَنْعَامَ

और चौपाए	4	खुला	झगड़ालू	वह	फिर नागहां	नुतफ़ा	से	इन्सान

خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنْفَعٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۚ

5	तुम खाते हो	उन में से	और फ़ाइदे (जमा)	गर्म सामान	उन में	तुम्हारे लिए	उस ने उन को पैदा किए

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۚ

6	सुबह को चराने ले जाते हो	और जिस वक़्त	शाम को चरा कर लाते हो	जिस वक़्त	खूबसूरती - शान	उन में	और तुम्हारे लिए

وَتَحْمِلْ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا بَلِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ							
हलकान कर के	बगैर	उन तक पहुँचने वाले	न थे तुम	शहर (जमा)	तरफ	तुम्हारे बोझ	और वह उठाते हैं
الْأَنْفُسِ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَّءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٧﴾ وَالْخَيْلِ وَالْبِغَالِ							
और खच्चर	और घोड़े	7	रहम करने वाला	इन्तिहाई शफीक	तुम्हारा रब	वेशक	जानें
وَالْحَمِيرِ لَتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨﴾							
8	तुम नहीं जानते	जो	और वह पैदा करता है	और ज़ीनत	ताकि तुम उन पर सवार हो	और गधे	
وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ وَلَوْ شَاءَ لَهْدَكُمْ							
तो वह तुम्हें हिदायत देता	और अगर वह चाहे	टेढ़ी	और उस से	राह	सीधी	और अल्लाह पर	
أَجْمَعِينَ ﴿٩﴾ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ							
उस से	तुम्हारे लिए	पानी	आस्मान	से	नाज़िल किया (बरसाया)	जिस ने	वही 9 सब
شَرَابٍ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ﴿١٠﴾ يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ							
उस से	तुम्हारे लिए	वह उगाता है	10	तुम चराते हो	उस में	दरख़्त	और उस से पीना
الزَّرْعِ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ							
हर	और से - के	और अंगूर	और खजूर	और जैतून	खेती		
الثَّمَرِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١١﴾ وَسَخَّرَ							
और मुसख़्ख़र किया	11	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	वेशक	फल (जमा)
لَكُمْ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ							
और सितारे	और चाँद	और सूरज	और दिन	रात	तुम्हारे लिए		
مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٢﴾							
12	वह अक़ल से काम लेते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस	में	वेशक	उस के हुक्म से मुसख़्ख़र
وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ إِنَّ							
वेशक	उस के रंग	मुख़्तलिफ़	ज़मीन में	तुम्हारे लिए	पैदा किया	और जो	
فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣﴾ وَهُوَ الَّذِي							
जो - जिस	और वही	13	वह सोचते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	
سَخَّرَ الْبَحْرَ لَتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا							
और तुम निकालो	ताज़ा	गोश्त	उस से	ताकि तुम खाओ	दर्या	मुसख़्ख़र किया	
مِنْهُ حَلِيَّةٌ تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاحِرَ							
पानी चीरने वाली	कश्ती	और तुम देखते हो	तुम वह पहनते हो	ज़ेवर	उस से		
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلِعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٤﴾							
14	शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ज़ल	से	और ताकि तलाश करो	उस में	

और वह तुम्हारे बोझ उन शहरों तक ले जाते हैं जहाँ जानें हलकान किए बगैर तुम पहुँचने वाले न थे। वेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफीक, निहायत रहम वाला है। (7)

और घोड़े और खच्चर और गधे ताकि तुम उन पर सवार हो और ज़ीनत के लिए (पैदा किए) और वह पैदा करता है जो तुम नहीं जानते। (8)

और सीधी राह अल्लाह तक पहुँचती है और उन में से (कोई) राह टेढ़ी है, और अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत द देता। (9)

वही है जिस ने आस्मान से पानी बरसाया, उस से तुम्हारे लिए पीने को है, और उस से दरख़्त (सैराब होते) हैं और जिन में तुम (मवेशी) चराते हो, (10)

वह उस से तुम्हारे लिए उगाता है खेती, और जैतून, और खजूर, और अंगूर और हर किसम के फल, वेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियां हैं। (11)

और उस ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, और सितारे मुसख़्ख़र (काम में लगे हुए) हैं। उस के हुक्म से, वेशक उस में अक़ल से काम लेने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (12)

और तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा की मुख़्तलिफ़ (चीज़ें) रंग व रंग की, वेशक उस में सोचने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13)

और वही है जिस ने दर्या को मुसख़्ख़र किया ताकि तुम उस से (मछलियों का) ताज़ा गोश्त खाओ, और उस से ज़ेवर निकालो जो तुम पहनते हो, और तुम देखते हो उस में कश्तियां पानी को चीर कर चलती हैं और ताकि तुम उस के फ़ज़ल से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14)

और उस ने ज़मीन पर पहाड़ रखे कि तुम्हें ले कर (ज़मीन) झुक न पड़े, और दर्या और रास्ते (बनाए)

ताकि तुम राह पाओ। (15)

और अ़लामतें (बनाई) और वह सितारों से रास्ता पाते हैं। (16)

क्या जो (अल्लाह) पैदा करता है उस जैसा है जो पैदा नहीं करता, पस क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (17)

और अगर तुम अल्लाह की नेमतें शुमार करो तो उन्हें पूरा न गिन सकोगे, वेशक अल्लाह व़ख़शने वाला, निहायत मेहरबान है। (18)

और अल्लाह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। (19)

और वह जिन्हें पुकारते हैं अल्लाह के सिवा वह कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह खुद पैदा किए गए हैं। (20)

मुर्दे हैं, ज़िन्दा नहीं, (बेजान हैं), और वह नहीं जानते वह कब उठाए जाएंगे। (21)

तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस जो लोग ईमान नहीं रखते आखिरत पर उन के दिल मुन्किर हैं, और वह मग़रूर हैं। (22)

यकीनी बात है अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। वेशक वह तकव्वुर करने वालों को पसन्द नहीं करता। (23)

और जब उन से कहा जाए क्या नाज़िल किया तुम्हारे रब ने? तो वह कहते हैं पहले लोगों की कहानियां हैं। (24)

अन्जामे कार वह अपने पूरे बोझ उठाएंगे क़ियामत के दिन, और कुछ उन के बोझ जिन्हें वह बग़ैर इल्म के गुमराह करते हैं, खूब सुन लो, बुरा है जो वह लादते हैं। (25)

जो उन से पहले थे उन्होंने ने मक्कारी की पस उन की इमारत पर अल्लाह (का अज़ाब) बुन्यादों से आया, पस गिर पड़ी उन पर छत ऊपर से, और उन पर अज़ाब आया जहां से उन्हें ख़याल न था। (26)

وَأَلْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا							
और रास्ते	और नहरें - दर्या	तुम्हें ले कर	कि झुक न पड़े	पहाड़	ज़मीन में - पर	और डाले (रखे)	
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥﴾ وَعَلَّمَتْ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾ أَفَمَنْ							
क्या - पस जो	16	रास्ता पाते हैं	वह	और सितारा	और अ़लामतें	15	राह पाओ ताकि तुम
يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٧﴾ وَإِنْ تَعْدُوا نِعْمَةَ اللَّهِ							
अल्लाह की नेमत	तुम शुमार करो	और अगर	17	क्या - पस तुम ग़ौर नहीं करते	पैदा नहीं करता	उस जैसा जो	पैदा करे
لَا تُحْصَوْهَا إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٨﴾ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ							
जो तुम छुपाते हो	जानता है	और अल्लाह	18	निहायत मेहरबान	अलबत्ता व़ख़शने वाला	वेशक अल्लाह	उस को पूरा न गिन सकोगे
وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ							
वह पैदा नहीं करते	अल्लाह	सिवाए		वह पुकारते हैं	और जिन्हें	19	तुम ज़ाहिर करते हो और जो
شَيْئًا وَهُمْ يُخْلِقُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ							
और वह नहीं जानते	ज़िन्दा	नहीं	मुर्दे	20	पैदा किए गए	और वह (खुद)	कुछ भी
أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٢١﴾ إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ							
ईमान नहीं रखते	पस जो लोग	एक (यकता)	माबूद	तुम्हारा माबूद	21	वह उठाए जाएंगे	कब
بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ أَنَّ							
कि	यकीनी बात	22	तकव्वुर करने वाले (मग़रूर)	और वह	मुन्किर (इन्कार करने वाले)	उन के दिल	आख़ित पर
اللَّهُ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٣﴾							
23	तकव्वुर करने वाले	पसन्द नहीं करता	वेशक वह	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	वह छुपाते हैं	जो जानता है अल्लाह
وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَآذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا آسَاطِيرُ							
कहानियां	वह कहते हैं	तुम्हारा रब	नाज़िल किया	क्या	उन से	कहा जाए	और जब
الْأُولَٰئِينَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَمَةِ							
क़ियामत के दिन	पूरे	अपने बोझ (गुनाह)	अन्जामे कार वह उठाएंगे	24	पहले लोग		
وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِلَّا سَاءَ							
बुरा	खूब सुन लो	इल्म के बग़ैर	वह गुमराह करते हैं	उन के जिन्हें	बोझ	और कुछ	
مَا يَزِرُّونَ ﴿٢٥﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَآتَى							
पस आया	उन से पहले	वह लोग जो	तहकीक़ मक्कारी की	25	जो वह लादते हैं		
اللَّهُ بُنْيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ							
से	छत	उन पर	पस गिर पड़ी	बुन्याद (जमा)	से	उन की इमारत	अल्लाह
فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾							
26	उन्हें ख़याल न था	जहां से	से	अज़ाब	और आया उन पर	उन के ऊपर	

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ							फिर वह उन्हें कियामत के दिन						
वह जो कि	मेरे शरीक	कहां	और कहेगा	वह उन्हें रुस्वा करेगा	कियामत के दिन	फिर	रुस्वा करेगा, और वह कहेगा कहां हैं मेरे वह शरीक जिन के बारे में तुम झगड़ते थे, इल्म वाले कहेंगे वेशक आज के दिन रुस्वाई और बुराई है काफिरों पर। (27)						
रुस्वाई	वेशक	इल्म (इल्म वाले)	दिए गए	वह लोग जो	कहेंगे	उन (के बारे में)	झगड़ते	तुम थे	वह जिन की जान फरिशते (उस हाल में) निकालते हैं कि वह अपने ऊपर जुल्म कर रहे होते हैं, फिर वह इताअत का पैगाम डालेंगे कि हम कोई बुराई न करते थे, हां हां! अल्लाह जानने वाला है जो तुम करते थे। (28)				
الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٧﴾ الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ							आज और बुराई पर काफिर (जमा) 27 वह जो कि उन की जान निकालते हैं						
ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ ۖ فَالْقُوا السَّلَامَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوءٍ بَلَىٰ إِنَّ							जुल्म करते हुए अपने ऊपर पस डालेंगे पैगामे इताअत हम न करते थे कोई बुराई हां हां वेशक						
اللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ							अल्लाह जानने वाला वह जो तुम करते थे 28 तुम जो कि सो तुम दाखिल हो दरवाजे जहन्नम						
خُلِدِينَ فِيهَا ۖ فَلَيْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾ وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا							हमेशा रहोगे उस में बुरा ठिकाना अलबत्ता बुरा ठिकाना ठिकाना तबबुर करने वाले और कहा गया 29 उन लोगों से जिन्होंने ने परहेज़गारी की						
مَا ذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا خَيْرًا ۖ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي							तुम्हारे रब ने क्या उतारा? वह बोले बहतरीन (कलाम), जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए इस दुनिया में भलाई है और आखिरत का घर (सब से) बेहतर है, और क्या खूब है! परहेज़गारों का घर। (30)						
هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۖ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۖ وَلَنِعَمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾							इस दुनिया भलाई हमेशा रहोगे उस में बुरा ठिकाना अलबत्ता बुरा ठिकाना ठिकाना तबबुर करने वाले और कहा गया 29 उन लोगों से जिन्होंने ने परहेज़गारी की						
جَنَّتْ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا							हमेशगी के बागात, जिन में वह दाखिल होंगे, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वहां जो वह चाहेंगे उन के लिए होगा, अल्लाह परहेज़गारों को ऐसी ही जज़ा देता है। (31)						
مَا يَشَاءُونَ ۖ كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾ الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ							वह जिन की जान फरिशते (उस हाल में) निकाले हैं कि वह पाक होते हैं, वह (फरिशते) कहते हैं तुम पर सलामती हो। (32)						
الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ ۖ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۖ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا							अपने आमाल के बदले जन्नत में दाखिल हो। क्या वह सिर्फ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि उन के पास फरिशते आएँ, या तेरे रब का हुक्म आएँ, ऐसा ही उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर (खुद) जुल्म करते थे। (33)						
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ							पस उन्हीं पहुँची उन के आमाल की बुराइयाँ, और उन्हीं घेर लिया उस (अज़ाब) ने जिस का वह मज़ाक उड़ाते थे। (34)						
أَمْرُ رَبِّكَ ۖ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَمَا ظَلَمَهُمُ							जुल्म करते अपनी जानें वह थे और बल्कि अल्लाह 32 तुम करते थे (आमाल) क्या वह इन्तिज़ार करते हैं मगर (सिर्फ) यह कि उन के पास आएँ फरिशते या आएँ						
اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾ فَاصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ							अल्लाह और बल्कि वह थे अपनी जानें ज़ुल्म करते पस उन्हीं पहुँची बुराइयाँ 33 तुम करते अपनी जानें वह थे और बल्कि अल्लाह 32 तुम करते थे (आमाल) क्या वह इन्तिज़ार करते हैं मगर (सिर्फ) यह कि उन के पास आएँ फरिशते या आएँ						
مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٤﴾							जो उन्हीं ने किया (आमाल) और घेर लिया उन को जो वह थे उस का मज़ाक उड़ाते 34 तुम करते अपनी जानें वह थे और बल्कि अल्लाह 32 तुम करते थे (आमाल) क्या वह इन्तिज़ार करते हैं मगर (सिर्फ) यह कि उन के पास आएँ फरिशते या आएँ						

और कहा जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिकों ने) अगर अल्लाह चाहता तो न हम परस्तिश करते और न हमारे बाप दादा उस के सिवाए किसी शै की, और हम उस के हुक्म के सिवा कोई शै हराम न ठहराते, उसी तरह उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, पस क्या है रसूलों के ज़िम्मे? मगर साफ़ साफ़ पहुँचा देना। (35)

और तहकीक़ हम ने हर उम्मत में भेजा कोई न कोई रसूल कि अल्लाह की इबादत करो और सरकश से बचो, सो उन में से किसी को अल्लाह ने हिदायत दी, और उन में से बाज़ पर गुमराही साबित हो गई, पस ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झूटलाने वालों का? (36)

अगर तुम उन की हिदायत के लिए ललचाओ तो बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह करता है, और उन का कोई मददगार नहीं। (37)

और उन्होंने ने अल्लाह की कसम खाई अपनी सख़्त (पुर ज़ोर) कसम कि जो मर जाता है उसे अल्लाह (रोज़े क़ियामत) नहीं उठाएगा। क्यों नहीं? उस पर उस का वादा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते, (38)

ताकि उन के लिए ज़ाहिर कर दे जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं, और ताकि काफ़िर जान लें कि वह झूटे थे। (39)

जब हम किसी चीज़ का इरादा करें तो हमारा फ़रमाना इस के सिवा नहीं कि हम उस को कहते हैं, कि “हो जा” तो वह हो जाता है। (40)

और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए हिज़्रत कि उस के बाद के उन पर जुल्म किया गया, हम उन्हें ज़रूर जगह देंगे दुनिया में अच्छी और बेशक आख़िरत का अजर बहुत बढ़ा है, काश वह (हिज़्रत से रह जाने वाले) जानते। (41)

जिन लोगों ने सब्र किया और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (42)

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ							
और कहा	वह लोग जो	उन्होंने ने शिर्क किया	अगर	चाहता अल्लाह	न	हम परस्तिश करते	उस के सिवाए
مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ							
कोई - किसी शै	हम	और न	हमारे बाप दादा	और न हराम ठहराते हम	उस के (हुक्म के) सिवा	कोई शै	
كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا							
उसी तरह	किया	वह लोग जो	उन से पहले	पस क्या है	पर (ज़िम्मे)	रसूल (जमा)	मगर
الْبَلْغُ الْمُبِينُ ۝ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنْ							
पहुँचा देना	साफ़ साफ़	35	और तहकीक़ हम ने भेजा	में	हर उम्मत	रसूल	कि
اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ فَمِنْهُمْ مَنْ هَدَى اللَّهُ							
इबादत करो तुम	अल्लाह	और बचो	तागूत (सरकश)	सो उन में से बाज़	जिसे हिदायत दी	अल्लाह	
وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا							
और उन में से	बाज़	साबित हो गई	उस पर	गुमराही	पस चलो फिरो	ज़मीन में	फिर देखो
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ إِن تَحْرَضُوا عَلَى هُدَاهُمْ							
कैसा	हुआ	अन्जाम	झूटलाने वाले	36	अगर	तुम हिर्स करो (ललचाओ)	उन की हिदायत के लिए
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَصِيرِينَ ۝							
तो बेशक अल्लाह	हिदायत नहीं देता	जिसे	वह गुमराह करता है	और नहीं	उन के लिए	कोई	मददगार
وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَنْ يَمُوتُ							
और उन्होंने ने कसम खाई	अल्लाह की	अपनी सख़्त	अपनी कसम	नहीं उठाएगा	अल्लाह	जो मर जाता है	
بَلَىٰ وَعَدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝							
क्यों नहीं	वादा	उस पर	सच्चा	और लेकिन	अक्सर	लोग	नहीं जानते
لَيُبَيِّنَ لَهُمُ الْآذَىٰ يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا							
ताकि ज़ाहिर कर दे	उन के लिए	जो	इख़्तिलाफ़ करते हैं	उस में	और ताकि जान लें	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	
أَنَّهُمْ كَانُوا كَذِبِينَ ۝ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ							
कि वह	झूटे थे	39	उस के सिवा नहीं	हमारा फ़रमाना	किसी चीज़ को	जब हम उस का इरादा करें	कि हम कहते हैं
لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ							
उस को	हो जा	तो वह हो जाता है	40	और वह लोग जो	उन्होंने ने हिज़्रत कि	अल्लाह के लिए	उस के बाद
مَا ظَلَمُوا لِنَبِيِّنَهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَلَا جَزَا لَآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ							
कि उन पर जुल्म किया गया	ज़रूर हम उन्हें जगह देंगे	दुनिया में	अच्छी	और बेशक अजर	आख़िरत	बहुत बढ़ा	काश
كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝							
वह जानते	41	वह लोग जो	उन्होंने ने सब्र किया	और अपने रब पर	भरोसा करते हैं	42	

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِيْ اِلَيْهِمْ فَسَلُّوْا اَهْلَ الذِّكْرِ							
याद रखने वाले	पस पूछो	उन की तरफ	हम वहि करते है	मर्दों के सिवा	तुम से पहले	हम ने भेजे	और नहीं
اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ⁽⁴³⁾ بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَأَنْزَلْنَا اِلَيْكَ							
तुम्हारी तरफ	और हम ने नाज़िल की	और किताबें	निशानियों के साथ	43	नहीं जानते	तुम हो	अगर
الذِّكْرِ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ⁽⁴⁴⁾							
44	वह गौर ओ फ़िक्र करें	और ताकि वह	उन की तरफ	जो नाज़िल किया गया	लोगों के लिए	ताकि वाज़ेह कर दो	याददाशत (किताब)
اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَّرُوا السَّيِّئَاتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهٖمُ الْاَرْضَ							
ज़मीन	उन को	अल्लाह	धंसादे	कि	बुरे	दाओ किए	जिन लोगों ने क्या बेखौफ हो गए है
اَوْ يَّاتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ⁽⁴⁵⁾ اَوْ يَّأْخُذْهُمْ							
या	उन पर आए	अज़ाब	उस जगह से	वह ख़बर नहीं रखते	45	या	उन्हें पकड़ ले
فِي تَقْلِبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ⁽⁴⁶⁾ اَوْ يَّأْخُذْهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ فَاِنَّ							
में	उन को चलते फिरते	पस नहीं	वह	आजिज़ करने वाले	46	या	उन्हें पकड़ ले
पस वेशक	डराना	पर (बाद)	उन्हें पकड़ ले	या	46	पस वेशक	डराना
رَبَّكُمْ لَرَّءَوْفٌ رَّحِيْمٌ ⁽⁴⁷⁾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ							
तुम्हारा रब	इन्तिहाई शफ़ीक़	निहायत रहम करने वाला	47	क्या उन्होंने ने नहीं देखा	तरफ	जो पैदा किया	अल्लाह
يَتَفَقَّهُوا ظُلُمًا عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَالِ سَجْدًا لِلّٰهِ وَهُمْ							
ढलते हैं	उस के साए	से	दाएं	और बाएं	सिज्दा करते हुए	अल्लाह के लिए	और वह
دُخِرُوْنَ ⁽⁴⁸⁾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ مِنْ							
आजिज़ी करने वाले	48	और अल्लाह के लिए सिज्दा करता है	जो	में	आस्मानों	और जो	ज़मीन में
دَابَّةٍ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ⁽⁴⁹⁾ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ							
जानदार	और फ़रिश्ते	और वह	तकबुर नहीं करते	49	वह डरते हैं	अपना रब	से
وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ⁽⁵⁰⁾ وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَخْذُوا الْهَيْنِ اٰثْنِيْنَ							
और वह (वही) करते हैं	जो	उन्हें हुकम दिया जाता है	50	और कहा	न	तुम बनाओ	दो
اِنَّمَا هُوَ اِلٰهُ وَّاحِدٌ فَاَيَّٰى فَاَرْهَبُوْنَ ⁽⁵¹⁾ وَلَهُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ							
इस के सिवा नहीं	वह	माबूद	यकता	पस मुझ ही से	तुम मुझ से डरो	51	और उसी के लिए
وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاَصْبًاۢۙ اَفْغِيْرَ اللّٰهُ تَتَّقُوْنَ ⁽⁵²⁾ وَمَا بِكُمْ							
और ज़मीन	और उसी के लिए	इताज़त ओ इबादत	लाज़िम	तो क्या अल्लाह के सिवा	तुम डरते हो	52	और जो
مِّنْ نّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجَرُّوْنَ ⁽⁵³⁾							
कोई नेमत	अल्लाह की तरफ से	फिर	जब	तुम्हें पहुँचती है	तक्लीफ	तो उस की तरफ	तुम रोते (चिल्लाते) हो
ثُمَّ اِذَا كُشِفَ الضُّرُّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ⁽⁵⁴⁾							
फिर	जब	खोलदे (दूर कर देता है)	सख्ती	तुम से	जब (उस वक़्त) एक फ़रीक़	तुम में से	वह शरीक करता है

और हम ने तुम से पहले भी मर्दों के सिवा (रसूल) नहीं भजे, हम वहि करते हैं उन की तरफ, याद रखने वालों से पूछो अगर तुम नहीं जानते (कि उन रसूलों को हम ने भेजा था)। (43)

निशानियों और किताबों के साथ, और हम ने तुम्हारी तरफ किताब नाज़िल कि है ताकि लोगों के लिए वाज़ेह कर दो जो उन की तरफ नाज़िल किया गया है, ताकि वह गौर ओ फ़िक्र करें। (44)

जिन लोगों ने बुरे दाओ किए क्या वह उस से बेखौफ हो गए है कि अल्लाह उन को ज़मीन में धंसा दे? या उन पर अज़ाब आजाए जहाँ से उन को ख़बर ही न हो, (45)

या वह उन्हें पकड़ ले चलते फिरते, पस वह (अल्लाह) को आजिज़ करने वाले नहीं, (46)

या उन्हें डराने के बाद पकड़ ले, पस वेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफ़ीक़ निहायत रहम तरने वाला है। (47)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा? कि जो चीज़ अल्लाह ने पैदा की है, उस के साए ढलते हैं, दाएं से और बाएं से, अल्लाह के लिए सिज्दा करते हुए, और वह आजिज़ी करने वाले हैं। (48)

और अल्लाह को सिज्दा करता है जो भी आस्मानों में और जो भी जानदारों में से ज़मीन में है और फ़रिश्ते भी, और वह तकबुर नहीं करते। (49)

वह अपने रब से डरते हैं (जो) उन के ऊपर है, और वह वही करते हैं जो उन्हें हुकम दिया जाता है। (50)

और अल्लाह ने कहा कि न तुम बनाओ दो माबूद। इस के सिवा नहीं कि वह माबूद यकता है, पस मुझ ही से डरो। (51)

और उसी के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है और उसी के लिए इताज़त ओ इबादत लाज़िम है, तो क्या अल्लाह के सिवा (किसी और से) तुम डरते हो? (52)

और तुम्हारे पास जो कोई नेमत है सो अल्लाह की तरफ से है, फिर जब तुम्हें तक्लीफ पहुँचती है तो उसी की तरफ तुम रोते चिल्लाते हो। (53)

फिर वह जब तुम से सख्ती दूर कर देता है तो तुम में से एक फ़रीक़ उस वक़्त अपने रब के साथ शरीक करने लगता है, (54)

ताकि वह उस की नाशुकी करें जो हम ने उन्हें दिया, तो तुम फ़ाइदा उठाओ, पस अनकरीब तुम जान लोगे। (55) और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह उन के लिए हिस्सा मकर्रर करते हैं, जिन (मावूदों) को वह नहीं जानते, अल्लाह की कसम तुम से उस (के बारे) में ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम झूट बान्धते थे। (56) और वह अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं, वह पाक है, और अपने लिए वह जो उन का दिल चाहता है। (57) और जब उन में से किसी को लड़की की खुशख़बरी दी जाती है तो उस का चहरा सियाह पड़ जाता है और वह गुस्से से भर जाता है। (58) लोगों से छुपता फिरता है उस “बुराई” की खुशख़बरी के सबब जो उसे दी गई (अब सोचता है) आया उस को रुस्वाई के साथ रखे या उस को मिट्टी में दफ़न कर दे, याद रखो! बुरा है जो वह फैसला करते हैं। (59) जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते उन का हाल बुरा है, और अल्लाह की शान बुलन्द है, और वह ग़ालिव हिक्मत वाला है। (60) और अगर अल्लाह गिरिफ़्त करे लोगों की उन के जुल्म के सबब तो वह ज़मीन पर कोई चलने वाला न छोड़े, लेकिन वह उन्हें ढील देता है एक मुद्दे मुकर्ररा तक, फिर जब उन का वक़्त आगया, न वह एक घड़ी पीछे हटेंगे, और न आगे बढ़ेंगे। (61) और वह अल्लाह के लिए ठहराते हैं जो अपने लिए न पसन्द करते हैं, और उन की ज़बानें झूट बयान करती हैं कि उन के लिए भलाई है, लाज़िमी बात है कि उन के लिए जहन्नम है, बेशक वह (जहन्नम में) आगे भेजे जाएंगे। (62) अल्लाह की कसम! तहकीक़ हम ने भेजे तुम से पहले उम्मतों की तरफ़ (रसूल), फिर शैतान ने उन के अमल उन्हें अच्छे कर दिखाए, पस आज वह उन का रफ़ीक़ है, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (63) और हम ने तुम पर किताब नहीं उतारी मगर (सिर्फ़) इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो जिस में उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया, और हिदायत ओ रहमत उन के लिए जो ईमान लाए। (64)

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَهُمْ ۖ فَتَمْتَعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝۵۵ وَيَجْعَلُونَ							
और वह मुकर्रर करते हैं	55	तुम जान लोगे	पस अनकरीब	तो तुम फ़ाइदा उठा लो	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	ताकि वह नाशुकी करें
لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۖ تَاللّٰهِ لَتُسْأَلُنَّ عَمَّا							
उस से जो	तुम से ज़रूर पूछा जाएगा	अल्लाह की कसम	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	हिस्सा	वह नहीं जानते	उस के लिए जो
كُنْتُمْ تَفْتَرُونَ ۝۵۶ وَيَجْعَلُونَ لِلّٰهِ الْبَنَاتِ سُبْحَنَهُ ۖ وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ ۝۵۷							
57	उन का दिल चाहता है	जो	और अपने लिए	वह पाक है	बेटियां	और वह बनाते (ठहराते) अल्लाह के लिए	56
تُومِ تَظْهَرُ أَحَدُهُمْ بِالْأُنْثَىٰ ۖ ذَلَّٰلًا وَجْهَهُ مُسْوَدًّا ۖ وَهُوَ كَظِيمٌ ۝۵۸							
58	गुस्से से भर जाता है	और वह	सियाह	उस का चेहरा	हो जाता (पड़ जाता है)	लड़की की	उन में से किसी को
يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ۖ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ							
या	रुस्वाई के साथ	या उस को रखे	खुशख़बरी दी गई जिस की	जो	बुराई	से - सबब	कौम (लोग)
يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۖ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝۵۹ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ							
ईमान नहीं रखते	जो लोग	59	जो वह फैसला करते हैं	बुरा है	याद रखो	मिट्टी में	दवादे (दफ़न करदे)
بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝۶۰							
60	हिक्मत वाला	ग़ालिव	और वह	शान बुलन्द	और अल्लाह के लिए	बुरा	हाल
وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ							
और लेकिन	चलने वाला	कोई	उस (ज़मीन) पर	न छोड़े वह	उन के जुल्म के सबब	लोग	अल्लाह
يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَخِرُونَ							
न पीछे हटेंगे	उन का वक़्त	आगया	फिर जब	मुकर्ररा	एक मुद्दत	तक	वह ढील देता है उन्हें
سَاعَةً ۚ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝۶۱ وَيَجْعَلُونَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ							
और बयान करती हैं	वह अपने लिए नापसन्द करते हैं	जो	अल्लाह के लिए	और वह बनाते (ठहराते) हैं	61	और न आगे बढ़ेंगे	एक घड़ी
السَّيِّئُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۖ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ							
जहन्नम	उन के लिए	कि	लाज़िमी बात	भलाई	उन के लिए	कि	झूट
وَأَنَّهُمْ مُّفْرَطُونَ ۝۶۲ تَاللّٰهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ							
तुम से पहले	उम्मतें	तरफ़	तहकीक़ हम ने भेजे	अल्लाह की कसम	62	आगे भेजे जाएंगे	और बेशक वह
فَرَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمْ الْيَوْمَ وَلَهُمْ							
और उन के लिए	आज	उन का रफ़ीक़	पस वह	उन के आमाल	शैतान	उन के लिए	फिर अच्छा कर दिखाया
عَذَابٍ أَلِيمٌ ۝۶۳ وَمَا أُنْزِلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي							
जो - जिस	उन के लिए	इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो	मगर	किताब	तुम पर	उतारी हम ने	और नहीं
اُخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّلْقَوْمِ يُؤْمِنُونَ ۝۶۴							
64	वह ईमान लाए है	उन लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	उस में	उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया	

ع ١٥

وَاللّٰهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِيْ													और अल्लाह
मैं	वेशक	उस की मौत	बाद	ज़मीन	उस से	फिर जिन्दा किया	पानी	आस्मान	से	उतारा			
ذٰلِكَ لَايَةٌ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُّسْقِيكُم													
हम पिलाते हैं तुम को		अलबत्ता इब्रत	चौपाए	मैं	तुम्हारे लिए	और वेशक	65	वह सुनते हैं	लोगों के लिए	निशानी	उस		
مِمَّا فِيْ بُطُوْنِهِ مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّرْبَيْنِ ﴿٦٦﴾													
66		पीने वालों के लिए	खुशगवार	खालिस	दूध	और खून	गोबर	दरमियान	से	उन के पेट (जमा)	मैं	उस से जो	
وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيْلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا													
और रिज़्क	शराब		उस से	तुम बनाते हो		और अंगूर		खजूर		फल (जमा)	और से		
حَسَنًا إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَايَةٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَأَوْحَى رَبُّكَ إِلَى													
तरफ़ - को	तुम्हारा रब	और इल्हाम किया	67	अक़ल रखते हैं	लोगों के लिए		निशानी	उस	मैं	वेशक	अच्छा		
النَّحْلِ أَنْ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾													
68		छतरियां बनाते हैं	और उस से जो	दरख़्त	और से - में	घर (जमा)	पहाड़ (जमा)	से - में	तू बनाले	कि	शहद की मक्खी		
ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا يَخْرُجُ مِنْ													
से	निकलती है	नर्म ओ हमवार	अपना रब	रस्ते	फिर चल		हर किस्म के फल		से - के	खा	फिर		
بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيْهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ													
इस	मैं	वेशक	लोगों के लिए	शिफा	उस में	उस के रंग	सुख़तलिफ़		पीने की एक चीज़	उन के पेट (जमा)			
لَايَةٌ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّكُم مِّنْكُمْ مَّن													
जो	और तुम में से बाज़	वह मौत देता है तुम्हें	फिर	पैदा किया तुम्हें	और अल्लाह	69	सोचते हैं		लोगों के लिए	निशानियां			
يُرَدُّ إِلَى أَرْدَلِ الْعُمْرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ													
जानने वाला	वेशक अल्लाह	कुछ	इल्म	बाद	वह वे इल्म हो जाए	ताकि	नाकारा - नाकिस उम्र		लौटाया (पहुँचाया) जाता है तरफ़				
قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ فَمَا الَّذِيْنَ													
वह लोग जो	पस नहीं	रिज़्क	मैं	बाज़	पर	तुम में से बाज़		फज़ीलत दी	और अल्लाह	70	कुदरत वाला		
فُضِّلُوْا بِرَأْدِيْ رِزْقِهِمْ عَلَى مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَاءٌ													
बराबर	उस में	पस वह	उन के हाथ	जो मालिक हुए		पर - को	अपना रिज़्क	लौटा देने वाले		फज़ीलत दिए गए			
أَفَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا													
बीवियां		तुम में से		से	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह	71	वह इन्कार करते हैं		अल्लाह	पस क्या नेमत से	
وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُم مِّن													
से	और तुम्हें अ़ता की		और पोते		बेटे	तुम्हारी बीवियां		से	तुम्हारे लिए	और बनाया (पैदा किया)			
الطَّيِّبِ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾													
72	इन्कार करते हैं		वह	और अल्लाह की नेमत			वह मानते हैं		तो क्या वातिल को		पाक चीज़		

और अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को उस की मौत (बन्जर होने) के बाद जिन्दा किया, वेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो सुनते हैं। (65)

और वेशक तुम्हारे लिए चौपाए में (मुकामे) इब्रत है, हम तुम्हें पिलाते हैं दूध खालिस उस से जो गोबर और खून के दरमियान उन के पेट में है, पीने वालों के लिए खुशगवार। (66)

और खजूर और अंगूर के फलों से (रस) तुम उस से शराब बनाते हो, और अच्छा रिज्क (हासिल करते हो) वेशक उस में निशानी है उन लोगों के लिए जो अक्ल रखते हैं। (67)

और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी को इल्हाम किया कि तू पहाड़ों में घर बना ले, और दरख्तों में, और उस जगह जहां वह छतरियां बनाते हैं। (68)

फिर खा हर किस्म के फलों से, फिर अपने रब के नर्म ओ हमवार रसतों पर चल, उन के पेटों से पीने की एक चीज़ निकलती है, (शहद) उस के रंग मुख्तलिफ़ है, उस में लोगों के लिए शिफा है, वेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सोचते हैं। (69)

और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वह तुम्हें मौत देता है, और तुम में से बाज़ को नाकारा उम्र की तरफ़ पहुँचाया जाता है ताकि वह कुछ इल्म के बाद वेइल्म हो जाए, वेशक अल्लाह जानने वाला, कुदरत वाला है। (70)

और अल्लाह ने फज़ीलत दी तुम में से बाज़ को बाज़ पर रिज्क में, पस जिन लोगों को फज़ीलत दी गई वह अपना रिज्क लौटाने (देने वाले) नहीं उन्हें जिन के मालिक उन के हाथ हैं (ममलूकों को) कि वह उस में बराबर हो जाएं, पस क्या वह अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं? (71)

और अल्लाह ने तुम में से तुम्हारे लिए तुम्हारी वीवियां बनाई, और तुम्हारी वीवियों से तुम्हारे लिए पैदा किए बेटे और पोते, और तुम्हें पाक चीज़ें अता की, तो क्या वह वातिल को मानते हैं? और अल्लाह की नेमत का वह इन्कार करते हैं। (72)

और अल्लाह के सिवा उस की परस्तिश करते हैं, जिन्हें इख्तियार नहीं उन के लिए रिज़्क का आस्मानों और ज़मीन से कुछ भी, और न वह कुदरत रखते हैं। (73)

पस तुम चस्यां न करो अल्लाह पर मिसालें, वेशक अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (74)

अल्लाह ने एक मिसाल बयान की (किसी की) मिल्क में आए हुए गुलाम की जो किसी शै पर इख्तियार नहीं रखता, और (दूसरा) वह जिसे हम ने अच्छा रिज़्क दिया सो वह उस से पोशीदा और ज़ाहिर खर्च करता है, क्या वह (दोनों) बराबर है? तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, बल्कि उन में से अक्सर नहीं जानते। (75)

और अल्लाह ने दो आदमियों की एक मिसाल बयान की उन में से एक गूंगा है, वह इख्तियार नहीं रखता किसी शै पर, और वह अपने आका पर बोल है, वह जहां कहीं उसे भेजे वह कोई भलाई न लाए, क्या बराबर है यह और वह? जो अदल का हुक्म देता है, और वह सीधी राह पर है। (76)

और अल्लाह के लिए हैं आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें, और क़ियामत का आना सिर्फ़ ऐसे हैं जैसे आँख का झपकना, या वह उस से भी ज़ियादा क़रीब है, वेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत वाला है। (77)

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों से निकाला तुम कुछ भी न जानते थे, और अल्लाह ने तुम्हारे बनाए कान, और आँखें, और दिल, ताकि तुम शुक्र अदा करो। (78)

क्या उन्होंने ने परिन्दों को नहीं देखा आस्मान की फ़िज़ा में हुक्म के पाबन्द, उन्हें (कोई) नहीं थामता सिवाए अल्लाह के, वेशक उस में ईमान लाने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (79)

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِنْ									
और परस्तिश करते हैं	से	सिवाए	अल्लाह	जो	इख्तियार नहीं	उन के लिए	रिज़्क	से	
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٧٣﴾ فَلَا تَضْرِبُوا									
आस्मानों	और ज़मीन	कुछ	और न वह कुदरत रखते हैं		73	पस न चस्यां करो			
اللَّهُ الْأَمْثَالُ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ									
अल्लाह के लिए	मिसालें	वेशक	अल्लाह	जानता है	और तुम	नहीं जानते	74	बयान किया	
اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ									
अल्लाह	एक मिसाल	एक गुलाम	मिल्क में आया हुआ	वह इख्तियार नहीं रखता	पर	किसी शौ	और जो	हम ने उसे रिज़्क दिया	
مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا هَلْ									
अपनी तरफ़ से	रिज़्क	अच्छा	सो वह	खर्च करता है	उस से	पोशीदा	और ज़ाहिर	क्या	
يَسْتَوْنَ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ وَضَرَبَ									
वह बराबर है	तमाम तारीफ़	अल्लाह के लिए	बल्कि	उन में से अक्सर	नहीं जानते	75	और बयान किया		
اللَّهُ مَثَلًا رَجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ									
अल्लाह	एक मिसाल	दो आदमी	उन में से एक	गूंगा	वह इख्तियार नहीं रखता	किसी शौ पर	और वह		
كُلٌّ عَلَى مَوْلَاهُ أَيْنَمَا يُوَجِّهُهُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ هَلْ يَسْتَوِي									
बोझ	पर	अपना आका	जहां कहीं	वह भेजे उस को	वह न लाए	कोई भलाई	क्या	बराबर	
هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٧٦﴾									
वह - यह	और जो	हुक्म देता है	अदल के साथ	और वह	पर	राह	सीधी	76	
وَاللَّهُ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا									
और अल्लाह के लिए पोशीदा बातें	आस्मानों	और ज़मीन	और नहीं	काम (आना) क़ियामत	मगर (सिर्फ़)				
كَلِمَحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٧٧﴾									
जैसे झपकना आँख	या	वह	उस से भी क़रीब	वेशक अल्लाह	पर	हर शौ	कुदरत वाला	77	
وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا									
और अल्लाह	तुम्हें निकाला	से	पेट (जमा)	तुम्हारी माँ	तुम न जानते थे	कुछ भी			
وَجَعَلَ لَكُمْ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾									
और उस ने बनाया	तुम्हारे लिए	कान	और आँखें	और दिल (जमा)	ताकि तुम	तुम शुक्र अदा करो	78		
أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوْ السَّمَاءِ مَا يُمَسِّكُهُنَّ									
क्या उन्होंने ने नहीं देखा	तरफ़	परिन्दा	हुक्म के पाबन्द	में	आस्मान की फ़िज़ा	नहीं	थामता उन्हें		
إِلَّا اللَّهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٩﴾									
सिवाए	अल्लाह	वेशक	में	उस	निशानियां	लोगों के लिए	ईमान लाते हैं	79	

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُودِ										
खालें	से	तुम्हारे लिए	और बनाया	सुकूनत (रहने) की जगह	तुम्हारे घरों	से	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह	
الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ^٧										
अपना कियाम		और दिन		अपने कूच के दिन		तुम हल्का पाते हो उन्हें		घर (डेर)	चौपाए	
وَمِنْ أَصْوَابِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَا وَمَتَاعًا										
और वरतने की चीज़ें		सामान		और उन के बाल		और उन की पशम		उन की ऊन और से		
إِلَى حَيْنٍ ۝ (٨٠) وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُمْ										
तुम्हारे लिए	और बनाया	साए	उस ने पैदा किया	उस से जो	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह	80	एक वक़्त (मुदत) तक	
مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيَكُمُ الْحَرَّ										
गर्मी	वचाते हैं तुम्हें	कुर्ते		तुम्हारे लिए	और बनाया	पनाह गाहें		पहाड़ों	से	
وَسَرَابِيلَ تَقِيَكُمُ بِأَسْكُمُ كَذَلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ										
तुम पर	अपनी नेमत	वह मुकम्मिल करता है		उसी तरह	तुम्हारी लड़ाई	वचाते हैं तुम्हें		और कुर्ते		
لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ۝ (٨١) فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ										
पहुँचा देना	तुम पर	तो इस के सिवा नहीं		वह फिर जाएं	फिर अगर	81	फरमावरदार बनो		ताकि तुम	
الْمُبِينُ ۝ (٨٢) يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ										
और उन के अक्सर		मुन्किर हो जाते हैं उस के		फिर	अल्लाह	नेमत	वह पहचानते हैं		82	खोल कर (साफ़ साफ़)
الْكُفْرُونَ ۝ (٨٣) وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ										
न इजाज़त दी जाएगी	फिर	एक गवाह	उम्मत	हर	से	हम उठाएंगे	और जिस दिन	83	काफिर (जमा) नाशुक्रें	
لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝ (٨٤) وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ										
वह लोग जो		देखेंगे	और जब	84	उज़र कुबूल किए जाएंगे		और न वह		उन्होंने ने कुफ़ क्या (काफिर)	वह लोग
ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝ (٨٥)										
85	मोहलत दी जाएगी	वह	और न	उन से	फिर न हल्का किया जाएगा		अज़ाब	उन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)		
وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ										
यह है	ऐ हमारे रब	वह कहेंगे		अपने शरीक		उन्होंने ने शिर्क किया (मुशरिक)	वह लोग जो	देखेंगे	और जब	
شُرَكَائُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ فَأَلْقَوْا										
फिर वह डालेंगे		तेरे सिवा		हम पुकारते थे		वह जो कि		हमारे शरीक		
إِلَيْهِمُ الْقَوْلُ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ (٨٦) وَأَلْقُوا إِلَى اللَّهِ										
अल्लाह	तरफ़ (सामने)	और वह डालेंगे		86	अलबत्ता तुम झूटे		वेशक तुम	कौल	उन की तरफ़	
يَوْمَئِذٍ السَّلَامِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ (٨٧)										
87	इफतिरा करते (झूट घड़ते थे)			जो	उन से	और गुम हो जाएगा	आजिज़ी	उस दिन		

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए बनाया तुम्हारे घरों को रहने की जगह, और तुम्हारे लिए चौपाए की खालों से डेर बनाए, जिन्हें तुम हल्का फुलका पाते हो अपने कूच के दिन और अपने कियाम के दिन, और उन की ऊन, और पशम, और उन के बालों से (बनाए) सामान और वरतने की चीज़ें एक मुदते मुक़ररा तक। (80)

और अल्लाह ने जो पैदा किया उस से तुम्हारे लिए साये बनाए, और तुम्हारे लिए बनाई पहाड़ों से पनाह गाहें, और उस ने तुम्हारे लिए कुर्ते बनाए जो तुम्हारे लिए गर्मी का बचाओ हैं और कुर्ते (जिरहें हैं) जो तुम्हारे लिए बचाओ हैं तुम्हारी लड़ाई में, उसी तरह वह तुम पर अपनी नेमत मुकम्मिल करता है ताकि तुम फरमाबरदार बनो। (81)

फिर अगर वह फिर जाएं तो उस के सिवा नहीं कि तुम पर (तुम्हारा ज़िम्मा) सिर्फ़ खोल कर पहुँचा देना है। (82)

वह अल्लाह की नेमत पहचानते हैं, फिर उस के मुन्किर हो जाते हैं, और उन में से अक्सर नाशुक्रें हैं। (83)

और जिस दिन हर उम्मत से हम एक गवाह उठाएंगे फिर न इजाज़त दी जाएगी काफिरों को और न उन से उज़र कुबूल किए जाएंगे। (84)

और (याद करो) जब ज़ालिम अज़ाब देखेंगे फिर न उन से (अज़ाब) हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (85)

और (याद करो) जब मुश्रिक अपने शरीकों को देखेंगे तो वह कहेंगे ऐ हमारे रब! यह हैं हमारे शरीक जिन्हें हम तेरे सिवा पुकारते थे, फिर वह (उन के शरीक) उन की तरफ़ डालेंगे कौल (जवाब देंगे कि) वेशक तुम झूटे हो। (86)

और वह उस दिन अल्लाह के सामने आजिज़ी (का पैगाम) डालेंगे और उन से गुम हो जाएगा (भूल जाएंगे) जो वह झूट घड़ते थे। (87)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह की राह से रोका हम उन के लिए अज़ाब पर अज़ाब बढ़ादेंगे, क्योंकि वह फ़साद करते थे। (88) और जिस दिन हम उठाएंगे हर उम्मत में उन पर उन ही में से एक गवाह, और हम आप (स) को इन सब पर गवाह लाएंगे, और हम ने आप (स) पर कुरआन नाज़िल किया, हर शै का मुफ़ससिल वयान, और हिदायत ओ रहमत, और खुशख़बरी मुसलमानों के लिए। (89)

वेशक अल्लाह अदल ओ एहसान का हुक़्म देता है और रिशतेदारों को (उन के हुक्क) देने का और मना करता है बेहयाई से और नाशाइस्ता कामों से और सरकशी से, तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम ध्यान करो। (90)

और जब तुम (पुख़्ता) अहद करलो तो अल्लाह का अहद पूरा करो, और कस्में पुख़्ता करने के बाद उन को न तोड़ो, और तहकीक़ तुम ने अपने ऊपर अल्लाह को ज़ामिन बनाया है, वेशक अल्लाह जानता है जो तुम करते हो। (91)

और तुम उस औरत की तरह न होजाना जिस ने अपना सूत मज़बूत करने (कातने) के बाद तुकड़े तुकड़े तोड़ डाला, तुम बनाते हो अपनी कस्मों को अपने दरमियान दख़ल देने का बहाना कि एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ग़ालिब आजाए, उस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें आजमाता है, और वह रोज़े क़ियामत तुम पर ज़रूर ज़ाहिर करदेगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (92)

और अगर अल्लाह चाहता तो अलबत्ता तुम्हें एक उम्मत बनादेता, लेकिन वह गुमराह करता है जिस को वह चाहता है, और हिदायत देता है जिस को वह चाहता है, और तुम से उस की वाबत ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम करते थे। (93)

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا						
अज़ाब	हम बढ़ादेंगे	अल्लाह की राह	से	और रोका	उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो
فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا						
पर	अज़ाब	क्योंकि	वह फ़साद करते थे	88	और जिस दिन	हम उठाएंगे
हर उम्मत	एक गवाह	उन पर	उन ही में से	और हम लाएंगे	आप (स) को	गवाह
عَلَى هَؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تَبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ						
इन सब पर	और हम ने नाज़िल की	आप पर	किताब (कुरआन)	(मुफ़ससिल) वयान	हर शै का	
और हिदायत	और रहमत	और खुशख़बरी	मुसलमानों के लिए	89	वेशक अल्लाह	हुक्म देता है
بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَايَ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ						
अदल का	और एहसान	और देना	रिशतेदार	और मना करता है	से	
الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾						
बेहयाई	और नाशाइस्ता	और सरकशी	तुम्हें नसीहत करता है	ताकि तुम	ध्यान करो	90
और पूरा करो	अल्लाह का अहद	जब	तुम अहद करो	और न तोड़ो	कस्में	
بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا إِنَّ اللَّهَ						
बाद	उन को पुख़्ता करना	और तहकीक़ तुम ने बनाया	अल्लाह	अपने ऊपर	ज़ामिन	वेशक अल्लाह
يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا						
जानता है	जो तुम करते हो	91	और तुम न हो जाओ	औरत की तरह	उस ने तोड़ा	अपना सूत
مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ						
बाद	कुव्वत (मज़बूती)	तुकड़े तुकड़े	तुम बनाते हो	अपनी कस्में	दख़ल का बहाना	अपने दरमियान
تَكُونُ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ وَلِيَبَيِّنَنَّ						
हो जाए	एक गिरोह	वह	बड़ा हुआ (ग़ालिब)	से	दूसरा गिरोह	उस के सिवा नहीं है तुम्हें
तुम पर	तुम	तुम थे	उस में	इख़्तिलाफ़ करते थे तुम	92	और अगर अल्लाह चाहता
لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ						
तो अलबत्ता बना देता तुम्हें	एक उम्मत	और लेकिन	गुमराह करता है	जिसे वह चाहता है		
وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَلِئُسَلِّنَ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾						
और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है	और तुम से ज़रूर पूछा जाएगा	उस की वाबत	तुम करते थे	93	

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ					
कोई कदम	कि फिसले	अपने दरमियान	दखल का बहाना	अपनी कस्में	और तुम न बनाओ
بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوَاءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ					
अल्लाह का रास्ता	से	रोका तुम ने	इस लिए कि	बुराई (बवाल)	और तुम चखो अपने जम जाने के बाद
وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (94) وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا					
थोड़ा	मोल	अल्लाह के अहद के बदले	और तुम न लो	94	बड़ा अज़ाब और तुम्हारे लिए
إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ (95) مَا عِنْدَكُمْ					
जो तुम्हारे पास	95	तुम जानो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर वही अल्लाह के हाँ वेशक जो
يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا					
उन्होंने ने सबर किया	वह लोग जो	और हम ज़रूर देंगे	बाकी रहने वाला	अल्लाह के पास	और जो ख़तम हो जाता है
أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (96) مَنْ عَمِلَ صَالِحًا					
कोई नेक	अमल किया	जो - जिस	96	वह करते थे	जो उस से बेहतर उन का अजर
مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً					
पाकीज़ा	ज़िन्दगी	तो हम उसे ज़रूर ज़िंदगी देंगे	मोमिन	जबकि वह	औरत या मर्द हो
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (97) فَإِذَا					
पस जब	97	वह करते थे	जो	उस से बहुत बेहतर	उन का अजर और हम ज़रूर उन्हें देंगे
قَرَأَتِ الْقُرْآنَ فَأَتَعَدُّ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ (98)					
98	मर्दूद	शैतान	से	अल्लाह की	तो पनाह लो कुरआन तुम पढ़ो
إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلٰى رَبِّهِمْ					
और अपने रब पर	ईमान लाए	वह लोग जो	पर	कोई ज़ोर	उस के लिए नहीं वेशक वह
يَتَوَكَّلُونَ (99) إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ					
और वह लोग जो	उस को दोस्त बनाते हैं	वह लोग जो	पर	उस का ज़ोर	इस के सिवा नहीं 99 वह भरोसा करते हैं
هُم بِهِ مُشْرِكُونَ (100) وَإِذَا بَدَّلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ وَاللَّهُ					
और अल्लाह	दूसरा हुक्म	जगह	कोई हुक्म	हम बदलते हैं	और जब 100 शरीक ठहराते हैं उस (अल्लाह) के साथ वह
أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتِرٌ بَلْ أَكْثَرُهُمْ					
उन में अक्सर	बल्कि	तुम घड़ लेते हो	तू	इस के सिवा नहीं	वह कहते हैं वह नाज़िल करता है उस को खूब जानता है
لَا يَعْلَمُونَ (101) قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ					
हक के साथ	तुम्हारा रब	से	रुहुल कुदुस (जिब्राईल अ)	इसे उतारा है	आप (स) कहें 101 इल्म नहीं रखते
لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ (102)					
102	मुसलमानों के लिए	और खुशख़बरी	और हिदायत	ईमान लाए (मोमिन)	वह लोग जो ताकि साबित कदम करे

और अपनी कसमों को न बनाओ अपने दरमियान दखल का बहाना कि कोई कदम अपने जम जाने के बाद फिसल जाए और तुम उस के नतीजे में बवाल चखो कि तुम ने रोका अल्लाह के रास्ते से, और तुम्हारे लिए बड़ा अज़ाब है। (94) और तुम अल्लाह के अहद के बदले न लो थोड़ा मोल (माले दुनिया) वेशक जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाकी रहने वाला है। अगर तुम जानो तो वही तुम्हारे लिए बेहतर है। (95) जो तुम्हारे पास है वह ख़तम होजाता है और जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाकी रहने वाला है। और जिन लोगों ने सबर किया हम ज़रूर उन्हें उन का अजर देंगे उस से बहुत बेहतर जो वह (आमाल) करते थे। (96) जिस ने कोई नेक अमल किया वह मर्द हो या औरत, जब कि हो वह मोमिन, तो हम ज़रूर उसे (दुनिया में) पाकीज़ा ज़िन्दगी देंगे और (आखिरत) में उन का अगर ज़रूर उस से बेहतर देंगे, जो (आमाल) वह करते थे। (97) पस जब तुम कुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह लो शैतान मर्दूद से। (98) वेशक उस का कोई ज़ोर नहीं उन लोगों पर जो ईमान लाए और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (99) इस के सिवा नहीं कि उस का ज़ोर उन लोगों पर है जो उस को दोस्त बनाते हैं और जो लोग अल्लाह के साथ शरीक ठहराते हैं। (100) और जब हम कोई हुक्म किसी दूसरे हुक्म की जगह बदलते हैं, और अल्लाह खूब जानता है जो वह नाज़िल करता है, वह (काफ़िर) कहते हैं इस के सिवा नहीं कि तुम (खुद) घड़ लेते हो, (नहीं) बल्कि उन में अक्सर इल्म नहीं रखते। (101) आप (स) कह दें कि उसे जिब्राइल (अ) अमीन ने तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा है हक के साथ ताकि मोमिनों को साबित कदम रखे, और मुसलमानों के लिए हिदायत ओ खुशख़बरी है। (102)

وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُطْمَئِنَّةً					
मुत्मइन	वेखौफ़	वह थी	एक बस्ती	एक मिसाल	और बयान की अल्लाह ने
يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ					
नेमतों से	फिर उस ने नाशुक्री की	हर जगह	से	बाफरागत	उस का रिज़्क
اللَّهُ فَادَّاقَهَا اللَّهُ لِبَاسِ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا					
उस के बदले जो	और खौफ़	भूक	लिबास	अल्लाह	तो चखाया उस को
كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ					
सो उन्होंने ने उसे झुटलाया	उन में से	एक रसूल	और वेशक उन के पास आया	112	वह करते थे
فَاخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٣﴾ فَكُلُوا مِمَّا					
उस से जो	पस तुम खाओ	113	ज़ालिम (जमा)	और वह	अज़ाब
رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِنَّ					
अगर	अल्लाह की नेमत	और शुक्र करो	पाक	हलाल	तुम्हें दिया अल्लाह ने
كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١١٤﴾ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ					
मुर्दार	तुम पर	हराम किया	इस के सिवा नहीं	114	तुम इबादत करते हो
وَالْدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أَهَلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ					
पस जो	उस पर	अल्लाह के अलावा	पुकारा जाए	और जो	और खिनज़ीर का गोश्त
اضْطَرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٥﴾					
115	निहायत मेहरबान	बख़शने वाला	तो वेशक अल्लाह	और न हद से बढ़ने वाला	न सरकशी करने वाला
وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَذَا					
यह	झूट	तुम्हारी ज़बानें	बयान करती है	वह जो	और तुम न कहो
حَلَالٌ وَهَذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ إِنَّ					
वेशक	झूट	अल्लाह	पर	कि बुहतान बान्धो	हराम
الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٦﴾					
116	फ़लाह न पाएंगे	झूट	अल्लाह	पर	बुहतान बान्धते हैं
مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى					
और पर	117	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए	थोड़ा
الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ					
इस से कब्ल	तुम पर (से)	जो हम ने बयान किया	हम ने हराम किया	जो लोग यहूदी हुए (यहूदी)	
وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾					
118	जुल्म करते	अपने ऊपर	वह थे	बल्कि	और नहीं हम ने जुल्म किया उन पर

और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की, वह मुत्मइन वेखौफ़ थी, हर जगह से उस के पास रिज़्क बाफरागत आ जाता था, फिर उस ने नाशुक्री की, अल्लाह की नेमतों की, तो अल्लाह ने उस के बदले जो वह करते थे उसको भूक और खौफ़ के लिबास का मज़ा चखाया (भूक और खौफ़ उनका लिबादा बन गया)। (112) और वेशक उन के पास उन ही में से एक रसूल आया, सो उन्होंने ने उसे झुटलाया, तो अज़ाब ने उन्हें आ पकड़ा और वह ज़ालिम थे। (113) पस जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाक खाओ, और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो, अगर तुम उस की इबादत करते हो। (114) उस के सिवा नहीं कि अल्लाह ने तुम पर हराम किया है मुर्दार और खून, और खिनज़ीर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के अलावा (किसी और) का नाम पुकारा जाए, पस जो लाचार हो जाए न सरकशी करने वाला हो, और न हद से बढ़ने वाला तो वेशक अल्लाह बख़शने वाला निहायत मेहरबान है। (115) और न कहो तुम वह जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं कि यह हलाल है और यह हराम, कि तुम अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धो, वेशक जो लोग अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धते हैं वह फ़लाह (दो ज़हान में कामयाबी) न पाएंगे। (116) (उन के लिए) फ़ाइदा थोड़ा है, और उन के लिए अज़ाब दर्दनाक है। (117) और यहूदियों पर हम ने हराम किया था जो उस से कब्ल हम ने तुम से बयान किया है, और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वह अपने ऊपर जुल्म करते थे। (118)

फिर वेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने ने नादानी से बुरे अमल किए, फिर उस के बाद उन्होंने ने तौबा की और इसलाह कर ली, वेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख्शने वाला, निहायत मेहरवान है। (119)

वेशक इब्राहीम (अ) इमाम थे, अल्लाह के फरमावरदार, यक रख (सब को छोड़ कर एक अल्लाह के हो रहने वाले) और वह मुश्रिकों में से न थे, (120)

उस की नेमतों के शुक्रगुज़ार, उस (अल्लाह ने) उन्हें चुन लिया, और उन की रहनुमाई की सीधी राह की तरफ। (121)

और हम ने उन्हें दुनिया में भलाई दी, और वेशक वह आखिरत में नेकोकारों में से है, (122)

फिर हम ने तुम्हारी तरफ वहि भेजी कि हर एक से जुदा हो रहने वाले (यक रख) इब्राहीम (अ) की पैरवी करो और वह मुश्रिकों में से न थे। (123)

इस के सिवा नहीं कि हफ़ता उन लोगों पर (अज़मत का दिन) मुकर्रर किया गया जिन्होंने ने उस में इख़्तिलाफ़ किया था, और वेशक तुम्हारा रब अलबत्ता क़ियामत के दिन उन के दरमियान उस (बात) में फ़ैसला कर देगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (124)

तुम अपने रब के रास्ते की तरफ बुलाओ दानाई से, और अच्छी नसीहत से, और उन से ऐसे वहस करो जो सब से बेहतर हो, वेशक तुम्हारा रब उस को खूब जानने वाला है जो अल्लाह के रास्ते से गुमराह हुआ, और वह राह पाने वालों को खूब जानने वाला है। (125)

और अगर तुम तकलीफ़ दो तो ऐसी ही तकलीफ़ दो, जैसी तुम्हें तकलीफ़ दी गई थी, और अगर तुम सब्र करो तो यह सब्र करने वालों के लिए बेहतर है। (126)

और सब्र करो और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की मदद से है। और गुम न खाओ उन पर, और वह जो फ़रेब करते हैं उस से तंगी में (दिल तंग) न हो। (127)

वेशक अल्लाह उन लोगो के साथ है जिन्होंने ने परहेज़गारी की, और वह लोग जो नेकोकार हैं। (128)

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا الشُّوْءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا									
उन्होंने ने तौबा की	फिर	नादानी से	बुरे	अमल किए	उन लोगों के लिए जो	तुम्हारा रब	वेशक	फिर	
مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ (119)									
119	निहायत मेहरवान	बख़्शने वाला	उस के बाद	तुम्हारा रब	वेशक	और उन्होंने ने इसलाह की	उस के बाद		
إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ									
से	और न थे	यक रख	अल्लाह के	फरमावरदार	एक जमाअत (इमाम)	थे	इब्राहीम (अ)	वेशक	
الْمُشْرِكِينَ (120) شَاكِرًا لِّأَنْعَمِهِ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (121)									
121	सीधी राह	तरफ	और उस की रहनुमाई की	उस ने उसे चुन लिया	उस की नेमतों के लिए	शुक्र गुज़ार	120	मुश्रिक (जमा)	
وَاتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ									
अलबत्ता - से	आखिरत में		और वेशक वह	भलाई	दुनिया में		और उस को दी हम ने		
الضَّالِّحِينَ (122) ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا									
यक रख	इब्राहीम (अ)	दीन	पैरवी करो तुम	कि	तुम्हारी तरफ	वहि भेजी हम ने	फिर	122	नेकोकार (जमा)
وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ (123) إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ									
वह लोग जो	पर	हफ़ते का दिन	मुकर्रर किया गया	उस के सिवा नहीं	123	मुश्रिक (जमा)	से	और न थे वह	
اِخْتَلَفُوا فِيهِ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا									
उस में जो	रोज़े क़ियामत		उन के दरमियान	अलबत्ता फ़ैसला करेगा	तुम्हारा रब	और वेशक	उस में	उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया	
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ (124) أَدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ									
हिक्मत (दानाई) से	अपना रब	रास्ता	तरफ	तुम बुलाओ	124	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	
وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ									
वेशक	सब से बेहतर	वह	ऐसे जो	और वहस करो उन से		अच्छी	और नसीहत		
رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ (125)									
125	राह पाने वालों को	खूब जानने वाला	और वह	उस का रास्ता	से	गुमराह हुआ	उस को जो	खूब जानने वाला वह	तुम्हारा रब
وَأَنْ عَاقِبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ وَلَئِنْ									
और अगर	उस से	जो तुम्हें तकलीफ़ दी गई		ऐसी ही	तो उन्हें तकलीफ़ दो		तुम तकलीफ़ दो	और अगर	
صَبْرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ (126) وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ									
अल्लाह की मदद से	मगर	तुम्हारा सब्र	और नहीं	और सब्र करो	126	सब्र करने वालों के लिए	बेहतर	तो वह	तुम सब्र करो
وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ (127)									
127	वह फरेब करते हैं	उस से जो	तंगी	में	और न हो	उन पर	और गुम न खाओ		
إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ (128)									
128	नेकोकार (जमा)	वह	और वह लोग जो	उन्होंने ने परहेज़गारी की	वह लोग जो	साथ	वेशक अल्लाह		

१५
१६
१७

१८
१९
२०

آيَاتُهَا ۱۱۱ ﴿۱۷﴾ سُورَةُ بَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿۱۲﴾ زُكُوعَاتُهَا ۱۲							
12 रकुआत				(17) सूरह बनी इस्राईल औलादे याकूब (अ)		आयात 111	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
سُبْحَنَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ							
पाक	वह जो	ले गया	अपने बन्दे को	रातों रात	से	मस्जिद	
الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنَ							
हराम	तक	मस्जिदे अक़सा	जिस को	बरकत दी हम ने	उस के इर्द गिर्द	ताकि दिखा दें हम उसको	से
أَيُّنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿١﴾ وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ							
अपनी निशानियां	वेशक वह	वह	सुनने वाला	देखने वाला	1	और हम ने दी	मूसा
وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ إِلَّا تَتَّخِذُوا مِنْ دُونِي وَكِيلًا ﴿٢﴾							
और हम ने बनाया उसे	हिदायत	बनी इस्राईल के लिए	कि न ठहराओ तुम	मेरे सिवा	कारसाज़	2	
ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ﴿٣﴾							
औलाद	जो - जिस	हम ने सवार किया	नूह (अ) के साथ	वेशक वह	था	बन्दा	शुक्र गुज़ार
وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ فِي الْكِتَابِ لُتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ							
साफ़ कह दिया हम ने	तरफ - को	बनी इस्राईल	किताब	अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़रूर	में	ज़मीन	
مَرَّتَيْنِ وَلْتَعْلَنَّ غُلُوبًا كَبِيرًا ﴿٤﴾ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَهُمَا بَعَثْنَا							
दो मरतबा	और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे	बड़ा ज़ोर	4	पस जब	आया	वादा	दो में से पहला
عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَا أُولَىٰ بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ							
तुम पर	अपने बन्दे	लड़ाई वाले	सख़्त	तो वह घुस पड़े	शहरों के अन्दर		
وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ﴿٥﴾ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ							
और था	एक वादा	पूरा होने वाला	5	फिर	हम ने फेर दी	तुम्हारे लिए	बारी
وَأَمَدَدْنَكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ﴿٦﴾							
और हम ने तुम्हें मदद दी	मालों से	और बेटे	और हम ने तुम्हें कर दिया	ज़ियादा	जत्था (लशकर)	6	
إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنُتُمْ لَأَنْفُسِكُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا							
अगर	तुम ने भलाई की	तुम ने भलाई की	तुम ने भलाई की	अपनी जानों के लिए	और अगर	तुम ने बुराई की	तो उन के लिए
فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءَ وَجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا							
फिर जब	आया	दूसरा वादा	कि वह बिगाड़ दें	तुम्हारे चहरे	और वह घुस जाएं		
الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ﴿٧﴾							
मस्जिद	जैसे	वह घुसे उस में	पहली बार	और बरबाद कर डालें	जहां गल्ट्वा पाएं वह	पूरी तरह बरबाद	7

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है पाक है वह, जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम (खाना क़अबा से) मस्जिदे अक़सा (बैतुल मुक़द़स) तक जिस के इर्द गिर्द (अतराफ़) को हम ने बरकत दी है, ताकि हम उसे अपनी निशानियां दिखा दें, वेशक वह सुनने वाला देखने वाला है। (1)

और हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि तुम मेरे सिवा (किसी को) कारसाज़ न ठहराओ। (2)

ऐ (उन लोगों कि) औलाद! जिन को हम ने नूह (अ) के साथ सवार किया, वेशक वह शुक्रगुज़ार बन्दा था। (3)

और हम ने बनी इस्राईल को किताब में साफ़ कह सुनाया, अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़मीन में दो मरतबा और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे (सरकशी करोगे)। (4)

पस जब दोनों में से पहले वादे (का वक़्त) आया तो हम ने तुम पर अपने सख़्त लड़ाई वाले बन्दे भेजे, वह शहरों के अन्दर घुस गए (फैल गए), और यह एक वादा था पूरा हो कर रहने वाला। (5)

फिर हम ने उन पर तुम्हारी बारी फेर दी (तुम्हें गल्ट्वा दिया) और मालों से और बेटों से हम ने तुम्हें मदद दी और हम ने तुम्हें बड़ा जत्था (लशकर) कर दिया। (6)

अगर तुम ने भलाई की तो अपनी जानों के लिए, और अगर तुम ने बुराई की तो उन (अपनी जानों) के लिए, फिर (याद करो) जब दूसरे वादे (का वक़्त) आया कि वह (दुश्मन) तुम्हारे चहरे बिगाड़ दें, और वह मस्जिदे (अक़सा) में घुस जाएं जैसे वह पहली बार घुसे थे, और यह कि जहां गल्ट्वा पाएं, पूरी तरह बरबाद कर डालें। (7)

उम्मीद है (बईद नहीं) कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करे और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम (भी) वही करेंगे और हम ने जहननम काफ़िरों के लिए कैद खाना बनाया है। (8) वेशक यह कुरआन उस राह की रहनुमाई करता है जो सब से सीधी है। और उन मोमिनों को बशारत देता है जो अच्छे अमल करते हैं कि उन के लिए बड़ा अजर है। (9) और यह कि जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिए तैयार किया है अज़ाब दर्दनाक। (10) और इन्सान बुराई की दुआ करता है, जैसे वह भलाई की दुआ करता है, और इन्सान जल्द बाज़ है। (11) और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया, फिर हम ने रात की निशानी को मिटा दिया (मान्द कर दिया) और हम ने दिन की निशानी को दिखाने वाली बनाया ताकि तुम अपने रब का फ़ज़ल (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि बरसों की गिनती और हिसाब मालूम करो और हर चीज़ को हम ने उसे तफ़्सील के साथ बयान कर दिया है। (12) और हम ने हर इन्सान की किस्मत उस की गर्दन में लटका दी, और हम उस के लिए निकालेंगे रोज़े कियामत एक किताब, वह उसे खुला हुआ पाएगा। (13) अपना नामा-ए-आमाल पढ़ ले, आज तू खुद अपने ऊपर काफ़ी है हिसाब लेने वाला (मोहतसिब)। (14) जिस ने हिदायत पाई उस ने सिर्फ़ अपने लिए हिदायत पाई, और जो कोई गुमराह हुआ तो वह गुमराह हुआ सिर्फ़ अपने बुरे को, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता, और जब तक हम कोई रसूल न भेजें हम अज़ाब देने वाले नहीं। (15) और जब हम ने किसी बस्ती को हलाक करना चाहा तो हम ने उस के खुश हाल लोगों को हुक्म भेजा तो उन्होंने ने उस में नाफ़रमानी की फिर उन पर पूरी हो गई बात (हुक्म साबित हो गया) फिर हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर दिया। (16) और हम ने नूह (अ) के बाद कितनी ही बस्तियां हलाक कर दीं और तेरा रब काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों की खबर रखने वाला देखने वाला। (17)

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُمۥۚ وَإِنْ عُدتُّمْ عُدْنَاۚ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ								
उम्मीद है	तुम्हारा रब	कि	वह तुम पर रहम करे	और अगर	तुम फिर (वही) करोगे	हम वही करेंगे	और हम ने बनाया	जहननम
لِّلْكَافِرِينَۖ حَصِيرًا ﴿٨﴾ إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ								
काफ़िरों के लिए	कैद खाना	8	वेशक	यह कुरआन	रहनुमाई करता है	उस के लिए जो	वह	सब से सीधी
وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ﴿٩﴾								
और बशारत देता है	मोमिन (जमा)	वह लोग जो	अमल करते हैं	अच्छे	कि	उन के लिए	वड़ा अजर	9
وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٠﴾								
और यह कि	जो लोग	ईमान नहीं लाते	आखिरत पर	हम ने तैयार किया	उन के लिए	अज़ाब	दर्दनाक	10
وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ﴿١١﴾								
और दुआ करता है	इन्सान	बुराई की	उस की दुआ	भलाई की	और है	इन्सान	जल्द बाज़	11
وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِۖ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ								
और हम ने बनाया	रात	और दिन	दो निशानियां	फिर हम ने मिटा दिया	रात की निशानी	और हम ने बनाया	दिन की निशानी	
مُبْصِرَةًۖ لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ								
दिखाने वाली	ताकि तुम तलाश करो	फ़ज़ल	अपने रब से (का)	और ताकि तुम मालूम करो	गिनती	बरस (जमा)		
وَالْحِسَابِۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ﴿١٢﴾ وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ								
और हिसाब	और हर चीज़	हम ने बयान किया है	तफ़्सील के साथ	12	और हर इन्सान	उसको लगा दी (लटका दी)		
طَبْرَهُۥ فِي عُنُقِهِۦ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ﴿١٣﴾								
इस की किस्मत	उसकी गर्दन में	और हम निकालेंगे	उस के लिए	रोज़े कियामत	एक किताब	और उसे पाएगा	खुला हुआ	13
إِفْرًاۚ كِتَابُكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾ مَن اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا								
पढ़ ले	अपना किताब (नामा-ए-आमाल)	काफ़ी है	तू खुद	आज	अपने ऊपर	हिसाब लेने वाला	14	जिस
يَهْتَدِيَ لِنَفْسِهِۦۖ وَمَن ضَلَّٰ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَاۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ								
उस ने हिदायत पाई	अपने लिए	और जो	गुमराह हुआ	तो सिर्फ़	गुमराह हुआ	अपने ऊपर (अपने बुरे को)	और बोझ नहीं उठाता	कोई उठाने वाला
وَزَرٌۭ أُخْرَىٰۖ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴿١٥﴾ وَإِذَا أَرَدْنَا								
दूसरे का बोझ	और हम नहीं	अज़ाब देने वाले	जब तक	हम (न) भेजे	कोई रसूल	15	और जब	हम ने चाहा
أَنْ تُهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا								
कि हम हलाक करें	कोई बस्ती	हम ने हुक्म भेजा	इस के खुश हाल लोग	तो उन्होंने ने नाफ़रमानी की	उस में	फिर पूरी हो गई	उन पर	
الْقَوْلِۖ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ﴿١٦﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنۢ بَعْدِ								
बात	हम ने हलाक किया	फिर हम ने उन्हें हलाक	16	और कितनी	हम ने हलाक कर दी	से	बस्तियां	बाद
نُوحٍۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبٍۭ عَبَادِهِۖ خَبِيرًاۚ بَصِيرًا ﴿١٧﴾								
नूह (अ)	और काफ़ी	तेरा रब	गुनाहों को	अपने बन्दे	खबर रखने वाला	देखने वाला	17	

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا									
जो कोई	चाहता है	जल्दी	हम जल्दी दे देंगे	उस को इस (दुनिया) में	जितना हम चाहें	जिस को	हम चाहें	फिर	हम ने बना दिया है
لَهُ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا مَّدْحُورًا ﴿١٨﴾ وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا									
उस के लिए	जहन्नम	वह दाखिल होगा इस में	मज़्मूमत किया हुआ	दूर किया हुआ (धकेला हुआ)	18	जो और	चाहे	आखिरत	और कोशिश की उस ने
سَعِيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعِيَهُمْ مَّشْكُورًا ﴿١٩﴾ كَلَّا نُمَدِّهُ هُوَ لَا									
उस की सी कोशिश	और (वशर्त यह कि) हो वह मोमिन	पस यही लोग	है - हुई	उन की कोशिश	कद्र की हुई (मकबूल)	19	हर एक	हम देते हैं	इन को भी
وَهُوَ لَا يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا									
और उन को भी	से	बख्शिश	तेरा रब	और नहीं है	बख्शिश	तेरा रब	रोकी जाने वाली	20	देखो
فَصَلَّاهُ عَلَىٰ بَعْضٍ وَلِلْآخِرَةِ أَكْبَرُ دَرَجَتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ﴿٢١﴾									
हम ने फज़ीलत दी	उन के बाज़ (एक)	पर	बाज़ (दूसरा)	और अलबत्ता आखिरत	सब से बड़े दरजे	सब से बरतर	और सब से बरतर	21	फज़ीलत में
لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَّخْذُومًا ﴿٢٢﴾ وَقَضَىٰ رَبُّكَ									
तू न ठहरा	अल्लाह के साथ	कोई दूसरा माबूद	पस तू बैठ रहेगा	मज़्मूमत किया हुआ	बेबस हो कर	22	और हुक्म फ़रमा दिया	तेरा रब	और हुक्म फ़रमा दिया
أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ إِنَّمَا يُبَلِّغَنَّ عَنْكَ الْكِبَرُ									
कि न इबादत करो	उस के सिवा	और माँ बाप से	हस्ते सुलूक	अगर वह पहुँच जाएं	तेरे सामने	बुढ़ापा			
أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أَمْرٌ وَلَا تَنْهَرُهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا									
उन में से एक	या	वह दोनों	तो न कह	उन्हें	उफ़	और न झिड़को उन्हें	और कही	उन दोनों से	बात
كَرِيمًا ﴿٢٣﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا									
अदब के साथ	23	और झुका दे	उन दोनों के लिए	बाजू	आजिज़ी	से	मेहरबानी	और कही	ऐ मेरे रब
كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ﴿٢٤﴾ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۖ إِنَّ تَكُونُوا صَالِحِينَ									
जैसे	उन्होंने ने मेरी पर्वरिश की	वचपन	24	तुम्हारा रब	खूब जानता है	जो	तुम्हारे दिलों में	अगर	तुम होगे
فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ﴿٢٥﴾ وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ									
तो वेशक वह	है	रुज़्ज करने वालों के लिए	बढ़ाने वाला	25	और दो तुम	करावतदार	उस का हक्	और मस्कीन	और मस्कीन
وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ									
और मुसाफ़िर	और न फुज़ूल खर्ची करो	अन्धा धुन्द	26	वेशक	फुज़ूल खर्च (जमा)	है	भाई (जमा)		
الشَّيْطَانِ ۚ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ﴿٢٧﴾ وَأَمَّا تَعْرِضْنَ عَنْهُمْ									
शैतान (जमा)	और है	शैतान	अपने रब का	नाशुक्रा	27	और अगर	तू मुँह फेर ले	उन से	इन्तिज़ार में
رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿٢٨﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ									
रहमत	से	अपना रब	तू उस की उम्मीद रखता है	तो कह	उन से	नर्म की बात	28	और न रख	अपना हाथ
مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسِطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾									
बन्धा हुआ	तक - से	अपनी गर्दन	और न उसे खोल	पूरी तरह खोलना	फिर तू बैठा रह जाए	मलामत ज़दा	थका हुआ	29	थका हुआ

जो कोई जल्दी (दुनिया में) चाहता है, हम उस को जितना चाहे जल्दी (दुनिया में) दे देंगे, फिर हम ने उस के लिए जहन्नम बना दिया है, वह उस में दाखिल होगा मज़्मूमत किया हुआ धकेला हुआ। (18)

और जो कोई आखिरत चाहे और उस के लिए उस की सी कोशिश करे, वशर्त यह कि वह मोमिन हो, पस यही लोग हैं जिन की कोशिश मकबूल हुई। (19)

हम तेरे रब की बख्शिश से उन को भी और उन को भी हर एक को देते हैं और तेरे रब की बख्शिश (किसी पर) रोकी जाने वाली नहीं। (20)

देखो! हम ने किस तरह उन के एक को दूसरे पर फज़ीलत दी और अलबत्ता आखिरत के दरजे सब से बड़े, और फज़ीलत में सब से बरतर है। (21)

अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद न ठहरा पस तू बैठ रहेगा मज़्मूमत किया हुआ, बेबस हो कर। (22)

और तेरे रब ने हुक्म फ़रमा दिया कि उस के सिवा किसी और की इबादत न करो, और माँ बाप से हस्ते सुलूक करो, और उन में से एक या वह दोनों तेरे सामने बुढ़ापा को पहुँच जाएं तो उन्हें न कहो उफ़ (भी) और उन्हें न झिड़को, और उन दोनों से अदब के साथ बात कहो (करो)। (23)

और उन के लिए आजिज़ी के (साथ) बाजू झुका दो मेहरबानी से, और कही ऐ मेरे रब! उन दोनों पर रहम फ़रमा जैसे उन्होंने ने वचपन में मेरी पर्वरिश की। (24)

तुम्हारा रब खूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, अगर तुम नेक होगे तो वेशक वह रुज़्ज करने वालों को बढ़ाने वाला है। (25)

और दो तुम करावतदार को उस का हक़, और मस्कीन और मुसाफ़िर को, और अन्धा धुन्द फुज़ूल खर्ची न करो। (26)

वेशक फुज़ूल खर्च शैतानों के भाई है और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है। (27)

और अगर तू अपने रब की रहमत (फराख़ दस्ती) के इन्तिज़ार में, जिस की तू उम्मीद रखता है, उन से मुँह फेर ले तो उन से तू कह दिया कर नर्म की बात। (28)

और अपना हाथ अपनी गर्दन तक बन्धा हुआ न रख (कन्जूस न हो जा) और न उसे खोल पूरी तरह (विलकुल ही) कि फिर तू मलामत ज़दा थका हारा बैठा रह जाए। (29)

वेशक तेरा रब जिस का वह चाहता है रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है और (जिस का चाहता है) तंग कर देता है, वेशक वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। (30) और तुम अपनी औलाद को मुफ़लिसी के डर से क़त्ल न करो, हम ही उन्हें रिज़्क़ देते हैं और तुम को (भी), वेशक उन का क़त्ल बड़ा गुनाह है। (31) और ज़िना के करीब न जाओ, वेशक यह बेहयाई है और बुरा रास्ता। (32) और उस जान को क़त्ल न करो जिसे (क़त्ल करना) अल्लाह ने ह़राम किया है मगर हक़ के साथ, और जो मज़लूम मारा गया तो तहकीक़ हम ने उस के वारिस के लिए एक इख़्तियार (क़िसास) दिया है, पस हद से न बढ़े क़त्ल में, वेशक वह मदद दिया गया है। (33) और यतीम के माल के पास न जाओ (तसर्हफ़) न करो) मगर इस तरीक़े से जो सब से बेहतर हो, यहां तक कि वह (यतीम) अपनी ज़वानी को पहुँच जाए। और अ़हद को पूरा करो, वेशक अ़हद है पुर्सिश किया जाने वाला (ज़रूर पुर्सिश होगी)। (34) और जब तुम माप कर दो तो पैमाना पूरा करो, और वज़न करो सीधी तराजू के साथ, यह बेहतर है और सब से अच्छा है अन्जाम के ऐतिवार से। (35) और उस के पीछे न पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं, वेशक कान, और आँख, और दिल, उन में से हर एक पुर्सिश किया जाने वाला है (हर एक की पुर्सिश होगी)। (36) और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, वेशक तू ज़मीन को हरगिज़ न चीर डालेगा, और न पहाड़ की बुलन्दी को पहुँचेगा। (37) यह तमाम बुराइयां तेरे रब के नज़्दीक नापसन्दीदा हैं। (38) यह हिक्मत की (उन बातों) में से है जो तेरे रब ने तेरी तरफ़ वहि की है, और न बना अल्लाह के साथ कोई और माबूद कि फिर तु जहन्नम में डाल दिया जाए मलामत ज़दा, धकेला हुआ (रान्दा-ए-दरगाह)। (39) क्या तुम्हें चुन लिया तुम्हारे रब ने बेटों के लिए? और अपने लिए फ़रिशतों को बेटियां बना लिया, वेशक तुम बड़ा बोल बोलते हो। (40)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ									
अपने बन्दों से	है	वेशक वह	और तंग कर देता है	जिस की वह चाहता है	रोज़ी	फ़राख़ कर देता है	तेरा रब	वेशक	
خَبِيرًا بَصِيرًا (٣٠) وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةً إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ									
हम रिज़्क़ देते हैं उन्हें	हम	मुफ़लिसी	डर	अपनी औलाद	और न क़त्ल करो	30	देखने वाला	ख़बर रखने वाला	
وَأَيَّاكُمْ إِنْ قَتَلْتُمْ كَانَ خَطَاً كَبِيرًا (٣١) وَلَا تَقْرُبُوا الزَّوْنِي إِنَّهُ كَانَ									
है	वेशक यह	ज़िना	और न करीब जाओ	31	गुनाह बड़ा	है	उन का क़त्ल	वेशक	और तुम को
فَاحْشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا (٣٢) وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا									
मगर	अल्लाह ने ह़राम किया	वह जो कि	जान	और न क़त्ल करो	32	रास्ता	और बुरा	बेहयाई	
بِالْحَقِّ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيهِ سُلْطَانًا فَلَا يُسْرِفُ									
पस वह हद से न बढ़े	एक इख़्तियार	इस के वारिस के लिए	तो तहकीक़ हम ने कर दिया	मज़लूम	मारा गया	और जो	हक़ के साथ		
فِي الْقَتْلِ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا (٣٣) وَلَا تَقْرُبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي									
इस तरीक़े से	मगर	यतीम का माल	और पास न जाओ	33	मदद दिया गया	है	वेशक वह	क़त्ल में	
هِيَ أَحْسَنُ حَتَّى يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ									
है	अ़हद	वेशक	अ़हद को	और पूरा करो	अपनी ज़वानी	वह पहुँच जाए	यहां तक कि	सब से बेहतर	वह
مَسْئُولًا (٣٤) وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كَلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ									
सीधी	तराजू के साथ	और वज़न करो	जब तुम माप कर दो	पैमाना	और पूरा करो	34	पुर्सिश किया जाने वाला		
ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا (٣٥) وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ									
वेशक	इल्म	उस का	तेरे लिए- तुझे	जिस का नहीं	और पीछे न पड़ तू	35	अन्जाम के ऐतिवार से	और सब से अच्छा	बेहतर यह
السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا (٣٦)									
36	पुर्सिश किया जाने वाला	इस से	है	यह	हर एक	और दिल	और आँख	कान	
وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ									
पहाड़	और हरगिज़ न पहुँचेगा	ज़मीन	हरगिज़ न चीर डालेगा	वेशक तू	अकड़ कर (इतराता हुआ)	ज़मीन में	और न चल		
طُولًا (٣٧) كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا (٣٨) ذَلِكَ مِمَّا									
उस से जो	यह	38	नापसन्दीदा	तेरा रब	नज़्दीक	उस की बुराई	है	यह	तमाम
أَوْحَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ									
कोई और	माबूद	अल्लाह के साथ	बना	और न	हिक्मत से	तेरा रब	तेरी तरफ़	वहि की	
فَتُلْفَى فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَدْحُورًا (٣٩) أَفَأَصْفُكُمْ رَبُّكُم بِالْبَنِينَ									
बेटों के लिए	तुम्हारा रब	क्या तुम्हें चुन लिया	39	धकेला हुआ	मलामत ज़दा	जहन्नम में	फिर तू डाल दिया जाए		
وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا (٤٠)									
40	बड़ा बोल	अलबत्ता कहते हो (बोलते हो)	वेशक तुम	बेटियां	फ़रिशते	से - को	और बना लिया		

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤١﴾ قُلْ									
कह दें आप (स)	41	नफ़रत	मगर	बढ़ती उन को	और नहीं	ताकि वह नसीहत पकड़ें	इस कुरआन	में	और अलवत्ता हम ने तरह तरह से बयान किया
لَوْ كَانَ مَعَهُ إِلَهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذَا لَا بُتَغُوا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾									
42	कोई रास्ता	अर्श वाले	तरफ़	वह ज़रूर दूँडते	उस सूरत में	वह कहते हैं	जैसे	और माबूद	उस के साथ अगर होते
سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤٣﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمُوتُ السَّبْعُ									
सात (7)	आस्मान (जमा)	उस की	पाकीज़गी बयान करते हैं	43	बहुत बड़ा (बेनिहायत)	वरतर	वह कहते हैं	उस से जो	और वरतर वह पाक है
وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ									
और लेकिन	उस की हम्द के साथ	पाकीज़गी बयान करती है	मगर	कोई चीज़	और नहीं	उन में	और जो	और ज़मीन	
لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ									
कुरआन	तुम पढ़ते हो	और जब	44	बढ़शने वाला	वर्दबार	है	बेशक वह	उन की तस्वीह	तुम नहीं समझते
جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿٤٥﴾									
45	छुपा हुआ	एक पर्दा	आखिरत पर	ईमान नहीं लाते	वह लोग जो	और दरमियान	तुम्हारे दरमियान	हम कर देते हैं	
وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِذَا									
और जब	गिरानी	उन के कान	और में	वह न समझें उसे	कि	पर्दे	उन के दिल	पर	और हम ने डाल दिए
ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْبُرْجِ نَفُورًا ﴿٤٦﴾ نَحْنُ									
हम	46	नफ़रत करते हुए	अपनी पीठ (जमा)	पर	वह भागते हैं	यकता	कुरआन में	अपना रब	तुम ज़िक्र करते हो
أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ									
जब कहते हैं	सरगोशी करते हैं	वह	और जब	तेरी तरफ़	जब वह कान लगाते हैं	उस को	वह सुनते हैं	जिस गर्ज से	खुब जानते हैं
الظَّالِمُونَ إِنَّ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٤٧﴾ أَنْظِرْ كَيْفَ ضَرَبُوا									
कैसी उन्होंने ने चप्पा की	तुम देखो	47	सिहरज़दा	एक आदमी	मगर	तुम पैरवी करते	नहीं	ज़ालिम (जमा)	
لَكَ الْأَمْثَالُ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٤٨﴾ وَقَالُوا إِذَا كُنَّا									
हम हो गए	क्या - जब	और वह कहते हैं	48	(सीधी) राह	पस वह इस्तिताअत नहीं पाते	सो वह गुमराह हो गए	मिसालें	तुम्हारे लिए	
عِظَامًا وَرُفَاتًا ؕ إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٤٩﴾ قُلْ كُونُوا حِجَارَةً									
पत्थर	तुम हो जाओ	कह दें	49	नई	पैदाइश	फिर जी उठेंगे	क्या हम यकीनन	और रेज़ा रेज़ा	हड्डियां
أَوْ حَدِيدًا ﴿٥٠﴾ أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ ۖ فَسَيَقُولُونَ مَنْ									
कौन	फिर अब कहेंगे	तुम्हारे सीने (खयाल)	में	बड़ी हो	उस से जो	और मख़लूक	या	50	लोहा
يُعِيدُنَا ۖ قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ									
तुम्हारी तरफ़	तो वह हिलाएंगे (मटकाएंगे)	वार	पहली	तुम्हें पैदा किया	वह जिस ने	फ़रमा दें	हमे लौटाएगा		
رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هُوَ ۖ قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ﴿٥١﴾									
51	करीब	वह हो	कि	शायद	आप (स) फ़रमा दें	वह - यह	कब	और कहेंगे	अपने सर

और हम ने इस कुरआन में तरह तरह से बयान किया है ताकि वह नसीहत पकड़ें, और (इस से) उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़रत। (41) आप (स) कह दें, अगर जैसे वह कहें हैं उस के साथ और माबूद होते तो उस सूरत में वह अर्श वाले की तरफ़ ज़रूर दूँडते कोई रास्ता। (42) वह उस से निहायत पाक है और वरतर जो वह कहते हैं। (43) उस की पाकीज़गी बयान करते हैं सातों आस्मान और ज़मीन, और जो उन में है, कोई चीज़ नहीं मगर (हर शौ) पाकीज़गी बयान करती है उस की हम्द के साथ, लेकिन तुम उन की तस्वीह नहीं समझते, बेशक वह वर्दबार, बढ़शने वाला है। (44) और जब तुम कुरआन पढ़ते हो, हम तुम्हारे और उन के दरमियान जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते कर देते (डाल देते) हैं एक छुपा हुआ (दबीज़) पर्दा। (45) और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए के वह इसे न समझें, और उन के कानों में गिरानी है और जब तुम कुरआन में अपने यकता रब का ज़िक्र करते हो तो वह पीठ फेर कर नफ़रत करते हुए भाग जाते हैं। (46) हम खूब जानते हैं कि वह उस को किस गर्ज से सुनते हैं जब वह तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और जब वह सरगोशी करते हैं (यानी) जब कहते हैं ज़ालिम कि तुम पैरवी नहीं करते मगर एक सिहरज़दा आदमी की। (47) तुम देखो! उन्होंने ने तुम पर कैसी मिसालें चप्पा की, सो वह गुमराह हुए, पस वह (सीधे) रास्ते की इस्तिताअत नहीं पाते। (48) और वह कहते हैं कि क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो गए, क्या हम यकीनन फिर नई पैदाइश (अज़ सर नौ) जी उठेंगे? (49) कह दें तुम पत्थर या लोहा हो जाओ, (50) या कोई और मख़लूक जो तुम्हारे खयालों में उस से भी बड़ी हो। फिर अब कहेंगे हमें कौन लौटाएगा। आप (स) फ़रमा दें, वह जिस ने तुम्हें पैदा किया पहली बार, तो वह तुम्हारी तरफ़ अपने सर मटकाएंगे और कहेंगे यह कब होगा (क़ियामत कब आएगी)? आप (स) फ़रमा दें, शायद कि करीब ही हो। (51)

जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उस की तारीफ के साथ तामील करोगे (क़ब्रों से निकल आओगे) और तुम खयाल करोगे कि तुम (दुनिया में) रहे हो सिर्फ थोड़ी देर। (52) और आप (स) मेरे बन्दों को फ़रमा दें कि (बात) वह कहें जो सब से अच्छी हो, वेशक शैतान उन के दरमियान फ़साद डाल देता है, वेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (53) तुम्हारा रब तुम्हें खूब जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर वह चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे, और हम ने तुम्हें उन पर दारोगा (बना कर) नहीं भेजा। (54) और तुम्हारा रब खूब जानता है जो कोई आस्मानों में और ज़मीन में है, और तहकीक़ हम ने वाज़ नबियों को वाज़ पर फ़ज़ीलत दी, और हम ने दाऊद (अ) को ज़बूर दी। (55) आप (स) कह दें पुकारो उन्हें जिन को तुम उस के सिवा (माबूद) गुमान करते हो, पस वह इख्तियार नहीं रखते तुम से तकलीफ़ दूर करने का, और न (तकलीफ़) बदलने का। (56) वह लोग जिन्हें यह पुकारते हैं वह (खुद) ढूँढते हैं अपने रब की तरफ़ वसीला कि उन में से कौन बहुत ज़ियादा करीब हो जाए, और उस की रहमत की उम्मीद रखते हैं, और वह उस के अज़ाब से डरते हैं, वेशक तेरे रब का अज़ाब डर (ही) की बात है। (57) और कोई (नाफ़रमान) बस्ती नहीं मगर हम उसे हलाक करने वाले हैं, क़ियामत के दिन से पहले, या उसे सख़्त अज़ाब देने वाले हैं, यह किताब में है लिखा हुआ। (58) और हमें निशानियां भेजने से नहीं रोका मगर (इस बात ने) कि उन को अगलों ने झुटलाया, और हम ने समूद को ऊँटनी दी ज़री-ए-बसीरत ओ इब्रत, उन्होंने ने उस पर जुल्म किया, और हम निशानियां नहीं भेजते मगर (सिर्फ़) डराने को। (59) और जब हम ने तुम से कहा कि वेशक तुम्हारा रब लोगों को (अहाता) काबू किए हुए है, और हम ने जो नुमाइश तुम्हें दिखाई वह हम ने नहीं किया मगर लोगों की आजमाइश के लिए, और थोहर का दरख़्त जिस पर कुरआन में लानत की गई है, और हम उन्हें डराते हैं तो उन्हें बढ़ती है सिर्फ़ सरकशी। (60)

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا							
जिस दिन	वह पुकारेगा तुम्हें	तो तुम जवाब दोगे (तामील करोगे)	उस की तारीफ के साथ	और तुम खयाल करोगे	कि	तुम रहे	सिर्फ़
قَلِيلًا ٥٢ وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ							
थोड़ी देर	52	और फ़रमा दें	मेरे बन्दों को	वह कहें	वह जो	वह	सब से अच्छी
वेशक	शैतान	है	इन्सान का	दुश्मन	खुला	53	तुम्हारा रब खूब जानता है
بَيْنَهُمْ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ٥٣ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ							
अगर	वह चाहे	तुम पर रहम करे वह	या अगर	वह चाहे	तुम्हें अज़ाब दे	और नहीं	हम ने तुम्हें भेजा
54	दारोगा	उन पर	वह	न	तुम्हें	और	तुम्हें
إِنْ يَشَأْ يُرْحَمَكُمُ أَوْ إِنْ يَشَأْ يُعَذِّبْكُمْ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ٥٤							
अगर	वह चाहे	तुम पर रहम करे वह	या अगर	वह चाहे	तुम्हें अज़ाब दे	और नहीं	हम ने तुम्हें भेजा
54	दारोगा	उन पर	वह	न	तुम्हें	और	तुम्हें
وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ							
और तुम्हारा रब	खूब जानता है	जो कोई	में	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	और तहकीक़ हम ने फ़ज़ीलत दी	वाज़
النَّبِيِّنَ عَلَى بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ٥٥ قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ							
नबी (जमा)	वाज़ पर	और हम ने दी	दाऊद (अ)	जबूर	55	कह दें	पुकारो तुम
वह जिन को	वह गुमान करते हो	तुम	गुमान	करते हो	तुम	गुमान	करते हो
مِّنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ٥٦ أُولَٰئِكَ							
उस के सिवा	पस वह इख्तियार नहीं रखते	दूर करना	तकलीफ़	तुम से	और न	बदलना	56
वह लोग	वह लोग	वह लोग	वह लोग	वह लोग	वह लोग	वह लोग	वह लोग
الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ							
जिन्हें	वह पुकारते हैं	ढूँढते हैं	तरफ़	अपना रब	वसीला	उन से कौन	ज़ियादा करीब
और वह उम्मीद रखते हैं	और वह उम्मीद रखते हैं	और वह उम्मीद रखते हैं	और वह उम्मीद रखते हैं	और वह उम्मीद रखते हैं	और वह उम्मीद रखते हैं	और वह उम्मीद रखते हैं	और वह उम्मीद रखते हैं
رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ٥٧ وَإِنَّ							
उस की रहमत	और वह डरते हैं	उस का अज़ाब	वेशक	अज़ाब	तेरा रब	है	डर की बात
57	नहीं	और	वह लोग	वह लोग	वह लोग	वह लोग	वह लोग
مِّنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا							
कोई बस्ती	मगर	हम	उसे हलाक करने वाले	पहले	क़ियामत का दिन	या	उसे अज़ाब देने वाले
अज़ाब	अज़ाब	अज़ाब	अज़ाब	अज़ाब	अज़ाब	अज़ाब	अज़ाब
شَدِيدًا كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ٥٨ وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ							
सख़्त	है	यह	किताब में	लिखा हुआ	58	और नहीं हमें रोका	कि हम भेजें
हम	हम	हम	हम	हम	हम	हम	हम
بِأَلَايَتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصَرَةً							
निशानियां	मगर	यह कि	झुटलाया	उन को	अगले लोग (जमा)	और हम ने दी	समूद ऊँटनी
दिखाने को (ज़रीए बसीरत)	दिखाने को (ज़रीए बसीरत)	दिखाने को (ज़रीए बसीरत)	दिखाने को (ज़रीए बसीरत)	दिखाने को (ज़रीए बसीरत)	दिखाने को (ज़रीए बसीरत)	दिखाने को (ज़रीए बसीरत)	दिखाने को (ज़रीए बसीरत)
فَظَلَمُوا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ٥٩ وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ							
उन्होंने ने उस पर जुल्म किया	और हम नहीं भेजते	निशानियां	मगर	डराने को	59	और हम ने कहा	तुम से
तुम्हारा रब	तुम्हारा रब	तुम्हारा रब	तुम्हारा रब	तुम्हारा रब	तुम्हारा रब	तुम्हारा रब	तुम्हारा रब
أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِي آرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ							
अहाता किए हुए	लोगों को	और हम ने नहीं किया	नुमाइश	वह जो कि	हम ने तुम्हें दिखाई	मगर	आज़माइश
लोगों के लिए	लोगों के लिए	लोगों के लिए	लोगों के लिए	लोगों के लिए	लोगों के लिए	लोगों के लिए	लोगों के लिए
الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ وَنُخَوِّفُهُمْ ۖ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ٦٠							
जिस पर लानत की गई	कुरआन में	और हम डराते हैं उन्हें	तो नहीं बढ़ती उन्हें	मगर (सिर्फ़)	सरकशी	बड़ी	60
वह लोग	वह लोग	वह लोग	वह लोग	वह लोग	वह लोग	वह लोग	वह लोग

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ قَالَ								
और जब	हम ने	फ़रिश्तों से	तुम सिज्दा करो	आदम (अ) को	तो उन्होंने ने	सिवाए	इब्लीस	उस ने कहा
ءَاسْجُدْ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ﴿٦١﴾ قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَذَا الَّذِي كَرَّمْتَ								
क्या मैं	उस को	तू ने पैदा	मिट्टी से	61	उस ने	भला तू देख	यह	वह जिसे
सिज्दा करूँ	जिसे	किया			कहा			तू ने इज़्ज़त दी
عَلَىٰ لَبَنٍ أَخْرَظَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ لِأَخْتِنِكَ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا								
मुझ पर	अलबत्ता	तू मुझे	तक	रोज़े	जड़ से उखाड़	उस की	सिवाए	
अगर	ढील दे	रोगे	कियामत	दूँगा	औलाद			
فَلِيلًا ﴿٦٢﴾ قَالَ أَذْهَبَ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَأُكُمْ								
चन्द	उस ने	तू जा	पस जिस	तेरी	उन में से	तो	जहन्नम	तुम्हारी सज़ा
एक	फ़रमाया			पैरवी की		वेशक		
جَزَاءَ مَوْفُورًا ﴿٦٣﴾ وَاسْتَفْزِرُ مِنْ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ								
सज़ा	भरपूर	63	और फुसला ले	जो -	तेरा बस चले	उन में से	अपनी	आवाज़ से
			जिस					
وَأَجْلِبْ عَلَيْهِم بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكُهُمْ فِي الْأَمْوَالِ								
और चढ़ा ला	उन पर	अपने सवार	और पयादे	और उन से	मैं	माल (जमा)		
وَالْأَوْلَادِ وَعَدَّهُمْ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿٦٤﴾ إِنَّ عِبَادِي								
और औलाद	और वादे	और नहीं उन से	वादा करता	शैतान	मगर (सिर्फ)	धोका	64	वेशक मेरे बन्दे
	कर उन से							
لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ﴿٦٥﴾ رَبُّكُمْ الَّذِي								
नहीं	तेरा	उन पर	जोर -	और	तेरा रब	कारसाज़	65	तुम्हारा रब
			ग़लबा	काफी				वह जो कि
يُزْجِي لَكُمْ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِيَتَّبِعُوا مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ								
चलाता है	तुम्हारे	कशती	में	दर्या	ताकि तुम	से	उस का	वेशक वह
	लिए				तलाश करो		फ़ज़ल	तुम पर है
رَحِيمًا ﴿٦٦﴾ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ								
निहायत	66	और	तुम्हें	तकलीफ़	में	गुम	जो	तुम
मेहरबान	जब	है	(पहुँचती)			हो जाते हैं		पुकारते थे
إِلَّا إِلَٰهَهُ فَلَمَّا نَجَّكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْإِنْسَانُ								
उस के सिवा	फिर जब	वह तुम्हें	खुशकी की तरफ़	तुम फिर जाते हो	और है	इन्सान		
		बचा लाया						
كَفُورًا ﴿٦٧﴾ أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ								
बड़ा	67	सो क्या तुम	कि	धंसा दे	तुम्हें	खुशकी की तरफ़	या	वह भेजे
नाशुक्रा	हो	निडर हो गए						
عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ﴿٦٨﴾ أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ								
तुम पर	पत्थर बरसाने	फिर	तुम न पाओ	अपने लिए	कोई	68	या	तुम बेफ़िक्र
	वाली हवा				कारसाज़			हो गए
يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ								
वह तुम्हें ले जाए	उस में	दोबारा	फिर भेज दे वह	तुम पर	सख़्त झोंका	से -	का	
الرَّيْحِ فَيُغْرِقُكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ﴿٦٩﴾								
हवा	फिर तुम्हें	वदले	तुम ने	फिर	तुम न पाओ	अपने	हम पर	उस
गर्क कर दे	में	नाशुक्रा की				लिए	(हमारा)	करने
								69

और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम (अ) को सिज्दा करो, तो इब्लीस के सिवा उन सब ने सिज्दा किया, उस ने कहा क्या मैं उसे सिज्दा करूँ? जिसे तू ने मिट्टी से पैदा किया। (61)

उस ने कहा भला देख तो यह है वह जिसे तू ने मुझ पर इज़्ज़त दी, अलबत्ता अगर तू मुझे रोज़े कियामत तक ढील दे तो मैं चन्द एक के सिवा उस की औलाद को ज़रूर जड़ से उखाड़ दूँगा। (62)

उस ने फ़रमाया तू जा, पस उन में से जिस ने तेरी पैरवी की तो वेशक जहन्नम तुम्हारी सज़ा है, सज़ा भी भरपूर। (63)

और फुसला ले जिस पर तेरा बस चले उन में से अपनी आवाज़ से, और उन पर अपने सवार और पयादे चढ़ा ला, और उन से साझा कर ले माल और औलाद में, और उन से वादे कर, और उन से शैतान का वादा करना सिर्फ़ धोका है॥ (64)

वेशक मेरे बन्दों पर तेरा कोई जोर नहीं, और तेरा रब काफी है कारसाज़। (65)

तुम्हारा रब वह है जो कि तुम्हारे लिए दर्या में किशती चलाता है ताकि तुम उस का फ़ज़ल (रिज़्क) तलाश करो, वेशक वह तुम पर निहायत मेहरबान है। (66)

और जब तुम्हें दर्या में तकलीफ़ पहुँचती है तो गुम हो जाते हैं (भूल जाते हो) जिन्हें उस के सिवा तुम पुकारते थे, फिर जब वह तुम्हें बचा लाया, खुशकी की तरफ़, तो तुम फिर जाते हो, और इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (67)

सो क्या तुम निडर हो गए हो कि वह ज़मीन में धंसा दे तुम्हें खुशकी की तरफ़ (ले जा कर) या तुम पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजे, फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज़ न पाओ। (68)

या तुम बेफ़िक्र हो गए हो कि वह तुम्हें दोबारा उस (दर्या) में ले जाए, फिर तुम पर हवा का सख़्त झोंका (तूफ़ान) भेज दे फिर तुम्हें नाशुक्रा के बदले में गर्क कर दे, फिर तुम अपने लिए उस पर हमारा कोई पीछा करने वाला न पाओ। (69)

और तहकीक हम ने औलादे आदम (अ) को इज्जत बखशी, और हम ने उन्हें खुशकी और दर्या में सवारी दी, और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क दिया, और हम ने उन्हें अपनी बहुत सी मख़लूक पर बढ़ाई दे कर फ़ज़ीलत दी। (70)

जिस दिन हम तमाम लोगों को बुलाएंगे उन के पेशवाओं के साथ, पस जिस को उस की किताब (आमाल नामा) दाएं हाथ में दी गई तो वह लोग अपना आमाल नामा पढ़ेंगे और वह जुल्म न किए जाएंगे एक धागे के बराबर (भी)। (71)

और जो इस दुनिया में अन्धा रहा पस वह आख़िरत में (भी) अन्धा (उठेगा) और रास्ते से भटका हुआ। (72)

और उस वहि से जो हम ने तुम्हारी तरफ़ की है करीब था कि वह तुम्हें उस से बिचला दें (फिसला दें) ताकि हम पर उस (वहि) के सिवा तुम झूट बान्धो और उस सूरत में अलबत्ता वह तुम्हें दोस्त बना लेते। (73)

और अगर हम तुम्हें साबित कदम न रखते तो अलबत्ता तुम उन की तरफ़ झुकने लगते कुछ थोड़ा सा। (74)

उस सूरत में हम तुम्हें ज़िन्दगी में दुगनी (सज़ा) चखाते और दुगनी मौत (के बाद), फिर तुम अपने लिए न पाते हमारे मुकाबले में कोई मददगार। (75)

और तहकीक करीब था कि वह तुम्हें सरज़मीने मक्का से फिसला ही दें ताकि वह तुम्हें यहां से निकाल दें और उस सूरत में वह तुम्हारे पीछे न ठहर पाते मगर थोड़ा (अर्सा)। (76)

आप (स) से पहले जो रसूल हम ने भेजे (यही) सुन्नत (चली आ रही) है और तुम हमारी सुन्नत में कोई तबदीली न पाओगे। (77)

सूरज ढलने से रात के अन्धेरे तक नमाज़ काइम करें, और सुबह का कुरआन, वेशक सुबह का कुरआन (पढ़ने में फ़िरिशते) हाज़िर होते हैं। (78)

और रात का कुछ हिस्सा कुरआन की तिलावत के साथ वेदार रहें, यह तुम्हारे लिए ज़ाइद है, करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें मुक़ामे महमूद में खड़ा कर दे। (79)

और आप (स) कहें ऐ मेरे रब! मुझे दाख़िल कर सच्चा दाख़िल करना, और मुझे निकाल सच्चा निकालना (अच्छी तरह), और अपनी तरफ़ से मेरे लिए अ़ता कर ग़ल्वा, मदद देने वाला। (80)

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَهُمْ مِنْ							
और हम ने उन्हें रिज़्क दिया	और दर्या	खुशकी में	दी	और हम ने उन्हें सवारी	औलादे आदम (अ)	हम ने इज्जत बख़शी	और तहकीक
الطَّيِّبِ وَفَضَّلْنَهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا (٧٠) يَوْمَ							
जिस दिन	70	बढ़ाई दे कर	हम ने पैदा किया (अपनी मख़लूक)	उस से जो	बहुत सी	पर	पाकीज़ा चीज़ों
نَدْعُوا كُلُّ أُنَاسٍ بِإِمامِهِمْ فَمَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِإِمامِهِ فَأُولَئِكَ							
तो वह लोग	उस के दाएं हाथ में	उसकी किताब	दिया गया	पस जो	उन के पेशवाओं के साथ	तमाम लोग	हम बुलाएंगे
يَقْرءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا (٧١) وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ							
इस (दुनिया) में	और जो रहा	71	एक धागे बराबर	और न वह जुल्म किए जाएंगे	अपना आमाल नामा	पढ़ेंगे	
أَعْمَى فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَى وَأَصْلُ سَبِيلًا (٧٢) وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ							
कि तुम्हें बिचला दें	वह करीब था	और तहकीक	72	रास्ता	और बहुत भटका हुआ	अन्धा	पस वह
عَنِ الذِّئَى أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لَتَفْتَرِي عَلَيْنَا غَيْرَهُ وَإِذَا لَا تَخَذُوكَ							
अलबत्ता वह तुम्हें बना लेते	और उस सूरत में	इस के सिवा	हम पर	ताकि तुम झूट बान्धो	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि की	वह जो से
خَلِيلًا (٧٣) وَلَوْ لَا أَنْ تَبْتُنِكَ لَقَدْ كِدْتَ تَرْكُنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا (٧٤)							
74	थोड़ा	कुछ	उनकी तरफ़	अलबत्ता तुम झुकने लगते	हम तुम्हें साबित कदम रखते	यह कि	और अगर न
إِذَا لَا دَفْنِكَ ضِعْفَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ							
अपने लिए	तुम ने पाते	फिर	मौत	और दुगनी	ज़िन्दगी	दुगनी	उस सूरत में हम तुम्हें चखाते
عَلَيْنَا نَصِيرًا (٧٥) وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفْرِزُونَكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ							
ताकि वह तुम्हें निकाल दें	ज़मीन (मक्का)	से	कि तुम्हें फिसला ही दें	करीब था	और तहकीक	75	कोई मददगार
مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبَثُونَ خِلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا (٧٦) سَنَةَ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا							
हम ने भेजा	जो	सुन्नत	76	थोड़ा	मगर	तुम्हारे पीछे	वह न ठहर पाते
قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا (٧٧) أَقِمِ الصَّلَاةَ لِدُلُوكِ							
ढलने से	नमाज़	काइम करें आप (स)	77	कोई तबदीली	हमारी सुन्नत में	और तुम ने पाओगे	अपने रसूल (जमा)
الشَّمْسِ إِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ							
है	सुबह का कुरआन	वेशक	सुबह (फ़ज़र)	और कुरआन	रात	अन्धेरा	तक
مَشْهُودًا (٧٨) وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَكَ عَسَى أَنْ يَبْعَثَكَ							
कि तुम्हें खड़ा करे	करीब	तुम्हारे लिए	नफ़िल (ज़ाइद)	इस (कुरआन) के साथ	सो वेदार रहें	रात	और कुछ हिस्सा
رُبُّكَ مَقَامًا مَحْمُودًا (٧٩) وَقُلْ رَبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ							
सच्चा	दाख़िल करना	मुझे दाख़िल कर	ऐ मेरे रब	और कहें	79	मुक़ामे महमूद	तुम्हारा रब
وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَلْ لِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِيرًا (٨٠)							
80	मदद देने वाला	ग़ल्वा	अपनी तरफ़ से	मेरे लिए	और अ़ता कर	सच्चा	निकालना

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا (۸۱)							
और कह दें आप (स)	आया हक	और नाबूद हो गया	वातिल	वेशक	वातिल	है ही मिटने वाला	81
وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا (۸۲)							
और हम नाज़िल करते हैं	से	कुरआन	जो	वह शिफा	और रहमत	मोमिनों के लिए	और नहीं ज़ियादा होता
وَنَا بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوسًا (۸۳)							
और पहलू फेर लेता है	और जब	उसे पहुँचती है	बुराई	वह हो जाता	मायूस	कह दें हर एक	पर काम करता है
شَاكِلَتِهِ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَى سَبِيلًا (۸۴)							
अपना तरीका	सो तुम्हारा परवरदिगार	खूब जानता है	कि वह कौन	ज़ियादा सहीह	रास्ता	84	और आप (स) से पूछते हैं
عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا (۸۵)							
मगर	थोड़ा सा	85	और अगर	हम चाहें	तो अलबत्ता हम ले जाएँ	वह जो कि	हम ने वहि की
ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا (۸۶)							
फिर तुम न पाओ	अपने वास्ते	उस के लिए	हमारे (मुकाबले) पर	कोई मददगार	मगर	रहमत	तुम्हारे रब से
كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا (۸۷)							
है	तुम पर	बड़ा	87	कह दें	अगर	जमा हो जाएँ	तमाम इन्सान
أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا (۸۸)							
कि	वह लाएं	मानिंद	इस कुरआन	न ला सकेंगे	इस के मानिंद	और अगरचे हो जाएँ	उन के वाज़
كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا (۸۹)							
हर मिसाल	पस कुबूल न किया	अक्सर लोग	सिवाए	नाशुक्रि	89	और वह बोले	हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे
حَتَّى تَفْجَرُ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنْبُوعًا (۹۰)							
यहां तक कि	तू रवां कर दे	हमारे लिए	ज़मीन से	कोई चश्मा	90	या हो जाए	तेरे लिए
نَّحِيلُ وَعَنْبٍ فَتُفَجَّرَ الْأَنْهَارُ خِلَلَهَا تَفْجِيرًا (۹۱)							
खजूर (जमा)	और अंगूर	पस तू रवां कर दे	नहरें	उस के दरमियान	वहती हुई	91	या तू गिरा दे
كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسْفًا أَوْ تَأْتِي بَالَهُ وَالْمَلِكَةِ قَبِيلًا (۹۲)							
जैसा कि तू कहा करता है	हम पर	टुकड़े	या तू ले आ	अल्लाह को	और फ़रिश्ते	रुबरू	92

और कह दें हक आया और बातिल नाबूद हो गया, वेशक बातिल है ही मिटने वाला (नीस्त औ नाबूद होने वाला)। (81)

और हम कुरआन नाज़िल करते हैं जो मोमिनों के लिए शिफा और रहमत है, और ज़ालिमों के लिए ज़ियादा नहीं होता घाटे के सिवा। (82)

और जब हम इन्सान को नेमत वख़शते हैं वह रूगर्दान हो जाता है, और पहलू फेर लेता है, और जब उसे बुराई पहुँचती है तो वह मायूस हो जाता है। (83)

कह दें हर एक अपने तरीके पर काम करता है, सो तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है कि कौन ज़ियादा सहीह रास्ते पर है? (84)

और वह आप (स) से रूह के सुतअल्लिक पूछते हैं, आप (स) कह दें रूह मेरे रब के हुक्म से है, और तुम्हें इल्म नहीं दिया गया मगर थोड़ा सा। (85)

और अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम ले जाएँ (सल्व कर लें) जो वहि हम ने तुम्हारी तरफ़ की है, फिर तुम उस के लिए अपने वास्ते न पाओ हमारे

मुकाबले पर कोई मददगार। (86) मगर तुम्हारे रब की रहमत से है (कि ऐसा नहीं होता), वेशक तुम पर उस का बड़ा फ़ज़ल है। (87)

आप (स) कह दें अगर तमाम इन्सान और जिन (इस बात) पर जमा हो जाएँ कि वह इस कुरआन के मानिंद ले आएँ तो वह इस के मानिंद न ला सकेंगे अगरचे उन के वाज़, वाज़ के लिए (वह एक दूसरे के) मददगार हो जाएँ। (88)

और हम ने लोगों के लिए इस कुरआन में तरह तरह से बयान कर दी है हर मिसाल, पस अक्सर लोगों ने नाशुक्रि के सिवा कुबूल न किया। (89)

और वह बोले कि हम तुझ पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे, यहां तक कि तू हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा रवां कर दे। (90)

या तेरे लिए खजूरों और अंगूर का एक बाग़ हो, पस तू उस के दरमियान वहती नहरें रवां कर दे। (91)

या जैसे तू कहा करता है हम पर आस्मान के टुकड़े गिरा दे, या अल्लाह को और फ़रिश्तों को रूबरू ले आ। (92)

या तेरे लिए सोने का एक घर हो, या तू आस्मान में चढ़ जाए, और हम हरगिज़ तेरे चढ़ने को न मानेंगे जब तक तू हम पर एक किताब न उतारे जिसे हम पढ़ लें, आप (स) कह दें पाक है मेरा रब, मैं सिर्फ़ एक बशर हूँ (अल्लाह का) रसूल। (93)

और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान लाएँ जब उन के पास हिदायत आ गई, मगर यह कि उन्होंने न कहा क्या अल्लाह ने एक बशर को रसूल (बना कर) भेजा है? (94)

आप (स) कह दें, अगर होते ज़मीन में फ़रिश्ते चलते फिरते, इत्मीनान से रहते तो हम ज़रूर उन पर आस्मानों से फ़रिश्ते रसूल (बना कर) उतारते। (95)

आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह की गवाही काफी है, वेशक वह अपने बन्दों का ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। (96)

और जिसे अल्लाह हिदायत दे पस वही हिदायत पाने वाला है, और जिसे वह गुमराह करे पस तू उन के लिए उस के सिवा हरगिज़ कोई मददगार न पाएगा, और हम क़ियामत के दिन उन्हें उन के चहरों के बल अन्धे और गुंगे और बहरे उठाएंगे, उन का ठिकाना जहन्नम है, जब कभी जहन्नम की आग बुझने लगेगी हम उन के लिए और भड़का देंगे। (97)

यह उन की सज़ा है क्यों कि उन्होंने ने हमारी आयतों का इन्कार किया और उन्होंने ने कहा क्या जब हम हड्डियाँ और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे, क्या हम अज़ सरे नौ पैदा कर के ज़रूर उठाए जाएंगे? (98)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया है इस पर कादिर है कि उन जैसे पैदा करे, और उस ने उन के लिए मुक़र्रर किया एक वक़्त, इस में कोई शक नहीं, ज़ालिमों ने नाशुकी के सिवा कुबूल न किया। (99)

आप कह दें अगर तुम मालिक होते मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के, तो तुम ख़र्च हो जाने के डर से ज़रूर बन्द रखते, और इन्सान बहुत तंग दिल है। (100)

أَوْ يَكُونُ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرِفٍ أَوْ تَرْقَىٰ فِي السَّمَاءِ وَلَنْ نُؤْمِنَ									
और हम हरगिज़ न मानेंगे	आस्मान में	तू चढ़ जाए	या	सोना	से - का	एक घर	तेरे लिए	हो	या
لِرُقَيْكَ حَتَّىٰ تُنَزَّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَقْرُؤُهُ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنْتُ									
नहीं हूँ मैं	मेरा रब	पाक है	आप कह दें	हम पढ़ लें जिसे	एक किताब	हम पर	तू उतारे	यहाँ तक कि	तेरे चढ़ने को
إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٣﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ									
उन के पास आ गई	जब	कि वह ईमान लाएं	लोग (जमा)	रोका	और नहीं	93	रसूल	एक बशर	मगर - सिर्फ
الْهُدَىٰ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَوْ كَانَ									
अगर होते	कह दें	94	रसूल	एक बशर	अल्लाह	क्या भेजा	उन्होंने ने कहा	यह कि	मगर
فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَّمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ									
आस्मान से	उन पर	हम ज़रूर उतारते	इत्मीनान से रहते	चलते फिरते	फरिश्ते	ज़मीन में			
مَلَكًا رَسُولًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ									
है	वेशक वह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह	अल्लाह की	काफी है	कह दें	95	रसूल
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ									
और जिसे	हिदायत पाने वाला	पस वही	अल्लाह	हिदायत दे	और जिसे	96	देखने वाला	ख़बर रखने वाला	अपने बन्दों का
يُضِلُّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ									
क़ियामत के दिन	और हम उठाएंगे उन्हें	उस के सिवा	मददगार	उन के लिए	पस तू हरगिज़ न पाएगा	गुमराह करे			
عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا مَّاوَهُمْ جَهَنَّمَ كُلَّمَا خَبَتْ									
बुझने लगेगी	जब कभी	जहन्नम	उन का ठिकाना	और बहरे	और गूगे	अन्धे	उन के चहरे	पर - बल	
زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ﴿٩٧﴾ ذَلِكَ جَزَاؤُهُمْ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا									
और उन्होंने ने कहा	हमारी आयतों का	उन्होंने ने इन्कार किया	क्यों कि वह	उन की सज़ा	यह	97	भड़काना	हम उन के लिए ज़ियादा कर देंगे	
ءِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرَفَاتًا ءَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾									
98	अज़ सरे नौ	पैदा कर के	ज़रूर उठाए जाएंगे	क्या हम	और रेज़ा रेज़ा	हड्डियाँ	हो जाएंगे हम	क्या जब	
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ فَادِرٌ عَلَىٰ									
पर	कादिर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	जिस ने	अल्लाह	कि	उन्होंने ने देखा	क्या नहीं
أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ فَابَى الظَّالِمُونَ									
ज़ालिम (जमा)	तो कुबूल न किया	उस में	नहीं शक	एक वक़्त	उन के लिए	उस ने मुक़र्रर किया	उन जैसे	कि वह पैदा करे	
إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾ قُلْ لَوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذَا									
जब	मेरा रब	रहमत	ख़ज़ाने	मालिक होते	तुम	अगर	आप कह दें	99	नाशुक्की के सिवा
لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَثُورًا ﴿١٠٠﴾									
100	तंग दिल	इन्सान	और है	खर्च हो जाना	डर से	तुम ज़रूर बन्द रखते			

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَمَسَّ لُبُؤُا إِسْرَءِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يُمُوسَى مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنْزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ بِصَآئِرٍ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يُفْرِعُونَ مَثْبُورًا ﴿١٠٢﴾ فَآرَادَ أَنْ يَسْتَفِزَّهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ﴿١٠٣﴾ وَقُلْنَا مِنْ بَعْدِهِ لِبَنِي إِسْرَءِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ﴿١٠٤﴾ وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿١٠٥﴾ وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْثٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا ﴿١٠٦﴾ قُلْ آمِنُوا بِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾ وَيَقُولُونَ سُبْحٰنَ رَبِّنَا إِن كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ﴿١٠٩﴾ قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوَادْعُوا الرَّحْمٰنَ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْحُكْمُ ۗ سُبْحٰنَ الْعِزَّةِ ۗ وَلَا تَجْهَرُ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتُ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذَّلٰلِ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ﴿١١١﴾							
और अलबत्ता हम ने दी	मूसा (अ)	नौ (9)	खुली निशानियां	पस पूछ तू	वनी इस्राईल	जब	उन के पास आया
तो कहा	उस को	फिरऔन	वेशक मैं	तुझ पर गुमान करता हूँ	ऐ मूसा	जादू किया गया	101
उस ने कहा	उस ने	कहा	अलबत्ता तू ने जान लिया				
नहीं नाज़िल किया	इस को	मगर	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	वसीरत (जमा)	और	तुझ पर गुमान करता हूँ	
ऐ फिरऔन	हलाक शुदा	102	पस उस ने इरादा किया	कि	उन्हें निकाल दे	ज़मीन से	तो हम ने उसे गर्क कर दिया
और जो	उसके साथ	सब	103	और हम ने कहा	उस के बाद	वनी इस्राईल को	तुम रहो
ज़मीन (मुल्क)	फिर जब	आएगा	आखिरत का वादा	हम ले आएंगे	तुम को	जमा कर के	104
और सच्चाई के साथ	नाज़िल हुआ	और नहीं	हम ने आप (स) को भेजा	मगर खुशखबरी देने वाला	और डर सुनाने वाला	105	और कुरआन जुदा किया
पर	लोग	ठहर ठहर कर	और हम ने उसे नाज़िल किया	आहिस्ता आहिस्ता	आप कह दें	तुम इस पर ईमान लाओ	या
तुम ईमान न लाओ	वेशक	वह लोग जिन्हें	इल्म दिया गया	इस से क़व्ल	जब	वह पढ़ा जाता है	उन के सामने
वह गिर पड़ते हैं	ठोड़ियों के बल	सिज्दा करते हुए	107	और वह कहते हैं	पाक है	हमारा रब	वेशक है
हमारा रब	हमारा रब	ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला	108	और वह गिर पड़ते हैं	ठोड़ियों के बल	रोते हुए	और उन में ज़ियादा करता है
आजिज़ी	109	आप कह दें	तुम पुकारो	तुम पुकारो	जो कुछ भी	तुम पुकारोगे	सो उसी के लिए
सब से अच्छे नाम	और न बुलन्द करो तुम	अपनी नमाज़ में	और न विलकुल पस्त करो तुम	उस में	और	उस के दरमियान	
रास्ता	110	और कह दें	तमाम तारीफ़ें	अल्लाह के लिए	वह जिस ने	कोई औलाद नहीं बनाई	और नहीं है
कोई शरीक	सलतनत में	और नहीं है	उस का	कोई मददगार	से, सबव	नातवानी	और उस की बड़ाई करो
कोई शरीक	सलतनत में	और नहीं है	उस का	कोई मददगार	से, सबव	नातवानी	और उस की बड़ाई करो

और हम ने मूसा (अ) को नौ (9) खुली निशानियां दीं, पस बनी इस्राईल से पूछ, जब वह (मूसा अ) उन के पास आए तो फिरऔन ने उस को कहा वेशक मैं गुमान करता हूँ तुम पर जादू किया गया है (सिहर ज़दा हो)। (101) उस ने कहा, अलबत्ता तू जान चुका है कि इस को नाज़िल नहीं किया मगर आस्मानों और ज़मीन के परवरदिगार ने वसीरत (समझ बूझ की बातें), और ऐ फिरऔन! वेशक मैं तुझे गुमान करता हूँ हलाक शुदा (हलाक हुआ चाहता है)। (102) पस उस ने इरादा किया कि उन्हें सरज़मीने (मिस्त्र) से निकाल दे तो हम ने उसे और जो उस के साथ थे सब को गर्क कर दिया। (103) और हम ने कहा उस के बाद बनी इस्राईल को कि तुम उस मुल्क में रहो, फिर जब आखिरत का वादा आएगा हम तुम सब को ले आएंगे जमा कर के (समेट कर)। (104) और हम ने इसे (कुरआन को) हक के साथ नाज़िल किया और वह सच्चाई के साथ नाज़िल हुआ, और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर खुश खबरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (105) और कुरआन हम ने जुदा जुदा कर के (थोड़ा थोड़ा) नाज़िल किया ताकि तुम लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो, और हम ने उसे आहिस्ता आहिस्ता (बतद्रीज) नाज़िल किया। (106) आप (स) कह दें तुम उस पर ईमान लाओ या न लाओ, वेशक जिन्हें इस से क़व्ल इल्म दिया गया है, जब वह उन के सामने पढ़ा जाता है तो वह सिज्दा करते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं। (107) और वह कहते हैं हमारा रब पाक है, वेशक हमारे रब का वादा ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला है। (108) और वह रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं और यह (कुरआन) उन में आजिज़ी और ज़ियादा करता है। (109) आप (स) कह दें तुम पुकारो अल्लाह (कह कर) या पुकारो रहमान (कह कर) जो कुछ भी पुकारोगे उसी के लिए हैं सब से अच्छे नाम, और न अपनी नमाज़ में (आवाज़ बहुत) बुलन्द करो और न उस में विलकुल पस्त करो (बल्कि) उस के दरमियान का रास्ता ढूँडो। (110) और आप (स) कह दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने कोई औलाद नहीं बनाई, और सलतनत में उस का कोई शरीक नहीं, और न कोई उस का मददगार है नातवानी के सबव, और खूब उस की बड़ाई (वयान) करो। (111)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद स) पर (यह) किताब नाज़िल की, और उस में कोई कजी न रखी। (1)

(बल्कि) ठीक सीधी (उतारी) ताकि डर सुनाए उस की तरफ़ से सख़्त अज़ाब से, और मोमिनों को खुशख़बरी दे, जो अच्छे अमल करते हैं कि उन के लिए अच्छा अजर है, (2)

वह उस में हमेशा रहेंगे। (3)

और वह उन लोगों को डराए जिन्होंने ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है। (4)

उस का न उन्हें कोई इल्म है और न उन के बाप दादा को था, बड़ी है बात (जो) उन के मुँह से निकलती है, वह नहीं कहते मगर झूट। (5)

तो शायद आप (स) उन के पीछे अपनी जान को हलाक करने वाले हैं, अगर वह ईमान न लाए इस बात पर, ग़म के मारे। (6)

जो कुछ ज़मीन में है, बेशक हम ने उसे उस के लिए ज़ीनत बनाया है ताकि हम उन्हें आज़माएं कि उन में कौन है अमल में बेहतर। (7)

और जो कुछ इस (ज़मीन) पर है बेशक हम उसे (नाबूद कर के) साफ़ चटयल मैदान करने वाले हैं। (8)

क्या तुम ने गुमान किया? कि कहफ़ (ग़ार) और रक़ीम वाले हमारी निशानियों में से अज़ीब थे। (9)

जब उन जवानों ने ग़ार में पनाह ली तो उन्होंने ने कहा, ऐ हमारे रब! हमें अपनी तरफ़ से रहमत दे, और हमारे काम में दुरुस्ती मुहैया कर। (10)

पस हम ने पर्दा डाला उन के कानों पर, उन्हें ग़ार में कई साल (सुलाया)। (11)

آيَاتُهَا ۱۱۰ ﴿۱۸﴾ سُورَةُ الْكَهْفِ ﴿۱۲﴾ زُكُوعَاتُهَا ۱۲														
رुकुआت 12					(18) सूरतुल कहफ़ गार					आयात 110				
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ														
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है														
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ﴿١﴾ فِيمَا لِيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ														
और न रखी		किताब (कुरआन)		अपने बन्दे पर		नाज़िल की		वह जिस ने		अल्लाह के लिए		तमाम तारीफ़ें		
और खुशख़बरी दे		उस की तरफ़ से		सख़्त		अज़ाब		ताकि डर सुनाए		ठीक सीधी		1 कोई कजी उस में		
الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ﴿٢﴾														
2		अच्छा अजर		कि उन के लिए		अच्छे		अमल करते हैं		वह जो		मोमिनों		
مَّا كَثِيرٍ فِيهِ أَبَدًا ﴿٣﴾ وَيُنْذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ﴿٤﴾ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً														
अल्लाह ने बना लिया है		वह जिन लोगों ने कहा		और वह डराए		3		हमेशा		उस में		वह रहेंगे		
تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ إِنَّ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾ فَلَعَلَّكَ														
तो शायद आप		5		झूट		मगर		वह कहते हैं		नहीं		उन के मुँह (जमा) से निकलती है		
بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلَى آثَارِهِمْ إِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ														
बात		इस		वह ईमान न लाए		अगर		उन के पीछे		पर		अपनी जान हलाक करने वाला		
أَسْفًا ﴿٦﴾ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا لِنَبْلُوهُمْ أَيُّهُمْ														
कौन उन में से		ताकि हम उन्हें आजमाएं		उसके लिए		ज़ीनत		ज़मीन पर		जो		हम ने बनाया बेशक हम 6 ग़म के मारे		
أَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾ وَإِنَّا لَجَعَلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ﴿٨﴾														
8		बंजर (चटयल)		साफ़ मैदान		जो उस पर		अलबत्ता करने वाले		और बेशक हम		7 अमल में बेहतर		
أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ														
से		वह थे		और रक़ीम		असहाबे कहफ़ (ग़ार वाले)				कि		क्या तुम ने गुमान किया?		
أَيَّتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا														
ऐ हमारे रब		तो उन्होंने ने कहा		ग़ार		तरफ़ - में		जवान (जमा)		पनाह ली		9 जब हमारी निशानियां अजीब		
آتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾														
10		दुरुस्ती		हमारे काम में		हमारे लिए		और मुहैया कर		रहमत		अपनी तरफ़ से हमें दे		
فَضْرَبْنَا عَلَى آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ﴿١١﴾														
11		कई साल		ग़ार में				उन के कान (जमा)		पर		पस हम ने मारा (पर्दा डाला)		

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوا أَمَدًا ﴿١٢﴾								
फिर	हम ने उन्हें उठाया	हम देखें	ताकि हम	कौन-किस	दोनों गिराह	हिसाब रखा	कितनी देर रहे	मुदत 12
نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾ وَرَبَطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ الْأَرْضِ لَن نَّدْعُوَ مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا								
हम	वयान करते हैं	तुझ से	उनका हाल	ठीक ठीक	वेशक वह	चन्द नौजवान	वह ईमान लाए	अपने रब पर
और हम ने और ज़ियादा दी उन्हें	हिदायत 13	और हम ने गिरह लगादी	पर	उन के दिल	जब	वह खड़े हुए	तो उन्होंने ने कहा	
رَبُّنَا رَبُّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ لَن نَّدْعُوَ مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا إِذَا شَطَطَا ﴿١٤﴾ هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ								
हमारा रब	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	हरगिज़ न	हम पुकारेंगे	उस के सिवा	कोई माबूद	अलबत्ता हम ने कही	उस के सिवा	और माबूद
उस वक़्त	वेजा बात 14	यह है	हमारी कौम	उन्होंने ने बना लिए	उस के सिवा	और माबूद	उस के सिवा	
لَوْ لَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَنٍ بَيِّنٍ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾ وَإِذْ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ								
पर	अल्लाह	झूट 15	और जब	तुम ने उन से किनारा कर लिया	और जो वह पूजते हैं	अल्लाह के सिवा	उस के सिवा	
فَأَوْا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُم مِّنْ رَّحْمَتِهِ وَيَهَيِّئْ لَكُمْ								
तो पनाह लो	तरफ़ - में	ग़ार	तुम्हें देगा फ़ैला	तुम्हारा रब	से	अपनी रहमत	मुहैया करेगा	तुम्हारे लिए
से	तुम्हारे काम	सहूलत 16	और तुम देखोगे	सूरज (धूप)	जब	वह निकलती है	वच कर जाती है	से
كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقَرُّصُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ								
उन का ग़ार	दाएं तरफ़	और जब	वह ढल जाती है	उन से कतरा जाती है	बाएं तरफ़			
وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ ذَلِكِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ مَنْ يَّهْدِ اللَّهُ								
और वह	में	खुली जगह	उस (ग़ार) की	यह	से	अल्लाह की निशानियां	जो - जिसे	हिदायत दे अल्लाह
فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِّ فَلَن تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾								
पस वह हिदायत याफ़ता	और जो - जिस	वह गुमराह करे	पस तू हरगिज़ न पाएगा	उस के लिए	कोई रफ़ीक़	सीधी राह दिखाने वाला		17
وَتَحْسَبُهُمْ آيْقَاطًا وَهُمْ رُقُودٌ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ								
और तू उन्हें समझे	वेदार	हालांकि वह	सोए हुए	और हम बदलवाते हैं उन्हें	दाएं तरफ़			
وَذَاتَ الشِّمَالِ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعِيهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعْتَ								
और बाएं तरफ़	और उन का कुत्ता	फैलाए हुए	दोनों हाथ	देहलीज़ पर	अगर तू झांकता			
عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْت مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾								
उन पर	तो पीठ फेरता	उन से	भागता हुआ	और तू भर जाता	उन से	दहशत में		18

फिर हम ने उन्हें उठाया ताकि हम देखें दोनों गिराहों में से किस ने खूब याद रखा है कि वह कितनी मुदत (ग़ार में) रहे? (12)

हम तुझ से ठीक ठीक उन का हाल वयान करते हैं, वह चन्द नौजवान थे, वह ईमान लाए अपने रब पर, और हम ने उन्हें हिदायत और ज़ियादा दी। (13)

और हम ने उन के दिलों पर गिरह लगा दी (दिल पुख्ता कर दिए) जब वह खड़े हुए तो उन्होंने ने कहा हमारा रब परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का, हम उस के सिवाए हरगिज़ किसी को माबूद न पुकारेंगे (वरना) अलबत्ता उस वक़्त हम ने वेजा बात कही। (14)

यह है हमारी कौम, उस ने उस के सिवा और माबूद बना लिए, वह उन पर कोई वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते? पस कौन है उस से बड़ा ज़ालिम जो अल्लाह पर झूट इफ़्तिरा करे। (15)

और जब तुम ने उन से और जिन को वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं उन से किनारा कर लिया है तो ग़ार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फ़ैलादेगा, और तुम्हारे काम में तुम्हारे लिए सहूलत मुहैया करेगा। (16)

और तुम देखोगे जब धूप निकलती है, वह उन की ग़ार से दाएं तरफ़ वच कर जाती है, और जब वह ढलती है तो उन से बाएं तरफ़ को कतरा जाती है, और वह ग़ार की खुली जगह में है, यह अल्लाह की निशानियां में से है, जिसे हिदायत दे अल्लाह, सो वही हिदायत याफ़ता है और जिसे वह गुमराह करे तो उस के लिए हरगिज़ कोई रफ़ीक़, सीधी राह दिखाने वाला न पाओगे। (17)

और तू उन्हें वेदार समझे हालांकि वह सोए हुए हैं और हम उन्हें दाएं तरफ़ और बाएं तरफ़ (करवट) बदलवाते हैं, और उन का कुत्ता दोनों हाथ (पंजे) फैलाए हुए है देहलीज़ पर, अगर तू उन पर झांकता तो उन से पीठ फेर कर भागता, और उन से दहशत में भर जाता। (18)

और हम ने उसी तरह उन्हें उठाया ताकि वह आपस में एक दूसरे से सवाल करें, उन में से एक कहने वाले ने कहा तुम (यहां) कितनी देर रहे? उन्होंने ने कहा हम रहे एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा, उन्होंने ने कहा तुम्हारा रब खूब जानता है तुम कितनी मुद्दत रहे हो? पस अपने में से एक को अपना यह रुपया दे कर भेजो शहर की तरफ, पस वह देखे कौन सा खाना पाकीज़ा तर है, तो वह उस से तुम्हारे लिए ले आए और नर्मी करे और किसी को तुम्हारी ख़बर न दे बैठे। (19)

वेशक अगर वह तुम्हारी ख़बर पालेंगे तो वह तुम्हें संगसार कर देंगे या तुम्हें लौटा लेंगे अपनी मिल्लत में, और उस सूरत में तुम हरगिज़ कभी फ़लाह न पाओगे। (20)

और उसी तरह हम ने (लोगों को) उन पर ख़बरदार किया ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं, (याद करो) जब वह उन के मामले में आपस में झगड़ते थे, तो उन्होंने ने कहा उन पर एक इमारत बनाओ, उन का रब उन्हें खूब जानता है। जो लोग उन के काम पर ग़ालिव थे उन्होंने ने कहा हम ज़रूर बनाएंगे उन पर एक मसजिद (इबादतगाह)। (21)

अब (कुछ) कहेंगे वह तीन हैं चौथा उन का कुत्ता है, और (कुछ) कहेंगे वह पाँच हैं और उन का छटा है (अटकल के तुक्के चला रहे हैं), कुछ कहेंगे वह सात हैं और आठवां उन का कुत्ता है, आप (स) कह दें मेरा रब खूब जानता है उन की तेदाद, उन्हें सिर्फ़ थोड़े जानते हैं, पस सरसरी बहस के सिवा उन के (वारे में) न झगड़ो, और न पूछो उन के वारे में उन में से किसी से। (22)

وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ							
और उसी तरह	हम ने उन्हें उठाया	ताकि वह एक दूसरे से सवाल करें	आपस में	कहा	एक कहने वाला	उन में से	
كَمْ لَبِثْتُمْ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضُ يَوْمٍ قَالُوا رَبُّكُمْ							
तुम कितनी देर रहे	उन्होंने ने कहा	हम रहे	एक दिन	या	एक दिन का कुछ हिस्सा	उन्होंने ने कहा	तुम्हारा रब
أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هَذِهِ							
खूब जानता है	जितनी मुद्दत तुम रहे	पस भेजो तुम	अपने में से एक	अपना रुपया दे कर	यह		
إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ							
तरफ़	शहर	पस वह देखे	कौन सा	पाकीज़ा तर	खाना	तो वह तुम्हारे लिए ले आए	खाना
مِّنْهُ وَلْيَسْلُطْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۝١٩							
उस से	और नर्मी करे	और वह ख़बर न दे बैठे	तुम्हारी	किसी को	19		
إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ							
वेशक वह	अगर वह ख़बर पा लेंगे	तुम्हारी	तुम्हें संगसार कर देंगे	या	तुम्हें लौटा लेंगे		
فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذَا أَبَدًا ۝٢٠ وَكَذَلِكَ أَعَثَرْنَا							
में	अपनी मिल्लत	और तुम हरगिज़ फ़लाह न पाओगे	उस सूरत में कभी	20	और उसी तरह	हम ने ख़बरदार कर दिया	
عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ							
उन पर	ताकि वह जान लें	कि	अल्लाह का वादा	सच्चा	और यह कि	क़ियामत	कोई शक नहीं
فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا							
उस में	जब	वह झगड़ते थे	आपस में	उन का मामला	तो उन्होंने ने कहा	बनाओ	
عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا							
उन पर	एक इमारत	उनका रब	उन्हें खूब जानता है	कहा	वह लोग जो ग़ालिव थे		
عَلَى أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۝٢١ سَيَقُولُونَ							
पर	अपने काम	हम ज़रूर बनाएंगे	उन पर	एक मसजिद	21	अब वह कहेंगे	
ثَلَاثَةً رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۖ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ							
तीन	उन का चौथा	उन का कुत्ता	उन का कुत्ता	और वह कहेंगे	पाँच	उन का छटा	उन का कुत्ता
رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ							
बात फ़ैकना	बिन देखे	और कहेंगे वह	सात	और उन का आठवां	उन का कुत्ता	कह दें आप (स)	
رَبِّي أَعْلَمُ بَعْدَتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ							
मेरा रब	खूब जानता है	उन की गिनती (तेदाद)	उन्हें नहीं जानते हैं	मगर सिर्फ़	थोड़े	पस न झगड़ो	उन में
إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝٢٢							
सिवाए	बहस	ज़ाहिरी (सरसरी)	और न	पूछ	उनके (वारे में)	उन में से	किसी
						22	

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بان الشاء بعد الياء
من النصف الاول واللام الثانية من النصف الاخير ١٢

ع ١٥

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَآئٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَلِكْ غَدًا ﴿٢٣﴾ إِلَّا أَنْ يَشَآءَ									
चाहे	यह कि	मगर	23	कल	यह	करने वाला हूँ	कि मैं	किसी काम को	और हरगिज़ न कहना तुम
اللَّهُ ۖ وَادْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَى أَنْ يَهْدِيَنِي									
कि मुझे हिदायत दे	उम्मीद है	और कह		तू भूल जाए	जब	अपना रब	और तू याद कर	अल्लाह	
رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ									
अपना ग़ार	में	और वह रहे	24	भलाई	उस से	बहुत ज़ियादा करीब की	मेरा रब		
ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا ۚ									
कितनी मुदत वह ठहरे	खूब जानता है	अल्लाह	आप (स) कह दें	25	नौ (9)	और उन के ऊपर	साल	तीन सौ (300)	
لَهُ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ ۚ									
और क्या वह सुनता है	क्या वह देखता है	और ज़मीन	आस्मानों	ग़ैब	उसी को				
مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ﴿٢٦﴾									
26	किसी को	अपने हुक्म में	और वह शरीक नहीं करता	कोई मददगार	उस के सिवा	उन के लिए नहीं			
وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ									
उस की बातों को	नहीं कोई बदलने वाला	आप का रब	किताब	से	आप की तरफ़	जो वहि की गई	और आप पढ़ें		
وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ									
साथ	अपना नफ्स (अपना आप)	और रोके रखो	27	कोई पनाह गाह	उस के सिवा	और तुम हरगिज़ न पाओगे			
الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدْوَةِ وَالْعَشيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ									
उस का चहरा (रज़ा)	वह चाहते हैं	और शाम	सुबह	अपना रब	वह लोग जो पुकारते हैं				
وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الدُّنْيَا ۚ									
दुनिया	ज़िन्दगी	आराइश	तुम तलबगार हो जाओ	उन से	तुम्हारी आँखें	न दौड़ें (न फिरे)			
وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ									
और है	अपनी खाहिश	और पीछे पड़ गया	अपना ज़िक्र	से	उस का दिल	हम ने गाफ़िल कर दिया	जो - जिस	और कहा न मानो	
أَمْرُهُ فُرُطًا ﴿٢٨﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُم ۖ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ									
सो ईमान लाए	चाहे	पस जो	तुम्हारा रब	से	हक़	और कह दें	28	हद से बढ़ा हुआ	उस का काम
وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ ۖ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا									
आग	ज़ालिमों के लिए	हम ने तैयार किया	बेशक हम	सो कुफ़ करे (न माने)	चाहे	और जो			
أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ									
पानी से	वह दाद रसी किए जाएंगे	वह फ़र्याद करेंगे	और अगर	उस की कन्नातें	उन्हें	घेर लेंगी			
كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ ۖ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾									
29	आराम गाह	और बुरी है	बुरा है पीना (मशरूब)	सुँह (जमा)	वह भून डालेगा	पिघले हुए ताम्बे की मानिंद			

और हरगिज़ किसी काम को न कहना “कि मैं कल करने वाला हूँ” (कल कर दूँगा), (23)

मगर “यह कि अल्लाह चाहे” (इनशा अल्लाह) और जब तू भूल जाए तो अपने रब को याद कर और कहो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे हिदायत दे उस से ज़ियादा करीब की भलाई की। (24)

और वह उस ग़ार में तीन सौ (300) साल रहे, और उन के ऊपर नौ (309) साल। (25)

आप (स) कह दें अल्लाह खूब जानता है वह कितनी मुदत ठहरे, उसी को है आस्मानों और ज़मीन का ग़ैब, क्या (खूब) वह देखता है और क्या (खूब) वह सुनता है! उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं, वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता। (26)

और आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ़ आप (स) के रब की किताब वहि की गई है, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और तुम हरगिज़ न पाओगे उस के सिवा कोई पनाह गाह। (27)

और अपने आप को उन लोगों के साथ रोके (लगाए) रखो जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं, और तुम्हारी आँखें उन से न फिरे कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश के तलबगार हो जाओ, और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया, और वह अपनी खाहिश के पीछे पड़ गया, और उस का काम हद से बढ़ा हुआ है। (28)

और आप (स) कह दें हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है, पस जो चाहे सो ईमान लाए और जो चाहे सो न माने, हम ने बेशक तैयार की है ज़ालिमों के लिए आग, उस की क़न्नातें उन्हें घेर लेंगी, और अगर वह फ़र्याद करेंगे तो पिघले हुए ताम्बे के मानिंद (खौलते) पानी से दाद रसी किए जाएंगे, वह (उन के) सुँह भून डालेगा, बुरा है उन का मशरूब और बुरी है (उन की) आराम गाह (जहननम)। (29)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अमल किए नेक, यकीनन हम उस का अजर ज़ाया नहीं करेंगे जिस ने अच्छा अमल किया। (30) यही लोग हैं उन के लिए हमेशगी के बागात हैं, बहती हैं उन के नीचे नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे, और वह कपड़े पहनेंगे सब्ज़ बारीक रेशम के और दबीज़ रेशम के, उस में वह मसहरियों पर तकिया लगाए हुए होंगे, अच्छा बदला और खूब है आराम गाह। (31)

और आप (स) उन के लिए दो आदमियों का हाल बयान करें, हम ने उन में से एक के लिए दो (2) बाग बनाए अंगूरों के, और हम ने उन्हें खजूरों के दरख्तों (की बाड़) से घेर लिया, और उन के दरमियान खेती रखी। (32)

दोनों बाग अपने फल लाए, और उस (पैदावार) में कुछ कमी न करते थे, और हम ने उन दोनों के दरमियान में एक नहर जारी कर दी। (33)

और उस के लिए (बहुत) फल था तो वह अपने साथी से बोला, मैं माल में तुझ से ज़ियादा तर हूँ, और आदमियों (जत्थे) के लिहाज़ से ज़ियादा बाइज़ज़त हूँ। (34)

और वह अपने बाग में दाखिल हुआ (इस हाल में कि) वह अपनी जान पर जुल्म कर रहा था, वह बोला मैं गुमान नहीं करता कि यह कभी बरबाद होगा। (35)

और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत बरपा होने वाली है, और अगर मैं अपने रब की तरफ लौटाया गया तो मैं ज़रूर इस से बेहतर लौटने की जगह पाऊँगा। (36)

उस के साथी ने उस से कहा और वह उस से बातें कर रहा था, क्या तू उस के साथ कुफ़ करता है? जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़ से, फिर उस ने तुझे बनाया (पूरा) मर्द। (37)

लेकिन मैं (कहता हूँ) वही अल्लाह मेरा रब है, और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता। (38)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ							
जो लोग ईमान लाए	और उन्होंने ने अमल किए	नेक	यकीनन हम	हम ज़ाया नहीं करेंगे	अजर	जो - जिस	वेशक
أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي							
अच्छा किया	अमल	30	यही लोग	उन के लिए	बागात	हमेशगी	बहती है
مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ							
उन के नीचे	नहरें	पहनाए जाएंगे	उस में	से	कंगन	से	सोना
وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِينَ							
और वह पहनेंगे	कपड़े	सब्ज़ रंग के	से - के	बारीक रेशम	और दबीज़ रेशम	तकिया लगाए हुए	
فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نَعَمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ وَاصْرَبْ							
उस में	तख्तों (मसहरियों) पर	अच्छा	बदला	और खूब है	आराम गाह	31	और बयान करें आप (स)
لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ							
उन के लिए	मिसाल (हाल)	दो आदमी	हम ने बनाए	उन में एक के लिए	दो बाग़	से - के	अंगूर (जमा)
وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ كُلَّا الْجَنَّتَيْنِ							
और हम ने उन्हें घेर लिया	खजूरों के दरख़्त	और बना दी (रखी)	उन के दरमियान	खेती	32	दोनों बाग़	
اتَتْ أَكْلَهَا وَلَمْ تَظْلِمِ مِنْهُ شَيْئًا ۖ وَفَجَّرْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ﴿٣٣﴾							
लाए	अपने फल	और कम न करते थे	उस से	कुछ	और हम ने जारी करदी	दोनों के दरमियान	एक नहर 33
وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ							
और था	उस के लिए	फल	तो वह बोला	अपने साथी से	और वह	उस से बातें करते हुए	मैं ज़ियादा तर
مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ							
तुझ से	माल में	और ज़ियादा बाइज़ज़त	आदमियों के लिहाज़ से	34	और वह दाखिल हुआ	अपना बाग़	और वह
ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۖ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَذِهِ أَبَدًا ﴿٣٥﴾							
जुल्म कर रहा था	अपनी जान पर	वह बोला	मैं गुमान नहीं करता	कि	बरबाद होगा	यह	कभी 35
وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۖ وَلَئِنْ رُودْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ							
और मैं गुमान नहीं करता	क़ियामत	काइम (बरपा)	और अगर	मैं लौटाया गया	तरफ़	अपना रब	मैं ज़रूर पाऊँगा 36
خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ							
बेहतर	इस से	लौटने की जगह	36	कहा	उस से	उस का साथी	उस से बातें कर रहा था
اَكْفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ							
क्या तू कुफ़ करता है	उस के साथ जिस ने	तुझे पैदा किया	मिट्टी से	फिर	नुत्फ़ से	फिर	फिर
سَوَّلَكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لَكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٣٨﴾							
तुझे पूरा बनाया	मर्द	37	लेकिन मैं	वह अल्लाह	मेरा रब	और मैं शरीक नहीं करता	अपने रब के साथ किसी को 38

وَلَوْ لَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ									
अल्लाह की	मगर	नहीं कुव्वत	जो चाहे अल्लाह	तू ने कहा	अपना बाग़	तू दाख़िल हुआ	जब	और क्यों न	
إِنْ تَرَنِ أَنَا أَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٣٩﴾ فَعَسَى رَبِّي أَنْ									
कि	मेरा रब	तो करीब	39	और औलाद में	माल में	अपने से	कम तर	मुझे	अगर तू मुझे देखता है
يُؤْتِينَ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلْ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاءِ									
आस्मान	से	आफ़त	उस पर	और भेजे	तेरा बाग़	से	बेहतर	मुझे दे	
فَتُصْبِحُ صَعِيدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ أَوْ يُصْبِحُ مَاءُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ									
फिर तू हरगिज़ न कर सके	खुश्क	उस का पानी	हो जाए	या	40	चटयल	मिट्टी का मैदान	फिर वह हो कर रह जाए	
لَهُ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَأَحِيطْ بِشَمَرِهِ فَاَصْبَحَ يُغْلِبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ									
पर	अपने हाथ	वह मलने लगा	पस वह रह गया	उस के फल	और घेर लिया गया	41	तलव (तलाश)	उस को	
مَا أَنْفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَلَيْتَنِي									
ऐ काश	और वह कहने लगा	अपनी छतरियां	पर	गिरा हुआ	और वह	उस में	जो उस ने खर्च किया		
لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ									
उस की मदद करती वह	कोई जमाअत	उस के लिए	और न होती	42	किसी को	अपने रब के साथ	मैं शरीक न करता		
مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ﴿٤٣﴾ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ									
इख़्तियार	यहां	43	बदला लेने के काबिल	वह था	और न	अल्लाह के सिवा	से		
لِلَّهِ الْحَقُّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾ وَاضْرِبْ لَهُم									
उन के लिए	और बयान कर दें	44	बदला देने में	और बेहतर	सवाब देने में	बेहतर	वह	अल्लाह के लिए बरहक	
مَّثَلِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ									
आस्मान	से	हम ने उस को उतारा	जैसे पानी	दुनिया की ज़िन्दगी	मिसाल				
فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ									
उड़ाती है उसको	चूरा चूरा	वह फिर हो गया	ज़मीन की नवातात (सब्ज़ा)	उस से - ज़रीए	पस मिल जुल गया				
الرِّيحُ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ الْمَالُ									
माल	45	बड़ी कुदरत रखने वाला	हर शै पर	अल्लाह	और है	हवा (जमा)			
وَالْبُنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْبَاقِيَةُ الصَّلَاحُ خَيْرٌ									
बेहतर	नेकियां	और बाकी रहने वाली	दुनिया की ज़िन्दगी	ज़ीनत	और बेटे				
عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ									
पहाड़	हम चलाएंगे	और जिस दिन	46	आजू में	और बेहतर	सवाब में	तेरे रब के नज़्दीक		
وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٤٧﴾									
47	किसी को	उन से	फिर न छोड़ेंगे हम	और हम उन्हें जमा कर लेंगे	खुली हुई (साफ़ मैदान)	ज़मीन	और तू देखेगा		

और क्यों न जब तू दाख़िल हुआ अपने बाग़ में, तू ने कहा “माशा अल्लाह” (जो अल्लाह चाहे वही होता है) कोई कुव्वत नहीं मगर अल्लाह की (दी हुई) अगर तू मुझे अपने से कम तर देखता है माल में और औलाद में, (39) तो करीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से बेहतर दे और उस (तेरे बाग़) पर आफ़त भेजे आस्मान से, फिर वह मिट्टी का चटयल मैदान हो कर रह जाए। (40) या उस का पानी खुश्क हो जाए, और तू हरगिज़ न कर सके उस को तलाश। (41) और उस के फल (अज़ाब में) घेर लिए गए और उस में जो उस ने खर्च किया था, वह उस पर अपना हाथ मलता रह गया और वह (बाग़) अपनी छतरियों पर गिरा हुआ था और वह कहने लगा ऐ काश, मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न करता। (42) और उस के लिए कोई जमाअत न हुई कि अल्लाह के सिवा उस की मदद करती, और वह बदला लेने के काबिल न था। (43) यहां इख़्तियार अल्लाह बरहक के लिए है, वही बेहतर है सवाब देने में, और बेहतर है बदला देने में। (44) और आप (स) उन के लिए बयान करें दुनिया की मिसाल (वह ऐसे है) जैसे हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए ज़मीन का सबज़ा मिल जुल गया (खूब घना उगा) फिर वह चूरा चूरा हो गया कि उस को हवाएं उड़ाती हैं, और अल्लाह हर शै पर बड़ी कुदरत रखने वाला है। (45) माल और बेटे दुनिया की ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं, और बाकी रहने वाली नेकियां तेरे रब के नज़्दीक बेहतर हैं सवाब में, और बेहतर हैं आज़ू में। (46) और जिस दिन हम पहाड़ चलाएंगे, और तू ज़मीन को साफ़ मैदान देखेगा, और हम उन्हें जमा कर लेंगे, फिर हम उन में से किसी को न छोड़ेंगे। (47)

और वह तेरे रब के सामने सफ़ वस्ता पेश किए जाएंगे, (आखिर) अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, जबकि तुम समझते थे कि हम तुम्हारे लिए हरगिज़ कोई वक़्त मौजूद न ठहराएंगे। (48)

और रखी जाएगी किताब, जो उस में (लिखा होगा) सो तुम मुजरिमों को उस से डरते हुए देखोगे, और वह कहेंगे हाए हमारी शामते आमाल! कैसी है यह तहरीर! यह नहीं छोड़ती छोटी सी बात और न बड़ी बात मगर उसे क़लम बन्द किए हुए है, और वह पा लेंगे जो कुछ उन्होंने ने किया (अपने) सामने, और तुम्हारा रब किसी पर जुल्म नहीं करेगा। (49)

और (याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम सिजदा करो आदम (अ) को तो (उन) सब ने सिजदा किया सिवाए इब्लीस के, वह (कौमे) जिन से था, और वह अपने रब के हुकम से बाहर निकल गया, सो क्या तुम उस को और उस की औलाद को मेरे सिवाए दोस्त बनाते हो? और वह तुम्हारे दुश्मन हैं, बुरा है ज़ालिमों के लिए बदल। (50)

मैं ने उन्हें न आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने (के वक़्त) हाज़िर किया (बुलाया) और न खुद उन के पैदा करते (वक़्त), और मैं गुमराह करने वालों को (दस्त ओ) बाजू बनाने वाला नहीं हूँ। (51)

और जिस दिन वह (अल्लाह) फ़रमाएगा कि बुलाओ मेरे शरीकों को जिन्हें तुम ने (माबूद) गुमान किया था, पस वह उन्हें पुकारेंगे तो वह जवाब न देंगे, और हम उन के दरमियान हलाकत की जगह बना देंगे। (52)

और देखेंगे मुजरिम आग, तो वह समझ जाएंगे कि वह उस में गिरने वाले हैं, और वह उस से (बच निकलने की) कोई राह न पाएंगे। (53)

और हम ने अलबत्ता इस कुरआन में लोगों के लिए फेर फेर कर हर किस्म की मिसालें बयान की हैं, और इन्सान हर शै से ज़ियादा झगड़ा लू है। (54)

وَعَرِّضُوا عَلَى رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ								
हम ने तुम्हें पैदा किया था	जैसे	अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए	सफ वस्ता	तेरा रब	पर - सामने	और वह पेश किए जाएंगे		
أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ لَكُمْ مَوْعِدًا ۖ وَوُضِعَ								
और रखी जाएगी	48	कोई वक्ते मौऊद	तुम्हारे लिए	कि हम ठहराएंगे	हरगिज़ न	तुम समझते थे	बल्कि (जबकि)	पहली बार
الْكِتَابِ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ								
उस में	उस से जो	डरते हुए	मुजरिम (जमा)		सो तुम देखोगे		किताब	
وَيَقُولُونَ يُوِيلَتَنَا مَالِ هَذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً								
छोटी बात	यह नहीं छोड़ती	यह किताब (तहरीर)		कैसी है	हाए हमारी शामते आमाल	और वह कहेंगे		
وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْضَاهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا								
सामने	जो उन्होंने ने किया		और वह पालेंगे		वह उसे घेरे (क़लम बन्द किए) हुए	मगर	बड़ी बात	और न
وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ۖ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا								
तुम सिज्दा करो	फ़रिशतों से		हम ने कहा	और जब	49	किसी पर	तुम्हारा तब	और जुल्म नहीं करेगा
لِأَدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ								
से	वह (बाहर) निकल गया	जिन	से	वह था	इब्लीस	सिवाए	तो उन्होंने ने सिज्दा किया	आदम (अ) को
أَمْرِ رَبِّهِ أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ								
और वह	मेरे सिवाए	दोस्त (जमा)		और उस की औलाद	सो क्या तुम उस को बनाते हो		अपने रब का हुक्म	
لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ۖ مَا أَشْهَدْتُهُمْ خَلَقَ								
पैदा करना	हाज़िर किया मैं ने उन्हें	नहीं	50	बदल	ज़ालिमों के लिए	बुरा है	दुश्मन	तुम्हारे लिए
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلَقَ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُمْ تُخَذِّ								
बनाने वाला	और मैं नहीं		उन की जानें (खुद वह)		और न पैदा करना	और ज़मीन	आस्मानों	
الْمُضِلِّينَ عَصِدًا ۖ وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ								
और वह जिन्हें	मेरे शरीक (जमा)	बुलाओ	वह फ़रमाएगा	और जिस दिन	51	बाजू	गुमराह करने वाले	
زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ								
उन के दरमियान	और हम बना देंगे	उन्हें	तो वह जवाब न देंगे			पस वह उन्हें पुकारेंगे	तुम ने गुमान किया	
مَوْبِقًا ۖ وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاقِعُوهَا								
गिरने वाले हैं उस में	कि वह	तो वह समझ जाएंगे	आग	मुजरिम (जमा)	और देखेंगे	52	हलाकत की जगह	
وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ۖ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ								
कुरआन	इस	में	हम ने फेर फेर कर बयान किया	और अलबत्ता	53	कोई राह	उस से	और न वह पाएंगे
لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ۖ								
54	झगड़ा लू	हर शै से ज़ियादा		इन्सान	और है	हर (तरह की) मिसालें		से लोगों के लिए

٦
ع
١٨

٦
ع
١٩

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝٥٥							
और वह बख्शिशा मांगें	हिदायत	जब आ गई उन के पास	वह ईमान लाएं	कि	लोग	रोका	और नहीं
आए उन के पास	या	पहलों की	रविश (मामला)	उन के पास आए	यह कि	सिवाए	अपना रब
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
खुशखबरी देने वाले	मगर	रसूल (जमा)	और हम नहीं भेजते	55	सामने का	अज्ञाव	
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
ताकि वह फुसला दें	नाहक (की बातों से)	कुफ़ किया (काफ़िर)	वह जिन्होंने	और झगड़ा करते हैं	और डर सुनाने वाले		
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
और कौन	56	मज़ाक़	वह डराए गए	और जो - जिस	मेरी आयत	और उन्होंने ने बनाया	उस से
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
जो आगे भेजा	और वह भूल गया	उस से	तो उस ने मुँह फेर लिया	उस का रब	आयतों से	समझाया गया	उस से जो बड़ा ज़ालिम
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
और में	वह उसे समझ सकें	कि	पर्दे	उन के दिलों	पर	वेशक हम ने डाल दिए	उस के दोनों हाथ
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
पाएँ हिदायत	तो वह हरगिज़ न	हिदायत	तरफ़	तुम उन्हें बुलाओ	और अगर	गिरानी	उन के कान
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
उस पर जो	उन का मुआख़ज़ा करे	अगर	रहमत वाला	बख़्शने वाला	और तुम्हारा रब	57	कभी भी जब भी
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
वह हरगिज़ न पाएंगे	उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर	बल्कि	अज्ञाव	उन के लिए	तो वह जल्द भेज दे	उन्होंने ने किया	
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
और हम ने मुक़र्रर किया	उन्होंने ने जुल्म किया	जब	हम ने उन्हें हलाक कर दिया	वसूतियाँ	और यह (उन)	58	पनाह की जगह उस से बरे
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
यहाँ तक कि	मैं न हटूँगा	अपने जवान (शागिर्द) से	मूसा (अ)	कहा	और जब	59	एक मुक़र्ररा वक़्त उन की तबाही के लिए
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
मिलने का मुक़ाम	वह दोनों पहुँचे	फिर जब	60	मुहते दराज़	या चलता रहूँगा	दो दर्याओं के	मिलने की जगह मैं पहुँच जाऊँ
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
फिर जब	61	सुरंग की तरह	दर्या में	अपना रास्ता	तो उस ने बना लिया	अपनी मछली	वह दोनों के दरमियान
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ							
62	तक्लीफ़	इस	अपना सफ़र	से	अलबत्ता हम ने पाई	हमारा सुबह का खाना	हमारे पास लाओ

और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान ले आएँ जब कि उन के पास हिदायत आ गई और वह अपने रब से बख्शिशा मांगें, सिवाए इस के कि उन के पास पहलों की रविश आए या उन के पास आए सामने का अज्ञाव। (55) और हम रसूल नहीं भेजते मगर खुशखबरी देने वाले और डर सुनाने वाले, और झगड़ा करते हैं काफ़िर नाहक बातों के साथ, ताकि वह उस से हक़ (बात) को फुसला दें, और उन्होंने ने बनाया मेरी आयतों को और जिस से वह डराए गए एक मज़ाक़। (56) और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से समझाया गया तो उस ने उस से मुँह फेर लिया, और भूल गया जो उस के दोनों हाथों ने (उस ने) आगे भेजा है, वेशक हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह इस कुरआन को समझ सकें और उन के कानों में गिरानी है (बहरे हैं) और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी वह हरगिज़ हिदायत न पाएंगे कभी भी। (57) और तुम्हारा रब बख़्शने वाला, रहमत वाला है। अगर उन के किए पर वह उन का मुआख़ज़ा करे तो वह जल्द भेज दे उन के लिए अज्ञाव, बल्कि उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है और वह हरगिज़ उस के बरे पनाह की जगह न पाएंगे। (58) और उन वसूतियों को जब उन्होंने ने जुल्म किया हम ने हलाक कर दिया, और हम ने उन की तबाही के लिए एक वक़्त मुक़र्रर किया। (59) और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने शागिर्द से कहा मैं हटूँगा नहीं (चलता रहूँगा) यहाँ तक कि पहुँच जाऊँ दो (2) दर्याओं के मिलने की जगह (संगम पर) या मैं मुहते दराज़ चलता रहूँगा। (60) फिर जब वह दोनों (दर्याओं) के संगम पर पहुँचे तो वह अपनी मछली भूल गए तो उस (मछली) ने अपना रास्ता बना लिया दर्या में सुरंग की तरह। (61) फिर जब वह आगे चले तो मूसा (अ) ने अपने शागिर्द को कहा हमारे लिए सुबह का खाना लाओ, अलबत्ता हम ने अपने इस सफ़र से बहुत (तक्लीफ़) थकान पाई है। (62)

उस ने कहा क्या आप ने देखा? जब हम पत्थर के पास ठहरे तो वेशक मैं मछली भूल गया और मुझे नहीं भुलाया मगर शैतान ने, कि मैं (आप से) उस का ज़िक्र करूँ, और उस ने बना लिया अपना रास्ता दर्या में अजीब तरह से। (63)

मूसा (अ) ने कहा यही है (वह मुक़ाम) जो हम चाहते थे, फिर वह दोनों लौटे अपने निशानाते क़दम पर देखते हुए। (64)

फिर उन्होंने ने हमारे बन्दों में से एक बन्दा (ख़िज़्र अ) को पाया, उसे हम ने अपने पास से रहमत दी, और हम ने उसे अपने पास से इल्म दिया। (65)

मूसा (अ) ने उस से कहा क्या मैं तुम्हारे साथ चलूँ? इस (बात) पर कि तुम मुझे सिखा दो इस भली राह में से जो तुम्हें सिखाई गई है। (66)

उस (ख़िज़्र अ) ने कहा वेशक तू मेरे साथ हरगिज़ सव्‌र न कर सकेगा। (67)

और तू उस पर कैसे सव्‌र कर सकेगा जिस का तू ने वाक़िफ़ियत से अहाता नहीं किया (जिस से तू वाक़िफ़ नहीं)। (68)

मूसा (अ) ने कहा अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम जल्द मुझे पाओगे सव्‌र करने वाला, और मैं तुम्हारी किसी बात की नाफ़रमानी न करूँगा। (69)

ख़िज़्र (अ) ने कहा पस अगर तुझे मेरे साथ चलना है तो मुझ से न पूछना किसी चीज़ से मुतअल्लिक्, यहां तक कि मैं खुद तुझ से ज़िक्र करूँ। (70)

फिर वह दोनों चले यहां तक कि जब वह दोनों कशती में सवार हुए, उस (ख़िज़्र अ) ने उस में सुराख़ कर दिया, मूसा (अ) ने कहा तुम ने उस में सुराख़ कर दिया ताकि तुम उस के सवारों को गर्क कर दो, अलबत्ता तुम ने एक भारी (ख़तरे की) बात की है। (71)

ख़िज़्र (अ) ने कहा क्या मैं ने नहीं कहा था? कि तू मेरे साथ हरगिज़ सव्‌र न कर सकेगा। (72)

मूसा (अ) ने कहा आप उस पर मेरा मुआख़ज़ा न करें जो मैं भूल गया और मेरे मामले में मुझ पर मुश्क़िल न डालें। (73)

फिर वह दोनों चले यहां तक कि वह एक लड़के को मिले तो उस (ख़िज़्र अ) ने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा (अ) ने कहा क्या तुम ने एक पाक जान को जान (के बदले के) वग़ैर क़त्ल कर दिया, अलबत्ता तुम ने एक नापसन्दीदा काम किया। (74)

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْخُوتَ								
मछली	भूल गया	तो वेशक मैं	पत्थर	तरफ-पास	हम ठहरे	जब	क्या आप ने देखा?	उस ने कहा
وَمَا أَنْسِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ								
दर्या में	अपना रास्ता	और उस ने बना लिया	मैं उस का ज़िक्र करूँ	कि	शैतान	मगर	भुलाया मुझे	और नहीं
عَجَبًا ٦٣ قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا								
अपने निशानाते (क़दम)	पर	फिर वह दोनों लौटे	हम चाहते थे	जो	यह	उस ने कहा	63	अजीब तरह
فَصَصَا ٦٤ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا اتَيْنَهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا								
अपने पास	से	रहमत	हम ने दी उसे	हमारे बन्दे	से	एक बन्दा	फिर दोनों ने पाया	64 देखते हुए
وَعَلَّمْنَاهُ مِمَّا لَدُنَّا عِلْمًا ٦٥ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ								
पर	मैं तुम्हारे साथ चलूँ	क्या	मूसा (अ)	उस को	कहा	65	इल्म	अपने पास से और हम ने इल्म दिया उसे
أَنْ تُعَلِّمَنِي مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ٦٦ قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ								
हरगिज़ न कर सकेगा तू	वेशक तू	उस ने कहा	66	भली राह	तुम्हें सिखाया गया है	उस से जो	तुम सिखा दो मुझे	कि
مَعِيَ صَبْرًا ٦٧ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ٦٨								
68	वाक़िफ़ियत से	तू ने अहाता नहीं किया उसका	जो	उस पर	तू सव्‌र करेगा	और कैसे	67	सव्‌र मेरे साथ
قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ٦٩								
69	किसी बात	तुम्हारे	मैं नाफ़रमानी करूँगा	और न	सव्‌र करने वाला	अगर चाहा अल्लाह ने	तुम मुझे पाओगे जल्द	उस ने कहा
قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ								
मैं बयान करूँ	यहां तक कि	किसी चीज़	से - के बारे में	तो मुझ से न पूछना	तुझे मेरे साथ चलना है	पस अगर	उस ने कहा	
لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ٧٠ فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۖ								
उस ने सुराख़ कर दिया उस में	कशती में	वह दोनों सवार हुए	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	70	ज़िक्र	उस का तुझ से
قَالَ أَخَرَقْتُهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ٧١								
71	भारी	एक बात	अलबत्ता तू लाया (तू ने की)	उस के सवार	कि तुम गर्क कर दो	तुम ने उस में सुराख़ कर दिया	उस ने कहा	
قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ٧٢ قَالَ								
उस ने कहा	72	सव्‌र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा तू	वेशक तू	क्या मैं ने नहीं कहा	(ख़िज़्र अ) ने कहा	
لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ٧٣								
73	मुश्क़िल	मेरा मामला	से	और मुझ पर न डालें	मैं भूल गया	उस पर जो	आप मेरा मुआख़ज़ा न करें	
فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَمًا فَقَتَلَهُ ۖ قَالَ أَقْتَلْت								
क्या तुम ने क़त्ल कर दिया	उस ने कहा	तो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	एक लड़का	वह मिले	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	
نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا ٧٤								
74	नापसन्दीदा	एक काम	तुम आए (तुम ने किया)	अलबत्ता	जान	वग़ैर	पाक	एक जान

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا (٧٥)									
75	सब्र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा	वेशक तू	तुझ से	मैं ने कहा	क्या नहीं	उस ने कहा	
قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَحِّبْنِي ۚ قَدْ بَلَغْتَ									
अलवत्ता तुम पहुँच गए		तो मुझे अपने साथ न रखना		इस के बाद		किसी चीज़ से		मैं तुम से पूछूँ	
مِنْ لَّدُنِّي عَذْرًا (٧٦) فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطَعَمَا									
दोनों ने खाना मांगा		एक गावँ वालों के पास		जब वह दोनों आए		यहां तक कि		फिर वह दोनों चले	
						76		उज़र को	
أَهْلَهَا فَابْتَدَأُوا أَنْ يُصَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ									
वह चाहती थी		उस में (वहां) एक दीवार		फिर उन्होंने ने पाई (देखी)		वह उन की ज़ियाफ़त करें		तो उन्होंने ने इन्कार कर दिया कि	
أَنْ يَنْقُصَ فَاقَامَهُ ۖ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا (٧٧) قَالَ									
उस ने कहा	77	उज़रत	उस पर	ले लते	अगर तुम चाहते	उस ने कहा	तो उस ने उसे सीधा कर दिया	कि वह गिर पड़े	
هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ									
उस पर	तुम न कर सके		जो	ताबीर	अब तुम्हें बताएँ देता हूँ	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	जुदाई	यह
صَبْرًا (٧٨) أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ									
दर्या में		वह काम करते थे		ग़रीब लोगों की		सो वह थी		कशती	
								78	
فَارَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ									
हर कशती		वह पकड़ लेता		एक बादशाह		उन के आगे		और था	
غَضَبًا (٧٩) وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا									
कि उन्हें फंसादे		सो हमें अन्देशा हुआ		दोनों मोमिन		उस के माँ बाप		तो थे	
								लड़का	
								और रहा	
								79	
طُغْيَانًا وَكُفْرًا (٨٠) فَارَدْنَا أَنْ يُبَدِّلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَاةً									
पाकीज़गी		उस से		बेहतर		उन का रब		कि बदला दे उन दोनों को	
								पस हम ने इरादा किया	
								80	
وَأَقْرَبَ رُحْمًا (٨١) وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ									
दो यतीम		दो (2) बच्चों की		सो वह थी		दीवार		और रही	
								81	
فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزُ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا ۖ فَأَرَادَ									
सो चाह कि		नेक		उन का बाप और था		उन दोनों के लिए		खज़ाना	
								उस के नीचे	
								और था	
								शहर में - के	
رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ ۚ									
से तुम्हारा रब		मेहरबानी		अपना खज़ाना		और वह दोनों निकालें		अपनी जवानी	
								कि वह पहुँचें	
								तुम्हारा रब	
وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا (٨٢)									
82		सब्र		उस पर		तुम न कर सके		जो	
								ताबीर (हकीक़त)	
								यह	
								अपना हुक़म (मरज़ी)	
								से	
								और यह मैं ने नहीं किया	
وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقُرْنَيْنِ ۚ قُلْ سَأَتْلُوا عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا (٨٣)									
83		कुछ हाल		उस से - का		तुम पर - सामने		अभी पढ़ता हूँ	
								फ़रमा दें	
								जुलक़रनैन	
								से (बाबत)	
								और आप (स) पूछते हैं	

ख़िज़्र (अ) ने कहा कि क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा? (75) मूसा (अ) ने कहा अगर इस के बाद मैं तुम से किसी चीज़ से (मुतअल्लिक) पूछूँ तो मुझे अपने साथ न रखना, अलवत्ता तुम मेरी तरफ़ से पहुँच गए हो (हदे) उज़र को। (76) फिर वह दोनों चले यहां तक कि एक गावँ वालों के पास आए, उन्होंने ने उस के वाशिन्दों से खाना मांगा तो उन्होंने ने इन्कार कर दिया उन की ज़ियाफ़त करने से, फिर उन्होंने ने वहां एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी तो ख़िज़्र (अ) ने उसे सीधा कर दिया, मूसा (अ) ने कहा अगर तम चाहते तो उस पर तम उज़रत ले लते। (77) उस ने कहा यह मेरे और तुम्हारे दरमियान जुदाई है! अब मैं तुम्हें ताबीर (हकीक़ते हाल) बताएँ देता हूँ जिस पर तुम सब्र न कर सके। (78) रही कशती! सो वह चन्द ग़रीब लोगों की थी जो दर्या में काम (मेहनत मज़दूरी) करते थे और उन के आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) कशती को ज़बरदस्ती पकड़ लेता (छीन लेता) था, सो मैं ने चाहा कि उसे ऐवदार कर दूँ। (79) और रहा लड़का! तो उस के माँ बाप दोनों मोमिन थे, सो हमें अन्देशा हुआ कि वह उन्हें सरकशी और कुफ़ में न फंसादे। (80) वस हम ने इरादा किया कि उन दोनों को उन का रब बदला दे (जो पाकीज़गी) में उस से बेहतर और शफ़क़त में बहुत ज़ियादा करीब हो। (81) और रही दीवार! सो वह थी शहर के दो (2) यतीम बच्चों की, और उस के नीचे उन दोनों के लिए खज़ाना है, और उन का बाप नेक था, सो तुम्हारे रब ने चाहा कि वह अपनी जवानी को पहुँचें तो वह दोनों तुम्हारे रब की रहमत से अपना खज़ाना निकालें, और यह मैं ने नहीं किया अपनी मरज़ी से, यह है (वह) हकीक़त! जिस पर तुम सब्र न कर सके। (82) और वह आप (स) से पूछते हैं जुलक़रनैन की बाबत, फ़रमा दें, मैं तुम्हारे सामने अभी उस का कुछ हाल पढ़ता (बयान करता हूँ)। (83)

वेशक हम ने उस को ज़मीन में कुदरत दी और हम ने उसे हर शौ का सामान दिया था। (84)

सो वह एक सामान के पीछे पड़ा, (85)

यहां तक कि वह सूरज के गुरुब होने के मुक़ाम पर पहुँचा, उस ने उसे पाया (देखा) कि वह दलदल की नदी में डूब रहा है, और उस के नज़्दीक उस ने एक कौम पाई, हम ने कहा ऐ जुलकरनैन! (तुझे इख़्तियार है) चाहे तू सज़ा दे, चाहे उन से कोई भलाई इख़्तियार करे। (86)

उस ने कहा, अच्छा! जिस ने जुल्म किया तो जल्द हम उसे सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की तरफ़ लौटाया जाएगा तो वह उसे सख़्त अज़ाब देगा। (87)

और अच्छा! जो ईमान लाया और उस ने अमल किए नेक, तो उस के लिए बदला है भलाई, और अनक़रीब हम उस के लिए अपने काम में आसानी (की बात) कहेंगे। (88)

फिर वह एक (और) सामान के पीछे पड़ा। (89)

यहां तक कि जब वह सूरज के तुलूअ होने के मुक़ाम पर पहुँचा तो उस को पाया (देखा) कि वह एक ऐसी कौम पर तुलूअ हो रहा है जिन के लिए हम ने उस (सूरज) के आगे नहीं बनाया था कोई पर्दा (ओट)। (90)

यह है (हकीक़त) और जो कुछ उस के पास था उसकी ख़बर हमारे अहाता-ए-इल्म में है। (91)

फिर वह (एक और) सामान के पीछे पड़ा। (92)

याह तक कि जब वह पहुँचा दो पहाड़ों के दरमियान, उस ने उन दोनों के बीच में एक कौम पाई, वह लगते न थे कि कोई बात समझें। (93)

अन्हों ने कहा ऐ जुलकरनैन!

वेशक याजूज और माजूज ज़मीन में फ़सादी है तो क्या हम तेरे लिए (जमा) कर दें कुछ माल? ता कि हमारे और उन के दरमियान एक दीवार बना दे। (94)

उस ने कहा जिस पर मुझे मेरे रब ने कुदरत दी वह बेहतर है, पस तुम मेरी मदद करो कुव्वते (बाजू) से, मैं तुम्हारे और उन के दरमियान एक आड़ बना दूँगा। (95)

मझे लोहे के तख़्ते ला दो, यहां तक कि जब उस ने बराबर कर दिया दोनों पहाड़ों के दरमियान, उस ने कहा (अब) धोको, यहां तक कि जब (धोकर) उसे आग कर दिया, उस ने कहा मेरे पास लाओ कि मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डालूँ, (96)

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَاتَّبَعَ									
सो वह पीछे पड़ा	84	सामान	हर शौ	से	और हम ने उसे दिया	ज़मीन में	उस को	वेशक हम ने कुदरत दी	
سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ									
चश्मा-नदी	में	डूब रहा है	उस ने पाया उसे	सूरज	गुरुब होने का मुक़ाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	85	एक सामान
حَمِيَّةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلْنَا يَبَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّمَا أَنْ									
यह कि	या-चाहे	ऐ जुलकरनैन	हम ने कहा	एक कौम	उस के नज़्दीक	और उस ने पाया	दलदल		
تُعَذِّبُ وَإِنَّمَا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ إِنَّمَا مَنْ ظَلَمَ									
जिस ने जुल्म किया	अच्छा	उस ने कहा	86	कोई भलाई	उन में-से	तू इख़्तियार करे	यह कि	और या चाहे	तू सज़ा दे
فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا ثَكْرًا ﴿٨٧﴾ وَإِنَّمَا مَنْ									
जो	और अच्छा	87	बड़ा-सख़्त	अज़ाब	तो वह उसे अज़ाब देगा	अपने रब की तरफ़	वह लौटाया जाएगा	फिर	हम उसे सज़ा देंगे
أَمِنْ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءُ الْحُسْنَىٰ ۖ وَسنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا									
अपना काम	मुतअख़िक्	उस के लिए	और अनक़रीब हम कहेंगे	भलाई	बदला	तो उस के लिए	नेक	और उस ने अमल किया	ईमान लाया
يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ									
तुलूअ हो रहा है	उस ने उस को पाया	सूरज	तुलूअ होने का मुक़ाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	89	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर
عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَهُمْ مِنْ دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذَلِكَ ۖ وَقَدْ أَحَطْنَا									
और हमारे अहाते में है	यही	90	कोई पर्दा	उस के आगे	उन के लिए	हम ने नहीं बनाया	एक कौम पर		
بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ									
दो दीवारों (पहाड़)	दरमियान	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	92	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर	91	अज़ रूप ख़बर
وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا ۚ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوا									
अन्हों ने कहा	93	कोई बात	वह समझें	नहीं लगते थे	एक कौम	दोनों के बीच	उस ने पाया		
يَبَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ									
तो क्या	ज़मीन में	फ़साद करने वाले (फ़सादी)	और माजूज	याजूज	वेशक	ऐ जुलकरनैन			
نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ									
उस ने कहा	94	एक दीवार	और उन के दरमियान	हमारे दरमियान	कि तू बनादे	पर-ताकि	कुछ माल	तेरे लिए	हम कर दें
مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ									
और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	मैं बना दूँगा	कुव्वत से	पस तुम मेरी मदद करो	बेहतर	मेरा रब	उस में	जिस पर कुदरत दी मुझे	
رَدْمًا ﴿٩٥﴾ اتُّونِي زُبْرَ الْحَدِيدِ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ									
उस ने कहा	दोनों पहाड़	दरमियान	उस ने बराबर कर दिया	जब	यहां तक कि	लोहे के तख़्ते	मुझे ला दो तुम	95	मज़बूत आड़
انْفُخُوا حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۖ قَالَ اتُّونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾									
96	पिघला हुआ तांबा	उस पर	मैं डालूँ	ले आओ मेरे पास	उस ने कहा	आग	जब उसे कर दिया	याहां तक कि	धोको

فَمَا اسْتَطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ									
उस ने कहा	97	नक़ब	उस में	और वह न लगा सकेंगे	उस पर चढ़ें	कि	फिर न कर सकेंगे		
هَذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَبِّيَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّيَ جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۚ وَكَانَ									
और है	हमवार	उस को कर देगा	मेरा रब	वादा	आएगा	पस जब	मेरे रब से	रहमत	यह
وَعْدُ رَبِّيَ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ									
वाज़ (दूसरे) के अन्दर	रेला मारते	उस दिन	उन के वाज़	और हम छोड़ देंगे	98	सच्चा	मेरा रब	वादा	
وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ									
काफ़िरों के	उस दिन	जहन्नम	और हम सामने कर देंगे	99	सब को	फिर हम उन्हें जमा करेंगे	और फूँका जाएगा सूर		
عَرَضًا ﴿١٠٠﴾ الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا									
और वह थे	मेरा ज़िक्र	से	पर्दे में	उन की आँखें	थी	वह जो कि	100	विलकुल सामने	
لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا									
कि वह बना लेंगे	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया			क्या गुमान करते हैं	101	सुनना	न ताक़त रखते		
عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزْلًا ﴿١٠٢﴾									
102	ज़ियाफ़त	काफ़िरों के लिए	जहन्नम	हम ने तैयार किया	वेशक हम	कारसाज़	मेरे सिवा	मेरे बन्दे	
قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ									
उन की कोशिश	बरबाद हो गई	वह लोग	103	आमाल के लिहाज़ से	बदतरीन घाटे में	हम तुम्हें बतलाएँ	क्या	फरमा दें	
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ أُولَٰئِكَ									
यही लोग	104	काम	अच्छे कर रहे हैं	कि वह	खयाल करते हैं और वह	दुनिया की ज़िन्दगी	में		
الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ									
पस हम काइम न करेंगे	उन के अमल (जमा)	पस अकारत गए	और उस की मुलाक़ात	अपना रब	आयतों का	जिन लोगों ने इन्कार किया			
لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَزُنًا ﴿١٠٥﴾ ذَلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمَ بِمَا كَفَرُوا									
उन्होंने ने कुफ़ किया	इस लिए कि	जहन्नम	उन का बदला	यह	105	कोई वज़न	कियामत के दिन	उन के लिए	
وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُورًا ﴿١٠٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا									
जो लोग ईमान लाए			वेशक	106	हँसी मज़ाक़	और मेरे रसूल	मेरी आयात	और ठहराया	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزْلًا ﴿١٠٧﴾ خَالِدِينَ فِيهَا									
उस में	हमेशा रहेंगे	107	ज़ियाफ़त	फ़िरदौस के वागात	उन के लिए	है	और उन्होंने ने नेक अमल किए		
لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حَوْلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمَاتِ رَبِّي									
मेरा रब	वातों के लिए	रोशनाई	समन्दर	हो	अगर	फरमा दें	108	जगह बदलना	वहां से वह न चाहेंगे
لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾									
109	मदद को	उस जैसा	हम ले आएँ	और अगरचे	मेरे रब की बातें	कि ख़त्म हो	पहले	तो ख़त्म हो जाए समन्दर	

फिर वह (याज़ूज माज़ूज) न उस पर चढ़ सकेंगे, और न उस पर नक़ब लगा सकेंगे। (97)

उस ने कहा यह मेरे रब की (तरफ़) से रहमत है, पस जब आएगा मेरे रब का वादा (मक़ररा वक़्त) वह उस को हमवार कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (98)

और हम छोड़ देंगे उन के वाज़ को उस दिन रेला मारते हुए एक दूसरे के अन्दर, और सूर फूँका जाएगा, फिर हम उन सब को जमा करेंगे। (99)

और हम उस दिन जहन्नम सामने कर देंगे काफ़िरों के बिलकुल सामने। (100)

और मेरे ज़िक्र से जिन की आँखें पर्दा-ए-(गफ़लत) में थीं, वह सुनने की ताक़त न रखते थे (सुन न सकते थे)। (101)

जिन लोगों ने कुफ़ किया, क्या वह गुमान करते हैं? कि वह मेरे बन्दों को बना लेंगे मेरे सिवा कारसाज़। वेशक हम ने तैयार किया जहन्नम को काफ़िरों की ज़ियाफ़त के लिए। (102)

फरमा दें क्या हम तुम्हें बतलाएँ आमाल के लिहाज़ से बदतरीन घाटे में (कौन हैं)! (103)

वह लोग जिन की बरबाद हो गई कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में, और वह खयाल करते हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं। (104)

यही लोग हैं जन्होंने ने इन्कार किया अपने रब की आयतों का और उस की मुलाक़ात का, पस अकारत गए उन के अमल, पस क़ियामत के दिन उन के लिए कोई वज़न काइम न करेंगे (उन के अमल वे वज़न होंगे)। (105)

यह उन का बदला है जहन्नम, इस लिए कि उन्होंने ने कुफ़ किया और मेरी आयतों को और मेरे रसूलों को हैंसी मज़ाक़ ठहराया। (106)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए उन के लिए ज़ियाफ़त है फ़िरदौस (बहिश्त) के वागात। (107)

उन में हमेशा रहेंगे, वह वहाँ से जगह बदलना न चाहेंगे। (108)

फरमा दें अगर समन्दर मेरे रब की बातें (लिखने के लिए) रोशनाई बन जाए तो समन्दर (का पानी) ख़तम हो जाएगा उस से पहले कि मेरे रब की बातें ख़तम हों अगरचे हम उस की मदद को उस जैसा (और समन्दर भी) ले आएँ। (109)

आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम जैसा बशर हूँ (अलबत्ता) मेरी तरफ़ वहि की जाती है, तुम्हारा माबूद माबूदे वाहिद है, सो जो अपने रब की मुलाकात की उम्मीद रखता है उसे चाहिए कि वह अच्छे अमल करे और वह अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (110) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है काफ़-हा-या-ऐन-साद। (1) यह तज़क़िरा है तेरे रब की रहमत का, उस के बन्दे ज़क़रिया (अ) पर। (2) (याद करो) जब उस ने अपने रब को आहिस्ता से पुकारा। (3) उस ने कहा ऐ मेरे रब! वेशक (बुढ़ापे से) मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं, और मेरा सर सफ़ेद वालों से शोले मारने लगा है (बिलकुल सफ़ेद हो गया) और मैं (कभी) तुझ से मांग कर ऐ मेरे रब महरूम नहीं रहा हूँ। (4) और अलबत्ता मैं अपने बाद अपने रिश्तेदारों से डरता हूँ, और मेरी वीवी बाँझ है, तू मुझे अ़ता फ़रमा अपने पास से एक वारिस। (5) वह वारिस हो मेरा और औलादे याकूब (अ) का, और ऐ मेरे रब! उसे पसंदीदा बना दे। (6) (इरशाद हुआ) ऐ ज़क़रिया (अ)! वेशक हम तुझे एक लड़के की बशारत देते हैं, उस का नाम यहया (अ) है। हम ने इस से क़ब्ल किसी को उस का हम नाम नहीं बनाया। (7) उस ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि मेरी वीवी बाँझ है, और मैं पहुँच गया हूँ बुढ़ापे की इन्तिहाई हद को। (8) उस ने कहा उसी तरह, तेरा रब फ़रमाता है, यह (अमर) मुझ पर आसान है, और इस से क़ब्ल मैं ने तुझे पैदा किया, जब कि तू कुछ भी न था। (9) उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी (मक़रर) कर दे, फ़रमाया तेरी निशानी (यह है) कि तू लोगों से बात न करेगा तीन रात (दिन) ठीक (होने के बावजूद)। (10) फिर वह मेहरावे (इबादत) से अपनी क़ौम के पास निकल कर (आया) तो उस ने उन की तरफ़ इशारा किया कि उसकी पाकीज़गी बयान करो सुबह ओ शाम। (11)

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُمُ إِلَهُ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ											
हो	सो जो	वाहिद	माबूद	तुम्हारा माबूद	फकत	मेरी तरफ	वहि की जाती है	तुम जैसा	बशर	इस के सिवा नहीं कि मैं	फरमा दें
يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ﴿١١٠﴾											
110	किसी को	अपना रब	इबादत में	और वह शरीक न करे	अच्छे	अमल	तो उसे चाहिए कि वह अमल करे	अपना रब	मुलाकात	उम्मीद रखता है	
آيَاتُهَا ٩٨ ﴿١٩﴾ سُورَةُ مَرْيَمَ ﴿٢٠﴾ زَكُوٰعَاتُهَا ٦											
रक़ुआत 6 (19) सूरह मरयम आयात 98											
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ											
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है											
كَهَيِّصَ ﴿١﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكْرِیَّا ﴿٢﴾ اِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ											
अपना रब	उस ने पुकारा	जब	2	ज़क़रिया (अ)	अपना बन्दा	तेरा रब	रहमत	तज़क़िरा	1	काफ़ हा या ऐन साद	
نِدَاءٌ خَفِیًّا ﴿٣﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ											
सर	और शोले मारने लगा	मेरी	हड्डियां	कमज़ोर हो गई	वेशक मैं	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	3	आहिस्ता से	पुकारना	
شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِیًّا ﴿٤﴾ وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِیَ											
अपने रिश्तेदार	डरता हूँ	और अलबत्ता मैं	4	महरूम	ऐ मेरे रब	तुझ से मांग कर	और मैं नहीं रहा	सफ़ेद बाल			
مِنْ وَرَآئِیْ وَكَانَتْ امْرَأَتِی عَاقِرًا فَهَبْ لِی مِنْ لَدُنْكَ وَلِیًّا ﴿٥﴾ یٰرَبُّنِّیْ											
मेरा वारिस हो	5	एक वारिस	अपने पास से	तू मुझे अ़ता कर	बाँझ	मेरी बीवी	और है	अपने बाद			
وَبِیْرْثْ مِنْ آلِ یَعْقُوبَ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِیًّا ﴿٦﴾ یٰزَکَرِیَّا إِنَّا نُبَشِّرُکَ											
तुझे बशारत देते हैं	वेशक हम	ऐ ज़क़रिया (अ)	6	पसन्दीदा	ऐ मेरे रब	और उसे बनादे	औलादे याकूब (अ)	से - का	और वारिस हो		
بِغُلَامٍ إِسْمُهُ یَحْیٰی ۚ لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِیًّا ﴿٧﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ											
कैसे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	7	कोई हम नाम	इस से क़ब्ल	उस का	नहीं बनाया हम ने	यहया	उस का नाम	एक लड़का	
یَكُونُ لِی غُلَامٌ وَكَانَتْ امْرَأَتِی عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْکِبَرِ											
बुढ़ापा	से - की	और मैं पहुँच चुका हूँ		बाँझ	मेरी बीवी	जब कि वह है	मेरे लिए (मेरा) लड़का	होगा वह			
عَرِیًّا ﴿٨﴾ قَالَ کَذٰلِکَ ۚ قَالَ رَبُّکَ هُوَ عَلٰی هٰیْنٍ وَقَدْ خَلَقْتَکَ											
तुझे पैदा किया	और मैं ने	आसान	मुझ पर	वह (यह)	तेरा रब	फरमाया	उसी तरह	उस ने कहा	8	इन्तिहाई हद	
مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَیًّا ﴿٩﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّیْ اٰیَةً ۚ قَالَ											
फरमाया	कोई निशानी	मेरे लिए	कर दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	9	कोई चीज़ (कुछ भी)	जब कि तू न था	क़ब्ल	इस से	
اٰیَـٰتِکَ اِلَّا تُکَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَیَالٍ سَوِیًّا ﴿١٠﴾ فَخَرَجَ عَلٰی قَوْمِہِ											
अपनी कौम	पास	फिर वह निकला	10	ठीक	रात	तीन	लोग (जमा)	तू न बात करेगा	तेरी निशानी		
مِنَ الْمَحْرَابِ فَآوَحٰی اِلَیْہِم اَنْ سَبِّحُوْا بُکْرَةً وَعَشِیًّا ﴿١١﴾											
11	और शाम	सुबह	कि उस की पाकीज़गी बयान करो	उन की तरफ	तो उस ने इशारा किया	मेहराब	से				

يُحْيِي خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ وَاتَيْنَاهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا (١٢) وَحَنَانًا							
और शफ़क़त	12	वचन से	नबूख़त - दानाई	और हम ने उसे दी	मज़बूती से	किताब	पकड़ो (थाम लो)
مَنْ لَدُنَّا وَزَكْوَةً وَكَانَ تَقِيًّا (١٣) وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ							
और न था वह	अपने माँ बाप से	और अच्छा सुलूक करने वाला	13	परहेज़गार	और वह था	और पाकीज़गी	अपने पास से
جَبَارًا عَصِيًّا (١٤) وَسَلَّمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ وَيَوْمَ							
और जिस दिन	वह फ़ौत होगा	और जिस दिन	वह पैदा हुआ	जिस दिन	उस पर	और सलाम	14
يُبْعَثُ حَيًّا (١٥) وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا							
अपने घर वालों से	जब वह यकसू हो गई	मरयम (अ)	किताब में	और ज़िक्र करो	15	ज़िन्दा हो कर	उठाया जाएगा
مَكَانًا شَرْقِيًّا (١٦) فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا							
फिर हम ने भेजा	पर्दा	उन की तरफ़	से	फिर डाल लिया	16	मशरिफ़ी	मकान
إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا (١٧) قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ							
पनाह में आती हूँ	वेशक मैं	वह बोली	17	ठीक	एक आदमी	उस के लिए	शक़ल बन गया
بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا (١٨) قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ							
तेरे रब का	भेजा हुआ	कि मैं	इस के सिवा नहीं	उस ने कहा	18	परहेज़गार	अगर तू है
لَا هَبْ لَكَ غُلَامًا زَكِيًّا (١٩) قَالَتْ أَنِّي يَكُونُ لِي غُلَمٌ وَلَمْ							
जब कि नहीं	लड़का	मेरे	होगा	कैसे	वह बोली	19	पाकीज़ा
يَمْسَسَنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكْ بَغِيًّا (٢٠) قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكِ							
तेरा रब	फ़रमाया	यूँही	उस ने कहा	20	बदकार	और मैं नहीं हूँ	किसी वशर ने
هُوَ عَلَىٰ هَيْنٍ وَلَنَجْعَلَ لَآيَةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَّا وَكَانَ							
और है	अपनी तरफ़ से	और रहमत	लोगों के लिए	एक निशानी	और ताकि हम उसे बनाएं	आसान	मुझ पर
أَمْرًا مَّقْضِيًّا (٢١) فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا (٢٢)							
22	दूर	एक जगह	उसे ले कर	पस वह चली गई	फिर उसे हमल रह गया	21	तै शुदा
فَاجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يَلِيتَنِي مِثُّ							
मर चुकी होती	एक काश मैं	वह बोली	खजूर का दरख़्त	जड़	तरफ़	दर्दज़ाह	फिर उसे ले आया
قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا مِّنْسِيًّا (٢٣) فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا							
उस के नीचे	से	पस उसे आवाज़ दी	23	भूली बिसरी	और मैं हो जाती	इस से क़बल	
أَلَا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا (٢٤) وَهَزَيْ							
और हिला	24	एक चश्मा	तेरे नीचे	तेरा रब	कर दिया है	कि न घबरा तू	
إِلَيْكَ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسْقِطُ عَلَيْكَ رَطْبًا جَنِيًّا (٢٥)							
25	खजूरें	ताज़ा ताज़ा	तुझ पर	झड़ पड़ेंगी	खजूर	तने को	अपनी तरफ़

(इरशादे इलाही हुआ) ऐ यहया (अ)! किताब को मज़बूती से थाम लो, और हम ने उसे वचन (ही) से नबूख़त ओ दानाई देदी। (12) और अपने पास से शफ़क़त और पाकीज़गी (अता की) और वह परहेज़गार था, (13) और वह अपने माँ बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था, और न था गर्दन कश नाफ़रमान। (14) और सलाम (सलामती) हो उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ, और जिस दिन वह फ़ौत होगा, और जिस दिन ज़िन्दा करके उठाया जाएगा। (15) और किताब (कुरआन) में मरयम (अ) का ज़िक्र (याद) करो, जब वह अपने घर वालों से अलग हो गई एक मशरिफ़ी मकान में। (16) फिर उस ने डाल लिया उन की तरफ़ से पर्दा, फिर हम ने उस की तरफ़ अपने फरिश्ते को भेजा, वह उस के लिए ठीक एक आदमी की शक़ल बन कर आया। (17) वह बोली वेशक मैं तुझ से अल्लाह की पनाह में आती हूँ, अगर तू परहेज़गार है (यहां से हट जा)। (18) उस ने कहा इस के सिवा नहीं कि मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूँ ताकि तुझे एक पाकीज़ा लड़का अता करूँ। (19) वह बोली मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि न मुझे किसी वशर ने छुआ, और न मैं बदकार हूँ। (20) उस ने कहा उसी तरह (अल्लाह का फ़ैसला है), तेरे रब ने फ़रमाया कि यह मुझ पर आसान है, और ताकि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएं, और अपनी तरफ़ से रहमत, और यह है एक तै शुदा अमर। (21) फिर उसे हमल रह गया, पस वह उसे ले कर एक दूर जगह चली गई। (22) फिर दर्द ज़ह उसे खजूर के दरख़्त की जड़ की तरफ़ ले आया, वह बोली, ए काश! मैं इस से क़बल मर चुकी होती, और मैं हो जाती भूली बिसरी। (23) पस उसे उस के नीचे (वादी) से (फरिश्ते ने) आवाज़ दी: तू घबरा नहीं, तेरे रब ने तेरे नीचे एक चश्मा (जारी) कर दिया है। (24) और खजूर का तना अपनी तरफ़ हिला, तुझ पर ताज़ा खजूरें झड़ पड़ेंगी। (25)

तू खा और पी और आँखें ठंडी कर, फिर अगर तू किसी आदमी को देखे तो कह दे कि मैं ने रहमान के लिए रोज़े की नज़र मानी है, पस आज हरगिज़ किसी आदमी से कलाम न करूँगी। (26)

फिर वह उसे उठा कर अपनी कौम के पास लाई, वह बोले ऐ मरयम (अ)! तू लाई है ग़ज़ब की शै। (27)

ऐ हारून (अ) की बहन! तेरा बाप बुरा आदमी न था और न तेरी माँ ही थी बदकार। (28)

तो मरयम ने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा किया, वह बोले: हम गहवारे (गोद) के बच्चे से कैसे बात करें? (29)

बच्चे ने कहा: बेशक मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब दी, (30)

और मुझे नबी बनाया, और जहाँ कहीं मैं हूँ मुझे वाबरकत बनाया है, और जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ मुझे हुक्म दिया है नमाज़ का और ज़कात का, (31)

और अपनी माँ से अच्छा सुलूक करने का, और उस ने मुझे नहीं बनाया सरकश, बदनसीब। (32)

और सलामती हो मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन मैं मरूँगा, और जिस दिन मैं ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा। (33)

यह है ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ), सच्ची बात जिस में वह (लोग) शक करते हैं। (34)

अल्लाह के लिए (सज़ावार) नहीं है कि वह कोई बेटा बनाए, वह पाक है, जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उस के सिवा नहीं कि वह कहता है “हो जा” पस वह हो जाता है। (35)

और बेशक अल्लाह मेरा और तुम्हारा रब है, पस उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है। (36)

(फिर अहले किताब के) फिरकों ने इख़्तिलाफ़ किया बाहम, पस ख़राबी है काफ़िरों के लिए (क़ियामत के) बड़े दिन की हाज़िरी से, (37)

क्या कुछ सुनेंगे! और क्या कुछ देखेंगे! जिस दिन वह हमारे सामने आएंगे, लेकिन आज के दिन ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (38)

فَكُلِّيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۖ فَاِمَّا تَرَيْنَ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ							
तू खा	और पी	और आँखें ठंडी कर	आँखें	फिर अगर तू देखे	से	आदमी	कोई
فَقَوْلِيْ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۚ							
तो कह दे	कि मैं ने नज़र मानी है	रहमान के लिए	रोज़ा	पस मैं हरगिज़ कलाम न करूँगी	आज	किसी आदमी	26
فَاتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۚ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ۚ							
फिर वह उसे ले कर आई	अपनी कौम	उसे उठाए हुए	वह बोले	ऐ मरयम	तू लाई है	शै	27
يٰاُخْتُ هُرُوْنُ مَا كَانَ اَبُوْكَ اَمْرًا سَوْءٍ ۚ وَمَا كَانَتْ اُمُّكَ بَغِيًّا ۚ							
ऐ हारून (अ) की बहन	न	था	तेरा बाप	आदमी	बुरा	और न थी	28
فَاَشَارَتْ اِلَيْهٖ ۚ قَالُوْا كَيْفَ نُّكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۚ							
तो मरयम ने इशारा किया	उस की तरफ़	वह बोले	कैसे हम बात करें	जो है	गहवारे में	बच्चा	29
قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۚ اَتٰنِي الْكِتٰبُ وَجَعَلْنِيْ نَبِيًّا ۚ وَجَعَلْنِيْ							
बच्चे ने कहा बेशक मैं	अल्लाह का बन्दा	उस ने मुझे दी है	किताब	और मुझे बनाया है	नबी	30	और मुझे बनाया है
مُبْرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۚ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ							
वाबरकत	जहाँ कहीं	मैं हूँ	और मुझे हुक्म दिया है उस ने	नमाज़ का	और ज़कात का	जब तक मैं रहूँ	
حَيًّا ۚ وَبَرًّا بِوَالِدَتِيْ ۚ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ۚ وَالسَّلَامُ							
ज़िन्दा	31	और अच्छा सुलूक करने वाला अपनी माँ से	और उस ने मुझे नहीं बनाया	सरकश	बदनसीब	32	और सलामती
عَلٰى يَوْمٍ وُّلِدْتُ وَيَوْمٍ اَمُوْتُ وَيَوْمٍ اُبْعَثُ حَيًّا ۚ ذٰلِكَ							
मुझ पर	जिस दिन	मैं पैदा हुआ	और जिस दिन	मैं मरूँगा	और जिस दिन	उठाया जाऊँगा	33
عِيْسٰى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۚ مَا كَانَ لِلّٰهِ							
ईसा (अ)	इब्ने मरयम	वात	सच्ची	वह जिस में	वह शक करते हैं	34	नहीं है अल्लाह के लिए
اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ سُبْحٰنَهٗ ۚ اِذَا قُضِيَ اَمْرًا فَاتَمَّا يَقُوْلُ							
कि	वह बनाए	कोई	बेटा	वह पाक है	जब वह फ़ैसला करता है	किसी काम	तो इस के सिवा नहीं
لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۚ هٰذَا							
उस को	हो जा	पस वह हो जाता है	35	और बेशक	अल्लाह	मेरा रब	और तुम्हारा रब
صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۚ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ							
रास्ता	सीधा	36	फिर इख़्तिलाफ़ किया	फ़िर्कें	आपस में (बाहम)	पस ख़राबी	
لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدٍ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۚ اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصُرْ							
काफ़िरों के लिए	से	हाज़िरी	बड़ा दिन	37	सुनेंगे	क्या कुछ	और देखेंगे
يَوْمَ يَأْتُوْنَآ لَكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۚ							
जिस दिन	वह हमारे सामने आएंगे	लेकिन	ज़ालिम (जमा)	आज के दिन	में	खुली गुमराही	38

وَأَنذَرُهم يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ						
और वह	गफ़लत में है	लेकिन वह	काम	जब फैसला कर दिया जाएगा	हसरत का दिन	और उन को डरावें आप (स)
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِنَّا						
और हमारी तरफ़	उस पर	और जो	ज़मीन	वारिस होंगे	वेशक हम	ईमान नहीं लाते 39
يُرْجَعُونَ ﴿٤٠﴾ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا						
सच्चे	वेशक वह थे	इब्राहीम (अ)	किताब में	और याद करो	40	वह लौटाए जाएंगे
نَبِيًّا ﴿٤١﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ						
और न देखे	जो न सुने	तुम क्यों परस्तिश करते हो	ऐ मेरे अब्बा	अपने बाप को	जब उस ने कहा	नबी 41
وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٢﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا						
जो	वह इल्म	वेशक मेरे पास आया है	वेशक मैं	ऐ मेरे अब्बा	42	कुछ तुम्हारे और न काम आए
لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبَعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾ يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ						
शैतान	परस्तिश न कर	ऐ मेरे अब्बा	43	सीधा	रास्ता	मैं तुम्हें दिखाऊँगा तुम्हारे पास पस मेरी बात मानो तुम्हारे पास नहीं आया
إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ						
कि	डरता हूँ	वेशक मैं	ऐ मेरे अब्बा	44	नाफरमान	रहमान का है शैतान वेशक
يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمَنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾ قَالَ أَرَأَيْتَ						
क्या रूगदाँ	उस ने कहा	45	साथी	शैतान का	फिर तू हो जाए	रहमान से-का अज़ाब तुझे आपकड़े
أَنْتَ عَنِ الْهَيْئَةِ يَا إِبْرَاهِيمَ لَنْ لَّمْ تَنْتَه لَارْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ﴿٤٦﴾						
46	एक मुद्दत के लिए	और मुझे छोड़ दे	तो मैं तुझे संगसार कर दूँगा	तू बाज़ न आया	अगर	ऐ इब्राहीम (अ) मेरे माबूद (जमा) से तू
قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ﴿٤٧﴾						
47	मेहरबान	मुझ पर	है	वेशक वह	अपना रब	तेरे लिए मैं अभी वख़्शिश मांगूँगा तुझ पर सलाम उस ने कहा
وَأَعْتَزِّلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُوا رَبِّي عَسَى						
उम्मीद है	अपना रब	और मैं इबादत करूँगा	अल्लाह	सिवाए	तुम परस्तिश करते हो	और जो और किनारा कशी करता हूँ तुम से
أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ﴿٤٨﴾ فَلَمَّا اغْتَرَزْلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ						
वह परस्तिश करते थे	और जो	वह किनारा कश होगा उन से	फिर जब	48	महरूम	अपना रब इबादत से कि न रहूँगा
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾						
49	नबी	हम ने बनाया	और सब को	और याकूब (अ)	इसहाक (अ)	उस को हम ने अता किया अल्लाह सिवाए
وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾						
50	निहायत बुलन्द	सच्चा-जमील	ज़िक्र	उन का	और हम ने किया	अपनी रहमत से उन्हें और हम ने अता किया
وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ مُوسَى إِنَّهُ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾						
51	नबी	रसूल	और था	वरगुज़ीदा था	वेशक वह	मूसा (अ) किताब में और याद करो

और आप (स) उन्हें हसरत के दिन से डरावें जब मामले का फैसला कर दिया जाएगा, लेकिन वह गफ़लत में है, और वह ईमान नहीं लाते। (39) वेशक हम वारिस होंगे ज़मीन के और जो कुछ उस पर है, और वह हमारी तरफ़ लौटाए जाएंगे। (40) और किताब में इब्राहीम (अ) को याद करो, वेशक वह सच्चे नबी थे। (41) जब उस ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे अब्बा: तुम क्यों उस की परस्तिश करते हो? जो न कुछ सुने और न देखे, और न काम आए तुम्हारे कुछ भी। (42) ऐ मेरे अब्बा! वेशक मेरे पास वह इल्म (वहि) आया है जो तुम्हारे पास नहीं आया, पस मेरी बात मानो, मैं तुम्हें ठीक सीधा रास्ता दिखाऊँगा। (43) ऐ मेरे अब्बा! शैतान की परस्तिश न कर, वेशक शैतान रहमान का नाफरमान है। (44) ऐ मेरे अब्बा! वेशक मैं डरता हूँ कि (कहीं) रहमान का अज़ाब तुझे (न) आ पकड़े। फिर तू हो जाए शैतान का साथी। (45) उस ने कहा ऐ इब्राहीम (अ)! क्या तू मेरे माबूदों से रूगदाँ है? अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझे ज़रूर संगसार कर दूँगा, और मुझे एक मुद्दत के लिए छोड़ दे। (46) इब्राहीम (अ) ने कहा तुझ पर सलाम हो, मैं अभी तेरे लिए अपने रब से वख़्शिश मांगूँगा, वेशक वह मुझ पर मेहरबान है, (47) और मैं किनारा कशी करता हूँ तुम से और अल्लाह के सिवा जिन की तुम परस्तिश करते हो, और मैं अपने रब की इबादत करूँगा, उम्मीद है कि मैं अपने रब की इबादत करके महरूम न रहूँगा। (48) फिर जब वह (इब्राहीम अ) उन से और अल्लाह के सिवा वह जिन की परस्तिश करते थे किनारा कश हो गए, हम ने उस को इसहाक (अ) और याकूब (अ) अता किए और (उन) सब को हम ने नबी बनाया। (49) और हम ने अपनी रहमत से उन्हें (बहुत कुछ) अता किया और हम ने उन का ज़िक्र जमील निहायत बुलन्द किया। (50) और किताब में मूसा (अ) को याद करो, वेशक वह वरगुज़ीदा थे, और रसूल नबी थे। (51)

और हम ने उसे कोहे तूर की दाहिनी जानिव से पुकारा, और हम ने उसे राज बतलाने को नज़दीक बुलाया। (52)

और हम ने उसे अपनी रहमत से उस का भाई हारून (अ) अता किया। (53)

और किताब में इस्माईल (अ) को याद करो, वेशक वह वादे के सच्चे थे, और रसूल नबी थे। (54)

और वह अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे, और वह अपने रब के हां पसंदीदा थे। (55)

और किताब में इदरीस (अ) को याद करो, वेशक वह सच्चे नबी थे। (56)

और हम ने उसे एक बुलन्द मुक़ाम पर उठा लिया। (57)

यह है नबियों में से वह जिन पर अल्लाह ने इन्आम किया औलादे आदम में से, और उन में से जिन्हें हम ने नूह (अ) के साथ (कशती में) सवार किया, और इब्राहीम (अ) और याकूब (अ) की औलाद में से, और उन में से जिन्हें हम ने

हिदायत दी, और चुना, जब उन पर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं वह ज़मीन पर गिर पड़ते सिज़्दा करते और रोते हुए। (58)

फिर उन के बाद चन्द नाख़लफ़ जानशीन हुए, उन्होंने ने नमाज़ गंवादी, और ख़ाहिशाते (नफ़सानी) की पैरवी की, पस अ़नक़रीब उन्हें गुमराही (की सज़ा) मिलेगी। (59)

मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अ़मल किए, पस यही लोग हैं जो जन्नत में दाख़िल होंगे, और ज़री भर भी उन का नुक़सान न किया जाएगा, (60)

हमेशागी के बागात में जिन का वादा रहमान ने गा़इबाना अपने बन्दों से किया, वेशक उस का वादा आने वाला है। (61)

और उस में सलाम के सिवा कोई बेहूदा बात न सुनेंगे, और उन के लिए उस में सुबह ओ शाम उन का रिज़्क है। (62)

यह वह जन्नत है जिस का हम अपने (उन) बन्दों को वारिस बनाएंगे जो परहेज़गार होंगे। (63)

وَنَادَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا ٥٢							
52	राज़ बताने को	और उसे नज़दीक बुलाया	दाहिनी	कोहे तूर	जानिव	से	और हम ने उसे पुकारा
وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ٥٣ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ							
	किताब में	और याद करो	53	नबी	हारून (अ)	उस का भाई	अपनी रहमत से उसे और हम ने अता किया
إِسْمَاعِيلُ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ٥٤							
54	नबी	रसूल	और थे	वादे का सच्चा	थे	वेशक वह	इस्माईल (अ)
وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا ٥٥							
55	पसन्दीदा	अपने रब के हां	और वह थे	और ज़कात	नमाज़ का	अपने घर वाले	और हुक़्म देते थे
وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ٥٦ وَرَفَعْنَاهُ							
	और हम ने उसे उठा लिया	56	नबी	सच्चे	थे	वेशक वह	इदरीस (अ)
مَكَانًا عَلِيًّا ٥٧ أُولَئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ							
नबी (जमा)	से	उन पर	अल्लाह ने इन्श़ाम किया	वह जिन्हें	यह वह लोग	57	बुलन्द एक मुक़ाम
مِنْ ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِنْ ذُرِّيَّةِ							
औलाद	और से	नूह (अ)	साथ	सवार किया हम ने	और उन से जिन्हें	औलादे आदम	से
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَءِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ							
उन पर	जब पढ़ी जाती	और हम ने चुना	हम ने हिदायत दी	और उन से जिन्हें	इब्राहीम (अ) और याकूब (अ)		
آيَاتِ الرَّحْمَنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا ٥٨ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ							
चन्द जानशीन (ना ख़लफ़)	उन के बाद	फिर जानशीन हुए	58	और रोते हुए	सिज़्दा करते हुए	वह गिर पड़ते	रहमान की आयतें
أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَاتِ فَسُوفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ٥٩							
59	गुमराही	उन्हें मिलेगी	पस अ़नक़रीब	खाहिशात	और पैरवी की	नमाज़	उन्होंने ने गंवादी
إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَئِكَ يَدْخُلُونَ							
वह दाख़िल होंगे	पस यही लोग	नेक	और अ़मल किए	और ईमान लाया	तौबा की	जो-जिस	मगर
الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ٦٠ جَنَّتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ							
वादा किया	वह जो	हमेशगी के बा़ा़त	60	कुछ-ज़रा	और उन का न नुक़्सान किया जाएगा	जन्नत	
الرَّحْمَنِ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ٦١ لَا يَسْمَعُونَ							
वह न सुनेंगे	61	आने वाला	उस का वादा	है	वेशक वह	गाइबाना	अपने बन्दे (जमा) रहमान
فِيهَا لَعْنًا إِلَّا سَلَامًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ٦٢							
62	और शाम	सुबह	उस में	उन का रिज़्क	और उन के लिए	सिवा सलाम	बेहूदा उस में
تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ٦٣							
63	परहेज़गार	होंगे	जो	अपने बन्दे	से-को	हम वारिस बनाएंगे	वह जो कि जन्नत यह

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا							
हमारे पीछे	और जो	जो हमारे हाथों में (आगे)	उस के लिए	तुम्हारा रब	हुकम से	मगर	हम उतरते और नहीं
وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا (64) رَبُّ السَّمَوَاتِ							
आस्मानों का रब	64	भूलने वाला	तुम्हारा रब	है	और नहीं	उस के दरमियान	और जो
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ							
तू जानता है	क्या	उस की इबादत पर	और साबित कदम रहो	पस उसी की इबादत करो	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन
لَهُ سَمِيًّا (65) وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ إِذَا مَا مِثْلُ لَسَوْفَ أَخْرُجَ حَيًّا (66)							
हम नाम	65	उस का	और कहता है	इन्सान	क्या जब	मैं मर गया	तो फिर मैं निकाला जाऊँगा
जिन्दा	66	जिन्दा	मैं निकाला जाऊँगा	मैं मर गया	क्या जब	इन्सान	और कहता है
أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا (67)							
क्या नहीं	क्या	याद करता	इन्सान	वेशक हम	हम ने उसे पैदा किया	इस से कबल	जब कि वह न था
فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ							
सो तुम्हारे रब की कसम हम उन्हें	हम उन्हें ज़रूर जमा करेंगे	शैतान (जमा)	फिर	हम उन्हें ज़रूर हाज़िर करलेंगे	इर्द गिर्द	जहन्नम	
جَحِشًا (68) ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَنِ							
घुटनों के बल गिरे हुए	68	फिर	ज़रूर खींच निकालेंगे	से	हर	गिरोह	जो उन में से
अल्लाह रहमान से	बहुत ज़ियादा	वह	जो उन में से	गिरोह	हर	से	ज़रूर खींच निकालेंगे
عِتْيًا (69) ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا (70)							
सरकशी करने वाला	69	फिर	अलबत्ता	खूब वाकिफ़	उन से जो	वह	ज़ियादा मुस्तहिक उस में
और नहीं	70	दाखिल होना	ज़ियादा मुस्तहिक उस में	वह	उन से जो	खूब वाकिफ़	अलबत्ता
مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا (71) ثُمَّ نُنْجِي							
तुम में से	मगर	यहां से गुज़रना होगा	है	पर	तुम्हारा रब	लाज़िम	मुकर्रर किया हुआ
हम नजात देंगे	71	फिर	मुकर्रर किया हुआ	लाज़िम	तुम्हारा रब	पर	है
الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِّيًّا (72) وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ							
वह जिन्होंने ने परहेज़गारी की	और हम छोड़ देंगे	ज़ालिम (जमा)	उस में	घुटनों के बल गिरे हुए	72	और जब	पढ़ी जाती है
उन पर	उन पर	पढ़ी जाती है	और जब	72	घुटनों के बल गिरे हुए	उस में	ज़ालिम (जमा)
أَيُّنَا بَيِّنَتْ قَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ							
हमारी आयतें	वाज़ेह	कहते हैं	वह जिन्होंने ने	कुफ़ किया	उन से जो	वह ईमान लाए	कौन सा
दोनों फ़रीक	दोनों फ़रीक	कौन सा	वह ईमान लाए	उन से जो	कुफ़ किया	वह जिन्होंने ने	कहते हैं
خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا (73) وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ							
बेहतर मुक़ाम	और अच्छी	मजलिस	73	और कितने ही	हम हलाक कर चुके	उन से पहले	गिरोहों में से
वह	गिरोहों में से	उन से पहले	हम हलाक कर चुके	और कितने ही	73	मजलिस	और अच्छी
أَحْسَنُ أَثَا وَرَبِّيًّا (74) قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ							
बहुत अच्छे	सामान	और नमूद	74	कह दीजिए	जो है	गुमराही में	तो ढील दे रहा है
उस को	तो ढील दे रहा है	गुमराही में	जो है	कह दीजिए	74	और नमूद	सामान
الرَّحْمَنُ مَدَّاهُ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا							
रहमान	खूब ढील	यहां तक कि	जब	वह देखेंगे	जिस का वादा किया जाता है	ख्वाह	अज़ाब
और ख्वाह	अज़ाब	ख्वाह	जिस का वादा किया जाता है	वह देखेंगे	जब	यहां तक कि	रहमान
السَّاعَةِ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرُّ مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا (75)							
क़ियामत	पस अब वह जान लेंगे	कौन	वह	वदतर मुक़ाम	और कमज़ोर तर	लशकर	75

और (फ़रिश्तों ने कहा) हम तुम्हारे रब के हुकम के बग़ैर नहीं उतरते, उसी के लिए है जो हमारे आगे, और जो हमारे पीछे है और जो उस के दरमियान है, और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं। (64)

वह रब है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उन के दरमियान है, पस तुम उसी की इबादत करो, और उस की इबादत पर साबित कदम रहो, क्या तू कोई उस का हम नाम जानता है? (65)

और (काफ़िर) इन्सान कहता है क्या जब मैं मर गया तो फिर मैं जिन्दा कर के (ज़मीन से) निकाला जाऊँगा! (66)

क्या इन्सान याद नहीं करता (क्या उसे याद नहीं) कि हम ने उसे इस से पहले पैदा किया जब कि वह कुछ भी न था। (67)

सो तुम्हारे रब की कसम हम उन्हें और शैतानों को ज़रूर जमा करेंगे, फिर हम उन्हें ज़रूर हाज़िर कर लेंगे जहन्नम के गिर्द घुटनों के बल गिरे हुए। (68)

फिर हर गिरोह में से हम उसे ज़रूर खींच निकालेंगे जो उन में अल्लाह रहमान से बहुत ज़ियादा सरकशी करने वाला था। (69)

फिर अलबत्ता हम उन से खूब वाकिफ़ हैं जो उस (जहन्नम) में दाखिल होने के ज़ियादा मुस्तहिक हैं। (70)

और तुम में से कोई नहीं मगर उसे (हर एक को) यहां से गुज़रना होगा। तुम्हारे रब का अपने ऊपर लाज़िम मुकर्रर किया हुआ। (71)

फिर हम उन लोगों को नजात देंगे जिन्होंने ने परहेज़गारी की, और हम ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे हुए। (72)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें पढ़ी जाती हैं तो जिन्होंने ने कुफ़ किया वह ईमान लाने वालों से कहते हैं, दोनों फ़रीक में से किस का मुक़ाम (मरतबा) बेहतर और मजलिस अच्छी है? (73)

और इन से पहले हम कितने ही गिरोह हलाक कर चुके हैं, वह सामान और नमूद में (इन से) बहुत अच्छे थे। (74)

कह दीजिए जो गुमराही में है तो उस को अर-रहमान गुमराही में और खूब ढील दे रहा है यहां तक कि वह देख लेंगे, या अज़ाब या क़ियामत जिस का उन से वादा किया जाता है, पस वह तब जान लेंगे कौन है वदतर मुक़ाम (मरतबा) में? और कमज़ोर तर लशकर में। (75)

और जिन लोगों ने हिदायत हासिल की अल्लाह उन्हें और ज़ियादा हिदायत देता है, और तुम्हारे रब के नज़दीक बाकी रहने वाली नेकियां बेहतर हैं ब-एतिबारे सबाब और बेहतर हैं ब-एतिबारे अन्जाम। (76)

पस क्या तू ने उस शख्स को देखा जिस ने हमारे हुक्मों का इन्कार किया? और कहा मैं ज़रूर माल और औलाद दिया जाऊंगा। (77)

क्या वह ग़ैब पर मत्ला हो गया है? या उस ने अल्लाह रहमान से ले लिया है कोई अहद। (78)

हरगिज़ नहीं! जो वह कहता है अब हम लिख लेंगे और उस को अज़ाब लंबा बढ़ादेंगे। (79)

और हम वारिस होंगे (ले लेंगे) जो वह कहता है और वह हमारे पास अकेला आएगा। (80)

और उन्होंने ने अल्लाह के सिवा (औरों को) माबूद बना लिया है ताकि उन के लिए मोज़िबे इज़ज़त हों। (81)

हरगिज़ नहीं, जल्द ही वह उन की बन्दगी से इन्कार करेंगे और उन के मुखालिफ़ हो जाएंगे। (82)

क्या तुम ने नहीं देखा? बेशक हम ने शैतान भेजे हैं काफ़िरों पर, वह उन्हें खूब उकसाते रहते हैं। (83)

सो तुम उन पर (नुज़ूले अज़ाब की) जल्दी न करो, हम तो सिर्फ़ उन की गिनती पूरी कर रहे हैं (उन के दिन गिन रहे हैं)। (84)

(याद करो) जिस दिन हम परहेज़गारों को अल्लाह रहमान की तरफ़ मेहमान बना कर जमा कर लाएंगे। (85)

और हम गुनाहगारों को हांक कर ले जाएंगे जहन्नम की तरफ़ प्यासे। (86)

वह शफ़ाअत का इख़्तियार नहीं रखते सिवाए उस के जिस ने अल्लाह रहमान से लिया हो इक़्रार। (87)

और वह कहते हैं अल्लाह रहमान ने बेटा बना लिया है, (88)

तहकीक़ तुम (ज़बान पर) बुरी बात लाए हो। (89)

क़रीब है (बईद नहीं) कि आस्मान उस से फट पड़ें और ज़मीन टुकड़े टुकड़े हो जाए, और पहाड़ पारा पारा हो कर गिर पड़ें। (90)

कि उन्होंने ने अल्लाह के लिए मन्सूब किया बेटा। (91)

जब कि रहमान के शायान नहीं कि वह बेटा बनाए। (92)

नहीं कोई जो आस्मानों में है और ज़मीन में है, मगर रहमान के (हुज़ूर) बन्दा हो कर आता है। (93)

उस ने उन को घेर लिया है, और गिन कर उन का शुमार कर लिया है। (94)

और उन में से हर एक क़ियामत के दिन उस के सामने अकेला आएगा। (95)

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى وَالْبَقِيَّةُ الصَّالِحَاتُ																			
नेकियां		और बाकी रहने वाली		हिदायत		हिदायत हासिल की		जिन लोगों ने		अल्लाह		और ज़ियादा देता है							
خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًا ﴿٧٦﴾ أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ																			
इन्कार किया		वह जिस ने		पस क्या तू ने देखा		76		ब एतिबारे अन्जाम		और बेहतर		ब एतिबारे सबाब		तुम्हारे रब के नज़्दीक		बेहतर			
بِأَيَّتِنَا وَقَالَ لَا أُوتِيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٧٧﴾ أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمْ اتَّخَذَ																			
उस ने ले लिया है		या		ग़ैब		क्या वह मुत्तला हो गया है		77		और औलाद		माल		मैं ज़रूर दिया जाऊंगा		और उस ने कहा		हमारे हुक्मों का	
عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ																			
उस को		और हम बढ़ा देंगे		वह जो कहता है		अब हम लिख लेंगे		हरगिज़ नहीं		78		कोई अहद		अल्लाह रहमान से					
مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَنَرِيهِ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوا																			
और उन्होंने ने बना लिया		80		अकेला		और वह हमारे पास आएगा		जो वह कहता है		और हम वारिस होंगे		79		और लंबा		अज़ाब से			
مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا سَيَكْفُرُونَ																			
जल्द ही वह इन्कार करेंगे		हरगिज़ नहीं		81		मोज़िबे इज़्ज़त		उन के लिए		ताकि वह हो		माबूद		अल्लाह के सिवा					
بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ																			
शैतान (जमा)		बेशक हम ने भेजे		क्या तुम ने नहीं देखा		82		मुख़ालिफ़		उन के		और हो जाएंगे		उन की बन्दगी से					
عَلَى الْكَافِرِينَ تُوْزُّهُمْ أَزًّا ﴿٨٣﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَذًّا ﴿٨٤﴾																			
84		गिनती		उन की		सिर्फ़ हम गिनती पूरी कर रहे हैं		उन पर		सो तुम जल्दी न करो		83		उकसाते हैं उन्हें खूब उकसाना		काफ़िर (जमा)		पर	
يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ																			
गुनाहगार (जमा)		और हांक कर ले जाएंगे		85		मेहमान बना कर		रहमान की तरफ़		परहेज़गार (जमा)		हम जमा कर लेंगे		जिस दिन					
إِلَى جَهَنَّمَ وَرَدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ																			
रहमान के पास		जिस ने लिया हो		सिवाए		शफ़ाअत		वह इख़्तियार नहीं रखते		86		प्यासे		जहन्नम		तरफ़			
عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ﴿٨٩﴾																			
89		बुरी		एक बात		तहकीक़ तुम लाए हो		88		बेटा		रहमान		बना लिया है		और वह कहते हैं		87	
تَكَادُ السَّمُوتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾																			
90		पारा पारा		पहाड़		और गिर पड़े		ज़मीन		और टुकड़े टुकड़े हो जाए		उस से		फट पड़े		आस्मान		क़रीब है	
أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾																			
92		बेटा		कि वह बनाए		रहमान के लिए		शायान		जब कि नहीं		91		बेटा		रहमान के लिए		कि उन्होंने ने पुकारा (मन्सूब किया)	
إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا أَتَى الرَّحْمَنَ عَبْدًا ﴿٩٣﴾																			
93		बन्दा		रहमान		मगर आता है		और ज़मीन		आस्मानों में		जो		नहीं तमाम (कोई)					
لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ أَتِيهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾																			
95		अकेला		आएगा उस के सामने क़ियामत के दिन		और उन में से हर एक		94		और उन का शुमार कर लिया है गिन कर		उस ने उन को घेर लिया है							

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ									
वेशक	जो लोग ईमान लाए	और उन्होंने ने	नेक	पैदा कर देगा	उन के लिए	रहमान			
وَدًّا ۙ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ									
मुहब्बत	96	पस उस के सिवा नहीं	हम ने इसे आसान कर दिया है	आप की ज़वान में	ताकि आप खुशखबरी दें उस से	परहेज़गारों	और डराएं उस से		
قَوْمًا لَّدَا ۙ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِشُّ									
झगड़ालू लोग	97	और कितने ही	हम ने हलाक कर दिए	उन से कब्ल	से	गिरोह	क्या	तुम देखते हो	
مِنْهُمْ مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۙ									
उन से	कोई किसी को	या तुम सुनते हो	उन की	आहट	98				
آيَاتُهَا ۙ ۝ (٢٠) سُورَةُ طه ۝ زُكُورَاتُهَا ۙ									
रुकुआत 8 (20) सूरह ता हा आयात 135									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
طه ۙ مَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَى ۙ إِلَّا تَذَكُّرًا لِّمَن									
ता हा	1	हम ने नाज़िल नहीं किया	तुम पर	कुरआन	मुशक्कत में पड़ जाओ	2	याद दिहानी	उस के लिए जो	
يَخْشَى ۙ ۝ تَنْزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمُوتِ الْعُلَى ۙ									
डरता है	3	नाज़िल किया हुआ	से - जिस	बनाया	ज़मीन	और आस्मान (जमा)	ऊंचे	4	
الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۙ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا									
रहमान	अर्श पर	काइम	5	उस के लिए जो	आस्मानों में	और जो			
فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ۙ وَإِنْ تَجْهَرُ بِالْقَوْلِ									
ज़मीन में	और जो	उन दोनों के दरमियान	और जो	नीचे	गीली मिट्टी	6	और अगर	तू पुकार कर कहे	वात
فَاتَّه يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۙ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ									
तो वेशक वह	जानता है	भेद	और निहायत पोशीदा	7	अल्लाह	नहीं कोई माबूद	उस के सिवा	उसी के लिए	सब नाम
الْحُسْنَى ۙ ۝ وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۙ إِذْ رَأَى نَارًا فَقَالَ									
अच्छे	8	और क्या	तुम्हारे पास आई	कोई खबर	मूसा (अ)	9	जब उस ने देखी	आग	तो कहा
لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُمْ مِنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ									
अपने घर वालों को	तुम ठहरो	वेशक मैं ने	देखी है	आग	शायद मैं	तुम्हारे पास लाऊँ	उस से	चिंगारी	या
أَجْدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۙ ۝ فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَمُوسَى ۙ إِنِّي أَنَا									
मैं पाऊँ	आग पर - के	रास्ता	10	जब पस	वह वहाँ आए	आवाज़ आई	ऐ मूसा (अ)	11	मैं वेशक मैं
رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۙ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۙ									
तुम्हारा रब	सो उतार लो	अपनी जूतियाँ	वेशक तुम	पाक मैदान	तुवा	12			

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने किए अमल नेक उन के लिए पैदा कर देगा रहमान (दिलों में) मुहब्बत। (96)

पस उस के सिवा नहीं कि हम ने (कुरआन) को आप (स) की ज़वान में आसान कर दिया ताकि उस से आप (स) परहेज़गारों को खुशखबरी दें और झगड़ालू लोगों को उस से डराएं। (97)

और इन से कब्ल हम ने हलाक कर दिए कितने ही गिरोह, क्या तम उन में से किसी को देखते हो? या उन की आहट सुनते हो? (98)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ता-हा। (1)

हम ने कुरआन तम पर इस लिए नाज़िल नहीं किया कि तम मुशक्कत में पड़ जाओ। (2)

मगर उस के लिए नसीहत है जो डरता है। (3)

नाज़िल किया हुआ है (उस की तरफ से) जिस ने ज़मीन और ऊंचे आस्मान बनाए। (4)

रहमान अर्श पर काइम है। (5)

उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और जो उन दोनों के दरमियान है, और जो ज़मीन के नीचे है। (6)

और अगर तू पुकार कर कहे बात तो वेशक वह भेद जानता है और निहायत पोशीदा (बात को भी)। (7)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी के लिए हैं सब अच्छे नाम। (8)

और क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की खबर आई? (9)

जब उस ने आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि तम ठहरो, वेशक मैं ने देखी है आग, शायद मैं तुम्हारे पास उस से चिंगारी ले आऊँ, या आग पर रास्ते (का पता) पा लूँ। (10)

पस जब वह वहाँ आए, तो आवाज़ आई ऐ मूसा (अ)! (11)

वेशक मैं ही तुम्हारा रब हूँ, सो अपनी जूतियाँ उतार लो, वेशक तम तुवा के पाक वादी में हो। (12)

और मैं ने तुम्हें पसंद किया, पस जो वहि की जाए उस की तरफ़ कान लगा कर सुनो। (13) वेशक मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो और काइम करो मेरी याद के लिए नमाज़, (14) वेशक कियामत आने वाली है, मैं चाहता हूँ कि उसे पोशीदा रखूँ ताकि हर शख्स को बदला दिया जाए उस कोशिश का जो वह करे। (15) पस तुझे उस से वह न रोक दे जो उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी खाहिश के पीछे पड़ा हुआ है, फिर तू हलाक हो जाए। (16) और ऐ मूसा (अ) यह तेरे दाहने हात में क्या है? (17) उस ने कहा यह मेरा अ़सा है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ, और इस से पत्ते झाड़ता हूँ अपनी बकरियों पर, और इस में मेरे और भी कई फ़ाड़े हैं। (18) उस ने फ़रमाया ऐ मूसा (अ)! इसे (ज़मीन पर) डाल दे। (19) पस उस ने डाल दिया, तो नागाह वह दौड़ता हुआ सांप (बन गया)। (20) (अल्लाह ने) फ़रमाया उसे पकड़ ले, और न डर, हम ज़ल्द उसे उस की पहली हालत पर लौटा देंगे, (21) अपना हाथ अपनी बग़ल में लगा ले, वह किसी ऐब के बग़र सफ़ेद (चमकता हुआ) निकलेगा, (यह) दूसरी निशानी है। (22) ताकि हम तुझे दिखाएँ अपनी बड़ी निशानियों में से। (23) तू फ़िराऊन की तरफ़ जा, वेशक वह सरशक हो गया है। (24) मूसा (अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लिए कुशादा कर दे मेरा सीना। (25) और मेरे लिए मेरा काम आसान कर दे। (26) और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे। (27) कि वह मेरी बात समझ लें। (28) और बना दे मेरे लिए वज़ीर (मुआविन) मेरे खानदान से, (29) मेरा भाई हारून (अ)। (30) उस से मेरी कुव्वत (कमर) मज़बूत कर दे। (31) और उसे शरीक कर दे मेरे काम में। (32) ताकि हम कसूरत से तेरी तस्वीह करें, (33) और कसूरत से तुझे याद करें। (34) वेशक तू हमें खूब देखता है। (35) अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ मूसा (अ)! जो तू ने मांगा तहकीक़ तुझे दे दिया गया। (36) और तहकीक़ हम ने तुझ पर एक बार और भी एहसान किया था। (37) जब हम ने तेरी वालिदा को इल्हाम किया जो इल्हाम करना था। (38)

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰ (١٣) إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي (١٤) إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ (١٥) فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَتَرْدَىٰ (١٦) وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يُمُوسَىٰ (١٧)							
और मैं	तुम्हें पसन्द किया	पस कान लगा कर सुनो	उस की तरफ़ जो वहि की जाए	13	वेशक मैं	मैं	अल्लाह
मेरे सिवा	पस मेरी इबादत करो	और काइम करो	नमाज़	मेरी याद के लिए	14	वेशक	कियामत आने वाली
मैं चाहता हूँ	मैं उसे पोशीदा रखूँ	ताकि बदला दिया जाए	हर शख्स	उस का जो वह कोशिश करे	15	पस तुझे रोक न दे	उस से जो
जो	ईमान नहीं रखता	उस पर	और वह पीछे पड़ा	अपनी खाहिश	फिर तू हलाक हो जाए	16	और क्या
यह	यह मेरा अ़सा है	मैं टेक लगाता हूँ	इस पर	और मैं पत्ते झाड़ता हूँ इस से	पर	अपनी बकरियाँ	और मेरे लिए
और भी	और भी	उस ने फ़रमाया	उसे डाल दे	ऐ मूसा (अ)	19	पस उस ने डाल दिया	तो नागाह वह
दौड़ता हुआ	20	फ़रमाया	उसे पकड़ ले	और न डर	हम ज़ल्द उसे लौटा देंगे	उस की हालत	पहली
और (मिला) लगा	अपना हाथ	तक - से	अपनी बग़ल	वह निकलेगा	सफ़ेद	बग़ैर किसी	ऐब
दूसरी	22	ताकि हम तुझे दिखाएँ	अपनी निशानियों से	बड़ी	23	तू जा	तरफ़
गिरह	मेरी ज़बान	से - की	वह समझ लें	मेरी बात	28	और बना दे	मेरे लिए
खानदान	29	हारून (अ)	मेरा भाई	मज़बूत कर उस से	31	और शरीक कर दे	मेरे काम में
ताकि	हम तेरी तस्वीह करें	कसूरत से	33	और तुझे याद करें	कसूरत से	34	वेशक तू
हमें खूब देखता है	35	अल्लाह ने फ़रमाया	तहकीक़ तुझे दे दिया गया	जो तू ने मांगा	ऐ मूसा (अ)	36	और तहकीक़ हम ने तुझ पर एक बार और भी एहसान किया था।
तुझ पर	एक बार	और भी	37	जब	हम ने इल्हाम किया	तरफ़ - को	तेरी वालिदा
जो इल्हाम करना था	38						

أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ						
दर्या	फिर उसे डाल देगा	दर्या में	फिर उसे डाल दे	सन्दूक में	कि तू उसे डाल	
بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَهُ ۖ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً						
मुहब्बत	तुझ पर	और मैं ने डाल दी	और उस का दुश्मन	मेरा दुश्मन	उसे ले लेगा	साहिल पर
مِّنِّي ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلَى عَيْنِي ۝ (३९) إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ						
तो वह कह रही थी	तरी बहन	जा रही थी	जब	39 मेरी आँखों पर (मेरे सामने)	ताकि तू पर्वरिश पाए	अपनी तरफ से
هَلْ أَذِلُّكُمْ عَلَىٰ مَنْ يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا						
उस की आँख	ताकि ठंडी हो	तेरी माँ	तरफ	पस हम ने तुझे लौटा दिया	उस की पर्वरिश करे	जो पर क्या मैं तुम्हें बताऊँ
وَلَا تَحْزَنْ ۖ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ						
और तुझे आजमाया	ग़म से	तो हम ने तुझे नजात दी	एक शख्स	और तू ने क़त्ल कर दिया	और वह ग़म न करे	
فُتُونًا ۖ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ						
वक़्ते मुक़र्रर पर	तू आया	फिर	मदयन वाले	में	कई साल	कई आज़माइशों
يُمُوسَىٰ ۝ (४०) وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ۝ (४१) إِذْهَبْ أَنْتَ وَأَخُوكَ بِآيَتِي						
मेरी निशानियों के साथ	और तेरा भाई	तू	तू जा	41 खास अपने लिए	और हम ने तुझे बनाया	40 ऐ मूसा (अ)
وَلَا تَبَيِّنَا فِي ذِكْرِي ۝ (४२) إِذْهَبَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝ (४३) فَقُولَا لَهُ						
उस को	तुम कहो	43 सरकश हो गया	वेशक वह	फिरऔन	तरफ - पास	तुम दोनों जाओ
قُولَا لَّيْنَا لَعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ۝ (४४) قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ						
वेशक हम डरते हैं	ऐ हमारे रब	दोनों बोले	44 वह डर जाए	या	नसीहत पकड़ ले	शायद वह नर्म बात
أَن يَفْزُطَ عَلَيْنَا ۖ أَوْ أَنْ يَطْفِئَ ۝ (४५) قَالَ لَا تَخَافَا إِنِّي مَعَكُمَا أَسْمِعُ						
मैं सुनता हूँ	तुम्हारे साथ हूँ	वेशक मैं	तुम डरो नहीं	उस ने फ़रमाया	45 वह हद स बढ़े	या हम पर कि वह ज़ियादती करे
وَأَرَىٰ ۝ (४६) فَاتِيَهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ						
बनी इस्राईल	हमारे साथ	पस भेज दे	तेरा रब	वेशक हम दोनों भेजे हुए	और तुम कहो	46 पस जाओ उस के पास और मैं देखता हूँ
وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ						
और सलाम	तेरा रब	से	निशानी के साथ	हम तेरे पास आए हैं	और उन्हें अज़ाब न दे	
عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ۝ (४७) إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ						
पर	अज़ाब	कि	हमारी तरफ	वहि की गई	वेशक	47 हिदायत उस ने पैरवी की जो - जिस पर
مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝ (४८) قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمَا يُمُوسَىٰ ۝ (४९) قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ						
अता की	जिस ने	हमारा रब	उस ने कहा	49 ऐ मूसा (अ)	तुम्हारा रब	पस उस ने कहा
जिस ने झुटलाया	और मुंह फेरा	48	उस ने कहा	पस कौन	तुम्हारा रब	ऐ मूसा (अ)
كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ۝ (५०) قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ۝ (५१)						
हर चीज़	उस की शकल ओ सूरत	फिर	रहनुमाई की	50	उस ने कहा	पहली जमाअतें
51	पहली	जमाअतें	हाल	फिर क्या	उस ने कहा	51

कि तू उसे सन्दूक में डाल, फिर सन्दूक दर्या में डाल दे, फिर डाल देगा दर्या उसे साहिल पर, मेरा और उस का दुश्मन उस को ले लेगा (दर्या से निकाल लेगा) और मैं ने डाल दी तुझ पर मुहब्बत अपनी तरफ से (मख़लूक तुझ से मुहब्बत करे) ताकि तू पर्वरिश पाए मेरे सामने। (39) और (याद कर) जब तेरी बहन जा रही थी तो (आले फिरऔन से) कह रही थी कि क्या मैं तुम्हें (उस का पता) बताऊँ जो इस की पर्वरिश करे? पस हम ने तुझे तेरी माँ की तरफ लौटा दिया, ताकि उस की आँखें ठंडी हों, और वह ग़म न करे, और तू ने एक शख्स को क़त्ल कर दिया तो हम ने तुझे नजात दी ग़म से, और तुझे कई आज़माइशों से आजमाया, फिर कई साल मदयन वालों में ठहरा रहा, फिर तू आया वक़्ते मुक़र्रर पर ऐ मूसा (अ) (मुताबिक़ तक्दीरे इलाही)। (40) और मैं ने तुझे खास अपने लिए बनाया। (41) तुम और तुम्हारा भाई दोनों जाओ मेरी निशानियों के साथ, और सुस्ती न करना मेरी याद में। (42) तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ, वेशक वह सरकश हो गया है। (43) तुम उस को नर्म बात कहो शायद वह नसीहत पकड़ ले या डर जाए। (44) वह बोले, ऐ हमारे रब! वेशक हम डरते हैं कि (कहीं) वह हम पर ज़ियादती (न) करे या हद से (न) बढ़े। (45) उस ने फ़रमाया तुम डरो नहीं, वेशक मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं सुनता और देखता हूँ। (46) पस उस के पास जाओ और कहो वेशक हम दोनों भेजे हुए हैं तेरे रब के, पस बनी इस्राईल को हमारे साथ भेज दे और उन्हें अज़ाब न दे, हम तेरे पास तेरे रब की निशानी के साथ आए हैं, और सलाम हो उस पर जिस ने हिदायत की पैरवी की। (47) वेशक हमारी तरफ वहि की गई है कि अज़ाब है उस पर जिस ने झुटलाया और मुंह फेरा। (48) उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! पस तुम्हारा रब कौन है? (49) मूसा (अ) ने कहा हमारा रब वह है जिस ने हर चीज़ को उस की शकल ओ सूरत अता की फिर उस की रहनुमाई की। (50) उस ने कहा फिर पहली जमाअतों का क्या हाल है? (51)

मूसा (अ) ने कहा उस का इल्म मेरे रब के पास किताब में है, मेरा रब न ग़लती करता है, और न भूलता है। (52) वह जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया, और तुम्हारे लिए चलाई उस में राहें, और आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से सबज़ी की मुख़्तलिफ़ अक़्साम निकाली। (53) तुम खाओ और अपने मवेशी चराओ, बेशक उस में अक़ल वालों के लिए निशानियां हैं। (54) उस (ज़मीन) से हम ने तुम्हें पैदा किया और उसी में हम तुम्हें लौटा देंगे, और उसी से हम तुम्हें दूसरी बार निकालेंगे। (55) और हम ने उसे (फ़िरअौन) को अपनी तमाम निशानियां दिखाई तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया। (56) उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू हमारे पास आया है कि तू हमें अपने जादू के ज़रीए हमारी ज़मीन (मुल्क से) निकाल दे। (57) पस हम तेरे मुक़ाबल ज़रूर लाएंगे उस जैसा एक जादू, पस हमारे और अपने दरमियान एक वक़्त मुक़र्रर कर ले कि न हम उस के खिलाफ़ करें और न तू, एक हमवार मैदान (में मुक़ाबला होगा)। (58) मूसा (अ) ने कहा तुम्हारा वादा मेले का दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े जमा किए जाएं। (59) फिर लौट गया फ़िरअौन, सो उस ने अपना दाओ (जादू का सामान) जमा किया, फिर आया। (60) मूसा (अ) ने उन से कहा तुम पर ख़राबी हो, अल्लाह पर न घड़ो झूट कि वह तुम्हें अज़ाब से हलाक करदे, और जिस ने झूट बान्धा वह नामुराद हुआ। (61) तो वह बाहम अपने काम में झगड़ने लगे और उन्होंने ने छुप कर मशवरा किया। (62) वह कहने लगे तहकीक़ यह दोनों जादूगर हैं, यह चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी सर ज़मीन से निकाल दें अपने जादू के ज़रीए, और तुम्हारा अच्छा तरीका ले जाएं (नाबूद कर दें)। (63) लिहाज़ा अपने दाओ इकट्ठे कर लो, फिर सफ़ बान्ध कर आओ, और तहकीक़ कामयाब होगा वही जो आज ग़ालिब रहा। (64) वह बोले ऐ मूसा (अ)! या तो (पहले अपना दाओ) डाल या हम पहले डालें। (65)

قَالَ عَلِمَهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَى (٥٢)								
52	और न वह भूलता है	मेरा रब	वह न ग़लती करता है	किताब में	मेरा रब	पास	उस का इल्म	उस ने कहा
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَوَسَّلَكَ لَكُمُ فِيهَا سُبُلًا								
	राहें	उस में	तुम्हारे लिए	और चलाई	बिछौना	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया
وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتَّى (٥٣)								
53	मुख़्तलिफ़	सबज़ी	से	जोड़े (अक़्साम)	उस से	फिर हम ने निकाले	पानी	आस्मान
كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِأُولِي النُّهَى (٥٤) مِنْهَا								
उस से	54	अक़ल वालों के लिए	निशानियां	उस में	बेशक	अपने मवेशी	और चराओ	तुम खाओ
خَلَقْنَاهُمْ وَفِيهَا نُعِيدُهُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى (٥٥) وَلَقَدْ آرَيْنَاهُ								
और हम ने उसे दिखाई	55	दूसरी बार	हम निकालेंगे तुम्हें	और उस से	हम लौटा देंगे तुम्हें	और उस में	हम ने तुम्हें पैदा किया	
اَيْنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَإِنِّي (٥٦) قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا								
हमारी ज़मीन से		कि तू निकाल दे हमें	क्या तू आया हमारे पास	उस ने कहा	56	तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया	तमाम	अपनी निशानियां
بِسِحْرِكَ يَمْؤُسَى (٥٧) فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ								
और अपने दरमियान	हमारे दरमियान	पस मुक़र्रर कर	उस जैसा	एक जादू	पस ज़रूर हम तेरे मुक़ाबल लाएंगे	57	ऐ मूसा (अ)	अपने जादू के ज़रीए
مَوْعِدًا لَا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى (٥٨) قَالَ مَوْعِدُكُمْ								
तुम्हारा वादा	उस ने कहा	58	एक हमवार मैदान	तू	और न	हम	हम उस के खिलाफ़ न करें	एक वादा (वक़्त)
يَوْمَ الزَّيْنَةِ وَأَنْ يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى (٥٩) فَتَوَلَّى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ								
उस ने जमा किया	फिरअौन	फिर लौट गया	59	दिन चढ़े	लोग	जमा किए जाएं	और यह कि	ज़ीनत (मेले) का दिन
كَيِّدَهُ ثُمَّ أَتَى (٦٠) قَالَ لَهُمْ مُوسَى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا								
झूट	अल्लाह पर	न घड़ो	खराबी तुम पर	मूसा (अ)	उन से	उस ने कहा	60	फिर वह आया
فَيُسْحِتْكُمْ بِعَذَابٍ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَى (٦١) فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُمْ								
अपने काम में	तो वह झगड़ने लगे	61	जिस ने झूट बान्धा	और वह नामुराद हुआ	अज़ाब से	कि वह हलाक करदे तुम्हें		
بَيْنَهُمْ وَأَسْرَوْا النَّجْوَى (٦٢) قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ يُرِيدُنَ								
यह चाहते हैं	अलबत्ता जादूगर	यह दोनों	तहकीक़	वह कहने लगे	62	मशवरा	और उन्होंने ने छुप कर किया	बाहम
أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَى (٦٣)								
63	अच्छा	तुम्हारा तरीका	और वह लेजाएं	अपने जादू के ज़रीए	तुम्हारी सर ज़मीन	से	कि तुम्हें निकाल दें	
فَاجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ اتُّوْا صَفًّا وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَى (٦٤)								
64	ग़ालिब रहा	जो	आज	और तहकीक़ कामयाब होगा	सफ़ बान्ध कर	फिर तुम आओ	अपने दाओ	लिहाज़ा इकट्ठे कर लो तुम
قَالُوا يَمْؤُسَى إِمَّا أَنْ تُلْقَى وَإِمَّا أَنْ تَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَى (٦٥)								
65	डालें	जो	पहले	यह कि हम हों	और या	यह कि तू डाले	या तो	ऐ मूसा (अ)

قَالَ بَلْ أَلْقُوا فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ									
उन का जादू	से	उस के	खयाल में आई	और उन की लाठियां	उन की रस्सियां	तो नागहां	तुम डालो	बल्कि	उस ने कहा
أَنَّهُ تَسْعَى ٦٦ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسَى ٦٧ قُلْنَا لَا تَخَفْ									
तुम डरो नहीं	हम ने कहा	67	मूसा (अ)	कुछ खौफ	अपने दिल में	तो पाया (महसूस किया)	66	दौड़ रही है	कि वह
إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى ٦٨ وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا إِنَّمَا									
वेशक	जा उन्होंने ने बनाया	वह निगल जाएगा	तुम्हारे दाएं हाथ में	जो	और डालो	68	गालिव	तुम ही	वेशक तुम
صَنَعُوا كَيْدَ سِحْرٍ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى ٦٩ فَأَلْقَى السَّحْرَةَ									
जादूगर	पस डाल दिए गए	69	वह आए	जहां (कहीं)	जादूगर	और कामयाब नहीं होगा	जादूगर	फरेव	उन्होंने ने बनाया
سَجَدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَرُونَ وَمُوسَى ٧٠ قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ									
पहले	उस पर	तुम ईमान लाए	उस ने कहा	70	और मूसा (अ)	हारून (अ)	रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले सिज्दे में
أَنْ أَذَنْ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَا قُطْعَنَ									
पस मैं ज़रूर काटूंगा	जादू	तुम्हें सिखाया	वह जिस ने	तुम्हारा बड़ा	वेशक वह	तुम्हें	कि मैं इजाज़त दूँ		
أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلَبَنَكُمْ فِي جُدُوعِ النَّخْلِ									
खजूर के तने	में-पर	और मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा	दूसरी तरफ से	और तुम्हारे पाऊँ	तुम्हारे हाथ				
وَلَتَعْلَمَنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَى ٧١ قَالُوا لَنْ نُؤْثِرَكَ عَلَى									
पर	हम हरगिज़ तुझे तरजीह न देंगे	उन्होंने ने कहा	71	और ता देर रहने वाला	अज़ाब में	ज़ियादा सख्त	हम में कौन	और तुम खूब जान लोगे	
مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ									
करने वाला	तू	जो	पस तू कर गुज़र	और वह जिस ने हमें पैदा किया	वाज़ेह दलाइल से	जो हमारे पास आए			
إِنَّمَا تَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ٧٢ إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِنَغْفِرَ لَنَا									
कि वह बख्शदे हमें	अपने रब पर	वेशक हम ईमान लाए	72	दुनिया की ज़िन्दगी	इस	तू करे गा	उस के सिवा नहीं		
خَطِينًا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ٧٣									
73	बेहतर और हमेशा बाकी रहने वाला	और अल्लाह	जादू	से	उस पर	तू ने हमें मजबूर किया	और जो	हमारी ख़ताएं	
إِنَّهُ مِنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا									
उस में	न वह मरेगा	जहन्नम	उस के लिए	तो वेशक	मुज़्रिम बन कर	अपने रब के सामने	जो आया	वेशक वह	
وَلَا يَحْيَى ٧٤ وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ									
पस यही लोग	अच्छे	उस ने अमल किए	मोमिन बन कर	उस के पास आया	और जो	74	और न जिएगा		
لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَى ٧٥ جَنَّاتٌ عِدْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا									
उन के नीचे	जारी है	हमेशा रहने वाले	वागात	75	बुलन्द	दरजे	उन के लिए		
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَٰلِكَ جَزَاؤُ مَنْ تَزَكَّى ٧٦									
76	जो पाक हुआ	जज़ा है	और यह	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें			

उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम डालो, तो नागहां उन की रस्सियां और उन की लाठियां उस (मूसा अ) के खयाल में आई (ऐसे नमूदार हुईं) उन के जादू से कि गोया वह दौड़ रही है। (66)

तो मूसा (अ) ने अपने दिल में कुछ खौफ महसूस किया। (67) हम ने कहा तुम डरो नहीं, वेशक तुम ही गालिव रहोगे। (68) और जो तुम्हारे दाएं हाथ में है डालो वह निगल जाएगा जो कुछ उन्होंने ने बनाया है, वेशक (जो कुछ) उन्होंने ने बनाया है वह जादूगर का फरेव है, और जादूगर किसी शान से आए वह कामयाब नहीं होता। (69)

पस जादूगर सिज्दे में डाल दिए गए (गिर पड़े) वह बोले हम हारून (अ) और मूसा (अ) के रब पर ईमान लाए। (70)

फिरऔन ने कहा तुम उस पर ईमान ले आए (इस से) पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, वेशक वह (मूसा अ) तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, पस मैं ज़रूर काट डालूंगा तुम्हारे हाथ पाऊँ (जानिव) खिलाफ से (एक तरफ का हाथ दूसरी तरफ का पाऊँ) और मैं ज़रूर तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूँगा, और तुम खूब जान लोगे कि हम दोनों में से किस का अज़ाब ज़ियादा सख्त और देर पा है। (71)

उन्होंने ने कहा हम तुझे हरगिज़ तरजीह न देंगे उन वाज़ेह दलाइल से जो हमारे पास आए हैं और उस पर जिस ने हमें पैदा किया है, पस तू कर गुज़र जो तू करने वाला है, उस के सिवा नहीं कि तू (सिर्फ) इस दुनिया की ज़िन्दगी में करेगा। (72)

वेशक हम अपने रब पर ईमान लाए कि वह हमारी ख़ताएं बख्शदे और उस पर जो तू ने हमें जादू के लिए मजबूर किया, और अल्लाह बेहतर है और हमेशा बाकी रहने वाला है। (73)

वेशक वह, जो अपने रब के सामने आया मुज़्रिम बन कर तो वेशक उस के लिए जहन्नम है, न वह उस में मरेगा और न जिएगा। (74)

और जो उस के पास मोमिन बन कर आया और उस ने अच्छे अमल किए, पस यही लोग हैं जिन के लिए दरजे बुलन्द हैं। (75)

हमेशा रहने वाले बागात, जारी हैं उन के नीचे नहरें, उन में हमेशा रहेंगे, और यह जज़ा है (उस की) जो पाक हुआ। (76)

और तहकीक हम ने वहि की मूसा (अ) को कि रातों रात मेरे बन्दों को (निकाल) ले जा, उन के लिए दर्या में (असा मार कर) खश्क रास्ता बना लेना, न तुझे पकड़ने का खौफ होगा और न (गर्क होने का) डर होगा। (77)

फिर फिरऔन ने अपने लशकर के साथ उन का पीछा किया तो उन्हें दर्या (की मौजों) ने ढांप लिया, जैसा कि ढांप लिया (विलकुल गर्क कर दिया)। (78)

और फिरऔन ने अपनी कौम को गुमराह किया और हिदायत न दी। (79)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! तहकीक हम ने तुम्हारे दुश्मन से तुम्हें नजात दी और कोहे तूर के दाएं जानिब तुम से (तौरेत अता करने का) वादा किया और हम ने तुम पर उतारा “मन्न” और “सलवा”। (80)

जो हम ने तुम्हें दिया उस में से पाकीज़ा चीज़े खाओ, और उस में सरकशी न करो कि तुम पर उतरे मेरा ग़ज़ब, और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा वह नीस्त ओ नाबूद हुआ। (81)

और वेशक मैं बड़ा बख़्शने वाला हूँ उस को जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया और उस ने अमल किया नेक, फिर हिदायत पर रहा। (82)

और ऐ मूसा (अ)! और क्या चीज़ तुझे अपनी कौम से जल्द लाई (क्यों जल्दी की)? (83)

उस ने कहा वह मेरे पीछे (आ ही रहे) हैं, मैं ने तेरी तरफ़ (आने में) जल्दी की ताकि तू राज़ी हो। (84)

उस ने कहा पस हम ने तहकीक तेरी कौम को आजमाइश में डाला, और उन्हें सामरी ने गुमराह किया। (85)

पस मूसा (अ) अपनी कौम की तरफ़ लौटे, गुस्से में भरे हुए, अफ़सोस करते हुए, कहा ऐ मेरी कौम! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या तबील हो गई तुम पर (मेरी जुदाई की) मुदत? या तुम ने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे? फिर तुम ने खिलाफ़ किया मेरे वादे के (वादा खिलाफी की)। (86)

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي فَاصْرَبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَا تَخَفْ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ (٧٧)							
और तहकीक हम ने वहि की	तरफ-को	मूसा (अ)	कि रातों रात लेजा	मेरे बन्दे	पस बना लेना		
उन के लिए	रास्ता	दर्या में	खश्क	न	खौफ होगा	पकड़ना	और न डर
فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ (٧٨)							
फिर उन का पीछा किया	फिरऔन	अपने लशकर के साथ	उन्हें ढांप लिया	दर्या से	जैसा कि उन को ढांप लिया		
और गुमराह किया	फिरऔन	अपनी कौम	और न हिदायत दी	79	ऐ बनी इस्राईल	तहकीक	
أَنْجَيْنَاكَ مِّنْ عَذَابِكُمْ وَأَوْعَدْنَاهُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنِ دَايِّمًا عَلَىٰ عُنُقِهِمْ وَفِي هَذِهِ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَحِيقًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ فَزَعٍ يَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا أَفْئَاتٌ فَهُم مِّنْ عَذَابِكُمْ وَأَوْعَدْنَاهُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنِ دَايِّمًا عَلَىٰ عُنُقِهِمْ وَفِي هَذِهِ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَحِيقًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ فَزَعٍ يَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا أَفْئَاتٌ فَهُم مِّنْ عَذَابِكُمْ (٧٩)							
हम ने तुम्हें नजात दी	से	तुम्हारा दुश्मन	और हम ने तुम से वादा किया	जानिब	कोहे तूर	दाएं	
और हम ने उतारा	तुम पर	मन्न	और सलवा	80	तुम खाओ	से	पाकीज़ा चीज़ें
مَا رَزَقْنَاهُمْ وَلَا تَطْعَمُوا فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي وَمَنْ يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ (٨٠) وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَنْ يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ (٨١)							
जो हम ने तुम्हें दिया	और न सरकशी करो	उस में	कि उतरेगा	तुम पर	मेरा ग़ज़ब	और जो	
उतरा	उस पर	मेरा ग़ज़ब	तो वह गिरा (नीस्त ओ नाबूद हुआ)	81	और वेशक मैं	बड़ा बख़्शने वाला	उस को जो
तौबा की	और वह ईमान लाया	और उस ने अमल किया	नेक	फिर	हिदायत पर रहा	82	और क्या (चीज़)
अपनी कौम से	ऐ मूसा (अ)	83	उस ने कहा	वह	यह है	मेरे पीछे	
وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ (٨٤) قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ (٨٥)							
और मैं ने जल्दी की	तेरी तरफ़	ऐ मेरे रब	ताकि तू राज़ी हो	84	उस ने कहा	पस हम ने	तहकीक में डाला
तेरी कौम	तेरे बाद	और उन्हें गुमराह किया	85	पस लौटा	सामरी		
मूसा (अ)	अपनी कौम की तरफ़	गुस्से में भरा हुआ	अफ़सोस करता	उस ने कहा	ऐ मेरी कौम	क्या तुम से वादा नहीं किया था	
तुम्हारा रब	अच्छा वादा	क्या तबील हो गई	तुम पर	मुदत	या तुम ने चाहा		
कि उतरे	तुम पर	ग़ज़ब	से-का	तुम्हारा रब	फिर तुम ने खिलाफ़ किया	मेरा वादा	86

قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلَكِنَا وَلَكِنَّا حُمِلْنَا أَوْزَارًا مِّنْ							
से-का	बोझ	हम पर लादा गया	और लेकिन (बल्कि)	अपने इख्तियार से	तुम्हारा वादा	हम ने खिलाफ नहीं किया	वह बोले
زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ (٨٧) فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا							
एक बछड़ा	उन के लिए	फिर उस ने निकाला	87	सामरी	डाला	फिर उसी तरह	तो हम ने उसे डाल दिया
جَسَدًا لَهُ خُورٌ فَقَالُوا هَذَا إِلَهُكُمْ وَإِلَهُ مُوسَىٰ ۖ فَانْصَرَفُوا (٨٨)							
88	फिर वह भूल गया	मूसा (अ)	और माबूद	तुम्हारा माबूद	यह	फिर उन्होंने ने कहा	गाय की आवाज़
أَفَلَا يَرَوْنَ إِلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا ۖ وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ صَرًّا وَلَا نَفْعًا (٨٩)							
89	और न नफा	नुक्सान	उन के	और इख्तियार नहीं रखता	वात (जवाब)	उन की तरफ	कि वह नहीं फेरता
وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هُرُوتٌ مِنْ قَبْلُ يَقُومُ إِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهِ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي (٩٠) قَالُوا لَنْ نَبْرَحَ							
और बेशक	इस से	तुम आजमाए गए	इस के सिवा नहीं	ऐ मेरी कौम	उस से पहले	हारून (अ)	उन से
هَمَّ هَرَجِيज़ُ جُودًا نَ هَوْنِیْ ۚ (٩١) قَالَ يَهُرُوتُ							
हम हरगिज़ जुदा न होंगे	उन्होंने ने कहा	90	मेरी बात	और इताअत करो (मानो)	सो मेरी पैरवी करो	रहमान है	तुम्हारा रब
عَلَيْهِ عَكْفَيْنِ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ (٩١) قَالَ يَهُرُوتُ							
ऐ हारून (अ)	उस ने कहा	91	मूसा (अ)	हमारी तरफ	लौटे	यहां तक कि	जमे हुए
مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا (٩٢) أَلَّا تَتَّبِعَنِ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي (٩٣)							
93	मेरा यह हुक्म	तो क्या तू ने नाफरमानी की	कि तू न मेरी पैरवी करे	92	वह गुमराह हो गए	तू ने देखा उन्हें	जब तूझे किस चीज़ ने रोका
قَالَ يَبْنَؤُمْ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي إِنِّي خَشِيتُ							
डरा	बेशक मैं	और न सर से	मुझे दाढ़ी से	न पकड़ें	ऐ मेरे माँ जाए	उस ने कहा	
أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي (٩٤) قَالَ							
उस ने कहा	94	मेरी बात	और न खयाल रखा	बनी इस्राईल	दरमियान	तू ने तफ़्फ़ीका डाल दिया	कि तुम कहोगे
فَمَا خَطْبُكَ يُسَامِرِيُّ (٩٥) قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ							
उस को	उन्होंने ने न देखा	वह जो कि	मैं ने देखा	वह बोला	95	ऐ सामरी	तेरा हाल
فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلَتْ							
फुसलाया	और इसी तरह	तो मैं ने वह डालदी	रसूल का नक्शे कदम	से	एक मुट्ठी	पस मैं ने मुट्ठी भर ली	
لِي نَفْسِي (٩٦) قَالَ فَادْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَنْ تَقُولَ لَا							
न	तू कहे	कि	ज़िन्दगी में	बेशक तेरे लिए	पस तू जा	उस ने कहा	96
مِثَاسٍ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهُ ۖ وَانْظُرْ إِلَىٰ إِلَهِكَ الَّذِي							
वह जिस	अपने माबूद	तरफ	और देख	हरगिज़ तुझ से खिलाफ न होगा	एक वक़्त मुक़र्रर	तेरे लिए	और बेशक
ظَلَّتْ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا (٩٧)							
97	उड़ा कर	दर्या में	फिर अलबत्ता उसे बिखेर देंगे	हम उसे अलबत्ता जलाएंगे	जमा हुआ	उस पर	तू रहता था

वह बोले हम ने अपने इख्तियार से तुम्हारे वादे के खिलाफ नहीं किया, बल्कि हम पर बोझ लादा गया कौम के ज़ेवर का, तो हम ने उसे (आग में) डाल दिया, फिर उसी तरह सामरी ने डाला। (87) फिर उस ने उन के लिए एक बछड़ा निकाला (बनाया), एक मूर्ति जिस में गाय की आवाज़ निकलती थी, फिर उन्होंने ने कहा यह तुम्हारा माबूद है, और मूसा (अ) का माबूद है, वह (मूसा अ) तो भूल गया है। (88) भला क्या वह नहीं देखते? कि वह (बछड़ा) उन की तरफ़ वात नहीं फेरता (उन को जवाब नहीं देता) न उन के नुक्सान का इख्तियार रखता है और न नफा का। (89) और तहकीक़ उन से हारून (अ) ने उस से पहले कहा था कि ऐ मेरी कौम! इस के सिवा नहीं कि तुम इस से आजमाए गए हो और बेशक तुम्हारा रब रहमान है, सो मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। (90) उन्होंने ने कहा हम हरगिज़ उस से जुदा न होंगे जमे हुए (बैठे रहेंगे) यहां तक कि मूसा (अ) हमारी तरफ़ लौटे। (91) उस (मूसा अ) ने कहा ऐ हारून (अ)! तुझे किस चीज़ ने रोका जब तू ने देखा कि वह गुमराह हो गए हैं। (92) कि तू न मेरी पैरवी करे? तो क्या तू ने नाफरमानी की मेरे हुक्म की? (93) उस ने कहा ऐ मेरे माँ जाए! मुझे दाढ़ी से और न सर (के बालों) से पकड़ें, बेशक मैं डरा कि तुम कहोगे कि तू ने फोट डाल दिया बनी इस्राईल के दरमियान, और मेरी बात का खयाल न रखा। (94) (फिर मूसा अ ने सामरी से) कहा ऐ सामरी! तेरा क्या हाल है? (95) वह बोला मैं ने वह देखा जिस को उन्होंने ने नहीं देखा, पस मैं ने रसूल के नक्शे कदम से एक मुट्ठी भर ली तो मैं ने वह (बछड़े के कालिब में) डाल दी और इसी तरह मेरे नफ़्स ने मुझे फुसलाया। (96) मूसा (अ) ने कहा पस तू जा, बेशक तेरे लिए ज़िन्दगी में (यह सज़ा) है कि तू कहता फिर: न छूना मुझे, और बेशक तेरे लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, हरगिज़ तुझ से खिलाफ़ न होगा (न टलेगा), और अपने माबूद की तरफ़ देख जिस पर तू (बैठा) रहता था जमा हुआ, हम उसे अलबत्ता जला देंगे फिर इस (की राख) उड़ा कर दर्या में ज़रूर बिखेर देंगे। (97)

इस के सिवा नहीं कि तुम्हारा माबूद अल्लाह है, वह जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का इल्म हर शौ पर मुहीत है। (98) उसी तरह हम तुम से (वह) अहवाल बयान करते हैं जो गुज़र चुके, और तहकीक हम ने तुम्हें अपने पास से किताबे नसीहत (कुरआन) दिया। (99) जिस ने उस से मुँह फेरा वह वेशक लादेगा क़ियामत के दिन भारी बोझ। (100) वह उस में हमेशा रहेंगे, और बुरा है उन के लिए क़ियामत के दिन का बोझ। (101) जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी, और हम मुज्रीमों को इकटठा करेंगे उस दिन (उन की) आँखें नीली (वे नूर होंगी)। (102) आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे तुम (दुनिया में) सिर्फ दस दिन रहे हो। (103) वह जो कहते हैं हम खूब जानते हैं जब उन का सब से अच्छी राह वाला (होशमन्द) कहेगा तुम सिर्फ एक दिन रहे हो। (104) और वह आप (स) से पहाड़ों के बारे में दर्याफ्त करते हैं, तो आप (स) कह दें मेरा रब उन्हें उड़ा कर बिखेर देगा। (105) फिर उसे (ज़मीन को) एक हमवार मैदान कर छोड़ेगा। (106) और तू न देखेगा उस में कोई कजी (नाहमवारी) और न कोई बुलन्दी। (107) उस दिन सब पीछे चलेंगे एक पुकारने वाले के, उस के लिए कोई कजी न होगी और अल्लाह के सामने आवाज़ें पस्त हो जाएंगी, वस तू सिर्फ पस्त आवाज़ सुनेगा। (108) उस दिन कोई शफ़ाअत नफ़ा न देगी मगर जिस को अल्लाह इजाज़त दे, और उस की बात पसंद करे। (109) वह जानता है जो कुछ उन के आगे और उन के पीछे है, और वह (अपने इल्म में) उस का अहाता नहीं कर सकते। (110) और चेहरे झुक जाएंगे “हैय ओ क्यूम” (ज़िन्दा क़ाइम) के सामने, और नामुराद हुआ वह जिस ने जुल्म का बोझ उठाया। (111) और जो कोई नेकी करे, वशर्त यह कि वह मोमिन हो तो न उसे किसी जुल्म का ख़ौफ़ होगा और न किसी नुक़सान का। (112) और उसी तरह हम ने उस पर कुरआन नाज़िल किया अरबी में और हम ने उस में तरह तरह से डरावे बयान किए ताकि वह परहेज़गार हो जाएं या वह उन के लिए कोई नसीहत पैदा कर दे। (113)

إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾										
98	इल्म	हर शौ	वसीअ (मुहीत है)	उस के सिवा	कोई माबूद नहीं	वह जो	अल्लाह	तुम्हारा माबूद	इस के सिवा नहीं	
كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ آتَيْنَكَ مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾ مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خَلِدِينَ فِيهِ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَتَخَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنْتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ﴿١١١﴾ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١٢﴾ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَفُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿١١٣﴾ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٤﴾										
अपने पास से	और तहकीक हम ने तुम्हें दिया	गुज़र चुका	जो	खबरें अहवाल	से	तुझ पर-से	हम बयान करते हैं	इसी तरह		
वह हमेशा रहेंगे	100	(भारी) बोझ	क़ियामत के दिन	लादेगा	तो वेशक वह	उस से	मुँह फेरा	जिस	99	(किताबे) नसीहत
और हम इकटठा करेंगे	सूर में	फूंक मारी जाएगी	जिस दिन	101	बोझ	क़ियामत के दिन	उन के लिए	और बुरा है	उस में	
मगर (सिर्फ)	तुम रहे	नहीं	आपस में	आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे	102	नीली आँखें	उस दिन	मुज्रीमों को		
नहीं	राह	सब से अच्छी	जब कहेगा	वह कहते हैं	वह जो	खूब जानते हैं	हम	103	दस दिन	
105	उड़ा कर	मेरा रब	उन्हें बिखेर देगा	तो कह दें	पहाड़ के बारे में	और वह आप से दर्याफ्त करेंगे	104	एक दिन	मगर रहे तुम	
उस दिन	107	कोई बुलन्दी	और न	कोई कजी	उस में	न देखेगा तू	106	एक हमवार	मैदान	फिर उसे छोड़ देगा
रहमान के लिए (सामने)	आवाज़ें	और पस्त हो जाएंगी	उस के लिए	नहीं कोई कजी	एक पुकारने वाला	वह सब पीछे चलेंगे				
इजाज़त दे उस को	जिस	मगर	कोई शफ़ाअत	न नफ़ा देगी	उस दिन	108	आहिस्ता आवाज़	मगर (सिर्फ)	वस तू न सुनेगा	
उन के पीछे	और जो	उन के हाथों के दरमियान (आगे)	जो	वह जानता है	109	वात	उस की	और पसन्द करे	रहमान	
“क्यूम”	सामने “हैय”	चेहरे	झुक जाएंगे	110	इल्म के अन्दर	उस का	और वह अहाता नहीं कर सकते			
मोमिन	और वह	नेकी	से-कोई	करे	और जो	111	जुल्म	बोझ उठाया	जो-जिस	और नामुराद हुआ
अरबी	कुरआन	हम ने उस पर नाज़िल किया	और उसी तरह	112	और न किसी नुक़सान का	किसी जुल्म का	तो न उसे ख़ौफ़ होगा			
113	कोई नसीहत	उन के लिए	या वह पैदा करदे	परहेज़गार हो जाएं	ताकि वह	डरावे	से	और हम ने तरह तरह से बयान किए उस में		

فَتَعْلَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَى إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۝۱۱۴ وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝۱۱۵ وَذُقْنَا لِمَلَكَةِ الْوَحْيِ ۝۱۱۶ فَسَجَدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝۱۱۷ وَذُقْنَا لِمَلَكَةِ الْوَحْيِ ۝۱۱۸ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ۝۱۱۹ فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَٰآدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةٍ خَالِدَةٍ فِيهَا دُورٌ مِمَّا تَحْتَسِبُ ۝۱۲۰ فَكَانَا مِنْهَا قَبْدَتٌ لَهُمَا فَمَنَئِيْلُهُمَا فَتَجَنَّبَا وَبَقُوا ۝۱۲۱ ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ۝۱۲۲ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۝۱۲۳ فَامَّا يَاتِيَنَّكُمْ مِّنِّي هُدًى ۝۱۲۴ فَمَنْ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ۝۱۲۵ وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَعْمَىٰ ۝۱۲۶ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ۝۱۲۷							
कि	इस से कब्ल	कुरआन में	जल्दी करो	और न	सच्चा	बादशाह	सो बुलन्द ओ वरतर है अल्लाह
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝۱۱۵ وَذُقْنَا لِمَلَكَةِ الْوَحْيِ ۝۱۱۶ فَسَجَدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝۱۱۷ وَذُقْنَا لِمَلَكَةِ الْوَحْيِ ۝۱۱८ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ۝११९							
और हम ने हुक्म भेजा	114	इल्म	ज़ियादा दे मुझे	ऐ मेरे रब	और कहिए	उस की वहि	तुम्हारी तरफ़
फ़रिश्तों को	और (याद करो) जब हम ने कहा	115	पुख़्ता इरादा	उस में	और हम ने न पाया	तो वह भूल गया	आदम की तरफ़
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝११६ فَسَجَدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝११७ وَذُقْنَا لِمَلَكَةِ الْوَحْيِ ११८ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ११९							
वेशक यह	ऐ आदम (अ)	पस हम ने कहा	116	उस ने इन्कार किया	इवलीस	सिवाए	तो सब ने सिज्दा किया
वेशक	117	फिर तुम मुसीबत में पड़ जाओ	जन्नत से	न निकलवा दे	सो तुम्हें	और तुम्हारी बीबी का	तुम्हारा दुश्मन
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ११८ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ११९							
119	और न धूप में रहोगे	इस में	प्यासे रहोगे	न	और यह कि तुम	118	नंगे और न इस में
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ११८ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ११९							
दरख़्त	पर	मैं तेरी रहनुमाई करूँ	क्या	ऐ आदम (अ)	उस ने कहा	शैतान	उस की तरफ़ (दिल में)
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ११८ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ११९							
उन की शर्मगाहें	उन पर	तो ज़ाहिर होगई	उस से	पस दोनों ने ख़ाया	120	न पुरानी हो (जवाल पज़ीर न हो)	और हमेशगी
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ११८ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ११९							
अपना रब	आदम (अ)	और नाफ़रमानी की	जन्नत के पत्ते	से	अपने ऊपर	और वह दोनों लगे जोड़ने (ढांपने)	
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آदَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْजِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ११८ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ११९							
तुम दोनों उतर जाओ	फ़रमाया	122	और उसे राह दिखाई	उस पर	तबज्जुह फ़रमाई	उस का रब	उस को चुन लिया
हिदायत	मेरी तरफ़ से	तुम्हारे पास आए	पस अगर	दुश्मन	बाज़ के	तुम में से बाज़	यहां से
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ आदَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْजِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ११८ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ११९							
मुँह मोड़ा	और जिस	123	बदबख़्त होगा	और न	तो न वह गुमराह होगा	मेरी हिदायत	पैरवी की
وَلَقَدْ عَهِदْنَا إِلَىٰ आदَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْजِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِआदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ११८ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ११९							
क्रियामत के दिन	और हम उसे उठाएंगे	तंग	गुज़रान	उस के लिए	तो वेशक	मेरे ज़िक्र-नसीहत	से
وَلَقَدْ عَهِदْنَا إِلَىٰ आदَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْजِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِआदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ११८ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ११९							
125	वीना-देखता	और मैं तो था	अन्धा	तू ने मुझे क्यों उठाया	ऐ मेरे रब	वह कहेगा	124
وَلَقَدْ عَهِदْنَا إِلَىٰ आदَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْजِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْजُدُوا لِआदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ११८ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ११९							
126	हम तुझे भुला देंगे	आज	और इसी तरह	तो तू ने उन्हें भुला दिया	हमारी आयात	तेरे पास आई	इसी तरह

सो अल्लाह बुलन्द ओ वरतर है सच्चा बादशाह, और तुम कुरआन (पढ़ने) में जल्दी न करो, इस से कब्ल के तुम्हारी तरफ़ पूरी की जाए उस की वहि, और कहिए ऐ मेरे रब! मुझे और ज़ियादा इल्म दे। (114) और हम ने उस से कब्ल आदम (अ) की तरफ़ हुक्म भेजा तो वह भूल गया और हम ने उस में पुख़्ता इरादा न पाया। (115) और याद करो जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम आदम (अ) को सिज्दा करो तो सब ने सिज्दा किया सिवाए इवलीस के, उस ने इन्कार किया। (116) पस हम ने कहा ऐ आदम (अ)! वेशक यह तुम्हारा और तुम्हारी बीबी का दुश्मन है। सो तुम्हें निकलवा न दे जन्नत से, फिर तुम तकलीफ़ में पड़ जाओ। (117) वेशक तुम्हारे लिए (जन्नत में) यह है कि इस में न भूके रहो, न नंगे। (118) और यह कि तुम न प्यासे रहोगे और न धूप में तपोगे। (119) फिर शैतान ने उस के दिल में वस्वसा डाला, उस ने कहा ऐ आदम (अ)! क्या मैं तेरी रहनुमाई करूँ हमेशगी के दरख़्त पर? और वह बादशाहत जो ज़वाल पज़ीर न हो? (120) पस उन दोनों ने उसे खा लिया तो उन पर उन की शर्मगाहें ज़ाहिर हो गईं, और अपने (जिस्म के) ऊपर जन्नत के पत्तों से ढांपने लगे, और आदम (अ) ने अपने रब की नाफ़रमानी की तो वह बहक गया। (121) फिर उस को चुन लिया उस के रब ने, फिर उस पर (रहमत से) तबज्जुह फ़रमाई (तौबा कुबूल की) और उसे राह दिखाई। (122) फ़रमाया तुम दोनों यहां से उतर जाओ, तुम्हारी (औलाद में से) बाज़ बाज़ के दुश्मन होंगे, पस अगर (जब भी) मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास मेरी हिदायत आए तो जिस ने मेरी हिदायत की पैरवी की वह न गुमराह होगा और न बदबख़्त होगा। (123) और जिस ने मेरे ज़िक्र (नसीहत) से मुँह मोड़ा तो वेशक उस की मईशत (गुज़रान) तंग होगी और हम उसे उठाएंगे क्रियामत के दिन अन्धा। (124) वह कहेगा, ऐ मेरे रब! तू ने मुझे अन्धा क्यों उठाया? मैं तो (दुनिया में) वीना (देखता) था। (125) वह फ़रमाएगा इसी तरह तेरे पास हमारी आयात आई तो तू ने उन्हें भुलाया, और इसी तरह आज हम तुझे भुला देंगे। (126)

और इसी तरह हम (उस को) बदला देते हैं जो हद से निकल जाए और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए, और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब शदीद तरीन है और ज़ियादा देर तक रहने वाला है। (127) क्या (उस हकीकत ने भी) उन्हें हिदायत न दी कि उन से क़व्ल हम ने कितनी ही जमाअतें हलाक कर दी, वह चलते फिरते हैं उन के मसाकिन में, अलबत्ता बेशक उस में अक़ल वालों के लिए निशानियां हैं। (128) और अगर तुम्हारे रब की (तरफ़) से एक बात (तै) न हो चुकी होती और मीज़ाद मुक़र्रर (न होती) तो अज़ाब ज़रूर (नाज़िल) हो जाता। (129) पस वह जो कहते हैं उस पर सब्र करें, तारीफ़ के साथ अपने रब की तस्वीह करें, (पाकीज़गी) बयान करें तुलूअ-ए-आफ़ताब से पहले, और गुरुवे आफ़ताब से पहले, और कुछ रात की घड़ियों में, पस उस की तस्वीह करें, और किनारे दिन के (दोपहर जुहर के वक़्त) ताकि तुम खुश हो जाओ। (130) और अपनी आँखें (उन चीज़ों की) तरफ़ न फ़ैलाना जो हम ने बरतने को दी हैं उन के जोड़ों को, दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश ओ ज़ेबाइश (बना कर) ताकि हम उस में उन्हें आजमाएँ, और तेरे रब का अतिया बेहतर है और सब से ज़ियादा तादेर रहने वाला है। (131) और तुम अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, और उस पर काइम रहो, हम तुझ से नहीं मांगते रिज़्क (बल्कि) हम तुझे रिज़्क देते हैं और अन्जाम (बख़ैर) अहले तक्वा के लिए है। (132) और वह कहते हैं हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाए अपने रब की तरफ़ से, क्या उन के पास (वह) वाज़ेह निशानी नहीं आई जो पहले सहीफ़ों में है। (133) और अगर हम उन्हें हलाक कर देते (रसूलों के) आने से क़व्ल किसी अज़ाब से तो वह कहते ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा? तो हम इस से क़व्ल कि ज़लील और रुस्वा हों हम तेरे अहकाम की पैरवी करते। (134) आप (स) कह दें, सब मुन्तज़िर हैं, पस तुम (अभी) इन्तिज़ार करो, सो अनक़रीब तुम जान लोगे, कौन हैं सीधे रास्ते वाले और कौन है जिस ने हिदायत पाई। (135)

وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِآيَاتِ رَبِّهِ وَلَعَذَابُ							
और अलबत्ता अज़ाब	अपना रब	आयतों पर	और न ईमान लाए	हद से निकल जाए	जो	हम बदला देते हैं	और इसी तरह
الْآخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَى (127) أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ							
उन से क़व्ल	हम ने हलाक कर दी	कितनी ही	उन्हें	क्या हिदायत न दी	127	और ज़ियादा देर तक रहने वाला है	शदीद तरीन आखिरत
مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسْكِنِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّأُولِي النُّهَى (128)							
128	अक़ल वालों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	उस	में	बेशक	उन के मसाकिन में	वह चलते फिरते हैं कौमों-जमाअतें
وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزِمًا وَآجَلٌ مُّسَمًّى (129)							
129	मुक़र्रर	और मीज़ाद	अज़ाब	तो ज़रूर आजाता	तुम्हारा रब	से	हो चुकी एक बात और अगर न
فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ							
तुलूअ आफ़ताब	पहले	अपना रब	तारीफ़ के साथ	और तस्वीह करें	जो वह कहते हैं	पर	पस सब्र करें
وَقَبْلَ غُرُوبِهَا وَمِنْ آنَايِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ							
दिन	और किनारे	पस तस्वीह करें	रात की घड़ियां	और कुछ	उस के गुरुब	और पहले	
لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ (130) وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا							
जोड़ें	उस से	जो हम ने बरतने को दिया	तरफ़	अपनी आँखें	और न फ़ैलाना	130	खुश हो जाओ ताकि तुम
مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْثِنَهُمْ فِيهِ وَرِزْقُ رَبِّكَ							
तेरा रब	और अतिया	उस में	ताकि हम उन्हें आजमाएँ	दुनिया की ज़िन्दगी	आराइश	उन से-के	
خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ (131) وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا							
उस पर	और काइम रहो	नमाज़ का	अपने घर वाले	और हुक्म दो तुम	131	और तादेर रहने वाला	बेहतर
لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ (132) وَقَالُوا							
और वह कहते हैं	132	अहले तक्वा के लिए	और अन्जाम	तुझे रिज़्क देते हैं	हम	रिज़्क	हम तुझ से नहीं मांगते
لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّنْ رَبِّهِ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةٌ مَا فِي الصُّحُفِ							
सहीफ़े	में	जो	वाज़ेह निशानी	उन के पास नहीं आई	क्या	अपना रब	से कोई निशानी क्यों नहीं लाते
الْأُولَىٰ (133) وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا							
तो वह कहते	इस से क़व्ल	किसी अज़ाब से	उन्हें हलाक कर देते	हम	और अगर	133	पहले
رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِنْ قَبْلِ							
इस से क़व्ल	तेरे अहकाम	तो हम पैरवी करते	कोई रसूल	हमारी तरफ़	क्यों तू ने न भेजा	ऐ हमारे रब	
أَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ (134) قُلْ كُلُّ مُتَرَبِّصٍ فَتَرَبَّصُوا							
पस तुम इन्तिज़ार करो	मुन्तज़िर है	सब	कह दें	134	और हम रुस्वा हों	कि हम ज़लील हों	
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ (135)							
135	उस ने हिदायत पाई	और कौन	सीधा	रास्ता	वाले	कौन	सो अनक़रीब तुम जान लोगे

ع ١٦

ع ١٦

آيَاتُهَا ١١٢ ﴿٢١﴾ سُورَةُ الْأَنْبِيَاءِ رُكُوعَاتُهَا ٧									
112 आयत		(21) सूरतुल अम्बिया रसूल (जमा)				7 रुक़ात			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ									
क़रीब आ गया		लोगों के लिए		उन का हिसाब		और वह		ग़फ़लत में	
مُعْرَضُونَ ﴿١﴾ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُحَدَّثٌ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ									
सुँह फेर रहे हैं		1		उन के पास नहीं आती		कोई नसीहत		उन के रव से	
नई		मगर		वह उसे सुनते हैं					
وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٢﴾ لَا هِيَ قُلُوبُهُمْ وَأَسْرُوا النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا									
और वह		खेलते हैं (खेलते हुए)		2		ग़फ़लत में है		उन के दिल	
और चुपके चुपके बात की		सरगोशी		और वह लोग जिन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)					
هَلْ هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ أَفَتَأْتُونَ السَّحَرَاءَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٣﴾									
क्या		यह		मगर		एक बशर		तुम ही जैसा	
क्या		यह		मगर		एक बशर		तुम ही जैसा	
3		देखते हो		और (जबकि) तुम		जादू		क्या पस तुम आओगे	
قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٤﴾									
आप ने		मेरा		जानता है		बात		आस्मानों में	
और ज़मीन		और वह		सुनने वाला		जानने वाला		4	
بَلْ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ بَلْ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا									
बल्कि		उन्होंने ने कहा		परेशान		ख़्वाब		बल्कि	
उस ने घड़ लिया		वल्कि वह		एक शायर		पस वह हमारे पास ले आए		पस वह हमारे पास ले आए	
بَايَةٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ ﴿٥﴾ مَا آمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا									
कोई निशानी		जैसे		भेजे गए		पहले		5	
न ईमान लाई		उन से कब्ल		कोई बस्ती		हम ने उसे हलाक किया		हम ने उसे हलाक किया	
أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ									
और क्या वह (यह)		ईमान लाएंगे		6		और नहीं		भेजे हम ने	
तुम से पहले		मगर		मर्द		हम बहि भेजते थे		उन की तरफ़	
فَسَلُّوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧﴾ وَمَا جَعَلْنَاهُمْ									
पस पूछ लो		याद रखने वाले		अगर		तुम हो		तुम नहीं जानते	
7		और हम ने नहीं बनाए उन के							
جَسَدًا لَا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوا خَالِدِينَ ﴿٨﴾ ثُمَّ صَدَقْنَاهُمْ									
ऐसे जिस्म		न खाते हों		खाना		और वह न थे		हमेशा रहने वाले	
8		फिर		हम ने सच्चा कर दिया उन से					
الْوَعْدَ فَانْجَيْنَاهُمْ وَمِنْ نَسَائِهِمْ وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِينَ ﴿٩﴾ لَقَدْ أَنْزَلْنَا									
वाद		पस हम ने बचा लिया उन्हें		और जिस को हम ने चाहा		और हम ने हलाक कर दिया		हद से बढ़ने वाले	
9		तहकीक हम ने नाज़िल की							
إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠﴾ وَكَمْ قَصَمْنَا									
तुम्हारी तरफ़		एक किताब		उस में		तुम्हारा ज़िक्र		तो क्या तुम समझते नहीं	
10		और हम ने कितनी हलाक कर दी							
مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿١١﴾									
से		बस्तियां		वह थी		ज़ालिम		और पैदा किए हम ने	
उन के बाद		गिरोह - लोग		दूसरे					
11									

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

लोगों के लिए उन के हिसाब (का वक़्त) क़रीब आ गया, और वह ग़फ़लत में (उस से) सुँह फेर रहे हैं। (1)

उन के पास उन के रब (की तरफ़) से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वह उसे खेलते हुए (वे परवाह हो कर) सुनते हैं। (2)

उन के दिल ग़फ़लत में हैं और ज़ालिमों ने चुपके चुपके सरगोशी की कि यह (मुहम्मद रसूलुल्लाह) क्या है! मगर एक बशर तुम ही जैसे, क्या (फिर भी) तुम जादू के पास आओगे? जबकि तुम देखते हो। (3)

आप (स) ने फ़रमाया मेरा रब जानता है हर बात जो आस्मानों में और ज़मीन में (होती है) और वह सुनने वाला जानने वाला है। (4)

बल्कि उन्होंने ने कहा (यह) परेशान ख़्वाब है, बल्कि उस ने घड़ लिया है, बल्कि वह तो एक शायर है, पस वह हमारे पास कोई निशानी लाए जैसे पहले (नबी निशानियां दे कर) भेजे गए थे। (5)

उन से क़ब्ल कोई बस्ती जिस को हम ने हलाक किया (निशानियां देख कर भी) ईमान नहीं लाई, तो क्या यह ईमान ले आएंगे? (6)

और हम ने (रसूल) नहीं भेजे तुम से पहले मगर मर्द, हम उन की तरफ़ वहि भेजते थे, पस याद रखने वालों से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते। (7)

और हम ने उन के ऐसे जिस्म नहीं बनाए कि वह खाना न खाते हों, और वह न थे हमेशा रहने वाले। (8)

फिर हम ने उन से अपना वादा सच्चा कर दिया, पस हम ने उन्हें वचा लिया और जिस को हम ने चाहा, और हम ने हद से बढ़ने वालों को हलाक कर दिया। (9)

तहकीक़ हम ने तुम्हारी तरफ़ एक किताब नाज़िल की जिस में तुम्हारा ज़िक्र है, तो क्या तुम समझते नहीं? (10)

और हम ने हलाक कर दी कितनी ही बस्तियां, कि वह ज़ालिम थीं, और हम ने उन के बाद दूसरे गिरोह (और लोग) पैदा किए। (11)

फिर जब उन्होंने ने हमारे अज़ाब की आहट पाई तो उस वक़्त उस से भागने लगे। (12)

तुम मत भागो और लौट जाओ उसी तरफ़ जहाँ तुम्हें आसाइश दी गई थी और अपने घरों की तरफ़, ताकि तुम्हारी पूछ गछ हो। (13)

वह कहने लगे हाए हमारी शामत! वेशक हम ज़ालिम थे। (14)

पस (बराबर) उन की यह पुकार रही, यहाँ तक कि हम ने उन्हें कटी हुई खेती और बुझी हुई आग (की तरह ढेर) कर दिया। (15)

और हम ने नहीं पैदा किया आस्मान को और ज़मीन को और जो उन के दरमियान में है खेलते हुए (बेकार)। (16)

अगर हम कोई खिलौना बनाना चाहते तो हम उस को अपने पास से बना लेते, अगर हम करने वाले होते (अगर हमें यह करना होता)। (17)

बल्कि हम फेंक मारते हैं, हक़ को वातिल पर, पस वह उस का भेजा (कचुम्बर) निकाल देता है तो वह उसी वक़्त नाबूद हो जाता है, और तुम्हारे लिए उस (बात) से ख़राबी है जो तुम बनाते हो। (18)

और उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है और जो उस के पास हैं वह सरकशी नहीं करते उस की इबादत से और न वह थकते हैं। (19)

और रात दिन तस्वीह (उस की पाकीज़गी) बयान करते हैं सुस्ती नहीं करते। (20)

क्या उन्होंने ने ज़मीन से कोई और माबूद बना लिए हैं कि वह उन्हें (मरने के बाद) दोबारा उठा कर खड़ा करेंगे। (21)

अगर उन दोनों (आस्मान ओ ज़मीन) में और माबूद होते अल्लाह के सिवा तो अलबत्ता (ज़मीन ओ आस्मान) दरहम बरहम हो जाते, पस अर्श अज़ीम का रब अल्लाह उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (22)

वह उस से पूछताछ नहीं कर सकते उस के (बारे में) जो वह करता है बल्कि वह पूछताछ किए जाएंगे। (23)

क्या उन्होंने ने उस के सिवा और माबूद बनाए हैं? फ़रमा दें, पेश करो अपनी दलील, यह किताब है जो मेरे साथ है, और किताब जो मुझ से पहले नाज़िल हुई है, अलबत्ता उन में अक्सर नहीं जानते हक़ को, पस वह रूग़दानी करते हैं। (24)

فَلَمَّا أَحْسَسُوا بِأَسْنَاءِ إِذَا هُمْ مِنْهَا يَرْكُضُونَ ﴿١٢﴾ لَا تَرْكُضُوا							
तुम मत भागो	12	भागने लगे	उस से	उस वक़्त वह	हमारा अज़ाब	उन्होंने ने आहट पाई	फिर जब
وَارْجِعُوا إِلَىٰ مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسْكِنُكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْأَلُونَ ﴿١٣﴾							
13	तुम्हारी पूछ गछ हो	ताकि तुम	और अपने घर (जमा)	उस में	तुम आसाइश दिए गए	जो तरफ़	और लौट जाओ
قَالُوا يُؤَيِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿١٤﴾ فَمَا زَالَتْ تِلْكَ دَعْوَاهُمْ حَتَّىٰ							
यहाँ तक कि	उन की पुकार	यह	पस रही	14	ज़ालिम	हम वेशक थे	हाए हमारी शामत वह कहने लगे
جَعَلْنَاهُمْ حَصِيدًا خُمِدِينَ ﴿١٥﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ							
और ज़मीन	आस्मान (जमा)	और हम ने नहीं पैदा किया	15	बुझी हुई आग	कटी हुई खेती	हम ने उन्हें कर दिया	
وَمَا بَيْنَهُمَا الْعِيقِينَ ﴿١٦﴾ لَوْ أَرَدْنَا أَنْ نَتَّخِذَ لَهُمَا لَهْوًا لَّاتَّخَذْنَاهُ							
तो हम उस को बना लेते	कोई खिलौना	हम बनाएं	कि	अगर हम चाहते	16	खेलते हुए	उन के दरमियान और जो
مِنْ لَّدُنَّا ۖ إِنْ كُنَّا فَعَلِينَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ							
वातिल	पर	हक़ को	हम फेंक मारते हैं	बल्कि	17	करने वाले	अगर हम होते अपने पास से
فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ وَلَكُمْ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾							
18	तुम बनाते हो	उस से जो	ख़राबी	और तुम्हारे लिए	नाबूद हो जाता है	वह तो उस वक़्त	पस वह उस का भेजा निकाल देता है
وَلَهُ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ							
वह तकब्बुर (सरकशी) नहीं करते	उस के पास	और जो	और ज़मीन में	आस्मानों में	जो	और उसी के लिए	
عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ﴿١٩﴾ يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ							
और दिन	रात	वह तस्वीह करते हैं	19	और न वह थकते हैं	उस की इबादत	से	
لَا يَفْتُرُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْ اتَّخَذُوا إِلَهًا مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنشِرُونَ ﴿٢١﴾							
21	उन्हें उठा खड़ा करेंगे	वह	ज़मीन से	कोई माबूद	उन्होंने ने बना लिया	क्या 20	वह सुस्ती नहीं करते
لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلَ اللَّهِ لَفَسَدَتَا ۖ فَسُبْحَنَ اللَّهِ							
अल्लाह	पस पाक है	अलबत्ता दोनों दरहम बरहम हो जाते	अल्लाह	सिवाए	माबूद	उन दोनों में	अगर होते
رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ							
और (बल्कि) वह	वह करता है	उस से जो	उस से बाज़ पुर्स नहीं करते	22	वह बयान करते हैं	उस से जो	अर्श रब
يُسْأَلُونَ ﴿٢٣﴾ أَمْ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ قُلْ هَاتُوا							
लाओ (पेश करो)	फ़रमा दें	और माबूद	अल्लाह के सिवा	उन्होंने ने बना लिए हैं	क्या 23	बाज़ पुर्स किए जाएंगे	
بُرْهَانَكُمْ ۚ هَذَا ذِكْرٌ مِّن مَّعَىٰ وَذِكْرٌ مِّن قَبْلِي ۖ							
जो मुझ से पहले	और किताब	मेरे साथ	जो	यह किताब	अपनी दलील		
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾							
24	रूग़दानी करते हैं	पस वह	हक़	नहीं जानते	उन में अक्सर	बल्कि (अलबत्ता)	

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ						
कि वेशक वह	उस की तरफ	हम ने वहि भेजी	मगर	कोई रसूल	आप से पहले	और नहीं भेजा हम ने
لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ (25) وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا						
एक बेटा	अल्लाह	बना लिया	और उन्होंने ने कहा	25	पस मेरी इबादत करो	मेरे सिवा नहीं कोई माबूद
سُبْحَنَهُ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ (26) لَا يَسْبِقُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُمْ						
और वह	वात में	वह उस से सबक़त नहीं करते	26	मुअज़्ज़ज़	बन्दे	बल्कि वह पाक है
بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ (27) يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ						
और जो उन के पीछे	उन के हाथों में (सामने)	जो	वह जानता है	27	अमल करते	उस के हुक़म पर
وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنْ ارْتَضَىٰ وَهُمْ مِنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ (28)						
28	डरते रहते हैं	उस के ख़ौफ़ से	और वह	उस की रज़ा हो	जिस के लिए	मगर और वह सिफ़ारिश नहीं करते
وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَهٌُ مِنْ دُونِهِ فَذَلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ						
जहन्नम	हम उसे सज़ा देंगे	पस वह शख्स	उस के सिवा	माबूद	वेशक मैं	उन में से कहे और जो
كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ (29) أَوَلَمْ يَرِ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ						
कि	उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो	क्या नहीं देखा	29	ज़ालिम (जमा)	हम सज़ा देते हैं इसी तरह
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كَانَتْ رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ						
पानी से	और हम ने किया	पस हम ने दोनों को खोल दिया	बन्द	दोनों थे	और ज़मीन	आस्मान (जमा)
كُلِّ شَيْءٍ حَيٍّ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ (30) وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ						
पहाड़	ज़मीन में	और हम ने बनाए	30	क्या पस वह ईमान नहीं लाते हैं	ज़िन्दा	हर शौ
أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ (31)						
31	राह पाएं	ताकि वह	रास्ते	कुशादा	उस में	और हम ने बनाए कि झुक न पड़े उन के साथ
وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ (32)						
32	रूगर्दानी करते हैं	उस की निशानियां	से	और वह	महफूज़	एक छत आस्मान और हम ने बनाए
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلُّ						
सब	और चाँद	और सूरज	और दिन	रात	पैदा किया	जिस ने और वह
فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ (33) وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ						
हमेशा रहना	आप (स) से कब्ल	किसी बशर के लिए	और हम ने नहीं किया	33	तैर रहे हैं	दाइरा (मदार) में
أَفَإِنْ مِتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ (34) كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ						
चखना	हर जी	34	हमेशा रहेंगे	पस वह	आप इन्तिकाल कर गए	क्या पस अगर
الْمَوْتِ وَنَبْلُوكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ (35)						
35	तुम लौट कर आओगे	और हमारी ही तरफ	आज़माइश	और भलाई	बुराई से	और हम तुम्हें मुव्तला करेंगे मौत

और तुम से पहले हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर हम ने वहि भेजी उस की तरफ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो। (25) उन (मुश्रिकों) ने कहा कि अल्लाह ने एक बेटा बना लिया है, वह उस (तोहमत) से पाक है, बल्कि मुअज़्ज़ज़ बन्दे है। (26) वह वात में उस से सबक़त नहीं करते और वह उस के हुक़म पर अमल करते है। (27) वह जानता है जो उन के सामने और उन के पीछे है, और वह सिफ़ारिश नहीं करते, मगर जिस के लिए उस की रज़ा हो, और वह उस के ख़ौफ़ से डरते रहते हैं। (28) और उन में से जो कोई यह कहे कि वेशक उस के सिवा मैं माबूद हूँ, पस उस शख्स को हम सज़ाए जहन्नम देंगे, इसी तरह हम ज़ालिमों को सज़ा देते हैं। (29) क्या काफ़िरों ने नहीं देखा? कि आस्मान और ज़मीन दोनों मिले हुए थे, पस हम ने दोनों को खोल दिया, और हम ने पानी से हर शौ को ज़िन्दा किया, तो क्या (फिर भी) वह ईमान नहीं लाते? (30) और हम ने ज़मीन में पहाड़ बनाए ताकि वह उन (लोगों) के साथ झुक न पड़े, और हम ने उस में कुशादा रास्ते बनाए ताकि वह राह पाएं। (31) और हम ने बनाया आस्मान एक महफूज़ छत और वह उस की निशानियों से रूगर्दानी करते हैं। (32) और वही है जिस ने पैदा किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, सब (अपने अपने) मदार में तैर रहे हैं। (33) और हम ने आप (स) से पहले किसी बशर के लिए हमेशा रहना नहीं (तजवीज़) किया, पस अगर आप (स) इन्तिकाल कर गए तो क्या वह हमेशा रहेंगे? (34) हर जी (मुतनफ़्फ़िस) को मौत (का ज़ाइक़ा) चखना है, और हम तुम्हें बुराई और भलाई से आजमाइश में मुव्तला करेंगे, और हमारी तरफ ही तुम लौट कर आओगे। (35)

और जब काफ़िर तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें सिर्फ़ एक हँसी मज़ाक़ ठहराते हैं, कि क्या यह है? वह जो तुम्हारे माबूदों को (बुराई से) याद करता है, और वह अल्लाह के ज़िक्र से मुन्किर है। (36)

इन्सान को पैदा किया गया है जल्द बाज़, अनकरीब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता हूँ, सो तुम जल्दी न करो। (37)

और वह कहते हैं कि यह वादाए (अज़ाब) कब (आएगा)? अगर तुम सच्चे हो। (38)

काश काफ़िर उस घड़ी को जान लेते जब वह न रोक सकेंगे (दोज़ख़ की) आग को अपने चेहरों से, और न अपनी पीठों से, और न वह मदद किए जाएंगे। (39)

बल्कि (क़ियामत) उन पर अचानक आएगी तो वह उन्हें हैरान (बद हवास) कर देगी, पस उन्हें उसे लौटाने की सकत न होगी और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (40)

और अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाई गई आप (स) से पहले रसूलों की, पस उन में से जिन्होंने ने मज़ाक़ उड़ाया उन्हें उस (अज़ाब ने) आ घेरा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (41)

फ़रमा दें, रहमान (के अज़ाब) से रात और दिन तुम्हारी कौन निगहबानी करता है? बल्कि वह अपने रब की याद से रूगर्दानी करते हैं। (42)

क्या हमारे सिवा उन के कुछ और माबूद हैं? जो उन्हें (मसाइब से) बचाते हैं, वह सकत नहीं रखते अपनी मदद की (भी) और न वह हम से (बचाने के लिए) साथी पाएंगे। (43)

बल्कि हम ने उन को उन के बाप दादा को साज़ ओ सामान दिया यहाँतक कि उन की उम्र दराज़ हो गई। पस क्या वह नहीं देखते कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते (मुन्किरों पर तंग करते) आ रहे हैं, फिर क्या वह ग़ालिब आने वाले हैं। (44)

आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि मैं तुम्हें वहि से डराता हूँ, और बहरे पुकार नहीं सुनते जब भी उन्हें डराया जाए। (45)

وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَذَا							
क्या यह है	एक हँसी मज़ाक़	मगर (सिर्फ़)	ठहराते तुम्हें	नहीं	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	तुम्हें देखते हैं	और जब
الَّذِي يَذْكُرُ الْهَيْكُمَ وَهُمْ يَذْكُرُ الرَّحْمَنِ هُمْ كَفَرُونَ ﴿٣٦﴾							
36	मुन्किर (जमा)	वह	रहमान (अल्लाह)	ज़िक्र से	और वह	तुम्हारे माबूद	याद करता है वह जो
خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ سَأُورِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾							
37	तुम जल्दी न करो	अपनी निशानियां	अनकरीब मैं दिखाता हूँ तुम्हें	जल्दी (जल्द बाज़)	से	इन्सान	पैदा किया गया
وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾ لَوْ يَعْلَمُ							
काश वह जान लेते	38	सच्चे	तुम हो	अगर	वादा	यह	कब और वह कहते हैं
الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكْفُونُ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا							
और न	आग	अपने चेहरे	से	वह न रोक सकेंगे	वह घड़ी	जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	
عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿٣٩﴾ بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً							
अचानक	आएगी उन पर	बल्कि	39	मदद किए जाएंगे	और न वह	उन की पीठ (जमा)	से
فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٤٠﴾							
40	मोहलत दी जाएगी	और न उन्हें	उस को लौटाना	पस न उन्हें सकत होगी	तो हैरान कर देगी उन्हें		
وَلَقَدْ اسْتَهْزَأَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا							
मज़ाक़ उड़ाया	उन को जिन्होंने ने	आ घेरा (पकड़ लिया)	आप (स) से पहले	रसूलों की	और अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाई गई		
مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٤١﴾ قُلْ مَن يَكْلُوكُم بَالِيلٍ							
रात में	तुम्हारी निगहबानी करता है	कौन	फ़रमा दें	41	मज़ाक़ उड़ाते थे	उस के साथ (का)	थे जो उन में से
وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٤٢﴾							
42	रूगर्दानी करते हैं	अपना रब	याद से	बल्कि वह	रहमान से	और दिन	
أَمْ لَهُمُ إِلَهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُونِنَا لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ							
मदद	वह सकत नहीं रखते	हमारे सिवा	उन्हें बचाते हैं	कुछ माबूद	उन के लिए	क्या	
أَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِنَّا يُصْحَبُونَ ﴿٤٣﴾ بَلْ مَتَّعْنَا هَؤُلَاءِ							
उन को	हम ने साज़ ओ सामान दिया	बल्कि	43	वह साथी पाएंगे	हम से	और न वह	अपने आप
وَأَبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي							
कि हम आ रहे हैं	क्या पस वह नहीं देखते	उम्र	उन पर-की	दराज़ हो गई	यहाँ तक कि	और उन के बाप दादा को	
الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾ قُلْ إِنَّمَا							
इस के सिवा नहीं कि	फ़रमा दें	44	ग़ालिब आने वाले	क्या फिर वह	उस के किनारे (जमा)	से	उस को घटाते हुए ज़मीन
أَنْذَرُكُمْ بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنْذَرُونَ ﴿٤٥﴾							
45	उन्हें डराया जाए	भी	जब	पुकार	बहरे	और नहीं सुनते हैं	वहि से मैं तुम्हें डराता हूँ

ع ۲

وَلَئِنْ مَسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يُوَيَّلَنَا							
हाए हमारी शामत	वह ज़रूर कहेंगे	तेरा रब	अज़ाब से	एक लपट	उन्हें छुए	और अगर	
إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَمَةِ							
क़ियामत	दिन	इंसाफ़	तराजू-मीज़ान	और हम रखेंगे (काइम करेंगे)	46	ज़ालिम (जमा)	वेशक हम थे
فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ							
एक दाना	वज़न बराबर	होगा	और अगर	कुछ भी	किसी शख्स पर	तो न जुल्म किया जाएगा	
مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَىٰ بِنَا حَسِيبِينَ ﴿٤٧﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا							
और अलबत्ता हम ने अता की	47	हिसाब लेने वाले	हम	और काफी	हम उसे ले आएंगे	राई से - का	
مُوسَىٰ وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاءَ وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾							
48	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	और रोशनी	फ़र्क़ करने वाली (किताब)	और हारून (अ)	मूसा (अ)	
الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ							
क़ियामत	से	और वह	बग़ैर देखे	अपना रब	वह डरते हैं	जो लोग	
مُشْفِقُونَ ﴿٤٩﴾ وَهَذَا ذِكْرٌ مُّبْرَكٌ أَنزَلْنَاهُ أَفَأَنْتُمْ لَهُ							
इस के	तो क्या तुम	हम ने इसे नाज़िल किया	बाबरकत	नसीहत	और यह	49	खौफ़ खाते हैं
مُنْكَرُونَ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِن قَبْلُ							
उस से क़व्ल	हिदायत यावी (फहमे सलीम)	इब्राहीम (अ)	और तहकीक़ अलबत्ता हम ने दी	50	मुन्क़िर (जमा)		
وَكُنَّا بِهِ عَلِيمِينَ ﴿٥١﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَذِهِ التَّمَاثِيلُ							
मूर्तियाँ	क्या है यह	और अपनी क़ौम	अपने बाप से	जब उस ने कहा	51	जानने वाले	उस के और हम थे
الَّتِي أَنْتُمْ لَهَا عِكِفُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا							
उन के लिए	अपने बाप दादा को	हम ने पाया	वह बोले	52	जमे बैठे हो	उन के लिए	तुम जो कि
عِبْدِينَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ							
गुमराही में	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	तहकीक़ तुम रहे	उस ने कहा	53	पूजा करने वाले	
مُبِينٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوا أَجِئْنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنْتَ مِنَ اللَّعِينِينَ ﴿٥٥﴾							
55	खेलने वाले (दिल लगी करने वाले)	से	तुम	या	हक़ को	क्या तुम लाए हो हमारे पास	वह बोले 54 सरीह
قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي							
वह जिस ने	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	रब (मालिक)	तुम्हारा रब	बल्कि	उस ने कहा	
فَطَرَهُنَّ ۖ وَإِنَّا عَلَىٰ ذِكْرِكَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٦﴾							
56	गवाह (जमा)	से	इस बात पर	और मैं	उन्हें पैदा किया		
وَتَاللَّهِ لَا كِيدَنَّ أَصْنَامَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ﴿٥٧﴾							
57	पीठ फेर कर	तुम जाओगे	कि	बाद	तुम्हारे बुत (जमा)	अलबत्ता मैं ज़रूर चाल चलूंगा	और अल्लाह की क़सम

और अगर उन्हें तेरे रब के अज़ाब की एक लपट छुए तो वह ज़रूर कहेंगे हाए हमारी शामत! हम

ज़ालिम थे। (46)

और हम क़ियामत के दिन मीज़ाने अदल काइम करेंगे तो किसी शख्स

पर कुछ भी जुल्म न किया जाएगा। और अगर (कोई अमल) राई के

एक दाने के बराबर भी होगा तो

हम उसे ले आएंगे, और काफी है

हम हिसाब लेने वाले। (47)

और हम ने मूसा (अ) और हारून (अ)

को (हक़ ओ वातिल में) फ़र्क़ करने वाली (किताब) और रोशनी अता की,

और परहेज़गारों के लिए नसीहत। (48)

जो लोग अपने रब से बग़ैर देखे डरते हैं और वह क़ियामत से खौफ़

खाते हैं। (49)

और यह बाबरकत नसीहत है (जो)

हम ने नाज़िल की है तो क्या तुम

उस के मुन्क़िर हो? (50)

और तहकीक़ अलबत्ता हम ने उस

से क़व्ल इब्राहीम (अ) को

फहम सलम दी थी और हम उस

के जानने वाले थे। (51)

जब उस ने कहा अपने बाप से

और अपनी क़ौम से, क्या है यह

मूर्तियाँ? जिन के लिए तुम जमे बैठे

हो। (52)

वह बोले हम ने पाया अपने बाप

दादा को उन की पूजा करते। (53)

उस (इब्राहीम अ) ने कहा तहकीक़

तुम और तुम्हारे बाप दादा सरीह

गुमराही में रहे। (54)

वह बोले क्या तुम हमारे पास हक़

लाए हो? या दिल लगी करने वालों

में से हो। (55)

उस ने कहा बल्कि तुम्हारा रब

मालिक है आस्मानों और ज़मीन

का, वह जिस ने उन्हें पैदा किया

और उस बात पर मैं गवाहों में से

(गवाह) हूँ। (56)

और अल्लाह की क़सम! अलबत्ता

मैं तुम्हारे बुतों से ज़रूर चाल

चलूंगा, उस के बाद जबकि तुम

पीठ फेर कर चले जाओगे। (57)

पस उस ने उन के एक बड़े के सिवा सब को रेज़ा रेज़ा कर डाला, ताकि वह उस की तरफ़ रुजूअ करें। (58) कहने लगे कौन है जिस ने हमारे माबूदों के साथ यह किया? बेशक वह तो ज़ालिमों में से है। (59) बोले हम ने सुना है कि एक जवान इन (बुतों) के बारे में बातें करता है, उस को इब्राहीम (अ) कहा जाता है। (60) बोले तो उसे लोगों की आँखों के सामने ले आओ ताकि वह देखें। (61) उन्होंने ने कहा कि ऐ इब्राहीम (अ)! क्या यह तू ने हमारे माबूदों के साथ किया है? (62) उस ने कहा बल्कि यह उन के बड़े ने किया है तो उन (ही) से पूछ लो अगर वह बोलते हैं। (63) पस वह सोच में पड़ गए अपने दिलों में, फिर उन्होंने ने कहा बेशक तुम ही ज़ालिम हो (नाहक़ पर हो)। (64) फिर वह अपने सरो पर औन्धे किए गए (उन की मत पलट गयी), तू खूब जानता है कि यह नहीं बोलते। (65) उस ने कहा क्या तुम फिर अल्लाह के सिवा उन की परसतिश करते हो? जो न तुम्हें कुछ पहुँचा सकें और न नुक़सान पहुँचा सकें। (66) तुफ़ है तुम पर! और (उन) बुतों पर जिन की तुम अल्लाह के सिवा परसतिश करते हो? क्या तुम फिर भी नहीं समझते? (67) वह कहने लगे उसे जला डालो और अपने माबूदों की मदद करो अगर तुम्हें कुछ करना है। (68) हम ने हुक्म दिया, ऐ आग़! तू इब्राहीम (अ) पर ठंडी हो जा और सलामती। (69) और उन्होंने ने उस के साथ फ़रेब का इरादा किया तो हम ने उन्हें कर दिया इन्तिहाई ज़ियाकार। (70) और हम ने उसे और लूत (अ) को उस सर ज़मीन की तरफ़ (भेज कर) बचा लिया, जिस में हम ने जहानों के लिए वरक़त रखी। (71) और उस को अ़ता किया इसहाक़ (अ) (बेटा), और याकूब (अ) पोता, और हम ने उन सब को नेकोकार बनाया। (72)

فَجَعَلَهُمْ جُودًا إِلَّا كَبِيرًا لَهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ﴿٥٨﴾							
58	रुजूअ करें	उस की तरफ़	ताकि वह	उन का	एक बड़ा	सिवाए	उस ने उन्हें कर डाला
قَالُوا مَنْ فَعَلَ هَذَا بِالْهَيْتِنَا إِنَّهُ لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٩﴾							
59	ज़ालिम (जमा)	से	बेशक वह	यह हमारे माबूदों के साथ	किया	कौन - किस	कहने लगे
قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ﴿٦٠﴾ قَالُوا							
	बोले	60	इब्राहीम (अ)	उस को	कहा जाता है	वह उन के बारे में बातें करता है	एक जवान हम ने सुना है वह बोले
فَاتُّوا بِهِ عَلَىٰ أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ﴿٦١﴾							
61	वह देखें	ताकि वह	लोग	आँखें	सामने	उसे	तुम ले आओ
قَالُوا ءَأَنْتَ فَعَلْتَ هَذَا بِالْهَيْتِنَا يَا بُرْهِيمُ ﴿٦٢﴾ قَالَ بَلْ فَعَلَهُ ۥ							
	उस ने किया है	बल्कि	उस ने कहा	62	ऐ इब्राहीम (अ)	हमारे माबूदों के साथ	यह तू ने किया क्या तू उन्होंने ने कहा
كَبِيرُهُمْ هَذَا فَسَلُّوهُمْ إِنْ كَانُوا يَنْطِقُونَ ﴿٦٣﴾ فَرَجَعُوا إِلَىٰ							
तरफ़	पस वह लौटे (सोच में पड़ गए)	63	वह बोलते हैं	अगर	तो उन से पूछ लो	यह	उन का बड़ा
أَنْفُسِهِمْ فَقَالُوا إِنَّكُمْ أَنْتُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٦٤﴾ ثُمَّ نَكَسُوا							
	फिर वह औन्धे किए गए	64	ज़ालिम (जमा)	तुम ही	बेशक तुम	फिर उन्होंने ने कहा	अपने दिल
عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هَؤُلَاءِ يَنْطِقُونَ ﴿٦٥﴾ قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ							
	क्या फिर तुम परसतिश करते हो	उस ने कहा	65	बोलते हैं	यह नहीं	तू खूब जानता है	अपने सरो पर
مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾ أَفِ							
तुफ़	66	और न नुक़सान पहुँचा सकें तुम्हें	कुछ	न तुम्हें नफ़ा पहुँचा सकें	जा	अल्लाह के सिवा	
لَكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾							
67	फिर तुम नहीं समझते	क्या	अल्लाह के सिवा	परसतिश करते हो तुम	और उस पर जिसे	तुम पर	
قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ ﴿٦٨﴾							
68	तुम हो करने वाले (कुछ करना है)	अगर	अपने माबूदों	और तुम मदद करो	तुम इसे जला डालो	वह कहने लगे	
قُلْنَا يَنَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾ وَأَرَادُوا							
और उन्होंने ने इरादा किया	69	इब्राहीम (अ)	पर	और सलामती	ठंडी	ऐ आग तू हो जा	हम ने हुक्म दिया
بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْآخَسِرِينَ ﴿٧٠﴾ وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا							
और लूत (अ)	और हम ने उसे बचा लिया	70	बहुत ख़सारा पाने वाले (ज़ियाकार)	तो हम ने उन्हें कर दिया	फ़रेब	उस के साथ	
إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾ وَوَهَبْنَا لَهُ							
उस को	और हम ने अ़ता किया	71	जहानों के लिए	उस में	वह जिस में हम ने वरक़त रखी	सर ज़मीन	तरफ़
إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۚ وَكَلاَّ جَعَلْنَا صُلْحِينَ							
72	सालेह (नेकोकार)	हम ने बनाया	और सब	पोता	और याकूब (अ)	इसहाक़ (अ)	

وَجَعَلْنَاهُمْ أَيْمَةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ						
निक काम करना	उन की तरफ़	और हम ने वहि भेजी	हमारे हुक़म से	वह हिदायत देते थे	(जमा) इमाम (पेशवा)	और हम ने उन्हें बनाया
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَكَانُوا لَنَا عَبِيدِينَ ﴿٧٣﴾						
73	इबादत करने वाले	हमारे ही	और वह थे	ज़कात	और अदा करना	नमाज़ और काइम करना
وَلَوْطًا آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي						
जो	बस्ती से	और हम ने उसे बचा लिया	और इल्म	हुक़म	हम ने उसे दिया	और लूत (अ)
كَانَتْ تَعْمَلُ الْخَبِيثَ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَسَقِينَ ﴿٧٤﴾						
74	बदकार	बुरे लोग	थे	बेशक वह	गन्दे काम	करती थी
وَادْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٧٥﴾ وَنُوحًا						
और नूह (अ)	75	(जमा) सालेह (नेकोकार)	से	बेशक वह	अपनी रहमत में	और हम ने दाख़िल किया उसे
إِذْ نَادَى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ						
बेचैनी	से	और उस के लोग	फिर हम ने उसे नज़ात दी	उस की	तो हम ने कुबूल कर ली	उस से पहले जब पुकारा
الْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾ وَنَصَرْنَاهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا						
हमारी आयातों को	झुटलाया	जिन्होंने ने	लोग	से - पर	और हम ने उस को मदद दी	76 बड़ी
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَأَعْرِفْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٧٧﴾ وَدَاوُدَ						
और दाऊद (अ)	77	सब	हम ने गर्क़ कर दिया उन्हें	बुरे	लोग	वह थे बेशक वह
وَسُلَيْمَنَ إِذْ يَحْكُمُ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفَسَتْ فِيهِ						
उस में	रात में चर गई	जब	खेती के बारे में	फ़ैसला कर रहे थे	जब	और सुलेमान (अ)
غَنَمِ الْقَوْمِ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شَاهِدِينَ ﴿٧٨﴾ فَفَهَّمْنَاهَا سُلَيْمَنَ						
सुलेमान (अ)	पस हम ने उस को फ़हम दी	78	मौजूद	उनके फ़ैसले (के वक़्त)	और हम थे	एक क़ौम की बकरियां
وَكُلًّا آتَيْنَا حُكْمًا وَعِلْمًا وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ						
पहाड़ (जमा)	दाऊद (अ)	साथ - का	और हम ने मुसख़्ख़र कर दिया	और इल्म	हुक़म	हम ने दिया और हर एक
يُسَبِّحُنَ وَالطَّيْرُ وَكُنَّا فَاعِلِينَ ﴿٧٩﴾ وَعَلَّمْنَاهُ صَنْعَةَ						
सन्‌अत (कारीगरी)	और हम ने उसे सिखाई	79	करने वाले	और हम थे	और परिन्दे	वह तस्वीह करते थे
لَبُوسٍ لَّكُمْ لِيُحْصِنَكُمْ مِنْ بَأْسِكُمْ فَهَلْ أَنْتُمْ						
तुम	पस क्या	तुम्हारी लड़ाई	से	ताकि वह तुम्हें बचाए	तुम्हारे लिए	एक लिबास
شَاكِرُونَ ﴿٨٠﴾ وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي بِأَمْرِ						
उस के हुक़म से	चलती	तेज़ चलने वाली	हवा	और सुलेमान (अ) के लिए	80	शुक्र करने वाले
إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عَالِمِينَ ﴿٨١﴾						
81	जानने वाले	हर शौ	और हम हैं	उस में	जिस को हम ने बरक़त दी है	सरज़मीन तरफ़

और हम ने उन्हें पेशवा बनाया, वह हमारे हुक़म से हिदायत देते थे और हम ने उन की तरफ़ वहि भेजी निक काम करने की, और नमाज़ काइम करने, और ज़कात अदा करने की, और वह हमारी ही इबादत करने वाले थे। (73)

और हम ने लूत (अ) को हुक़म दिया (हिक्मत ओ नबुव्वत) और इल्म (दिया) और हम ने उसे उस बस्ती से बचा लिया जो गन्दे काम करती थी, बेशक वह थे बुरे और बदकार लोग। (74)

और हम ने उसे अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह नेकोकारों में से है। (75)

और (याद करो) जब उस से क़व्ल नूह (अ) ने पुकारा तो हम ने उस की दुआ कुबूल कर ली, फिर हम ने उसे और उस के लोगों को नज़ात दी बड़ी बेचैनी (सख़्ती) से। (76)

और हम ने उस को मदद दी उन लोगों पर जिन्होंने ने हमारी आयातों को झुटलाया, बेशक वह बुरे लोग थे, फिर हम ने उन सब को गर्क़ कर दिया। (77)

और (याद करो) जब दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) एक खेती के बारे में फ़ैसला कर रहे थे जब उस में रात के वक़्त एक क़ौम की बकरियां चर गई, और हम उन के फ़ैसले के वक़्त मौजूद थे। (78)

पस हम ने सुलेमान (अ) को (सहीह फ़ैसले की) फ़हम दी और हर एक को हम ने हुक़म (हिक्मत ओ नबुव्वत) और इल्म दिया, और हम ने पहाड़ों को दाऊद (अ) के साथ मुसख़्ख़र कर दिया, वह तस्वीह करते थे और परिन्दे (भी) मुसख़्ख़र किए और करने वाले हम थे। (79)

और हम ने उसे तुम्हारे लिए एक लिबास (बनाने) की कारीगरी सिखाई ताकि वह तुम्हें तुम्हारी लड़ाई से बचाए, पस क्या तुम शुक्र करने वाले हो? (80)

और हम ने तेज़ चलने वाली हवा सुलेमान (अ) के लिए (मुसख़्ख़र की) वह उस के हुक़म से उस सरज़मीन में (शाम) की तरफ़ चलती, जिस में हम ने बरक़त दी, और हम हर शौ को जानने वाले हैं। (81)

और शैतानों में से (मुसल्लख किए) जो गोता लगाते थे उस के लिए, और उस के सिवा और काम (भी) करते थे, और हम उन को संभालते थे। (82)

और अय्यूब (अ) को (याद करो) जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे तकलीफ पहुँची है और तू रहम करने वालों में सब से बड़ा रहम करने वाला है। (83)

तो हम ने कुबूल कर ली उस की (दुआ), पस उसे जो तकलीफ थी हम ने खोल दी (दूर कर दी) और हम ने उसे उस के घर वाले दिए, और उन के साथ उन जैसे (और भी) रहमत फ़रमा कर अपने पास से, और इबादत करने वालों के लिए नसीहत। (84)

और इस्माईल (अ), और इदरीस (अ), और जुलकिफ़ल (अ), यह सब सबर करने वालों में से थे। (85)

और हम ने उन्हें अपनी रहमत में दाखिल किया, वेशक वह नेकोंकारों में से थे। (86)

और (याद करो) जब मछली वाले (यूनस अ अपनी कौम से) गुस्से में भर कर चल दिए, पस उस ने गुमान किया कि हम हरगिज़ उस पर तंगी (गिरफ़्त) न करेंगे (जब मछली निगल गई) तो उस ने अन्धेरो में पुकारा कि (ऐ अल्लाह) तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है, वेशक मैं ज़ालिमों (कुसूरवारों) में से था। (87)

फिर हम ने उस की (दुआ) कुबूल कर ली और हम ने उसे ग़म से नजात दी, और इस तरह हम मोमिनों को नजात दिया करते हैं। (88)

और (याद करो) जब ज़करिया (अ) ने अपने रब को पुकारा ऐ मेरे रब! मुझे अकेला (लावारिस) न छोड़ और तू (सब से) बेहतर वारिस है। (89)

फिर हम ने उस की (दुआ) कुबूल कर ली और हम ने उसे अ़ता किया यहिया (अ) और हम ने उस के लिए उस की वीवी को दुरुस्त (औलाद के काबिल) कर दिया वेशक वह सब नेक कामों में जल्दी करते थे, वह हमें उम्मीद ओ ख़ौफ़ से पुकारते थे। और वह हमारे सामने आजिज़ी करने वाले थे। (90)

وَمِنَ الشَّيْطَانِ مَنْ يَغْوُضُونَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا					
और से	शैतान (जमा)	जो गोता लगाते थे	उस के लिए	और करते थे	काम
دُونَ ذَلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حَفِظِينَ ﴿٨٢﴾ وَأَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ					
उस के सिवा	और हम थे	उन के लिए	संभालने वाले	82	और अय्यूब (अ) जब उस ने पुकारा
رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ﴿٨٣﴾					
अपना रब	कि मैं	मुझे पहुँची है	तकलीफ	और तू	सब से बड़ा रहम करने वाला
فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ ضُرٍّ ۚ وَآتَيْنَاهُ أَهْلَهُ					
तो हम ने कुबूल कर ली	उस की	पस हम ने खोल दी	जो	उस को	तकलीफ
وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً ۖ مِّنْ عِنْدِنَا ۖ وَذِكْرَىٰ لِلْعَبِيدِينَ ﴿٨٤﴾					
और उन जैसे	उन के साथ	रहमत फ़रमा कर	से	अपने पास	और नसीहत करने वालों के लिए
وَإِسْمَاعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصَّابِرِينَ ﴿٨٥﴾					
और इस्माईल (अ)	और इदरीस (अ)	और जुल किफ़ल	यह सब	से	सबर करने वाले
وَادْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا ۖ إِنَّهُمْ مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٦﴾					
और हम ने दाखिल किया उन्हें	अपनी रहमत में	वेशक वह	से	नेकोंकार (जमा)	86
وَذَا النُّونِ إِذْ ذَهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَنْ لَّنْ نَقْدِرَ عَلَيْهِ					
और जुन नून (मछली वाला)	जब	चला गया	गुस्से में भर कर	पस गुमान किया उस ने	कि हम हरगिज़ तंगी न करेंगे
فَنَادَىٰ فِي الظُّلُمَاتِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ ۗ					
तो उस ने पुकारा	अन्धेरो में	कि नहीं	कोई माबूद	तेरे सिवा	तू पाक है
إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٧﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ۖ وَنَجَّيْنَاهُ					
वेशक मैं	मैं था	से	ज़ालिम (जमा)	87	फिर हम ने कुबूल कर ली
مِّنَ الْغَمِّ ۖ وَكَذَلِكَ نُجِي الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾ وَزَكَرِيَّا					
ग़म से	और इसी तरह	हम नजात देते हैं	मोमिन (जमा)	88	और ज़करिया (अ)
إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا ۖ وَأَنْتَ					
जब उस ने पुकारा	अपना रब	ऐ मेरे रब	न छोड़ मुझे	अकेला	और तू
خَيْرُ الْوَارِثِينَ ﴿٨٩﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ۖ وَوَهَبْنَا لَهُ يَحْيَىٰ وَأَصْلَحْنَاهُ					
बेहतर	वारिस (जमा)	89	फिर हम ने कुबूल कर ली	उस की	और हम ने अ़ता किया
لَهُ زَوْجَةٌ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرِ					
उस के लिए	उस की वीवी	वेशक वह सब	वह जल्दी करते थे	में	नेक काम (जमा)
وَيَدْعُونََنَا رَغَبًا وَرَهَبًا ۖ وَكَانُوا لَنَا خَشِعِينَ ﴿٩٠﴾					
और वह हमें पुकारते थे	उम्मीद	और खौफ़	और वह थे	हमारे लिए (सामने)	आजिज़ी करने वाले

وَالَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا مِنْ رُوحِنَا						
अपनी रूह	उस में	फिर हम ने फूंक दी	अपनी शर्मगाह (इपफ़त की)	उस ने हिफाज़त की	और (औरत) जो	
وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿٩١﴾ إِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ						
तुम्हारी उम्मत	यह है	वेशक	91	जहानों के लिए	निशानी	और उस का बेटा और हम ने उसे बनाया
أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ						
अपना काम (दीन)	और टुकड़े टुकड़े कर लिया उन्होंने ने	92	पस मेरी इबादत करो	तुम्हारा रब	और मैं	एक (यकता) उम्मत
بَيْنَهُمْ ۖ كُلُّ إِلَيْنَا رَاجِعُونَ ﴿٩٣﴾ فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ						
नेक काम	कुछ	करे	पस जो	93	रुजूअ करने वाले	हमारी तरफ़ सब बाहम
وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهِ ۖ وَإِنَّا لَهُ كَنُزُونَ ﴿٩٤﴾						
94	लिख लेने वाले	उस के	और वेशक हम	उस की कोशिश	तो नाक़दी (अकारत) नहीं	ईमान वाला और वह
وَحَرْمٌ عَلَىٰ قَرِيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٩٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا						
जब	यहां तक कि	95	लौट कर नहीं आएंगे	कि वह	जिसे हम ने हलाक कर दिया	बस्ती पर और हराम
فَتَحَتْ يَأْجُوجَ وَمَاجُوجَ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ﴿٩٦﴾						
96	फिसलते (दौड़ते) आएंगे	बुलन्दी (टीले)	हर	से	और वह	और माजूज याजूज खोल दिए जाएंगे
وَأَقْرَبَ الْوَعْدِ الْحَقُّ فَإِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ أَبْصَارُ						
आँखें	ऊपर लगी (फटी) रह जाएंगी	वह	तो अचानक	सच्चा	वादा	और करीब आजाएगा
الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يَوِيلَنَا قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا بَلْ كُنَّا						
बल्कि हम थे	इस से	ग़फ़लत में	तहकीक़ हम थे	हाए हमारी शामत	जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	
ظَالِمِينَ ﴿٩٧﴾ إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ						
अल्लाह के सिवा	से	तुम परस्तिश करते हो	और जो	वेशक तुम	97	ज़ालिम (जमा)
حَصْبُ جَهَنَّمَ ۖ أَنْتُمْ لَهَا وَرَدُونَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هَؤُلَاءِ						
यह	अगर होते	98	दाख़िल होने वाले	तुम उस में	जहनन्म	इंधन
إِلَهَةً مَّا وَرَدُوها ۖ وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيهَا						
वहां	उनके लिए	99	सदा रहेंगे	उस में	और सब	उस में दाख़िल न होते माबूद
زَفِيرٌ ۖ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ						
पहले ठहर चुकी	जो लोग	वेशक	100	(कुछ) न सुन सकेंगे	उस में	और वह चीख़ ओ पुकार
لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنَىٰ ۖ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُونَ						
वह न सुनेंगे	101	दूर रखे जाएंगे	उस से	वह लोग	भलाई	हमारी (तरफ़) से उन के लिए
حَسِيصَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٢﴾						
102	वह हमेशा रहेंगे	उन के दिल	जो चाहेंगे	में	और वह	उस की आहट

(और याद करो मरयम अ को) जिस ने अपनी इपफ़त की हिफाज़त की, फिर हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी, और हम ने उसे और उस के बेटे को जहानों के लिए निशानी बनाया। (91) वेशक यह है तुम्हारी उम्मत (मिल्लत) यकता उम्मत, और मैं तुम्हारा रब हूँ, पस मेरी इबादत करो। (92) और उन्होंने ने अपना काम (दीन) बाहम टुकड़े टुकड़े कर लिया, सब हमारी तरफ़ रुजूअ करने वाले (लौटने वाले) हैं। (93) पस जो कोई नेक काम करे और वह ईमान वाला हो तो अकारत नहीं (जाएगी) उस की कोशिश, और वेशक हम उस के लिख लेने वाले हैं। (94) उस बस्ती पर (दुनिया में लौट कर आना) हराम है, जिसे हम ने हलाक कर दिया कि वह लौट कर नहीं आएंगे। (95) यहां तक कि जब याजूज ओ माजूज खोल दिए जाएंगे, और वह हर टीले से दौड़ते आएंगे। (96) और सच्चा वादा करीब आजाएगा तो अचानक मुन्किरों की आँखें फटी की फटी रह जाएंगी, हाए हमारी शामत! तहकीक़ हम इस से ग़फ़लत में थे, बल्कि हम ज़ालिम थे। (97) वेशक तुम और वह जिन की तुम परस्तिश करते हो अल्लाह के सिवा, जहनन्म का इंधन हैं, तुम उस में दाख़िल होने वाले हो। (98) अगर यह माबूद होते तो उस में दाख़िल न होते, और वह सब उस में सदा रहेंगे। (99) उन के लिए वहां चीख़ ओ पुकार है, और वह उस में कुछ न सुन सकेंगे। (100) वेशक जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से पहले (ही) भलाई ठहर चुकी वह लोग उस से दूर रखे जाएंगे। (101) वह न सुनेंगे उस की आहट (भी) और उन के दिल जो चाहेंगे वह उस (आराम ओ राहत) में हमेशा रहेंगे। (102)

उन्हें गमगीन न करेगी बड़ी घबराहट, और फरिश्ते उन्हें लेने आएंगे, यह है (वह) दिन जिस का तुम से वादा किया गया था। (103) जिस दिन हम आस्मान लपेट देंगे, जैसे तहरीर के कागज़ का तूमार लपेटा जाता है, जैसे हम ने पहली बार पैदाइश की थी हम उसे फिर लौटा देंगे, यह वादा हम पर (हमारे ज़िम्मे) है, वेशक हम पूरा करने वाले हैं। (104) और तहकीक हम ने ज़बूर में नसीहत के वाद लिखा कि ज़मीन के वारिस हमारे नेक बन्दे होंगे। (105) वेशक इस में इबादत गुज़ार लोगों के लिए (वशारत) एक बड़ी ख़बर है। (106) और हम ने नहीं भेजा आप (स) को मगर तमाम ज़हानों के लिए रहमत। (107) आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि मेरी तरफ़ बहि की गई है कि बस तुम्हारा माबूद माबूद यकता है, पस क्या तुम हुक्म बरदार हो? (108) फिर अगर वह रूगर्दानी करें तो कह दो कि मैं ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया है बराबरी पर (यकसां तौर से) और मैं नहीं जानता जो तुम से वादा किया गया है वह क़रीब है या दूर? (109) वेशक वह जानता है पुकार कर कही हुई बात को (भी) और वह (भी) जानता है जो तुम छुपाते हो। (110) और मैं नहीं जानता शायद (अज़ाब में ताख़ीर) तुम्हारे लिए आज़माइश हो और एक मुदत तक फ़ाइदा पहुँचाना हो। (111) नबी (स) ने कहा ऐ मेरे रब! तू हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमा, और हमारा रब निहायत मेहरबान है, उस से मदद तलब की जाती है (उन बातों) पर जो तुम बयान करते (बनाते) हो। (112) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है ऐ लोगो! अपने रब से डरो, वेशक क़ियामत का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ है। (1)

لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ هَذَا يَوْمُكُمْ							
तुम्हारा दिन	यह है	फरिश्ते	और लेने आएंगे उन्हें	बड़ी	घबराहट	गमगीन न करेगी उन्हें	
الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾ يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ							
तूमार	जैसे लपेटा जाता है	आस्मान	हम लपेट लेंगे	जिस दिन	103	तुम थे वादा किए गए (वादा किया गया था)	वह जो
لِلْكُتُبِ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعَدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا							
वेशक हम हैं	हम पर	वादा	हम उसे लौटा देंगे	पैदाइश	पहली	जैसे हम ने इब्तदा की	तहरीर का कागज़
فَاعِلِينَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ							
कि	नसीहत के वाद		ज़बूर में	और तहकीक हम ने लिखा		104	(पूरा) करने वाले
الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ فِي هَذَا لَبَلَاغًا							
एक बड़ी ख़बर	इस में	वेशक	105	नेक (जमा)	मेरे बन्दे	उस के वारिस	ज़मीन
لِقَوْمٍ عَابِدِينَ ﴿١٠٦﴾ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٧﴾							
107	तमाम जहानों के लिए	रहमत	मगर	हम ने भेजा आप (स) को	और नहीं	106	लोगों के लिए
قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ فَهَلْ أَنْتُمْ							
तुम	पस क्या	वाहिद	माबूद	तुम्हारा माबूद	कि बस	मेरी तरफ़	इस के सिवा नहीं
مُسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ آذَنْتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ وَإِنْ أَدْرَىٰ							
जानता मैं	और नहीं	बराबरी पर	मैं ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया		तो कह दो	वह रूगर्दानी करें	फिर अगर
أَقْرَبُ أَمْ بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ							
से कही गयी बात	बुलंद आवाज़	वह जानता है	वेशक वह	109	जो तुम से वादा किया गया	या दूर	क्या करीब?
وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾ وَإِنْ أَدْرَىٰ لَعَلَّهُ فِتْنَةً لِّكُمْ							
तुम्हारे लिए	आज़माइश	शायद वह	और मैं नहीं जानता	110	जो तुम छुपाते हो	और जानता है	
وَمَتَاعٍ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾ قُلْ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ وَرَبُّنَا							
और हमारा रब	हक के साथ	तू फ़ैसला फ़रमा	ऐ मेरे रब	उस (नबी) ने कहा	111	एक मुदत तक	और फ़ाइदा पहुँचाना
الرَّحْمَنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾							
112	जो तुम बयान करते हो		पर	जिस से मदद तलब की जाती है		निहायत मेहरबान	
آيَاتُهَا ٧٨ ﴿٢٢﴾ سُورَةُ الْحَجِّ ﴿١٠﴾ زُكُوعَاتُهَا ١٠							
रुकुआत 10 (22) सूरतुल हज आयत 78							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ﴿١﴾							
1	बड़ी भारी	चीज़	क़ियामत	ज़लज़ला	वेशक	अपना रब	डरो
ऐ लोगो!							

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ					
वह दूध पिलाती है	जिस को	हर दूध पिलाने वाली	भूल जाएगी	तुम देखोगे उसे	जिस दिन
وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَرَىٰ					
नशे में	लोग	और तू देखेगा	अपना हमल	हर हमल वाली (हामिला)	और गिरा देगी
وَمَا هُمْ بِسُكَرَىٰ وَلَكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ﴿٢﴾ وَمِنَ النَّاسِ					
और हालांकि नहीं	नशे में	और लेकिन	अल्लाह का अज़ाब	सख्त	2
مَنْ يُجَادِلْ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّبِعْ كُلَّ شَيْطَانٍ					
जो	झगड़ा करते हैं	अल्लाह के (वारे) में	वे जाने बूझे	और पैरवी करते हैं	हर शैतान
مَّرِيدٍ ﴿٣﴾ كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَإِنَّهُ يُضِلُّهُ					
सरकश	3	उस पर (उस की) निस्वत लिख दिया गया	कि वह	जो दोस्ती करेगा उस से	तो वह वेशक
وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿٤﴾ يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ					
और राह दिखाएगा उसे	तरफ	अज़ाब	दोज़ख	4	ऐ लोगो!
فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّرَابٍ ثُمَّ					
शक में	से	जी उठना	तो वेशक हम	हम ने पैदा किया तुम्हें	मिट्टी से
مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُّخَلَّقَةٍ					
नुतफ़े से	फिर	जमे हुए खून से	फिर	गोشت की बोटी से	सूरत बनी हुई
لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ					
ताकि हम ज़ाहिर कर दें	तुम्हारे लिए	और हम ठहराते हैं	रहमों में	जो हम चाहें	तक
أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ					
एक मुदते मुक़र्ररा	फिर	हम निकालते हैं तुम्हें	बच्चा	फिर	ताकि तुम पहुँचो
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفَّىٰ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ الْعُمُرِ					
और तुम में से	कोई	फौत हो जाता है	और तुम में से	कोई	पहुँचता है
لَّكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا وَتَرَى الْأَرْضَ					
ताकि वह न जाने	बाद	इल्म (जानना)	कुछ	और तू देखता है	ज़मीन
هَامِدَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ					
खुशक पड़ी हुई	फिर जब	हम ने उतारा	उस पर	पानी	वह तरोताज़ा हो गई
وَأَنْبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ﴿٥﴾ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ					
और उगा लाई	से	हर जोड़ा	रौनकदार	5	यह
هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٦﴾					
वही बरहक	और यह कि वह	ज़िन्दा करता है	मुर्दा	और यह कि वह	पर

जिस दिन तुम उसे देखोगे, भूल जाएगी हर दूध पिलाने वाली जिस (बच्चे) को दूध पिलाती है, और हर हामिला अपना हमल गिरा देगी, और तू लोगों को देखेगा (जैसे वह) नशे में हों हालांकि वह नशे में न होंगे, लेकिन अल्लाह का अज़ाब सख्त है। (2)

और कुछ लोग हैं जो अल्लाह के वारे में वे जाने बूझे झगड़ा करते हैं, और वह हर सरकश शैतान की पैरवी करते हैं। (3)

उस की निसवत लिख दिया गया कि जो उस से दोस्ती करेगा तो वह वेशक उसे गुमराह कर देगा, और उसे दोज़ख के अज़ाब की तरफ़ राह दिखाएगा। (4)

ऐ लोगो! अगर तुम (क़ियामत के दिन) जी उठने से शक में हो तो (सोचो) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुतफ़े से, फिर जमे हुए खून से, फिर गोश्त की बोटी से, सूरत बनी हुई और बग़ैर सूरत बनी (अधूरी) ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी कुदरत) ज़ाहिर कर दें और हम (माँओं के) रहमों में से जो चाहें एक मुदत तक ठहराते हैं, फिर हम तुम्हें निकालते हैं बच्चे (की सूरत में) ताकि फिर तुम अपनी जवानी को पहुँचो, और तुम में कोई (उम्रे तबई से क़ब्ल) फौत हो जाता है, और तुम में से कोई पहुँचता है निकम्मी उम्र तक, ताकि वह जानने के बाद कुछ न जाने (नासमझ हो जाए)। और तू ज़मीन को देखता है खुशक पड़ी हुई, फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तो वह तरोताज़ा हो गई, और उभर आई, और वह उगा लाई हर (क़िस्म) का जोड़ा रौनकदार (नबातात का)। (5)

यह इस लिए है कि अल्लाह ही बरहक है, और यह कि वह मुर्दा को ज़िन्दा करता है, और यह कि वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (6)

और यह कि क़ियामत आने वाली है, इस में कोई शक नहीं, और यह कि अल्लाह उठाएगा जो क़ब्रों में हैं। (7) और लोगों में कोई (ऐसा भी है) जो अल्लाह के बारे में झगड़ता है बग़ैर किसी इल्म के, और बग़ैर किसी दलील के, और बग़ैर किसी किताबे रोशन के। (8)

(तक़व्वुर से) अपनी गर्दन मोड़े हुए ताकि अल्लाह के रास्ते से गुमराह करे, उस के लिए दुनिया में रसवाई है और हम उसे रोज़े क़ियामत जलती आग का अज़ाब चखाएंगे। (9)

यह उस सबब से जो तेरे हाथों ने (आगे) भेजा (तेरे आमाल) और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं। (10)

और लोगों में (कोई ऐसा भी है) जो एक किनारे पर अल्लाह की बन्दगी करता है, फिर अगर उसे भलाई पहुँच गई तो उस (इबादत) से इतमिनान पा लिया, और उसे अगर कोई आजमाइश पहुँची तो वह अपने मुँह के बल पलट गया, दुनिया और आख़िरत के घाटे में रहा, यही है खुला घाटा। (11)

वह अल्लाह के सिवा पुकारता है (उस को) जो न उसे नुक़सान पहुँचा सके और न उसे नफ़ा पहुँचा सके, यही है इन्तिहा दरजे की गुमराही। (12)

वह पुकारता है, उस को जिस का ज़रर उस के नफ़ा से ज़ियादा करीब है, वेशक बुरा है (यह) दोस्त और बुरा है (यह) रफ़ीक़। (13)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने दुरुस्त अमल किए वेशक अल्लाह उन्हें उन बागात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे बहती हैं नहरें, वेशक अल्लाह जो चाहता है करता है। (14)

जो शख़्स गुमान करता है कि अल्लाह उस (रसूल स) की हरगिज़ मदद न करेगा दुनिया और आख़िरत में, तो उसे चाहिए के एक रस्सी आस्मान की तरफ़ ताने, फिर उसे (आस्मान को) काट डाले, फिर देखे क्या उस की यह तदवीर उस चीज़ को दूर कर देती है जो उसे गुस्सा दिला रही है। (15)

وَأَنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَأَنَّ اللَّهَ يَبْعَثُ مَنْ								
जो	उठाएगा	अल्लाह	और यह कि	उस में	नहीं शक	आने वाली	घड़ी (क़ियामत)	और यह कि
فِي الْقُبُورِ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ								
बग़ैर किसी इल्म	अल्लाह (के बारे) में	झगड़ता है	जो	और लोगों में से	7	क़ब्रों में		
وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ﴿٨﴾ ثَانِي عِظْفِهِ لِيُضِلَّ عَنْ								
से	ताकि गुमराह करे	अपनी गर्दन	मोड़े हुए	8	रोशन	और बग़ैर किसी किताब	और बग़ैर किसी दलील	
سَبِيلِ اللَّهِ لَهُ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَنُذِيقُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ								
रोज़े क़ियामत		और हम उसे चखाएंगे	रुसवाई	दुनिया में		उस के लिए	अल्लाह	रास्ता
عَذَابِ الْحَرِيقِ ﴿٩﴾ ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتَ يَدَكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ								
नहीं	और यह कि अल्लाह	तेरे हाथ	आगे भेजा	यह उस सबब जो		9	जलती आग	अज़ाब
بِظُلَامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿١٠﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللَّهَ عَلَى حَرْفٍ								
एक किनारा	पर	अल्लाह	बन्दगी करता है	जो	लोग	और से	10	अपने बन्दों पर जुल्म करने वाला
فَإِنْ أَصَابَهُ خَيْرٌ اطْمَأَنَّ بِهِ وَإِنْ أَصَابَتْهُ فِتْنَةٌ انْقَلَبَ عَلَى								
पर-बल	तो पलट गया	कोई आज़माइश	उसे पहुँची	और अगर	उस से	तो इत्मिनान पा लिया	भलाई	उसे पहुँच गई फिर अगर
وَجْهَهُ ۖ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ﴿١١﴾								
11	खुला	वह घाटा		यह है	और आख़िरत	दुनिया में घाटा		अपना मुँह
يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُ وَمَا لَا نِفْعَهُ ۚ ذَلِكَ هُوَ								
वह	यह है	न उसे नफ़ा पहुँचाए		और जो	न उसे नुक़सान पहुँचाए	जो	अल्लाह के सिवा	से पुकारता है वह
الضَّلَالِ الْبَعِيدِ ﴿١٢﴾ يَدْعُوا لِمَنْ ضَرُّهُ أَقْرَبُ مِنْ نَفْعِهِ ۚ								
उस के नफ़ा से		ज़ियादा करीब	उस का ज़रर	उस को जो	वह पुकारता है	12	दूर-इन्तिहा दर्जा	गुमराही
لَيْسَ الْمَوْلَىٰ وَلَيْسَ الْعَشِيرُ ﴿١٣﴾ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا								
वह जो लोग ईमान लाए		दाख़िल करेगा	वेशक अल्लाह	13	रफ़ीक़	और वेशक बुरा	दोस्त	वेशक बुरा
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ								
नहरें	उन के नीचे			वहती है	बागात	और उन्होंने ने दुरुस्त अमल किए		
إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَّنْ يَنْصُرَهُ								
हरगिज़ उस की मदद न करेगा		कि	गुमान करता है	जो	14	जो वह चाहता है	करता है	वेशक अल्लाह
اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ								
आस्मान की तरफ़		एक रस्सी	तो उसे चाहिए कि ताने		और आख़िरत	दुनिया में		अल्लाह
ثُمَّ لَيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدَهُ مَا يَغِيظُ ﴿١٥﴾								
15	जो गुस्सा दिला रही है	उस की तदवीर	दूर कर देती है	क्या	फिर देखे	उसे काट डाले		फिर

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يُرِيدُ ﴿١٦﴾								
16	वह चाहता है	जिस को	हिदायत देता है	और यह कि अल्लाह	रोशन	आयतें	हम ने इस को नाज़िल किया और इसी तरह	
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالطَّغْيِينِ وَالنَّاصِرِينَ								
और नसारा (मसीही)		और साबी (सितारा परस्त)		यहूदी हुए	और जो	जो लोग ईमान लाए		वेशक
وَالْمَجُوسِ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ								
रोज़े कियामत		उन के दरमियान	फ़ैसला कर देगा	वेशक अल्लाह	और वह जिन्हों ने शिर्क किया (मुश्रिक)		और आतिश परस्त	
إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ								
जो	सिज्दा करता है उस के लिए	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा?	17	मुत्तला	हर शै	पर	वेशक अल्लाह
فِي السَّمُوتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ								
और सितारे		और चाँद		और सूरज		ज़मीन में		और जो आस्मानों में
وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالْدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ وَكَثِيرٌ حَقٌّ								
साबित हो गया	और बहुत से	इन्सान (जमा)	से	और बहुत	और चौपाए	और दरख्त	और पहाड़	
عَلَيْهِ الْعَذَابُ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّكْرِمٍ إِنَّ اللَّهَ								
वेशक अल्लाह	कोई इज़्ज़त देने वाला	तो नहीं उस के लिए	ज़लील करे अल्लाह	और जिसे	अज़ाब		उस पर	
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿١٨﴾ هَذِهِ خَصْمَتَانِ اخْتَصِمُوا فِي رَبِّهِمْ								
अपने रब (के बारे) में		वह झगड़े		दो फ़रीक	यह दो	18	जो वह चाहता है करता है	
فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ								
ऊपर	डाला जाएगा	आग के		कपड़े	उन के लिए	काटे गए	कुफ़ किया	पस वह जिन्हों ने
رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ								
20	और जिल्द (खालें)	उन के पेटों में		जो	उस से	पिघल जाएगा	19	खौलता हुआ पानी उन के सर (जमा)
وَلَهُمْ مَّقَامِعٌ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾ كَلَّمَآ أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا								
कि वह निकलें		वह इरादा करेंगे	जब भी	21	लोहे के		गुर्ज़	और उन के लिए
مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾								
22	जलने का अज़ाब		और चखो	उस में		लौटा दिए जाएंगे	ग़म से (ग़म के मारे)	उस से
إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ								
बागात	नेक		और उन्होंने ने अमल किए		जो लोग ईमान लाए		दाखिल करेगा	वेशक अल्लाह
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ								
कंगन		वह पहनाए जाएंगे उस में		नहरें		उन के नीचे		वहती है
مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾								
23	रेशम	उस में		और उन का लिबास		और मोती		सोने के

और इसी तरह हम ने इस (कुरआन) को उतारा, रोशन आयतें और यह कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है। (16)

वेशक जो लोग ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और सितारा परस्त, और नसारा, और आतिश परस्त, और मुश्रिक, वेशक अल्लाह फ़ैसला कर देगा रोज़े क्रियामत उन के दरमियान, वेशक अल्लाह हर चीज़ पर मुत्तला है। (17)

क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह के लिए सिज्दा करता है जो (भी) आस्मानों में और जो (भी) ज़मीन में है, और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़, और दरख्त, और चौपाए और बहुत से इन्सान (भी), और बहुत से हैं कि साबित हो गया है उन पर अज़ाब, और जिसे अल्लाह ज़लील करे उस के लिए कोई इज़ज़त देने वाला नहीं, और वेशक अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (18)

यह दो फ़रीक अपने रब के बारे में झगड़े, पस जिन्होंने ने कुफ़ किया, उन के लिए आग के कपड़े काटे जा चुकें हैं, उन के सरों के ऊपर खीलता हुआ पानी डाला जाएगा। (19)

उस से पिघल जाएगा जो उन के पेटों में है और (उन की) खालें (भी) (20) और उन के लिए लोहे के गुर्ज़ हैं। (21)

जब भी वह ग़म के मारे उस से निकलने का इरादा करेंगे उसी में लौटा दिए जाएंगे और (कहा जाएगा) जलने का अज़ाब चखो। (22)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, वेशक अल्लाह उन्हें वागात में दाखिल करेगा जिन के नीचे वहती है नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और उस में उन का लिबास रेशम (का होगा)। (23)

और उन्हें हिदायत की गई पाकीज़ा वात की तरफ़ और हिदायत की गई तारीफ़ों के लाइक (अल्लाह) के रास्ते की तरफ़। (24)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया, और वह रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से और बैतुल्लाह से जिसे हम ने मुक़र्रर किया है सब लोगों के लिए, उस में रहने वाले और परदेसी बराबर हैं (हुकूक में) और जो उस में जुल्म से गुमराही का इरादा करेगा हम उसे दर्दनाक अज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे। (25)

और (याद करो) जब हम ने इब्राहीम (अ) के लिए ख़ाने क़अबा की जगह ठीक कर दी, (हम ने हुक्म दिया) कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना, और मेरा घर पाक रखना तवाफ़ करने वालों के लिए और क़ियाम करने वालों और रुकूअ़ ओ स़िज्दा करने वालों के लिए। (26)

और लोगों में हज का एलान कर दो कि वह तेरे पास पैदल और दुबली ऊँटनियों पर आएँ, वह आती है हर दूर दराज़ रास्ते से। (27)

ताकि वह फ़ाइदे देखें जो यहां उन के लिये रखे गए हैं, और वह अल्लाह का नाम लें मुक़र्ररा दिनों में (जुबह करते वक़्त) उन मवेशियों (जानवरों) पर जो हम ने उन्हें दिए हैं, पस उन में से तुम (खुद भी) खाओ और वदहाल मोहताज को (भी) खिलाओ। (28)

फिर चाहिए कि अपना मैल कुचैल दूर करें, और अपनी नज़रें (मन्नतें) पूरी करें, और क़दीम घर (बैतुल्लाह) का तवाफ़ करें। (29)

यह (है हुक्म) और जो अल्लाह की हुरमतों की ताज़ीम करे, पस वह (ताज़ीम) उस के रब के नज़्दीक उस के लिए बेहतर है, और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल क़रार दिए गए उन के सिवा जो तुम पर पढ़ दिए (सुना दिए गए) पस तुम बचो (किनारा कश रहो) वुतों की गन्दगी से। और बचो झूटी वात से। (30)

وَهْدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۖ وَهْدُوا إِلَى صِرَاطِ							
और उन्हें हिदायत की गई	तरफ	पाकीज़ा	से - की	वात	और उन्हें हिदायत की गई	तरफ	राह
الْحَمِيدِ (२४) إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ							
तारीफों का लाइक	24	वेशक	जिन लोगों ने कुफ़ किया	और वह रोकते हैं	से	अल्लाह का रास्ता	अल्लाह
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ							
मस्जिदे हराम (बैतुल्लाह)	वह जिसे	हम ने मुक़र्रर किया	लोगों के लिए	बराबर	रहने वाला		
فِيهِ وَالْبَادِ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِالْحَادِ بِظُلْمٍ نُذِقْهُ مِنْ							
उस में	और परदेसी	और जो	इरादा करे	उस में	गुमराही का	जुल्म से	हम उसे चखाएंगे
عَذَابٍ أَلِيمٍ (२५) وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ							
अज़ाब	दर्दनाक	25	और जब	हम ने ठीक कर दी	इब्राहीम के लिए	खाने क़अबा की जगह	कि
لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ							
न शरीक करना	मेरे साथ	किसी शै	और पाक रखना	मेरा घर	तवाफ़ करने वालों के लिए	और क़ियाम करने वाले	
وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ (२६) وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا							
और रुकूअ़ करने वाले	सिज्दा करने वाले	26	और एलान कर दो	लोगों में	हज का	वह तेरे पास आएँ	पैदल
وَعَلَى كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ (२७) لِيَشْهَدُوا							
और पर	हर दुबली ऊँटनी	वह आती है	से	हर रास्ता	दूर दराज़	27	ताकि वह देखें
مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ							
फाइदे	अपने	वह याद करें (करलें)	अल्लाह का नाम	में	जाने पहचाने (मुक़र्ररा) दिन		
عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا							
पर	जो	हम ने उन्हें दिया	से	चौपाए	मवेशी	पस तुम खाओ	उस से
وَأَطِعُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيرَ (२८) ثُمَّ لِيَقْضُوا تَفَثَهُمْ							
और खिलाओ	वदहाल	मोहताज	28	फिर	चाहिए कि दूर करें	अपना मैल कुचैल	
وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ (२९)							
और पूरी करें	अपनी नज़रें	और तवाफ़ करें	क़दीम घर	29			
ذَلِكَ وَمَنْ يُعْظَمْ حُرْمَتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ عِنْدَ رَبِّهِ							
यह	और जो	ताज़ीम करे	शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियाँ)	पस वह	बेहतर	उसके लिए	उसके रब के नज़्दीक
وَأَحَلَّتْ لَكُمْ الْأَنْعَامَ إِلَّا مَا يُثْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا							
और हलाल करार दिए गए	तुम्हारे लिए	मवेशी	सिवाए	जो पढ़ दिए गए	तुम पर - तुम को	पस तुम बचो	
الرَّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ (३०)							
गन्दगी	से	बुत (जमा)	और बचो	वात	झूटी	30	

ع ३
१०

حُنَفَاءَ اللَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا							
तो गोया	अल्लाह का	शरीक करेगा	और जो	उस के साथ	शरीक करने वाले	न	अल्लाह के लिए एक रख हो कर
خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخَطَّفَهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوَىٰ بِهِ الرِّيحُ فِي							
में	हवा	उस को	फेंक देती है	या	परिन्दे	पस उसे उचक ले जाते हैं	आस्मान से वह गिरा
مَكَانٍ سَحِيقٍ ﴿٣١﴾ ذَلِكَ وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ							
से	तो वेशक यह	शआइरे अल्लाह	ताज़ीम करेगा	और जो	यह	31	दूर दराज़ किसी जगह
تَقْوَى الْقُلُوبِ ﴿٣٢﴾ لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ							
फिर	एक मुद्दे मुर्कर	तक	नफ़ा (फाइदे)	उस में	तुम्हारे लिए	32	(जमा) कल्व (दिल) परहेज़गारी
مَحِلَّهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ أُمّةٍ جَعَلْنَا مَنَسَكًا							
कुरबानी	हम ने मुर्कर की	और हर उम्मत के लिए	33	वैते क़दीम (वैतुल्लाह)	तक	उन के पहुँचने का मुक़ाम	
لِيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ							
मवेशी	चौपाए	से	जो हम ने दिए उन्हें	पर	अल्लाह का नाम	ताकि वह लें	
فَالَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَلَهُ أَسْلِمُوا وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ﴿٣٤﴾							
34	आजिज़ी से गर्दन झुकाने वाले	और खुशख़बरी दें	फरमाबरदार हो जाओ	पस उस के	माबूदे यकता	पस तुम्हारा माबूद	
الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ							
पर	और सब्र करने वाले	उन के दिल	डर जाते हैं	अल्लाह का नाम लिया जाए	जब	वह जो	
مَا أَصَابَهُمْ وَالْمُقِيمِي الصَّلَاةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٥﴾							
35	वह खर्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया	और उस से जो	नमाज़	और काइम करने वाले	जो उन्हें पहुँचे	
وَالْبُدْنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ							
भलाई	उस में	तुम्हारे लिए	शआइरे अल्लाह	से	तुम्हारे लिए	हम ने मुर्कर किए	और कुरबानी के ऊँट
فَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافَّ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا							
उन के पहलू	गिर जाएं	फिर जब	क़तार बान्ध कर	उन पर	अल्लाह का नाम	पस लो तुम	
فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ كَذَلِكَ سَخَّرْنَاهَا							
हम ने उन्हें मुसख़्ख़र किया	इसी तरह	और सवाल करने वाले	सवाल न करने वाले	और खिलाओ	उन से	तो खाओ	
لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٣٦﴾ لَنْ يَنَالَ اللَّهُ لُحُومُهَا وَلَا							
और न	उन का गोश्त	हरगिज़ नहीं पहुँचता अल्लाह को	36	शुक्र करो	ताकि तुम	तुम्हारे लिए	
دِمَآؤُهَا وَلَكِنْ يَنَالُهُ التَّفْؤَىٰ مِنْكُمْ كَذَلِكَ سَخَّرَهَا							
हम ने उन्हें मुसख़्ख़र किया	इसी तरह	तुम से	तक्वा	उस को पहुँचता	और लेकिन (बल्कि)	उन का खून	
لَكُمْ لِيُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَيْنَاكُمْ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٧﴾							
37	नेकी करने वाले	और खुशख़बरी दें	जो उस ने हिदायत दी तुम्हें	पर	अल्लाह	ताकि तुम बड़ाई से याद करो	तुम्हारे लिए

(सब को छोड़ कर) अल्लाह के लिए एक रख हो कर, (किसी को) न शरीक करने वाले उस के साथ, और जो कोई अल्लाह का शरीक करेगा तो गोया वह आस्मान से गिरा, फिर उसे परिन्दे उचक ले जाते हैं या फेंक देती है उस को हवा किसी दूर दराज़ की जगह में। (31)

यह (है हुक्म) और जो शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियाँ) की ताज़ीम करेगा तो वेशक यह दिलों की परहेज़गारी से है। (32) तुम्हारे लिए उन (मवेशियों) में एक मुद्दे मुर्कर तक फाइदे (हासिल करना जाइज़) है, फिर उन के पहुँचने का मुक़ाम वैते क़दीम (वैतुल्लाह) के पास है। (33)

और हम ने हर उम्मत के लिए कुरबानी मुर्कर की ताकि वह अल्लाह का नाम लें (जुवह करते वक़्त) उन मवेशियों चौपायों पर जो हम ने उन्हें दिए हैं, पस तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस उस के फरमाबरदार हो जाओ, और (ऐ मुहम्मद स) आजिज़ी से गर्दन झुकाने वालों को खुशख़बरी दें। (34)

वह (जिन की कैफ़ियत यह है कि) जब अल्लाह का नाम लिया जाए तो उन के दिल डर जाते हैं, और वह सब्र करने वाले उस पर जो उन्हें पहुँचे, और नमाज़ काइम करने वाले, और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह खर्च करते हैं। (35)

और कुरबानी के ऊँट हम ने तुम्हारे लिए शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियाँ) मुर्कर किए, तुम्हारे लिए उन में भलाई है, पस अल्लाह का नाम लो (जुवह करते वक़्त) उन पर क़तार बान्ध कर, फिर जब उन के पहलू (ज़मीन पर) गिर जाएं (जुवह हो जाएं) तो उन में से (खुद भी) खाओ और खिलाओ, सवाल न करने वालों को और

सवाल करने वालों को, इसी तरह हम ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (ज़ेरे फ़रमान) किया है ताकि तुम शुक्र करो (एहसान मानो)। (36)

अल्लाह को हरगिज़ नहीं पहुँचता उन का गोश्त और न उन का खून, बल्कि उस को पहुँचता है तक्वा (तुम्हारे दिलों की परहेज़गारी), उसी तरह हम ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (ज़ेरे फ़रमान) किया ताकि तुम अल्लाह को बड़ाई से याद करो उस पर जो उस ने तुम्हें हिदायत दी, और नेकी करने वालों को खुशख़बरी दें। (37)

वेशक अल्लाह दूर करता है मोमिनों से (दुश्मनों के ज़रर), वेशक अल्लाह किसी भी दगाबाज़ (खाइन) नाशुक्रे को पसंद नहीं करता। (38) इज़्ने (जिहाद) दिया गया उन लोगों को जिन से (काफ़िर) लड़ते हैं, क्योंकि उन पर जुल्म किया गया, और अल्लाह वेशक उन की मदद पर ज़रूर कुदतर रखता है। (39) जो लोग निकाले गए अपने शहरों से नाहक, सिर्फ़ (इस बिना पर) कि वह कहते हैं हमारा रब अल्लाह है, और अगर अल्लाह दफ़अ न करता लोगों को एक दूसरे से, तो सोमए (राहियों के खिलवत खाने) और (नसारा के) गिरजे, और (यहूद के) इबादत खाने और (मुसलमानों की) मसजिदें ढा दी जातीं जिन में अल्लाह का नाम बकसूरत लिया जाता है, और अलवत्ता अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा जो उस की मदद करता है, वेशक अल्लाह तवाना, ग़ालिब है। (40) वह लोग कि अगर हम उन्हें मुल्क में दस्तरस (इख़्तियार) दें तो मनाज़ काइम करें और ज़कात अदा करें और नेक कामों का हुक्म दें और बुराई से रोकें, और तमाम कामों का अनुजाम अल्लाह ही के लिए है। (41) और अगर यह तुम्हें झुटलाए तो इन से क़व्ल झुटलाया नूह (अ) की कौम ने, और आद और समूद ने, (42) और इब्राहीम (अ) की कौम ने, और कौमे लूत (अ), (43) और मदयन वालों ने, और मूसा (अ) को (भी) झुटलाया गया, पस मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया, तो कैसा हुआ मेरे इन्कार (का अनुजाम)! (44) सो कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हम ने हलाक किया और वह ज़ालिम थी, तो वह (अब) अपनी छतों पर गिरी पड़ी है, और (कितने ही) कुँएँ बेकार पड़े हैं, और बहुत से गचकारी के (पुख़्ता) महल (वीरान पड़े हैं)। (45) पस क्या वह ज़मीन पर चलते फिरते नहीं जो उन के दिल (ऐसे) हो जाते कि उन से समझने लगते, या उन के कान (ऐसे हो जाते कि) उन से सुनने लगते, क्यों कि आँखें दरहकीक़त अन्धी नहीं हुआ करती, बल्कि दिल जो सीनों में हैं अन्धे हो जाया करते हैं। (46)

إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ						
वेशक अल्लाह	वचाव करता है	से	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	वेशक अल्लाह	पसंद नहीं करता	किसी-तमाम
خَوَّانٍ كَفُورٍ (٣٨) أَذِنَ لِلَّذِينَ يَقْتُلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا وَإِنَّ اللَّهَ						
दगाबाज़	नाशुक्रा	38	इज़्ने दिया गया	उन लोगों को	जिन से लड़ते हैं	क्योंकि वह उन पर जुल्म किया गया
عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ (٣٩) الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ						
उन की मदद पर	ज़रूर कुदतर रखता है	39	जो लोग	निकाले गए	से	अपने घर (जमा) शहरों
إِلَّا أَنْ يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ						
मगर (सिर्फ़) यह कि	वह कहते हैं	हमारा रब अल्लाह	और अगर न	दफ़अ करता	लोग	उन के बाज़ (एक को)
بِبَعْضٍ لَّهَدَمْتُ صَوَامِعَ وَبِيعَ وَصَلَوْتُ وَمَسَجِدُ يُذَكِّرُ						
बाज़ से (दूसरे)	तो ढा दिए जाते	सोमए	और गिरजे	और इबादत खाने	और मसजिदें	ज़िक्र किया हाता है (लिया जाता है)
فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ						
उन में	नाम	अल्लाह	बहुत-बकसूरत	और अलवत्ता ज़रूर मदद करेगा अल्लाह	जो	उस की मदद करता है
عَزِيزٌ (٤٠) الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا						
ग़ालिब	40	वह लोग जो	अगर	हम दस्तरस दें उन्हें	ज़मीन (मुल्क) में	वह काइम करें
الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ						
ज़कात	और हुक्म दें	नेक कामों का	और वह रोकें	बुराई से	और अल्लाह के लिए अनुजाम कार	
الْأُمُورِ (٤١) وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ						
तमाम काम	41	और अगर	तुम्हें झुटलाए	तो झुटलाया	इन से क़व्ल	नूह की कौम
وَتَمُودُ (٤٢) وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ (٤٣) وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ وَكُذِّبَ						
और समूद	42	और इब्राहीम (अ) की कौम	और कौमे लूत (अ)	43	और मदयन वाले	और झुटलाया गया
مُوسَىٰ فَأَمْلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ (٤٤)						
मूसा (अ)	पस मैं ने ढील दी	काफ़िरों को	फिर	मैं ने उन्हें पकड़ लिया	तो कैसा	हुआ मेरा इन्कार
فَكَانَ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا						
तो कितनी	बस्तियां	हम ने हलाक किया उन्हें	और यह (वह)	ज़ालिम	कि वह-यह	गिरी पड़ी पर
وَبُئِرَ مَعْظَلَةٌ وَقَصْرٌ مَشِيدٌ (٤٥) أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونُ						
और कुँएँ	बेकार	और बहुत महल	गचकारी के	45	पस क्या वह चलते फिरते नहीं	जमीन में
لَهُمْ قُلُوبٌ يَّعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَّسْمَعُونَ بِهَا فَإِنَّهَا						
उन के	दिल	वह समझने लगते	उन से	या कान (जमा)	सुनने लगते	उन से
لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ (٤٦)						
अन्धी नहीं होती	आँखें	और लेकिन (बल्कि)	अन्धे हो जाते हैं	दिल (जमा)	वह जो	सीनों में

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ وَإِنَّ يَوْمًا							
एक दिन	और वेशक	अपना वादा	अल्लाह	खिलाफ करेगा	और हरगिज़ नहीं	अज़ाब	और वह तुम से जल्दी मांगते हैं
عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ﴿٤٧﴾ وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ							
वसतियां		और कितनी ही	47	तुम गिनते हो	उस से जो	हज़ार साल के मानिंद	तुम्हारे रब के हां
أَمَلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَالَّتِي الْمَصِيرُ ﴿٤٨﴾ قُلْ							
फरमा दें	48	लौट कर आना	और मेरी तरफ	मैं ने पकड़ा उन्हें	फिर	ज़ालिम	और वह उन को मैं ने ढील दी
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِينَ آمَنُوا							
पस जो लोग ईमान लाए		49	डराने वाला आशकारा		तुम्हारे लिए	मैं	इस के सिवा नहीं ऐ लोगो!
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِينَ سَعَوْا							
जिन लोगों ने कोशिश की		50	वाइज़ज़त	और रिज़्क	बख्शिश	उन के लिए	अच्छे और उन्होंने ने अमल किए
فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٥١﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا							
और नहीं भेजा हम ने		51	दोज़ख़ वाले		वही है	आज़िज़ करने (हराने)	हमारी आयात में
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّى أَلْقَى الشَّيْطَانُ							
शैतान	डाला	उस ने आर्जू की	जब	मगर	नबी	और न	रसूल से - कोई तुम से पहले
فِي أُمْنِيَّتِهِ فَيَنْسَخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكُمُ اللَّهُ							
अल्लाह मज़बूत कर देता है		फिर	शैतान	जो डालता है	अल्लाह	पस मिटा देता है	उस की आर्जू में
آيَتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٢﴾ لِيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ							
शैतान	जो डाला	ताकि बनाए वह	52	हिकमत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपनी आयात
فِتْنَةً لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ ط							
उन के दिल		और सख़्त	मरज़	उन के दिलों में		उन लोगों के लिए	एक आज़माइश
وَأَنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ							
वह लोग जिन्हें	और ताकि जान लें	53	दूर - बड़ी	अलबत्ता सख़्त ज़िद में		ज़ालिम (जमा)	और वेशक
أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ							
उस के लिए	तो झुक जाएं	उस पर	तो वह ईमान ले आए	तुम्हारे रब से		हक़	इल्म दिया गया
قُلُوبُهُمْ ط وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادٍ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٤﴾							
54	सीधा	रास्ता	तरफ़	वह लोग जो ईमान लाए		हिदायत देने वाला	और वेशक अल्लाह उन के दिल
وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِنْهُ حَتَّى تَأْتِيَهُمْ							
आए उन पर		यहां तक कि	उस से	शक	में	जिन लोगों ने कुफ़ किया	और हमेशा रहेंगे
السَّاعَةِ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ يَوْمَ عَقِيمٍ ﴿٥٥﴾							
55	मनहूस दिन			अज़ाब	या आ जाए उन पर		अचानक क़ियामत

और तुम से अज़ाब जल्दी मांगते हैं, और हरगिज़ न अल्लाह अपने वादे के खिलाफ़ करेगा, और वेशक तुम्हारे रब के हां एक दिन हज़ार साल के मानिंद है उस से जो तुम गिनते हो (तुम्हारे हिसाब में)। (47) और कितनी ही वसतियां हैं, मैं ने उन को ढील दी और वह ज़ालिम थी, फिर मैं ने उन्हें पकड़ा, और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। (48) फरमा दें, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि मैं तुम्हारे लिए आशकारा डराने वाला हूँ। (49) पस जो लोग ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अमल किए, उन के लिए बख़्शिश और वाइज़ज़त रिज़्क है। (50) और जिन लोगो ने कोशिश की (अपने ज़अम में) हमारी आयात को हराने में, वही हैं दोज़ख़ वाले। (51) और हम ने तुम से पहले नहीं भेजा कोई रसूल और न नबी, मगर जब उस ने आर्जू की तो शैतान ने उस की आर्जू में (वसवसा) डाला, पस शैतान जो डालता है अल्लाह मिटा देता है, फिर अल्लाह अपनी आयात को मज़बूत कर देता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (52) ताकि (उस वसवसे को) जो शैतान ने डाला उन लोगो के लिए आज़माइश बना दे जिन के दिलों में मरज़ है और उन के दिल सख़्त हैं, और वेशक ज़ालिम अलबत्ता सख़्त ज़िद में हैं। (53) और ताकि जान लें वह लोग जिन्हें इल्म दिया गया है कि यह तुम्हारे रब (की तरफ़ से) हक़ है तो उस पर ईमान ले आए और उस के लिए झुक जाएं उन के दिल, और वेशक अल्लाह उन लोगो को सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देने वाला है जो ईमान लाए। (54) और वह हमेशा रहेंगे उस से शक में जिन लोगो ने कुफ़ किया, यहां तक कि उन पर अचानक क़ियामत आ जाए, या उन पर आ जाए मनहूस दिन का अज़ाब। (55)

उस दिन बादशाही अल्लाह के लिए है, वह उन के दरमियान फैसला करेगा, पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए वह नेमतों के बागात में होंगे। (56)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और हमारी आयात को झुटलाया उन्हीं के लिए है ज़िल्लत का अज़ाब। (57)

और जिन लोगों ने अल्लाह के रास्ते में हिज्रत की, फिर मारे गए (शहीद हो गए) या मर गए, अल्लाह अलबत्ता उन्हें ज़रूर अच्छा रिज़्क देगा, और अल्लाह वेशक सब से बेहतर रिज़्क देने वाला। (58)

वह अलबत्ता उन्हें ज़रूर ऐसे मुक़ाम में दाख़िल करेगा जिसे वह पसंद फ़रमाएंगे, और अल्लाह वेशक इल्म वाला, हिल्म वाला है। (59)

यह (तो हुआ), और जस ने दुश्मन को (उसी क़द्र) सताया जैसे उसे सताया गया था, फिर उस पर ज़ियादती की गई तो अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा, वेशक अल्लाह अलबत्ता माफ़ करने वाला, बख़शने वाला है। (60)

यह इस लिए है कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को दाख़िल करता है रात में, और यह कि अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (61)

यह इस लिए है कि अल्लाह ही हक़ है, और यह कि जिसे वह उस के सिवा पुकारते हैं वह वातिल है, और यह कि अल्लाह ही बुलन्द मरतबा, बड़ा है। (62)

क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा तो ज़मीन सरसब्ज़ हो गई, वेशक अल्लाह निहायत मेहरबान ख़बर रखने वाला है। (63)

उसी के लिए है जो आस्मानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और वेशक अल्लाह वही बेनियाज़, तमाम ख़ूबियों वाला है। (64)

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِلّٰهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فَاَلَّذِينَ اٰمَنُوا						
बादशाही	उस दिन	अल्लाह के लिए	फैसला करेगा	उन के दरमियान	पस जो लोग ईमान लाए	
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِى جَنَّتِ النَّعِيْمِ ۝۵۶ وَالَّذِينَ كَفَرُوا						
और उन्हीं ने अमल किए	अच्छे	में	नेमतों के बागात	56	और जिन लोगों ने कुफ़ किया	
وَكَذَّبُوا بِآيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝۵۷ وَالَّذِينَ						
और झुटलाया	हमारी आयात को	पस वही लोग	उन के लिए	अज़ाबे ज़िल्लत	57	और जिन लोगों ने
هَاجَرُوا فِى سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوا اَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمْ						
हिज्रत की	में	अल्लाह का रास्ता	फिर	मारे गए	या	वह अलबत्ता वह रिज़्क देगा
اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّزٰقِيْنَ ۝۵۸						
अल्लाह	रिज़्क	अच्छा	और वेशक अल्लाह	अलबत्ता वह	सब से बेहतर	रिज़्क देने वाला
لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهُ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ						
वह अलबत्ता उन्हें ज़रूर दाख़िल करेगा	ऐसे मुक़ाम में	वह उसे पसंद करेंगे	और वेशक अल्लाह	अलबत्ता इल्म वाला	और वेशक अल्लाह	
حَلِيْمٌ ۝۵۹ ذٰلِكَ وَمَنْ عَاقَبْ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهٖ						
हिल्म वाला	59	यह	और जो - जिस	सताया	जैसे	उसे सताया गया
ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝۶۰						
फिर	ज़ियादती की गई उस पर	ज़रूर मदद करेगा उस की	अल्लाह	वेशक अल्लाह	अलबत्ता माफ़ करने वाला	बख़शने वाला
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوَلِّجُ اَلَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوَلِّجُ النَّهَارَ						
यह	इस लिए कि अल्लाह	दाख़िल करता है	रात	दिन में	और दाख़िल करता है	दिन
فِى اَلَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ۝۶۱ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ						
रात में	और यह कि अल्लाह	सुनने वाला	देखने वाला	61	यह	इस लिए कि अल्लाह
هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ ۚ وَاَنَّ						
वही हक़	और यह कि	जो - जिसे	वह पुकारते हैं	उस के सिवा	वह	वातिल
اللّٰهُ هُوَ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ ۝۶۲ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ						
अल्लाह	वह	बुलन्द मरतबा	बड़ा	62	क्या तू ने नहीं देखा	कि अल्लाह
مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ۚ اِنَّ						
से	आस्मान	पानी	तो हो गई	ज़मीन	सरसब्ज़	वेशक
اللّٰهُ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝۶۳ لَهُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا						
अल्लाह	निहायत मेहरबान	ख़बर रखने वाला	63	उसी के लिए	जो कुछ	आस्मानों में
فِى الْاَرْضِ ۚ وَاَنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ۝۶۴						
ज़मीन में	और वेशक अल्लाह	अलबत्ता वही	बेनियाज़	तमाम ख़ूबियों वाला	64	

ع
١٢

ع
١٥

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي									
क्या तू ने नहीं देखा	कि अल्लाह	मुसख़्ख़र किया	तुम्हारे लिए	जो	ज़मीन में	और कश्ती	चलती है		
فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ									
दर्या में	उस के हुक्म से	और वह रोके हुए है	आस्मान	कि वह गिर पड़े	ज़मीन पर				
إِلَّا بِإِذْنِهِ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٦٥﴾ وَهُوَ الَّذِي									
मगर	उस के हुक्म से	वेशक अल्लाह	लोगों पर	बड़ा शफ़क़्त करने वाला	निहायत मेहरबान	65	और वही	जिस ने	
أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ﴿٦٦﴾									
तुम्हें ज़िन्दा किया	फिर	मारेगा तुम्हें	फिर	तुम्हें ज़िन्दा करेगा	इन्सान	बड़ा नाशुक्रा	66		
لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعُونَ									
हर उम्मत के लिए	हम ने मुक़र्रर किया	एक तरीक़े इबादत	वह	उस पर बन्दगी करते हैं	सो चाहिए कि तुम से न झगड़ा करें				
فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَى رَبِّكَ إِنَّكَ لَعَلَى هُدًى مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٧﴾									
उस मामले में	और बुलाओ	अपने रब की तरफ़	वेशक तुम	पर	राह	सीधी	67		
وَأَنْ جَادِلْكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾ اللَّهُ									
और अगर	वह तुम से झगड़ें	तो आप कह दें	अल्लाह	खूब जानता है	जो तुम करते हो	68	अल्लाह		
يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾									
फैसला करेगा	तुम्हारे दरमियान	रोज़े कियामत	जिस में	तुम थे	उस में	इख़्तिलाफ़ करते	69		
أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ									
क्या तुझे मालूम नहीं?	कि अल्लाह	जानता है	जो	आस्मानों में	और ज़मीन	वेशक यह	किताब में		
إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾ وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا									
वेशक	यह	अल्लाह पर	आसान	70	और वह बन्दगी करते हैं	अल्लाह के सिवा	जो		
لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ وَمَا لِلْظَّالِمِينَ									
नहीं उतारी उस ने	उस की	कोई सनद	और जो - जिस	नहीं	उन के लिए (उन्हें)	उस का	कोई इल्म	और नहीं	ज़ालिमों के लिए
مِنْ نَصِيرٍ ﴿٧١﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي									
कोई मददगार	71	और जब	पढ़ी जाती है	उन पर	हमारी आयात	वाज़ेह	तुम पहचानोगे	में - पर	
وَجُوهَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَلْمُنَكَرُ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ									
चेहरे	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	नाख़ुशी	क़रीब है	वह हमला कर दें	उन पर जो				
يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا قُلْ أَفَأَنْبِيئُكُمْ بِشَرِّ مَنْ ذَلِكُمْ									
पढ़ते हैं	उन पर	हमारी आयात	फ़रमा दें	क्या मैं तुम्हें बतला दूँ?	बदतर	से	इस		
النَّارِ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾									
दोज़ख़	जिस का वादा किया	अल्लाह	जिन लोगों ने कुफ़ किया	और बुरा	ठिकाना	72			

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया जो कुछ ज़मीन में है, और कश्ती उस के हुक्म से दर्या में चलती है, और वह आस्मानों को रोके हुए है कि वह ज़मीन पर न गिर पड़े मगर उस के हुक्म से, वेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा शफ़क़्त करने वाला निहायत मेहरबान है। (65)

और वही है जिस ने तुम्हें ज़िन्दा किया, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा, वेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (66)

हम ने हर उम्मत के लिए एक तरीक़े इबादत मुक़र्रर किया है, वह उस पर (उसी के मुताबिक़) बन्दगी करते हैं, सो चाहिए कि इस मामले में न झगड़ें, और अपने रब की तरफ़ बुलाओ, वेशक तुम हो सीधी राह पर। (67)

और अगर वह तुम से झगड़ें तो आप (स) कह दें अल्लाह खूब जानता है जो तुम करते हो। (68)

अल्लाह रोज़े कियामत तुम्हारे दरमियान उस बात का फैसला करेगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (69)

क्या तुझे मालूम नहीं? कि अल्लाह जानता है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, वेशक यह किताब में है, वेशक यह अल्लाह पर आसान है। (70)

वह अल्लाह के सिवा (उस की) बन्दगी करते हैं जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उस का (खुद) उन्हें कोई इल्म नहीं, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (71)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती है, तो तुम काफ़िरों के चेहरों पर नाख़ुशी के (आसार) पहचान लोगे, क़रीब है कि वह उन पर हमला कर दें जो उन पर हमारी आयतें पढ़ते हैं, फ़रमा दें, क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ जो इस से बदतर है, दोज़ख़, जिस का अल्लाह ने काफ़िरों से वादा किया, और बुरा है (वह) ठिकाना। (72)

ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, पस उस को (कान खोल कर) सुनो, वेशक जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वह हरगिज़ एक मक्खी (भी) न पैदा कर सकेंगे अगरचे उस के लिए वह सब जमा हो जाएं, और अगर मक्खी उन से कुछ छीन ले तो वह उस से न छुड़ा सकेंगे, (कितना) बोदा है चाहने वाला और जिस को चाहा (वह भी)। (73)

उन्होंने ने अल्लाह की क़द्र न जानी (जैसे) उस की क़द्र करने का हक़ था, वेशक अल्लाह कुव्वत वाला ग़ालिब है। (74)

अल्लाह फ़रिश्तों में से और आदमियों में से पैग़ाम पहुँचाने वाले चुन लेता है, वेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (75)

वह जानता है जो उन के आगे और जो उन के पीछे है, और अल्लाह (ही) की तरफ़ सारे कामों की वाज़ग़शत है। (76)

ऐ ईमान वालो! तुम रुकूअ़ करो, और सिज्दा करो, और इबादत करो अपने रब की, और अच्छे काम करो ताकि तुम दो ज़हान में कामयाबी पाओ। (77)

और (अल्लाह की राह में) कोशिश करो (जैसे) कोशिश करने का हक़ है। उस ने तुम्हें चुना, और उस ने तुम पर दीन में कोई तंगी नहीं डाली, तुम्हारे बाप इब्राहीम (अ) का दीन, उस ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है, इस से क़व्ल (भी) और इस (क़ुरआन) में भी, ताकि रसूल (अक़्रम स) तुम्हारे निगरान ओ गवाह हों और तुम निगरान ओ गवाह हो लोगों पर, पस नमाज़ काइम करो, और ज़कात अदा करो, और अल्लाह (की रस्सी) को मज़बूती से थाम लो, वह तुम्हारा कारसाज़ है, सो क्या ही अच्छा है कारसाज़, और (क्या ही) अच्छा है मददगार! (78)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضَرْبٌ مِّثْلُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ إِنَّ الَّذِينَ					
ऐ लोगो!	बयान की जाती है	एक मिसाल	पस तुम सुनो	उस को	वेशक वह जिन्हें
تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوْ					
तुम पुकारते हो	अल्लाह के सिवा	हरगिज़ न	पैदा कर सकेंगे	एक मक्खी	अगरचे
اجْتَمَعُوا لَهُ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ					
वह जमा हो जाएं	उस के लिए	और अगर	उन से छीन ले	मक्खी	कुछ
مِنْهُ ضَعْفُ الطَّالِبِ وَالْمَطْلُوبِ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا اللَّهَ					
उस से	कमज़ोर (बोदा है)	चाहने वाला	और जिस को चाहा	73	न क़द्र जानी उन्होंने ने
حَقَّ قَدْرُهُ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٧٤﴾ اللَّهُ يَصْطَفِي					
उस के क़द्र करने का हक़	वेशक अल्लाह	कुव्वत वाला	ग़ालिब	74	अल्लाह चुन लेता है
مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٧٥﴾					
फ़रिश्तों में से	पैग़ाम पहुँचाने वाले	और आदमियों में से	वेशक अल्लाह	सुनने वाला	देखने वाला
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ					
वह जानता है	जो	उन के हाथों के दरमियान (आगे)	और जो उन के पीछे	और तरफ़	लौटना (वाज़ग़शत)
الْأُمُورُ ﴿٧٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا					
सारे काम	76	ऐ	वह लोग जो ईमान लाए	तुम रुकूअ़ करो	और सिज्दा करो
وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٧٧﴾					
और इबादत करो	अपना रब	और करो	अच्छे काम	ताकि तुम	फ़लाह (दो ज़हान में कामयाबी) पाओ
وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا					
और कोशिश करो	अल्लाह (की राह) में	हक़	उस की कोशिश करना	वह-उस	उस ने तुम्हें चुना
جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ مِّلَّةَ أَبِيكُمْ					
डाली	तुम पर	दीन में	कोई तंगी	दीन	तुम्हारे बाप
إِبْرَاهِيمَ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا					
इब्राहीम (अ)	वह-उस	तुम्हारा नाम रखा	मुस्लिम (जमा)	इस से क़व्ल	और इस में
لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ					
ताकि हो	रसूल (स)	तुम्हारा गवाह (निगरान)	तुम पर	और तुम हो	गवाह-निगरान
عَلَى النَّاسِ فَاقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا					
लोगों पर	पस काइम करो	नमाज़	और अदा करो	ज़कात	और मज़बूती से थाम लो
بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ فَنِعْمَ الْمَوْلَى وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٧٨﴾					
अल्लाह को	वह	तुम्हारा मौला (कारसाज़)	सो अच्छा है	मौला	और अच्छा है
78	मददगार	78			

آيَاتُهَا ۱۱۸ ﴿۲۳﴾ سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ ﴿رُكُوعَاتُهَا ۶﴾									
आयात 118			(23) सूरतुल मोमिनून				रुकुआत 6		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١﴾ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ									
फ़लाह पाई (कामयाब हुए)		मोमिन (जमा)		1		वह जो		अपनी नमाज़ों में	
خَشِعُونَ ﴿٢﴾ وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ﴿٣﴾ وَالَّذِينَ									
खुशुअ (आजिज़ी) करने वाले		2		और जो		वह		लगू (बेहूदा बातों) से मुँह फेरने वाले 3 और जो	
هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ﴿٤﴾ وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَفِظُونَ ﴿٥﴾									
वह		ज़कात (को)		अदा करने वाले 4		और जो		वह अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले 5	
إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٦﴾									
मगर		पर-से		अपनी वीवियां		या		जो मालिक हुए उन के दाएँ हाथ पस बेशक वह कोई मलामत नहीं 6	
فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَدُونَ ﴿٧﴾ وَالَّذِينَ هُمْ									
पस जो		चाहे		सिवा		उस		तो वही वह हद से बढ़ने वाले 7 और जो वह	
لَا مَنِيَّةَ وَعَهْدِهِمْ رُغْوَنَ ﴿٨﴾ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩﴾									
अपनी अमानतें		और अपने अहद		देख भाल करने वाले 8		और जो		वह पर-की अपनी नमाज़ें हिफाज़त करने वाले 9	
أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا									
यही लोग		वह		वारिस (जमा)		10		जो वारिस होंगे जन्नत वह उस में	
خَالِدُونَ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِّن طِينٍ ﴿١٢﴾									
हमेशा रहेंगे		11		और अलबत्ता हम ने पैदा किया		इन्सान		से खुलासा (चुनी हुई) मिट्टी से 12	
ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿١٣﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً									
फिर		हम ने उसे ठहराया		नुतफ़ा		में		मज़बूत जगह 13 फिर हम ने बनाया हम ने बनाया नुतफ़ा जमा हुआ खून	
فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظْمًا فَكَسَوْنَا الْعِظْمَ									
पस हम ने बनाया		जमा हुआ खून		बोटी		फिर हम ने बनाया		बोटी हड्डियां हड्डियां फिर हम ने पहनाया	
لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَرَّكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ﴿١٤﴾									
गोشت		फिर		हम ने उसे उठाया		सूरत		नई पस बरकत वाला अल्लाह बेहतरीन पैदा करने वाला 14	
ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُونَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ تُبْعَثُونَ ﴿١٦﴾									
फिर		वेशक तुम		उस के बाद		ज़रूर मरने वाले 15		फिर वेशक तुम उठाए जाओगे 16	
وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ﴿١٧﴾									
और तहकीक हम ने बनाए		तुम्हारे ऊपर		सात		रास्ते		और हम नहीं से खलक (पैदाइश) गाफिल 17	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है (दो जहान में) कामयाब हुए वह मोमिन। (1)

जो अपनी नमाज़ों में आजिज़ी करने वाले हैं। (2)

और वह जो बेहूदा बातों से मुँह फेरने वाले हैं। (3)

और वह जो ज़कात अदा करने वाले हैं। (4)

और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले हैं। (5)

मगर अपनी वीवियों से या जिन के मालिक हुए उन के दाएं हाथ (कनीज़ों) से, बेशक उन पर कोई मलामत नहीं। (6)

पस जो उन के सिवा चाहे तो वही हैं हद से बढ़ने वाले। (7)

और (कामयाब हैं वह मोमिन) वह जो अपनी अमानतों और अपने अहद का पास रखते हैं। (8)

और वह जो अपनी नमाज़ों की हिफाज़त करने वाले हैं। (9)

यही लोग हैं जो वारिस होंगे। (10)

(जन्नत) फिरदौस के, वह उस में हमेशा रहेंगे। (11)

और अलबत्ता हम ने इन्सान को चुनी हुई मिट्टी से पैदा किया। (12)

फिर हम ने उसे मज़बूत जगह में नुतफ़ा ठहराया। (13)

फिर हम ने नुतफ़े को जमा हुआ खून बनाया, फिर हम ने बनाया जमे हुए खून (लोथड़े) को बोटी, फिर हम ने बोटी से हड्डियां बनाई, फिर हम ने हड्डियों को गोشت पहनाया, फिर हम ने उसे नई सूरत में उठा कर खड़ा किया, पस अल्लाह बाबरकत है बेहतरीन पैदा करने वाला। (14)

फिर बेशक उस के बाद तुम ज़रूर मरने वाले हो। (15)

फिर बेशक तुम रोज़े कियामत उठाए जाओगे। (16)

और तहकीक हम ने तुम्हारे ऊपर बनाए सात रास्ते और हम पैदाइश से गाफिल नहीं। (17)

और हम ने आस्मानों से पानी उतारा एक अन्दाज़े के साथ, फिर उस को हम ने ज़मीन में ठहराया, और बेशक हम उस को ले जाने पर (भी) कादिर हैं। (18)

पस हम ने पैदा किए उस से तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बागात, तुम्हारे लिए उन में बहुत से मेवे हैं, और उस से तुम खाते हो। (19)

और दरख्त (ज़ैतून) जो तूरे सीना से निकलता है, वह उगता है तेल और सालन लिए हुए खाने वालों के लिए। (20)

और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में मुकामे इब्रत है, हम तुम्हें उन से पिलाते हैं (दूध) जो उन के पेटों में है, और तुम्हारे लिए उन में (और) बहुत से फाइदे हैं, और उन में से (बाज़ को) तुम खाते हो। (21)

और उन पर और कश्ती पर सवार किए जाते हो। (22)

और अलबत्ता हम ने नूह (अ) को उस की कौम की तरफ़ भेजा, पस उस ने कहा: ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारे लिए कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं? (23)

तो उस की कौम के जिन सरदारों ने कुफ़ किया, बोले यह (कुछ भी) नहीं मगर तुम जैसा एक बशर है, वह चाहता है कि तुम पर बड़ा बन बैठे, और अगर अल्लाह चाहता तो उतारता फ़रिश्ते, हम ने अपने पहले बाप दादा से यह (कभी) नहीं सुना। (24)

वह (कुछ भी) नहीं मगर एक आदमी है जिस को जुनून हो गया है, सो तुम उस का एक मुद्दत तक इन्तिज़ार करो। (25)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरी मदद फ़रमा उस पर कि उन्होंने मे मुझे झुटलाया। (26)

तो हम ने वही भेजी उस की तरफ़ कि हमारी आँखों के सामने हमारे हुक्म से कश्ती बनाओ, फिर जब हमारा हुक्म आए और तन्नूर उबलने लगे, तो उस (कश्ती) में हर किस्म के जोड़ों में से दो (एक नर एक मादा) रख लो और अपने घर वाले (भी सवार कर लो) उस के सिवा (जिस के गर्क होने पर) हुक्म हो चुका है उन में से, और मुझ से उन के बारे में बात न करना जिन्होंने जुल्म किया है, बेशक वह गर्क किए जाने वाले हैं। (27)

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَتْهُ فِي الْأَرْضِ ۖ وَآتَا عَلَىٰ							
और हम ने उतारा	आस्मानों से	पानी	अन्दाज़े के साथ	हम ने उसे ठहराया	ज़मीन में	और बेशक हम	पर
ذَهَابٍ بِهِ لَقَدْ رُؤُونٌ ۚ فَآنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّتٍ مِّنْ نَّحِيلٍ							
ले जाना	उस का	अलबत्ता कादिर	18	पस हम ने पैदा किए	तुम्हारे लिए	उस से	बागात
खजूर (जमा)	से-के						
وَأَعْنَابٍ لَّكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۚ وَشَجَرَةً							
और अंगूर (जमा)	तुम्हारे लिए	उस में	मेवे	बहुत	और उस से	तुम खाते हो	19
और दरख्त							
تَخْرُجُ مِنْ طُورٍ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالذَّهْنِ وَصَبْغٍ لِّلْأَكْلَيْنِ ۚ							
निकलता है	से	तूरे सीना	उगता है	तेल के साथ-लिए	और सालन	खाने वालों के लिए	20
وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا							
और बेशक	तुम्हारे लिए	चौपायों में	इब्रत-गौर का मुकाम	हम तुम्हें पिलाते हैं	उस से जो	उन के पेटों में	और तुम्हारे लिए
उन में							
مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۚ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۚ							
फाइदे	बहुत	और उन से	तुम खाते हो	21	और उन पर	और कश्ती पर	सवार किए जाते हो
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ							
और अलबत्ता हम ने भेजा	नूह (अ)	उस की कौम की तरफ़	उस ने कहा	पस उस ने कहा	ऐ मेरी कौम	तुम अल्लाह की इबादत करो	तुम्हारे लिए नहीं
مِّنْ إِلَهِ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۚ فَقَالَ الْمَلَأُوا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ							
कोई माबूद	उस के सिवा	क्या तो तुम डरते नहीं?	23	तो वह बोले	सरदार	जिन्होंने ने कुफ़ किया	से-के
उस की कौम							
مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۖ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ							
यह नहीं	मगर	एक बशर	तुम जैसा	वह चाहता है	कि बड़ा बन बैठे वह	तुम पर	और अगर
अल्लाह चाहता							
لَأَنْزِلَ عَلَيْكَ ۖ مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۚ إِنَّ هُوَ							
तो उतारता	फ़रिश्ते	नहीं सुना हम ने	यह	अपने बाप दादा से	पहले	24	नहीं वह-यह
إِلَّا رَجُلًا بِهِ جِنَّةٌ فْتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ۚ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي							
मगर	एक आदमी	जिस को	जुनून	उस का	एक मुद्दत तक	25	उस ने कहा
मेरी मदद फ़रमा	ऐ मेरे रब						
بِمَا كَذَبُونَ ۚ فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعْ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا							
उस पर	उन्होंने ने मुझे झुटलाया	26	तो हम ने वहि भेजी	उस की तरफ़	कि	तुम बनाओ	कश्ती
हमारी आँखों के सामने							
وَوَحَيْنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ فَاسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلِّ							
और हमारा हुक्म	फिर जब	आजाए	हमारा हुक्म	और तन्नूर उबलने लगे	तो चला ले (रख ले)	उस में	हर (किस्म) से
زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ							
जोड़ा	दो	और अपने घर वाले	सिवा	जो-जिस	पहले हो चुका	उस पर	हुक्म
مِّنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ۚ							
उन में से	और न करना मुझ से बात	मैं-वारे में	वह जिन्होंने ने जुल्म किया	बेशक वह	गर्क किए जाने वाले	27	

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلِكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ							
तमाम तारीफें अल्लाह के लिए	तो कहना	कश्ती	पर	तेरे साथ (साथी)	और जो	तुम	बैठ जाओ फिर जब
الَّذِي نَجَّيْنَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ رَبِّ انْزِلْنِي مُنْزَلًا مُّبَرَّكًَا							
सुवारक	मन्ज़िल	मुझे उतार	ऐ मेरे रब	और कहो	28	ज़ालिम (जमा)	कौम से हमें नजात दी वह जिस ने
وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٢٩﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿٣٠﴾							
30	आज़माइश करने वाले	और बेशक हम हैं	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक 29	उतारने वाले	बेहतरीन और तू
ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ﴿٣١﴾ فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا							
रसूल (जमा)	उन के दरमियान	फिर भेजे हम ने	31	दूसरा	गिरोह	उन के बाद	हम ने पैदा किया फिर
مِنْهُمْ أَنْ اْعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ							
और कहा	32	क्या फिर तुम डरते नहीं?	उस के सिवा	कोई माबूद नहीं तुम्हारे लिए	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि	उन में से
الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْآخِرَةِ وَاتَّرفَنَّهُمْ							
और हम ने उन्हें ऐश दिया	आखिरत	हाज़िरी को	और झुटलाया	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया	उस की कौम के	सरदारों	
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ							
उस से	तुम खाते हो	उस से जो	वह खाता है	तुम्हीं जैसा	एक बशर	मगर	यह नहीं दुनिया की ज़िन्दगी में
وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣٣﴾ وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذَا							
उस वक़्त	बेशक तुम	अपने जैसा	एक बशर	तुम ने इताअत की	और अगर	33	तुम पीते हो उस से जो और पीता है
لَخَسِرُونَّ ﴿٣٤﴾ أَلَيْدُكُمْ أَنْتُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنْتُمْ							
तो तुम	और हड्डियां	मिट्टी	और तुम हो गए	मर गए	जब	कि तुम	क्या वह वादा देता है तुम्हें 34 घाटे में रहोगे
مُخْرَجُونَ ﴿٣٥﴾ هِيَ هَاتِ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٣٦﴾ إِنَّ هِيَ إِلَّا							
मगर	नहीं	36	तुम्हें वादा दिया जाता है	वह जो	बईद है	बईद है	35 निकाले जाओगे
حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٣٧﴾ إِنَّ هُوَ							
वह	नहीं	37	फिर उठाए जाने वाले	हम	और नहीं	और हम जीते हैं	और हम मरते हैं दुनिया हमारी ज़िन्दगी
إِلَّا رَجُلٌ اِفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾ قَالَ							
उस ने अर्ज़ किया	38	ईमान लाने वाले	उस पर	हम	और नहीं	झूट	अल्लाह पर उस ने झूट बांधा एक आदमी मगर
رَبِّ ائْصِرْنِي بِمَا كَذَّبْتَنِي ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَيُصْبِحُنَّ نَدِيمِينَ ﴿٤٠﴾							
40	पछताने वाले	वह ज़रूर रह जाएंगे	बहुत जल्द	उस ने फ़रमाया	39	उन्होंने ने मुझे झुटलाया	उस मेरी मदद फ़रमा मेरे रब
فَاخَذَتْهُمْ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَهُمْ غُثَاءً ۚ فَبُعْدًا لِلْقَوْمِ							
कौम के लिए	दूरी (मार)	ख़स ओ खाशाक	सो हम ने उन्हें कर दिया	(वादाए) हक़ के मुताबिक़	चिंघाड़	पस उन्हें आ पकड़ा	
الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ﴿٤٢﴾							
42	दूसरी - और उम्मतें	उन के बाद	हम ने पैदा की	फिर	41	ज़ालिम (जमा)	

फिर तुम जब बैठ जाओ कश्ती पर तुम और तेरे साथी, तो कहना तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं वह जिस ने हमें नजात दी ज़ालिमों की कौम से। (28)

और कहो ऐ मेरे रब! मुझे सुवारक मन्ज़िल (जगह) पर उतार, और तू बेहतरीन उतारने वाला है। (29)

बेशक उस में अलबत्ता निशानियां हैं, और बेशक हम आजमाइश करने वाले हैं। (30)

फिर हम ने उन के बाद पैदा किया दूसरी पीढ़ी। (31)

फिर हम ने उन के दरमियान उन्हीं में से रसूल भेजे कि तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर क्या तुम डरते नहीं? (32)

और उस की कौम के उन सरदारों ने कहा जिन्होंने ने कुफ़ किया और आखिरत की हाज़िरी को झुटलाया, और हम ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ऐश दिया था, यह नहीं है मगर तुम्हीं जैसा एक बशर है, वह उसी में से खाता है जो तुम खाते हो, और उसी में से पीता है जो तुम पीते हो। (33)

और अगर तुम ने अपने जैसे एक बशर की इताअत की, तो बेशक तुम उस वक़्त घाटे में रहोगे। (34)

क्या वह तुम्हें वादा देता है कि जब तुम मर गए और तुम मिट्टी और हड्डियां हो गए तो तुम (फिर) निकाले जाओगे। (35)

बईद है बईद है, वह जो तुम्हें वादा दिया जाता है। (36)

(और कुछ) नहीं मगर यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते हैं और जीते हैं, और हम नहीं हैं फिर उठाए जाने वाले। (37)

वह (कुछ) नहीं मगर एक आदमी है, उस ने अल्लाह पर झूट बांधा है और हम नहीं हैं उस पर ईमान लाने वाले। (38)

उस ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! तू उस पर मेरी मदद फ़रमा कि उन्हीं ने मुझे झुटलाया। (39)

उस ने फ़रमाया वह बहुत जल्द ज़रूर पछताते रह जाएंगे। (40)

पस उन्हें चिंघाड़ ने वादाए हक़ के मुताबिक़ आ पकड़ा, सो हम ने उन्हें ख़स ओ खाशाक की तरह कर दिया, पस मार हो ज़ालिमों की कौम के लिए। (41)

फिर हम ने उन के बाद और उम्मतें पैदा कीं। (42)

कोई उम्मत अपनी (मुकर्रर) मीआद से न सबकृत करती है और न पीछे रह जाती है। (43)

फिर हम ने भेजे रसूल पै दर पै, जब भी किसी उम्मत में उस का रसूल आया उन्होंने ने उसे झुटलाया, तो हम (हलाक करने के लिए) पीछे लाए उन में से एक को दूसरे के, और हम ने उन्हें अफसाने (भूली विसरी बातें) बनाया, सो (अल्लाह की) मार उन लोगों के लिए जो ईमान नहीं लाए। (44)

फिर हम ने भेजा मूसा (अ) और उन के भाई हारून (अ) को अपनी निशानियों और खुले दलाइल के साथ। (45)

फिरऔन और उस के सरदारों की तरफ तो उन्होंने ने तकव्वुर किया और वह सरकश लोग थे। (46)

पस उन्होंने ने कहा क्या हम अपने जैसे (उन) दो आदमियों पर ईमान ले आएँ? और उन की कौम (के लोग) हमारी खिदमत करने वाले। (47)

पस उन्होंने ने दोनों को झुटलाया तो वह हलाक होने वालों में से हो गए। (48)

और तहकीक हम ने मूसा (अ) को दी किताब ताकि वह लोग हिदायत पा लें। (49)

और हम ने मरयम (अ) के बेटे (इसा अ) और उस की माँ को एक निशानी बनाया और हम ने उन्हें ठिकाना दिया एक बुलन्द टीले पर जो ठहरने का मुकाम और जारी पानी की (शादाब) जगह थी। (50)

ऐ रसूलो! तुम पाक चीजों में से खाओ और अमल करो नेक, वेशक जो तुम करते हो मैं उसे जानने वाला हूँ (जानता हूँ)। (51)

और वेशक यह तुम्हारी उम्मत एक उम्मते वाहिदा है, और मैं तुम्हारा रब हूँ, पस मुझ से डरो। (52)

फिर उन्होंने ने आपस में अपना काम टुकड़े टुकड़े काट लिया, (फिर) हर गिरोह वाले उस पर जो उन के पास है खुश हैं। (53)

पस उन्हें उन की गफ़लत में एक मुद्दे मुकर्ररा तक छोड़ दे। (54)

क्या वह गुमान करते हैं? कि हम जो कुछ उन की मदद कर रहे हैं माल और औलाद के साथ। (55)

हम उन के लिए भलाई में जल्दी कर रहे हैं, (नहीं) बल्कि वह समझ नहीं रखते। (56)

वेशक जो लोग अपने रब के डर से सहमे हुए हैं। (57)

और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं। (58)

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ أَرْسَلْنَا

हम ने भेजे	फिर	43	पीछे रह जाती है	और न	अपनी मीआद	कोई उम्मत	सबकृत करती है	नहीं

رُسُلَنَا تَتْرًا كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةٌ رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا بَعْضَهُمْ

उन में से एक	तो हम पीछे लाए	उन्होंने ने उसे झुटलाया	उस का रसूल	किसी उम्मत में	आया	जब भी	पै दर पै	रसूल (जमा)

بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ فَبُعْدًا لِقَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾

44	जो ईमान नहीं लाए	लोगों के लिए	सो दूरी (मार)	अफसाने	और उन्हें बना दिया हम ने	दूसरे

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٤٥﴾

45	खुले	और दलाइल	साथ (हमारी) अपनी निशानियाँ	हारून (अ)	और उन का भाई	मूसा (अ)	हम ने भेजा	फिर

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوا

पस उन्होंने ने कहा	46	सरकश	लोग	और वह थे	तो उन्होंने ने तकव्वुर किया	और उस के सरदार	फिरऔन	तरफ

أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عِبْدُونَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوهُمَا

पस उन्होंने ने झुटलाया दोनों को	47	बन्दगी (खिदमत) करने वाले	हमारी	और उनकी कौम	अपने जैसे	दो (2) आदमियों पर	क्या हम ईमान ले आएँ

فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ

ताकि वह लोग	किताब	मूसा (अ)	और तहकीक हम ने दी	48	हलाक होने वाले	से	तो वह हो गए

يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً وَآوَيْنَاهُمَا إِلَىٰ

तरफ (पर)	और हम ने उन्हें ठिकाना दिया	एक निशानी	और उस की माँ	मरयम का बेटा (इसा अ)	और हम ने बनाया	49	हिदायत पा लें

رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ﴿٥٠﴾ يَأْتِيهَا الرُّسُلُ كُلُّوَا مِنَ الطَّيِّبَاتِ

पाकीजा चीजें	से	खाओ	रसूल (जमा)	ऐ	50	और बहता हुआ पानी	ठहरने का मुकाम	एक बुलन्द टीला

وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾ وَإِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ

तुम्हारी उम्मत	यह	और वेशक	51	जानने वाला	तुम करते हो	उसे जो	वेशक मैं	नेक और अमल करो

أُمَّةٍ وَاحِدَةٍ وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ﴿٥٢﴾ فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا

टुकड़े टुकड़े	आपस में	अपना काम	फिर उन्होंने ने काट लिया	52	पस मुझ से डरो	तुम्हारा रब	और मैं	एक उम्मत, उम्मते वाहिदा

كُلِّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٥٣﴾ فَذَرَهُمْ فِي غَمَرَتِهِمْ حَتَّىٰ

तक	उन की गफ़लत में	पस छोड़ दे उन्हें	53	खुश	उन के पास	उस पर जो	हर गिरोह

حِينَ ﴿٥٤﴾ أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهِ مِنْ مَّالٍ وَبَنِينَ نُسَارِعُ

हम जल्दी कर रहे हैं	55	और औलाद	माल से	उस के साथ	हम मदद कर रहे हैं उन की	कि जो कुछ	क्या वह गुमान करते हैं	54	एक मुद्दे मुकर्रर

لَهُمْ فِي الْخَيْرِ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ

डर	से	वह जो लोग	वेशक	56	वह शऊर (समझ) नहीं रखते	बल्कि	भलाई में	उन के लिए

رَبِّهِمْ مُّشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

58	ईमान रखते हैं	अपना रब	आयतों पर	वह	और जो लोग	57	डरने वाले (सहमे हुए)	अपना रब

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا							
और जो लोग	वह	अपने रब के साथ	शरीक नहीं करते	59	और जो लोग	देते हैं	जो वह देते हैं
وَقُلُوبُهُمْ وَجَلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿٦٠﴾ أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ							
और उन के दिल	डरते हैं	कि वह	तर्फ	अपना रब	लौटने वाले	60	यही लोग
فِي الْخَيْرِ وَهُمْ لَهَا سِبْقُونَ ﴿٦١﴾ وَلَا نَكْلِفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا							
भलाइयों में	और वह	उन की तर्फ	सबकत ले जाने वाले हैं	61	और हम	किसी को	मगर
وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوبُهُمْ							
और हमारे पास	एक किताब (रजिस्टर)	वह बतलाता है	ठीक ठीक	और वह (उन)	जुल्म न किए जाएंगे (जुल्म न होगा)	62	बल्कि
فِي غَمْرَةٍ مِّنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّنْ دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَمَلُونَ ﴿٦٣﴾							
गफ़लत	उस से	और उन के	आमाल (जमा)	अलावा	उस	वह उन्हें	करते रहते हैं
حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِمْ بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْعَرُونَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْعَرُوا							
यहां तक कि जब	हम ने पकड़ा	उन के खुशहाल लोग	अज़ाब में	उस वक़्त वह	फ़र्याद करने लगे	64	तुम फ़र्याद न करो
الْيَوْمَ ۖ إِنَّكُمْ مِنَّا لَا تُنصَرُونَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ آيَتِي عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ							
आज	वेशक तुम	हम से	तुम मदद न दिए जाओगे	65	अलबत्ता तुम्हें	मेरी आयतें	पढ़ी जाती थीं
عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تَنكِصُونَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِينَ ۖ بِهِ سِمِرًا تَهْجُرُونَ ﴿٦٧﴾							
अपनी एड़ियों के बल	फिर जाते	66	तकबुर करते हुए	उस के साथ	अफ़साना गोई करते हुए	बेहूदा बकवास करते हुए	67
أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾							
पस क्या उन्होंने ने गौर नहीं किया	कलाम	या	उन के पास आया	जो	नहीं आया	उन के बाप दादा	पहले
أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٦٩﴾ أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ							
या	उन्होंने ने नहीं पहचाना	अपने रसूल	तो वह	उस के	मुन्किर है	69	या
بَلْ جَاءَهُم بِالْحَقِّ وَكَثُرُهُمْ لِلْحَقِّ كِرْهُونَ ﴿٧٠﴾ وَلَوْ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ							
बल्कि	वह आया उन के पास	साथ हक़	और उन में से अक्सर	हक़ से	नफ़रत रखने वाले	70	और
لَفَسَدَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَتَيْنَهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ							
अलबत्ता दरहम बरहम हो जाता	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	और जो	उन के दरमियान	हम लाए हैं उन के पास	उन की नसीहत	फिर वह
عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٧١﴾ أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَجَ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ							
अपनी नसीहत से	रूगर्दानी करने वाले हैं	71	क्या तुम उन से मांगते हो	अजर	तो अजर	तुम्हारा रब	बेहतर
وَهُوَ خَيْرُ الرَّزْقِينَ ﴿٧٢﴾ وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٧٣﴾							
और वह	बेहतरीन रोज़ी दहिन्दा है	72	और वेशक तुम	उन्हें बुलाते हो	तर्फ	सीधा रास्ता	73
وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنُكِبُونَ ﴿٧٤﴾							
और वेशक	जो लोग	ईमान नहीं लाते	आखिरत पर	से	राहे हक़	अलबत्ता हटे हुए हैं	74

और जो लोग अपने रब के साथ शरीक नहीं करते। (59) और जो लोग देते हैं जो कुछ वह देते हैं और उन के दिल डरते हैं कि वह अपने रब की तरफ लौटने वाले हैं। (60) यही लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और वह उन की तरफ सबकत ले जाने वाले हैं। (61) और हम किसी को तकलीफ नहीं देते मगर उस की ताकत के मुताबिक, और हमारे पास (आमाल का) एक रजिस्टर है जो ठीक ठीक बतलाता है और उन पर जुल्म न होगा। (62) बल्कि उन के दिल इस (हकीकत) से गफ़लत में हैं और उन के (बुरे) आमाल उस के आलावा जो वह करते रहते हैं। (63) यहां तक कि जब हम ने उन के खुशहाल लोगों को पकड़ा अज़ाब में, तो उस वक़्त वह फ़र्याद करने लगे। (64) आज फ़र्याद न करो तुम, हमारी (तरफ़) से मदद न दिए जाओगे (मुतलक़ मदद न पाओगे)। (65) अलबत्ता तुम पर मेरी आयतें पढ़ी जाती थीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल (उलटे) फिर जाते थे। (66) तकबुर करते हुए, उस के साथ अफ़साना गोई और बेहूदा बकवास करते हुए। (67) पस क्या उन्होंने ने (इस) कलामे (हक़) पर गौर नहीं किया? या उन के पास वह आया जो नहीं आया था उन के पहले बाप दादा (बड़ों) के पास। (68) या उन्होंने ने अपने रसूल को नहीं पहचाना तो इस लिए उस के मुन्किर हैं। (69) या वह कहते हैं उस को दीवानगी है? बल्कि वह उन के पास हक़ बात के साथ आया है और उन में से अक्सर हक़ बात से नफ़रत रखने वाले हैं। (70) और अगर अल्लाह तआला उन की खाहिशात की पैरवी करता तो अलबत्ता ज़मीन ओ आस्मान और जो कुछ उन के दरमियान है दरहम बरहम हो जाते, बल्कि हम उन के पास उन की नसीहत लाए हैं फिर वह अपनी नसीहत (की बात से) रूगर्दानी कर रहे हैं। (71) क्या तुम उन से अजर मांगते हो? तो तुम्हारे रब का अजर बेहतर है, और वह बेहतर रोज़ी दहिन्दा है। (72) और वेशक तुम उन्हें बुलाते हो राहे रास्त की तरफ। (73) और जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते, वेशक वह राहे हक़ से हटे हुए हैं। (74)

और अगर हम उन पर रहम करें, और जो उन पर तकलीफ़ है वह दूर कर दें तो वह अपनी सरकशी पर अड़े रहें, भटकते फ़िरें। (75) और अलबत्ता हम ने उन्हें अज़ाब में पकड़ा, फिर न उन्होंने ने आजिज़ी की, और न वह गिड़गिड़ाए। (76) यहां तक कि जब हम ने उन पर सख़्त अज़ाब के दरवाज़े खोल दिए तो उस वक़्त वह उस में मायूस हो गए। (77) और वही है जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो। (78) और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया, और उसी की तरफ़ तुम जमा हो कर जाओगे। (79) और वही है जो ज़िन्दा करता है और मारता है, और उसी के लिए है रात और दिन का आना जाना, पस क्या तुम समझते नहीं? (80) बल्कि उन्होंने ने (वही) कहा जैसे (उन से) पहले (काफ़िर) कहते थे। (81) वह बोले, क्या जब हम मर गए, और हम मिट्टी और हड्डियाँ हो गए, क्या हम फिर (दोबारा) उठाए जाएंगे? (82) अलबत्ता हम से वादा किया गया और इस से क़बल हमारे बाप दादा से यह (वादा किया गया), यह तो सिर्फ़ पहले लोगो की कहानियाँ हैं। (83) आप (स) फ़रमा दें किस के लिए है ज़मीन और जो कुछ उस में है? अगर तुम जानते हो। (84) वह ज़रूर कहेंगे अल्लाह के लिए है, आप (स) फ़रमा दें पस क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (85) आप (स) फ़रमा दें कौन है सात आस्मानों का रब और अर्श अज़ीम का रब? (86) वह ज़रूर कहेंगे (यह सब) अल्लाह का है, आप (स) फ़रमा दें पस क्या तुम नहीं डरते? (87) आप (स) फ़रमा दें किस के हाथ में है हर चीज़ का इख़्तियार? और वह पनाह देता है और उस के ख़िलाफ़ (कोई) पनाह नहीं दिया जाता अगर तुम जानते हो। (88) वह ज़रूर कहेंगे (हर इख़्तियार) अल्लाह के लिए, आप (स) फ़रमा दें फिर तुम कहां से जादू में फँस गए हो। (89)

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلَجُوا فِي طُغْيَانِهِمْ							
अपनी सरकशी	में-पर	अड़े रहें	जो तकलीफ़	जो उन पर	और हम दूर कर दें	हम उन पर रहम करें	और अगर
يَعْمَهُونَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ							
अपने रब के सामने	फिर उन्होंने ने आजिज़ी न की	अज़ाब में		और अलबत्ता हम ने उन्हें पकड़ा	75	भटकते रहें	
وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ﴿٧٦﴾ حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ							
सख्त	अज़ाब वाला	दरवाज़ा	उन पर	हम ने खोल दिया	जब	यहां तक कि	76 और वह न गिड़गिड़ाए
إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٧﴾ وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ لَكُمْ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ							
और आँखें	कान	बनाए तुम्हारे लिए	जिस ने	और वह	77	मायूस हुए	उस में तो उस वक़्त वह
وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ							
फैलाया तुम्हें	वही जिस ने	और वह	78	जो तुम शुक्र करते हो	बहुत ही कम	और दिल (जमा)	
فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ							
और मारता है	ज़िन्दा करता है	वही जो	और वह	79	तुम जमा हो कर जाओगे	और उस की तरफ़	ज़मीन में
وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوا							
बल्कि उन्होंने ने कहा	80	क्या पस तुम समझते नहीं?	और दिन	रात	आना जाना	और उसी के लिए	
مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿٨١﴾ قَالُوا إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا							
और हम हो गए मिट्टी	हम मर गए	क्या जब	वह बोले	81	पहलों ने	जो कहा	जैसे
وَعِظَامًا إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وَعَدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هَذَا							
यह	और हमारे बाप दादा	हम	अलबत्ता हम से वादा किया गया	82	फिर उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियां
مِنْ قَبْلُ إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨٣﴾ قُلْ لِّمَنِ الْأَرْضُ							
ज़मीन	किस के लिए	फ़रमा दें	83	पहले लोग	कहानियां	मगर (सिर्फ)	इस से कब्ल
وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ							
फ़रमा दें	जल्दी (ज़रूर) वह कहेंगे अल्लाह के लिए	84	तुम जानते हो	अगर	उस में	और जो	
أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ							
और रब	सात	आस्मान (जमा)	रब	कौन	फ़रमा दें	85	क्या पस तुम ग़ौर नहीं करते?
الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْ							
कौन	फ़रमा दें	87	क्या पस तुम नहीं डरते?	फ़रमा दें	जल्दी (ज़रूर) वह कहेंगे अल्लाह का	86	अर्श अज़ीम
بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ							
अगर	उस के खिलाफ़	और पनाह नहीं दिया जाता	पनाह देता है	और वह	हर चीज़	बादशाहत (इख्तियार)	उस के हाथ में
كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾							
89	तुम जादू में फँस गए हो	फिर कहां से	फ़रमा दें	जल्दी कहेंगे अल्लाह के लिए	88	तुम जानते हो	

بَلْ أَتَيْنُهُمْ بِالْحَقِّ وَانْتَهُمُ لَكَذِبُونَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللَّهُ						
बल्कि	हम लाए हैं उन के पास	सच्ची बात	और वेशक वह	अलवत्ता झूटे है	90	नहीं अपनाया अल्लाह
مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَهٍ إِذَا لَذَهَبَ كُلُّ إِلَهٍ بِمَا خَلَقَ						
किसी को बेटा	और नहीं है	उस के साथ	कोई और माबूद	उस सूरत में	ले जाता	हर माबूद जो उस ने पैदा किया
وَلَعَلَّا بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٩١﴾						
और चढ़ाई करता	उन का एक	दूसरे पर	पाक है अल्लाह	उस से जो	वह बयान करते हैं	91
عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَلَّىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَبِّ						
जानने वाला पोशीदा	और आशकारा	पस बरतर	उस से जो	वह शरीक समझते हैं	92	ऐ मेरे रब
إِنَّمَا تُرِيدُنِي مَا يُوعَدُونَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي						
अगर तू मुझे दिखा दे	जो उन से वादा किया जाता है	93	ऐ मेरे रब	पस तू मुझे न करना	मैं	
الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٩٤﴾ وَإِنَّا عَلَىٰ أَنْ تُرِيكَ مَا نَعْدُهُمْ لَقَدَرُونَ ﴿٩٥﴾						
ज़ालिम लोग	94	और वेशक हम	पर	कि हम तुम्हें दिखा दें	जो हम वादा कर रहे हैं उन से	अलवत्ता कादिर है 95
إِدْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةِ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿٩٦﴾						
दफ़ा करो	उस से जो	वह	सब से अच्छी भलाई	बुराई	हम	खूब जानते हैं उस को जो वह बयान करते हैं 96
وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزٍ الشَّيْطَانِ ﴿٩٧﴾ وَأَعُوذُ بِكَ						
और आप (स) फ़रमा दें	ऐ मेरे रब	मैं पनाह चाहता हूँ	तेरी	से	वस्वसे से	शैतान (जमा) 97 और मैं पनाह चाहता हूँ तेरी
رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونَ ﴿٩٨﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ						
ऐ मेरे रब	कि वह आएँ मेरे पास	98	यहाँ तक कि	जब आए	उन में किसी को	मौत कहता है ऐ मेरे रब
أَرْجِعُونِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ						
मुझे वापस भेज दे	99	शायद मैं	काम कर लूँ	कोई अच्छा काम	उस में	मैं छोड़ आया हूँ हरगिज़ नहीं वह एक बात यह तो 100
قَابِلُهَا وَمِنْ وَرَائِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمٍ يُبْعَثُونَ ﴿١٠٠﴾ فَإِذَا نُفِخَ						
कह रहा है	और उन के आगे	एक बरज़ख़	उस दिन तक	वह उठाए जाएंगे	100	फिर जब फूँका जाएगा
فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿١٠١﴾						
सूर में	तो न रिश्ते	उन के दरमियान	उस दिन	और न वह एक दूसरे को पूछेंगे	101	
فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ						
पस-जो-जिस	भारी हुई	उस का तोल (पल्ला)	पस वह लोग	वह	फ़लाह पाने वाले	102 और जो हल्का हुआ
مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ						
उस का तोल (पल्ला)	तो वही लोग	वह जिन्होंने	ख़सारे में डाला	अपनी जानें	जहन्नम में	
خَلِدُونَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ﴿١٠٤﴾						
हमेशा रहेंगे	103	झुलस देगी	उन के चेहरे	आग	और वह	उस में तेवरी चढ़ाए हुए 104

बल्कि हम उन के पास लाए हैं सच्ची बात, और वेशक वह झूटे है। (90) अल्लाह ने किसी को (अपना) बेटा नहीं बनाया, और नहीं है उस के साथ कोई और माबूद, उस सूरत में हर माबूद ले जाता जो उस ने पैदा किया होता, और उन में से एक दूसरे पर चढ़ाई करता, पाक है अल्लाह उन (बातों) से जो वह बयान करते हैं। (91) वह जानने वाला है पोशीदा और आशकारा, पस बरतर है (वह हर) उस से जिस को वह शरीक समझते हैं। (92) आप (स) सफ़रमा दें ऐ मेरे रब! जो उन से वादा किया जाता है अगर तू मुझे दिखादे। (93) ऐ मेरे रब! पस तू मुझे ज़ालिम लोगो में (शामिल) न करना। (94) और वेशक हम उस पर कादिर हैं कि हम उन से जो वादा कर रहे हैं तुम्हें दिखा दें। (95) सब से अच्छी भलाई से बुराई को दफ़ा करो, हम खूब जानते हैं जो वह बयान करते हैं। (96) और आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ शैतानों के वस्वसों से। (97) और ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि वह मेरे पास आएँ। (98) (वह ग़फ़लत में रहते हैं) यहाँ तक कि जब उन में किसी को मौत आए तो कहता है ऐ मेरे रब! मुझे (फिर दुनिया में) वापस भेज दे। (99) शायद मैं उस में कोई अच्छा काम कर लूँ जो छोड़ आया हूँ, हरगिज़ नहीं, यह तो एक बात है जो वह कह रहा है, और उन के आगे एक बरज़ख़ (आड़) है उस दिन (क़ियामत) तक कि वह उठाए जाएँ। (100) फिर जब सूर फूँका जाएगा तो न रिश्ते रहेंगे उस दिन उन के दरमियान, और न कोई एक दूसरे को पूछेगा। (101) पस जिस (के आमाँल) का पल्ला भारी हुआ पस वही लोग फ़लाह (नजात) पाने वाले होंगे। (102) और जिस (के आमाँल) का पल्ला हल्का हुआ तो वही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को ख़सारे में डाला, वह जहन्नम में हमेशा रहेंगे। (103) आग उन के चेहरे झुलस देगी और वह उस में तेवरी चढ़ाए हुए होंगे। (104)

क्या मेरी आयतें तुम पर न पढ़ी जाती (सुनाई जाती) थीं? पस तुम उन्हें झुटलाते थे। (105)

वह कहेंगे ऐ हमारे रब! हम पर हमारी बदबख्ती ग़ालिब आ गई, और हम रास्ते से भटके हुए लोग थे। (106)

ऐ हमारे रब! हमें इस से निकाल ले, फिर अगर हम ने दोबारा (वही) किया तो वेशक हम ज़ालिम होंगे। (107)

वह फ़रमाएगा फिटकारे हुए उस में पड़े रहो और मुझ से कलाम न करो। (108)

वेशक हमारे बन्दों का एक गिरोह था, वह कहते थे ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, सो हमें बख़्शदे, और हम पर रहम फ़रमा, और तू बेहतरीन रहम करने वाला है। (109)

पस तुम ने उन्हें बना लिया मज़ाक़, यहां तक कि उन्होंने ने तुम्हें मेरी याद भुला दी और तुम उन से हँसी किया करते थे। (110)

वेशक मैं ने आज उन्हें जज़ा दी उस के बदले कि उन्होंने ने सब्र किया, वेशक वही मुराद को पहुँचने वाले हैं। (111)

(अल्लाह तआला) फ़रमाएगा तुम कितनी मुदत रहे दुनिया में सालों के हिसाब से? (112)

वह कहेंगे कि हम एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा रहे, पस पूछ लें शुमार करने वालों से। (113)

फ़रमाएगा तुम सिर्फ़ थोड़ा अर्सा रहे, काश कि तुम (यह हकीकत दुनिया में) जानते होते। (114)

क्या तुम ख़याल करते हो कि हम ने तुम्हें बेकार पैदा किया? और यह कि तुम हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाओगे? (115)

पस बुलन्द तर है अल्लाह हकीक़ी बादशाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, इज़्ज़त वाला अर्श का मालिक। (116)

और जो कोई पुकारे अल्लाह के साथ कोई और माबूद, उस के पास उस के लिए कोई सनद नहीं, सो उस का हिसाब उस के रब के पास है, वेशक कामयाबी नहीं पाएंगे काफ़िर। (117)

और आप (स) कहें, ऐ मेरे रब! बख़्शदे और रहम फ़रमा, और तू बेहतरीन रहम करने वाला है। (118)

أَلَمْ تَكُنْ آيَتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوا								
क्या न थी	मेरी आयतें	पढ़ी जाती	तुम पर	पस तुम थे	उन्हें	तुम झुटलाते थे	105	वह कहेंगे
رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ﴿١٠٦﴾ رَبَّنَا								
ऐ हमारे रब	ग़ालिब आ गई	हम पर	हमारी बद बख्ती	और हम थे	लोग	रास्ते से भटके हुए	106	ऐ हमारे रब
أَخْرَجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ احْسِبُوا فِيهَا								
हमें निकाल ले	इस से	फिर अगर	दोबारा किया	तो वेशक हम	ज़ालिम (जमा)	फरमाएगा	107	उस में
وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴿١٠٨﴾ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ								
और कलाम न करो मुझ से	108	वेशक वह	था	एक गिरोह	हमारे बन्दों का	वह कहते थे		
رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِمِينَ ﴿١٠٩﴾								
ऐ हमारे रब	हम ईमान लाए	सो हमें बख़्शदे	और हम पर रहम फरमा	और तू	बेहतरीन	रहम करने वाले	109	
فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سَخِرِيًّا حَتَّىٰ أَنْسَوْكُم ذِكْرِي وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ								
पस तुम ने उन्हें बना लिया	मज़ाक़	यहां तक कि	उन्होंने ने भुला दिया तुम्हें	मेरी याद	और तुम थे	उन से		
تَضَحَّكُونَ ﴿١١٠﴾ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا إِنَّهُمْ هُمُ								
हँसी किया करते	110	वेशक मैं	मैं ने जज़ा दी उन्हें	आज	उस के बदले	उन्होंने ने सब्र किया	वही	वेशक वह
الْفَائِزُونَ ﴿١١١﴾ قُلْ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿١١٢﴾								
मुराद को पहुँचने वाले	111	फरमाएगा	कितनी मुदत रहे तुम	ज़मीन (दुनिया) में	शुमार (हिसाब)	साल (जमा)	112	
قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسَلِ الْعَادِّينَ ﴿١١٣﴾								
वह कहेंगे	हम रहे	एक दिन	या	एक दिन का कुछ हिस्सा	पस पूछ लें	शुमार करने वाले	113	
قُلْ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَّوْ أَنْتُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾								
फरमाएगा	नहीं तुम रहे	मगर (सिर्फ़)	थोड़ा (अर्सा)	काश	तुम	जानते होते	114	
أَفَحَسِبْتُمْ أَنْمَّا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنْتُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾								
क्या तुम ख़याल करते हो	कि	हम ने तुम्हें पैदा किया	(अब्स) बेकार	और यह कि तुम	हमारी तरफ़	नहीं लौटाए जाओगे	115	
فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ								
पस बुलन्द तर	अल्लाह	बादशाह	हकीक़ी	नहीं कोई माबूद	उस के सिवा	मालिक		
الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ								
इज़्ज़त वाला अर्श	116	और जो पुकारे	अल्लाह के साथ	कोई और माबूद	कोई सनद	नहीं कोई		
لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾								
उस के पास	उस के लिए	सो, तहकीक	उसका हिसाब	उस के रब के पास	वेशक वह	फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएंगे	काफ़िर (जमा)	117
وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِمِينَ ﴿١١٨﴾								
और आप (स) कहें	ऐ मेरे रब	बख़्शदे	और रहम फरमा	और तू	बेहतरीन रहम करने वाला है	118		

آيَاتُهَا ٦٤ ﴿ ٢٤ ﴾ سُورَةُ النُّورِ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ٩ ﴾						
रुकुआत 9		(24) सूरतुन नूर रोशनी			आयात 64	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
سُورَةُ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَّعَلَّكُمْ						
ताकि तुम	वाज़ेह आयतें	उस में	और हम ने नाज़िल की	और लाज़िम किया उस को	जो हम ने नाज़िल की	एक सूरत
تَذَكَّرُونَ ﴿١﴾ الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا						
उन दोनो में से	हर एक को	तो तुम कोड़े मारो	और बदकार मर्द	बदकार औरत	1	तुम याद रखो
مِائَةَ جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ						
अगर	अल्लाह का हुक्म	में	मेहरबानी (तरस)	उन पर	और न पकड़ो (न खाओ)	कोड़े सौ (100)
كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَيَشْهَدَ عَذَابُهُمَا طَائِفَةٌ						
एक जमाअत	उन की सज़ा	और चाहिए कि मौजूद हो	और यौमे आखिरत	अल्लाह पर	तुम ईमान रखते हो	
مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢﴾ الزَّانِي لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً						
या मुश्रिका	बदकार औरत	सिवा	निकाह नहीं करता	बदकार मर्द	2	मोमिनीन से-कि
وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحَهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَحُرِّمَ ذَلِكَ عَلَى						
पर	यह	और हराम किया गया	या शिर्क करने वाला मर्द	सिवा बदकार मर्द	निकाह नहीं करती	और बदकार (औरत)
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا						
फिर वह न लाएं	पाक दामन औरतें	तुहमत लगाएं	और जो लोग	3	मोमिनीन	
بِأَرْبَعَةٍ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ						
उन की	और तुम न कुबूल करो	कोड़े	अस्सी (80)	तो तुम उन्हें कोड़े मारो	गवाह	चार (4)
شَهَادَةً أَبَدًا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٤﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا						
जिन लोगो ने तौबा कर ली	मगर	4	नाफरमान	वह	यही लोग	कभी गवाही
مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾ وَالَّذِينَ						
और जो लोग	5	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	तो वेशक अल्लाह	और उन्होंने ने इसलाह कर ली	उस के बाद
يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ						
उनकी जानें (खुद)	सिवा	गवाह	उन के	और न हों	अपनी बीवियां	तुहमत लगाएं
فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٦﴾						
6	सच बोलने वाले	कि वह वेशक से	अल्लाह की क़सम	गवाहियाँ	चार (4)	उन में से एक पस गवाही
وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٧﴾						
7	झूट बोलने वाले	से	अगर है वह	उस पर	अल्लाह की लानत	यह कि और पाँचवी

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है यह एक सूरत है जो हम ने नाज़िल की, और इस (के अहकाम) को फर्ज़ किया, और हम ने इस में वाज़ेह आयतें नाज़िल की, ताकि तुम याद रखो (ध्यान दो)। (1) बदकार औरत और बदकार मर्द दोनों में से हर एक को सौ (100) कोड़े मारो, और उन पर न खाओ तरस अल्लाह का हुक्म (चलाने) में, अगर तुम अल्लाह पर और यौमे आखिरत पर ईमान रखते हो, और चाहिए कि उन की सज़ा (के वक्त) मौजूद हो मुसलमानों की एक जमाअत। (2) बदकार मर्द बदकार औरत या मुश्रिका के सिवा निकाह नहीं करता, और बदकार औरत (भी) बदकार या शिर्क करने वाले मर्द के सिवा (किसी से) निकाह नहीं करती, और यह (ऐसा निकाह) मोमिनों पर हराम किया गया है। (3) और जो लोग तुहमत लगाएं पाक दामन औरतों पर, फिर वह (उस पर) चार (4) गवाह न लाएं तो तुम उन्हें अस्सी (80) कोड़े मारो और तुम कुबूल न करो कभी उन की गवाही, यही नाफरमान लोग हैं। (4) मगर जिन लोगों ने उस के बाद तौबा कर ली और उन्होंने ने इसलाह कर ली, तो वेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (5) और जो लोग अपनी बीबियों पर तुहमत लगाएं, और खुद उन के सिवा उन के गवाह न हों, तो उन में से हर एक की गवाही यह है कि अल्लाह की क़सम के साथ चार बार गवाही दें कि वह सच बोलने वालों में से हैं (सच्चा है)। (6) और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूट बोलने वालों में से है (झूटा है)। (7)

और उस औरत से टल जाएगी सज़ा अगर वह चार बार अल्लाह की कसम के साथ गवाही दे कि वह (मर्द) अलबत्ता झूटों में से है (झूटा है)। (8) और पाँचवी बार यह कि उस औरत (मुझ) पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर वह सचचों में से है (सच्चा है)। (9) और अगर तुम पर न होता अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत (तो यह मुश्किल हल न होती) और यह कि अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, हक़मत वाला है। (10) वेशक जो लोग बड़ा बुहतान लाए, तुम (ही) में से एक जमाअत है, तुम उसे अपने लिए बुरा गुमान न करो बल्कि वह तुम्हारे लिए बेहतर है, उन में से हर आदमी के लिए जितना उस ने किया (उतना) गुनाह है, और जिस ने उस का बड़ा (तूफ़ान) उठाया उस के लिए बड़ा अज़ाब है। (11) जब तुम ने वह (बुहतान) सुना तो क्यों न गुमान किया मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों ने अपनों के बारे में (गुमान) नेक, और उन्होंने (क्यों न) कहा? यह सरीह बुहतान है। (12) वह क्यों न लाए उस पर चार गवाह, पस जब वह गवाह न लाए तो अल्लाह के नज़्दीक वही झूटे है। (13) और अगर तुम पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फ़ज़ल और उस की रहमत न होती तो जिस (शुर्ल में) तुम पड़े थे तुम पर ज़रूर पड़ता बड़ा अज़ाब। (14) जब तुम (एक दूसरे से सुन कर) उसे अपनी ज़बान पर लाते थे, और तुम अपने मुँह से कहते थे जिस का तुम्हें कोई इल्म न था, और तुम उसे हलकी बात गुमान करते थे, हालांकि वह अल्लाह के नज़्दीक बहुत बड़ी बात थी। (15) जब तुम ने वह सुना क्यों न कहा? कि हमारे लिए (ज़ेबा) नहीं है कि हम ऐसी बात कहें, (ऐ अल्लाह) तू पाक है, यह बड़ा बुहतान है। (16) अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है, (मुबादा) तुम ऐसा काम फिर कभी करो, अगर तुम ईमान वाले हो। (17) और अल्लाह तुम्हारे लिए अहक़ाम (साफ़ साफ़) बयान करता है, और अल्लाह बड़ा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (18)

وَيَذَرُوهَا عَنْهَا الْعَذَابُ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَدَاتٍ بِاللّٰهِ إِنَّهُ							
कि वह	अल्लाह की कसम	चार बार गवाही	गवाही दे	अगर	सज़ा	उस औरत से	और टल जाएगी
لَمَنْ الْكَذِبِينَ ﴿٨﴾ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ							
वह है	अगर	उस पर	अल्लाह का ग़ज़ब	यह कि	और पाँचवी बार	8	झूटे लोग
مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٩﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ							
और यह कि अल्लाह	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़ल	और अगर न	9	सच्चे लोग	से
تَوَّابٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ							
तुम में से	एक जमाअत	बड़ा बुहतान लाए	वेशक जो लोग	10	हिक्मत वाला	तौबा कुबूल करने वाला	
لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ							
जो उस ने कमाया (किया)	उन में से	हर एक आदमी के लिए	बेहतर है तुम्हारे लिए	बल्कि वह	अपने लिए	बुरा	तुम उसे गुमान न करो
مِّنَ الْإِثْمِ وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١﴾ لَّوْلَا							
क्यों न	11	बड़ा	अज़ाब	उस के लिए	उन में से	बड़ा उस का	उठाया और वह जिस गुनाह से
إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا							
और उन्होंने ने कहा	नेक	अपनों के बारे में	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	गुमान किया	तुम ने वह सुना	जब
هَٰذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ﴿١٢﴾ لَّوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ ۚ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا							
वह न लाए	पस जब	गवाह	चार (4)	उस पर	वह लाए	क्यों न	12
بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَٰئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَٰذِبُونَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ							
अल्लाह का फ़ज़ल	और अगर न	13	वही झूटे	अल्लाह के नज़्दीक	तो वही लोग	गवाह	
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ							
उस में	तुम पड़े	उस में जो	ज़रूर तुम पर पड़ता	और आख़िरत	दुनिया में	और उस की रहमत	तुम पर
عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٤﴾ إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِالسِّنَّتِمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ							
अपने मुँह से	और तुम कहते थे	अपनी ज़बानों पर	जब तुम लाते थे उसे	14	बड़ा	अज़ाब	
مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا ۖ وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾							
15	बहुत बड़ी (बात)	अल्लाह के नज़्दीक	हालांकि वह	हलकी बात	और तुम उसे गुमान करते थे	कोई इल्म	उस का तुम्हें जो नहीं
وَلَوْ لَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَٰذَا ۖ سُبْحَنَكَ							
तू पाक है	ऐसी बात	कि हम कहें	हमारे लिए	नहीं है	तुम ने कहा	तुम ने वह सुना	जब और क्यों न
هَٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا							
कभी भी	ऐसा काम	तुम फिर करो	कि	तुम्हें नसीहत करता है अल्लाह	16	बड़ा	बुहतान यह
إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٨﴾							
18	हिक्मत वाला	बड़ा जानने वाला	और अल्लाह	आयतें (अहक़ाम)	तुम्हारे लिए	और बयान करता है अल्लाह	17

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ									
वेशक	जो लोग	पसंद करते हैं	कि	फैले	वेहयाई	में जो	ईमान लाए (मोमिन)	उन के लिए	
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾									
अज्ञाव	दर्दनाक	दुनिया में	और आखिरत में	और अल्लाह	जानता है	और तुम	तुम नहीं जानते	19	
وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٢٠﴾									
और अगर न	अल्लाह का फ़ज़ल	तुम पर	और उस की रहमत	और यह कि अल्लाह	करने वाला	शफ़क़्त	निहायत मेहरबान	20	
يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ الشَّيْطَانِ ۚ وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۚ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ									
ऐ	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिनो)	तुम न पैरवी करो	क़दम (जमा)	शैतान	और जो	पैरवी करता है	क़दम (जमा)		
وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا ۚ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ ۗ									
शैतान	तो वेशक वह	हुक्म देता है	वेहयाई का	और बुरी बात	और अगर न	अल्लाह का फ़ज़ल	तुम पर		
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢١﴾ وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ									
और अल्लाह	सुनने वाला	जानने वाला	21	और कसम न खाएं	फ़ज़ीलत वाले	तुम में से	और वसूत वाले		
أَنْ يُؤْتُوا أَوْلَى الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ									
कि (न) दें	क़राबत दार	और मस्कीनों	और हिज़्रत करने वाले	अल्लाह की राह में					
وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۚ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ									
और चाहिए कि वह माफ़ कर दें	और वह दरगुज़र करें	क्या तुम नहीं चाहते	कि	अल्लाह बख़्शदे	तुम्हें	और अल्लाह	बख़्शने वाला		
رَحِيمٌ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا									
निहायत मेहरबान	22	वेशक	जो लोग तुहमत लगाते हैं	पाक दामन (जमा)	भोली भाली अनज़ान	मोमिन औरतें	लानत है उन पर		
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ									
दुनिया में	और आखिरत	और उन के लिए	अज्ञाव	बड़ा	23	दिन	गवाही देंगे	उन पर (खिलाफ़)	
أَلَسْنَاهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ يُؤْفِكُهُمْ									
उन की ज़बानें	और उन के हाथ	और उन के पैर	उस की जो	वह करते थे	24	उस दिन	पूरा देगा उन्हें		
اللَّهُ دِينُهُمُ الْحَقُّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾ الْخَبِيثَاتِ									
अल्लाह	उन का बदला	सच (ठीक ठीक)	और वह जान लेंगे	कि अल्लाह	वही	बरहक़	ज़ाहिर करने वाला	25	नापाक (गन्दी) औरतें
لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ وَالطَّيِّبَاتِ وَالطَّيِّبُونَ									
गन्दे मर्दों के लिए	और गन्दे मर्द	गन्दी औरतों के लिए	और पाक औरतें	पाक मर्दों के लिए	पाक मर्द (जमा)	और पाक मर्द	और पाक मर्द		
لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾									
पाक औरतों के लिए	यह लोग	पाक दामन है	उस से जो	वह कहते हैं	उन के लिए	मराफ़िरत	और रोज़ी	इज़ज़त की	26

वेशक जो लोग पसंद करते हैं कि मोमिनो में वेहयाई फैले उन के लिए दुनिया और आखिरत में दर्दनाक अज्ञाव है, और अल्लाह जानता है जो तुम नहीं जानते। (19)

और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल और रहमत न होती (तो किया कुछ न हो जाता) और यह कि अल्लाह शफ़क़्त करने वाला, निहायत मेहरबान है। (20)

ऐ मोमिनो! तुम शैतान के कदमों की पैरवी न करो, और जो शैतान के कदमों की पैरवी करता है तो वह (शैतान) हुक्म देता है वेहयाई का और बुरी बात का, और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल और उस की रहमत न होती तो तुम में से कोई आदमी कभी भी न पाक होता, और लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (21)

और कसम न खाएं तुम में से फ़ज़ीलत वाले और (माल में) वसूत वाले कि वह करावतदारों को, मस्कीनों को, और अल्लाह की राह में हिज़्रत करने वालों को न देंगे। और चाहिए कि वह माफ़ कर दें, और दरगुज़र करें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें बख़्शदे? और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (22)

वेशक जो लोग पाक दामन, अनजान मोमिन औरतों पर तुहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आखिरत में लानत है, और उन के लिए बड़ा अज्ञाव है। (23)

जिस दिन उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पाऊँ उन के खिलाफ़ गवाही देंगे उस की जो वह करते थे। (24)

उस दिन अल्लाह उन्हें उन का बदला ठीक ठीक पूरा देगा, और वह जान लेंगे कि अल्लाह ही बरहक़ है (हक़ को) ज़ाहिर करने वाला। (25)

गन्दी औरतें गन्दे मर्दों के लिए हैं, और गन्दे मर्द गन्दी औरतों के लिए हैं, और पाक मर्द पाक औरतों के लिए हैं, यह लोग उस से बरी हैं जो वह कहते हैं, उन के लिए मराफ़िरत और इज़ज़त की रोज़ी है। (26)

ऐ मोमिनों! तुम अपने घरों के सिवा (दूसरे) घरों में दाखिल न हो, यहां तक कि तुम इजाज़त ले लो, और उन के रहने वालों को सलाम कर लो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (27)

फिर अगर उस (घर) में तुम किसी को न पाओ तो उस में दाखिल न हो यहां तक कि तुम्हें इजाज़त दी जाए, और अगर तुम्हें कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाया करो, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा पाकीज़ा है, और जो तुम करते हो अल्लाह जानने वाला है। (28)

तुम पर (इस में) कोई गुनाह नहीं अगर तुम उन घरों में दाखिल हो जिन में किसी की सुकूनत (रिहाइश) नहीं, जिस में तुम्हारी कोई चीज़ हो और अल्लाह (खूब) जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (29)

आप (स) फ़रमा दें मोमिन मर्दों को कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें, यह उन के लिए ज़ियादा सुथरा है, बेशक अल्लाह उस से वाख़बर है जो वह करते हैं। (30)

और आप (स) फ़रमा दें मोमिन औरतों को कि वह नीची रखें अपनी निगाहें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें और अपनी ज़ीनत (के मुक़ामात) को ज़ाहिर न करें मगर जो उस में से ज़ाहिर हुआ (जिस का ज़ाहिर होना नागुज़ीर है) और वह अपनी ओढ़नियां अपने गिरेवानों पर डाले रहें और अपनी ज़ीनत (के मुक़ाम) ज़ाहिर न करें सिवाए अपने खावन्दों पर, या अपने बाप, या अपने खुसर, या अपने बेटों, या अपने शौहर के बेटों, या अपने भाइयों या अपने भतीजों पर, अपने भान्जों, या अपनी मुसलमान औरतों, या अपनी कनीज़ों, या वह खिदमतगार मर्द जो (औरतों से) गरज़ न रखने वाले हों, या वह लड़के जो अभी वाकिफ़ नहीं औरतों के पर्दे (मामलात से), और वह अपने पाऊँ (ज़मीन पर) न मारें कि वह जो अपनी ज़ीनत छुपाए हुए हैं पहचान ली जाए, अल्लाह के आगे तौबा करो तुम सब ऐ ईमान वालो! ताकि तुम दो ज़हान की कामयाबी पाओ। (31)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا									
तुम इजाज़त ले लो	यहां तक कि	अपने घरों के सिवा		घर (जमा)	तुम न दाख़िल हो	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)		ऐ	
وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ۚ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۚ فَإِنْ									
फिर अगर	27	तुम नसीहत पकड़ो	ताकि तुम	तुम्हारे लिए	बेहतर है	यह	उन के (रहने) वाले	पर-को	और तुम सलाम कर लो
لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا ۖ فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ قِيلَ									
तुम्हें कहा जाए	और अगर	तुम्हें	इजाज़त दी जाए	यहां तक कि	तो तुम न दाख़िल हो उस में		किसी को	उस में	तुम न पाओ
لَكُمْ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا ۚ هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۚ لَيْسَ									
नहीं	28	जानने वाला	तुम करते हो	वह जो	और अल्लाह	तुम्हारे लिए	ज़ियादा पाकीज़ा	यही तो तुम लौट जाया करो	तुम लौट जाओ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ									
जानता है	और अल्लाह	तुम्हारी	कोई चीज़	जिन में	ग़ैर आबाद		उन घरों में	तुम दाख़िल हो	अगर कोई गुनाह तुम पर
مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ۚ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا									
और वह हिफाज़त करें	अपनी निगाहें		से	वह नीची रखें	मोमिन मर्दों को	आप फ़रमा दें	29	तुम छुपाते हो	और जो तुम ज़ाहिर करते हो
فُرُوجَهُمْ ۚ ذٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۚ وَقُلْ									
और फ़रमा दें	30	वह करते है	उस से जो	वाख़बर है	बेशक अल्लाह	उन के लिए	ज़ियादा सुथरा	यह	अपनी शर्मगाहें
لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ									
और वह ज़ाहिर न करें		अपनी शर्मगाहें		और वह हिफाज़त करें		अपनी निगाहें	से	वह नीची रखें	मोमिन औरतों को
زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۚ									
अपने सीने (गिरेबानों)		पर	अपनी ओढ़नियां		और डाले रहें		उस में से ज़ाहिर हुआ		अपनी ज़ीनत मगर
وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ									
या	अपने शौहरों के बाप (खुसर)		या	बाप (जमा)	या	अपने खावन्दों पर		सिवाए	अपनी ज़ीनत और वह ज़ाहिर न करें
أَبْنَائِهِمْ أَوْ أَبْنَاءَ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِمْ أَوْ بَنَىٰ إِخْوَانِهِمْ أَوْ									
या	अपने भाई के बेटे (भतीजे)		या	अपने भाई		या	अपने शौहरों के बेटे		या अपने बेटे
بَنَىٰ أَخَوَاتِهِمْ أَوْ نِسَائِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ									
या खिदमतगार मर्द		उन के दाएं हाथ (कनीजें)		या जिन के मालिक हुए		या अपनी (मुसलमान) औरतें		अपनी बहनों के बेटे (भान्जे)	
غَيْرِ أُولَىٰ الرَّبَّةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ									
पर	वह वाकिफ़ नहीं हुए		वह जो कि	या लड़के		मर्द	से	न गरज़ रखने वाले	
عَوْرَتِ النِّسَاءِ ۚ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ ۚ مِنْ									
से	जो छुपाए हुए है		कि वह जान (पहचान) लिया जाए		अपने पाऊँ	और वह न मारें		औरतों के पर्दे	
زِينَتَهُنَّ ۚ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهُ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۚ									
31	फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाओ		ताकि तुम		ऐ ईमान वालो		सब	अल्लाह की तरफ़	और तुम तौबा करो अपनी ज़ीनत

وَأَنْكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ^ط						
और अपनी कनीज़ें	अपने गुलाम	से	और नेक	अपने में से (अपनी)	वेवा औरतें	और तुम निकाह करो
إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُعْهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ^(३२)						
32	इल्म वाला	वसअत वाला	और अल्लाह	अपने फ़ज़ल से	अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा	तंग दस्त (जमा) अगर वह हों
وَلَيْسْتَغْفِرَ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُعْهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ						
अपने फ़ज़ल से	अल्लाह	उन्हें ग़नी कर दे	यहां तक कि	निकाह	नहीं पाते	वह लोग जो और चाहिए कि बचे रहें
وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ						
तो तुम उन से मकातिबत (आज़ादी की तहरीर) कर लो	तुम्हारे दाएं हाथ (गुलाम)	मालिक हों	उन में से जो	मकातिबत	चाहते हों	और जो लोग
إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ^ط وَأَتَوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ						
जो उस ने तुम्हें दिया	अल्लाह का माल	से	और तुम उनको दो	बेहतरी	उन में	अगर तुम जानो (पाओ)
وَلَا تُكْرِهُوا فَتِيَّتَكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ ^ط إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتُغُوا عَرَضَ						
सामान	ताकि तुम हासिल कर लो	पाक दामन रहना	अगर वह चाहें	बदकारी पर	अपनी कनीज़ें	और तुम न मजबूर करो
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ^ط وَمَنْ يُكْرِهْنَهُ ^ط فَإِنَّ اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ						
बख़्शने वाला	उन की मजबूरी	बाद	तो बेशक अल्लाह	उन्हें मजबूर करेगा	और जो	दुनिया ज़िन्दगी
رَحِيمٌ ^(३३) وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا لِّلَّذِينَ						
वह लोग जो	से	और मिसालें	वाज़ेह	अहकाम	तुम्हारी तरफ़	हम ने नाज़िल किए
خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ^(३४) اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ						
आस्मानों	नूर	अल्लाह	34	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	तुम से पहले
وَالْأَرْضِ ^ط مَثَلُ نُورِهِ كَمِشْكُوهٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ^ط الْمِصْبَاحُ						
चिराग़	एक चिराग़	उस में	जैसे एक ताक़	उस का नूर	मिसाल	और ज़मीन
فِي زُجَاجَةٍ ^ط الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ						
दरख़्त	से	रोशन किया जाता है	एक सितारा चमकदार	गोया वह	वह शीशा	एक शीशे में
مُبْرَكَةٍ ^ط زَيْتُونَةٍ لَا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ ^ط يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ						
ख़्वाह	रोशन हो जाए	उस का तेल	करीब है	और न मग़रिब का	न मशरिफ़ का	ज़ैतून मुबारक
لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ^ط نُّورٌ عَلَى نُورٍ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَنْ يَشَاءُ ^ط						
वह जिस को चाहता है	अपने नूर की तरफ़	रहनुमाई करता है अल्लाह	रोशनी पर रोशनी	आग	उसे न छुए	
وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ^ط لِلنَّاسِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ^(३५) فِي بُيُوتٍ أُذِنَ						
हुक़्म दिया	उन घरों में	35	जानने वाला	हर शै को	और अल्लाह	लोगों के लिए
اللَّهُ أَنْ تَرْفَعَ وَيُذَكَّرَ ^ط فِيهَا اسْمُهُ ^ط يُسَبِّحُ لَهُ ^ط فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ^(३६)						
36	और शाम	सुबह	उन में	उस की	तस्वीह करते हैं	उस का नाम

और तुम निकाह करो अपनी बेवा औरतों का और अपने नेक गुलामों और अपनी कनीज़ों का, अगर वह तंग दस्त हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा अपने फ़ज़ल से, और अल्लाह वसअत वाला, इल्म वाला है। (32) और चाहिए कि बचे रहें (पाक दामन रहें) वह जो कि निकाह (मक़दूर) नहीं पाते यहां तक कि अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़ल से ग़नी कर दे, और तुम्हारे गुलाम जो मकातिबत (कुछ ले दे कर आज़ादी की तहरीर) चाहते हों तो उन से मकातिबत कर लो अगर तुम उन में बेहतरी पाओ, और उस माल में से उन को दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, और अपनी कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर न करो अगर वह पाक दामन रहना चाहें (महज़ इस लिए कि) तुम दुनिया की ज़िन्दगी का सामान हासिल कर लो, और जो उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह उन (बेचारियों) के मजबूर किए जाने के बाद बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (33) और तहकीक़ हम ने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किए वाज़े अहकाम, और उन लोगों की मिसालें जो तुम से पहले गुज़रे हैं और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (34) अल्लाह नूर है ज़मीन और आस्मान का, उस के नूर की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक ताक़ हो, उस में एक चिराग़ हो, चिराग़ एक शीशे की (क़न्दील में) हो, वह शीशा गोया एक चमकदार सितारा है, वह रोशन किया जाता है ज़ैतून के एक मुबारक दरख़्त से जो न शरफ़ी है न गरबी, करीब है कि उस का तेल रोशन हो जाए चाहे उसे आग न छुए, नूर पर नूर (सरासर रोशनी), अल्लाह जिस को चाहता है अपने नूर की तरफ़ रहनुमाई करता है, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, और अल्लाह हर शै का जानने वाला। (35) (यह रोशनी है) उन घरों में (जिन की निस्वत) अल्लाह ने हुक़्म दिया है कि उन्हें बुलन्द किया जाए और उन में उस का नाम लिया जाए, वह उन में सुबह शाम उस की तस्वीह करते हैं। (36)

वह लोग (जिन्हें) ग़ाफ़िल नहीं करती कोई तिजारत, न ख़रीद ओ फ़रोख़्त अल्लाह की याद से, नमाज़ काइम रखने और ज़कात अदा करने से, वह उस दिन से डरते हैं जिस में उलट जाएंगे दिल और आँखें। (37) ताकि अल्लाह उन के आमाल की बेहतर से बेहतर जज़ा दे, और उन्हें अपने फज़ल से ज़ियादा दे, और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क देता है। (38) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के आमाल सुराब (चमकते रेत के धोके) की तरह हैं चटियल मैदान में, प्यासा उसे पानी गुमान करता है, यहां तक कि जब वह वहां आता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता, और उस ने अल्लाह को अपने पास पाया तो अल्लाह ने उस का हिसाब पूरा कर दिया, और अल्लाह तेज़ हिसाब करने वाला है। (39) (या उन के आमाल ऐसे हैं) जैसे गहरे दर्या में अन्धेरे, जिन्हें ढांप लेती है मौज, उस के ऊपर दूसरी मौज, उस के ऊपर बादल, अन्धेरे हैं एक पर दूसरा, जब वह अपना हाथ निकाले तो तबक्को नहीं कि उसे देख सके, और जिस के लिए अल्लाह नूर न बनाए उस के लिए कोई नूर नहीं। (40) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, और पर फैलाए हुए परिन्दे (भी) हर एक ने जान ली है अपनी दुआ और अपनी तस्वीह, और अल्लाह जानता है जो वह करते हैं। (41) और अल्लाह (ही) की बादशाहत है आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह (ही) की तरफ़ लौट कर जाना है। (42) क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह बादल चलाता है, फिर उन्हें आपस में मिलाता है, फिर वह उन्हें तह व तह कर देता है, फिर तू देखे उन के दरमियान से बारिश निकलती है, और वह आस्मानों (में जो ओलों के) पहाड़ हैं उन से उतारता है ओले। फिर वह जिस पर चाहे डाल देता है, और जिस से चाहे वह उसे फेर देता है, करीब है कि उस की बिजली की चमक आँखों (की बीनाई) ले जाए। (43)

رَجَالٌ لَا تُلْهِهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ							
वह लोग	उन्हें ग़ाफ़िल नहीं करती	तिजारत	और न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	से	अल्लाह की याद	और काइम रखना	नमाज़
وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ (37)							
और अदा करना	ज़कात	और डरते हैं	उस दिन से	उलट जाएंगे	उस में	दिल (जमा)	और आँखें
لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ							
ताकि उन्हें जज़ा दे अल्लाह	बेहतर से बेहतर	जो उन्होंने ने किया (आमाल)	और वह उन्हें ज़ियादा दे	अपने फज़ल से	और अल्लाह	रिज़्क देता है	
مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ (38) وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ							
जिसे चाहता है	बेहिसाब	38	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	उन के अमल	सुराब की तरह		
بِقَيْعَةٍ يَّحْسِبُهُ الظَّمَانُ مَاءً حَتَّى إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا							
चटियल मैदान में	गुमान करता है	प्यासा	पानी	यहां तक कि	जब वह वहां आता है	उस को नहीं पाता	कुछ भी
وَوَجَدَ اللَّهُ عِنْدَهُ فَوْقَهُ حِسَابَهُ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ (39)							
और उस ने पाया	अल्लाह	अपने पास	तो उस (अल्लाह) ने उसे पूरा कर दिया	उस का हिसाब	और अल्लाह	तेज़ हिसाब करने वाला	39
أَوْ كَظُلُمٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّعْشُهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ							
या जैसे अन्धेरे	दर्या में	गहरा पानी	उसे ढांप लेती है	मौज	उस के ऊपर से	एक (दूसरी) मौज	उस के ऊपर से
سَحَابٌ ظُلُمَتْ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكِدْ							
बादल	अन्धेरे	उस के बाज़ (एक)	बाज़ (दूसरे) के ऊपर	जब	वह निकाले	अपना हाथ	तबक्को नहीं
يَرِيهَا وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِنْ نُّورٍ (40) أَلَمْ تَرَ							
तू उसे देख सके	और जिसे	न बनाए (न दे) अल्लाह	उस के लिए	नूर	तो नहीं उस के लिए	कोई नूर	40
أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مِّن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرِ طَفَّتْ كُلُّ							
कि अल्लाह	पाकीज़गी बयान करता है	उस की	जो	आस्मानों में	और ज़मीन	और परिन्दे	पर फैलाए हुए
قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ (41) وَلِلَّهِ مُلْكُ							
जान ली	अपनी दुआ	अपनी तस्वीह	और अल्लाह	जानता है	वह जो	वह करते हैं	41
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ الْمَصِيرُ (42) أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُزْجِي سَحَابًا ثُمَّ							
आस्मानों	और ज़मीन	और अल्लाह की तरफ़	लौट कर जाना	42	क्या तू ने नहीं देखा	कि अल्लाह	चलाता है
يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَّامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ وَيُنَزِّلُ							
मिलाता है वह	आपस में	फिर	वह उस को करता है	तह व तह	फिर तू देखे	वारिश	निकलती है
مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ							
आस्मानों से	से	पहाड़	उस में	से	ओले	फिर वह डाल देता है	उसे
وَيَصْرِفُهُ عَنِ مَّن يَشَاءُ يَكَادُ سَنًا بَرَقَهُ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ (43)							
और उसे फेर देता है	से	जिस से चाहे	करीब है	चमक	उस की बिजली	ले जाए	43

يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٤٤﴾							
वदलता है अल्लाह	रात	और दिन	वेशक	इस में	इव्रत है	आँखों वाले (अक़ल मन्द)	44
وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِّن مَّاءٍ فَمِنْهُمْ مَّن يَمْشِي عَلَى بَطْنِهِ وَمِنْهُمْ							
और अल्लाह	पैदा किया	हर जानदार	पानी से	पस उन में से	कोई चलता है	अपने पेट पर	और उन में से
مَّن يَمْشِي عَلَى رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَّن يَمْشِي عَلَى أَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللَّهُ							
कोई चलता है	दो पाऊँ पर	और उन में से	कोई चलता है	चार पर	अल्लाह पैदा करता है		
مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٥﴾ لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ							
जो वह चाहता है	वेशक अल्लाह	पर	हर शौ	कुदरत रखने वाला	45	तहकीक हम ने नाज़िल की	वाज़ेह आयतें
وَاللَّهُ يَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٦﴾ وَيَقُولُونَ آمَنَّا							
और अल्लाह	हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है	तरफ़	रास्ता	सीधा	46	और वह कहते हैं हम ईमान लाए
بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّى فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مِّن بَعْدِ ذَلِكَ							
अल्लाह पर	और रसूल पर	और हम ने हुक़्म माना	फिर	फिर गया	एक फ़रीक़	उस में से	उस के बाद
وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ							
और वह नहीं	ईमान वाले	47	और जब	वह बुलाए जाते हैं	अल्लाह की तरफ़	और उस का रसूल	
لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ							
ताकि वह फैसला कर दे	उन के दरमियान	नागहां	एक फ़रिक्	उन में से	मुँह फेर लेता है	48	और अगर
يَأْتُوا إِلَيْهِ مُدْعِينَ ﴿٤٩﴾ أَفِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَمْ ارْتَابُوا أَمْ							
वह आते हैं उस की तरफ़	गर्दन झुकाए	49	क्या उन के दिलों में	कोई रोग	या	वह शक में पड़े हैं	या
يَخَافُونَ أَنْ يَحْيِفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ أَوْلَىٰكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٥٠﴾							
वह डरते हैं	कि	जुल्म करेगा अल्लाह	उन पर	और उस का रसूल	वल्कि	वह	वही ज़ालिम (जमा)
إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ							
इस के सिवा नहीं है	बात	मोमिन (जमा)	जब	वह बुलाए जाते हैं	अल्लाह की तरफ़	और उस का रसूल	ताकि वह फैसला कर दें
بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥١﴾ وَمَنْ							
उन के दरमियान	कि-तो	वह कहते हैं	हम ने सुना	और हम ने इताअत की	वही	फ़लाह पाने वाले	51
يُطِيعُ اللَّهُ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَى اللَّهَ وَيَتَّقِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٥٢﴾							
इताअत करे अल्लाह की	और उस का रसूल	और डरे	अल्लाह	और परहेज़गारी करे	पस वह	वही	कामयाब होने वाले
وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ قُلْ							
और उन्होंने ने कसमें खाई	अल्लाह की	और ज़ोरदार कसमें	अलवत्ता अगर	आप हुक़्म दें उन्हें	तो वह ज़रूर निकल खड़े होंगे	फ़रमा दें	
لَا تُقْسِمُوا طَاعَةً مَّعْرُوفَةً إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾							
तुम कसमें न खाओ	इताअत	पसंदीदा	वेशक अल्लाह	ख़बर रखता है	वह जो	तुम करते हो	53

अल्लाह रात और दिन को बदलता है, वेशक उस में इव्रत है अक़ल मन्दों के लिए। (44)

और अल्लाह ने हर जानदार पानी से पैदा किया, पस उन में से कोई अपने पेट पर चलता है, और उन में से कोई दो पाऊँ पर चलता है, और उन में से कोई चार (पाऊँ) पर चलता है। अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है, वेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (45)

तहकीक हम ने वाज़ेह आयतें नाज़िल की, और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (46)

और वह कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हम ने हुक़्म माना, फिर उस के बाद उस में से एक फ़रीक़ फिर गया, और वह ईमान वाले नहीं। (47)

और जब वह बुलाए जाते हैं अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ ताकि वह उन के दरमियान फैसला कर दे तो नागहां उन में से एक फ़रीक़ मुँह फेर लेता है। (48)

और अगर उन के लिए हक़ (पहुँचता) हो तो वह उस की तरफ़ गर्दन झुकाए (खुशी से) चले आते हैं। (49)

क्या उन के दिलों में कोई रोग है, या वह शक में पड़े हैं, या वह डरते हैं कि अल्लाह और उस का रसूल उन पर जुल्म करेंगे, (नहीं) बल्कि वही ज़ालिम हैं। (50)

मोमिनों की बात इस के सिवा नहीं कि जब वह अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ बुलाए जाते हैं ताकि वह उन के दरमियान फैसला कर दें, तो वह कहते हैं हम ने सुना और हम ने इताअत की और वही हैं फ़लाह (दो ज़हान की कामयाबी) पाने वाले। (51)

और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करे और अल्लाह से डरे, और परहेज़गारी करे, पस वही लोग कामयाब होने वाले हैं। (52)

और उन्होंने ने अल्लाह की ज़ोरदार कसमें खाई कि अगर आप (स) उन्हें हुक़्म दें तो वह ज़रूर (जिहाद) के लिए निकल खड़े होंगे, आप (स) फरमा दें तुम कसमें न खाओ, पसंदीदा इताअत (मतलूब है), वेशक अल्लाह उस की ख़बर रखता है वह जो तुम करते हो। (53)

आप (स) फ़रमा दें तुम अल्लाह की और रसूल की इताअत करो, फिर आगर तुम फिर गए तो इस के सिवा नहीं कि रसूल पर उसी क़दर है जो उस के ज़िम्मे किया गया है और तुम पर (लाज़िम है) जो तुम्हारे ज़िम्मे डाला गया है, अगर तुम उस की इताअत करोगे तो हिदायत पा लोगे, और रसूल पर सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। (54)

अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जो तुम में से ईमान लाए और उन्होंने ने नेक काम किए कि उन्हें ज़रूर ख़िलाफ़त (सलतनत) देगा ज़मीन में, जैसे उन के पहलों को ख़िलाफ़त दी, और उन के लिए उन के दीन को ज़रूर कुव्वत (इस्तेहकाम) देगा, जो उस ने उन के लिए पसंद किया, और उन के लिए ख़ौफ़ के बाद ज़रूर अमन से बदल देगा, वह मेरी इबादत करेंगे, मेरा शरीक न करेंगे किसी शै को, और जिस ने उस के बाद नाशुकी की, पस वही लोग नाफ़रमान हैं। (55)

और तुम नमाज़ काइम करो और ज़कात अदा करो, और रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (56)

हरगिज़ गुमान न करना कि काफ़िर ज़मीन में आजिज़ करने वाले हैं, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और (वह) अलवत्ता बुरा ठिकाना है। (57)

ऐ ईमान वाली! चाहिए कि तुम्हारे गुलाम (तुम्हारे पास आने की) तुम से इजाज़त लें, और वह जो नहीं पहुँचे तुम में से (हदे) शऊर को, तीन वक़्त (यानी) नमाज़े फ़ज़्र से पहले और जब तुम अपने कपड़े उतार कर रख देते हो दोपहर को, और नमाज़े इशा के बाद, तुम्हारे लिए (यह) तीन पर्दे (के औकात) हैं, नहीं तुम पर और न उन पर कोई गुनाह उन के अलावा (औकात में), तुम में से बाज़, बाज़ के पास फिरा करते हैं, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम बाज़ेह करता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (58)

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ						
उस पर	तो इस के सिवा नहीं	फिर अगर तुम फिर गए	रसूल की	और इताअत करो	तुम इताअत करो अल्लाह की	फरमा दें
مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِنْ تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى						
पर	और नहीं	तुम हिदायत पालोगे	तुम इताअत करोगे	और अगर	जो बोझ डाला गया तुम पर (ज़िम्मे)	जो बोझ डाला गया (ज़िम्मे)
الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلُغُ الْمُبِينُ ﴿٥٤﴾ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا						
और काम किए	तुम में से	उन लोगो से जो ईमान लाए	अल्लाह ने वादा किया	54	साफ़ साफ़ पहुँचा देना	मगर-सिर्फ़ रसूल
الصَّلَاتِ لِيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ ۖ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ						
वह लोग जो	उस ने ख़िलाफ़त दी	जैसे	ज़मीन में	वह ज़रूर उन्हें ख़िलाफ़त देगा	नेक	
مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَلِيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلِيُبَدِّلَنَّهُمْ						
और अलवत्ता वह ज़रूर बदल देगा उन के लिए	उन के लिए	उस ने पसंद किया	जो	उन का दीन	उन के लिए	और ज़रूर कुव्वत देगा उन से पहले
مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ						
और जिस	कोई शै	मेरा	वह शरीक न करेंगे	वह मेरी इबादत करेंगे	अमन	उन का खौफ़ बाद
كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ						
नमाज़	और तुम काइम करो	55	नाफरमान (जमा)	पस वही लोग	उस के बाद	नाशुकी की
وَاتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ						
हरगिज़ गुमान न करें	56	रहम किया जाए	ताकि तुम पर	रसूल	और इताअत करो	ज़कात और अदा करो तुम
الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوَهُمُ النَّارُ وَلَبِئْسَ						
और अलवत्ता बुरा	दोज़ख़	उन का ठिकाना	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले हैं	वह जिन्हों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	
الْمَصِيرُ ﴿٥٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنَكُمْ الَّذِينَ مَلَكَتْ						
मालिक हुए	वह जो कि	चाहिए कि इजाज़त लें तुम से	जो लोग ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ	57	ठिकाना
أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۖ						
बार-वक़्त	तीन	तुम में से	एहतिलाम - शऊर	नहीं पहुँचे	और वह लोग जो	तुम्हारे दाएँ हाथ (गुलाम)
مِّنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيرَةِ						
दोपहर	से-को	अपने कपड़े	उतार कर रख देते हो	और जब	नमाज़े फज़्र	पहले
وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ۖ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَّكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ						
नहीं तुम पर	तुम्हारे लिए	पर्दा	तीन	नमाज़े इशा	और बाद	
وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ طَوْفُونَ عَلَيْكُمْ بِعُضُكُمُ عَلَىٰ						
पर-पास	तुम में से बाज़ (एक)	तुम्हारे पास	फेरा करने वाले	उन के बाद-अलावा	कोई गुनाह	और न उन पर
بَعْضٍ ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٨﴾						
58	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अहकाम	तुम्हारे लिए	वाज़ेह करता है अल्लाह इसी तरह बाज़ (दूसरे)

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا						
जैसे	पस चाहिए कि वह इजाज़त लें	(हदे) शऊर को	तुम में से	बच्चे	पहुँचें	और जब
اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ						
तुम्हारे लिए	अल्लाह वाज़ेह करता है	इसी तरह	उन से पहले	वह जो	इजाज़त लेते थे	
آيَتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي						
वह जो	औरतों में से	और खाना नशीन बूढ़ी	59	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अपने अल्लाह अहकाम
لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ						
कि वह उतार रखें	कोई गुनाह	उन पर	तो नहीं	निकाह	आरजू नहीं रखती है	
ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ						
वह बचें	और अगर	ज़ीनत को	न ज़ाहिर करते हुए	अपने कपड़े		
خَيْرٌ لَّهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾ لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى						
नाबीना पर	नहीं	60	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उन के लिए वेहतर
حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرْجٌ						
कोई गुनाह	बीमार पर	और न	कोई गुनाह	लंगड़े पर	और न	कोई गुनाह
وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ						
अपने घरों से	कि तुम खाओ	खुद तुम पर	और न			
أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ						
या अपने भाइयों के घरों से	या अपनी माँओं के घरों से	या अपने बापों के घरों से				
أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ						
या अपनी फूफियों के घरों से	या अपने ताए चचाओं के घरों से	या अपनी बहनों के घरों से				
أَوْ بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَلَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتُمْ						
जिस (घर) की तुम्हारे कब्ज़े में हों	या	या अपनी खालाओं के घरों से	या अपने खालू, मामूओं के घरों से			
مَفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ						
कि	कोई गुनाह	तुम पर	नहीं	या अपने दोस्त (के घर से)	उस की कुन्जियां	
تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا						
तुम दाखिल हो घरों में	फिर जब	जुदा जुदा	या	साथ साथ	तुम खाओ	
فَسَلِّمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبْرَكَةً						
बाबरकत	अल्लाह के हां	से	दुआए खैर	अपने लोगों को	तो सलाम करो	
طَيِّبَةً كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾						
61	समझो	ताकि तुम	अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह वाज़ेह करता है	इसी तरह पाकीज़ा

और जब तुम में से बच्चे पहुँचें हदे शऊर को, पस चाहिए कि वह इजाज़त लें जैसे उन से पहले इजाज़त लेते थे, इसी तरह अल्लाह वाज़ेह करता है तुम्हारे लिए अपने अहकाम, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (59) और जो खाना नशीन बूढ़ी औरतें निकाह की आरजू नहीं रखती, तो उन पर कोई गुनाह नहीं कि वह अपने (ज़ाइद) कपड़े उतार रखें, ज़ीनत (सिंघार) ज़ाहिर न करते हुए, और अगर वह (उस से भी) बचें तो उन के लिए बेहतर है, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (60) कोई गुनाह नहीं नाबीना पर, और न लंगड़े पर कोई गुनाह है, और न बीमार पर कोई गुनाह है, न खुद तुम पर कि तुम खाओ अपने घरों से, या अपने बापों के घरों से, या अपनी माँओं के घरों से, या अपने भाइयों के घरों से, या अपनी बहनों के घरों से, या अपने ताए चचाओं के घरों से, या अपनी फुफियों के घरों से, या अपने खालू, मामूओं के घरों से, या अपनी खालाओं के घरों से, या जिस घर की कुन्जियां तुम्हारे कबज़े में हों, या अपने दोस्त के घर से, तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम इकट्ठे मिल कर खाओ, या जुदा जुदा, फिर जब तुम घरों में दाखिल हो तो अपने लोगों को सलाम करो, दुआए खैर अल्लाह के हां से, बाबरकत, पाकीज़ा, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम समझो। (61)

इस के सिवा नहीं कि मोमिन वह हैं जिन्होंने न अल्लाह और उस के रसूल (स) पर यकीन किया और जब वह किसी इज्तिमाई काम में उस (रसूल) के साथ होते हैं तो चले नहीं जाते जब तक वह उस से इजाज़त न ले लें, वेशक जो लोग आप (स) से इजाज़त मांगते हैं यही लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाए हैं, पस जब वह आप (स) से अपने किसी काम के लिए इजाज़त मांगें तो इजाज़त दे दें जिस को उन में से आप चाहें, और उन के लिए अल्लाह से बख्शिश मांगें, वेशक अल्लाह बख्शने वाला निहायत मेहरबान है। (62)

तुम न बना लो अपने दरमियान रसूल को बुलाना जैसे तुम एक दूसरे को बुलाते हो, तहकीक अल्लाह जानता है उन लोगों को जो तुम में से नज़र बचा कर चुपके से खिसक जाते हैं, पस चाहिए कि वह डरें जो उस के हुक्म के खिलाफ करते हैं कि उन पर कोई आफ़त पहुँचे या उन को दर्दनाक अज़ाब पहुँचे। (63)

याद रखो! वेशक अल्लाह के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तहकीक वह जानता है जिस (हाल) पर तुम हो, और उस दिन को जब उस की तरफ़ वह लौटाए जाएंगे, फिर वह उन्हें बताएगा जो कुछ उन्होंने ने किया, और अल्लाह हर शै को जानने वाला है। (64)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है बड़ी बरकत वाला है वह जिस ने अपने बन्दे पर “फुरक़ान” (अच्छे बुरे में फ़र्क और फ़ैसला करने वाली किताब) को नाज़िल किया ताकि वह सारे ज़हानों के लिए डराने वाला हो। (1)

वह जिस के लिए बादशाहत है आस्मानों और ज़मीन की, और उस ने कोई बेटा नहीं बनाया और उस का कोई शरीक नहीं सलतनत में, और उस ने हर शै को पैदा किया, फिर उस का एक (मुनासिब) अन्दाज़ा किया। (2)

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا							
वह होते हैं	और जब	और उस के रसूल पर	अल्लाह पर	जो ईमान लाए (यकीन किया)	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं	
مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ							
वेशक	वह उस से इजाज़त लें	जब तक	वह नहीं जाते	सब मिल कर करने का काम	पर-में	उस के साथ	
الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ							
और उस के रसूल पर	अल्लाह पर	ईमान लाते हैं	वह जो	यही लोग	इजाज़त मांगते हैं आप (स) से	जो लोग	
فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ							
उन में से	आप चाहें	जिस को	तो इजाज़त दे दें	अपने काम	किसी के लिए	वह तुम से इजाज़त मांगें	पस जब
وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾ لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ							
बुलाना	तुम न बना लो	62	निहायत मेहरबान	बख्शने वाला	वेशक अल्लाह	उन के लिए अल्लाह (से)	और बख्शिश मांगें
الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ							
जो लोग	अल्लाह	तहकीक जानता है	बाज़ (दूसरे) को	अपने बाज़ (एक)	जैसे बुलाना	अपने दरमियान	रसूल को
يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرٍ							
उस के हुक्म से	खिलाफ करते हैं	जो लोग	पस चाहिए कि वह डरें	नज़र बचा कर	तुम में से	चुपके से खिसक जाते हैं	
أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا							
जो	याद रखो! वेशक अल्लाह के लिए	63	दर्दनाक	अज़ाब	या पहुँचे उन को	कोई आफ़त	पहुँचे उन पर कि
فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ							
और जिस दिन	उस पर	तुम	जो-जिस	तहकीक वह जानता है	और ज़मीन	आस्मानों में	
يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيَنْبِئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾							
64	जानने वाला	हर शै को	और अल्लाह	उन्होंने ने किया	जो-जिस	फिर वह उन्हें बताएगा	उस की तरफ़
آيَاتُهَا ۗ ۚ ﴿٢٥﴾ سُورَةُ الْفُرْقَانِ ﴿٦٤﴾ زُكُوعَاتُهَا ٦							
रुक़आत 6 (25) सूरतुल फुरक़ान कसौटी आयात 77							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
تَبَرَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ﴿١﴾							
1	डराने वाला	सारे ज़हानों के लिए	ताकि वह हो	अपने बन्दे पर	नाज़िल किया फ़र्क करने वाली किताब (कुरआन)	वह जो-जिस	बड़ी बरकत वाला
إِلَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ							
और नहीं है	कोई बेटा	और उस ने नहीं बनाया	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	वह जिस के लिए	
لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَرَهُ تَقْدِيرًا ﴿٢﴾							
2	एक अन्दाज़ा	फिर उस का अन्दाज़ा ठहराया	हर शै	और उस ने पैदा किया	सलतनत में	कोई शरीक	उस का

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ						
और उन्होंने ने बना लिए	उस के अलावा	माबूद	वह नहीं पैदा करते	कुछ	बल्कि वह	पैदा किए गए हैं
وَلَا يَمْلِكُونَ لِنَفْسِهِمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا						
और वह इख्तियार नहीं रखते	अपने लिए	किसी नुक्सान का	और न किसी नफा का	और न वह इख्तियार रखते हैं	किसी मौत का	
وَلَا حَيَوَّةَ وَلَا نُشُورًا ۝ (3) وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا						
और न किसी ज़िन्दगी का	और न फिर उठने का	3	और कहा	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	नहीं यह	मगर - सिर्फ
إِفْكُ افْتَرَاهُ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ فَقَدْ جَاءُوا						
बहुतान - मन घड़त	उस ने उसे घड़ लिया है	उस की मदद की	उस पर	दूसरे लोग (जमा)	तहकीक़ वह आगए	
ظُلْمًا وَزُورًا ۝ (4) وَقَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَى						
जुल्म	और झूट	4	और उन्होंने ने कहा	कहानियाँ	पहले लोग	उस ने उन्हें लिख लिया है
عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝ (5) قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ						
उस पर	सुबह	और शाम	5	फ़रमा दें	उस को नाज़िल किया है	वह जो जानता है
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ (6) وَقَالُوا						
आस्मानों में	और ज़मीन	वेशक वह है	बढ़शने वाला	निहायत मेहरबान	6	और उन्होंने ने कहा
مَالِ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ						
कैसा है	यह रसूल	वह खाता है	खाना	चलता (फिरता) है	में	बाज़ार (जमा)
لَوْلَا أَنْزَلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونُ مَعَهُ نَذِيرًا ۝ (7) أَوْ يُلْقَى						
क्यों न	उतारा गया	उस के साथ	कोई फ़रिश्ता	कि होता वह	उस के साथ	डराने वाला
إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا وَقَالَ الظَّالِمُونَ						
उस की तरफ़	कोई खज़ाना	या होता	उस के लिए कोई बाग़	वह खाता	उस से	और कहा
إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ۝ (8) أَنْظِرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ						
नहीं तुम पैरवी करते	मगर - सिर्फ	एक आदमी	जादू का मारा हुआ	8	देखो	कैसी
الْأَمْثَالِ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝ (9) تَبَرَكَ الَّذِي						
मिसालें (बातें)	सो वह बहक गए	लिहाज़ा न पा सकते हैं	रास्ता (सीधा)	9	बड़ी बरकत वाला	वह जो
إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِمَّنْ ذَلِكْ جَنَّتِ تَجْرِي						
अगर चाहे	वह बना दे	तुम्हारे लिए	बेहतर	उस से	बागात	बहती है
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَلُ لَكَ فُضُورًا ۝ (10) بَلْ كَذَّبُوا						
जिन के नीचे	नहरें	और बना दे	तुम्हारे लिए	महल (जमा)	10	बल्कि
بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝ (11)						
क़ियामत को	और हम ने तैयार किया	उस के लिए जिस ने झुटलाया	क़ियामत को	दोज़ख़	11	

और उन्होंने ने उस के अलावा अपना लिए हैं और माबूद, वह कुछ नहीं पैदा करते बल्कि वह (खुद) पैदा किए गए हैं, और वह अपने लिए इख्तियार नहीं रखते किसी नुक्सान का, और न किसी नफा का, और न वह इख्तियार रखते हैं किसी मौत का और न किसी ज़िन्दगी का, और न फिर (जी) उठने का। (3) और काफ़िरों ने कहा यह (कुछ भी) नहीं, सिर्फ़ बहुतान है, उस (नबी स) ने इसे घड़ लिया है और इस पर दूसरे लोगों ने उस की मदद की है, तहकीक़ वह आगए (उतर आए) हैं जुल्म और झूट पर। (4) और उन्होंने ने कहा कि यह पहले लोगों की कहानियाँ हैं, उस ने उन्हें लिख लिया है, पस वह उस पर पढ़ी जाती है (सुनाई जाती है) सुबह और शाम। (5) आप (स) फ़रमा दें इस को नाज़िल किया है उस ने जो आस्मानों और ज़मीन के राज़ जानता है, वेशक वह बढ़शने वाला निहायत मेहरबान है। (6) और उन्होंने ने कहा कैसा है यह रसूल! (जो) खाना खाता है, और चलता फिरता है बाज़ारों में, उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया कि वह उस के साथ डराने वाला होता। (7) या उस की तरफ़ उतारा जाता कोई खज़ाना, या उस के लिए कोई बाग़ होता कि वह उस से खाता, और ज़ालिमों ने कहा तुम पैरवी करते हो सिर्फ़ जादू के मारे हुए आदमी की। (8) ऐ नबी (स)! देखो तो उन्होंने ने तुम्हारे लिए कैसी बातें बयान की हैं, सो वह बहक गए हैं, लिहाज़ा वह कोई रास्ता नहीं पा सकते। (9) बड़ी बरकत वाला है वह, अगर वह (अल्लाह) चाहे तो तुम्हारे लिए उस से बेहतर बना दे, (ऐसे) बागात जिन के नीचे नहरें बहती हों, और तुम्हारे लिए महल बना दे। (10) बल्कि उन्होंने ने झुटलाया क़ियामत को, और जिस ने क़ियामत को झुटलाया हम ने उस के लिए दोज़ख़ तैयार किया है। (11)

जब वह (दोज़ख़) उन्हें देखेगी दूर जगह से, वह उसे जोश मारता, चिंघाड़ता सुनेंगे। (12)

और जब वह उस (दोज़ख़) की किसी तंग जगह में डाले जाएंगे (बाहम ज़नज़ीरों से) जकड़े हुए, तो वह वहां मौत को पुकारेंगे। (13)

(कहा जाएगा) आज एक मौत को न पुकारो, बल्कि तुम पुकारो बहुत सी मौतों को। (14)

आप (स) फ़रमा दें क्या यह बेहतर है या हमेशगी के बाग़, जिन का वादा परहेज़गारों से किया गया है, वह उन के लिए जज़ा और लौट कर जाने की जगह है। (15)

उस में उन के लिए जो वह चाहेंगे (मौजूद होगा), हमेशा रहेंगे, यह एक वादा है तेरे रब के ज़िम्मे वाजिबुल अदा। (16)

और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा और जिन की वह परस्तिश करते हैं अल्लाह के सिवा, तो वह कहेगा क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया? या वह खुद रास्ते से भटक गए? (17)

वह कहेंगे तू पाक है, हमारे लिए सज़ावार न था कि हम बनाते तेरे सिवा औरों को मददगार, लेकिन तू ने इन्हें और इन के बाप दादा को आसूदगी दी यहां तक कि वह तेरी याद भूल गए, और वह थे हलाक होने वाले लोग। (18)

पस उन्होंने (तुम्हारे बाबूद) ने तुम्हारी बात झुटला दी, पस अब न तुम (अज़ाब) फेर सकते हो और न अपनी मदद कर सकते हो, और जो तुम में से जुल्म करेगा, हम उसे बड़ा अज़ाब चखाएंगे। (19)

और हम ने तुम से पहले रसूल नहीं भेजे मगर यकीनन वह खाते थे खाना, और बाज़ारों में चलते फिरते थे, और हम ने तुम में से बाज़ को बनाया दूसरों के लिए आजमाइश, क्या तुम सब्द करोगे? और तुम्हारा रब देखने वाला है। (20)

إِذَا رَأَوْهُمْ مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغِيْطًا وَزَفِيْرًا ۝۱۲									
जब	वह देखेगी उन्हें	से	जगह	दूर	वह सुनेंगे	उसे	जोश मारती	और चिंघाड़ती	12
وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنَيْنِ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ۝۱۳									
और जब	वह डाले जाएंगे	उस से - की	किसी जगह	तंग	जकड़े हुए	वह पुकारेंगे	वहां		
ثُبُورًا ۝۱۳ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا									
मौत	13	तुम न पुकारो	आज	मौत को	एक	बल्कि पुकारो	मौतें		
كَثِيْرًا ۝۱۴ قُلْ أَذِلَّكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ									
बहुत सी	14	फ़रमा दें	क्या यह	बेहतर	या	हमेशगी के बाग़	जो - जिस	वादा किया गया	
الْمُتَّقُونَ ۖ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءٌ وَاصِرًا ۝۱۵ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَاءُونَ									
परहेज़गार (जमा)	वह है	उन के लिए	जज़ा (बदला)	लौट कर जाने की जगह	15	उन के लिए	उस में	जो वह चाहेंगे	
خَالِدِينَ ۖ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ۝۱۶ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ									
हमेशा रहेंगे	है	तुम्हारे रब के ज़िम्मे	एक वादा	ज़िम्मेदाराना	16	और जिस दिन	वह उन्हें जमा करेगा		
وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ ءَأَنُتُمْ أَضَلَلْتُمْ									
और जिन्हें	वह परस्तिश करते हैं	से	अल्लाह के सिवा	तो वह कहेगा	क्या तुम	तुम ने गुमराह किया			
عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ۝۱۷ قَالُوا سُبْحَنَكَ									
मेरे बन्दे	यह हैं - उन	या वह	भटक गए	रास्ता	17	वह कहेंगे	तू पाक है		
مَا كَانَ يَنْبَغِي لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ									
न था	सज़ावार - लाइक	हमारे लिए	कि	हम बनाएं	तेरे सिवा	कोई	मददगार		
وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَأَبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا									
और लेकिन	तू ने आसूदगी दी उन्हें	और उन के बाप दादा	यहां तक कि	वह भूल गए	याद	और वह थे			
قَوْمًا بُورًا ۝۱۸ فَقَدْ كَذَّبُوكُمْ بِمَا تَقُولُونَ ۖ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا									
हलाक होने वाले लोग	18	पस उन्होंने ने तुम्हें झुटला दिया	पस जो तुम कहते थे (तुम्हारी बात)	वह जो तुम नहीं कर सकते हो	पस अब तुम फेरना				
وَلَا نَصْرًا ۖ وَمَنْ يَّظْلِمِ مِنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ۝۱۹									
और न मदद करना	और जो	वह जुल्म करेगा	तुम में से	हम चखाएंगे उसे	अज़ाब	बड़ा	19		
وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ									
और नहीं	भेजे हम ने	तुम से पहले	से	रसूल (जमा)	मगर	वह यकीनन	अलबत्ता खाते थे		
الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۖ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ									
खाना	और चलते फिरते थे	बाज़ारों में	और हम ने किया (बनाया)	तुम में से बाज़ को (किसी को)					
لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۖ أَتَصْبِرُونَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ۝۲۰									
बाज़ (दूसरों के लिए)	आज़माइश	क्या तुम सब्द करोगे	और है	तुम्हारा रब	देखने वाला	20			

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا						
और कहा	वह लोग जो	वह उम्मीद नहीं रखते	हम से मिलना	क्यों न	उतारे गए	हम पर
الْمَلَكَةِ أَوْ نَرَى رَبَّنَا لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْا						
फ़रिश्ते	या हम देख लेते	अपना रब	तहकीक उन्होंने ने तकबुर किया	अपने दिलों में	और उन्होंने ने सरकशी की	
عَتَوْا كَبِيرًا (२१) يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَكَةَ لَا بُشْرَى يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ						
बड़ी सरकशी	21	जिस दिन	वह देखेंगे	फ़रिश्ते	नहीं खुशखबरी	उस दिन
وَيَقُولُونَ حَجْرًا مَّحْجُورًا (२२) وَقَدِمْنَا إِلَى مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ						
और वह कहेंगे	कोई आड़ हो	रोकी हुई	22	और हम आए (मुतवज्जुह होंगे)	तरफ़	जो उन्होंने ने किए
فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنْثُورًا (२३) أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا						
तो हम करदेंगे उन्हें	गुबार	बिखरा हुआ (परागन्दा)	23	जन्नत वाले	उस दिन	बहुत अच्छा
وَأَحْسَنُ مَقِيلًا (२४) وَيَوْمَ تَشْقُقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلَكَةُ						
और बेहतरीन	आराम गाह	24	और जिस दिन	फट जाएगा	आस्मान	बादल से
تَنْزِيلًا (२५) أَلَمْ لَكَ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَنِ وَكَانَ يَوْمًا						
वकसूरत उतरना	25	वादशाहत	उस दिन	सच्ची	रहमान के लिए	और है - होगा
عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا (२६) وَيَوْمَ يَعِضُّ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ						
काफ़िरों पर	सख्त	26	और जिस दिन	काट खाएगा	ज़ालिम	अपने हाथों को
يَلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا (२७) يُولَيْتَنِي لَيْتَنِي						
ऐ काश! मैं	पकड़ लेता	रसूल के साथ	रास्ता	27	हाए मेरी शामत	काश मैं
لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا (२८) لَقَدْ أَصْلَنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي						
न बनाता	फ़लां को	दोस्त	28	अलबत्ता उस ने मुझे बहकाया	नसीहत से	उस के बाद जब
وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا (२९) وَقَالَ الرَّسُولُ يَرَبِّ إِنَّ						
और है	शैतान	इन्सान को	खुला छोड़ जाने वाला	29	और कहेगा	रसूल (स)
قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا (३०) وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ						
मेरी कौम	ठहरा लिया	इस कुरआन को	मतरूक (छोड़ने के काबिल)	30	और इसी तरह	हम ने बनाए
عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِينَ وَكَفَى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا (३१)						
दुश्मन	से	गुनाहगारों (मुज्रिमीन)	और काफी है	तुम्हारा रब	हिदायत करने वाला	और मददगार
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً						
और कहा	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	क्यों न	नाज़िल किया गया	उस पर	कुरआन	एक ही बार
كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا (३२)						
इसी तरह	ताकि हम क़व्वी करें	उस से	तुम्हारा दिल	और हम ने उस को पढ़ा	ठहर ठहर कर	32

और जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, उन्होंने ने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे गए? या हम अपने रब को देख लेते, तहकीक उन्होंने ने अपने दिलों में (अपने आप को) बड़ा समझा, और बड़ी सरकशी की। (21)

जिस दिन वह देखेंगे फ़रिश्तों को उस दिन मुज्रिमों के लिए कोई खुशखबरी नहीं होगी और वह कहेंगे कोई आड़ (पनाह) हो, रोकी हुई। (22)

और हम मुतवज्जुह होंगे उन के किए हुए कामों की तरफ़ तो हम उन्हें परागन्दा गुबार की तरह करदेंगे। (23)

उस दिन जन्नत वाले बहुत अच्छे ठिकाने में और बेहतरीन आराम गाह में होंगे। (24)

और जिस दिन बादल से आस्मान फट जाएगा और फ़रिश्ते उतारे जाएंगे वकसूरत। (25)

उस दिन सच्ची बादशाही रहमान (अल्लाह) के लिए है, और वह दिन काफ़िरों पर सख्त होगा। (26)

और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथों को काट खाएगा और कहेगा ऐ काश! मैं ने रसूल के साथ रास्ता पकड़ लिया होता। (27)

हाए मेरी शामत! काश मैं फ़लां को दोस्त न बनाता। (28)

अलबत्ता उस ने मुझे ज़िक्र के मामले में बहकाया, उस के बाद जब कि वह मेरे पास पहुँच गई, और शैतान इन्सान को (ऐन वक़्त पर) तन्हा छोड़ जाने वाला है। (29)

और रसूल (स) फ़रमाएगा ऐ मेरे रब! वेशक मेरी कौम ने इस कुरआन को छोड़ने के काबिल ठहरा लिया (मतरूक कर रखा)। (30)

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए दुश्मन बनाए गुनाहगारों में से। और तुम्हारा रब काफी है हिदायत करने वाला और मददगार। (31)

और काफ़िरों ने कहा क्यों न उस पर कुरआन एक ही बार नाज़िल किया गया? इसी तरह (हम ने बतदरीज नाज़िल किया) ताकि उस से तुम्हारा दिल मज़बूत करें और हम ने उस को पढ़ कर (सुनाया) ठहर ठहर कर। (32)

और वह तुम्हारे पास कोई बात नहीं लाते, मगर हम तुम्हें ठीक जवाब और बहतरीन वज़ाहत पहुँचा देते हैं। (33)

जो लोग अपने चेहरों के बल जहनन्म की तरफ़ जमा किए जाएंगे, वही लोग हैं बदतरीन मुक़ाम में और बहुत बहके हुए रास्ते से। (34)

और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी और उस के साथ उस के भाई हारून (अ) को मुआविन बनाया। (35)

पस हम ने कहा तुम दोनों उस कौम की तरफ़ जाओ जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुटलाया तो हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर के तबाह कर दिया। (36)

और कौमे नूह (अ) ने जब रसूलों को झुटलाया तो हम ने उन्हें गर्क कर दिया, और हम ने उन्हें लोगों के लिए एक निशानी (इब्रत) बनाया, और हम ने ज़ालिमों के लिए तैयार किया है एक दर्दनाक अज़ाब। (37)

और अ़ाद और समूद और कुएं वाले और उन के दरमियान बहुत सी नसलें। (38)

और हम ने हर एक के लिए मिसालें वयान की (मगर उन्होंने ने नसीहत न पकड़ी) और हर एक को तबाह कर के मिटा दिया। (39)

तहकीक़ वह आए उस (कौमे लूत अ की) बस्ती पर जिन पर (पत्थरों की) बुरी बारिश बरसाई गई, तो क्या वह उसे देखते नहीं रहते? बल्कि वह (दोबारा) जी उठने की उम्मीद नहीं रखते। (40)

और जब वह तुम्हें देखते हैं तो वह तुम्हारा सिर्फ़ ठट्ठा उड़ाते हैं (कहते हैं) क्या यह है वह जिसे अल्लाह ने रसूल (बना कर) भेजा? (41)

करीब था कि वह हमें हमारे माबूदों से बहका देता, अगर हम उस पर जमे न रहते, और वह जल्द जान लेंगे, जब वह अज़ाब देखेंगे, कौन है राहे (रास्त) से बदतरीन गुमराह! (42)

क्या तुम ने उसे देखा? जिस ने अपनी खाहिश को अपना माबूद बना लिया है, तो क्या तुम उस पर निगहवान हो जाओगे? (43)

क्या तुम समझते हो कि उन में से अक्सर सुनते या अक़ल से काम लेते हैं? वह नहीं हैं मगर चौपायों जैसे, बल्कि राहे (रास्त) से बदतरीन गुमराह हैं। (44)

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ﴿٣٣﴾ الَّذِينَ								
जो लोग	33	वज़ाहत	और बहतरीन	ठीक (जवाब)	हम पहुँचा देते हैं तुम्हें	मगर	कोई बात	और वह नहीं लाते तुम्हारे पास
يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ								
और बहुत बहके हुए	मुक़ाम	बदतरीन	वही लोग	जहनन्म की तरफ़	अपने सुँह	पर- बल	जमा किए जाएंगे	
سَبِيلًا ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَ أَخَاهُ هَارُونَ								
हारून (अ)	उस का भाई	उस के साथ	और हम ने बनाया	किताब	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दी	34	रास्ते से
وَزَيْرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا فَدَمْزِلْهُمَا								
तो हम ने तबाह कर दिया उन्हें	हमारी आयतें	जिन्होंने ने झुटलाया	कौम की तरफ़	तुम दोनों जाओ	पस हम ने कहा	35	वज़ीर (मुआविन)	
تَذْمِيرًا ﴿٣٦﴾ وَقَوْمِ نُوحٍ لَّمَّا كَذَبُوا الرُّسُلَ أَغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ								
लोगों के लिए	और हम ने बनाया उन्हें	हम ने गर्क कर दिया उन्हें	रसूल (जमा)	जब उन्होंने ने झुटलाया	और कौमे नूह (अ)	36	बुरी तरह हलाक	
آيَةٍ ۖ وَاعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣٧﴾ وَعَادًا وَثَمُودًا								
और समूद	और अ़ाद	37	दर्दनाक	एक अज़ाब	ज़ालिमों के लिए	और तैयार किया हम ने	एक निशानी	
وَأَصْحَابِ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَلِكَ كَثِيرًا ﴿٣٨﴾ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ								
उस को	हम ने वयान की	और हर एक को	38	बहुत सी	उन के दरमियान	और नसलें	और कुएं वाले	
الْأَمْثَالِ ۖ وَكُلًّا تَبَرْنَا تَبِيرًا ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أُمِطِرَتْ								
बरसाई गई	वह जिस पर	बस्ती	पर	और तहकीक़ वह आए	39	तबाह कर के	हम ने मिटा दिया	और हर एक को मिसालें
مَطَرِ السَّوْءِ ۚ فَلَمْ يَكُونُوا يَرُونَهَا ۖ بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ								
वह उम्मीद नहीं रखते		बल्कि	उस को देखते	तो क्या वह न थे		बुरी बारिश		
نُشُورًا ﴿٤٠﴾ وَإِذَا رَأَوْكَ إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ۚ أَهَذَا								
क्या यह	तमसख़र (ठट्ठा)	मगर (सिर्फ़)	वह बनाते तुम्हें	नहीं	देखते हैं तुम्हें वह	और जब	40	जी उठना
الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ﴿٤١﴾ إِن كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنْ الْهَيْتَا لَوْلَا								
अगर न	हमारे माबूदों से	कि वह हमें बहका देता	करीब था	41	रसूल	भेजा अल्लाह ने	वह जिसे	
أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرُونَ الْعَذَابَ								
अज़ाब	वह देखेंगे	जिस वक़्त	वह जान लेंगे	और जल्द	उस पर	हम जमे रहते		
مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾ أَرَأَيْتَ مَنْ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ ۚ أَفَأَنْتَ								
तो क्या तु	अपनी खाहिश	अपना माबूद	जिस ने बनाया	क्या तुम ने देखा?	42	रास्ते से	कौन बदतरीन गुमराह	
تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿٤٣﴾ أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ								
सुनते हैं	उन के अक्सर	कि	क्या तुम समझते हो?	43	निगहवान	उस पर	हो जाएगा	
أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِن هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ ۚ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٤﴾								
44	राह से	बदतरीन गुमराह	बल्कि वह	चौपायों जैसे	मगर	नहीं वह	या अक़ल से काम लेते हैं	

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ								
फिर	साकिन	तो उसे बनादेता	और अगर वह चाहता	दराज़ किया साया	कैसे	अपना रब	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा
جَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ دَلِيلًا ٤٥ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ٤٦								
हम ने बनाया	सूरज	उस पर	एक दलील	45	फिर	हम ने समेटा उस को	अपनी तरफ़	खींचना
46	आहिस्ता आहिस्ता							
وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ								
और वह	जिस ने बनाया	तुम्हारे लिए	रात	पर्दा	और नीन्द	राहत	और बनाया	
النَّهَارَ نُشُورًا ٤٧ وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ								
दिन	उठने का वक़्त	47	और वही	जिस ने	भेजी हवाएं	खुशख़बरी	आगे	
يَدَي رَحْمَتِهِ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ٤٨ لِنُحْيِيَ بِهِ								
अपनी रहमत	और हम ने उतारा	आस्मान से	पानी पाक	48	ताकि हम ज़िन्दा कर दें उस से			
بَلَدَةً مَّيْتًا وَنُسْقِيهِ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنْهَاسٍ كَثِيرًا ٤٩								
शहर मुर्दा	और हम पिलाएं उसे	उस से जो	हम ने पैदा किया	चौपाए	और आदमी	बहुत से	49	
وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا ٥٠ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا								
और तहकीक़ हम ने उसे तक्सीम किया	उन के दरमियान	ताकि वह नसीहत पकड़ें	पस कुबूल न किया	अक्सर लोग	मगर	नाशुक्री	50	
وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ نَذِيرًا ٥١ فَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ								
और अगर	हम चाहते	तो हम भेज देते	में	हर बस्ती	एक डराने वाला	51	पस न कहा मानें आप (स)	काफ़िरों
وَجَاهِدْهُمْ بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا ٥٢ وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا								
और ज़िहाद करें उन से	इस के साथ	बड़ा ज़िहाद	52	और वही	जिस ने	मिलाया	दो दर्या	यह
عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا								
शीरी	खुशगवार	और यह	तलख़ वदमज़ा	और उस ने बनाया	उन दोनों के दरमियान	एक पर्दा	और आड़	
مَحْجُورًا ٥٣ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا								
मज़बूत आड़	53	और वही	जिस ने	पैदा किया	पानी से	बशर	फिर बनाए उस के	नसब
وَصِهْرًا ٥٤ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ٥٤ وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ								
और सुस्लाल	और है	तेरा रब	कुदरत वाला	54	और वह बन्दगी करते हैं	अल्लाह के सिवा		
مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ٥٥ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ								
जो	न नफ़ा पहुँचाए	और न उन का नुक़सान कर सके	और है	काफ़िर	पर-खिलाफ़	अपना रब		
ظَهِيرًا ٥٥ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ٥٦ قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ								
पुश्त पनाही करने वाला	55	और नहीं	भेजा हम ने आप को	मगर खुशख़बरी देने वाला	और डराने वाला	56	फ़रमा दें	नहीं मांगता तुम से
عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ٥٧								
इस पर	कोई	अजर	मगर	जो चाहे	कि इख़्तियार करले	अपने रब तक	रास्ता	57

क्या तुम ने अपने रब की (कुदरत) की तरफ़ नहीं देखा, उस ने कैसे साए को दराज़ किया? और अगर वह चाहता तो उसे साकिन बना देता, फिर हम ने सूरज को उस पर एक दलील (रहनुमा) बनाया। (45) फिर हम ने उस (साए) को समेटा अपनी तरफ़ आहिस्ता आहिस्ता खींच कर। (46) और वही है जिस ने तुम्हारे लिए रात को पर्दा, और नीन्द को राहत बनाया, और दिन को उठ (खड़े होने) का वक़्त बनाया। (47) और वही है जिस ने अपनी रहमत के आगे हवाएं खुशख़बरी (सुनाती हुई) भेजी, और हम ने आस्मान से पानी उतारा। (48) ताकि उस में से मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दें। और हम उस से पिलाएं (उन्हें) जो हम ने पैदा किए हैं, बहुत से चौपाए और आदमी। (49) और तहकीक़ हम ने उसे उन के दरमियान तक्सीम किया ताकि वह नसीहत पकड़ें, पस अक्सर लोगों ने कुबूल न किया मगर नाशुक्री को। (50) और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। (51) पस आप (स) काफ़िरों का कहा न मानें और इस (हुक्मे इलाही) के साथ उन से बड़ा ज़िहाद करें। (52) और वही है जिस ने दो दर्याओं को मिलाया (मिला कर चलाया) यह (इस तरफ़ का पानी) खुशगवार शीरी है और यह (दूसरा) तलख़ वदमज़ा है, और उस ने उन दोनों के दरमियान (एक ग़ैर महसूस) पर्दा और मज़बूत आड़ बनाई। (53) और वही है जिस ने पैदा किया पानी से बशर, फिर बनाए उस के नसब (नसबी रिश्ते) और सुस्लाल, और तेरा रब कुदरत वाला है। (54) और वह बन्दगी करते हैं अल्लाह के सिवा उस की जो उन्हें नफ़ा न पहुँचाए, और न उन का नुक़सान कर सके, और काफ़िर अपने रब के खिलाफ़ पुश्त पनाही करने वाला है। (55) और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर (सिर्फ़) खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला। (56) आप (स) फ़रमा दें: मैं इस पर तुम से नहीं मांगता कोई अजर, मगर जो शख्स चाहे अपने रब तक रास्ता इख़्तियार कर ले। (57)

और उस हमेशा रहने वाले पर भरोसा करो जिसे मौत नहीं, और उस की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान कर, और काफी है वह अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने वाला। (58)

वह जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को, और जो उन के दरमियान है, छः दिन में, फिर अर्श पर काइम हुआ, रहम करने वाला, उस के मुतअज़ज़िक किसी बाख़बर से पूछो। (59)

और जब उन से कहा जाए कि तुम रहमान को सिज्दा करो तो वह कहते हैं क्या है रहमान? क्या तू जिसे सिज्दा करने को कहे हम उसे सिज्दा करें? उस (बात) ने उन का विदकना और बढ़ा दिया। (60)

बड़ी बरकत वाला है वह जिस ने बुर्ज बनाए और उस में बनाया सूरज और रोशन चाँद। (61)

और वही है जिस ने रात दिन को एक दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, यह उस के (समझने) के लिए है जो चाहे कि नसीहत पकड़े या शुक्र गुज़ार बनना चाहे। (62)

और रहमान के बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर नरम चाल चलते हैं, और जब जाहिल उन से बात करते हैं तो वह बस (सलाम) कहते हैं। (63)

और वह अपने रब के लिए रात काटते हैं (रात भर लगे रहते हैं) सिज्दा करते और क़ियाम करते। (64)

और वह कहते हैं ऐ हमारे रब! हम से जहनन्म का अज़ाब फेर दे, वेशक उस का अज़ाब लाज़िम हो जाने वाला है (जुदा न होने वाला है)। (65)

वेशक वह बुरी है ठहरने की जगह और बुरा मुक़ाम है। (66)

और वह लोग कि जब वह खर्च करते हैं तो न फुज़ूल खर्ची करते हैं, और न तंगी करते हैं (उन की रविश) उस के दरमियान एतिदाल की है। (67)

और वह जो अल्लाह के साथ नहीं पुकारते दूसरा (कोई और) माबूद, और उस जान को क़तल नहीं करते जिसे (क़तल करना) अल्लाह ने हaram किया है, मगर जहां हक़ हो, और वह ज़िना नहीं करते, और जो यह करेगा वह बड़ी सज़ा से दोचार होगा। (68)

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ وَكَفَى بِهِ					
और काफी है वह	उस की तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान कर	जिसे मौत नहीं	हमेशा ज़िन्दा रहने वाले पर	और भरोसा कर
بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ٥٨) الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ					
और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	वह जिस ने	58	ख़बर रखने वाला
وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ ۗ الرَّحْمَنُ فَسَلِّ					
तो पूछो	जो रहम करने वाला	अर्श पर	फिर काइम हुआ	छः (6) दिन	में और जो उन दोनों के दरमियान
بِهِ خَبِيرًا ٥٩) وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَنُ ۚ					
और क्या है रहमान	वह कहते हैं	रहमान को	तुम सिज्दा करो	उन से	कहा और जब 59
أَنسُجِدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ٦٠) تَبَرَكَ الَّذِي جَعَلَ					
बनाए	वह जिस ने	बड़ी बरकत वाला है	60	विदकना	उस ने बढ़ा दिया उन का
فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرْجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ٦١)					
61	रोशन	और चाँद	चिराग (सूरज)	उस में	और बनाया बुर्ज (जमा)
وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَن أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ					
कि वह नसीहत पकड़े	उस के लिए जो चाहे	एक दूसरे के पीछे आने वाला	और दिन	रात	जिस ने बनाया और वही
أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ٦٢) وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ					
ज़मीन पर	चलते हैं	वह कि	और रहमान के बन्दे	62	शुक्र गुज़ार बनना या चाहे
هَوْنًا ۚ وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ٦٣) وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ					
रात काटते हैं	और वह जो	63	सलाम	कहते हैं वह	जाहिल (जमा) उन से बात करते हैं और नरम चाल
لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ٦٤) وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا					
हम से	फेर दे	ऐ हमारे रब	कहते हैं	और वह जो 64	और क़ियाम करते सिज्दा करते अपने रब के लिए
عَذَابِ جَهَنَّمَ ۚ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ٦٥) إِنَّهَا سَاءَتْ					
बुरी	वेशक वह	65	लाज़िम हो जाने वाला है	उस का अज़ाब	वेशक जहनन्म का अज़ाब
مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ٦٦) وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ					
और न	न फुज़ूल खर्ची करते हैं	जब वह खर्च करते हैं	और वह लोग जो 66	और (बुरा) मुक़ाम	ठहरने की जगह
يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ٦٧) وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ					
नहीं पुकारते	और वह जो	67	एतिदाल	उस के दरमियान	और है तंगी करते हैं
مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ					
हराम किया अल्लाह ने	जिसे	जान	और वह क़तल नहीं करते	दूसरा	कोई माबूद अल्लाह के साथ
إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ٦٨)					
68	वह दो चार होगा बड़ी सज़ा	यह	करेगा	और जो	और वह ज़िना नहीं करते मगर जहां हक़ हो

عند المتقين ١٢

السّجدة: ٧

يُضَعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَيَحْلُدُ فِيهِ مُهَانًا ۖ إِلَّا							
सिवाए	69	खार हो कर	उस में	और वह हमेशा रहेगा	रोज़े कियामत	अज़ाब	उस के लिए
مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ							
उन की बुराइयां		अल्लाह बदल देगा	पस यह लोग	नेक अमल	और अमल किए उस ने	और वह ईमान लाया	जिस ने तौबा की
حَسَنَاتٍ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۖ (70) وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا							
नेक		और अमल किए	और जिस ने तौबा की	70	निहायत मेहरबान	बख़शने वाला	और है अल्लाह
فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ۖ (71) وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ							
झूट		गवाही नहीं देते	और वह लोग जो	71	रुजूअ करने का मुक़ाम	अल्लाह की तरफ़	रुजूअ करता है
وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ۖ (72) وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ							
उन के रब के अहकाम से		जब उन्हें नसीहत की जाती है	और वह लोग जो	72	बुजुरगाना	गुज़रते हैं	वह गुज़रें
لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ۖ (73) وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا							
ऐ हमारे रब अता फ़रमा हमें		कहते हैं वह	और वह लोग जो	73	और अँधों की तरह	बहरों की तरह	उन पर नहीं गिर पड़ते
مِنْ أَرْوَاحِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ ۖ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۖ (74)							
74	इमाम (पेश्वा)	परहेज़गारों का	और बना दे हमें	ठंडक आँखों की	और हमारी औलाद	हमारी बीवियां	से
أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ۖ (75)							
75	और सलाम	दुआए ख़ैर	और पेशवाई किए जाएंगे उस में	उन के सब्र की बदौलत	वाला खाने	इनआम दिए जाएंगे	यह लोग
خَالِدِينَ فِيهَا ۚ حَسَنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۖ (76) قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ							
तुम्हारी	परवाह नहीं रखता	फ़रमा दें	76	और मस्कन	आरामगाह	अच्छी है	उस में वह हमेशा रहेंगे
رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ۖ (77)							
77	लाज़मी	होगी	पस अनकरीब	झुटलाया तुम ने	अगर न पुकारो तुम	मेरा रब	
آيَاتُهَا ۚ (76) سُوْرَةُ الشُّعَرَاءِ ۝ رُكُوْعَاتُهَا ۱۱							
(26) سُوْرَةُ الشُّعَرَاءِ ۝ 227 آيَاتُهَا ۝ 11 رُكُوْعَاتُهَا ۝							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
طَسَمَ ۝ (1) تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ (2) لَعَلَّكَ بَاخِعٌ							
हलाक कर लोगे	शायद तुम	2	रोशन किताब	आयतें	यह	1	ता सीन मीम
نَفْسِكَ ۖ إِلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۖ (3) إِنْ نَشَأْ نُنزِّلْ عَلَيْهِمْ							
उन पर	हम उतार दें	अगर हम चाहें	3	ईमान लाते	कि वह नहीं	अपने तई	
مِّنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ۖ (4)							
4	पस्त	उस के आगे	उन की गर्दन	तो हो जाएं	कोई निशानी	आस्मान से	

रोज़े कियामत उस के लिए अज़ाब दोचन्द कर दिया जाएगा, और वह उस में हमेशा रहेगा, खार हो कर। (69) सिवाए उस के जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया, और उस ने नेक अमल किए, पस अल्लाह उन लोगों की बुराइयां बदल देगा भलाइयों से, और अल्लाह बख़शने वाला निहायत मेहरबान है। (70) और जिस ने तौबा की और नेक अमल किए तो वेशक वह रुजूअ करता है अल्लाह की तरफ़ (जैसे) रुजूअ करने का मुक़ाम (हक़) है। (71) और वह लोग जो झूट की गवाही नहीं देते और जब बेहूदा चीज़ों के पास से गुज़रें तो गुज़रते हैं बुजुर्गाना (सन्जीदगी के अन्दाज़ से)। (72) और वह लोग कि जब उन्हें उन के रब के अहकाम से नसीहत की जाती है तो वह उन पर नहीं गिर पड़ते बहरों और अँधों की तरह। (73) और वह लोग जो वह कहते हैं ऐ हमारे रब! हमें हमारी बीवियों और हमारी औलाद से आँखों की ठंडक अता फ़रमा, और हमें बनादे परहेज़गारों का पेश्वा। (74) उन लोगों को उन के सब्र की बदौलत (जन्नत के) वाला खाने इनआम दिए जाएंगे और वह उस में दुआए ख़ैर और सलाम से पेशवाई किए जाएंगे। (75) वह उस में हमेशा रहेंगे, (क्या ही) अच्छी है आरामगाह और अच्छा मस्कन। (76) आप (स) फ़रमा दें अगर तुम उस को न पुकारो, तो मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं रखता, अब कि तुम ने झुटलाया, पस अनकरीब (उस की सज़ा) लाज़मी होगी। (77) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है ता-सीन-मीम। (1) यह रोशन किताब की आयतें हैं। (2) शायद आप (स) (उन के ग़म में) अपने तई हलाक कर लेंगे कि वह ईमान नहीं लाते। (3) अगर हम चाहें तो उन पर आस्मान से कोई निशानी उतार दें, तो उस के आगे उन की गर्दन पस्त हो जाएं। (4)

और उन के पास रहमान की तरफ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वह उस से रूगर्दान हो जाते हैं। (5) पस बेशक उन्होंने ने झुटलाया तो जल्द उन के पास उस की खबरें आएंगी (हकीकत मालूम हो जाएगी) जिस का वह मज़ाक उड़ाते हैं। (6) क्या उन्होंने ने ज़मीन की तरफ नहीं देखा? कि हम ने उस में किस क़द्र उम्दा उम्दा हर किस्म की चीज़ें जोड़ा जोड़ा उगाई है। (7) बेशक उस में अलबत्ता निशानी है, और उन में अक्सर नहीं है ईमान लाने वाले। (8) और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (9) और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने मूसा (अ) को फ़रमाया कि ज़ालिम लोगों के पास जाओ। (10) (यानी) कौमे फ़िरअौन के पास, क्या वह मुझ से नहीं डरते? (11) उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं डरता हूँ (मुझे अन्देश है) कि वह मुझे झुटलाएंगे। (12) और मेरा दिल तंग होता है, और मेरी ज़बान (ख़ुब) नहीं चलती, पस हारून (अ) की तरफ़ पैग़ाम भेज। (13) और उन का मुझ पर एक इल्ज़ाम (भी) है, पस मुझे डर है कि वह मुझे क़त्ल न कर दें। (14) फ़रमाया हरगिज़ नहीं, तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, बेशक हम तुम्हारे साथ हैं सुनने वाले। (15) पस तुम दोनों फ़िरअौन के पास जाओ तो उसे कहो कि बेशक हम तमाम ज़हानों के रब के रसूल हैं। (16) कि तू भेज दे हमारे साथ बनी इस्राईल को। (17) फ़िरअौन ने कहा क्या हम ने तुझे बचपन में नहीं पाला? और तू हमारे दरमियान रहा अपनी उम्र के कई बरस। (18) और तू ने वह काम किया जो तू ने किया (एक क़वती का क़त्ल हो गया) और तू नाशुक्रों में से है। (19) मूसा (अ) ने कहा मैं ने वह किया था जब मैं राह से बेख़बरों में से था। (20) जब मैं तुम से डरा तो मैं तुम से भाग गया, पस मेरे रब ने मुझे हुक्म अ़ता किया (नबूख़त दी) और मुझे रसूलों में से बनाया। (21) और यह नेमत जिस का तू मुझ पर एहसान रखता है? कि तू ने बनी इस्राईल को गुलाम बनाया। (22) फ़िरअौन ने कहा, और क्या है सारे ज़हान का रब! (23)

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمَنِ مُحَدَّثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ							
और नहीं आती उन के पास	कोई नसीहत से	(तरफ़)	रहमान	नई	मगर	हो जाते है वह	उस से
مُعْرِضِينَ ﴿٥﴾ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ							
रूगर्दान	5	पस बेशक उन्होंने ने झुटलाया	तो जल्द आएंगी उन के पास	ख़बरें	जो वह थे	उस का	
يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ							
मज़ाक उड़ाते	6	क्या उन्होंने ने नहीं देखा?	ज़मीन की तरफ़	किस क़द्र	उगाई हम ने	उस में	हर किस्म
زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿٧﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾							
जोड़ा जोड़ा	उम्दा	7	बेशक	उस में	अलबत्ता निशानी	और नहीं है	उन में अक्सर
ईमान लाने वाले	8						
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٩﴾ وَادِّ نَادَى رَبُّكَ مُوسَىٰ إِنَّ أَنتَ							
और बेशक	और	तुम्हारा रब	ग़ालिब	रहम करने वाला	9	और जब	पुकारा (फ़रमाया)
कि तू जा	मूसा (अ)	तुम्हारा रब	मूसा (अ)	कि तू जा			
الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾ قَوْمٌ فِرْعَوْنُ إِلَّا يَتَّقُونَ ﴿١١﴾ قَالَ رَبِّ							
ज़ालिम लोग	10	कौमे फ़िरअौन	क्या वह मुझ से नहीं डरते	11	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	
إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿١٢﴾ وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْظِلُّ لِسَانِي							
बेशक मैं डरता हूँ	कि	वह मुझे झुटलाएंगे	12	और तंग होता है	मेरा सीना (दिल)	और नहीं चलती	मेरी ज़बान
فَارْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ﴿١٣﴾ وَلَهُمْ عَلَىٰ ذَنْبٍ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿١٤﴾							
पस पैग़ाम भेज	तरफ़	हारून	13	और उनका	मुझ पर	एक इल्ज़ाम	पस मैं डरता हूँ
कि वह मुझे क़त्ल (न) कर दें	14						
قَالَ كَلَّا فَادْهَبَا بِآيَتِنَا إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَمِعُونَ ﴿١٥﴾ فَآتِيَا فِرْعَوْنَ							
फ़रमाया	हरगिज़ नहीं	पस तुम दोनों जाओ हमारी निशानियों के साथ	बेशक हम	तुम्हारे साथ	सुनने वाले	15	पस तुम दोनों जाओ
فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿١٧﴾							
तो उसे कहो	बेशक हम रसूल	तमाम ज़हानों का रब	16	कि	तू भेज दे	हमारे साथ	बनी इस्राईल
17							
قَالَ أَلَمْ نُزِّبْكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ﴿١٨﴾							
फ़िरअौन ने कहा	क्या हम ने तुझे नहीं पाला	अपने दरमियान	बचपन में	और तू रहा	हमारे दरमियान	अपनी उम्र के	कई बरस
18							
وَفَعَلْتَ فَعَلْتِكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾ قَالَ فَعَلْتُهَا							
और तू ने किया	अपना (वह) काम	जो तू ने किया	और तू	से	नाशुक्रों	19	मूसा (अ) ने कहा
मैं ने वह किया था							
إِذَا وَأَنَا مِنَ الصَّالِّينَ ﴿٢٠﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي							
जब	और मैं	से	राह से बेख़बर (जमा)	20	तो मैं भाग गया	तुम से	जब मैं डरा तुम से
पस अ़ता किया मुझे							
رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢١﴾ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَىٰ							
मेरा रब	हुक्म	और मुझे बनाया	से	रसूल (जमा)	21	और यह	नेमत
तू उस का एहसान रखता है मुझ पर							
أَنْ عَبَدْتَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٣﴾							
कि तू ने गुलाम बनाया	बनी इस्राईल	22	फ़िरअौन ने कहा	और क्या है	रब	सारे ज़हान	23

قَالَ رَبُّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِنَّ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ﴿٢٤﴾							
24	यकीन करने वाले	तुम हो	अगर	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	रब है आस्मानों का	उस ने कहा
قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ أَلَا تَسْتَمِعُونَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ							
	तुम्हारे बाप दादा	और रब	तुम्हारा रब	(मूसा अ) ने कहा	25	क्या तुम सुनते नहीं	उस के ईर्द गिर्द उन्हें जो उस से कहा
الْأَوَّلِينَ ﴿٢٦﴾ قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ﴿٢٧﴾							
27	अलबत्ता दीवाना	तुम्हारी तरफ़	भेजा गया	वह जो	तुम्हारा रसूल	बेशक	फिरऔन बोला 26 पहले
قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِنَّ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾							
28	तुम समझते हो	अगर	उन दोनों के दरमियान	और जो	और मगरिब	मशरिफ़	रब मूसा (अ) ने कहा
قَالَ لَنْ اتَّخَذَتِ إِلَهًا غَيْرِي لِأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ ﴿٢٩﴾							
29	कैदी (जमा)	से	तो मैं ज़रूर करदूंगा तुझे	मेरे सिवा	कोई माबूद	तू ने बनाया	अलबत्ता अगर वह बोला
قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾ قَالَ فَأْتِ بِهِ ۖ إِنَّ كُنْتَ مِنَ							
	से	अगर तू है	तू ले आ उसे	वह बोला	30	वाज़ेह	एक शै (मोज़िज़ा) अगरचे में लाऊँ तेरे पास (मूसा अ) ने कहा
الصّٰدِقِينَ ﴿٣١﴾ فَالْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿٣٢﴾ وَنَزَعَ يَدَهُ							
	अपना हाथ	और उस ने खींचा (निकाला)	32	खुला (नुमाया)	अज़दहा	तो अचानक वह	अपना असा पस मूसा (अ) ने डाला 31 सच्चे
فَإِذَا هِيَ بِإِصْبَاءٍ لِلنَّظِيرِينَ ﴿٣٣﴾ قَالَ لِلْمَلَأِ حَوْلَهُ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ							
	जादूगर	बेशक यह	अपने गिर्द	सरदारों से	फिरऔन ने कहा	33	देखने वालों के लिए चमकता हुआ तो यकायक वह
عَلَيْهِمْ ﴿٣٤﴾ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿٣٥﴾							
35	तो क्या तुम हुक्म (मशवरा) देते हो	अपने जादू से	तुम्हारी सर ज़मीन	से	तुम्हें निकाल दे	कि यह चाहता है	34 दाना, माहिर
قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَبْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٣٦﴾ يَأْتُوكَ							
	ले आएँ तेरे पास	36	इकट्ठा करने वाले (नकीव)	शहरों	में	और भेज	और उस के भाई को मोहलत दे उसे वह बोले
بِكُلِّ سَحَابٍ عَلَيْهِمْ ﴿٣٧﴾ فَجَمَعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٣٨﴾							
38	जाने पहचाने (मुअय्यन)	एक दिन	मुकर्ररा वक़्त पर	जादूगर	पस जमा किए गए	37	माहिर तमाम बड़े जादूगर
وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُّجْتَمِعُونَ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ ۖ إِنَّ							
अगर	जादूगर (जमा)	पैरवी करें	ताकि हम	39	जमा होने वाले हो (जमा होंगे)	तुम	क्या लोगों से और कहा गया
كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَإِنَّا لَنَا							
	क्या यकीनन हमारे लिए	फिरऔन से	उन्होंने ने कहा	जादूगर	आएँ	पस जब	40 ग़ालिब (जमा) हों वह
لَأَجْرًا ۖ إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٤١﴾ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذَا لَّمِنَ							
	अलबत्ता - से	उस वक़्त	और बेशक तुम	हां	उस ने कहा	41	ग़ालिब (जमा) हम हम हुए अगर कुछ इन्आम
الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُّلقُونَ ﴿٤٣﴾							
43	डालने वाले	तुम	जो	तुम डालो	मूसा (अ)	उन से	कहा 42 मुकर्रबीन

मूसा (अ) ने कहा: रब है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उन के दरमियान है, अगर तुम यकीन करने वाले हो। (24)

उस ने अपने ईर्द गिर्द वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं! (25)

मूसा (अ) ने कहा: रब है तुम्हारा और रब है तुम्हारे पहले बाप दादा का। (26)

फिरऔन बोला, बेशक तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है अलबत्ता दीवाना है। (27)

मूसा (अ) ने कहा: रब है मशरिफ़ का और मगरिब का, और जो उन दोनों के दरमियान है, अगर तुम समझते हो। (28)

वह बोला, अलबत्ता अगर तू ने कोई और माबूद बनाया मेरे सिवा, तो मैं ज़रूर तुझे कैद करदूंगा। (29)

मूसा (अ) ने कहा अगरचे मैं तेरे पास एक वाज़ेह मोज़िज़ा लाऊँ? (30)

वह बोला तू उसे ले आ अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (31)

पस मूसा (अ) ने अपना असा डाला तो वह अचानक नुमायां अज़दहा बन गया। (32)

और उस ने अपना हाथ (गरेबान से) निकाला तो नागाह वह देखने वालों के लिए चमकता दिखाई देने लगा। (33)

फिरऔन ने अपने ईर्द गिर्द के सरदारों से कहा बेशक यह माहिर जादूगर है। (34)

वह चाहता है कि तुम्हें अपने जादू (के जोर) से तुम्हारी सर ज़मीन से निकाल दे तो तुम क्या मशवरा देते हो? (35)

वह बोले उसे और उस के भाई को मोहलत दे, और शहरों में नकीव भेज। (36)

कि तेरे पास तमाम बड़े माहिर जादूगर ले आएँ। (37)

पस जादूगर जमा हो गए, एक मुअय्यन दिन, वक़्त मुकर्ररा पर। (38)

और लोगों से कहा गया क्या तुम जमा होंगे? (39)

ताकि हम पैरवी करें जादूगरों की, अगर वह ग़ालिब हैं। (40)

जब जादूगर आए तो उन्होंने ने फिरऔन से कहा क्या हमारे लिए यकीनी तौर पर कुछ इन्आम होगा? अगर हम ग़ालिब आए। (41)

उस ने कहा हाँ! तुम उस वक़्त बेशक (मेरे) मुकर्रबीन में से होंगे। (42)

कहा मूसा (अ) ने उन से (अपना दाओ) डालो जो तुम डालने वाले हो। (43)

पस उन्होंने ने अपनी रससियां और लाठियां डालीं, और वह बोले कि वेशक फिरऔन के इक्वाल से हम ही गालिब आने वाले हैं। (44)

पस मूसा (अ) ने अपना अ़सा डाला तो वह नागाह निगलने लगा जो उन्होंने ने ढकोसला बनाया था। (45) पस जादूगर सिज्दा करते हुए गिर पड़े। (46)

वह बोले कि हम ईमान लाए सारे जहानों के रब पर। (47)

(जो) रब है मूसा (अ) का और हारून (अ) का। (48)

फिरऔन ने कहा तुम उस पर (इस से) पहले ईमान ले आए कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, वेशक वह अलबत्ता तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया, पस तुम जल्द जान लोगे, मैं ज़रूर तुम्हारे हाथ पाऊँ काट डालूँगा, दूसरी तरफ़ के (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ) और मैं ज़रूर तुम सब को सूली दूँगा। (49)

वह बोले कुछ हर्ज नहीं वेशक हम अपने रब की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (50)

हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताएं बख़्शदेगा, कि हम पहले ईमान लाने वाले हैं। (51)

और हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि की कि रातों रात मेरे बन्दों को ले कर निकल, वेशक तुम पीछा किए जाओगे (तुम्हारा तज़ाकुब होगा)। (52)

पस भेजा फिरऔन ने शहरों में नक़ीब। (53)

वेशक यह लोग एक थोड़ी (छोटी सी) जमाअत है। (54)

और वह वेशक हमें गुस्से में लाने वाले (गुस्सा दिला रहे हैं)। (55)

और वेशक हम एक जमाअत है मुसल्लह, मोहतात। (56)

(इरशादे इलाही): पस हम ने उन्हें बागात और चशमों से निकाला। (57)

और ख़ज़ानों और उम्दा ठिकानों से। (58)

इसी तरह हम ने उन का वारिस बनाया बनी इस्राईल को। (59)

पस उन्होंने ने सूरज निकलते (सुबह सवेरे) उन का पीछा किया। (60)

पस जब दोनों जमाअतों ने एक दूसरे को देखा तो मूसा (अ) के साथी कहने लगे, यकीनन हम पकड़ लिए गए। (61)

मूसा (अ) ने कहा, हरगिज़ नहीं, वेशक मेरा रब मेरे साथ है, वह मुझे जल्द (बच निकलने की) राह दिखाएगा। (62)

पस हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी कि तू अपना अ़सा दर्या पर मार (उन्होंने ने मारा) तो दर्या फट गया, पस हर हिस्सा बड़े बड़े पहाड़ की तरह हो गया। (63)

और हम ने उस जगह दूसरों (फिरऔनियों) को करीब कर दिया। (64)

فَالْقَوْمَ حِبَالُهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ

वेशक अलबत्ता हम	फिरऔन	इक्वाल से	और बोले वह	और अपनी लाठियां	अपनी रससियां	पस उन्होंने ने डाले

الْغَلْبُونَ ﴿٤٤﴾ فَأَلْقَى مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾

45	जो उन्होंने ने ढकोसला बनाया	निगलने लगा	तो यकायक वह	अपना अ़सा	मूसा (अ)	पस डाला	44	गालिब आने वाले

فَأَلْقَى السَّحَرَةُ سَجْدِينَ ﴿٤٦﴾ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾ رَبِّ مُوسَى

मूसा (अ)	रब	47	सारे जहानों के रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले	46	सिज्दा करते हुए	पस डाल दिए गए (गिर पड़े) जादूगर

وَهُزُونَ ﴿٤٨﴾ قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي

जिस ने	अलबत्ता बड़ा है तुम्हारा	वेशक वह	तुम्हें	इजाज़त दूँ	कि मैं	पहले	तुम ईमान लाए उस पर	(फिरऔन) ने कहा	48	और हारून (अ)

عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۖ لَا قُطْعَنَ أَيْدِيكُمْ وَارْجُلُكُمْ

और तुम्हारे पैर	तुम्हारे हाथ	अलबत्ता मैं ज़रूर काट डालूँगा	तुम जान लोगे	पस जल्द	जादू	सिखाया तुम्हें

مِّنْ خِلَافٍ وَلَا وُصِّلَبْنَكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٩﴾ قَالُوا لَا ضَيْرَ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا

अपने रब की तरफ़	वेशक हम	कुछ नुक्सान (हर्ज) नहीं	वह बोले	49	सब को	और ज़रूर तुम्हें सूली दूँगा	एक दूसरे के खिलाफ़ का	से-कि

مُنْقَلِبُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيئَاتِنَا أَنْ كُنَّا أَوَّلَ

पहले	कि हम हैं	हमारी ख़ताएं	हमारा रब	हमें	बख़्शदे	कि	वेशक हम उम्मीद रखते हैं	50	लौट कर जाने वाले हैं

الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكُمْ مُّتَّبِعُونَ ﴿٥٢﴾

52	पीछा किए जाओगे	वेशक तुम	मेरे बन्दों को	कि तू रातों रात ले निकल	मूसा (अ)	तरफ़	और हम ने वहि की	51	ईमान लाने वाले

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٥٣﴾ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ

एक जमाअत	यह लोग हैं	वेशक	53	इकटठा करने वाले (नक़ीब)	शहरों में	फिरऔन	पस भेजा

قَلِيلُونَ ﴿٥٤﴾ وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ ﴿٥٥﴾ وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حٰذِرُونَ ﴿٥٦﴾

56	मुसल्लह - मोहतात	एक जमाअत	और वेशक हम	55	गुस्से में लाने वाले	हमें	और वेशक वह	54	थोड़ी सी

فَاخْرَجْنَاهُمْ مِّنْ جَنَّتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٧﴾ وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ

उसी तरह	58	उम्दा	और ठिकाने	और ख़ज़ाने	57	और चशमे	बागात	से	पस हम ने उन्हें निकाला

وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿٥٩﴾ فَاتَّبَعُوهُمْ مُّشْرِقِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَاءَ

देखा एक दूसरे को	पस जब	60	सूरज निकलते	पस उन्होंने ने पीछा किया उन का	59	बनी इस्राईल	और हम ने वारिस बनाया उन का

الْجَمْعَيْنِ قَالَ اصْحَبْ مُوسَىٰ إِنَّا لَمُدْرِكُونَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا ۚ إِنَّ مَعِيَ

मेरे साथ	वेशक	उस ने कहा हरगिज़ नहीं	61	पकड़ लिए गए	यकीनन हम	मूसा (अ) के साथी	कहा (कहने लगे)	दोनों जमाअतें

رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾ فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ

दर्या	अपना अ़सा	तू मार	कि	मूसा (अ)	तरफ़	पस हम ने वहि भेजी	62	वह जल्द मुझे राह दिखाएगा	मेरा रब

فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فَرَقٍ كَالطُّودِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾ وَارْزُقْنَا ثُمَّ الْآخِرِينَ ﴿٦٤﴾

64	दूसरों को	उस जगह	फिर हम ने करीब कर दिया	63	बड़े	पहाड़ की तरह	हर हिस्सा	पस हो गया	तो वह फट गया

وَأَنْجَيْنَا مُوسَى وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿٦٦﴾									
और हम ने	मूसा (अ)	और जो	उस के साथ	सब	65	फिर	हम ने गर्क कर दिया	दूसरों को	66
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ									
वेशक	उस में	अलबत्ता निशानी	और न	थे	उन से अक्सर	ईमान लाने वाले	67	और वेशक	तुम्हारा रब
لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ									
अलबत्ता वह	गालिब	निहायत मेहरवान	68	और आप पढ़ें	उन पर - उन्हें	खबर - वाकिआ	इब्राहीम (अ)	69	जब उस ने कहा अपने बाप को
وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَّلُ لَهَا عَكْفِينَ ﴿٧١﴾									
और अपनी कौम	क्या - किस	तुम परस्तिश करते हो	70	उन्होंने ने कहा	हम परस्तिश करते हैं	बुतों की	पस हम बैठे रहते हैं उन के पास	जमे हुए	71
قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ﴿٧٢﴾ أَوْ يَنْفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ﴿٧٣﴾									
उस ने कहा	क्या	वह सुनते हैं तुम्हारी	जब	तुम पुकारते हो	72	या वह नफा पहुँचाते हैं तुम्हें	या वह नुकसान पहुँचाते हैं	73	
قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٧٤﴾ قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا									
वह बोले	बल्कि हम	हम ने पाया	अपने बाप दादा	इसी तरह	वह करते	74	इब्राहीम (अ) ने कहा	क्या पस तुम ने देखा	किस
كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٧٥﴾ أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ الْأَقْدَمُونَ ﴿٧٦﴾ فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي									
तुम परस्तिश करते हो	75	तुम	और तुम्हारे बाप दादा	पहले	76	तो वेशक वह	मेरे दुश्मन		
إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٧﴾ الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِي هُوَ									
मगर	सारे जहानों का रब	77	वह जिस ने	मुझे पैदा किया	पस वह	मुझे राह दिखाता है	78	और वह जो	वह
يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ﴿٧٩﴾ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِي									
मुझे खिलाता है	और मुझे पिलाता है	79	और जब	मैं बीमार होता हूँ	तो वह	मुझे शिफा देता है	80	और वह जो	
يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي									
मौत देगा	फिर	मुझे ज़िन्दा करेगा	81	और वह जिस से	मैं उम्मीद रखता हूँ	कि मुझे बख्श देगा	मेरी ख़ताएं		
يَوْمَ الدِّينِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَالْحَقْنَ بِالصَّالِحِينَ ﴿٨٣﴾									
वदले के दिन	82	ऐ मेरे रब	मुझे अता कर	हुक्म - हिक्मत	और मुझे मिलादे	नेक बन्दों के साथ	83		
وَأَجْعَلْ لِّي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ﴿٨٤﴾ وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ									
और कर	मेरे लिए - मेरा ज़िक्र	अच्छा - ख़ैर	वाद में आने वालों में	84	और तू मुझे बना दे	वारिसों में से			
جَنَّةِ النَّعِيمِ ﴿٨٥﴾ وَاعْفِرْ لِأَبِي إِنَّهُ كَانَ مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٨٦﴾									
जन्नत	नेमतों वाली	85	और वख़शदे	मेरे बाप को	वह है	से	गुमराह (जमा)	86	
وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ﴿٨٨﴾									
और मुझे रुस्वा न करना	जिस दिन सब उठाए जाएंगे	87	जिस दिन	न काम आएगा	माल	और न	बेटे	88	
إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٩﴾ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٩٠﴾									
मगर जो	अल्लाह के पास आया	दिल	पाक	89	और नज़दीक कर दी जाएगी	जन्नत	परहेज़गारों के लिए	90	

और हम ने मूसा (अ) को और जो उन के साथ थे सब को बचा लिया। (65) फिर हम ने दूसरों को गर्क कर दिया। (66) वेशक उस में अलबत्ता एक निशानी है, और उन में से अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (67) और वेशक तुम्हारा रब अलबत्ता गालिब, निहायत मेहरवान है। (68) और आप (स) उन्हें इब्राहीम (अ) का वाकिआ पढ़ कर (सुनाएं)। (69) जब उन्होंने ने कहा अपने बाप और अपनी कौम को, तुम किस की परस्तिश करते हो? (70) उन्होंने ने कहा बुतों की परस्तिश करते हैं, पस हम उन के पास जमे बैठे रहते हैं। (71) उस ने कहा क्या वह तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो? (72) या वह तुम्हें नफा पहुँचाते हैं? या नुकसान पहुँचा सकते हैं? (73) वह बोले (नहीं तो)। बल्कि हम ने अपने बाप दादा को इसी तरह करते पाया है। (74) इब्राहीम (अ) ने कहा: पस क्या तुम ने देखा (गौर भी किया) कि तुम किस की परस्तिश करते हो? (75) और तुम्हारे पहले बाप दादा? (76) तो वेशक वह मेरे दुश्मन हैं सिवाए सारे जहानों के रब के। (77) वह जिस ने मुझे पैदा किया, पस वही मुझे राह दिखाता है। (78) और वही जो मुझे खिलाता है और वही मुझे पिलाता है। (79) और जब मैं बीमार होता हूँ तो वह मुझे शिफा देता है। (80) और वह जो मुझे मौत (से हमकिनार) करेगा, फिर मुझे ज़िन्दा करेगा। (81) और वह जिस से मैं उम्मीद रखता हूँ कि मुझे वदले के दिन मेरी ख़ताएं बख़श देगा। (82) ऐ मेरे रब! मुझे हुक्म और हिक्मत अता फ़रमा, और मुझे नेक बन्दों के साथ मिला दे। (83) और मेरा ज़िक्र ख़ैर (जारी) रख वाद में आने वालों में। (84) और मुझे नेमतों वाली जन्नत के वारिसों में से बना दे। (85) और मेरे बाप को बख़शदे, वेशक वह गुमराहों में से है। (86) और मुझे उस दिन रुस्वा न करना जब सब उठाए जाएंगे। (87) जिस दिन न काम आएगा माल और न बेटे। (88) मगर जो अल्लाह के पास सलीम (बे ऐव) दिल ले कर आया। (89) और जन्नत परहेज़गारों के नज़दीक कर दी जाएगी। (90)

और दोड़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी
 गुमराहों के लिए। (91)
 और उन्हें कहा जाएगा कहाँ है वह जिन
 की तुम परस्तिश करते थे। (92)
 अल्लाह के सिवा क्या वह तुम्हारी
 मदद कर सकते हैं? या (खुद)
 बदला ले सकते हैं? (93)
 पस वह और गुमराह उस (जहन्नम)
 में औन्धे मुँह डाले जाएंगे। (94)
 और इब्लीस के लशकर सब के
 सब। (95)
 वह कहेंगे जब कि वह जहन्नम में
 (बाहम) झगड़ते होंगे। (96)
 अल्लाह की कसम! वेशक हम
 खुली गुमराही में थे। (97)
 जब हम तुम्हें सारे जहानों के रब
 के साथ बराबर ठहराते थे। (98)
 और हमें सिर्फ़ मुज़्रिमों ने गुमराह
 किया। (99)
 पस हमारा कोई सिफ़ारिश करने
 वाला नहीं। (100)
 और न कोई ग़म ख़ार दोस्त है। (101)
 पस काश हमारे लिए दोबारा
 (दुनिया में) लौटना होता तो हम
 मोमिनों में से होते। (102)
 वेशक उस में अलबत्ता एक
 निशानी है, और नहीं है उन में
 अक़सर ईमान लाने वाले। (103)
 और वेशक तुम्हारा रब ग़ालिब है,
 निहायत मेहरबान। (104)
 नूह (अ) की क़ौम ने झुटलाया
 रसूलों को। (105)
 (याद करो) जब उन के भाई नूह (अ)
 ने उन से कहा तुम डरते नहीं? (106)
 वेशक मैं तुम्हारे लिए रसूल हूँ
 अमानतदार। (107)
 पस अल्लाह से डरो और मेरी
 इताज़त करो। (108)
 मैं इस पर तुम से नहीं मांगता कोई
 अज़र, मेरा अज़र तो सिर्फ़ (अल्लाह)
 रब्बुल आलमीन पर है। (109)
 पस अल्लाह से डरो और मेरी
 इताज़त करो। (110)
 वह बोले क्या हम तुझ पर ईमान
 ले आएँ? जब कि तेरी पैरवी रज़ीलों
 ने की है। (111)
 नूह (अ) ने कहा मुझे क्या इल्म वह
 क्या (काम काज) करते थे। (112)
 उन का हिसाब सिर्फ़ मेरे रब पर
 है, अगर तुम समझो। (113)
 और मैं मोमिनों को (अपने पास से)
 दूर करने वाला नहीं। (114)
 मैं तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ तौर पर
 डराने वाला हूँ। (115)
 बोले ऐ नूह (अ)! अगर तुम बाज़
 न आए तो ज़रूर संगसार कर दिए
 जाओगे। (116)
 नूह (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! वेशक
 मेरी क़ौम ने मुझे झुटलाया। (117)

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِلْغَوِينِ ﴿٩١﴾ وَقِيلَ لَهُمْ آيِنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٩٢﴾

92	तुम परस्तिश करते थे	कहाँ है वह जो	उन्हें	और कहा जाएगा	91	गुमराहों के लिए	दोज़ख	और ज़ाहिर कर दी जाएगी

مِنْ دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنْصُرُونَكُمْ أَوْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٩٣﴾ فَكَبِكُوا فِيهَا

पस औन्हे मुँह डाले जाएंगे उस में	93	या बदला ले सकते हैं	वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं	क्या	अल्लाह के सिवा

هُمْ وَالْعَاوَنَ ﴿٩٤﴾ وَجُنُودَ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ﴿٩٥﴾ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا

उस (जहननम) में	और वह	वह कहेंगे	95	सब के सब	इब्लीस	और लशकर (जमा)	94	और गुमराह	वह

يَخْتَصِمُونَ ﴿٩٦﴾ تَاللَّهِ إِنْ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٩٧﴾ إِذْ نُسَوِّكُمْ

हम बराबर ठहराते थे तुम्हें	जब	97	खुली	गुमराही	अलबत्ता में	वेशक हम थे	कसम अल्लाह की	96	झगड़ते होंगे

بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٩٨﴾ وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ﴿١००﴾

100	सिफारिश करने वाले	कोई	पस नहीं हमारे लिए	99	मुज़रिम (जमा)	मगर (सिर्फ)	और नहीं गुमराह किया हमें	98	सारे जहानों के रब के साथ

وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١०१﴾ فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١०२﴾

102	मोमिन (जमा)	से	तो हम होते	लौटना	कि हमारे लिए	पस काश	101	ग़म ख़ार	कोई दोस्त और न

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١०३﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	और वेशक	103	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	और नहीं है	अलबत्ता एक निशानी	उस में	वेशक

لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١०४﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١०५﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ

उन से	जब कहा	105	रसूलों को	नूह (अ) की कौम	झुटलाया	104	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह

أَخُوهُمْ نُوحٌ إِلَّا تَتَّقُونَ ﴿١०६﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١०७﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ

पस डरो अल्लाह से	107	रसूल अमानत दार	तुम्हारे लिए	वेशक मैं	106	तुम डरते	क्या नहीं	नूह (अ)	उन के भाई

وَاطِيعُونَ ﴿١०८﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجَرْتُ إِلَّا عَلَى

पर	मगर (सिर्फ)	मेरा अजर	नहीं	अजर	कोई	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	108	और मेरी इताअत करो

رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١०९﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ ﴿١१०﴾ قَالُوا أَنْتُمْ لَكُمْ وَاتَّبَعَكَ

जब कि तेरी पैरवी की	तुझ पर	क्या हम ईमान ले आए	वह बोले	110	और मेरी इताअत करो	पस डरो अल्लाह से	109	सारे जहाँ का पालने वाला

الْأَزْدُونَ ﴿١११﴾ قَالَ وَمَا عَلِمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١१२﴾ إِنْ حَسَابُهُمْ

उन का हिसाब	नहीं	112	वह करते थे	उस की जो	और मुझे क्या इल्म	कहा (नूह अ) ने	111	रज़ीलों ने

إِلَّا عَلَى رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١१३﴾ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١१४﴾ إِنْ أَنَا

नहीं मैं	114	मोमिन (जमा)	हांकने वाला (दूर करने वाला)	मैं	और नहीं	113	तुम समझो अगर	मेरे रब पर	मगर (सिर्फ)

إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١१५﴾ قَالُوا لَبِئْسَ لَمْ تَنْتَهِ يَنُوحُ لَتَكُونَنَّ

तो ज़रूर होंगे	ऐ नूह (अ)	तुम बाज़ न आए	अगर	बोले वह	115	साफ़ तौर पर	डराने वाला	मगर-सिर्फ

مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١१६﴾ قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١१७﴾

117	मुझे झुटलाया	मेरी कौम	वेशक	ऐ मेरे रब	(नूह अ ने) कहा	116	संगसार किए जाने वाले	से

118

ईमान वाले

से

मेरे साथी

और जो

और नजात दे मुझे

एक खुला फैसला

और उन के दरमियान

मेरे दरमियान

पस फैसला कर दे

119

उस के ग़र्क़ कर दिया हम ने

फिर

119

भरी हुई

कश्ती में

उस के साथ

और जो

तो हम ने नजात दी उसे

120

ईमान लाने वाले

उन के अक्सर

थे

और न

अलबत्ता निशानी

उस में

वेशक

120

वाकियों को

121

रसूल (जमा)

आद

झुटलाया

122

निहायत मेहरबान

ग़ालिब

अलबत्ता वह

तुम्हारा रब

और वेशक

122

रसूल अमानतदार

तुम्हारे लिए

वेशक मैं

124

क्या तुम डरते नहीं

हूद (अ)

उन के भाई

उन से

जब कहा

123

मेरा अजर

नहीं

कोई अजर

उस पर

और मैं नहीं मांगता तुम से

126

और मेरी इताअत करो

सो तुम डरो अल्लाह से

124

खेलने को (विला ज़रूरत)

एक निशानी

हर बुलन्दी पर

क्या तुम तामीर करते हो

127

सारे जहाँ का पालने वाला

पर

मगर (सिर्फ)

125

गिरिप्त करते हो तुम

तुम गिरिप्त करते हो

और जब

129

तुम हमेशा रहोगे

शायद तुम

मज़बूत शानदार महल

और तुम बनाते हो

126

मदद की तुम्हारी

वह जिस ने

और डरो

131

और मेरी इताअत करो

पस डरो अल्लाह से

130

जाबिर बन कर

127

और चश्मे

और बागात

133

और बेटों

मवेशियों से

तुम्हारी मदद की

132

उस से जो तुम जानते हो

128

खाह तुम नसीहत करो

हम पर

बराबर

वह बोले

135

एक बड़ा दिन

अज़ाब

तुम पर

वेशक मैं डरता हूँ

129

और जो

नसीहत करने वाले

136

नहीं है

मगर

आदत

अगले लोग

137

या न हो तुम

130

अलबत्ता निशानी

उस में

वेशक

तो हम ने हलाक कर दिया उन्हें

पस उन्होंने ने झुटलाया उसे

138

अज़ाब दिए जाने वालों में से

हम

131

निहायत मेहरबान

ग़ालिब

अलबत्ता वह

तुम्हारा रब

और वेशक

139

ईमान लाने वाले

उन के अक्सर

और नहीं थे

132

क्या तुम डरते नहीं

सालेह (अ)

उन के भाई

उन से

कहा

जब

141

रसूल (जमा)

समूद

झुटलाया

فَاتَّخَ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجَّيْنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ (118)

فَأَنْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلِّ الْمَشْحُونِ (119) ثُمَّ أَعْرَفْنَا بَعْدُ (119)

الْبَاقِينَ (120) إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ (120)

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ (121) كَذَّبَتْ عَادُ الْمُرْسَلِينَ (121)

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ (122) إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ (122)

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا (123) وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ (123)

إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ (124) أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ (124)

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ (125) وَإِذَا بَطِشْتُمْ بَطِشْتُمْ (125)

جَبَّارِينَ (126) فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا (126) وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ (126)

بِمَا تَعْلَمُونَ (127) أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ (127) وَجَنَّتِ وَعُيُونٌ (127)

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ (128) قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَضْتَ (128)

أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَعِظِينَ (129) إِنْ هَذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ (129) وَمَا (129)

نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ (130) فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ (130) إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً (130)

وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ (131) وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ (131)

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ (132) إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ (132)

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا (133) وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ (133)

पस मेरे और उन के दरमियान एक खुला फैसला फ़रमा दे, और मुझे नजात दे, और (उन्हें) जो मेरे साथी ईमान वाले हैं। (118)

तो हम ने उसे और जो उस के साथ भरी हुई कश्ती में सवार थे (उन्हें) नजात दी। (119)

फिर उस के बाद हम ने बाकियों को ग़र्क़ कर दिया। (120)

वेशक उस में एक निशानी है, और उन के अक्सर न थे ईमान लाने वाले। (121)

और वेशक तुम्हारा रब ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (122)

(कौमे) आद ने रसूलों को झुटलाया। (123)

जब उन से उन के भाई हूद (अ) ने कहा क्या तुम डरते नहीं? (124)

वेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (125)

सो तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअत करो। (126)

और मैं तुम से कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन पर है। (127)

क्या तुम हर बुलन्दी पर विला ज़रूरत एक निशानी तामीर करते हो? (128)

और तुम बनाते हो मज़बूत, शानदार महल कि शायद तुम हमेशा रहोगे। (129)

और जब तुम (किसी पर) गिरिप्त करते हो तो जाबिर (ज़ालिम) बन कर गिरिप्त करते हो। (130)

पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (131)

और उस से डरो जिस ने उस से तुम्हारी मदद की जो तुम जानते हो। (132)

(यानी) मवेशियों और बेटों से तुम्हारी मदद की। (133)

और बागात और चश्मों से। (134)

वेशक मैं तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डराता हूँ। (135)

वह बोले, बराबर है हम पर खाह तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न हो। (136)

(कुछ भी) नहीं है, मगर आदत है अगले लोगों की। (137)

और हम अज़ाब दिए जाने वालों में से नहीं। (138)

फिर उन्होंने ने उसे झुटलाया और हम ने उन्हें हलाक कर दिया, वेशक उस में निशानी है और न थे उन के अक्सर ईमान लाने वाले। (139)

और वेशक तुम्हारा रब ग़ालिब निहायत मेहरबान है। (140)

(कौमे) समूद ने रसूलों को झुटलाया। (141)

जब उन में से उन के भाई सालेह (अ) ने कहा क्या तुम डरते नहीं? (142)

वेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार
रसूल हूँ। (143)
सो तुम अल्लाह से डरो, और मेरी
इताअत करो। (144)
और मैं तुम से इस पर कोई अजर
नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ
अल्लाह रब्बुल आलमीन पर है। (145)
क्या तुम यहाँ की चीज़ों (नेमतों) में
वेफ़िक़र छोड़ दिए जाओगे? (146)
बागात और चशमों में। (147)
और खेतियों और नख़िलस्तानों में
जिन के खोशे रस भरे हैं। (148)
और तुम खुश हो कर पहाड़ों से
घर तराशते हो। (149)
सो अल्लाह से डरो और मेरी
इताअत करो। (150)
और तुम हद से बढ़ जाने वालों का
कहा न मानो। (151)
वह जो फ़साद करते हैं ज़मीन में,
और इसलाह नहीं करते। (152)
उन्होंने कहा इस के सिवा नहीं कि
तुम सिहरज़दा लोगों में से हो। (153)
तुम नहीं मगर (सिर्फ़) हम जैसे एक
वशर हो, पस अगर तुम सच्चे
लोगों में से हो (सच्चे हो) तो कोई
निशानी ले आओ। (154)
सालेह (अ) ने फ़रमाया यह ऊँटनी है,
एक मुअय्यन दिन उस के पानी पीने
की बारी है और (एक दिन) तुम्हारे
लिए पानी पीने की बारी है। (155)
और उसे बुराई से हाथ न लगाना
वरना तुम्हें आ पकड़ेगा एक बड़े
दिन का अज़ाब। (156)
फिर उन्होंने ने उस की कूचें काट दीं
पस पशेमान रह गए। (157)
फिर उन्हें अज़ाब ने आ पकड़ा, वेशक
उस (वाक़े) में अलबत्ता निशानी (बड़ी
इब्रत) है और उन के अक्सर ईमान
लाने वाले नहीं। (158)
और वेशक तुम्हारा रब अलबत्ता
ग़ालिब निहायत मेहरबान है। (159)
कौम लूत (अ) ने रसूलों को
झुटलाया। (160)
(याद करो) जब उन के भाई
लूत (अ) ने उन से कहा क्या तुम
डरते नहीं? (161)
वेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार
रसूल हूँ। (162)
पस तुम अल्लाह से डरो, और मेरी
इताअत करो। (163)
और मैं तुम से नहीं मांगता इस पर कोई
अजर, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह)
रब्बुल आलमीन पर है। (164)
क्या तुम मर्दों के पास (बद फ़ली) के लिए
आते हो? दुनिया ज़हानों में से। (165)
और तुम छोड़ देते हो (उन्हें) जो
तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए तुम्हारी
बीवियां पैदा की हैं, (नहीं) बल्कि तुम
हद से बढ़ने वाले लोग हो। (166)

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ									
इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	144	और मेरी इताअत करो	सो तुम डरो अल्लाह से	143	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	वेशक मैं	
مِنْ أَجْرٍ ۚ إِن أَجْرِي إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ أَتَشْرِكُونَ فِي مَا هُنَا									
जो यहाँ है	में	क्या छोड़ दिए जाओगे तुम?	145	सारे जहाँ का पालने वाला	पर	मगर	मेरा अजर	नहीं	कोई अजर
أَمِينِينَ ۖ فِي جَنَّتٍ وَعُيُونٍ ۖ وَزُرُوعٍ وَنَحْلٍ طَلَعَهَا هَٰضِمٌ ۖ									
वेफ़िक़र	146	बागात में	और चशमे	147	और खेतियाँ	उन के खोशे	नर्म ओ नाज़ुक	148	
وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَرِهِينَ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ									
और तुम तराशते हो	पहाड़ों से	घर	खुश हो कर	149	सो डरो अल्लाह से	और मेरी इताअत करो	150		
وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ۖ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ									
और न कहा मानो	हुक़म	हद से बढ़ जाने वाले	151	जो लोग	फ़साद करते हैं	में	ज़मीन		
وَلَا يُصْلِحُونَ ۖ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۖ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ									
और इसलाह नहीं करते	152	उन्होंने कहा	इस के सिवा नहीं	तुम	से	सिहरज़दा लोग	153	तुम नहीं	मगर (सिर्फ़) एक वशर
مِثْلُنَا ۖ فَاتِّبَايَةِ إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۖ قَالَ هٰذِهِ نَاقَةٌ لَّهَا									
हम जैसा	पस लाओ	कोई निशानी	अगर	तू	सच्चे लोग से	154	उस ने कहा	यह	उस के लिए ऊँटनी
شَرِبَ وَلَكُمْ شَرِبٌ يَوْمَ مَعْلُومٍ ۖ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ									
पानी पीने की बारी	और तुम्हारे लिए	एक बारी पानी पीने की	दिन मालूम	155	और उसे हाथ न लगाना	बुराई से	सो (वरना) तुम्हें आ पकड़ेगा		
عَذَابٍ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۖ فَعَقَرُوْهَا فَاصْبَحُوا نَدِمِينَ ۖ فَآخُذْهُمْ									
अज़ाब	एक बड़ा दिन	156	फिर उन्होंने ने कूचें काट दी उस की	पस रह गए	पशेमान	157	फिर उन्हें आ पकड़ा		
الْعَذَابِ ۖ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۖ									
अज़ाब	वेशक	उस में	अलबत्ता निशानी	और नहीं है	उन के अक्सर	ईमान लाने वाले	158		
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ كَذَّبَتْ قَوْمٌ لُّوطَ الْمُرْسَلِينَ ۖ									
और वेशक	तुम्हारा रब	अलबत्ता वह	ग़ालिब	निहायत मेहरबान	159	झुटलाया	कौम लूत (अ)	रसूलों को	160
إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ۖ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ									
जब	कहा	उन से	उन के भाई	लूत (अ)	क्या तुम डरते नहीं	161	वेशक मैं	तुम्हारे लिए	रसूल अमानतदार
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِن أَجْرِي									
पस तुम डरो अल्लाह से	और मेरी इताअत करो	163	और मैं नहीं मांगता तुम से	इस पर	कोई अजर	नहीं	मेरा अजर		
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ۖ									
मगर-सिर्फ़	पर	सारे जहाँ का पालने वाला	164	क्या तुम आते हो	मर्दों के पास	से	तमाम जहानों	165	
وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَرْوَاجِكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُونَ ۖ									
और तुम छोड़ते हो	जो उस ने पैदा किया	तुम्हारे लिए	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी बीवियाँ	बल्कि	तुम	लोग	हद से बढ़ने वाले

قَالُوا لَنْ لَمْ تَنْتَه يَلُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ إِنِّي									
वेशक मैं	उस ने कहा	167	मुखरिज (बाहर निकाले जाने वाले)	से	अलवत्ता तुम ज़रूर होंगे	ऐ लूत (अ)	तुम बाज़ न आए	अगर	बोले वह
لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ نَجِّنِي وَاهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٩﴾ فَنجَّيْنَاهُ									
तो हम ने नजात दी उसे	169	वह करते हैं	उस से जो	और मेरे घर वालों	मुझे नजात दे	ऐ मेरे रब	168	नफरत करने वाले	से तुम्हारे अमल से
وَاهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧٠﴾ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغُرَبِیْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخِرِينَ ﴿١٧٢﴾									
172	दूसरे	फिर हम ने हलाक कर दिया	171	पीछे रह जाने वालों में	एक बुढ़िया	सिवाए	170	सब	और उस के घर वाले
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ﴿١٧٣﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً									
अलवत्ता एक निशानी	उस में	वेशक 173	डराए गए	वारिश	पस बुरी	एक बारिश	उन पर	और हम ने बारिश बरसाई	
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٧٤﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٧٥﴾									
175	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलवत्ता वह	तुम्हारा रब	और वेशक 174	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	थे और न	
كَذَّبَ أَصْحَابُ لَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٦﴾ إِذْ قَالَ لَهُمُ شُعَيْبٌ									
शुऐब (अ)	उन्हें	जब कहा	176	रसूल (जमा)	एयका (बन) वाले	झुटलाया			
أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿١٧٩﴾									
179	और मेरी इताअत करो	सो डरो तुम अल्लाह से	178	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	वेशक मैं	177	क्या तुम डरते नहीं	
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجَرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٠﴾									
180	सारे जहाँ का पालने वाला	पर	मगर-सिर्फ	मेरा अजर नहीं	कोई अजर	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से		
أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ﴿١٨١﴾ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ									
तराजू से	और वज़न करो	181	नुक्सान देने वाले	से	और न हो तुम	माप	तुम पूरा करो		
الْمُسْتَقِيمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ									
ज़मीन में	और न फिरो	उन की चीज़ें	लोग	और न घटाओ	182	ठीक सीधी			
مُفْسِدِينَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأُولِينَ ﴿١٨٤﴾									
184	पहली	और मख़लूक	पैदा किया तुम्हें	वह जिस ने	और डरो	183	फ़साद मचाते हुए		
قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٨٥﴾ وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا									
हम जैसा	एक बशर	मगर-सिर्फ	और नहीं तू	185	सिहरज़दा (जमा)	से तू	इस के सिवा नहीं (कहने लगे)		
وَإِنْ نَظُنُّكَ لَمِنَ الْكَذِبِينَ ﴿١٨٦﴾ فَاسْقِطْ عَلَيْنَا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ									
आस्मान	से-का	एक टुकड़ा	हम पर	सो तू गिरा	186	झूटे	अलवत्ता-से और अलवत्ता हम गुमान करते हैं तुझे		
إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّيٰٓ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوهُ									
तो उन्होंने ने झुटलाया उसे	188	तुम करते हो	जो कुछ	खूब जानता है	मेरा रब	कहा	187	सच्चे	से अगर तू है
فَاخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٨٩﴾									
189	बड़ा (सख़्त) दिन	अज़ाब	था	वेशक वह	साइवान वाला दिन	अज़ाब	पस पकड़ा उन्हें		

वह बोले ऐ लूत (अ)! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर (बस्ती से) निकाल दिए जाओगे। (167)

उस ने कहा वेशक मैं तुम्हारे फेले (बद) से नफ़रत करने वालों में से हूँ। (168)

ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे घर वालों को उस (के बवाल) से नजात दे जो वह करते हैं। (169)

तो हम ने उसे नजात दी और उस के सब घर वालों को। (170)

सिवाए एक बुढ़िया जो रह गई पीछे रह जाने वालों में। (171)

फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया। (172)

और हम ने उन पर (पत्थरों की) बारिश बरसाई। पस किया ही बुरी बारिश (उन पर जिन्हें अज़ाब से) डराया गया। (173)

वेशक उस में एक निशानी है और न उन के अक्सर ईमान लाने वाले थे। (174)

और वेशक तुम्हारा रब अलवत्ता ग़ालिब, निहायत मेहरबान है। (175)

झुटलाया एयका (बन) वालों ने रसूलों को। (176)

(याद करो) जब शुऐब (अ) ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं? (177)

वेशक मैं तुम्हारे लिए रसूल हूँ अमानतदार। (178)

सो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (179)

और मैं तुम से इस पर कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आलमीन पर है। (180)

तुम माप पूरा करो, और नुक्सान देने वालों में से न हो। (181)

और वज़न करो ठीक सीधी तराजू से। (182)

और लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो, और ज़मीन में न फिरो फ़साद मचाते हुए। (183)

और डरो उस (ज़ाते पाक) से जिस ने तुम्हें पैदा किया और पहली मख़लूक को। (184)

कहने लगे इस के सिवा नहीं कि तू सिहरज़दा लोगों में से है। (185)

और तू सिर्फ़ हम जैसा एक बशर है, और अलवत्ता हम तुझे झूटों में से गुमान करते हैं। (186)

सो तू हम पर आस्मान का एक टुकड़ा गिरा दे अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (187)

शुऐब (अ) ने फ़रमाया, मेरा रब खूब जानता है जो कुछ तुम करते हो। (188)

तो उन्होंने ने उसे झुटलाया, पस उन्हें (आग के) साइवान वाले दिन अज़ाब ने आ पकड़ा। वेशक वह बड़े सख़्त दिन का अज़ाब था। (189)

वेशक उस में निशानी है, और उन के अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (190) और वेशक तेरा रब गालिब है, निहायत मेहरबान। (191) और वेशक यह (कुरआन) सारे जहानों के रब का उतारा हुआ है। (192) उस को ले कर उतरा है ज़िब्रील अमीन (अ)। (193) तुम्हारे दिल पर, ताकि तुम डर सुनाने वालों में से हो। (194) रोशन वाज़ेह अरबी ज़बान में। (195) और वेशक यह (इस का ज़िक्र) पहले पैगम्बरों के सहीफों में है। (196) क्या यह उन के लिए एक निशानी नहीं? कि इसे जानते हैं उलमाए बनी इस्राईल। (197) और अगर हम इसे किसी ग़ैर अरबी (ज़बान दान) पर नाज़िल करते। (198) फिर वह इसे उन के सामने पढ़ता (फिर भी) वह इस पर ईमान लाने वाले न होते (ईमान न लाते)। (199) इसी तरह हम ने मुज़्रिमें के दिलों में इन्कार दाखिल कर दिया है। (200) वह उस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि वह दर्दनाक अज़ाब (न) देख लें। (201) तो वह उन पर अचानक आजाएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। (202) फिर वह कहेंगे क्या हमें मोहलत दी जाएगी। (203) पस क्या वह हमारे अज़ाब को जल्दी चाहते हैं? (204) क्या तुम ने देखा (जरा देखो)? अगर हम उन्हें बरसों फाइदा पहुँचाए। (205) फिर उन पर पहुँचे जिस की उन्हें बर्द की जाती थी। (206) जिस से वह फाइदा उठाते थे उन के क्या काम आएगा? (207) और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया, मगर उस के लिए डराने वाले। (208) नसीहत के लिए (पहले भेजे) और हम जुल्म करने वाले न थे। (209) और इस (कुरआन) को शैतान ले कर नहीं उतरे। (210) और उन को सज़ावार नहीं (वह उस के काबिल नहीं) और न वह (ऐसा) कर सकते हैं। (211) वेशक वह सुनने (के मुक़ाम) से दूर कर दिए गए हैं। (212) पस अल्लाह के साथ किसी और को माबूद न पुकारो कि सुबतिलाए अज़ाब लोगों में से हो जाओ। (213) और तुम अपने करीब तरीन रिश्तेदारों को डराओ। (214) और उस के लिए अपने बाजू झुकाओ जिस ने तुम्हारी पैरवी की मोमिनों में से। (215)

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ							
वेशक	उस में	अलबत्ता निशानी	और न थे	उन के अक्सर	ईमान लाने वाले	190	तेरा रब और वेशक
لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾ وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٩٢﴾ نَزَلَ بِهِ							
वह	गालिब	निहायत मेहरबान	191	और वेशक यह	अलबत्ता उतारा हुआ	सारे जहानों का रब	192
الرُّوحِ الْأَمِينِ ﴿١٩٣﴾ عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ							
जिब्रील अमीन (अ)	193	पर	तुम्हारे दिल	ताकि तुम हो	डर सुनाने वालों में से	194	ज़बान में
عَرَبِيٍّ مُبِينٍ ﴿١٩٥﴾ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾ أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةٌ							
अरबी	रोशन (वाज़ेह)	195	और वेशक यह	में	सहीफें	पहले (पैगम्बर)	196
أَنْ يَّعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿١٩٧﴾ وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَى بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾							
कि जानते हैं इस को	उलमा	बनी इस्राईल	197	और अगर	हम नाज़िल करते इसे	किसी पर	अजमी (ग़ैर अरबी)
فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٩﴾ كَذَلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ							
फिर वह पढ़ता इसे	उन के सामने	न	वह होते	इस पर	ईमान लाने वाले	199	यह चलाया है (इन्कार दाखिल कर दिया है) दिलों में इसी तरह
الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠٠﴾ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾ فَيَأْتِيَهُمْ							
मुज़्रिमीन	200	वह ईमान न लाएंगे	इस पर	यहां तक कि	वह देख लेंगे	दर्दनाक अज़ाब	201
بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾ فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾							
अचानक	और उन्हें	ख़बर (भी) न होगी	202	फिर वह कहेंगे	क्या	हम - हमें	मोहलत दी जाएगी
أَفِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾ أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾ ثُمَّ							
क्या पस हमारे अज़ाब को	वह जल्दी चाहते हैं	204	क्या तुम ने देखा?	अगर	हम उन्हें फाइदा पहुँचाए	कई बरसों	205
جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾ مَا أَغْنَى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يُمْتَعُونَ ﴿٢٠٧﴾							
पहुँचे उन पर	जो	उन्हें बर्द की जाती थी	206	क्या काम आएगा?	उन के	जो (जिस से)	वह फाइदा उठाते थे
وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾ ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا							
और नहीं हलाक किया हम ने	किसी बस्ती को	मगर	उस के लिए	डराने वाले	208	नसीहत के लिए	और न थे हम
ظَلَمِينَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا تَنْزَلَتْ بِهِ الشَّيْطَانُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ							
जुल्म करने वाले	209	और नहीं उतरे	इसे ले कर	शैतान (जमा)	210	और सज़ा वार नहीं	उन को
وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمْعَرُؤُونُ ﴿٢١٢﴾ فَلَا تَدْعُ							
और न वह कर सकते हैं	211	वेशक वह	से	सुनना	दूर कर दिए गए हैं	212	पस न पुकारो
مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَكُونُ مِنَ الْمُعَذِّبِينَ ﴿٢١٣﴾ وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ							
अल्लाह के साथ	कोई दूसरा माबूद	कि हो जाओ	से	सुबतिलाए अज़ाब	213	और तुम डराओ	अपने रिश्तेदार
الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾ وَاحْفَظْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾							
करीब तरीन	214	और झुकाओ	अपना बाजू	उस के लिए जिस ने	तुम्हारी पैरवी की	से	मोमिनीन

١٠
١٢

عند المُنْذِرِينَ
٩
١٢

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ										
ग़ालिब	पर	और भरोसा करो	216	तुम करते हो	उस से जो	वेशक मैं बेज़ार हूँ	तो कह दें	वह तुम्हारी नाफ़रमानी करें	फिर अगर	
الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِي يَرْبِكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقْلَبُ فِي السَّجْدَيْنِ ﴿٢١٩﴾										
219	सिज़्दा करने वाले (नमाज़ी)	में	और तुम्हारा फिरना	218	तुम खड़े होते हो	जब	तुम्हें देखता है	वह जो	217	निहायत मेहरबान
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ نَزَّلَ الشَّيْطَانُ ﴿٢٢١﴾										
221	शैतान (जमा)	उतरते हैं	किस पर	मैं तुम्हें बताऊँ	क्या	220	जानने वाला	सुनने वाला	वही	वेशाव वह
تَنْزَلُ عَلَىٰ كُلِّ آفَاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثُرُهُمْ كَذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾										
223	झूटे	और उन में अक्सर	सुनी सुनाई बात	डाल दिए हैं	222	गुनाहगार	बुहतान लगाने वाला	हर	पर	वह उतरते हैं
وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ										
हर वादी में		कि वह	क्या तुम ने नहीं देखा	224	गुमराह लोग	उन की पैरवी करते हैं	और शायर (जमा)			
يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا										
ईमान लाए	जो लोग	मगर	226	वह करते नहीं	जो	वह कहते हैं	और यह कि वह	225	सरगर्दा फिरते हैं	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ										
उस के बाद		और उन्होंने ने बदला लिया		वकसूरत	और अल्लाह को याद किया		अच्छे		और उन्होंने ने अमल किए	
مَا ظَلَمُوا ۖ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾										
227	वह उलटते हैं (उन्हें लौट कर जाना है)	लौटने की जगह (करवट)		किस	जुलम किया	वह लोग जिन्होंने	और अनकरीब जान लेंगे	कि उन पर जुलम हुआ		
آيَاتُهَا ٩٣ ﴿٢٧﴾ سُورَةُ النَّمْلِ ﴿٢٧﴾ زُكُوعَاتُهَا ٧										
रुकुआत 7			(27) सूरतुन नमल चीटीयाँ				आयात 93			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है										
طَسَّ تِلْكَ آيَةُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُبِينٍ ﴿١﴾ هُدًى										
हिदायत	1	रोशन, वाज़ेह		और किताब	कुरआन	आयतें	यह	ताा सीन		
وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢﴾ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ										
ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	काइम रखते हैं	जो लोग	2	मोमिनों के लिए	और खुशख़बरी			
وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ										
आखिरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	वेशक	3	यकीन रखते हैं	वह	आखिरत पर	और वह		
زَيْنًا لَهُمْ أَعْمَالُهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ﴿٤﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ										
वह लोग जो	यही लोग	4	भटकते फिरते हैं	पस वह	उन के अमल	आरास्ता कर दिखाए हम ने उन के लिए				
لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْآخَسَرُونَ ﴿٥﴾										
5	सब से बढ़ कर खसारा उठाने वाले		वह	आखिरत में	और वह	अज़ाब	बुरा	उन के लिए		

फिर अगर तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो कह दें जो तुम करते हो वेशक मैं उस से बेज़ार हूँ। (216)

और तुम भरोसा करो ग़ालिब, निहायत मेहरवान पर। (217)

जो तुम्हें देखता है जब तुम (नमाज़ में) खड़े होते हो। (218)

और नमाज़ियों में तुम्हारा फिरना (भी देखता है)। (219)

वेशक वही सुनने वाला जानने वाला है। (220)

क्या मैं तुम्हें बताऊँ किस पर शैतान उतरते हैं? (221)

वह उतरते हैं बुहतान लगाने वाले, गुनाहगार पर। (222)

(शैतान) सुनी सुनाई बात (उन के कान में) डाल देते हैं और उन में अक्सर झूटे हैं। (223)

और (रहे) शायर उन की पैरवी करते हैं। (224)

क्या तुम ने नहीं देखा? कि वह हर वादी में सरगर्दा फिरते हैं। (225)

और यह कि वह कहते हैं जो वह करते नहीं। (226)

सिवाए उन के जो ईमान लाए, और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, और अल्लाह को याद किया वकसूरत, और उन्होंने ने उस के बाद बदला लिया कि उन पर जुलम हुआ, और जिन लोगों ने जुलम किया वह अनकरीब जान लेंगे कि किस करवट उन्हें लौट कर जाना है। (227)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है तासीन - यह आयतें हैं कुरआन और रोशन वाज़ेह किताब की। (1)

हिदायत और खुशख़बरी मोमिनों के लिए। (2)

जो लोग नमाज़ काइम रखते हैं, और ज़कात अदा करते हैं, और आख़िरत पर यकीन रखते हैं। (3)

वेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के अमल उन के लिए आरास्ता कर दिखाए हैं, पस वह भटकते फिरते हैं। (4)

यही हैं वह लोग जिन के लिए बुरा अज़ाब है, और वह आख़िरत में सब से बढ़ कर ख़सारा उठाने वाले हैं। (5)

और वेशक तुम्हें कुरआन हिक्मत वाले इल्म वाले की तरफ से दिया जाता है। (6)

(याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने घर वालों से कहा वेशक मैं ने देखी है एक आग, मैं अभी तुम्हारे पास उस की कोई खबर लाता हूँ या आग का अंगारा तुम्हारे पास लाता हूँ ताकि तुम सेंको। (7)

पस जब वह आग के पास आया (अल्लाह तआला की तरफ से) निदा दी गई कि वरकत दिया गया जो आग में (जलवा अफरोज है) जो उस के आस पास है (मूसा अ) और पाक है अल्लाह सारे जहानों का परवरदिगार। (8)

ऐ मूसा (अ) हकीकत यह है कि मैं ही अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला हूँ। (9) और तू अपना असा (नीचे) डाल दे पस जब उस ने उसे लहराता हुआ देखा गोया वह सांप है तो (मूसा अ) पीठ फेर कर लौट गया और उस ने मुड़ कर न देखा, (इरशाद हुआ) ऐ मूसा (अ)! तू खौफ न खा, वेशक मेरे पास रसूल खौफ नहीं खाते। (10)

मगर जिस ने जुल्म किया, फिर उस ने बुराई के बाद उसे भलाई से बदल डाला तो वेशक मैं बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान हूँ। (11) और अपना हाथ अपने गरेबान में डाल वह किसी ऐब के बगैर सफ़ेद रोशन (हो कर) निकलेगा, नौ (9) निशानियाँ में से (यह दो मोजिजे ले कर) फिरऔन और उस की कौम की तरफ (जा), वेशक वह नाफ़रमान कौम है। (12)

फिर जब उन के पास आई हमारी निशानियाँ आँखें खोलने वाली, वह बोले यह खुला जादू है। (13) हालांकि उन के दिलों को उस का यकीन था, उन्होंने ने उस का इन्कार किया जुल्म और तकब्बुर से। तो देखो! फ़साद करने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? (14) और तहकीक हम ने दिया दाऊद (अ)

और सुलेमान (अ) को इल्म, और उन्होंने ने कहा तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने हमें फ़ज़ीलत दी अक्सर अपने मोमिन बन्दों पर। (15)

और सुलेमान (अ), दाऊद (अ) का वारिस हुआ, और उस ने कहा ऐ लोगो! मुझे सिखाई गई है परिन्दों की बोली, और हमें हर चीज़ (नेमत) से दी गई है, वेशक यह खुला फ़ज़ल है। (16)

وَإِنَّكَ لَتَلْقَى الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ﴿٦﴾ إِذْ قَالَ مُوسَى

मूसा (अ)	कहा	जब	6	इल्म वाला	हिक्मत वाला	नज़्दीक (जानिव) से	कुरआन	दिया जाता है	और वेशक तुम

لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَاتِيكُمْ مِنْهَا بَخِيرٌ أَوْ آتِيكُمْ بِشَهَابٍ قَبَسٍ

अंगारा	शोला	या लाता हूँ तुम्हारे पास	कोई ख़बर	उस की	मैं अभी लाता हूँ	एक आग	मैं ने देखी है	वेशक मैं	अपने घर वालों से

لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٧﴾ فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ

आग में	जो	कि वरकत दिया गया	आवाज़ दी गई	उस (आग) के पास आया	पस जब	7	तुम सेंको	ताकि तुम

وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَنَ اللَّهُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨﴾ يَمْوَسَّىٰ إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ

मैं अल्लाह	हकीकत यह	ऐ मूसा (अ)	8	परवरदिगार सारे जहानों का	और पाक है अल्लाह	उस के आस पास	और जो

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾ وَالْقِيَاسُ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ

सांप	गोया कि वह	लहराता हुआ	उसे देखा	पस जब उस ने	अपना असा	और तू डाल	9	हिक्मत वाला	ग़ालिब

وَلِي مُدْبِرٍ وَلَمْ يُعَقِّبْ يَمْوَسَّى لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَى

मेरे पास	खौफ़ नहीं खाते	वेशक मैं	तू खौफ़ न खा	ऐ मूसा (अ)	और मुड़ कर न देखा	वह लौट गया पीठ फेर कर

الْمُرْسَلُونَ ﴿١٠﴾ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي

तो वेशक मैं	बुराई	बाद	भलाई	फिर उस ने बदल डाला	जुल्म किया	जो - जिस	मगर	10	रसूल (जमा)

غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١﴾ وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضًا مِنْ

से - के	सफ़ेद - रोशन	वह निकलेगा	अपने गरेबान में	अपना हाथ	और दाखिल कर (डाल)	11	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला

غَيْرِ سُوءٍ فِي تِسْعِ آيَاتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ إِنَّهُمْ كَانُوا

हैं	वेशक वह	और उस की कौम	फिरऔन	तरफ़	नौ (9) निशानियाँ	में	किसी ऐब के बगैर

قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿١٢﴾ فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَذَا

यह	वह बोले	आँखें खोलने वाली	हमारी निशानियाँ	आई उन के पास	फिर जब	12	नाफ़रमान	कौम

سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾ وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا

और तकब्बुर से	जुल्म से	उन के दिल	हालांकि उस का यकीन था	उस का	और उन्होंने ने इन्कार किया	13	जादू खुला

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ

दाऊद (अ)	और तहकीक दिया हम ने	14	फ़साद करने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो देखो

وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا وَقَالَا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ

अपने बन्दे	से	अक्सर	पर	फ़ज़ीलत दी हमें	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और उन्होंने ने कहा	बड़ा इल्म	और सुलेमान (अ)

الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُدَ وَقَالَ يَأَيُّهَا النَّاسُ عَلِمْنَا

हमें सिखाई गई	ऐ लोगो	और उस ने कहा	दाऊद (अ)	सुलेमान (अ)	और वारिस हुआ	15	मोमिनीन

مِنْطَقَ الطَّيْرِ وَأَوْتَيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾

16	खुला	फ़ज़ल	अलबत्ता वही	यह वेशक	हर चीज़ से	से	और हमें दी गई	परिन्दे (जमा)	बोली

وَحْشِرَ لِسُلَيْمَانَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٧﴾								
17	तरतीब में रखे जाते थे	पस वह	और परिन्दे	और इन्सान	जिन्न	से	उस का लशकर	सुलेमान (अ) के लिए और जमा किया गया
حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا عَلَىٰ وَادِ التَّمَلِّ ۖ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا								
तुम दाखिल हो	ऐ चींटियों	एक चींटी	कहा	चींटियों का मैदान	पर	आए	जब वह	यहाँ तक कि
مَسْكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ وَجُنُودُهُ ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾								
18	न जानते हों (उन्हें मालूम न हो)	और वह	और उस का लशकर	सुलेमान (अ)	न रौन्द डाले तुम्हें	अपने घरों (बिलों) में		
فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ								
कि मैं शुक्र अदा करूँ	मुझे तौफीक दे	ऐ मेरे रब	और कहा	उस की बात	से	हँसते हुए	तो वह मुसकुराया	
نِعْمَتِكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا								
मैं नेक काम करूँ	और यह कि	मेरे माँ बाप	और पर	मुझ पर	तू ने इन्शाम फरमाई	वह जो	तेरी नेमत	
تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ								
और उस ने खबर ली (जाइज़ा लिया)	19	नेक (जमा)	अपने बन्दे	में	अपनी रहमत से	और मुझे दाखिल फ़रमा	तू वह पसंद करे	
الطَّيْرِ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدْهُدَ ۖ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ ﴿٢٠﴾								
20	गाइब हाने वाले	से	क्या वह है	हुद हुद	मैं नहीं देखता	क्या है	तो उस ने कहा	परिन्दे
لَأَعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِي بِسُلْطٰنٍ								
सनद (कोई वजह)	या उसे ज़रूर लानी चाहिए	या उसे जुबह कर डालूँगा	सख़्त	सज़ा	अलबत्ता मैं ज़रूर उसे सज़ा दूँगा			
مُبِينٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ								
तुम को मालूम नहीं वह	वह जो	मैं ने मालूम किया है	फिर कहा	थोड़ी सी	सो उस ने देर की	21	वाज़ेह (माकूल)	
وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَأٍ يَقِينٍ ﴿٢٢﴾ إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ								
वह बादशाहत करती है उन पर	एक औरत	पाया (देखा)	वेशक मैं ने	22	यकीनी	एक ख़बर	सबा से	और मैं तुम्हारे पास लाया हूँ
وَأُوتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا								
और उस की कौम	मैं ने पाया है उसे	23	बड़ा	एक तख़्त	और उस के लिए	हर शै	और दी गई है	
يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ								
उन के आमाल	शैतान	उन्हें	और आरास्ता कर दिखाए है	अल्लाह के सिवा	सूरज को	वह सिज्दा करते हैं		
فَصَدَّهُمُ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٢٤﴾ أَلَا يَسْجُدُوا لِلَّهِ								
वह सिज्दा करते अल्लाह को	कि नहीं	24	राह नहीं पाते	सो वह	रास्ते से	पस रोक दिया उन्हें		
الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبَاءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ								
जो तुम छुपाते हो	और जानता है	और ज़मीन	आस्मानों में	छुपी हुई	निकालता है	वह जो		
وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٥﴾ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٢٦﴾								
26	अर्श अज़ीम	रब	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	अल्लाह	25	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो

और सुलेमान (अ) के लिए उस का लशकर जिन्नों, इन्सानों और परीन्दों का जमा किया गया, पस वह तरतीब में रखे जाते थे। (17) यहां तक कि वह चींटियों के मैदान में आए, एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियों! तुम अपने बिलों में दाखिल हो जाओ, (कहीं) सुलेमान (अ) और उस का लशकर तुम्हें रौन्द न डाले और उन्हें ख़बर भी न हो। (18) तो वह हँसते हुए मुसकुराया उस की बात से, और कहा ऐ मेरे रब! मुझे तौफीक दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूँ जो तू ने मुझ पर इन्शाम फ़रमाई है, और मेरे माँ बाप पर, और यह कि मैं नेक काम करूँ जो तू पसंद करे और अपनी रहमत से मुझे अपने नेक बन्दों में दाखिल फ़रमा ले। (19) और उस ने परिन्दों का जाइज़ा लिया तो कहा क्या (बात) है मैं हुद हुद को नहीं देखता, क्या वह गाइब हो जाने वालों में से है? (20) अलबत्ता मैं उसे ज़रूर सख़्त सज़ा दूँगा या उसे जुबह कर डालूँगा, या उसे ज़रूर कोई माकूल वजह मेरे पास लानी (पेश करनी) चाहिए। (21) सो उस (हुद हुद) ने थोड़ी सी देर की, फिर कहा मैं ने मालूम किया है वह जो तुम को मालूम नहीं, और मैं तुम्हारे पास सबा से एक यकीनी ख़बर लाया हूँ। (22) वेशक मैं ने एक औरत को देखा है, वह उन पर बादशाहत करती है, और (उसे) हर शै दी गई है, और उस के लिए एक बड़ा तख़्त है। (23) मैं ने उसे और उस की कौम को अल्लाह के सिवा (अल्लाह को छोड़ कर) सूरज को सिज्दा करते पाया है, और शैतान ने उन्हें आरास्ता कर दिखाया है उन के अमल, पस उन्हें (सीधे) रास्ते से रोक दिया है सो वह राह नहीं पाते। (24) और अल्लाह को (क्यों) सिज्दा नहीं करते? वह जो आस्मानों में और ज़मीन में छुपी हुई (चीज़ों को) निकालता है, और जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। (25) अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अर्श अज़ीम का मालिक है। (26)

सुलेमान (अ) ने कहा, हम अभी देख लेंगे क्या तू ने सच कहा है? या तू झूटों में से है (झूटा है)? (27)

मेरा यह ख़त ले जा, पस यह उन की तरफ़ डाल दे, फिर उन से लौट आ, फिर देख वह क्या जवाब देते हैं! (28) वह औरत कहने लगी, ऐ सरदारो! वेशक मेरी तरफ़ एक वा वक़्अत ख़त डाला गया है। (29)

वेशक वह सुलेमान (अ) (की तरफ़) से है और वेशक वह (यूँ है) “अल्लाह के नाम से जो रहम करने वाला निहायत मेहरबान है”। (30)

यह कि मुझ पर (मेरे मुकाबले में) सरकशी न करो, और मेरे पास आओ फ़रमावरदार हो कर। (31)

वह बोली, ऐ सरदारो! मेरे मामले में मुझे राए दो, मैं किसी मामले में फ़ैसला करने वाली नहीं (फ़ैसला नहीं करती)

जब तक तुम मौजूद (न) हो। (32) वह बोले हम कुव्वत वाले, बड़े लड़ने वाले हैं, और फ़ैसला तेरे इख़्तियार में है, तू देख ले तुझे क्या हुक्म करना है। (33)

वह बोली, वेशक जब बादशाह किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे तवाह कर देते हैं, और वहां के मुअज़्ज़िज़ीन को ज़लील कर दिया करते हैं, और वह उड़ी तरह करते हैं। (34)

और वेशक मैं उन की तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूँ, फिर देखती हूँ क्या जवाब ले कर लौटते हैं कासिद। (35)

पस जब सुलेमान (अ) के पास कासिद आया तो उस ने कहा कि तुम माल से मेरी मदद करते हो? पस जो अल्लाह ने मुझे दिया है वह बेहतर है उस से जो उस ने तुम्हें दिया है, बल्कि तुम अपने तोहफ़े से खुश होते हो। (36)

तू उन की तरफ़ लौट जा, सो हम उन पर ज़रूर लाएंगे ऐसा लशकर जिस (के मुकाबले) की उन्हें ताक़त न होगी, और हम ज़रूर उन्हें वहां से ज़लील कर के निकाल देंगे। और वह ख़ार होंगे। (37)

सुलेमान (अ) ने कहा ऐ सरदारो! तुम में कौन उस का तख़्त मेरे पास लाएगा? इस से क़ब्ल कि वह मेरे पास फ़रमावरदार हो कर आए। (38)

कहा जिन्नात में से एक क़वी हैकल ने, वेशक मैं उस को आप के पास इस से क़ब्ल ले आऊंगा कि आप अपनी जगह से खड़े हों, मैं वेशक उस पर अलबत्ता कुव्वत वाला, अमानतदार हूँ। (39)

قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾ اذْهَبْ بِكِتَابِي									
मेरा ख़त	ले जा	27	झूटे	से	तू है	या	क्या तू ने सच कहा	उस (सुलेमान अ) ने कहा अभी हम देख लेंगे	
هَذَا فَالْقِهِ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ									
वह कहने लगी	28	वह जवाब देते हैं	क्या	फिर देख	उन से	फिर लौट आ	उन की तरफ़	पस उसे डाल दे	यह
يَا أَيُّهَا الْمَلَأُوا إِنِّي أُلْقِيَ إِلَيْ كِتَابٍ كَرِيمٍ ﴿٢٩﴾ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمٍ وَإِنَّهُ									
और वेशक वह	सुलेमान (अ)	से	वेशक वह	29	वा वक्अत	ख़त	मेरी तरफ़	डाला गया	ऐ सरदारो!
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿٣٠﴾ أَلَا تَعْلَمُونَ عَلَىٰ وَأَتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣١﴾									
31	फरमावरदार हो कर	और मेरे पास आओ	मुझ पर	यह कि तुम सरकशी न करो	30	रहम करने वाला	निहायत मेहरबान	नाम से अल्लाह के	
قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُوا أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا									
किसी मामला	फैसला करने वाली	मैं नहीं हूँ	मेरे मामले में	मुझे राए दो	ऐ सरदारो!		वह बोली		
حَتَّى تَشْهَدُونَ ﴿٣٢﴾ قَالُوا نَحْنُ أَوْلُوا قُوَّةً وَأَوْلُوا بِأَسْ شَدِيدَةٍ									
और बड़े लड़ने वाले			कुव्वत वाले	हम	वह बोले	32	तुम मौजूद हो	जब तक	
وَالْأَمْرُ إِلَيْكَ فَانْظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ									
बादशाह (जमा)	वेशक	वह बोली	33	तुझे हुक्म करना है	क्या	तू देख ले	और फैसला तेरी तरफ़ (तेरे इख्तियार में)		
إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً									
ज़लील	वहां के	मुअज़्ज़िज़ीन	और कर दिया करते हैं	उसे तवाह कर देते हैं	कोई बस्ती	जब दाखिल होते हैं			
وَكَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٣٤﴾ وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنْظُرْهُ بِمَ يَرْجِعُ									
क्या (जवाब) ले कर लौटते हैं	फिर देखती हूँ	एक तोहफ़ा	उन की तरफ़	भेजने वाली	और वेशक मैं	34	वह करते हैं	और उसी तरह	
الْمُرْسَلُونَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَنُ قَالَ أَتُمِدُّونَ بِمَالٍ فَمَا									
पस जो	माल से	क्या तुम मेरी मदद करते हो	उस ने कहा	सुलेमान (अ)	आया	पस जब	35	कासिद	
اتَّسِنَ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا اتَّكُمَ ۚ بَلْ أَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ									
तू लौट जा	36	खुश होते हो	अपने तोहफ़े से	तुम	बल्कि	उस ने तुम्हें दिया	उस से जो	बेहतर	मुझे दिया अल्लाह ने
إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُمْ بِجُنُودٍ لَا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا									
वहां से	और ज़रूर निकाल देंगे उन्हें	उस की	उन को	न ताक़त होगी	ऐसा लशकर	हम ज़रूर लाएंगे उन पर	उन की तरफ़		
أَذِلَّةً ۚ وَهُمْ صَعِرُونَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُوا أَيُّكُمْ يَأْتِينِي بِعَرْشِهَا									
उस का तख़्त	मेरे पास लाएगा	तुम में से कौन	उस (सुलेमान अ) ने कहा ऐ सरदारो!		37	ख़ार होंगे	और वह	ज़लील कर के	
قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٨﴾ قَالَ عَفَرْتُكَ مِنَ الْجِنَّ أَنَا أَتَيْكَ									
मैं आप के पास ले आऊंगा	जिन्नात से	एक क़वी हैकल	कहा	38	फरमावरदार हो कर	वह आए मेरे पास	कि	इस से क़ब्ल	
بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ مِنْ مَّقَامِكَ ۖ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ﴿٣٩﴾									
39	अमानतदार	अलबत्ता कुव्वत वाला	उस पर	और वेशक मैं	अपनी जगह से		कि आप खड़े हों	इस से क़ब्ल	उस को

٢
١٤

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ							
कहल	मैं उस को तुम्हारे पास ले आऊंगा	मैं	किताब	से - का	इल्म	उस के पास	उस ने जो कहा
أَنْ يَّرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ فَلَمَّا رَأَاهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ قَالَ							
उस ने कहा	अपने पास	रखा हुआ	पस जब सुलेमान (अ) ने उसे देखा	तुम्हारी निगाह (पलक झपकें)	तुम्हारी तरफ	कि फिर आए	
هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي ؕ أَشْكُرْ أَمْ أَكْفُرُ وَمَنْ							
और जिस	या नाशुकी करता हूँ	आया मैं शुक्र करता हूँ	ताकि मुझे आजमाए	मेरे रब का फज़ल	से	यह	
شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ							
वेनियाज़	मेरा रब	तो वेशक	नाशुकी की	और जिस	अपनी ज़ात के लिए	शुक्र करता है	तो पस वह शुक्र किया
كَرِيمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ نَكِّرُوا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرَ أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ							
या होती है	आया वह राह पाती (समझ जाती) है	हम देखें	उस का तख़्त	उस के लिए	शकल बदल दो	उस ने कहा	करम करने वाला 40
مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٤١﴾ فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا							
क्या ऐसा ही है	कहा गया	वह आई	पस जब	41	राह नहीं पाते	जो लोग	से
عَرْشُكَ قَالَتْ كَانَ لَهُ هُوَ وَأُوتِينَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا							
इस से क़व्ल	इल्म	और हमें दिया गया	वही	गोया कि यह	वह बोली	तेरा तख़्त	
وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ							
अल्लाह के सिवा	वह परस्तिश करती थी	जो	और उस ने उस को रोका	42	मुसलमान - फ़रमांवरदार	और हम हैं	
إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٤٣﴾ قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ							
महल	तू दाखिल हो	उस से	कहा गया	43	काफ़िरों	क़ौम से	थी वेशक वह
فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِهَا قَالَ إِنَّهُ							
वेशक यह	उस ने कहा	अपनी पिंडलियाँ	से	और खोल दी	गहरा पानी	उसे समझा	उस ने उस को देखा पस जब
صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيرَ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي							
अपनी जान	वेशक मैं ने जुल्म किया	ऐ मेरे रब	वह बोली	शीशे (जमा)	से	जुड़ा हुआ	महल
وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ							
तरफ	और तहकीक हम ने भेजा	44	तमाम जहानों का रब	अल्लाह के लिए	सुलेमान (अ)	साथ	और मैं ईमान लाई
ثَمُودَ أَخَاهُمْ ضَلَحًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ							
दो फ़रीक हो गए	वह	पस नागहां	अल्लाह की इबादत करो	कि	सालेह (अ)	उन के भाई	समूद
يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يَقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ							
पहले	बुराई के लिए	तुम जल्दी करते हो	क्यों	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	45	वाहम झगड़ने लगे
الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٦﴾							
46	तुम पर रहम किया जाए	ताकि तुम	तुम बख़्शिश मांगते अल्लाह से	क्यों नहीं	भलाई		

उस शख्स ने कहा जिस के पास किताब (इलाही) का इल्म था, मैं उस को तुम्हारे पास उस से क़व्ल ले आऊंगा कि तुम्हारी आँख पलक झपके, पस जब सुलेमान (अ) ने (अचानक) उसे अपने पास रखा हुआ देखा तो उस ने कहा यह मेरे रब के फज़ल से है, ताकि वह मुझे आजमाए आया मैं शुक्र करता हूँ या नाशुकी करता हूँ? और जिस ने शुक्र किया तो पस वह अपनी ज़ात के लिए शुक्र करता है, और जिस ने नाशुकी की तो वेशक मेरा रब वेनियाज़, करम करने वाला है। (40)

उस ने कहा उस (मलिका के इमतिहान के लिए) उस के तख़्त की शकल बदल दो, हम देखें कि आया वह समझ जाती है या उन लोगों में से होती है जो नहीं समझते। (41)

पस जब वह आई (उस से) कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है? वह बोली गोया कि यह वही है और हमें इस से पहले ही इल्म दिया गया (इल्म हो गया था) और हम हैं मुसलमान (फ़रमांवरदार)। (42)

और उस को (ईमान लाने से) रोक रखा था उन माबूदों ने जिन की वह अल्लाह के सिवा परस्तिश करती थी, क्योंकि वह काफ़िरों की क़ौम से थी। (43)

उस से कहा गया कि महल में दाखिल हो, जब उस (मलिका) ने उस (के फ़र्श) को देखा तो उसे गहरा पानी समझा और (पाएँ उठा कर) अपनी पिंडलियाँ खोल दी, उस (सुलेमान अ) ने कहा वेशक यह शीशों से जुड़ा हुआ महल है, वह बोली ऐ मेरे रब! वेशक मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया, और (अब) मैं सुलेमान (अ) के साथ (सुलेमान अ के तरीके पर) तमाम जहानों के रब अल्लाह पर ईमान लाई। (44)

और तहकीक हम ने (क़ौम) समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अ) को भेजा कि अल्लाह की इबादत करो, पस नागहां वह दो फ़रीक हो गए वाहम झगड़ने लगे। (45)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी करते हो? क्यों नहीं तुम अल्लाह से बख़्शिश मांगते, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (46)

वह बोले हम ने तुझ से और तेरे साथियों से बुरा शगुन लिया है, उस ने कहा तुम्हारी बदशगुनी अल्लाह के पास (अल्लाह की तरफ से) है बल्कि तुम एक कौम हो (जो) आजमाए जाते हो। (47)

और शहर में थे नौ (9) शख्स वह मुल्क में फसाद करते थे, और इसलाह न करते थे। (48)

वह कहने लगे तुम बाहम अल्लाह की कसम खाओ अलबत्ता हम ज़रूर उस पर और उस के घर वालों पर शबखून मारेंगे और फिर उस के वारिसों को कह देंगे, हम उस के घर वालों की हलाकत के वक्त मौजूद न थे, और वेशक हम अलबत्ता सच्चे हैं। (49)

और उन्होंने ने एक मक्क किया और हम ने (भी) एक खुफिया तदवीर की और वह न जानते थे (वेखबर) थे। (50)

पस देखो उन के मक्क का अन्जाम कैसा हुआ! कि हम ने उन्हें और उन की कौम सब को हलाक कर डाला। (51)

अब यह उन के घर हैं, गिरे पड़े, उन के जुल्म के सबब, वेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो जानते हैं। (52)

और हम ने उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और वह परहेज़गारी करते थे। (53)

और (याद करो) जब लूत (अ) ने अपनी कौम से कहा क्या तुम बेहयाई पर उतर आए हो? और तुम देखते हो। (54)

क्या तुम औरतों को छोड़ कर मर्दों के पास शहवत रानी के लिए आते हो? बल्कि तुम लोग जहालत करते हो। (55)

पस उस की कौम का जवाब सिर्फ यह था कि लूत (अ) के साथियों को निकाल दो अपने शहर से, वेशक यह लोग पाकीज़गी पसंद करते हैं। (56)

सो हम ने उसे बचा लिया और उस के घर वालों को सिवाए उस की बीबी के, उसे हम ने पीछे रह जाने वालों में से ठहरा दिया था। (57)

और हम ने उन पर एक बारिश बरसाई, सो क्या ही बुरी बारिश थी डराए गए लोगों पर। (58)

आप (स) फरमा दें तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं और उस के बन्दों पर सलाम हो जिन्हें उस ने चुन लिया, क्या अल्लाह बेहतर है या वह जिन्हें वह शरीक ठहराते हैं? (59)

قَالُوا أَظَيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَعَكَ قَالَ طَرِكُمْ عِنْدَ اللَّهِ بَلْ								
वल्कि	अल्लाह के पास	तुम्हारी बदशगुनी	उस ने कहा	तेरे साथ (साथी)	और वह जो	तुझ से	बुरा शगुन	वह बोले
أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٤٧﴾ وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ								
वह फ़साद करते थे	शख्स	नौ (9)	शहर में	और थे	47	आज़माए जाते हो	एक कौम	तुम
فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٤٨﴾ قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ								
अलबत्ता हम ज़रूर शबखून मारेंगे उस पर	अल्लाह की	तुम बाहम कसम खाओ	वह कहने लगे	48	और इसलाह नहीं करते थे	ज़मीन (मुल्क) में		
وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَدِيقُونَ ﴿٤٩﴾								
और उस के घर वाले	फिर ज़रूर हम कह देंगे	उस के वारिसों से	हम मौजूद न थे	हलाकत के वक़्त	उस के घर वाले	और	अलबत्ता सच्चे हैं	49
وَمَكْرُوا مَكْرًا وَمَكْرْنَا مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٠﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ								
और उन्होंने ने मक्क़ किया	एक तदवीर	और हम ने खुफ़िया तदवीर की	एक तदवीर	और वह	न जानते थे	50	पस देखो	कैसा
كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ أَنَّا دَمَرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥١﴾ فَتِلْكَ								
हुआ	अन्जाम	उन का मक्क़	कि हम	हम ने तबाह कर दिया उन्हें	और उन की कौम	सब को	51	अब यह
بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥٢﴾								
उन के घर	गिरे पड़े	उन के जुल्म के सबब	वेशक	उस में	अलबत्ता निशानी	लोगों के लिए जो जानते हैं	52	
وَأَنْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾ وَلُوطًا إِذْ قَالَ								
और हम ने नजात दी	वह लोग जो	वह ईमान लाए	और वह परहेज़गारी करते थे	53	और लूत (अ)	जब उस ने कहा		
لِّقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾ أَيْنَكُمْ								
अपनी कौम से	क्या तुम आगए	बेहयाई	और तुम	देखते हो	54	क्या तुम		
لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَاءِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ								
आते हो	मर्दों के पास	शहवत रानी के लिए?	औरतों के सिवा (औरतों को छोड़ कर)	वल्कि	तुम	लोग		
تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوْنَا								
जहालत करते हो	55	पस न	था	जवाब	उस की कौम	मगर-सिर्फ़ यह कि	उन्होंने ने कहा	निकाल दो
إِلَّا لُوطٌ مِّنْ قَرَبَيْكُم إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾ فَانْجَيْنَهُ								
लूत (अ) के साथी	से	अपना शहर	वेशक वह	लोग	पाकीज़गी पसंद करते हैं	56	सो हम ने उसे बचा लिया	
وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَرْنَاهَا مِنَ الْغَيْرِينَ ﴿٥٧﴾ وَأَمْطَرْنَا								
और उस के घर वाले	सिवाए	उस की बीबी	हम ने उसे ठहरा दिया था	से	पीछे रह जाने वाले	57	और हम ने बरसाई	
عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٥٨﴾ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ								
उन पर	एक बारिश	सो क्या ही बुरा	बारिश	डराए गए	58	फरमा दें	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और सलाम
عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾								
उस के बन्दों पर	वह जिन्हें	चुन लिया	क्या अल्लाह	बेहतर	या जो	वह शरीक ठहराते हैं	59	

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ						
से	तुम्हारे लिए	और उतारा	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	भला कौन?
السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَاتَّبَعْنَاهُ بِهَدْيِهِ ۚ مَا كَانَ						
न था	वा रौनक	बागात	उस से	पस उगाए हम ने	पानी	आस्मान
لَكُمْ أَنْ تُبْشِرُوا شَجَرَهَا ۚ ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿٦٠﴾						
60	कज रवी करते है	लोग	वह	बल्कि	अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद उन के दरख्त कि तुम उगाओ तुम्हारे लिए
أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَالَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ						
और (पैदा) किए	नदी नाले	उस के दरमियान	और (जारी) किया	करारगाह	ज़मीन	बनाया भला कौन - किस
لَهَا رَوَاسِي ۚ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۚ ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ						
अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	आड़ (हदे फ़ासिल)	दो दर्या	दरमियान	और बनाया	पहाड़ (जमा) उस के लिए
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾ أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ						
वह उसे पुकारता है	जब	बेकरार	कुबूल करता है	भला कौन	61	नहीं जानते उन के अक्सर बल्कि
وَيَكْشِفُ السُّوءَ ۚ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۚ ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ						
अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	ज़मीन	नाइब (जमा)	और तुम्हें बनाता है	बुराई	और दूर करता है
فَلِيلًا مَّا تَذْكُرُونَ ﴿٦٢﴾ أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ						
खुशकी	अन्धेरो में	तुम्हें राह दिखाता है	भला कौन	62	नसीहत पकड़ते है	जो थोड़े
وَالْبَحْرِ ۚ وَمَنْ يُرْسِلُ الرِّيْحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۚ						
उस की रहमत	पहले	खुशखबरी देने वाली	हवाएं	चलाता है	और कौन	और समुन्दर
ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ ۚ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٣﴾ أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ						
पहली बार पैदा करता है मख्लूक	भला कौन	63	यह शरीक ठहराते है	उस से जो	वरतर है अल्लाह	अल्लाह के साथ क्या कोई माबूद
ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ						
और ज़मीन	आस्मान से	तुम्हें रिज़क देता है	और कौन	फिर वह उसे दोबारा (ज़िन्दा) करेगा		
ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦٤﴾						
64	सच्चे	तुम हो	अगर	अपनी दलील	ले आओ तुम	अल्लाह के साथ क्या कोई माबूद
قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ						
गैब	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	नहीं जानता	फरमा दें	
إِلَّا اللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾ بَلِ ادْرَكَ عَنْهُمْ						
उन का इल्म	बल्कि थक कर रह गया	65	वह उठाए जाएंगे	कब	और वह नहीं जानते	सिवाए अल्लाह के
فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْهَا ۚ بَلْ هُمْ مِنْهَا عَمُونَ ﴿٦٦﴾						
66	अन्धे	उस से	वह	बल्कि	उस से	शक में बल्कि वह आखिरत (के बारे) में

भला कौन है? जिस ने आस्मान को और ज़मीन को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से वा रौनक बाग उगाए, तुम्हारे लिए (मुमकिन) न था कि तुम उन के दरख्त उगा सको, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? बल्कि वह लोग कज रवी करते है। (60) भला कौन है? जिस ने ज़मीन को करारगाह बनाया, और उस के दरमियान नदी नाले (जारी किए) और उस के लिए पहाड़ बनाए, और दो दर्याओं के दरमियान हदे फ़ासिल बनाई, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते। (61) भला कौन है? जो बेकरार (की दुआ) कुबूल करता है जब वह उसे पुकारता है, और बुराई दूर करता है, और तुम्हें ज़मीन में नाइब बनाता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? थोड़े हैं जो नसीहत पकड़ते है। (62) भला कौन है जो खुशकी (जंगल) और समुन्दर के अन्धेरो में तुम्हें राह दिखाता है? और कौन है जो उस की रहमत (वारिश) से पहले खुशखबरी देने वाली हवाएं चलाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? अल्लाह वरतर है उस से जो यह शरीक ठहराते है? (63) भला कौन है जो मख्लूक को पहली बार पैदा करता है? फिर वह उसे दोबारा ज़िन्दा करेगा, और कौन है जो तुम्हें रिज़क देता है? आस्मान और ज़मीन से, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? आप (स) फ़रमा दें कि ले आओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। (64) आप (स) फ़रमा दें, जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, अल्लाह के सिवा गैब (की बातें) नहीं जानता, और वह नहीं जानते कि वह कब (जी) उठाए जाएंगे? बल्कि आखिरत के बारे में उन का इल्म थक कर रह गया है। (65) (कुछ भी नहीं) बल्कि वह उस से शक में हैं, बल्कि वह उस से अन्धे हैं। (66)

और काफ़िरो ने कहा क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जाएंगे क्या हम (कब्रों से) निकाले जाएंगे? (67)

तहकीक़ यही वादा हम से और हमारे बाप दादा से इस से क़ब्ल किया गया था, यह सिर्फ़ अगलों की कहाियां हैं। (68)

आप (स) फ़रमा दें ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ मुजरिमों का! (69)

और आप (स) ग़म न खाएं, और आप (स) दिल तंग न हों, उस से जो वह मकर ओ फ़रेव करते हैं। (70)

और वह कहते हैं यह वादा कब पूरा होगा? अगर तुम सच्चे हो। (71)

आप (स) फ़रमा दें शायद उस (अज़ाब) का कुछ तुम्हारे लिए करीब आगया हो जिस की तुम जल्दी करते हो। (72)

और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता लोगों पर फ़ज़ल वाला है, लेकिन उन के अक्सर शुक्र नहीं करते। (73)

और बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उन के दिलों में छुपी हुई है और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (74)

और कुछ गाइब (पोशीदा) नहीं ज़मीन ओ आस्मान में मगर वह किताबे रोशन में (लिखी हुई) है। (75)

बेशक यह कुरआन बनी इस्राईल पर (बनी इस्राईल के सामने) अक्सर वह बातें बयान करता है जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं। (76)

और बेशक यह (कुरआन) अलबत्ता ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रहमत है। (77)

बेशक तुम्हारा रब अपने हुक्म से उन के दरमियान फ़ैसला करता है, और वह ग़ालिब, इल्म वाला है। (78)

पस अल्लाह पर भरोसा करो, बेशक तुम वाज़ेह हक़ पर हो। (79)

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاءُنَا أَيْبًا							
क्या हम	और हमारे बाप दादा	मिट्टी	हम हो जाएंगे	क्या जब	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा	
لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وَعَدْنَا هَذَا نَحْنُ وَآبَاءُنَا							
और हमारे बाप दादा	हम	यह-यही	तहकीक़ वादा किया गया हम से	67	निकाले जाएंगे अलबत्ता		
مِنْ قَبْلُ إِنَّ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيرُوا							
चलो फिरो तुम	फ़रमा दें	68	अगले	कहानियां	मगर-सिर्फ़	यह	नहीं इस से कब्ल
فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٦٩﴾							
69	मुज़रिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	फिर देखो	ज़मीन में	
وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿٧٠﴾							
70	वह मक्कर करते हैं	उस से जो	तंगी में	और आप (स) न हों	उन पर	और तुम ग़म न खाओ	
وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٧١﴾ قُلْ							
फ़रमा दें	71	सच्चे	तुम हो	अगर	वादा	यह	कब और वह कहते हैं
عَسَى أَنْ يَكُونَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٢﴾							
72	तुम जल्दी करते हो	वह जो-जिस	कुछ	तुम्हारे लिए	क़रीब	हो गया हो	कि शायद
وَأَنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ							
उन के अक्सर	और लेकिन	लोगों पर		अलबत्ता फज़ल वाला		तुम्हारा रब	और बेशक
لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا							
और जो	उन के दिल	जो छुपी हुई है	खूब जानता है	तुम्हारा रब	और बेशक	73	शुक्र नहीं करते
يُغْلِبُونَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَآيَةِ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي							
में	मगर	और ज़मीन	आस्मानों में	गाइब	कुछ	और नहीं	74 वह ज़ाहिर करते हैं
كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٧٥﴾ إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَفْصِّلُ عَلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ							
बनी इस्राईल पर		बयान करता है	कुरआन	यह	बेशक	75	किताबे रोशन
أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾ وَإِنَّهُ							
और बेशक यह	76	इख़्तिलाफ़ करते हैं	उस में	वह	वह जो	अक्सर	
لَهُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾ إِنَّ رَبَّكَ							
तुम्हारा रब	बेशक	77	ईमान वालों के लिए		और रहमत	अलबत्ता हिदायत	
يَفْضِلُ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٨﴾							
78	इल्म वाला	ग़ालिब	और वह	अपने हुक्म से	उन के दरमियान	फ़ैसला करता है	
فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ﴿٧٩﴾							
79	वाज़ेह हक़		पर	बेशक तुम	अल्लाह पर	पस भरोसा करो	

إِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَى وَلَا تُسْمِعُ الضُّمَّ الدَّعَاءَ					
पुकार	वहरो को	और तुम नहीं सुना सकते	मुर्दा को	तुम नहीं सुना सकते	वेशक तुम
إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٨٠﴾ وَمَا أَنْتَ بِهَدَى الْعُمَى عَنْ ضَلَالَتِهِمْ					
उन की गुमराही	से	अन्धों को	हिदायत देने वाले	और तुम नहीं	80 पीठ फेर कर जब वह मुड़ जाएं
إِنْ تَسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٨١﴾					
81	फरमांबरदार	पस वह	हमारी आयतों पर	ईमान लाता है	जो मगर-सिर्फ तुम सुनाते नहीं
وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ					
ज़मीन से	एक जानवर	उन के लिए	हम निकालेंगे	उन पर	वाक़े (पूरा) हो जाएगा वादा (अज़ाब) और जब
تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿٨٢﴾					
82	यकीन न करते	हमारी आयात पर	थे	क्यों कि लोग	वह उन से बातें करेगा
وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُكَذِّبُ					
झुटलाते थे	से जो	एक गिरोह	हर उम्मत	से	हम जमा करेंगे और जिस दिन
بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٨٣﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوا قَالَ أَكَذَّبْتُم					
क्या तुम ने झुटलाया	फरमाएगा	जब वह आजाएं	यहां तक	83 उन की जमाअत बन्दी की जाएगी	फिर वह हमारी आयतों को
بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾					
84	तुम करते थे	या क्या	इल्म के	उन को	हालांकि अहाता में नहीं लाए थे मेरी आयात को
وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنْطِقُونَ ﴿٨٥﴾					
85	न बोल सकेंगे वह	पस वह	इस लिए कि उन्होंने ने जुल्म किया	उन पर	वादा (अज़ाब) और वाक़े (पूरा) हो गया
أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لَيْسَكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا					
देखने को	और दिन	उस में	कि आराम हासिल करें	रात	हम ने बनाया कि हम क्या वह नहीं देखते
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ					
फूंक मारी जाएगी	और जिस दिन	86	ईमान रखते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां उस में वेशक
فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ					
ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	तो घबरा जाएगा	सूर में
إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ وَكُلُّ أَتَوْهُ دَخِرِينَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالِ					
पहाड़ (जमा)	और तू देखता है	87	आजिज़ हो कर	उस के आगे आएंगे	और सब अल्लाह चाहे जिसे सिवा
تَحْسِبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ صُنِعَ اللَّهُ					
अल्लाह की कारीगरी	वादलों की तरह चलना	चलेंगे	और वह	जमा हुआ	तो खयाल करता है उन्हें
الَّذِي أَتَقَنَ كُلَّ شَيْءٍ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ﴿٨٨﴾					
88	तुम करते हो	उस से जो	वाख़बर	वेशक वह	हर शै खूबी से बनाया वह जिस ने

वेशक तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, न बहरों को (अपनी) पुकार सुना सकते हो (खुसूसन) जब वह पीठ फेर कर मुड़ जाएं। (80) और तुम अन्धों को उन की गुमराही से हिदायत देने वाले नहीं। तुम सिर्फ (उस को) सुना सकते हो जो ईमान लाता है हमारी आयतों पर, पस वह फरमांबरदार है। (81) और जब उन पर वादा-ए-अज़ाब पूरा हो जाएगा तो हम उन के लिए निकालेंगे ज़मीन से एक जानवर, वह उन से बातें करेगा क्यों कि लोग हमारी आयतों पर यकीन न करते थे। (82) और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह जमा करेंगे उन में से जो हमारी आयतों को झुटलाते थे, फिर उन की जमाअत बन्दी की जाएगी। (83) यहां तक कि जब वह आजाएंगे (अल्लाह तआला) फरमाएगा क्या तुम ने मेरी आयतों को झुटलाया था हालांकि तुम उन को (अपने) अहाता-ए-इल्म में भी नहीं लाए थे (या बतलाओ) तुम क्या करते थे? (84) और उन पर वादा-ए-अज़ाब पूरा हो गया, इस लिए कि उन्होंने ने जुल्म किया था, पस वह बोल न सकेंगे। (85) क्या वह नहीं देखते कि हम ने रात को इस लिए बनाया कि वह उस में आराम हासिल करें और दिन देखने को (रोशन बनाया) वेशक उस में अलबत्ता उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (86) और जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी तो घबरा जाएगा जो भी आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, सिवाए उस के जिसे अल्लाह चाहे और वह सब उस के आगे आजिज़ हो कर आएंगे। (87) और तू पहाड़ों को देखता है तो उन्हें (अपनी जगह) जमा हुआ खयाल करता है, और वह (कियामत के दिन) वादलों की तरह चलेंगे (उड़ते फिरेंगे), अल्लाह की कारीगरी है जिस ने हर शै को खूबी से बनाया है वेशक वह उस से वाख़बर है जो तुम करते हो। (88)

जो आया किसी नेकी के साथ तो उस के लिए (उस का अजर) उस से बेहतर है और वह उस दिन घबराहट से महफूज़ होंगे। (89) और जो बुराई के साथ आया तो वह औन्धे मुंह आग में डाले जाएंगे, तुम सिर्फ़ (वही) बदला दिए जाओगे (बदला पाओगे) जो तुम करते थे। (90)

(आप स फ़रमा दें) इस के सिवा नहीं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूँ जिसे उस ने मोहतरम बनाया है, और उसी के लिए है हर शै, और मुझे हुक्म दिया गया कि मैं मुसलमानों (फ़रमांबरदारों) में से रहूँ। (91)

और यह कि मैं कुरआन की तिलावत करूँ (सुना दूँ), पस इस के सिवा नहीं कि जो हिदायत पाता है, वह अपनी ज़ात के लिए हिदायत पाता है और जो गुमराह हुआ तो आप (स) फ़रमा दें कि इस के सिवा नहीं कि मैं तो डराने वाला हूँ। (92)

और आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह तुम्हें जल्द दिखादेगा अपनी निशानियाँ, पस तुम जल्द उन्हें पहचान लोगे, और तुम्हारा रब उस से बेखबर नहीं जो तुम करते हो। (93)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है ता-सीम-मीम। (1)

यह वाज़ेह किताब (कुरआन) की आयतें हैं। (2)

हम तुम पर पढ़ते हैं (तुम्हें सुनाते हैं) कुछ अहवाले मूसा (अ) और फ़िरऔन का ठीक ठीक, उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (3)

वेशक फ़िरऔन मुल्क में सरकशी कर रहा था, और उस ने कर दिया था उस के लोगों को अलग अलग गिरोह, उन में से एक गिरोह (बनी इस्राईल) को कमज़ोर कर रखा था उन के बेटों को जुबह करता, और ज़िन्दा छोड़ देता था उन की औरतों (बेटियों) को, वेशक वह मुफ़सिदों में से (फ़सादी) था। (4)

और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो मुल्क में कमज़ोर कर दिए गए थे, और हम उन्हें पेशवा बनाएं, और हम उन्हें (मुल्क का) वारिस बनाएं। (5)

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا ۖ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ							
जो आया	किसी नेकी के साथ	तो उस के लिए	बेहतर	उस से	और वह	घबराहट से	उस दिन
اِمْنُونَ ﴿٨٩﴾ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَا اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ							
महफूज़ होंगे	89	और जो	आया	बुराई के साथ	औन्धे डाले जाएंगे	उन के मुंह	आग में
बदला दिए जाओगे	मगर-सिर्फ़	जो	तुम करते थे	90	इसके सिवा मुझे हुक्म नहीं दिया गया	कि	इबादत करूँ
الْبَلَدِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۖ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩١﴾ وَاَنْ اَتْلُوَ الْقُرْآنَ ۖ فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَاِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ							
मुसलिमीन - फ़रमांबरदारों	91	और यह कि	मैं तिलावत करूँ कुरआन	पस जो	हिदायत पाई	तो इस के सिवा नहीं	वह हिदायत पाता है
और जो	गुमराह हुआ	तो फ़रमा दें	इस के सिवा नहीं	मैं	डराने वालों में से (डराने वाला हूँ)	और फ़रमा दें	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए
وَمَنْ ضَلَّ فَلْاِنَّمَا اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾							
वह जल्द दिखादेगा तुम्हें	अपनी निशानियाँ	पस तुम पहचान लोगे उन्हें	और नहीं	तुम्हारा रब	गाफ़िल (बेखबर)	उस से जो	तुम करते हो
اٰیٰتِهَا ۝ (٢٨) سُورَةُ الْقَصَصِ ۝ زُكُوْعَاتُهَا ٩							
88 आयत 9 रुक़आत (सूरतुल क़सस) किससे							
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
طَسَمَ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ﴿٢﴾ نَتْلُوْا عَلَیْكَ مِنْ نَّبَاِ							
ता सीम मीम	1	यह	आयतें	वाज़ेह किताब	हम पढ़ते हैं	तुम पर	कुछ ख़बर (अहवाल)
مُوسٰی وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ فِرْعَوْنَ							
मूसा (अ)	और फ़िरऔन	ठीक ठीक	उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं	3	वेशक	फ़िरऔन	
عَلٰٓا فِی الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِیْعًا یَّسْتَضِعُّ طَآیْفَةً							
सरकशी कर रहा था	ज़मीन (मुल्क) में	और उस ने कर दिया	उस के वाशिन्दे	अलग अलग गिरोह	कमज़ोर कर रखा था	एक गिरोह	
مِّنْهُمْ یُذَبِّحُ اَبْنَاءَهُمْ وَیَسْتَحِی نِسَاءَهُمْ ۚ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ							
उन में से	जुबह करता था	उन के बेटों को	और ज़िन्दा छोड़ देता था	उन की औरतों को	वेशक वह	था	से
الْمُفْسِدِیْنَ ﴿٤﴾ وَنُرِیْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلٰی الَّذِیْنَ اسْتَضَعِفُوْا							
मुफ़सिद (जमा)	4	और हम चाहते थे	कि	हम एहसान करें	उन लोगों पर जो	कमज़ोर कर दिए गए थे	
فِی الْاَرْضِ وَنَجْعَلُهُمْ اِیْمَةً وَنَجْعَلُهُمُ الْوَرِثِیْنَ ﴿٥﴾							
ज़मीन (मुल्क) में	और हम बनाएं उन्हें	पेशवा (जमा)	और हम बनाएं उन्हें	वारिस (जमा)	5		

وَأَمَّا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُورِي فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا						
और उन के लशकर	और हामान	फिरऔन	और हम दिखा दें	जमीन (मुल्क) में	उन्हें	और हम कुदरत (हुकूमत) दें
مِنْهُمْ مَا كَانُوا يَحْذَرُونَ ﴿٦﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ						
मूसा की माँ	तरफ-को	और हम ने इल्हाम किया	6	वह डरते थे	जिस चीज़	उन से
أَنْ أَرْضِعِيهِ فَإِذَا خَفَتْ عَلَيْهِ فَلَقِيهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِي						
और न डर	दर्या में	तो डालदे उसे	तू उस पर डरे	फिर जब	कि तू दूध पिलाती रह उसे	
وَلَا تَحْزَنِي إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكَ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٧﴾						
7	रसूलों	से	और उसे बना देंगे	तेरी तरफ	उसे लौटा देंगे	और न ग़म खा
فَالْتَقَطَهُ الْفِرْعَوْنُ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا إِنَّ						
वेशक	और ग़म का वाइस	दुश्मन	उन के लिए	ताकि वह हो	फिरऔन के घर वाले	फिर उठा लिया उसे
فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَطِئِينَ ﴿٨﴾ وَقَالَتْ						
और कहा	8	ख़ताकार (जमा)	थे	और उन के लशकर	और हामान	फिरऔन
امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتْ عَيْنٌ لِّي وَلَكَ لَا تَقْتُلُوهُ						
तू क़त्ल न कर इसे	और तेरे लिए	मेरी आँखों के लिए	ठंडक	फिरऔन	बीबी	
عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾						
9	(हकीक़ते हाल) नहीं जानते थे	और वह	बेटा	हम बना लें इसे	या	कि नफ़ा पहुँचाए हमें शायद
وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَرِغًا إِنْ كَادَتْ لَتُبْدِي بِهِ						
उस को	कि ज़ाहिर कर देती	तहकीक़ करीब था	सब्र से ख़ाली (बेकरार)	मूसा (अ) की माँ	दिल	और हो गया
لَوْلَا أَنْ رَّبَطْنَاهُ عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠﴾						
10	यकीन करने वाले	से	कि वह रहे	उस के दिल पर	कि गिरह लगाते हम	अगर न होता
وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ فَبَصُرَتْ بِهِ عَنْ جُنْبٍ وَهُمْ						
और वह	दूर से	उस को	फिर देखती रह	उस के पीछे जा	उस की बहन को	और उस (मूसा अ की बालिदा) ने कहा
لَا يَشْعُرُونَ ﴿١١﴾ وَحَرَمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ						
वह (मूसा की बहन) बोली	पहले से	दूध पिलाने वाली औरतें (दाइयाँ)	उस से	और हम ने रोक रखा	11	(हकीक़ते हाल) न जानते थे
هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ						
उस के लिए	और वह	तुम्हारे लिए	वह उस की पर्वरिश करें	एक घर वाले	क्या मैं बतलाऊँ तुम्हें	
نُصْحُونَ ﴿١٢﴾ فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَىٰ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ						
और वह ग़मगीन न हो	उस की आँख	ताकि ठंडी रहे	उसकी माँ की तरफ	तो हम ने लौटा दिया उस को	12	ख़ैर खाह
وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾						
13	वह नहीं जानते	उन में से बेशतर	और लेकिन	सच्चा	अल्लाह का वादा	कि और ताकि जान ले

और हम उन्हें हुकूमत दें मुल्क में। और हम फिरऔन और हामान और उन के लशकर को उन (कमज़ोरों के हाथों) दिखा दें जिस चीज़ से वह डरते थे। (6)

और हम ने मूसा (अ) की माँ को इल्हाम किया कि वह उस को दूध पिलाती रह, फिर जब उस पर (उस के बारे में) डरे तो उसे दर्या में डाल दे, और न डर और न ग़म खा, बेशक हम उसे तेरी तरफ़ लौटा देंगे, और उसे बना देंगे रसूलों में से। (7)

फिर फिरऔन के घर वालों ने उसे उठा लिया ताकि (आखिर कार) वह उन के लिए दुश्मन और ग़म का वाइस हो, बेशक फिरऔन और हामान और उन के लशकर ख़ताकार थे। (8)

और कहा फिरऔन की बीबी ने, यह आँखों की ठंडक है मेरे लिए और तेरे लिए, इसे क़त्ल न कर, शायद हमें नफ़ा पहुँचाए या हम इसे बेटा बनालें, और वह हकीक़ते हाल नहीं जानते थे। (9)

और मूसा (अ) की माँ का दिल बेकरार हो गया, तहकीक़ करीब था कि वह उस को ज़ाहिर कर देती अगर हम ने उस के दिल पर गिरह न लगाई होती कि वह यकीन करने वालों में से रहे। (10)

और मूसा (अ) की बालिदा ने उस की बहन को कहा कि उस के पीछे जा, फिर उसे दूर से देखती रह, और वह हकीक़ते हाल न जानते थे। (11)

और हम ने पहले से उस से दाइयों को रोक रखा था, तो मूसा (अ) की बहन बोली, क्या मैं तुम्हें एक घर वाले बतलाऊँ जो तुम्हारे लिए उस की पर्वरिश करें और वह उस के ख़ैर खाह हों। (12)

तो हम ने उस को उस की माँ की तरफ़ लौटा दिया, ताकि ठंडी रहें उस की आँख, और वह ग़मगीन न हो, और ताकि जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और लेकिन उन के बेशतर नहीं जानते। (13)

और जब (मूसा अ) अपनी जवानी को पहुँचा और पूरी तरह तवाना हो गया तो हम ने उसे हिक्मत और इल्म अता किया, और हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (14)

और वह शहर में दाखिल हुआ जब कि उस के लोग गुफ़लत में थे तो उस ने दो आदमियों को बाहम लड़ते हुए पाया, एक उस की विरादरी से था और दूसरा उस के दुश्मनों में से था, तो जो उस की विरादरी से था उस ने उस (के मुकाबले) पर जो उस के दुश्मनों में से था मूसा (अ) से मदद मांगी तो मूसा (अ) ने उस को एक मुक्का मारा फिर उस का काम तमाम कर दिया, उस (मूसा अ) ने कहा यह काम शैतान (की हरकत) से हुआ, वेशक वह दुश्मन है खुला वहकाने वाला। (15)

उस ने अरज़ की ऐ मेरे रब! मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया, पस मुझे बख़्शदे, तो उस ने उसे बख़्श दिया, वेशक वही बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान। (16)

उस ने कहा, ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझ पर इन्आम किया है तो मैं हरगिज़ न होंगा (कभी) मुज्रिमों का मददगार। (17)

पस शहर में उस की सुबह हुई डरते हुए इन्तिज़ार करते हुए (कि देखें अब किया होता है) तो नागाहं वही जिस ने कल उस से मदद मांगी थी (देखा कि) वह फिर उस से फ़र्याद कर रहा है। मूसा (अ) ने उस को कहा वेशक तू गुमराह है खुला। (18)

फिर जब उस ने चाहा कि उस पर हाथ डाले जो उन दोनों का दुश्मन था, तो उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू चाहता है कि तू मुझे क़त्ल कर दे जैसे तू ने कल एक आदमी को क़त्ल किया था, तू सिर्फ़ (यही) चाहता है कि तू इस सरज़मीन में ज़बरदस्ती करता फिरे और तू नहीं चाहता कि मुसलिहीन (इस्लाह करने वालों) में से हो। (19)

और एक आदमी शहर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया, उस ने कहा, ऐ मूसा (अ)! वेशक सरदार तेरे वारे में मश्वरा कर रहे हैं ताकि तुझे क़त्ल कर डालें, पस तू (यहां से) निकल जा, वेशक मैं तेरे ख़ैर ख़्वाहों में से हूँ। (20)

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَٰلِكَ

और इसी तरह	और इल्म	हिक्मत	हम ने अता किया उसे	और पूरा (तवाना) हो गया	वह पहुँचा अपनी जवानी	और जब

نَجَزَى الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤﴾ وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ

गुफ़लत	वक़्त पर	शहर	और वह दाखिल हुआ	14	नेकी करने वाले	हम बदला दिया करते हैं

مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِنْ شِيعَتِهِ وَهَٰذَا

और वह (दूसरा)	उस की विरादरी	से	यह (एक)	वह बाहम लड़ते हुए	दो आदमी	उस में	तो उस ने पाया	उस के लोग

مِّنْ عَدُوِّهِ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ

उस के दुश्मन से	वह जो	उस पर	उस की विरादरी से	वह जो	तो उस ने उस (मूसा) से मदद मांगी	उस के दुश्मन का	से

فَوَكَزَهُ مُوسَى فَقَضَىٰ عَلَيْهِ قَالَ هَٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ

शैतान का काम (हरकत)	से	यह	उस ने कहा	उस का	फिर काम तमाम कर दिया	मूसा (अ)	तो एक मुक्का मारा उस को

إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي

पस बख़्शदे मुझे	अपनी जान	मैं ने जुल्म किया	वेशक मैं	ऐ मेरे रब	उस ने अरज़ की	15	सही (खुला)	वहकाने वाला	दुश्मन	वेशक वह

فَغَفَرَ لَهُ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ

मुझ पर	तू ने इन्आम किया	ऐ मेरे रब जैसा कि	उस ने कहा	16	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	वही	वेशक	तो उस ने बख़्श दिया उस को

فَلَن أَكُونَ ظَهِيرًا لِّلْمُجْرِمِينَ ﴿١٧﴾ فَاصْبَحْ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا

डरता हुआ	शहर में	पस सुबह हुई उस की	17	मुज्रिमों का	मददगार	तो मैं हरगिज़ न होंगा

يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِحُهُ قَالَ

कहा	वह (फिर) उस से फ़र्याद कर रहा है	कल	उस ने मदद मांगी थी उस से	तो यकायक वह जिस	इन्तिज़ार करता हुआ

لَهُ مُوسَىٰ إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾ فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ

हाथ डाले	कि	उस ने चाहा	कि	फिर जब	18	खुला	अलबत्ता गुमराह	वेशक तू	मूसा (अ)	उस को

بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا قَالَ يُمُوسَىٰ أَتُرِيدُ أَنْ تَقْتُلَنِي

तू क़त्ल करदे मुझे	कि	क्या तू चाहता है	ऐ मूसा (अ)	उस ने कहा	उन दोनों का दुश्मन	वह	उस पर जो

كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا

ज़बरदस्ती करता	कि तू हो	मगर-सिर्फ़	तू चाहता	नहीं	कल	एक आदमी	जैसे क़त्ल किया तू ने

فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٩﴾ وَجَاءَ

और आया	19	सुधार करने वाले	से	तू हो	कि	और तू नहीं चाहता	सरज़मीन में

رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ قَالَ يُمُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَأَ

सरदार	वेशक	ऐ मूसा (अ)	उस ने कहा	दौड़ता हुआ	शहर का दूर सिरा	से	एक आदमी

يَأْتِمُرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ﴿٢٠﴾

20	सलाहकार (जमा)	से	तेरे लिए	वेशक मैं	पस तू निकल जा	ताकि क़त्ल करडालें तुझे	तेरे वारे में	वह मश्वरा कर रहे हैं

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (२१)								
21	जालिमों की कौम	से	मुझे बचाले	उस ने कहा (दुआ की) ऐ मेरे परवरदिगार	इन्तिज़ार करते हुए	डरते हुए	वहां से	पस वह निकला
وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسَى رَبِّي أَنْ يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ (२२)								
	कि मुझे दिखाए	मेरा रब	उम्मीद है	कहा	मदयन	तरफ	उस ने रख किया	और जब
النَّاسِ يَسْقُونَ ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّى يُصْدِرَ الرِّعَاءُ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ (२३)								
22	सीधा रास्ता	और जब	वह आया	पानी	मदयन	उस ने पाया	उस पर	एक गिरोह
لَمَّا أَنْزَلَتْ إِلَىٰ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ (२४)								
23	बहुत बूढ़े	तो उस ने पानी पिलाया	उन के लिए	फिर वह फिर आया	साए की तरफ	फिर अरज़ किया	ऐ मेरे रब	वेशक मैं
فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ ۖ نَجَوْتُ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (२५)								
24	उस का जो	तू उतारे	मेरी तरफ	कोई भलाई (नेमत)	मोहताज	24	फिर उस के पास आई	उन दोनों में से एक
مِنْ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (२६)								
25	जालिमों की कौम	वोली वह	उन में से एक	ऐ मेरे बाप	इसे मुलाज़िम रख लो	वेशक	वहत	वेशक
إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ (२७)								
26	अमानत दार	ताक़तवर	26	(बाप) ने कहा	वेशक मैं चाहता हूँ	कि	निकाह करदूँ तुझ से	जो - जिसे
عَشْرًا ۖ فَمِنْ عِنْدِكَ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۖ سَتَجِدُنِي إِِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ (२८)								
27	इनशा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा)	यह दो (2)	कि (इस शर्त) पर	तुम मेरी मुलाज़िमत करो	आठ (8) साल (जमा)	फिर अगर	तम पूरे करो	एक
قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ وَاللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ (२८)								
28	मैं पूरी करूँ	कोई जबर (मुतालवा) नहीं	मुझ पर	और अल्लाह	पर	जो हम कह रहे हैं	गवाह	28

पस वह निकला वहां से डरते हुए और इन्तिज़ार करते हुए (कि देखें क्या होता है), उस ने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे जालिमों की कौम से बचाले। (21)

और जब उस ने मदयन की तरफ रख किया तो कहा उम्मीद है मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखाएगा। (22)

और जब वह मदयन के पानी (के कुँए) पर आया तो उस ने लोगों के एक गिरोह को पानी पिलाते हुए पाया, और उस ने देखा दो औरतें उन से अलाहिदा (अपनी बकरियां) रोके हुए (खड़ी) हैं, उस ने कहा तुम्हारा क्या हाल है? वह बोलीं हम पानी नहीं पिलाती जब तक चरवाहे (अपने जानवरों को पानी पिला कर) वापस न ले जाएं और हमारे अब्बा बूढ़े हैं। (23)

तो उस ने उन की (बकरियों को) पानी पिलाया। फिर साए की तरफ फिर आया, फिर अरज़ किया ऐ मेरे परवरदिगार! वेशक जो नेमत तू मेरी तरफ उतारे मैं उस का मोहताज हूँ। (24)

फिर उन दोनों में से एक उस के पास आई शर्म से चलती हुई, वह बोली, वेशक मेरे वालिद तुम्हें बुला रहे हैं कि तुम्हें उस का सिला दें जो तू ने हमारे लिए (बकरियों को) पानी पिलाया है, पस जब मूसा (अ) उस (बाप) के पास आया और उस से अहवाल बयान किया तो उस ने कहा डरो नहीं, तुम जालिमों की कौम से बच आए हो। (25)

उन में से एक बोली, ऐ मेरे बाप इसे मुलाज़िम रख लें, वेशक वेहतरीन मुलाज़िम जिसे तुम रखो (वही हो सकता है) जो ताक़तवर अमानत दार हो। (26)

(बाप) ने कहा मैं चाहता हूँ कि तुम से अपनी इन दो बेटियों में से एक का निकाह इस शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ (8) साल मेरी मुलाज़िमत करो, अगर दस (10) साल पूरे करलो तो (वह) तुम्हारी तरफ से (नेकी) हो गी, मैं नहीं चाहता कि मैं तुम पर मशक्कत डालूँ, अगर अल्लाह ने चाहा तो अ़नक़रीब तुम मुझे खुश मामला लोगों में से पाओगे। (27)

मूसा (अ) ने कहा यह मेरे दरमियान और तुम्हारे दरमियान (अहद) है, मैं दोनों में से जो मुदत पूरी करूँ मुझ पर कोई मुतालवा नहीं, और अल्लाह गवाह है उस पर जो हम कह रहे हैं। (28)

फिर जब मूसा (अ) ने अपनी मुद्दत पूरी कर दी तो अपनी घर वाली (बीबी) को साथ ले कर चला, उस ने देखी कोहे तूर की तरफ़ से एक आग, उस ने अपने घर वालों से कहा तुम ठहरो, वेशक मैं ने आग देखी है, शायद मैं उस से तुम्हारे लिए (रास्ते की) कोई ख़बर या आग की चिंगारी लाऊँ ताकि तुम आग तापो। (29)

फिर जब वह उस के पास आया तो निदा (आवाज़) दी गई दाएं मैदान के किनारे से, बरकत वाली जगह में, एक दरख़्त (के दरमियान) से, कि ऐ मूसा (अ)! वेशक मैं अल्लाह हूँ, तमाम ज़हानों का परवरदिगार। (30)

और यह कि तू अपना अ़सा (ज़मीन पर) डाल, फिर जब उस ने उसे देखा लहराते हुए, गोया कि वह सांप है, वह पीठ फेर कर लौटा, और पीछे मुड़ कर भी न देखा, (अल्लाह ने फ़रमाया) ऐ मूसा (अ)! आगे आ और डर नहीं, वेशक तू अमन पाने वालों में से है। (31)

तू अपना हाथ अपने गरेबान में डाल, वह सफ़ेद रोशन हो कर निकलेगा, किसी ऐब के वग़ैर, फिर अपना बाजू ख़ौफ़ (दूर होने की गरज़) से अपनी तरफ़ मिला लेना (सुकेड़ लेना), पस (अ़सा और यदे बैज़ा) दोनों दलीलें हैं तेरे रब की तरफ़ से फ़िरज़ीन और उस के सरदारों की तरफ़, वेशक वह एक नाफ़रमान गिरोह है। (32)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! वेशक मैं ने उन में से एक शख़्स को मार डाला, सो मैं डरता हूँ कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे। (33)

और मेरे भाई हारून (अ) ज़वान (के एतबार से) मुझ से ज़ियादा फ़सीह है, सो उसे मेरे साथ मददगार (बना कर) भेज दे कि वह मेरी तसदीक़ करे, वेशक मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुटलाएंगे। (34)

(अल्लाह ने) फ़रमाया हम अभी तेरे भाई से तेरे बाजू को मज़बूत कर देंगे और तुम दोनों के लिए अ़ता करेंगे ग़ल्वा, पस वह हमारी निशानियों के सबब तुम दानों तक न पहुँच सकेंगे, तुम दोनों और जिस ने तुम्हारी पैरवी की ग़ालिब रहोगे। (35)

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِنْ جَانِبِ								
तरफ़	से	उस ने देखी	साथ अपने घर वाली	और चला वह	मुद्दत	मूसा (अ)	पूरी कर दी	फिर जब
الطُّورِ نَارًا ۚ قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي								
शायद मैं	आग	वेशक मैं ने देखी	तुम ठहरो	अपने घर वालों से	उस ने कहा	एक आग	कोहे तूर	
اَتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ مِنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٢٩﴾								
29	आग तापो	ताकि तुम	आग से	या चिंगारी	कोई ख़बर	उस से	मैं लाऊँ तुम्हारे लिए	
فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ								
जगह में	दायाँ	मैदान	किनारे से	निदा दी गई	वह आया उस के पास	फिर जब		
الْمُبْرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يُمُوسَى إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٠﴾								
30	जहानों का परवरदिगार	अल्लाह	वेशक मैं	ऐ मूसा (अ)	कि	एक दरख़्त से	बरकत वाली	
وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ								
वह लौटा	सांप	गोया कि वह	लहराते हुए	फिर जब उस ने उसे देखा	अपना अ़सा	डालो	और यह कि	
مُذْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يُمُوسَى أَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ إِنَّكَ مِنْ								
से	वेशक तू	और डर नहीं	आगे आ	ऐ मूसा (अ)	और पीछे मुड़ कर न देखा	पीठ फेर कर		
الْأَمِينِ ﴿٣١﴾ أَسْلُكْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضًا مِنْ								
से-के	रोशन सफ़ेद	वह निकलेगा	अपने गरेबान	अपना हाथ	तू डाल ले	31	अमन पाने वाले	
غَيْرِ سُوءٍ ۚ وَاضْمُمْ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذَنْبِكَ بُرْهَانُ								
दो (2) दलीलें	पस यह दोनों	ख़ौफ़ से	अपना बाजू	अपनी तरफ़	और मिला लेना	वग़ैर किसी ऐब		
مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِقِينَ ﴿٣٢﴾								
32	नाफ़रमान	एक गिरोह	है	वेशक वह	और उसके सरदार (जमा)	फ़िरज़ीन	तेरे रब (की तरफ़) से	
قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿٣٣﴾								
33	कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे	सो मैं डरता हूँ	एक शख़्स	उन (में) से	वेशक मैं ने मार डाला है	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	
وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسَلْهُ مَعِيَ رِدْءًا								
मेरे साथ मददगार	सो भेजदे उसे	ज़वान	मुझ से	ज़ियादा फ़सीह	वह	हारून (अ)	और मेरा भाई	
يُصَدِّقُنِي إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿٣٤﴾ قَالَ سَنَشُدُّ								
हम अभी मज़बूत कर देंगे	फ़रमाया	34	वह झुटलाएंगे मुझे	कि	वेशक मैं डरता हूँ	वह तसदीक़ करे मेरी		
عَضْدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُونَ								
पस वह न पहुँचेंगे	ग़ल्वा	तुम्हारे लिए	और हम अ़ता करेंगे	तेरे भाई से	तेरा बाजू			
إِلَيْكُمَا ۚ بِآيٰتِنَا ۚ أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعُكُمَا الْغٰلِبُونَ ﴿٣٥﴾								
35	ग़ालिब रहोगे	पैरवी करे तुम्हारी	और जो	तुम दोनों	हमारी निशानियों के सबब	तुम तक		

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا سِحْرٌ							
एक जादू	मगर	नहीं है यह	वह बोले	खुली - वाज़ेह	हमारी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	आया उन के पास फिर जब
مُفْتَرَى وَمَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٣٦﴾ وَقَالَ							
और कहा	36	अपने अगले बाप दादा	में	यह- ऐसी बात	और नहीं सुनी है हम ने	इफ़तिरा किया हुआ	
مُوسَى رَبِّي أَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِهِ وَمَنْ تَكُونُ							
होगा-है	और जिस	उस के पास से	हिदायत	लाया	उस को जो	खूब जानता है मेरा रब	मूसा (अ)
لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ							
फिरऔन	और कहा	37	ज़ालिम (जमा)	नहीं फ़लाह पाएंगे	वेशक वह	आख़िरत का अच्छा घर	उस के लिए
يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرِي فَأَوْقِدْ لِي							
पस आग जला मेरे लिए	अपने सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए	नहीं जानता मैं	ऐ सरदारो	
يَهَامُنُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَلْ لِّي صَرْحًا لَعَلِّي أَطْلُعُ إِلَىٰ							
तरफ़	मैं झाँकूँ	ताकि मैं	एक बुलन्द महल	फिर मेरे लिए बना (तैयार कर)	मिट्टी पर	ऐ हामान	
إِلَهٍ مُّوسَىٰ ۖ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٣٨﴾ وَاسْتَكَبَرَ							
और मगरूर हो गया	38	झूटे	से	अलबत्ता समझता हूँ उसे	और वेशक मैं	मूसा (अ)	माबूद
هُوَ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُم إِلَيْنَا							
हमारी तरफ़	कि वह	और वह समझ बैठे	नाहक़	ज़मीन (दुनिया) में	और उस का लशकर	वह	
لَا يُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾ فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ							
दर्या में	फिर हम ने फेंक दिया उन्हें	और उस का लशकर	तो हम ने पकड़ा उसे	39	नहीं लौटाए जाएंगे		
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾ وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً							
सरदार	और हम ने बनाया उन्हें	40	ज़ालिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखो
يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ لَا يُنْصَرُونَ ﴿٤١﴾							
41	वह मदद न दिए जाएंगे	और रोज़े कियामत	जहन्नम की तरफ़	वह बुलाते हैं			
وَاتَّبَعْنَاهُمْ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ هُمْ							
वह	और रोज़े कियामत	लानत	इस दुनिया	में	और हम ने लगादी उन के पीछे		
مِّنَ الْمُقْبُوحِينَ ﴿٤٢﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ							
किताब (तौरेत)	मूसा (अ)	और तहकीक़ हम ने अ़ता की	42	बदहाल लोग (जमा)	से		
مِّنْ بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرَ							
(जमा) बसीरत	पहली	उम्मतें	कि हलाक की हम ने	उस के बाद			
لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٣﴾							
43	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	और रहमत	और हिदायत	लोगों के लिए		

फिर जब मूसा (अ) हमारी वाज़ेह निशानियों के साथ उन के पास आया तो वह बोले यह कुछ भी नहीं मगर एक इफ़तिरा किया हुआ (घड़ा हुआ) जादू है, और हम ने ऐसी बात अपने अगले बाप दादा से नहीं सुनी है। (36)

और मूसा (अ) ने कहा मेरा रब उस को खूब जानता है जो उस के पास से हिदायत लाया है, और जिस के लिए आख़िरत का अच्छा घर (जन्नत) है, वेशक ज़ालिम (कभी) फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएंगे। (37)

और फिरऔन ने कहा, ऐ सरदारो, मैं नहीं जानता तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई माबूद, पस ऐ हामान! मेरे लिए मिट्टी (की ईंटों) पर आग जला, फिर (उन पुख़्ता ईंटों से) मेरे लिए तैयार कर एक बुलन्द महल, ताकि मैं (वहां से) मूसा (अ) के माबूद को झाँकूँ, और मैं तो उसे झूटों में से समझता हूँ। (38)

और वह और उस का लशकर दुनिया में नाहक़ मगरूर हो गए और वह समझ बैठे कि वह हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाएंगे। (39)

तो हम ने उसे और उस के लशकर को पकड़ा और उन्हें दर्या में फेंक दिया, सो देखो कैसा ज़ालिमों का अन्जाम हुआ? (40)

और हम ने उन्हें सरदार बनाया जो जहन्नम की तरफ़ बुलाते रहे, और रोज़े कियामत वह न मदद दिए जाएंगे (उन की मदद न होगी)। (41)

और हम ने इस दुनिया में उन के पीछे लानत लगा दी और रोज़े कियामत वह बदहाल लोगों में से होंगे। (42)

और तहकीक़ हम ने मूसा (अ) को तौरेत अ़ता की उस के बाद कि हम ने पहली उम्मतें हलाक की, लोगों के लिए बसीरत (आँखें खोलने वाली) और हिदायत ओ रहमत, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (43)

और आप (स) (कोहे तूर के) मग़रिबी जानिव न थे जब हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी और आप (स) (उस वाके के) देखने वालों में से न थे। (44)

और लेकिन हम ने बहुत सी उम्मतें पैदा कीं, फिर तबील हो गई उन की मुदत, और आप (स) अहले मदन में रहने वाले न थे कि उन पर हमारे अहकाम पढ़ते (उन्हें हमारे अहकाम सुनाते) लेकिन हम थे रसूल बनाकर भेजने वाले। (45)

और आप (स) तूर के किनारे न थे जब हम ने पुकारा, और लेकिन रहमत आप (स) के रब से (कि नुबुव्वत अता हुई) ताकि आप (स) इस कौम को डर सुनाएं जिस के पास आप (स) से पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (46)

और ऐसा न हो कि उन्हें उन के आमाल के सबब कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहते: ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा! पस हम तेरे अहकाम की पैरवी करते और हम होते ईमान लाने वालों में से। (47)

फिर जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ आगया, कहने लगे कि क्यों न (मुहम्मद (स) को) दिया गया जैसा मूसा (अ) को दिया गया था, क्या उन्होंने ने उस का इन्कार नहीं किया? जो उस से क़ल्ल मूसा (अ) को दिया गया, उन्होंने ने कहा वह दोनों जादू हैं, वह दोनों एक दूसरे के पुश्त पनाह हैं, और उन्होंने ने कहा बेशक हम हर एक का इन्कार करने वाले हैं। (48)

आप (स) फ़रमा दें तुम अल्लाह के पास से कोई किताब लाओ जो इन दोनों (कुरआन और तौरत) से ज़ियादा हिदायत बख़्शने वाली हो कि मैं उस की पैरवी करूँ, अगर तुम सच्चे हो। (49)

फिर अगर वह आप (स) की बात क़बूल न करें तो जान लें कि वह सिर्फ़ अपनी ख़ाहिशात की पैरवी करते हैं, और उस से ज़ियादा कौन गुमराह है जिस ने अपनी ख़ाहिश की पैरवी की, अल्लाह की हिदायत के बग़ैर, बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (50)

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ							
हुकम (वहि)	मूसा (अ) की तरफ़	हम ने भेजा	जब	मग़रिबी जानिव	और आप (स) न थे		
وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٤٤﴾ وَلَكِنَّا أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَوَّلَ عَلَيْهِمْ							
उनकी, उन पर	तबील हो गई	बहुत सी उम्मतें	हम ने पैदा की	और लेकिन हम ने	44	देखने वाले	और आप (स) न थे
الْعُمُرُ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا							
हमारी आयात	उन पर	तुम पढ़ते	अहले मदयन	में	रहने वाले	और आप (स) न थे	मुदत
وَلَكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا							
जब हम ने पुकारा	तूर	किनारा	और आप (स) ने थे	45	रसूल बनाकर भेजने वाले	हम थे	और लेकिन हम
وَلَكِن رَّحْمَةً مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَتْهُمْ مِّن نَّذِيرٍ							
डराने वाला	कोई	नहीं आया उन के पास	वह कौम	ताकि डर सुनाओ	अपने रब से	रहमत	और लेकिन
مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ لَا أَن تُصِيبَهُمْ							
कि पहुँचे उन्हें	और ऐसा न हो	46	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	आप (स) से पहले		
مُصِيبَةً بِمَا قَدَّمْتَ أَيْدِيَهُمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ							
भेजा तू ने	क्यों न	ऐ हमारे रब	तो वह कहते	उन के हाथ (उन के आमाल)	उस के सबब जो भेजा	कोई मुसीबत	
إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا							
फिर जब	47	ईमान लाने वाले	से	और हम होते	तेरे अहकाम	पस पैरवी करते हम	हमारी तरफ़
جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ مِثْلَ							
जैसा	क्यों न दिया गया	कहने लगे	हमारी तरफ़ से	हक़	आया उन के पास		
مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ أَوَّلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ							
इस से क़ल्ल	मूसा (अ)	उस का जो दिया गया	इन्कार किया उन्होंने ने	क्या नहीं	मूसा (अ)	जो दिया गया	
قَالُوا سِحْرِن تَظَاهَرًا وَقَالُوا إِنَّا بِكُلِّ كَفْرٍ							
48	इन्कार करने वाले	हर एक का	हम बेशक	और उन्होंने ने कहा	एक दूसरे के पुश्त पनाह	वह दोनों जादू	उन्होंने ने कहा
قُلْ فَاتَّبِعُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَا اتَّبِعْهُ							
मैं पैरवी करूँ उस की	इन दोनों से	ज़ियादा हिदायत	वह	अल्लाह के पास	से	कोई किताब	पस लाओ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٩﴾ فَإِنْ لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا							
कि सिर्फ़	तो जान लो	तुम्हारे लिए (तुम्हारी बात)	वह कुबूल न करें	फिर अगर	49	सच्चे (जमा)	अगर तुम हो
يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ هُدًى							
हिदायत के बग़ैर	अपनी ख़ाहिश	उस से जिस ने पैरवी की	ज़ियादा गुमराह	और कौन	अपनी ख़ाहिशात	वह पैरवी करते हैं	
مِّنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٠﴾							
50	ज़ालिम लोग (जमा)			हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	अल्लाह से (मिन जानिव अल्लाह)	

6.

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾ الَّذِينَ						
वह लोग जो	51	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	(अपना) कलाम	उन के लिए	और अलबत्ता हम ने मुसलसल भेजा
اتَّبَهُمُ الْكِتَابُ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ						
पढ़ा जाता है उन पर (सामने)	और जब	52	ईमान लाते हैं	वह इस (कुरआन) पर	इस से कबल	जिन्हें हम ने किताब दी
قَالُوا آمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾						
53	फरमावरदार	इस के पहले ही	वेशक हम थे	हमारे रब (की तरफ) से	हक	वेशक यह हम ईमान लाए इस पर कहते हैं
أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ						
और वह दूर करते हैं	इस लिए कि उन्होंने ने सबर किया	दोहरा	उन का अजर	दिया जाएगा उन्हें	यही लोग	
بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٥٤﴾ وَإِذَا سَمِعُوا						
वह सुनते हैं	और जब	54	वह खर्च करते हैं	हम ने दिया उन्हें	और उस से जो	बुराई को भलाई से
اللَّغْوِ أَعَرُّوْا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَّا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ						
तुम्हारे अमल (जमा)	और तुम्हारे लिए	हमारे लिए हमारे अमल	और कहते हैं	उस से	वह किनारा करते हैं	बेहूदा बात
سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبَغِي الْجَاهِلِينَ ﴿٥٥﴾ إِنَّكَ لَا تَهْدِي						
हिदायत नहीं दे सकते	वेशक तुम	55	जाहिल (जमा)	हम नहीं चाहते	तुम पर	सलाम
مَنْ أَحَبَّتْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ						
खुब जानता है	और वह	जिस को वह चाहता है	हिदायत देता है	और लेकिन (बल्कि) अल्लाह	जिस को चाहो	
بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾ وَقَالُوا إِن تَتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نُتَخَطَّفُ						
हम उचक लिए जाएंगे	तुम्हारे साथ	हिदायत	अगर हम पैरवी करें	और वह कहते हैं	56	हिदायत पाने वालों को
مِنْ أَرْضِنَا ۖ أَوْلَمْ نُمَكِّنْ لَهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ						
फल	उस की तरफ	खिंचे चले आते हैं	हुर्मत वाला मुकामे अमन	उन्हें	दिया ठिकाना हम ने	क्या नहीं अपनी सरज़मीन से
كُلِّ شَيْءٍ رَّزَقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾						
57	नहीं जानते	उन में अक्सर	और लेकिन	हमारी तरफ से	बतौरे रिज़्क	हर शै (किस्म)
وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَعِيشَتَهَا ۖ فَتِلْكَ مَسْكِنُهُمْ						
उन के मस्कन	सो, यह	अपनी मईशत	इतराती	बस्तियां	हलाक कर दी हम ने	और कितनी
لَمْ تُسْكَنْ مِّنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۚ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿٥٨﴾						
58	वारिस (जमा)	हम	और हुए हम	कलील	मगर	उन के बाद न आवाद हुए
وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُوا						
वह पढ़े	कोई रसूल	उस की बड़ी बस्ती में	भेज दे	जब तक	बस्तियां	हलाक करने वाला तुम्हारा रब और नहीं है
عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظُلُمُونَ ﴿٥٩﴾						
59	ज़ालिम (जमा)	उन के रहने वाले	मगर (जब तक)	बस्तियां	हलाक करने वाले और हम नहीं	हमारी आयात उन पर

और अलबत्ता हम ने मुसलसल भेजा उन के लिए अपना कलाम, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (51) जिन लोगों को हम ने उस से कबल किताब दी वह इस कुरआन पर ईमान लाते हैं। (52) और जब उन के सामने (कुरआन) पढ़ा जाता है तो वह कहते हैं हम इस पर ईमान लाए, वेशक यह हक है हमारे रब की तरफ से, वेशक हम थे पहले से फरमावरदार। (53) यही लोग हैं जिन्हें उन का अजर दोहरा दिया जाएगा इस लिए कि उन्होंने ने सबर किया और वह भलाई से बुराई को दूर करते हैं और जो हम ने उन्हें दिया वह उस में से खर्च करते हैं। (54) और जब वह बेहूदा बात सुनते हैं तो उस से किनारा करते हैं, और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे अमल तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, तुम पर सलाम हो, हम जाहिलों से (उलझना) नहीं चाहते। (55) वेशक तुम जिस को चाहो हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है, और हिदायत पाने वालों को वह खूब जानता है। (56) और वह कहते हैं अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो हम अपनी सरज़मीन से उचक लिए जाएंगे। क्या हम ने उन्हें हुर्मत वाले मुकामे अमन में ठिकाना नहीं दिया, उस की तरफ खिंचे चले आते हैं फल हर किस्म के, हमारी तरफ से बतौर रिज़्क, लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (57) और कितनी (ही) बस्तियां हम ने हलाक कर दी जो अपनी आमदनी और गुज़र बसर पर इतराती थी, सो यह हैं उन के मस्कन, न आवाद हुए उन के बाद मगर कम, और हम ही हुए वारिस। (58) और तुम्हारा रब नहीं है बस्तियों को हलाक करने वाला, जब तक उस की बड़ी बस्ती में कोई रसूल न भेज दे, वह उन पर हमारी आयात पढ़े, और हम बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं जब तक उन के रहने वाले ज़ालिम (न) हों। (59)

और तुम्हें जो कोई चीज़ दी गई है सो वह (सिर्फ़) दुनिया की ज़िन्दगी का सामान और उस की ज़ीनत है, और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है और तादेर बाकी रहने वाला है, सो क्या तुम समझते नहीं? (60)

सो जिस से हम ने अच्छा वादा किया फिर वह उस को पाने वाला है, क्या वह उस शख्स की तरह है जिसे हम ने दुनिया की ज़िन्दगी के सामान दिया, फिर वह रोज़े कियामत (गिरफ़्तार हो कर) हाज़िर किए जाने वालों में से हुआ। (61)

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा, कहेगा कहां है? मेरे शरीक जिनमें तुम (मेरा शरीक) गुमान करते थे। (62)

(फिर) कहेंगे वह जिन पर हमने अज़ाब साबित हो गया कि ऐ हमारे रब! यह है वह जिनमें हम ने वहकाया, हम ने उन्हें (वैसे ही) वहकाया जैसे हम (खुद) वहके थे। हम तेरी तरफ़ (तेरे हुज़ूर सब से) बेज़ारी करते हैं, वह हमारी बन्दगी न करते थे। (63)

और कहा जाएगा तुम अपने शरीकों को पुकारो, सो वह उन्हें पुकारेंगे, तो वह उन्हें जवाब न देंगे, और वह अज़ाब देखेंगे, काश वह हिदायत यापता होते। (64)

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तो फ़रमाएगा तुम ने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया था? (65)

पस उन को कोई बात न सूझगी उस दिन, पस वह आपस में (भी) सवाल न कर सकेंगे। (66)

सो जिस ने तौबा की और वह ईमान लाया और उस ने अच्छे अमल किए, तो उम्मीद है कि वह कामयाबी पाने वालों में से हो। (67)

और तुम्हारा रब पैदा करता है जो वह चाहता है और (जो) वह पसंद करता है, नहीं है उन के लिए (उन का कोई) इख़्तियार, अल्लाह उस से पाक है और बरतर है उस से जो वह शरीक करते हैं। (68)

और तुम्हारा रब जानता है जो उन के सीनों में छुपा है, और जो ज़ाहिर करते हैं। (69)

और वही है अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी के लिए है तमाम तारीफ़ें दुनिया में और आख़िरत में, और उसी के लिए है फ़रमांरवाई, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (70)

وَمَا أُوتِيتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَّاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا وَمَا						
और जो	और उस की ज़ीनत	दुनियां	ज़िन्दगी	सो सामान	कोई चीज़	और जो दी गई तुम्हें
عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٠﴾ أَفَمَن وَعَدْنَاهُ						
हम ने वादा किया उस से	सो क्या जो	60	सो क्या तुम समझते नहीं?	बाकी रहने वाला- तादेर	बेहतर	अल्लाह के पास
وَعَدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَن مَّتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ						
वह	फिर	दुनिया की ज़िन्दगी	सामान	हम ने दिया उसे	उस की तरह जिसे	पाने वाला उस को
يَوْمَ الْقِيَمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٦١﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ						
कहां	पस कहेगा वह	वह पुकारेगा उन्हें	और जिस दिन	61	हाज़िर किए जाने वाले	से
شُرَكَآئِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ						
उन पर	साबित हो गया	वह जो	कहेंगे	62	तुम गुमान करते थे	वह जिनमें मेरे शरीक
الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَهُمْ كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّأْنَا						
हम बेज़ारी करते हैं	हम वहके	जैसे	हम ने वहकाया उन्हें	हम ने वहकाया	वह जिनमें	यह है
إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ﴿٦٣﴾ وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَآءَكُمْ						
अपने शरीकों को	तुम पुकारो	और कहा जाएगा	63	बन्दगी करते	सिर्फ़ हमारी	वह न थे
فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ						
काश वह	अज़ाब	और वह देखेंगे	उन्हें	तो वह जवाब न देंगे	सो वह उन्हें पुकारेंगे	
كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ						
तुम ने जवाब दिया	क्या	तो फ़रमाएगा	वह पुकारेगा उन्हें	और जिस दिन	64	वह हिदायत यापता होते
الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ						
पस वह	उस दिन	ख़बरें (बातें)	उन को	पस न सूझगी	65	पैग़म्बर (जमा)
لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٦﴾ فَأَمَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ						
तो उम्मीद है	और उस ने अमल किए अच्छे	और वह ईमान लाया	जिस ने तौबा की	सो - लेकिन	66	आपस में सवाल न करेंगे
أَن يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ						
और वह पसंद करता है	जो वह चाहता है	पैदा करता है	और तुम्हारा रब	67	कामयाबी पाने वाले	से
مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ سُبْحَنَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ						
जानता है	और तुम्हारा रब	68	उस से जो वह शरीक करते हैं	और बरतर	अल्लाह पाक है	इख़्तियार
مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ						
उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	और वही अल्लाह	69	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	उन के सीने
لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾						
70	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	और उसी के लिए फ़रमां रवाई	और आख़िरत	दुनिया में	उसी के लिए तमाम तारीफ़ें

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَى							
तक	हमेशा	रात	तुम पर	कर दे (रखे) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो तो	फरमा दे
يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَآءٍ أَفَلَا تَسْمَعُونَ (71)							
71	तो क्या तुम सुनते नहीं?	रोशनी	ले आए तुम्हारे पास	अल्लाह के सिवा	माबूद	कौन	रोज़े क़ियामत
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَى							
तक	हमेशा	दिन	तुम पर	बनाए (रखे) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो तो	फरमा दे
يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ							
उस में	तुम आराम करो	रात	ले आए तुम्हारे लिए	अल्लाह के सिवा	माबूद	कौन	रोज़े क़ियामत
أَفَلَا تُبْصِرُونَ (72) وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا							
ताकि तुम आराम करो	और दिन	रात	उस ने तुम्हारे लिए बनाया	और अपनी रहमत से	72	तो क्या तुम्हें सूझता नहीं?	
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ (73) وَيَوْمَ							
और जिस दिन	73	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ल (रोज़ी)	और ताकि तुम तलाश करो	उस में	
يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآئِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ (74)							
74	तुम गुमान करते थे	वह जो	मेरे शरीक	कहाँ?	तो वह कहेगा	वह पुकारेगा उन्हें	
وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ							
अपनी दलील	तुम लाओ (पेश करो)	फिर हम कहेँगे	एक गवाह	हर उम्मत	से	और हम निकाल कर लाएँगे	
فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ (75)							
75	जो वह घड़ते थे	उन से	और गुम हो जाएँगी	सच्ची बात अल्लाह की	कि	सो वह जान लेंगे	
إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَى فَبَغَى عَلَيْهِمْ وَآتَيْنَهُ							
और हम ने दिए थे उस को	उन पर	सो उस ने ज़ियादती की	मूसा (अ) की कौम	से	था	का़रून	वेशक
مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوزًا بِالْعُصْبَةِ أُولَى الْقُوَّةِ							
ज़ोर आवर	एक जमाअत पर	भारी होती	उस की कुन्जियाँ	इतने कि	खज़ानों से		
إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ (76)							
76	खुश होने (इतराने) वाले	पसंद नहीं करता	वेशक अल्लाह	न खुश हो (न इतरा)	उस की कौम	उस को	जब कहा
وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ							
अपना हिस्सा	और न भूल तू	आखिरत का घर	तुझे दिया अल्लाह ने	उस से जो	और तलब कर		
مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ							
और न चाह	तेरी तरफ़ (साथ)	अल्लाह ने एहसान किया	जैसे	और नेकी कर	दुनिया	से	
الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ (77)							
77	फ़साद करने वाले	पसंद नहीं करता	वेशक अल्लाह	ज़मीन में	फ़साद		

आप (स) फ़रमा दें भला देखो तो अगर अल्लाह रोज़े क़ियामत तक के लिए तुम पर हमेशा रात रखे तो अल्लाह के सिवा और कौन माबूद है? जो तुम्हारे लिए (दिन की) रोशनी ले आए, तो क्या तुम सुनते नहीं? (71)

आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो तो अगर अल्लाह तुम पर रखे रोज़े क़ियामत तक के लिए हमेशा दिन तो अल्लाह के सिवा और कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात ले आए? कि तुम उस में आराम करो, तो क्या तुम्हें सूझता नहीं? (72) और उस ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि उस (रात) में आराम करो और (दिन में) रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम (अल्लाह का) शुक्र करो। (73)

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तो वह कहेगा कहाँ है वह? जिन को तुम मेरा शरीक गुमान करते थे। (74) और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएँगे, फिर हम कहेँगे अपनी दलील पेश करो, सो वह जान लेंगे कि सच्ची बात अल्लाह की है, और गुम हो जाएँगी (वह सब बातें) जो वह घड़ते थे। (75)

वेशक का़रून था मूसा (अ) की कौम से, सो उस ने उन पर ज़ियादती की, और हम ने उस को इतने खज़ाने दिए थे कि उस की कुन्जियाँ एक ज़ोर आवर जमाअत पर (भी) भारी होती थीं, जब उस को उस की कौम ने कहा, इतरा नहीं वेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वालों को। (76) और जो तुझे अल्लाह ने दिया है उस से आखिरत का घर तलब कर (आखिरत की फ़िक्र कर) और अपना हिस्सा न भूल दुनिया से, और नेकी कर जैसे तेरे साथ अल्लाह ने नेकी की है, और तू फ़साद न चाह ज़मीन में, वेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता। (77)

कहने लगा यह तो एक इल्म की वजह से मुझे दिया गया है जो मेरे पास है, क्या वह नहीं जानता? कि उस से कब्ल अल्लाह ने कितनी जमाअतों को हलाक कर दिया है, जो उस से ज़ियादा सख्त थी कुव्वत में, और ज़ियादा थी जमियत में, उन के गुनाहों की वाबत सवाल न किया जाएगा मुजरिमों से। (78) फिर वह (कारून) अपनी कौम के सामने ज़ेब ओ ज़ीनत के साथ निकला तो उन लोगों ने कहा जो तालिब थे दुनिया की ज़िन्दगी के, जो कारून को दिया गया है, ऐ काश ऐसा हमारे पास (भी) होता, वेशक वह बड़ा नसीब वाला है। (79) और जिन लोगों को इल्म दिया गया था उन्होंने ने कहा अफ़सोस है तुम पर! अल्लाह का सवाब (अज़र) बेहतर है उस के लिए जो ईमान लाया और उस ने अच्छा अमल किया और वह सब् करने वालों के सिवा (किसी को) नसीब नहीं होता। (80) फिर हम ने उस को और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया, सो उस के लिए कोई जमाअत न हुई जो अल्लाह के सिवा (अल्लाह से बचाने में) उस की मदद करती और न वह (खुद) हुआ बदला लेने वालों में से। (81) और कल तक जो लोग उस के मुक़ाम की तमन्ना करते थे, सुबह के वक़्त कहने लगे हाए शामत! अपने बन्दो में से अल्लाह जिस के लिए चाहे रिज़्क फ़राख़ कर देता है और (जिस के लिए चाहे) तंग कर देता है, अगर अल्लाह हम पर एहसान न करता तो अलबत्ता हमें (भी) धंसा देता, हाए शामत! काफ़िर फ़लाह (दो ज़हान की कामयाबी) नहीं पाते। (82) यह आख़िरत का घर है, हम उन लोगों के लिए तैयार करते हैं जो नहीं चाहते ज़मीन (मुल्क) में बड़ाई और न फ़साद, और नेक अन्जाम परहेज़गारों के लिए है। (83) जो नेकी के साथ आया उस के लिए उस से बेहतर (सिला) है और जो बुराई के साथ आया, तो उन लोगों को जिन्होंने ने बुरे अमल किए उस के सिवा बदला न मिलेगा जो वह करते थे। (84)

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيْتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي أَوَلَمْ يَعْلَم أَنَّ اللَّهَ							
कहने लगा	यह तो	मुझे दिया गया है	एक इल्म की वजह से	मेरे पास	क्या नहीं	वह जानता	कि अल्लाह
قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرَ							
हलाक कर दिया है	विला शुबाह	उस से कब्ल	से (कितनी)	जमाअतें	जो	वह ज़ियादा सख्त	उस से कुव्वत में और ज़ियादा
جَمْعًا وَلَا يُسْأَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ							
जमियत	और न सवाल किया जाएगा	से (वाबत)	उन के गुनाह	मुजरिम (जमा)	78	फिर वह निकला	पर (सामने) अपनी कौम
فِي زِينَتِهِ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا يَا لَيْتَ لَنَا مِثْلَ							
में (साथ)	अपनी ज़ेब ओ ज़ीनत	कहा	वह लोग जो	चाहते थे (तालिब थे)	दुनिया की ज़िन्दगी	ऐ काश	हमारे पास होता ऐसा
مَا أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِينَ							
जो दिया गया	कारून	वेशक वह	नसीब वाला	बड़ा	79	और कहा	वह लोग जिन्हें
أُوتُوا الْعِلْمَ وَيَلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا							
दिया गया था इल्म	अफ़सोस तुम पर	अल्लाह का सवाब	बेहतर	उस के लिए जो	ईमान लाया	और उस ने अमल किया	अच्छा
وَلَا يُلْقِيهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿٨٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ							
और वह नसीब नहीं होता	सिवाए	सब करने वाले	80	फिर हम ने धंसा दिया	उस को	और उस के घर को	ज़मीन
فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مِنْ							
सो न हुई	उस के लिए	कोई जमाअत	मदद करती उस की	अल्लाह के सिवा	और न हुआ वह	से	
الْمُنْتَصِرِينَ ﴿٨١﴾ وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَّتْ مِنْهُمُ الْمَكَانَةُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ							
बदला लेने वाले	81	और सुबह के वक़्त	जो लोग	तमन्ना करते थे	उस का मुक़ाम	कल	कहने लगे
وَيَكَانَ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ							
हाए शामत	अल्लाह	फ़राख़ कर देता है	रिज़्क	जिस के लिए चाहे	से	अपने बन्दे	और तंग कर देता है
لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا وَيَكَانَ لَهُ لَا يَفْلِحُ							
अगर न	यह कि	एहसान करता अल्लाह	हम पर	अलबत्ता हमें धंसा देता	हाए शामत	फ़लाह नहीं पाते	
الْكَافِرُونَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ							
काफ़िर (जमा)	82	यह	आख़िरत का घर	हम करते हैं उसे	उन लोगों के लिए जो		
لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فُسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾							
वह नहीं चाहते	बड़ाई	ज़मीन में	और न फ़साद	और अन्जाम (नेक)	परहेज़गारों के लिए	83	
مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ							
जो आया	नेकी के साथ	तो उस के लिए	उस से बेहतर	और जो	आया	बुराई के साथ	
فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾							
तो बदला न मिलेगा	उन लोगों को जिन्होंने ने	उन्होंने ने बुरे काम किए	मगर-सिवा	जो	वह करते थे	84	

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَى مَعَادٍ ط							
बेशक	वह (अल्लाह) जिस ने	लाज़िम किया	तुम पर	कुरआन	ज़रूर फेर लाएगा तुम्हें	सब से अच्छी लौटने की जगह	
قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَى وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُلْقَى إِلَيْكَ الْكِتَابُ							
फरमा दें	मेरा रब	खूब जानता है	कौन	आया	हिदायत के साथ	और वह कौन	में
إِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾							
खुली गुमराही	85	और तुम न थे	उम्मीद रखते	कि उतारी जाएगी	तुम्हारी तरफ	किताब	
मगर	रहमत	से	तुम्हारा रब	सो तुम हरगिज़ न होना	मददगार	काफ़िरों के लिए	86
وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنْزِلَتْ إِلَيْكَ							
और वह तुम्हें हरगिज़ न रोके	से	अल्लाह के अहकाम	वाद	जबकि	नाज़िल किए गए	तुम्हारी तरफ	
وَادْعُ إِلَى رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ							
और आप बुलाएं	अपने रब की तरफ	और तुम हरगिज़ न होना	से	मुश्रिकीन	87	और न पुकारो तुम	
مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا							
अल्लाह के सिवा	कोई माबूद	दूसरा	नहीं कोई माबूद	उस के सिवा	हर चीज़	फना होने वाली	सिवा
وَجْهَهُ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾							
उस की ज़ात	उसी के लीए - का	हुकम	और उस की तरफ	तुम लौट कर जाओगे	88		
آيَاتُهَا ٦٩ ﴿٢٩﴾ سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ ﴿٧﴾							
आयात 69		सूरतुल अन्कबूत (29)		रुकुआत 7			
مकड़ी							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
الْم ﴿١﴾ أَحْسِبَ النَّاسُ أَنْ يَتْرُكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ							
अलिफ़ लाम मीम	1	क्या गुमान किया है	लोग	कि वह छोड़ दिए जाएंगे	कि	उन्होंने ने कह दिया	हम ईमान लाए
لَا يُفْتَنُونَ ﴿٢﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ							
वह न आजमाए जाएंगे	2	और अलबत्ता हम ने आजमाया	वह लोग जो	उन से पहले	तो ज़रूर मालूम करलेगा अल्लाह		
الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَذِبِينَ ﴿٣﴾ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ							
वह लोग जो	सच्चे हैं	और वह ज़रूर मालूम करलेगा	झूटे	3	क्या गुमान किया है	वह लोग जो	
يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ يَسْبِقُونَا ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٤﴾ مَنْ							
करते हैं	बुरे काम	कि	वह हम से बाहर बच निकलेंगे	बुरा है	जो वह फैसला कर रहे हैं	4	जो
كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٥﴾							
वह उम्मीद रखता है	अल्लाह से मुलाकात की	तो बेशक	अल्लाह का वादा	ज़रूर आने वाला	और वह	सुनने वाला	जानने वाला

बेशक जिस अल्लाह ने तुम पर कुरआन (पर अमल और तबलीग) को लाज़िम किया है वह तुम्हें ज़रूर सब से अच्छी लौटने की जगह फेर लाएगा, आप (स) फरमा दें मेरा रब खूब जानता है कि कौन हिदायत के साथ आया और कौन खुली गुमराही में है। (85)

और तुम न थे उम्मीद रखते कि तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी जाएगी, मगर तुम्हारे रब की रहमत से (नुज़ूल हुआ), सो तुम हरगिज़ हरगिज़ न होना काफ़िरों के लिए मददगार। (86)

और वह तुम्हें हरगिज़ अल्लाह के अहकाम से न रोके, उस के बाद जबकि नाज़िल किए गए तुम्हारी तरफ़, और आप (स) अपने रब की तरफ़ बुलाएं, और हरगिज़ मुशरिकों में से न होना। (87)

और अल्लाह के साथ न पुकारो कोई दूसरा माबूद, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस की ज़ात के सिवा हर चीज़ फना होने वाली है, उसी का हुकम है और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (88)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-मीम। (1)

क्या लोगों ने गुमान कर लिया है कि वह (इतने पर) छोड़ दिए जाएंगे कि उन्होंने ने कह दिया कि हम ईमान ले आए हैं, और वह न आजमाए जाएंगे। (2)

और अलबत्ता हम ने उन से पहले लोगों को आजमाया, तो अल्लाह ज़रूर मालूम कर लेगा उन लोगों को जो सच्चे हैं, और ज़रूर मालूम कर लेगा झूठों को। (3)

जो लोग बुरे काम करते हैं क्या उन्होंने ने गुमान किया है कि वह हम से बाहर बच निकलेंगे? बुरा है जो वह फैसला (खयाल) कर रहे हैं। (4)

जो कोई अल्लाह से मुलाकात (मिलने) की उम्मीद रखता है तो बेशक अल्लाह का वादा ज़रूर आने वाला है और वह सुनने वाला, जानने वाला। (5)

और जो कोई कोशिश करता है तो सिर्फ अपनी ज़ात के लिए कोशिश करता है। वेशक अल्लाह अलबत्ता जहान वालों से बेनियाज़ है। (6) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए अलबत्ता हम ज़रूर उन से उन की बुराइयां दूर कर देंगे, और हम ज़रूर उन्हें (उन के आमाल की) ज़ियादा बेहतर जज़ा देंगे जो वह करते थे। (7) और हम ने इन्सान को माँ बाप से हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया है, और अगर वह तुझ से कोशिश करें (ज़ोर डालें) कि तू (किसी को) मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे कोई इल्म नहीं, तो उन का कहा न मान, तुम्हें मेरी तरफ़ लौट कर आना है, तो मैं तुम्हें ज़रूर बतलाऊँगा वह जो तुम करते थे। (8) और जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, हम उन्हें ज़रूर नेक बन्दों में दाख़िल करेंगे। (9) और कुछ लोग कहते हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, फिर जब अल्लाह की राह में सताए गए तो उन्होंने ने लोगों के सताने को बना लिया (समझ लिया) जैसे अल्लाह का अज़ाब हो, और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई मदद आए तो (उस वक़्त) वह ज़रूर कहते हैं वेशक हम तुम्हारे साथ हैं, क्या अल्लाह ख़ूब जानने वाला नहीं जो दुनिया जहान वालों के दिल में है। (10) और अल्लाह ज़रूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और ज़रूर मालूम करेगा मुनाफ़ि़कों को। (11) और काफ़िरों ने ईमान लाने वालों को कहा: तुम हमारी राह चलो, और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे, हालांकि वह उन के गुनाह उठाने वाले नहीं कुछ भी, वेशक वह झूटे हैं। (12) और वह अलबत्ता ज़रूर अपने बोझ उठायेंगे और बहुत से बोझ अपने बोझ के साथ, और कियामत के दिन अलबत्ता उन से ज़रूर उस (के वारे में) बाज़ पुर्स होगी जो वह झूट घड़ते थे। (13)

وَمَنْ جَاهِدْ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ							
और जो	कोशिश करता है	तो सिर्फ	कोशिश करता है वह	अपनी ज़ात के लिए	वेशक अल्लाह	अलबत्ता	से
الْعَالَمِينَ ﴿٦﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ							
जहान वाले	6	और जो लोग	ईमान लाए	और उन्होंने ने अच्छे अमल किए	अलबत्ता हम ज़रूर दूर कर देंगे		
عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٧﴾							
उन से	उन की बुराइयां	और हम ज़रूर जज़ा देंगे उन्हें	ज़ियादा बेहतर	वह जो	वह करते थे	7	
وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَإِنْ جَاهَدَكَ							
और हम ने हुक्म दिया	इन्सान	माँ बाप से	हुस्ने सुलूक का	और अगर	तुझ से कोशिश करें		
لِتُشْرِكَ بِى مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا							
कि तू शरीक ठहराए मेरा	जिस का नहीं	तुझे	उस का कोई इल्म	तो कहा न मान उन का			
إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا							
मेरी तरफ तुम्हें लौट कर आना	तो मैं ज़रूर बतलाऊँगा तुम्हें	वह जो	तुम करते थे	8	और जो लोग	वह ईमान लाए	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ﴿٩﴾ وَمِنَ							
और उन्होंने ने अमल किए	अच्छे	हम उन्हें ज़रूर दाख़िल करेंगे	नेक बन्दों में	9	और से-कुछ		
النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ							
लोग	जो कहते हैं	हम ईमान लाए	अल्लाह पर	फिर जब	सताए गए	अल्लाह की (राह) में	बना लिया
فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِّن رَّبِّكَ							
सताना	लोग	जैसे अज़ाब अल्लाह का	और अगर	आए	कोई मदद	तुम्हारे रब से	
لَيَقُولَنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ							
तो वह ज़रूर कहते हैं	वेशक हम थे	तुम्हारे साथ	क्या नहीं है अल्लाह	खूब जानने वाला	वह जो	सीनों (दिल) में	
الْعَالَمِينَ ﴿١٠﴾ وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ							
जहान वाले	10	और अलबत्ता ज़रूर मालूम करेगा अल्लाह	वह लोग जो	ईमान लाए	और अलबत्ता ज़रूर मालूम करेगा		
الْمُنَافِقِينَ ﴿١١﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا							
मुनाफ़ि़क (जमा)	11	और कहा	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	उन लोगों को जो ईमान लाए	तुम चलो		
سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا هُمْ بِحَمِلِينَ مِنْ خَطِيئَتِهِمْ							
हमारी राह	और हम उठा लेंगे	तुम्हारे गुनाह	हालांकि वह नहीं	उठाने वाले	से	उन के गुनाह	
مِّن شَيْءٍ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٢﴾ وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ							
कुछ	वेशक वह	अलबत्ता झूटे	12	और वह अलबत्ता ज़रूर उठावेंगे	अपने बोझ	और बहुत से बोझ	साथ
أَثْقَالِهِمْ وَلَيُسْأَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣﴾							
अपने बोझ	और अलबत्ता उन से ज़रूर बाज़ पुर्स होगी	क़ियामत के दिन	उस से जो	वह झूट घड़ते थे	13		

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ							वेशक हम ने नूह (अ) को उस की कौम की तरफ़ भेजा, तो वह उन में पचास साल कम हज़ार								
हज़ार साल		उन में		तो वह रहे		उस की कौम की तरफ़		नूह (अ) को		और वेशक हम ने भेजा					
إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٤﴾															
14		ज़ालिम थे		और वह		तूफ़ान		फिर उन्हें आ पकड़ा		साल		पचास		मगर कम	
فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾															
15		जहान वालों के लिए		एक निशानी		और उसे बनाया		और कश्ती वालों को		फिर हम ने उसे बचा लिया					
وَابْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾ إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٧﴾ وَإِنْ تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ الْمُبِينُ ﴿١٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنْشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾															
यह		और उस से डरो		तुम इबादत करो अल्लाह की		अपनी कौम को		जब उस ने कहा		और इब्राहीम (अ)					
से		तुम परसतिश करते हो		इस के सिवा नहीं		16		तुम जानते हो		अगर		बेहतर तुम्हारे लिए			
परसतिश करते हो		वह जिन की तुम		वेशक		झूट		और तुम घड़ते हो		बुतों की		अल्लाह के सिवा			
पस तुम तलाश करो		रिज़क के		तुम्हारे लिए		वह मालिक नहीं		अल्लाह के सिवा							
उस की तरफ़		उस का		और शुक्र करो		और उस की इबादत करो		रिज़क		अल्लाह के पास					
बहुत सी उम्मतें		तो झुटला चुकी हैं		तुम झुटलाओगे		और अगर		17		तुम्हें लौट कर जाना है					
18		साफ़ तौर पर		पहुँचा देना		मगर		रसूल		पर (ज़िम्मे)		और नहीं		तुम से पहली	
फिर दोबारा पैदा करेगा उस को		पैदाइश		इबतिदा करता है अल्लाह		कैसे		देखा उन्होंने ने		क्या नहीं					
ज़मीन में		चलो फिरो		फ़रमा दें		19		आसान		अल्लाह पर		यह		वेशक	
उठाएगा		अल्लाह		फिर		पैदाइश		कैसे इबतिदा की		फिर देखो तुम					
20		कुदरत रखने वाला		हर शै		पर		वेशक अल्लाह		आख़री (दूसरी)		उठान			
21		तुम लौटाए जाओगे		और उसी की तरफ		जिस पर चाहे		और रहम फरमाता है		जिस को चाहे		वह अज़ाब देता है			

वेशक हम ने नूह (अ) को उस की कौम की तरफ़ भेजा, तो वह उन में पचास साल कम हज़ार बरस रहे, फिर उन्हें (कौम नूह अ को) तूफ़ान ने आ पकड़ा, और वह ज़ालिम थे। (14)

फिर हम ने उसे और कश्ती वालों को बचा लिया और उस (कश्ती) को जहान वालों के लिए एक निशानी बनाया। (15)

और याद करो जब इब्राहीम (अ) ने अपनी कौम को कहा तुम अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (16)

इस के सिवा नहीं कि तुम परस्तिश करते हो अल्लाह के सिवा बुतों की, और तुम झूट घड़ते हो, वेशक अल्लाह के सिवा तुम जिन की परस्तिश करते हो वह तुम्हारे लिए रिज़क के मालिक नहीं, पस तुम अल्लाह के पास (से) रिज़क तलाश करो, और तुम उस की इबादत करो और उस का शुक्र करो, और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (17)

और अगर तुम झुटलाओगे तो झुटला चुकी हैं बहुत सी उम्मतें तुम से पहली (भी), और रसूल (स) के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ तौर पर पहुँचा देना। (18)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा कैसे अल्लाह पैदाइश की इबतिदा करता है! फिर दोबारा उस को पैदा करेगा, वेशक अल्लाह पर यह आसान है। (19)

आप (स) फ़रमा दें (दुनिया में) चलो फिरो, फिर देखो उस ने कैसे पैदाइश की इबतिदा की फिर अल्लाह उठाएगा दूसरी उठान (दूसरी बार), वेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (20)

वह जिस को चाहे अज़ाब देता है और जिस पर चाहे रहम फ़रमाता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (21)

और तुम ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं और न आस्मान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई हिमायती है और न कोई मददगार। (22)

और जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का और उस की मुलाकात का इन्कार किया यही लोग मेरी रहमत से नाउम्मीद हुए, और यही हैं जिन के लिए अज़ाब है दर्दनाक। (23)

सो उस की कौम का जवाब इस के सिवा न था कि उसे क़त्ल कर डालो या उस को जला दो, सो अल्लाह ने उस को आग से बचा लिया। वेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (24)

और इब्राहीम (अ) ने कहा: वेशक तुम ने अल्लाह के सिवा बुतों को दुनिया की ज़िन्दगी में आपस की दोस्ती (की वजह) बना लिए हो, फिर क़ियामत के दिन तुम में से एक दूसरे का मुक़ालिफ़ हो जाएगा और तुम में से एक दूसरे पर लानत (मलामत) करेगा, और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं। (25)

पस उस पर लूत (अ) ईमान लाया और उस ने कहा वेशक मैं अपने रब की तरफ़ हिज़्रत करने वाला (वतन छोड़ने वाला हूँ), वेशक वही ग़ालिब हिक्मत वाला है। (26)

और हम ने उस (इब्राहीम अ) को अ़ता फ़रमाए इसहाक़ (अ) और याकूब (अ) और हम ने उस की औलाद में नुबुव्वत और किताब रखी, और हम ने उस को उस का अजर दिया दुनिया में और वेशक वह आख़िरत में अलबत्ता नेकोकारों में से है। (27)

और (हम ने भेजा) लूत (अ) को, याद करो जब उस ने कहा अपनी कौम को, वेशक तुम बेहयाई का (ऐसा काम) करते हो जो तुम से पहले ज़हान वालों में से किसी ने नहीं किया। (28)

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَمَا						
और न हो तुम	आजिज़ करने वाले	ज़मीन में	और न	आस्मान में	और नहीं	
لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ (٢٢) وَالَّذِينَ						
तुम्हारे लिए	अल्लाह के सिवा	कोई हिमायती	और न	कोई मददगार	22	और वह लोग जिन्होंने
كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَايَةِ أُولَئِكَ يَسْأَلُونَ مِنْ رَحْمَتِي						
इन्कार किया	अल्लाह की निशानियों का	और उस की मुलाकात	यही है	वह नाउम्मीद हुए	मेरी रहमत से	
وَأُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (٢٣) فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ						
और यही है	उन के लिए	अज़ाब	दर्दनाक	23	सो न था	जवाब
إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنْجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ						
सिवाए यह कि	उन्होंने ने कहा	क़त्ल करो उस को	या	जला दो उस को	सो बचा लिया उस को अल्लाह	आग से
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ (٢٤) وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ						
वेशक	इस में	निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो ईमान रखते हैं	24	और (इब्राहीम अ ने) कहा इस के सिवा नहीं
مِّنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا						
अल्लाह के सिवा	बुत (जमा)	दोस्ती	अपने दरमियान (आपस में)	दुनिया की ज़िन्दगी में		
ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ						
फिर	क़ियामत के दिन	काफ़िर (मुक़ालिफ़) हो जाएगा	तुम में से बाज़ (एक)	बाज़ (दूसरे) का		
وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوَهُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ						
और लानत करेगा	तुम में से बाज़ (एक)	बाज़ (दूसरे) का	और तुम्हारा ठिकाना	जहन्नम	और नहीं तुम्हारे लिए	
مِّنْ نَّصِيرِينَ (٢٥) فَمَنْ لَهُ لُوطٌ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ						
कोई मददगार	25	पस ईमान लाया	उस पर	लूत (अ)	और उस ने कहा	वेशक मैं
إِلَىٰ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (٢٦) وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ						
अपने रब की तरफ़	वेशक वह	वह	ज़बरदस्त ग़ालिब	हिक्मत वाला	26	और हम ने अ़ता फ़रमाए
وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ						
और याकूब (अ)	और हम ने रखी	उस की औलाद में	नुबुव्वत	और किताब		
وَاتَيْنَاهُ أَجْرَهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ						
और हम ने दिया उस को	उस का अजर	दुनिया में	और वेशक वह	आख़िरत में		
لَمِنَ الصَّالِحِينَ (٢٧) وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ						
अलबत्ता नेकोकारों में से	27	और लूत (अ)	(याद करो) जब उस ने कहा	अपनी कौम को	वेशक तुम	तुम करते हो
الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ (٢٨)						
बेहयाई	नहीं पहले किया तुम से	उस को	किसी ने	से	जहान वाले	28

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ وَتَأْتُونَ						
क्या तुम वाकई	अलबत्ता तुम करते हो	मर्द (जमा)	और मारते हो	राह	और तुम करते हो	
فِي نَادِيكُمْ الْمُنْكَرُ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا						
अपनी महफिलों में	नाशाइस्ता हरकात	सो न था	उस की कौम का जवाब	सिवाए	कि	उन्होंने ने कहा
اَتَيْنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ						
ले आ हम पर	अल्लाह का अज़ाब	अगर तू है	से	सच्चे लोग	29	कहा
انْصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ﴿٣٠﴾ وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا						
मेरी मदद फुरमा	पर	कौम - लोग	मुफ्सिद (जमा)	30	और जब	आए
إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ						
इब्राहीम (अ)	खुशखबरी ले कर	उन्होंने ने कहा	वेशक हम	हलाक करने वाले	लोग	उस बस्ती
إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ إِنَّ فِيهَا						
वेशक	उस के लोग	ज़ालिम (बड़े शरीर) हैं	31	इब्राहीम (अ) ने कहा	वेशक उस में	
لُوطًا قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ						
लूत (अ)	वह बोले	हम	खूब जानते हैं	उस को जो उस में	अलबत्ता हम बचा लेंगे उस को	और उस के घर वाले
إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ						
सिवा	उस की बीवी	वह है	से	पीछे रह जाने वाले	और जब	आए
رُسُلَنَا لُوطًا سِئَاءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا						
हमारे फरिश्ते	लूत (अ) के पास	परेशान हुआ	उन से	और तंग हुआ	उन से	दिल में
لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنْجِيُكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا						
डरो नहीं तुम	और न ग़म खाओ	वेशक हम बचाने वाले हैं तुझे	और तेरे घर वाले	सिवा		
امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٣٣﴾ إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَى أَهْلِ						
तेरी बीवी	वह है	से	पीछे रह जाने वाले	33	वेशक हम	नाज़िल करने वाले
هَذِهِ الْقَرْيَةِ رَجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٣٤﴾						
इस बस्ती	अज़ाब	आस्मान से	इस वजह से कि	वह बदकारी करते थे	34	
وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ						
और अलबत्ता हम ने छोड़ा	उस से	कुछ वाज़ेह निशानी	लोगों के लिए	वह अक्ल रखते हैं	35	और मदयन की तरफ़
أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا						
उन का भाई	शुऐब (अ) को	पस उस ने कहा	ऐ मेरी कौम	तुम इबादत करो अल्लाह की	और उम्मीद वार रहो	
الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْشَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٣٦﴾						
आखिरत का दिन	और न फिरो	ज़मीन में	फ़साद करते हुए (मचाते)	36		

क्या तुम वाकई मर्दों से (फेंले बद) करते हो, और राह मारते (डाके डालते) हो, और तुम अपनी महफिलों में करते हो नाशायस्ता हरकात, सो उस की कौम का जवाब इस के सिवा न था कि उन्होंने ने कहा हम पर अल्लाह का अज़ाब ले आ, अगर तू है सच्चे लोगों में से। (29)

लूत (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुफ्सिद लोगों पर मेरी मदद फुरमा। (30) और जब आए हमारे फरिश्ते इब्राहीम (अ) के पास खुशखबरी ले कर, उन्होंने ने कहा वेशक हम उस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं, वेशक उस (बस्ती) के लोग बड़े शरीर हैं। (31)

इब्राहीम (अ) ने कहा वेशक उस (बस्ती) में लूत (अ) (भी है), वह (फरिश्ते) बोले हम खूब जानते हैं उस को जो उस (बस्ती) में हैं, अलबत्ता हम उस को और उस के घर वालों को ज़रूर बचा लेंगे सिवाए उस की बीवी, वह पीछे रह जाने वालों में से है। (32)

और जब हमारे फरिश्ते लूत (अ) के पास आए वह उन (के आने) से परेशान हुआ, उन की वजह से दिल तंग हुआ, और वह बोले डरो नहीं और ग़म न खाओ, वेशक हम तुझे और तेरे घर वालों को बचाने वाले हैं सिवाए तेरी बीवी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है। (33)

वेशक हम इस बस्ती के लोगों पर आस्मान से अज़ाब नाज़िल करने वाले हैं, इस वजह से कि वह बदकारी करते थे। (34)

और अलबत्ता हम ने उस (बस्ती) से कुछ वाज़ेह निशान उन लोगों के लिए छोड़े (वाकी रखे) जो अक्ल रखते हैं। (35)

और मदयन (वालों) की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) को भेजा पस उस ने कहा ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो और आखिरत के दिन के उम्मीद वार रहो, और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो। (36)

फिर उन्होंने ने उस को झुटलाया तो उन को आ पकड़ा ज़लज़ले ने, पस वह सुबह को अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (37)

और (हम ने हलाक किया) आद और समूद को, और तहकीक तुम पर उन के रहने के मुकामात वाज़ेह हो गए हैं, और शैतान ने उन के आमाल उन के लिए (उन्हें) भले कर दिखाए फिर उस ने उन्हें राहे (हक) से रोक दिया, हालांकि वह समझ बूझ वाले थे। (38)

और (हम ने हलाक किया) कारून और फिरऔन, और हामान को, और उन के पास मूसा (अ) खुली निशानियों के साथ आए तो उन्होंने ने तकब्बुर किया मुल्क में और वह बच कर भाग निकलने वाले न थे। (39)

पस हम ने हर एक को उस के गुनाह पर पकड़ा तो उन में से (बाज़ वह हैं) जिन पर हम ने पत्थरों की बारिश भेजी, और उन में से बाज़ को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, और उन में से बाज़ को हम ने ज़मीन में धंसा दिया, और उन में से बाज़ को हम ने गर्क कर दिया, और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि उन पर जुल्म करता बल्कि वह खुद अपनी जानों पर जुल्म करते थे। (40)

उन लोगों की मिसाल जिन्होंने ने बनाए अल्लाह के सिवा मददगार, मकड़ी की मानिंद है, उस ने एक घर बनाया, और घरों में सब से कमज़ोर (बोदा) घर मकड़ी का है, काश वह जानते होते। (41)

वेशक अल्लाह जानता है जो वह पुकारते हैं उस के सिवा जिस चीज़ को भी, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला। (42)

और यह मिसालें हम बयान करते हैं, लोगों के लिए, और उन्हें नहीं समझते जानने वालों के सिवा। (43)

और अल्लाह ने आस्मान और ज़मीन को पैदा किया हक के साथ, वेशक उस में ईमान वालों के लिए निशानी है। (44)

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ									
अपने घर में		पस वह सुबह को हो गए		ज़लज़ला		तो आ पकड़ा उन्हें		फिर उन्होंने ने झुटलाया उस को	
جُثَمِينَ ۚ وَعَادًا وَثَمُودًا وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسْكِنِهِمْ ۚ									
उन के रहने के सुक़ामात		तुम पर		वाज़ेह हो गए है		और तहकीक		और समूद और आद 37 औन्धे पड़े हुए	
وَرَيَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانَ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ									
राह		से		फिर रोक दिया उन्हें		उन के आमाल		शैतान उन के लिए और भले कर दिखाए	
وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۚ وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ									
और अलबत्ता आए उन के पास		और हामान		और फिरऔन		और कारून		38 समझ बूझ वाले हालांकि वह थे	
مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا									
और वह न थे		ज़मीन (मुल्क) में		तो उन्होंने ने तकब्बुर किया		खुली निशानियों के साथ		मूसा (अ)	
سَبْقِينَ ۚ فَكَلَّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ									
उस पर		हम ने भेजी		जो		तो उन में से		उस के गुनाह पर हम ने पकड़ा पस हर एक 39 वच कर भाग निकलने वाले	
حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا									
हम ने धंसा दिया		जो		और उन में से		चिंघाड़		उस को पकड़ा जो (वाज़) और उन में से पत्थरों की बारिश	
بِهِ الْأَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَعْرَفْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ									
जुल्म करता उन पर		अल्लाह		और नहीं है		जो हम ने गर्क कर दिया		और उन में से ज़मीन में उस को	
وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۚ مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا									
बनाए		वह लोग जिन्हों ने		मिसाल		40 जुल्म करते		खुद अपनी जानों पर वह थे और लेकिन (बल्कि)	
مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنَكَبُوتِ ۚ اتَّخَذَتْ بَيْتًا									
एक घर		उस ने बनाया		मकड़ी		मानिंद		मददगार अल्लाह के सिवा	
وَأَنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنَكَبُوتِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۚ									
41		जानते		काश होते वह		मकड़ी का		घर है घरों में सब से कमज़ोर और वेशक	
إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ									
और वह		कोई चीज़		उस के सिवा		से		जो वह पुकारते है जानता है वेशक अल्लाह	
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۚ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ									
लोगों के लिए		हम बयान करते है		मिसालें		और यह		42 हिक्मत वाला ग़ालिब ज़बरदस्त	
وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ۚ خَلَقَ اللَّهُ السَّمُوتِ									
आस्मान (जमा)		पैदा किए अल्लाह ने		43		जानने वाले		सिवा और नहीं समझते उन्हें	
وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۚ									
44		ईमान वालों के लिए		अलबत्ता निशानी		उस में		वेशक हक के साथ और ज़मीन	

أَتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ						
नमाज़	और काइम करें	किताब से	आप (स) की तरफ़	वहि की गई	जो	आप (स) पढ़ें
إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ						
सब से बड़ी बात	और अलबत्ता अल्लाह की याद	और बुराई	बेहयाई	से	रोकती है	नमाज़ वेशक
وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿٤٥﴾ وَلَا تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ						
अहले किताब	और तुम न झगड़ो	45	जो तुम करते हो	जानता है	और अल्लाह	
إِلَّا بِالتِّي هِيَ أَحْسَنُ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقُولُوا						
और तुम कहो	उन (में) से	जिन लोगों ने जुल्म किया	सिवाए	वह बेहतर	मगर उस तरीके से जो	
أَمَّا بِالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَأُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَالْهُنَا وَالْهُكْمُ وَاحِدٌ						
एक	और तुम्हारा माबूद	और हमारा माबूद	तुम्हारी तरफ़	और नाज़िल किया गया	हमारी तरफ़	हम ईमान लाए उस पर जो
وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٤٦﴾ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ فَالَّذِينَ						
पस जिन लोगों को	किताब	हम ने नाज़िल की तुम्हारी तरफ़	और उसी तरह	46	फरमावरदार (जमा)	उस के और हम
اتَّبَعَهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ						
उस पर	वाज़ ईमान लाते हैं	और इन अहले मक्का से	उस पर	वह ईमान लाते हैं	किताब	हम ने दी उन्हें
وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ﴿٤٧﴾ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوا مِنْ قَبْلِهِ						
इस से क़व्ल	आप (स) पढ़ते थे	और न	47	काफ़िर (जमा)	मगर (सिर्फ़)	हमारी आयतों का और वह नहीं इन्कार करते
مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخْطئه بِيَمِينِكَ إِذَا لَأَزْتَابُ الْمُبْطِلُونَ ﴿٤٨﴾						
48	हक़ नाशानास	आलबत्ता शक करते	उस (सूरत) में	अपने दाए हाथ से	और न उसे लिखते थे	कोई किताब
بَلْ هُوَ آيَةٌ بَيِّنَةٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَمَا يَجْحَدُ						
और नहीं इन्कार करते	इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	सीनों में	वाज़ेह आयतें	बल्कि वह	
بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ ﴿٤٩﴾ وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ						
आप (स) फ़रमा दें	उस के रब से	निशानियाँ	उस पर	नाज़िल की गई	क्यों न	और वह बोले
49	ज़ालिम (जमा)	मगर	हमारी आयतों का	फ़रमा दें	उस के रब से	निशानियाँ
إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٠﴾ أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنْزَلْنَا						
कि हम ने नाज़िल की	क्या उन के लिए काफी नहीं	50	साफ़ साफ़	डराने वाला	और इस के सिवा नहीं कि मैं	अल्लाह के पास निशानियाँ इस के सिवा नहीं
عَلَيْكَ الْكِتَابُ يُتْلَى عَلَيْهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَى لِقَوْمٍ						
उन लोगों के लिए	और नसीहत	अलबत्ता रहमत है	उस में	वेशक	उन पर	पढ़ी जाती है
يُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾ قُلْ كَفَى بِاللَّهِ بَيِّنًا وَبَيِّنَاتٍ شَهِيدًا يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ						
आस्मानों में	जो	वह जानता है	गवाह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	आप (स) फ़रमा दें कि काफी है अल्लाह
51	वह ईमान लाते हैं	वह ईमान लाते हैं	वह ईमान लाते हैं	वह ईमान लाते हैं	वह ईमान लाते हैं	वह ईमान लाते हैं
وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ ﴿٥٢﴾						
52	वह घाटा पाने वाले	वही है	अल्लाह के	और वह मुन्किर हुए	वातिल पर	ईमान लाए और जो लोग और ज़मीन में

आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ़ किताब वहि की गई है, और नमाज़ काइम करें, वेशक नमाज़ रोकती है बेहयाई और बुराई से, और अलबत्ता अल्लाह की याद सब से बड़ी बात है, और अल्लाह जानता है जो तम करते हो। (45) और तुम अहले किताब से न झगड़ो मगर उस तरीके से जो बेहतर हो, सिवाए उन में से जिन लोगों ने जुल्म किया, और तुम कहो हम उस पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया, और हमारा माबूद और तुम्हारा माबूद एक है, और हम उस के फरमावरदार हैं। (46) और उसी तरह हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की, पस जिन लोगों को हम ने किताब दी है वह ईमान लाते हैं उस पर, और अहले मक्का में से वाज़ उस पर ईमान लाते हैं, और हमारी आयतों से इन्कार सिर्फ़ काफ़िर करते हैं। (47) और आप (स) इस (नुजुले कुरआन) से क़व्ल कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने दाए हाथ से उसे लिखते थे। उस सूरत में अलबत्ता हक़ नाशानास शक करते। (48) बल्कि यह वाज़ेह आयतें उन के सीनों में महफूज़ हैं जिन्हें इल्म दिया गया, और हमारी आयतों का इन्कार सिर्फ़ ज़ालिम करते हैं। (49) और वह बोले उस पर उस के रब की तरफ़ से निशानियाँ (मोजिज़ात) क्यों न नाज़िल की गईं, आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि निशानियाँ (मोजिज़ात) अल्लाह के पास हैं और इस के सिवा नहीं कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (50) क्या उन लोगों के लिए काफी नहीं कि हम ने आप (स) पर किताब नाज़िल की जो उन पर पढ़ी जाती है, वेशक उस में उन लोगों के लिए रहमत और नसीहत है जो ईमान लाते हैं। (51) आप (स) फ़रमा दें अल्लाह काफी है मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह, वह जानता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और जो लोग वातिल पर ईमान लाए और वह अल्लाह के मुन्किर हुए वही लोग हैं घाटा पाने वाले। (52)

और वह आप (स) से अज़ाब की जल्दी करते हैं, और अगर मीआद न होती मुकर्रर, तो उन पर अज़ाब आ चुका होता, और वह उन पर ज़रूर अचानक आएगा और उन्हें ख़बर (भी) न होगी। (53)

और वह आप (स) से अज़ाब की जल्दी करते हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है। (54)

जिस दिन उन्हें ढांप लेगा अज़ाब, उन के ऊपर से और उन के पाऊँ के नीचे से, और (अल्लाह तआला) कहेगा (उस का मज़ा) चखो जो तुम करते थे। (55)

ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो! बेशक मेरी ज़मीन वसीअ है, पस तुम मेरी ही इबादत करो। (56)

हर शख्स को मौत (का मज़ा) चखना है, फिर तुम हमारी तरफ़ लौटाए जाओगे। (57)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, हम ज़रूर उन्हें जगह देंगे जन्नत के वाला खानों में, उस के नीचे नहरें जारी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, क्या ही अच्छा अजर है काम करने वालों का। (58)

जिन लोगों ने सब्र किया, और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (59)

और बहुत से जानवर हैं (जो) नहीं उठाए (फिरते) अपनी रोज़ी, अल्लाह उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (60)

और अलबत्ता अगर तुम उन से पूछो किस ने ज़मीन और आस्मानों को बनाया? और सूरज और चाँद को काम में लगाया? तो वह ज़रूर कहेंगे “अल्लाह”, फिर वह कहां उलटे फिरे जाते हैं? (61)

अल्लाह अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहे रोज़ी फ़राख़ करता है और (जिस के लिए चाहे) उस के लिए तंग कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (62)

और अलबत्ता अगर तुम उन से पूछो: किस ने आस्मान से पानी उतारा? फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा कर दिया, वह ज़रूर कहेंगे “अल्लाह”, आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, लेकिन उन में अक्सर लोग अक्ल से काम नहीं लेते। (63)

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَوْ لَا أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاءَهُمُ الْعَذَابُ

अज़ाब	तो आ चुका होता उन पर	मुकर्रर	मीआद	और अगर न	अज़ाब की	और वह आप (स) से जल्दी करते हैं

وَلَيَأْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ

अज़ाब की	आप (स) से जल्दी करते हैं	53	उन्हें खबर न होगी	और वह	अचानक	और ज़रूर उन पर आएगा

وَأَنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يَغْشَاهُمْ الْعَذَابُ

अज़ाब	उन्हें ढांप लेगा	(जिस) दिन	54	काफ़िरों को	अलबत्ता घेरे हुए	जहन्नम और बेशक

مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾

55	तुम करते थे	जो	चखो तुम	और वह कहेगा	उन के पाऊँ	और नीचे से	उन के ऊपर से

يَعْبَادِي الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي وَاسِعَةٌ فَإَيَّاهُ فَاعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾

56	पस तुम इबादत करो	पस मेरी ही	वसीअ	मेरी ज़मीन	बेशक	जो ईमान लाए	ऐ मेरे बन्दो

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا

और जो लोग ईमान लाए	57	तुम लौटाए जाओगे	फिर हमारी तरफ़	मौत	चखना	हर शख्स

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي

जारी है	वाला खाने	जन्नत	से - के	हम ज़रूर उन्हें जगह देंगे	नेक	और उन्होंने ने अमल किए

مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نِعَمَ أَجْرُ الْعَمِلِينَ ﴿٥٨﴾

58	काम करने वाले	(क्या ही) अच्छा अजर है	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उस के नीचे से

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٥٩﴾ وَكَانَ مِنْ دَابَّةٍ لَا تَحْمِلُ

नहीं उठाते	जानवर जो	और बहुत से	59	वह भरोसा करते हैं	और वह अपने रब पर	जिन लोगों ने सब्र किया

رِزْقَهَا ۗ اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۗ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٠﴾ وَلَئِنْ

और अलबत्ता अगर	60	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	और तुम्हें भी	उन्हें रोज़ी देता है	अल्लाह	अपनी रोज़ी

سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

और चाँद	सूरज	और काम में लगाया	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	किस ने बनाया	तुम पूछो उन से

لَيَقُولَنَّ اللَّهُ ۖ فَاَتَىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٦١﴾ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ

जिस के लिए वह चाहता है	रोज़ी	फ़राख़ करता है	अल्लाह	61	वह उलटे फिरे जाते हैं	फिर कहां	अल्लाह	वह ज़रूर कहेंगे

مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِنْ

और अलबत्ता अगर	62	जानने वाला	हर चीज़ का	बेशक अल्लाह	उस के लिए	और तंग कर देता है	अपने बन्दों में से

سَأَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ

बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा कर दिया	पानी	आस्मान से	उतारा	किस ने	तुम उन से पूछो

مَوْتِهَا لَيَقُولَنَّ اللَّهُ ۖ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٣﴾

63	वह अक्ल से काम नहीं लेते	उन में अक्सर लोग	लेकिन	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	आप (स) कह दें	अल्लाह	अलबत्ता वह कहेंगे	उस का मरना

وَمَا هَذِهِ الْحَيَوةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوَ وَلَعِبٌ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ						
आखिरत का घर	और वेशक	और कूद	सिवाए खेल	दुनिया की ज़िन्दगी	यह	और नहीं
لَهَا الْحَيَوةُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٦٤﴾ فَإِذَا رَكَبُوا فِي الْفُلْكِ						
कश्ती में	वह सवार होते हैं	फिर जब	64	वह जानते होते	काश	ज़िन्दगी अलबत्ता वही
دَعَا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ﴿٦٥﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ						
पस अनक़रीब वह	और ताकि वह फाइदा उठाएँ	हम ने उन्हें दिया	वह जो	ताकि नाशुकी करें	65	शिरक करने लगते हैं
يَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا آمِنًا وَيَتَخَطَّفُ النَّاسُ						
लोग	जबकि उचक लिए जाते हैं	हरम (सरज़मीने मक्का) को अमन की जगह	कि हम ने बनाया	क्या उन्होंने ने नहीं देखा	66	जान लेंगे वह
مِنْ حَوْلِهِمْ أَفِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ ﴿٦٧﴾						
67	नाशुकी करते हैं	और अल्लाह की नेमत की	ईमान लाते हैं	क्या पस बातिल पर	उस के इर्द गिर्द	से
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ						
या झुटलाया उस ने	झूट	अल्लाह पर	बान्धा	उस से जिस ने	बड़ा ज़ालिम	और कौन
بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾						
68	काफ़िरों के लिए	ठिकाना	जहन्नम में	क्या नहीं	वह आया उस के पास	जब हक़ को
وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٦٩﴾						
69	अलबत्ता साथ है नेकोकारों के	और वेशक अल्लाह	अपने रास्ते (जमा)	हम ज़रूर उन्हें हिदायत देंगे	हमारी (राह) में	और जिन लोगों ने कोशिश की
آيَاتُهَا ٦٠ ﴿٣٠﴾ سُورَةُ الرُّومِ ﴿٦٩﴾ رُكُوعَاتُهَا ٦						
60 आयत (30) सूरतुर रोम 6 रुकुआत						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
الْم ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّومُ ﴿٢﴾ فِي أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِّنْ بَعْدِ						
वाद	और वह	करीब की ज़मीन	में	2	रोमी मग़लूब हो गए	1 अलिफ़ लाम मीम
غَلِبَهُمْ سَيَغْلِبُونَ ﴿٣﴾ فِي بَضْعِ سِنِينَ اللَّهُ الْأَمْرُ						
अल्लाह ही के लिए हुक्म	चन्द साल (जमा)	में	3	अनक़रीब वह ग़ालिब होंगे	अपने मग़लूब होने	
مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدِ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٤﴾						
4	अहले ईमान	खुश होंगे	और उस दिन	और बाद	पहले	
بِنَصْرِ اللَّهِ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٥﴾						
5	निहायत मेहरवान	ग़ालिब	और वह	जिस को चाहता है	वह मदद देता है	अल्लाह की मदद से

और यह दुनिया की ज़िन्दगी खेल कूद के सिवा कुछ नहीं, और वेशक आखिरत का घर ही (असल) ज़िन्दगी है, काश वह जानते होते। (64)

फिर जब वह कश्ती में सवार होते हैं तो वह अल्लाह को पुकारते हैं ख़ालिस उसी पर एतिकाद रखते हुए, फिर जब वह उन्हें खुशकी की तरफ़ नजात देता (बचा लाता) है तो वह फ़ौरन शिरक करने लगते हैं। (65)

ताकि उस की नाशुकी करें जो हम ने उन्हें दिया है, और ताकि वह फाइदा उठाएँ, पस अनक़रीब वह जान लेंगे। (66)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने सरज़मीने मक्का को अमन की जगह बनाया, जब कि उस के इर्द गिर्द से लोग उचक लिए जाते हैं, पस क्या वह बातिल पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुकी करते हैं। (67)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जिस ने अल्लाह पर झूट बान्धा, या जब हक़ उस के पास आया उस ने उसे झुटलाया, क्या जहन्नम में काफ़िरों के लिए ठिकाना नहीं? (68)

और जिन लोगों ने हमारी राह में कोशिश की, हम ज़रूर उन्हें हिदायत देंगे अपने रास्तों की, और वेशक अल्लाह नेकोकारों के साथ है। (69)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-मीम। (1)

रोमी क़रीब की सरज़मीन में मग़लूब हो गए। (2)

और वह अपने मग़लूब होने के बाद अनक़रीब चन्द सालों में ग़ालिब होंगे। (3)

पहले भी और पीछे भी अल्लाह ही का हुक्म है, और उस दिन अहले ईमान अल्लाह की मदद से खुश होंगे। (4)

वह जिस को चाहता है मदद देता है, और वह ग़ालिब निहायत मेहरवान है। (5)

(यह) अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के खिलाफ नहीं करता, और लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (6)

वह दुनिया की ज़िन्दगी के (सिर्फ) ज़ाहिर को जानते हैं, और वह आखिरत से ग़ाफ़िल है। (7)

क्या वह अपने दिल में ग़ौर नहीं करते? अल्लाह ने नहीं पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को, और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है मगर दुरुस्त तदवीर के साथ, और एक मुक़र्रर मीज़ाद के लिए, और वेशक लोगों में से अक्सर अपने रब की मुलाक़ात के मुनिकर है। (8)

क्या उन्होंने ने ज़मीन (दुनिया) में सैर नहीं की? वह देखते कि कैसा अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले थे, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा थे, और उन्होंने ने ज़मीन को बोया जोता, और उस को आबाद किया उस से ज़ियादा (जिस क़द्र) इन्होंने ने आबाद किया है, और उन के पास उन के रसूल रोशन दलाइल के साथ आए, पस अल्लाह (ऐसा) न था कि वह उन पर जुल्म करता और लेकिन वह अपनी जानों पर जुल्म करते थे। (9)

फिर जिन लोगों ने बुरे काम किए उन का अन्जाम बुरा हुआ कि उन्होंने ने अल्लाह की आयतों को झुटलाया और वह उन का मज़ाक़ उड़ाते थे। (10)

अल्लाह पहली बार ख़ल्क़त को पैदा करता है फिर वह उसे दोबारा पैदा करेगा, फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। (11)

और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी मुज़रिम नाउम्मीद हो कर रह जाएंगे। (12)

और उन के शरीकों में से कोई उन के सिफ़ारशी न होंगे, और वह अपने शरीकों के मुनिकर हो जाएंगे। (13)

और जिस दिन क़ियामत काइम होगी उस दिन (लोग) मुतफ़र्रिक़ (तित्तर बित्तर) हो जाएंगे। (14)

पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए सो वह बाग़े (जन्नत) में आओ भगत किए जाएंगे। (15)

وَعَدَ اللَّهُ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ

अल्लाह का वादा है	अल्लाह	ख़िलाफ़ नहीं करता अल्लाह	अपना वादा	और लेकिन	अक्सर लोग

لَا يَعْلَمُونَ ٦ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ

नहीं जानते	6	वह जानते हैं	ज़ाहिर को	से	दुनिया की ज़िन्दगी	और वह	से

الْآخِرَةِ هُمْ غَفْلُونَ ٧ أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ ٧ مَا خَلَقَ اللَّهُ

आखिरत	वह	ग़ाफ़िल है	7	क्या नहीं	वह ग़ौर करते	अपने जी (दिल) में	नहीं	पैदा किया अल्लाह

السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ٨

आस्मानों	और ज़मीन	और जो	उन दोनों के दरमियान	मगर	दुरुस्त तदवीर के साथ	और एक मुक़र्रर मीज़ाद

وَأَنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ لَكَفِرُونَ ٨ أَوَلَمْ يَسِيرُوا

और वेशक	अक्सर	लोगों से	मुलाक़ात से	अपना रब	मुनिकर है	8	क्या नहीं	उन्होंने ने सैर की

فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ٩

ज़मीन में	जो वह देखते	कैसा हुआ	अन्जाम	वह लोग जो	उन से पहले

كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآتَاوُا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ

वह थे	वहुत ज़ियादा	इन से	ताक़त (में)	और उन्होंने ने बोया जोता	ज़मीन	और उन्होंने ने उस को आबाद किया	ज़ियादा

مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ

उस से जो	इन्होंने ने उसे आबाद किया	और उन के पास आए	उन के रसूल	रोशन दलाइल के साथ	पस न था	अल्लाह	कि उन पर जुल्म करता

وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ٩ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ

और लेकिन	वह थे	अपनी जानें	जुल्म करते	9	फिर	हुआ	अन्जाम	जिन लोगों ने

أَسَاءُوا السُّوْأَىٰ أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ ١٠

बुरे काम किए	बुरा	उन्होंने ने झुटलाया	अल्लाह की आयतों को	और थे वह	उस से मज़ाक़ करते	10

اللَّهُ يَبْدُو الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ١١ وَيَوْمَ

अल्लाह पहली बार पैदा करता है	ख़ल्क़त	पस वह उसे दोबारा (पैदा) करेगा	फिर उस की तरफ़	तुम लौटाए जाओगे	11	और जिस दिन

تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ١٢ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ

बरपा होगी क़ियामत	नाउम्मीद रह जाएंगे	मुज़रिम (जमा)	12	और न होंगे	उन के लिए

مِّنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كَفِرِينَ ١٣

उन के शरीकों में से	कोई सिफ़ारशी	और वह हो जाएंगे	अपने शरीकों के	मुनिकर	13

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُؤْمِدُ يُتَفَرَّقُونَ ١٤ فَاَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا

और जिस दिन	काइम होगी क़ियामत	उस दिन	मुतफ़र्रिक़ हो जाएंगे	14	पस जो लोग ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ١٥

और उन्होंने ने अमल किए	नेक	सो वह	बाग़ में	खुशहाल (आओ भगत) किए जाएंगे	15

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ					
आखिरत	और मुलाकात को	हमारी आयतों को	और झुटलाया	कुफ़ किया	और जिन लोगों ने
فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُخَضَّرُونَ ﴿١٦﴾ فَسُبْحَنَ اللَّهُ حِينَ					
जब	अल्लाह	पस पाकीज़गी (बयान करो)	16	हाज़िर (गिरफ्तार) किए जाएंगे	अज़ाब में
تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ﴿١٧﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمُوتِ					
आस्मानों में	तमाम तारीफें	और उस के लिए	17	तुम सुबह करो (सुबह के वक़्त)	और जब
وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ﴿١٨﴾ يُخْرِجُ الْحَيَّ					
ज़िन्दा	वह निकालता है	18	तुम जुहर करते हो (जुहर के वक़्त)	और जब	और बाद ज़वाल (तीसरे पहर)
مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ					
बाद	ज़मीन	और वह ज़िन्दा करता है	ज़िन्दा से	मुर्दा	और निकालता है वह
مَوْتِهَا وَكَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١٩﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ					
से	उस ने पैदा किया तुम्हें	कि	और उस की निशानियों से	19	तुम निकाले जाओगे
ثُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ﴿٢٠﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ					
उस ने पैदा किया	कि	और उस की निशानियों से	20	फैले हुए	आदमी
لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ					
और उस ने किया	उन की तरफ़ (पास)	ताकि तुम सुकून हासिल करो	जोड़े	तुम्हारी ज़िन्दा से	तुम्हारे लिए
بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾					
21	वह ग़ौर ओ फ़िक्क करते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियाँ	उस में	वेशक और मेहरबानी
وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ					
तुम्हारी ज़बानें	और सुखतलिफ़ होना	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	उस ने पैदा किया	और उस की निशानियों से
وَالْوَانِكُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ					
और उस की निशानियों से	22	आलमिओं (दानिशमन्दों) के लिए	अलबत्ता निशानियाँ	उस में	वेशक और तुम्हारे रंग
مَنَامِكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ فَضْلِهِ إِنَّ					
वेशक	उस के फ़ज़ल से	और तुम्हारा तलाश करना	और दिन	रात में	तुम्हारा सोना
فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ					
बिजली	वह दिखाता है तुम्हें	और उस की निशानियों से	23	वह सुनते हैं	उन लोगों के लिए
خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُحْيِي بِهِ الْأَرْضَ					
ज़मीन	फिर ज़िन्दा करता है उस से	पानी	आस्मान से	और वह नाज़िल करता है	और उम्मीद के लिए
بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٤﴾					
24	अक़ल से काम लेते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियाँ	इस में	वेशक उस के मरने के बाद

और जिन लोगों ने कुफ़ किया, और झुटलाया हमारी आयतों को, और मुलाकात को आखिरत की, पस यही लोग अज़ाब में गिरफ्तार किए जाएंगे। (16)

पस तुम अल्लाह की पाकीज़गी बयान करो शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त। (17)

और उसी के लिए हैं तमाम तारीफें आस्मानों में और ज़मीन में, और तीसरे पहर और जुहर के वक़्त। (18)

वह मुर्दा से ज़िन्दा को निकालता है, और ज़िन्दा से मुर्दा को निकालता है, और वह ज़िन्दा करता है ज़मीन को उस के मरने के बाद, और उसी तरह तुम (कब्रों से) निकाले जाओगे। (19)

और उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर नागहां तुम आदमी (जा बजा) फैले हुए। (20)

और उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हारे लिए पैदा किए तुम्हारी ज़िन्दा से जोड़े (बीवियां) ताकि तुम उन के पास सुकून हासिल करो, और उस ने तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और रहमत (पैदा) की, वेशक उस में अलबत्ता उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ग़ौर ओ फ़िक्क करते हैं। (21)

और उस की निशानियों में से हैं आस्मानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे रंगों का सुखतलिफ़ होना, वेशक उस में दानिशमन्दों के लिए निशानियाँ हैं। (22)

और उस की निशानियों में से है तुम्हारा सोना रात में और दिन (के वक़्त), और तुम्हारा तलाश करना उस के फ़ज़ल से (रोज़ी), वेशक उस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (23)

और उस की निशानियों में से है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है ख़ौफ़ और उम्मीद के लिए, और वह नाज़िल करता है आस्मान से पानी, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है, वेशक उस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो अक़ल से काम लेते हैं। (24)

और उस की निशानियों में से है कि उस के हुक्म से ज़मीन और आस्मान काइम है। फिर जब वह एक निदा दे कर तुम्हें ज़मीन से बुलाएगा तो तुम एकबारगी निकल आओगे। (25)

और उस के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के फ़रमांबरदार हैं। (26)

और वही है जो पहली बार ख़लक़्त को पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, और यह उस पर बहुत आसान है, और उसी की है बुलन्द तर शान आस्मानों में और ज़मीन में, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (27)

उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारे हाल से एक मिसाल बयान की, क्या तुम्हारे लिए है (उन में) से जिन के तुम मालिक हो (तुम्हारे गुलामों में से) उस रिज़्क में कोई शरीक? जो हम ने तुम्हें दिया ताकि तुम सब आपस में बराबर हो जाओ, क्या तुम उन से उस तरह डरते हो जैसे अपनों से डरते हो, उसी तरह हम अक़ल वालों के लिए खोल कर निशानियां बयान करते हैं। (28)

बल्कि पैरवी की ज़ालिमों ने बेजाने अपनी खाहिशात की, तो जिसे अल्लाह गुमराह करे (उसे) कौन हिदायत देगा? और नहीं हैं उन के लिए कोई मददगार। (29)

पस तुम (अल्लाह) के दीन के लिए (सब से कट कर) एक रूख़ हो कर अपना चेहरा सीधा रखो, अल्लाह की उस फ़ित्रत पर जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया, उस की ख़ल्क़ (बनाई हुई फ़ित्रत) में कोई तबदीली नहीं, यह सीधा दीन है, और लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (30)

सब उस की तरफ़ रुज़ूअ करने वाले (रहो) और तुम उसी से डरो, और तुम काइम रखो नमाज़, और तुम शिर्क करने वालों में से न हो। (31)

उन में से जिन्होंने अपना दीन तुकड़े तुकड़े कर लिया, फ़िर्कें फ़िर्कें हो गए। सब के सब ग़िरोह उस पर खुश है जो उन के पास है। (32)

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
जब वह तुम्हें बुलाएगा	फिर	उस के हुक्म से	और ज़मीन	आस्मान	काइम है	कि	और उस की निशानियों से
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
जो	और उस के लिए	25	निकल आओगे	एकबारगी तुम	ज़मीन से	एक निदा	
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
पहली बार पैदा करता है	और वही है जो	26	फ़रमांबरदार	सब उसी के लिए	और ज़मीन में	आस्मानों में	
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
बुलन्द तर	शान	और उसी के लिए	उस पर	बहुत आसान	और वह (यह)	फिर उस को दोबारा पैदा करेगा	ख़लक़्त
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
तुम्हारे लिए	उस ने बयान की	27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
तुम्हारे दाएं हाथ (गुलाम)	जो मालिक हुए	से	क्या तुम्हारे लिए	तुम्हारी जानें (हाल)	से	एक मिसाल	
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
(क्या) तुम उन से डरते हो	बराबर	उस में	सो (ताकि) तुम	जो हम ने तुम्हें रिज़्क दिया	में	कोई शरीक	
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
28	अक़ल वालों के लिए	निशानियां	हम खोल कर बयान करते हैं	उसी तरह	अपनी जानें (अपनों से)	जैसे तुम डरते हो	
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
तो कौन हिदायत देगा	इल्म के बग़ैर (बेजाने)	अपनी खाहिशात	जिन लोगों ने जुल्म किया (ज़ालिम)	पैरवी की	बल्कि		
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُजُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
अपना चेहरा	पस सीधा रखो तुम	29	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	गुमराह करे अल्लाह जिसे
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
उस पर	लोगों को पैदा किया उस ने	जो (जिस)	फ़ित्रत अल्लाह की	एक रूख़ हो कर	दीन के लिए		
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
और लेकिन	दीन सीधा	यह	अल्लाह की ख़ल्क़ में	तबदीली नहीं			
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
और काइम रखो तुम	और तुम डरो उस से	उस की तरफ़	रुज़ूअ करने वाले	30	वह जानते नहीं	अक्सर लोग	
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
टुकड़े टुकड़े कर लिया	जिन्होंने ने	(उन में) से	31	शिर्क करने वाले	से	और न हो तुम	नमाज़
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَه قَبِيضٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُبْدُوا							
32	खुश है	उन के पास	उस पर	सब ग़िरोह	फ़िर्कें फ़िर्कें	और हो गए	अपना दीन

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا									
और जब	पहुँचती है लोगों को	कोई तक्लीफ	वह पुकारते हैं	अपने रब को	रुजूअ करते हैं	उस की तरफ	फिर जब		
أَذَاقَهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوا									
वह उन को चखा देता है	अपनी तरफ से	रहमत	नागहां	एक गिरोह	उन में से	अपने रब के साथ	शरीक करने लगते हैं	33	कि नाशुकी करें
بِمَا آتَيْنَهُمْ ۖ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾ أَمْ أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا									
उस की जो हम ने दिया	सो फाइदा उठा लो तुम	फिर अनकरीब	तुम जान लोगे	34	क्या हम ने नाज़िल की	उन पर	कोई सनद		
فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً									
कि वह बतलाती है	वह जो	है	उस के साथ	शरीक करते हैं	35	और जब	हम चखाएं	लोग	रहमत
فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِنْ تُصِيبُهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾									
तो वह खुश हों उस से	और अगर	पहुँचे उन्हें	कोई बुराई	उस के सबब जो	आगे भेजा	उन के हाथ	नागहां वह	मायूस हो जाते हैं	36
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ									
क्या उन्होंने ने नहीं देखा	कि अल्लाह	कुशादा करता है	रिज़्क	जिस के लिए	वह चाहता है	और तंग करता है	और तंग करता है	वेशक	
فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾ فَاتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ									
इस में	अलबत्ता निशानियां	उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं	37	पस दो तुम	करावत दार	उस का हक			
وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ									
और मिसकीन	और मुसाफिर	यह	बेहतर	उन लोगों के लिए जो	वह चाहते हैं				
وَجَهَ اللَّهُ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا آتَيْنَا مِنْ رَبِّا لِّيَرْبُوَا									
अल्लाह की रज़ा	और वही लोग	वह	फलाह पाने वाले	38	और जो	तुम दो	से	सूद	ताकि बढ़े
فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوَا عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَمَا آتَيْنَا مِنْ زَكَاةٍ									
में	माल (जमा)	लोग (जमा)	तो नहीं बढ़ता	अल्लाह के हां	और जो तुम दो	से	जकात		
تُرِيدُونَ وَجَهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ﴿٣٩﴾ اللَّهُ الَّذِي									
चाहते हुए	अल्लाह की रज़ा	तो वही लोग	वह	चन्द दर चन्द करने वाले	39	अल्लाह है जिस ने			
خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۚ هَلْ مِنْ									
पैदा किया तुम्हें	फिर उस ने तुम्हें रिज़्क दिया	फिर वह तुम्हें मौत देता है	फिर	वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा	क्या	से			
شُرَكَائِكُمْ مَّنْ يَفْعَلُ مِنْ ذَٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۚ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا									
तुम्हारे शरीक (जमा)	जो	करे	इन (कामों) में से	कुछ भी	वह पाक है	और बरतर	उस से जो		
يُشْرِكُونَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ									
वह शरीक ठहराते हैं	40	ज़ाहिर हो गया	फ़साद	खुशकी में	और दर्या (तरी)	उस से जो	कमाया		
أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤١﴾									
लोगों के हाथ	ताकि वह उन्हें (मज़ा) चखाए	वाज़	उन्होंने ने किया (आमाल)	शायद वह	वाज़ आ जाएं वह	41			

और जब लोगों को कोई तक्लीफ पहुँचती है तो अपने रब को पुकारते हैं उस की तरफ रुजूअ करते हुए, फिर जब वह उन्हें अपनी तरफ से रहमत (का मज़ा) चखा देता है तो नागहां एक गिरोह (के लोग) उन में से अपने रब के साथ शरीक करने लगते हैं। (33) कि वह उसकी नाशुकी करें जो हम ने उन्हें दिया, सो तुम (चन्द रोज़) फाइदा उठा लो, फिर अनकरीब (तुम उसका अनुज़ाम) जान लोगे। (34) क्या हम ने उन पर कोई सनद नाज़िल की? कि वह बतलाती है जो उस के साथ यह शरीक करते हैं। (35) और जब हम चखाएं लोगों को (रहमत का मज़ा) तो उस से खुश हों, और अगर उन्हें उस के सबब कोई बुराई पहुँचे जो उन के हाथों ने आगे भेजा (उन के आमाल से) तो वह नागहां मायूस हो जाते हैं। (36) क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क कुशादा करता है (और जिस के लिए चाहता है) तंग करता है, वेशक जो लोग ईमान रखते हैं उन के लिए इस में निशानियां हैं। (37) पस तुम करावतदारों को उस का हक दो और मोहताज और मुसाफिर को, यह उन के लिए बेहतर है जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं, और वही लोग फ़लाह (दो जहानों की कामयाबी) पाने वाले हैं। (38) और जो तुम सूद दो कि लोगों के माल बढ़ें (इज़ाफ़ा हो) तो (यह) अल्लाह के हां नहीं बढ़ता और जो तुम अल्लाह की रज़ा चाहते हुए ज़कात देते हो तो यही लोग हैं (अपना माल और अज़र) चन्द दर चन्द करने वाले। (39) अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हें रिज़्क दिया, फिर वह तुम्हें मौत देता है फिर वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा, क्या तुम्हारे शरीकों में से (कोई है) जो उन कामों में से कुछ भी करे? वह पाक है और बरतर उस से जो वह शरीक ठहराते हैं। (40) फ़साद खुशकी और तरी में ज़ाहिर हो गया (फ़ैल गया) उस से जो कमाया लोगों के हाथों ने (उन के आमाल के सबब) ताकि वह उन के वाज़ आमाल का मज़ा उन्हें चखाए, शायद वह वाज़ आ जाएं। (41)

आप (स) फ़रमा दें तुम ज़मीन में चलो फिरो, फिर तुम देखो उन का अन्जाम कैसा हुआ जो पहले थे, उन के अक्सर शिर्क करने वाले थे। (42)

पस अपना चेहरा देने रास्त की तरफ़ सीधा रखो इस से क़ब्ल कि वह दिन आ जाए जिस को टलना नहीं अल्लाह (की तरफ़) से, उस दिन (सब) जुदा जुदा हो जाएंगे। (43) जिस ने कुफ़ किया तो उस पर पड़ेगा उस के कुफ़ (का ववाल), और जिस ने अच्छे अमल किए तो वह अपने लिए सामान कर रहे हैं। (44)

ताकि (अल्लाह) अपने फ़ज़ल से उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए, और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, वेशक अल्लाह काफ़ि़रों को पसंद नहीं करता। (45)

और उस की निशानियों में से है कि वह भेजता है हवाएं खुशख़बरी देने वाली, और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत का मज़ा चखाए, और ताकि कशतियां उस के हुक्म से चलें, और ताकि तुम तलाश करो उस का फ़ज़ल (रिज़्क) और ताकि तुम शुक्र करो। (46)

और तहकीक़ हम ने आप (स) से पहले बहुत से रसूल भेजे उन की कौमों की तरफ़, पस वह उन के पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर हम ने मुज़रिमों से इन्तिका़म लिया और हमारे ज़िम्मे है मोमिनो की मदद करना। (47)

अल्लाह (ही है) जो हवाएं भेजता है, तो वह बादल उभारती हैं, फिर वह फैलाता है बादल, आस्मान में जैसे वह चाहता है और वह उस (बादल) को टुकड़े टुकड़े कर देता है, फिर तू देखे कि उस के दरमियान से मीनह निकलता है, फिर वह अपने बन्दों में से जिसे चाहे वह पहुँचा देता है, तो वह अचानक खुशियां मनाने लगते हैं। (48)

अगरचे उस से क़ब्ल कि (बारिश) उन पर नाज़िल हो वह पहले ही से मायूस हो रहे थे। (49)

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ

आप (स) फ़रमा दें	तुम चलो फिरो	में	ज़मीन	फिर तुम देखो	कैसा	हुआ	अन्जाम	उन का जो

مِنْ قَبْلُ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ﴿٤٢﴾ فَأَقِمْ وَجْهَكَ

पहले (थे)	थे	उन के अक्सर	शिर्क करने वाले	42	पस सीधा रखो	अपना चेहरा

لِلَّذِينَ الْقِيَمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدٍّ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ

दिने रास्त के लिए (तरफ़)	इस से क़ब्ल	कि	आ जाए	वह दिन	टलना नहीं	उस के लिए (जिस को)	अल्लाह से	उस दिन

يَصْدَعُونَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا

जुदा जुदा हो जाएंगे	43	जिस ने कुफ़ किया	तो उसी पर	उस का कुफ़	और जिस ने किए	अच्छे अमल

فَلَا نَفْسِهِمْ يَمْهَدُونَ ﴿٤٤﴾ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

तो वह अपने लिए	सामान कर रहे हैं	44	ताकि जज़ा दे वह	उन लोगों को जो ईमान लाए	और उन्होंने ने अच्छे अमल किए

مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٤٥﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ

से	अपना फ़ज़ल	वेशक वह	पसंद नहीं करता	काफ़िर (जमा)	45	और उस की निशानियों से

أَنْ يُرْسِلَ الرِّيحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيَذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ

कि वह भेजता है	हवाएं	खुशख़बरी देने वाली	और ताकि वह तुम्हें चखाए	से (का) अपनी रहमत	और ताकि चलें

الْفُلُكُ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٤٦﴾

कशतियां	उस के हुक्म से	और ताकि तुम तलाश करो	से	उस का फ़ज़ल	और ताकि तुम	तुम शुक्र करो	46

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ

और तहकीक़ हम ने भेजे	आप (स) से पहले	बहुत से रसूल	तरफ़	उन की कौमों	पस वह उन के पास आए

بِالْبَيِّنَاتِ فَاذْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرُمُوا وَكَانَ حَقًّا

खुली निशानियों के साथ	फिर हम ने इन्तिका़म लिया	से	वह जिन्होंने ने जुर्म किया (मुज़रिम)	और है	हक़ (ज़िम्मे)

عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ

हम पर (हमारा)	मदद	मोमिनीन	47	अल्लाह	जो भेजता है	हवाएं

فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ

तो वह उभारती हैं	बादल	फिर वह (बादल) फैलाता है	आस्मान में	जैसे	वह चाहता है	और वह उसे कर देता है

كَسْفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ

टुकड़े टुकड़े	फिर तू देखे	वारिश की बूंद	निकलती है	उस के दरमियान से	फिर जब	वह उसे पहुँचा देता है

مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادَةٍ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِنْ كَانُوا

जिसे वह चाहता है	से	अपने बन्दों	अचानक वह	खुशियां मनाने लगते हैं	48	और अगरचे	थे

مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمُبْلِسِينَ ﴿٤٩﴾

उस से क़ब्ल	कि वह नाज़िल हो	उन पर	पहले (ही) से	अलबत्ता मायूस (जमा)	49

فَانْظُرْ إِلَىٰ أَثَرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ									
उस के मरने के बाद		ज़मीन	वह कैसे जिन्दा करता है		अल्लाह की रहमत	आसार	तरफ़	पस देख तो	
إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾ وَلَئِنْ									
और अगर	50	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	मुर्दे	अलबत्ता जिन्दा करने वाला	वही	वेशक
أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ﴿٥١﴾ فَإِنَّكَ									
पस वेशक आप (स)	51	नाशुक्री करने वाले	उस के बाद	ज़रूर हो जाएं	ज़र्द शुदा	फिर वह उसे देखें	हवा	हम भेजें	
لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تَسْمِعُ الصَّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾									
52	पीठ दे कर	जब वह फिर जाएं	आवाज़	वहरों	सुना सकते	और नहीं	मुर्दाँ	नहीं सुना सकते	
وَمَا أَنْتَ بِهَادٍ الْعُمَىٰ عَنْ ضَلَّاتِهِمْ ۚ إِنَّ تَسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ									
जो ईमान लाता है	मगर	आप नहीं सुना सकते	उस की गुमराही से		अन्धा	हिदायत देने वाले	और आप (स) नहीं		
بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ									
कमज़ोरी	से (में)	वह जिस ने तुम्हें पैदा किया	अल्लाह	53	फरमावरदार (जमा)	पस वह	हमारी आयतों पर		
ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ									
कुव्वत	बाद	फिर उस ने कर दिया	कुव्वत	कमज़ोरी	बाद	उस ने बनाया-दी	फिर		
ضَعْفًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ﴿٥٤﴾									
54	कुदरत वाला	इल्म वाला	और वह	जो वह चाहता है	वह पैदा करता है	और बुढ़ापा	कमज़ोरी		
وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ۚ									
एक घड़ी से ज़ियादा	वह नहीं रहे	मुज़्रिम (जमा)	कसम खाएंगे	क़ियामत	काइम होगी	और जिस दिन			
كَذَٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ﴿٥٥﴾ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ									
इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	और कहा-कहेंगे	55	औन्धे जाते	वह थे	उसी तरह			
وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَٰذَا									
पस यह है	जी उठने का दिन	तक	में (मुताबिक) निविश्ताए इलाही	यकीनन तुम रहे हो	और ईमान				
يَوْمَ الْبَعْثِ وَلَكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ									
नफ़ा न देगी	पस उस दिन	56	न जानते थे	तुम	और लेकिन	जी उठने का दिन			
الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعَذَرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا									
और तहकीक़ हम ने बयान की	57	राज़ी करना चाहा जाएगा	और न वह	उन की माज़िरत	जिन्हों ने जुल्म किया	वह लोग जो			
لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِآيَةٍ									
तुम लाओ उन के पास कोई निशानी	और अगर	मिसालें	हर किस्म	इस कुरआन	में	लोगों के लिए			
لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾									
58	झूट बनाते हो	मगर (सिर्फ)	तुम नहीं हो	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)		तो ज़रूर कहेंगे			

पस तू आसार (निशानियों) की तरफ़ देख अल्लाह की रहमत के, वह कैसे ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है! वेशक वही मुर्दे को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (50)

और अगर हम हवा भेजें, फिर वह उसे ज़र्द शुदा देखें तो वह ज़रूर हो जाएं उस के बाद नाशुक्री करने वाले। (51)

पस वेशक आप (स) न मुर्दे को सुना सकते हैं और न वहरों को आवाज़ सुना सकते हैं, जब वह पीठ दे कर फिर जाएं। (52)

आप (स) नहीं अँधे को उस की गुमराही से हिदायत देने वाले, नहीं सुना सकते मगर (सिर्फ़ उसे) जो हमारी आयतों पर ईमान लाता है, पस वही फरमावरदार है। (53)

अल्लाह ही है वह जिस ने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद कुव्वत, फिर कुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया, वह जो चाहता है पैदा करता है, और वह इल्म वाला कुदरत वाला है। (54)

और जिस दिन क़ियामत काइम होगी कसम खाएंगे मुज़्रिम कि वह एक घड़ी से ज़ियादा नहीं रहे, इसी तरह वह औन्धे जाते थे। (55)

और वह कहेंगे जिन्हें इल्म और ईमान दिया गया: यकीनन तुम किताबे ईलाही के मुताबिक़ जी उठने के दिन तक रहे हो, पस यह है जी उठने का दिन, लेकिन तुम न जानते थे। (56)

पस उस दिन नफ़ा न देगी उन लोगों को उन की माज़िरत (उज़ूर ख़ाही) जिन्होंने ने जुल्म किया, और न उन से (अल्लाह को) राज़ी करना चाहा जाएगा। (57)

और तहकीक़ हम ने बयान की लोगों के लिए इस कुरआन में हर किस्म की मिसालें, और अगर तुम उन के पास कोई निशानी लाओ तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे, तुम सिर्फ़ झूट बनाते हो। (58)

इसी तरह अल्लाह उन के दिलों पर मुहर लगा देता है जो समझ नहीं रखते। (59)

आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और जो लोग यकीन नहीं रखते वह किसी तौर आप को सुबुक (बरदाशत न करने वाला-ओछा) न कर दें। (60)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है अलिफ-लाम-मीम। (1)

यह आयतें हैं पुर हिक्मत किताब की। (2)

हिदायत और रहमत हैं नेकोकारों के लिए। (3)

जो लोग नमाज़ काइम करते हैं, और ज़कात अदा करते हैं, और वह आखिरत पर यकीन रखते हैं। (4)

यही लोग अपने रब (की तरफ) से हिदायत पर हैं और यही लोग फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले हैं। (5)

और लोगों में से कोई ऐसा (बद नसीब भी) है जो ख़रीदता है बेहूदा बातें ताकि वह बेसमझे अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे, और वह उसे हँसी मज़ाक ठहराते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए ज़िल्लत वाला अज़ाब है। (6)

और जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी (सुनाई) जाती हैं तो तक़बुर करते हुए मुँह मोड़ लेता है गोया उस ने उसे सुना ही नहीं, गोया उस के कानों में गिरानी (बहरापन) है, पस उसे दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दो। (7)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, उन के लिए नेमतों के बागात हैं। (8)

उन में वह हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (9)

उस ने सुतून के बग़ैर आस्मानों को पैदा किया, तुम उन्हें देखते हो, और उस ने डाले ज़मीन में पहाड़ कि तुम्हारे साथ झुक न जाए, और उस ने उस में हर किस्म के जानवर फैलाए, और हम ने उतारा आस्मान से पानी, फिर हम ने उस में उगाए हर किस्म के उमदा जोड़े। (10)

كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾

59	समझ नहीं रखते	जो लोग	दिल (जमा)	पर	अल्लाह मुहर लगा देता है	उसी तरह

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ﴿٦٠﴾

60	यकीन नहीं रखते	जो लोग	और वह हरगिज़ हलका न पाएँ आप को	सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	पस आप सब्र करें

آيَاتُهَا ٣٤ ﴿٣١﴾ سُورَةُ لُقْمَانَ ﴿٤﴾ زُكُورَاتُهَا ٤

रुक़आत 4

(31) सूरह लुकमान

आयात 34

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الْم ﴿١﴾ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ هُدًى وَرَحْمَةً لِلْمُحْسِنِينَ ﴿٣﴾

3	नेकोकारों के लिए	और रहमत	हिदायत	2	पुर हिक्मत किताब	आयतें	यह	1	अलिफ लाम मीम

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ

आखिरत पर	और वह	ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	काइम करते हैं	जो लोग

هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٤﴾ أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾

5	फ़लाह पाने वाले	वह	और यही लोग	अपने रब से	हिदायत	पर	यही लोग	4	वह यकीन रखते हैं

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ

अल्लाह का रास्ता	से	ताकि वह गुमराह करे	खेल की (बेहूदा) बातें	ख़रीदता है	जो	लोग	और से

بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٦﴾

6	ज़िल्लत वाला अज़ाब	उन के लिए	यही लोग	हँसी मज़ाक	और वह उसे ठहराते हैं	वे समझे

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا ۖ كَانَ لَمْ يَسْمَعْهَا ۚ كَانَ

गोया	उस ने उसे सुना नहीं	गोया	तक़बुर करते हुए	वह मुँह मोड़ लेता है	हमारी आयतें	पढ़ी जाती हैं उस पर	और जब

فِي أُنْفُسِهِمْ وَفَرًّا ۖ فَبَشِّرُهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

और उन्होंने ने अमल किए	ईमान लाए	बेशक जो लोग	7	दर्दनाक	अज़ाब की	पस उसे खुशख़बरी दो	गिरानी	उस के कानों में

الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ ﴿٨﴾ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا

सच्चा	अल्लाह का वादा	उस में	हमेशा रहेंगे	8	नेमतों के बागात	उन के लिए	अच्छे

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾ خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۚ وَالْقَىٰ

और उस ने डाले	तुम उन्हें देखते हो	बग़ैर सुतून	आस्मान (जमा)	उस ने पैदा किया	9	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह

فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ ۖ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ ۖ وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَابَّةٍ ۖ

जानवर	हर किस्म	उस में	और फैलाए	झुक (न) जाए तुम्हारे साथ	कि	पहाड़ (जमा)	ज़मीन में

وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَانْتَبَثْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿١٠﴾

10	उमदा	जोड़े	हर किस्म	उस में	फिर हम ने उगाए	पानी	आस्मान से	और हम ने उतारा

۱۰

۱۲

۱۴

هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ بَلِ							
यह	खलकत (बनाया हुआ) अल्लाह का	पस तुम मुझे दिखाओ	क्या	पैदा किया	वह जो	उस के सिवा	बल्कि
الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ (۱۱) وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ							
जालिम (जमा)	में	खुली गुमराही	11	और अलबत्ता हम ने दी	लुकमान	हिक्मत	कि
لِلَّهِ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ							
अल्लाह का	और जो	शुक्र करता है	शुक्र नहीं (सिर्फ)	तो इस के सिवा	वह शुक्र करता है	अपने लिए	और जिस ने
वेनियाज़	तारीफों के साथ	12	और जब	कहा	लुकमान	अपने बेटे को	और नसीहत कर रहा था
अल्लाह के साथ	तू न शरीक ठहरा	ऐ मेरे बेटे	उसे नसीहत कर रहा था	और वह	उसे नसीहत कर रहा था	ऐ मेरे बेटे	तू न शरीक ठहरा
إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ۝ (۱۳) وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ							
वेशक शिर्क	अलबत्ता जुल्मे अज़ीम	13	और हम ने	ताकीद कर दी	इन्सान	उस के माँ बाप के बारे में	उसे पेट में रखा
أُمُّهُ وَهْنًا عَلَى وَهْنٍ وَفِضْلُهُ فِي عَامَيْنِ أَنْ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ ۖ							
उस की माँ	कमज़ोरी	पर कमज़ोरी	और उस का	दूध छुड़ाना	दो साल में	कि तू मेरा शुक्र कर	और अपने माँ बाप का
إِلَى الْمَصِيرِ ۝ (۱۴) وَإِنْ جَهَدَكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ							
मेरी तरफ	लौट कर आना	14	और अगर	वह तेरे साथ कोशिश करें	पर (की)	कि तू शरीक ठहराए	मेरा
بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ وَصَاحِبُهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۚ وَاتَّبِعْ							
उस का	कोई इल्म	तू उन दोनों का	और उन के साथ बसर कर	दुनिया में	अच्छे तरीके से	और तू पैरवी कर	उस का
سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا							
रासता	जो	रुजूअ करे	मेरी तरफ	फिर	मेरी तरफ	तुम्हें लौट कर आना है	सो मैं तुम्हें आगाह करूँगा
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ (۱۵) يُبْنَىٰ إِنَّهَا إِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ							
तुम करते थे	15	ऐ मेरे बेटे	वेशक वह	अगर हो	वज़न (बराबर) दाना	से (के)	राई
فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمُوتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا							
फिर वह हो	में	सख्त पत्थर	या	आस्मानों में	या	ज़मीन में	ले आएगा उसे
اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۝ (۱۶) يُبْنَىٰ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَآمُرْ							
अल्लाह	वेशक अल्लाह	वारीक वीन	खबरदार	16	ऐ मेरे बेटे	काइम कर नमाज़	और हुक्म दे
بِالْمَعْرُوفِ وَإِنَّمَا عَنْ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ ۖ							
अच्छे काम	और रोक तू	से	बुरी बात	और सबर कर	पर	जो तुझ पर पहुँचे	
إِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝ (۱۷) وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ							
वेशक यह	से	बड़ी हिम्मत के काम	17	और तू टेढ़ा न कर	अपना रखसार	लोगों से	
وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝ (۱۸)							
और न चल तू	ज़मीन में	इतराता	वेशक अल्लाह	पसंद नहीं करता	हर किसी	इतराने वाले	खुद पसंद

यह अल्लाह का बनाया हुआ है, पस तुम मुझे दिखाओ क्या पैदा किया उन्होंने ने जो उस के सिवा है, बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही में है। (11) और अलबत्ता हम ने दी लुकमान को हिक्मत, (और फ़रमाया) कि तुम अल्लाह का शुक्र करो, और जो शुक्र करता है तो वह सिर्फ अपने (ही भले के) लिए करता है, और जिस ने नाशुकी की तो वेशक अल्लाह वेनियाज़, तारीफों के साथ है। (12) और (याद करो) जब लुकमान ने अपने बेटे को कहा और वह उसे नसीहत कर रहा था, ऐ मेरे बेटे! तू अल्लाह के साथ शरीक न ठहरा, वेशक शिर्क एक जुल्मे अज़ीम है। (13) और हम ने इन्सान को ताकीद की उस के माँ बाप के बारे में (हुस्ने सुलूक की) उस की माँ ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी (झेलते हुए) उसे पेट में रखा, और दो साल में उस का दूध छुड़ाया, कि मेरा शुक्र कर और अपने माँ बाप का, मेरी तरफ (ही) लौट कर आना है। (14) और अगर वह दोनों तेरे साथ कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराए, जिस का तुझे कोई इल्म (सनद) नहीं तो उन का कहा न मान, और दुनिया (के मामलात) में उन के साथ अच्छे तरीके से बसर कर, और उस के रास्ते की पैरवी कर जो रुजूअ करे मेरी तरफ, फिर तुम्हें मेरी तरफ ही लौट कर आना है, सो मैं तुम्हें आगाह करूँगा जो कुछ तुम करते थे। (15) ऐ मेरे बेटे! अगर (कोई चीज़) एक राई के दाने के बराबर (भी) हो, फिर वह किसी सख्त पत्थर (चटान) में (पोशीदा) हो, या आस्मानों में, या ज़मीन में (पोशीदा) हो, अल्लाह उसे ले आएगा (हाज़िर कर देगा), वेशक अल्लाह वारीक वीन, वाख़बर है। (16) ऐ मेरे बेटे! नमाज़ काइम कर, और अच्छे कामों का हुक्म दे, और तू बुरी बातों से रोक और तुझ पर जो (उफ़ताद) पहुँचे उस पर सबर कर, वेशक यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (17) और तू लोगों से (बात करते हुए) अपना रखसार न टेढ़ा कर, और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, वेशक अल्लाह पसंद नहीं करता किसी इतराने वाले, खुद पसंद को। (18)

और अपनी रफ़्तार में मियाना रवी (इख़्तियार) कर, और अपनी आवाज़ को पस्त रख, वेशक आवाज़ों में सब से नापसंदीदा आवाज़ गधे की है। (19)

क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया है जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है, और उस ने तुम्हें अपनी ज़ाहिर और पोशीदा नेमतें भरपूर दी, और लोगों में बाज़ (ऐसे हैं) जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं बग़ैर इल्म, बग़ैर हिदायत और बग़ैर रोशन किताब के। (20)

और जब उन से कहा जाए, जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तुम उस की पैरवी करो तो वह कहते हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया है, क्या (उस सूरत में भी कि) अगर शैतान उन को दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता हो? (21) और जो झुका दे चेहरा (सरे तसलीम ख़म कर दे) अल्लाह की तरफ़, और वह नेकोकार हो, तो वेशक उस ने मज़बूत हल्का (दस्त आवेज़) थाम लिया, और अल्लाह की तरफ़ (ही) तमाम कामों की इन्तिहा है। (22) और जो कुफ़ करे तो उस का कुफ़ आप (स) को ग़मगीन न कर दे, उन्हें हमारी तरफ़ (ही) लौटना है, फिर हम उन्हें ज़रूर जतलाएंगे जो वह करते थे, वेशक अल्लाह दिलों के भेद जानने वाला है। (23)

हम उन्हें थोड़ा (चन्द रोज़ा) फ़ाइदग देंगे, फिर उन्हें खींच लाएंगे सख़्त अज़ाब की तरफ़। (24) और अगर तुम उन से पूछो: किस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया? तो वह यकीनन कहेंगे “अल्लाह”। आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते। (25)

अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, वेशक अल्लाह बेनियाज़, तारीफ़ों के क़ाबिल। (26)

और अगर यह हो कि ज़मीन में जो भी दरख़्त हैं क़लम बन जाएं और समन्दर उस की सियाही (बन जाएं) और उस के बाद सात समन्दर (और हों) तो भी अल्लाह की बातें ख़तम न हों, वेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (27)

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاعْصُصْ مِنْ صَوْتِكَ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ							
आवाज़ें	सब से नापसंदीदा	वेशक	अपनी आवाज़ को	और पस्त कर	अपनी रफ़्तार में	और मियाना रवी कर	
لَصَوْتِ الْحَمِيرِ (١٩) أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمُوتِ وَمَا							
और जो कुछ	आस्मानों में	जो कुछ	तुम्हारे लिए	मुसख़्ख़र किया	कि अल्लाह	क्या तुम ने नहीं देखा	19 गधा आवाज़
فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً وَمِنَ النَّاسِ							
लोग	और बाज़	और पोशीदा	ज़ाहिर	अपनी नेमतें	तुम पर (तुम्हें)	और भरपूर दें	ज़मीन में
مَنْ يُجَادِلْ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُنِيرٍ (٢٠)							
20	और बग़ैर किताबे रोशन	और बग़ैर हिदायत	इल्म	बग़ैर	अल्लाह (के बारे में)	झगड़ता है	जो
وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا							
जो हम ने पाया	बल्कि हम पैरवी करेंगे	वह कहते हैं	नाज़िल किया अल्लाह	जो	तुम पैरवी करो	उन से	कहा जाए और जब
عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَّلُوا كَانِ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ (٢١)							
21	दोज़ख़	अज़ाब	तरफ़	उन को बुलाता	शैतान	हो	क्या अगर अपने बाप दादा उस पर
وَمَنْ يُسَلِّمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدْ اسْتَمْسَكَ							
तो वेशक उस ने थामा	नेकोकार	और वह	अल्लाह की तरफ़	अपना चेहरा	झुका दे	और जो	
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۖ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ (٢٢) وَمَنْ كَفَرَ							
और जो कुफ़ करे	22	तमाम काम (जमा)	इन्तिहा	और अल्लाह की तरफ़	हल्का मज़बूत		
فَلَا يَحْزَنكَ كُفْرُهُ ۖ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ							
वेशक अल्लाह	वह करते थे	फिर हम उन्हें ज़रूर जतलाएंगे वह जो	उन का लौटना	हमारी तरफ़	उस का कुफ़	तो आप (स) को ग़मगीन न कर दे	
عَلِيمٌ ۖ بَدَاتِ الصُّدُورِ (٢٣) نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ							
तरफ़	फिर हम उन्हें खींच लाएंगे	थोड़ा	हम उन्हें फ़ाइदा देंगे	23	सीनों (दिलों) के भेद	जानने वाला	
عَذَابٍ غَلِيظٍ (٢٤) وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ							
और ज़मीन	आस्मानों (को)	किस ने पैदा किया	तुम उन से पूछो	और अगर	24	सख़्त	अज़ाब
لَيَقُولنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (٢٥) لِلَّهِ مَا							
अल्लाह के लिए जो कुछ	25	जानते नहीं	बल्कि उन के अक्सर	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	फ़रमा दें	तो वह यकीनन कहेंगे “अल्लाह”	
فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ (٢٦) وَلَوْ أَنَّمَا							
यह हो कि जो	और अगर	26	तारीफ़ों के क़ाबिल	बेनियाज़	वह	वेशक अल्लाह	आस्मानों में
فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَفْلَاحٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ							
उस के बाद	उस की सियाही	और समन्दर	क़लम	दरख़्त	से-कोई	ज़मीन में	
سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمَتُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (٢٧)							
27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	वेशक अल्लाह	अल्लाह की बातें	तो भी ख़तम न हों	समन्दर (जमा)	सात

مَا خَلَقَكُمْ وَلَا بَعُثَكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ (28)							
28	देखने वाला	सुनने वाला	वेशक अल्लाह	जैसे एक शख्स	मगर	और नहीं तुम्हारा जी उठाना	नहीं तुम सब का पैदा करना
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ							
	रात में	दिन	और दाखिल करता है	दिन में	रात	दाखिल करता है	क्या तू ने नहीं देखा
وَسَخَّرَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَأَنَّ اللَّهَ							
	और यह कि अल्लाह	मुक़र्रर	मुद्दत	तरफ़	चलता रहेगा	हर एक	और चाँद सूरज और उस ने मुसख़्ख़र किया
بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (29) ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ							
	वह परसतिश करते हैं	जो-जिस	और यह कि	वही बरहक	इस लिए कि अल्लाह	यह	29 ख़बरदार उस से जो कुछ तुम करते हो
مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ (30) أَلَمْ تَرَ أَنَّ							
	कि	क्या तू ने नहीं देखा	30	बड़ाई वाला	बुलन्द मरतबा	वही	और यह कि अल्लाह वातिल उस के सिवा
الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ إِنَّ							
	वेशक	उस की निशानियाँ	ताकि वह तुम्हें दिखा दे	अल्लाह की नेमतों के साथ	दर्या में	चलती है	कश्ती
فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ (31) وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلُلِ							
	साइवानों की तरह	मौज	उन पर छा जाती है	और जब	31 बड़े शुक़ गुज़ार	बड़े सबर वाले	वास्ते हर अलबत्ता निशानियाँ उस में
دَعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ							
	खुशकी की तरफ़	उस ने उन्हें बचा लिया	फिर जब	उस के लिए दीन (इबादत)	ख़ालिस कर के	वह अल्लाह को पुकारते हैं	
فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ (32)							
	32	नाशुक्रा	अहद शिकन	हर	सिवाए	हमारी आयतों का	और इन्कार नहीं करता
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَاحْشَوْا يَوْمًا لَا يَجْزِي وَالِدٌ							
	कोई बाप	न काम आएगा	वह दिन	और खौफ़ करो	अपना परवरदिगार	तुम डरो	लोगों ऐ
عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَالِدِهِ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ							
	अल्लाह का वादा	वेशक	कुछ	से (के) बाप	काम आएगा	वह	और न कोई बेटा
حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ							
	अल्लाह से	और तुम्हें हरगिज़ धोका न दे	दुनिया की ज़िन्दगी	सो तुम्हें हरगिज़ धोके में न डाले	सच्चा		
الْغُرُورُ (33) إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ							
	बारिश	और वह नाज़िल करता है	क़ियामत का इल्म	उस के पास	वेशक अल्लाह	33	धोका देने वाला
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا							
	कल	वह करेगा	क्या	कोई शख्स	जानता	और नहीं	(हामिला के) रहम में
وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ (34)							
	34	ख़बरदार	इल्म वाला	वेशक अल्लाह	वह मरेगा	ज़मीन	किस कोई शख्स और नहीं जानता

नहीं है तुम सब का पैदा करना और नहीं है तुम्हारा जी उठाना मगर जैसे एक शख्स (का पैदा करना), वेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (28)

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह दाखिल करता है रात को दिन में, और दिन को दाखिल करता है रात में, और उस ने सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया, हर एक चलता रहेगा मुद्दते मुक़र्रर (रोज़े क़ियामत) तक। और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से ख़बरदार है। (29)

यह इस लिए है कि अल्लाह ही बरहक है और यह कि वह उस के सिवा जिस की परसतिश करते हैं सब वातिल हैं, और यह कि अल्लाह ही बुलन्द मरतबा, बड़ाई वाला है। (30)

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह की नेमतों के साथ कश्ती दर्या में चलती है ताकि वह तुम्हें उस की निशानियाँ दिखा दे, वेशक उस में हर बड़े सबर करने वाले, शुक़ गुज़ार के लिए निशानियाँ हैं। (31)

और जब मौज उन पर साइवानों की तरह छा जाती है तो वह अल्लाह को पुकारते हैं ख़ालिस कर के उसी के लिए इबादत, फिर जब उस ने उन्हें खुशकी की तरफ़ बचा लिया तो उन में कोई मियाना रो रहता है। और हमारी आयतों का इन्कार नहीं करता सिवाए हर अहद शिकन नाशुक्रों के। (32)

ऐ लोगो! तुम अपने परवरदिगार से डरो, और उस दिन का खौफ़ करो (जिस दिन) न काम आएगा कोई बाप अपने बेटे के, और न कोई बेटा अपने बाप के कुछ काम आएगा, वेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, सो तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ धोके में न डाल दे, और धोका देने वाला (शैतान) तुम्हें अल्लाह से हरगिज़ धोका न दे। (33)

वेशक अल्लाह ही के पास है क़ियामत का इल्म, वही बारिश नाज़िल करता है, और वह जानता है जो हामिला के रहम में है, और नहीं जानता कोई शख्स के वह कल क्या करेगा, और कोई शख्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा, वेशक अल्लाह इल्म वाला, ख़बरदार है। (34)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम। (1)

इस में कोई शक नहीं कि

इस किताब (कुरआन) का

नाज़िल करना तमाम ज़हानों के

परवरदिगार की तरफ़ से है। (2)

क्या वह कहते हैं कि यह उस ने

घड़ लिया है? (नहीं) बल्कि यह

तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से

हक़ है ताकि तुम उस कौम को

डराओ जिस के पास कोई डराने

वाला नहीं आया तुम से पहले,

ताकि वह हिदायत पा लें। (3)

अल्लाह (ही है) जिस ने पैदा किया

आस्मानों को और ज़मीन को और

जो उन के दरमियान है छः (6)

दिन में, फिर उस ने अर्श पर

करार किया, तुम्हारे लिए उस के

सिवा नहीं कोई मददगार, और न

सिफ़ारिश करने वाला, सो क्या

तुम ग़ौर नहीं करते? (4)

वह हर काम की तदवीर करता है

आस्मान से ज़मीन तक, फिर (वह

काम) उस की तरफ़ रुजूज़ करेगा

एक दिन में, जिस की मिक़दार एक

हज़ार साल है उस (हिसाब) से जो

तुम शुमार करते हो। (5)

वह पोशीदा और ज़ाहिर का जानने

वाला, ग़ालिब, मेहरवान। (6)

वह जिस ने हर शै बहुत खूब बनाई

जो उस ने पैदा की और इन्सान

की पैदाइश की इवतिदा मिट्टी से

की। (7)

फिर उस की नस्ल को बेक़द्र पानी

के खुलासे से बनाया। (8)

फिर उस ने उस के आज़ा को ठीक

किया, और उस में फूँकी अपनी

(तरफ़ से) अपनी रूह, और तुम्हारे

लिए कान और आँखें और दिल

बनाए, तुम बहुत कम हो जो शुक्र

करते हो। (9)

और उन्होंने ने कहा: क्या जब हम

ज़मीन में गुम हो जाएंगे तो क्या

नई पैदाइश में (आएंगे)? बल्कि

वह अपने रब की मुलाक़ात से

मुन्किर है। (10)

آيَاتُهَا ٣٠ ﴿٣٢﴾ سُورَةُ السَّجْدَةِ ﴿٣٠﴾ رُكُوعَاتُهَا ٣

रुक़ात 3

(32) सूरतुस सजदा

आयात 30

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

الْم ﴿١﴾ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢﴾

अलिफ़ लाम मीम	1	नाज़िल करना	किताब	कोई शक नहीं	इस में	से	परवरदिगार तमाम ज़हानों का	2

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا

क्या	वह कहते हैं	यह उस ने घड़ लिया है	बल्कि	यह	हक़	से	तुम्हारा रब	ताकि तुम डराओ	उस कौम को

مَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ ۚ مَنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣﴾ اللَّهُ

अल्लाह	3	हिदायत पालें	ताकि वह	तुम से पहले	से	डराने वाला	कोई	उन के पास नहीं आया

الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ

वह जिस ने	पैदा किया	आस्मानों को	और ज़मीन	और जो	उन के दरमियान	में	छः (6)	दिन

ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ۚ

फिर	उस ने करार किया	अर्श पर	तुम्हारे लिए नहीं	उस के सिवा	से - कोई	मददगार	और न सिफ़ारिश करने वाला

أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ

फिर	ज़मीन तक	आस्मान	से	तमाम काम	वह तदवीर करता है	4	सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते

يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ﴿٥﴾

(उस का रिपोर्ट) चढ़ता है	उस की तरफ़	एक दिन में	है	उस की मिक़दार	एक हज़ार साल	उस से जो	तुम शुमार करते हो	5

ذَٰلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦﴾ الَّذِي أَحْسَنَ

वह	जानने वाला पोशीदा	और ज़ाहिर	ग़ालिब	मेहरवान	6	वह जिस ने	बहुत खूब बनाई

كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ﴿٧﴾ ثُمَّ جَعَلَ

हर शै	जो उस ने पैदा की	और इवतिदा की	पैदाइश	इन्सान	से	मिट्टी	7	फिर	बनाया

نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ﴿٨﴾ ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ

उस की नस्ल	खुलासे से	से	हकीर (बेक़द्र) पानी	8	फिर उस (के आज़ा) को ठीक किया	और फूँकी	उस में	से

رُوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا

अपनी रूह	और बनाए	तुम्हारे लिए	कान	और आँखें	और दिल (जमा)	बहुत कम	जो

تَشْكُرُونَ ﴿٩﴾ وَقَالُوا ءِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ ءَأَنَّا لَفِي

तुम शुक्र करते हो	9	और उन्होंने ने कहा	क्या जब	हम गुम हो जाएंगे	ज़मीन में	क्या हम	तो - में

خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ بَلْ هُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ كَفِرُونَ ﴿١٠﴾

नई पैदाइश	बल्कि	वह	मुलाक़ात से	अपना रब	मुन्किर (जमा)	10

قُلْ يَتَوَفَّكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ							
तुम अपने रब की तरफ़	फिर	तुम पर	वह जो कि मुक़र्रर किया गया है	मौत का फ़रिश्ता	तुम्हारी रूह कब्ज़ करता है	फ़रमा दें	
تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ							
अपने रब के सामने	अपने सर	झुकाए होंगे	मुज़्रिम (जमा)	जब	तुम देखो	और अगर	लौटाए जाओगे
رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ﴿١٢﴾							
12	यकीन करने वाले	वेशक हम	अच्छे अमल	हम करेंगे	पस हमें लौटा दे	और हम ने सुन लिया	हम न देख लिया
وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًى وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي							
मेरी तरफ़ से	बात	साबित हो चुकी है	और लेकिन	उस की हिदायत	हर शख्स	हम ज़रूर देते	हम चाहते और अगर
لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٣﴾ فَذُوقُوا بِمَا							
वह जो	पस चखो तुम	13	इकट्ठे	और इन्सान	जिन्नों	से	अलबत्ता मैं ज़रूर भर दूँगा जहनन्म
نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَكُم وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا							
उस का बदला जो	हमेशा का अज़ाब	और चखो तुम	वेशक हम ने तुम्हें भुला दिया	इस	अपने दिन	मुलाकात	तुम ने भुला दिया था
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا							
वह	याद दिलाई जाती है	जब	वह जो	हमारी आयतों पर	ईमान लाते हैं	इस के सिवा नहीं	14 तुम करते थे
خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿١٥﴾ تَتَجَافَىٰ							
अलग रहते हैं	15	तकब्बुर नहीं करते	और वह	अपना रब	तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान करते हैं	गिर पड़ते हैं सिज्दे में
جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا							
और उस से जो	और उम्मीद	डर	अपना रब	वह पुकारते हैं	खाबगाहों (विस्तरों)	से	उन के पहलू
رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿١٦﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ							
से	उन के लिए	छुपा रखा गया	जो	कोई शख्स	सो नहीं जानता	16	वह खर्च करते हैं हम ने उन्हें दिया
قُرَّةِ أَعْيُنٍ ۚ جَزَاءُ ۚ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾ أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ							
हो	उस के मानिन्द जो	मोमिन	हो	तो क्या जो	17	जो वह करते थे	उस का जज़ा आँखों की ठंडक
فَاسْقَا ۚ لَا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ							
तो उन के लिए	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	रहे	18	वह बराबर नहीं होते	फ़ासिक (नाफ़रमान)
جَنَّاتٍ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا ۚ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا							
नाफ़रमानी की	वह जिन्होंने ने	और रहे	19	वह करते थे	उस के (सिले में) जो	मेहमानी	बागात रहने के
فَمَاؤُهُمُ النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا							
उस में	लौटा दिए जाएंगे	उस से	कि वह निकलें	वह इरादा करेंगे	जब भी	जहनन्म	तो उन का ठिकाना
وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾							
20	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जो	दोज़ख़ का अज़ाब	तुम चखो	उन्हें और कहा जाएगा

आप (स) फ़रमा दें, मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी रूह कब्ज़ करता है, जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। (11)

और अगर तुम देखो जब मुज़्रिम अपने रब के सामने अपने सर झुकाए होंगे (और कह रहे होंगे) ए हमारे रब! (अब) हम ने देख लिया और सुन लिया, पस हमें लौटा दे कि हम अच्छे अमल करेंगे, वेशक हम यकीन करने वाले हैं। (12) और अगर हम चाहते तो ज़रूर हर शख्स को उस की हिदायत दे देते लेकिन (यह) बात साबित हो चुकी है मेरी तरफ़ से कि मैं अलबत्ता जहनन्म को ज़रूर भर दूँगा, इकट्ठे जिन्नों और इन्सानों से। (13)

पस तुम उस का (मज़ा) चखो जो तुम ने भुला दिया था अपने इस दिन की मुलाकात (हाज़िरी) को, हम ने (भी) तुम्हें भुला दिया, और चखो हमेशा का अज़ाब उस के बदले जो तुम करते थे। (14)

इस के सिवा नहीं कि हमारी आयतों पर वह लोग ईमान लाते हैं कि जब वह उन्हें याद दिलाई जाती है तो सिज्दे में गिर पड़ते हैं अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं और वह तकब्बुर नहीं करते। (15)

उन के पहलू विस्तरों से अलग रहते हैं, और वह अपने रब को पुकारते हैं डर और उम्मीद से और जो हम ने उन्हें दिया है उस में से वह खर्च करते हैं। (16)

सो कोई शख्स नहीं जानता जो छुपा रखा गया है उन के लिए आँखों की ठंडक से, उस की जज़ा है जो वह करते थे। (17)

तो क्या जो मोमिन हो वह उस के बराबर है जो नाफ़रमान हो? (फ़रमा दें) वह बराबर नहीं होते। (18)

रहे वह लोग जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए तो उन के लिए रहने के बागात हैं, उस के बदले में जो वह करते थे। (19)

और रहे वह जिन्होंने ने नाफ़रमानी की तो उन का ठिकाना जहनन्म है, वह जब भी उस से निकलने का इरादा करेंगे वह उस में लौटा दिए (ढकेल दिए) जाएंगे, और उन्हें कहा जाएगा दोज़ख़ का अज़ाब चखो, वह जिस को तुम झुटलाते थे। (20)

और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे कुछ अज़ाब नज़्दीक (दुनिया) का, (आखिरत के) बड़े अज़ाब से पहले, शायद वह लौट आए। (21)

और उस से बड़ कर ज़ालिम कौन है? जिसे उस के रब की आयात से नसीहत की गई, फिर उस ने उन से मुँह फेर लिया, बेशक हम मुजरीमों से इन्तिकाम (बदला) लेने वाले हैं। (22)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को तौरत अता की तो तुम उस के मिलने के बारे में शक में न रहो, और हम ने उसे बना दिया हिदायत बनी इस्राईल के लिए। (23)

और हम ने उन में से पेशवा बनाए, वह हमारे हुक़म से रहनुमाई करते थे, जब उन्होंने ने सव्र किया और वह हमारी आयतों पर यकीन करते थे। (24)

बेशक तुम्हारा रब क्रियामत के दिन उन के दरमियान फैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (25)

क्या उन के लिए (यह हकीक़त) मोज़िवे हिदायत न हुई कि हम ने उन से क़व्ल कितनी (ही) उम्मतें हलाक की, वह उन के रहने की जगहों में चलते (फिरते) हैं, बेशक उस में निशानियां हैं तो क्या वह सुनते नहीं? (26)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा? कि हम ख़श्क़ ज़मीन की तरफ़ पानी चलाते (रवां करते) हैं, फिर उस से हम खेती निकालते हैं, उस से उन के मवेशी खाते हैं, और वह खुद भी, तो क्या वह देखते नहीं? (27)

और वह कहते हैं यह फैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो। (28)

आप (स) फ़रमा दें, फैसले के दिन काफ़िरों को उन का ईमान (लाना) नफ़ा न देगा, और न वह मोहलत दिए जाएंगे। (29)

पस तुम उन से मुँह फेर लो और तुम इन्तिज़ार करो, बेशक वह भी मुन्तज़िर हैं। (30)

وَلْنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾						
और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे	कुछ	अज़ाब	नज़्दीक	सिवाए (पहले)	अज़ाब	
वड़ा	शायद वह	लौट आए	21	और कौन	बड़ा ज़ालिम	उस से जो
उसे नसीहत की गई						
بَايَتْ رَبَّهُ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾						
उस के रब की आयात से	फिर	उस ने मुँह फेर लिया	उस से	बेशक हम	से	मुज्रिम (जमा)
इन्तिकाम लेने वाले	22					
وَلَقَدْ اَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿٢٣﴾						
और हम ने दी	मूसा (अ)	किताब (तौरत)	तो तुम न रहो	शक में		
से - मुतअल्लिक	उस का मिलना	और हम ने बनाया उसे	हिदायत	बनी इस्राईल के लिए	23	
وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اِمَّةً يَّهْدُونَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِاٰيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُم يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِىْمَا كَانُوا فِيْهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِى مَسْكِنِهِمْ ۖ اِنَّ فِى ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ اَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَانْفُسُهُمْ ۖ اَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٢٩﴾ فَاَعْرَضْ عَنْهُمْ ۚ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنتٰظِرُونَ ﴿٣٠﴾						
और हम ने बनाया	उन से	इमाम (पेशवा)	वह रहनुमाई करते	हमारे हुक़म से	जब	उन्होंने ने सव्र किया
और वह थे	हमारी आयतों पर	यकीन करते	24	बेशक	तुम्हारा रब	वह
उस में	उस में	वह थे	उस में	इख़्तिलाफ़ करते	25	क्या हिदायत न हुई
उन के लिए	क्रियामत के दिन	उस में	वह थे	उस में	इख़्तिलाफ़ करते	25
हम ने कितनी हलाक की	उन से क़व्ल	से	उम्मतें	वह चलते हैं	में	उन के घर (जमा)
वेशक	उस में	अलबत्ता निशानियां	तो क्या वह सुनते नहीं	26	क्या उन्होंने ने नहीं देखा	कि हम चलाते हैं
पानी	तरफ़	ज़मीन	ख़श्क़	उस से खेती	फिर हम निकालते हैं	खाते हैं
उस से						
उन के मवेशी	और वह खुद	तो क्या	देखते नहीं वह	27	और वह कहते हैं	कब
यह	फतह (फैसला)	अगर	तुम हो	सच्चे	28	फरमा दें
नफा न देगा	फतह (फैसले) के दिन					
जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	उन का ईमान	और न	वह	मोहलत दिए जाएंगे	29	पस मुँह फेर लो
उन से	और तुम इन्तिज़ार करो	बेशक वह	मुन्तज़िर हैं	30		

آيَاتُهَا ۷۳ ﴿۳۳﴾ سُورَةُ الْأَحْزَابِ ﴿۳۳﴾ زُكُوعَاتُهَا ۹									
रुकुआत 9		(33) सुरतुल अहज़ाब लशकर				आयात 73			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ									
और मुनाफ़ि़कों		काफ़ि़रों		और कहा न मानें		अल्लाह से डरते रहें		ऐ नबी (स)	
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ									
आप के रब (की तरफ़) से		आप की तरफ़		जो वहि किया जाता है		और पैरवी करें आप		1 हिक्मत वाला जानने वाला है बेशक अल्लाह	
إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٢﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ									
और काफ़ी है अल्लाह		अल्लाह पर		और भरोसा रखें आप (स)		2 ख़बरदार		तुम करते हो उस से जो है बेशक अल्लाह	
وَكَيْلًا ﴿٣﴾ مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهِ ۖ وَمَا جَعَلَ									
और नहीं बनाया		उस के सीने में		दो दिल		किसी आदमी के लिए		नहीं बनाए अल्लाह ने 3 कार साज़	
أَزْوَاجَكُمْ الَّتِي تَظْهَرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهَاتِكُمْ ۖ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ									
तुम्हारे मुँह बोले बेटे		और नहीं बनाया		तुम्हारी माएं		उन से- उन्हें		तुम माँ कह बैठते हो वह जिन्हें तुम्हारी बीवियां	
أَبْنَاءَكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ									
और वह		हक़		फ़रमाता है		और अल्लाह		अपने मुँह (जमा) तुम्हारा कहना यह तुम तुम्हारे बेटे	
يَهْدِي السَّبِيلَ ﴿٤﴾ أَدْعَوْهُمْ لِأَبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ									
अल्लाह के नज़्दीक		ज़ियादा इंसाफ़		यह		उनके बापों की तरफ़		उन्हें पुकारो 4 रास्ता हिदायत देता है	
فَإِنْ لَّمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ									
और तुम्हारे रफ़ीक़		दीन में (दीनी)		तो वह तुम्हारे भाई		उन के बापों को		तुम न जानते हो फिर अगर	
وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَكِنْ مَا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ									
अपने दिल		जो इरादे से		और लेकिन		उस से		उस में जो तुम से भूल चूक हो चुकी कोई गुनाह तुम पर और नहीं	
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥﴾ النَّبِيُّ أَوْلىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ									
से		मोमिनों के		ज़ियादा (हक़दार)		नबी (स)		5 मेहरवान बख़शने वाला अल्लाह और है	
أَنْفُسِهِمْ وَأَزْوَاجَهُ أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلىٰ									
नज़्दीक तर		उन में से बाज़		और करावतदार		उन की माएं		और उस की बीवियां उन की जानें	
بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ									
मगर यह कि		और मुहाजि़रों		मोमिनों		से		अल्लाह की किताब में बाज़ (दूसरों) से	
تَفْعَلُوا إِلَىٰ أُولِيكُم مَّعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٦﴾									
6		लिखा हुआ		किताब में		यह है		हुस्ने सुलूक अपने दोस्त (जमा) तरफ़ (साथ) तुम करो	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
ऐ नबी (स)! अल्लाह से डरते रहें, और काफ़ि़रों और मुनाफ़ि़कों का कहा न मानें, वेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (1)									
और पैरवी करें जो वहि किया जाता है आप (स) को आप (स) के रब की तरफ़ से, वेशक अल्लाह उस से बा ख़बर है जो तुम करते हो। (2)									
और आप (स) अल्लाह पर भरोसा रखें, अल्लाह काफ़ी है कार साज़। (3)									
अल्लाह ने नहीं बनाए किसी आदमी के लिए उस के सीने में दो दिल, और तुम्हारी उन बीवियों को जिन्हें तुम माँ कह बैठते हो नहीं बनाया तुम्हारी माएं, और तुम्हारे मुँह बोले (ले पालकों को) (सच मुच) तुम्हारे बेटे नहीं बनाया, यह (सिर्फ़) तुम्हारे मुँह से कहने (की बात है) और अल्लाह हक़ फ़रमाता है, और वह रास्ते की हिदायत देता है। (4)									
उन्हें उन ही के बापों की तरफ़ (मनसूब कर के) पुकारो, यह अल्लाह के नज़्दीक ज़ियादा (क़रीने) इंसाफ़ है, फिर अगर तुम उन के बापों को न जानते हो तो वह तुम्हारे दीनी भाई हैं, और वह तुम्हारे रफ़ीक़ हैं, और तुम पर नहीं उस में कोई गुनाह जो तुम से भूल चूक हो चुकी, लेकिन (हां) जो अपने दिल के इरादे से करो, और अल्लाह बख़शने वाला, मेहरवान है। (5)									
नबी (स) मोमिनों के लिए उन के अपने नफ्स से ज़ियादा हक़दार है और आप (नबी स) की बीवीयां उन (मोमिनों) की माँएं हैं, और करावतदार अल्लाह की किताब में बाज़ (ज़ाम) मुसलमानों और मुहाजि़रों की वनिस्वत एक दूसरे से ज़ियादा नज़्दीक (फाइक़) हैं मगर यह कि तुम करो अपने दोस्तों के साथ हुस्ने सुलूक, यह (अल्लाह की) किताब में लिखा हुआ है। (6)									

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है
ऐ नबी (स)! अल्लाह से डरते रहें, और काफ़ि़रों और मुनाफ़ि़कों का कहा न मानें, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है। (1)
और पैरवी करें जो वहि किया जाता है आप (स) को आप (स) के रब की तरफ़ से, बेशक अल्लाह उस से वा ख़बर है जो तुम करते हो। (2)
और आप (स) अल्लाह पर भरोसा रखें, अल्लाह काफ़ी है कार साज़। (3)
अल्लाह ने नहीं बनाए किसी आदमी के लिए उस के सीने में दो दिल, और तुम्हारी उन बीवियों को जिन्हें तुम माँ कह बैठते हो नहीं बनाया तुम्हारी माएं, और तुम्हारे मुँह बोले (ले पालकों को) (सच मुच) तुम्हारे बेटे नहीं बनाया, यह (सिर्फ़) तुम्हारे मुँह से कहने (की बात है) और अल्लाह हक़ फ़रमाता है, और वह रास्ते की हिदायत देता है। (4)
उन्हें उन ही के बापों की तरफ़ (मनसूब कर के) पुकारो, यह अल्लाह के नज़्दीक ज़ियादा (क़रीने) इंसाफ़ है, फिर अगर तुम उन के बापों को न जानते हो तो वह तुम्हारे दीनी भाई हैं, और वह तुम्हारे रफ़ीक़ हैं, और तुम पर नहीं उस में कोई गुनाह जो तुम से भूल चूक हो चुकी, लेकिन (हां) जो अपने दिल के इरादे से करो, और अल्लाह बख़शने वाला, मेहरवान है। (5)
नबी (स) मोमिनों के लिए उन के अपने नफ़्स से ज़ियादा हक़दार है और आप (नबी स) की बीवियां उन (मोमिनों) की माँ हैं, और कराबतदार अल्लाह की किताब में बाज़ (आम) मुसलमानों और मुहाजि़रों की बनिस्वत एक दूसरे से ज़ियादा नज़्दीक (फ़ाइक़) हैं मगर यह कि तुम करो अपने दोस्तों के साथ हुस्ने सुलूक, यह (अल्लाह की) किताब में लिखा हुआ है। (6)

और (याद करो) जब हम ने लिया नबियों से उन का अहद, और तुम से (भी लिया) और वह नूह (अ) से और इब्राहीम (अ) से और मूसा (अ) और मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) से, और हम ने उन से पुख्ता अहद लिया। (7)

ताकि वह (उन) सच्चों से उन की सच्चाई (के बारे में) सवाल करे, और उस ने काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार किया है। (8) ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (उस का एहसान) याद करो जब तुम पर बहुत से लशकर चढ़ आए तो हम ने उन पर आन्धी भेजी और (ऐसे) लशकर जिन्हें तुम ने न देखा, और अल्लाह उसे देखने वाला है जो तुम करते हो। (9)

जब वह तुम पर (चढ़) आए तुम्हारे ऊपर (की तरफ) से और तुम्हारे नीचे (की तरफ) से, और जब आँखें चुन्धिया गई, और दिल गलों में (क्लेजे मुँह को) आने लगे और तुम अल्लाह के बारे में (तरह तरह के) गुमान कर रहे थे। (10)

यहां (इस मौके पर) मोमिन आज़माए गए और वह शदीद हिलाए (झिन्झोड़े) गए। (11)

और जब कहने लगे मुनाफ़िक और वह जिन के दिलों में रोग है: हम से अल्लाह और उस के रसूल (स) ने जो वादा किया वह सिर्फ़ धोका था। (12)

और जब एक गिरोह ने कहा उन में से, ऐ मदीने वालों! तुम्हारे लिए कोई जगह (ठिकाना) नहीं, लिहाज़ा तुम लौट चलो, और उन में से एक गिरोह इजाज़त मांगता था नबी (स) से, वह कहते थे कि हमारे घर वेशक ग़ैर महफूज़ है, हालांकि वह ग़ैर महफूज़ नहीं हैं, वह तो सिर्फ़ फिरार चाहते हैं। (13)

और अगर (दुश्मन) उन पर मदीने के अतराफ़ से दाख़िल हो जाएं (आ घुसों) फिर उन से फ़साद चाहा जाए (कहा जाए) तो वह उसे ज़रूर देंगे (मनज़ूर कर लेंगे) और घरों में सिर्फ़ थोड़ी सी देर लगाएंगे। (14)

हालांकि वह इस से पहले अल्लाह से अहद कर चुके थे कि वह पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से किया हुआ अहद पूछा जाने वाला है। (15)

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ							
और	और	और	उन का अहद	नबियों	से	हम ने लिया	और जब
इब्राहीम (अ)	नूह (अ) से	तुम से					
وَمُوسَى وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا عَلِيًّا							
7	पुख्ता	अहद	उन से	और हम ने लिया	और मरयम के बेटे ईसा (अ)	और मूसा (अ)	
لَيَسْأَلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا							
8	दर्दनाक	अज़ाब	काफ़िरों के लिए	और उस ने तैयार किया	उन की सच्चाई	से	सच्चे ताकि वह सवाल करे
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ							
लशकर (जमा)	जब तुम पर (चढ़) आए	अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	याद करो	ईमान वालो	ऐ	
فَارْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ							
तुम करते हो	उसे जो	अल्लाह और है	तुम ने उन्हें न देखा	और लशकर	आँधी	उन पर	हम ने भेजी
بَصِيْرًا ۚ اِذْ جَآءَوكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ۚ وَادُّ							
और जब	तुम्हारे	और नीचे से	तुम्हारे ऊपर	से	वह तुम पर आए	जब 9	देखने वाला
زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ							
अल्लाह के बारे में	और तुम गुमान करते थे	गले	दिल (जमा)	और पहुँच गए	कज हुई (चुन्धिया गई) आँखें		
الْظُّنُوْنَ ۚ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا							
11	शदीद	हिलाया जाना	और वह हिलाए गए	मोमिन (जमा)	आज़माए गए	यहां 10	बहुत से गुमान
وَإِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا							
जो हम से वादा किया	रोग	दिलों में	और वह जिन के	मुनाफ़िक (जमा)	कहने लगे	और जब	
اللّٰهُ وَرَسُوْلَهُ اِلَّا غُرُوْرًا ۚ وَادُّ قَالَتْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاهْلَ يَثْرِبَ							
ऐ यसरिब (मदीने) वालो	उन में से	एक गिरोह	कहा	और जब 12	धोका देना	मगर (सिर्फ़)	अल्लाह और उस का रसूल
لَا مُقَامَ لَكُمْ فَاَرْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ النَّبِيَّ							
नबी से	उन में से	एक गिरोह	और इजाज़त मांगता था	लिहाज़ा तुम लौट चलो	तुम्हारे लिए	कोई जगह नहीं	
يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۚ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ اِنْ يُرِيْدُوْنَ اِلَّا							
मगर (सिर्फ़)	वह नहीं चाहते	ग़ैर महफूज़	हालांकि वह नहीं	ग़ैर महफूज़	हमारे घर	वेशक	वह कहते थे
فِرَارًا ۚ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُلُوْا الْفِتْنَةَ							
फ़साद	उन से चाहा जाए	फिर	उस (मदीने) के अतराफ़	से	उन पर	दाख़िल हो जाएं	और अगर 13 फिरार
لَا تَوْهَا وَمَا تَلَبّٰثُوْا بِهَا اِلَّا يَسِيْرًا ۚ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهِدُوْا اللّٰهَ							
अल्लाह	हालांकि वह अहद कर चुके थे	14	थोड़ी सी	मगर (सिर्फ़)	उस में	और न देर लगाएंगे	तो वह ज़रूर उसे देंगे
مِّنْ قَبْلُ لَا يُؤْلَوْنَ الْاَدْبَارُ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْئُوْلًا							
15	पूछा जाने वाला	अल्लाह का अहद	और है	पीठ	फेरेंगे	न	इस से पहले

ع ١٢

ع ١٠
عند المتقدمين ١٢

قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمْ الْفِرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ مِنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذَا							
और उस सूरत में	कत्ल	या	मौत से	तुम भागे	अगर	फिरार	तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देगा
لَا تُمْتَعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٦﴾ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللَّهِ إِنْ							
अगर	अल्लाह से	वह जो तुम्हें बचाए	कौन जो	फरमा दें	16	थोड़ा	मगर (सिर्फ) न फाइदा दिए जाओगे
أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ							
अल्लाह के सिवा	अपने लिए	और वह न पाएंगे	मेहरबानी	चाहे तुम से	या	बुराई	वह चाहे तुम से
وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ							
और कहने वाले	तुम में से	रोकने वाले	अल्लाह	खूब जानता है	17	और न मददगार	कोई दोस्त
لِأَخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا وَلَا يَأْتُونَ الْبَاسَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٨﴾ أَشِحَّةً							
बुखल करते हुए	18	बहुत कम	मगर	लड़ाई	और नहीं आते	हमारी तरफ़	अपने भाइयों से
عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ							
घूम रही है	तुम्हारी तरफ़	वह देखने लगते हैं	तुम देखोगे उन्हें	खौफ़	फिर जब आए	तुम्हारे सुतअल्लिक	
أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ							
खौफ़	चला जाए	फिर जब	मौत से	उस पर	ग़शी आती है	उस शख्स की तरह	उन की आँखें
سَلْفُوكُمْ بِالْسِّنَةِ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا							
नहीं ईमान लाए	यह लोग	माल पर	बख़्शीली (लालच) करते हुए	तेज़	ज़वानों से	तुम्हें ताने देने लगे	
فَاحْبِطْ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۖ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٩﴾ يَحْسَبُونَ							
वह गुमान करते हैं	19	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	उन के अमल	तो अकारत कर दिए अल्लाह ने
الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۖ وَإِنْ يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُمْ							
कि काश वह	वह तमन्ना करें	लशकर	और अगर आए	नहीं गए हैं	लशकर (जमा)		
بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَائِكُمْ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ							
तुम्हारे दरमियान	हों	और अगर	तुम्हारी ख़बरें	से	पूछते रहते	देहातियों में	बाहर निकले हुए होते
مَا قَتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢٠﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ							
अच्छा बेहतरीन	मिसाल (नमूना)	अल्लाह का रसूल (स)	में	तुम्हारे लिए	अलबत्ता है यकीनन	20	बहुत कम मगर जंग न करें
لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ﴿٢١﴾ وَلَمَّا							
और जब	21	कसूरत से	और अल्लाह को याद करता है	और रोज़े आख़िरत	अल्लाह	उम्मीद रखता है	उस के लिए जो
رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ ۖ قَالُوا هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ							
और उस का रसूल (स)	अल्लाह	जो हम को वादा दिया	यह है	वह कहने लगे	लशक़रों को	मोमिनों ने देखा	
وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۖ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ﴿٢٢﴾							
22	और फ़रमांबरदारी	ईमान	मगर	उन का ज़ियादा किया	और न	और उस का रसूल	अल्लाह और सच कहा था

आप (स) फ़रमा दें: फिरार तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देगा अगर तुम मौत या कत्ल से भागे, और उस सूरत में तुम सिर्फ़ थोड़ा (चन्द दिन) फाइदा दिए जाओगे। (16)

आप (स) फ़रमा दें: वह कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता? अगर वह तुम से बुराई (करना) चाहे या तुम पर मेहरबानी करना चाहे और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा कोई दोस्त न पाएंगे और न मददगार। (17)

अल्लाह खूब जानता है तुम में से (दूसरों को जिहाद से) रोकने वालों को, और अपने भाइयों से यह कहने वालों को कि हमारी तरफ़ आजाओ, और वह लड़ाई में नहीं आते मगर बहुत कम। (18)

तुम्हारा साथ देने में बख़्शीली करते हैं, फिर जब खौफ़ आए तो तुम उन्हें देखोगे कि वह तुम्हारी तरफ़ (यूँ) देखने लगते हैं (जैसे) उन की आँखें घूम रही हैं उस शख्स की तरह जिस पर मौत की ग़शी (तारी) हो, फिर जब खौफ़ चला जाए तो तुम्हें ताने देने लगे तेज़ ज़वानों से, माल पर बख़्शीली करते हुए, यह लोग ईमान नहीं लाए, तो अल्लाह ने अकारत कर दिए उन के अमल, और अल्लाह पर यह आसान है। (19)

वह गुमान करते हैं कि (काफ़िरों के) लशकर (अभी) नहीं गए हैं, और अगर लशकर (दोबारा) आए तो वह तमन्ना करें कि काश वह देहात में बाहर निकले होते (सेहरा नशीन होते) तुम्हारी ख़बरें पूछते रहते और अगर तुम्हारे दरमियान हों तो जंग न करें मगर बहुत कम। (20)

यकीनन तुम्हारे लिए है अल्लाह के रसूल (स) में एक बेहतरीन नमूना, (हर) उस शख्स के लिए जो अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर उम्मीद रखता है, और अल्लाह को बकसूरत याद करता है। (21)

और जब मोमिनों ने लशक़रों को देखा तो वह कहने लगे: यह है जिस का हमें अल्लाह और उस के रसूल ने वादा दिया था, और अल्लाह और उस के रसूल (स) ने सच कहा था, और (उस सूरत हाल ने) उन में ज़ियादा न किया मगर ईमान और फ़रमांबरदारी (का ज़िबा)। (22)

मोमिनों में कुछ ऐसे आदमी हैं कि उन्होंने ने अल्लाह से जो अहद किया था वह सच कर दिखाया, सो उन में से (कुछ हैं) जो अपनी नज़र पूरी कर चुके, और उन में (कुछ हैं) जो इन्तिज़ार में हैं, और उन्होंने ने कुछ भी तबदीली नहीं की। (23)

(यह इस लिए हुआ) कि अल्लाह जज़ा दे सच्चे लोगों को उन की सच्चाई की, और अगर वह चाहे तो मुनाफ़िकों को अज़ाब दे या वह उन की तौबा कुबूल कर ले, वेशक अल्लाह बख़शने वाला, मेहरबान है। (24)

और अल्लाह ने काफ़िरों को लौटा दिया उन के (अपने) गुस्से में भरे हुए, उन्होंने ने कोई भलाई न पाई, और जंग (के मामले में) मोमिनों के लिए अल्लाह काफ़ी है, और अल्लाह है तवाना और ग़ालिब। (25)

और अहले किताब में से जिन्होंने ने उन की मदद की थी, उस ने उन्हें उन के क़िलों से उतार दिया, और उन के दिलों में रुझव डाल दिया, एक गिरोह को तुम क़त्ल करते हो और एक गिरोह को कैद करते हो। (26)

और तुम्हें वारिस बना दिया उन की ज़मीन का, और उन के घरों का, और उन के मालों का, और उस ज़मीन का जहां तुम ने क़दम नहीं रखा था, और अल्लाह है हर शौ पर कुदरत रखने वाला। (27)

ऐ नबी (स)! आप (स) अपनी वीवियों से फ़रमा दें, अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ देदूँ और रुख़सत कर दूँ अच्छी तरह रुख़सत। (28)

और अगर तुम अल्लाह और उस का रसूल (स) और आख़िरत का घर चाहती हो तो वेशक अल्लाह ने तुम में से नेकी करने वालियों के लिए अजरे अज़ीम तैयार कर रखा है। (29)

ऐ नबी (स) की वीवियो! जो कोई तुम में से खुली बेहूदगी की मुर्तकिब हो तो उस के लिए अज़ाब दो चन्द बढ़ा दिया जाएगा, और यह अल्लाह पर आसान है। (30)

مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ							
सो उन में से	उस पर	उन्होंने ने अहद किया अल्लाह से	जो	उन्होंने ने सच कर दिखाया	ऐसे आदमी	मोमिन (जमा)	से (में)
مَّنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾ لَيَجْزِي							
ताकि जज़ा दे	23	कुछ भी तबदीली	और उन्होंने ने तबदीली नहीं की	इन्तिज़ार में है	जो	और उन में से	नज़र अपनी पूरा कर चुका जो
اللَّهُ الصّٰدِقِينَ بِصَدَقِهِمْ وَيُعَذِّبُ الْمُنٰفِقِينَ اِنْ شَاءَ اَوْ							
या	अगर वह चाहे	मुनाफ़िकों	और वह अज़ाब दे	उन की सच्चाई की	सच्चे लोग	अल्लाह	
يُثَوِّبَ عَلَيْهِمْ ۚ اِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٤﴾ وَرَدَّ اللَّهُ							
और लौटा दिया अल्लाह ने	24	मेहरबान	बख़शने वाला	है	वेशक अल्लाह	वह उन की तौबा कुबूल कर ले	
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنْالُوْا خَيْرًا ۚ وَكَفَىٰ اللَّهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۚ							
जंग	मोमिनीन	और काफ़ी है अल्लाह	कोई भलाई	उन्होंने ने न पाई	उन के गुस्से में भरे हुए	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	
وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿٢٥﴾ وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اٰهْلِ الْكِتٰبِ							
अहले किताब	से	जिन्होंने ने उन की मदद की	उन लोगों को	और उतार दिया	25	ग़ालिब	तवाना अल्लाह और है
مِّنْ صّٰيَصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا							
एक गिरोह	रुझव	उन के दिल	में	और डाल दिया	उन के क़िल्ए	से	
تَقْتُلُوْنَ وَتَاسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿٢٦﴾ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ							
और उन के घर (जमा)	उन की ज़मीन	और तुम्हें वारिस बना दिया	26	एक गिरोह	और तुम कैद करते हो	तुम क़त्ल करते हो	
وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَّوْهُا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾							
27	कुदरत रखने वाला	हर शौ	पर	अल्लाह और है	तुम ने वहां क़दम नहीं रखा	और वह ज़मीन	और उन के माल (जमा)
يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُمْ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا							
दुनिया	ज़िन्दगी	चाहती हो	तुम हो	अगर	अपनी वीवियों से	फ़रमा दें	ऐ नबी (स)
وَزَيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمّتِعْنِ وَاَسْرَحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾							
28	अच्छी	रुख़सत करना	और तुम्हें रुख़सत कर दूँ	मैं तुम्हें कुछ देदूँ	तो आओ	और उस की ज़ीनत	
وَاِنْ كُنْتُمْ تُرِدْنَ اللَّهَ وَرَسُوْلَهُ وَالْاٰخِرَةَ							
और आख़िरत का घर		और उस का रसूल		चाहती हो अल्लाह		तुम	और अगर
فَاِنَّ اللَّهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾							
29	अजरे अज़ीम	तुम में से	नेकी करने वालियों के लिए	तैयार किया है	पस वेशक अल्लाह		
يُنِسَاءَ النَّبِيِّ مَن يَّآتٍ مِنْكُمْ بِفَاحِشَةٍ مُّبِيْنَةٍ يُضَعَفْ							
बढ़ाया जाएगा	खुली	बेहूदगी के साथ	तुम में से	लाए (मुर्तकिब हो)	जो कोई	ऐ नबी की वीवियो	
لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَىٰ اللَّهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾							
30	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	दो चन्द	अज़ाब	उस के लिए

ع १९

وَمَنْ يَقْنُتْ مِنْكُمْ لَهِ وَرَسُولُهُ وَتَعْمَلْ صَالِحًا					
निक	और अमल करे	अल्लाह और उस के रसूल (स) की	तुम में से	इताअत करे	और जो
تُؤْتِيهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا (३१)					
31	इज्जत का रिज्क	उस के लिए	और हम ने तैयार किया	दोहरा	उस का अजर हम देंगे उस को
يُنِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِّنَ النِّسَاءِ ۚ إِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَحْضَعْنَ					
तो मुलाइमत न करो	तुम परहेजगारी करो	अगर	औरतों में से	किसी एक की तरह	ऐ नबी (स) की वीवियों!
بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا (३२)					
32	अच्छी (माकूल)	वात	और बात करो तुम	रोग (खोट)	उस के दिल में वह जो कि लालच करे गुफ्तगू में
وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ					
अगला	(जमाना-ए) जाहिलियत	बनाव सिंगार	और बनाव सिंगार का इजहार करती न फिरो	अपने घरों में	और करार पकड़ो
وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ					
अल्लाह और उस का रसूल	और इताअत करो	जकात	और देती रहो	नमाज	और काइम करो
إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ					
ऐ अहले बैत	आलूदगी	तुम से	कि दूर फरमा दे	अल्लाह चाहता है	इस के सिवा नहीं
وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا (३३) وَادْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ					
तुम्हारे घर (जमा)	में	जो पढ़ा जाता है	और तुम याद रखो	33	खूब पाक और तुम्हें पाक और साफ़ रखे
مِّنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا (३४)					
34	बाख़बर	वारीक वीन	है	वेशक अल्लाह	और हिक्मत और अल्लाह की आयतें से
إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ					
और मोमिन औरतें	और मोमिन मर्द	और मुसलमान औरतें	मुसलमान मर्द	वेशक	
وَالْقَنَاتِ وَالْقَنَاتِ وَالصَّدِيقِينَ وَالصَّدِيقَاتِ وَالصَّبِرِينَ					
और सबर करने वाले मर्द	और रास्तगो औरतें	और रास्तगो मर्द	और फरमावरदार औरतें	और फरमावरदार मर्द	
وَالصَّبِرَاتِ وَالْخُشَعِينَ وَالْخُشَعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ					
और सदका करने वाले मर्द	और आजिजी करने वाली औरतें	और आजिजी करने वाले मर्द	और आजिजी करने वाली औरतें	और सदका करने वाली औरतें	
وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْحَفِظِينَ					
और हिफाजत करने वाले मर्द	और रोज़ा रखने वाली औरतें	और रोज़ा रखने वाले मर्द	और सदका करने वाली औरतें		
فُرُوجَهُمْ وَالْحَفِظَاتِ وَالذَّكِرِينَ اللَّهُ كَثِيرًا					
वकसूरत	अल्लाह	और याद करने वाले	और हिफाजत करने वाली औरतें	अपनी शर्मगाहें	
وَالذَّكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا (३५)					
35	और अजरे अज़ीम	बख्शिश	उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया	और याद करने वाली औरतें

और तुम में से जो अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करे और नेक अमल करे हम उसे उस का दोहरा अजर देंगे और हम ने उस के लिए इज्जत का रिज्क तैयार किया है। (31)

ऐ नबी (स) की वीवियों! औरतों में से तुम किसी एक की तरह (आम) नहीं हो, अगर तुम परहेजगारी इख्तियार करो तो गुफ्तगू में मुलाइमत न करो कि जिस के दिल में खोट है वह लालच (खयाले फासिद) करे और तुम बात करो माकूल बात। (32)

और अपने घरों में करार पकड़ो, और अगले जमाना-ए-जाहिलियत के बनाव सिंगार का इजहार करती न फिरो, और नमाज काइम करो, और जकात देती रहो, और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करो, वेशक अल्लाह चाहता है कि वह तुम से आलूदगी दूर फरमा दे ऐ अहले बैत! और तुम्हें खूब (हर तरह से) पाक और साफ़ रखे। (33)

और तुम याद रखो जो तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें और हिक्मत (दानाई की बातें) पढ़ी जाती हैं, वेशक अल्लाह वारीक वीन, बाख़बर है। (34)

वेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, और फरमावरदार मर्द और फरमावरदार औरतें, और रास्तगो मर्द और रास्तगो औरतें, और सबर करने वाले मर्द और सबर करने वाली औरतें, और आजिजी करने वाले मर्द और आजिजी करने वाली औरतें, और सदका (खैरात) करने वाले मर्द और सदका (खैरात) करने वाली औरतें, और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें, और हिफाजत करने वाले मर्द अपनी शर्मगाहों की, और हिफाजत करने वाली औरतें, और अल्लाह को बकसूरत याद करने वाले मर्द और (अल्लाह को) याद करने वाली औरतें, अल्लाह ने उन (सब) के लिए तैयार की है बख्शिश और अजरे अज़ीम। (35)

और (गुनजाइश) नहीं है किसी मोमिन मर्द और न किसी मोमिन औरत के लिए कि जब फैसला कर दें अल्लाह और उस के रसूल (स) किसी मामले का, कि उन के लिए उस मामले में कोई इख्तियार बाकी हो, और जो नाफरमानी करेगा, अल्लाह और उस के रसूल (स) की तो अलबत्ता वह सरीह गुमराही में जा पड़ा। (36)

और याद करो जब आप (स) उस शख्स [ज़ैद ७ बिन हारिसा] को फरमाते थे जिस पर अल्लाह ने इन्आम किया और आप (स) ने भी उस पर इन्आम किया कि अपनी वीवी [ज़ैनब ७] को अपने पास रोके रख और अल्लाह से डर, और आप (स) छुपाते थे अपने दिल में वह (बात) जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और आप (स) लोगों (के तअन) से डरते थे और अल्लाह ज़ियादा हक़दार है कि तुम उस से डरो, फिर जब ज़ैद ने उस [ज़ैनब] से अपनी हाजत पूरी कर ली तो हम ने उसे आप (स) के निकाह में दे दिया, ताकि मोमिनों पर कोई तंगी न रहे अपने ले पालकों की वीवियों (से निकाह करने में) जब वह उन से अपनी हाजत पूरी कर लें (तलाक़ दे दें) और अल्लाह का हुक्म (पूरा हो कर) रहने वाला है। (37)

नबी पर उस काम में कोई हरज (तंगी) नहीं है जो अल्लाह ने उस के लिए मुकर्रर किया, अल्लाह का (यही) दस्तूर (रहा है) उन में जो पहले गुज़रे हैं और अल्लाह का हुक्म (सहीह) अन्दाज़े से मुकर्रर किया हुआ है। (38)

वह जो अल्लाह के पैग़ामात पहुँचाते हैं और वह उस से डरते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते, और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने वाला। (39)

मुहम्मद (स) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और (सब) नबियों पर मुहर (आख़री नबी) है और अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (40)

ऐ ईमान वाले! तुम अल्लाह को याद करो बक्सरत। (41)

और सुबह और शाम उस की पाकीज़गी बयान करो। (42)

वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उस के फ़रिश्ते (भी) ताकि वह तुम्हें अँधेरों से नूर की तरफ़ निकाल लाए, और अल्लाह मोमिनों पर मेहरबान है। (43)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا						
किसी काम का	अल्लाह और उस का रसूल	फैसला कर दें	जब	और न किसी मोमिन औरत के लिए	किसी मोमिन मर्द के लिए	और नहीं है
أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ						
अल्लाह और उस का रसूल	नाफरमानी करेगा	और जो	उन के काम में	कोई इख्तियार	उन के लिए	कि (बाकी) हो
فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا (36) وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ						
उस पर	अल्लाह ने इन्आम किया	उस शख्स को	और (याद करो) जब आप (स) फरमाते थे	36	सरीह	तो अलबत्ता वह गुमराही में जा पड़ा
وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ						
अपने दिल में	और आप (स) छुपाते थे	और डर अल्लाह से	अपनी वीवी	अपने पास	रोके रख	और आप (स) ने इन्आम किया
مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ فَلَمَّا						
फिर जब	तुम उस से डरो	कि	ज़ियादा हक़दार	और अल्लाह	लोग	और आप (स) डरते थे
قَضَى زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاهَا لَكُمْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ						
मोमिनों	पर	न रहे	ताकि	हम ने उसे तुम्हारे निकाह में दे दिया	अपनी हाजत	उस से ज़ैद पूरी कर ली
حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ						
और है	अपनी हाजत	उन से	पूरी कर चुकें	जब वह	अपने ले पालक	वीवियों में कोई तंगी
أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا (37) مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ						
उस के लिए	मुकर्रर किया अल्लाह ने	उस में जो	कोई हरज	नबी पर	नहीं है	37 हो कर रहने वाला अल्लाह का हुक्म
سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَّقْدُورًا (38)						
38	अन्दाज़े से	मुकर्रर किया हुआ	अल्लाह का हुक्म	और है	पहले	गुज़रे वह जो में अल्लाह का दस्तूर
الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ						
अल्लाह के सिवा	किसी से	वह नहीं डरते	और उस से डरते हैं	अल्लाह के पैग़ामात	पहुँचाते हैं	वह जो
وَكُفِيَ بِاللَّهِ حَسِيبًا (39) مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ						
तुम्हारे मर्दों में से	किसी के	बाप	मुहम्मद (स)	नहीं है	39	हिसाब लेने वाला अल्लाह और काफ़ी है
وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ						
हर शै का	अल्लाह और है	नबियों	और मुहर	अल्लाह के रसूल	और लेकिन	
عَلِيمًا (40) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا (41)						
41	बक्सरत	याद	अल्लाह	याद करो तुम	ईमान वाले	ऐ 40 जानने वाला
وَسَبِّحْهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا (42) هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ						
और उस के फ़रिश्ते	तुम पर	भेजता है	वही जो	42	और शाम	सुबह और पाकीज़गी बयान करो उस की
لِيُخْرِجَكُم مِّن الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا (43)						
43	मेहरबान	मोमिनों पर	और है	नूर की तरफ़	अन्धेरों	से ताकि वह तुम्हें निकाले

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۖ وَاعِدَ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ﴿٤٤﴾							
उन की दुआ	जिस दिन	वह मिलेंगे उस को	सलाम	और तैयार किया उस ने	अजर	बड़ा अच्छा	44
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٤٥﴾ وَدَاعِيَا							
ऐ नबी (स)	बेशक हम ने आप (स) को भेजा	गवाही देने वाला	और खुश खबरी देने वाला	और डर सुनाने वाला	45	और बुलाने वाला	और
إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ﴿٤٦﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ							
अल्लाह की तरफ	उस के हुक्म से	और चिराग	रोशन	46	और खुशखबरी दें	मोमिनों (जमा)	उन के लिए
مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿٤٧﴾ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ أَذُنَهُمْ							
अल्लाह (की तरफ) से	फ़ज़ल	बड़ा	47	और कहा न मानें	काफिर (जमा)	और मुनाफिक (जमा)	उन का ईज़ा देना
وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٤٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا							
और भरोसा करें	अल्लाह पर	और काफी	अल्लाह	कारसाज़	48	ऐ	ईमान वालो
نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ							
तुम निकाह करो	मोमिन औरतों	फिर	तुम उन्हें तलाक दो	पहले	कि	तुम उन्हें हाथ लगाओ	
فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا فَمَعِيَّعُوهُنَّ							
तो नहीं तुम्हारे लिए	उन पर	कोई इद्दत	कि पूरी कराओ तुम उस से	पस तुम उन्हें कुछ मताओ दो			
وَسَرَّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٤٩﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا							
और उन्हें रखसत कर दो	रखसत	अच्छी तरह	49	ऐ नबी (स)!	हम ने हलाल की		
لَكَ أَزْوَاجُكَ الَّتِي آتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ							
तुम्हारे लिए	तुम्हारी वीवियां	वह जो कि	तुम ने दे दिया	उन का मेहर	और जो	मालिक हुआ	तुम्हारा दायां हाथ
مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّتِكَ							
उन से जो	अल्लाह ने हाथ लगा दी	तुम्हारे	और तुम्हारे चचाओं की बेटियां	और तुम्हारी फुफियों की बेटियां			
وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ خَالَتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةً							
और तुम्हारे मामूओं की बेटियां	और तुम्हारी खालाओं की बेटियां	वह जिन्होंने ने	उन्होंने ने हिज्रत की	तुम्हारे साथ	और औरत		
مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ							
मोमिना	अगर	वह बख़्शदे (नज़र कर दे)	अपने आप को	नबी (स) के लिए	अगर	चाहे नबी (स)	कि
يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا							
उसे निकाह में लेले	खास	तुम्हारे लिए	अलावा	मोमिनों	अलबत्ता हमें मालूम है		
مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ							
जो हम ने फ़र्ज़ किया	उन पर	में	उन की औरतों	और जो	मालिक हुए उन के दाहिने हाथ (कनीज़ों)		
لَكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٠﴾							
ताकि न रहे	तुम पर	कोई तंगी	और है	अल्लाह	बख़्शने वाला	मेहरबान	50

उन का इसतिक्वाल जिस दिन वह उस को मिलेंगे “सलाम” से होगा, और उस ने उन के लिए बड़ा अच्छा अजर तैयार किया है। (44) ऐ नबी (स)! बेशक हम ने आप (स) को भेजा है गवाही देने वाला और खुशखबरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (45) और उस के हुक्म से अल्लाह की तरफ बुलाने वाला, और रोशन चिराग। (46) और आप (स) मोमिनों को यह खुशखबरी दें कि उन के लिए अल्लाह की तरफ से बड़ा फ़ज़ल है। (47) और आप (स) कहा न मानें काफ़ि़रों और मुनाफ़ि़कों का, और आप (स) उन के ईज़ा देने का ख़याल न करें और अल्लाह पर भरोसा करें। और काफी है अल्लाह कारसाज़। (48) ऐ ईमान वालो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो, फिर तुम उन्हें उस से पहले तलाक़ दे दो कि तुम उन्हें हाथ लगाओ तो उन पर तुम्हारा (कोई हक़) नहीं कि उन की इद्दत पूरी कराओ, पस उन्हें कुछ सामान दे दो और रखसत कर दो अच्छी तरह रखसत। (49) ऐ नबी (स)! हम ने तुम्हारे लिए हलाल की तुम्हारी वह वीवियां जिन को तुम ने उन का मेहर दे दिया, और तुम्हारी कनीज़ें उन में से जो अल्लाह ने (ग़नीमत में से) तुम्हारे हाथ लगा दी और तुम्हारे चचाओं की बेटियां, और तुम्हारी फुफियों की बेटियां, और तुम्हारे मामूओं की बेटियां, और तुम्हारी खालाओं की बेटियां, वह जिन्होंने ने तुम्हारे साथ हिज्रत की, और वह मोमिन औरत जो अपने आप को नबी (स) की नज़र कर दे, अगर नबी (स) उसे निकाह में लेना चाहे, यह अ़ाम मोमिनों के अ़लावा खास तुम्हारे लिए है, अलबत्ता हमें मालूम है जो हम ने उन की औरतों और कनीज़ों (के बारे) में उन पर फ़र्ज़ किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (50)

आप (स) जिस को चाहें दूर रखें उन में से, और जिसे चाहें अपने पास रखें, और उन में से जिस को आप (स) ने दूर कर दिया था आप (फिर) तलब करें तो कोई तंगी (हरज) नहीं आप (स) पर, यह ज़ियादा करीब है कि (उस से) उन की आँखें ठंडी रहें और वह आजुर्दा न हों, और वह सब की सब उस पर राज़ी रहें जो आप उन्हें दें, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह जानने वाला बुर्दवार है। (51)

हलाल नहीं आप (स) के लिए इस के बाद (और) औरतें, और न यह कि आप (स) उन से और औरतें बदल लें अगरचे आप (स) को अच्छा लगे उन का हुस्न, सिवाए आप (स) की कनीज़, और अल्लाह हर शै पर निगहवान है। (52)

ऐ ईमान वालो! तुम नबी (स) के घरों में दाख़िल न हो, सिवाए इस के कि तुम्हें इजाज़त दी जाए खाने के लिए, उस के पकने की राह न तको, लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो तुम दाख़िल हो, फिर जब तुम खाना खालो तो तुम मुन्तशिर हो जाया करो, और बातों के लिए जी लगा कर न बैठे रहो। वेशक तुम्हारी यह बात नबी (स) को ईज़ा देती है, पस वह तुम से शर्माते हैं, और अल्लाह हक़ बात (फ़रमाने) से नहीं शर्माता, और जब तुम उन (नबी (स) की वीवियों) से कोई शै मांगो तो उन से पर्दे के पीछे से मांगो, यह बात तुम्हारे और उन के दिलों के लिए ज़ियादा पाकीज़गी का ज़रीज़ा है, और तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल (स) को ईज़ा दो, और न यह (जाइज़ है) कि उन के बाद कभी भी उन की वीवियों से तुम निकाह करो, वेशक तुम्हारी यह बात अल्लाह के नज़्दीक बड़ा (गुनाह) है। (53)

अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ तो वेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (54)

تُرْجَىٰ مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمْ وَتُؤَيَّ إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ وَمَنْ ابْتَغَيْتَ							
आप (स) तलब करें	और जिस को	जिसे आप (स) चाहें	अपने पास	और पास रखें	उन में से	जिस को आप (स) चाहें	दूर रखें
مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ							
उन की आँखें	कि ठंडी रहें	यह ज़ियादा करीब है	आप (स) पर	तो कोई तंगी नहीं	दूर कर दिया था आप ने	उन में से जो	
وَلَا يَحْزَنَ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلَّهُنَّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا							
जो जानता है	और अल्लाह	वह सब की सब	उस पर जो आप (स) ने उन्हें दी	और वह राज़ी रहें	और वह आजुर्दा न हों		
فِي قُلُوبِكُمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ﴿٥١﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ							
औरतें	आप के लिए	हलाल नहीं	51	बुर्दवार	जानने वाला	अल्लाह और है	तुम्हारे दिलों में
مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ							
आप (स) को अच्छा लगे	अगरचे	औरतें	से (और)	उन से	यह कि बदल लें	और न	उस के बाद
حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ							
हर शै	पर	अल्लाह और है	जिस का मालिक हो तुम्हारा हाथ (कनीज़)	सिवाए	उन का हुस्न		
رَّقِيبًا ﴿٥٢﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ							
नबी (स)	घर (जमा)	तुम दाख़िल न हो	ईमान वालो	ऐ	52	निगहवान	
إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرِ نَظْرَيْنِ إِنَّهُ وَلَكِنْ إِذَا							
जब	और लेकिन	उस का पकना	न राह तको	खाना	तरफ़ (लिए)	तुम्हारे लिए	इजाज़त दी जाए
دُعَيْتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ							
और न जी लगा कर बैठे रहो	तो तुम मुन्तशिर हो जाया करो	तुम खालो	फिर जब	तो तुम दाख़िल हो	तुम्हें बुलाया जाए		
لِحَدِيثٍ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذَى النَّبِيَّ فَيَسْتَحْي مِنْكُمْ							
तुम से	पस वह शर्माते हैं	नबी (स)	ईज़ा देती है	यह तुम्हारी बात	वेशक	बातों के लिए	
وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْي مِنَ الْحَقِّ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا							
कोई शै	तुम उन से मांगो	और जब	हक़ (बात) से	नहीं शर्माता	और अल्लाह		
فَسَأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ							
और उन के दिल	तुम्हारे दिलों के लिए	ज़ियादा पाकीज़गी	तुम्हारी यह बात	पर्दे के पीछे से	तो उन से मांगो		
وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ							
उस की वीवियों	यह कि तुम निकाह करो	और न	अल्लाह का रसूल (स)	कि तुम ईज़ा दो	तुम्हारे लिए	और (जाइज़) नहीं	
مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ﴿٥٣﴾							
53	बड़ा	अल्लाह के नज़्दीक	है	तुम्हारी यह बात	वेशक	कभी	उन के बाद
إِنْ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٥٤﴾							
54	जानने वाला	हर शै	है	तो वेशक अल्लाह	या उसे छुपाओ	कोई बात	अगर तुम ज़ाहिर करो

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ									
और न अपने भाई		अपने बेटों		और न	अपने बाप	में	औरतों पर	गुनाह नहीं	
وَلَا أَبْنَاءَ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءَ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا									
और न	अपनी औरतें		और न	अपनी बहनों के बेटे		और न	अपने भाइयों के बेटे		और न
مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِينَ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ									
पर	है	वेशक अल्लाह	अल्लाह	और डरती रहो		जिस के मालिक हुए उन के हाथ (कनीज़ें)			
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٥٥﴾ إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا									
ऐ	नबी (स) पर		दरूद भेजते हैं	और उस के फ़रिश्ते		वेशक अल्लाह	55	गवाह (मौजूद)	हर शै
الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ									
जो लोग	वेशक	56	खूब सलाम	और सलाम भेजो		उस पर	दरूद भेजो	ईमान वाले	
يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ									
और तैयार किया उस ने		और आखिरत		दुनिया में		उन पर लानत की अल्लाह ने		अल्लाह और उस का रसूल (स)	ईज़ा देते हैं
لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينًا ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ									
और मोमिन औरतें		मोमिन मर्द (जमा)		ईज़ा देते हैं		और जो लोग	57	रुस्वा करने वाला अज़ाब	उन के लिए
بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدْ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٨﴾									
58	सरीह	और गुनाह	बुहतान	अलबत्ता उन्होंने ने उठाया			कि उन्होंने ने कमाया (किया)		बग़ैर
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ									
डाल लिया करें	मोमिनो		और औरतों को	और बेटियों को	अपनी वीवियों को		फरमा दें	ऐ नबी (स)	
عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۚ									
तो उन्हें न सताया जाए	उन की पहचान हो जाए		कि	क़रीब तर	यह	अपनी चादरें		से	अपने ऊपर
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٩﴾ لِّئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنَافِقُونَ									
मुनाफ़िक (जमा)		वाज़ न आए		अगर	59	मेहरबान	बख़शने वाला	और अल्लाह है	
وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ									
मदीना		में	और झूटी अफ्वाहें उड़ाने वाले		रोग	उन के दिलों में		और वह जो	
لَنُغَرِّبَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِزُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٦٠﴾ مَلْعُونِينَ ۚ									
फिटकारे हुए	60	चन्द दिन	सिवाए	इस (शहर) में	तुम्हारे हमसाया न रहेंगे वह		फिर	उन के	हम ज़रूर तुम्हें पीछे लगा देंगे
أَيْنَمَا تُقِفُوا أُحِذُّوا وَقَتِلُوا قَتِيلًا ﴿٦١﴾ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ									
उन लोगों में जो		अल्लाह का दस्तूर		61	बुरी तरह मारा जाना	और मारे जाएंगे	पकड़े जाएंगे	वह पाए जाएंगे	जहां कहीं
خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٦٢﴾									
62	कोई तबदीली	अल्लाह के दस्तूर में			और तुम हरगिज़ न पाओगे		इन से पहले		गुज़रे

औरतों पर गुनाह नहीं (पर्दा न करने में) अपने बाप, और न अपने बेटों, और न अपने भाइयों, और न अपने बहनों के बेटों, और न अपनी औरतों से, और न अपनी कनीज़ों से, (ऐ औरतो) तुम अल्लाह से डरती रहो, वेशक अल्लाह हर शै पर गवाह (मौजूद) है। (55) वेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते नबी (स) पर दरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी उस पर दरूद भेजो और खूब सलाम भेजो। (56) वेशक जो लोग अल्लाह को और उस के रसूल (स) को ईज़ा देते हैं अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की (अपनी रहमत से महरूम कर दिया) और उनके लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब तैयार किया। (57) और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ईज़ा देते हैं, बग़ैर उस के कि उन्होंने ने कुछ किया हो तो अलबत्ता उन्होंने ने उठाया (अपने सर लिया) बुहतान और सरीह गुनाह। (58) ऐ नबी (स)! आप (स) अपनी वीवियों और अपनी बेटियों को, और मोमिनो की औरतों को फरमा दें कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें (घूँघट निकाल लिया करें) यह (उस से) क़रीब तर है कि उन की पहचान हो जाए, तो उन्हें न सताया जाए, और अल्लाह बख़शने वाला, निहायत मेहरबान है। (59) अगर वाज़ न आए मुनाफ़िक और वह लोग जिन के दिलों में रोग है, और मदीने में झूटी अफ़वाहें उड़ाने वाले, तो हम ज़रूर तुम्हें उन के पीछे लगा देंगे, फिर वह इस शहर (मदीना) में चन्द दिन के सिवा तुम्हारे हमसाया (पास) न रहेंगे। (60) फिटकारे हुए, वह जहाँ कहीं पाए जाएंगे पकड़े जाएंगे, और बुरी तरह मारे जाएंगे। (61) अल्लाह का (यही) दस्तूर रहा है, उन लोगों में जो गुज़रे हैं इन से पहले, और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे। (62)

आप (स) से लोग क़ियामत के बारे में सवाल करते हैं। आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि उस का इल्म अल्लाह के पास है, और तुम्हें क्या ख़बर! शायद क़ियामत करीब (ही) हो। (63)

वेशक अल्लाह ने काफ़िरों पर लानत की, और उन के लिए (जहन्नम की) भड़कती हुई आग तैयार की है। (64) वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, वह न कोई दोस्त पाएंगे, और न मददगार। (65)

जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट पुलट किए जाएंगे, वह कहेंगे ऐ काश! हम ने इताअत की होती अल्लाह की, और इताअत की होती रसूल (स) की। (66)

और वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! वेशक हम ने इताअत की अपने सरदारों की और अपने बड़ों की, तो उन्होंने ने हमें रास्ते से भटकाया। (67)

ऐ हमारे रब! उन्हें दुगना अज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर। (68)

ऐ ईमान वालो! उन लोगों की तरह न होना जिन्होंने ने मूसा (अ) को (इल्ज़ाम लगा कर) सताया तो बरी कर दिया उस को अल्लाह ने उस से जो उन्होंने ने कहा (इल्ज़ाम लगाया), और वह (मूसा अ) अल्लाह के नज़्दीक बाआबरू थे। (69)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सधी बात कहो। (70)

वह तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल संवार देगा, और तुम्हारे गुनाह व़ख़श देगा, और जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत की तो वह बड़ी मुराद को पहुँचा। (71)

वेशक हम ने अपनी अमानत (ज़िम्मेदारी को) पेश किया आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर, तो उन्होंने ने उस के उठाने से इन्कार किया, और वह उस से डर गए, और इन्सान ने उसे उठा लिया, वेशक वह ज़ालिम, बड़ा नादान था। (72)

ताकि अल्लाह अज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को, और मुशर्रिक मर्दों और मुशर्रिक औरतों को, और अल्लाह तौबा कुबूल करे मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों की, वेशक अल्लाह व़ख़शने वाला मेहरबान है। (73)

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا								
और क्या	अल्लाह के पास	उस का इल्म	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें	क़ियामत	से (मुतअख़िक्)	लोग	आप से सवाल करते हैं
يُذَرِّبُكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۖ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ								
काफ़िरों पर	लानत की	वेशक अल्लाह	63	करीब	हो	क़ियामत	शायद	तुम्हें ख़बर
وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۖ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَا يَجْدُونَ وَلِيًّا وَلَا								
और न	कोई दोस्त	वह न पाएंगे	हमेशा	उस में	हमाशा रहेंगे	64	भड़कती हुई आग	उन के लिए और तैयार किया उस ने
نَصِيرًا ۖ يَوْمَ ثُفِّلَتْ أُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَلَيْتَنَّا أَطَعْنَا								
हम ने इताअत की होती	ऐ काश हम	वह कहेंगे	आग में	उन के चेहरे	उलट पुलट किए जाएंगे	जिस दिन	65	कोई मददगार
اللَّهِ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ۖ وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا								
और अपने बड़ों	अपने सरदार	हम ने इताअत की	वेशक हम	ऐ हमारे रब	और वह कहेंगे	66	और इताअत की होती रसूल	अल्लाह
فَاضْلَلُونَا السَّبِيلَ ۖ رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنَهُمُ								
और लानत कर उन पर	अज़ाब	दुगना	दे उन्हें	ऐ हमारे रब	67	रास्ता	तो उन्होंने ने भटकाया हमें	
لَعْنَا كَبِيرًا ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا								
उन्होंने ने सताया	उन लोगों की तरह	तुम न होना	ईमान वालो	ऐ	68	बड़ी	लानत	
مُوسَىٰ فَبَرَّاهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ۖ								
69	बाआबरू	अल्लाह के नज़्दीक	और वह थे	उन्होंने ने कहा	उस से जो	अल्लाह	तो बरी कर दिया उस को	मूसा (अ)
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۖ يُصْلِحْ								
वह संवार देगा	70	सीधी	बात	और कहो	अल्लाह से डरो	ईमान वालो	ऐ	
لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۖ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ								
और उस का रसूल	अल्लाह की इताअत की	और जो-जिस	तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह	और व़ख़श देगा	तुम्हारे अमल (जमा)	तुम्हारे लिए		
فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۖ إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ								
आस्मान (जमा)	पर	अमानत	हम ने पेश किया	वेशक हम	71	बड़ी मुराद	तो वह मुराद को पहुँचा	
وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا								
उस से	और वह डर गए	कि वह उसे उठाएं	तो उन्होंने ने इन्कार किया	और पहाड़	और ज़मीन			
وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ۖ لِّيُعَذِّبَ اللَّهُ								
ताकि अल्लाह अज़ाब दे	72	बड़ा नादान	ज़ालिम	था	वेशक वह	इन्सान ने	और उसे उठा लिया	
الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبُ								
और तौबा कुबूल करे	और मुशर्रिक औरतों	और मुशर्रिक मर्दों	और मुनाफ़िक़ औरतों	मुनाफ़िक़ मर्दों				
اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۖ								
73	मेहरबान	व़ख़शने वाला	अल्लाह और हे	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	पर-की	अल्लाह	

٦ زُكُوعَاتُهَا ﴿٣٤﴾ سُورَةُ سَبَا ﴿٣٤﴾ آيَاتُهَا ٥٤							
रुकुआत 6		(34) सूरतुस सबा			आयात 54		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ							
और उसी के लिए	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	वह जिस के लिए	तमाम तारीफें अल्लाह के लिए	
الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿١﴾ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ							
जो दाखिल होता है	वह जानता है	1	खबर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वह	आखिरत में	हर तारीफ
فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ							
चढ़ता है	और जो	आस्मान से	नाज़िल होता है	और जो	उस से	निकलता है	ज़मनि में
فِيهَا وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ﴿٢﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا							
हम पर नहीं आएगी	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा (कहते हैं)	2	बख़्शने वाला	मेहरवान	और वह	उस में
السَّاعَةَ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عِلْمُ الْغَيْبِ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ							
उस से	पोशीदा नहीं	ग़ैब	जानने वाला	अलबत्ता तुम पर ज़रूर आएगी	कसम मेरे रब की	हाँ	फरमा दें क़ियामत
مَثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمُوتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ							
उस से	छोटा	और न	ज़मीन में	और न	आस्मानों में	एक ज़र्रे के बराबर	
وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٣﴾ لَيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا							
और उन्होंने ने अमल किए	उन लोगों को जो ईमान लाए	ताकि जज़ा दे	3	रोशन किताब	में	मगर	और न बड़ा
الصَّالِحِ أُولَئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٤﴾ وَالَّذِينَ							
और वह लोग जो	4	और इज़्ज़त की रोज़ी	बख़्शिश	उन के लिए	यही लोग	नेक	
سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجْزٍ أَلِيمٍ ﴿٥﴾							
5	सख़्त दर्दनाक	से	अज़ाब	उन के लिए	यही लोग	हराने के लिए	उन्होंने ने कोशिश की हमारी आयतों में
وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ							
तुम्हारे रब की तरफ से	तुम्हारी तरफ	नाज़िल किया गया	वह जो कि	इल्म	दिया गया	वह लोग जिन्हें	और वह देखते हैं
هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿٦﴾							
6	सज़ावारे तारीफ	ग़ालिब	रास्ता	तरफ	और वह रहनुमाई करता है	वह हक़	
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَى رَجُلٍ يُنْبِئُكُمْ							
वह ख़बर देता है तुम्हें	ऐसा आदमी	पर	हम बतलाएँ तुम्हें	क्या	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा (कहते हैं)	
إِذَا مُرِّقْتُمْ كُلَّ مُمَرِّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿٧﴾							
7	ज़िन्दगी नई	अलबत्ता में	बेशक तुम	पूरी तरह रेज़ा रेज़ा	तुम रेज़ा रेज़ा हो जाओगे	जब	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए

हैं, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है, और उसी के लिए हर तारीफ़ है आखिरत में, और वह हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (1)

वह जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होता है (मसलन पानी) और जो उस से निकलता है, और जो आस्मान से नाज़िल होता है, और जो उस में चढ़ता है, और वह मेहरवान है बख़्शने वाला। (2)

और कहते हैं काफ़िर कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी, आप (स) फ़रमा दें हाँ! मेरे रब की क़सम! अलबत्ता वह तुम पर ज़रूर आएगी, और वह ग़ैब का जानने वाला है। उस से एक ज़र्रे के बराबर भी पोशीदा नहीं आस्मानों में और न ज़मीन में, और न छोटा उस से और न बड़ा मगर (सब कुछ) रोशन किताब में है। (3)

ताकि वह उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्होंने ने अमल किए नेक, यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (4)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों में कोशिश की हराने के लिए, उन ही लोगों के लिए सख़्त दर्दनाक अज़ाब है। (5)

और जिन्हें इल्म दिया गया वह देखते (जानते) हैं कि जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल किया गया है वह हक़ है, और (अल्लाह) ग़ालिब, सज़ावारे तारीफ़ के रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है। (6)

और काफ़िर कहते हैं क्या हम तुम्हें बताएँ ऐसा आदमी जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम पूरी तरह रेज़ा रेज़ा हो जाओगे, तो बेशक तुम नई ज़िन्दगी में (आओगे)। (7)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है, और उसी के लिए हर तारीफ़ है आखिरत में, और वह हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (1) वह जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होता है (मसलन पानी) और जो उस से निकलता है, और जो आस्मान से नाज़िल होता है, और जो उस में चढ़ता है, और वह मेहरवान है बख़्शने वाला। (2) और कहते हैं काफ़िर कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी, आप (स) फ़रमा दें हौं! मेरे रब की क़सम! अलबत्ता वह तुम पर ज़रूर आएगी, और वह ग़ैब का जानने वाला है। उस से एक ज़र्रे के बराबर भी पोशीदा नहीं आस्मानों में और न ज़मीन में, और न छोटा उस से और न बड़ा मगर (सब कुछ) रोशन किताब में है। (3) ताकि वह उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्होंने ने अमल किए नेक, यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (4) और जिन लोगों ने हमारी आयतों में कोशिश की हराने के लिए, उन ही लोगों के लिए सख़्त दर्दनाक अज़ाब है। (5) और जिन्हें इल्म दिया गया वह देखते (जानते) हैं कि जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल किया गया है वह हक़ है, और (अल्लाह) ग़ालिब, सज़ावारे तारीफ़ के रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है। (6) और काफ़िर कहते हैं क्या हम तुम्हें बताएँ ऐसा आदमी जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम पूरी तरह रेज़ा रेज़ा हो जाओगे, तो बेशक तुम नई ज़िन्दगी में (आओगे)। (7)

उस ने अल्लाह पर झूट बान्धा है या उसे जुनून (है), (नहीं) बल्कि जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, वह अज़ाब और दूर की (शदीद) गुमराही में है। (8)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा? उस की तरफ़ जो उन के आगे और जो उन के पीछे है, यानी आस्मान और ज़मीन, अगर हम चाहें तो हम उन्हें ज़मीन में धंसा दें या उन पर आस्मान का टुकड़ा गिरा दें, वेशक उस में निशानी है हर रज़ूअ करने वाले बन्दे के लिए। (9)

और तहकीक़ हम ने दाऊद (अ) को अपनी तरफ़ से फ़ज़ल अता किया। ऐ पहाड़ो! उस के साथ तस्वीह करो और परिन्दो (तुम भी)। और हम ने उस के लिए लोहे को नर्म कर दिया। (10)

कि चौड़े ज़िरहें बनाओ, और कड़ियों को जोड़ने में अन्दाज़ा रखो, और अच्छे अमल करो, तुम जो कुछ करते हो वेशक मैं उस को देख रहा हूँ। (11)

और सुलेमान (अ) के लिए हवा (को मुसख़्ख़र) किया और उस की सुबह की मन्ज़िल एक माह (की राह होती) और शाम की मन्ज़िल एक माह (की राह) और हम ने उस के लिए तांबे का चश्मा बहाया, और जिन्नात में से (वाज़) उसके सामने काम करते थे उस के रब के हुक्म से। और उन में से जो हमारे हुक्म से कज़ी करेगा हम उसे दोज़ख़ के अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (12)

वह (जिन्नात) बनाते उस के लिए जो वह (सुलेमान अ) चाहते, क़िल्ए, और तस्वीरें, और हौज़ जैसे लगन, एक जगह जमी हुई देंगे, ऐ ख़ानदाने दाऊद (अ)! तुम शुक्र बजा ला कर अमल करो, और मेरे बन्दों में शुक्रगुज़ार थोड़े है। (13)

फिर जब हम ने उस की मौत का हुक्म जारी किया, उन्हें (जिन्नों को) उस की मौत का पता न दिया मगर घुन की तरह कीड़े (दीमक) ने, वह उस का असा खाता था, फिर जब वह गिर पड़ा तो जिन्नों पर हकीक़त खुली कि अगर वह ग़ैब जानते होते तो वह न रहते ज़िल्लत के अज़ाब में। (14)

أَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ									
ईमान नहीं रखते		वह लोग जो	बल्कि	जुनून	उसे	या	झूट	अल्लाह पर	उस ने बान्धा
بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ﴿٨﴾ أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا									
जो	तरफ़	क्या उन्होंने ने नहीं देखा?	8	दूर	और गुमराही	अज़ाब में		आखिरत पर	
بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ نَسْأَ									
अगर हम चाहें		और ज़मीन	आस्मान से		उन के पीछे	और जो	उन के आगे		
نَخْسِفُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطُ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ إِنَّ									
वेशक	आस्मान से		टुकड़ा	उन पर	या गिरा दें		ज़मीन	उन्हें धंसा दें हम	
فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا فَضْلًا									
फज़ल	अपनी तरफ़ से	दाऊद (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दिया	9	रज़ूअ करने वाला	बन्दा	लिए-हर	अलबत्ता निशानी	इस में
يُجِبَالٍ أَوْبَىٰ مَعَهُ وَالطَّيْرِ وَآلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ﴿١٠﴾ إِنِ اعْمَلْ									
बनाओ	कि	10	लोहा	उस के लिए	और हम ने नर्म कर दिया	और परिन्दो	उस के साथ	तस्वीह करो	ऐ पहाड़ो
سَبِغْتَ وَقَلَدَّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ									
तुम जो कुछ करते हो उस को	वेशक	अच्छे	और अमल करो		(कड़ियों के) जोड़ने में	और अन्दाज़ा रखो	कुशादह ज़िरहें		
بَصِيرٌ ﴿١١﴾ وَلَسَلِيمَنَ الرِّيحِ غَدُوَهَا شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ									
एक माह	और शाम की मन्ज़िल	एक माह	उस की सुबह की मन्ज़िल	हवा	और सुलेमान (अ) के लिए		11	देख रहा हूँ	
وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ الْقِطْرِ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ									
इज़्न (हुक्म) से	उस के सामने		वह काम करते		जिन्न	और से	तांबे का चश्मा	और हम ने बहाया उस के लिए	
رَبِّهِ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿١٢﴾									
12	आग (दोज़ख़)	अज़ाब	से-का	हम उस को चखाएंगे	हमारे हुक्म से	उन में से	कज़ी करेगा	और जो	उस के रब के
يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَّحَارِبٍ وَتَمَائِيلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ									
हौज़ जैसे	और लगन		और तस्वीरें	बड़ी इमारतें (क़िल्ए)	से	जो वह चाहते	उस के लिए	वह बनाते	
وَقُدُورٍ رُّسَيْتٍ اِعْمَلُوا آلَ دَاوُدَ شُكْرًا وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِي									
मेरे बन्दे	से	और थोड़े	शुक्र बजा ला कर	ऐ खानदाने दाऊद	तुम अमल करो	एक जगह जमी हुई	और देंगे		
الشُّكُورُ ﴿١٣﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ									
उस की मौत का		उन्हें पता न दिया		मौत	उस पर	हुक्म जारी किया	फिर जब हम ने	13	शुक्र गुज़ार
إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَاتَهُ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنَّ									
जिन्न	हकीक़त खुली	वह गिर पड़ा	फिर जब	उस का असा	वह खाता था	घुन का कीड़ा		मगर	
أَنْ لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿١٤﴾									
14	ज़िल्लत	अज़ाब	में	वह न रहते	ग़ैब	वह जानते होते		अगर	

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكِنِهِمْ آيَةٌ جَنَّتِ عَنْ يَمِينٍ وَشَمَالٍ							
और बाएं	दाएं से	दो बाग	एक निशानी	उन की आबादी	में	(कौम) सबा के लिए	अलबत्ता थी
كُلُوا مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ بَلَدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبِّ							
और रब	पाकीज़ा	शहर	उस का	और शुक्र अदा करो	अपने रब का रिज़्क	से	तुम खाओ
غَفُورٌ ۝۱۵ فَاَعْرَضُوا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُمْ							
और हम ने उन्हें बदल दिए	सैलाव बन्द से (रुका हुआ)	उन पर	तो हम ने भेजा	फिर उन्होंने ने मुँह मोड़ लिया	15	बदलाने वाला	
بِحَنَّتِهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَى أُكُلٍ خَمْطٍ وَأَثْلٍ وَشَيْءٍ مِّن سِدْرٍ							
बेरियां	और कुछ	और झाड़	बदमज़ा	मेवा	वाले	दो बाग	उन के दो बागों के बदले
قَلِيلٌ ۝۱۶ ذَلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِمَا كَفَرُوا وَهَلْ نُجْزِي إِلَّا الْكَافِرَ ۝۱۷							
17	नाशुक्रा	मगर - सिर्फ	हम सज़ा देते	और नहीं	उन्होंने ने नाशुक्रा की	उस के सबब जो	हम ने उन को सज़ा दी
16	थोड़ी	यह	हम ने उन को सज़ा दी	उस के सबब जो	हम ने उन को सज़ा दी	यह	16
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُم وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا قُرًى ظَاهِرَةً							
एक दूसरे से मुत्तसिल	बस्तियां	उस में	हम ने बरकत दी	वह जिन्हें	बस्तियां	और दरमियान	और हम ने (आबाद) कर दिए
وَقَدَرْنَا فِيهَا السَّيْرُ سِيرُوا فِيهَا لَيَالٍ وَأَيَّامًا آمِنِينَ ۝۱۸							
18	अमन से (बेखौफ़ ओ ख़तर)	और दिन (जमा)	रातों	उन में	तुम चलो (फिरो)	उन में आमद ओ रफ़्त	और हम ने मुक़र्रर कर दिया
فَقَالُوا رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ							
तो हम ने बना दिया उन्हें	अपनी जानों पर	और उन्होंने ने जुल्म किया	हमारे सफ़रों के दरमियान	दूरी पैदा कर दे	ऐ हमारे रब	वह कहने लगे	
أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَرِّقٍ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ							
निशानियां	उस में	बेशक	पूरी तरह परागन्दा	और हम ने उन्हें परागन्दा कर दिया		अफ़साने	
لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝۱۹ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ							
पस उन्होंने ने उस की पैरवी की	अपना गुमान	इब्लीस	उन पर	सच कर दिखाया	और अलबत्ता	19	शुक्र गुज़ार
إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝۲۰ وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِّن سُلْطٰنٍ							
कोई ग़ल्वा	उन पर	उसे (इब्लीस को)	और न था	20	मोमिनीन	से - का	एक गिरोह
إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يُّؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ							
शक में	उस से	वह	उस से जो	आख़िरत पर	जो ईमान रखता है	ताकि हम मालूम कर लें	मगर
وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ۝۲۱ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ							
गुमान करते हो	उन को जिन्हें	पुकारो	फ़रमा दें	21	निगहवान	हर शौ	और तेरा रब
مِّن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا							
और न	आस्मानों में	एक ज़र्रे के बराबर	वह मालिक नहीं है	अल्लाह के सिवा			
فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شَرِكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِّن ظَهِيرٍ ۝۲۲							
22	कोई मददगार	उन में से	और नहीं उस (अल्लाह) का	उन (आस्मान और ज़मीन) में कोई साझा	उन का	और नहीं	ज़मीन में

अलबत्ता कौमे सबा के लिए उन की आबादी में निशानी थी, दो बाग दाएं और बाएं, (हम ने कह दिया कि) तुम अपने परवरदिगार के रिज़्क से खाओ और उस का शुक्र अदा करो, शहर है पाकीज़ा और परवरदिगार है वद़्शने वाला। (15) फिर उन्होंने ने मुँह मोड़ लिया तो हम ने उन पर (बन्द तोड़ कर) जोर का सैलाव भेजा और उन दो बागों के बदले (दूसरे) दो बाग दिए वदमज़ा मेवा वाले और कुछ झाड़, और थोड़ी सी बेरियाँ। (16) यह हम ने उन्हें सज़ा दी इस लिए कि उन्होंने ने नाशुक्रा की और हम सिर्फ़ नाशुक्रा को सज़ा देते हैं। (17) और हम ने आबाद कर दी उन के दरमियान और (शाम) की उन बस्तियों के दरमियान जिन्हें हम ने बरकत दी है, एक दूसरे से लगी बस्तियां, और हम ने उन में सफ़र के पड़ाव मुक़र्रर कर दी, तुम उन में चलो फिरो, रात और दिन बेखौफ़ ओ ख़तर। (18) वह कहने लगे ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे सफ़रों के दरमियान दूरी पैदा कर दे, और उन्होंने ने अपनी जानों पर जुल्म किया तो हम ने उन्हें बना दिया अफ़साने, और हम ने उन्हें पूरी पूरी तरह परागन्दा कर दिया, बेशक उस में हर बड़े सबर करने वाले शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं। (19) और अलबत्ता इब्लीस ने उन पर अपना गुमान सच कर दिखाया, पस उन्होंने ने उस की पैरवी की सिवाए एक गिरोह मोमिनीन के। (20) और इब्लीस को उन पर कोई ग़ल्वा न था मगर (हम चाहते थे कि) मालूम कर लें जो आख़िरत पर ईमान रखता है उस से (जुदा कर के) जो उस (के बारे में) शक में है, और तेरा रब हर शौ पर निगहवान है। (21) आप (स) फ़रमा दें, उन्हें पुकारो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (माबूद) गुमान करते हो, वह (तो) एक ज़र्रा बराबर चीज़ के भी मालिक नहीं (इख़्तियार नहीं रखते) आस्मानों में और न ज़मीन में और न उन (आस्मान और ज़मीन) में उन का कोई साझा है और न उन में से कोई (अल्लाह का) मददगार है। (22)

और शफ़ाअत (सिफ़ारिश) नफ़ा नहीं देती उस के पास सिवाए उस के जिसे वह इजाज़त देदे, यहां तक कि जब उन के दिलों से (घबराहट) दूर कर दी जाती है तो कहते हैं क्या कहा है तुम्हारे रब ने, वह (सिफ़ारिशी) कहते हैं कि हक् (फ़रमाया है), और वह बुलन्द मरतबा वुजुर्ग क़द्र है। (23)

आप (स) फ़रमा दें कौन तुम्हें रोज़ी देता है आस्मानों से और ज़मीन से, फ़रमा दें “अल्लाह”। वेशक हम या तुम (दोनों में से एक) अलबत्ता हिदायत पर है या खुली गुमराही में है। (24)

आप (स) फ़रमा दें (अगर हम मुज़्रिम हैं तो) तुम से उस गुनाह की वावत न पूछा जाएगा जो हम ने किया और न हम से उस वावत पूछा जाएगा जो तुम करते हो। (25)

फ़रमा दें हम सब को जमा करेगा हमारा रब, फिर हमारे दरमियान ठीक ठीक फ़ैसला करेगा, और वह फ़ैसला करने वाला, जानने वाला है। (26)

आप (स) फ़रमा दें मुझे दिखाओ जिन्हें तुम ने साथ मिलाया है उस के साथ शरीक (ठहरा कर), हरगिज़ नहीं बल्कि अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (27)

और हम ने आप (स) को भेजा है तमाम नुए-इन्सानी के लिए खुशख़बरी देने वाला, और डर सुनाने वाला, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (28)

और वह कहते हैं यह वादाए क़ियामत कब (आएगा) अगर तुम सच्चे हो। (29)

आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए वादे का एक दिन (तय) है, उस से न तुम एक घड़ी पीछे हट सकते हो, और न तुम आगे बढ़ सकते हो। (30)

और काफ़िर कहते हैं: हम हरगिज़ इस कुरआन पर ईमान न लाएंगे, और न उन (किताबों) पर जो इस से पहले थीं, और काश! तुम दखो, जब यह ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे, रद करेगा उन में से एक दूसरे की बात, कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान लाने वाले होते। (31)

और बड़े लोग कमज़ोर लोगों से कहेंगे, क्या हम ने तुम्हें हिदायत से रोका? जब कि वह तुम्हारे पास आई (नहीं), बल्कि तुम (खुद) मुज़्रिम थे। (32)

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ								
दूर कर दी जाती है	जब	यहां तक	उस को	जिसे वह इजाज़त दे	सिवाए	उस के पास	शफ़ाअत	और नफ़ा नहीं देती
عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقُّ وَهُوَ الْعَلِيُّ								
बुलन्द मरतबा	और वह	हक्	वह कहते हैं	तुम्हारे रब ने	फ़रमाया	क्या	कहते हैं	उन के दिलों से
الْكَبِيرُ (٢٣) قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَوتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ								
फ़रमा दें अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों से	तुम को रिज़्क देता है	कौन	फ़रमा दें	23	बुजुर्ग क़द्र	
وَأَنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (٢٤) قُلْ لَا تَسْأَلُونَ								
तुम से न पूछा जाएगा	फ़रमा दें	24	खुली	गुमराही में	या	अलबत्ता हिदायत पर	तुम ही	या और वेशक हम
عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ (٢٥) قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبَّنَا ثُمَّ								
फिर	हमारा रब	हम सब को	वह जमा करेगा	फ़रमा दें आप (स)	25	जो तुम करते हो	उसकी वावत	और न हम से पूछा जाएगा जो हम ने गुनाह किया
يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ (٢٦) قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ أَلْحَقْتُمُ								
तुम ने साथ मिला दिया है	वह जिन्हें	मुझे दिखाओ	फ़रमा दें	26	जानने वाला	फ़ैसला करने वाला	और वह ठीक ठीक	हमारे दरमियान फ़ैसला करेगा
بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (٢٧) وَمَا أَرْسَلْنَاكَ								
आप (स) को हम ने भेजा	और नहीं	27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	वह अल्लाह	बल्कि	हरगिज़ नहीं	शरीक उस के साथ
إِلَّا كَافَّةً لِلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (٢٨)								
28	नहीं जानते	अक्सर लोग	और लेकिन	और डर सुनाने वाला	खुशख़बरी देने वाला	मगर तमाम लोगों (नुए-इन्सानी) के लिए		
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ (٢٩) قُلْ لَّكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ								
एक दिन	वादा	तुम्हारे लिए	फ़रमा दें	29	सच्चे	तुम हो	अगर यह वादा (क़ियामत)	कब और वह कहते हैं
لَّا تَسْتَخِرُونَهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ (٣٠) وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا								
जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहते हैं	30	तुम आगे बढ़ सकते हो	और न	एक घड़ी	उस से	न तुम पीछे हट सकते हो	
لَنْ نُؤْمِنَ بِهَذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَىٰ								
और काश तुम देखो	इस से पहले	उस पर जो	और न	इस कुरआन पर	हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे			
إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْفُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ								
दूसरे	तरफ़	उन में से एक	लौटाएगा (रद करेगा)	अपने रब के सामने	खड़े किए जाएंगे	ज़ालिम (जमा)	जब	
إِلْقَاؤِ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنْتُمْ								
अगर न तुम होते	तकबुर करते थे (बड़े लोग)	उन लोगों को जो	जो कमज़ोर किए गए	कहेंगे	बात			
لَكِنَّا مُؤْمِنِينَ (٣١) قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ								
क्या हम	उन से जो कमज़ोर किए गए	जो लोग तकबुर करते थे (बड़े लोग)	कहेंगे	31	ईमान लाने वाले	ज़रूर हम होते		
صَدَدْنَكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِينَ (٣٢)								
32	मुज़्रिम (जमा)	तुम थे	बल्कि	जब आ गई तुम्हारे पास	उस के वाद	हिदायत	से	हम ने रोका तुम्हें

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ الْإِيلِ وَالنَّهَارِ						
रात और दिन	चाल	बल्कि	उन लोगों से जो तकबुर करते थे (बड़े)	कमज़ोर किए गए	वह लोग जो	और कहेंगे
إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَنْدَادًا وَأَسْرُوا						
और वह छुपाएंगे	शरीक (जमा)	उस के लिए	और हम ठहराएं	अल्लाह का	कि हम इन्कार करें	जब तुम हुक्म देते थे हमें
النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ						
गर्दन में	तौक	और हम डालेंगे	अज़ाब	जब वह देखेंगे	शर्मिन्दगी	
الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ						
किसी बस्ती में	और हम ने नहीं भेजा	33	वह करते थे	जो मगर	वह सज़ा न दिए जाएंगे	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)
مِّنْ تَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٤﴾						
34	मुन्किर है	उस के	तुम जो दे कर भेजे गए हो	वेशक हम	उस के खुशहाल लोग	कहा मगर कोई डराने वाला
وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ﴿٣٥﴾						
35	अज़ाब दिए जाने वाले	हम	और नहीं	और औलाद में	माल में	ज़ियादा हम और उन्होंने ने कहा
قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ						
अक्सर लोग	और लेकिन	और तंग कर देता है	जिस के लिए वह चाहता है	रिज़्क	वसीअ़ फ़रमाता है	मेरा रब वेशक फ़रमा दें
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾ وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرَّبُكُمْ						
तुम्हें नज़्दीक करदे	वह जो कि	तुम्हारी औलाद	और न	तुम्हारे माल	और नहीं	36 नहीं जानते
عِنْدَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَن آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ						
उन के लिए	यही लोग	और उस ने अच्छे अमल किए	ईमान लाया	जो मगर	दर्जा	हमारे नज़्दीक
جَزَاءُ الضَّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ﴿٣٧﴾						
37	अमन से होंगे	बालाखानों में	और वह	उस के बदले जो उन्होंने ने किया	दुगनी	जज़ा
وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ						
अज़ाब में	यही लोग	अज़िज़ करने (हराने) वाले	हमारी आयतों में	कोशिश करते हैं	और जो लोग	
مُحْضَرُونَ ﴿٣٨﴾ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ						
जिस के लिए वह चाहता है	रिज़्क	वसीअ़ फ़रमाता है	मेरा रब वेशक	फ़रमा दें	38	हाज़िर किए जाएंगे
مِّنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ						
तो वह	कोई शै	तुम खर्च करोगे	और जो	उस के लिए	और तंग कर देता है	अपने बन्दों में से
يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٣٩﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا						
सब	वह जमा करेगा उन को	और जिस दिन	39	रिज़्क देने वाला	बेहतरीन	और वह उस का इवज़ देगा
ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهْلُآءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٤٠﴾						
40	परस्तिश करते थे	तुम्हारी ही	क्या यह लोग	फ़रिश्तों को	फिर फ़रमाएगा	

और कहेंगे कमज़ोर लोग बड़ों को: (नहीं) बल्कि (हमें) रोक रखा था तुम्हारी) दिन रात की चालों ने, जब तुम हमें हुक्म देते थे कि हम अल्लाह का इन्कार करें और हम उस के लिए शरीक ठहराएं, और जब वह अज़ाब देखेंगे तो शर्मिन्दगी छुपाएंगे, और हम तौक डालेंगे काफ़िरों की गर्दन में, और वह (उसी की) सज़ा पाएंगे जो वह करते थे। (33)

और हम ने नहीं भेजा किसी बस्ती में कोई डराने वाला मगर उस के खुशहाल लोगों ने कहा: जो (हिदायत) दे कर तुम भेजे गए हो, हम उस के मुन्किर हैं। (34)

और उन्होंने ने कहा कि हम माल और औलाद में ज़ियादा (बढ़ कर) हैं, और हम अज़ाब दिए जाने वाले नहीं (हमें अज़ाब न होगा)। (35)

आप (स) फ़रमा दें वेशक मेरा रब जिस के लिए चाहता है रिज़्क वसीअ़ फ़रमाता है (और जिस के लिए चाहे) वह तंग कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (36)

और नहीं तुम्हारे माल और औलाद (ऐसे कि) जो तुम्हें दर्जा में हमारे नज़्दीक कर दें, मगर जो ईमान लाया और उस ने अच्छे अमल किए तो उन ही लोगों के लिए दुगनी जज़ा है उस के बदले जो उन्होंने ने किया, और वह बालाखानों में अमन से होंगे। (37)

और जो लोग हमारी आयतों को हराने की कोशिश करते हैं, यही लोग अज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे। (38)

आप (स) फ़रमा दें मेरा रब अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रिज़्क वसीअ़ फ़रमाता है (और जिस के लिए चाहे) तंग कर देता है, और कोई शै तुम खर्च करोगे तो वह तुम को उस का इवज़ देगा, और वह बेहतरीन रिज़्क देने वाला है। (39)

और जिस दिन वह जमा करेगा, उन सब को, फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा, क्या यह लोग तुम्हारी ही परस्तिश करते थे? (40)

वह कहेंगे, तू पाक है, तू हमारा कारसाज़ है न कि वह, बल्कि वह जिन्नों की परस्तिश करते थे, उन में से अक्सर उन पर एतिकाद रखते थे। (41)

सो आज तुम में से कोई एक दूसरे के न नफ़ा का इख्तियार रखता है और न नुक्सान का, और हम उन लोगों को कहेंगे जिन्होंने ने जुल्म (शिक) किया: तुम जहन्नम के अज़ाब (का मज़ा) चखो जिस को तुम झुटलाते थे। (42)

और जब उन पर पढ़ी जाती है हमारी वाज़ेह आयात तो वह कहते हैं: यह तो सिर्फ़ (तुम जैसा) आदमी है, चाहता है कि तुम्हें उन से रोके जिन की परस्तिश तुम्हारे बाप दादा करते थे, और वह कहते हैं यह (कुरआन) नहीं है मगर घड़ा हुआ झूट, और काफ़िरों ने हक़ के बारे में कहा जब वह उन के पास आया कि यह नहीं मगर खुला जादू। (43)

और हम ने उन्हें (मुश्रिकीने अरब को) किताबें नहीं दी कि वह उन्हें पढ़ते हों और न आप (स) से पहले उन की तरफ़ कोई डराने वाला भेजा। (44)

और जो उन से पहले थे उन्होंने ने झुटलाया, और यह (मुश्रिकीने अरब) उस के दसवें हिस्से को (भी) न पहुँचे जो हम ने उन्हें दिया था, सो उन्होंने ने मेरे रसूलों को झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब। (45)

फ़रमा दें: मैं तुम्हें सिर्फ़ नसीहत करता हूँ एक बात की कि तुम अल्लाह के वास्ते खड़े हो जाओ दो, दो और अकेले अकेले, फिर तुम ग़ौर करो कि तुम्हारे साथी को क्या जुनून है, वह (स) तो सिर्फ़ सख़्त अज़ाब आने से पहले तुम्हें डराने वाले हैं। (46)

आप (स) फ़रमा दें: मैं ने तुम से जो मांगा हो कोई अजर तो वह तुम्हारा है, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह के ज़िम्मे है, और वह हर शै की इत्तिलाज़ रखने वाला (गवाह) है। (47)

आप (स) फ़रमा दें, बेशक मेरा रब ऊपर से हक़ उतारता है, और सब ग़ैब की बातों का जानने वाला है। (48)

قَالُوا سُبْحَنَكَ أَنْتَ وَلَيْسَ مِن دُونِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ							
वह परस्तिश करते थे	बल्कि	उन के सिवाए (न कि वह)	हमारा कारसाज़	तू	तू पाक है	वह कहेंगे	
الْجِنَّ ۚ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُم							
तुम में से बाज़ (एक)	इख्तियार नहीं रखता	सो आज	41	एतिकाद रखते थे	उन पर	इन में से अक्सर	जिन्न (जमा)
لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا ۚ وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ							
आग (जहन्नम) का अज़ाब	तुम चखो	जिन्होंने ने जुल्म किया	उन लोगों को	और हम कहेंगे	और न नुक्सान का	नफ़ा का	बाज़ (दूसरे) के लिए
الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٢﴾ وَإِذَا تُثْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا							
हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती है	और जब	42	तुम झुटलाते थे	उस को	तुम थे
بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا							
उस से जिस	कि रोके तुम्हें	वह चाहता है	एक आदमी	मगर सिर्फ़	नहीं है यह	वह कहते हैं	वाज़ेह
كَانَ يَعْبُدُ آبَاءَكُمْ ۚ وَقَالُوا مَا هَذَا إِلَّا إِفْكٌ مُّفْتَرٍ ۚ وَقَالَ							
और कहा	झूट घड़ा हुआ	मगर	नहीं यह	और वह कहते हैं	तुम्हारे बाप दादा	परस्तिश करते थे	
الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۚ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٤٣﴾							
43	जादू खुला	मगर	यह नहीं	जब वह आया उन के पास	हक़ के बारे में	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	
وَمَا آتَيْنَهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ							
आप (स) से पहले	उन की तरफ़	भेजा हम ने	और न	कि उन्हें पढ़ें	किताबें	दी हम ने उन्हें	और न
مِّنْ نَّذِيرٍ ۚ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا بَلَّغُوا مِعْشَارَ							
दसवां हिस्सा	और यह न पहुँचे	इन से पहले	उन्होंने ने जो	और झुटलाया	44	कोई डराने वाला	
مَا آتَيْنَهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾ قُلْ							
फ़रमा दें	45	मेरा अज़ाब	हुआ	तो कैसा	मेरे रसूलों को	सो उन्होंने ने झुटलाया	जो हम ने उन्हें दिया
إِنَّمَا أَعْظَمُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مِثْلَىٰ خِزْفٍ ۚ وَفَرَادَىٰ							
और अकेले अकेले	दो, दो	तुम खड़े हो जाओ अल्लाह के वास्ते	कि	एक बात की	मैं सिर्फ़ नसीहत करता हूँ तुम्हें		
ثُمَّ تَتَفَكَّرُونَ ۚ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُمْ							
तुम्हें	डराने वाले	मगर-सिर्फ़	वह	नहीं	कोई जुनून	क्या तुम्हारे साथी को	फिर तुम ग़ौर करो
بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِّنْ أَجْرٍ							
कोई अजर	जो मैं ने मांगा हो तुम से	फ़रमा दें	46	सख़्त अज़ाब	आगे (आने से पहले)		
فَهُوَ لَكُمْ ۚ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ							
हर शै	पर-की	और वह	अल्लाह के ज़िम्मे	मगर-सिर्फ़	मेरा अजर	नहीं	तुम्हारा है
شَهِيدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ إِنْ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَٰمُ الْغُيُوبِ ﴿٤٨﴾							
48	सब ग़ैबों का जानने वाला	हक़ को	डालता (ऊपर से उतारता है)	मेरा रब	बेशक	फ़रमा दें	47
						इत्तिलाज़ रखने वाला	

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبَدِّلُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ٤٩ قُلْ إِنَّ							
अगर	फरमा दें	49	और न लौटाएगा	वातिल	और न पैदा करेगा	हक आ गया	फरमा दें
ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَى نَفْسِي وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحَىٰ							
वह वहि करता है	तो उस की बदौलत	मैं हिदायत पर हूँ	और अगर	अपनी जान पर (अपने नुक्सान को)	मैं वहका हूँ	तो इस के सिवा नहीं	मैं वहका हूँ
إِلَىٰ رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ٥٠ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَرَغُوا فَلَا فُوتَ							
और न बच सकेंगे	वह घबराएंगे	जब	ऐ काश तुम देखो	50	करीब	सुनने वाला	मेरा रब मेरी तरफ
وَأَخِذُوا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ٥١ وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَإِنَّا لَلتَّائِثُونَ							
पकड़ना (हाथ आना)	उन के लिए	और कहाँ	उस पर	हम ईमान लाए	और वह कहेंगे	51	करीब जगह (पास) से और पकड़ लिए जाएंगे
مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ٥٢ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَيَقْذِفُونَ							
और वह फेंकते हैं	इस से कब्ल	उस से	और तहकीक उन्होंने ने कुफ़ किया	52	दूर (दारुलजज़ा)	जगह	से
بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ٥٣ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ							
जो वह चाहते थे	और दरमियान	उन के दरमियान	और आड़ कर दी गई	53	दूर जगह	से	बिन देखे
كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ٥٤							
54	तरदुद में डालने वाले	शक	में	वह थे	वेशक वह	इस से कब्ल	उन के हम जिन्सों के साथ किया गया जैसे
آيَاتُهَا ٤٥ ﴿سُورَةُ فَاطِرٍ﴾ رُكُوعَاتُهَا ٥							
سُورَةُ فَاطِرٍ (35) رُكُوعَاتُهَا 5							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَكَةِ رُسُلًا							
पैगम्बर	फरिश्ते	बनाने वाला	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	तमाम तारीफें	अल्लाह के लिए
أُولَىٰ أَجْنَحَةٍ مَّتَنِي وَثَلْتُ وَرُبْعٌ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ							
वेशक अल्लाह	जो वह चाहे	पैदाइश में	ज़ियादा कर देता है	और चार चार	और तीन तीन	दो दो	परों वाले
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ١ مَا يَفْتَحُ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ							
तो बन्द करने वाला नहीं	रहमत से	लोगों के लिए	खोल दे अल्लाह	जो	1	कुदरत रखने वाला	हर शै पर
لَهَا ٢ وَمَا يُمْسِكُ فَلَا يُرْسِلُ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٢							
2	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	उस के बाद	उस का	तो कोई भेजने वाला नहीं	और जो वह बन्द कर दे उस का
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا اللَّهَ نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ							
अल्लाह के सिवा	कोई पैदा करने वाला	क्या	अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	ऐ लोगो	
يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَآئِنِ تُؤْفَكُونَ ٣							
3	उलटे फिरे जाते हो तुम	तो कहाँ	उस के सिवा	कोई माबूद नहीं	और ज़मीन	आस्मान से	वह तुम्हें रिज़ूक देता है

आप (स) फरमा दें: हक आ गया और न (कोई नई चीज़) दिखाएगा वातिल और न लौटाएगा (कोई पुरानी चीज़)। (49)

आप (स) फरमा दें अगर मैं वहका हूँ तो इस के सिवा नहीं कि अपने नुक्सान को वहका हूँ, और अगर मैं हिदायत पर हूँ तो उस की बदौलत हूँ कि मेरा रब मेरी तरफ़ वहि करता है, वेशक वह सुनने वाला, करीब है। (50)

ऐ काश! तुम देखो, जब वह घबराएंगे तो (भाग कर) न बच सकेंगे, और पास ही से पकड़ लिए जाएंगे। (51)

और कहेंगे कि हम उस (नबी स) पर ईमान ले आए और कहाँ (मुमकिन) है उन के लिए दूर जगह (दारुलजज़ा) से (ईमान का) हाथ आना। (52)

और तहकीक उन्होंने ने इस से कब्ल उस से कुफ़ किया, और वह फेंकते हैं बिन देखे दूर जगह से (अटकल पचचू बातें करते हैं)। (53)

जो वह चाहते थे, उस के और उन के दरमियान आड़ डाल दी गई, जैसे उन के हम जिन्सों के साथ इस से कब्ल किया गया, वेशक वह तरदुद में डालने वाले शक में थे। (54)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, फरिश्तों को पैग़ाम बर बनाने वाला, परों वाले दो दो, और तीन तीन, और चार चार, पैदाइश में जो चाहे वह ज़ियादा कर देता है, वेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (1)

अल्लाह लोगों के लिए जो रहमत खोल दे तो (कोई) उस का बन्द करने वाला नहीं, और जो वह बन्द कर दे तो उस के बाद कोई उस का भेजने वाला नहीं, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (2)

ऐ लोगो! तुम याद करो अपने ऊपर अल्लाह की नेमत, क्या अल्लाह के सिवा कोई पैदा करने वाला है? वह तुम्हें आस्मान से रिज़ूक देता है और ज़मीन से, उस के सिवा कोई माबूद नहीं तो कहाँ तुम उलटे फिरे जाते हो? (3)

और अगर वह तुझे झुटलाए तो तहकीक झुटलाए गए हैं तुम से पहले भी रसूल, और तमाम कामों की वाज़गशत (लौटना) अल्लाह की तरफ है। (4)

ऐ लोगो! वेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, पस दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ तुम्हें धोके में न डाल दे, और धोके वाज़ (शैतान) तुम्हें अल्लाह से हरगिज़ धोके में न डाल दे। (5)

वेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है पस तुम उसे दुश्मन (ही) समझो, वह तो अपने गिरोह को बुलाता है ताकि वह जहन्नम वालों से हों। (6) जिन लोगों ने कुफ़ किया उन लोगों के लिए सख़्त अज़ाब है, और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए उन के लिए वख़्शिश और बड़ा अजर है। (7)

सो क्या जिस के लिए उस का बुरा अमल आरास्ता क्या गया, फिर उस ने उस को अच्छा देखा (समझा)

(क्या वह नेकोकारों जैसा हो सकता है) पस वेशक जिस को अल्लाह चाहता है गुमराह ठहराता है और जिस को चाहता है हिदायत देता है, पस तुम्हारी जान न जाती रहे उन पर हसरत कर के, वेशक जो वह करते हैं अल्लाह उसे जानता है। (8)

और अल्लाह (ही है) जिस ने भेजा हवाओं को, फिर वह बादलों को उठाती हैं, फिर हम उस (बादल) को मुर्दा शहर की तरफ ले गए, फिर हम ने उस से ज़मीन को उस के मरने (बंजर हो जाने) के बाद ज़िन्दा किया, इसी तरह (मुर्दों को रोज़े हशर) जी उठना है। (9)

जो कोई इज़्ज़त चाहता है तो तमाम तर इज़्ज़त अल्लाह के लिए है। उस की तरफ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम, और अच्छे अमल उस को बुलन्द करता है, और जो लोग बुरी तदवीरें करते हैं, उन के लिए सख़्त अज़ाब है, और उन लोगों की तदवीर अकारत जाएगी। (10)

और अल्लाह (ही) ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया, और न कोई औरत हामिला होती है, और न वह जनती है, मगर उस के इल्म में है, और कोई बड़ी उम्र वाला उम्र नहीं पाता, और न किसी की उम्र से कमी की जाती है मगर (यह सब) किताब में लिखा हुआ है। यह वेशक अल्लाह पर आसान है। (11)

وَأَنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ ۖ وَالَّى اللَّهُ تَرْجَعُ						
लौटना	और अल्लाह की तरफ़	तुम से पहले	रसूल (जमा)	तो तहकीक झुटलाए गए	वह तुझे झुटलाए	और अगर
الْأُمُورُ ۚ يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ						
पस हरगिज़ तुम्हें धोके में न डाल दे	सच्चा	अल्लाह का वादा	वेशक	ऐ लोगो	4	तमाम काम
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّتْكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ						
दुश्मन	तुम्हारे लिए	वेशक शैतान	5	धोके वाज़	अल्लाह से	और तुम्हें धोके में न डाल दे
فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۖ						
दुश्मन	जहन्नम वाले	से	ताकि वह हों	अपने गिरोह को	वह तो बुलाता है	पस उसे समझो
الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ						
उन के लिए	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	और जो लोग ईमान लाए	सख़्त अज़ाब	उन के लिए	जिन लोगों ने कुफ़ किया
مَغْفِرَةٌ ۖ وَاجْرُ كَبِيرٌ ۚ أَفَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَاهُ حَسَنًا ۖ						
अच्छा	फिर उस ने देखा उसे	उस का बुरा अमल	उस के लिए	आरास्ता किया गया	सो क्या जिस	7
فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ						
तुम्हारी जान	पस न जाती रहे	जिस को वह चाहता है	और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है	गुमराह ठहराता है	पस वेशक अल्लाह
عَلَيْهِمْ حَسْرَتٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۚ وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ						
भेजा	वह जिस ने	और अल्लाह	8	वह करते हैं	उसे जो	जानने वाला
الرِّيحَ فَثَبِيرٌ سَحَابًا فَسُقْنَهُ إِلَىٰ بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ						
जमीन	उस से	फिर हम ने ज़िन्दा किया	मुर्दा शहर	तरफ़	फिर हम उसे ले गए	बादल
بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذَلِكَ النُّشُورُ ۚ مَن كَانَ يَرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ						
तो अल्लाह के लिए इज़्ज़त	इज़्ज़त	चाहता है	जो कोई	9	जी उठना	इसी तरह
جَمِيعًا ۚ إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ						
वह उस को बुलन्द करता है	अच्छा	और अमल	पाकीज़ा कलाम	चढ़ता है	उस की तरफ़	तमाम तर
وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ						
उन लोगों	और तदवीर	अज़ाब सख़्त	उन के लिए	बुरी	तदवीरें करते हैं	और जो लोग
هُوَ يَبُورُ ۚ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِّن تَرَابٍ ثُمَّ مِّن نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ						
फिर उस ने तुम्हें बनाया	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	उस ने पैदा किया तुम्हें	और अल्लाह	10
أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَمَا يُعَمَّرُ						
उम्र पाता	और नहीं	उस के इल्म में है	मगर	और न वह जनती है	कोई औरत	हामिला होती है
مِّن مُّعَمَّرٍ وَلَا يُنْقِصُ مِنْ عُمرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۚ						
11	आसान	अल्लाह पर	यह वेशक	किताब में	मगर	उस की उम्र से

ع ١٣

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ						
आसान उस का पीना		शीरी प्यास बुझाने वाला		यह	दोनों दर्या	और बराबर नहीं
وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَمِنْ كُلِّ تَاكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُونَ						
और तुम निकालते हो		ताज़ा	गोश्त	तुम खाते हो	और हर एक से	शोर तलख और यह
حَلِيَّةٌ تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ مَوَاحِرَ لَتَبْتَغُوا						
ताकि तुम तलाश करो		चीरती है पानी को	उस में	कशतियां	और तू देखता है	जिस को पहनते हो तुम ज़ेवर
مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾ يُؤَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ						
और दाखिल करता है दिन को		दिन में	वह दाखिल करता है रात	12	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम उस के फज़ल से (रोज़ी)
فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى						
मुक़र्ररा	एक वक़्त	हर एक चलता है		और चाँद	सूरज	और उस ने मुसख़्ख़र किया रात में
ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ						
उस के सिवा		तुम पुकारते हो	और जिन को	उस के लिए बादशाहत	तुम्हारा परवरदिगार	यही है अल्लाह
مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ﴿١٣﴾ إِنَّ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ ۖ وَلَوْ						
और अगर	तुम्हारी पुकार (दुआ)	वह नहीं सुनेंगे	तुम उन को पुकारो	अगर 13	खजूर की घुटली का छिलका	वह मालिक नहीं
سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۚ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ يَكْفُرُونَ بَشِرِكُمْ						
तुम्हारे शिर्क करने का		वह इन्कार करेंगे	और रोज़े कियामत	तुम्हारी	वह हाजत पूरी न कर सकेंगे	वह सुन लें
وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾ يَأَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ						
मोहताज		तुम	ऐ लोगो!	14	खबर देने वाला	मानिंद और तुझ को खबर न देगा
إِلَى اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ						
तुम्हें ले जाए		अगर वह चाहे	15	सज़ावारे हम्द	वेनियाज़	वह और अल्लाह के अल्लाह के
وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾						
17	दुशवार	अल्लाह पर	यह	और नहीं	16	नई खल्कत और ले आए वह
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا						
तरफ (लिए) अपना बोझ		कोई बोझ से लदा हुआ	बुलाए	और अगर	बोझ दूसरे का	कोई उठाने वाला और नहीं उठाएगा
لَا يُحْمَلُ مِنْهُ شَيْءٌ ۚ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۚ إِنَّمَا تُنذِرُ						
आप (स) डराते हैं	इस के सिवा नहीं (सिर्फ)	क़राबतदार	अगरचे हों	कुछ	उस से	न उठाएगा वह
الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ						
नमाज़		और काइम रखते हैं	बिन देखे	अपना रब	डरते हैं	वह लोग जो
وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾						
18	लौट कर जाना	और अल्लाह की तरफ	खुद अपने लिए	वह पाक साफ होता है	तो सिर्फ	पाक होता है और जो

और दोनों दर्या बराबर नहीं, यह (एक) शीरी है प्यास बुझाने वाला, उस का पीना भी आसान, और यह (दूसरा) शोर तलख़ है, और हर एक से तुम ताज़ा गोश्त खाते हो, और (उन में से) तुम ज़ेवर (मोती) निकालते हो जिस को तुम पहनते हो, और तू उस में कश्तियां देखता है कि पानी को चीरती (हुई चलती है) ताकि तुम उस के फज़ल से रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो। (12)

और रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है, और उस ने सूरज चाँद को मुसख़्ख़र किया, हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक चलता है, यही तुम्हारा परवरदिगार है, उसी के लिए बादशाहत, और जिन को तुम उस के सिवा पुकारते हो, वह खज़ूर की घुटली के छिलके (के भी) मालिक नहीं। (13)

और तुम उनको पुकारो तो वह नहीं सुनेंगे तुम्हारी पुकार, और अगर वह सुन भी लें तो तुम्हारी हाजत पूरी न कर सकेंगे, और वह रोज़े कियामत तुम्हारे शिर्क करने का इन्कार करेंगे, और तुझ को खबर देने वाले (अल्लाह) की मानिंद कोई खबर न देगा। (14)

ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मोहताज हो, और अल्लाह ही वेनियाज़ सज़ावारे हम्द ओ सना है। (15)

अगर वह चाहे तो (सब को) ले जाए (नाबूद कर दे) और नई ख़ल्कत ले आए। (16)

और यह नहीं है अल्लाह पर (कुछ) दुशवार। (17)

और कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, और अगर कोई बोझ से लदा हुआ (गुनाहगार किसी को) अपना बोझ (उठाने) के लिए बुलाए तो वह उस से कुछ न उठाएगा, अगरचे उस का क़राबतदार हो, आप (स) तो सिर्फ़ उनको डरा सकते हैं जो अपने रब से डरते हैं बिन देखे, और नमाज़ काइम रखते हैं, और जो पाक होता है वह सिर्फ़ अपने लिए पाक साफ़ होता है, और अल्लाह की तरफ़ ही लौट कर जाना है। (18)

और बराबर नहीं अन्धा और आँखों वाला। (19)

और न अन्धेरे और न नूर (रोशनी), (बराबर है)। (20)

और न साया और न झुलसती हवा। (21)

और बराबर नहीं ज़िन्दे (ज़ालिम) और न मुर्दे (जाहिल), वेशक

अल्लाह जिस को चाहता है सुना देता है, और तुम (उनको) सुनाने

वाले नहीं जो क़ब्रों में है। (22)

वल्कि तुम सिर्फ़ डराने वाले हो। (23)

वेशक हम ने आप (स) को हक़ के साथ भेजा, खुशख़बरी देने वाला

और डर सुनाने वाला, और कोई उम्मत नहीं जिस में कोई डराने

वाला न गुज़रा हो। (24)

और अगर वह तुम्हें झुटलाए तो तहकीक़ उन के अगले लोगों ने

भी झुटलाया, उन के पास उन के रसूल आए रोशन दलाइल

(निशानात) और सहीफ़ों और रोशन किताबों के साथ। (25)

फिर जिन लोगों ने कुफ़ किया मैं ने उन्हें पकड़ा, फिर कैसा हुआ मेरा

अज़ाब? (26)

क्या तू ने नहीं देखा? वेशक अल्लाह ने आस्मान से पानी

उतारा, फिर हम ने उस से फल निकाले, उन के रंग मुख़तलिफ़ हैं,

और पहाड़ों में क़त्आत (घाटियाँ) हैं सफ़ेद और सुर्ख, उन के रंग

मुख़तलिफ़ हैं, और (कुछ) गहरे सियाह रंग के। (27)

और उसी तरह लोगों में, और जानवरों और चौपायों में, उन के

रंग मुख़तलिफ़ हैं, इस के सिवा नहीं कि अल्लाह से उस के इल्म वाले

बन्दे (ही) डरते हैं, वेशक अल्लाह ग़ालिब, बख़्शने वाला है। (28)

वेशक जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ काइम रखते

हैं और जो हम ने उन्हें दिया उस में से खर्च करते हैं पोशीदा और

ज़ाहिर, वह ऐसी तिज़ारत के उम्मीदवार हैं (जिस में) हरगिज़

घाटा नहीं। (29)

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿١٩﴾ وَلَا الظُّلُمُتُ وَلَا النُّورُ ﴿٢٠﴾						
और बराबर नहीं	अन्धा	और आँखों वाला	19	और न अन्धेरे	और न रोशनी	20
وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ﴿٢١﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ﴿٢٢﴾						
और न साया	और न झुलसती हवा	21	और नहीं बराबर	ज़िन्दे	और न	मुर्दे
إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ ۖ وَمَا أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن						
वेशक अल्लाह	सुना देता है	जिस को वह चाहता है	और तुम नहीं	सुनाने वाले	जो	
فِي الْقُبُورِ ﴿٢٣﴾ إِنَّ أَنتَ إِلَّا نَذِيرٌ ﴿٢٤﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ						
क़ब्रों में	22	तुम नहीं	मगर-सिर्फ़	डराने वाले	23	वेशक हम
بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَإِنْ مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿٢٥﴾						
खुशख़बरी देने वाला	और डर सुनाने वाला	और नहीं	कोई उम्मत	गुज़रा	मगर	24
وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ جَاءَتْهُمْ						
और अगर	वह तुम्हें झुटलाए	तो तहकीक़ झुटलाया	वह लोग जो	इन से अगले	आए उन के पास	
رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ						
उन के रसूल	रोशन दलाइल के साथ	और सहीफ़ों के साथ	और किताबों के साथ	रोशन	25	फिर
أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ						
मैं ने पकड़ा	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया	फिर कैसा	हुआ	मेरा अज़ाब	26	वेशक अल्लाह
أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا						
उतारा	आस्मान से	पानी	फिर हम ने निकाले	उस से	फल (जमा)	मुख़तलिफ़
أَلْوَانَهَا ۚ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بَيَضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ						
उन के रंग	और पहाड़ों से-में	क़त्आत सफ़ेद	और सुर्ख	मुख़तलिफ़		
أَلْوَانَهَا وَغَرَابِيْبٌ سُودٌ ﴿٢٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَّابِّ						
उन के रंग	गहरे रंग	सियाह	27	और लोगों से-में	और जानवर (जमा)	
وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَلِكَ ۚ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ						
और चौपाए	मुख़तलिफ़	उन के रंग	उसी तरह	इस के सिवा नहीं	डरते हैं	अल्लाह
مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ						
से	उस के बन्दे	इल्म वाले	वेशक अल्लाह	ग़ालिब	बख़्शने वाला	28
يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا						
जो पढ़ते हैं	अल्लाह की किताब	और काइम रखते हैं	नमाज़	और वह खर्च करते हैं	उस से जो	
رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ ﴿٢٩﴾						
हम ने उन्हें दिया	पोशीदा	और खुले तौर पर	वह उम्मीद रखते हैं	ऐसी तिज़ारत	हरगिज़ घाटा नहीं	29

لِيُوقِيَهُمْ أَجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ غَفُورٌ					
वखशने वाला	वेशक वह	अपने फज़ल से	और वह उन्हें ज़ियादा दे	उन के अजर	ताकि वह पूरे पूरे दे दे
شُكُورٌ ۝۳۰ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا					
तसदीक करने वाली	हक	वह	किताब से	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि भेजी है और वह जो
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝۳۱ ثُمَّ أَوْرَثْنَا					
हम ने वारिस बनाया	फिर	31	देखने वाला	अलवत्ता बाख़बर	अपने बन्दों से
الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ					
अपनी जान पर	जुल्म करने वाला	पस उन से (कोई)	अपने बन्दे	से-को	हम ने चुना वह जिन्हें
وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ إِذْنِ اللَّهِ ذَلِكَ					
यह	हुक़्म से अल्लाह के	नेकियों में	सबक़त ले जाने वाला	और उन से (कोई)	वीच का रास्ता चलने वाला
هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝۳۲ جَنَّتْ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ					
वह ज़ेवर पहनाए जाएंगे	वह उन में दाख़िल होंगे	बागात हमेशगी के	32	फज़ल बड़ा	वह (यही)
فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝۳۳					
33	रेशम	उस में	और उन का लिबास	और मोती	सोना से कंगन (जमा) से-का उन में
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ إِنَّ رَبَّنَا					
हमारा रब	वेशक	ग़म	हम से	दूर कर दिया	वह जिस ने
لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝۳۴ إِلَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِن فَضْلِهِ					
अपना फज़ल	से	हमेशा रहने का घर	हमें उतारा	वह जिस	34 क़द्र दान
لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ۝۳۵ وَالَّذِينَ كَفَرُوا					
कुफ़ किया	और वह जिन लोगों ने	35	थकावट	उस में	और न हमें छुएगी
لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ					
और न हल्का किया जाएगा	कि वह मर जाएं	उन पर	न कज़ा आएगी	जहनन्म की आग	उन के लिए
عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۖ كَذَلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۝۳۶ وَهُمْ					
और वह	36	हर नाशुक्के	हम सज़ा देते हैं	इसी तरह	उस का अज़ाब
يَصْطَرِخُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ					
बर अक्स	नेक	हम अमल करें	हमें निकाल ले	ऐ हमारे परवरदिगार	उस (दोज़ख़) में
الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۖ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن					
जो-जिस	उस में	कि नसीहत पकड़ लेता वह	क्या हम ने तुम्हें उम्र न दी थी	हम करते थे	उस के जो
تَذَكَّرَ ۖ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ۝۳۷					
37	कोई मददगार	ज़ालिमों के लिए	पस नहीं	सो चखो तुम	डराने वाला और आया तुम्हारे पास

ताकि अल्लाह उन्हें उन के अजर (ओ सवाब) पूरे पूरे दे, और उन्हें (और) ज़ियादा दे अपने फज़ल से, वेशक वह वखशने वाला, क़द्रदान है। (30)

और वह जो हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब भेजी है, वह हक़ है, उस की तसदीक करने वाली जो उन के पास है, वेशक अल्लाह अपने बन्दों से बाख़बर है, देखने वाला। (31)

फिर हम ने अपने चुने हुए बन्दों को किताब का वारिस बनाया, पस उन में से कोई अपनी जान पर जुल्म करने वाला है, और उन में से कोई वीच की रास है, और उन में से कोई अल्लाह के हुक़्म से नेकियों में सबक़त ले जाने वाला है, यही है बड़ा फज़ल। (32)

हमेशगी के बागात हैं जिन में वह दाख़िल होंगे, वह उन में कंगनों के ज़ेवर पहनाए जाएंगे, सोने और मोती के, और उन में उन का लिबास रेशम का होगा। (33)

और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से ग़म दूर कर दिया, वेशक हमारा रब वखशने वाला, क़द्रदान है। (34)

वह जिस ने हमें हमेशा रहने के घर में उतारा अपने फज़ल से, न इस में हमें कोई तकलीफ़ छुएगी, और न हमें इस में कोई थकावट छुएगी। (35)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया उन के लिए जहनन्म की आग है, न उन पर कज़ा आएगी कि वह मर जाएं, और न उन से हल्का किया जाएगा दोज़ख़ का कुछ अज़ाब, इसी तरह हर नाशुक्के को अज़ाब देते हैं। (36)

और वह दोज़ख़ के अन्दर चिल्लाए जाएंगे, ऐ हमारे परवरदिगार! हमें (यहां से) निकाल ले कि हम नेक अमल करें, उस के बरअक्स जो हम करते थे, क्या हम ने तुम्हें (इतनी) उम्र न दी थी कि नसीहत पकड़ लेता उस में जिसे नसीहत पकड़नी होती, और तुम्हारे पास डराने वाला (भी) आया, सो तुम (अब इन्कार का मज़ा) चखो, ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (37)

वेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें जानने वाला है, वेशक वह उन के सीनों के भेदों से बाख़बर है। (38)

वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में जानशीन बनाया, सो जिस ने कुफ़ किया तो उसी पर है उस के कुफ़ (का ववाल) और काफ़िरों को उन के रब के नज़दीक उन का कुफ़ सिवाए ग़ज़ब के कुछ नहीं बढ़ाता, और काफ़िरों को नहीं बढ़ाता उन का कुफ़ सिवाए ख़सारे के। (39)

आप (स) फ़रमा दें क्या तुम ने अपने शरीकों को देखा जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, तुम मुझे दिखाओ कि उन्होंने ने ज़मीन से क्या पैदा किया है? या आस्मानों (के बनाने में) उन का क्या साझा है? या हम ने उन्हें कोई किताब दी है कि वह उस की सनद पर हों (सनद रखते हों), बल्कि ज़ालिम एक दूसरे से वादे नहीं करते सिवाए धोके के। (40)

वेशक अल्लाह ने थाम रखा है आस्मानों को और ज़मीन को कि वह टल (न) जाएं, और अगर वह टल जाएं तो उन्हें उस के बाद कोई भी नहीं थामेगा, वेशक वह (अल्लाह) हिलम वाला, बख़शने वाला है। (41)

और उन्होंने (मुशर्रिकीने मक्कह) ने अल्लाह की बड़ी सख़्त कस्में खाई कि अगर उन के पास कोई डराने वाला आए तो वह ज़रूर ज़ियादा हिदायत पाने वाले होंगे (दुनिया की) हर एक उम्मत से (बढ़ कर), फिर जब उन के पास एक नज़ीर आया तो उन में बिदकने के सिवा (और कुछ) ज़ियादा न हुआ। (42)

दुनिया में अपने आप को बड़ा समझने के सबब और बुरी चाल (के सबब), और बुरी चाल (का ववाल) सिर्फ़ उस के करने वाले पर पड़ता है, तो क्या वह सिर्फ़ पहलों के दस्तूर का इतिज़ार कर रहे हैं! सो तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे, और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तग़य्युर न पाओगे। (43)

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ غَيْبِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ عَلِيمٌ					
वाख़बर	वेशक वह	और ज़मीन	आस्मानों की पोशीदा बातें	जानने वाला	वेशक अल्लाह
بِدَاتِ الصُّدُورِ (38) هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلِيفَ فِي الْأَرْضِ فَمَنْ كَفَرَ					
सो जिस ने कुफ़ किया	ज़मीन में	जानशीन	तुम्हें बनाया	जिस ने वही	38 सीनों (दिलों) के भेदों से
فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا					
सिवाए	उन का रब	नज़दीक	उन का कुफ़	काफ़िर (जमा)	और नहीं बढ़ाता उस का कुफ़ तो उसी पर
مَقْتًا وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا (39) قُلْ أَرَأَيْتُمْ					
किया तुम ने देखा	फ़रमा दें	39	ख़सारा	सिवाए	उन का कुफ़ काफ़िर (जमा) और नहीं बढ़ाता नाराज़ी (ग़ज़ब)
شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا					
उन्होंने ने पैदा किया	क्या	तुम मुझे दिखाओ	अल्लाह के सिवा	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें अपने शरीक
مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمُوتِ أَمْ اتَّيْنَهُمْ كِتَابًا					
कोई किताब	हम ने दी उन्हें	या	आस्मानों में	साझा	उन के लिए या ज़मीन से
فَهُمْ عَلَى بَيِّنَةٍ مِّنْهُ بَلْ إِن يَّعِدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ					
उन के वाज़ (एक)	ज़ालिम (जमा)	वादे करते नहीं	बल्कि	उस से-की	दलील (सनद) पर पस (कि) वह
بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا (40) إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ					
और ज़मीन	आस्मान (जमा)	थाम रखा है	वेशक अल्लाह	40	धोका सिवाए वाज़ (दूसरे) से
أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهِ					
उस के बाद	कोई भी	थामेगा उन्हें	न	टल जाएं और अगर वह	टल जाएं वह कि
إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا (41) وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْْمَانِهِمْ					
अपनी सख़्त कस्में	अल्लाह की	और उन्होंने ने कसम खाई	41	बख़शने वाला	हिलम वाला है वेशक वह
لِّئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ					
उम्मत (जमा)	हर एक से	ज़ियादा हिदायत पाने वाले	अलबत्ता वह ज़रूर होंगे	कोई डराने वाला	उन के पास आए अगर
فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا (42) اسْتَكْبَارًا					
अपने को बड़ा समझने के सबब	42	बिदकना	मगर-सिवाए	न उन (में) ज़ियादा हुआ	एक नज़ीर उन के पास आया फिर जब
فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئِ إِلَّا					
सिर्फ़	बुरी	चाल	और नहीं उठता (उलटा पड़ता)	बुरी	और चाल ज़मीन (दुनिया) में
بِأَهْلِهِ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ فَلَنْ تَجِدَ					
सो तुम हरगिज़ न पाओगे	पहले	दस्तूर	मगर सिर्फ़	वह इन्तिज़ार कर रहे हैं	तो क्या उस के करने वाले पर
لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا (43)					
43	कोई तग़य्युर	अल्लाह के दस्तूर में	और तुम हरगिज़ न पाओगे	कोई तबदीली	अल्लाह के दस्तूर में

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ					
आक़िबत (अनज़ाम)	हुआ	कैसा	सो वह देखते	ज़मीन (दुनिया) में	क्या वह चले फिरे नहीं
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَمَا					
और नहीं	कुव्वत में	उन से	बहुत ज़ियादा	और वह थे	उन से पहले
كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمُوتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ					
ज़मीन में	और न	आस्मानों में		कोई शै	कि उसे अज़िज़ कर दे
إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ					
लोग	अल्लाह पकड़ करे		और अगर	44	बड़ी कुदरत वाला
بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ					
और लेकिन	कोई चलने फिरने वाला		उस की पुश्त	पर	वह न छोड़े
يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّىٰ فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ					
उन की अजल	आ जाएगी	फिर जब	एक मद्दते मुअय्यन		तक
فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿٤٥﴾					
	45	देखने वाला	अपने बन्दों को	है	तो बेशक अल्लाह
آيَاتُهَا ٨٣ ﴿٣٦﴾ سُورَةُ يَس ۞ زُكُوعَاتُهَا ٥					
रुक़आत 5		(36) सूरह या सीन		आयात 83	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ					
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है					
يَس ﴿١﴾ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣﴾ عَلَىٰ صِرَاطٍ					
रास्ता	पर	3	रसूलों में से	वेशक आप (स)	2
مُسْتَقِيمٍ ﴿٤﴾ تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٥﴾ لَتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ					
नहीं डराए गए	वह क़ौम	ताकि आप (स) डराएं	5	मेहरवान	ग़ालिब
أَبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ					
पस वह	उन में से अक्सर	पर	वात	तहकीक़ साबित हो गई	6
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٧﴾ إِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَىٰ					
तक	फिर वह	तौक़	उन की गरदन	में	वेशक हम ने किए (डाले)
الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُونَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ					
उन के आगे		से	और हम ने कर दी	8	सर ऊँचा किए (सर उलल रहे हैं)
سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿٩﴾					
9	देखते नहीं	पस वह	फिर हम ने उन्हें ढाँप दिया		एक दीवार
			और उन के पीछे		एक दीवार

क्या वह दुनिया में चले फिरे नहीं कि वह देखते कि उन से पहले लोगों का अन्जाम कैसा हुआ! और वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा थे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि कोई शै आस्मानों में उस को आज़िज़ कर दे और न ज़मीन में (कोई शै उसे हरा सकती है), बेशक वह इल्म वाला, कुदरत वाला है। (44)

और अगर अल्लाह लोगों को उन के आमाल के सबब पकड़े तो वह न छोड़े कोई चलने फिरने वाला उस की पुश्त (रूप ज़मीन) पर, लेकिन वह उन्हें एक मद्दते मुअय्यन तक ढील देता है, फिर जब आ जाएगी उन की अजल तो बेशक अल्लाह अपने बन्दों को देखने वाला है (उन के आमाल का बदला ज़रूर मिलेगा)। (45)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है या सीन। (1)

क़सम है वाहिक्मत कुरआन की। (2)

बेशक आप (स) रसूलों में से हैं। (3)

सीधे रास्ते पर हैं। (4)

नाज़िल किया हुआ ग़ालिब, मेहरवान का। (5)

ताकि आप (स) उस क़ौम को डराएँ जिस के बाप दादा नहीं डराए गए, पस वह ग़ाफ़िल हैं। (6)

तहकीक़ उन में से अक्सर पर (अल्लाह की) वात साबित हो चुकी है, पस वह ईमान न लाएंगे। (7)

बेशक हम ने उन की गर्दन में डाले हैं तौक़, फिर वह ठोड़ी तक (अड़ गए हैं) तो उन के सर उलल रहे हैं। (8)

और हम ने कर दी उन के आगे एक दीवार और उन के पीछे एक दीवार, फिर हम ने उन्हें ढाँप दिया, पस वह देखते नहीं। (9)

और बराबर है उन के लिए खाह तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वह ईमान न लाएंगे। (10)

इस के सिवा नहीं कि तुम (उस को) डराते हो जो कितावे नसीहत की पैरवी करे। और बिन देखे अल्लाह से डरे, पस आप (स) उसे बख्शिश और अच्छे अजर की खुशखबरी दें। (11)

वेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं, और हम लिखते हैं उन के अमल जो उन्होंने ने आगे भेजे और जो उन्होंने ने पीछे (आसार) छोड़े। और हर शै को हम ने कितावे रोशन में शुमार कर रखा है। (12)

और आप (स) उन के लिए बस्ती वालों का किस्सा बयान करें, जब उन के पास रसूल आए। (13)

जब हम ने उन की तरफ़ दो (रसूल) भेजे तो उन्होंने ने उन्हें झुटलाया, फिर हम ने तीसरे से तक़वियत दी, पस उन्होंने ने कहा: वेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। (14)

वह बोले: तुम महज़ हम जैसे आदमी हो, और नहीं उतारा रहमान (अल्लाह) ने कुछ भी, तुम महज़ झूट बोलते हो। (15)

उन्होंने ने कहा: हमारा परवरदिगार जानता है, वेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। (16)

और हम पर (हमारे ज़िम्मे) नहीं मगर (सिर्फ़) साफ़ साफ़ पहुँचा देना। (17)

वह कहने लगे: हम ने वेशक मनुहूस पाया तुम्हें, अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें ज़रूर संगसार कर देंगे और तुम्हें हम से दर्दनाक अज़ाब ज़रूर पहुँचेगा। (18)

उन्होंने ने कहा: तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है क्या तुम (इस को नहूसत समझते हो) कि तुम समझाए गए हो, बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो। (19)

और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया, उस ने कहा: ऐ मेरी कौम! तुम रसूलों की पैरवी करो। (20)

तुम उन की पैरवी करो जो तुम से कोई अजर नहीं मांगते और वह हिदायत याफ़ता है। (21)

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ (10)							
और बराबर	उन पर-उन के लिए	खाह तुम उन्हें डराओ	या	तुम उन्हें न डराओ	वह ईमान न लाएंगे	10	
إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ الْغَيْبَ							
इस के सिवा नहीं	तुम डराते हो	जो	पैरवी करे	कितावे नसीहत	और डरे	रहमान (अल्लाह)	बिन देखे
فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ (11) إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ							
पस उसे खुशखबरी दें	बख्शिश की	और अजर	अच्छा	11	वेशक हम	ज़िन्दा करते हैं	मुर्दों
وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۖ وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ (12) وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ ۚ إِذْ							
कितावे रोशन	12	और बयान करें आप (स)	उन के लिए	मिसाल (किस्सा)	बस्ती वाले	जब	
جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ (13) إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا							
उन के पास आए	रसूल (जमा)	13	जब	हम ने भेजे	उन की तरफ़	दो (2)	तो उन्होंने ने झुटलाया उन्हें
فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ (14) قَالُوا							
फिर हम ने तक़वियत दी	तीसरे से	पस उन्होंने ने कहा	वेशक हम	तुम्हारी तरफ़	भेजे गए	14	वह बोले
مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ ۖ							
तुम नहीं हो	मगर-महज़	आदमी	हम जैसे	और नहीं	उतारा	रहमान (अल्लाह)	कुछ
إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ (15) قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُم							
नहीं	तुम	मगर-महज़	झूट बोलते हो	15	उन्होंने ने कहा	हमारा परवरदिगार	जानता है
	वेशक हम	तुम्हारी तरफ़					
لَمُرْسَلُونَ (16) وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلْغُ الْمُبِينُ (17) قَالُوا							
अलवत्ता भेजे गए	16	और नहीं	हम पर	मगर	पहुँचा देना	साफ़ साफ़	17
إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم							
हम ने मनुहूस पाया	तुम्हें	अगर	तुम बाज़ न आए	ज़रूर हम संगसार कर देंगे तुम्हें	और ज़रूर पहुँचेगा तुम्हें		
مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ (18) قَالُوا طَائِرُكُم مَّعَكُمْ ۖ أِئِنْ							
हम से	अज़ाब	दर्दनाक	18	उन्होंने ने कहा	तुम्हारी नहूसत	तुम्हारे साथ	क्या
دُكِّرْتُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ (19) وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا							
तुम समझाए गए	बल्कि	तुम	लोग	हद से बढ़ने वाले	19	और आया	से
الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَّسْعَىٰ قَالَ يَاقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ (20)							
शहर	एक आदमी	दौड़ता हुआ	उस ने कहा	ऐ मेरी कौम	तुम पैरवी करो	रसूलों की	20
اتَّبِعُوا مَن لَّا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُّهْتَدُونَ (21)							
तुम पैरवी करो	जो	तुम से नहीं मांगते	कोई अजर	और वह	हिदायत याफ़ता	21	

وَقَالَ لَهُمْ
الرَّحْمَنُ
يَا قَوْمِ
اتَّبِعُوا
مَن لَّا
يَسْأَلُكُمْ
أَجْرًا
وَهُمْ
مُّهْتَدُونَ

وَمَا لِي لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ (٢٢)							
और क्या हुआ	मुझे	मैं न इबादत करूँ	वह जिस ने	पैदा किया मुझे	और उसी की तरफ़	तुम लौट कर जाओगे	22
ءَاتَاكَ مِنْ دُونِهِ إِلَهًا إِنْ يُرِدْنِ الرَّحْمَنُ بِضُرٍّ لَا تُغْنِي عَنْهُ شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونَ (٢٣) إِنِّي إِذَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (٢٤) إِنِّي							
क्या मैं बना लूँ	उस के सिवा	ऐसे माबूद	अगर	वह चाहे	रहमान-अल्लाह	कोई नुकसान	न काम आए मेरे
उन की सिफ़ारिश	कुछ भी	और न छुड़ा सकें वह मुझे	23	वेशक मैं	उस वक़्त	अलवत्ता गुमराही में	खुली 24
أَمِنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمِعُونِ (٢٥) قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَلَيْتَ قَوْمِي							
मैं ईमान लाया	तुम्हारे रब पर	पस तुम मेरी सुनो	25	इरशाद हुआ	तू दाखिल हो जा	जन्नत	उस ने कहा ऐ काश मेरी कौम
يَعْلَمُونَ (٢٦) بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ (٢٧)							
वह जानती	26	वह बात जिस की वजह से उस ने बख़्श दिया मुझे	मेरा रब	और उस ने किया मुझे	से	नवाज़े हुए लोग	27
وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ (٢٨)							
और नहीं उतारा हम ने	पर	उस की कौम	उस के बाद	कोई लश्कर	से	आस्मान	और न थे हम उतारने वाले 28
إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خُمُودٌ (٢٩) يُحَسِّرَةً							
न थी	मगर	चिंघाड़	एक	पस अचानक	वह	बुझ कर रह गए	29
عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ (٣٠) أَلَمْ يَرَوْا							
बन्दों पर	नहीं आया उन के पास	कोई रसूल	मगर	वह थे	उस से	हँसी उड़ाते	30
كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ (٣١) وَإِنْ							
कितनी	हलाक की हम ने	उन से कब्ल	नसलों से	कि वह	उन की तरफ़	लौट कर नहीं आएंगे वह	और नहीं 31
كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ (٣٢) وَآيَةٌ لَهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ (٣)							
सब	मगर	सब के सब	हमारे रूबरू	हाज़िर किए जाएंगे	32	एक निशानी	उन के लिए एक ज़मीन मुर्दा
أَحْيَيْنَهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ (٣٣) وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ							
हम ने ज़िन्दा किया उसे	और निकाला हम ने	उस से	अनाज	पस उस से	वह खाते हैं	और बनाए हम ने	उस में बागात 33
مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجْرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ (٣٤) لِيَأْكُلُوا							
से-के	खजूर	और अंगूर	और जारी किए हम ने	उस में	से	चश्मे	34
مِّن ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ (٣٥) سُبْحَنَ الَّذِي خَلَقَ							
उस के फलों से	और नहीं	बनाया उसे	उन के हाथों	तो क्या वह शुक्र न करेंगे	35	पाक	वह ज़ात जिस ने पैदा किए
الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ (٣٦)							
जोड़े	हर चीज़	उस से जो	उगाती है	ज़मीन	और उन की जानों से	और उस से जो	वह नहीं जानते 36
وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ (٣٧)							
और एक निशानी	उन के लिए	रात	हम खींचते हैं	उस से	दिन	तो वह अचानक	अन्धेरे में रह जाते हैं 37

और मुझे क्या हुआ (मेरे पास क्या उज़र है) कि मैं उस की इबादत न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया, और तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (22) क्या मैं उस के सिवा ऐसे माबूद बना लूँ? अगर अल्लाह मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहे तो उन की सिफ़ारिश मेरे काम न आए कुछ भी, और न वह मुझे छुड़ा सकें। (23) वेशक मैं उस वक़्त खुली गुमराही में हूँगा। (24) वेशक मैं तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान लाया, पस तुम मेरी सुनो। (25) (उस शहीद को) इरशाद हुआ कि तू जन्नत में दाखिल हो जा, उस ने कहा: ऐ काश! मेरी कौम जानती। (26) वह बात जिस की वजह से मुझे बख़्श दिया मेरे रब ने और उस ने मुझे (अपने) नवाज़े हुए लोगों में से किया। (27) और हम ने उस के बाद उस की कौम पर कोई लश्कर नहीं उतारा आस्मान से, और न हम उतारने वाले थे (भेजने की हाज़त थी)। (28) (उन की सज़ा) न थी मगर एक चिंघाड़, पस वह अचानक बुझ कर रह गए। (29) हाए हसरत बन्दों पर! कि उन के पास कोई रसूल नहीं आया मगर वह उस की हँसी उड़ाते थे। (30) क्या उन्होंने ने नहीं देखा? हम ने उन से कब्ल कितनी नसलें हलाक की कि वह उन की तरफ़ लौट कर नहीं आएंगे। (31) और कोई ऐसा (नहीं) मगर सब के सब हमारे रूबरू हाज़िर किए जाएंगे। (32) और मुर्दा ज़मीन उन के लिए एक निशानी है, हम ने उसे ज़िन्दा किया और हम ने उस से अनाज निकाला, पस वह उस से खाते हैं। (33) और हम ने उस में बागात बनाए (लगाए) खजूर और अंगूर के, और हम ने उस में चश्मे जारी किए। (34) ताकि वह उस के फलों से खाएँ और उसे नहीं बनाया उन के हाथों ने, तो क्या वह शुक्र न करेंगे? (35) पाक है वह ज़ात जिस ने हर चीज़ के जोड़े पैदा किए उस (क़वील) से जो ज़मीन उगाती है (नवातात) और खुद उनकी जानों (इन्सानों में से) और उन में से जिनहें वह (खुद भी) नहीं जानते। (36) और उन के लिए रात एक निशानी है, हम दिन को उस से खींचते (निकालते) हैं तो वह अचानक अन्धेरे में रह जाते हैं। (37)

और सूरज अपने मुर्कररा रास्ते पर चलता रहता है, यह अल्लाह गालिब और दाना का निज़ाम (मुर्करर करदह) है। (38)

और चाँद के लिए हम ने मनज़िलें मुर्करर की यहाँ तक कि वह खज़ूर की पुरानी शाख़ की तरह हो जाता है (पहली का वारीक सा चाँद)। (39)

न सूरज की मज़ाल कि चाँद को जा पकड़े और न रात की (मज़ाल) कि पहले आ सके दिन से, और सब अपने दाइरे में गर्दिश करते हैं। (40)

और उन के लिए एक निशानी है कि हम ने उन की औलाद को सवार किया भरी हुई कश्ती में। (41)

और हम ने उन के लिए उस कश्ती जैसी (और चीज़ें) पैदा की जिन पर वह सवार होते हैं। (42)

और अगर हम चाहें तो हम उन्हें गर्क कर दें तो न (कोई) उन के लिए फ़र्याद रस (हो) और न वह छुड़ाए जाएंगे। (43)

मगर हमारी रहमत से (कि पार लगते हैं) और एक वक़्ते मुअय्यन तक फ़ाइदा उठाते हैं। (44)

और जब उन से कहा जाए कि तुम डरो उस से जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे है, शायद तुम पर रहम किया जाए (तो सुन कर नहीं देते)। (45)

और उन के पास उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी नहीं आती मगर वह उस से रूगर्दानी करते हैं। (46)

और जब उन से कहा जाए कि जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से खर्च करो तो काफ़िर कहते हैं मोमिनों से कि क्या हम उसे खिलाएं? जिसे अगर अल्लाह चाहता तो उसे खाने को देता, तुम सिर्फ़ खुली गुमराही में हो। (47)

और वह (काफ़िर) कहते हैं कि कब (पूरा होगा) यह वादाए (क़ियामत)? अगर तुम सच्चे हो। (48)

वह इन्तिज़ार नहीं करते हैं मगर एक चिंघाड़ (सूर की तुन्द आवाज़) की, जो उन्हें आ पकड़ेगी और वह वाहम झगड़ रहे होंगे। (49)

फिर न वह वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों की तरफ़ लौट सकेंगे। (50)

और (दोबारा) फूँका जाएगा सूर में तो वह यकायक क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ दौड़ेंगे। (51)

वह कहेंगे हाय हम पर! हमें किस ने उठा दिया? हमारी क़ब्रों से, यह है वह जो अल्लाह रहमान ने वादा किया था, और रसूलों ने सच कहा था। (52)

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ (۳۸) وَالْقَمَرَ									
और सूरज	चलता रहता है	ठिकाने (मुर्कररा रास्ते)	अपने	यह	निज़ाम	गालिब	जानने वाला (दाना)	38	और चाँद
قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ (۳۹) لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي									
हम ने मुर्करर की उस को	मनज़िलें तक कि	यहाँ है	हो जाता है	खज़ूर की शाख़ की तरह	पुरानी	39	न	सूरज	लाइक (मज़ाल)
لَهَا ۚ أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ (۴۰) وَآيَةٌ لَهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلِكِ الْمَشْحُونِ (۴۱)									
उस के लिए	कि	जा पकड़े वह	चाँद	और न	रात	पहले आ सके	दिन	और सब	दाइरे में
तैरते (गर्दिश करते) हैं	40	और एक निशानी	उन के लिए हम	कि हम ने सवार किया	उन की औलाद	कश्ती में	भरी हुई	41	
وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ (۴۲) وَإِنْ نَشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ									
और हम ने पैदा किया	उन के लिए	उस (कश्ती) जैसी	जो - जिस	वह सवार होते हैं	42	और अगर	हम चाहें	हम गर्क कर दें उन्हें	तो न फ़र्याद रस
لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ (۴۳) إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ (۴۴) وَإِذَا									
उन के लिए	और न वह	छुड़ाए जाएं	43	मगर	रहमत	हमारी तरफ़ से	और फ़ाइदा देना	एक वक़्ते मुअय्यन तक	44
قِيلَ لَهُمْ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ (۴۵) وَمَا									
कहा जाए	उन से	तुम डरो	जो	तुम्हारे सामने	और जो	तुम्हारे पीछे	शायद तुम	तुम पर रहम किया जाए	45
تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ (۴۶) وَإِذَا									
उन के पास	कोई निशानी	निशानियों में से	उन का रब	मगर	वह है	उस से	रूगर्दानी करते	46	और जब
قِيلَ لَهُمْ أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۚ قَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا									
कहा जाए	उन से	खर्च करो तुम	उस से जो	तुम्हें दिया अल्लाह ने	कहते हैं	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	उन लोगों से जो ईमान लाए (मोमिन)		
أَنْتُمْ مِمَّنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطَعْتُمْ ۚ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ (۴۷)									
क्या हम खिलाएं	(उस को) जिसे	अगर अल्लाह चाहता	उसे खाने को देता	नहीं	तुम	मगर - सिर्फ़	में	गुमराही	47
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ ۖ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ (۴۸) مَا يَنْظُرُونَ									
और वह कहते हैं	कब	यह वादा	अगर	तुम हो	सच्चे	48	वह इन्तिज़ार नहीं कर रहे हैं		
إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ (۴۹) فَلَا يَسْتَطِيعُونَ									
मगर	चिंघाड़	एक	वह उन्हें आ पकड़ेगी	और वह	वाहम झगड़ रहे होंगे	49	फिर न कर सकेंगे		
تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ (۵۰) وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۖ فَإِذَا هُمْ									
वसीयत करना	और न	तरफ़	अपने घर वाले	वह लौट सकेंगे	50	और फूँका जाएगा	सूर में	तो यकायक वह	
مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ (۵۱) قَالُوا يُؤَيَّلُنَا ۖ مَنْ بَعَثَنَا									
से	कब्रें	अपने रब की तरफ़	दौड़ेंगे	51	वह कहेंगे	ऐ वाए हम पर	किस ने उठा दिया हमें		
مِّنْ مَّرْقَدِنَا ۖ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ (۵۲)									
से	हमारी कब्रें	यह	जो वादा किया	रहमान - अल्लाह	और सच कहा था	रसूलों	52		

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾										
53	हाज़िर किए जाएंगे	हमारे सामने	सब	वह	पस यकायक	एक	चिंघाड़	मगर	होगी	न
فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾ إِنَّ										
वेशक	54	करते थे	जो तुम	मगर-वस	और न तुम बदला पाओगे	कुछ	किसी शख्स	न जुल्म किया जाएगा	पस आज	
أَصْحَابِ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ فَاكِهُونَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ										
सायों में	और उन की बीवियां	वह	55	बातें (मजे करने में)	एक शुरल में	आज	अहले जन्नत			
عَلَى الْأَرْبَابِ مُتَكَبِّرُونَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدَّعُونَ ﴿٥٧﴾										
57	जो वह चाहेंगे	और उन के लिए	मेवा	उस में	उन के लिए	56	तकिया लगाए हुए	तख्तों पर		
سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِيمٍ ﴿٥٨﴾ وَامْتَارُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾										
59	सुज़्रिमो (जमा)	ऐ	आज	और अलग हो जाओ तुम	58	मेहरबान परवरदिगार	से	फरमाया जाएगा	सलाम	
أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ										
दुश्मन	तुम्हारा	वेशक वह	शैतान	परस्तिश न करना	ऐ औलादे आदम	तुम्हारी तरफ	क्या मैं ने हुक्म नहीं भेजा था			
مُبِينٌ ﴿٦٠﴾ وَإِنْ اعْبُدُونِي ۚ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ										
और तहकीक गुमराह कर दिया	61	सीधा	रास्ता	यही	और यह कि तुम मेरी इबादत करना	60	खुला			
مِّنْكُمْ جِبَلًا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي										
वह जिस का	जहनन्म	यह है	62	सो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते?	बहुत सी	मख्लूक	तुम में से			
كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾ اصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٤﴾ الْيَوْمَ										
आज	64	तुम कुफ़ करते थे	उस के बदले जो	आज	उस में दाखिल हो जाओ	63	तुम से वादा किया गया था			
نَحْنُ عَلَى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا										
वह थे	उस की जो	उन के पाऊँ	और गवाही देंगे	उन के हाथ	और हम से बोलेंगे	उन के मुँह	पर	हम मुहर लगा देंगे		
يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَى أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّى										
तो कहां	रास्ता	फिर वह सबक़त करें	उन की आँखें	पर	तो मिटा दें (मिलयामेट कर दें)	और अगर हम चाहें	65	कमाते (करते थे)		
يُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا										
फिर न कर सकें	उन की जगहें	पर-में	हम मसख़ कर दें उन्हें	और अगर हम चाहें	66	वह देख सकेंगे				
مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۚ										
खलक़त (पैदाइश) में	औन्धा कर देते हैं	हम उम्र दराज़ कर देते हैं	और जिस	67	और न वह लौटें	चलना				
أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ										
नसीहत	मगर	वह (यह)	उस के लिए	और नहीं शायान	शोर	और हम ने नहीं सिखाया उस को	68	तो क्या वह समझते नहीं?		
وَقُرْآنٌ مُبِينٌ ﴿٦٩﴾ لَّيُنذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧٠﴾										
70	काफिर (जमा)	पर	बात (हुज्जत)	और साबित हो जाए	ज़िन्दा	हो	जो	ताकि (आप स) डराएं	69	और कुरआन वाज़ेह

(यह) न होगी मगर एक चिंघाड़, पस यकायक वह सब हमारे सामने हाज़िर किए जाएंगे। (53)

पस आज जुल्म न किया जाएगा किसी शख्स पर कुछ (भी) और जो तुम करते थे पस उसी का बदला पाओगे। (54)

वेशक आज अहले जन्नत एक शुरल में खुश होते होंगे। (55)

वह और उन की बीवियां सायों में तख्तों पर तकिया लगाए हुए (बैठे) होंगे। (56)

उन के लिए उस (जन्नत) में हर किसम का मेवा और उन के लिए जो वह चाहेंगे (मौजूद होगा)। (57)

मेहरबान परवरदिगार की तरफ़ से सलाम फरमाया जाएगा। (58)

और ऐ मुज़्रिमो! तुम आज अलग हो जाओ। (59)

क्या मैं ने तुम्हारी तरफ़ हुक्म नहीं भेजा था ऐ औलादे आदम! कि तुम परस्तिश न करना शैतान की, वेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (60)

और यह कि तुम मेरी इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। (61)

और उस ने तुम में से बहुत लोगों को गुमराह कर दिया, सो किया तुम अक्ल से काम नहीं लेते थे? (62)

यह है वह जहनन्म जिस का तुम से वादा किया गया था। (63)

तुम जो कुफ़ करते थे उस के बदले आज इस में दाखिल हो जाओ। (64)

आज हम उन के मुँह पर मुहर लगा देंगे, और हम से उन के हाथ बोलेंगे और उन के पाऊँ गवाही देंगे जो वह करते थे। (65)

और अगर हम चाहें तो उन की आँखें मिलयामेट कर दें, फिर वह रास्ते की तरफ़ सबक़त करें (दौड़ें) तो कहां देख सकेंगे? (66)

और अगर हम चाहें तो उन्हें उन की जगहों पर मसख़ कर दें, फिर वह न चल सकेंगे और न लौट सकेंगे। (67)

और हम जिस की उम्र दराज़ करते हैं उसे पैदाइश में औन्धा कर देते हैं तो क्या वह समझते नहीं? (68)

और हम ने उस (आप स) को शोर नहीं सिखाया और यह आप (स) के शायान नहीं है, यह नहीं मगर (किताबे) नसीहत और वाज़ेह कुरआन। (69)

ताकि आप (स) (उस को) डराएं जो ज़िन्दा हो और काफ़िरों पर हुज्जत सावित हो जाए। (70)

या क्या वह नहीं देखते कि हम ने जो (चीज़ें) अपनी क़ुदरत से बनाई, उन से उन के लिए पैदा किए चौपाए, पस वह उन के मालिक हैं। (71) और हम ने उन (चौपायों) को उन के बस में कर दिया, पस उन में से (बाज़) उन की सवारी हैं और उन में से बाज़ को वह खाते हैं। (72) और उन में उन के लिए (बहुत से) फाइदे और पीने की चीज़ें हैं, क्या फिर वह शुक्र नहीं करते? (73) और उन्होंने ने बना लिए अल्लाह के सिवा और माबूद (इस ख़याले बातिल से कि) शायद वह मदद किए जाएंगे। (74) वह उन की मदद नहीं कर सकते और वह उन के लिए (मुज़रिम) लशकर (की शकल में) हाज़िर किए जाएंगे। (75) पस आप (स) को उनकी बात मग़मूम न करे। वेशक हम जानते हैं जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (76) क्या इन्सान ने नहीं देखा कि हम ने उस को तुत्फ़े से पैदा किया? और फिर नागहां वह हुआ झगड़ालू खुला। (77) और उस ने हमारे लिए एक मिसाल बयान की और अपनी पैदाइश को भूल गया, कहने लगा कौन हड्डियों को ज़िन्दा करेगा? जब कि वह गल गई होंगी। (78) आप (स) फ़रमा दें: उसे वह ज़िन्दा करेगा जिस ने उसे पहली बार पैदा किया, और वह हर तरह से पैदा करना जानता है। (79) जिस ने तुम्हारे लिए सब्ज़ दरख़्त से आग पैदा की, पस अब तुम उस (आग) से सुलगाते हो। (80) वह जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि उन जैसों को पैदा करे, हों (क्यों नहीं)! वह बड़ा पैदा करने वाला दाना है। (81) उस का काम उस के सिवा नहीं कि वह किसी शै का इरादा करता है तो वह उस को कहता है "हो जा" तो वह हो जाती है। (82) सो पाक है वह (ज़ाते वाहिद) जिस के हाथ में हर शै की वादशाहत है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (83) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है क़सम है परा जमा कर सफ़ बान्धने वाले (फ़रिश्तों) की। (1) फिर झिड़क कर डांटने वालों की। (2) फिर कुरआन तिलावत करने वालों की। (3)

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ﴿٧١﴾									
71	मालिक है	उन के	पस वह	चौपाए	बनाया अपने हाथों (कुदरत) से	उस से जो	उन के लिए	हम ने पैदा किया	या क्या वह नहीं देखते?
وَدَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ									
फाइदे	उन में	और उन के लिए	72	वह खाते हैं	और उन से	उन की सवारी	पस उन से	उन के लिए	और हम ने फरमांवरदार किया उन्हें
وَمَشَارِبٌ أَفْلا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لَّعَلَّهُمْ									
शायद वह	और माबूद	अल्लाह के सिवा	और उन्होंने ने बना लिए	73	क्या फिर वह शुक्र नहीं करते?	और पीने की चीज़ें			
يُنْصَرُونَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحَضَّرُونَ ﴿٧٥﴾									
75	हाज़िर किए जाएंगे	लशकर	उन के लिए	और वह	उन की मदद	वह नहीं कर सकते	74	मदद किए जाएं	
فَلَا يَحْزَنكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٦﴾ أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ									
इन्सान	क्या नहीं देखा	76	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो वह छुपाते हैं	वेशक हम जानते हैं	उन की बात	पस आप (स) को मग़मूम न करे	
أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا									
एक मिसाल	हमारे लिए	और उस ने बयान की	77	खुला	झगड़ा लू	वह	फिर नागहां	तुत्फ़े से	कि हम ने पैदा किया उस को
وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي									
वह जिस ने	उसे ज़िन्दा करेगा	फ़रमा दें	78	गल गई	जब कि वह	हड्डियां	कौन ज़िन्दा करेगा	कहने लगा	अपनी पैदाइश और भूल गया
أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٧٩﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّن									
से	तुम्हारे लिए	पैदा किया	जिस ने	79	जानने वाला	पैदा करना	हर तरह	और वह	उसे पैदा किया
الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِّنْهُ تُوقَدُونَ ﴿٨٠﴾ أَوَلَيْسَ الَّذِي									
वह जिस ने	क्या नहीं	80	सुलगाते हो	उस से	तुम	पस अब	आग	सब्ज़	दरख़्त
خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ بِقَدْرِ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ ۚ وَهُوَ									
और वह	हाँ	उन जैसा	वह पैदा करे	कि	पर	क़ादिर	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया
الْخَلْقِ الْعَلِيمِ ﴿٨١﴾ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٨٢﴾									
82	तो वह हो जाती है	हो जा	उस को	वह कहता है	कि	वह इरादा करे किसी शै का	जब	उस का काम	इस के सिवा नहीं
81	दाना	बड़ा पैदा करने वाला							
فَسُبْحَنَّ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾									
83	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	हर शै	वादशाहत	उस के हाथ में	वह जिस	सो पाक है		
آيَاتُهَا ۝ ۱۸۲ ۝ سُورَةُ الصَّفَّتِ ۝ رُكُوعَاتُهَا ۝									
(37) सूरतुस साफ़ात									
रुक़ाअत 5 सफ़ बांधने वाले आयत 182									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
وَالصَّفَّتِ صَفًّا ﴿١﴾ فَالزُّجَرِ زَجْرًا ﴿٢﴾ فَالتَّلِيتِ ذِكْرًا ﴿٣﴾									
3	ज़िक्र (कुरआन)	फिर तिलावत करने वाले	2	झिड़क कर	फिर डांटने वाले	1	परा जमा कर	क़सम सफ़ बान्धने वाले	

وقل

وقل غفران ۱۲

۵ ۴

الزّ

إِنَّ إِلَهُكُمْ لَوَاحِدٌ ٤ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ								
वेशक	तुम्हारा माबूद	अलबत्ता एक	4	रब	आस्मानों	और ज़मीन	और जो उन के दरमियान	और रब
الْمَشَارِقِ ٥ إِنَّا زَيْنَا السَّمَاءِ الدُّنْيَا بِزَيْنَةِ الْكَوَاكِبِ ٦ وَحِفْظًا								
मशरिकों	5	वेशक हम ने मुज़ैयन किया	आस्माने दुनिया	ज़ीनत से	सितारे	6	और महफूज़ किया	
مِّنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ٧ لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَا الْأَعْلَىٰ وَيُقَذَّفُونَ								
से	हर शैतान	सरकश	7	कान नहीं लगा सकते	तरफ़	मलाए आला	और मारे जाते हैं	
مِّنْ كُلِّ جَانِبٍ ٨ دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ٩ إِلَّا مَن خَطِفَ								
से	हर तरफ़	8	भगाने को	और उन के लिए	अज़ावे दाइमी	9	सिवाए	ले भागा
الْخَطِفَةِ فَاتَّبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ١٠ فَاسْتَفْتِهِمْ أَهَمْ أَسَدٌ خَلَقًا أَمْ								
उचक कर	तो उस के पीछे लगा	एक अंगारा दहकता हुआ	10	पस उन से पूछें	क्या उन	ज़ियादा मुशकिल पैदा करना	या	
مَّنْ خَلَقْنَا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّنْ طِينٍ لَّازِبٍ ١١ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ١٢								
जो	हम ने पैदा किया	वेशक हम ने पैदा किया उन्हें	से	मिट्टी चिपकती हुई	11	बल्कि	आप (स) ने तज़ज़ुब किया	और वह मज़ाक़ उड़ाते हैं 12
وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ١٣ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ١٤ وَقَالُوا إِن								
और जब	नसीहत की जाए	वह नसीहत कुबूल नहीं करते	13	और जब	वह देखते हैं कोई निशानी	वह हँसी में उड़ा देते हैं	14	और उन्होंने ने कहा नहीं
هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ١٥ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ١٦								
यह	मगर-सिर्फ़	जादू खुला	15	क्या हम मर गए	हम और हम मिट्टी	और हड्डियाँ	क्या हम	फिर उठाए जाएंगे 16
أَوْ آبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ١٧ قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَخِرُونَ ١٨ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ								
क्या	हमारे बाप दादा पहले	17	फ़रमा दें	हाँ	और तुम	ज़लील ओ ख़ार	18	पस इस के सिवा नहीं वह ललकार
وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ١٩ وَقَالُوا يُوَيْلَنَا هَذَا يَوْمَ الدِّينِ ٢٠ هَذَا								
एक	पस नागहां	वह	देखने लंगेंगे	19	और वह कहेंगे	हाए हमारी ख़राबी	यह	वदले का दिन 20
يَوْمَ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ٢١ أَحْشَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا ٢								
फ़ैसले का दिन	वह जिस	तुम थे	उस को	झुटलाते	21	तुम जमा करो	वह जिन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)	
وَأَرْوَاهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ٢٢ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ								
और उन के जोड़े (साथी)	और जिस	वह परसतिश करते थे	22	अल्लाह के सिवा	पस तुम उन को दिखाओ	तरफ़	रास्ता	
الْجَحِيمِ ٢٣ وَقَفَّوهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ ٢٤ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ٢٥								
जहनन्म	23	और ठहराओ उन को	वेशक वह	उन से पुर्शिष होगी	24	क्या हुआ तुम्हें	तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते	25
بَلْ هُمْ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ٢٦ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ٢٧								
बल्कि वह	आज	सर झुकाए फ़रमावरदार	26	और रुख़ करेगा	उन में से बाज़ (एक)	वाज़ पर दूसरे की तरफ़	वाहम सवाल करते हुए	27
قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ٢٨ قَالُوا بَلْ لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ٢٩								
वह कहेंगे	वेशक तुम	तुम हम पर आए थे	दाएं तरफ़ से	28	वह कहेंगे	बल्कि	तुम न थे	ईमान लाने वाले 29

(4) वेशक तुम्हारा माबूद एक ही है। परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन दोनों के दरमियान है, और परवरदिगार है मशरिकों (सुकामाते तुलुअ) का। (5) वेशक हम ने मुज़ैयन किया आस्माने दुनिया को सितारों की ज़ीनत से। (6) और हर सरकश शैतान से महफूज़ किया। (7) और मलाए आला (ऊपर की मजलिस) की तरफ़ कान नहीं लगा सकते, हर तरफ़ से (अंगारे) मारे जाते हैं। (8) भगाने को और उन के लिए दाइमी अज़ाब है। (9) सिवाए उस के जो उचक कर ले भागा तो उस के पीछे एक दहकता हुआ अंगारा लगा। (10) पस आप (स) उन से पूछें: क्या उन का पैदा करना ज़ियादा मुशकिल है या जो (मखलूक़) हम ने पैदा की? वेशक हम ने उन्हें चिपकती हुई मिट्टी (गारे) से पैदा किया। (11) बल्कि आप ने (उन की हालत पर) तज़ज़ुब किया और वह मज़ाक़ उड़ाते हैं। (12) और जब उन्हें नसीहत की जाए तो वह नसीहत कुबूल नहीं करते। (13) और जब कोई निशानी देखते हैं तो वह हँसी में उड़ा देते हैं। (14) और उन्होंने ने कहा यह तो सिर्फ़ खुला जादू है। (15) क्या जब हम मर गए और हम मिट्टी और हड्डियाँ हो गए? क्या हम फिर उठाए जाएंगे? (16) क्या हमारे पहले बाप दादा (भी)? (17) आप (स) फ़रमा दें हाँ! और तुम ज़लील ओ ख़ार होगे। (18) पस इस के सिवा नहीं कि वह एक ललकार होगी, पस नागहां वह देखने लंगेंगे। (19) और वह कहेंगे, हाए हमारी ख़राबी! यह वदले का दिन है। (20) यह फ़ैसले का दिन है, वह जिस को तुम झुटलाते थे। (21) तुम जमा करो ज़ालिमों और उन के साथियों को और जिस की वह परसतिश करते थे। (22) अल्लाह के सिवाए। पस तुम उन को जहनन्म का रास्ता दिखाओ। (23) और उन को ठहराओ, वेशक उन से पुर्शिष होगी। (24) तुम्हें क्या हुआ? तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते। (25) बल्कि वह आज सर झुकाए फ़रमावरदार (अपने आप को पकड़वाते) हैं। (26) और उन में से एक दूसरे की तरफ़ वाहम सवाल करते हुए रुख़ करेगा। (27) वह कहेंगे वेशक तुम हम पर दाएं तरफ़ से (वड़े ज़ोर से) आते थे। (28) वह कहेंगे (नहीं) बल्कि तुम ईमान लाने वाले न थे। (29)

और हमारा तुम पर कोई ज़ोर न था, बल्कि तुम एक सरकश कौम थे। (30) पस हम पर हमारे रब की बात साबित हो गई, बेशक हम अलबत्ता (मज़ा) चखने वाले हैं। (31) पस हम ने तुम्हें बहकाया, बेशक हम (खुद) गुमराह थे। (32) पस बेशक वह उस दिन अज़ाब में (भी) शरीक रहेंगे। (33) बेशक हम इसी तरह करते हैं मुज़्रिमों के साथ। (34) बेशक जब उन से कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं (तो) वह तकव्वुर करते थे। (35) और वह कहते हैं: क्या हम अपने माबूदों को छोड़ दें? एक शायर दीवाने की खातिर। (36) बल्कि वह (स) हक के साथ आए हैं और वह (स) तसदीक करते हैं रसूलों की। (37) बेशक तुम दर्दनाक अज़ाब ज़रूर चखने वाले हो। (38) और तुम्हें बदला न दिया जाएगा मगर (उस के मुताबिक) जो तुम करते थे। (39) (हाँ) मगर अल्लाह के खास किए हुए (चुने हुए) बन्दे। (40) उन के लिए रिज़्क मालूम (मुकर्रर) है। (41) (यानी) मेवे, और वह एज़ाज़ वाले होंगे। (42) नेमत के बागात में। (43) तख्तों पर आमने सामने। (44) दौरा होगा उन के आगे बहते हुए (साफ़) मशरूब के जाम का। (45) सफ़ेद रंग का, पीने वालों के लिए लज़ज़त (देने वाला)। (46) न उस में दर्दसर होगा और न वह उस से बहकी बहकी बातें करेंगे। (47) और उन के पास होंगी नीची निगाहों वालियाँ, बड़ी बड़ी आँखों वालियाँ। (48) गोया वह अंडे हैं पोशीदा रखे हुए। (49) फिर उन में से एक दूसरे की तरफ़ बाहम सवाल करते हुए रख करेगा। (50) उन में से एक कहने वाला कहेगा: बेशक (दुनिया में) मेरा एक हमनशीन था। (51) वह कहा करता था क्या तू (क़ियामत को) सच मानने वालों में से है? (52) क्या जब हम मर गए और हम हो गए मिट्टी और हड्डियाँ, क्या हमें बदला दिया जाएगा? (53) वह कहेगा क्या तुम झाँकने वाले हो (दोज़ख़ी को झाँक कर देख सकते हो?) (54) तो वह झाँकेगा तो उसे देखेगा दोज़ख़ के दरमियान में। (55) वह कहेगा अल्लाह की क़सम! करीब था कि तू मुझे हलाक कर डाले। (56)

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا									
और	हमारा	तुम पर	कोई ज़ोर	बल्कि	तुम थे	एक कौम	सरकश	30	पस साबित हो गई
قَوْلُ رَبِّنَا ۖ اِنَّا لَذٰٓئِقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَاَعْوَيْنٰكُمۡ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾ فَاِنَّهُمْ									
वात	हमारा रब	बेशक हम	अलबत्ता चखने वाले	31	पस हम ने बहकाया तुम्हें	वेशक हम थे	गुमराह	32	पस बेशक वह
يَوْمَئِذٍۭ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾									
उस दिन	अज़ाब में	मुश्तरिक (शरीक)	33	वेशक हम	इसी तरह	करते हैं	मुज़्रिमों के साथ	34	
اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُوْلُوْنَ									
वेशक वह	वह थे	जब	कहा जाता	उन को	नहीं कोई माबूद	अल्लाह के सिवा	वह तकव्वुर करते थे	35	और वह कहते हैं
اِنَّا لَتٰرِكُوْٓا الْهَيْتٰنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَقَ									
क्या हम	छोड़ देने वाले	अपने माबूद	एक शायर की खातिर	दीवाना	36	बल्कि	वह आए	हक के साथ	और तसदीक की
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّكُمْ لَذٰٓئِقُوْٓا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا									
रसूलों की	37	वेशक तुम	ज़रूर चखने वाले	अज़ाब	दर्दनाक	38	और तुम्हें बदला न दिया जाएगा	मगर जो	
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ									
तुम करते थे	39	मगर	अल्लाह के बन्दे	खास किए हुए	40	यही लोग	उन के लिए		
رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهَ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ فِى جَنَّتِ النَّعِيْمِ ﴿٤٣﴾ عٰلٰی									
रिज़्क मालूम	41	मेवे	और वह	एज़ाज़ वाले होंगे	42	में	नेमत के बागात	43	पर
سُرُرٍ مُّتَقَبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ									
तख्त आमने सामने (जमा)	44	दौरा होगा	उन पर-उन के आगे	जाम	से-का	वहता हुआ शराब	45	सफ़ेद	लज़ज़त
لِّلشَّرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾ لَا فِیْهَا غَوْلٌ ۚ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَعِنْدَهُمْ									
पीने वालों के लिए	46	न उस में	खराबी (दर्द सर)	और न वह	उस से	वहकी बातें करेंगे	47	और उन के पास	
فَصِرَتْ الظُّرُفُ عِیْنٌ ﴿٤٨﴾ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ									
नीची निगाहों वालियाँ	48	बड़ी आँखों वालियाँ	गोया वह	अंडे	पोशीदा रखे हुए	49	पस रख करेगा	उन में से बाज़ (एक)	
عٰلِیۡۤا۟ بَعْضٌ یَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾ قَالَ قَآبِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّیۡۤ اِنِّیۡ كَانَ لِیۡ قَرِیْنٌ ﴿٥١﴾									
बाज़ पर (दूसरे की तरफ़)	50	वाहम सवाल करते हुए	कहेगा	एक कहने वाला	उन में से	वेशक मैं	मेरा	एक हमनशीन	51
یَقُوْلُ ؕاِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٢﴾ ؕاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَآمًا									
वह कहता था	क्या तू	से	सच्चे जानने वाले	52	क्या जब	हम मर गए	और हो गए	मिट्टी	और हड्डियाँ
ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطْلِعُوْنَ ﴿٥٤﴾ فَاَطْلَعْ									
क्या हम	अलबत्ता बदला दिए जाएंगे	53	वह कहने लगा	क्या	तुम	झाँकने वाले हो	54	तो वह झाँकेगा	
فَرَاٰهُ فِیۡ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدَتْ لَتُرْدِيْنَ ﴿٥٦﴾									
तो उसे देखेगा	में	दरमियान	दोज़ख़	55	वह कहेगा	अल्लाह की क़सम	तो करीब था	कि तू मुझे हलाक कर डाले	56

وَلَوْ لَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٥٧﴾ أَفَمَا نَحْنُ						
क्या पस नहीं हम	57	हाज़िर किए जाने वाले	से	तो मैं ज़रूर होता	मेरा रब	नेमत और अगर न
بِمَيِّتَيْنِ ﴿٥٨﴾ إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ﴿٥٩﴾ إِنَّ						
वेशक	59	अज़ाब दिए जाने वालों में से	हम	और नहीं	पहली	हमारी मौत मरने वालों में से
هَذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثْلِ هَذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَمِلُونَ ﴿٦١﴾ أَذَلِكَ						
क्या यह	61	अमल करने वाले	पस चाहिए ज़रूर अमल करें	इस जैसी (नेमत) के लिए	60	कामयाबी अज़ीम अलबत्ता वह यह
خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّوْمِ ﴿٦٢﴾ إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ ﴿٦٣﴾						
63	ज़ालिमों के लिए	एक आजमाइश	हम ने उस को बनाया	वेशक हम	62	थोहर का दरख्त या ज़ियाफ़त बेहतर
إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ﴿٦٤﴾ طُلُعَهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ						
सर (जमा)	गोया कि वह	उस का खोशा	64	जहन्नम	जड़ में	वह निकलता है एक दरख्त वेशक वह
الشَّيْطَانِ ﴿٦٥﴾ فَإِنَّهُمْ لَا كُلُونَ مِنْهَا فَمَا لَكُمْ مِنْهَا الْبُطُونُ ﴿٦٦﴾						
66	पेट (जमा)	उस से	सो भरने वाले	उस से	खाने वाले हैं	पस वेशक वह शैतानों
ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَآلِى						
अलबत्ता तरफ़	उन की वापसी	वेशक फिर	67	खौलता हुआ पानी	से	मिला मिला कर उस पर उन के लिए वेशक फिर
الْجَحِيمِ ﴿٦٨﴾ إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ﴿٦٩﴾ فَهُمْ عَلَىٰ آثَرِهِمْ						
उन के नक्शे क़दम पर	सो वह	69	गुमराह (जमा)	अपने बाप दादा	उन्होंने ने पाया	वेशक वह 68 जहन्नम
يُهْرَعُونَ ﴿٧٠﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٧١﴾						
71	अगलों में से अक्सर	उन से पहले	और तहकीक़ गुमराह हुए	70	दौड़ते जाते थे	
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُّنْذِرِينَ ﴿٧٢﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ						
अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखें	72	डराने वाले	उन में और तहकीक़ हम ने भेजे
الْمُنْذِرِينَ ﴿٧٣﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٧٤﴾ وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوحَ						
नूह (अ)	और तहकीक़ हमें पुकारा	74	खास किए हुए	अल्लाह के बन्दे	मगर	73 जिन्हें डराया गया
فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ﴿٧٥﴾ وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾						
76	बड़ी	मुसीबत	से	और उस के घर वाले	और हम ने नजात दी उसे	75 दुआ कुबूल करने वाले सो हम अलबत्ता खूब
وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ﴿٧٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿٧٨﴾						
78	बाद में आने वाले	में	उस पर-उस का	और हम ने छोड़ा	77	बाकी रहने वाली वह उस की औलाद और हम ने किया
سَلَّمَ عَلَىٰ نُوحٍ فِي الْعِلْمِينَ ﴿٧٩﴾ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٠﴾						
80	नेकोकारों	हम जज़ा देते हैं	इसी तरह	वेशक हम	79	सारे जहानों में नूह (अ) पर सलाम हो
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨١﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخِرِينَ ﴿٨٢﴾						
82	दूसरे	हम ने गर्क कर दिया	फिर	81	मोमिन (जमा)	हमारे बन्दे से वेशक वह

और अगर मेरे रब की नेमत न होती तो मैं ज़रूर (अज़ाब के लिए) हाज़िर किए जाने वालों में से होता। (57) तो क्या अब हम मरने वाले नहीं हैं? (58) सिवाए हमारी पहली मौत (जिस से हम दो चार हो चुके) और न हम अज़ाब दिए जाने वालों में से होंगे? (59) वेशक यही है अज़ीम कामयाबी। (60) पस इस जैसी नेमत के लिए चाहिए कि ज़रूर अमल करें अमल करने वाले। (61) क्या यह बेहतर ज़ियाफ़त है या थोहर का दरख्त? (62) वेशक हम ने उस को एक फ़ितना बनाया है ज़ालिमों के लिए। (63) वेशक वह एक दरख्त है जहन्नम की जड़ (गहराई) में निकलता है। (64) उस का खोशा, गोया कि वह शैतानों के सर (साँपों के फन) है। (65) वेशक वह उस से खाएंगे, सो उस से पेट भरेंगे। (66) फिर वेशक उस (खाने) पर उन के लिए खौलता हुआ पानी (पीप) मिला मिला कर (दिया जाएगा)। (67) फिर उन की वापसी जहन्नम की तरफ़ होगी। (68) वेशक उन्होंने ने अपने बाप दादा को गुमराह पाया था। (69) सो वह उन के नक्शे क़दम पर दौड़ते जाते थे। (70) और तहकीक़ उन से पहले गुमराह हुए थे (उन के) अगलों में से अक्सर। (71) तहकीक़ हम ने उन में डराने वाले (रसूल) भेजे थे। (72) सो आप (स) देखें कैसा हुआ उन का अन्जाम जिन्हें डराया गया था? (73) मगर अल्लाह के खास किए हुए बन्दे (बन्दगाने खास का अन्जाम कितना अच्छा हुआ)। (74) और तहकीक़ नूह (अ) ने हमें पुकारा, सो हम खूब दुआ कुबूल करने वाले हैं। (75) और हम ने उसे और उस के घर वालों को बड़ी मुसीबत से नजात दी। (76) और हम ने किया उस की औलाद को बाकी रहने वाली। (77) और हम ने उस का (ज़िक्रे ख़ैर) बाद में आने वालों में छोड़ा। (78) नूह (अ) पर सलाम हो सारे जहानों में। (79) वेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (80) वेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (81) फिर हम ने दूसरों को गर्क कर दिया। (82)

और वेशक इब्राहीम (अ) उसी के तरीके पर चलने वालों में से थे। (83) जब वह अपने रब के पास आए साफ़ दिल के साथ। (84) (याद करो) जब उस ने अपने बाप और अपनी कौम से कहा: तुम किस (वाहियात) चीज़ की परसतिश करते हो? (85) क्या तुम अल्लाह के सिवा झूट मूट के माबूद चाहते हो? (86) सो तमाम जहानों के परवरदिगार के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है? (87) फिर उस ने सितारों को एक नज़र देखा। (88) तो उस ने कहा वेशक मैं बीमार हूँ। (89) पस वह लोग पीठ फेर कर उस से फिर गए। (90) फिर वह उन के माबूदों में छुप कर घुस गया, फिर वह (बतौर तमसख़र) कहने लगा: क्या तुम नहीं खाते? (91) क्या हुआ तुम्हें? तमू बोलते नहीं? (92) फिर वह पूरी कुव्वत से मारता हुआ उन पर जा पड़ा। (93) फिर वह (बुत परस्त) सुतवज्जुह हुए उसकी तरफ़ दौड़ते हुए (आए)। (94) उस ने फ़रमाया क्या तुम (उनकी) परसतिश करते हो? जो तुम खुद तराशते हो। (95) हालांकि अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, और जो तुम करते (बनाते) हो। (96) उन्होंने ने (एक दूसरे को) कहा: उस के लिए एक इमारत (आतिश ख़ाना) बनाओ, फिर उसे आग में डाल दो। (97) फिर उन्होंने ने उस पर दाओ करना चाहा तो हम ने उन्हें ज़ेर कर दिया। (98) और इब्राहीम (अ) ने कहा: मैं अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूँ, अनकरीब वह मुझे राह दिखाएगा। (99) ऐ मेरे रब! मुझे अता फ़रमा (नेक औलाद) सालेहीन में से। (100) पस हम ने उसे एक बुर्दवार लड़के की वशारत दी। (101) फिर जब वह उस के साथ दौड़ने (की उम्र को) पहुँचा तो इब्राहीम (अ) ने कहा कि ऐ मेरे बेटे! वेशक मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं तुझे जुवह कर रहा हूँ। अब तू देख कि तेरी क्या राए है? उस ने कहा ऐ मेरे अब्बाजान! आप को जो हुक्म किया जाता है वह करें, आप मुझे जल्द ही पाएंगे ईशाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) सवर् करने वालों में से। (102) पस जब दोनों ने हुक्मे इलाही को मान लिया, बाप ने बेटे को पेशानी के बल लिटाया। (103) और हम ने उस को पुकारा कि ऐ इब्राहीम (अ)! (104) तहकीक़ तू ने ख़्वाब को सच कर दिखाया, वेशक हम नेकोकारों को इसी तरह जज़ा दिया करते हैं। (105) वेशक यह खुली आज़माइश (बड़ा इमतिहान था)। (106) और हम ने एक बड़ा ज़बीहा (कुरबानी को) उस का फ़िदया दिया। (107)

وَإِنَّ مِنْ شَيْعَتِهِ لِابْرَهِيمَ ﴿٨٣﴾ إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٤﴾									
और	से	उस के तरीके पर चलने वाले	अलबत्ता इब्राहीम (अ)	83	जब वह आया	अपना रब	दिल के साथ	साफ़	84
إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ﴿٨٥﴾ أَيْفَاكِ إِلَهَةٌ دُونَ اللَّهِ									
जब उस ने कहा	अपने बाप को	और अपनी कौम	किस चीज़	तुम परसतिश करते हो	85	क्या झूट मूट के	माबूद	अल्लाह के सिवा	
تُرِيدُونَ ﴿٨٦﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ﴿٨٨﴾									
तुम चाहते हो	86	क्या	सो	तुम्हारा गुमान	रब के बारे में	87	तमाम जहानों	फिर उस ने देखा	88
فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩०﴾ فَرَاغَ إِلَى إِلَهِهِمْ									
तो उस ने कहा	वेशक मैं	बीमार हूँ	89	पस वह फिर गए	उस से	पीठ फेर कर	90	फिर पोशीदा घुस गया	उन के माबूदों
فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٩१﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ﴿٩२﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ									
फिर कहने लगा	क्या तुम नहीं खाते	91	क्या हुआ तुम्हें?	तुम बोलते नहीं	92	फिर जा पड़ा वह	उन पर		
ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩३﴾ فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزْفُونَ ﴿٩४﴾ قَالَ أَتَعْبُدُونَ									
मारता हुआ	अपने दाएँ हाथ (कुदरत) से	93	फिर वह सुतवज्जुह हुए	उस की तरफ़	दौड़ते हुए	94	उस ने फ़रमाया	क्या तुम परसतिश करते हो	
مَا تَنْحِتُونَ ﴿٩५﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿٩६﴾ قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُيُوتًا									
जो तुम तराशते हो	95	हालांकि अल्लाह	उस ने पैदा किया तुम्हें	और जो	तुम करते हो	96	उन्होंने ने कहा	बनाओ	उस के लिए
فَالْقُوَّةَ فِي الْجَحِيمِ ﴿٩٧﴾ فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾									
फिर डाल दो उसे	आग में	97	फिर उन्होंने ने चाहा	उस पर	दाओ	तो हम ने कर दिया उन्हें	नीचा	98	
وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَى رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ									
और उस (इब्राहीम) ने कहा	वेशक मैं	जाने वाला हूँ	अपने रब की तरफ़	अनकरीब वह मुझे राह दिखाएगा	99	ऐ मेरे रब	मुझे अता फ़रमा	से	
الضَّلَاحِينَ ﴿١००﴾ فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ﴿١०१﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ									
नेक सालेह (जमा)	100	पस वशारत दी हम ने उसे	एक लड़का	बुर्दवार	101	फिर जब	वह पहुँचा	उस के साथ	दौड़ने
قَالَ يُبْنِي إِنِّي أَرَى فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ									
उस ने कहा	ए मेरे बेटे	वेशक मैं देखता हूँ	मैं	ख़्वाब	कि मैं	तुझे जुवह कर रहा हूँ	अब तू देख	क्या	तेरी राए
قَالَ يَآبَتِ أَفْعَلُ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنْ									
उस ने कहा	ऐ मेरे अब्बा जान	आप करें	जो हुक्म आप को किया जाता है	आप जलद ही मुझे पाएंगे	अगर	अल्लाह ने चाहा	से		
الصَّبْرِينَ ﴿١०२﴾ فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ﴿١०३﴾ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا اِبْرَاهِيمَ ﴿١०४﴾									
सवर् करने वाले	102	पस जब	दोनों ने हुक्मे (इलाही) मान लिया	(बाप ने बेटे को) लिटाया	पेशानी के बल	103	और हम ने उस को पुकारा	कि	ऐ इब्राहीम (अ)
قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١०५﴾ إِنَّ هَذَا									
तहकीक़ तू ने सच कर दिखाया	ख़्वाब	वेशक हम इसी तरह	हम जज़ा दिया करते हैं	नेकोकारों	105	वेशक यह			
لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ﴿١०६﴾ وَفَدَيْنَاهُ بِذَبْحٍ عَظِيمٍ ﴿١०७﴾									
अलबत्ता वह	आज़माइश	खुली	106	और हम ने उस का फिदया दिया	एक ज़बीहा	बड़ा	107		

وَتَرْكُنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٠٨﴾ سَلَّمَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿١٠٩﴾ كَذَلِكَ							
और हम ने	उस पर (उस का ज़िक्रे ख़ैर)	बाद में आने वालों में	108	सलाम	पर	इब्राहीम (अ)	109 इसी तरह
نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٠﴾ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنَاهُ							
हम जज़ा दिया करते हैं	नेकोकारों	110	वेशक वह	से	हमारे बन्दे	मोमिनीन	111 और हम ने उसे बशारत दी
بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٢﴾ وَبَرْكُنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ							
इसहाक (अ) की	एक नबी	से	सालेहीन	112	और हम ने बरकत नाज़िल की	उस पर-उस को	और पर
وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ مُبِينٌ ﴿١١٣﴾ وَلَقَدْ مَنَّآ							
और से-में	उन दोनों की औलाद	नेकोकार	और जुल्म करने वाला	अपनी जान पर	सरीह	113	और तहकीक अलबत्ता
عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١١٤﴾ وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿١١٥﴾							
मूसा (अ) पर	और हारून (अ)	114	और उन दोनों को नजात दी	और उन की कौम	से	ग़म	बड़ा
وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٦﴾ وَآتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ﴿١١٧﴾							
और हम ने मदद की उन की	तो वह रहे	वही	ग़ालिब (जमा)	116	और हम ने उन दोनों को दी	किताब	वाज़ेह
وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرْكُنَا عَلَيْهِمَا							
और हम ने उन दोनों को हिदायत दी	रास्ता	सीधा	118	और हम ने बाकी रखा	उन दोनों पर (उन का ज़िक्रे ख़ैर)		
فِي الْآخِرِينَ ﴿١١٩﴾ سَلَّمَ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١٢٠﴾ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي							
बाद में आने वालों में	सलाम	119	मूसा (अ) पर	और हारून (अ)	120	वेशक हम इसी तरह	हम जज़ा देते हैं
الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢١﴾ إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٢﴾ وَإِنَّ إِلْيَاسَ							
नेकोकारों	121	वेशक वह दोनों	से	हमारे बन्दे	मोमिनीन	122	और वेशक
لَّمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ آلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾ أَتَدْعُونَ							
अलबत्ता-से	रसूलों	123	जब उस ने कहा	अपनी कौम को	क्या तुम नहीं डरते	124	क्या तुम पुकारते हो
بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَلْقِينَ ﴿١٢٥﴾ اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبَّ آبَائِكُمُ							
बअल	और तुम छोड़ देते हो	सब से बेहतर	पैदा करने वाला (जमा)	125	अल्लाह	तुम्हारा रब	और तुम्हारे बाप दादा
الْأَوَّلِينَ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٢٧﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ							
पहले	126	पस उन्होंने ने झुटलाया	तो वेशक वह	वह ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे	127	सिवाए	अल्लाह के बन्दे
الْمُخْلِصِينَ ﴿١٢٨﴾ وَتَرْكُنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٢٩﴾ سَلَّمَ عَلَىٰ							
मुखलिस (जमा)	128	और हम ने बाकी रखा उस पर (उस का ज़िक्रे ख़ैर)	बाद में आने वालों में	129	सलाम	पर	
إِلَّا يَاسِينَ ﴿١٣٠﴾ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣١﴾ إِنَّهُ مِنْ							
इलयासीन (इलयास अ)	130	वेशक हम इसी तरह	जज़ा दिया करते हैं	नेकोकारों	131	वेशक वह	से
عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾ وَإِنَّ لُوطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٣﴾							
हमारे बन्दे	मोमिनीन	132	और वेशक	लूत (अ)	अलबत्ता-से	रसूल (जमा)	133

और हम ने उसका ज़िक्र खैर बाद में आने वालों में बाकी रखा। (108) सलाम हो इब्राहीम (अ) पर। (109) इसी तरह हम नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं। (110) वेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से था। (111) और हम ने उसे बशारत दी इसहाक (अ) की (कि वह) एक नबी सालेहीन में से होगा। (112) और हम ने उस पर बरकत नाज़िल की और इसहाक (अ) पर, और उन दोनों की औलाद में नेकोकार (भी हैं) और अपनी जान पर सरीह जुल्म करने वाले (भी)। (113) और तहकीक हम ने मूसा (अ) और हारून (अ) पर एहसान किया। (114) और हम ने उन दोनों को और उन की कौम को बड़े ग़म (फ़िराज़ के मज़ालिम) से नजात दी। (115) और हम ने उन की मदद की, तो वही ग़ालिब रहे। (116) और हम ने उन दोनों को वाज़ेह किताब दी। (117) और उन दोनों को सीधे रास्ते की हिदायत दी। (118) और हम ने उन दोनों का ज़िक्र खैर बाद में आने वालों में बाकी रखा। (119) सलाम हो मूसा (अ) और हारून (अ) पर। (120) वेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (121) वेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (122) और वेशक इलयास (अ) रसूलों में से थे। (123) (याद करो) जब उस ने अपनी कौम से कहा क्या तुम (अल्लाह से) नहीं डरते? (124) क्या तुम बअल (बुत) को पुकारते हो? और तुम सब से बेहतर पैदा करने वाले को छोड़ते हो। (125) (यानी) अल्लाह को (जो) तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे पहले बाप दादा का (भी) रब है। (126) पस उन्होंने ने उसे झुटलाया तो वेशक वह ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे (पकड़े जाएंगे)। (127) अल्लाह के मुखलिस (खास बन्दों) के सिवा। (128) और हम ने उस का ज़िक्र खैर बाकी रखा बाद में आने वालों में। (129) सलाम हो इलयास (अ) पर। (130) वेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं। (131) वेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (132) और वेशक लूत (अ) रसूलों में से थे। (133)

(याद करो) जब हम ने नजात दी उसे ओर उस के सब घर वालों को। (134) पीछे रह जाने वालों में से एक बुढ़िया के सिवा। (135) फिर हम ने और सब को हलाक किया। (136) और बेशक तुम सुबह होते और रात में उन पर (उन की वस्तियों से) गुज़रते हो। (137) तो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते? (138) और बेशक यूनस (अ) अलबत्ता रसूलों में से थे। (139) जब वह भाग कर भरी हुई कश्ती (के पास) गए। (140) तो उन्होंने ने कुरआ डाला, सो वह (कश्ती से) धकेले गए। (141) फिर उन्हें मछली ने निगल लिया और वह (अपने आप को) मलामत कर रहे थे। (142) फिर अगर वह तस्वीह करने वालों में से न होते। (143) तो वह उस के पेट में क़ियामत के दिन तक रहते। (144) फिर हम ने उन्हें चटयल मैदान में फेंक दिया और वह वीमार थे। (145) और हम ने उगाया उस पर एक वेलदार दरख्त। (146) और हम ने उसे एक लाख या उस से ज़ियादा लोगों की तरफ़ भेजा। (147) सो वह लोग ईमान लाए और हम ने उन्हें एक मुदत तक के लिए फाइदा उठाने दिया। (148) पस आप (स) उन से पूछें क्या तेरे रब के लिए बेटियां हैं और उन के लिए बेटे? (149) क्या हम ने फ़रिशतों को औरत ज़ात पैदा किया है? और वह देख रहे थे? (150) याद रखो, बेशक वह अपनी बुहतान तराज़ी से कहते हैं। (151) (कि) अल्लाह साहिबे औलाद है, और वह बेशक झूटे हैं। (152) क्या उस ने बेटियों को बेटों पर पसंद किया? (153) तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा फ़सला करते हो? (154) तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (155) क्या तुम्हारे पास कोई खुली सनद है? (156) तो अपनी वह किताब ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (157) और उन्होंने ने उस के और जिन्नात के दरमियान एक रिश्ता ठहराया, और तहकीक़ जान लिया जिन्नात ने के बेशक वह (अज़ाब में) हाज़िर (गिरफ़्तार) किए जाएंगे। (158) अल्लाह उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (159) सिवाए अल्लाह के चुने हुए बन्दे। (160)

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٣٤﴾ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغُرَيْنِ ﴿١٣٥﴾ ثُمَّ										
फिर	135	पीछे रह जाने वाले	में	एक बुढ़िया	सिवाए	134	सब	और उस के घर वाले	हम ने उसे नजात दी	जब
دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٣٦﴾ وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ ﴿١٣٧﴾ وَبِالْأَيْلِ										
और रात में	137	सुबह करते हुए (सुबह होते)	उन पर	अलबत्ता गुज़रते हो	और बेशक तुम	136	औरों को	हम ने हलाक किया		
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٣٨﴾ وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٩﴾ إِذْ أَبَقَ إِلَى										
तरफ़	भाग गए वह	जब	139	रसूलों	अलबत्ता - से	यूनस (अ)	और बेशक	138	तो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते	
الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١٤٠﴾ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿١٤١﴾										
	141	धकेले गए	से	सो वह हुआ	तो कुरआ डाला	140	भरी हुई	कश्ती		
فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿١٤٣﴾										
143	तस्वीह करने वाले	से	होता	यह कि वह	फिर अगर न	142	मलामत करने वाला	और वह	मछली	फिर उसे निगल लिया
لَلْبَيْتِ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤٤﴾ فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ										
और वह	चटयल मैदान में	फिर हम ने उसे फेंक दिया	144	दोबारा जी उठने के दिन (रोज़े हश्र)	तक	उस के पेट में	अलबत्ता रहता			
سَقِيمٌ ﴿١٤٥﴾ وَانْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِينٍ ﴿١٤٦﴾ وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى										
तरफ़	और हम ने भेजा उस को	146	बेलदार	से	दरख़्त	उस पर	और हम ने उगाया	145	वीमार	
مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ﴿١٤٧﴾ فَاَمْنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١٤٨﴾										
148	एक मुदत तक	तो हम ने उन्हें फाइदा उठाने दिया	सो वह ईमान लाए	147	उस से ज़ियादा	या	एक लाख			
فَاسْتَفْتَيْهِمَ الرِّبَّكَ الْبَنَاتِ وَلَهُمُ الْبُنُونَ ﴿١٤٩﴾ أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ										
फ़रिशते	हम ने पैदा किया	क्या	149	बेटे	और उन के लिए	बेटियां	क्या तेरे रब के लिए	पस पूछें उन से		
إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿١٥٠﴾ أَلَا إِنَّهُمْ مِّنْ أَفْكَهٍ لِّقَوْلُونَ ﴿١٥١﴾										
151	अलबत्ता कहते हैं	अपनी बुहतान तराज़ी	से	बेशक वह	याद रखो	150	देख रहे थे	और वह	औरत	
وَلَدَ اللَّهُ ۖ وَانَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٥٢﴾ اصْطَفَىٰ الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿١٥٣﴾										
153	बेटों पर	बेटियां	क्या उस ने पसंद किया	152	झूटे	और बेशक वह	अल्लाह साहिबे औलाद			
مَا لَكُمْ ۖ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٤﴾ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾ أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ										
कोई सनद	तुम्हारे पास	क्या	155	तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?	154	तुम फैसला करते हो	कैसा	तुम्हें क्या हो गया		
مُّبِينٌ ﴿١٥٦﴾ فَاتُّوْا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿١٥٧﴾ وَجَعَلُوْا بَيْنَهُ										
उस के दरमियान	और उन्होंने ने ठहराया	157	सच्चे	तुम हो	अगर	अपनी किताब	तो ले आओ	156	खुली	
وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۖ وَلَقَدْ عَلِمْتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾										
158	हाज़िर किए जाएंगे	बेशक वह	जिन्नात	और तहकीक़ जान लिया	एक रिश्ता	जिन्नात	और दरमियान			
سُبْحٰنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٠﴾										
160	खास किए हुए (चुने हुए)	अल्लाह के बन्दे	मगर	159	वह बयान करते हैं	उस से जो	पाक है अल्लाह			

فَانْكُم وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿١٦١﴾ مَا اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفِتْنَيْنِ ﴿١٦٢﴾ اِلَّا مَنْ هُوَ									
जो - वह	सिवाए	162	उस के खिलाफ बहकाने वाले	नहीं हो तुम	161	तुम परस्तिश करते हो	और जो	तो वेशक तुम	
صَالِ الْجَحِيمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مِتَّ اِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿١٦٤﴾ وَاِنَّا لَنَحْنُ									
अलबत्ता हम	और वेशक हम	164	एक सुअय्यन दर्जा	मगर उस के लिए	हम में से	और नहीं	163	जहनन्म	जाने वाला
الصَّافُونَ ﴿١٦٥﴾ وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ﴿١٦٦﴾ وَاِنْ كَانُوا لَيَقُولُنَّ ﴿١٦٧﴾									
167	कहा करते	वह थे	और वेशक	166	तस्वीह करने वाले	अलबत्ता हम	और वेशक हम	165	सफ़ वस्ता होने वाले
لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٩﴾									
169	खास किए (मुंतख़िब)	अल्लाह के बन्दे	ज़रूर हम होते	168	पहले लोग	से	कोई नसीहत हमारे पास	अगर होती	
فَكَفَرُوا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا									
अपने बन्दों के लिए	हमारा वादा	और पहले सादिर हो चुका है	170	वह जान लेंगे	तो अनक़रीब	उस का	फिर उन्होंने ने इन्कार किया		
الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧١﴾ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ﴿١٧٢﴾ وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ									
अलबत्ता वही	हमारा लशकर	और वेशक	172	फतहमन्द	अलबत्ता वही	वेशक वह	171	रसूलों	
الْغَالِبُونَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاَبْصَرُهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٥﴾									
175	वह देख लेंगे	पस अनक़रीब	और उन्हें देखते रहें	174	एक वक़्त तक	तक	उन से पस एराज़ करें	173	ग़ालिब (जमा)
اَفِعْدَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٧٦﴾ فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ									
सुबह	तो बुरी	उन के मैदान में	वह नाज़िल होगा	तो जब	176	वह जल्दी कर रहे हैं	तो क्या हमारे अज़ाब के लिए		
الْمُنْذِرِينَ ﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنَ ﴿١٧٨﴾ وَاَبْصَرُ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٩﴾									
179	वह देख लेंगे	पस अनक़रीब	और देखते रहें	178	एक मुदत तक	उन से	और एराज़ करें	177	जिन को डराया जा चुका है
سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلَامٌ عَلَى									
पर	और सलाम	180	वह वयान करते हैं	उस से जो	इज़ज़त वाला रब	तुम्हारा रब	पाक है		
الْمُرْسَلِينَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٢﴾									
182	तमाम जहानों का रब	और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए	181	रसूलों					
آيَاتُهَا ٨٨ ﴿ ٣٨ ﴾ سُورَةُ ص ﴿ ٥ ﴾ زُكُوعَاتُهَا ٥									
रुक़ात 5 (38) सूरह साद आयत 88									
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
ص وَالْقُرْآنِ ذِی الذِّکْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِیْنَ کَفَرُوا فِی عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ﴿٢﴾									
2	और मुख़ालिफ़त	घमंड में	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	बल्कि	1	नसीहत देने वाला	कुरआन की क़सम	साद	
کَمْ اَهْلَکْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوا وَّلَاتِ حِیْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾									
3	छुटकारा	वक़्त	और न था	तो वह फर्याद करने लगे	उम्मतें	उन से क़ब्ल	हम ने हलाक कर दी	कितनी ही	

तो वेशक तुम और वह जिन की तुम परस्तिश करते हो। (161) तुम नहीं बहका सकते उस (अल्लाह) के खिलाफ़ (किसी को)। (162) उस के सिवा जो जहन्नम में जाने वाला है। (163) और (फ़रिशतों ने कहा) हम में से कोई भी ऐसा नहीं जिस का एक मुअय्यन दर्जा न हो। (164) और वेशक हम ही सफ़ वस्ता रहने वाले हैं। (165) और वेशक हम ही तस्वीह करने वाले हैं। (166) और वेशक वह (कुफ़ारे मक्का) कहा करते थे। (167) अगर हमारे पास होती पहले लोगों की कोई (किताब) नसीहत। (168) तो हम ज़रूर अल्लाह के मुंतख़िब बन्दों में से होते। (169) फिर उन्होंने ने उस का इन्कार किया तो वह अंनकरीब (उस का अन्जाम) जान लेंगे। (170) और हमारा वादा अपने बन्दों (यानी) रसूलों के लिए पहले (ही) सादिर हो चुका है। (171) वेशक वही फ़तह मन्द होंगे। (172) और वेशक अलबत्ता हमारा लशकर ही ग़ालिब रहेगा। (173) पस आप (स) एक वक़्त तक (थोड़ा अ़सा) उन से एराज़ करें। (174) और उन्हें देखते रहें, पस अंनकरीब वह (अपना अन्जाम) देख लेंगे। (175) तो क्या वह हमारे अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं? (176) तो जब वह उन के मैदान में नाज़िल होगा तो उन की सुबह बुरी होगी जिन्हें डराया जा चुका है। (177) और आप (स) एक मुदत तक (थोड़ा अ़सा) उन से एराज़ करें। (178) और देखते रहें, पस अंनकरीब वह (अपना अन्जाम) देख लेंगे। (179) पाक है तुम्हारा रब इज़ज़त वाला रब, उस से जो वह बयान करते हैं। (180) और सलाम हो रसूलों पर। (181) और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए जो तमाम जहानों का रब है। (182) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है साद। नसीहत देने वाले कुरआन की क़सम! (1) (आप की दावत बर हक़ है) बल्कि जिन लोगों ने कुफ़ किया वह घमंड और मुख़ालिफ़त में हैं। (2) कितनी ही उम्मतें उन से क़ब्ल हम ने हलाक कर दी तो वह फ़र्याद करने लगे और (अब) छुटकारे का वक़्त न था। (3)

और उन्होंने ने तअज़्जुब किया कि उन के पास उन में से एक डराने वाला आया, और काफ़िरों ने कहा: यह जादूगर है, झूटा है। (4) क्या उस ने सारे माबूदों को बना दिया है एक माबूद, वेशक यह तो एक बड़ी अजीब बात है। (5) और उन के कई सरदार यह कहते हुए चल पड़े कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, वेशक यह सोची समझी स्कीम है। (6) हम ने पिछले मज़हब में ऐसी (बात) नहीं सुनी, यह तो महज़ मन घड़त है। (7) क्या हम में से उसी परे अल्लाह का कलाम नाज़िल क्या गया? (हाँ) बल्कि वह शक में है मेरी नसीहत से, बल्कि (अभी) उन्होंने ने मेरा अज़ाब नहीं चखा। (8) क्या तुम्हारे रब की रहमत के खज़ाने उन के पास हैं? जो ग़ालिब, बहुत अता करने वाला है। (9) क्या उन के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की और जो उन के दरमियान है? तो वह (आस्मानों पर) चढ़ जाएं रससियां तान कर। (10) शिकस्त ख़ुर्दा गिरोहों में से यह भी एक लशकर है। (11) उन से पहले झुटलाया कौमे नूह (अ) ने और आद और मीखों वाले फ़िराओन ने। (12) और समूद और कौमे लूत, और अयका वालों ने, गिरोह वह थे। (13) उन सब ने रसूलों को झुटलाया, पस (उन पर) अज़ाब आ पड़ा। (14) और इन्तिज़ार नहीं करते यह लोग मगर एक चिंघाड़ का, जिस में कोई ढील (गुन्जाइश) न होगी। (15) और उन्होंने ने (मज़ाक़ के तौर पर) कहा कि ऐ हमारे रब: हमें जल्दी दे हमारा हिस्सा रोज़े हिसाब से पहले। (16) जो वह कहते हैं उस पर आप (स) सब्र करें, और याद करें हमारे बन्दे दाऊद (अ) कुव्वत वाले को, वेशक वह खूब रूजूअ करने वाला था। (17) वेशक हम ने पहाड़ उस के साथ मुसख़्ख़र कर दिए थे, वह सुबह ओ शाम तस्वीह करते थे। (18)

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكَافِرُونَ هَذَا سِحْرٌ							
यह जादूगर	काफ़िर (जमा)	और कहा	उन में से	एक डराने वाला	उन के पास आया	कि	और उन्होंने ने तअज़्जुब किया
كَذَابٌ ۚ أَجْعَلِ الْآلِهَةَ إِلَهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝							
झूटा	4	क्या उस ने बना दिया	सारे माबूदों	माबूद	एक	वेशक यह	एक शौ (बात)
5	बड़ी अजीब						
وَانْطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنْ امْشُوا وَاصْبِرُوا عَلَى إِلِهَتِكُمْ ۖ إِنَّ هَذَا							
और चल पड़े	सरदार	उन के	कि	चलो	और जमे रहो	अपने माबूदों पर	वेशक यह
لَشَيْءٌ يُرَادُ ۖ مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْمِلَّةِ الْآخِرَةِ ۖ إِنْ هَذَا إِلَّا							
कोई शौ (बात)	इरादा की हुई (मतलब की)	6	हम ने नहीं सुना	ऐसी	में	मज़हब	पिछला
मगर-महज़	यह	नहीं					
اِخْتِلَاقٌ ۚ ءَأَنْزَلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ							
मन घड़त	7	क्या नाज़िल किया गया	उस पर	ज़िक्र (कलाम)	हम में से	बल्कि	वह
शक में							
مِّنْ ذِكْرِي ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوقُوا عَذَابِ ۚ أَمْ عَنْدهُمْ خَزَائِنُ							
मेरी नसीहत से	बल्कि	नहीं	चखा उन्होंने ने	मेरा अज़ाब	8	क्या	उन के पास
खज़ाने							
رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۚ أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ							
तुम्हारे रब की रहमत	ग़ालिब	बहुत अता करने वाला	9	क्या उन के लिए	बादशाहत आस्मानों	और ज़मीन	
وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ۚ ۝							
और जो उन दोनों के दरमियान	तो वह चढ़ जाएं	रससियों में (रससियां तान कर)	10	एक लशकर	जो	यहां	शिकस्त ख़ुर्दा
مِّنَ الْأَحْزَابِ ۚ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ۚ							
गिरोहों में से	11	झुटलाया	उन से पहले	कौमे नूह	और आद	और फ़िराओन	कीलों वाला
12							
وَتَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَبُ لَيْكَةِ ۚ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ۚ ۝							
और समूद	और कौमे लूत	और अयका वाले	वह थे	गिरोह	13	नहीं	
كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۚ ۝							
सब	मगर	झुटलाया	रसूलों	पस आ पड़ा	अज़ाब	14	और इन्तिज़ार नहीं करते
यह लोग							
إِلَّا صِيْحَةً وَاحِدَةً ۚ مَا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۚ ۝							
मगर	चिंघाड़	एक	जिस के लिए नहीं	कोई	ढील	15	और उन्होंने ने कहा
ऐ हमारे रब							
عَجَلْ لَّنَا قِطْنًا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۚ ۝							
जल्दी दे	हमें	हमारा हिस्सा	पहले	रोज़े हिसाब	16	आप (स) सब्र करें	उस पर
مَا يَقُولُونَ ۚ وَادْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُدَ ذَا الْأَيْدِ ۚ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۚ ۝							
जो वह कहते हैं	और याद करें	हमारे बन्दे	दाऊद (अ)	कुव्वत वाला	वेशक वह	खूब रूजूअ करने वाला	17
إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ۚ ۝							
वेशक हम ने मुसख़्ख़र कर दिए	पहाड़	उस के साथ	वह तस्वीह करते थे	शाम के वक़्त	और सुबह के वक़्त	18	

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلُّ لَهٗ آوَابٌ ۝ ۱۹ ۝ وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ									
और	इकट्ठे किए हुए	सब उस की तरफ़	रुजूअ करने वाले	19	और हम ने उस की वादशाहत	उस की वादशाहत	और हम ने उस को दी	हिक्मत	
وَفَصَّلَ الْخِطَابِ ۝ २० ۝ وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَضَمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ۝ ۲۱ ۝									
और	फैसला कुन	खिताब	20	और क्या	आप के पास आई (पहुँची)	खबर झगड़ने वाले	जब	वह दीवार फांद कर आए	मेहराब
إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَخَفْ خَصْمِي بَغَىٰ									
जब वह दाखिल हुए	पर-पास	दाऊद (अ)	तो वह घबराया	उन से	उन्होंने ने कहा	खौफ न खाओ	हम दो झगड़ने वाले	ज़्यादती की	
بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ									
हम में से एक	दूसरे पर	तो आप फैसला कर दें	हमारे दरमियान	हक के साथ	हक के साथ	और ज़्यादती (वेइन्साफी न) करें	और हमारी रहनुमाई करें	तरफ़	
سَوَاءٍ الصِّرَاطِ ۝ २२ ۝ إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ									
सीधा	रास्ता	22	वेशक यह	मेरा भाई	उस के पास	नित्यानवे (99)	दुबियां	और मेरे पास	
نَعْجَةً وَاحِدَةً فَقَالَ أَكْفَلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ۝ २३ ۝ قَالَ									
दुंबी	एक	पस उस ने कहा	वह मेरे हवाले कर दे	और उस ने मुझे दबाया	गुफ्तगू में	23	(दाऊद अ ने) कहा		
لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعَجِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ									
यकीनन उस ने जुल्म किया	मांगने से	तेरी दुंबी	तरफ-साथ	अपनी दुबियां	और वेशक	अक्सर	से	भागीदार	
لِيَبْغِيَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ									
ज़ियादती किया करते हैं	उन में से बाज़	पर	बाज़	सिवाए	जो ईमान लाए	और उन्होंने ने अमल किए दुरुस्त			
وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَنَّهٗ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا									
और बहुत कम	वह-ऐसे	और खयाल किया	दाऊद (अ)	कि कुछ	हम ने उसे आज़माया है	तो उस ने मग़फ़िरत तलब की	अपना रब	और गिर गया	झुक कर
وَأَنَابَ ۝ २४ ۝ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكُ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ									
और उस ने रुजूअ किया	24	पस हम ने वख़्श दी	उस की	यह	और वेशक	उस के लिए	हमारे पास	अलबत्ता कुर्व	और अच्छा
مَآبٍ ۝ २५ ۝ يُدَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم									
ठिकाना	25	ऐ दाऊद (अ)	वेशक हम ने तुझे बनाया	हम ने तुझे बनाया	नाइब	ज़मीन में	सो तू फैसला कर		
بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ									
लोगों के दरमियान	हक के साथ	और न पैरवी कर	खाहिश	कि वह तुझे भटका दे	से	अल्लाह का रास्ता			
إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا									
वेशक	जो लोग	भटकते हैं	से	अल्लाह का रास्ता	उन के लिए	अज़ाब	शदीद	उस पर कि	उन्होंने ने भुला दिया
يَوْمَ الْحِسَابِ ۝ २६ ۝ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا									
रोज़े हिसाब	26	और नहीं पैदा किया हम ने	आस्मान	और ज़मीन	और जो	उन के दरमियान	वातिल		
ذَلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ۝ २७ ۝									
यह	गुमान	जिन लोगों ने कुफ़ किया	पस खराबी है	उन के लिए जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	से	आग	27		

और इकट्ठे किए हुए परिन्दे (भी उस के मुसख़्खर थे) सब उस की तरफ़ रुजूअ करने वाले थे। (19) और हम ने उस की वादशाहत मज़बूत की और उस को हिक्मत दी और फैसला कुन खिताब। (20) और क्या आप (स) के पास झगड़ने वालों (अहले मुक़द्दमा) की खबर पहुँची? जब वह दीवार फांद कर मेहराब में आ गए। (21) जब वह दाखिल हुए दाऊद (अ) के पास तो वह उन से घबराए। उन लोगों ने कहा: डरो नहीं, हम दो झगड़ने वाले (अहले मुक़द्दमा) हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है तो आप हमारे दरमियान फैसला कर दें हक के साथ, और वेइन्साफी न करें, और सीधे रास्ते की तरफ़ हमारी रहनुमाई करें। (22) वेशक मेरे इस भाई के पास नित्यानवे (99) दुबियां हैं और मेरे पास (सिर्फ़) एक दुंबी है, पस उस ने कहा कि वह (भी) मेरे हवाले कर दे, और उस ने मुझे गुफ्तगू में दबाया है। (23) दाऊद (अ) ने कहा: सचमुच उस ने तेरी दुंबी मांग कर जुल्म किया है (कि) अपनी दुबियों के साथ मिला ले, और वेशक अक्सर साथी एक दूसरे पर ज़ियादती किया करते हैं सिवाए उन के जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए और (ऐसे लोग) बहुत कम हैं, और दाऊद (अ) ने खयाल किया कि हम ने कुछ उसे आज़माया है तो उस ने अपने रब से मग़फ़िरत तलब की, और झुक कर (सिज्दे में) गिर गया। (24) पस हम ने वख़्श दी उस की यह (लगज़िश), और वेशक उस के लिए हमारे पास कुर्व और अच्छा ठिकाना है। (25) ऐ दाऊद (अ)! वेशक हम ने तुझे बनाया ज़मीन (मुल्क) में नाइब, सो तू लोगों के दरमियान हक (ईसाफ़) के साथ फैसला कर और (अपनी) खाहिश की पैरवी न कर कि वह तुझे भटका दे अल्लाह के रास्ते से, वेशक जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटकते हैं उन के लिए शदीद अज़ाब है इस लिए कि उन्होंने ने रोज़े हिसाब को भुला दिया। (26) और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो उन के दरमियान है वातिल (बेकार ख़ाली अज़ हिक्मत) नहीं पैदा किया, यह गुमान है (उन लोगों का) जिन्होंने ने कुफ़ किया, पस खराबी है काफ़िरों के लिए आग से। (27)

क्या हम कर देंगे? उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए उन लोगों की तरह जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं? क्या हम परहेज़गारों को कर देंगे फ़ाजिरों (बदकिरदारों) की तरह? (28)

हम ने आप की तरफ़ एक मुबारक किताब नाज़िल की ताकि वह उस की आयात पर ग़ौर करें, और ताकि अक्ल वाले नसीहत पकड़ें। (29)

और हम ने दाऊद (अ) को सुलेमान (अ) अता किया, बहुत अच्छा बन्दा, वेशक वह (अल्लाह की तरफ़) रूज़ू करने वाला था। (30)

(वह वक़्त याद करो) जब शाम के वक़्त उस के सामने पेश किए गए असील, उम्दा घोड़े। (31)

तो उस ने कहा: वेशक मैं ने अपने रब की याद की वजह से माल की मुहब्बत को दोस्त रखा, यहां तक कि (घोड़े) छुप गए (दूरी के) परदे में। (32)

उन (घोड़ों) को मेरे सामने फेर लाओ, फिर वह उन की पिंडलियों और गर्दनो पर हाथ फेरने लगा। (33)

और अलबत्ता हम ने सुलेमान (अ) की आजमाइश की और हम ने उस के तख़्त पर एक धड़ डाला, फिर उस ने (अल्लाह की तरफ़) रूज़ू किया। (34)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! तू मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सलतनत अता फ़रमा दे जो मेरे बाद किसी को सज़ावार (मयस्सर) न हो, वेशक तू ही अता करने वाला है। (35)

फिर हम ने मुसख़्खर कर दिया उस के लिए हवा को, जहां वह पहुँचना चाहता, वह उस के हुक्म से नर्म नर्म चलती। (36)

और तमाम जिन्नात (तावे कर दिए) इमारत बनाने वाले और गोता मारने वाले। (37)

और दूसरे ज़नजीरों में जकड़े हुए। (38)

यह हमारा अतिया है, अब तू एहसान कर या रख छोड़ हिसाब के बग़ैर (तुम से कुछ हिसाब न होगा)। (39)

और वेशक उस के लिए हमारे पास अलबत्ता कुर्व और अच्छा ठिकाना है। (40)

और आप (स) याद करें हमारे बन्दे अय्यूब (अ) को जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने ईज़ा और दुख पहुँचाया है। (41)

(हम ने फ़रमाया) ज़मीन पर मार अपना पाऊँ, यह (लो) गुस्ल के लिए ठंडा और पीने के लिए (शीरी पानी)। (42)

और हम ने उस के अहले ख़ाना और उन के साथ उन जैसे (और भी) अता किए (यह) हमारी तरफ़ से रहमत और अक्ल वालों के लिए नसीहत। (43)

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ					
जमीन में	उन की तरह जो फ़साद फैलाते हैं	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	क्या हम कर देंगे
أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ (28) كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ					
मुबारक	आप (स) की तरफ़	हम ने उसे नाज़िल किया	एक किताब	28	बदकिरदारों की तरह
لِيَذَّبُرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ (29) وَوَهَبْنَا لِذَاوُدَ سُلَيْمَانَ					
सुलेमान (अ)	दाऊद (अ) को	और हम ने अता किया	29	अक्ल वाले	और ताकि नसीहत पकड़ें
نِعَمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ (30) إِذْ عَرَضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصُّفْنَتُ					
असील घोड़े	शाम के वक़्त	उस पर-सामने	पेश किए गए	जब	30
الْجِيَادُ (31) فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي حَتَّى					
यहां तक कि	अपने रब की याद	से	माल की मुहब्बत	मैं ने दोस्त रखा	वेशक मैं
تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ (32) رُدُّوْهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ					
पिंडलियों पर	हाथ फेरना	फिर शुरू किया	मेरे सामने	फेर लाओ उन्हें	32
وَالْأَعْنَاقِ (33) وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ جَسَدًا					
एक धड़	उस के तख़्त पर	और हम ने डाला	सुलेमान	और अलबत्ता हम ने आजमाइश की	33
ثُمَّ أَنَابَ (34) قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ					
किसी को	न सज़ा वार हो	ऐसी सलतनत	और अता फ़रमा दे मुझे	मुझे बख़्शदे तू	ऐ मेरे रब
مِّنْ بَعْدِي إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ (35) فَسَخَرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ					
उस के हुक्म से	वह चलती थी	हवा	फिर हम ने मुसख़्खर कर दिया उस के लिए	35	अता फ़रमाने वाला
رُحَاءٍ حَيْثُ أَصَابَ (36) وَالشَّيْطَانِ كُلِّ بَنَاءٍ وَغَوَاصٍ (37) وَآخِرِينَ					
और दूसरे	37	और गोता मारने वाले	इमारत बनाने वाले	तमाम	और देव (जिन्नात)
مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ (38) هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ					
बग़ैर	रोक रख	या	अब तू एहसान कर	हमारा अतिया	यह
حِسَابٍ (39) وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ (40) وَادْكُرْ عَبْدَنَا					
हमारा बन्दा	और आप (स) याद करें	40	ठिकाना	और अच्छा	अलबत्ता कुर्व
أَيُّوبُ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسْنِي الشَّيْطَانُ يَنْصُبُ وَعَذَابٍ (41)					
41	और दुख	ईज़ा	शैतान	मुझे पहुँचाया	वेशक मैं
أُرْكُضْ بِرِجْلِكَ هَذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ (42) وَوَهَبْنَا لَهُ					
उस को	और हम ने अता किया	42	और पीने के लिए	ठंडा	गुस्ल के लिए
أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولَى الْأَلْبَابِ (43)					
43	अक्ल वालों के लिए	और नसीहत	हमारी (तरफ़) से	रहमत	उन के साथ

وَحُذِّ بِيَدِكَ ضِعْفًا فَاصْرِبْ بِهِ وَلَا تَحْنُتْ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۝							
और	अपने हाथ में	झाड़ू	और उस से मार उस को	और कसम न तोड़	वेशक हम	हम ने उसे पाया	साविर
نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝ (44) وَادْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ وَاسْحَقْ وَيَعْقُوبَ							
और	अच्छा बन्दा	वेशक वह (अल्लाह की तरफ) रुजूअ करने वाला	44	और याद करें	हमारे बन्दों	इब्राहीम (अ)	और याकूब (अ)
أُولَى الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ۝ (45) إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۝ (46)							
हाथों वाले	और आँखों वाले	45	वेशक हम	हम ने उन्हें मुमताज़ किया	खास सिफ़त	याद	46 घर (आखिरत का)
وَأَنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنِ الْأَخْيَارِ ۝ (47) وَادْكُرْ إِسْمَاعِيلَ							
और वेशक वह	हमारे नज़्दीक से	अलबत्ता - से	चुने हुए	सब से अच्छे	47	और याद करें	इस्माईल (अ)
وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِنَ الْأَخْيَارِ ۝ (48) هَذَا ذِكْرٌ وَإِنَّ							
और अलयसअ (अ)	और जुलक़िफ़ल (अ)	और यह तमाम	और यह	सब से अच्छे लोग	48	यह एक नसीहत	और वेशक
لِلْمُتَّقِينَ لِحُسْنِ مَآبٍ ۝ (49) جَنَّتِ عَدْنٌ مَّفْتَحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ ۝ (50)							
परहेज़गारों के लिए	अलबत्ता अच्छा ठिकाना	49	ठिकाना	बागात	हमेशा रहने के	खुले हुए	उन के लिए
مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ۝ (51)							
तकिया लगाए हुए वह	उन में	संगवाएंगे	उन में	मेवे	बहुत से	और शराब (मशरूबात)	51
وَعِنْدَهُمْ فُصْرُ الطَّرَفِ أَتْرَابٍ ۝ (52) هَذَا مَا تُوْعَدُونَ							
और उन के पास	नीचे रखने वालियां	निगाह	हम उम्र	यह	जो - जिस	वादा किया जाता है तुम से	
لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ (53) إِنَّ هَذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِنْ نَفَادٍ ۝ (54) هَذَا وَإِنَّ							
रोज़े हिसाब के लिए	वेशक	यह	यकीनन हमारा रिज़ूक	उसके लिए - उस को नहीं	ख़तम होना	54	और वेशक
لِلطَّغْيَنِ لَشَرِّ مَآبٍ ۝ (55) جَهَنَّمَ يَصْلُونَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ (56) هَذَا							
सरकशों के लिए	अलबत्ता बुरा ठिकाना	55	जहन्नम	वह उस में दाख़िल होंगे	सो बुरा	बिछोना	यह
فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ۝ (57) وَآخِرُ مِنْ شَكْلَةٍ أَرْوَاجٍ ۝ (58) هَذَا							
पस उस को चखो तुम	खौलता हुआ पानी	और पीप	57	और उस के अलावा	उस की शक़ल की	कई किसमें	यह
فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَعَكُمْ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ۝ (59) قَالُوا							
एक जमाअत	घुस रहे हैं	तुम्हारे साथ	न हो कोई फ़राखी	उन्हें	वेशक वह	दाख़िल होने वाले जहन्नम में	59 वह कहेंगे
بَلْ أَنْتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ أَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا فَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝ (60)							
बल्कि तुम	कोई मरहवा न हो	तुम्हें	वेशक तुम	तुम ही यह आगे लाए	हमारे लिए	सो बुरा	60 ठिकाना
قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ۝ (61)							
वह कहेंगे	ऐ हमारे रब	जो आगे लाया	हमारे लिए	यह	तू ज़ियादा कर दे	अज़ाब	61 जहन्नम में
وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْأَشْرَارِ ۝ (62)							
और वह कहेंगे	क्या हुआ हमें	हम नहीं देखते	वह लोग	हम शुमार करते थे उन्हें	से	अशरार (बहुत बुरे)	62

और अपने हाथ में झाड़ू ले और तू उस से (अपनी बीबी को) मार, और कसम न तोड़, वेशक हम ने उसे साविर पाया (और) अच्छा बन्दा, वेशक अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करने वाला। (44)

और आप (स) हमारे बन्दों इब्राहीम (अ) और इसहाक़ (अ) और याकूब (अ) को याद करें जो हाथों वाले और आँखों वाले (इल्म ओ अक़ल की कुव्वतों वाले) थे। (45)

हम ने उन्हें एक खास सिफ़त से मुमताज़ किया (और वह है) याद आख़िरत के घर की। (46)

और वेशक वह हमारे नज़्दीक चुने हुए सब से अच्छे लोगों में से थे। (47)

और आप (स) याद करें इस्माईल (अ) और अलयसअ (अ) और जुलक़िफ़ल (अ) को, और यह तमाम ही सब से अच्छे लोगों में से थे। (48)

यह एक नसीहत है, और परहेज़गारों के लिए अलबत्ता अच्छा ठिकाना है। (49)

हमेशा रहने के बागात, जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे। (50)

उन में तकिया लगाए हुए होंगे, और उन में मंगवाएंगे मेवे बहुत से और मशरूबात। (51)

और उन के पास नीची निगाह रखने वाली (वा हया) हम उम्र (औरतें) होंगी। (52)

यह है जिस का तुम से वादा किया जाता है रोज़े हिसाब के लिए। (53)

वेशक यह हमारा रिज़ूक है, उस को (कभी) ख़तम होना नहीं। (54)

यह है (जज़ा)। और वेशक सरकशों के लिए अलबत्ता बुरा ठिकाना है। (55)

(यानी) जहन्नम, जिस में वह दाख़िल होंगे, सो बुरा है फ़र्श (उन की आरामगाह)। (56)

यह खौलता हुआ पानी और पीप है, पस तुम उस को चखो। (57)

और उस के अलावा उस की शक़ल की कई किसमें होंगी। (58)

यह एक जमाअत है जो तुम्हारे साथ (जहन्नम में) दाख़िल हो रही है, उन्हें कोई फ़राखी न हो, वेशक वह जहन्नम में दाख़िल होने वाले हैं। (59)

वह कहेंगे: बल्कि तुम्हें कोई फ़राखी न हो, वेशक तुम ही हमारे लिए यह (मुसीबत) आगे लाए हो, सो बुरा है ठिकाना। (60)

वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! जो हमारे लिए यह (मुसीबत) आगे लाया है तू जहन्नम में (उस के लिए) अज़ाब दो चन्द कर दे। (61)

और वह कहेंगे हमें क्या हुआ? हम (दोज़ख़ में) उन लोगों को नहीं देखते जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे। (62)

क्या हम ने उन्हें ठठे में पकड़ा था? या कज हो गई है उन से (हमारी) आँखें? (63) वेशक अहले दोज़ख़ का वाहम यह झगड़ना बिल्कुल सच है। (64) आप (स) फ़रमा दें: इस के सिवा नहीं कि मैं डराने वाला हूँ और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता ज़बरदस्त है। (65) परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन दोनों के दरमियान है, ग़ालिब, बड़ा बख़्शने वाला। (66) आप फ़रमा दें यह एक बड़ी ख़बर है। (67) तुम उस से बेपरवाह हो। (68) मुझे कुछ ख़बर न थी आलमे वाला (बुलन्द क़द्र फ़रिश्तों) की जब वह वाहम झगड़ते थे। (69) मेरी तरफ़ इस के सिवा वहि नहीं की जाती कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (70) (याद करो) जब तुम्हारे रब ने कहा फ़रिश्तों को कि मैं मिट्टी से एक वशर पैदा करने वाला हूँ। (71) फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर दूँ और उस में अपनी रूह से फूँक दूँ तो तुम गिर पड़ो उस के आगे सिज्दा करते हुए। (72) पस सब फ़रिश्तों ने इकट्ठे सिज्दा किया। (73) सिवाए इब्लीस के, उस ने तकबुर किया और वह हो गया काफ़िरों में से। (74) (अल्लाह ने) फ़रमाया ऐ इब्लीस! उस को सिज्दा करने से तुझे किस ने मना किया (रोका) जिसे मैं ने अपने हाथों से पैदा किया? क्या तू ने तकबुर किया (अपने को बड़ा समझा) या तू बुलन्द दरजे वालों में से है? (75) उस ने कहा: मैं उस से बेहतर हूँ, तू ने मुझे आग से पैदा किया और उसे पैदा किया मिट्टी से। (76) (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया: पस यहां से निकल जा क्योंकि तू रांदा-ए-दरगाह है। (77) और वेशक तुझ पर मेरी लानत रहेगी रोज़े कियामत तक। (78) उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे। (79) (अल्लाह ने) फ़रमाया: पस तू मोहलत दिए जाने वालों में से है। (80) उस दिन तक जिस का वक़्त मुझे मालूम है। (81) उस ने कहा मुझे तेरी इज़ज़त की कसम! मैं उन सब को ज़रूर गुमराह करूँगा। (82)

اتَّخَذْنَهُمْ سَحَرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمْ الْأَبْصَارُ (٦٣) إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ							
क्या हम ने उन्हें पकड़ा था	या	कज हो गई है	उन से	आँखें	63	वेशक यह	बिल्कुल सच
تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ (٦٤) قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنْذِرٌ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ							
वाहम झगड़ना	अहले दोज़ख़	64	फ़रमा दें	इस के सिवा नहीं	कि मैं	डराने वाला	और नहीं
الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ (٦٥) رَبُّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ							
वाहिद (यकता)	ज़बरदस्त	65	रब	आस्मानों	और ज़मीन	और जो	उन दोनों के दरमियान
الْغَفَّارُ (٦٦) قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ (٦٧) أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ (٦٨)							
बड़ा बख़्शने वाला	66	फ़रमा दें	वह-यह	एक ख़बर बड़ी	67	तुम	उस से
مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَائِكَةِ إِذْ يَخْتَصِمُونَ (٦٩) إِنْ يُؤْخَىٰ							
न था	मेरे पास (मुझे)	कुछ ख़बर	आलमे वाला की	जब	वह वाहम झगड़ते थे	69	नहीं वहि की जाती
إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ (٧٠) إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي							
मेरी तरफ़	सिवाए	यह कि	मैं डराने वाला	70	साफ़ साफ़	जब कहा	तुम्हारा रब
خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ طِينٍ (٧١) فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي							
पैदा करने वाला	एक वशर	मिट्टी से	71	फिर जब	मैं दुरुस्त कर दूँ उसे	और मैं फूँकूँ	उस में से
فَفَعَّلُوا لَهُ سَجِدِينَ (٧٢) فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ (٧٣) إِلَّا							
तो तुम गिर पड़ो	उस के लिए (आगे)	सिज्दा करते हुए	72	पस सिज्दा किया	फ़रिश्ते	सब	इकट्ठे
إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ (٧٤) قَالَ يَا بَلِيسُ مَا مَنَعَكَ							
इब्लीस	उस ने तकबुर किया	और वह हो गया	से	काफ़िरों	74	उस ने फ़रमाया	ऐ इब्लीस
أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِإِيْدِي اسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ							
कि तू सिज्दा करे	उस को जिसे	मैं ने पैदा किया	अपने हाथों से	क्या तू ने तकबुर किया	या तू है	से	
الْعَالِينَ (٧٥) قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ							
बुलन्द दरजे वाले	75	उस ने कहा	मैं	बेहतर	उस से	तू ने पैदा किया मुझे	आग से
مِّنْ طِينٍ (٧٦) قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ (٧٧) وَإِنَّ عَلَيْكَ							
से	मिट्टी	76	उस ने फ़रमाया	पस निकल जा	यहां से	क्योंकि तू	रांदा-ए-दरगाह
لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ (٧٨) قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ							
मेरी लानत	तक	रोज़े कियामत	78	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	पस तू मुझे मोहलत दे	तक
يَوْمٍ يُبْعَثُونَ (٧٩) قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ (٨٠) إِلَى يَوْمِ							
जिस दिन उठाए जाएंगे	79	उस ने फ़रमाया	पस वेशक तू	से	मोहलत दिए जाने वाले	80	तक
الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ (٨١) قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَا غُيُوبَ لَهُمْ أَجْمَعِينَ (٨٢)							
वक़्त मुअय्यन	81	उस ने कहा	सो तेरी इज़ज़त की कसम	मैं ज़रूर उन्हें गुमराह करूँगा	सब	82	

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقُولُ ﴿٨٤﴾							
84	मैं कहता हूँ	और सच	यह हक़ (सच)	उस ने फ़रमाया	83	मुख़लिस (जमा)	उन में से सिवाए तेरे बन्दे
لَا مَلَكَيْنَ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٥﴾ قُلْ							
फ़रमा दें	85	सब	उन से	तेरे पीछे चलें	और उन से जो	तुझ से	मैं ज़रूर भर दूँगा
مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿٨٦﴾ إِنَّ							
नहीं	86	बनावट करने वालों से	मैं	और नहीं	कोई अजर	इस पर	मैं मांगता तुम से नहीं
هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾ وَلِتَعْلَمَنَّ نَبَاهُ بَعْدَ حِينٍ ﴿٨٨﴾							
88	एक वक़्त	बाद	उस का हाल	और तुम ज़रूर जान लोगे	87	तमाम ज़हानों के लिए	नसीहत यह मगर
آيَاتُهَا ٧٥ ﴿ ٣٩ ﴾ سُورَةُ الزُّمَرِ ﴿ ٨ ﴾ رُكُوعَاتُهَا 8							
(39) सूरतुज़ जुमर टोलियाँ, गिरोह				आयात 75			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ							
तुम्हारी तरफ़	वेशक हम ने नाज़िल की	1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह की तरफ़ से	यह किताब	नाज़िल किया जाना
الْكِتَابِ بِالْحَقِّ فَأَعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ﴿٢﴾ أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ							
अल्लाह के लिए दीन	याद रखो	2	दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	पस अल्लाह की इबादत करो	हक़ के साथ यह किताब
الْخَالِصُ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ							
नहीं इबादत करते हम उन की	दोस्त	उस के सिवा	बनाते हैं	और जो लोग	ख़ालिस		
إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ							
उस में	वह	जिस में	उन के दरमियान	फैसला कर देगा	वेशक अल्लाह	कुर्व का दर्जा	अल्लाह का मगर इस लिए कि वह मुक़र्रब बना दें हमें
يَخْتَلِفُونَ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾ لَوْ أَرَادَ اللَّهُ							
चाहता अल्लाह	अगर	3	नाशुक्रा	झूटा	जो हो	हिदायत नहीं देता	वेशक अल्लाह वह इख़्तिलाफ़ करते हैं
أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَّا صُطْفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَنَهُ							
वह पाक है	जिसे वह चाहता	वह पैदा करता है (मख़लूक)	उस से जो	अलबत्ता वह चुन लेता	औलाद	कि बनाए	
هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٤﴾ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ							
हक़ (दुरुस्त तदवीर के) साथ	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया	4	ज़बरदस्त	वाहिद (यकता)	वही अल्लाह
يَكْوَرُ اللَّيْلُ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسُ							
सूरज	और उस ने मुख़र किया	रात पर	और दिन को लपेटता है	दिन पर	रात	वह लपेटता है	
وَالْقَمَرُ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٥﴾							
5	बख़शने वाला	वह ग़ालिब	याद रखो	मुक़र्ररा	एक मुद्दत	हर एक चलता है	और चाँद

उन में से तेरे मुख़लिस (खास) बन्दों के सिवा। (83)

(अल्लाह ने) फरमाया: यह सच है और मैं सच ही कहता हूँ। (84)

मैं ज़रूर जहन्नम भर दूँगा तुझ से और उन सब से जो तेरे पीछे चलें। (85)

आप (स) फरमा दें: मैं तुम से इस (तबलीग़े कुरआन) पर कोई अजर नहीं मांगता, और नहीं हूँ मैं बनावट करने वालों में से। (86)

यह (कुरआन) नहीं है मगर तमाम जहानों के लिए नसीहत। (87)

और उस का हाल तुम एक वक़्त के बाद (जल्द ही) ज़रूर जान लोगे। (88)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है इस किताब का नाज़िल किया जाना अल्लाह ग़लिब, हिक्मत वाले की तरफ़ से है। (1)

वेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ यह किताब हक के साथ नाज़िल की है, पस तुम अल्लाह की इबादत करो दीन उसी के लिए ख़ालिस कर के। (2)

याद रखो! दीन ख़ालिस अल्लाह ही के लिए है, और जो लोग उस के सिवा दोस्त बनाते हैं (वह कहते हैं) हम सिर्फ़ इस लिए उन की इबादत करते हैं कि वह कुर्व के दरजे में हमें अल्लाह का मुक़र्रब बना दें, वेशक अल्लाह उन के दरमियान उस (अमर) में फैसला फरमा देगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं, वेशक अल्लाह किसी झूटे, नाशुक्रे को हिदायत नहीं देता। (3)

अगर अल्लाह चाहता कि बनाले (किसी को अपनी) औलाद तो वह अपनी मख़लूक में से जिस को चाहता चुन लेता, वह पाक है, वही है अल्लाह यकता, ज़बरदस्त। (4)

उस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को दुरुस्त तदवीर के साथ, वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उस ने मुख़र किया सूरज और चाँद को, हर एक, एक मुद्दते मुक़र्ररा तक चलता है, याद रखो, वह ग़ालिब, बख़शने वाला है। (5)

उस ने तुम्हें नफ़से वाहिद (आदम अ) से पैदा किया, फिर उस ने उस से उस का जोड़ा बनाया, और तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ जोड़े भेजे, वह तुम्हें पैदा करता है तुम्हारी माँओं के पेटों में, तीन तारीकियों के अन्दर एक कैफ़ियत के बाद दूसरी कैफ़ियत में, यह है तुम्हारा अल्लाह, तुम्हारा परवरदिगार, उसी के लिए है वादशाहत, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तुम कहां फिर जाते हो? (6) अगर तुम नाशुक्री करोगे तो वेशक अल्लाह तुम से बेनियाज़ है, और वह पसंद नहीं करता अपने बन्दों के लिए नाशुक्री, और अगर तुम शुक्र करोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे पसंद करता है, और कोई बोज़ उठाने वाला किसी दूसरे का बोज़ नहीं उठाता, फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, फिर वह तुम्हें जतला देगा जो तुम करते थे। वेशक वह दिलों की पोशीदा बातों को (भी) जानने वाला है। (7) और जब इन्सान को कोई सख्ती पहुँचे तो वह अपने रब की तरफ़ रुजूअ कर के उसे पुकारता है, फिर जब वह उसे अपनी तरफ़ से नेमत दे तो वह भूल जाता है जिस के लिए वह उस से क़व्ल (अल्लाह को) पुकारता था, और वह अल्लाह के लिए शरीक बनालेता है ताकि उस के रास्ते से गुमराह करे, आप (स) फ़रमा दें: तू फ़ाइदा उठाले अपने कुफ़ से थोड़ा, वेशक तू दोज़ख़ वालों में से है। (8) (क्या यह नाशुक्का बेहतर है) या वह? जो रात की घड़ियों में इबादत करने वाला सिज़्दा करने वाला हो कर और क़्याम करने वाला, (और) वह आख़िरत से डरता है और अपने रब की रहमत से उम्मीद रखता है। आप (स) फ़रमा दें: क्या बराबर है वह जो इल्म रखते हैं और वह जो इल्म नहीं रखते? इस के सिवा नहीं कि अक़ल वाले ही नसीहत कुबूल करते हैं। (9) आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो! तुम अपने रब से डरो, जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छे काम किए उन के लिए भलाई है, और अल्लाह की ज़मीन वसीअ है, इस के सिवा नहीं कि सब्र करने वालों को उन का अजर बेहिसाब पूरा पूरा दिया जाएगा। (10)

خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنْزَلَ لَكُمْ							
तुम्हारे लिए	और उस ने भेजे	उस का जोड़ा	उस से	फिर उस ने बनाया	नफ़से वाहिद	से	उस ने पैदा किया तुम्हें
مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمِينَةَ أَزْوَاجٍ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا							
एक कैफ़ियत	तुम्हारी माएं	पेटों में	वह पैदा करता है तुम्हें	जोड़े	आठ (8)	चौपायों से	
مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ذِكْرُكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ لَا إِلَهَ							
नहीं कोई माबूद	वादशाहत	उस के लिए	तुम्हारा परवरदिगार	यह तुम्हारा अल्लाह	तीन (3)	तारीकियों में	दूसरी कैफ़ियत के बाद
إِلَّا هُوَ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ ﴿٦﴾ إِنَّ تَكْفُرًا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ							
तुम से	बेनियाज़	तो वेशक अल्लाह	अगर तुम नाशुक्री करोगे	6	तुम फिर जाते हो	तो कहां	उस के सिवा
وَلَا يَرْضَى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ							
कोई बोज़ उठाने वाला बोज़	और नहीं उठाता	वह उसे पसंद करता है तुम्हारे लिए	तुम शुक्र करोगे	और अगर	नाशुक्री	अपने बन्दों के लिए	और वह पसंद नहीं करता
أُخْرَىٰ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ إِنَّهُ							
वेशक वह	तुम करते थे	वह जो	फिर वह जतला देगा तुम्हें	लौटना है तुम्हें	अपना रब	तरफ़	दूसरे का
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٧﴾ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ							
वह पुकारता है	कोई सख्ती	इन्सान	लगे - पहुँचे	और जब	7	सीनों (दिलों) की पोशीदा बातें	जानने वाला
مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا حَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوًا إِلَيْهِ							
उस की तरफ़ - लिए	वह पुकारता था	जो	वह भूल जाता है	अपनी तरफ़ से	नेमत	वह उसे दे	उस की तरफ़ रुजूअ कर के
مِّن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ قُلْ تَمَتَّعْ							
फ़ाइदा उठा ले	फ़रमा दें	उस के रास्ते से	ताकि गुमराह करे	शरीक (जमा)	और वह बना लेता है अल्लाह के लिए	उस से क़व्ल	
بِكُفْرِكَ قَلِيلًا إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿٨﴾ أَمِنْ هُوَ قَانِثٌ							
इबादत करने वाला	वह	या जो	8	आग (दोज़ख़) वाले	से	वेशक तू	अपने कुफ़ से
إِنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُوا رَحْمَةَ رَبِّهِ							
अपना रब	रहमत	और उम्मीद रखता है	आख़िरत	वह डरता है	और क़्याम करने वाला	सिज़्दा करने वाला	घड़ियों में रात की
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ إِنَّمَا							
इस के सिवा नहीं	जो इल्म नहीं रखते	और वह लोग	वह इल्म रखते हैं	वह लोग जो	बराबर है	क्या	फ़रमा दें
يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿٩﴾ قُلْ يُعْبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا							
तुम डरो	ईमान लाए	जो	ऐ मेरे बन्दो	फ़रमा दें	9	अक़ल वाले	नसीहत कुबूल करते हैं
رَبِّكُمْ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَأَرْضُ اللَّهِ							
और अल्लाह की ज़मीन	भलाई	इस दुनिया	में	अच्छे काम किए	उन के लिए जिन्होंने ने	अपना रब	
وَاسِعَةٌ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾							
10	बेहिसाब	उन का अजर	सब्र करने वाले	पूरा बदला दिया जाएगा	इस के सिवा नहीं	वसीअ	

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۚ (۱۱) وَأُمِرْتُ لِأَنْ									
उस का	और मुझे हुक्म दिया गया	11	दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	मैं अल्लाह की इबादत करूँ	कि	वेशक मुझे हुक्म दिया गया	फरमा दें
أَكُونُ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ۚ (۱۲) قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ									
अज़ाब	अपना रब	मैं नाफरमानी करूँ	अगर	वेशक मैं डरता हूँ	फरमा दें	12	फरमावरदार - मुसलिम (जमा)	पहला	कि मैं हूँ
يَوْمٍ عَظِيمٍ ۚ (۱۳) قُلْ اللَّهُ أَعْبُدْ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ۚ (۱۴) فَاعْبُدُوا									
परस्तिश करो	14	अपना दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ	फरमा दें	13	एक बड़ा दिन	
مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ ۚ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ									
अपने आप को	घाटे में डाला	वह जिन्होंने	वह जिन्होंने	घाटा पाने वाले	वेशक	फरमा दें	उस के सिवाए	जिस की तुम चाहो	
وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ أَلَا ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۚ (۱۵) لَهُمْ									
उन के लिए	15	सरीह	घाटा	वह	यह	खूब याद रखो	रोज़े कियामत	और अपने घर वाले	
مِنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ ذَلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهَ بِهِ									
उस से	डराता है अल्लाह	यह	सायबान (चादरें)	और उन के नीचे से	आग के	सायबान	उन के ऊपर से		
عِبَادَهُ ۚ يَعْبَادُ فَاتَّقُون ۚ (۱۶) وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ									
कि	सरकश (शैतान)	बचते रहे	और जो लोग	16	पस मुझ से डरो	ऐ मेरे बन्दो	अपने बन्दो		
يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ ۚ فَبَشِّرْ عِبَادَ ۚ (۱۷) الَّذِينَ									
वह जो	17	मेरे बन्दों	सो खुशखबरी दें	खुशखबरी	उन के लिए	अल्लाह की तरफ	और उन्होंने ने रुजूअ किया	उस की परस्तिश करें	
يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ									
उन्हें हिदायत दी अल्लाह ने	वह जिन्हें	वही लोग	उस की अच्छी बातें	फिर पैरवी करते हैं	बात	सुनते हैं			
وَأُولَٰئِكَ هُمُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۚ (۱۸) أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ									
अज़ाब	हुक्म - वईद	उस पर	साबित हो गया	क्या तो - जो - जिस	18	अक़ल वाले	वह	और यही लोग	
أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ۚ (۱۹) لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ									
वाला खाने	उन के लिए	अपना रब	जो लोग डरे	लेकिन	19	आग में	जो	बचा लोगे	क्या पस तुम
مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ وَعَدَ اللَّهُ لَا يُخْلِفُ									
ख़िलाफ़ नहीं करता	अल्लाह का वादा	नहरें	उन के नीचे	जारी है	वने बनाए	वाला खाने	उन के ऊपर से		
اللَّهُ الْمِعَادَ ۚ (۲۰) أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ									
चश्मे	फिर चलाया उस को	पानी	आस्मान से	उतारा	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	20	वादा	अल्लाह
فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهَيِّجُ فَتَرَهُ مُصْفَرًّا									
ज़र्द	फिर तू देखे उसे	फिर वह खुशक हो जाती है	उस के रंग	मुख्तलिफ़	खेती	उस से	वह निकालता है	फिर	ज़मीन में
ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرًا لِأُولَى الْأَلْبَابِ ۚ (۲۱)									
21	अक़ल वालों के लिए	अलबत्ता नसीहत	इस में	वेशक	चूरा चूरा	फिर वह कर देता है उसे			

आप (स) फ़रमा दें कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ ख़ालिस कर के उसी के लिए दीन। (11)

और मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहले मैं खुद मुसलिम बनौं। (12)

आप (स) फ़रमा दें, वेशक मैं डरता हूँ कि अगर मैं नाफरमानी करूँ अपने परवरदिगार की, एक बड़े दिन के अज़ाब से। (13)

आप (स) फ़रमा दें: मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ उसी के लिए अपना दीन ख़ालिस कर के। (14)

पस तुम जिस की चाहो परस्तिश करो अल्लाह के सिवा, आप (स) फ़रमा दें: वेशक वह घाटा पाने वाले हैं जिन्होंने ने अपने आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाला रोज़े कियामत, खूब याद रखो! यही है सरीह घाटा। (15)

उन के लिए उन के ऊपर से आग के साएबान होंगे और उन के नीचे से भी (आग की) चादरें। यह है जिस से अल्लाह अपने बन्दों को डराता है।

ऐ मेरे बन्दो! मुझ ही से डरो। (16)

और जो लोग ताग़ूत से बचते रहे कि उस की परस्तिश करें, और उन्होंने ने अल्लाह की तरफ़ रुजूअ किया, उन के लिए खुशखबरी है।

सो आप (स) मेरे बन्दों को खुशखबरी दें। (17)

जो (पूरी तबज़ूह से) बात सुनते हैं फिर उस की अच्छी अच्छी बातों की पैरवी करते हैं, यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, और यही लोग हैं अक़ल वाले। (18)

तो क्या जिस पर अज़ाब की वईद साबित हो गई, पस क्या तुम उसे बचा लोगे जो आग में (गिर गया)? (19)

लेकिन जो लोग डरे अपने रब से, उन के लिए वाला खाने हैं, उन के ऊपर बने बनाए वाला खाने हैं, उन के नीचे नहरें जारी हैं, अल्लाह का वादा है, अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (20)

क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उसे चश्मे (बना कर) ज़मीन में चलाया, फिर वह उस से मुख्तलिफ़ रंगों की खेती निकालता है, फिर वह खुशक हो जाती है, फिर तू उसे ज़र्द देखता है, फिर वह उसे चूरा चूरा कर देता है, वेशक इस में अलबत्ता नसीहत है अक़ल वालों के लिए। (21)

पस क्या जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वह अपने रब की तरफ से नूर पर है (क्या वह और संगदिल बराबर हैं) सो खराबी है उन के लिए जिन के दिल अल्लाह के जिक्र से ज़ियादा सख्त हो गए, यही लोग गुमराही में हैं खुली। (22)

अल्लाह ने बेहतरीन कलाम नाज़िल किया, एक किताब जिस के मज़ामीन मिलते जुलते, बार बार दोहराए गए हैं, उस से बाल (रोंगटे) खड़े हो जाते हैं उन लोगों की जिल्दों पर जो अपने रब से डरते हैं, फिर उन की जिल्दें और उन के दिल नर्म हो जाते हैं अल्लाह की याद की तरफ (रागिब होते हैं), यह है अल्लाह की हिदायत, उस से अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और जिसे अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23)

पस क्या जो शख्स क़ियामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अज़ाब से बचाता है (अहले जन्नत के बराबर हो सकता है?) और ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम (उस का मज़ा) चखो जो तुम करते थे। (24) जो लोग उन से पहले थे उन्होंने ने झुटलाया तो उन पर अज़ाब आगया जहां से उन्हें ख़याल (भी) न था। (25) पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में रुस्वाई (का मज़ा) चखाया, और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब बहुत ही बड़ा है, काश वह जानते होते। (26) और तहकीक हम ने इस कुरआन में लोगों के लिए वयान की हर किस्म की मिसाल ताकि वह नसीहत पकड़ें। (27) कुरआन अरबी (ज़बान में), किसी (भी) कज़ी के बग़ैर ताकि वह परहेज़गारी इख़्तियार करें। (28) अल्लाह ने एक मिसाल वयान की है, एक आदमी (गुलाम) है, उस में कई (आका) शरीक हैं जो आपस में ज़िददी (झगड़ालू) हैं और एक आदमी एक आदमी का (गुलाम) है, क्या दोनों की हालत बराबर है? तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं बल्कि उन में से अक्सर इल्म नहीं रखते। (29) वेशक तुम मरने (इन्तिक़ाल करने) वाले हो, और वह (भी) मरने वाले हैं। (30) फिर वेशक तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे। (31)

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِإِسْلَامٍ فَهُوَ عَلَى نُورٍ مِّنْ رَبِّهِ فَوَيْلٌ								
सो खराबी	अपने रब की तरफ से	नूर	पर	तो वह	इस्लाम के लिए	उस का सीना	अल्लाह ने खोल दिया	क्या - पस जिस
لِّلْفُسَيْةِ قُلُوبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (२२) اللَّهُ								
अल्लाह	22	खुली	गुमराही	में	यही लोग	अल्लाह की याद	से	उन के दिल - उन के लिए - सख्त
نَزَلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ								
जिल्दें	उस से	बाल खड़े हो जाते हैं	दोहराई गई	मिलती जुलती (आयात वाली)	एक किताब	बेहतरीन कलाम		नाज़िल किया
الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلَيْنُ جُلُودَهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ								
अल्लाह की याद	तरफ	और उन के दिल	उन की जिल्दें	नर्म हो जाती है	फिर	अपना रब	वह डरते हैं	जो लोग
ذَٰلِكَ هُدَىٰ اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَنْ يَّشَاءُ وَمَنْ يُضِلِّ اللَّهُ								
गुमराह करता है अल्लाह	और जो - जिस	जिसे वह चाहता है		हिदायत देता है उस से		अल्लाह की हिदायत		यह
فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ (२३) أَفَمَنْ يَّتَقَىٰ بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ								
बुरा अज़ाब	अपने चेहरे से		बचाता है	क्या पस जो	23	कोई हिदायत देने वाला	उस के लिए	तो नहीं
يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ (२४) كَذَّبَ								
झुटलाया	24	तुम कमाते (करते) थे		जो	तुम चखो	ज़ालिमों को	और कहा जाएगा	क़ियामत के दिन
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاتَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ (२५)								
25	उन्हें खयाल न था		जहां से	अज़ाब	तो उन पर आ गया	इन से पहले	जो लोग	
فَإَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ								
आखिरत	और अलबत्ता अज़ाब		दुनिया	ज़िन्दगी	में	रुस्वाई	पस चखाया उन्हें अल्लाह ने	
أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ (२६) وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي								
में	लोगों के लिए	और तहकीक हम ने वयान की		26	वह जानते होते		काश	बहुत ही बड़ा
هَٰذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ (२७) قُرْآنًا عَرَبِيًّا								
अरबी	कुरआन	27	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	मिसाल	हर किस्म की	इस कुरआन	
غَيْرِ ذِي عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ (२८) ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ								
उस में	एक आदमी	एक मिसाल	वयान की अल्लाह ने	28	परहेज़गारी इख़्तियार करें	ताकि वह	किसी कज़ी के बग़ैर	
شُرَكَاءَ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا								
मिसाल (हालत)	दोनों की बराबर है		क्या	एक आदमी के लिए	सालिम (ख़ालिस)	और एक आदमी	आपस में ज़िददी	कई शरीक
الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (२९) إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ								
और वेशक वह	मरने वाले	वेशक तुम	29	इल्म नहीं रखते	उन में अक्सर	बल्कि	तमाम तारीफें अल्लाह के लिए	
مَيِّتُونَ (३०) ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ (३१)								
31	तुम झगड़ोगे		अपना रब	पास	क़ियामत के दिन	वेशक तुम	फिर	30 मरने वाले

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَبَ بِالصِّدْقِ						
सच्चाई को	और उस ने झुटलाया	अल्लाह पर	झूट बान्धा	से-जिस	बड़ा ज़ालिम	पस कौन
إِذْ جَاءَهُ الْيَسُ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ (۳۲) وَالَّذِي جَاءَ						
आया	और जो शख्स	32	काफ़ि़रों के लिए	ठिकाना	जहन्नम में	क्या नहीं वह उस के पास आई जब
بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ (۳۳) لَهُمْ						
उन के लिए	33	मुत्तकी (जमा)	वह	यही लोग	उस को और उस ने उस की तसदीक की	सच्चाई के साथ
مَا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاُ الْمُحْسِنِينَ (۳۴) لِيُكَفِّرَ اللَّهُ						
ताकि दूर कर दे अल्लाह	34	नेकोकारों (जमा)	जज़ा	यह	उन का रब हों-पास	जो वह चाहेंगे
عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ						
बेहतरीन (आमाल)	उन का अजर	और उन्हें जज़ा दे	उन्होंने ने किए (आमाल)	वह जो	बुराई	उन से
الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ (۳۵) أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ وَيُخَوِّفُونَكَ						
और वह ख़ौफ़ दिलाते हैं आप को	अपने बन्दे को	काफ़ी	अल्लाह	क्या नहीं	35	वह करते थे वह जो
بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ (۳۶)						
36	कोई हिदायत देने वाला	तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस	उस के सिवा	उन से जो
وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ						
ग़ालिब	क्या नहीं अल्लाह	गुमराह करने वाला	कोई	उस के लिए	तो नहीं	अल्लाह हिदायत दे और जिस
ذِي انْتِقَامٍ (۳۷) وَلَٰئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ						
आस्मानों	पैदा किया	कौन-किस	तुम पूछो उन से	और अगर	37	बदला लेने वाला
وَالْأَرْضِ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ						
जिन को तुम पुकारते हो	क्या पस देखा तुम ने	फ़रमा दें	अल्लाह	तो वह ज़रूर कहेंगे	और ज़मीन	
مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادْنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ						
दूर करने वाले हैं	वह सब	क्या	कोई ज़र्र	चाहे मेरे लिए अल्लाह	अगर	अल्लाह के सिवा से
ضُرِّهِ أَوْ أَرَادْنِيَ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ						
फ़रमा दें	उस की रहमत	रोकने वाले हैं	वह सब	क्या	कोई रहमत	वह चाहे मेरे लिए या उस का ज़र्र
حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ (۳۸) قُلْ يَقَوْمُ						
ऐ मेरी कौम	फ़रमा दें	38	भरोसा करने वाले	भरोसा करते हैं	उस पर	काफ़ी है मेरे लिए अल्लाह
اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ (۳۹)						
39	तुम जान लोगे	पस अ़नक़रीब	काम करता हूँ	वेशक मैं	अपनी जगह	पर तुम काम किए जाओ
مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ (۴۰)						
40	दाइमी	अज़ाब	उस पर	और उतर आता है	रुस्वा कर दे उस को	अज़ाब आता है उस पर कौन

पस उस से बड़ा ज़ालिम और कौन? जिस ने अल्लाह पर झूट बान्धा, और सच्चाई को झुटलाया जब वह उस के पास आई, क्या काफ़ि़रों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? (32)

और जो शख्स सच्चाई के साथ आया और उस ने उस की तसदीक की, यही लोग मुत्तकी (परहेज़गार) हैं। (33)

उन के लिए है उन के रब के हां जो (भी) वह चाहेंगे, यह जज़ा है नेकोकारों की। (34)

ताकि अल्लाह उन से उन के आमाल की बुराई दूर करदे और उन्हें नेक कामों का अजर दे उन के बेहतरीन अमल के लिहाज़ से जो वह करते थे। (35)

क्या अल्लाह अपने बन्दे को काफ़ी नहीं? और वह आप (स) को डराते हैं उन (झूटे माबूदों) से जो उस के सिवा हैं, और जिस को अल्लाह गुमराह करदे तो उस को कोई हिदायत देने वाला नहीं। (36)

और जिस को अल्लाह हिदायत दे तो उस को कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह ग़ालिब, बदला देने वाला नहीं? (37)

और अगर आप (स) उन से पूछें कि आस्मानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया? तो वह ज़रूर कहेंगे “अल्लाह ने”, आप (स) फ़रमा दें:

पस क्या तुम ने देखा जिन को पुकारते हो अल्लाह के सिवा, अगर अल्लाह मेरे लिए कोई ज़र्र चाहे तो क्या वह सब उस का ज़र्र दूर कर सकती हैं? या वह मेरे लिए कोई रहमत चाहे तो क्या वह सब उस की रहमत रोक सकती हैं?

आप (स) फ़रमा दें मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। (38)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरी कौम! तुम अपनी जगह काम किए जाओ, वेशक मैं (अपना) काम करता हूँ, पस अ़नक़रीब तुम जान लोगे। (39)

कौन है जिस पर आता है अज़ाब जो उसे रुस्वा कर दे और (कौन है) जिस पर दाइमी अज़ाब उतरता है? (40)

वेशक हम ने आप (स) पर लोगों (की हिदायत) के लिए किताब नाज़िल की हक़ के साथ, पस जिस ने हिदायत पाई तो अपनी ज़ात के लिए, और जो गुमराह हुआ तो इस के सिवा नहीं कि वह अपने लिए गुमराह होता है, और आप (स) नहीं उन पर निगहवान (ज़िम्मेदार)। (41)

अल्लाह रूह को उस की मौत के वक़्त कब्ज़ करता है, और जो न मरे अपनी नींद में, जिस की मौत का फैसला किया तो उस को (नींद की सूरत में ही) रोक लेता है और दूसरी (रूहों को) छोड़ देता है एक मुक़र्ररा वक़्त तक, वेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (42)

क्या उन्होंने ने अल्लाह के सिवा बना लिए हैं शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करने वाले? आप (स) फ़रमा दें: (इस सूरत में भी) कि वह कुछ भी इख़्तियार न रखते हों और न समझ रखते हों? (43)

आप (स) फ़रमा दें: अल्लाह ही के (इख़्तियार में) है तमाम शफ़ाअत, उसी के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, फिर उस की तरफ़ तुम लौटोगे। (44)

और जब ज़िक्र किया जाता है अल्लाह वाहिद का, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन के दिल मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं, और जब उन का ज़िक्र किया जाता है जो उस के सिवा हैं (यानी औरों का) तो फ़ौरन खुश हो जाते हैं। (45)

आप (स) फ़रमा दें: ऐ अल्लाह! पैदा करने वाले आस्मानों और ज़मीन के, जानने वाले पोशीदा और ज़ाहिर के, तू अपने बन्दों के दरमियान (इस अमर में) फैसला करेगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (46)

और अगर जिन लोगों ने जुल्म किया, जो कुछ ज़मीन में है सब का सब और उस के साथ उतना ही (और भी) उन के पास हो तो वह बदले में दे दें रोज़े क़ियामत बुरे अज़ाब से (बचने के लिए), और अल्लाह की तरफ़ से उन पर ज़ाहिर हो जाएगा जिस का वह गुमान (भी) न करते थे। (47)

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ فَمَنِ اهْتَدَىٰ						
हिदायत पाई	पस जिस	हक़ के साथ	लोगों के लिए	किताब	आप (स) पर	वेशक हम ने नाज़िल की
فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ						
उन पर	आप (स)	और नहीं	अपने लिए	वह गुमराह होता है	तो इस के सिवा नहीं हुआ	तो अपनी ज़ात के लिए
بِوَكِيلٍ ﴿٤١﴾ اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي						
और जो	उस की मौत	वक़्त	(जमा) जान - रूह	कब्ज़ करता है	अल्लाह	41 निगहवान
لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا فِيمَسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ						
मौत	उस पर	फैसला किया उस ने	वह जिस	तो रोक लेता है	अपनी नींद में	न मरे
وَيُرْسِلُ الْآخَرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ						
लोगों के लिए	अलवत्ता निशानियां	उस में	वेशक	मुक़र्ररा	एक वक़्त तक	दूसरों को वह छोड़ देता है
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾ أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ قُلْ						
फ़रमा दें	शफ़ाअत करने वाले	अल्लाह के सिवा	उन्होंने ने बना लिया	क्या	42	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं
أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٣﴾ قُلْ لِلَّهِ						
फ़रमा दें अल्लाह के लिए	43	और न वह समझ रखते हों	कुछ	वह न इख़्तियार रखते हों	क्या अगर	
الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ثُمَّ إِلَيْهِ						
उस की तरफ़	फिर	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	उसी के लिए	तमाम शफ़ाअत
تَرْجِعُونَ ﴿٤٤﴾ وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ						
वह लोग जो	दिल	मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं	एक - वाहिद	ज़िक्र किया जाता है अल्लाह	और जब	44 तुम लौटोगे
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ						
वह	तो फ़ौरन	उस के सिवा	उन का जो	ज़िक्र किया जाता है	और जब	आख़िरत पर ईमान नहीं रखते
يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عِلْمُ						
और जानने वाला	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	ऐ अल्लाह	फ़रमा दें	45 खुश हो जाते हैं
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا						
वह थे	उस में जो	अपने बन्दों	दरमियान	तू फैसला करेगा	तू	और ज़ाहिर पोशीदा
فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ						
और जो कुछ ज़मीन में	जुल्म किया	उन के लिए जिन्होंने ने	हो	और अगर	46	इख़्तिलाफ़ करते उस में
جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ						
अज़ाब	बुरे	से	उस को	बदले में दें वह	उस के साथ	और इतना ही सब का सब
يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿٤٧﴾						
47	गुमान करते	न थे वह	जो	अल्लाह (की तरफ़) से	और ज़ाहिर हो जाएगा उन पर	रोज़े क़ियामत

٢٤

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ									
उस का	वह थे	जो	उन को	और घेर लेगा	जो वह करते थे	बुरे काम	और ज़ाहिर हो जाएंगे उन पर		
يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٤٨﴾ فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا									
जब फिर		कोई तकलीफ वह हमें पुकारता है		इन्सान	पहुँचती है	फिर जब	48	मज़ाक़ उड़ाते	
خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ									
एक आज़माइश	बल्कि यह	इल्म	पर	मुझे दी गई है	यह तो	वह कहता है	अपनी तरफ़ से	कोई नेमत	हम अ़ता करते हैं उस को
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ									
इन से पहले	से	जो लोग	यकीनन यही कहा था		49	जानते नहीं	उन में अक्सर		और लेकिन
فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٥٠﴾ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ									
बुराइयां	पस उन्हें पहुँचें		50	वह करते थे		जो	उन से	तो वह न दूर किया	
مَا كَسَبُوا وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ									
बुराइयां	जल्द पहुँचेंगी इन्हें		इन में से		और जिन लोगों ने जुल्म किया		जो उन्होंने ने कमाई		
مَا كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥١﴾ أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ									
फराख़ करता है	कि अल्लाह	क्या यह नहीं जानते		51	आजिज़ करने वाले	और यह नहीं		जो इन्होंने ने कमाया	
الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ									
उन लोगों के लिए	निशानियां	इस में		वेशक	और तंग कर देता है	वह चाहता है	जिस के लिए	रिज़क़	
يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ قُلْ يُعْبَادِي الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ									
अपनी जानें		पर	ज़ियादती की	वह जिन्होंने ने		ऐ मेरे बन्दो	फरमा दें	52	वह ईमान लाए
لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَّحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا									
सब	गुनाह (जमा)	बख़्श देता है		वेशक अल्लाह	अल्लाह की रहमत		से	मायूस न हो तुम	
إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾ وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ									
और फरमावरदार हो जाओ उस के		अपना रब	तरफ़	और रुजूअ़ करो	53	मेहरबान	बख़्शने वाला	वही	वेशक वह
مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿٥٤﴾ وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ									
सब से बेहतर	और पैरवी करो	54	तुम मदद न किए जाओगे		फिर	अज़ाब	तुम पर आए	कि	इस से क़ब्ल
مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ									
अज़ाब		कि तुम पर आए		इस से क़ब्ल	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़	जो नाज़िल की गई	
بَغْتَةً وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿٥٥﴾ أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ يُحَسِّرُنِي عَلَىٰ									
उस पर	हाए अफ़सोस	कोई शख़्स	कि कहे		55	तुम को शऊर (ख़बर) न हो		और तुम	अचानक
مَا فَرَّطْتُ فِي جَنْبِ اللَّهِ وَإِنْ كُنْتُ لَمِنَ السَّخِرِينَ ﴿٥٦﴾									
56	हँसी उड़ाने वाले		अलबत्ता-से	और यह कि मैं		अल्लाह की जनाब	में	जो मैं ने कोताही की	

और उन पर बुरे काम ज़ाहिर हो जाएंगे जो वह करते थे और वह (अज़ाब) उन को घेर लेगा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (48)

फिर जब इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम उस को अपनी तरफ़ से कोई नेमत अता करते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे दिया गया है (मेरे) इल्म (की बिना) पर, (नहीं) बल्कि यह एक आज़माइश है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (49) यकीनन यह उन लोगों ने (भी)

कहा था जो इन से पहले थे, तो जो वह करते थे उस ने उन से (अज़ाब को) दूर न किया। (50)

पस उन्हें पहुँचें (उन पर आ पड़ें) बुराइयां जो उन्होंने ने कमाई थी, और इन में से जिन लोगों ने जुल्म किया जल्द इन्हें पहुँचेंगी (इन पर आ पड़ेंगी) बुराइयां जो इन्होंने ने कमाई है, और यह नहीं है (अल्लाह को) आजिज़ करने वाले। (51)

किया यह नहीं जानते कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़क़ फ़राख़ कर देता है (और वह जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है, वेशक इस में उन लोगों के लिए

शानियां हैं जो ईमान लाए। (52) आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने ने ज़ियादती की है अपनी जानों पर, तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, वेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है, वेशक वही बख़्शने वाला, मेहरबान है। (53)

और तुम अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करो, और उस के फ़र्मावरदार हो जाओ इस से क़ब्ल कि तम पर अज़ाब आ जाए, फिर तुम मदद न किए जाओगे। (54)

और पैरवी करो सब से बेहतर (किताब की) जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है तुम्हारे रब की तरफ़ से, इस से क़ब्ल कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो। (55)

कि कोई शख़्स कहे, हाए अफ़सोस उस पर जो मैं ने अल्लाह के हक़ में कोताही की और यह कि मैं हँसी उड़ाने वालों में से रहा। (56)

या यह कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता। (57)

या जब वह अज़ाब देखे तो कहे: काश! अगर मेरे लिए दोबारा (दुनिया में जाना हो) तो मैं नेकोकारों में से हो जाऊँ। (58)

(अल्लाह फरमाएगा) हाँ! तहकीक़ तेरे पास मेरी आयात आई, तू ने उन्हें झुटलाया, और तू ने तकब्बुर किया, और तू काफ़िरों में से था। (59)

और क़ियामत के दिन तुम देखोगे जिन लोगों ने अल्लाह पर झूट बोला, उन के चेहरे सियाह होंगे, क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? (60)

और जिन लोगों ने परहेज़गारी की, अल्लाह उन्हें उन को कामयाबी के साथ नजात देगा, न उन्हें कोई बुराई छुएगी, न वह ग़मगीन होंगे। (61)

अल्लाह हर शै का पैदा करने वाला है, और वह हर शै पर निगहबान है। (62)

उसी के पास हैं आस्मानों और ज़मीन की कुंजियाँ, और जो लोग अल्लाह की आयात से मुन्किर हुए वही ख़सारा पाने वाले हैं। (63)

आप (स) फ़रमा दें कि ऐ जाहिलो! क्या तुम मुझे कहते हो कि मैं अल्लाह के सिवा (किसी और) की परस्तिश करूँ। (64)

और यकीनन आप (स) की तरफ़ और आप (स) से पहलों की तरफ़ वहि भेजी गई है, अगर तुम ने शिर्क किया तो तुम्हारे अमल बिलकुल अकारत जाएंगे और तुम ज़रूर ख़सारा पाने वालों (ज़्यां कारों) में से होगे। (65)

बल्कि तुम अल्लाह ही की इबादत करो, और शुक्र गुज़ारों में से हो। (66)

और उन्होंने ने अल्लाह की क़द्र शनासी न की जैसा कि उस की क़द्र शनासी का हक़ था, और तमाम ज़मीन रोज़े क़ियामत उस की मुट्ठी में होगी, और तमाम आस्मान उस के दाएं हाथ में लिपटे होंगे, और वह उस से पाक और बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (67)

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ (٥٧) أَوْ								
या	57	परहेज़गार (जमा)	से	मैं ज़रूर होता	मुझे हिदायत देता	यह कि अल्लाह	अगर	वह कहे
تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ								
से	तो मैं हो जाऊँ	दोबारा	मेरे लिए	काश अगर	अज़ाब	देखे	जब	वह कहे
الْمُحْسِنِينَ (٥٨) بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ								
और तू ने तकब्बुर किया	उन्हें	तू ने झुटलाया	मेरी आयात	तहकीक़ तेरे पास आई	हाँ	58	नेकोकार (जमा)	
وَكُنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ (٥٩) وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا								
जिन लोगों ने झूट बोला	तुम देखोगे	और क़ियामत के दिन	59	काफ़िरों	से	और तू था		
عَلَى اللَّهِ وَجُوهُهُمْ مُسْوَدَّةٌ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى								
ठिकाना	जहन्नम	में	क्या नहीं	सियाह	उन के चेहरे	अल्लाह पर		
لِلْمُتَكَبِّرِينَ (٦٠) وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ								
उन की कामयाबी के साथ	वह जिन्होंने ने परहेज़गारी की	और नजात देगा अल्लाह	60	तकब्बुर करने वाले				
لَا يَمَسُّهُمْ الشُّوْءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (٦١) اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ								
हर शै	पैदा करने वाला	अल्लाह	61	ग़मगीन होंगे	और न वह	बुराई	न छुएगी उन्हें	
وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ (٦٢) لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ								
और ज़मीन	आस्मानों	उस के पास कुंजियाँ	62	निगहबान	चीज़	हर	पर	और वह
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ (٦٣) قُلْ								
फ़रमा दें	63	ख़सारा पाने वाले	वह	वही लोग	अल्लाह की आयात के	मुन्किर हुए	और जो लोग	
أَفَعِيرَ اللَّهِ تَأْمُرُونَنِي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ (٦٤) وَلَقَدْ أُوحِيَ								
और यकीनन वहि भेजी गई है	64	जाहिलो	ऐ	मैं परस्तिश करूँ	तुम मुझे कहते हो	तो क्या अल्लाह के सिवा		
إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ								
तू ने शिर्क किया	अलबत्ता अगर	आप (स) से पहले	वह जो कि	और तरफ़	आप (स) की तरफ़			
لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ (٦٥) بَلِ اللَّهُ								
बल्कि अल्लाह	65	ख़सारा पाने वाले	से	और तू होगा ज़रूर	तेरे अमल	अलबत्ता अकारत जाएंगे		
فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ (٦٦) وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ								
हक़	और उन्होंने ने क़द्र शनासी न की अल्लाह की	66	शुक्र गुज़ारो	से	और हो	पस इबादत करो		
قَدْرَهُ ۖ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَالسَّمَوَاتُ								
और तमाम आस्मान	रोज़े क़ियामत	उस की मुट्ठी	तमाम	और ज़मीन	उस की क़द्र शनासी			
مَطْوِيَّتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ (٦٧)								
67	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	और बरतर	वह पाक है	उस के दाएं हाथ में	लिपटे हुए		

۱
۲

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ						
और फूंक दी जाएगी	सूर में	तो बेहोश हो जाएगा	जो	आस्मानों में	और जो	ज़मीन में
إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ﴿٦٨﴾						
सिवाए जिसे	चाहे अल्लाह	फिर	फूंक मारी जाएगी उस में	दोबारा	वह	देखने लगेंगे
68						
وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجِئْنَا بِالنَّبِيِّينَ						
और चमक उठेगी	ज़मीन	अपने रब के नूर से	और रख दी जाएगी	किताब	और लाए जाएंगे	नबी (जमा)
وَالشُّهَدَاءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ						
और गवाह (जमा)	और फ़ैसला किया जाएगा	उन के दरमियान	हक के साथ	और वह (उन पर)	जुल्म न किया जाएगा	और पूरा पूरा दिया जाएगा
69						
كُلِّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧٠﴾ وَسِيقَ						
हर शख्स	जो उस ने किया (उस के आमाल)	और वह	खूब जानता है	जो कुछ वह करते हैं	70	और हाँके जाएंगे
الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فَتَحَتْ						
वह जिन्हों ने	कुफ़ किया (काफ़िर)	तरफ़	जहनन्म	गिरोह दर गिरोह	यहां तक कि जब	वह आएंगे वहां
أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ						
उस के दरवाज़े	और कहेंगे	उन से	उस के मुहाफ़िज़	क्या नहीं आए थे तुम्हारे पास	रसूल (जमा)	तु में से
يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُم وَيُنْذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ						
वह पढ़ते थे	तुम पर	तुम्हारे रब की आयतें (अहकाम)	और तुम्हें डराते थे	मुलाकात	तुम्हारा दिन	
هَذَا ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾						
यह	वह कहेंगे	हाँ	और लेकिन	पूरा हो गया	हुक्म	अज़ाब पर
71						
قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَلِدِينَ فِيهَا فَبِئْسَ مَثْوَى						
कहा जाएगा	तुम दाख़िल हो	दरवाज़े	जहनन्म	हमेशा रहने को	उस में	सो बुरा है ठिकाना
الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٢﴾ وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا						
तकब्वुर करने वाले	72	ले जाया जाएगा	वह लोग जो	वह डरे	अपना रब	जन्नत की तरफ़
حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا						
यहां तक कि	जब	वह वहां आएंगे	और खोल दिए जाएंगे	उस के दरवाज़े	और कहेंगे	उन से
سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿٧٣﴾ وَقَالُوا						
सलाम	तुम पर	तुम अच्छे रहे	तुम इस में दाख़िल हो	सो इस में दाख़िल हो	हमेशा रहने को	73
और वह कहेंगे						
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقْنَا وَعَدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ						
तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	वह जिस ने	हम से सच्चा किया	अपना वादा	और हमें वारिस बनाया	ज़मीन	
نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَمَلِينَ ﴿٧٤﴾						
हम मुक़ाम करलें	से - में	जन्नत	जहां	हम चाहें	सो किया ही अच्छा	अज़र
74						

और सूर में फूंक मारी जाएगी तो (हर कोई) जो आस्मानों और ज़मीन में है बेहोश हो जाएगा, सिवाए उस के जिसे अल्लाह चाहे, फिर उस में फूंक मारी जाएगी दोबारा, तो वह फ़ौरन खड़े हो कर (इधर उधर) देखने लगेंगे। (68)

और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी और (आमाल की) किताब (खोल कर) रख दी जाएगी और नबी और गवाह लाए जाएंगे, और उन के दरमियान हक के साथ (ठीक ठीक) फ़ैसला किया जाएगा और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (69)

और हर शख्स को उस के आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, और वह खूब जानता है जो कुछ वह करते हैं। (70)

और काफ़िर हाँके जाएंगे गिरोह दर गिरोह जहनन्म की तरफ़, यहां तक कि जब वह वहां आएंगे तो उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उन से कहेंगे उस के मुहाफ़िज़ (दारोगा) क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आए थे? जो तुम पर तुम्हारे रब के अहकाम पढ़ते थे, और तुम्हें डराते थे इस दिन की मुलाकात से। वह कहेंगे "हाँ" लेकिन काफ़िरों पर अज़ाब का हुक्म पूरा हो गया। (71)

कहा जाएगा तुम जहनन्म के दरवाज़ों में दाख़िल हो, इस में हमेशा रहने को, सो बुरा है तकब्वुर करने वालों का ठिकाना। (72)

और जो लोग अपने रब से डरे उन्हें जन्नत की तरफ़ गिरोह दर गिरोह ले जाया जाएगा, यहां तक कि जब वह वहां आएंगे और खोल दिए जाएंगे उस के दरवाज़े, और उन से उस के मुहाफ़िज़ (दारोगा) कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम अच्छे रहे, सो इस में हमेशा रहने को दाख़िल हो। (73)

और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने अपना वादा सच्चा किया और हमें ज़मीन का वारिस बनाया कि हम मुक़ाम कर लें जन्नत में जहां हम चाहें, सो किया ही अच्छा है अमल करने वालों का अज़र। (74)

और तुम देखोगे फ़रिश्तों को हलका बान्धे अर्श के गिर्द, अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हुए, उन के दरमियान हक़ के साथ (ठीक ठीक) फैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा तमाम तारीफ़ें सारे ज़हानों के परवरदिगार अल्लाह के लिए हैं। (75)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

इस कुरआन का उतारा जाना अल्लाह ग़ालिब, हर चीज़ के जानने वाले (की तरफ़) से है। (2)

गुनाहों को बख़्शने वाला, तौबा कुबूल करने वाला, शदीद अज़ाब वाला, बड़े फ़ज़ल वाला, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (3)

नहीं झगड़ते अल्लाह की आयात में, मगर वह लोग जिन्होंने कुफ़ किया, सो तुम्हें धोके में न डाल दे उन की चलत फिरत दुनिया के मुल्कों में। (4)

उन से क़व्ल नूह (अ) की कौम और उन के बाद (दूसरे) गिरोहों ने झुटलाया, और हर उम्मत ने अपने रसूलों के बारे में इरादा बान्धा कि वह उसे पकड़ लें, और नाहक झगड़ा करें ताकि उस से हक़ को दबा दें, तो मैं ने उन्हें पकड़ लिया, सो (देखो) कैसा हुआ मेरा अज़ाब। (5)

और इसी तरह तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो गई कि वह दोज़ख़ वाले हैं। (6)

जो फ़रिश्ते अर्श को उठाए हुए हैं और जो उस के इर्द गिर्द हैं वह तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं अपने रब की, और वह उस पर ईमान लाते हैं, और ईमान लाने वालों के लिए मग़फ़िरत मांगते हैं कि ऐ हमारे रब! हर शै को समो लिया है (तेरी) रहमत और इल्म ने, सो तू उन लोगों को बख़्श दे जिन्होंने तौबा की, और तेरे रास्ते की पैरवी की, और तू उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा ले। (7)

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَاقِّقِينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٥﴾							
तारीफ़ के साथ	पाकीज़गी बयान करते हुए	अर्श के गिर्द	से	हलका बान्धे	फरिश्ते	और तुम देखोगे	
75	परवरदिगार सारे जहानों का	तमाम तारीफें अल्लाह के लिए	और कहा जाएगा	हक के साथ	उन के दरमियान	और फैसला कर दिया जाएगा	अपना रब
آيَاتُهَا ٨٥ ﴿٤٠﴾ سُورَةُ الْمُؤْمِنِ ﴿٩﴾ رُكُوعَاتُهَا ٩							
85 आयात		(40) सूरतुल मोमिन			9 रकुआत		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
حَمْدٌ ۝ ١ ۝ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ ٢ ۝ غَافِرِ الذَّنْبِ							
हा-मीम	1	उतारा जाना	किताब (कुरआन)	अल्लाह से	ग़ालिब	हर चीज़ का जानने वाला	2
गुनाह (जमा)	वख़्शने वाला	गुनाह	वह लोग जिन्होंने कुफ़ किया	मगर	अल्लाह की आयात	मैं	वह नहीं झगड़ते
उसी की तरफ़	लौट कर जाना	3	वह नहीं झगड़ते	में	अल्लाह की आयात	मगर	वह लोग जिन्होंने कुफ़ किया
فَلَا يَغْزُرُكَ تَقْلُبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ۝ ٤ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ							
सो तुम्हें धोके में न डाल दे	उन का चलना फिरना	4	शहरों में	इन से क़व्ल	नूह (अ) की कौम	झुटलाया	उस के सिवा
وَالْأَحْزَابِ مِنْ بَعْدِهِمْ ۖ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ وَجَادِلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝ ٥ ۝ وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى							
सो कैसा	हुआ	मेरा अज़ाब	5	और इसी तरह	साबित हो गई	बात	तुम्हारे रब की
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ ۝ ٦ ۝ الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ							
और जो उस के इर्द गिर्द	वह पाकीज़गी बयान करते हैं	तारीफ़ के साथ	अपना रब	और ईमान लाते हैं	उस पर	और मग़फ़िरत मांगते हैं	और जो उस के इर्द गिर्द
لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ							
उन के लिए जो	वह ईमान लाए	ऐ हमारे रब	समो लिया है	हर शै	रहमत	और इल्म	सो तू वख़्श दे
لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۖ ۝ ٧ ۝							
वह लोग जिन्होंने तौबा की		और उन्होंने ने पैरवी की		तेरा रास्ता		जहन्नम	

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ						
ऐ हमारे रब	और उन्हें दाखिल करना	हमेशगी के बाग़ात	वह जिन का	तू ने उन से वादा किया	और जो	सालेह है
مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ						
से	उन के बाप दादा	और उन की वीवियां	और उन की औलाद	बेशक तू	तू ही	ग़ालिब
الْحَكِيمُ ﴿٨﴾ وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ						
हिक्मत वाला	8	और तू उन्हें बचाले	बुराइयों	और जो	बचा	बुराइयों
فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۖ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا						
तो यकीनन तू ने उस पर रहम किया	और यह	(यही) वह	कामयाबी	अज़ीम	9	बेशक
يُنَادُونَ لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ						
वह पुकारे जाएंगे	अलबत्ता अल्लाह का बेज़ार होना	बहुत बड़ा	से	तुम्हारा बेज़ार होना	अपने तई	
إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ﴿١٠﴾ قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا						
जब	तुम बुलाए जाते थे	ईमान की तरफ़	तो तुम कुफ़ करते थे	10	वह कहेंगे	ऐ हमारे रब
اٰثْنَيْنِ وَاٰحْيَيْنَا اِثْنَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَىٰ						
दो बार	और ज़िन्दगी बख़शी हमें तू ने	दो बार	पस हम ने एतिराफ़ कर लिया	अपने गुनाहों का	तो क्या	तरफ़
خُرُوجٍ مِّنْ سَبِيلٍ ﴿١١﴾ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ						
निकलना	से - कोई	सबील	11	यह तुम (पर)	इस लिए कि जब	पुकारा जाता अल्लाह
كَفَرْتُمْ ۖ وَإِنْ يُشْرِكْ بِهِ تُؤْمِنُوا ۖ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ﴿١٢﴾						
तुम कुफ़ करते	और अगर	उस का शरीक किया जाता	तुम मान लेते	पस हुक्म अल्लाह के लिए	बुलन्द	बड़ा
هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلْ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۖ						
वह	जो कि	तुम्हें दिखाता है	अपनी निशानियां	और उतारता है	तुम्हारे लिए	आस्मानों से
وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنِيبُ ﴿١٣﴾ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ						
और नहीं नसीहत कुबूल करता	सिवाए जो	रुजूअ करता है	13	पस पुकारो अल्लाह	ख़ालिस करते हुए	उस के लिए
الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿١٤﴾ رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ						
इबादत	अगरचे	बुरा मानें	काफ़िर (जमा)	बुलन्द	दरजे	अर्श का मालिक
يُلْقَى الرُّوحُ مِنْ أَمْرِهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنْذِرَ						
वह डालता है रूह	अपने हुक्म से	जिस पर	वह चाहता है	अपने बन्दों (में) से	ताकि वह डराए	
يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٥﴾ يَوْمَ هُمْ بَارِزُونَ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ						
मुलाकात (क़ियामत) का दिन	15	जिस दिन	वह	ज़ाहिर होंगे	न पोशीदा होंगी	अल्लाह पर
مِنْهُمْ شَيْءٌ ۖ لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾						
उन से - की	कोई शै	किस के लिए	वादशाहत	आज	वाहद	ज़बरदस्त क़हर वाला

ऐ हमारे रब! और उन्हें हमेशगी के बाग़ात में दाखिल फ़रमा, वह जिन का तू ने उन से वादा किया है और (उन को भी) जो सालेह है उन के बाप दादा में से और उन की वीवियों और उन की औलाद में से, बेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (8)

और उन्हें बुराइयों से बचाले और जो उस दिन बुराइयों से बचा, तो यकीनन तू ने उस पर रहम किया और यही अज़ीम कामयाबी है। (9)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया वह पुकारे जाएंगे (उन्हें पुकार कर कहा जाएगा) कि अल्लाह का बेज़ार होना तुम्हारे अपने तई बेज़ार होने से बहुत बड़ा है, जब तुम ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे तो तुम कुफ़ करते थे। (10)

वह कहेंगे ऐ हमारे रब! तू ने हमें मुर्दा रखा दो बार, और हमें ज़िन्दगी बख़शी दो बार, पस हम ने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया, तो क्या (अब यहां से) निकलने की कोई सबील है? (11)

कहा जाएगा यह तुम पर इस लिए (है) कि जब अल्लाह वाहद को पुकारा जाता तो तुम कुफ़ करते और अगर (किसी को) उस का शरीक किया जाता तो तुम मान लेते, पस हुक्म अल्लाह के लिए है जो बुलन्द, बड़ा है। (12)

वह जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, और तुम्हारे लिए आस्मान से रिज़ूक उतारता है, और नसीहत कुबूल नहीं करता सिवाए जो (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ करता है। (13)

पस तुम अल्लाह को पुकारो, उसी के लिए इबादत ख़ालिस करते हुए, अगरचे काफ़िर बुरा मानें। (14) बुलन्द दरजों वाला, अर्श का मालिक, वह अपने हुक्म से रूह (वाहि) डालता है (भेजता है) जिस पर अपने बन्दों में से चाहता है ताकि वह क़ियामत के दिन से डराए। (15)

जिस दिन वह ज़ाहिर होंगे, न पोशीदा होंगी अल्लाह पर उन की कोई शै, (निदा होगी) आज किस के लिए है वादशाहत? (एलान होगा) “अल्लाह के लिए” जो वाहद, ज़बरदस्त क़हर वाला है। (16)

आज हर शख्स को उस के आमाल का बदला दिया जाएगा, आज कोई जुल्म न होगा, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (17) और उन्हें करीब आने वाले रोज़े क़ियामत से डराएँ, जब दिल ग़म से भरे ग़लों के नज़्दीक (कलेजे मुँह को) आ रहे होंगे। ज़ालिमों के लिए नहीं कोई दोस्त, न कोई सिफ़ारिश करने वाला, जिस की बात मानी जाए। (18)

वह जानता है आँखों की ख़यानत और जो वह सीनों में छुपाते हैं। (19) और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला करता है, और जो लोग उस के सिवा पुकारते हैं वह कुछ भी फ़ैसले नहीं करते, बेशक अल्लाह ही सुनने वाला, देखने वाला है। (20)

क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देखते कैसा अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले थे, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा सख़्त थे, और ज़मीन में आसार (निशानियों के एतिबार से भी), तो अल्लाह ने उन्हें गुनाहों के सबब पकड़ा, और उन के लिए नहीं है कोई अल्लाह से बचाने वाला। (21)

इस लिए कि उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ ले कर आते थे, तो उन्होंने ने कुफ़ किया, पस उन्हें अल्लाह ने पकड़ा, बेशक वह क़व्वी, सख़्त अज़ाब देने वाला है। (22)

और तहकीक़ हम ने मूसा (अ) को भेजा अपनी निशानियों और रोशन सनद के साथ। (23)

फ़िरऔन और हामान और कारून की तरफ़ तो उन्होंने ने कहा (मूसा अ तो) जादूगर, बड़ा झूटा है। (24)

फिर जब वह उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ के साथ आए, तो उन्होंने ने कहा: उन के बेटों को क़त्ल कर डालो जो उस के साथ ईमान लाए, और उन की बेटियों को ज़िन्दा रहने दो, और काफ़िरों का दाओ गुमराही के सिवा (कुछ) नहीं। (25)

الْيَوْمَ تُجْزَى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ إِنَّ اللَّهَ						
वेशक अल्लाह	आज	नहीं जुल्म	वह जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख्स	बदला दिया जाएगा	आज
سَرِيعُ الْحِسَابِ (١٧) وَأَنْذَرُهُمْ يَوْمَ الْأَرْفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ						
जब दिल (जमा)	करीब आने वाला रोज़ (क़ियामत)	और आप (स) उन्हें डराएँ	17	हिसाब लेने वाला	तेज़	
لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاطِمِينَ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ						
और न कोई सिफ़ारिश करने वाला	दोस्त	से-कोई	नहीं ज़ालिमों के लिए	ग़म से भरे हुए	ग़लों के नज़्दीक	
يُطَاعُ (١٨) يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ (١٩)						
19	सीने (जमा)	छुपाते हैं	और जो कुछ	आँखों	ख़यानत	वह जानता है 18 जिस की बात मानी जाए
وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ						
उस के सिवा	पुकारते हैं	और जो लोग	हक़ के साथ	फ़ैसला करता है	और अल्लाह	
لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ (٢٠) أَوْ لَمْ						
क्या नहीं	20	देखने वाला	सुनने वाला	वही	बेशक अल्लाह	कुछ भी नहीं फ़ैसले करते
يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ						
उन लोगों का जो	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देखते	ज़मीन में	वह चले फिरे
كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا						
और आसार	कुव्वत	इन से	ज़ियादा सख़्त	वह	वह थे	इन से पहले थे
فِي الْأَرْضِ فَآخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ						
अल्लाह से	उन के लिए	है	और नहीं	उन के गुनाहों के सबब	तो उन्हें पकड़ा अल्लाह	ज़मीन में
مِنْ وَاقٍ (٢١) ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ						
खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आते थे	इस लिए कि वह	यह	21	बचाने वाला से-कोई
فَكَفَرُوا فَآخَذَهُمُ اللَّهُ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ (٢٢)						
22	सख़्त अज़ाब वाला	क़व्वी	बेशक वह	पस पकड़ा उन्हें अल्लाह	तो उन्होंने ने कुफ़ किया	
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَى بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ (٢٣) إِلَى فِرْعَوْنَ						
फ़िरऔन की तरफ़	23	रोशन	और सनद	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और तहकीक़ हम ने भेजा
وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَحَرٌ كَذَّابٌ (٢٤) فَلَمَّا جَاءَهُمْ						
वह आए उन के पास	फिर जब	24	बड़ा झूटा	जादूगर	तो उन्होंने ने कहा	और कारून और हामान
بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ						
उस के साथ	ईमान लाए	वह जो	उन के बेटे	तुम क़त्ल करो	उन्होंने ने कहा	हमारे पास (तरफ़) से हक़ के साथ
وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ (٢٥)						
25	गुमराही में	सिवाए	काफ़िरों	और नहीं दाओ	उन की औरतें (बेटियाँ)	और ज़िन्दा रहने दो

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَى وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۚ						
और कहा	फ़िरऔन	मुझे छोड़ दो	मैं कत्ल करूँ	मूसा (अ)	और उसे पुकारने दो	अपना रब
إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ						
वेशक मैं डरता हूँ	कि वह बदल दे	तुम्हारा दीन	या	यह कि ज़ाहिर कर दे (फैला दे)	ज़मीन में	
الْفَسَادَ ۚ (26) وَقَالَ مُوسَى إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ						
फ़साद	26	और कहा	मूसा (अ)	वेशक मैं	पनाह ले ली	अपने रब से - की
और तुम्हारे रब से - की						
مَنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۚ (27) وَقَالَ رَجُلٌ						
से	हर	मगरूर	(जो) ईमान नहीं रखता	रोज़े हिसाब पर	27	और कहा
एक मर्द						
مُؤْمِنٌ ۚ مِّنَ الَّذِينَ فِرْعَوْنُ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا						
मोमिन	से	फ़िरऔन के लोग	वह छुपाए हुए था	अपना ईमान	क्या तुम कत्ल करते हो	एक आदमी
أَنْ يَقُولَ رَبِّي اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ						
कि वह कहता है	मेरा रब अल्लाह	और वह तुम्हारे पास आया है	खुली निशानियों के साथ	तुम्हारे रब की तरफ़ से		
وَأَنْ يَّكَ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۚ وَإِنْ يَّكَ صَادِقًا يُصِبْكُمْ						
और अगर	वह है	झूटा	तो उस पर	उस का झूट	और अगर है वह	सच्चा
तुम्हें पहुँचेगा						
بَعْضُ الَّذِي يَعِدْكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ						
कुछ	वह जो	तुम से वादा करता है	वेशक अल्लाह	हिदायत नहीं देता	जो हो	हद से गुज़रने वाला
كَذَّابٌ ۚ (28) يَقُومُ لَكُمْ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَهَرِينَ فِي الْأَرْضِ						
सख़्त झूटा	28	ऐ मेरी कौम	तुम्हारे लिए	बादशाहत	आज	ग़ालिब
ज़मीन में						
فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنْ جَاءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ						
तो कौन	हमारी मदद करेगा	से	अल्लाह का अज़ाब	अगर वह आ जाए हम पर	कहा	फ़िरऔन
مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۚ (29)						
नहीं	मैं दिखता (राए देता) तुम्हें मगर	जो मैं देखता हूँ	और राह नहीं दिखाता तुम्हें	मगर	राह	भलाई
29						
وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَقُومُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِثْلَ						
और कहा	वह शख्स जो	ईमान ले आया	ऐ मेरी कौम	मैं डरता हूँ	तुम पर	मानिंद
يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۚ (30) مِثْلَ دَابِّ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ						
(साबिका) गिरोहों का दिन	30	जैसे	हाल	कौम नूह	और अ़ाद	और समूद
وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۚ (31)						
और जो लोग	उन के बाद	और नहीं	अल्लाह	चाहता	कोई जुल्म	अपने बन्दों के लिए
31						
وَيَقُومُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۚ (32)						
और ऐ मेरी कौम	मैं डरता हूँ	तुम पर	दिन चीख़ ओ पुकार	32		

और फ़िरऔन ने कहा: मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा (अ) को कत्ल कर दूँ और उसे अपने रब को पुकारने दो, वेशक मैं डरता हूँ कि वह बदल देगा तुम्हारा दीन या ज़मीन में फ़साद फैलाएगा। (26)

और मूसा (अ) ने कहा, वेशक मैं ने पनाह ले ली है अपने और तुम्हारे रब की, हर मगरूर से जो रोज़े हिसाब पर ईमान नहीं रखता। (27)

और कहा फ़िरऔन के लोगों में से एक मोमिन मर्द ने (जो) अपना ईमान छुपाए हुए था, क्या तुम एक आदमी को (महज़ इस बात पर) कत्ल करते हो कि वह कहता है “मेरा रब अल्लाह है” और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली निशानियों के साथ आया है और अगर वह झूटा है तो उस के झूट (का ववाल) उसी पर होगा, और अगर वह सच्चा है तो वह जो तुम से वादा कर रहा है उस का कुछ (अज़ाब) तुम पर (ज़रूर) पहुँचेगा, वेशक अल्लाह (उसे) हिदायत नहीं देता जो हद से गुज़रने वाला, सख़्त झूटा। (28)

ऐ मेरी कौम आज बादशाहत तुम्हारी है, तुम ग़ालिब हो ज़मीन में, अगर अल्लाह का अज़ाब हम पर आ जाए तो उस से बचाने के लिए कौन हमारी मदद करेगा? फ़िरऔन ने कहा, मैं तुम्हें राए नहीं देता मगर जो मैं देखता हूँ, और मैं तुम्हें राह नहीं दिखाता मगर भलाई की राह। (29)

और उस शख्स ने कहा जो ईमान ले आया था, ऐ मेरी कौम! मैं तुम पर साबिका गिरोहों के दिन के मानिंद (अज़ाब नाज़िल होने से) डरता हूँ, (30)

जैसे हाल हुआ कौम नूह और अ़ाद और समूद का और जो उन के बाद (हुए) और अल्लाह नहीं चाहता अपने बन्दों के लिए कोई जुल्म। (31)

और ऐ मेरी कौम! मैं तुम पर चीख़ ओ पुकार के दिन से डरता हूँ। (32)

जिस दिन तुम भागोगे पीठ फेर कर, तुम्हारे लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा, और जिस को अल्लाह गुमराह करदे उस के लिए कोई नहीं हिदायत देने वाला। (33) और तहकीक तुम्हारे पास इस से क़व्ल यूसुफ़ (अ) वाज़ेह दलाइल के साथ आए, सो तुम हमेशा शक में रहे उस (के बारे में) जिस के साथ वह तुम्हारे पास आए, यहां तक कि जब वह फौत हो गए तो तुम ने कहा: उस के बाद अल्लाह हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा, इसी तरह अल्लाह (उसे) गुमराह करता है जो हद से गुज़रने वाला, शक में रहने वाला हो। (34) जो लोग अल्लाह की आयतों (के बारे) में झगड़ते हैं किसी दलील के वग़ैर जो उन के पास हो (उन की यह कज बहसी) सख़्त ना पसंद है अल्लाह के नज़्दीक और उन के नज़्दीक जो ईमान लाए, इसी तरह अल्लाह हर मगरूर, सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है। (35) और फिरऔन ने कहा ऐ हामान! मेरे लिए बुलन्द इमारत बना, शायद कि मैं पहुँच जाऊँ। (36) आस्मानों के रास्ते, पस मैं मूसा (अ) के माबूद को झाँक लूँ, और वेशक मैं उसे झूटा गुमान करता हूँ, और उसी तरह फिरऔन को उस के बुरे अमल आरास्ता दिखाए गए और वह रोक दिया गया सीधे रास्ते से, और फिरऔन की तदबीर सिर्फ़ तबाही ही थी। (37) और जो शख्स ईमान ले आया था, उस ने कहा कि ऐ मेरी कौम! तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें भलाई का रास्ता दिखाऊँगा। (38) ऐ मेरी कौम! इस के सिवा नहीं कि यह दुनिया की ज़िन्दगी थोड़ा सा फ़ाइदा है, और आखिरत वेशक हमेशा रहने का घर है। (39) जिस शख्स ने बुरा अमल किया उसे उस जैसा बदला दिया जाएगा, और जिस ने अच्छा अमल किया, वह खाह मर्द हो या औरत, वशर्त यह कि वह मोमिन हो, तो यही लोग दाख़िल होंगे जन्नत में, उस में उन्हें वे हिसाब रिज़्क दिया जाएगा। (40)

يَوْمَ تُؤْلَوْنَ مُدْبِرِينَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ								
गुमराह कर दे	और जिस को	बचाने वाला	कोई	अल्लाह से	नहीं तुम्हारे लिए	पीठ फेर कर	तुम फिर जाओगे (भागोगे)	जिस दिन
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ (३३) وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ								
इस से क़व्ल	यूसुफ़ (अ)	और तहकीक आए तुम्हारे पास			33	कोई हिदायत देने वाला	तो नहीं उस के लिए	अल्लाह
بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِّمَّا جَاءَكُمْ بِهِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ								
तुम ने कहा	वह फौत हो गए	जब	यहां तक	आए तुम्हारे पास जिस के साथ	शक में उस से	सो तुम हमेशा रहे	(वाज़ेह) दलाइल के साथ	
لَنْ يَبْعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا ۚ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ هُوَ								
जो वह	गुमराह करता है अल्लाह	इसी तरह	कोई रसूल	उस के बाद	हरगिज़ न भेजेगा अल्लाह			
مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ (३४) الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَنٍ								
बग़ैर किसी दलील	अल्लाह की आयतें	में	झगड़ा करते हैं	जो लोग	34	शक में रहने वाला	हद से गुज़रने वाला	
أَتَهُمْ ۚ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ								
मुहर लगा देता है अल्लाह	इसी तरह	ईमान लाए	उन लोगों के जो	और नज़्दीक	अल्लाह के नज़्दीक	सख़्त ना पसंद	आई उन के पास	
عَلَىٰ كُلِّ قَلْبٍ مُّتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ (३५) وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَهْمُنُ ابْنُ								
बना दे तो	ऐ हामान	फ़िरऔन	और कहा	35	सरकश	मगरूर	हर दिल	पर
لِي صِرْحًا لَّعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ (३६) أَسْبَابَ السَّمَوَاتِ فَاتَّلِعَ								
पस झाँक लूँ	आस्मानों	रास्ते	36	रास्ते	पहुँच जाऊँ	शायद कि मैं	एक (बुलन्द) महल	मेरे लिए
إِلَىٰ إِلَهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا ۚ وَكَذَلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ								
फ़िरऔन को	आरास्ता दिखाए गए	और उसी तरह	झूटा	उसे अलबत्ता गुमान करता हूँ	और वेशक मैं	मूसा (अ) का माबूद	तरफ़, को	
سُوءَ عَمَلِهِ وَضَدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا كِيدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ (३७)								
37	मगर (सिर्फ़) तबाही में	फ़िरऔन	और नहीं तदवीर	सीधा रास्ता	से	और वह रोक दिया गया	उस के बुरे अमल	
وَقَالَ الَّذِينَ آمَنَ يَقَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ (३८)								
38	भलाई	रास्ता	मैं तुम्हें राह दिखाऊँगा	तुम मेरी पैरवी करो	ऐ मेरी कौम	वह जो ईमान ले आया था	और कहा	
يَقَوْمِ إِنَّمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۚ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ								
वह	आखिरत	और वेशक	(थोड़ा) फ़ाइदा	दुनिया की ज़िन्दगी		यह	इस के सिवा नहीं	ऐ मेरी कौम
دَارُ الْقَرَارِ (३९) مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ								
और जो - जिस	उसी जैसा	मगर	उसे बदला न दिया जाएगा	बुरा	अमल किया	जो - जिस	39	(हमेशा) रहने का घर
عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْشَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ								
तो यही लोग	और (वशर्त यह कि) वह मोमिन		या औरत	मर्द	से	अच्छा	अमल किया	
يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ (४०)								
40	वे हिसाब		उस में	वह रिज़्क दिए जाएंगे	जन्नत	दाख़िल होंगे		

और ऐ मेरी कौम! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझे जहन्नम की तरफ़ बुलाते हो। (41)

41	आग (जहन्नम)	तरफ़	और बुलाते हो तुम मुझे	नजात	तरफ़	मैं बुलाता हूँ तुम्हें	क्या हुआ मुझे	और ऐ मेरी कौम

تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَأُشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ

कोई इल्म	उस का	मुझे	नहीं	जो	उस के साथ	और मैं शरीक ठहराऊँ	अल्लाह का	कि मैं इन्कार करूँ	तुम बुलाते हो मुझे

وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ (42) لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِي

तुम बुलाते हो मुझे	यह कि	कोई शक नहीं	42	बख़्शने वाला	ग़ालिब	तरफ़	बुलाता हूँ तुम्हें	और मैं

إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنْ مَّرَدَّنَا

फिर जाना है हमें	और यह कि	आखिरत में	और न	दुनिया में	बुलाना	नहीं उस के लिए	उस की तरफ़

إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ (43) فَسَتَذْكُرُونَ

सो तुम जल्द याद करोगे	43	आग वाले (जहन्नमी)	वह-वही	हद से बढ़ने वाले	और यह कि	अल्लाह की तरफ़

مَا أَقُولُ لَكُمْ وَأَفْوَضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ

देखने वाला	वेशक अल्लाह	अल्लाह को	अपना काम	और मैं सौंपता हूँ	तुम्हें	जो मैं कहता हूँ

بِالْعِبَادِ (44) فَوَقَّعَهُ اللَّهُ سَيِّئَاتٍ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ

और घेर लिया	दाओ जो वह करते थे	बुराइयाँ	सो उसे बचा लिया अल्लाह ने	44	बन्दों को

بِالْفِرْعَوْنَ سُوءِ الْعَذَابِ (45) النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا

उस पर	वह हाज़िर किए जाते हैं	आग	45	बुरा अज़ाब	फिरऔन वालों को

غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا

दाख़िल करो तुम	क़ियामत	काइम होगी	और जिस दिन	और शाम	सुबह

إِلَ الْفِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ (46) وَإِذْ يَتَحَاجُّونَ فِي النَّارِ

आग (जहन्नम) में	वह बाहम झगड़ेंगे	और जब	46	अज़ाब	शदीद तरीन	फिरऔन वाले

فَيَقُولُ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ

तुम्हारे	वेशक हम थे	वह बड़े बनते थे	उन लोगों को जो	कमज़ोर	तो कहेंगे

تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُّغْنُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ (47)

47	आग	से-का	कुछ हिस्सा	हम से	दूर कर दोगे	तुम	तो क्या	तावे

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ

फैसला कर चुका है	वेशक अल्लाह	इस में	सब	वेशक हम	बड़े बनते थे	वह लोग जो	कहेंगे

بَيْنَ الْعِبَادِ (48) وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَازِنَةِ جَهَنَّمَ

जहन्नम	निगहवान दारोगा (जमा) को	आग में	वह लोग जो	और कहेंगे	48	बन्दों के दरमियान

ادْعُوا رَبَّكُمْ يَخَفُّ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ (49)

49	से-का अज़ाब	एक दिन	हम से	हल्का कर दे	अपने रब से	तुम दुआ करो

और ऐ मेरी कौम! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझे जहन्नम की तरफ़ बुलाते हो। (41)

तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह का इन्कार करूँ और उस के साथ उसे शरीक ठहराऊँ जिस का मुझे कोई इल्म नहीं और मैं तुम्हें ग़ालिब बख़्शने वाले (अल्लाह) की तरफ़ बुलाता हूँ। (42)

कोई शक नहीं कि तुम मुझे जिस की तरफ़ बुलाते हो उस का दुनिया में और आखिरत में (कुछ भी) नहीं और यह कि हमें फिर जाना है अल्लाह की तरफ़, और यह कि हद से बढ़ जाने वाले ही जहन्नमी हैं। (43)

सो तुम जल्दी याद करोगे जो मैं तुम्हें कहता हूँ और मैं अपना काम (मामला) अल्लाह को सौंपता हूँ, वेशक अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (44)

सो अल्लाह ने उसे बचा लिया (उन) बुरे दाओ से जो वह करते थे, और फिरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने घेर लिया। (45)

(जहन्नम की) आग जिस पर वह सुबह ओ शाम पेश किए जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत काइम होगी (हुकम होगा कि) तुम दाख़िल करो फिरऔन वालों को शदीद तरीन अज़ाब में। (46)

और जब वह जहन्नम में बाहम झगड़ेंगे तो कहेंगे कमज़ोर उन लोगों को जो बड़े बनते थे: वेशक हम (दुनिया में) तुम्हारे मातहत थे तो क्या (अब) तुम दूर कर दोगे हम से आग का कुछ हिस्सा? (47)

वह लोग जो बड़े बनते थे कहेंगे: वेशक हम सब इस में हैं, वेशक अल्लाह बन्दों के दरमियान फैसला कर चुका है। (48)

और वह लोग जो आग में होंगे वह कहेंगे दारोगों (जहन्नम के निगहवान फ़रिशतों) को: अपने रब से दुआ करो, एक दिन का अज़ाब हम से हल्का कर दे। (49)

वह कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुली निशानियों के साथ नहीं आए थे? वह कहेंगे हाँ! वह कहेंगे तो तुम पुकारो, और न होगी काफ़िरों की पुकार मगर बेसूद। (50)

वेशक हम ज़रूर मदद करते हैं अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए दुनिया की ज़िन्दगी में और (उस दिन भी) जिस दिन गवाही देने वाले खड़े होंगे। (51)

जिस दिन ज़ालिमों को नफ़ा न देगी उन की उज़्र खाही, और उन के लिए लानत (अल्लाह की रहमत से दूरी) है और उन के लिए बुरा घर है। (52)

और तहकीक़ हम ने मूसा (अ) को हिदायत (तौरेत) दी और हम ने बनी इस्राईल को तौरेत का वारिस बनाया। (53)

(जो) अक्ल मन्दों के लिए हिदायत और नसीहत है। (54)

पस आप (स) सब्र करें, वेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, और अपने कुसूरों के लिए मग्फ़िरत तलब करें, और अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करें शाम और सुबह। (55)

वेशक जो लोग अल्लाह की आयात में झगड़ते हैं वग़ैर किसी सनद के, जो उन के पास आई हो, उन के दिलों में तकव्वुर (बड़ाई की हवस) के सिवा कुछ नहीं, जिस तक वह कभी पहुँचने वाले नहीं। पस आप अल्लाह की पनाह चाहें, वेशक वही सुनने वाला देखने वाला है। (56)

यकीनन आस्मानों का और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने से बहुत बड़ा है, लेकिन अक्सर लोग समझते नहीं। (57)

और बराबर नहीं नावीना और बीना, और (न) वह जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, और न वह जो बदकार हैं। बहुत कम तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करते हो। (58)

قَالُوا أَوْ لَمْ تَكُ تَأْتِيكُمُ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا بَلَىٰ							
हाँ	वह कहेंगे	निशानियों के साथ	तुम्हारे रसूल	तुम्हारे पास आते	क्या नहीं थे	वह कहेंगे	
قَالُوا فَادْعُوا وَمَا دُعَاؤُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ (٥٠)							
50	गुमराही में (बेसूद)	मगर	काफ़िर (जमा)	पुकार	और न	तो तुम पुकारो	वह कहेंगे
إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا							
दुनिया	ज़िन्दगी	में	ईमान लाए	और जो लोग	अपने रसूल (जमा)	ज़रूर मदद करते हैं	वेशक हम
وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ (٥١) يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ							
ज़ालिम (जमा)	नफ़ा न देगी	जिस दिन	51	गवाही देने वाले	खड़े होंगे	और जिस दिन	
مَعَذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ (٥٢) وَلَقَدْ آتَيْنَا							
और तहकीक़ हम ने दी	52	बुरा घर (ठिकाना)	और उन के लिए	लानत	और उन के लिए	उन की उज़्र खाही	
مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتٰبَ (٥٣)							
53	किताब (तौरेत)	बनी इस्राईल	और हम ने वारिस बनाया	हिदायत	मूसा (अ)		
هُدًى وَذِكْرَىٰ لِأُولَى الْأَلْبَابِ (٥٤) فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ							
अल्लाह का वादा	वेशक	पस आप (स) सब्र करें	54	अक्ल मन्दों के लिए	और नसीहत	हिदायत	
حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ							
अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान करें	अपने गुनाहों के लिए	और मग्फ़िरत तलब करें	सच्चा			
بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ (٥٥) إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ							
अल्लाह की आयात	में	झगड़ते हैं	वह लोग जो	वेशक	55	और सुबह	शाम
بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ أَتٰهُمْ ۚ إِنَّ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ							
तकव्वुर	सिवाए	उन के सीने (दिल)	में	नहीं	उन के पास आई हो	किसी सनद	वग़ैर
مَّا هُمْ بِبَالِغِيهِ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ							
वही सुनने वाला	वेशक वह	अल्लाह की	पस आप (स) पनाह चाहें	उस तक पहुँचने वाले	नहीं वह		
الْبَصِيرُ (٥٦) لَخَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ							
से	बहुत बड़ा	और ज़मीन	आस्मानों	यकीनन पैदा करना	56	देखने वाला	
خَلْقِ النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (٥٧)							
57	जानते (समझते) नहीं	अक्सर लोग	और लेकिन	लोगों को पैदा करना			
وَمَا يَسْتَوِ الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ وَالَّذِينَ آمَنُوا							
और जो लोग ईमान लाए	और बीना	नावीना	और बराबर नहीं				
وَعَمِلُوا الصَّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيءُ ۖ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ (٥٨)							
58	जो तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करते हो	बहुत कम	और न बदकार	और उन्होंने ने अच्छे अमल किए			

إِنَّ السَّاعَةَ لَأْتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ						
लोग	अक्सर	और लेकिन	इस में	नहीं शक	ज़रूर आने वाली	क़ियामत वेशक
तुम्हारी	मैं कुबूल करूँगा	तुम दुआ करो मुझ से	तुम्हारे रब ने	और कहा	59	ईमान नहीं लाते
إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرَيْنَ ﴿٦٠﴾ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ						
जहन्नम	अनक़रीब वह दाख़िल होंगे	मेरी इबादत	से	तक़व्वुर करते हैं	जो लोग	वेशक
उस में	ताकि तुम सुकून हासिल करो	रात	तुम्हारे लिए	बनाई	वह जिस ने	अल्लाह 60 ख़ार हो कर
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَىٰ تُؤَفَّكُونَ ﴿٦٢﴾ كَذَلِكَ يُؤَفِّكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٦٣﴾ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُم						
लोगों पर	फ़ज़ल वाला	वेशक अल्लाह	दिखाने को	और दिन		
पैदा करने वाला	तुम्हारा रब	अल्लाह	यह है	61	शुक्र नहीं करते	अक्सर लोग और लेकिन
इसी तरह	62	उलटे फिरे जाते हो	तो कहां तुम	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	हर शै
अल्लाह	63	वह इन्कार करते हैं	अल्लाह की आयात से - का	थे	वह लोग जो	उलटे फिर जाते हैं
और तुम्हें सूरत दी	छत	और आस्मान	करारगाह	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया वह जिस ने
यह है	पाकीज़ा चीज़ें	से	और तुम्हें रिज़ूक दिया	तुम्हें सूरत दी	तो बहुत ही हसीन	
वही	64	परवरदिगार सारे जहानों का	सो बरकत वाला है अल्लाह	अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार		
उस के लिए दीन	ख़ालिस कर के	पस तुम पुकारो उसे	सिवाए उस के	नहीं कोई माबूद	ज़िन्दा रहने वाला	
कि परस्तिश करूँ मैं	मुझे मना कर दिया गया है	वेशक मैं	आप (स) फ़रमा दें	65	परवरदिगार सारे जहानों का	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए
खुली निशानियां	वह मेरे पास आ गई	जब	अल्लाह के सिवा	तुम पूजा करते हो	वह जिन की	
66	परवरदिगार के लिए तमाम जहानों का	कि मैं अपनी गर्दन झुका दूँ	और मुझे हुक्म दिया गया	मेरे रब से		

वेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है, इस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (59)

और तुम्हारे रब ने कहा: तुम मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी (दुआ) कुबूल करूँगा, वेशक जो लोग मेरी इबादत से तक़व्वुर (सरताबी) करते हैं अनक़रीब ख़ार हो कर वह जहन्नम में दाख़िल होंगे। (60)

अल्लाह वह है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन दिखाने को (रोशन बनाया), वेशक अल्लाह फ़ज़ल वाला है लोगों पर और लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (61)

यह है अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार, हर शै का पैदा करने वाला, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो तुम कहां उलटे फिरे जाते हो? (62)

इसी तरह वह लोग उलटे फिर जाते हैं जो अल्लाह की आयात का इन्कार करते हैं। (63)

अल्लाह, जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को करारगाह बनाया और आस्मान को छत (बनाया) और तुम्हें सूरत दी तो बहुत ही हसीन सूरत दी, और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़ूक दिया, यह है अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार, सो बरकत वाला है अल्लाह, सारे जहां का परवरदिगार। (64)

वही ज़िन्दा रहने वाला है, नहीं कोई माबूद उस के सिवा, पस तुम उसी को पुकारो उस के लिए दीन ख़ालिस करके, तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, सारे जहान का परवरदिगार। (65)

आप (स) फ़रमा दें: वेशक मुझे मना कर दिया गया है कि मैं उन की परस्तिश करूँ जिन की तुम अल्लाह के सिवा पूजा करते हो, जब मेरे पास आ गई मेरे रब (की तरफ़) से खुली निशानियां, और मुझे हुक्म दिया गया है कि तमाम जहानों के परवरदिगार के लिए अपनी गर्दन झुका दूँ, (66)

वह जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुतफ़े से, फिर लोथड़े से, फिर वह तुम्हें निकालता है (माँ के पेट से) बच्चा सा, फिर (तुम्हें बाकी रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो, फिर (ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और तुम में से (कोई है) जो फौत हो जाता है उस से क़ब्ल, और ताकि तुम सब (अपने अपने) वक्ते मुक़र्ररा को पहुँचो और ताकि तुम समझो। (67)

वही है जो ज़िन्दगी अता करता है और मारता है, फिर जब वह किसी अमर का फ़ैसला करता है तो उस के सिवा नहीं कि वह उस को कहता है “हो जा” सो वह हो जाता है। (68) क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयात में झगड़ते हैं? वह कहां फिरे जाते (भटकते) हैं? (69) जिन लोगों ने किताब को झुटलाया और उसे जिस के साथ हम ने अपने रसूलों को भेजा, पस वह जल्द जान लेंगे। (70)

जब उन की गर्दनो में तौक़ और ज़न्जीरें होंगी, वह घसीटे जाएंगे। (71) खौलते हुए पानी में, फिर वह आग (जहन्नम) में झोंक दिए जाएंगे। (72)

फिर कहा जाएगा उन को, कहां है वह जिन को तुम अल्लाह के सिवा शरीक करते थे? (73)

वह कहेंगे वह तो हम से गुम हो गए (कहीं नज़र नहीं आते) बल्कि हम तो इस से क़ब्ल किसी चीज़ को पुकारते ही न थे, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों को गुमराह करता है। (74)

यह उस का बदला है जो तुम ज़मीन में नाहक़ खुश होते (फिरते) थे, और बदला है उस का जिस पर तुम इतराते थे। (75)

तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उस में रहने को, सो बड़ा बनने वालों का बुरा है ठिकाना। (76)

पस आप (स) सव्र करें, वेशक़ अल्लाह का वादा सच्चा है, पस अगर हम आप को उस (अज़ाब) का कुछ हिस्सा दिखा दें जो हम उन से वादा करते हैं या (उस से क़ब्ल) हम आप को वफ़ात दे दें (बहर सूरत) वह हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे। (77)

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ							
वह जिस ने	पैदा किया तुम्हें	मिट्टी से	फिर	नुतफ़े से	फिर	लोथड़े से	
ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا							
फिर	तुम्हें निकालता है वह	बच्चा सा	फिर	ताकि तुम पहुँचो	अपनी जवानी	फिर	ताकि तुम बूढ़े हो जाओ
وَمِنْكُمْ مَنْ يَتَوَقَّى مِنْ قَبْلٍ وَلِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ							
और तुम में से	जो फौत हो जाता है	उस से क़ब्ल	और ताकि तुम पहुँचो	वक्ते मुक़र्ररा	और ताकि तुम		
تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾ هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا							
समझो	67	वही है जो	ज़िन्दगी अता करता है	और मारता है	फिर जब	वह फ़ैसला करता है	किसी अमर
يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٦٨﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِيَّ							
उस के लिए	वह कहता है	हो जा	सो वह हो जाता है	68	क्या नहीं देखा तुम ने	जो लोग	झगड़ते हैं
آيَتِ اللَّهِ أَنِّي يُصْرَفُونَ ﴿٦٩﴾ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا							
अल्लाह की आयात	कहां	फिरे जाते हैं	69	जिन लोगों ने	झुटलाया	किताब को	और उस को जो
أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾ إِذِ الْأَغْلُلُ							
हम ने भेजा	उस के साथ	अपने रसूल	पस जल्द	वह जान लेंगे	70	जब	तौक़ (जमा)
فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلْسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿٧١﴾ فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ							
उन की गर्दनो में	और ज़न्जीरें	वह घसीटे जाएंगे	71	मैं	खौलते हुए पानी में	फिर	
فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ آيَنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٧٣﴾							
आग में	वह झोंक दिए जाएंगे	72	फिर	कहा जाएगा	उन को	जिन को तुम थे	शरीक करते
مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُوا							
अल्लाह के सिवा	वह कहेंगे	वह गुम हो गए	हम से	बल्कि	नहीं	पुकारते थे हम	
مِنْ قَبْلُ شَيْئًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾ ذَلِكُمْ بِمَا							
इस से क़ब्ल	कोई चीज़	इसी तरह	गुमराह करता है अल्लाह	काफ़िरों	74	यह	उस का बदला जो
كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٥﴾							
तुम खुश होते थे	ज़मीन में	नाहक़	और बदला उस का जो	तुम थे	इतराते	75	
أَدْخُلُوا أَبْوََابَ جَهَنَّمَ خَلِدِينَ فِيهَا فَبِئْسَ مَثْوًى							
तुम दाख़िल हो जाओ	दरवाज़े	जहन्नम	हमेशा रहने को	उस में	सो बुरा	ठिकाना	
الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٦﴾ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَإِمَّا نُرَبِّيكَ							
तकब्वुर करने (बड़ा बनने) वालों का	76	आप सव्र करें	वेशक़	अल्लाह का वादा	सच्चा	पस अगर	हम आप (स) को दिखा दें
بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٧٧﴾							
वाज़ (कुछ हिस्सा)	वह जो	हम उन से वादा करते हैं	या	हम आप (स) को वफ़ात दे दें	पस हमारी तरफ़	वह लौटाए जाएंगे	77

ع ٨
١٢

عند التلاوة
١٢

٨
ع
١٣

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ							
आप (स) पर- से	हम ने हाल बयान किया	जो- जिन	उन में से	आप (स) से पहले	बहुत से रसूल	और तहकीक हम ने भेजे	
وَمِنْهُمْ مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ							
वह जाए	कि	किसी रसूल के लिए	और न था	आप (स) पर- से	हम ने हाल नहीं बयान किया	जो- जिन	और उन में से
بَايَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ							
और घाटे में रह गए	हक के साथ	फैसला कर दिया गया	अल्लाह का हुक्म	आ गया	सो जब	अल्लाह के हुक्म से	मगर- कोई निशानी
هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٨﴾ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ							
चौपाए	तुम्हारे लिए	बनाए	वह जिस ने	अल्लाह	78	अहले वातिल	उस वक़्त
لِتَرْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ							
बहुत से फाइदे	उन में	और तुम्हारे लिए	79	तुम खाते हो	और उन से	उन से	ताकि तुम सवार हो
وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا							
और उन पर		तुम्हारे सीनों (दिलों में)		हाजत	उन पर	और ताकि तुम पहुँचो	
وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٨٠﴾ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ ۖ فَآيَ آيَاتِ اللَّهِ تُنْكِرُونَ ﴿٨١﴾							
81	तुम इन्कार करोगे	अल्लाह की निशानियों का	तो किन किन	अपनी निशानियाँ	और वह दिखाता है तुम्हें	80	लदे फिरते हो और कशतियों पर
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ							
अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देखते	ज़मीन में	पस क्या वह चले फिरे नहीं		
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً							
कुव्वत	और बहुत ज़ियादा	इन से	बहुत ज़ियादा	वह थे	इन से कव्वल	उन लोगों का जो	
وَأَثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾							
82	वह कमाते (करते) थे		जो	उन के	वह काम आया	सो न	ज़मीन में और आसार
فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِنْدَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ							
इल्म से		उन के पास	खुश हुए (इतराने लगे)	उस पर जो	खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आए फिर जब
وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا							
हमारा अज़ाब	उन्होंने ने देखा	फिर जब	83	मज़ाक उड़ाते	उस का	थे	जो वह उन्हें और घेर लिया
قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ﴿٨٤﴾							
84	शरीक करते	उस के साथ	हम थे	वह जिस	और हम मुन्किर हुए	वह वाहिद	अल्लाह हम ईमान लाए वह कहने लगे
فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا سُنَّتَ اللَّهُ							
अल्लाह का दस्तूर		हमारा अज़ाब	जब उन्होंने ने देख लिया	उन का ईमान	उन को नफ़ा देता	तो न हुआ	
الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ ﴿٨٥﴾							
85	काफिर (जमा)	उस वक़्त	और घाटे में रह गए	उस के बन्दों में	गुज़र चुका है	वह जो	

٩
ع
١٣

और तहकीक हम ने आप (स) से पहले बहुत से रसूल भेजे, उन में से (कुछ हैं) जिन का हाल हम ने आप से बयान किया और उन में से (कुछ हैं) जिन का हाल हम ने आप से बयान नहीं किया, और किसी रसूल के लिए (मक़दूर) न था कि वह कोई निशानी अल्लाह के हुक्म के बगैर ले आए, सो जब अल्लाह का हुक्म आ गया, हक के साथ फैसला कर दिया गया, और अहले वातिल उस वक़्त घाटे में रह गए। (78) अल्लाह (ही) है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए। ताकि तुम सवार हो उन में से (बाज़ पर), और उन में से (बाज़) तुम खाते हो, (79) और तुम्हारे लिए उन में बहुत से फाइदे हैं और ताकि तुम उन पर (सवार हो कर) अपने दिलों की मुराद (मन्ज़िले मकसूद) को पहुँचो और उन पर और कशतियों पर तुम लदे फिरते हो। (80) और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे? (81) पस क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देखते कि कैसा हुआ अन्जाम उन लोगों का जो उन से कव्वल थे, वह तादाद और कुव्वत में इन से बहुत ज़ियादा थे, और वह ज़मीन में (इन से बढ़ चढ़ कर) आसार (छोड़ गए) सो जो वह करते थे उन के (कुछ) काम न आया। (82) फिर जब उन के पास उन के रसूल खुली निशानियों के साथ आए तो वह उस इल्म पर इतराने लगे जो उन के पास था और उन्हें उस (अज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक उड़ाते थे। (83) फिर जब उन्होंने ने हमारा अज़ाब देखा तो वह कहने लगे हम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाए और हम उस के मुन्किर हुए जिस को हम उस के साथ शरीक करते थे। (84) तो (उस वक़्त ऐसा) न हुआ कि उन का ईमान उन को नफ़ा देता जब उन्होंने ने हमारा अज़ाब देख लिया, अल्लाह का दस्तूर है जो उस के बन्दों में गुज़र चुका (होता चला आया है) और उस वक़्त काफिर घाटे में रह गए। (85)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

(यह कलाम) नाज़िल किया हुआ है निहायत मेहरवान रहम करने वाले (अल्लाह की तरफ) से। (2)

यह एक किताब है जिस की आयतें वाज़ेह कर दी गई हैं, कुरआन अरबी ज़बान में उन लोगों के लिए जो जानते हैं। (3)

खुशखबरी देने वाला, डर सुनाने वाला, सो उन में से अकसर ने मुँह फेर लिया, पस वह सुनते नहीं। (4)

और उन्होंने ने कहा कि हमारे दिल पर्दों में हैं उस (बात) से जिस की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, और हमारे कानों में गिरानी है, और हमारे और तुम्हारे दरमियान एक पर्दा है, सो तुम अपना काम करो, वेशक हम अपना काम करते हैं। (5)

आप (स) फ़रमा दें, इस के सिवा नहीं कि मैं तुम जैसा एक बशर हूँ, मेरी तरफ़ वहि की जाती है कि तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस सीधे रहो उस के हुनूर और उस से मग़फ़िरत मांगो, और ख़राबी है मुश्रिकों के लिए। (6)

वह जो ज़कात नहीं देते और वह आख़िरत के मुन्किर हैं। (7)

वेशक जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, उन के लिए अजर है न ख़तम होने वाला। (8)

आप (स) फ़रमा दें क्या तुम उस का इन्कार करते हो जिस ने ज़मीन को दो (2) दिनों में पैदा किया और तुम उस के शरीक ठहराते हो, यही है सारे ज़हानों का रब। (9)

और उस ने उस (ज़मीन) में बनाए उस के ऊपर पहाड़, और उस में बरकत रखी, और उस में चार (4) दिनों में उन की ख़ुराकें मुक़र्रर की, यकसां तमाम सवाल करने वालों के लिए। (10)

फिर उस ने आस्मान की तरफ़ तबज़ुह फ़रमाई, और वह एक धुआं था, तो उस ने उस से और ज़मीन से कहा तुम दोनों आओ खुशी से या नाखुशी से, उन दोनों ने कहा, हम दोनों खुशी से हाज़िर हैं। (11)

آيَاتُهَا ٥٤ ﴿٤١﴾ سُورَةُ حَمِّ السَّجْدَةِ ﴿٦﴾ رُكُوعَاتُهَا ٦

रुक़आत 6

(41) सूरह हा-मीम सजदा

आयात 54

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

حَمِّ ﴿١﴾ تَنْزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿٢﴾ كِتَابٌ فُصِّلَتْ آيَاتُهُ قُرْآنًا

कुरआन	जुदा जुदा (वाज़ेह) कर दी गई उस की आयतें	एक किताब	2	रहम करने वाला	निहायत मेहरवान	से	नाज़िल किया हुआ	1	हा-मीम

عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾ بَشِيرًا وَنَذِيرًا فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ

पस वह	उन में से अकसर	सो मुँह फेर लिया	और डर सुनाने वाला	खुशखबरी देने वाला	3	वह जानते हैं	उन लोगों के लिए	अरबी (ज़बान) में

لَا يَسْمَعُونَ ﴿٤﴾ وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِي أَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ

उस की तरफ़	तुम बुलाते हो हमें	उस से जो	पर्दों में	हमारे दिल	और उन्होंने ने कहा	4	वह सुनते नहीं

وَفِي أَذَانِنَا وَقُرْ وَمِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنَكَ حِجَابٌ فَاَعْمَلْ إِنَّا عَمِلُونَ ﴿٥﴾

5	काम करते हैं	वेशक हम	सो तुम काम करो	एक पर्दा	और तुम्हारे दरमियान	और हमारे दरमियान	बोझ - गिरानी	और हमारे कानों में

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ

यकता	माबूद	तुम्हारा माबूद	यह कि	मेरी तरफ़	वहि की जाती है	तुम जैसा	कि मैं एक बशर	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें

فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوهُ ۖ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ﴿٦﴾ الَّذِينَ

वह जो	6	मुश्रिकों के लिए	और ख़राबी	उस से मग़फ़िरत मांगो	उस की तरफ़ (उस के हुनूर)	पस सीधे रहो

لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَفِرُونَ ﴿٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا

ईमान लाए	जो लोग	वेशक	7	मुन्किर हैं	वह	आख़िरत का	और वह	ज़कात	नहीं देते

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٨﴾ قُلْ أَبِئْكُمْ

क्या तुम	फ़रमा दें	8	ख़तम न होने वाला	अजर	उन के लिए	और उन्होंने ने अमल किए अच्छे

لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ

उस के	और तुम ठहराते हो	दो (2) दिनों में	ज़मीन	पैदा किया	उस का जिस ने	इन्कार करते हो

أَنْدَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٩﴾ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا

उस के ऊपर	पहाड़ (जमा)	उस में	और उस ने बनाए	9	सारे ज़हानों का रब	वह	शरीक (जमा)

وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً

यकसां	चार (4) दिन (जमा)	में	उन की ख़ुराकें	उस में	और मुक़र्रर की	उस में	और बरकत रखी

لِّلسَّابِغِينَ ﴿١٠﴾ ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ

तो उस ने कहा	एक धुआं	और वह	आस्मान की तरफ़	फिर उस ने तबज़ुह फ़रमाई	10	तमाम सवाल करने वालों के लिए

لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۖ قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ﴿١١﴾

11	खुशी से	हम दोनों आए (हाज़िर हैं)	उन दोनों ने कहा	नाखुशी से	या	खुशी से	तुम दोनों आओ	और ज़मीन से	उस से

فَقَضَّيْنِ سَبْعَ سَمَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا						
उस का काम	हर आस्मान	में	और वहि कर दी	दो (2) दिनों में	सात आस्मान	फिर उस ने बनाए
وَرَزَيْنَا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ ۖ وَحِفْظًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ						
ग़ालिब	अन्दाज़ा (फैसला)	यह	और हिफाज़त के लिए	चिरागों (सितारों) से	दुनिया	आस्मान और हम ने ज़ीनत दी
الْعَلِيمِ (١٢) فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صِيعَةً مِّثْلَ صِيعَةِ						
चिंघाड़	जैसी	एक चिंघाड़	मैं डराता हूँ तुम्हें	तो फ़रमा दें	वह मुँह मोड़ लें	फिर अगर 12 इल्म वाला
عَادٍ وَثَمُودَ (١٣) إِذْ جَاءَتْهُمْ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ						
और उन के पीछे से	उन के आगे से	रसूल	जब आए उन के पास	13	आद और समूद	
أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً						
फ़रिश्ते	तो ज़रूर उतारता	हमारा रब	अगर चाहता	उन्होंने ने जवाब दिया	सिवाए अल्लाह	कि तुम न इबादत करो
فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كُفْرُونَ (١٤) فَأَمَّا عَادُ فَاسْتَكْبَرُوا						
तो वह तकबुर (ग़रूर) करने लगे	आद	फिर जो	14	मुन्किर है	उस के साथ	तुम भेजे गए हो उस का जो पस वेशक
فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ						
कि अल्लाह	वह देखते	क्या नहीं	कुव्वत	हम से	ज़ियादा कौन	और वह कहने लगे ज़मीन (मुल्क) में
الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ (١٥)						
15	इन्कार करते	हमारी आयतों का	और वह थे	कुव्वत	उन से	बहुत ज़ियादा वह पैदा किया उन्हें वह जिस ने
فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ نَحْسَاتٍ لِّنُذِيقَهُمْ						
ताकि हम चखाएँ उन्हें	नहूसत	दिनों में	तुन्द ओ तेज़	हवा	उन पर	पस हम ने भेजी
عَذَابِ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ وَهُمْ						
और वह	ज़ियादा रुस्वा करने वाला	आखिरत	और अलबत्ता अज़ाब	दुनिया की ज़िन्दगी	में	रुस्वाई अज़ाब
لَا يُنْصَرُونَ (١٦) وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ						
हिदायत पर	अन्धा रहना	तो उन्होंने ने पसंद किया	सो हम ने रास्ता दिखाया उन्हें	समूद	और रहे	16 मदद न किए जाएंगे
فَاخَذَتْهُمْ سِيعَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ (١٧)						
17	वह कमाते (करते थे)	उस की सज़ा में जो	ज़िल्लत	अज़ाब	चिंघाड़	तो उन्हें आ पकड़ा
وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ (١٨) وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ						
अल्लाह के दुश्मन	जमा किए जाएंगे	और जिस दिन	18	और वह परहेज़गारी करते थे	ईमान लाए	वह लोग जो और हम ने बचा लिया
إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ (١٩) حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ						
गवाही देंगे	वह आएंगे उस के पास	जब	यहां तक कि	19	गिरोह गिरोह किए जाएंगे	तो वह जहन्नम की तरफ़
عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (٢٠)						
20	जो वह करते थे	उस पर	और उन की जिल्दें (गोश्त पोस्त)	और उन की आँखें	उन के कान	उन पर

फिर उस ने दो दिनों में सात आस्मान बनाए और हर आस्मान में उस के काम की वहि कर दी, और हम ने आस्माने दुनिया को सितारों से ज़ीनत दी और खूब महफूज़ कर दिया, यह ग़ालिब, इल्म वाले (अल्लाह का) फैसला है। (12)

फिर अगर वह मुँह मोड़ लें तो आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम्हें डराता हूँ एक चिंघाड़ से, जैसी चिंघाड़ आद ओ समूद (पर अज़ाब आया था)। (13)

जब उन के पास रसूल आए, उन के आगे से और उन के पीछे से कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, तो उन्होंने ने जवाब दिया कि अगर हमारा रब चाहता तो ज़रूर फ़रिश्ते उतारता, पस तुम जिस (पैग़ाम) के साथ भेजे गए हो, हम वेशक उस के मुन्किर हैं। (14)

फिर जो आद थे वह मुल्क में ग़रूर करने लगे नाहक, और वह कहने लगे कि हम से ज़ियादा कुव्वत में कौन है? क्या वह नहीं देखते कि अल्लाह जिस ने उन्हें पैदा किया, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा है, और वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे। (15)

पस हम ने भेजी उन पर नहूसत के दिनों में तुन्द ओ तेज़ हवा, ताकि हम उन्हें रुस्वाई का अज़ाब चखाएँ दुनिया की ज़िन्दगी में, और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब ज़ियादा रुस्वा करने वाला है, और न वह मदद किए जाएंगे। (16)

और रहे समूद, सो हम ने उन्हें रास्ता दिखाया तो उन्होंने ने हिदायत (के मुकाबले) पर अन्धा रहना पसंद किया, तो उन्हें चिंघाड़ ने आ पकड़ा (यानी) ज़िल्लत के अज़ाब ने, उस की सज़ा में जो वह करते थे। (17)

और हम ने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए, और वह परहेज़गारी करते थे। (18)

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन जहन्नम की तरफ़ जमा किए (हांके) जाएंगे तो वह गिरोह दर गिरोह (तक़सीम) कर दिए जाएंगे। (19)

यहां तक कि जब वह उस के पास आएंगे तो उन पर उन के कान, और उन की आँखें, और उन के गोश्त पोस्त गवाही देंगे उस पर जो वह करते थे। (20)

और वह अपने गोश्त पोस्त से कहेंगे, तुम ने हमारे खिलाफ गवाही क्यों दी? वह जवाब देंगे: हमें उस अल्लाह ने गोयाई दी जिस ने हर शै को गोया कर दिया है, और उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (21)

और जो तुम छुपाते थे (तुम ने समझा) कि तुम्हारे खिलाफ़ गवाही न देंगे तुम्हारे कान और न तुम्हारी आँखें और न तुम्हारे गोश्त पोस्त, बल्कि तुम ने गुमान कर लिया था कि अल्लाह उस से (उस के बारे में) बहुत कुछ नहीं जानता जो तुम करते हो। (22)

तुम्हारे उस गुमान (ख़याले वातिल) ने जो तुम ने अपने रव के बारे में किया था तुम्हें हलाक किया, सो तुम हो गए ख़सारा पाने वालों में से। (23)

फिर अगर वह सब्र करें तो (भी) जहन्नम उन के लिए ठिकाना है, और अगर वह (अब) माफ़ी चाहें तो वह माफ़ी कुबूल किए जाने वालों में से न होंगे। (24)

और हम ने उन के कुछ हमनशीन मुक़र्र किए, तो उन्होंने ने उन के लिए आरास्ता कर दिखाया जो उन के आगे और जो उन के पीछे था और उन पर (अज़ाब की वईद का) क़ौल पूरा हो गया जैसे उन उम्मतों में जो गुज़र चुकी है उन से क़वल जिन्नात और इन्सानों की, वेशक वह ख़सारा पाने वाले थे। (25)

और उन लोगों ने कहा जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िरों ने) कि तुम इस कुरआन को सुनो ही मत, और अगर (सुनाने लगे) तो इस में गुल मचाओ, शायद कि तुम ग़ालिब आ जाओ। (26)

पस हम काफ़िरों को ज़रूर सख़्त अज़ाब चखाएंगे, और अलवत्ता हम उन के बदतरीन आमाल का उन्हें ज़रूर बदला देंगे। (27)

यह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला जहन्नम, और उन के लिए है उस में हमेशगी का घर, उस का बदला जो वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे। (28)

وَقَالُوا لَجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ						
हमें गोयाई दी अल्लाह ने	वह जवाब देंगे	हम पर (हमारे खिलाफ़)	तुम ने गवाही दी	क्यों	अपनी जिल्दों (गोश्त पोस्त) से	और वह कहेंगे
الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ						
और उसी की तरफ़	पहली बार	तुम्हें पैदा किया	और वह-उस	हर शै	गोया अता फरमाया	वह जिस ने
تُرْجَعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ						
तुम पर (तुम्हारे खिलाफ़)	कि गवाही देंगे	तुम छुपाते थे	और जो	21	तुम लौटाए जाओगे	
سَمْعَكُمْ وَلَا أَبْصَارَكُمْ وَلَا جُلُودَكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ						
कि अल्लाह	तुम ने गुमान कर लिया था	और लेकिन (बल्कि)	और न तुम्हारी जिल्दें (गोश्त पोस्त)	और न तुम्हारी आँखें	तुम्हारे कान	
لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٢﴾ وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي						
वह जो	तुम्हारा गुमान	और उस	22	तुम करते हो	जो	बहुत कुछ नहीं जानता
ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَبَكُمْ فَاصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٢٣﴾ فَإِنْ						
फिर अगर	23	ख़सारा पाने वाले	से	सो तुम हो गए	हलाक किया तुम्हें	अपने रव के मुतअल्लिक
يَصْبِرُوا فَإِنَّهُمْ مَثْوًى لَّهُمْ وَإِنْ يَسْتَعْتَبُوا فَمَا هُمْ مِنَ						
से	तो न वह	वह माफ़ी चाहें	और अगर	उन के लिए	ठिकाना	तो जहन्नम वह सब्र करें
الْمُعْتَبِينَ ﴿٢٤﴾ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا						
जो	तो उन्होंने ने आरास्ता कर दिखाया उन के लिए	कुछ हमनशीन	उन के लिए	और हम ने मुक़र्र किए	24	माफ़ी कुबूल किए जाने वाले
بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ						
उन उम्मतों में	क़ौल	उन पर	और पूरा हो गया	और जो उन के पीछे	उन के आगे	
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ						
वेशक वह	और इन्सान	जिन्नात में से-की	उन से क़वल	जो गुज़र चुकी		
كَانُوا خَسِرِينَ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَذَا الْقُرْآنِ						
इस कुरआन को	तुम मत सुनो	उन्होंने ने कुफ़ किया	उन लोगों ने जो	और कहा	25	ख़सारा पाने वाले थे
وَالْعَوَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَبُونَ ﴿٢٦﴾ فَلَنَذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا						
उन लोगों को जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	पस हम ज़रूर चखाएंगे	26	तुम ग़ालिब आ जाओ	शायद कि तुम	उस में	और गुल मचाओ
عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَشْرَءَ الَّذِي						
वह जो	बदतरीन	और हम उन्हें ज़रूर बदला देंगे	सख़्त अज़ाब			
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾ ذَلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ لَهُمْ فِيهَا						
उस में	उन के लिए	जहन्नम	अल्लाह के दुश्मन (जमा)	बदला	यह	27
دَارُ الْخُلْدِ جَزَاءُ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٢٨﴾						
28	इन्कार करते	हमारी आयतों का	वह थे	उस का जो	बदला	हमेशगी का घर

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرَنَا الَّذِينَ أَصَلْنَا مِنَ الْجِنِّ						
और कहेंगे	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	ऐ हमारे रब	हमें दिखा दे	उन्हें	जिन्होंने ने गुमराह किया हमें	जिन्नात में से
وَالْإِنْسِ نَجْعَلُهُمَا تَحْتَ أَفْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ (29)						
और इन्सानों	हम उन दोनों को डालें	तले	अपने पाऊँ	ताकि वह हों	से	इन्तिहाई ज़लील (जमा)
إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي						
वेशक	वह जिन्होंने ने	उन्होंने ने कहा	हमारा रब अल्लाह	फिर	वह साबित कदम रहे	उतरते हैं
كُنْتُمْ تُوعَدُونَ (30) نَحْنُ أَوْلِيُّكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ						
तुम्हें वादा दिया जाता है	30	हम	तुम्हारे रफ़ीक़	ज़िन्दगी में	दुनिया	और आख़िरत में
وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهَى أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدْعُونَ (31) نُزُلًا مِّنْ						
और तुम्हारे लिए	उस में	जो चाहें	तुम्हारे दिल	और तुम्हारे लिए	उस में	जो
वह तुम्हारे लिए	31	तुम मांगोगे	जो	तुम मांगोगे	जि़याफ़त	से
غُفُورٍ رَّحِيمٍ (32) وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ						
वह तुम्हारे लिए	32	रहम करने वाला	और किस	वहेतर	वात	उस से जो
वह तुम्हारे लिए	32	रहम करने वाला	और किस	वहेतर	वात	उस से जो
صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ (33) وَلَا تَسْتَوِ الْحَسَنَةُ						
अच्छे	और वह कहे	वेशक मैं	से	मुसलमानों	33	और बराबर नहीं होती
وَلَا السَّيِّئَةُ إِذْفَعُ بِأَتْنِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ						
और न बुराई	दूर कर दें आप (स)	उस से जो	वह	वहेतर	तो	वह जो
और न बुराई	दूर कर दें आप (स)	उस से जो	वह	वहेतर	तो	वह जो
عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ (34) وَمَا يُلْقُهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا						
अ़दावत	गोया कि वह	दोस्त	करावती (जिगरी)	34	और नहीं मिलती यह	मगर
अ़दावत	गोया कि वह	दोस्त	करावती (जिगरी)	34	और नहीं मिलती यह	मगर
يُلْقُهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ (35) وَإِنَّمَا يَنْزِعَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نُرْغُ						
मिलती यह	मगर	बड़े नसीब वाले	35	और अगर	तुम्हें वस्वसा आए	से
मिलती यह	मगर	बड़े नसीब वाले	35	और अगर	तुम्हें वस्वसा आए	से
فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (36) وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ						
तो पनाह चाहें	अल्लाह की	वेशक वह	वही	सुनने वाला	जानने वाला	36
तो पनाह चाहें	अल्लाह की	वेशक वह	वही	सुनने वाला	जानने वाला	36
وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ						
और सूरज	और चाँद	तुम न सिज्दा करो	सूरज को	और न	चाँद को	और तुम सिज्दा करो अल्लाह को
और सूरज	और चाँद	तुम न सिज्दा करो	सूरज को	और न	चाँद को	और तुम सिज्दा करो अल्लाह को
الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِنَّ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ (37) فَإِنْ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ						
वह जिस ने	पैदा किया उन्हें	अगर	तुम हो	सिर्फ़ उस की	इबादत करते	37
वह जिस ने	पैदा किया उन्हें	अगर	तुम हो	सिर्फ़ उस की	इबादत करते	37
عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْمُونَ (38)						
आप के रब के नज़्दीक	वह तस्वीह करते हैं	उस की	रात	और दिन	और वह	नहीं उकताते
आप के रब के नज़्दीक	वह तस्वीह करते हैं	उस की	रात	और दिन	और वह	नहीं उकताते

और काफ़िर कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें दिखा दे जिन्होंने ने हमें गुमराह किया था जिन्नात में से और इन्सानों में से कि हम उन को अपने पाऊँ तले (रौन्द) डालें ताकि वह इन्तिहाई ज़लीलों में से हों। (29) वेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर उस पर साबित कदम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि न तुम ख़ौफ़ खाओ और न तुम गुमगीन हो, और तमु उस जन्नत पर खुश हो जाओ जिस का तुम्हें वादा दिया जाता है। (30) हम तुम्हारे रफ़ीक़ हैं ज़िन्दगी में दुनिया की और आख़िरत में (भी), और तुम्हारे लिए उस में (मौजूद है) जो तुम्हारे दिल चाहें, और तुम्हारे लिए उस में (मौजूद है) जो तुम मांगोगे। (31) (यह) ज़ियाफ़त है बख़शने वाले, रहीम (अल्लाह) की तरफ़ से। (32) और उस से बेहतर किस का कौल? जो बुलाए अल्लाह की तरफ़ और अच्छे अ़मल करे और कहे: वेशक मैं मुसलमानों में से हूँ। (33) और बराबर नहीं होती नेकी और बुराई, आप (स) (बुराई को) इस (अन्दाज़ से) दूर करें जो बेहतरीन हो तो यकायक वह शख़्स कि आप के दरमियान और उस के दरमियान अ़दावत थी (ऐसे हो जाएगा कि) गोया वह जिगरी दोस्त है। (34) और यह (सिफ़त) नहीं मिलती मगर उन्हें जिन्होंने ने सबर किया और यह नहीं मिलती मगर बड़े नसीब वालों को। (35) और अगर तुम्हें शैतान की तरफ़ से आए कोई वस्वसा तो अल्लाह की पनाह चाहें, वेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है। (36) और उस की निशानियों में से हैं रात और दिन, और सूरज और चाँद, तुम न सूरज को सिज्दा करो न चाँद को, और तुम अल्लाह को सिज्दा करो, वह जिस ने उन (सब) को पैदा किया अगर तुम सिर्फ़ उस की इबादत करते हो। (37) पस अगर वह तकब्बुर करें (तो उस से क्या फ़र्क़ पड़ता है), सो वह (फ़रिश्ते) जो आप के रब के नज़्दीक हैं वह रात दिन उस की तस्वीह करते हैं, और वह उकताते नहीं। (38)

और उस की निशानियों में से है कि तू ज़मीन को सुनसान देखता है, फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तो वह लहलहाने लगती है और फूलती है, वेशक वह जिस ने उस को ज़िन्दा किया, अलबत्ता वह मर्दाँ को ज़िन्दा करने वाला है, वेशक वह हर शौ पर कुदरत रखने वाला है। (39)

वेशक जो लोग हमारी आयात में कज रवी करते हैं वह हम पर (हम से) पोशीदा नहीं, तो क्या जो शख्स आग में डाला जाए बेहतर है या जो रोज़े क़ियामत अमान के साथ आए? तुम जो चाहो करो, वेशक तुम जो कुछ करते हो वह देखने वाला है। (40)

वेशक जिन लोगों ने कुरआन का इन्कार किया जब वह उन के पास आया (वह अपना अनज़ाम देख लेंगे), वेशक यह ज़बरदस्त किताब है। (41) उस के पास नहीं आता बातिल उस के सामने से और न उस के पीछे से, नाज़िल किया गया हिक्मत वाले, सज़ावारे हम्द (अल्लाह की तरफ) से। (42)

आप (स) को उस के सिवा नहीं कहा जाता जो आप (स) से पहले रसूलों को कहा जा चुका है, वेशक आप (स) का रब बड़ी मग्फ़िरत वाला, और दर्दनाक सज़ा देने वाला है। (43)

और अगर हम कुरआन को अज़मी ज़वान का बनाते तो वह कहते: उस की आयतें क्यों न साफ़ साफ़ बयान की गई? क्या किताब अज़मी और रसूल अरबी? आप (स) फ़रमा दें: जो ईमान लाए यह उन लोगों के लिए हिदायत और शिफ़ा है, और जो लोग ईमान नहीं लाते उन के कानों में गिरानी है और यह उन के लिए आंखों पर पट्टी, (गोया) यह लोग पुकारे जाते हैं किसी दूर जगह से। (44)

और तहकीक़ हम ने मूसा (अ) को किताब दी तो उस में इख़तिलाफ़ किया गया और अगर न आप (स) के रब की तरफ़ से एक बात पहले ठहर चुकी होती तो उन के दरमियान फ़ैसला हो चुका होता, और वेशक वह ज़रूर उस से तरदुद में डालने वाले शक में हैं। (45)

जिस ने अच्छे अमल किए तो अपनी ज़ात के लिए (किए) और जिस ने बुराई की उस का ववाल उसी पर होगा, और आप (स) का रब अपने बन्दों पर मुत्लक़ जुल्म करने वाला नहीं। (46)

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ								
और उस की निशानियों में से	कि तू	तू देखता है	ज़मीन	दबी हुई (सुनसान)	फिर जब	हम ने उतारा	उस पर	पानी
اهْتَزَتْ وَرَبَّتْ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتِ إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ								
वह लहलहाने लगती है	और फूलती है	वेशक	वह जिस ने	उस को ज़िन्दा किया	अलबत्ता ज़िन्दा करने वाला मुर्दाँ को	वेशक वह	हर शौ पर	
قَدِيرٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَحْفَوْنَ عَلَيْنَا ۝								
कुदरत रखने वाला	39	वेशक	जो लोग	कज रवी करते हैं	हमारी आयात में	वह पोशीदा नहीं	हम पर	
أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ اعْمَلُوا								
तो क्या जो	डाला जाए	आग में	बेहतर	या जो	आए	अमान के साथ	रोज़े क़ियामत	तुम करो
مَا شِئْتُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا								
जो तुम चाहो	वेशक वह	जो तुम करते हो	देखने वाला	40	वेशक	वह जिन्होंने ने इन्कार किया	ज़िक्र (कुरआन) का	जब
جَاءَهُمْ ۚ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ۝ لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ								
वह आया उन के पास	और वेशक यह	अलबत्ता किताब है	ज़बरदस्त	41	उस के पास नहीं आता	बातिल	उस के सामने से	
وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۚ تَنْزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝ مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا								
और न उस के पीछे से	नाज़िल किया गया	से	हिक्मत वाले	सज़ावारे हम्द	42	नहीं कहा जाता	आप को	सिवाए
مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ								
जो कहा जा चुका है	रसूलों को	आप (स) से क़व्ल	वेशक	आप (स) का रब	बड़ी मग्फ़िरत वाला	और सज़ा देने वाला		
الِيمِ ۝ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۚ								
दर्दनाक	43	और अगर हम बनाते उसे	कुरआन (को)	अज़मी (ज़वान का)	तो वह कहते	क्यों न	साफ़ बयान की गई	उस की आयतें
ءَاَعْجَمِيٌّ وَعَرَبِيٌّ ۚ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۚ								
क्या अज़मी (किताब)	और अरबी (रसूल)	फ़रमा दें	वह - यह	उन लोगों के लिए जो	ईमान लाए	हिदायत	और शिफ़ा	
وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُولَٰئِكَ								
और जो लोग	ईमान नहीं लाए	उन के कानों में	गिरानी	और वह - यह	उन पर	अन्धापन	यह लोग	
يُنَادُونَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ								
पुकारे जाते हैं	से	किसी जगह	दूर	44	और तहकीक़ हम ने दी	मूसा (अ)	किताब	
فَاخْتَلَفَ فِيهِ ۚ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ								
तो इख़तिलाफ़ किया गया	उस में	और अगर न होती	एक बात	पहले ठहर चुकी	आप (स) के रब की तरफ़ से	तो फ़ैसला हो चुका होता		
بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ۝ مِّنْ عَمَلٍ صَالِحًا								
उन के दरमियान	और वेशक वह	ज़रूर शक में	उस से	तरदुद में डालने वाले शक में	45	जो - जिस	अमल किए	अच्छे
فَلِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلِيَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝								
तो अपनी ज़ात के लिए	और जिस	बुराई की	तो उस पर (उस का ववाल)	और नहीं	आप (स) का रब	मुत्लक़ जुल्म करने वाला	अपने बन्दों पर	46

١٢
فمن اظلم

٥
١٩

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرَاتٍ مِنْ							
से	फल (जमा)	कोई	और नहीं निकलता	क़ियामत का इल्म	उस की तरफ़ लौटाया (हवाले किया) जाता है		
أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أَنْثَى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَيَوْمَ							
और जिस दिन	उस के इल्म में	मगर	और न वह बच्चा जनती है	कोई औरत	और नहीं हामिला होती है	उस के ग़िलाफ़ों (गाभों)	
يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِيَ قَالُوا اذْنُبْنَا مَا مِنَّا مِنْ شَهِيدٍ (٤٧)							
47	कोई शाहिद	नहीं हम से	इत्तिलाज़ दे दी हम ने तुझे	वह कहेंगे	मेरे शरीक	कहाँ	वह पुकारेगा उन्हें
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوا مَا لَهُمْ							
नहीं उन के लिए	और उन्होंने ने समझ लिया	उस से क़व्ल	जो वह पुकारते थे			उन से	और खोया गया
مِنْ مَّحِيصٍ (٤٨) لَا يَسْأَلُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِنْ مَسَّهُ الشَّرُّ							
बुराई	उसे लग जाए	और अगर	भलाई मांगने	से	इन्सान	नहीं थकता	48 कोई बचाओ (ख़लासी)
فَيُؤْسُ قَنُوطٌ (٤٩) وَلَئِنْ أَدْقَنَهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ							
किसी तक्लीफ़	के बाद	अपनी तरफ़ से	रहमत	हम चखाएँ उसे	और अलबत्ता अगर	49	नाउम्मीद तो मायूस हो जाता है
مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ							
और अलबत्ता अगर	काइम होने वाली	क़ियामत	और मैं ख़याल नहीं करता	यह मेरे लिए	तो वह ज़रूर कहेगा	जो उस को पहुँची	
رُجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْنَىٰ فَلَنُنَبِّئَنَّ							
पस हम ज़रूर आगाह कर देंगे	अलबत्ता भलाई		उस के पास	मेरे लिए	वेशक	अपने रब की तरफ़	मुझे लौटाया गया
الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ (٥٠) وَإِذَا							
और जब	50	सख़्त	एक अज़ाब	से	और अलबत्ता हम ज़रूर चखाएँगे उन्हें	उस से जो उन्होंने ने किया (आमाल)	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)
أَنعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَا بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ							
बुराई	आ लगे उसे	और जब	अपना पहलू	और बदल लेता है	वह मुँह मोड़ लेता है	इन्सान पर	हम इन्आम करते हैं
فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ (٥١) قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ							
अल्लाह के पास	से	अगर हो	क्या तुम ने देखा	आप (स) फ़रमा दें	51	(लम्बी) चौड़ी	तो दुआओं वाला
ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهِ مِنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شَقَاقٍ بَعِيدٍ (٥٢)							
52	दूर दराज़	ज़िद	में	वह	उस से जो	बड़ा गुमराह	तुम ने कुफ़ किया उस से
فَيُؤْسُ قَنُوطٌ (٥٣) وَلَئِنْ أَدْقَنَهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ							
कि यह	उन के लिए	ज़ाहिर हो जाए	यहाँ तक	और उन की ज़ात में		अतराफ़े आलम में	
فَيُؤْسُ قَنُوطٌ (٥٤) وَلَئِنْ أَدْقَنَهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ							
खूब याद रखो वेशक वह	53	शाहिद	हर शै	पर- का	कि वह	आप के रब के लिए	क्या काफी नहीं
فَيُؤْسُ قَنُوطٌ (٥٤) وَلَئِنْ أَدْقَنَهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ							
54	अहाता किए हए	हर शै पर-का	याद रखो वेशक वह	अपना रब	मुलाक़ात से	शक में	

क़ियामत का इल्म उसी के हवाले किया जाता है, और कोई फल अपने गाभों से नहीं निकलता और कोई औरत (मादा) हामिला नहीं होती और वह बच्चा नहीं जनती मगर (यह सब) उस के इल्म में होता है। और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा: कहाँ हैं मेरे शरीक? वह कहेंगे: हम ने तुझे इत्तिलाज़ दे दी कि हम में से कोई (उस का) शाहिद (गवाह) नहीं। (47) और खोया गया उन से जिसे वह (अल्लाह के सिवा) पुकारते थे उस से क़व्ल, और उन्होंने ने समझ लिया कि (अब) उन के लिए कोई ख़लासी नहीं। (48) इन्सान भलाई मांगने से नहीं थकता, और अगर उसे कोई बुराई लग जाए तो वह नाउम्मीद हो कर मायूस हो जाता है। (49) और अलबत्ता अगर उसे कोई तक्लीफ़ पहुँचने के बाद हम अपनी तरफ़ से अपनी रहमत का मज़ा चखाएँ तो वह ज़रूर कहेगा: यह मेरे लिए है, और मैं ख़याल नहीं करता कि क़ियामत काइम होने वाली है, और अगर मुझे अपने रब की तरफ़ लौटाया गया तो वेशक उस के पास मेरे लिए अलबत्ता भलाई होगी, पस हम काफ़िरों को उन के आमाल से ज़रूर आगाह करेंगे, और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएँगे एक अज़ाब सख़्त। (50) और जब हम इन्सान पर इन्आम करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है, और अपना पहलू बदल लेता है, और जब उसे (ज़रा) बुराई लगे तो लम्बी चौड़ी दुआओं वाला (बन जाता है)। (51) आप (स) फ़रमा दें: क्या तुम ने देखा (यह तो बतलाओ) अगर (यह कुरआन) अल्लाह के पास से हो, फिर तुम ने उस से कुफ़ किया तो उस से बड़ा गुमराह कौन जो मुख़ालिफ़त में दूर तक निकल गया हो? (52) हम जल्द अपनी आयात उन्हें अतराफ़े आलम में और (खुद) उन की ज़ात में दिखा देंगे यहाँ तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि यह (कुरआन) हक़ है, क्या आप (स) के रब के लिए काफी नहीं कि वह हर शै का शाहिद है। (53) खूब याद रखो! वेशक वह अपने रब की मुलाक़ात (रूबरू हाज़री) से शक में हैं, याद रखो! वेशक वह हर शै का अहाता किए हुए है। (54)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

अयन-सीन-काफ़। (2)

इसी तरह आप (स) की तरफ़ और आप (स) के पहलों की तरफ़ वहि फ़रमाता है अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला। (3)

उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में, और वह बुलन्द, अज़मत वाला है। (4)

क़रीब है कि आस्मान उन के ऊपर से फट पड़ें। और फ़रिश्ते अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्वीह करते हैं और उन के लिए मग़फ़िरत तलब करते हैं जो ज़मीन में हैं, याद रखो! वेशक अल्लाह ही बख़्शने वाला रहम करने वाला (5)

और जो लोग ठहराते हैं अल्लाह के सिवा (दूसरों को) रफ़ीक़, अल्लाह उन्हें देख रहा है, आप (स) उन पर ज़िम्मेदार नहीं। (6)

और उसी तरह हम ने आप (स) की तरफ़ वहि किया क़ुरआन अरबी ज़बान में ताकि आप (स) डराएँ अहले मक्का को और उन्हें जो उस के इर्द गिर्द हैं, और आप (स) डराएँ जमा होने के दिन से, कोई शक नहीं उस में, एक फ़रीक़ जन्नत में होगा और एक फ़रीक़ दोज़ख़ में। (7)

और अगर अल्लाह चाहता तो ज़रूर उन्हें एक उम्मत बना देता और लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और ज़ालिमों के लिए न कोई कारसाज़ है और न मददगार। (8) क्या उन्होंने ने अल्लाह के सिवा कारसाज़ ठहरा लिए हैं? पस अल्लाह ही कारसाज़ है, वही मदद को ज़िन्दा करता है, और वही हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (9)

और जिस बात में तुम इख़तिलाफ़ करते हो उस का फ़ैसला अल्लाह के पास है, वही है अल्लाह मेरा रब, उस पर मैं ने भरोसा किया, और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ करता हूँ। (10)

آيَاتُهَا ٥٣ ﴿٤٢﴾ سُورَةُ الشُّورَى ﴿٤٢﴾ زُكُوعَاتُهَا ٥

रुक़आत 5

(42) सूरतुश शूरा
सलाह औ मश्वरा

आयात 53

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

حَمْدٌ ۝ عَسَقَ ۝ كَذَلِكَ يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ

आप (स) से पहले	वह जो	और तरफ़	आप (स) की तरफ़	वहि फ़रमाता है	इसी तरह	2	अयन-सीन-काफ़	1	हा-मीम

اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ

और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	उसी के लिए	3	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह

الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝ تَكَادُ السَّمُوتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلَائِكَةُ

और फ़रिश्ते	उन के ऊपर से	फट पड़ें	आस्मानों (जमा)	क़रीब है	4	अज़मत वाला	बुलन्द

يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ

वेशक अल्लाह	याद रखो	ज़मीन में	उस के लिए जो	और वह मग़फ़िरत तलब करते हैं	अपने रब की तारीफ़ के साथ	तस्वीह करते हैं

هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۚ اللَّهُ

अल्लाह	रफ़ीक़	उस के सिवा	ठहराते हैं	और जो लोग	5	मेहरवान	बख़्शने वाला	वह-वही

حَفِيفٌ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝ وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا

हम ने वहि किया	और उसी तरह	6	ज़िम्मेदार	उन पर	और आप (स) नहीं	निगरान उन पर (उन्हें देख रहा है)

إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّنُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ

और आप (स) डराएँ	उस के इर्द गिर्द	और जो	बस्तियों का मरकज़ (अहले मक्का)	ताकि आप (स) डराएँ	अरबी ज़बान	क़ुरआन	आप (स) की तरफ़

يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ۝

7	दोज़ख़ में	और एक फ़रीक़	जन्नत में	एक फ़रीक़	उस में	नहीं शक	जमा होने का दिन

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ

जिसे चाहता है	वह दाख़िल करता है	और लेकिन	एक उम्मत	ज़रूर बना देता उन्हें	चाहता अल्लाह	और अगर

فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ أَمْ اتَّخَذُوا

उन्होंने ने ठहरा लिए	क्या	8	और न मददगार	कारसाज़	कोई	नहीं उन के लिए	और ज़ालिम (जमा)	अपनी रहमत में

مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۚ فَاَللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ

और वह	मुदाँ	ज़िन्दा करता है	और वही	वही कारसाज़	पस अल्लाह	कारसाज़ (जमा)	उस के सिवा

عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ

तो उस का फ़ैसला	किसी चीज़	उस में	इख़तिलाफ़ करते हो तुम	और जो-जिस	9	कुदरत रखने वाला	चीज़	हर	पर

إِلَى اللَّهِ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

10	मैं रुजूअ करता हूँ	और उस की तरफ़	भरोसा किया मैं ने	उस पर	मेरा रब	वही है अल्लाह	तरफ़-पास अल्लाह

فَاطِرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا					
जोड़े	तुम्हारी ज़ात (जिन्स) से	तुम्हारे लिए	उस ने बनाए	और ज़मीन	पैदा करने वाला आस्मानों
وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا يَذُرُّكُمْ فِيهِ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ					
और वह	कोई शै	उस के मिसल	नहीं	इस (दुनिया) में	वह फैलाता है तुम्हें
السَّمِيعُ الْبَصِيرُ (١١) لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَبْسُطُ					
वह फ़राख़ करता है	और ज़मीन	आस्मानों	कुंजियां	उस के लिए (पास)	11 देखने वाला सुनने वाला
الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (١٢) شَرَعَ لَكُمْ					
तुम्हारे लिए	उस ने मुक़र्र किया	12	जानने वाला	हर शै का	वेशक वह और तंग करता है वह जिस के लिए रिज़क़
مِنَ الدِّينِ مَا وَصَّى بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ					
आप की तरफ़ (को)	हम ने वहि की	और वह जिस	नूह (अ)	उस का	उस ने जिस का हुक़म दिया वही दीन
وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ					
दीन	कि तुम काइम करो	और ईसा (अ)	और मूसा (अ)	इब्राहीम (अ)	उस का हुक़म दिया हम ने
وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ اللَّهُ					
अल्लाह	उस की तरफ़	जिस की तरफ़ आप उन्हें बुलाते हैं	मुश्रिकों पर	सख़्त	उस में और तफ़रक़ा न डालो तुम
يَجْتَبِئَ إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ (١٣) وَمَا تَفَرَّقُوا					
और उन्होंने ने तफ़रक़ा न डाला	13	जो रुजूअ़ करता है	उस की तरफ़	और हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है अपनी चुन लेता है
إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعْثًا بَيْنَهُمْ وَلَوْ لَا					
और अगर न	आपस की	ज़िद	इल्म	कि आ गया उन के पास	उस के बाद मगर
كَلِمَةً سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ					
उन के दरमियान	तो फ़ैसला कर दिया जाता	एक मददे मुक़र्ररा	तक	आप के रब की तरफ़ से	गुज़र चुका होता फ़ैसला
وَأَنَّ الَّذِينَ أَوْرَثُوا الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٌ (١٤)					
14	तरदुद में डालने वाला	उस से	अलबत्ता वह शक में	उन के बाद	किताब के वारिस बनाए गए जो लोग और वेशक
فَلِذَلِكَ فَادُعْ وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ					
उन की ख़ाहिशात	और आप न चलें	जैसा कि मैं ने हुक़म दिया है आप (स) को	और काइम रहें	आप बुलाएं	पस उसी के लिए
وَقُلْ آمَنْتُ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ كِتَابٍ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ					
कि मैं ईसाफ़ करूँ	और मुझे हुक़म दिया गया	से - हर किताब	नाज़िल की अल्लाह ने	उस पर जो	मैं ईमान ले आया और कहें
بَيْنَكُمْ اللَّهُ رُبُّنَا وَرَبُّكُمْ لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ					
तुम्हारे आमाल	और तुम्हारे लिए	हमारे आमाल	हमारे लिए	और तुम्हारा रब	हमारा रब अल्लाह तुम्हारे दरमियान
لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا وَالْإِلَهِ الْمَصِيرُ (١٥)					
15	वाज़गशत (लौटना)	और उसी की तरफ़	हमारे दरमियान (हमें)	जमा करेगा	अल्लाह और तुम्हारे दरमियान कोई हुज़्जत (झगड़ा) नहीं हमारे दरमियान

आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला, उस ने बनाए तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स से जोड़े और चौपायों से जोड़े, वह तुम्हें इस (दुनिया) में फैलाता है। उस के मिसल कोई शै नहीं, और वह सुनने वाला, देखने वाला। (11)

उसी के पास हैं आस्मानों और ज़मीन की कुंजियां, वह रिज़क़ फ़राख़ करता है जिस के लिए वह चाहता है (और जिस पर चाहे) तंग कर देता है, वेशक वह हर शै का जानने वाला। (12)

उस ने तुम्हारे लिए वही दीन मुक़र्र किया है जिस के काइम करने का उस ने हुक़म दिया था नूह (अ) को और जिस की हम ने आप (स) की तरफ़ वहि की, और जिस का हुक़म हम ने इब्राहीम (अ) और मूसा (अ) और ईसा (अ) को दिया था कि तुम दीन काइम करो और उस में तफ़रक़ा न डालो, वह मुश्रिकों पर गरां गुज़रती है जिस की तरफ़ आप (स) उन्हें बुलाते हैं, अल्लाह अपनी तरफ़ (अपने कुर्व के लिए) जिस को चाहता है चुन लेता है। और जो उस की तरफ़ रुजूअ़ करता है उसे अपनी तरफ़ से हिदायत देता है। (13)

और उन्होंने ने तफ़रक़ा न डाला मगर उस के बाद कि उन के पास इल्मे (वहि) आ गया आपस की ज़िद की वजह से, और अगर आप (स) के रब की तरफ़ से एक मुदते मुक़र्ररा तक मोहलत देने का फ़ैसला न गुज़र चुका होता तो उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और वेशक जो लोग उन के बाद किताब के वारिस बनाए गए अलबत्ता वह उस से तरदुद में डालने वाले शक में हैं। (14)

पस उसी के लिए आप (स) बुलाएं और (उस पर) काइम रहें जैसा कि मैं ने आप को हुक़म दिया है और आप (स) उन की ख़ाहिशात पर न (चलें), और कहें कि मैं ईमान ले आया हर किताब पर जो अल्लाह ने नाज़िल की और मुझे हुक़म दिया गया है कि मैं तुम्हारे दरमियान ईसाफ़ करूँ, अल्लाह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। हमारे लिए हमारे आमाल और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल, हमारे और तुम्हारे दरमियान कोई झगड़ा नहीं, अल्लाह हमें जमा करेगा, और उसी की तरफ़ वाज़गशत है। (15)

और जो लोग अल्लाह के बारे में झगड़ा करते हैं उस के बाद कि उस को कुबूल कर लिया गया, उन की हुज्जत (कुबूल करने वालों से झगड़ा) उन के रब के हां लगू (बेसबात) है और उन पर गज़ब है, और उन के लिए सख़्त अज़ाब है। (16)

अल्लाह है जिस ने किताब हक के साथ नाज़िल की और मीज़ान (भी), और तुझे क्या ख़बर कि शायद क़ियामत करीब हो। (17)

उस की वह लोग जल्दी मचाते हैं जो उस पर ईमान नहीं रखते। और जो लोग ईमान लाए वह उस से डरते हैं और वह जानते हैं कि यह हक है, याद रखो! वेशक जो लोग क़ियामत के बारे में झगड़ते हैं वह दूर (बड़ी) गुमराही में हैं। (18)

अल्लाह अपने बन्दों पर मेहरबान है, वह जिसे चाहता है रिज़्क देता है, और वह क़व्वी, ग़ालिब है। (19)

जो शख्स चाहता है खेती आख़िरत की, हम उस की खेती में उस के लिए इज़ाफ़ा कर देते हैं, और जो दुनिया की खेती चाहता है हम उसे उस में से देते हैं और उस के लिए नहीं आख़िरत में कोई हिस्सा। (20)

या उन के कुछ शरीक हैं जिन्होंने उन के लिए ऐसा दिन मुक़र्रर किया है जिस की अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी, और अगर एक कौले फैसल न होता तो उन के दरमियान (यही) फैसला हो जाता, और वेशक ज़ालिमों के लिए अज़ाब है दर्दनाक। (21)

तुम ज़ालिमों को देखोगे अपने आमाल (के ववाल) से डरते होंगे, और वह उन पर वाक़े होने वाला है, और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, वह जन्नतों के बागात में होंगे, वह जो चाहेंगे उन के रब के हां (मिलेगा) यही है बड़ा फ़ज़ल। (22)

وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتَجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ							
और जो लोग	झगड़ा करते हैं	अल्लाह के बारे में	उस के बाद	कि कुबूल कर लिया गया उस के लिए - उस को	उन की हुज्जत		
دَاحِضَةً عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿١٦﴾							
लगू	हां	उन का रब	और उन पर	ग़ज़ब	और उन के लिए	अज़ाब	सख़्त
اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ وَمَا يُدْرِيكَ							
अल्लाह	वह जिस ने	नाज़िल की	किताब	हक के साथ	और मीज़ान	और क्या	तुझे ख़बर
لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ﴿١٧﴾ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ							
शायद	क़ियामत	क़रीब	17	वह जल्दी मचाते हैं	उस की	वह लोग जो	ईमान नहीं रखते
بِهَا ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ							
उस पर	और जो लोग	ईमान लाए	वह डरते हैं	उस से	और वह जानते हैं	कि यह	हक
أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿١٨﴾							
याद रखो	वेशक जो लोग	झगड़ते हैं	क़ियामत के बारे में	अलबत्ता गुमराही में	दूर	18	
اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿١٩﴾							
अल्लाह	मेहरबान	अपने बन्दों पर	वह रिज़्क देता है	जिस को चाहे	और वह	क़व्वी	ग़ालिब
مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ وَمَنْ							
जो शख्स	चाहता है	खेती	आख़िरत	हम इज़ाफ़ा कर देते हैं उस के लिए	उस की	खेती में	और जो
كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ							
चाहता है	दुनिया की खेती	हम उसे देते हैं	उस में से	और नहीं उस के लिए	आख़िरत में		
مِنْ نَّصِيبٍ ﴿٢٠﴾ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ							
कोई हिस्सा	20	क्या उन के लिए	कुछ शरीक (जमा)	उन्होंने ने मुक़र्रर किया	उन के लिए	से-ऐसा	दीन
مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ							
जो - जिस नहीं	इजाज़त दी	उस की	अल्लाह	और न अगर	एक कौले फैसल	तो फैसला हो जाता	उन के दरमियान
وَأَنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظَّالِمِينَ							
और वेशक	ज़ालिमों	उन के लिए	अज़ाब	दर्दनाक	21	तुम देखोगे	ज़ालिमों
مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُمْ وَاقِعٌ بِهِمْ ۚ وَالَّذِينَ							
डरते होंगे	उस से जो उन्होंने ने कमाया (आमाल)	और वह	वाक़े होने वाला	उन पर	और जो लोग		
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَتِ الْجَنَّةِ لَهُمْ							
ईमान लाए	और उन्होंने ने अमल किए	अच्छे	में	बागात	जन्नतों	उन के लिए	
مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٢٢﴾							
जो वह चाहेंगे	उन के रब के हां	यह	वह-यही	फ़ज़ल	बड़ा	22	

ذَلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ									
यही	वह जिस	अल्लाह बशारत देता है	अपने बन्दे	वह जो ईमान लाए	और उन्होंने ने अच्छे अमल किए				
قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ وَمَنْ يَقْتَرِفْ									
फरमा दें	मैं तुम से नहीं मांगता	इस पर	कोई अजर	सिवाए	मुहब्बत	कराबतदारी में - की	और जो	कमाएगा	
حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٢٣﴾ أَمْ يَقُولُونَ									
कोई नेकी	हम बढ़ा देंगे उस के लिए	उस में	खूबी	वेशक अल्लाह	बख्शने वाला	कद्र दान	23	क्या	वह कहते हैं
افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَإِنْ يَشِإِ اللَّهُ يَخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ وَيَمْحُ									
उस ने बाँधा	अल्लाह पर	झूट	सो अगर	चाहता अल्लाह	वह मुहर लगा देता	तुम्हारे दिल पर	और मिटाता है		
اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٤﴾									
अल्लाह	बातिल	और साबित करता है	हक	अपने कलिमात से	वेशक वह	जानने वाला	दिलों की बातों को	24	
وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ									
और वही	जो कुबूल फरमाता है	तौबा	अपने बन्दों से	और माफ कर देता है	से - को	बुराइयां			
وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٥﴾ وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ									
और वह जानता है	जो तुम करते हो	25	और कुबूल करता है	वह जो ईमान लाए	और उन्होंने ने अमल किए	अच्छे			
وَيَزِيدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ									
और उन को ज़ियादा देता है	अपने फज़ल से	और काफ़िरों	उन के लिए	अज़ाब	सख़्त	26	और अगर		
بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ									
कुशादा कर देता अल्लाह	रिज़क के लिए	अपने बन्दों के लिए	तो वह सरकशी करते	ज़मीन में	और लेकिन	वह उतारता है	अन्दाज़े से		
مَّا يَشَاءُ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٢٧﴾ وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ									
जिस क़द्र वह चाहता है	वेशक वह	अपने बन्दों से	वाख़बर	देखने वाला	27	और वही	वह जो	नाज़िल फ़रमाता है	वारिश
مِّنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٨﴾									
बाद	जब वह मायूस हो गए	और फैलाता है	अपनी रहमत	और वही	कारसाज़	सतुदा सिफ़ात	28		
وَمِنَ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَتْ فِيهِمَا مِنْ دَابَّةٍ									
और से	उस की निशानियां	पैदा करना	आस्मानों	और ज़मीन	और जो	उस ने फैलाए	उन के दरमियान	चौपाए	
وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾ وَمَا أَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيبَةٍ فِيمَا									
और वह	उन के जमा करने पर	जब वह चाहे	कुदरत रखने वाला	29	और जो पहुँची तुम्हें	कोई मुसीबत	तो उस के सबब जो		
كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٠﴾ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ									
कमाया	तुम्हारे हाथों	और माफ़ फ़रमा देता है	बहुत से	30	और नहीं	तुम	अज़िज़ करने वाले		
فِي الْأَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٣١﴾									
ज़मीन में	और नहीं तुम्हारे लिए	अल्लाह के सिवा	कोई कारसाज़	और न कोई मददगार	31				

यही है वह जिस की अल्लाह अपने बन्दों को बशारत देता है जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, आप (स) फ़रमा दें: मैं तुम से कराबत की मुहब्बत के सिवा इस पर कोई अजर नहीं मांगता, और जो शख्स कोई नेकी कमाएगा (करेगा) हम उस के लिए उस में खूबी बढ़ा देंगे, वेशक अल्लाह बख्शने वाला, कद्र दान है। (23) क्या वह कहते हैं कि उस ने अल्लाह पर बाँधा है झूट, सो अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा देता, और अल्लाह बातिल को मिटाता है और हक को साबित करता है अपने कलिमात से, वेशक वह दिलों की बातों को जानने वाला है। (24) और वही है जो अपने बन्दों से तौबा कुबूल फरमाता है और बुराइयों को माफ़ कर देता है, और वह जानता है जो तुम करते हो। (25) और वह (उन की दुआएँ) कुबूल करता है जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, और वह उन को अपने फ़ज़ल से और ज़ियादा देता है, और काफ़िरों के लिए सख़्त अज़ाब है। (26) और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रिज़क कुशादा कर देता तो वह ज़मीन में सरकशी करते, लेकिन वह अन्दाज़े से जिस कद्र चाहता है उतारता है, वेशक वह अपने बन्दों (की ज़रूरतों) से वाख़बर देखने वाला है। (27) और उस के बाद जब कि वह नाउम्मीद हो गए तो वही है जो वारिश नाज़िल फरमाता है, और अपनी रहमत फैलाता है, और वही है कारसाज़, सतूदा सिफ़ात। (28) और उस की निशानियों में से है पैदा करना आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उस ने उन के दरमियान चौपाए फैलाए, और वह जब चाहे उन के जमा करने पर कुदरत रखता है। (29) और तुम्हें जो कोई मुसीबत पहुँची तो वह उस के सबब (पहुँची) जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (किया) और वह बहुत से (गुनाह) माफ़ (ही) कर देता है। (30) और तुम ज़मीन में (अल्लाह तआला को) अज़िज़ करने वाले नहीं हो, और अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए न कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार। (31)

और उस की निशानियों में से समन्दर में पहाड़ों जैसे जहाज़ हैं। (32)

अगर वह चाहे तो हवा को ठहरा दे तो उस की सतह पर वह खड़े हुए रह जाएं, वेशक उस में निशानियां हैं हर सबर करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। (33)

या वह उन्हें उन के आमाल के सबब हलाक कर दे और बहुतों को माफ़ कर दे। (34)

और जान लें वह लोग जो हमारी आयात में झगड़ते हैं कि उन के लिए कोई ख़लासी (जाए फ़िरार) नहीं। (35)

पस तुम्हें जो कुछ कोई शै दी गई है तो वह दुनियावी ज़िन्दगी का (नापाइदार) फ़ाइदा है, और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला है, उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (36)

और जो लोग बचते हैं बड़े गुनाहों से और बेहयाइयों से और जब वह गुस्से में होते हैं तो माफ़ कर देते हैं। (37)

और जिन लोगों ने कुबूल किया अपने रब का फ़रमान और उन्होंने ने नमाज़ काइम की, और उन का काम बाहम मश्वरा (से होता है) और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह खर्च करते हैं। (38)

और जो लोग (ऐसे हैं कि) जब उन पर कोई जुल्म ओ अत्याचार पहुँचे तो वह बदला लेते हैं। (39)

और बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है, सो जिस ने माफ़ कर दिया और इसलाह (दुरुस्ती)

कर दी तो उस का अजर अल्लाह के ज़िम्मे है, वेशक वह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (40)

और अलबत्ता जिस ने बदला लिया अपने ऊपर जुल्म के बाद, सो यह लोग हैं जिन पर कोई राहे (इल्ज़ाम) नहीं। (41)

इस के सिवा नहीं कि इल्ज़ाम उन पर है जो लोगों पर जुल्म करते हैं, और ज़मीन में नाहक़ फ़साद मचाते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (42)

और अलबत्ता जिस ने सबर किया और माफ़ कर दिया तो वेशक यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (43)

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٣٢﴾ إِنَّ يَشَأْ يُسْكِنَ الرِّيحَ

और उस की निशानियों से	जहाज़	समन्दर में	पहाड़ों जैसे	32	अगर वह चाहे	वह ठहरा दे	हवा

فَيُظِلِّلْنَ زَوَاكِدَ عَلَى ظَهْرِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ

तो वह रह जाएं	खड़े हुए	उस की पीठ (सतह) पर	वेशक उस में	अलबत्ता निशानियां	हर सबर करने वाले के लिए

شَكُورٍ ﴿٣٣﴾ أَوْ يُوبِقُهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٤﴾ وَيَعْلَمَ

शुक्र करने वाले	33	या	वह उन्हें हलाक कर दे	उन के आमाल के सबब	और माफ़ कर दे	बहुतों को	34	और जान लें

الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِنْ مَّحِيصٍ ﴿٣٥﴾ فَمَا أُوتِيتُمْ

वह लोग जो	झगड़ते हैं	हमारी आयात में	नहीं उन के लिए	कोई	ख़लासी	35	पस जो कुछ दी गई तुम्हें

مِنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى

कोई शै	तो फ़ाइदा	दुनियावी ज़िन्दगी	और जो	अल्लाह के पास	बेहतर	और हमेशा बाक़ी रहने वाला

لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٣٦﴾ وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ

उन लोगों के लिए जो ईमान लाए	और अपने रब पर वह	वह भरोसा करते हैं	36	और जो लोग	वह बचते हैं

كَبِيرِ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ﴿٣٧﴾

कबीरा (बड़े) गुनाह	और बेहयाइयां	और जब	वह गुस्से में होते हैं	वह माफ़ कर देते हैं	37

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَى

और जिन लोगों ने	कुबूल किया	अपने रब का (फ़रमान)	और उन्होंने ने काइम की	नमाज़	और उन का काम	मश्वरा

بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ

बाहम	और उस से जो	हम ने अता किया उन्हें	वह खर्च करते हैं	38	और जो लोग	जब	उन्हें पहुँचे

الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٣٩﴾ وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا

कोई जुल्म ओ तअददी	वह	बदला लेते हैं	39	और बदला	बुराई	बुराई	उस जैसी

فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾

सो जिस	माफ़ कर दिया	और इसलाह कर दी	तो उस का अजर	अल्लाह पर - ज़िम्मे	वेशक वह	दोस्त नहीं रखता	ज़ालिम (जमा)	40

وَلَمَنْ أَنْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَئِكَ مَا عَلَيْهِمْ

और अलबत्ता - जिस	उस ने बदला लिया	अपने ऊपर जुल्म के बाद	सो यह लोग	नहीं उन पर

مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤١﴾ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ

कोई राह	41	इस के सिवा नहीं	राह (इल्ज़ाम)	पर	वह लोग जो	वह जुल्म करते हैं	लोग

وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ أُولَئِكَ لَهُمْ

और वह फ़साद करते हैं	ज़मीन में	नाहक़	यही लोग	उन के लिए

عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٢﴾ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿٤٣﴾

दर्दनाक अज़ाब	42	और अलबत्ता - जिस	सबर किया	और माफ़ कर दिया	वेशक यह	अलबत्ता - से	बड़ी हिम्मत के काम	43

وَمَنْ يُضِلِّ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهِ وَتَرَى الظَّالِمِينَ									
ज़ालिम (जमा)	और तुम देखोगे	उस के बाद	कोई कारसाज़	तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस को			
لَمَّا رَأَوْا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيلٍ ﴿٤٤﴾ وَتَرَاهُمْ									
और तू देखेगा उन्हें	44	कोई राह	लौटना	तरफ-का	क्या	वह कहेंगे	अज़ाब	वह देखेंगे	जब
يُعْرِضُونَ عَلَيْهَا خُشَعِينَ مِنَ الدَّلِّ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ									
गोशाएँ चश्म पोशीदा (नीम कुशादा)	से	वह देखते होंगे	ज़िल्लत से	आजिज़ी करते हुए	उस (दोज़ख़) पर	पेश किए जाएंगे वह			
وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ الْخُسْرَيْنَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيَهُمْ									
और अपना घराना	अपने आप को	ख़सारे में डाला	वह जिन्होंने ने	ख़सारा पाने वाले	बेशक	जो ईमान लाए (मोमिन)	और कहेंगे		
يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ﴿٤٥﴾ وَمَا كَانَ لَهُمْ									
उन के लिए	और नहीं है	45	हमेशा रहने वाला अज़ाब	में	ज़ालिम (जमा)	खूब याद रखो! बेशक	रोज़े कियामत		
مِّنْ أَوْلِيَآءَ يَنْصُرُونَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَمَنْ يُضِلِّ اللَّهُ فَمَا لَهُ									
तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस	अल्लाह के सिवा	वह मदद दें उन्हें	कोई कारसाज़				
مِّنْ سَبِيلٍ ﴿٤٦﴾ اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ									
उस के लिए	फेरने वाला नहीं	वह दिन	कि आए	इस से क़व्ल	अपने रब का (फ़रमान)	तुम कुबूल कर लो	46	कोई रास्ता	
مِّنَ اللَّهِ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلَجٍ يَّوْمَئِذٍ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيرٍ ﴿٤٧﴾ فَإِنْ أَعْرَضُوا									
वह मुँह फेर लें	फिर अगर	47	कोई इन्कार (रोक टोक करने वाला)	और नहीं तुम्हारे लिए	उस दिन	पनाह	कोई	नहीं तुम्हारे लिए	अल्लाह से
فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ إِنَّ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلْغُ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا									
चखाते हैं हम	जब	और बेशक	पहुँचाना	सिवा	आप पर-ज़िम्मे	नहीं	निगहबान	उन पर	हम ने भेजा तुम्हें
الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۖ وَإِنْ تَصْبَهُمْ سَبِيَّةٌ بِمَا قَدَّمَتْ									
आगे भेजा	उस के बदले	कोई बुराई	पहुँचे उन्हें	और अगर	खुश हो जाता है उस से	रहमत	अपनी तरफ़ से	इन्सान	
أَيْدِيَهُمْ فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ﴿٤٨﴾ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ									
और ज़मीन	आस्मानों	अल्लाह के लिए बादशाहत	48	बड़ा नाशुक्रा	तो बेशक इन्सान	उन के हाथों			
يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ الذَّكَوْرَ ﴿٤٩﴾									
49	बेटे	जिस के लिए वह चाहता है	और अता करता है	बेटियाँ	जिस के लिए वह चाहता है	वह अता करता है	जो वह चाहता है	वह पैदा करता है	
أَوْ يَرْوِجُهُمْ ذُكْرَانًا وَنَاثًا وَيَجْعَلُ مِمَّنْ يَشَاءُ عَقِيمًا ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ									
जानने वाला	बेशक वह	बाँझ	जिस को वह चाहता है	और कर देता है	और बेटियाँ	बेटे	जमा कर देता है उन्हें	या	
قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ وَرَآئِ									
पीछे से	या	मगर वहि से	कि उस से कलाम करे अल्लाह	किसी बशर को	और नहीं है	50	कुदरत रखने वाला		
حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِي بِأَذْنِهِ مَا يَشَاءُ ۖ إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيمٍ									
51	हिक्मत वाला	बुलन्द तर	बेशक वह	जो वह चाहे	उस के हुक्म से	पस वह वहि करे	कोई फरिश्ता	या वह भेजे	एक पर्दा

और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो उस के लिए नहीं उस के बाद कोई कारसाज़, और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वह अज़ाब देखेंगे (तो) वह कहेंगे: क्या लौटने की कोई राह है? (44) और तू देखेगा जब वह अजिज़ी करते हुए ज़िल्लत से दोज़ख़ पर पेश किए जाएंगे तो वह देखते होंगे: अध खुली आँखों से, और मोमिन कहेंगे: ख़सारा पाने वाले वह हैं जिन्होंने ख़सारे में डाला अपने आप को और अपने घराने को रोज़े कियामत, खूब याद रखो! ज़ालिम बेशक हमेशा रहने वाले अज़ाब में होंगे। (45) और उन के लिए नहीं है कोई कारसाज़ जो उन्हें अल्लाह के सिवा मदद दे, और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस के लिए (हिदायत का) कोई रास्ता नहीं। (46) तुम अपने रब का फ़रमान उस से क़व्ल कुबूल कर लो कि वह दिन आए जिस को अल्लाह (की जानिव) से कोई फेरने वाला नहीं, तुम्हारे लिए नहीं उस दिन कोई पनाह, और तुम्हारे लिए कोई रोक टोक करने वाला नहीं। (47) फिर अगर वह मुँह फेर लें तो हम ने आप को उन पर नहीं भेजा निगहबान, आप (स) के ज़िम्मे (पैग़ाम) पहुँचाने के सिवा नहीं, और बेशक जब हम इन्सान को अपनी तरफ़ से रहमत (का मज़ा) चखाते हैं तो वह उस से खुश हो जाता है, और अगर उन्हें उस के बदले कोई बुराई पहुँचे जो उन के हाथों ने आगे भेजा, तो बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (48) अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, जो वह चाहता है पैदा करता है, वह अता करता है जिस को वह चाहे बेटियाँ, और वह अता करता है जिस के लिए वह चाहता है बेटे। (49) या उन्हें जमा कर देता (जोड़े देता है) बेटे और बेटियाँ, और जिस को वह चाहता है बाँझ (बेऔलाद) कर देता है, बेशक वह जानने वाला कुदरत रखने वाला है। (50) और किसी बशर की (मज़ाल) नहीं कि अल्लाह उस से कलाम करे मगर वहि (इशारे) से या परदे के पीछे से, या वह कोई फ़रिश्ता भेजे, पस वह उस के हुक्म से जो (अल्लाह) चाहे वह वहि करे (पैग़ाम पहुँचा दे), बेशक वह बुलन्द तर, हिकमत वाला है। (51)

और उसी तरह हम ने आप (स) की तरफ अपने हुक्म से कुरआन को बहि किया, आप (स) न जानते थे कि किताब क्या है? और न ईमान (की तफसील) और लेकिन हम ने उसे नूर बना दिया, उस से हम अपने बन्दों में से जिस को चाहते हैं हिदायत देते हैं, और वेशक आप (स) ज़रूर रहनुमाई करते हैं सीधे रास्ते की तरफ। (52)

(यानी) अल्लाह का रास्ता, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, याद रखें! तमाम कामों की वाज़गशत अल्लाह की तरफ है। (53)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

क़सम है वाज़ेह किताब की। (2) वेशक हम ने उसे बनाया अरबी ज़बान में कुरआन, ताकि तुम समझो। (3)

और वेशक वह (कुरआन) हमारे पास लौहे महफूज़ में है, बुलन्द मरतबा, बाहिक्मत। (4)

क्या हम यह नसीहत तुम से एराज़ कर के इस लिए हटा लें कि तुम हद से गुज़रने वाले लोग हो। (5) और हम ने पहले लोगों में बहुत से नबी भेजे। (6)

और उन के पास नहीं आया कोई नबी, मगर वह उस से ठठा करते थे। (7)

पस हम ने उन (अहले मक्का) से ज़ियादा सख़्त पकड़ (ताक़त) वाले लोगों को हलाक किया और गुज़र चुकी है पहले लोगों की मिसाल। (8)

और अगर तुम उन से पूछो कि किस ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा क्या? तो वह ज़रूर कहेंगे “उन्हें पैदा किया है ग़ालिब, इल्म वाले (अल्लाह) ने”। (9)

वह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और तुम्हारे लिए उस में बनाए रास्ते ताकि तुम राह पाओ। (10)

और वह अल्लाह जिस ने एक अन्दाज़े के साथ आस्मानों से पानी उतारा, फिर हम ने उस से ज़िन्दा किया मुर्दा ज़मीन को, उसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे। (11)

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ

क्या है किताब	तुम न जानते थे	अपने हुक्म से	कुरआन	तुम्हारी तरफ़	हम ने बहि किया	और उसी तरह

وَلَا الْإِيمَانُ وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا نَّهْدِي بِهِ مَنْ نَّشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ

अपने बन्दों में से	जिस को हम चाहते हैं	हम हिदायत देते हैं उस से	नूर	हम ने बना दिया उसे	और लेकिन	और न ईमान

وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٢﴾ صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا

जो कुछ	वह जिस के लिए	रास्ता अल्लाह का	52	सीधा	रास्ता	तरफ़	ज़रूर रहनुमाई करते हो	और वेशक तुम

فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ آلَا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ﴿٥٣﴾

53	तमाम काम	वाज़गशत	अल्लाह की तरफ़	याद रखें	ज़मीन में	और जो कुछ	आस्मानों में

آيَاتُهَا ٨٩ ﴿٤٣﴾ سُورَةُ الرَّحُوفِ ﴿٧﴾ زُكُوعَاتُهَا ٧

रुक़आत 7	(43) सूरतुज़ जुखुरफ़	आयात 89

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حَمْدٌ ۝ (١) وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ (٢) إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ

ताकि तुम	अरबी ज़बान	कुरआन	हम ने इसे बनाया	वेशक हम	2	वाज़ेह	क़सम है किताब	1	हा-मीम

تَعْقِلُونَ ۝ (٣) وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلِّي حَكِيمٌ ۝ (٤) أَفَنَضْرِبُ

क्या हम हटा लें	4	बाहिक्मत	बुलन्द मरतबा	हमारे पास	असल किताब (लौहे महफूज़)	में	और वेशक वह	3	समझो

عَنكُم الذِّكْرَ صَفْحًا أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۝ (٥) وَكَمْ أَرْسَلْنَا

और कितने ही भेजे हम ने	5	हद से गुज़रने वाले	लोग	तुम हो	कि	एराज़ कर के	नसीहत	तुम से

مِّنْ نَّبِيِّ فِي الْأَوَّلِينَ ۝ (٦) وَمَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ

उस से	वह थे	मगर	कोई नबी	और नहीं आया उन के पास	6	पहले लोगों में	नबी

يَسْتَهْزِءُونَ ۝ (٧) فَاهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَمَضَىٰ مَثَلُ

मिसाल	और गुज़र चुकी	पकड़	उन से	सख़्त	पस हम ने हलाक किया	7	मज़ाक़ करते

الْأَوَّلِينَ ۝ (٨) وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ

तो वह ज़रूर कहेंगे	और ज़मीन	पैदा किया आस्मानों को	किस	तुम उन से पूछो	और अगर	8	पहले लोग

خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ (٩) الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا

फ़र्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	वह जिस	9	इल्म वाला	ग़ालिब	उन्हें पैदा किया

وَجَعَلَ لَكُم فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ (١٠) وَالَّذِي نَزَّلَ

उतारा	और वह जिस	10	तुम राह पाओ	ताकि तुम	रास्ते - सबील	उस में	तुम्हारे लिए	और बनाए

مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيِّتًا ۚ كَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ۝ (١١)

11	तुम निकाले जाओगे	उसी तरह	मुर्दा ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया हम ने	एक अन्दाज़े से	पानी	आस्मान से

ع ٦

ع ١١

ع ١٢

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ							
और वह जिस	पैदा किए	जोड़े	उन सब के	और बनाई	तुम्हारे लिए	कशतियां	और चौपाए
مَا تَرْكَبُونَ ﴿١٢﴾ لِّتَسْتَوُوا عَلَى ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا							
जिस	तुम सवार होते हो	12	ताकि तुम ठीक बैठो	उन की पीठों पर	फिर	तुम याद करो	अपना रब
اَسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا							
तुम ठीक बैठ जाओ	उस पर	और तुम कहो	पाक है	वह ज्ञात जिस	मुसख्खर किया हमारे लिए	इस	और न थे हम
لَهُ مُقَرَّنِينَ ﴿١٣﴾ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴿١٤﴾ وَجَعَلُوا لَهُ							
इस को	काबू में लाने वाले	13	और वेशक हम	तरफ़	अपना रब	ज़रूर लौट कर जाने वाले	14
مِّنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾ أَمْ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ							
उस के बन्दों में से	हिस्सा (लखूते जिगर)	वेशक इन्सान	नाशुक्रा	खुले तौर पर	15	क्या उस ने बना ली	उस से जो उस ने पैदा किया
بَنَاتٍ وَأَصْفُكُمْ بِالْبَنِينَ ﴿١٦﴾ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ							
बेटियां	और तुम्हें मखसूस किया	बेटों के साथ	16	और जब	खुशखबरी दी जाए	उन में से एक	उस की जो
لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾ أَوْ مِّنْ يُّنَشُّوْا							
रहमान (अल्लाह) के लिए	मिसाल	हो जाता है उस का चेहरा	सियाह	और वह	ग़मगीन	17	किया जो
فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٨﴾ وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ							
जेवर में	और वह	झगड़े (बहस मुवाहसा) में	ग़ैर वाज़ेह	18	और उन्होंने ने ठहरा लिया	फ़रिश्ते	
الَّذِينَ هُمْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ إِنَّا شَهِدُوا خَلْقَهُمْ سَتُكْتَبُ							
वह जो	वह	रहमान (अल्लाह) के बन्दे	औरतें	क्या तुम मौजूद थे	उन की पैदाइश	अभी लिख लिया जाएगा	
شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ							
उन की गवाही (दावा)	और उन से पूछा जाएगा	19	और वह कहते हैं	अगर चाहता	रहमान (अल्लाह)	हम न इबादत करते उन की	
مَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْ اتَّيْنَهُمْ							
उन्हें नहीं	उस का	कुछ इल्म	नहीं	वह	मगर - सिर्फ़	अटकल दौड़ाते हैं	20
كِتَابًا مِّنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿٢١﴾ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا							
कोई किताब	इस से कब्ल	सो वह उस को	थामे हुए हैं	21	बल्कि	वह कहते हैं	वेशक हम ने पाया
أَبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٢٢﴾ وَكَذَلِكَ							
अपने बाप दादा	एक तरीक़े पर	और वेशक हम	उन के नक्शे क़दम पर	22	राह पाने वाले (चल रहे हैं)	और उसी तरह	
مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا							
नहीं भेजा हम ने	इस से पहले	किसी वस्ती में	कोई डर सुनाने वाला	मगर	कहा	उस के खुशहाल	
إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾							
वेशक हम ने पाया	अपने बाप दादा	एक तरीक़े पर	और वेशक हम	उन के नक्शे क़दम पर	23	पैरवी करते हैं	

और वह जिस ने उन सब के जोड़े बनाए, और तुम्हारे लिए बनाई कशतियां और चौपाए जिन पर तुम सवार होते हो। (12)

ताकि तमू उन की पीठों पर ठीक तौर से बैठो, फिर तुम याद करो अपने रब की नेमत को, जब तुम उस पर ठीक बैठ जाओ, और तुम कहो: पाक है वह ज्ञात जिस ने इसे हमारे लिए मुसख्खर (ताबे फरमान) किया और हम इस को काबू में लाने वाले न थे। (13)

और वेशक हम अपने रब की तरफ़ ज़रूर लौट कर जाने वाले हैं। (14)

और उन्होंने ने उस के बन्दों में से उस के लिए बना लिया है जुज़ (लखूते जिगर), वेशक इन्सान सरीह नाशुक्रा है। (15)

क्या उस ने अपनी मखलूक में से (अपने लिए) बेटियां बना लीं? और तुम्हें मखसूस किया (नवाज़ा) बेटों के साथ? (16)

और जब उन में से किसी को उस (बेटी) की खुशखबरी दी जाए जिस की मिसाल उस ने अल्लाह के लिए दी तो उस का चेहरा सियाह हो जाता है, और वह ग़म से भर जाता है। (17)

क्या वह (औलाद) जो ज़ेवर में पर्वरिश पाए और वह बहस मुवाहसा में ग़ैर वाज़ेह हो (अल्लाह के हिस्से में आई)। (18)

और उन्होंने ने ठहराया फ़रिश्तों को औरतें, जो अल्लाह के बन्दे हैं, क्या तुम उन की पैदाइश (के वक्त) मौजूद थे? उन का यह दावा अभी लिख लिया जाएगा और कियामत के (दिन) उन से पूछा जाएगा। (19)

और वह कहते हैं: अगर अल्लाह चाहता तो हम उन की इबादत न करते, उन्हें उस का कुछ इल्म नहीं, वह तो सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (20)

क्या हम ने उन्हें उस से कब्ल कोई किताब दी है जिस को वह थामे हुए हैं (उस से इस्तिदलाल करते हैं)। (21)

बल्कि वह कहते हैं कि हम ने अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर पाया, और वेशक हम उन के नक्शे क़दम पर चल रहे हैं। (22)

और उसी तरह हम ने आप (स) से पहले किसी वस्ती में कोई डर सुनाने वाला नहीं भेजा, मगर उस के खुशहाल लोगों ने कहा, वेशक हम ने पाया अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर, और वेशक हम उन के नक्शे क़दम की पैरवी करते हैं। (23)

नबी (स) ने कहा: क्या (उस सूरत में भी) अगरचे मैं बेहतर राह बतलाने वाला (दीने हक लाया) हूँ उस से जिस पर तुम ने अपने बाप दादा को पाया? वह बोले: वेशक हम उस का इन्कार करने वाले हैं जिस के साथ तुम भेजे गए हो। (24)

तो हम ने उन से बदला लिया, सो देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? (25)

और (याद करो) जब इब्राहीम (अ) ने अपने बाप दादा और अपनी कौम को कहा: वेशक मैं उस से बेज़ार हूँ जिस की तुम परस्तिश करते हो, (26) मगर (हाँ) जिस ने मुझे पैदा किया, तो वेशक वह जल्द मुझे हिदायत देगा। (27)

और उस (इब्राहीम अ) ने उस को किया अपनी नस्ल में बाकी रहने वाली बात, ताकि वह रुजूज़ करते रहें। (28)

वल्कि मैं ने उन्हें और उन के बाप दादा को सामाने ज़िस्त दिया, यहां तक कि उन के पास कुरआन आ गया, और साफ़ साफ़ बयान करने वाला रसूल। (29)

और जब उन के पास हक आया तो वह कहने लगे कि यह जादू है, और वेशक हम इस का इन्कार करने वाले हैं। (30)

और वह बोले कि यह कुरआन क्यों न नाज़िल किया गया दो बसतियों (मक्का या ताइफ़) के किसी बड़े आदमी पर? (31)

क्या वह तुम्हारे रब की रहमत तक्सीम करते हैं, और हम ने उन के दरमियान उन की रोज़ी दुनिया की ज़िन्दगी में तक्सीम की है, और हम ने उन में से एक के दरजे दूसरे पर बुलन्द किए हैं ताकि उन में से एक दूसरे को खिदमतगार बनाए, और तुम्हारे रब की रहमत उस से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। (32)

और अगर (एहतिमाल) न होता कि तमाम लोग एक तरीके पर हो जाएंगे तो हम बनाते उन के लिए जो कुफ़ करते हैं अल्लाह का। उन के घरों के लिए चाँदी की छत और सीढ़ियां जिन पर वह चढ़ते हैं (33) और उन के घरों के दरवाज़े और तख़्त जिन पर वह तकिया लगाते हैं। (34)

और (ख़ूब) आराइश करते, और यह सब (कुछ) नहीं मगर दुनिया की ज़िन्दगी की पूंजी है, और तुम्हारे रब के नज़्दीक आखिरत परहेज़गारों के लिए है। (35)

قُلْ أُولُو جُنُكُم بِأَهْدَى مِمَّا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ قَالُوا إِنَّا									
वेशक हम	वह बोले	अपने बाप दादा	उस पर	तुम ने पाया	उस से जिस	बेहतर राह बताने वाला	क्या अगरचे मैं तुम्हारे पास लाया हूँ	(नबी ने) कहा	
بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَفَرُونَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ									
हुआ	कैसा	सो देखो	उन से	तो हम ने बदला लिया	24	इन्कार करने वाले	जिस के साथ तुम भेजे गए	उस पर	
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٥﴾ وَادِّ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي									
वेशक मैं	और अपनी कौम	अपने बाप को	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	25	झुटलाने वालों का	अन्जाम	
بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٦﴾ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ﴿٢٧﴾									
27	जल्द मुझे हिदायत देगा	तो वेशक वह	मुझे पैदा किया	मगर वह जिस ने	26	उस से जिस की तुम परस्तिश करते हो	वेज़ार		
وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ بَلْ مَتَّعْتُ									
वल्कि मैं ने सामाने ज़िस्त दिया	28	रुजूअ करते रहें	ताकि वह	अपनी नस्ल में	बाकी रहने वाली	बात	और उस ने किया उस को		
هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿٢٩﴾ وَلَمَّا									
और जब	29	साफ़ साफ़ बयान करने वाला	और रसूल	हक़ (कुरआन)	आ गया उन के पास	यहाँ तक कि	और उन के बाप दादा	उन को	
جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٠﴾ وَقَالُوا									
और वह बोले	30	इन्कार करने वाले	इस का	और वेशक हम	जादू	यह	वह कहने लगे	हक़	आ गया उन के पास
لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ﴿٣١﴾ أَهَمْ									
क्या वह	31	बड़े	दो बस्तियां	से	किसी आदमी पर	यह कुरआन	क्यों न उतारा गया		
يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا									
दुनिया की ज़िन्दगी	में	उन की रोज़ी	उन के दरमियान	हम ने तक्सीम की	हम	तुम्हारा रब	रहमत	तक्सीम करते हैं	
وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا									
उन में से बाज़ (एक) दूसरे को	ताकि बनाए	दरजे	बाज़ (दूसरे) पर	उन में से बाज़ (एक)	और हम ने बुलन्द किए				
سُخْرِيًّا وَرَحِمْتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٢﴾ وَلَوْ لَا									
और अगर (यह) न होता	32	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	और तुम्हारे रब की रहमत	खिदमतगार			
أَنْ يَكُونُ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ									
रहमान (अल्लाह) का	उनके लिए जो कुफ़ करते हैं	तो हम बनाते	एक उम्मत (तरीका)	तमाम लोग	कि हो जाएंगे				
لِبُيُوتِهِمْ سُقْفًا مِّنْ فِصَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾ وَلِبُيُوتِهِمْ									
उन के घरों के लिए	33	वह चढ़ते	जिन पर	और सीढ़ियाँ	चाँदी से - की	छत	उनके घरों के लिए		
أَبْوَابًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَكَبَّرُونَ ﴿٣٤﴾ وَزُخْرَفًا وَإِنْ كُلُّ ذِيكَ لَمَّا									
मगर	यह सब	और नहीं	और आराइश करते	34	वह तकिया लगाते	जिन पर	और तख़्त	दरवाज़े	
مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾									
35	परहेज़गारों के लिए	तुम्हारे रब के नज़दीक	और आखिरत	दुनिया की ज़िन्दगी	पूजी				

٢
٨

٢
٩

وَمَنْ يَّعِشْ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقِصْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾									
36	साथी	उस का	तो वह	एक शैतान	हम मुक़र्रर (मुसल्लत) कर देते हैं उस के लिए	रहमान (अल्लाह) की याद	से	ग़फ़लत करे	और जो
وَأَنَّهُمْ لَيَصْدُونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾									
37	हिदायत यापता	कि वह	और वह गुमान करते हैं	रास्ते से	अलबत्ता वह रोकते हैं उन्हें	और वेशक वह			
حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَلَيْتَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ									
मशरिफ़ ओ मग़रिब	दूरी	और तेरे दरमियान	मेरे दरमियान	ऐ काश	वह कहेगा	वह आएंगे हमारे पास	जब	यहाँ तक कि	
فَبُئْسَ الْقَرِينُ ﴿٣٨﴾ وَلَنْ يَنْفَعَكُمْ الْيَوْمَ إِذْ ظَلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ									
अज़ाब में	यह कि तुम	जब जुल्म कर चुके तुम ने	आज	और हरगिज़ नफ़ा न देगा तुम्हें	38	साथी	तू बुरा		
مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٩﴾ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْى وَمَنْ كَانَ									
और जो हो	अँधों	या राह दिखाएंगे	वहों	सुनाएंगे	तो क्या आप (स)	39	मुशतरिक हो		
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٠﴾ فَمَا نَذَهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُمْ مُنْتَقِمُونَ ﴿٤١﴾									
41	इन्तिकाम लेने वाले	उन से	तो वेशक हम	आप (स) को	ले जाएं	फिर अगर	40	सरीह गुमराही	में
أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُونَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ									
पस आप (स) मज़बूती से थाम लें	42	कुदरत रखने वाले (कादिर) हैं	उन पर	तो वेशक हम	हम ने वादा किया उन से	वह जो	या हम दिखा दें तुम्हें		
بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٣﴾ وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ									
नसीहत (नामा)	और वेशक यह	43	सीधा	रास्ता	पर	वेशक आप (स) की तरफ़	वहि किया गया	वह जो	
لَكَ وَلِقَوْمِكَ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ﴿٤٤﴾ وَسَأَلُ مَنْ أَرْسَلْنَا									
हम ने भेजे	जो	और पूछ लें	44	तुम से पूछा जाएगा	और अनक़रीब	और आप (स) की कौम के लिए	आप (स) के लिए		
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِلَهًا									
कोई माबूद	रहमान (अल्लाह) के सिवा	से	क्या हम ने मुक़र्रर किए	हमारे रसूलों में से	आप (स) से पहले				
يُعْبَدُونَ ﴿٤٥﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ									
और उस के सरदार	फ़िरऔन	तरफ़	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और तहकीक़ हम ने भेजा	45	उन की इबादत के लिए		
فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ									
वह	नागर्हा	हमारी निशानियों के साथ	वह आया	फिर जब	46	तमाम जहानों का परवरदिगार	वेशक मैं रसूल	तो उस ने कहा	
مِنْهَا يَصْحَكُونَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرِيهِمْ مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا									
उस की बहन (दूसरी निशानी)	से	बड़ी	मगर वह	कोई निशानी	और हम उन्हें दिखाते थे	47	उस से (उन निशानियों पर) हैंसने लगे		
وَآخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوا يَا أَيُّهَ									
ऐ	और उन्होंने ने कहा	48	वह रुजूअ करें	ताकि वह	अज़ाब में	और हम ने गिरफ़्तार किया उन्हें			
السَّاحِرِ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ إِنَّا لَمُهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾									
49	अलबत्ता हिदायत पाने वाले	वेशक हम	तेरे पास	उस अ़हद के सबब जो	अपना रब	हमारे लिए	दुआ कर	जादूगर	

और जो कोई अल्लाह की याद से गफ़लत करे, हम मुसल्लत कर देते हैं उस के लिए एक शैतान, तो वह उस का साथी हो जाता है। (36)

और वेशक वह उन्हें (अल्लाह के) रास्ते से रोकते हैं, और वह गुमान करते हैं कि वह हिदायत यापता है। (37)

यहां तक कि जब वह हमारे पास आएंगे तो वह (अपने शैतान साथी से) कहेगा: ऐ काश मेरे और तेरे दरमियान मशरिफ ओ मग़रिब की दूरी होती, तू बुरा साथी निकला। (38)

और जब कि तुम जुल्म कर चुके तो आज तुम्हें यह हरगिज़ नफा न देगा कि तुम अज़ाब में मुशतरिक हो। (39)

तो क्या आप (स) बहरों को सुनाएंगे या अँधों को राह दिखाएंगे? और उस को जो सरीह गुमराही में हो। (40)

फिर अगर हम आप (स) को (दुनिया से) ले जाएं तो वेशक हम (फिर भी) उन से इन्तिकाम लेने वाले हैं। (41)

या हम आप (स) को दिखा दें वह जो हम ने उन से वादा किया है तो वेशक हम उन पर कादिर हैं। (42)

पस आप (स) वह मज़बूती से थाम लें जो आप (स) की तरफ़ वहि किया गया है, वेशक आप (स) सीधे रास्ते पर हैं। (43)

और वेशक यह (कुरआन) एक नसीहत नामा है आप (स) के लिए और आप (स) की कौम के लिए। और अनक़रीब तुम से पूछा जाएगा। (44)

आप (स) हमारे उन रसूलों से पूछ लें जो हम ने आप से पहले भेजे: क्या हम ने अल्लाह के सिवा कोई माबूद मुक़र्रर किए थे जिन की इबादत की जाए। (45)

और तहकीक़ हम ने मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा फिरऔन और उस के सरदारों की तरफ, तो उस ने कहा: वेशक मैं तमाम जहानों के परवरदिगार का रसूल हूँ। (46)

फिर जब वह हमारी निशानियों के साथ उन के पास आया तो नागर्हा वह उन निशानियों पर हैंसने लगे। (47)

और हम उन्हें कोई निशानी नहीं दिखाते थे, मगर वह पहली निशानी से बड़ी होती, हम ने उन्हें अज़ाब में गिरफ़्तार किया ताकि वह (हक़ की तरफ) रुजूअ करें। (48)

और उन्होंने ने कहा: ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने रब से दुआ कर उस अ़हद के सबब जो तेरे पास है, वेशक हम हिदायत पाने वाले हैं (हिदायत पा लेंगे)। (49)

फिर जब हम ने उन से अज़ाव हटा दिया तो नागहां वह अहद तोड़ गए। (50)

और फिरऔन ने अपनी कौम में पुकारा (मनादी की), उस ने कहा: ऐ मेरी कौम! क्या मिस्र की बादशाहत मेरी नहीं? और यह नहरें जारी हैं मेरे (महलात के) नीचे से, तो क्या तुम नहीं देखते? (51)

बल्कि मैं उस से बेहतर हूँ जो कम क़द्र है, और वह मालूम नहीं होता साफ़ गुफ़्तगू करता। (52)

तो उस पर सोने के कंगन क्यों न डाले गए? या उस के साथ फ़रिश्ते (क्यों न) आए परा बान्ध कर। (53)

पस उस ने अपनी कौम को बेअ़क़ल कर दिया, तो उन्होंने ने उस की इताअत की, बेशक वह नाफ़रमान लोग थे। (54)

फिर जब उन्होंने ने हमें गुस्सा दिलाया तो हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया और उन सब को गर्क कर दिया। (55)

तो हम ने उन्हें गए गुज़रे कर दिया, और बाद में आने वालों के लिए एक दास्तान। (56)

और जब ईसा (अ) इब्ने मरयम की मिसाल बयान की गई तो यकायक तुम्हारी कौम उस से खुशी के मारे चिल्लाने लगी। (57)

वह बोले: क्या हमारे माबूद बेहतर है या वह (ईसा इब्ने मरयम)? वह उस को तुम्हारे सामने सिर्फ़ झगड़ने के लिए बयान करते हैं, बल्कि वह तो है ही झगड़ालू। (58)

ईसा (अ) सिर्फ़ एक बन्दे है, हम ने इन्ज़ाम किया उन पर और हम ने उन्हें बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बनाया। (59)

और अगर हम चाहते तो तुम में से फ़रिश्ते पैदा करते ज़मीन में, वह तुम्हारे जानशीन होते। (60)

और बेशक वह क़ियामत की एक निशानी है, तो तुम हरगिज़ उस में शक न करो, और मेरी पैरवी करो, यह सीधा रास्ता है। (61)

और शैतान तुम्हें रोक न दे, बेशक वह तुम्हारे लिए खुला दुश्मन है। (62)

और जब ईसा (अ) आए खुली निशानियों के साथ, तो उन्होंने ने कहा: तहकीक़ मैं तुम्हारे पास हिक्मत के साथ आया हूँ, और इस लिए कि मैं तुम्हारे लिए वह वाज़ बातें बयान कर दूँ जिन में तुम इख़तिलाफ़ करते हो, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (63)

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿٥٠﴾ وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ									
फिरऔन	और पुकारा	50	अहद तोड़ गए	नागहां वह	अज़ाव	उन से	हम ने खोला (हटा दिया)	फिर जब	
فِي قَوْمِهِ قَالَ يَقَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ									
नहरें	और यह	मिस्र की बादशाहत	क्या नहीं मेरे लिए	उस ने कहा ऐ मेरी कौम	अपनी कौम	में			
تَجْرِي مِنْ تَحْتِي ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾ أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ									
वह	वह जो	उस से	बेहतर	क्या - बल्कि मैं	51	देखते तुम	तो क्या नहीं	मेरे नीचे से जारी है	
مِهِينٌ ۖ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾ فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ									
सोने के	कंगन	उस पर	डाले गए	तो क्यों न	52	साफ गुफ्तगू करता	और वह मालूम नहीं होता	कम क़द्र	
أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۖ									
तो उन्होंने ने उस की इताअत की	अपनी कौम	पस उस ने बेअ़क़ल कर दिया	53	परा बान्ध कर	फ़रिश्ते	उस के साथ	या आए		
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِقِينَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّا أَسْفُونَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ									
पस हम ने गर्क कर दिया उन्हें	उन से	हम ने इन्तिक़ाम लिया	उन्होंने ने गुस्सा दिलाया हमें	फिर जब	54	नाफ़रमान	लोग	थे	बेशक वह
أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾ فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾ وَلَمَّا ضُرِبَ									
बयान की गई	और जब	56	बाद में आने वाले	पेश रो (गए गुज़रे) और मिसाल (दास्तान)	तो हम ने कर दिया उन्हें	55	सब		
ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُونَ ۖ وَقَالُوا ۚ الْهَٰئِنَا خَيْرٌ									
बेहतर	क्या हमारे माबूद	और वह बोले	57	उस से (खुशी से) चिल्लाने लगते हैं	यकायक तुम्हारी कौम	मिसाल	ईसा इब्ने मरयम		
أَمْ هُوَ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ﴿٥٨﴾ إِنْ هُوَ									
नहीं वह (ईसा अ)	58	झगड़ालू	लोग	बल्कि वह	मगर (सिर्फ़) झगड़ने को	तुम्हारे लिए	नहीं वह बयान करते उस को	या वह	
إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي إِسْرَٰءِيلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوْ نَشَاءُ									
और अगर हम चाहते	59	बनी इस्राईल के लिए	एक मिसाल	और हम ने बनाया उस को	उस पर	हम ने इन्ज़ाम क्या	एक बन्दा	सिर्फ़	
لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلَٰئِكَةً فِي الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ۖ وَآتَاهُ لَعَلُّ									
एक निशानी	और बेशक वह	60	वह (तुम्हारे) जानशीन होते	ज़मीन में	फ़रिश्ते	तुम में से	अलबत्ता हम करते		
لِّلسَّاعَةِ ۚ فَلَا تَمْتَرْنَ بِهَا ۖ وَاتَّبِعُون ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾									
61	सीधा	रास्ता	यह	और मेरी पैरवी करो	उस में	तो हरगिज़ शक न करो तुम	क़ियामत की		
وَلَا يَصُدَّتْكُمْ الشَّيَاطِينُ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٢﴾ وَلَمَّا									
और जब	62	दुश्मन खुला	तुम्हारे लिए	बेशक वह	शैतान	और रोक न दे तुम्हें			
جَاءَ عِيسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ									
और इस लिए कि बयान कर दूँ	हिक्मत के साथ	तहकीक़ मैं आया हूँ तुम्हारे पास	उस ने कहा	खुली निशानियों के साथ	ईसा (अ)	आए			
لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَأَطِيعُوا									
63	और मेरी इताअत करो	सो डरो अल्लाह से	उस में	तुम इख़तिलाफ़ करते हो	वह जो कि	बाज़	तुम्हारे लिए		

٥
١١

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَأَعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٤﴾									
वेशक अल्लाह	वह	मेरा रब	और तुम्हारा रब	सो तुम उस की इबादत करो	यह	रास्ता	सीधा	64	
فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا									
फिर इख़्तिलाफ़ डाल लिया	ग़िरोह (जमा)	आपस में			सो ख़राबी	उन लोगों के लिए	जिन्होंने ने जुल्म किया		
مِنْ عَذَابٍ يَوْمَ الْيَوْمِ ﴿٦٥﴾ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ									
अज़ाब से	दिन दुख देने वाला	65	क्या	वह इन्तिज़ार करते हैं	सिर्फ़	क़ियामत	कि	वह उन पर आ जाए	
بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٦﴾ الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ									
अचानक	और वह	शऊर न रखते हैं		66	तमाम दोस्त	उस दिन	उन के बाज़ (दूसरे)	बाज़ से (एक)	वाज़
عَدُوٍّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ﴿٦٧﴾ يَعْبَادُ لَا خَوْفَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ									
दुश्मन	सिवा	परहेज़गारों	67	ऐ मेरे बन्दो	कोई ख़ौफ़ नहीं	तुम पर	आज	और न तुम	
تَحْزَنُونَ ﴿٦٨﴾ الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٦٩﴾ أُدْخِلُوا									
ग़मगीन होंगे	68	जो ईमान लाए	हमारी आयात पर	और वह थे	मुसलिम (जमा)	69	तुम दाख़िल हो जाओ	तुम	
الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ									
जन्नत	तुम	और तुम्हारी वीवियां	तुम खुश बख़्त किए जाओगे	70	लिए फिरेंगे	उन पर	रिकाबियां		
مِّنْ ذَهَبٍ وَآكَوَابٍ ۖ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ									
सोने की	और आबख़ोरे	और उस में	वह जो चाहेंगे	जी (जमा)	और लज़ज़त होगी				
الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٧١﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا									
आँखों	और तुम	उस में	हमेशा रहोगे	71	और यह	जन्नत	वह जिस	तुम वारिस बनाए गए उस के	
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ									
उस के बदले	जो तुम करते थे		72	तुम्हारे लिए	उस में	मेवे	बहुत		
مِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٣﴾ إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿٧٤﴾									
उस से	तुम खाते हो	73	वेशक	मुज़रिम (जमा)	में	अज़ाब ज़हननम	हमेशा रहेंगे	74	
لَا يُفْتَرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ									
हल्का न किया जाएगा	उन से	और वह उस में		नाउम्मीद पड़े रहेंगे		75	और हम ने जुल्म नहीं किया उन पर		
وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾ وَنَادُوا يَمْلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا									
और लेकिन (बल्कि)	वह थे	वह	ज़ालिम (जमा)	76	और वह पुकारेंगे	ऐ मालिक	अच्छा हो कि मौत का फ़ैसला कर दे हम पर (हमारी)		
رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ مُّكْشُونَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنَاكُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنْ									
तेरा रब	वह कहेगा	वेशक तुम	हमेशा रहने वाले	77	तहकीक़ हम आए तुम्हारे पास	हक़ के साथ	लेकिन		
أَكْثَرُكُمْ لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ﴿٧٨﴾ أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿٧٩﴾									
तुम में से अक़सर	हक़ से-को	नापसंद करने वाले	78	क्या	उन्होंने ने ठहरा ली	कोई बात	तो वेशक हम	79	

वेशक अल्लाह ही मेरा रब और तुम्हारा रब है, सो तुम उस की इबादत करो, यह रास्ता है सीधा। (64)

फिर गिरोहों ने आपस में इखतिलाफ़ डाल लिया, सो उन लोगों के लिए खराबी है जिन्होंने ने जुल्म किया, अज़ाब से दुख देने वाले दिन के। (65)

क्या वह सिर्फ़ क़ियामत का इन्तिज़ार करते हैं कि वह उन पर अचानक आ जाए और वह शऊर (ख़बर भी) न रखते हैं। (66)

परहेज़गारों के सिवा उस दिन तमाम दोस्त एक दूसरे के दुश्मन होंगे। (67)

ऐ मेरे बन्दो! तुम पर कोई ख़ौफ़ नहीं आज के दिन और न तुम ग़मगीन होंगे। (68)

जो लोग हमारी आयात पर ईमान लाए और वह मुसलिम (फ़रमांवरदार) थे। (69)

तुम दाख़िल हो जाओ तुम और तुम्हारी वीवियां जन्नत में, तुम खुश बख़्त किए जाओगे। (70)

उन पर सोने की रिकाबियां और आबख़ोरे लिए फिरेंगे, और उस में (मौजूद होगा) जो (उन के) दिल चाहेंगे और आँखों की लज़ज़त (होगी), और तुम उस में हमेशा रहोगे। (71)

और यह वह जन्नत है जिस के तुम वारिस बनाए गए हो उन (आमाल) के बदले जो तुम करते थे। (72)

तुम्हारे लिए उस में बहुत मेवे हैं, उन में से तुम खाओगे। (73)

वेशक मुज़्रिम ज़हननम के अज़ाब में हमेशा रहेंगे। (74)

उन से हल्का न किया जाएगा, और वह उस में नाउम्मीद पड़े रहेंगे। (75)

और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वही ज़ालिम थे। (76)

और वह पुकारेंगे ऐ मालिक (दारोगाए ज़हननम)! अच्छा हो कि तेरा रब हमारी मौत का फ़ैसला करदे, वह कहेगा: वेशक तुम (इसी हाल में) हमेशा रहने वाले हो। (77)

तहकीक़ हम तुम्हारे पास हक़ के साथ आए, लेकिन तुम में से अक़सर हक़ को नापसंद करने वाले थे। (78)

क्या उन्होंने ने कोई बात ठहरा ली है तो वेशक हम (भी) ठहराने वाले हैं। (79)

क्या वह गुमान करते हैं? कि हम नहीं सुनते उन की पोशीदा बातों और उन की सरगोशियों को, हाँ (क्यों नहीं) हमारे फ़रिश्ते उन के पास लिखते हैं। (80)

आप (स) फ़रमा दें: अगर अल्लाह का कोई बेटा होता तो मैं (उस का) पहला इबादत करने वाला होता। (81)

आस्मानों और ज़मीन का रब, अर्श का रब, उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (82)

पस आप (स) उन को छोड़ दें कि वह बेहूदा बातें करें और खेलें यहां तक कि वह उस दिन को पा लें जिस का उन से वादा किया जाता है। (83)

और वही जो आस्मानों में माबूद है और ज़मीन में माबूद है, और वही हिक्मत वाला, इल्म वाला है। (84)

और बड़ी बरकत वाला और जिस के लिए बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है, और उस के पास है क़ियामत का इल्म, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (85)

और वह जिन को अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वह शफ़ाअत का इख़्तियार नहीं रखते, सिवाए उस के जिस ने गवाही दी हक़ की और वह जानते हैं। (86)

और अगर आप (स) उन से पूछें कि उन्हें किस ने पैदा किया? तो वह ज़रूर कहेंगे “अल्लाह ने” तो वह किधर उलटे फिरे जाते हैं? (87)

क़सम है (रसूल के यह) कहने की कि ऐ मेरे रब! यह लोग ईमान नहीं लाएंगे। (88)

तो आप (स) उन से मुँह फेर लें और सलाम कहें, पस जल्द वह (अनुज्ञाम) जान लेंगे। (89)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

क़सम है वाज़ेह किताब की। (2) वेशक हम ने उसे एक मुबारक रात (लैलतल क़द्र) में नाज़िल किया, वेशक हम ही हैं डराने वाले। (3) उस (रात) में फ़ैसल किया जाता है हर अम्र हिक्मत वाला। (4)

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۚ بَلَىٰ وَرُسُلْنَا لَدَيْهِمْ							
उन के पास	और हमारे फ़रिश्ते	हाँ	और उन की सरगोशियाँ	उन की पोशीदा बातें	हम नहीं सुनते	कि हम	क्या वह गुमान करते हैं
يَكْتُوبُونَ ۚ (٨٠) قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ ۖ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَبْدِينَ (٨١)							
81	इबादत करने वाला	पहला	तो मैं	कोई बेटा	रहमान (अल्लाह का)	अगर होता	80 लिखते हैं
سُبْحَنَ رَبِّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ (٨٢)							
82	वह बयान करते हैं	उस से जो	अर्श का रब	और ज़मीन	आस्मानों का रब	पाक है	
فَذَرَهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ (٨٣)							
83	उन को वादा किया जाता है	वह जिस	उस दिन को	वह पा लें	यहां तक	और खेलें	पस छोड़ दें उन को
وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهُ وَفِي الْأَرْضِ إِلَهُ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ							
हिक्मत वाला	और वही	माबूद	और ज़मीन में	माबूद	आस्मानों में	वह जो	और वही
الْعَلِيمُ (٨٤) وَتَبَرَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ							
और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	उस के लिए	वह जो	और बड़ी बरकत वाला	84 इल्म वाला
وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ (٨٥) وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ							
वह जिन को	और इख़्तियार नहीं रखते	85	तुम लौट कर जाओगे	और उस की तरफ़	क़ियामत का इल्म	और उस के पास	
يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ (٨٦) وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَلَيْكَ							
और वह	हक़ की	जिस ने गवाही दी	सिवाए	शफ़ाअत	उस के सिवा	वह पुकारते हैं	
يَعْلَمُونَ (٨٦) وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَلَيْكَ							
तो किधर	तो वह ज़रूर कहेंगे अल्लाह	पैदा किया उन्हें	किस	आप (स) उन से पूछें	और अगर	86	जानते हैं
يُؤْفَكُونَ (٨٧) وَقِيلَ لَهُ يَرْبِّ إِنَّ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ (٨٨)							
88	ईमान नहीं लाएंगे	लोग	यह	वेशक	ऐ मेरे रब	क़सम उस के कहने की	87 वह उलटे फिरे जाते हैं
فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ (٨٩)							
89	पस जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा	सलाम	और कहें	उन से	तो आप (स) मुँह फेर लें		
آيَاتُهَا ٥٩ ﴿٤٤﴾ سُورَةُ الدَّحَانِ ﴿٤٤﴾ زُكُوعَاتُهَا ٣							
रुकुआत 3 (44) सूरतुद दुखान धुवाँ आयात 59							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
حَمْدٌ (١) وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ (٢) إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ مُبَرَكَةٍ							
एक मुबारक रात	में	वेशक हम ने नाज़िल किया इसे	2	वाज़ेह	क़सम किताब	1	हा-मीम
إِنَّا كُنَّا مُنْذِرِينَ (٣) فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ (٤)							
4	हिक्मत वाला	हर अम्र	फ़ैसल किया जाता है	उस में	3	डराने वाले	वेशक हम हैं

أَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٥﴾ رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ									
हुक्म हो कर	हमारे पास से	वेशक हम हैं	भेजने वाले	5	रहमत	से	तुम्हारा रब		
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦﴾ رَبِّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا									
वेशक वही	सुनने वाला	जानने वाला	6	रब है आस्मानों	और ज़मीन	और जो	उन दोनों के दरमियान		
إِنْ كُنْتُمْ مُّؤَقِّنِينَ ﴿٧﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ									
अगर तुम हो	यकीन करने वाले	7	नहीं कोई माबूद	उस के सिवा	वह जान डालता है और जान निकालता है	तुम्हारा रब	और रब	तुम्हारे बाप दादा	
الْأَوَّلِينَ ﴿٨﴾ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ﴿٩﴾ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ									
पहले	8	बल्कि वह	शक में	खेलते हैं	9	तो तुम इन्तिज़ार करो	उस दिन	आस्मान आए	
بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ﴿١٠﴾ يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١﴾ رَبَّنَا اكْشِفْ									
धुआँ	ज़ाहिर	10	वह ढाँप लेगा	लोगों	यह	अज़ाब दर्दनाक	11	ऐ हमारे रब	खोल (दूर) कर दे
عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾ أَلَيْسَ لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ									
हम से	अज़ाब हम	वेशक हम	ईमान ले आएंगे	12	कहाँ	उन को	नसीहत	और तहकीक आ चुका उन के पास	
رَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ﴿١٤﴾ إِنَّا									
रसूल खोल खोल कर बयान करने वाला	13	फिर	वह फिर गए	उस से	और कहने लगे	सिखाया हुआ	दीवाना	14	वेशक हम
كَاشِفُوا الْعَذَابَ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ﴿١٥﴾ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ									
खोलने वाले	अज़ाब	थोड़ा	तुम वेशक (पिछली) हालत पर लौट आने वाले हो	15	जिस दिन	हम पकड़ेंगे	हम पकड़ेंगे	पकड़	
الْكُبْرَىٰ إِنَّا مُنْتَقِمُونَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ									
बड़ी (सख्त)	वेशक हम	इन्तिकाम लेने वाले	16	और हम आज़मा चुके हैं	इन से कब्ल	कौमे फिरऔन	और आया उन के पास		
رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾ أَنْ أَذْوَا إِلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٨﴾									
एक रसूल	करीम (आली कद्र)	17	कि हवाले कर दो	मेरे	बन्दे अल्लाह के	वेशक मैं तुम्हारे लिए	एक रसूल अमीन	18	
وَأَنْ لَا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ إِنِّي آتِيكُم بِسُلْطَنِ مُّبِينٍ ﴿١٩﴾ وَإِنِّي									
और यह कि	तुम सरकशी न करो	अल्लाह पर (के मुक़ाबिल)	वेशक मैं	आया हूँ तुम्हारे पास	दलील के साथ	वाज़ेह	19	और वेशक मैं	
عُدْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾ وَإِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوا لِي فَاعْتَزِلُونِ ﴿٢١﴾									
पनाह चाहता हूँ	अपने रब की	और तुम्हारा रब	कि तुम मुझे संगसार कर दो	20	और अगर	तुम ईमान नहीं लाते	मुझ पर	तो एक किनारे हो जाओ मुझ से	21
فَدَعَا رَبَّهُ أَنْ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾ فَاسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا									
कि	यह	मुज़्रिम लोग	22	तो तू ले जा मेरे बन्दों को	रात में				
إِنَّكُمْ مُّتَّبِعُونَ ﴿٢٣﴾ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُونَ ﴿٢٤﴾									
वेशक तुम	पीछा किए जाओगे	23	और छोड़ जाओ	दर्या ठहरा हुआ	वेशक वह एक लशकर	एक डूबने वाले	24		
كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٢٥﴾ وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾									
वह कितने (ही) छोड़ गए	से	बागात	और चश्मे	25	और खेतियाँ	और मकान नफीस	26		

हुक्म हो कर हमारे पास से। वेशक हम ही हैं (रसूल) भेजने वाले। (5) रहमत आप (स) के रब की तरफ़ से, वेशक वही है सुनने वाला जानने वाला। (6) रब है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन के दरमियान है, अगर तुम हो यकीन करने वाले। (7) उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही जान डालता है, वही जान निकालता है, और (वही) रब है तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप दादा का। (8) बल्कि वह शक में पड़े खेलते हैं। (9) तो तुम उस दिन का इन्तिज़ार करो कि आस्मान ज़ाहिर धुआँ लाएगा, (10) और ढाँप लेगा (छा जाएगा) लोगों पर, यह है दर्दनाक अज़ाब। (11) (अब वह कहेंगे) ऐ हमारे रब! हम से अज़ाब दूर कर दे, वेशक हम ईमान ले आएंगे। (12) उन को नसीहत कहाँ याद आएगी? उन के पास तो खोल खोल कर बयान करने वाला रसूल आ चुका है। (13) फिर वह उस से फिर गए और कहने लगे: (यह तो) सिखाया हुआ दीवाना है। (14) वेशक हम थोड़ा अज़ाब खोलने वाले हैं (मगर) तुम वेशक फिर बाग़ियाना हालत पर लौट आने वाले हो। (15) जिस दिन हम सख्त पकड़ पकड़ेंगे। वेशक हम इन्तिकाम लेने वाले हैं। (16) और हम उन से पहले कौमे फिरऔन को आज़मा चुके हैं, और उन के पास एक आली कद्र रसूल आया। (17) कि अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो, वेशक मैं तुम्हारे लिए एक रसूल अमीन हूँ। (18) और यह कि तुम अल्लाह के मुक़ाबिल सरकशी न करो, वेशक मैं तुम्हारे पास वाज़ेह दलील के साथ आया हूँ। (19) और वेशक मैं पनाह लेता हूँ अपने रब की और तुम्हारे रब की (उस से) कि तुम मुझे संगसार कर दो। (20) और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझ से एक किनारे हो जाओ। (21) तो उस ने अपने रब से दुआ की कि यह मुज़्रिम लोग हैं। (22) (इरशादे इलाही हुआ) तो तुम मेरे बन्दों को ले जाओ रातों रात, वेशक तुम्हारा पीछा किया जाएगा। (23) और छोड़ जाओ दर्या ठहरा (खुला) हुआ, वेशक वह एक लशकर है डूबने वाले। (24) और वह छोड़ गए कितने ही बागात, और चश्मे, (25) और खेतियाँ, और नफीस मकान, (26)

और नेमतें, जिन में वह मज़े उड़ाते थे। (27)

उसी तरह (हुआ उन का अन्जाम), और हम ने दूसरी कौम को उन का वारिस बनाया। (28)

सो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और वह न हुए ढील दिए गए (लोहों में)। (29)

और तहकीक हम ने बनी इस्राईल को ज़िल्लत वाले अज़ाब से नजात दी, (30) (यानी) फिरऔन से, वेशक वह हद से बढ़ जाने वालों में से सरकश था। (31)

और अलवत्ता हम ने उन्हें तमाम जहान वालों पर दानिस्ता पसंद किया। (32)

और हम ने उन्हें खुली निशानियां दी, जिन में खुली आजमाइश थी। (33)

वेशक यह लोग कहते हैं, (34) यह हमारा मरना तो सिर्फ़ एक ही बार है और हम दोबारा उठाए जाने वाले नहीं। (35)

अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादा को ले आओ। (36)

क्या वह बेहतर है या तुव्वअ की कौम? और जो लोग उन से क़व्ल थे? हम ने उन्हें हलाक किया, वेशक वह मुज़रिम लोग थे। (37)

और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ उन के दरमियान है खेलते हुए (अबस खेल कूद के लिए) नहीं पैदा किया। (38)

हम ने उन्हें नहीं पैदा किया मगर हक़ के साथ, लेकिन उन में से अक्सर नहीं जानते। (39)

वेशक फ़ैसले का दिन (रोज़े कियामत) उन सब का वक़ते मुक़र्रर (मीज़ाद) है। (40)

जिस दिन काम न आएगा कोई साथी कुछ भी किसी साथी के, और न वह मदद किए जाएंगे। (41)

मगर जिस पर अल्लाह ने रहम किया, वेशक वही है ग़ालिब रहम करने वाला। (42)

वेशक थोहर का दरख़्त। (43)

गुनाहगारों का खाना है। (44)

(वह) पेटों में पिघले हुए तांबे की तरह खौलता रहेगा। (45)

जैसे खौलता हुआ गर्म पानी। (46)

उसे पकड़ लो, फिर उसे जहन्नम के बीचों बीच तक खींचो। (47)

फिर उस के सर के ऊपर डालो खौलते हुए पानी के अज़ाब से। (48)

وَنَعْمَةً كَانُوا فِيهَا فَكِهِينَ ﴿٢٧﴾ كَذَلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۖ ﴿٢٨﴾									
और नेमतें	वह थे	उस में	मज़े उड़ाते	27	उसी तरह	और हम ने वारिस बनाया उन का	कौम	दूसरे	28
فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنْظَرِينَ ۖ ﴿٢٩﴾									
सो न रोए	उन पर	आस्मान	और ज़मीन		और न हुए वह	ढील दिए गए	29		
وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿٣٠﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ ۖ									
और तहकीक हम ने नजात दी	बनी इस्राईल	से	अज़ाब ज़िल्लत वाला	30	से	फिरऔन	30		
إِنَّهُ كَانَ عَلِيًّا مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ									
वेशक वह	था	सरकश	हद से बढ़ जाने वालों में से	31	और अलवत्ता हम ने उन्हें पसंद किया	दानिस्ता			
عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾ وَآتَيْنَاهُمْ مِّنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾ إِنَّ هَؤُلَاءِ									
तमाम जहान वालों पर	32	और हम ने उन्हें दी	निशानियां	वह जिन में	आज़माइश	खुली	33	वेशक यह लोग	
لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾ إِنَّ هِيَ إِلَّا مَوْتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِينَ ﴿٣٥﴾									
अलवत्ता कहते हैं	34	नहीं यह	मगर - सिर्फ	हमारा मरना	पहली (एक ही) बार	और हम नहीं	दोबारा उठाए जाने वाले	35	
فَاتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾ أَهْمٌ خَيْرٌ أَمْ قَوْمٌ تُبَعِّ									
तो ले आओ	हमारे बाप दादा	अगर तुम हो	सच्चे	36	क्या वह	बेहतर	या	कौमे तुव्वअ	
وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾ وَمَا									
और जो लोग	उन से क़व्ल	हम ने हलाक किया उन्हें	वेशक वह	थे	मुज़रिम (जमा)	37	और नहीं		
خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لِعِبَنِ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا									
हम ने पैदा किया	आस्मानों	और ज़मीन	और जो उन दोनों के दरमियान	खेलते हुए	38	हम ने नहीं पैदा किया उन्हें	मगर		
بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ									
हक़ के साथ (ठीक तौर पर)	और लेकिन	उन में से अक्सर	नहीं जानते	39	वेशक	फैसले का दिन			
مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلَىٰ عَنْ مَوْلَىٰ شَيْئًا									
उन सब का वक़ते मेक़र्रर	सब	40	जिस दिन	न काम आएगा	कोई साथी	किसी साथी के	कुछ		
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾ إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾									
और न वह	मदद किए जाएंगे	41	मगर	जिस	रहम किया अल्लाह ने	वेशक वह	वह ग़ालिब	रहम करने वाला	42
إِنَّ شَجَرَتَ الرَّقْمِ طَعَامُ الْآثِمِينَ ﴿٤٣﴾ كَالْمُهْلِ يَغْلِي									
वेशक	थोहर का दरख़्त	43	खाना गुनाहगारों का	44	पिघले हुए तांबे की तरह	खौलता है			
فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾ كَغَلِي الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ									
पेटों में	45	जैसे खौलता हुआ	गर्म पानी	46	तुम पकड़ लो उसे	फिर खींचो उसे	तक		
سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِّنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾									
बीचों बीच जहन्नम	47	फिर डालो	पर - ऊपर	उस का सर	से	अज़ाब खौलता हुआ पानी	48		

٢٩
١٢

٢
١٣
١٥

معاذ الله
عند التّأخّر

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾ إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ							
उस में	जो तुम थे	वेशक यह	49	इज्ज़त वाला	ज़ोर आवर	तू	वेशक तू
تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾							
52	और चश्मे	बागात	में	51	अमन का मुकाम	में	वेशक मुत्तकीन (अल्लाह से डरने वाले)
يَلْبَسُونَ مِنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾ كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٤﴾							
और हम जोड़े बना देंगे उन के लिए	इसी तरह	53	एक दूसरे के आमने सामने	और दबीज़ रेशम	बारीक रेशम	से-के	पहने हुए
بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾ يَدْخُلُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُقُونَ							
वह न चखेंगे	55	इत्मीनान से	हर किस्म का मेवा	उस में	वह मांगेंगे	54	खूवरू बड़ी बड़ी आँखों वालियां
فِيهَا الْمَوْتُ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَوَقَّاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾							
56	जहन्नम का अज़ाब	और उस (अल्लाह) ने बचा लिया उन्हें	पहली मौत	सिवाए	मौत	वहाँ	
فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ							
हम ने इसे आसान कर दिया	इस के सिवा नहीं	57	कामयाबी बड़ी	यही	यह	तुम्हारा रब	से-के फज़ल से
بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾							
59	इन्तिज़ार में है	वेशक वह	पस आप (स) इन्तिज़ार करें	58	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	आप (स) की ज़वान में
آيَاتُهَا ٣٧ ﴿٤٥﴾ سُورَةُ الْجَاثِيَةِ ﴿٤٥﴾ رُكُوعَاتُهَا ٤							
रुक़ा़त 4				(45) सूरतुल जासिया गिरी हुई		आयात 37	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
حَمْدٌ ﴿١﴾ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ إِنَّ فِي السَّمُوتِ							
आस्मानों में	वेशक	2	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह (की तरफ़) से	नाज़िल की हुई किताब	1
وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾ وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَابَّةٍ							
जो जानवर	वह फैलाता है	और जो	और तुम्हारी पैदाइश में	3	अहले ईमान के लिए	अलबत्ता निशानियां	और ज़मीन
أَيُّ لَقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٤﴾ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ							
अल्लाह ने उतारा	औत जो	और दिन	रात	और तबदीली	4	यकीन करने वाले लोगों के लिए	निशानियां
مِنَ السَّمَاءِ مِنْ رِزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا							
उस के मरने (खुश्क होने) के बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया	रिज़क	आस्मान से		
وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ أَيُّ لَقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٥﴾ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا							
हम वह पढ़ते हैं	अल्लाह के अहकाम	यह	5	अक़ल (सलीम) वालों के लिए	निशानियां	हवाएं	और गर्दिश
عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَتِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾							
6	वह ईमान लाएंगे	और उसकी आयात	अल्लाह के बाद	वात	पस किस	हक के साथ	आप (स) पर

चख, वेशक ज़ोर आवर, इज्जत वाला है तू। (49)

वेशक यह है वह जिस में तुम शक करते थे। (50)

वेशक मुत्तकी अमन के मुकाम में होंगे। (51)

वागात और चश्मों में। (52)

पहने हुए बारीक और दबीज़ रेशम के कपड़े एक दूसरे के आमने सामने (बैठे होंगे)। (53)

उसी तरह हम खूवरू बड़ी बड़ी आँखों वालियों से उन के जोड़े बना देंगे। (54)

वह मांगेंगे उस में इत्मीनान से हर किस्म का मेवा। (55)

वह पहली मौत के सिवा वहाँ (फिर) मौत का ज़ाइका न चखेंगे, और अल्लाह ने उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा लिया। (56)

तुम्हारे रब का फज़ल, यही है बड़ी कामयाबी। (57)

वेशक हम ने इस (कुरआन) को आसान कर दिया है आप की ज़वान में ताकि वह नसीहत पकड़ें। (58)

पस आप (स) इन्तिज़ार करें, वेशक वह भी मुन्तिज़र है। (59)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

यह नाज़िल की हुई किताब है, ग़ालिब हिकमत वाले अल्लाह की तरफ से। (2)

वेशक आस्मानों और ज़मीन में अलबत्ता अहले ईमान के लिए निशानियां हैं। (3)

और तुम्हारी पैदाइश में और जो जानवर वह फैलाता है, उन में यकीन करने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (4)

और रात दिन की तबदीली में, और उस रिज़क (वारिश) में जो अल्लाह ने आस्मान से उतारा, फिर उस से ज़िन्दा किया ज़मीन को उस के खुश्क होने के बाद और हवाओं की गर्दिश में अक़ले सलीम रखने वालों के लिए निशानियां हैं। (5)

यह अल्लाह के अहकाम हैं जिन्हें हम आप (स) पर हक के साथ (ठीक ठीक) पढ़ते हैं, पस अल्लाह और उस की आयात के बाद वह किस बात पर ईमान लाएंगे? (6)

खराबी है हर झूट बान्धने वाले गुनाहगार के लिए। (7)

वह अल्लाह की आयात को सुनता है जो उस पर पढ़ी जाती है, फिर तकव्वुर करता हुआ अड़ा रहता है गोया कि उस न सुना ही नहीं, पस उसे दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी दो। (8)

और जब वह हमारी आयात के किसी शै से वाकिफ़ होता है तो वह उस को पकड़ता (बनाता है) हँसी मज़ाक़, यही लोग हैं जिन के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब है। (9)

उन के आगे जहन्नम है, और उन के कुछ काम न आएंगे जो उन्होंने ने कमाया और वह न जिन को उन्होंने ने अल्लाह के सिवा कारसाज़ ठहराया, और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। (10)

यह (कुरआन सरासर) हिदायत है, और जिन लोगों ने कुफ़ किया अपने रब की आयात का, उन के लिए दर्दनाक अज़ाब में से एक बड़ा अज़ाब होगा। (11)

अल्लाह वह है जिस ने तुम्हारे लिए दर्या को सुसख्खुर किया ताकि चलें उस में उस के हुक्म से कश्तियां, और ताकि उस के फ़ज़ल से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (12)

और उस ने तुम्हारे लिए अपने हुक्म से सुसख्खुर किया सब को जो आस्मानों में और ज़मीन में हैं, वेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13)

आप (स) उन लोगों को फ़रमा दें जो ईमान लाए कि वह उन लोगों से दरगुज़र करें जो अल्लाह के अय्याम (जज़ाए आमाल) की उम्मीद नहीं रखते ताकि अल्लाह उन लोगों को बदला दे उन के आमाल का। (14)

जिस ने नेक अमल किया अपनी ज़ात के लिए (किया) और जिस ने बुरा किया तो (उस का बवाल) उसी पर (होगा), फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। (15)

और तहकीक़ हम ने बनी इस्राईल को किताब (तौरेत) और हकूमत और नुबूवत दी और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ें अता कीं, और हम ने उन्हें जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी। (16)

और हम ने उन्हें दीन के बारे में वाज़ेह निशानियां दीं तो उन्होंने ने इख़तिलाफ़ न किया मगर उस के बाद कि जब उन के पास इल्म आ गया आपस की ज़िद की वजह से, वेशक तुम्हारा रब उन के दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा कियामत के दिन जिस में वह इख़तिलाफ़ करते थे। (17)

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٧﴾ يَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ تُثْلَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا									
तकव्वुर करता हुआ	फिर अड़ा रहता है	पढ़ी जाती है उस पर	अल्लाह की आयात	वह सुनता है	7	गुनाहगार	हर झूट बान्धने वाले के लिए	खराबी	
كَانَ لَمْ يَسْمَعْهَا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٨﴾ وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا									
किसी शै	हमारी आयात में से	और जब वह वाकिफ़ हो	8	दर्दनाक अज़ाब की	पस उसे खुशखबरी दो	उस ने नहीं सुना उसे	गोया कि		
اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٩﴾ مِنْ وَرَائِهِمْ جَهَنَّمُ									
जहन्नम	उन की दूसरी तरफ़ (आगे)	9	अज़ाब रुस्वा करने वाला	उन के लिए	यही लोग	हँसी मज़ाक़	वह उस को पकड़ता है		
وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ مَا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ									
कारसाज़	अल्लाह के सिवा	और न जो उन्होंने ने ठहराया	कुछ	जो उन्होंने ने कमाया	और न काम आएगा उन के				
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠﴾ هَٰذَا هُدًى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ									
उन के लिए	अपना रब	आयात को	और जिन लोगों ने कुफ़ किया (न माना)	यह (कुरआन) हिदायत	10	बड़ा अज़ाब	और उन के लिए		
عَذَابٌ مِّن رَّجْزِ أَلِيمٍ ﴿١١﴾ اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لَتَجْرَىٰ الْفُلُكُ									
कश्तियां	ताकि चलें	दर्या	तुम्हारे लिए	सुसख्खुर किया	अल्लाह वह जिस	11	दर्दनाक अज़ाब	से एक अज़ाब	
فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُم مَّا									
जो	और उस ने सुसख्खुर किया तुम्हारे लिए	12	शुक्र करो	और ताकि तुम	उस के फ़ज़ल से	और कि तुम तलाश करो	उस के हुक्म से	उस में	
فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ									
निशानियां	उस में	वेशक	अपने हुक्म से	सब	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में		
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾ قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ									
उम्मीद नहीं रखते	उन लोगों से जो	दरगुज़र करें	ईमान लाए	उन लोगों को जो	फ़रमा दें	13	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए	
آيَامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾ مِّنْ عَمَلٍ صَالِحًا									
अमल किया नेक	जिस	14	वह कमाते थे (आमाल)	उस का जो	उन लोगों को	ताकि वह बदला दे	अल्लाह के अय्याम		
فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلِيَهَا ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا									
और तहकीक़ हम ने दी	15	तुम लौटाए जाओगे	तुम अपने रब की तरफ़	फिर	तो उस पर	बुरा किया	और जिस	तो अपनी ज़ात के लिए	
بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ									
पाकीज़ा चीज़ें	और हम ने अता कीं उन्हें	और नबूवत	और हुक्म	किताब	बनी इस्राईल				
وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ وَآتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا									
तो उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया	अमर से (दीन के बारे में)	वाज़ेह निशानियां	और हम ने उन्हें दी	16	जहान वालों पर	और हम ने फ़ज़ीलत दी उन्हें			
إِلَّا مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۚ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ									
वेशक तुम्हारा रब	आपस की	ज़िद से	इल्म	जब आ गया उन के पास	उस के बाद	मगर			
يَقْضَىٰ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٧﴾									
17	इख़तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	उस में	कियामत के दिन	उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा		

۱۲

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ							
ख़ाहिशात	और न पैरवी करें	तो आप (स) उस की पैरवी करें	दीन से - के	शरीअत (ख़ास तरीका) पर	हम ने कर दिया आप को	फिर	
الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨﴾ إِنَّهُمْ لَن يُغْنُوا عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا							
कुछ	अल्लाह से (के सामने)	आप (स) के	हरगिज़ काम न आएंगे	वेशक वह	18	इल्म नहीं रखते	उन लोगों की जो
وَأَنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩﴾							
19	परहेज़गारों	रफ़ीक	और अल्लाह	वाज़ (दूसरे)	रफ़ीक (जमा)	उन में से वाज़ (एक)	ज़ालिम (जमा) और वेशक
هَذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٢٠﴾							
20	यकीन रखने वाले लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	लोगों के लिए	दानाई की बातें	यह	
أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا							
ईमान लाए	उन लोगों की तरह जो	कि हम कर देंगे उन्हें	बुराइयां	कमाई (की)	वह जिन्होंने ने	क्या गुमान करते हैं	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءٌ مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٢١﴾							
21	जो वह हुक्म लगाते हैं	बुरा	और उन का मरना	उन का जीना	बराबर	और उन्होंने ने अमल किए अच्छे	
وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ							
उस का जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख्स	और ताकि बदला दिया जाए	हक (हिक्मत) के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	और पैदा किया अल्लाह ने	
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٢﴾ أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ							
और गुमराह कर दिया उसे अल्लाह	अपनी ख़ाहिश	अपना माबूद	बना लिया	जो - जिस	क्या तुम ने देखा	22	ज़ुल्म न किए जाएंगे और वह
عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غِشَاوَةً فَمَنْ							
तो कौन	पर्दा	उस की आँख पर	और कर दिया (डाल दिया)	और उस का दिल	उस के कान	और उस ने मुहर लगा दी	इल्म पर (के बावजूद)
يَهْدِيهِ مِنْ بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا							
हमारी ज़िन्दगी	सिर्फ	नहीं यह	और उन्होंने ने कहा	23	तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?	अल्लाह के बाद	उसे हिदायत देगा
الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُمْ بِذَلِكَ							
उस का	उन्हें	और नहीं	ज़माना	मगर - सिर्फ	और नहीं हलाक करता हमें	और हम जीते हैं	हम मरते हैं दुनिया
مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٤﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا							
वाज़ेह	हमारी आयात	पढ़ी जाती है उन पर	और जब	24	अटकल दौड़ाते हैं	मगर - सिर्फ	वह नहीं से - कोई इल्म
مَا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا اتُّشُوا بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ							
अगर तुम हो	हमारे बाप दादा को	तुम ले आओ	वह कहते हैं	सिवा यह कि	उन की हुज्जत	नहीं होती	
صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ							
तरफ	वह फिर तुम्हें जमा करेगा	वह फिर तुम्हें मौत देगा	अल्लाह तुम्हें ज़िन्दगी देता है	फरमा दें	25	सच्चे	
يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾							
26	जानते नहीं	अक्सर लोग	और लेकिन	उस में	कोई शक नहीं	क़ियामत का दिन	

फिर हम ने आप (स) को दीन के एक ख़ास तरीके पर कर दिया तो आप (स) उस की पैरवी करें, और जो लोग इल्म नहीं रखते उन की ख़ाहिशात की पैरवी न करें। (18) वेशक वह अल्लाह के सामने आप के काम न आएंगे कुछ भी और वेशक ज़ालिम एक दूसरे के रफ़ीक हैं, और अल्लाह परहेज़गारों का रफ़ीक है। (19) यह लोगों के लिए दानाई की बातें हैं, और हिदायत ओ रहमत यकीन रखने वाले लोगों के लिए। (20) क्या वह लोग यह गुमान करते हैं जिन्होंने ने बुराइयां की कि हम उन्हें उन लोगों की तरह कर देंगे जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए ताकि बराबर (हो जाए) उन का जीना और मरना, बुरा है जो वह हुक्म लगाते हैं। (21) और अल्लाह ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया हिक्मत के साथ और ताकि हर शख्स को उस के आमाल का बदला दिया जाए और उन पर ज़ुल्म न किया जाए। (22) क्या तुम ने उस शख्स को देखा जिस ने बना लिया अपनी ख़ाहिशों को अपना माबूद, और अल्लाह ने इल्म के बावजूद उसे गुमराह कर दिया, और मुहर लगा दी उस के कान और उस के दिल पर, और डाल दिया उस की आँख पर पर्दा, तो कौन अल्लाह के बाद उसे हिदायत देगा, तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (23) और उन्होंने ने कहा कि यह (ज़िन्दगी और कुछ) नहीं सिर्फ हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते हैं और हम जीते हैं, और हमें सिर्फ ज़माना हलाक कर देता है, और उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ अटकल दौड़ाते हैं। (24) और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती है तो उन की हुज्जत (दलील) नहीं होती इस के सिवा कि वह कहते हैं: हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (25) आप फ़रमा दें: अल्लाह (ही) तुम्हें ज़िन्दगी देता है (वही) फिर तुम्हें मौत देगा फिर (वही) तुम्हें क़ियामत के दिन जमा करेगा, जिस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (26)

और अल्लाह (ही) के लिए है वादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और जिस दिन क़ियामत काइम (बपा) होगी उस दिन बातिल परस्त ख़सारा पाएंगे। (27)

और तुम हर उम्मत को घुटनों के बल गिरी हुई देखोगे, हर उम्मत अपने नामाए आमाल की तरफ़ पुकारी जाएगी, आज तुम्हें बदला दिया जाएगा उस का जो तुम करते थे। (28)

यह हमारी तहरीर है जो तुम्हारे बारे में हक़ के साथ बोलती है, वेशक़ हम लिखाते थे जो तुम करते थे। (29)

पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए तो उन्हें उन का रब अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, यही है खुनी कामयाबी। (30)

और वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (उन्हें कहा जाएगा) सो क्या तुम पर मेरी आयात न पढ़ी जाती थी? तो तुम ने तकव्वुर किया और तुम मुज़्रिम लोग थे। (31)

और जब (तुम से) कहा जाता था कि वेशक़ अल्लाह का वादा सच है और क़ियामत में कोई शक़ नहीं, तो तुम ने कहा: हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है! हम तो बस एक गुमान सा रखते हैं, और हम नहीं हैं यक़ीन करने वाले। (32)

और उन पर उन के आमाल की बुराइयां खुल गईं और उन्हें उस (अज़ाब ने) घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (33)

और कहा जाएगा: हम ने तुम्हें भुला दिया है जैसे तुम ने इस दिन के मिलने को भुला दिया था, और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारा कोई मददगार नहीं। (34)

यह इस लिए है कि तुम ने बना लिया था अल्लाह की आयात को एक मज़ाक़, और तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दे रखा था, सो वह आज उस से न निकाले जाएंगे और न उन्हें (अल्लाह की) रज़ा मन्दी हासिल करने का मौक़ा दिया जाएगा। (35)

पस तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो रब है आस्मानों का और रब है ज़मीन का, और रब है तमाम ज़हानों का। (36)

और उसी के लिए है किवरियाई (बड़ाई) आस्मानों में और ज़मीन में, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (37)

وَاللّٰهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُحْصٰى لِكُلِّ اُمَّةٍ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ							
ख़सारा पाएंगे	उस दिन	क़ियामत	काइम होगी	और जिस दिन	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए वादशाहत
وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جٰثِيَةً ۚ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰى اِلٰى كِتٰبِهَا ۚ							
अपनी किताब (नामाए आमाल) की तरफ़	पुकारी जाएगी	उम्मत	हर	घुटनों के बल गिरी हुई	हर उम्मत	और तुम देखोगे	27 वातिल परस्त
اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۚ هٰذَا كِتٰبُنَا عَلَيْكُمْ							
तुम पर (तुम्हारे बारे में)	बोलती है	यह हमारी किताब (तहरीर)	28	तुम करते थे	जो	तुम्हें बदला दिया जाएगा	आज
بِالْحَقِّ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا							
ईमान लाए	पस जो	29	तुम करते थे	जो	लिखाते थे	वेशक हम	हक के साथ
وَعَمِلُوْا الصّٰلِحٰتِ فَيَدْخُلُوْهُمْ رَبُّهُمْ فِى رَحْمَتِهٖ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ							
कामयाबी	वह (यही)	यह	अपनी रहमत में	उन का रब	तो वह दाखिल करेगा उन्हें	और उन्होंने ने अमल किए नेक	
اَلْمُبِيْنُ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۖ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰتٰى تَشٰى عَلَيْكُمْ							
तुम पर	पढ़ी जाती	मेरी आयात	सो क्या न थी	कुफ़ किया	और वह लोग जिन्होंने ने	30	खुली
فَاَسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۚ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ							
अल्लाह का वादा	कहा जाता था वेशक	और जब	31	मुज़्रिम (जमा)	लोग	और तुम थे	तो तुम ने तकव्वुर किया
حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا فَلْتُم مَّا نَدْرٰى مَا السَّاعَةُ ۚ							
क्या है क़ियामत	हम नहीं जानते	तुम ने कहा	उस में	कोई शक नहीं	और क़ियामत	सच	
اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُستَيْقِيْنِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ سَيّٰتُ							
बुराइयां	उन पर	और खुल गईं	32	यक़ीन करने वाले	हम	और नहीं	अटकल मगर - सिर्फ़ नहीं हम गुमान करते
مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۚ وَقِيْلَ اَلْيَوْمَ							
आज	और कहा जाएगा	33	वह मज़ाक़ उड़ाते	उस का	जिस का वह थे	उन्हें	और जो उन्होंने ने किया (आमाल)
نَنْسِكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاوِكُمْ النَّارُ وَمَا لَكُمْ							
और नहीं तुम्हारे लिए	जहन्नम	और तुम्हारा ठिकाना	इस	अपना दिन	मिलना	तुम ने भुला दिया	हम ने भुला दिया तुम्हें
مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۚ ذٰلِكُمْ بِاَنكُم اِتَّخَذْتُمْ اٰيَةَ اللّٰهِ هُزُوًا وَعَرَّيْتُمْ							
और फ़रेब दिया तुम्हें	एक मज़ाक़	अल्लाह की आयात	तुम ने बना लिया	इस लिए कि तुम	यह	34	कोई मददगार (जमा)
اَلْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۚ فَاَلْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ							
35	रज़ा मन्दी हासिल करने का मौक़ा दिया जाएगा	और न उन्हें	उस से	वह न निकाले जाएंगे	सो आज	दुनिया की ज़िन्दगी	
فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ							
36	तमाम जहानों का रब	और ज़मीन का रब	आस्मानों का रब	पस अल्लाह के लिए तमाम तारीफ़ें			
وَلَهُ الْكِبْرِيّٰءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ							
37	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	किबरियाई	और उस के लिए

आयَاتُهَا ३५ ﴿ ٤٦ ﴾ سُورَةُ الْأَحْقَافِ ﴿ ٤٦ ﴾ زُكُوعَاتُهَا ٤						
रुकुआत 4		(46) सूरतुल अहक़ाफ़ रेगिस्तान			आयात 35	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
حَم ﴿ ١ ﴾ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿ ٢ ﴾						
हा-मीम	1	नाज़िल करना	किताब	अल्लाह से	ग़ालिब	हिक्मत वाला
2						
مَا خَلَقْنَا السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ						
हक के साथ	मगर	और जो उन दोनों के दरमियान		और ज़मीन	आस्मानों	नहीं पैदा किया हम ने
وَأَجَلٍ مُّسَمًّى وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنذِرُوا مُّعْرِضُونَ ﴿ ٣ ﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ						
भला तुम देखो	फ़रमा दें	3	रूगर्दानी करने वाले	वह डराए जाते हैं	जिस से	और जिन लोगों ने कुफ़ किया
مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ						
जिन को तुम पुकारते हो		अल्लाह के सिवा		दिखाओ मुझे तुम	क्या	उन्होंने पैदा किया
أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمُوتِ ائْتُونِي بِكِتَابٍ مِّن قَبْلِ هَذَا أَوْ						
या	उन के लिए	कुछ साझा	आस्मानों में	ले आओ मेरे पास	कोई किताब	से पहले
इस	या	इस	या	इस	या	या
أَثَرَةٍ مِّن عِلْمٍ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿ ٤ ﴾ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا						
आसार	इलम से-की	अगर	तुम हो	सच्चे	4	और कौन
उस से जो वह पुकारता है	बड़ा गुमराह	और कौन				
مِّن دُونِ اللَّهِ مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ وَهُمْ عَنِ						
अल्लाह के सिवा		जो	जवाब न देगा	उस को	तक	क़ियामत का दिन
دُعَائِهِمْ غَفُلُونَ ﴿ ٥ ﴾ وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً						
उन का पुकारना	उन्हें है	वेख़बर	5	और जब	जमा किए जाएंगे लोग	वह होंगे
उन के	उन का	उन के	दुश्मन			
وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ﴿ ٦ ﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا						
और वह होंगे	उन की इबादत से	मुनकिर (जमा)	6	और जब	पढ़ी जाती है उन पर	हमारी आयात
वाज़ेह						
قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿ ٧ ﴾						
कहते हैं वह	जिन लोगों ने इन्कार किया	हक का	जब	उन के पास आ गया वह	यह जादू	खुला
7						
أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ						
क्या	वह कहते हैं	उस ने खुद बना लिया है इसे	फ़रमा दें	अगर	मैं ने खुद बना लिया है इसे	तो तुम इख़्तियार नहीं रखते
لِيَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ كَفَىٰ بِهِ						
मेरे लिए	अल्लाह से	कुछ भी	वह खूब जानता है	वह जो	तुम बातें बनाते हो	इस में
वह काफी है इस का						
شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿ ٨ ﴾						
गवाह	मेरे दरमियान	और तुम्हारे दरमियान	और वह	बख़्शने वाला	रहम करने वाला	8

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
हा-मीम। (1)						
किताब का नाज़िल करना ग़ालिब, हिक्मत वाले अल्लाह (की तरफ़) से है। (2)						
हम ने नहीं पैदा किया है आस्मानों और ज़मीन को और जो उन दोनों के दरमियान है मगर हक़ के साथ और एक मुक़र्ररा मीआद (के लिए) और जिन लोगों ने कुफ़ किया जिस से वह डराए जाते हैं (उस से) रूगर्दानी करने वाले हैं। (3)						
आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो (सोचो) तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन से क्या पैदा किया? या उन के लिए आस्मानों में कुछ साझा है? ले आओ मेरे पास इस से पहले की कोई किताब या कोई इल्मी आसार (निशानात) अगर तुम सच्चे हो। (4)						
और उस से बड़ा गुमराह कौन है? जो अल्लाह के सिवा उस को पुकारता है जो उसे जवाब न देगा क़ियामत के दिन तक, और वह उन के पुकारने से (भी) वेख़बर हैं। (5)						
और जब लोग (मैदाने हश्र) में जमा किए जाएंगे वह उन के दुश्मन होंगे और वह उन की इबादत के मुनकिर होंगे। (6)						
और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती है तो वह कहते हैं जिन्होंने ने इन्कार किया हक़ के बारे में जब कि वह उन के पास आ गया: यह खुला जादू है। (7)						
क्या वह कहते हैं कि उस ने इसे खुद बना लिया है, आप (स) फ़रमा दें: अगर मैं ने इसे खुद बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह से (वचाने का) कुछ भी इख़्तियार नहीं रखते, वह खूब जानता है जो तुम इस (के बारे) में बातें बनाते हो, वह काफी है इस का गवाह मेरे और तुम्हारे दरमियान, और वह है बख़्शने वाला, रहम करने वाला। (8)						

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

किताब का नाज़िल करना ग़ालिब, हिक्मत वाले अल्लाह (की तरफ़) से है। (2)

हम ने नहीं पैदा किया है आस्मानों और ज़मीन को और जो उन दोनों के दरमियान है मगर हक के साथ और एक मुक़र्ररा मीआद (के लिए) और जिन लोगों ने कुफ़ किया जिस से वह डराए जाते हैं (उस से) रूगर्दानी करने वाले हैं। (3)

आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो (सोचो) तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो मुझे दिखाओ कि उन्होंने ने ज़मीन से क्या पैदा किया? या उन के लिए आस्मानों में कुछ साझा है? ले आओ मेरे पास इस से पहले की कोई किताब या कोई इल्मी आसार (निशानात) अगर तुम सच्चे हो। (4)

और उस से बड़ा गुमराह कौन है? जो अल्लाह के सिवा उस को पुकारता है जो उसे जवाब न देगा क़ियामत के दिन तक, और वह उन के पुकारने से (भी) वेख़बर हैं। (5)

और जब लोग (मैदाने हशर) में जमा किए जाएंगे वह उन के दुश्मन होंगे और वह उन की इबादत के मुनकिर होंगे। (6)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती है तो वह कहते हैं जिन्होंने ने इन्कार किया हक के बारे में जब कि वह उन के पास आ गया: यह खुला जादू है। (7)

क्या वह कहते हैं कि उस ने इसे खुद बना लिया है, आप (स) फ़रमा दें: अगर मैं ने इसे खुद बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह से (बचाने का) कुछ भी इख़्तियार नहीं रखते, वह खूब जानता है जो तुम इस (के बारे) में बातें बनाते हो, वह काफी है इस का गवाह मेरे और तुम्हारे दरमियान, और वह है बख़्शने वाला, रहम करने वाला। (8)

आप (स) फ़रमा दें कि मैं रसूलों में नया नहीं हूँ, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा, मैं सिर्फ़ उस की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, और मैं सिर्फ़ साफ़ साफ़ डर सुनाने वाला हूँ। (9)

आप (स) फ़रमा दें: भला तुम देखो तो अगर (यह कुरआन) अल्लाह के पास से है, और तुम ने इस का इन्कार किया, और गवाही दी एक गवाह ने बनी इस्राईल में से उस जैसी किताब पर, और वह ईमान ले आया, और तुम ने तकब्बुर किया (तुम अड़े रहे), वेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (10)

और काफ़िरों ने मोमिनों के लिए (के बारे में) कहा: अगर (यह) बेहतर होता तो वह इस की तरफ़ हम पर पहल न करते, और जब उन्होंने ने इस से हिदायत न पाई तो अब कहेंगे: यह पुराना झूट है। (11)

और इस से पहले मूसा (अ) की किताब (तौरेत) थी रहनुमा और रहमत, और है यह किताब (उस की) तस्दीक करने वाली अरबी ज़बान में ताकि ज़ालिमों को डराए, और खुशख़बरी है नेकोकारों के लिए। (12)

वेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वह (उस पर) काइम रहे, तो कोई ख़ौफ़ नहीं उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (13)

यही लोग अहले जन्नत हैं, हमेशा उस में रहेंगे, (यह) उन की जज़ा है जो वह अमल करते थे। (14)

और हम ने इन्सान को माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया, उस की माँ उसे तकलीफ़ के साथ (पेट में) उठाए रही और उस ने उसे तकलीफ़ के साथ जना, और उस का हमल और उस का दूध छुड़ाना 30 महीने में (हुआ) यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुँचा और हुआ चालीस (40) साल का तो उस ने अर्ज़ की: ऐ मेरे रब! मुझे तौफीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र करूँ जो तू ने मुझ पर इन्शाम फ़रमाई और मेरे माँ बाप पर, और यह कि मैं नेक अमल करूँ जिसे तू पसंद करे, और मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाह कर दे (नेक बना दे), वेशक मैं ने तेरी तरफ़ (तेरे हुज़ूर) तौबा की और वेशक मैं फ़रमांबरदारों में से हूँ। (15)

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرَىٰ مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۚ									
और न तुम्हारे साथ	मेरे साथ	क्या किया जाएगा	और नहीं जानता मैं	रसूलों में से	नया	नहीं हूँ मैं	फरमा दें		
إِنِ اتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ									
भला तुम देखो तो	फरमा दें	9	डर सुनाने वाला साफ़ साफ़	मगर-सिर्फ़	और नहीं हूँ मैं	मेरी तरफ़	जो वहि किया जाता है	सिवाए-सिर्फ़	नहीं पैरवी करता
إِن كَانَ مِّنْ عِندِ اللَّهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ									
से	एक गवाह	और गवाही दी	इस का	और तुम ने इन्कार किया	अल्लाह के पास से	है	अगर		
بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَأَمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ									
लोग	हिदायत नहीं देता	वेशक अल्लाह	और तुम ने तकब्बुर किया	फिर वह ईमान ले आया	इस जैसी (एक किताब) पर	बनी इस्राईल			
الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا									
बेहतर	अगर होता	उन के लिए जो ईमान लाए (मोमिन)	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा	10	ज़ालिम (जमा)			
مَا سَبَقُونَا إِلَيْهِ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ﴿١١﴾									
11	पुराना	झूट	यह तो अब कहेंगे	इस से	न हिदायत पाई उन्होंने ने	और जब	इस की तरफ़	न वह पहल करते हम पर	
وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ									
तस्दीक करने वाली	किताब	और यह	और रहमत	रहनुमा-इमाम	मूसा (अ)	किताब	और इस से पहले		
لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ﴿١٢﴾ إِنَّ									
वेशक	12	नेकोकारों के लिए	और खुशख़बरी	उन लोगों को जिन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)	ताकि वह डराए	अरबी	ज़बान		
الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ									
और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	वह काइम रहे	फिर	हमारा रब अल्लाह	जिन लोगों ने कहा			
يَحْزَنُونَ ﴿١٣﴾ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ جَزَاءٌ بِمَا									
उस की जो	जज़ा	उस में	हमेशा रहेंगे	अहले जन्नत	यही लोग	13	ग़मगीन होंगे		
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ									
उस की माँ	वह उस को उठाए रही	हुस्ने सुलूक का	माँ बाप के साथ	इन्सान	और हम ने हुक्म दिया	14	वह अमल करते थे		
كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمَلُهُ وَفِطْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ									
वह पहुँचा	जब	यहां तक	तीस (30) महीने	और उस का दूध छुड़ाना	और उस का हमल	और उस ने उस को जना तकलीफ़ के साथ	तकलीफ़ के साथ		
أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۚ قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ									
तेरी नेमत	कि मैं शुक्र करूँ	तौफीक़ दे मुझे	ऐ मेरे रब	उस ने अर्ज़ की	साल	चालीस (40)	और वह पहुँचा (हुआ)	अपने ज़ोर (जवानी) को	
الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ									
तू पसंद करे उसे	नेक अमल	और यह कि मैं अमल करूँ	और मेरे माँ बाप पर	तू ने इन्शाम फ़रमाई मुझ पर	वह जो				
وَأَصْلَحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۚ إِنَّيْ تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٥﴾									
15	मुसलमानों (फरमांबरदारों)	से	और वेशक मैं	तेरी तरफ़	वेशक मैं ने तौबा की	मेरी औलाद में	मेरे लिए	और इस्लाह कर दे	

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ									
उन की बुराइयां	से	और हम दरगुज़र करते हैं	उन्होंने ने किए	जो	बेहतरीन (अमल)	उन से	हम कुबूल करते हैं	वह जो कि	यही लोग
فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ وَعَدَ الصّٰدِقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾ وَالَّذِي									
और वह जिस	16	उन्हें वादा दिया जाता था	वह जो	सच्चा वादा	अहले जन्नत	में			
قَالَ لِوَالِدَيْهِ أَفِ لَكُمْ أَنَا أُخْرِجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ									
(बहुत से) गिरोह	हालांकि गुज़र चुके	मैं निकाला जाऊँगा	क्या तुम मुझे वादा (ख़बर) देते हो	तुम्हारे लिए - पर	तुफ़	अपने माँ बाप के लिए	उस ने कहा		
مِنْ قَبْلِيَّ وَهُمَا يَسْتَغِيثَنَّ اللَّهُ وَيْلَكَ أَمِنْ ۖ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ									
सच्चा	अल्लाह का वादा	वेशक	तू ईमान ले आ	तेरा बुरा हो	फर्याद करते हैं अल्लाह से	और वह दोनों	मुझ से पहले		
فَيَقُولُ مَا هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ									
उन पर	साबित हो गई	वह जो	यही लोग	17	पहलों	कहानियां	मगर - सिर्फ़	यह	तो वह कहता है
الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ									
वेशक वह	जिन्नत और इन्सान (जमा)	से	इन से कबूल	गुज़र चुकी	उम्मतों में	वात (अज़ाब)			
كَانُوا خٰسِرِينَ ﴿١٨﴾ وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِّمَّا عَمِلُوا وَلِيُوفِّيَهُمْ أَعْمَالُهُمْ									
उन के आमाल	और ताकि वह पूरा दे उन को	उस से जो उन्होंने ने किया	दरजे	और हर एक के लिए	18	ख़सारा पाने वाले	थे		
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ									
आग के सामने	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	लाए जाएंगे	और जिस दिन	19	उन पर न जुल्म किया जाएगा	और वह - उन			
أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَتَكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۖ فَالْيَوْمَ									
पस आज	उन का	और तुम फ़ाइदा उठा चुके	अपनी दुनिया की ज़िन्दगी	में	अपनी नेमतें	तुम ले गए (हासिल कर चुके)			
تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ									
तुम तकब्वुर करते थे			इस लिए कि	रुस्वाई का अज़ाब			नहीं बदला दिया जाएगा		
فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾ وَادْكُرْ									
और याद कर	20	तुम नाफ़रमानियां करते थे	और इस लिए कि	नाहक			ज़मीन में		
أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ									
डराने वाले	और गुज़र चुके	अहकाफ़ में	अपनी क़ौम	उस ने डराया	जब	आद के भाई			
مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۚ إِنِّي أَخَافُ									
वेशक मैं डरता हूँ	अल्लाह के सिवा	कि तुम इबादत न करो	और उस के बाद			उस से पहले			
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٢١﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَأْفِكَنَا									
क्या तू हमारे पास आया कि तू फेर दे हमें	वह बोले	21	एक बड़ा दिन			अज़ाब	तुम पर		
عَنِ الْهَيْئَةِ ۚ فَاتِنَا بِمَا تَعِدُنَا ۖ إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٢٢﴾									
22	सच्चे (जमा)	से	तू है	अगर	जो कुछ तू वादा करता है हम से	पस ले आ हम पर	हमारे माबूद	से	

यही वह लोग हैं जिन के बेहतरीन अमल हम कुबूल करते हैं जो उन्होंने ने किए और हम उन की बुराइयों से दरगुज़र करते हैं, (यह) अहले जन्नत में से (होंगे), सच्चा वादा है जो उन्हें वादा दिया जाता था। (16) और जिस ने अपने माँ बाप के लिए कहा: तुम पर तुफ! क्या तुम मुझे यह ख़बर देते हो कि मैं (रोज़े हशर) निकाला जाऊँगा, हालांकि बहुत से गिरोह गुज़र चुके हैं मुझ से पहले, और वह दोनों अल्लाह से फ़र्याद करते हैं (और उस को कहते हैं): तेरा बुरा हो, तू ईमान ले आ, वेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तो वह कहता है कि यह तो सिर्फ़ पहलों (अगलों) की कहानियां हैं। (17) यही लोग हैं जिन पर अज़ाब की बात साबित हो गई (उन) उम्मतों में जो इन से कबल गुज़र चुकी जिन्नात में से और इन्सानों में से, वेशक वह ख़सारा पाने वालों में से थे। (18) और हर एक के लिए दरजे हैं, उस (के मुताबिक) जो उन्होंने ने किया ताकि वह उन को उन के आमाल का पूरा (बदला) दे, और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (19) और जिस दिन लाए जाएंगे काफ़िर आग के सामने (उन से कहा जाएगा): तुम अपनी नेमतें अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में हासिल कर चुके हो और उन का फ़ाइदा (भी) उठा चुके हो, पस आज तुम्हें रुस्वाई के अज़ाब का बदला दिया जाएगा, इस लिए कि तुम ज़मीन में नाहक तकव्वुर करते थे, और इस लिए कि तुम नाफ़रमानियां करते थे। (20) और कौमे आद के भाई (हूद) को याद कर, जब उस ने अपनी कौम को (सर ज़मीने) अहकाफ़ में डराया, और गुज़र चुके हैं डराने वाले (नबी) उस से पहले और उस के बाद (भी) कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, वेशक मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से। (21) वह बोले: क्या तू हमारे पास इस लिए आया कि हमें हमारे माबूदों से फेर दे, पस तू जो कुछ हम से वादा करता है हम पर ले आ अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (22)

उस ने कहा: इस के सिवा नहीं कि इल्म अल्लाह के पास है और मैं जिस (पैग़ाम) के साथ भेजा गया हूँ वह तुम्हें पहुँचाता हूँ, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग जहालत करते हो। (23)

फिर जब उन्होंने ने उस को देखा कि एक अब्र उन की वादियों की तरफ़ चला आ रहा है, तो वह बोले: यह हम पर वारिश बरसाने वाला बादल है, (नहीं) बल्कि यह वह है जिस की तुम जल्दी करते थे, एक आन्धी जिस में दर्दनाक अज़ाब है। (24)

वह तहस नहस कर देगी हर शै को अपने रब के हुक्म से, पस (उन का यह हाल होगया कि) उन के मकानों के सिवा कुछ न दिखाई देता था, इसी तरह हम मुज़्रिम लोगों को बदला दिया करते हैं। (25)

और हम ने उन्हें उन (बातों) में इस क़द्र कुदरत दी थी कि तुम्हें उस पर उस क़द्र कुदरत नहीं दी, और हम ने उन को दिए कान और आँखें और दिल, पस न उन के कान और न उन की आँखें और न उन के दिल उन के कुछ भी काम आए, जब वह इन्कार करते थे अल्लाह की आयात का, और उन को उस (अज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (26)

और तहकीक़ हम ने हलाक कर दी तुम्हारे इर्द गिर्द की बस्तियां, और हम ने बार बार अपनी निशानियां दिखाई ताकि वह लौट आएँ। (27)

फिर क्यों न उन की मदद की उन्होंने ने जिन्हें बना लिया था (अल्लाह का) कुर्ब हासिल करने के लिए अल्लाह के सिवा माबूद, बल्कि वह उन से गाइब हो गए, और यह उन का बुहतान था जो वह इफ़तिरा करते (घड़ते थे)। (28)

और जब हम आप (स) की तरफ़ जिन्नात की एक जमाअत फेर लाए, वह कुरआन सुनते थे, पस वह आप (स) के पास हाज़िर हुए तो उन्होंने ने (एक दूसरे को) कहा: चुप रहो, फिर जब पढ़ना तमाम हुआ तो वह अपनी कौम की तरफ़ डर सुनाते हुए लौटे। (29)

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي أَرِكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ (٢٣) فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ						
और लेकिन मैं	जो मैं भेजा गया हूँ उस के साथ	और मैं पहुँचाता हूँ तुम्हें	अल्लाह के पास	इल्म	इस के सिवा नहीं	उस ने कहा
उन की वादियाँ	सामने (चला) आ रहा है	एक अब्र	फिर जब देखा उन्होंने ने उस को	23	तुम जहालत करते हो	गिरोह-लोग
قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُّمْطَرُنَا بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ (٢٤) تُدْمِرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا						
उस की	तुम जल्दी करते थे	जिस	बल्कि वह	हम पर वारिश बरसाने वाला	एक बादल	यह वह बोले
अपना रब	हुक्म से	शै	हर	वह तहस नहस कर देगी	24	दर्दनाक अज़ाब
فَاصْبَحُوا لَا يَرَى إِلَّا مَسْكِنَهُمْ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ (٢٥) وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيمَا إِنْ مَكَّنَّاكُمْ فِيهِ						
हम बदला देते हैं	इसी तरह	उन के मकान	सिवाए	न दिखाई देता था	पस वह रह गए	एक हवा (आन्धी)
उस में-पर	नहीं हम ने कुदरत दी तुम्हें	उस में	और अलबत्ता हम ने उनको कुदरत दी थी	25	मुज़्रिम लोग	
وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَآبْصَارًا وَأَفْئِدَةً ۖ فَمَا أَغْنَى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ (٢٦) وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرَىٰ						
काम आए उन के	तो न	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	उन्हें	और हम ने बना दिए
जब	कुछ भी	और न दिल उन के	और न उन की आँखें	उन के कान		
وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ (٢٧) فَلَوْلَا نَصْرُهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً ۖ بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ ۖ وَذَلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ (٢٨) وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ ۖ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنْصِتُوا ۖ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِينَ (٢٩)						
उस का	जो वह थे	उन को	और उस ने घेर लिया	अल्लाह की आयात का	वह इन्कार करते थे	
वसतियाँ	से	जो तुम्हारे इर्द गिर्द	और तहकीक़ हम ने हलाक कर दिया	26	वह मज़ाक़ उड़ाते	
मदद की उन की	फिर क्यों न	27	लौट आई	ताकि वह	और हम ने बार बार दिखाई अपनी निशानियाँ	
बल्कि	माबूद	कुर्ब हासिल करने को	अल्लाह के सिवा	जिन्हें बना लिया उन्होंने ने		
हम फेर लाए	और जब	28	वह इफ़तिरा करते थे	और जो	उन का बुहतान	और यह वह गुम (गाइब) हो गए उन से
वह हाज़िर हुए उस के पास	पस जब	कुरआन	वह सुनते थे	जिन्नात की	एक जमाअत	आप (स) की तरफ़
29	डर सुनाते हुए	अपनी कौम	तरफ़	वह लौटे	(पढ़ना) तमाम हुआ	फिर जब चुप रहो उन्होंने ने कहा

قَالُوا يَقَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنْزِلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَى مُصَدِّقًا									
तस्दीक करने वाली	मूसा (अ)	वाद	नाज़िल की गई	एक किताब	वेशक हम ने सुनी	ऐ हमारी कौम	उन्होंने ने कहा		
لَمَّا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٠﴾ يَقَوْمَنَا									
ऐ हमारी कौम	30	रास्त	राह	और तरफ़	हक़ की तरफ़	वह रहनुमाई करती है	उस (अपने) से पहले	उस की जो	
أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرَ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ									
और वह पनाह देगा तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	से	बख़्श देगा तुम्हें	उस पर	और ईमान ले आओ	अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला	कुबूल कर लो		
مَنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣١﴾ وَمَنْ لَا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ									
आजिज़ करने वाला	तो नहीं	अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला	न कुबूल करेगा	और जो	31	दर्दनाक अज़ाब	से		
فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءُ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٢﴾									
32	गुमराही खुली	में	यही लोग	हिमायती	उस के सिवा	उस के लिए	और नहीं	ज़मीन में	
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْ									
और वह थका नहीं	और ज़मीन	पैदा किया आस्मानों को			वह जिस ने	कि अल्लाह	क्या नहीं देखा उन्होंने ने		
بِخَلْقِهِنَّ بِقَدْرِ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۚ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٣﴾									
33	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर	वेशक वह	हाँ	मुर्दे	कि वह ज़िन्दा करे	पर	उन के पैदा करने से
وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا									
वह कहेंगे	हक़	यह	क्या नहीं	आग के सामने		जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)		पेश किए जाएंगे	और जिस दिन
بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ									
पस आप (स) सब्र करें	34	तुम इन्कार करते थे		वह जिस	अज़ाब	पस तुम चखो	वह फ़रमाएगा	हमारे रब की कसम	हाँ
كَمَا صَبَرَ أُولَٰؤُا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ ۚ كَانَتْهُمْ									
गोया कि वह	उन के लिए	और जल्दी न करें		रसूलों	से	ऊलूल अज़म		सब्र किया	जैसे
يَوْمَ يَرُونَ مَا يُوعَدُونَ ۖ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ									
दिन की	एक घड़ी	मगर-सिर्फ़	वह नहीं ठहरे		जिस का वादा किया जाता है उन से		जिस दिन देखेंगे वह		
بَلْعٌ ۖ فَهَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الْفَاسِقُونَ ﴿٣٥﴾									
35	नाफ़रमान लोग			मगर	पस नहीं हलाक होंगे			पहुँचाना	
آيَاتُهَا ۚ ﴿٤٧﴾ سُورَةُ مُحَمَّدٍ ۖ زُكُوعَاتُهَا ۚ									
रुकुआत 4		(47) सूरह मुहम्मद				आयात 38			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ أَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿١﴾									
1	उन के आमाल	अकारत कर दिए	अल्लाह का रास्ता		से	और उन्होंने ने रोका	काफ़िर हुए	जो लोग	

उन्होंने ने कहा कि ऐ हमारी कौम! हम ने एक किताब सुनी है जो नाज़िल की गई है मूसा (अ) के बाद, अपने से पहले की तस्दीक करने वाली, वह रहनुमाई करने वाली (दीने) हक की तरफ़ और राहे रास्त की तरफ़। (30)

ऐ हमारी कौम! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले (की बात) कुबूल कर लो और उस पर ईमान ले आओ, (अल्लाह) तुम्हें तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और वह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से पनाह देगा। (31)

और जो अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की बात को कुबूल न करेगा, वह ज़मीन में (अल्लाह को) आजिज़ करने वाला नहीं, और उस (अल्लाह) के सिवा उस के लिए कोई हिमायती नहीं, यही लोग खुली गुमराही में हैं। (32)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा? कि अल्लाह ही है जिस ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया, और वह उन के पैदा करने से नहीं थका, वह उस पर क़ादिर है कि मुर्दों को ज़िन्दा करे, हाँ! वेशक वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (33)

और जिस दिन काफ़िर आग (जहननम) के सामने पेश किए जाएंगे, (पूछा जाएगा) क्या यह हक़ (अमरे वाकई) नहीं? वह कहेंगे: हमारे रब की क़सम, हाँ (यह हक़ है), अल्लाह तज़ाला फ़रमाएगा: पस तुम अज़ाब चखो जिस का तुम इन्कार करते थे। (34)

पस आप (स) सब्र करें जैसे ऊलूलअज़म (बाहिम्मत) रसूलों ने सब्र किया, और उन के लिए (अज़ाब की) जल्दी न करें, वह जिस दिन देखेंगे (वह अज़ाब) जिस का उन से वादा किया जाता है (उन्हें ऐसा मालूम होगा कि) गोया वह दुनिया में सिर्फ़ दिन की एक घड़ी ठहरे थे, (पैग़ाम) पहुँचाना है, पस हलाक न होंगे मगर नाफ़रमान लोग। (35)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है जो लोग काफ़िर हुए और उन्होंने ने अल्लाह के रास्ते से रोका, उन के आमाल (अल्लाह ने) अकारत कर दिए। (1)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए और वह उस पर ईमान लाए जो मुहम्मद (स) पर नाज़िल किया गया, और वह उन के रब की तरफ से हक है, उस (अल्लाह) ने उन से उन के गुनाह दूर कर दिए और उन का हाल दुरुस्त कर दिया। (2)

यह इस लिए हुआ कि जिन लोगों ने कुफ़ किया उन्होंने ने वातिल की पैरवी की और यह कि जो लोग ईमान लाए, उन्होंने ने अपने रब की तरफ से हक की पैरवी की, इसी तरह अल्लाह लोगों के लिए उन की मिसालें (अहवाल) बयान करता है। (3)

फिर जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ तो उन की गर्दन मारो, यहां तक कि जब उन की खूब खू रेज़ी कर चुको तो उन की कैद मज़बूत कर लो (मुशकें कस लो), पस उस के बाद एहसान कर दो (विला मुआवज़ा रिहा कर दो) या मुआवज़ा (ले कर छोड़ दो) यहां तक कि लड़ने वाले अपने हथियार रख दें (डाल दें), यह है (हुक्मे इलाही), और अगर अल्लाह चाहता तो उन से खुद ही निपट लेता, लेकिन (वह चाहता है) कि तुम में से बाज़ (एक) को दूसरे से आज़माए, और जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गए तो वह उन के आमाल हरगिज़ ज़ाया न करेगा। (4)

वह जल्द उन को हिदायत देगा और उन का हाल संवारेगा। (5) और वह उन्हें जन्नत में दाखिल करेगा जिस से उस ने उन्हें शनासा कर दिया है। (6)

ऐ मोमिनो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा (तुम्हें साबित क़दम कर देगा)। (7) और जिन लोगों ने कुफ़ किया उन के लिए तवाही है और उस (अल्लाह) ने उन के अमल ज़ाया कर दिए। (8)

यह इस लिए कि उन्होंने ने उसे नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो (अल्लाह) ने उन के अमल अकारत कर दिए। (9)

क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देख लेते कि कैसा अन्जाम हुआ उन से पहले लोगों का, अल्लाह ने उन पर तवाही डाल दी, और काफ़िरों को उन की मानिंद (सज़ा होगी)। (10)

यह इस लिए कि अल्लाह उन लोगों का कारसाज़ है जो ईमान लाए और काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं। (11)

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَى مُحَمَّدٍ

मुहम्मद (स) पर	उस पर जो नाज़िल किया गया	और वह ईमान लाए	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	ईमान लाए	और जो लोग

وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ كَفَرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ (2)

2	उन का हाल	और दुरुस्त कर दिया	उन की बुराइयां (गुनाह)	उन से	उस ने दूर कर दिए	उन का रब	से	हक	और वह

ذَلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَأَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا

ईमान लाए	जो लोग	और यह कि	वातिल	उन्होंने ने पैरवी की	जिन लोगों ने कुफ़ किया	यह इस लिए कि

اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَبِّهِمْ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ (3)

3	उन की मिसालें	लोगों के लिए	अल्लाह बयान करता है	इसी तरह	अपने रब (की तरफ) से	हक	उन्होंने ने पैरवी की

فَإِذَا لَقِيتُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبُ الرِّقَابِ حَتَّى إِذَا أَثْنَتُمُوهُمْ

खूब खून रेज़ी कर चुको उन की	जब	यहां तक कि	गर्दन	तो मारो तुम	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	भिड़ जाओ	फिर जब तुम

فَشُدُّوا الوثَاقَ فَمَا مَنَّا بَعْدُ وَإِنَّا فِدَاءٌ حَتَّى تَضَعَ الْحَرْبُ

रख दे लड़ाई (लड़ने वाले)	यहां तक कि	मुआवज़ा	और या	उस के बाद	एहसान करो	पस या	कैद	तो मज़बूत कर लो

أَوْزَارَهَا ذَلِكَ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَكِنْ لِيَبْلُوَا

ताकि आज़माए	और लेकिन	उन से	ज़रूर इन्तिज़ाम लेता	अल्लाह चाहता	और अगर	यह	अपने हथियार

بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَنْ يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ (4)

4	उन के आमाल	तो वह हरगिज़ ज़ाया न करेगा	अल्लाह का रास्ता	में	मारे गए	और जो लोग	बाज़ (दूसरे) से	तुम से बाज़ को

سَيَهْدِيهِمْ وَيُضِلُّهُمْ وَبِالْهُم (5) وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ (6)

6	उस ने जिस से शनासा कर दिया है उन्हें	जन्नत	और दाखिल करेगा उन्हें	5	उन का हाल	और संवारेगा	वह जल्द उन को हिदायत देगा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنْصُرُوا اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ

और जमा देगा	वह मदद करेगा तुम्हारी	तुम मदद करोगे अल्लाह की	अगर	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

أَقْدَامَكُمْ (7) وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعَسَا لَهُمْ وَأَصْلَ أَعْمَالَهُمْ (8)

8	उन के अमल	और उस ने ज़ाया कर दिए	उन के लिए	तो तवाही है	और जिन लोगों ने कुफ़ किया	7	तुम्हारे क़दम

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أُنْزِلَ اللَّهُ فَاحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ (9)

9	उन के अमल	तो अकारत कर दिए	नाज़िल किया अल्लाह ने	जो	इस लिए कि उन्होंने ने नापसंद किया	यह

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ

उन लोगों का जो	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देख लेते	ज़मीन में	क्या वह चले फिरे नहीं

مِنْ قَبْلِهِمْ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا (10) ذَلِكَ

यह	10	उन की मानिंद	और काफ़िरों के लिए	उन पर	तवाही डाल दी अल्लाह ने	उन से पहले

بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَإِنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَى لَهُمْ (11)

11	उन के लिए	कोई कारसाज़ नहीं	काफ़िरों	और यह कि	उन लोगों का जो ईमान लाए	कारसाज़	इस लिए कि अल्लाह

عند التقديم ١٢ وقد بينا بقوله ذلك ١٣ ولكن حسن اتصاله بما قبله ويوقف على ذلك ١٢

١٤

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي												वेशक अल्लाह दाखिल करता है	
वहती है		बागात		और उन्होंने ने नेक अमल किए			जो लोग ईमान लाए			दाखिल करता है		वेशक अल्लाह	
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا													
जैसे		और वह खाते हैं		वह फाइदा उठाते हैं		कुफ़ किया		और जिन लोगों ने		नहरें		उन के नीचे	
تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ﴿١٢﴾ وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ													
बहुत ही सख़्त		वह		वसतियां		और बहुत सी		12		उन के लिए		ठिकाना और आग चौपाए खाते हैं	
قُوَّةً مِّنْ قَرْيَةٍ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ أَهْلُكُنْهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾													
13		उन के लिए		तो कोई न मदद करने वाला		हम ने हलाक कर दिया उन्हें		आप (स) को निकाल दिया		वह जिस		आप (स) की वस्ती से कुव्वत में	
أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّهِ كَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ													
उस के बुरे अमल		आरास्ता दिखाए गए उसको		उस की तरह		अपने रब से-के		रोशन (रास्ता)		पर		है पस क्या जो	
وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا													
उस में		परहेज़गारों		वह जो वादा की गई		जन्नत		मिसाल (कैफ़ियत)		14		अपनी खाहिशात और उन्होंने ने पैरवी की	
أَنْهَرٍ مِّنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَرٍ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَرٍ													
और नहरें		उस का ज़ाड़का		बदलने वाला		न		दूध की		और नहरें		बदवू न करने वाला पानी से-की नहरें	
مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِلشَّرْبِينَ وَأَنْهَرٍ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا													
उस में		और उन के लिए		मुसफ़फ़ा		शहद की		और नहरें		पीने वालों के लिए		सरासर लज़ज़त शराब की	
مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَبِّهِمْ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ													
हमेशा रहने वाला आग में		वह		उस की तरह जो		उन के रब से		और बख्शिश		हर किस्म के फल			
وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ﴿١٥﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ													
सुनते हैं		जो		और उन में से		15		उन की अंतड़ियां		टुकड़े टुकड़े कर डालेगा		गर्म पानी और उन्हें पिलाया जाएगा	
إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ													
इल्म दिया गया (अहले इल्म)		उन लोगों से जिन्हें		वह कहते हैं		आप (स) के पास से		वह निकलते हैं		जब		यहां तक कि आप (स) की तरफ	
مَاذَا قَالَ انْفُصُّوا أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ													
उन के दिलों पर		मुहर कर दी अल्लाह ने		वह जो		यही लोग		अभी		उस ने कहा		क्या	
وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٦﴾ وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَاتَّبَعُوا													
और उन्हें अता की		हिदायत		और ज़ियादा दी उन्हें		और वह लोग जिन्होंने ने हिदायत पाई		16		अपनी खाहिशात		और उन्होंने ने पैरवी की	
تَقْوَاهُمْ ﴿١٧﴾ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً													
अचानक		आ जाए उन पर		कि		क्रियामत		मगर		मुन्तज़िर		पस नहीं वह 17 उन की परहेज़गारी	
فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا جَاءَهُمْ ذِكْرُهُمْ ﴿١٨﴾													
18		उन का नसीहत (कुबूल करना)		वह आगई उन के पास		जब		उन के लिए-को		तो कहा		उस की अ़लामात सो आ चुकी है	

सो जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप (स) बख्शिश मांगें अपने कुसूरों के लिए, मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए, और अल्लाह जानता है तुम्हारा चलना फिरना, और तुम्हारे रहने सहने के सुकाम को। (19) और जो लोग ईमान लाए वह कहते हैं कि (जिहाद की) एक सूरत क्यों न उतारी गई? सो जब मुहक्कम (साफ़ साफ़ मतलब वाली) सूरत उतारी जाती है और ज़िक्र किया जाता है उस में जंग का, तो तुम देखोगे कि वह लोग जिन के दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है, वह आप (स) की तरफ़ देखते हैं (उस शख्स के) देखने की तरह बेहोशी तारी हो गई हो जिस पर मौत की, सो ख़राबी है उन के लिए। (20) (सहीह तो यह था कि वह) इताअत करते और माकूल बात कहते, पस जब काम पुख़्ता होजाए, अगर वह अल्लाह के साथ सच्चे होते तो अलबत्ता उन के लिए बेहतर होता। (21) सो तुम इस के नज़दीक हो कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो तुम फ़साद मचाओ ज़मीन में, और अपने रिश्ते तोड़ डालो। (22) यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, फिर उन्हें बहरा कर दिया और अन्धा कर दिया उन की आँखों को। (23) तो क्या वह कुरआन में ग़ौर नहीं करते? क्या उन के दिलों पर ताले (पड़े हैं)? (24) बेशक जो लोग अपनी पुश्त फेर कर पलट गए उस के बाद जब कि उन के लिए हिदायत वाज़ेह हो गई, शैतान ने उन के लिए आरास्ता कर दिखाया और उन को ढील दी। (25) यह इस लिए कि उन्होंने ने उन लोगों से कहा जिन्होंने ने इस (किताब) को नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल की कि अ़नक़रीब हम तुम्हारा कहना मान लेंगे बाज़ कामों (बातों) में, और अल्लाह उन की खुफ़िया बातों को जानता है। (26) पस कैसा (हाल होगा)? जब फ़रिशते उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे (और) मारते होंगे उन के चेहरों और उन की पीठों पर। (27) यह इस लिए होगा कि उन्होंने ने उस की पैरवी की जिस ने अल्लाह को नाराज़ किया और उन्होंने ने उस की रज़ा को नापसंद किया तो उस (अल्लाह) ने उन के आमाल अकारत कर दिए। (28) क्या जिन लोगों के दिलों में रोग है वह गुमान करते हैं कि अल्लाह हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा उन की दिली अदावतों को। (29)

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ							
और मोमिन मर्दों के लिए	अपने कुसूर के लिए	और बख्शिश मांगें आप (स)	अल्लाह के सिवा	नहीं कोई माबूद	यह कि	सो जान लो	
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ﴿١٩﴾ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا							
वह जो लोग ईमान लाए	और वह कहते हैं	19	और तुम्हारे रहने सहने का मुकाम	तुम्हारा चलना फिरना	जानता है	और अल्लाह	और मोमिन औरतों
لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ ۚ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا							
उस में	और ज़िक्र किया जाता है	फैसला कुन सूरत		उतारी जाती है	सो जब	एक सूरत	क्यों न उतारी गई
الْقِتَالِ ۚ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ							
देखना	आप (स) की तरफ़	वह देखते हैं	बीमारी	उन के दिलों में	वह लोग	तुम देखोगे	जंग
الْمَعْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۚ							
मअरूफ़	और बात	इताअत	20	सो खराबी उन के लिए	मौत की	उस पर	बेहोशी तारी हो गई
فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ							
सो तुम इस के नज्दीक	21	अलबत्ता होता बेहतर उन के लिए	पस अगर वह सच्चे होते अल्लाह के साथ	पुख्ता हो जाए काम	फिर जब		
إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتَقَطَّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾							
22	अपने रिश्ते	और तुम काटो (तोड़ डालो)	ज़मीन में	कि तुम फ़साद मचाओ	तुम वाली (हाकिम) हो जाओ	अगर	
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعَمَّىٰ أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾							
23	उन की आँखें	और अन्धा कर दिया	फिर उन को बहरा कर दिया	अल्लाह ने लानत की	वह लोग जिन पर	यही है	
أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا							
पलट गए	जो लोग	बेशक	24	उन के ताले	दिलों पर	क्या	तो क्या वह ग़ौर नहीं करते?
عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ ۚ							
उन के लिए	आरास्ता कर दिखाया	शैतान	हिदायत	उन के लिए	जब वाज़ेह हो गई	इस के बाद	अपनी पुश्त पर
وَأَمَلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ							
अनक़रीब हम तुम्हारा कहा मान लेंगे	जो नाज़िल किया अल्लाह ने	उन्होंने ने नापसंद किया	उन लोगों से जिन्होंने	उन्होंने ने कहा	इस लिए कि वह	यह	25 उन और ढील दी गई
فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّيْتُمْ							
जब उन की रूह कब्ज़ करेंगे	पस क्या	26	उन की खुफिया बातें	जानता है	और अल्लाह	काम	वाज़ में
الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا							
पैरवी की	यह इस लिए कि उन्होंने ने	27	और उन की पीठों	उन के चेहरों	वह मारते होंगे	फ़रिशते	
مَا أَسْحَطَ اللَّهُ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَاحْبِطْ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ أَمْ حَسِبَ							
क्या गुमान करते हैं?	28	उन के आमाल	तो उस ने अकारत कर दिए	उस की रज़ा	और उन्होंने ने पसंद न किया	अल्लाह को नाराज़ किया	जो-जिस
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَنْ لَّنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَصْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾							
29	उन के दिल की अ़दावते	हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा अल्लाह	कि	मरज़-रोग	उन के दिलों में	(वह लोग) जिन	

٢٦

٢٦

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيمِهِمْ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي							
मैं-से	और तुम ज़रूर पहचान लोगे उन्हें	उन के चेहरों से	सो अलबत्ता तुम उन्हें पहचान लो	तो तुम्हें दिखा दें वह लोग	और अगर हम चाहें		
لَحْنِ الْقَوْلِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّى نَعْلَمَ الْمُجْهِدِينَ							
सुजाहिदों	हम मालूम कर लें	यहां तक कि	और हम ज़रूर आजमाएंगे तुम्हें	30	तुम्हारे आमाल	जानता है और अल्लाह	तरजे कलाम
مِنْكُمْ وَالصَّابِرِينَ ۖ وَبَلَّوْا أَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا							
जिन लोगों ने कुफ़ किया	वेशक	31	तुम्हारी ख़बरें (हालात)	और हम जाँच लें	और सब्र करने वाले	तुम में से	
وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ							
उस के बाद	रसूल	और उन्होंने ने मुख़ालिफ़त की		अल्लाह का रास्ता	से	और उन्होंने ने रोका	
مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ ۖ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحِطُّ أَعْمَالُهُمْ ﴿٣٢﴾							
32	उन के आमाल	और वह जल्द अकारत कर देगा	कुछ भी	और वह हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे अल्लाह का	हिदायत	उन पर	जब वाज़ेह हो गई
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا							
और वातिल न करो	और इताअत करो रसूल की		इताअत करो अल्लाह की	जो लोग ईमान लाए (मोमिनो)		ऐ	
أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ							
फिर	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्होंने ने रोका	जिन लोगों ने कुफ़ किया	वेशक	33	अपने आमाल
مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَىٰ							
तरफ़	और न बुलाओ	पस तुम सुस्ती न करो	34	उन को	तो हरगिज़ नहीं बख़शेगा अल्लाह	काफ़िर (ही)	और वह मर गए
السَّلَامِ ۖ وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ ۖ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتَرَكَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾							
35	तुम्हारे आमाल	और वह हरगिज़ कमी न करेगा	तुम्हारे साथ	और अल्लाह	ग़ालिब	और तुम ही	सुलह
إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُوَ ۖ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ							
वह तुम्हें देगा	और तक्वा इख़्तियार करो	ईमान ले आओ	और अगर	और कूद	खेल	दुनिया की ज़िन्दगी	इस के सिवा नहीं
أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ إِنْ يَسْأَلْكُمْ فَيَحْفَكُمُ فَتَبَخَّلُوا							
तुम बुख़ल करो	फिर तुम से चिमट जाए	वह तुम से (माल) तलब करे	अगर	36	तुम्हारे माल	और न तलब करेगा तुम से	तुम्हारे अजर (जमा)
وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هَٰأَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتَنْفِقُوا فِي							
मैं	कि तुम खर्च करो	तुम्हें पुकारा जाता है	हाँ! वह लोग	यह तुम हो	37	तुम्हारे खोटा	और ज़ाहिर हो जाएं
سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخُلُ ۖ وَمَنْ يَبْخُلْ فَإِنَّمَا يَبْخُلْ عَنْ نَفْسِهِ ۗ							
अपने आप से	तो इस के सिवा नहीं कि वह बुख़ल करता है		बुख़ल करता है	और जो	कोई ऐसा है कि बुख़ल करता है	फिर तुम में से	अल्लाह का रास्ता
وَاللَّهُ الْغَنِيُّ ۖ وَأَنْتُمْ الْفُقَرَاءُ ۖ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبَدِلْ							
वह बदल देगा	तुम रूग़र्दानी करोगे	और अगर	मोहताज (जमा)	और तुम	वेनियाज़	और अल्लाह	
قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۖ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾							
38	तुम्हारे जैसे		वह न होंगे		फिर	दूसरी क़ौम तुम्हारे सिवा	

और अगर हम चाहें तो तुम्हें उन लोगों को दिखा दें, सो अलबत्ता तुम उन्हें उन के चेहरों से पहचान लोगे, और तुम ज़रूर उन्हें उन के तरजे कलाम से पहचान लोगे, और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है। (30) और हम ज़रूर तुम्हें आजमाएंगे यहां तक हम मालूम कर लें कि (कौन हैं) तुम में से मुजाहिद और सब्र करने वाले और हम जाँच लें तुम्हारे हालात। (31) वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, और उन्होंने ने रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की उस के बाद जब कि उन पर हिदायत वाज़ेह हो गई, वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे और वह (अल्लाह) जल्द उन के आमाल अकारत कर देगा। (32) ऐ मोमिनो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल (स) की इताअत करो, और अपने आमाल वातिल न करलो। (33) वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, फिर वह काफ़िर (कुफ़ की हालत में) मर गए तो अल्लाह हरगिज़ न बख़शेगा उन को। (34) पस तुम सुस्ती (कम हिम्मती) न करो और (खुद) सुलह की तरफ़ न बुलाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह हरगिज़ कमी न करेगा तुम्हारे आमाल में। (35) इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी (महज़) खेल कूद है, और तुम अगर ईमान ले आओ और तक्वा इख़्तियार करो तो वह तुम्हें तुम्हारे अजर देगा, और तुम से तुम्हारे माल तलब न करेगा। (36) अगर वह तुम से माल तलब करे और तुम से चिमट जाए (तलब ही करता रहे) तो तुम बुख़ल करो, और ज़ाहिर हो जाएं तुम्हारे खोटा। (37) हाँ! तुम ही वह लोग हो जिन्हें पुकारा जाता है कि अल्लाह के रास्ते में खर्च करो, फिर तुम में से कोई ऐसा है जो बुख़ल करता है, और जो बुख़ल करता है तो इस के सिवा नहीं कि वह अपने आप से बुख़ल करता है, और अल्लाह वेनियाज़ है और तुम (उस के) मोहताज हो और अगर तुम रूग़र्दानी करोगे तो वह तुम्हारे सिवा (तुम्हारी जगह) कोई दूसरी क़ौम बदल देगा और वह तुम्हारे जैसे न होंगे। (38)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है वेशक हम ने आप (स) को खुली फ़तह दी, (1)

ताकि अल्लाह आप (स) की अगली पिछली कोताहियों को बख़्शदे, और आप (स) पर अपनी नेमत मुकम्मल कर दे, और आप (स) को सीधे रास्ते की रहनुमाई करे। (2)

और अल्लाह आप (स) को नुस्रत दे, एक नुस्रत (मदद) ज़बरदस्त। (3)

वही है जिस ने मोमिनों के दिल में तसल्ली उतारी, ताकि वह (उन का) ईमान बढ़ाए उन के (पहले) ईमान के साथ, और आस्मानों और ज़मीन के लशकर अल्लाह ही के हैं, और है अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला। (4)

ताकि वह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को उन बागात में दाख़िल कर दे जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे और उन से उन की बुराइयां दूर कर देगा, और यह अल्लाह के नज़्दीक बड़ी कामयाबी है। (5)

और वह अज़ाब देगा मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को, और अल्लाह के साथ बुरे गुमान करने वाले मुशरिफ़ मर्दों और मुशरिफ़ औरतों को, उन पर बुरी गर्दिश है। और अल्लाह ने उन पर ग़ज़ब किया, और उन पर लानत की (रहमत से महरूम कर दिया) और उन के लिए जहन्नम तैयार किया, और वह बुरा ठिकाना है। (6)

और अल्लाह ही के लिए हैं आस्मानों और ज़मीन के लशकर, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (7)

वेशक हम ने आप (स) को भेजा है गवाही देने वाला, और खुशख़बरी देने वाला, और डराने वाला। (8)

ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर ईमान लाओ, और उस की मदद करो और उस की ताज़ीम करो, और अल्लाह की तस्वीह (पाकीज़गी बयान) करो सुबह ओ शाम। (9)

آيَاتُهَا ٢٩ ﴿٤٨﴾ سُورَةُ الْفَتْحِ ﴿٤٨﴾ رُكُوعَاتُهَا ٤										
रुकुआत 4				(48) सूरतुल फ़तह			आयात 29			
जीत										
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है										
إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا ﴿١﴾ لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ										
आप (स) के कूसूर	से	जो पहले गुज़रे	अल्लाह	आप के लिए	ताकि बख़्शदे	1	खुली	फ़तह	आप (स) को	वेशक हम ने फ़तह दी
وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ﴿٢﴾										
2	सीधा	रास्ता	और आप (स) की रहनुमाई करे	आप (स) पर	अपनी नेमत	और वह मुकम्मल करदे	और जो पीछे हुए			
وَيَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيمًا ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي										
में	सकीना (तसल्ली)	उतारी	वह जिस	वही	3	ज़बरदस्त	नुस्रत	और आप (स) को नुस्रत दे अल्लाह		
قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَعَ إِيْمَانِهِمْ ۖ وَاللَّهُ جُنُودُ										
और अल्लाह के लिए लशकर (जमा)	उन का ईमान	साथ	ईमान	ताकि वह बढ़ाए	मोमिनों	दिल (जमा)				
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٤﴾ لِيُدْخِلَ										
ताकि वह दाख़िल करे	4	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	और ज़मीन	आस्मानों			
الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ										
वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	जारी हैं	जन्नत	और मोमिन औरतें	मोमिन मर्दों				
فِيهَا وَيُكَفِّرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٥﴾										
5	बड़ी कामयाबी	अल्लाह के नज़्दीक	यह	और है	उन की बुराइयां	उन से	और दूर कर देगा	उन में		
وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ										
और मुशरिफ़ औरतों	और मुशरिफ़ मर्दों	और मुनाफ़िक़ औरतों	मुनाफ़िक़ मर्दों	और वह अज़ाब देगा						
الظَّالِّاتِينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۚ										
बुरी	दायरा (गर्दिश)	उन पर	गुमान बुरे	अल्लाह के साथ	गुमान करने वाले					
وَعَصَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿٦﴾										
6	ठिकाना	और बुरा है	जहन्नम	और तैयार किया उन के लिए	और उन पर लानत की	उन पर	और अल्लाह का ग़ज़ब			
وَاللَّهُ جُنُودُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيمًا حَكِيمًا ﴿٧﴾										
7	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	और ज़मीन	और अल्लाह के लिए लशकर आस्मानों के					
إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٨﴾ لِيُؤْمِنُوا بِاللَّهِ										
अल्लाह पर	ताकि तुम ईमान लाओ	8	और डराने वाला	और खुशख़बरी देने वाला	गवाही देने वाला	वेशक हम ने आप (स) को भेजा				
وَرَسُولِهِ ۖ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ ۖ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٩﴾										
9	और शाम	सुबह	और उस (अल्लाह) की तसवीह करो	और उस की ताज़ीम करो	और उस की मदद करो	और उस का रसूल (स)				

إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ						
उन के हाथों के ऊपर	अल्लाह का हाथ	वह अल्लाह से बैअत कर रहे हैं	इस के सिवा नहीं कि	आप से बैअत कर रहे हैं	वेशक जो लोग	
فَمَنْ نَكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلَى نَفْسِهِ وَمَنْ أَوْفَى بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ						
अल्लाह पर-से	जो उस ने अहद किया	पूरा किया	और जिस	अपनी ज्ञात पर	उस ने तौड़ दिया	तो इस के सिवा नहीं फिर जिस ने तौड़ दिया अहद
فَسِيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ١٠ سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنْ						
से	पीछे रह जाने वाले	आप (स) से	अब कहेंगे	10	अजरे अज़ीम	तो वह अनक़रीब उसे देगा
الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرُ لَنَا يَقُولُونَ						
वह कहते हैं	और बख़्शिश मांगिए हमारे लिए	और हमारे घर वाले	हमारे मालों	हमें मशगूल रखा	देहाती	
بِأَسْنَتِهِمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ						
अल्लाह के सामने	तुम्हारे लिए	इख़्तियार रखता है	तो कौन	फ़रमा दें	उन के दिलों में	जो नहीं अपनी ज़बानों से
شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ						
है अल्लाह	बल्कि	कोई फाइदा	चाहे तुम्हें	या	कोई नुक़सान	तुम्हें अगर वह चाहे किसी चीज़ का
بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرًا ١١ بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ						
और मोमिन (जमा)	रसूल (स)	हरगिज़ वापस न लौटेंगे	कि	तुम ने गुमान किया	बल्कि	11 ख़बरदार उस से जो तुम करते हो
إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنًّا سَوْءًا						
बुरा गुमान	और तुम ने गुमान किया	तुम्हारे दिलों में-को	यह	और भली लगी	कभी	अपने अहले ख़ाना तरफ़
وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ١٢ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ						
और उस का रसूल	अल्लाह पर	ईमान नहीं लाता	और जो	12	हलाक होने वाली क़ौम	और तुम थे-हो गए
فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ١٣ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ						
और ज़मीन	और अल्लाह के लिए आस्मानों की बादशाहत	13	दहकती आग	काफ़िरों के लिए	तो वेशक हम ने तैयार की	
يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ١٤ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا						
14	मेहरवान	बख़्शने वाला	अल्लाह और है	जिस को वह चाहे	और अज़ाब दे	जिस को वह चाहे वह बख़्शदे
سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا						
कि तुम उन्हें ले लो	ग़नीमतों की तरफ़	तुम चलोगे	जब	पीछे बैठ रहने वाले	अनक़रीब कहेंगे	
ذُرُونَا نَتَّبِعْكُمْ يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَ اللَّهِ قُلْ						
फ़रमा दें	अल्लाह का फ़रमान	कि वह बदल डालें	वह चाहते हैं	हम तुम्हारे पीछे चलें	हमें छोड़ दो (इजाज़त दो)	
لَنْ تَتَّبِعُونَا كَذَلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ فَسَيَقُولُونَ						
फिर अब वह कहेंगे	इस से क़व्ल	कहा अल्लाह ने	इसी तरह	तुम हरगिज़ हमारे पीछे न आओ		
بَلْ تَحْسُدُونَنَا بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ١٥						
15	मगर थोड़ा	वह समझते नहीं हैं	बल्कि-जबकि	तुम हसद करते हो हम से	बल्कि	

वेशक (हुदैबिया में) जो लोग आप (स) से बैअत कर रहे हैं इस के सिवा नहीं कि वह अल्लाह से बैअत कर रहे हैं, उन के हाथों पर अल्लाह का हाथ है, फिर जिस ने अहद तोड़ दिया तो इस के सिवा नहीं कि उस ने अपनी ज्ञात (के बुरे) को तोड़ा, और जिस ने वह अहद पूरा किया जो उस ने अल्लाह से किया था तो वह (अल्लाह) उसे अनक़रीब देगा अजरे अज़ीम। (10) अब पीछे रह जाने वाले देहाती आप (स) से कहेंगे कि हमें हमारे मालों और हमारे घर वालों ने मशगूल रखा (रुख़सत न दी) सो आप (स) हमारे लिए बख़्शिश मांगिए, वह अपनी ज़बानों से वह कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए अल्लाह के सामने कौन इख़्तियार रखता है किसी चीज़ का? अगर वह तुम्हें नुक़सान (पहुँचाना) चाहे या तुम्हें नफ़ा (पहुँचाना) चाहे, बल्कि तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उस से ख़बरदार है। (11) बल्कि तुम ने गुमाने (बातिल) किया कि रसूल (स) और मोमिन हरगिज़ अपने अहले ख़ाना की तरफ़ कभी वापस न लौटेंगे, और यह बात भली लगी तुम्हारे दिलों को, और तुम ने गुमान किया एक बुरा गुमान, और तुम हलाक होने वाली क़ौम हो गए। (12) और जो ईमान नहीं लाता अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर, तो वेशक हम ने काफ़िरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। (13) और अल्लाह (ही) के लिए है आस्मानों की और ज़मीन की बादशाहत, वह जिस को चाहे बख़्श दे और जिस को चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरवान है। (14) अनक़रीब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले: जब तुम चलोगे (ख़ैबर की) ग़नीमतों की तरफ़ कि तुम उन्हें लेलो, हमें इजाज़त दो कि हम तुम्हारे पीछे चलें, वह चाहते हैं कि अल्लाह का फ़रमान बदल डालें, आप (स) फ़रमा दें: तुम हरगिज़ हमारे पीछे न आओ, इसी तरह कहा अल्लाह ने इस से क़व्ल, फिर अब वह कहेंगे: बल्कि तुम हम से हसद करते हो जबकि (हकीकत यह है) कि वह बहुत थोड़ा समझते हैं। (15)

आप (स) देहातियों में से पीछे रह जाने वालों से फ़रमा दें: अनक़रीब तुम एक सख़्त जंगजू कौम की तरफ़ बुलाए जाओगे कि तुम उन से लड़ते रहो या वह इस्लाम कुबूल कर लें, सो अगर तुम इताअत करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अजर देगा, और अगर तुम फिर गए जैसे तुम इस से क़बल फिर गए थे तो वह तुम्हें अज़ाब देगा अज़ाब दर्दनाक। (16)

नहीं है अँधे पर कोई गुनाह, और नहीं है लंगड़े पर कोई गुनाह, और न वीमार पर कोई गुनाह, और जो अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करेगा वह उसे उन बागात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, और जो फिर जाएगा वह उसे दर्दनाक अज़ाब देगा। (17)

तहकीक़ अल्लाह मोमिनों से राज़ी हुआ जब वह आप (स) से बैअत कर रहे थे दरख़्त के नीचे, सो उस ने मालूम कर लिया जो उन के दिलों में (ख़ुलूस था) तो उस ने उन पर तसल्ली उतारी, और बदले में उन्हें करीब ही एक फ़तह अता की। (18)

और बहुत सी ग़नीमतें उन्होंने ने हासिल कीं, और है अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला। (19)

और अल्लाह ने तुम से वादा किया नेमतों का, कसूरत से जिन्हें तुम लोगे, पस उस ने यह तुम्हें जल्द दे दी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए, और ताकि (यह) हो मोमिनों के लिए एक निशानी, और तुम्हें सीधे रास्ते की हिदायत दे। (20)

और एक और फ़तह भी, तुम ने (अभी) उस पर काबू नहीं पाया। घेर रखा है अल्लाह ने उस को, और अल्लाह है हर शै पर कुदरत रखने वाला। (21)

और अगर तुम से काफ़िर लड़ते तो वह पीठ फेरते, फिर वह न कोई दोस्त पाते और न कोई मददगार। (22)

अल्लाह का दस्तूर है जो इस से क़बल गुज़र चुका है (चला आ रहा है) और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे। (23)

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سُدُّعُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُولَىٰ بِأَسِ شَدِيدٍ							
फ़रमा दें	पीछे बैठ रहने वालों को	से	देहातियों	अनक़रीब तुम बुलाए जाओगे	एक कौम की तरफ़	सख़्त लड़ने वाली (जंगजू)	
ثُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا							
तुम उन से लड़ते रहो	या वह इस्लाम कुबूल कर लें	अगर	तुम इताअत करोगे	तुम्हें देगा अल्लाह	अजर		
حَسَنًا وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٦﴾							
अच्छा	और अगर	तुम फिर गए	जैसे तुम फिर गए थे	इस से क़बल	वह तुम्हें अज़ाब देगा	अज़ाब	दर्दनाक 16
لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ							
नहीं	अँधे पर	कोई तंगी (गुनाह)	और नहीं	लंगड़े पर	कोई गुनाह	और न	मरीज़ पर
حَرَجٌ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا							
कोई गुनाह	और जो	इताअत करेगा अल्लाह की	उस के रसूल की	वह दाख़िल करेगा उसे	बागात	बहती है	उन के नीचे
الْأَنْهَارِ وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ							
नहरें	और जो	फिर जाएगा	वह अज़ाब देगा उसे	अज़ाब दर्दनाक	17	तहकीक़ राज़ी हुआ अल्लाह	
عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ							
मोमिनों से	जब	वह आप (स) से बैअत कर रहे थे	नीचे	दरख़्त	सो उस ने मालूम कर लिया	जो उन के दिलों में	
فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿١٨﴾ وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً							
तो उस ने उतारी	सकीना (तसल्ली)	उन पर	और बदले में दी उन्हें	एक फ़तह करीब	18	और ग़नीमतें	बहुत सी
يَأْخُذُونَهَا وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٩﴾ وَعَدَّكُمْ اللَّهُ مَغَانِمَ							
उन्होंने ने वह हासिल की	और है अल्लाह	ग़ालिब	हिक्मत वाला	19	वादा किया अल्लाह ने	ग़नीमतें	
كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَلَ لَكُمْ هَذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ							
कसूरत से	तुम लोगे उन्हें	तो जल्द दे दी उस ने	तुम्हें	यह	और रोक दिए	हाथ	लोग
عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٢٠﴾							
तुम से	और ताकि हो	एक निशानी	मोमिनों के लिए	और वह हिदायत दे तुम्हें	रास्ता	सीधा	20
وَأُخْرَىٰ لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا وَكَانَ اللَّهُ							
और एक और (फ़तह)	तुम ने काबू नहीं पाया	उस पर	घेर रखा है अल्लाह	उस को	और है अल्लाह		
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢١﴾ وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا							
पर	हर शै	कुदरत रखने वाला	21	और अगर	तुम से लड़ते	वह जिन्हें ने कुफ़ किया (काफ़िर)	अलबत्ता वह फेरते
الْأَذْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي							
पीठ (जमा)	फिर	वह न पाते	कोई दोस्त	और न कोई मददगार	22	अल्लाह का दस्तूर	वह जो
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ وَلَكِنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾							
गुज़र चुका	इस से क़बल	और तुम हरगिज़ न पाओगे	अल्लाह के दस्तूर में	कोई तबदीली	23		

٢
١٠

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ						
और वह	जिस ने रोका	उन के हाथ	तुम से	और तुम्हारे हाथ	उन से	दरमियान (वादी-ए) मक्का में
مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا (24)						
उस के बाद	कि फतह मन्द किया तुम्हें	उन पर	और है अल्लाह	तुम जो कुछ करते हो उसे	देखने वाला	24
هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ						
वह यह	जिन्होंने ने कुफ़ किया	और तुम्हें रोका	से	मसजिदे हराम	और कुर्वानी के जानवर	
مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَحَلَّهُ ۚ وَلَوْ لَا رِجَالٌ مُؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُؤْمِنَاتٌ						
रुके हुए	कि वह पहुँचे	अपना मुक़ाम	और अगर न	मोमिन (जमा)	और मोमिन औरतें	
لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَّوَّهُمْ فِتْصِبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ						
तुम नहीं जानते उन्हें	कि	तुम उनको पामाल करदेते	तुम्हें पहुँच जाता	उन से	सदमा - नुक़सान	नादानिस्ता
لِيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ						
ताकि दाख़िल करे अल्लाह	अपनी रहमत में	जिसे वह चाहे	अगर वह जुदा हो जाते	अलवत्ता हम अज़ाब देते	उन लोगों को	
كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا (25) إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا						
जो काफ़िर हुए	उन में से	अज़ाब	दर्दनाक	25	जब	की
فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ						
अपने दिलों में	ज़िद	ज़िद	जमानाए जाहिलियत	तो अल्लाह ने उतारी	अपनी तसल्ली	
عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى						
अपने रसूल (स) पर	और मोमिनों पर	और उन पर लाज़िम फ़रमा दिया	तक़वे की बात			
وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلُهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا (26)						
और वह थे	ज़ियादा हक़दार उस के	और उस के अहल	और है अल्लाह	हर शै का	जानने वाला	26
لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلَنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ						
यकीनन	सच्चा दिखाया अल्लाह ने	अपने रसूल (स) को	खाब	हकीकत के मुताबिक़	अलवत्ता तुम ज़रूर दाख़िल होंगे	मसजिदे हराम
إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ۚ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ ۚ						
अगर	अल्लाह ने चाहा	अमन ओ अमान के साथ	मुंडवाओगे	अपने सर	और (बाल) कटवाओगे	
لَا تَخَافُونَ ۚ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ						
तुम्हें कोई खौफ़ न होगा	पस उस ने मालूम कर लिया	जो तुम नहीं जानते	पस कर दी उस ने	उस से बरे (पहले)	इस	
فَتْحًا قَرِيبًا (27) هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ						
एक करीबी फ़तह	27	वह	जिस ने भेजा	अपना रसूल (स)	हिदायत के साथ	और दीन
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۚ وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا (28)						
ताकि उसे ग़ालिब कर दे	पर	दीन	तमाम	और काफी है	अल्लाह	गवाह
28						

और वही है जिस ने वादीए मक्का में उन के हाथ तुम से रोके और तुम्हारे हाथ उन से, उस के बाद कि तुम्हें उन पर फतह मन्द किया, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे है देखने वाला। (24)

यह वह लोग हैं जिन्होंने ने कुफ़ किया और तुम्हें मसजिदे हराम से रोका, और रुके हुए करवानी के जानवरों को उन के मुकाम पर पहुँचने से रोका, और (हम तुम्हें क़ताल की इजाज़त देते) अगर (शहरे मक्का में) ऐसे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें न होते जिन्हें तुम नहीं जानते कि तुम उन्हें पामाल कर देते, पस उन से तुम्हें पहुँच जाता सदमा (नक्सान) नादानिस्ता। (ताख़ीर इस लिए हुई) ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाखिल करे, अगर वह जुदा हो जाते तो हम अज़ाब देते उन में से काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब। (25)

जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की, ज़िद (हट) जमानाए जाहिलियत की तो अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर और मोमिनों पर अपनी तसल्ली उतारी और उन्हें लाज़िम फ़रमाया (काइम रखा) तक़वे की बात पर, और वही उस के ज़ियादा हक़दार और उस के अहल थे, और अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (26)

यकीनन अल्लाह ने अपने रसूल (स) को सच्चा ख़ाब हकीकत के मुताबिक़ दिखाया कि अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर मसजिदे हराम में दाखिल होंगे अमन ओ अमान के साथ, अपने सर मुंडवाओगे और बाल कटवाओगे, तुम्हें कोई खौफ़ न होगा, पस उस ने मालूम कर लिया जो तुम नहीं जानते थे, पस उस ने कर दी उस (फतहे मक्का) से पहले ही एक करीबी फतह। (27)

वही है जिस ने अपने रसूल (स) को भेजा हिदायत और दीने हक़ के साथ ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, और अल्लाह की गवाही काफी है। (28)

मुहम्मद (स) अल्लाह के रसूल है, और जो लोग उन के साथ हैं वह काफ़िरों पर बड़े सख़्त हैं, आपस में रहम दिल है, तू उन्हें देखेगा रुकूअ करते, सिज्दा रेज़ होते, वह तलाश करते हैं अल्लाह का फ़ज़ल और (उस की) रज़ा मन्दी, उन की अ़लामत उन के चेहरों पर सिज्दों के असर (निशानात) हैं, यह उन की सिफ़त तौरेत में (मज़कूर) है और उन की यह सिफ़त इन्ज़ील में है, जैसे एक खेती, उस ने अपनी सुई निकाली, फिर उसे कव्वी किया, फिर वह मोटी हुई, फिर वह अपनी नाल पर खड़ी हो गई, वह किसानों को भली लगती है ताकि उन काफ़िरों को गुस्से में लाए (उन के दिल जलाए), अल्लाह ने वादा किया है उन से जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अ़मल किए, मग़्फ़िरत और अज़रे अज़ीम का। (29)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ऐ मोमिनो! अल्लाह और उस के रसूल (स) के आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

ऐ मोमिनो! नबी (स) की आवाज़ पर तुम अपनी आवाज़ें ऊँची न करो, और उन के सामने ज़ोर से न बोलो, जैसे तुम एक दूसरे से बुलन्द आवाज़ में गुफ़्तगू करते हो, कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत (न) हो जाएं और तुम्हें ख़बर भी न हो। (2)

वेशक जो लोग अल्लाह के रसूल (स) के नज़्दीक (सामने) अपनी आवाज़ें पस्त रखते हैं, यह वह लोग हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए आज़माया है, उन के लिए मग़्फ़िरत और अज़रे अज़ीम है। (3)

वेशक जो लोग आप (स) को पुकारते हैं हुज़रों के बाहर से, उन में से अक्सर अ़क़ल नहीं रखते। (4)

مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ							
आपस में	रहम दिल	काफ़िरों पर	बड़े सख़्त	उन के साथ	और जो लोग	अल्लाह के रसूल	मुहम्मद (स)
تَرِبُهُمْ رُكْعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا سِيمَاهُمْ							
उन की अ़लामत	और रज़ा मन्दी	अल्लाह से - का	फ़ज़ल	वह तलाश करते हैं	सिज्दा रेज़ होते	रुकूअ करते	तू उन्हें देखेगा
فِي وُجُوهِهِمْ مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَمَثَلُهُمْ							
और उन की मिसाल (सिफ़त)	तौरेत में	उन की मिसाल (सिफ़त)	यह	सिज्दों का असर	से	उन के चेहरों में - पर	
فِي الْإِنْجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ							
फिर वह खड़ी हो गई	फिर वह मोटी हुई	फिर उसे कव्वी किया	अपनी सुई	उस ने निकाली	जैसे एक खेती	इन्ज़ील में	
عَلَىٰ سَوْقِهِ يُعْجَبُ الزَّرَّاعُ لِيَغِیْظَ بِهِمُ الْكُفَّارُ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ							
उन से जो	वादा किया अल्लाह ने	काफ़िरों	उन से	ताकि गुस्से में लाए	किसान (जमा)	वह भली लगती है	अपनी जड़ (नाल) पर
أَمِنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٢٩﴾							
29	अज़ीम	और अज़र	मग़्फ़िरत	उन में से	और उन्होंने ने आमाल किए अच्छे	ईमान लाए	
آيَاتُهَا ١٨ ﴿٤٩﴾ سُورَةُ الْحُجُرَاتِ ﴿٢٩﴾ زُكُورَاتُهَا ٢							
18 आयात 2 रुकूआत कमरे (49) सूरतुल हजुरात							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْدِمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ							
और उस का रसूल (स)	अल्लाह के सामने - आगे	न आगे बढ़ो तुम	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ			
وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا							
न ऊँची करो	मोमिनो	ऐ	1	जानने वाला	सुनने वाला	वेशक अल्लाह	और डरो अल्लाह से
أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ							
जैसे बुलन्द आवाज़	गुफ़्तगू में	उस के सामने	और न ज़ोर से बोलो	नबी (स) की आवाज़	ऊपर - पर	अपनी आवाज़ें	
بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿٢﴾ إِنَّ							
वेशक	2	न जानते (ख़बर भी न) हो	और तुम	तुम्हारे अ़मल	अकारत हो जाएं	कहीं	वाज़ (दूसरे) से तुम्हारे वाज़ (एक)
الَّذِينَ يَغْضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ							
जो - जिन	यह वह लोग	अल्लाह का रसूल (स)	नज़्दीक	अपनी आवाज़ें	पस्त रखते हैं	जो लोग	
امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِيَتَّقُوا لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٣﴾ إِنَّ							
वेशक	3	अज़ीम	और अज़र	मग़्फ़िरत	उन के लिए	परहेज़गारी के लिए	उन के दिल
الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤﴾							
4	अ़क़ल नहीं रखते	उन में से अक्सर	हुज़रों	बाहर से	आप (स) को पुकारते हैं	जो लोग	

عند التّأخّر ١٢

ع ١٢

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ٥										
वख़शने वाला	और अल्लाह	उन के लिए	बेहतर	अलबत्ता होता	उन के पास	आप (स) निकल आते	यहां तक कि	सब्र करते	अलबत्ता वह	और अगर
تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ٦										
कहीं	तो खूब तहकीक़ कर लिया करो	ख़बर ले कर	कोई फ़ासिक् बंद किर्दार	आए तुम्हारे पास	अगर	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	5	मेहरबान	
أَن فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَوَّزَهُ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ أُولَٰئِكَ هُمُ الرُّشْدُونَ ٧										
अलबत्ता तुम मुशकिल में पड़ो	कामों से -में	अकसर	में	अगर वह तुम्हारा कहा मानें	अल्लाह का रसूल (स)	तुम्हारे दरमियान	कि			
مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ٨										
से - के	दो गिरोह	और अगर	8	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	और नेमत	अल्लाह से - के		
فَاصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ٩										
उन दोनों में से एक	फिर अगर ज़ियादती करे	उन दोनों के दरमियान	तो सुलह करा दो तुम	वाहम लड़ पड़ें	मोमिन (जमा)					
ثُمَّ تَرْحَمُونَ ١٠										
क्या अज़ब	(दूसरे) गिरोह का	एक गिरोह	न मज़ाक़ उड़ाए	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	10	रहम किया जाए			
وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ بِئْسَ الْأَسْمُ مِّنْهُمْ ١١										
वहतर	कि वह हों	क्या अज़ब	औरतों से - का	और न औरतें	उन से	बेहतर	कि वह हों			
وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ بِئْسَ الْأَسْمُ مِّنْهُمْ ١١										
बुरा नाम	बुरे अलकाब से	और वाहम न चिड़ाओ	वाहम (एक दूसरे)	और न ऐव लगाओ	उन से					
وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ بِئْسَ الْأَسْمُ مِّنْهُمْ ١١										
11	वह ज़ालिम (जमा)	तो यही लोग	तौबा न की (बाज़ न आया)	और जो - जिस	ईमान के बाद	फ़िस्क				

और अगर वह सब्र करते यहां तक कि आप (स) (खुद) उन के पास निकल आते तो उन के लिए अलबत्ता बेहतर होता, और अल्लाह बख़शने वाला मेहरबान है। (5) ऐ मोमिनो! अगर तुम्हारे पास कोई बदकार आए ख़बर ले कर तो खूब तहकीक़ कर लिया करो, कहीं नादानी से तुम किसी क़ौम को ज़रूर पहुँचा बैठो, फिर तुम्हें अपने किए पर नादिम होना पड़े। (6) और जान रखो कि तुम्हारे दरमियान अल्लाह के रसूल (स) हैं, अगर वह अकसर कामों में तुम्हारा कहा मानें तो तुम (खुद ही) मुशकिलात में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मुहब्बत दी और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता (पसंदीदा) कर दिया और उस ने तुम्हारे सामने (दिलों में) नापसंदीदा कर दिया कुफ़्र ओ फ़िस्क और नाफ़रमानी को, यही लोग (राहे) हिदायत पाने वाले हैं। (7) अल्लाह के तरफ़ से फ़ज़ल और नेमत, और अल्लाह है जानने वाला, हिक्मत वाला। (8) और अगर मोमिनों के दो गिरोह वाहम लड़ पड़ें तो तुम उन दोनों के दरमियान सुलह करा दो, फिर अगर ज़ियादती करे उन दोनों में से एक दूसरे पर, तो तुम उस से लड़ो जो ज़ियादती करता है, यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ रुजूअ कर ले, फिर जब वह रुजूअ कर ले तो तुम उन दोनों के दरमियान अदल के साथ सुलह करा दो और तुम ईसाफ़ करो, बेशक अल्लाह ईसाफ़ करने वालों को दोस्त रखता है। (9) इस के सिवा नहीं कि सब मोमिन भाई (भाई) हैं, पस तुम अपने दो भाइयों के दरमियान सुलह करा दो, अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (10) ऐ मोमिनो! (तुम से) एक गिरोह (मर्द) दूसरे गिरोह (मर्दाँ) का मज़ाक़ न उड़ाए, क्या अज़ब कि वह उन से बेहतर हों और न औरतें औरतों का (मज़ाक़) उड़ाए, क्या अज़ब कि वह उन से बेहतर हों, और एक दूसरे पर ऐव न लगाओ, और वाहम बुरे अलकाब से न चिड़ाओ (नाम न बिगाड़ो), ईमान के बाद फ़िस्क में नाम कमाना बुरा है, और जो बाज़ न आया तो यही लोग ज़ालिम हैं। (11)

ऐ मोमिनो! बहुत से गुमानों से बचो, वेशक बाज़ गुमान गुनाह होते हैं और एक दूसरे की टटोल में न रहा करो, और तुम में से कोई एक दूसरे की गीबत न करे, क्या पसंद करता है तुम में से कोई कि वह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए? तो तुम उस से घिन करोगे, और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (12)

ऐ लोगो! वेशक हम ने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया, और हम ने तुम्हें बनाया ज़ातें और कबीले ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो, वेशक अल्लाह के नज़्दीक तुम में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला वह है जो सब से ज़ियादा परहेज़गार है, अल्लाह वेशक जानने वाला, खबरदार है। (13)

देहाती कहते हैं कि हम ईमान ले आए, आप (स) फ़रमा दें: तुम ईमान नहीं लाए हो, बल्कि तुम कहो कि हम झुक गए हैं, और अभी दाख़िल नहीं हुआ तुम्हारे दिलों में ईमान, और अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करोगे तो अल्लाह तुम्हारे आमाल से कमी न करेगा कुछ भी, वेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (14)

इस के सिवा नहीं कि मोमिन वह लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान लाए, फिर वह शक में न पड़े और उन्होंने ने अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, यही लोग हैं सच्चे। (15)

आप (स) फ़रमा दें: क्या तुम अल्लाह को अपना दीन (दीनदारी) जतलाते हो? और अल्लाह जानता है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (16)

वह आप (स) पर एहसान रखते हैं कि वह इस्लाम लाए, आप (स) फ़रमा दें कि तुम मुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान न रखो, बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उस ने तुम्हें ईमान की तरफ़ हिदायत दी, अगर तुम सच्चे हो। (17)

वेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें जानता है, और अल्लाह वह (सब कुछ) देखने वाला है जो तुम करते हो। (18)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ						
बाज़ गुमान	वेशक	गुमानों से	बहुत से	बचो	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ
إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَ بَعْضُكُم بَعْضًا أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ						
कि वह खाए	तुम में से कोई	क्या पसंद करता है?	बाज़ (दूसरे) की	तुम में से (एक)	और गीबत न करे	और टटोल में न रहा करो एक दूसरे की
لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ (١٢)						
12	निहायत मेहरबान	तौबा कुबूल करने वाला	वेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो तुम	तो उस से तुम घिन करोगे	मुर्दा अपने भाई का गोश्त
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ						
और कबीले	ज़ातें	और बनाया तुम्हें	और एक औरत	एक मर्द से	वेशक हम ने पैदा किया तुम्हें	ऐ लोगो!
لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتَقَىٰكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ (١٣)						
13	बाख़्बर	जानने वाला	वेशक अल्लाह	तुम में सब से बड़ा परहेज़गार	अल्लाह के नज़्दीक	वेशक तुम में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला
قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوا وَلَكِنْ قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا						
और अभी नहीं	हम इस्लाम लाए हैं	तुम कहो	और लेकिन	तुम ईमान नहीं लाए	फ़रमा दें	हम ईमान लाए
يَدْخُلُ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُمْ						
तुम्हें कमी न करेगा	अल्लाह और उस का रसूल (स)	तुम इताअत करोगे	और अगर	तुम्हारे दिलों में	ईमान	दाख़िल हुआ
مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (١٤)						
वह लोग जो	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं	14	मेहरबान	बख़्शने वाला	वेशक अल्लाह
آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجْهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ						
अपने मालों से	और उन्होंने ने जिहाद किया	न पड़े शक में वह	फिर	और उस का रसूल (स)	अल्लाह पर	ईमान लाए
وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّدِيقُونَ قُلْ						
फ़रमा दें	15	सच्चे	वह	यही लोग	अल्लाह की राह में	और अपनी जानों से
أَتَعْلَمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا						
और जो	आस्मानों में	जो	जानता है	और अल्लाह	अपना दीन	क्या तुम जतलाते हो अल्लाह को?
فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (١٦)						
वह इस्लाम लाए	कि	आप (स) पर	वह एहसान रखते हैं	16	जानने वाला	चीज़ हर एक और अल्लाह
قُلْ لَا تَمُوتُوا عَلَىٰ إِسْلَامِكُمْ ۖ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ						
तुम पर	एहसान रखता है	बल्कि अल्लाह	अपने इस्लाम लाने का	मुझ पर	न एहसान रखो तुम	फ़रमा दें
أَنْ هٰذَاكُمْ لِإِيمَانٍ أَنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ (١٧)						
वह जानता है	वेशक अल्लाह	17	सच्चे	तुम हो	अगर	ईमान की तरफ़
غَيْبِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ (١٨)						
18	तुम करते हो	वह जो	देखने वाला	और अल्लाह	और ज़मीन	पोशीदा बातें आस्मानों की

آيَاتُهَا ٤٥ ﴿٥٠﴾ سُورَةُ ق ﴿٥٠﴾ رُكُوعَاتُهَا ٣									
आयात 45		(50) सूरह काफ़				रुकुआत 3			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
ق وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ									
काफ़	कसम है कुरआन	मजीद	1	बल्कि	उन्होंने ने तअज़्जुब किया	कि	उन के पास आया	एक डर सुनाने वाला	उन में से
فَقَالَ الْكَافِرُونَ هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٢﴾ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا									
तो कहा	काफिरों	यह	शै	अजीब	2	क्या जब हम मर गए	और हो गए	मिट्टी	
ذَلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا									
यह	दोबारा लौटना	दूर	3	हम जानते हैं	तहकीक हम	जो कुछ कम करती है	ज़मीन	उन में से	और हमारे पास
كِتَابٍ حَفِيزٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَرِيجٍ ﴿٥﴾									
महफूज़ रखने वाली किताब	4	बल्कि उन्होंने ने झुटलाया	हक को	जब वह आया उन के पास	पस वह	एक बात में	उलझी हुई	5	
أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا									
तो क्या वह नहीं देखते?	आस्मान की तरफ	उन के ऊपर	कैसे	बनाया उस को	और उस को आरास्ता किया	और उस में नहीं			
مِنْ فُرُوجٍ ﴿٦﴾ وَالْأَرْضِ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا									
कोई	शिगाफ़	6	और ज़मीन	हम ने फैलाया	और डाले (जमाए)	उस में	पहाड़ (जमा)	और उगाए	
فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ﴿٧﴾ تَبَصَّرَةٌ وَذَكَرَى لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ﴿٨﴾									
उस में	उस-के	हर किस्म	खुशनुमा	7	ज़रीआए बीनाई	और नसीहत	लिए-हर	रुज़्ज़ करने वाला बन्दा	8
وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبْرَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ جَبْتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ﴿٩﴾									
और हम ने उतारा	आस्मान से	पानी	बाबरकत	हम ने उगाए	उस से	बागात	और दाना (गल्ला)	काटने (खेती)	9
وَالْتَحَلَ بِسَقْتِ لَهَا طَلْعُ نَضِيدٍ ﴿١٠﴾ رَزَقًا لِلْعِبَادِ ۖ وَأَحْيَيْنَا بِهِ									
और खजूर के दरख़त	और बुलन्द ओ वाला	जिन के	खोशे	तह व तह	10	रिज़्क	बन्दों के लिए	और हम ने ज़िन्दा किया	उस से
بَلَدَهُ مَيِّتًا ۚ كَذَلِكَ الْخُرُوجُ ﴿١١﴾ كَذَبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ									
शहर (ज़मीन)	मुर्दा	इसी तरह	निकलना	11	झुटलाया	इन से कब्ल	नूह (अ) की कौम		
وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ﴿١٢﴾ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ﴿١٣﴾									
और अहले रस	और समूद	12	और आद	और फिरज़ौन	और भाई (जमा)	लूत (अ)			13
وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَبَ الرَّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ﴿١٤﴾									
और अहले अयका (बन के रहने वाले)	और कौमे तुब्बज़	सब ने झुटलाया	रसूलों	पस साबित हो गया	वादाए अज़ाब				14
أَفَعَيَّنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٥﴾									
तो क्या हम थक गए	पैदा करने से	पहली बार	बल्कि वह	शक में	से	पैदा करना अज़ सरे नौ			15

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है
काफ़ - कसम है कुरआन मजीद की। (1)
बल्कि उन्होंने ने तअज़्जुब किया कि उन के पास उन में से एक डर सुनाने वाला आया, तो काफिरों ने कहा कि यह अजीब शै है। (2)
क्या जब हम मर गए और मिट्टी हो गए (फिर जी उठेंगे?), यह दोबारा लौटना दूर (अज़ अक़्ल) है। (3)
तहकीक हम जानते हैं जो कुछ कम करती है उन (के अज़साम) में से ज़मीन और हमारे पास महफूज़ रखने वाली किताब है। (4)
बल्कि उन्होंने ने हक को झुटलाया जब वह उन के पास आया, पस वह एक उलझी हुई बात में (पड़े हैं)। (5)
तो क्या वह अपने ऊपर आस्मान की तरफ नहीं देखते? कि हम ने उस को कैसे बनाया! और हम ने उसको (सितारों से) आरास्ता किया और उस में कोई शिगाफ़ तक नहीं। (6)
और ज़मीन को हम ने फैलाया और उस में पहाड़ जमाए, और हम ने उस में उगाई हर किस्म की खुशनुमा (चीजें)। (7)
हर रुज़्ज़ करने वाले बन्दे के लिए ज़रीआए बीनाई ओ नसीहत। (8)
और हम ने आस्मान से बाबरकत पानी उतारा, फिर हम ने उस से बागात उगाए और खेती का गल्ला। (9)
और बुलन्द औ वाला खजूर के दरख़त, जिन के तह व तह (खूब गुंधे हुए) खोशे हैं। (10)
रिज़्क बन्दों के लिए और हम ने उस से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया, इसी तरह (कब्र से) निकलना होगा। (11)
इन से कब्ल झुटलाया नूह (अ) की कौम और अहले रस और समूद ने। (12)
आद और फिरज़ौन और लूत (अ) के भाइयों ने। (13)
और बन के रहने वालों ने और कौमे तुब्बज़ ने, सब ने रसूलों को झुटलाया, पस वादाए अज़ाब साबित हो गया। (14)
तो क्या हम पहली बार पैदा करने से थक गए हैं? बल्कि वह दोबारा पैदा करने की (तरफ़) से शक में हैं। (15)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है काफ़ - कसम है कुरआन मजीद की। (1)

बल्कि उन्होंने ने तअज़्जुब किया कि उन के पास उन में से एक डर सुनाने वाला आया, तो काफ़िरों ने कहा कि यह अजीब शै है। (2)

क्या जब हम मर गए और मिट्टी हो गए (फिर जी उठेंगे?), यह दोबारा लौटना दूर (अज़ अक़ल) है। (3)

तहकीक हम जानते हैं जो कुछ कम करती है उन (के अज़साम) में से ज़मीन और हमारे पास महफूज़ रखने वाली किताब है। (4)

बल्कि उन्होंने ने हक़ को झुटलाया जब वह उन के पास आया, पस वह एक उलझी हुई बात में (पड़े हैं)। (5)

तो क्या वह अपने ऊपर आस्मान की तरफ़ नहीं देखते? कि हम ने उस को कैसे बनाया! और हम ने उसको (सितारों से) आरास्ता किया और उस में कोई शिगाफ़ तक नहीं। (6)

और ज़मीन को हम ने फैलाया और उस में पहाड़ जमाए, और हम ने उस में उगाई हर किस्म की खुशनुमा (चीज़ें)। (7)

हर रुज़्ज़ करने वाले बन्दे के लिए ज़रीआए बीनाई ओ नसीहत। (8)

और हम ने आस्मान से बाबरकत पानी उतारा, फिर हम ने उस से बागात उगाए और खेती का गल्ला। (9)

और बुलन्द औ वाला खजूर के दरख़त, जिन के तह व तह (खूब गुंघे हुए) खोशे हैं। (10)

रिज़्क बन्दों के लिए और हम ने उस से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया, इसी तरह (क़ब्र से) निकलना होगा। (11)

इन से कब्ल झुटलाया नूह (अ) की कौम और अहले रस और समूद ने। (12)

आद और फिरज़ौन और लूत (अ) के भाइयों ने। (13)

और बन के रहने वालों ने और कौमे तुब्बज़ ने, सब ने रसूलों को झुटलाया, पस वादाए अज़ाब साबित हो गया। (14)

तो क्या हम पहली बार पैदा करने से थक गए हैं? बल्कि वह दोबारा पैदा करने की (तरफ़) से शक में हैं। (15)

और तहकीक हम ने इन्सान को पैदा किया और हम जानते हैं जो वसवसे गुज़रते हैं उस के जी में, और हम उस की शह रग से (भी) ज़ियादा करीब हैं। (16)

जब (वह कोई काम करता है) तो लिखने वाले लिख लेते हैं (एक) दाएं से और (एक) बाएं से बैठा हुआ। (17)

और वह कोई बात (ज़बान से) नहीं निकालता मगर उस के पास (लिखने के लिए) एक निगहवान तैयार बैठा है। (18)

और हक के साथ मौत की बेहोशी आ गई, यह वह है जिस से तू विदकता था। (19)

और सूर फूँका गया, यह वईद का दिन है। (20)

और हर शख्स (हमारे हुज़ूर) हाज़िर होगा, उस के साथ एक चलाने वाला और एक गवाही देने वाला होगा। (21)

तहकीक तू इस से गफ़लत में था, तो हम ने तुझ से तेरा (गफ़लत का) पर्दा हटा दिया। पस तेरी नज़र आज बड़ी तेज़ है। (22)

और कहेगा उस का हम नशीन (फ़रिश्ता) जो मेरे पास (आमाल नामा था) यह हाज़िर है। (23)

(हुक्म होगा) तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर नाशुक्रे सरकश को, (24)

भलाई को रोकने वाला, हद से गुज़रने वाला, शुबहात डालने वाला। (25)

जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद ठहराया, पस तुम उसे डाल दो सख़्त अज़ाब में। (26)

उस का हम नशीन (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे रब! मैं ने उसे सरकश नहीं बनाया, बल्कि वह परले दरजे की गुमराही में था। (27)

(अल्लाह) फ़रमाएगा: तुम मेरे सामने न झगड़ो, और मैं तुम्हारी तरफ़ पहले वादाए अज़ाब भेज चुका हूँ। (28)

मेरे पास बात नहीं बदली जाती और नहीं मैं जुल्म करने वाला बन्दों पर। (29)

जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे कि क्या तू भर गई? और वह कहेगी: क्या कुछ (और) मज़ीद है? (30)

और जन्नत परहेज़गारों के नज़दीक कर दी जाएगी, न होगी दूर। (31)

यह है जो तुम से वादा किया जाता था, हर रूज़़ करने वाले, निगहदाशत करने वाले के लिए। (32)

जो अल्लाह रहमान से बिन देखे डरा, और रूज़़ करने वाले दिल के साथ आया। (33)

(हम फ़रमाएंगे) उस में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन है। (34)

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ (١٦) إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّينَ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ (١٧) مَا يَلْفُظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ (١٨)							
और तहकीक हम ने पैदा किया	इन्सान	और हम जानते हैं	जो वसवसे गुज़रते हैं	उस के	उस का जी	और हम	बहुत करीब
उस के	से	रगें गर्दन (शह रग)	16	जब लेते (लिख लेते) हैं	दो (2) लेने (लिख लेने) वाले	दाएं से	
और बाएं से	बैठा हुआ	17	और नहीं निकालता	कोई बात	मगर	उस के पास	एक निगहवान तैयार बैठा हुआ
और आ गई	मौत की बेहोशी	हक के साथ	यह	जिस से तू था	उस से	भागता (विदकता)	19
सूर में	यह	वईद का दिन	20	और आएगा (हाज़िर होगा)	हर शख्स	उस के साथ	एक चलाने वाला
और गवाही देने वाला	तहकीक तू था	गफ़लत में	इस से	तो हम ने हटा दिया	तुझ से	तेरा पर्दा	21
पस तेरी नज़र	आज	बड़ी तेज़	22	और कहेगा	उस का हम नशीन	यह	हाज़िर
तुम दोनों डाल दो	जहन्नम में	हर नाशुक्रा	सरकश	24	मना करने वाला	माल के लिए	हद से गुज़रने वाला
वह जिस	ठहराया	अल्लाह के साथ	माबूद	दूसरा	पस उसे डाल दो तुम	अज़ाब में	सख़्त
कहेगा	उस का हम नशीन	हमारे रब	ऐ हमारे रब	मैं ने उसे सरकश नहीं बनाया	और लेकिन वह	था	गुमराही में
तुम न झगड़ो	मेरे पास - सामने	मेरे पहले भेज चुका हूँ	और मैं पहले	तुम्हारी तरफ़	वादा-ए-अज़ाब	28	नहीं बदली जाती
मेरे पास (हों)	और नहीं मैं	जुल्म करने वाला	बन्दों पर	29	जिस दिन	हम कहेंगे	जहन्नम से
और वह कहेगी	क्या	से-कुछ	मज़ीद है	30	और नज़दीक कर दी जाएगी	जन्नत	परहेज़गारों के लिए
यह जो तुम से वादा किया जाता था	हर रूज़़ करने वाले के लिए	निगहदाशत करने वाला	32	जो	डरा	रहमान (अल्लाह)	बिन देखे
और आया	रूज़़ करने वाले दिल के साथ	33	तुम उस में दाख़िल हो जाओ	सलामती के साथ	यह	हमेशा रहने का दिन	34

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ							
उन के लिए	जो वह चाहेंगे	उस में	और हमारे पास	और भी ज़ियादा	35	और कितनी हलाक की हम ने	इन से कब्ल
مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ ۖ هَلْ مِنْ مَّحِيصٍ ﴿٣٦﴾							
उम्मतें	वह ज़ियादा सख्त	इन से	पकड़ में	पस कुरेदने (छान मारने) लगे शहरों में	क्या	से (कहीं)	भागने की जगह
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۚ							
मृतवज्जेह	37	और तहकीक	हम ने पैदा किया	आस्मानों	और ज़मीन	और जो उन दोनों के दरमियान	छः (6) दिन में
وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ							
और नहीं हुआ हमें	किसी तकान ने	38	पस सवर करो तुम	पर	जो वह कहते हैं	और पाकीज़गी बयान करो	
فَسَبِّحْهُ وَادْبَارَ الشُّجُودِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾							
जगह करीब	41	जिस दिन	वह सुनेंगे	चीख	हक के साथ	यह	बाहर निकलने का दिन
إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ ۚ وَالْيَنَّا الْمَصِيرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقُّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرُ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ							
वह जल्दी करते हुए	यह	हशर	हमारे लिए	आसान	44	हम खूब जानते हैं	वह जो
وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۖ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٤٥﴾							
और नहीं आप (स)	उन पर	जवर करने वाले	पस नसीहत करें	कुरआन से	जो	वह डरता है	मेरी वईद
آيَاتُهَا ٦٠ ﴿٥١﴾ سُورَةُ الذَّارِئَاتِ ﴿٥١﴾ رُكُوعَاتُهَا ٣							
(51) सूरतुज़ ज़ारियात बिखेरने वालियाँ							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
وَالذَّارِئَاتِ ذُرُوءًا ﴿١﴾ فَالْحَمِلَاتِ وَفَرًا ﴿٢﴾ فَالْجَرِئَاتِ يُسْرًا ﴿٣﴾ فَالْمُقَسِّمَاتِ							
कसम है परागन्दा करने वाली (हवाओं)	उड़ा कर	1	फिर उठाने वाली	वोझ	2	फिर चलने वाली	नर्मी से
أَمْرًا ﴿٤﴾ إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾ وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾							
हुकम से	4	इस के सिवा नहीं	तुम्हें वादा दिया जाता है	अलबत्ता सच है	5	और वेशक	जज़ा ओ सज़ा
अलबत्ता वाक़े होने वाली							

उस में उन के लिए है जो वह चाहेंगे और हमारे पास और भी ज़ियादा है। (35)

और हम ने इन (अहले मक्का) से कब्ल कितनी (ही) हलाक की उम्मतें, वह पकड़ (कुव्वत) में इन से ज़ियादा सख्त थी, पस उन्हीं ने शहरों को छान मारा था, क्या कहीं भागने की जगह पा सके? (36)

वेशक उस में नसीहत (बड़ी इब्रत) है उस के लिए जिस का दिल (बेदार) हो, या कान लगाए, और वह मृतवज्जेह हो। (37)

और तहकीक हम ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और जो उन के दरमियान है, छः (6) दिन में, और हमें किसी तकान ने नहीं हुआ। (38)

पस जो वह कहते हैं तुम उस पर सवर करो, और अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करो, सूरज के तुलूअ और गुरुब से कब्ल। (39)

और रात में पस उस की पाकीज़गी बयान करो और नमाज़ों के बाद (भी)। (40)

और सुनो, जिस दिन पुकारने वाला करीब जगह से पुकारेगा। (41)

जिस दिन वह ठीक ठीक चीख सुनेंगे, यह (कब्रों से) बाहर निकलने का दिन होगा। (42)

वेशक हम ज़िन्दगी देते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी तरफ़ (ही) लौट कर आना है। (43)

जिस दिन ज़मीन शक़ हो जाएगी वह जल्दी करते हुए निकलेंगे, यह हशर हमारे लिए आसान है। (44)

जो वह कहते हैं हम खूब जानते हैं, और तुम उन पर जवर करने वाले नहीं, पस आप (स) (उस को) कुरआन से नसीहत करें, जो मेरी वईद (वादाए अज़ाब) से डरता है। (45)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कसम है (खाक) उड़ा कर परागन्दा करने वाली हवाओं की, (1)

फिर (वारिश का) वोझ उठाने वाली हवाओं की, (2)

फिर नर्मी से चलने वाली (कशतियों) की, (3)

फिर हुकम से तक्सीम करने वाले (फरिशतों) की, (4)

इस के सिवा नहीं कि तुम्हें वादा जो दिया जाता है अलबत्ता सच है। (5)

और वेशक जज़ा ओ सज़ा अलबत्ता वाक़े होने वाली है। (6)

और कसम है रास्तों वाले आस्मान की। (7)

वेशक तुम अलबत्ता मुख्तलिफ़ वात में हो। (8)

उस (कुरआन) से वही फेरा जाता है जो (अल्लाह की तरफ़ से) फेरा जाता है। (9)

अटकल दौड़ाने वाले मारे गए। (10)

जो वह ग़फ़लत में भूले हुए हैं। (11)

वह पूछते हैं कि जज़ा ओ सज़ा का दिन कब होगा? (12)

(हाँ) उस दिन वह आग पर उलटे सीधे पड़ेंगे। (13)

(अब) तुम अपनी शरारत (का मज़ा) चखो, यह है वह जिस की तुम जल्दी करते थे। (14)

वेशक मुत्तकी बागात और चश्मों में होंगे। (15)

लेने वाले जो दिया उन्हें उन का रब, वेशक वह इस से क़व्व नेकोकार थे। (16)

वह रात में थोड़ा सोते थे। (17)

और वक़्ते सुबह वह असतग़फ़ार करते (बख़ूशिश मांगते) थे। (18)

और उन के मालों में हक़ है सवाली और ग़ैर सवाली (तंगदस्त) के लिए। (19)

और ज़मीन में यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां हैं। (20)

और तुम्हारी ज़ात में (भी), तो क्या तुम देखते नहीं? (21)

और आस्मानों में तुम्हारा रिज़्क है और जो तुम से वादा किया जाता है। (22)

कसम है रब की आस्मानों और ज़मीन के, वेशक यह (कुरआन) हक़ है जैसे तुम बोलते हो। (23)

क्या आप (स) के पास ख़बर आई इब्राहीम (अ) के मुअज़्ज़ मेहमानों की? (24)

जब वह उस के पास आए तो उन्होंने ने “सलाम” कहा, उस (इब्राहीम अ) ने (भी) सलाम कहा, वह लोग नाशनासा थे। (25)

फिर वह अपने अहले ख़ाना की तरफ़ मुतवज्जेह हुए, फिर एक मोटा ताज़ा बछड़ा (के कबाब) ले आए। (26)

फिर उन के सामने रखा (और) कहा: क्या तुम खाते नहीं? (27)

तो उस (इब्राहीम अ) ने उन से (दिल में) डर महसूस किया, वह बोले कि तुम डरो नहीं, और उन्होंने ने उसे एक दाशिमन्द बेटे की वशारत दी। (28)

फिर उस की बीबी आगे आई हैरत से बोलती हुई, उस ने अपने चेहरे पर (हाथ) मारा और बोली: (मैं) बुढ़िया (और ऊपर से) बांझ। (29)

उन्होंने ने कहा: ऐसे ही फ़रमाया है तेरे रब ने, वेशक वह है हिक्मत वाला, जानने वाला। (30)

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ (٧) إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ (٨) يُؤَفِّكُ عَنْهُ									
और कसम है आस्मान की	रास्तों वाले	7	वेशक तुम	अलबत्ता में	वात	मुख्तलिफ़	8	फेरा जाता है	उस से
مَنْ أْفِكَ (٩) قُتِلَ الْخَرِصُونَ (١٠) الَّذِينَ هُمْ فِي عَمْرَةٍ سَاهُونَ (١١)									
जो फेरा जाता है	9	मारे गए	अटकल दौड़ाने वाले	10	वह जो	वह	ग़फ़लत में	भूले हुए हैं	11
يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمِ الدِّينِ (١٢) يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ (١٣) ذُوقُوا									
वह पूछते हैं	कब?	जज़ा औ सज़ा का दिन	12	उस दिन	वह	आग पर	उलटे सीधे पड़ेंगे	13	तुम चखो
فِتْنَتَكُمْ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ (١٤) إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ									
अपनी शरारत	यह	वह जो	तुम थे उस की	जल्दी करते	14	वेशक	मुत्तकी (नेक चलन)	बागात में	
وَعُيُونٍ (١٥) اخْذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ									
और चश्मे	15	लेने वाले	जो दिया उन्हें	उन का रब	वेशक वह	थे	क़व्व	इस	
مُحْسِنِينَ (١٦) كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ (١٧) وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ									
नेकोकार	16	वह थे	थोड़ा	रात से-में	वह सोते	17	और वक़्ते सुबह	वह	
يَسْتَغْفِرُونَ (١٨) وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْزُومِ (١٩)									
असतग़फ़ार करते	18	और में	उन के माल (जमा)	हक़	सवाली के लिए	और तंगदस्त (ग़ैर सवाली)	19		
وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ (٢٠) وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ (٢١) وَفِي									
और ज़मीन में	और निशानियां	यक़ीन करने वालों के लिए	20	और तुम्हारी ज़ात में	तो क्या तुम देखते नहीं?	21	और में		
السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ (٢٢) فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ									
आस्मानों	तुम्हारा रिज़्क	और जो तुम से वादा किया जाता है	22	कसम है रब की	आस्मानों	और ज़मीन	वेशक यह	हक़ है	
مِّثْلَ مَا أَنْتُمْ تَنْطِقُونَ (٢٣) هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ									
जैसे	जो तुम	बोलते हो	23	क्या	आई तुम्हारे पास	वात (ख़बर)	मेहमान	इब्राहीम (अ)	
الْمُكْرَمِينَ (٢٤) إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنْكَرُونَ (٢٥)									
इज़्ज़तदार	24	जब	वह आए	उस के पास	उस ने कहा	तो उन्होंने ने कहा	सलाम	उस ने कहा	25
فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ (٢٦) فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ									
फिर वह मुतवज्जेह हुआ	अपने अहले ख़ाना की तरफ़	पस लाया	मोटा ताज़ा बछड़ा	26	फिर वह सामने रखा	उन के	कहा		
أَلَا تَأْكُلُونَ (٢٧) فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَخَفْ وَبَشَرُوهُ بِغُلَامٍ									
क्या तुम खाते नहीं?	27	तो उस ने महसूस किया	उन से	कुछ डर	वह बोले	तुम डरो नहीं	और उन्होंने ने वशारत दी	एक बेटे की	
عَلِيمٍ (٢٨) فَأَقْبَلَتْ امْرَأَتُهُ فِي صَرَةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ									
दानिशमन्द	28	फिर आगे आई	उस की बीबी	हैरत से बोलती हुई	उस ने हाथ मारा	अपना चेहरा	और बोली	बुढ़िया	
عَقِيمٌ (٢٩) قَالُوا كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ (٣٠)									
बांझ	29	उन्होंने ने कहा	यूँ ही	फ़रमाया	तेरा रब	वेशक वह	वह	जानने वाला	30

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا									
उस ने कहा	तो क्या	मकसद तुम्हारा	ऐ	भेजे हुए (फ़रिश्तो)	31	उन्होंने ने जवाब दिया	वेशक हम भेजे गए हैं		
إِلَى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن طِينٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً									
तरफ़	मुज़रिम कौम (मुज़रिमों की कौम)	32	ताकि हम भेजें (बरसाएं)	उन पर	पत्थर	पकी हुई मिट्टी से	निशान किए हुए	33	
عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾ فَأَخْرَجْنَا مَن كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾									
तुम्हारे रब के हां	हद से गुज़र जाने वालों के लिए	34	पस हम ने निकाल लिया	जो था	उस में	से	ईमान वाले	35	
فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً									
पस हम ने न पाया	उस में	एक घर के सिवा	से - का	मुसलमानों	36	और हम ने छोड़ दी	उस में	एक निशानी	
لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾ وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ									
उन लोगों के लिए	जो डरते हैं	दर्दनाक अज़ाब	37	और मूसा (अ) में	जब हम ने उसे भेजा				
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَحَرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾									
फ़िरऔन की तरफ़	रोशन दलील (मोजिज़े) के साथ	38	तो उस ने सरताबी की	अपनी कुव्वत के साथ	और कहा	जादूगर	या दीवाना	39	
فَاخَذْنَاهُ وَجُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾ وَفِي عَادٍ									
पस हम ने उसे पकड़ा	और उस का लशकर	फिर हम ने उन्हें फेंक दिया	दर्या में	और वह	मलामत ज़दा	40	और आद में		
إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ									
जब हम ने भेजी	उन पर	नामुबारक आन्धी	41	वह न छोड़ती थी	किसी शै को	आती			
عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلْنَاهُ كَالرَّمِيمِ ﴿٤٢﴾ وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُم تَمَتَّعُوا									
जिस पर	मगर उसे कर देती	गली सड़ी हड्डी की तरह	42	और समूद में	जब कहा गया	उन को	फाइदा उठा लो		
حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَاخَذَتْهُمْ الصَّعِقَةُ									
एक मुद्दत तक	43	तो उन्होंने ने सरकशी की	से	अपने रब का हुक्म	पस उन्हें पकड़ा	विजली की कड़क			
وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٤٤﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُتَتَّصِرِينَ ﴿٤٥﴾									
और वह	देखते थे	44	पस उन में सकत न रही	खड़ा होने की	और वह न थे	खुद अपनी मदद करने वाले	45		
وَقَوْمٌ نُوحٍ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِقِينَ ﴿٤٦﴾									
और नूह (अ) की कौम	उस से कब्ल	वेशक वह	थे	लोग नाफ़रमान	46				
وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾ وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا									
और आस्मान	हम ने उसे बनाया	हाथ (कुव्वत) से	और वेशक हम	वसीज़ल कुदरत है	47	और ज़मीन	हम ने फ़र्श बनाया उसे		
فَنِعْمَ الْمُهَيَّدُونَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ									
पस हम कैसा अच्छा बिछाने वाले हैं	48	और से	हर शै	हम ने पैदा किए	दो जोड़े (क़िस्म)	ताकि तुम			
تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾ فَفَرُّوْا إِلَى اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾									
नसीहत पकड़ो	49	पस तुम दौड़ो	अल्लाह की तरफ़	वेशक मैं	तुम्हारे लिए	उस से	डर सुनाने वाला	50	वाज़ेह

उस (इब्राहीम अ) ने कहा ऐ फ़रिश्तो! तुम्हारा मकसद क्या है? (31) उन्होंने ने जवाब दिया: वेशक हम मुज़रिमों की कौम की तरफ़ भेजे गए हैं। (32) ताकि हम उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर (संगरेजे) बरसाएं। (33) तुम्हारे रब के हाँ हद से गुज़र जाने वालों के लिए निशान किए हुए। (34) पस हम ने निकाल लिया (उन्हें) जो उस (शहर) में ईमान वाले थे। (35) पस हम ने उस (शहर) में (लूत अ) के सिवा मुसलमानों का घर न पाया। (36) और हम ने छोड़ दी दर्दनाक अज़ाब से डरने वालों के लिए उस शहर में एक निशानी। (37) और मूसा (अ) में (भी एक निशानी) है, जब हम ने उसे फ़िरऔन की तरफ़ भेजा रोशन मोजिज़े के साथ। (38) तो उस (फ़िरऔन) ने अपनी कुव्वत (अरकाने सलतनत) के साथ सरताबी की और कहा कि यह जादूगर या दीवाना है। (39) पस हम ने उसे और उस के लशकर को पकड़ा, फिर हम ने उन्हें फेंक दिया दर्या में और वह मलामत ज़दा (रह गया)। (40) और (तुम्हारे लिए निशानी है) आद में, जब हम ने उन पर नामुबारक आन्धी भेजी। (41) वह किसी शै को न छोड़ती थी जिस पर वह आती मगर उसे एक गली सड़ी हड्डी की तरह कर देती। (42) और समूद में (भी एक निशानी है) जब उन्हें कहा गया कि एक (थोड़ी) मुद्दत और फाइदा उठा लो। (43) तो उन्होंने ने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, पस उन्हें विजली की कड़क ने आ पकड़ा उन के देखते देखते। (44) पस उन में खड़ा होने की सकत न रही और न खुद अपनी मदद कर सकते थे। (45) और नूह (अ) की कौम को उस से कब्ल (हम ने हलाक किया), वेशक वह नाफ़रमान लोग थे। (46) और हम ने आस्मान को बनाया अपने ज़ोर से और वेशक हम उस की कुदरत रखते हैं। (47) और हम ने ज़मीन को (बतौर) फ़र्श बनाया, और हम कैसा अच्छा बिछाने वाले हैं। (48) और हर शै से हम ने दो क़िस्म पैदा की ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (49) पस तुम अल्लाह की तरफ़ दौड़ो, वेशक मैं तुम्हारे लिए उस (की तरफ़) से वाज़ेह डराने वाला हूँ। (50)

और अल्लाह के साथ किसी दूसरे को माबूद न ठहराओ, मैं वेशक तुम्हारे लिए उस (की तरफ) से वाज़ेह डर सुनाने वाला हूँ। (51) इसी तरह नहीं आया कोई रसूल (उन के पास) जो इन से पहले थे मगर उन्होंने ने (उसे) जादूगर या दीवाना कहा। (52) क्या उन्होंने ने एक दूसरे को उस की वसीयत की है? बल्कि वह सरकश लोग है। (53) पस आप (स) उन से मुँह मोड़ लें तो आप (स) पर कोई इल्ज़ाम नहीं। (54) और आप (स) समझाएँ, वेशक समझाना ईमान लाने वालों को नफ़ा देता है। (55) और मैं ने पैदा किए ज़िन्न और इन्सान सिर्फ़ इस लिए कि वह मेरी इबादत (बन्दगी और फ़रमावरदारी) करें। (56) मैं उन से कोई रिज़्क नहीं मांगता और मैं नहीं चाहता कि वह मुझे खिलाएं। (57) वेशक अल्लाह ही राज़िक है, कुव्वत वाला, निहायत कुदरत वाला। (58) पस वेशक जिन लोगों ने जुल्म किया उन के लिए (अज़ाब के) पैमाने हैं, जैसे पैमाने उन के साथियों के लिए थे, पस वह जल्दी न करें। (59) सो उन लोगों के लिए बरबादी है जिन्होंने उन से वादा किया जिस का उन से वादा किया जाता है। (60) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कसम है तूरे सीना की। (1) और लिखी हुई किताब की, (2) खुले औराक में। (3) और बैते मज़मूर (फ़रिश्तों के क़अवाए आस्मानी) की। (4) और बुलन्द छत की। (5) और जोश मारते दर्या की। (6) वेशक तेरे रब का अज़ाब ज़रूर वाक़े होने वाला है। (7) उसे कोई टालने वाला नहीं। (8) जिस दिन थरथराएगा आस्मान (बुरी तरह) थरथरा कर, (9) और चलेंगे पहाड़ चलने की तरह (उड़े फिरेंगे)। (10) सो उस दिन झुटलाने वालों के लिए बरबादी है। (11) वह जो मशग़ले में (बेहदगी से) खेलते हैं। (12) जिस दिन वह जहन्नम की आग की तरफ़ धक्के दे कर धकेले जाएंगे। (13) यह है वह आग जिस को तुम झुटलाते थे। (14)

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ إِنِّي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥١﴾ كَذَلِكَ							
और तुम न ठहराओ	अल्लाह के साथ	कोई दूसरा माबूद	वेशक मैं	तुम्हारे लिए	उस से	वाज़ेह डर सुनाने वाला	इसी तरह 51
مَا آتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٥٢﴾							
नहीं आया	वह जो	इन से पहले	कोई रसूल	मगर	उन्होंने ने कहा	जादूगर	या दीवाना 52
اتَّوَاصُوا بِهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٥٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمَلُومٍ ﴿٥٤﴾							
क्या उन्होंने ने एक दूसरे को वसीयत की उस की	बल्कि वह	लोग	सरकश	53	पस आप (स) मुँह मोड़ लें उन से	तो नहीं आप (स)	कोई इल्ज़ाम 54
وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ							
आप (स) समझाएँ	तो वेशक	समझाना	नफ़ा देता है	ईमान लाने वाले	55	और नहीं पैदा किया मैं ने	और ज़िन्न इन्सान
إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ							
मगर-सिर्फ़	इस लिए कि वह मेरी इबादत करें	56	मैं नहीं मांगता	उन से	कोई रिज़्क	और मैं नहीं चाहता	कि
يُطْعَمُونَ ﴿٥٧﴾ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٨﴾ فَإِنَّ							
वह मुझे खिलाएं	57	वेशक अल्लाह	वह	राज़िक	कुव्वत वाला	निहायत कुदरत वाला	58 पस वेशक
لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِّثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥٩﴾							
उन लोगों के लिए जिन्होंने ने जुल्म किया	डोल (पैमाने)	जैसे	पैमाने	उन के साथी	पस वह जल्दी न करें	59	
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾							
सो बरबादी	उन लोगों के लिए जिन्होंने ने इन्कार किया	से-का	उन का दिन	वह जिस	उन से वादा किया जाता है	60	
آيَاتُهَا ٤٩ ﴿٥٢﴾ سُورَةُ الطُّورِ ﴿٥٢﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢							
रुक़आत 2 (52) सूरतुत तूर आयात 49							
पहाड़							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
وَالطُّورِ ﴿١﴾ وَكُتِبَ مَسْطُورٍ ﴿٢﴾ فِي رَقٍّ مَّنْشُورٍ ﴿٣﴾ وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ﴿٤﴾							
कसम तूरे (सीना)	1	और किताब	लिखी हुई	2	और वाक़े में	खुले	3 और बैते मज़मूर 4
وَالسَّفِّ الْمَرْفُوعِ ﴿٥﴾ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ﴿٦﴾ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾							
और छत	वुलन्द	5	और दर्या जोश मारता	6	वेशक	तेरे रब का अज़ाब	7 ज़रूर वाक़े होने वाला
مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ﴿٨﴾ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾							
नहीं उस को	कोई टालने वाला	8	जिस दिन थरथराएगा	आस्मान	थरथरा कर	9	और चलेंगे पहाड़ 10 चलने की तरह
فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾ الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ﴿١٢﴾ يَوْمَ							
सो बरबादी	उस दिन	झुटलाने वालों के लिए	11	वह जो	वह	मशग़ला में	12 खेलते हैं जिस दिन
يُدْعُونَ إِلَى نَارِ جَهَنَّمَ دَعَا ﴿١٣﴾ هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿١٤﴾							
वह धकेले जाएंगे	तरफ़	जहन्नम की आग	धक्के दे कर	13	यह है	वह आग जो	तुम थे 14 उस को झुटलाते

أَفَسِحْرٌ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿١٥﴾ اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا ^١							
तो क्या जादू	यह	या तुम	दिखाई नहीं देता तुम्हें	15	उस में दाखिल हो जाओ	फिर तुम सब्र करो	न सब्र करो
سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ							
बराबर	तुम पर	सो इस के सिवा नहीं कि तुम्हें बदला दिया जाएगा	जो तुम करते थे	16	वेशक मुन्तकी (जमा)		
فِي جَنَّتٍ وَنَعِيمٍ ﴿١٧﴾ فَكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ^٢ وَوَقَّاهُمْ							
बागों में	और नेमतों	17	खुश होंगे	उस के साथ जो दिया उन्हें	उन के रब ने	और बचाया उन्हें	
رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿١٨﴾ كُلُّوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾							
उन के रब ने	अज़ाब	दोज़ख़	18	तुम खाओ	और तुम पियो	रचते पचते	उस के बदले में
مُتَّكِئِينَ عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ^٣ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢०﴾ وَالَّذِينَ							
तकिया लगाए हुए	तख्तों पर	सफ़ बस्ता	और उन की ज़ौजियत में दिया हम ने	बड़ी आँखों वाली हूरें	20	और जो लोग	
آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا							
ईमान लाए	और उन्होंने ने पैरवी की	उन की औलाद	ईमान के साथ	हम ने मिला दिया	उन के साथ	उन की औलाद	और
الَّتِي لَهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ﴿٢١﴾							
कमी नहीं की हम ने	उन के अमल से	कोई चीज़ (कुछ)	हर आदमी	उस में जो	उस ने कमाया (आमाल)	रहन	21
وَأَمَدَدْنَاهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢٢﴾ يَتَنَازَعُونَ فِيهَا							
और हम उन की मदद करेंगे	फलों के साथ	और गोश्त	उस से	जो उन का जी चाहेगा	22	लपक लपक कर ले रहे होंगे	उस में
كَاسًا لَا لَعْوُ فِيهَا وَلَا تَأْتِيمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَهُمْ							
प्याला	न वकवास	उस में	और न गुनाह की बात	23	और इर्द गिर्द फिरेंगे	उन पर-के	उन के लिए
كَانَتْهُمْ لَوْلُؤُ مَكْنُونٌ ﴿٢٤﴾ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ							
गोया वह	मोती	छुपा कर रखे हुए	24	और मुतवज्जेह होगा	उन में से बाज़ (एक)	बाज़ पर (दूसरे की तरफ)	
يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾							
आपस में पूछते हुए	25	वह कहेंगे	वेशक हम थे	पहले	अपने अहले खाना में	डरते थे	26
فَمَنْ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَفْنَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ							
तो एहसान किया अल्लाह ने	हम पर	और हमें बचा लिया	अज़ाब	गर्म हवा (लू)	27	वेशक हम थे	इस से कब्ल
نَدْعُوهُ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكِّرْ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ							
हम उस को पुकारते	वेशक वह	वही	एहसान करने वाला	रहम करने वाला	28	पस आप (स) नसीहत करें	तो आप (स) नहीं
بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَتَرَبَّصُ بِهِ							
काहिन	और न	दीवाना	29	क्या	वह कहते हैं	शायर	हम मुन्तज़िर हैं
رَيْبِ الْمُنُونِ ﴿٣०﴾ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ﴿٣١﴾							
हवादिस	ज़माना	30	फ़रमा दें	तुम इन्तिज़ार करो	वेशक मैं	तुम्हारे साथ	से
31	इन्तिज़ार करने वाले						

तो क्या यह जादू है? या तुम को दिखाई नहीं देता? (15)

उस में दाखिल हो जाओ, फिर तुम सब्र करो या न सब्र करो, तुम्हारे लिए बराबर है, इस के सिवा नहीं कि जो तुम करते थे तुम्हें (उस का) बदला दिया जाएगा। (16)

वेशक मुन्तकी (वहिशत के) बागों और नेमतों में होंगे। (17)

उस के साथ खुश होंगे जो उन के रब ने उन्हें दिया, और उन के रब ने उन्हें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया। (18)

तुम खाओ और पियो मज़े से (जी भर कर) उस के बदले में जो तुम करते थे। (19)

तख्तों पर सफ़ बस्ता तकिये लगाए हुए। और हम उन की शादी कर देंगे बड़ी आँखों वाली हूरों से। (20)

और जो लोग ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन की पैरवी की, हम ने उन की औलाद को उन के साथ मिला दिया और हम ने उन के अमल से कुछ कमी नहीं की, हर आदमी अपने आमाल में रहन है। (21)

और हम उन की मदद करेंगे फलों और गोश्त से, जो उन का जी चाहेगा। (22)

वह एक दोसरे से प्याले लपक लपक कर ले रहे होंगे जिस में न वकवास होगी न गुनाह की बात। (23)

और उन के इर्द गिर्द फिरेंगे खिदमतगार लड़के। गोया वह छुपा कर रखे हुए मोती हैं। (24)

और उन में से एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह होगा आपस में पूछते हुए। (25)

वह कहेंगे वेशक हम इस से पहले अहले खाना में डरते थे। (26)

तो अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें बचा लिया लू के अज़ाब से। (27)

वेशक इस से कब्ल हम उस को पुकारते थे, वेशक वही एहसान करने वाला, रहम करने वाला है। (28)

पस आप (स) नसीहत करते रहें, पस आप (स) अपने रब के फ़ज़ल से न काहिन हैं न दीवाने। (29)

क्या वह कहते हैं कि यह शायर है, हम उस के साथ हवादिस ज़माने के मुन्तज़िर हैं। (30)

आप (स) फ़रमा दें तुम इन्तिज़ार करो, वेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। (31)

क्या उन की अक़लें उन्हें यही सिखाती हैं? या वह सरकश लोग हैं। (32)

क्या वह कहते हैं कि उस ने उसे (कुरआन) को घड़ लिया है (नहीं) बल्कि वह ईमान नहीं लाते। (33)

तो चाहिए कि वह उस जैसी एक बात ले आएँ अगर वह सच्चे हैं। (34)

क्या वह पैदा किए गए हैं बग़ैर किसी शै (बनाने वाले) के, या वह (खुद) पैदा करने वाले हैं। (35)

क्या उन्होंने ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को? (नहीं) बल्कि वह यकीन नहीं रखते। (36)

क्या उन के पास तेरे रब (की रहमत) के खज़ाने हैं? या वह दारोगे हैं? (37)

क्या उन के पास कोई सीढ़ी है? जिस पर (चढ़ कर) वह सुनते हैं, तो चाहिए कि उन का सुनने वाला कोई खुली सनद लाए। (38)

क्या उस के बेटियाँ और तुम्हारे लिए बेटे? (39)

क्या आप (स) उन से मांगते हैं कोई अजर? कि वह तावान (के वोझ) से दबे जाते हैं। (40)

क्या उन के पास (इल्मे) ग़ैब है? कि वह लिख लेते हैं। (41)

क्या वह इरादा रखते हैं किसी दाओ का? तो जिन लोगों ने कुफ़ किया वही दाओ में गिरफ़्तार होंगे। (42)

क्या उन के लिए अल्लाह के सिवा कोई माबूद है? अल्लाह उस से पाक है जो वह शिर्क करते हैं। (43)

और अगर वह आस्मान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वह कहते हैं: बादल जमा हुआ एक के ऊपर एक। (44)

पस तुम उन को छोड़ दो यहाँ तक कि वह मिलें (देख लें) अपना वह दिन जिस में वह बेहोश कर दिए जाएंगे। (45)

जिस दिन उन का दाओ कुछ भी उन के काम न आएगा और न उन की मदद की जाएगी। (46)

और बेशक जिन लोगों ने जुल्म किया उन के लिए उस के अ़लावा अज़ाब है। लेकिन उन में अक़सर नहीं जानते। (47)

और आप (स) अपने रब के हुक्म पर सब्र करें, बेशक आप (स) हमारी हिफ़ाज़त में हैं और आप (स) अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करें जिस वक़्त आप (स) उठें। (48)

और रात में (भी), पस उस की पाकीज़गी बयान करें और सितारों के पीठ फेरते (गाइब होते) वक़्त (भी)। (49)

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهَذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٣٢﴾ أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ							
इस ने उसे घड़ लिया है	क्या वह कहते हैं?	32	सरकश लोग	या वह	यही	उन की अक़लें	क्या हुक्म देती (सिखाती) हैं उन्हें
بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾							
34	सच्चे	अगर वह है	इस जैसी	एक बात	तो चाहिए कि वह ले आएँ	33	वह ईमान नहीं लाते
أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾ أَمْ خَلَقُوا							
क्या उन्होंने ने पैदा किए?	35	पैदा करने वाले	या वह	बग़ैर किसी शै	से	क्या वह पैदा किए गए हैं	
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ بَلْ لَا يُوقِنُونَ ﴿٣٦﴾ أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ							
तेरा रब	खज़ाने	क्या उन के पास	36	वह यकीन नहीं रखते	बल्कि	और ज़मीन	आस्मान (जमा)
أَمْ هُمُ الْمُصَيِّطُونَ ﴿٣٧﴾ أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ فَلْيَأْتِ							
तो चाहिए कि लाए	उस में-पर	वह सुनते हैं	कोई सीढ़ी	क्या उन के लिए-पास	37	दारोगे	या वह
مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾ أَمْ لَهُ الْبَنَتْ وَلَكُمْ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾							
39	बेटे	और तुम्हारे लिए	बेटियाँ	क्या उस के लिए	38	खुली	कोई सनद
أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَّعْرَمٍ مُثْقَلُونَ ﴿٤٠﴾ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ							
ग़ैब	क्या उन के पास	40	दबे जाते हैं	तावान से	तो वह	कोई अजर	क्या तुम उन से मांगते हो
فَهُمْ يَكْتُوبُونَ ﴿٤١﴾ أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمْ							
वही	तो जिन लोगों ने कुफ़ किया	किसी दाओ	क्या वह इरादा रखते हैं	41	पस वह लिख लेते हैं		
الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾ أَمْ لَهُمْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾							
43	उस से जो शिर्क करते हैं	पाक है अल्लाह	अल्लाह के सिवा	कोई माबूद	क्या उन के लिए	42	दाओ में गिरफ़्तार होंगे
وَأَنْ يَرَوْا كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَرْكُومٌ ﴿٤٤﴾							
44	तह व तह (जमा हुआ)	बादल	वह कहते हैं	गिरता हुआ	आस्मान से	कोई टुकड़ा	वह देखें और अगर
فَذَرْهُمْ حَتَّى يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾ يَوْمَ							
जिस दिन	45	बेहोश कर दिए जाएंगे	उस में	वह जो	अपना दिन	वह मिलें	यहाँ तक कि
لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾ وَإِنْ							
और बेशक	46	मदद किए जाएंगे	और न वह	कुछ भी	उन का दाओ	उन से-का	न काम आएगा
لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾							
47	नहीं जानते	उन में से अक़सर	और लेकिन	वरे-अ़लावा उस	अज़ाब	उन लोगों के लिए जिन्होंने ने जुल्म किया	
وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ							
और आप (स)	पाकीज़गी बयान करें अपने रब की तारीफ़ के साथ	हमारी आँखों (हिफ़ाज़त) में	बेशक आप (स)	अपने रब के हुक्म पर	और आप (स)	सब्र करें	
حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾							
49	सितारों	और पीठ फेरते	पस उस की पाकीज़गी बयान करें	रात	और से (में)	48	आप (स) उठें

آيَاتُهَا ٦٢ ﴿٥٣﴾ سُورَةُ النَّجْمِ ﴿٥٣﴾ زُكُوعَاتُهَا ٣									
रुक़ा़त 3			(53) सूरतुन नज्म				आयात 62		
सितारा									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ﴿١﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ﴿٢﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ									
से	और वह नहीं	2	वह	और न	तुम्हारे	न वहके	1	वह गाइव	सितारे की
	वात करते		भटके		रफ़ीक़			होने लगे	क़सम
الْهَوَىٰ ﴿٣﴾ إِنَّ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ﴿٤﴾ عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ﴿٥﴾									
5	सख़्त कुव्वतों वाला	उस ने उसे	4	भेजी	वहि	वह सिर्फ़	नहीं	3	खाहिश
		सिखाया		जाती है					
ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ﴿٦﴾ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ﴿٧﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ﴿٨﴾									
8	फिर और	फिर वह	7	सब से	किनारे पर	और	6	फिर सामने	ताक़्तों
	नज़्दीक हुआ	नज़्दीक हुआ		बुलन्द		वह		आया	वाला
فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ﴿٩﴾ فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ﴿١٠﴾									
10	जो उस ने	अपना	तरफ़	तो उस ने	9	या उस से	दो किनारे	कमान	तो वह था
	वहि की	बन्दा		वहि की		कम			(रह गई)
مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ﴿١١﴾ أَفَتُمَرُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ رَآهُ									
और तहकीक़	जो उस ने	पर	तो क्या तुम	11	जो उस ने	दिल	न झूट	कहा	
उस ने देखा उसे	देखा		झगड़ते हो उस से		देखा				
نَزَلَهُ أُخْرَىٰ ﴿١٣﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ ﴿١٤﴾ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ ﴿١٥﴾									
15	जन्नतुल मावा	उस के	14	सिदरतुल मुन्तहा	नज़्दीक	13	दूसरी	मरतवा	
		नज़्दीक							
إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ﴿١٦﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ﴿١٧﴾									
17	और न हद	आँख	न कज़ी की	16	जो छा रहा था	सिदरह	जब	छा रहा था	
	से बढ़ी						छा रहा था		
لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ ﴿١٨﴾ أَفَرَأَيْتُمُ اللَّتَّ وَالْعُرَّىٰ ﴿١٩﴾									
19	और उज़्ज़ा	लात	तो क्या तुम	18	बड़ी	अपना	निशानियाँ	से	तहकीक़ उस
			ने देखा?			रब			ने देखी
وَمَنْوَةَ الثَّالِثَةِ الْآخَرَىٰ ﴿٢٠﴾ أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنْثَىٰ ﴿٢١﴾									
21	औरतें	और उस	मर्द	20	तीसरी एक और	और मनात			
		के लिए							
تِلْكَ إِذَا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ﴿٢٢﴾ إِنَّ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءُ سَمِيَتْهُمَا أَنْتُمْ									
तुम	तुम ने वह नाम	मगर-सिर्फ़	यह	नहीं	22	वेढंगी	यह बांट	यह	
	रख लिए हैं	नाम					तक़सीम		
وَأَبَاؤُكُمْ مَّا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۚ إِنَّ يَتَّبِعُونَ									
वह नहीं पैरवी	सनद	कोई	उस की	नहीं उतारी	अल्लाह ने	और	तुम्हारे बाप दादा		
करते									
إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ رَبِّهِمْ									
उन के रब से	और (हालांकि)	नफ़्स	और जो	खाहिश	मगर-सिर्फ़				
	पहुँच चुकी उन के पास	(जमा)			गुमान				
الْهُدَىٰ ﴿٢٣﴾ أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنَّىٰ ﴿٢٤﴾ فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾									
25	और दुनिया	पस अल्लाह ही के	24	जिस की वह	इन्सान के लिए	क्या	23	हिदायत	
		लिए आखिरत		तमन्ना करे					

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

सितारे की क़सम! जब वह गाइव होने लगे। (1)

तुम्हारे रफ़ीक़ (मुहम्मद स) न वहके और न वह भटके। (2)

और वह अपनी खाहिश से बात नहीं करते। (3)

वह सिर्फ़ वहि है जो भेजी जाती है। (4)

उस को सिखाया उस सख़्त कुव्वत वाले, ताक़्तों वाले (फ़रिश्ते) ने। (5)

फिर उस ने क़स्द किया (रसूल स के सामने आया)। (6)

और वह बुलन्द किनारे पर था। (7)

फिर वह नज़दीक हुआ, फिर और नज़दीक हुआ। (8)

तो वह कमान के दो किनारों के (फ़ासिले के) बराबर रह गया या उस से भी कम। (9)

तो उस ने वहि की अपने बन्दे की तरफ़ जो वहि की। (10)

जो उस ने (आँखों से) देखा (उस के) दिल ने तसदीक़ की। (11)

क्या जो उस ने देखा तुम उस से उस पर झगड़ते हो? (12)

और तहकीक़ उस ने उसे दूसरी मरतवा देखा। (13)

सिदरतुल मुन्तहा के नज़दीक। (14)

उस के नज़दीक जन्नतुल मावा (आरामगाहे बहिश्त) है। (15)

जब सिदरह पर छा रहा था जो छा रहा था। (16)

आँख ने न कजी की और न वह हद से बढ़ी। (17)

तहकीक़ उस ने अपने रब की बड़ी निशानियाँ देखीं। (18)

क्या तुम ने देखा है लात और उज़्ज़ा, (19)

और तीसरी एक और मनात को? (20)

क्या तुम्हारे लिए मर्द (बेटे) हैं और उस के लिए औरतें (बेटियाँ)? (21)

यह बांट तक़सीम वेढंगी है। (22)

यह (कुछ) नहीं सिर्फ़ नाम है जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, अल्लाह ने नहीं उतारी उस की कोई सनद, वह नहीं पैरवी करते मगर सिर्फ़ गुमान और खाहिशो नफ़्स की, हालांकि उन के रब की तरफ़ से उन के पास हिदायत पहुँच चुकी है। (23)

क्या इन्सान के लिए वह जो तमन्ना करे? (24)

पस अल्लाह ही के लिए आखिरत और दुनिया। (25)

और आस्मानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं जिन की सिफ़ारिश कुछ भी नफ़ा नहीं देती मगर उस के बाद कि इजाज़त दे अल्लाह जिस के लिए चाहे और पसंद फ़रमाए। (26)

वेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वह अलबत्ता फ़रिश्तों के नाम औरतों जैसे रखते हैं। (27)

और उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ़ गुमान की पैरवी करते हैं, और गुमान यकीन के मुकाबले में कुछ नफ़ा नहीं देता। (28)

पस आप (स) उस से मुँह फेर लें जो हमारी याद से रूगर्दा हुआ, और वह न चाहता हो सिवाए दुनिया की ज़िन्दगी। (29)

यह उन के इल्म की रसाई (हद) है, वेशक़ तेरा रब उसे खूब जानता है जो उस के रास्ते से गुमराह हुआ और वह उसे खूब जानता है जिस ने हिदायत पाई। (30)

और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो ज़मीन में है ताकि जिन लोगों ने बुराई की उन्हें उन के आमाल का बदला दे, और उन्हें जज़ा दे जिन लोगों ने भलाई के साथ नेकी की। (31)

जो छोटे गुनाहों के सिवा बड़े गुनाहों और बेहयाइयों से बचते हैं, वेशक़ तुम्हारा रब वसीअ मग़फ़िरत वाला है, वह तुम्हें खूब जानता है जब उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और जब तुम अपनी माँओं के पेटों में बच्चे थे, पस तुम अपने आप को पाकीज़ा न समझो, वह उसे खूब जानता है जिस ने परहेज़गारी की। (32)

तो क्या तू ने देखा उस को जिस ने रूगर्दानी की। (33)

और थोड़ा (माल) दिया और (फिर) बन्द कर दिया। (34)

क्या उस के पास इल्मे ग़ैब है? तो वह देख रहा है। (35)

क्या वह ख़बर नहीं दिया गया (क्या उसे ख़बर नहीं) जो मूसा (अ) के सहीफ़ों में है। (36)

और इब्राहीम (अ) जिस ने (अपना कौल) पूरा किया। (37)

कोई बोझ उठाने वाला नहीं उठाता किसी दूसरे का बोझ। (38)

और यह कि किसी इन्सान के लिए नहीं (किसी को नहीं मिलता) मगर उसी क़द्र जितनी उस ने कोशिश की, (39)

وَكَمْ مِّن مَّلَكٍ فِي السَّمُوتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا						
और कितने	फ़रिश्तों से	आस्मानों में	नफ़ा नहीं देती	उन की सिफ़ारिश	कुछ	मगर
مِّن بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَن يَشَاءُ وَيَرْضَىٰ (٢٦) إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ						
उस के बाद	कि	इजाज़त दे अल्लाह	जिस के लिए चाहे वह	और वह पसंद फ़रमाए	26	वेशक जो लोग ईमान नहीं रखते
بِالْآخِرَةِ لَيَسْمُؤْنَ الْمَلَكَةَ تَسْمِيَةَ الْإِنثَىٰ (٢٧) وَمَا لَهُمْ بِهِ						
आख़िरत पर	अलबत्ता वह रखते हैं नाम	फ़रिश्तों	नाम	औरतों जैसा	27	और नहीं उन्हें उस का
مِّن عِلْمٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ						
कोई इल्म	नहीं	वह पैरवी करते	मगर-सिर्फ़ गुमान	और वेशक़ गुमान	नफ़ा नहीं देता	यकीन से- मुकाबला
شَيْئًا (٢٨) فَأَعْرِضْ عَنْ مَّن تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا						
कुछ	28	पस मुँह फेर लें	से	जो	रूगर्दा हुआ	और वह न चाहता हो सिवाए
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا (٢٩) ذَلِكَ مَبْلَغُهُم مِّنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ						
दुनिया की ज़िन्दगी	29	यह	उन की रसाई	इल्म की	वेशक़	तेरा रब वह खूब जानता है
بِمَن ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَن اهْتَدَىٰ (٣٠) وَلِلَّهِ مَا فِي						
उसे जो	गुमराह हुआ	उस के रास्ते से	और वह	खूब जानता है	उसे- जिस	हिदायत पाई
उसे जो	गुमराह हुआ	उस के रास्ते से	और वह	खूब जानता है	उसे- जिस	हिदायत पाई
السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا						
आस्मानों	और जो	ज़मीन में	ताकि वह बदला दे	उन्हें जिन्हों ने	बुराई की	उस की जो उन्होंने ने किए (आमाल)
وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَىٰ (٣١) الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ						
और जज़ा दे	उन लोगों को जिन्हों ने	नेकी की	भलाई के साथ	31	जो लोग	वह बचते हैं कबीरा (बड़े) गुनाहों से
وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ						
और बेहयाइयों	मगर- सिवाए	छोटे गुनाह	वेशक़	तुम्हारा रब	वसीअ मग़फ़िरत वाला	और खूब जानता है वह
उस ने पैदा किया तुम्हें	ज़मीन से	और जब	तुम	बच्चे	में	पेट (जमा)
أَنْشَأَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۖ فَلَا تُزَكُّوْا						
उस ने पैदा किया तुम्हें	ज़मीन से	और जब	तुम	बच्चे	में	पेट (जमा)
أَنْفُسَكُمْ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ (٣٢) أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ (٣٣) وَأَعْطَىٰ						
अपने आप	वह खूब जानता है	उसे जो- जिस	परहेज़गारी की	32	तो क्या तू ने देखा	जिस ने रूगर्दानी की
فَلِيلًا وَآكَادَىٰ (٣٤) أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ (٣٥) أَمْ لَمْ يُنَبِّأْ						
थोड़ा सा	और उस ने बन्द कर दिया	34	क्या उस के पास	इल्मे ग़ैब	तो वह देख रहा है	35
بِمَا فِي صُحُفٍ مُّوسَىٰ (٣٦) وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ (٣٧) إِلَّا تَنْزُرُ						
वह जो	में	सहीफ़े	मूसा (अ)	36	और इब्राहीम (अ)	वह जो- जिस
وَازِرَةً وَّرَزَّ أُخْرَىٰ (٣٨) وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ (٣٩)						
कोई बोझ उठाने वाला	किसी दूसरे का बोझ	38	और यह कि	नहीं	किसी इन्सान के लिए	मगर जो उस ने कोशिश की

وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَى (٤٠) ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءُ الْأَوْفَى (٤١) وَأَنَّ إِلَى									
और यह कि तरफ़	41	बदला पूरा पूरा	उसे बदला दिया जाएगा	फिर	40	अनक़रीब देखी जाएगी	उस की कोशिश	और यह कि	
رَبِّكَ الْمُنْتَهَى (٤٢) وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَى (٤٣) وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ									
वही मारता है	और वेशक वह	43	और वह रुलाता है	वही हँसाता है	और वेशक	42	इन्तिहा	तुम्हारा रब	
وَأَحْيَا (٤٤) وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى (٤٥) مِنْ نُطْفَةٍ									
नुतफ़े से	45	और औरत	मर्द	जोड़े	उस ने पैदा किए	और वेशक वह	44	और जिलाता है	
إِذَا تُمْنَى (٤٦) وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشَاءَ الْأُخْرَى (٤٧) وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَى									
उस ने ग़नी किया	वही	और वेशक वह	47	दोबारा	(जी) उठाना	उसी पर	और यह कि	46	जब वह डाला जाता
وَأَقْنَى (٤٨) وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشَّعَرَى (٤٩) وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَى (٥٠)									
50	आद पहली (क़दीम)	उस ने हलाक किया	और वेशक वह	49	शिअरा (सितारे) का रब	और वेशक वही	48	और सरमायादार किया	
وَتَمُودًا فَمَا أَبْقَى (٥١) وَقَوْمَ نُوحٍ مِّنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ									
बड़े ज़ालिम	वह	वह थे	वेशक वह	उस से क़त्ल	और कौमे नूह (अ)	51	पस उस ने बाकी न छोड़ा	और समूद	
وَأَطْعَى (٥٢) وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَى (٥٣) فَغَشَّاهَا مَا غَشَّى (٥٤) فَبِأَيِّ آلَاءِ									
नेमत	पस किस	54	जिस ने ढांप लिया	तो उस को ढांप लिया	53	दे मारा	और उलटने वाली बस्तियां	52	और बहुत सरकश
رَبِّكَ تَتَمَارَى (٥٥) هَذَا نَذِيرٌ مِّنَ النَّذْرِ الْأُولَى (٥٦) أَزِفَتْ									
क़रीब आ गई	56	पहले डराने वाले	से	एक डराने वाला	यह	55	तू शक करेगा	अपना रब	
الْأَزِفَةَ (٥٧) لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ (٥٨) أَفَمِنْ									
तो क्या-से	58	कोई खोलने वाला	अल्लाह के सिवा	उस के लिए उस का	नहीं	57	क़रीब आने वाली		
هَذَا الْحَدِيثِ تَعَجُّبُونَ (٥٩) وَتَضَحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ (٦٠)									
60	और तुम नहीं रोते	और तुम हँसते हो	59	तुम तअज़्जुब करते हो	इस बात				
وَأَنْتُمْ سَمِدُونَ (٦١) فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا (٦٢)									
62	अल्लाह के आगे और उस की इबादत करो	पस तुम सिज्दा करो	61	ग़फ़लत करते (ग़ाफ़िल) हो	और तुम				
آيَاتُهَا ٥٥ ﴿ ٥٤ ﴾ سُورَةُ الْقَمَرِ ﴿ ٥٣ ﴾ زُكُوعَاتُهَا ٣									
(54) सूरतुल क़मर									
रुक़ुआत 3									
आयात 55									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
إِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ (١) وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرَضُوا وَيَقُولُوا									
और वह कहते हैं	वह मुँह फेर लेते हैं	कोई निशानी	और अगर वह देखते हैं	1	चाँद	और शक हो गया	क़ियामत	क़रीब आ गई	
سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ (٢) وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُّسْتَقَرٌّ (٣)									
3	वक़्ते मुक़र्रर	और हर काम	अपनी खाहिशात	और पैरवी की	और उन्होंने ने झुटलाया	2	(हमेशा) से होता चला आया	जादू	

और यह कि उस की कोशिश अनक़रीब देखी जाएगी। (40) फिर उसे पूरा पूरा बदला दिया जाएगा। (41) और यह कि तुम्हारे रब (ही) की तरफ़ इन्तिहा है। (42) और वेशक वही हँसाता और रुलाता है। (43) और वेशक वही मारता और जिलाता है। (44) और वेशक वही जिस ने मर्द और औरत के जोड़े पैदा किए। (45) नुतफ़े से, जब वह (रहम में) डाला जाता है, (46) और यह कि उसी पर (उसी के ज़िम्मे है) दोबारा जी उठाना। (47) और वेशक उस ने ग़नी किया और सरमायादार किया। (48) और वेशक वही शिअरा सितारे का रब है। (49) और वेशक उस ने क़दीम आद को हलाक किया, (50) और समूद को, पस उस ने बाकी न छोड़ा। (51) और कौमे नूह (अ) को उस से क़त्ल, वेशक वह बड़े ज़ालिम और बहुत सरकश थे। (52) और (कौमे लूत अ की) उलटने वाली बस्तियों को दे मारा। (53) तो उस को ढांप लिया जिस ने ढांप लिया। (54) पस तू अपने रब की किस किस नेमत में शक करेगा! (55) यह पहले डराने वालों में से एक डराने वाला। (56) करीब आने वाली (क़ियामत) करीब आ गई। (57) अल्लाह के सिवा उस का कोई खोलने वाला नहीं। (58) तो क्या तुम उस बात से तअज़्जुब करते हो? (59) और तुम हँसते हो और तुम रोते नहीं। (60) और गा बजा कर टालते हो। (61) पस तुम अल्लाह के आगे सिज्दा करो और तुम उस की इबादत करो। (62) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है क़ियामत करीब आ गई और चाँद शक हो गया। (1) और अगर वह कोई निशानी देखते हैं तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं कि (यह) हमेशा से होता चला आया जादू है। (2) और उन्होंने ने झुटलाया और अपनी ख़ाहिशात की पैरवी की, और हर काम के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है। (3)

और तहकीक़ उन के पास आ गई (वह) ख़बरें जिन में इब्रत है। (4) कामिल दानिशमन्दी की बातें, पस उन्हें डराने वालों ने फ़ाइदा न दिया। (5) सो तुम उन से मुँह फेर लो, जिस दिन बुलाएगा एक बुलाने वाला (फ़रिश्ता) नागवार शौ की तरफ़। (6) उन की आँखें झुकी हुई (होंगी), वह क़ब्रों से (इस तरह) निकलेंगे गोया कि वह परागन्दा टिड्डियाँ हैं। (7) पुकारने वाले की तरफ़ लपकते हुए काफ़िर कहेंगे: यह बड़ा सख़्त दिन है। (8) झुटलाया इन से क़ब्र कौमे नूह (अ) ने, पस उन्होंने ने हमारे बन्दे (नूह अ) को झुटलाया और उन्होंने ने कहा: दीवाना, और उसे डराया धमकाया। (9) पस उस ने अपने रब को पुकारा कि मैं मग़लूब हो चुका, पस तू मेरी मदद कर। (10) तो हम ने कसूरत से बरसने वाले पानी से आस्मान के दरवाज़े खोल दिए। (11) और ज़मीन से चश्मे जारी कर दिए, पस (ज़मीन आस्मान का) पानी उस काम पर मिल गया जो (इन्मे इलाही में) मुक़र्र हो चुका था (कौमे नूह अ की गरकाबी के लिए)। (12) और हम ने उसे तख़्तों और कीलों वाली (कशती पर) सवार किया। (13) हमारी आँखों के सामने (हमारी निगरानी में) चलती थी उस के बदले के लिए जिस की नाक़्दी की गई। (14) और तहकीक़ हम ने उसे (बतौर) निशानी रहने दिया। तो क्या है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (15) पस (देखो कि) कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरा डराना। (16) और तहकीक़ हम ने नसीहत के लिए कुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (17) आद ने झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरा डराना? (18) हम ने नहूसत के दिन में उन पर तुन्द ओ तेज़ हवा भेजी (जो) चलती ही गई। (19) वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी गोया कि वह जड़ से उखड़े हुए खजूर के तने हैं। (20) सो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरा डराना? (21) और तहकीक़ हम ने नसीहत के लिए कुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (22) समूद ने डराने वालों (रसूलों) को झुटलाया। (23) पस उन्होंने ने कहा: क्या हम अपने में से एक बशर की पैरवी करें? बेशक उस सूरत में हम अलबत्ता गुमराही और दीवानगी में होंगे। (24)

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ﴿٤﴾ حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ						
हिकमते वालिगा (कामिल दानिशमन्दी)	4	डांट (इब्रत)	जिस में	ख़बरें (जमा)	से	और तहकीक़ आ गई उन के पास
فَمَا تُغْنِ التُّذْرُ ﴿٥﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَى شَيْءٍ نُّكْرٍ ﴿٦﴾						
6	शौ नागवार	तरफ़	बुलाएगा एक बुलाने वाला	जिस दिन	उन से	सो तुम मुँह फेर लो
خُسَعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ﴿٧﴾						
7	परागन्दा	टिड्डियाँ	गोया कि वह	क़ब्रों से	वह निकलेंगे	उन की आँखें झुकी हुई
مُهِطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾ كَذَّبَتْ						
झुटलाया	8	बड़ा सख़्त दिन	यह	काफ़िर (जमा)	कहेंगे	पुकारने वाले की तरफ़ लपकते हुए
قَبْلَهُمْ قَوْمٌ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدَجَرُ ﴿٩﴾						
9	और डराया धमकाया गया	दीवाना	और उन्होंने ने कहा	हमारे बन्दे	तो उन्होंने ने झुटलाया	इन से क़ब्र
فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانتَصِرُ ﴿١٠﴾ فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ						
आस्मान के दरवाज़े	तो हम ने खोल दिए	10	पस मेरी मदद कर	मग़लूब	कि मैं	अपना रब पस उस ने पुकारा
بِمَاءٍ مِنْهُمْ ﴿١١﴾ وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَى أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ﴿١٢﴾						
12	(जो) मुक़र्र हो चुका था	उस काम पर	पानी	पस मिल गया	चश्मे	ज़मीन और हम ने जारी कर दिए
وَحَمَلْنَاهُ عَلَى ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ﴿١٣﴾ تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءَ لِمَنْ						
उस के लिए जिस	बदला	हमारी आँखों के सामने	चलती थी	13	और कीलों वाली	तख़्तों वाली पर और हम ने सवार किया उसे
كَانَ كُفِرَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ﴿١٥﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي						
मेरा अज़ाब	पस कैसा हुआ	15	कोई नसीहत पकड़ने वाला	तो क्या है	एक निशानी	और तहकीक़ हम ने उसे रहने दिया
وَنُذِرٍ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ﴿١٧﴾ كَذَّبَتْ						
झुटलाया	17	कोई नसीहत पकड़ने वाला?	तो क्या है	नसीहत के लिए	कुरआन	और तहकीक़ हम ने आसान किया
عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذِرٍ ﴿١٨﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا						
तेज़	हवा	उन पर	बेशक हम ने भेजी	18	और मेरा डराना	मेरा अज़ाब हुआ तो कैसा आद
فِي يَوْمٍ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ						
तने	गोया कि वह	लोग	वह उखाड़ देती (फेंकती)	19	चलती ही गई	नहूसत के दिन में
نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذِرٍ ﴿٢١﴾ وَلَقَدْ						
और अलबत्ता तहकीक़	21	और मेरा डराना	मेरा अज़ाब	हुआ	सो कैसा	20 जड़ से उखड़ी हुई खजूर के पेड़
يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ﴿٢٢﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذْرِ ﴿٢٣﴾						
23	डराने वालों को	झुटलाया समूद ने	22	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	नसीहत के लिए हम ने आसान कर दिया कुरआन
فَقَالُوا أَبَشَرًا مِّمَّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ إِنَّا إِذَا لَفِئَتِ ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ﴿٢٤﴾						
24	और दीवानगी	अलबत्ता गुमराही में	बेशक हम उस सूरत में	हम पैरवी करें उस की	एक	अपने में से क्या एक बशर पस उन्होंने ने कहा

ءَأَلَقَى الذِّكْرَ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرُّ (25) سَيَعْلَمُونَ							
वह जल्द जान लेंगे	25	खुद पसंद	बड़ा झूटा	बल्कि वह	हमारे दरमियान (हम में से)	उस पर	क्या डाला (नाज़िल किया) गया ज़िक्र (वहि)
غَدَاً مِّنَ الْكَذَّابِ الْأَشْرِ (26) إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ							
उन के लिए	आज़माइश	ऊँटनी	भेजने वाले	वेशक हम	26	खुद पसंद	बड़ा झूटा
فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ (27) وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ							
उन के दरमियान	तक़सीम कर दिया गया	कि पानी	और उन्हें ख़बर दे	27	और सव् र कर	सो तू इन्तिज़ार कर उन का	
كُلُّ شَرْبٍ مُّحْتَضَرٌ (28) فَنَادُوا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ (29)							
हर	पीने की बारी	हाज़िर किया गया (हाज़िर होना)	28	तो उन्होंने ने पुकारा	अपने साथी को	सो उस ने दस्त दराज़ी की	और कूँचें काट दी
فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ (30) إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً							
तो कैसा	हुआ	मेरा अज़ाब	और मेरा डराना	30	वेशक हम ने भेजी	उन पर	चिंघाड़
وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ (31) وَلَقَدْ يَسْرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ							
एक	सो वह हो गए	सूखी रौन्दी हुई बाड़ की तरह। बाड़ लगाने वाला	31	और अलबत्ता तहकीक	हम ने आसान किया कुरआन	नसीहत के लिए	
فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ (32) كَذَّبَتْ قَوْمٌ لُّوطٍ بِالنُّذْرِ (33) إِنَّا أَرْسَلْنَا							
तो क्या है	कोई नसीहत हासिल करने वाला	32	झुटलाया	लूत (अ) की कौम ने	डराने वाले (रसूल)	33	वेशक हम
عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَيْنَاهُمْ بِسَحْرِ (34) نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا							
उन पर	पत्थर बरसाने वाली आन्धी	सिवाए लूत के अहले खाना	हम ने बचा लिया उन्हें	34	फ़ज़ल फ़रमा कर	अपनी तरफ़ से	
كَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ شَكَرَ (35) وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا							
इसी तरह	हम जज़ा देते हैं	जो शुक्र करे	35	और तहकीक	हमारी पकड़ से	तो वह झगड़ने लगे	
بِالنُّذْرِ (36) وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا							
डराने में	36	और अलबत्ता तहकीक उन्होंने ने (लूत अ से) लेना चाहा	से	उस के मेहमान	तो हम ने मिटा दी	उन की आँखें	पस चखो तुम
عَذَابِي وَنُذْرٍ (37) وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقَرٌّ فَذُوقُوا							
मेरा अज़ाब	और मेरा डराना	37	और तहकीक	सुबह आन पड़ा उन पर	सबेरे	अज़ाब	पस चखो तुम
عَذَابِي وَنُذْرٍ (39) وَلَقَدْ يَسْرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ (40)							
मेरा अज़ाब	और मेरा डराना	39	और अलबत्ता तहकीक हम ने आसान किया	कुरआन	नसीहत के लिए	तो क्या है	कोई नसीहत हासिल करने वाला
وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذْرُ (41) كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا							
और तहकीक आए	फ़िरऔन वाले	डराने वाले (रसूल)	41	उन्होंने ने झुटलाया	हमारी आयतों को	तमाम	
فَاخَذْنَاهُمْ أَخَذَ عَزِيزٌ مُّقْتَدِرٌ (42) أَكْفَارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أُولَئِكُمْ							
पस हम ने उन्हें आ पकड़ा	पकड़	ग़ालिब	साहिबे कुदरत	42	क्या तुम्हारे काफ़िर	बेहतर	उन से
أَمْ لَكُمْ بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ (43) أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ (44)							
या तुम्हारे लिए नजात (माफ़ी नामा)	43	क्या	वह कहते हैं	हम	जमाअत	अपना बचाव कर लेने वाले	44

क्या हमारे दरमियान उस पर वहि नाज़िल की गई? (नहीं) बल्कि वह बड़ा झूटा, खुद पसंद है। (25) वह कल (जलद ही) जान लेंगे कि कौन बड़ा झूटा, खुद पसंद है। (26) (ऐ सालेह अ) वेशक हम भेजने वाले हैं ऊँटनी उनकी आज़माइश के लिए, सो तू उन का (अनजाम देखने के लिए) इन्तिज़ार कर और सव् र कर। (27) और उन्हें खबर दे कि पानी उन के दरमियान तक़सीम कर दिया गया है और हर एक को (अपनी) पीने की बारी पर हाज़िर होना है। (28) तो उन्होंने ने अपने साथी को पुकारा, सो उस ने दस्त दराज़ी की और (ऊँटनी) की कूँचें काट दी। (29) तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरा डराना? (30) वेशक हम ने उन पर एक ही चिंघाड़ भेजी, सो वह हो गए बाड़े वाले की सूखी रौन्दी हुई बाड़ की तरह। (31) और तहकीक हम ने नसीहत के लिए कुरआन को आसान कर दिया, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (32) लूत (अ) की कौम ने रसूलों को झुटलाया। (33) (तो) वेशक हम ने उन पर पत्थर बरसाने वाली आन्धी भेजी, लूत (अ) के अहले खाना के सिवा कि हम ने बचा लिया उन्हें सुबह सबेरे, (34) अपनी तरफ़ से फ़ज़ल फ़रमा कर, इसी तरह हम जज़ा देते हैं (उस को) जो शुक्र करे। (35) और तहकीक (लूत अ) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया तो वह डराने में झगड़ने (शक करने) लगे। (36) और तहकीक उन्होंने ने लूत (अ) से उन के मेहमानों को (बुरे इरादे से) लेना चाहा तो हम ने उन की आँखें मिटा दी (चौपट कर दी), पस मेरे अज़ाब और मेरे डराने (का मज़ा) चखो। (37) और तहकीक सुबह सबेरे उन पर दाइमी अज़ाब आ पड़ा। (38) पस मेरे अज़ाब और डराने (का मज़ा) चखो। (39) और तहकीक हम ने कुरआन को आसान किया है नसीहत के लिए, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला। (40) और तहकीक कौमे फ़िरऔन के पास रसूल आए। (41) उन्होंने ने हमारी आयतों (अहकाम और निशानियों) को झुटलाया तमाम (की तमाम) तो हम ने उन्हें आ पकड़ा एक ग़ालिब और साहिबे कुदरत की पकड़ (की सूरत में)। (42) क्या उन से तुम्हारे काफ़िर बेहतर हैं? या तुम्हारे लिए माफ़ी नामा है (क़दीम) सहीफ़ों में? (43) क्या वह कहते हैं कि हम एक जमाअत अपना बचाव कर लेने वाले। (44)

अनकरीब यह जमाअत शिकस्त खाएगी और वह भागेंगे पीठ (फेर कर)। (45)

बल्कि कियामत उन की वादागाह है, और कियामत (की घड़ी) बहुत सख्त और बड़ी तलख होगी। (46)

वेशक मुजरिम गुमराही और जहालत में हैं। (47)

उस दिन वह अपने चेहरों के बल जहन्नम में घसीटे जाएंगे, (उन से कहा जाएगा:) तुम जहन्नम (की आग) लगने का मज़ा चखो। (48)

वेशक हम ने हर शै को एक अन्दाज़े के मुताबिक पैदा किया। (49)

और हमारा हुक्म सिर्फ एक (इशारा होता है) जैसे आँख का झपकना। (50)

और अलबत्ता हम हलाक कर चुके हैं तुम जैसे बहुत सों को, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (51)

और जो कुछ उन्होंने ने किया सहीफों में है। (52)

और हर छोटी बड़ी (बात) लिखी हुई है। (53)

वेशक मुत्तकी बागात और नहरों में होंगे। (54)

साहिबे कुदरत बादशाह के नज़्दीक सच्चाई के मुक़ाम में। (55)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है रहमान (अल्लाह)। (1)

उस ने कुरआन सिखाया। (2)

उस ने इन्सान को पैदा किया। (3)

उस ने उसे बात करना सिखाया। (4)

सूरज और चाँद एक हिसाब से (गर्दिश में हैं)। (5)

और तारे और दरख्त सर वसजूद हैं। (6)

और उस ने आस्मान को बुलन्द किया और तराजू रखी। (7)

कि तुम तोल में हद से तजावुज़ न करो। (8)

और तोल ईसाफ़ से क़ाइम करो, और तोल न घटाओ (कम न तोलो)। (9)

और उस ने ज़मीन को मख़लूक के लिए बिछाया। (10)

उस में मेवे हैं और ग़िलाफ़ वाली खजूरें हैं। (11)

और ग़ल्ला भूसे वाला, और खुशबू के फूल। (12)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (13)

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ								
और कियामत	वादागाह उन की	बल्कि कियामत	45	पीठ	और वह फेर लेंगे (भागेंगे)	जमाअत	अनकरीब शिकस्त खाएगी	
أَذْهَى وَأَمْرٌ ﴿٤٦﴾ إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعْرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُونَ								
वह घसीटे जाएंगे	जिस दिन	47	और जहालत	गुमराही में	वेशक मुज्रिम (जमा)	46	और बड़ी तलख वह सख्त	
فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ ذُقُوا مَسَّ سَقَرٍ ﴿٤٨﴾ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ								
हम ने उसे पैदा किया	शै	वेशक हम हर	48	जहन्नम	लगाना तुम चखो	अपने मुँह (जमा)	पर-बल जहन्नम में	
بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَمَا أَمَرْنَا إِلَّا وَاحِدَةً كَلِمَةٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا								
और अलबत्ता हम हलाक कर चुके हैं	50	आँख का	जैसे झपकना	एक	मगर-सिर्फ	और नहीं हमारा हुक्म	49	एक अन्दाज़े के मुताबिक
أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ﴿٥١﴾ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾								
52	सहीफों में	जो उन्होंने ने की	और हर बात	51	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	तुम जैसे	
وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُسْتَطَرٌّ ﴿٥٣﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ﴿٥٤﴾								
54	और नहरें	बागात में	वेशक मुत्तकी (जमा)	53	लिखी हुई	और बड़ी	छोटी और हर	
فِي مَقْعَدٍ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾								
55	साहिबे कुदरत	बादशाह	नज़्दीक	सच्चाई का मुकाम		में		
آيَاتُهَا ٧٨ ﴿٥٥﴾ سُورَةُ الرَّحْمَنِ ﴿٥٥﴾ زُكُوعَاتُهَا ٣								
रुकुआत 3		(55) सूरतुर रहमान वेहद मेहरबान			आयात 78			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ								
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है								
الرَّحْمَنُ ﴿١﴾ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ﴿٢﴾ خَلَقَ الْإِنْسَانَ ﴿٣﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿٤﴾								
4	उस ने उसे सिखाया बात करना	3	उस ने पैदा किया इन्सान	2	उस ने सिखाया कुरआन	1	रहमान (अल्लाह)	
الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿٥﴾ وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدْنَ ﴿٦﴾ وَالسَّمَاءُ								
और आस्मान	6	वह सिज्दा में (सर वसजूद है)	और दरख्त	और झाड़ियाँ-तारे	5	एक हिसाब से	और चाँद सूरज	
رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ﴿٧﴾ أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ﴿٨﴾ وَأَقِيمُوا								
और काइम करो	8	तराजू (तोल) में	हद से तजावुज़ करो	कि न	7	तराजू	और रखी उस ने उसे बुलन्द किया	
الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ﴿٩﴾ وَالْأَرْضُ وَضَعَهَا								
उस ने उस को रखा (बिछाया)	और ज़मीन	9	तोल	और न घटाओ	ईसाफ़ से	वज़न (तोल)		
لِلْأَنَامِ ﴿١٠﴾ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ﴿١١﴾ وَالْحَبُّ								
और ग़ल्ला	11	ग़िलाफ़ वाले	और खजूरें	मेवे	उस में	10	मखलूक के लिए	
ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ﴿١٣﴾								
13	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	12	और खुशबू के फूल	भूसे वाला		

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۖ وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ						
शोला मारने वाली	जिन्नात	और उस ने पैदा किया	14	ठिकरी जैसी	खंखाती मिट्टी	उस ने पैदा किया इन्सान
مِّن نَّارٍ ۚ فَبَيَّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۚ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ						
दोनों मशरिफ़ों	रब	16	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	15
وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۚ فَبَيَّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۚ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ						
दो दर्या	उस ने बहाए	18	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	17
يَلْتَقَيْنِ ۚ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَنِ ۚ فَبَيَّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۚ						
21	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	20	वह ज़ियादती नहीं करते (नहीं मिलते)	एक आड़
يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللَّوْلُ وَالْمَرْجَانُ ۚ فَبَيَّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۚ						
23	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	22	और मूंगे	मोती
وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۚ فَبَيَّ الْآءِ رَبِّكُمَا						
अपने रब	तो कौन सी नेमतों	24	पहाड़ों की तरह	दर्या में	चलने वाली	कशतियां
تُكَذِّبَنِ ۚ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۚ وَيَبْقَىٰ وَجْهَ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ						
साहिबे अज़मत	तेरा रब	चेहरा (ज़ात)	और बाकी रहेगा	26	फना होने वाला	जो इस (ज़मीन) पर
وَالْأَكْرَامِ ۚ فَبَيَّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۚ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ						
आस्मानों में	जो कोई	उस से मांगता है	28	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों
وَالْأَرْضِ كُلِّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۚ فَبَيَّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۚ						
30	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	29	किसी न किसी काम में	वह
سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَيْنِ ۚ فَبَيَّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۚ يَمْعَشَرِ						
ऐ गिरोह	32	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	31	ऐ जिन ओ इन्स
الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ						
आस्मानों के किनारे	से	तुम निकल भागो	कि	तुम से हो सके	अगर	और इन्स
وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا ۚ لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَنِ ۚ فَبَيَّ الْآءِ						
तो कौन सी नेमतों	33	लेकिन ज़ोर से	तुम नहीं निकल सकोगे	तो निकल भागो	और ज़मीन	
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۚ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوْاْظٌ مِّن نَّارٍ وَنَحَاسٌ						
और धुआँ	आग से	एक शोला	तुम पर	भेज दिया जाएगा	34	तुम झुटलाओगे
فَلَا تَنْتَصِرْنَ ۚ فَبَيَّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۚ فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ						
आस्मान	फट जाएगा	फिर जब	36	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों
فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۚ فَبَيَّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۚ						
38	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	37	जैसे सुर्ख चमड़ा	गुलाबी

उस ने इन्सान को पैदा किया खंखनाती मिट्टी से ठिकरी जैसी। (14)

और जिन्नात को शोले वाली आग से पैदा किया। (15)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (16)

रब है दोनों मशरिफ़ों और दोनों मग़रिबों का। (17)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (18)

उस ने दो दर्या बहाए एक दूसरे से मिले हुए। (19)

उन दोनों के दरमियान एक आड़ है, वह (एक दूसरे से) नहीं मिलते। (20)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (21)

उन दोनों से निकलते हैं मोती और मूंगे। (22)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (23)

और उसी के लिए हैं चलने वाली कशतियां दर्या में पहाड़ों की तरह। (24)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (25)

ज़मीन पर जो कोई है फना होने वाला है। (26)

और बाकी रहेगी साहिबे अज़मत एहसान करने वाले तेरे रब की ज़ात। (27)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (28)

जो कोई आस्मानों और ज़मीन में है, वह उसी से मांगता है, वह हर रोज़ किसी न किसी काम (नए हाल) में है। (29)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (30)

ऐ जिन्न ओ इन्स! (सब से फारिग हो कर) हम जल्द तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जुह होते हैं। (31)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (32)

ऐ गिरोहे जिन्न और इन्स, अगर तुम से हो सके निकल भागने आस्मानों और ज़मीन के किनारों से तो निकल भागो, तुम नहीं निकल सकोगे, उस के लिए बड़ा ज़ोर चाहिए। (33)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (34)

तुम पर भेज दिया जाएगा एक शोला आग से, और धुआँ, तो मुकाबला न कर सकोगे। (35)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (36)

फिर जब फट जाएगा आस्मान, तो वह सुर्ख चमड़े जैसा गुलाबी हो जाएगा। (37)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (38)

पस उस दिन न पूछा जाएगा उस के (अपने) गुनाहों के बारे में किसी इन्सान से और न ज़िन्न से। (39) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (40) मुज़्रिम पहचाने जाएंगे अपनी पेशानी से, फिर वह पेशानियों के (बालों) से और कदमों से पकड़े जाएंगे। (41) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (42) यह है वह जहन्नम जिसे गुनाहगार झुटलाते थे। (43) वह उस के और खीलते हुए गर्म पानी के दरमियान फिरेंगे। (44) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (45) और जो अपने रब के हज़ूर खड़ा होने से डरा, उस के लिए दो बाग़ हैं। (46) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे। (47) बहुत सी शाख़ों वाले। (48) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (49) (उन बाग़ों में) दो चश्मे जारी हैं। (50) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (51) उन दोनों (बाग़ों) में हर मेवे की दो, दो किस्में हैं। (52) तो कौन सी नेमतों को अपने रब की तुम झुटलाओगे? (53) फ़र्शों पर तकिया (लगाए होंगे) जिन के असतर रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों के मेवे नज़्दीक होंगे। (54) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (55) उन में निगाहें नीची रखने वालियां हैं, उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी इन्सान ने उन से क़व्ल और न किसी ज़िन्न ने। (56) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (57) गोया वह याकूत और मूंगे हैं। (58) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (59) एहसान का बदला एहसान के सिवा और क्या हो सकता है। (60) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (61) और उन दोनों के अलावा दो बाग़ और भी हैं। (62) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (63) निहायत गहरे सब्ज़ रंग के। (64) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (65) उन दोनों (बाग़ात) में दो चश्मे हैं फ़ौवारों की तरह उबलते हुए। (66)

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ٣٩ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا							
अपने रब	तो कौन सी नेमतों	39	और न ज़िन्न	किसी इन्सान	उस के गुनाहों के मुताबिक़	न पूछा जाएगा	पस उस दिन
تُكَذِّبِينَ ٤٠ يُعْرِفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمِهِمْ فَيُؤْخَذُ بِالتَّوَاصِي							
पेशानियों से	फिर वह पकड़े जाएंगे	अपनी पेशानी से	मुज़्रिम (जमा)	पहचाने जाएंगे	40	तुम झुटलाओगे	
وَالْأَفْدَامِ ٤١ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ٤٢ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ							
झुटलाते हैं	वह जिसे	जहन्नम	यह	42	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों
بِهَا الْمُجْرِمُونَ ٤٣ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ إِنْ ٤٤ فَبِأَيِّ آلَاءِ							
तो कौन सी नेमतों	44	खीलते हुए	गर्म पानी	और दरमियान	उस के दरमियान	वह फिरेंगे	43
رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ٤٥ وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتٍ ٤٦ فَبِأَيِّ آلَاءِ							
तो कौन सी नेमतों	46	दो बाग़	अपने रब के हज़ूर खड़ा होना	जो डरा	और उस के लिए	45	तुम झुटलाओगे
رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ٤٧ ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ٤٨ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ٤٩ فِيهِمَا							
उन दोनों में	49	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	48	बहुत सी शाख़ों वाले	47
عَيْنَيْنِ تَجْرَيْنِ ٥٠ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ٥١ فِيهِمَا مِنْ كُلِّ							
हर	से-की	उन दोनों में	51	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	50
فَاكِهَةٍ زَوْجَيْنِ ٥٢ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ٥٣ مُتَكَبِّرِينَ عَلَى فُرُشٍ							
फ़र्शों पर	तकिया लगाए हुए	53	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	52	दो किस्में
بَطَانِئِهَا مِنْ اسْتَبْرَقٍ وَجَنَّاتٍ دَانٍ ٥٤ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا							
अपने रब	तो कौन सी नेमतों	54	नज़्दीक	दोनों बाग़	और मेवे	रेशम के	उन के असतर
تُكَذِّبِينَ ٥٥ فِيهِنَّ قُصِرَتْ الطَّرَفُ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ							
उन से क़व्ल	इन्सान ने	उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी	निगाहें	बन्द (नीचे) रखने वाली	उन में	55	तुम झुटलाओगे
وَلَا جَانٌّ ٥٦ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ٥٧ كَانَتْهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ٥٨							
58	और मूंगे	याकूत	गोया कि	57	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ٥٩ هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا							
सिवा	एहसान	क्या बदला	59	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	
الْإِحْسَانُ ٦٠ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ٦١ وَمِنْ دُونِهِمَا							
और उन दोनों के अलावा	61	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	60	एहसान	
جَنَّاتٍ ٦٢ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ٦٣ مُدْهَامَتَيْنِ ٦٤							
64	निहायत गहरे सब्ज़ रंग के	63	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	62	दो बाग़
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ٦٥ فِيهِمَا عَيْنَيْنِ نَضَّاحَتَيْنِ ٦٦							
66	वशिद्वत् जोश मारने वाले	दो चश्मे	उन दोनों में	65	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों

فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ﴿٦٧﴾ فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرَمَانٌ ﴿٦٨﴾							
68	और अनार	खजूर के दरख़्त	मेवे	उन दोनों में	67	तुम झुटलाओगे	अपने रब तो कौन सी नेमतों
فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ﴿٦٩﴾ فِيهِنَّ خَيْرٌ حَسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبَايَ الْآءِ							
तो कौन सी नेमतें	70	खूबसूरत	खूब सीरत	उन में	69	तुम झुटलाओगे	अपने रब तो कौन सी नेमतों
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ﴿٧١﴾ حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا							
अपने रब	तो कौन सी नेमतों	72	खेमों में	रुकी रहने वाली (पर्दा नशीन)	हूँ	71	तुम झुटलाओगे अपने रब
تُكَذِّبَنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٧٤﴾ فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا							
अपने रब	तो कौन सी नेमतों	74	और न किसी जिन्न	उन से कब्ल	किसी इन्सान	उन्हें हाथ नहीं लगाया	73 तुम झुटलाओगे
تُكَذِّبَنِ ﴿٧٥﴾ مُتَكَيِّنَ عَلَى رَفْرَفٍ خُضِرَ وَعَبْقَرِيٍّ حَسَانٍ ﴿٧٦﴾							
76	नफीस	और खूबसूरत	सब्ज़	मसन्दों पर	तकिया लगाए हुए	75	तुम झुटलाओगे
فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ﴿٧٧﴾ تَبَرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٧٨﴾							
78	और एहसान करने वाला	साहिबे जलाल	तुम्हारा रब	नाम	वरकत वाला	77 तुम झुटलाओगे	अपने रब तो कौन सी नेमतों
آيَاتُهَا ٩٦ ﴿٥٦﴾ سُورَةُ الْوَاقِعَةِ ﴿٥٦﴾ رُكُوعَاتُهَا ٣							
(56) सूरतुल वाकिअ़ा							
आयात 96							
रुकुआत 3							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَيْسَ لَوْفَعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ							
पस्त करने वाली	2	कुछ झूट	उस के वाक़े होने में	नहीं	1	वाक़े होने वाली	वाक़े हो जाएगी जब
رَافِعَةٌ ﴿٣﴾ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًا ﴿٤﴾ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًا ﴿٥﴾							
5	और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे पहाड़, रेज़ा रेज़ा हो कर	4	सख़्त ज़लज़ला	ज़मीन	लरज़ने लगेगी	जब	3 बुलन्द करने वाली
فَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًا ﴿٦﴾ وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ﴿٧﴾ فَاصْحَبِ الْمَيْمَنَةَ ﴿٨﴾							
तो दाएं हाथ वाले	7	तीन	जोड़े (गिरोह)	और तुम हो जाओगे	6	परागन्दा	गुबार फिर हो जाएंगे
مَا أَصْحَبِ الْمَيْمَنَةَ ﴿٩﴾ وَأَصْحَبِ الْمَشْأَمَةَ ﴿١٠﴾ مَا أَصْحَبِ الْمَشْأَمَةَ ﴿٩﴾							
9	बाएं हाथ वाले	क्या	और बाएं हाथ वाले	8	दाएं हाथ वाले	क्या	
وَالسَّبِقُونَ السَّبِقُونَ ﴿١٠﴾ أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ﴿١١﴾ فِي جَنَّتِ							
बागात	में	11	मुक़र्रब (जमा)	यही है	10	सबक़त ले जाने वाले हैं	और सबक़त ले जाने वाले
النَّعِيمِ ﴿١٢﴾ ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ﴿١٤﴾							
14	पिछलों से - में	और थोड़े	13	पहलों से - में	बड़ी जमाअ़त	12	नेमत
عَلَى سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ﴿١٥﴾ مُتَكَيِّنَ عَلَيْهَا مُتَقَبِّلِينَ ﴿١٦﴾							
16	आमने सामने	उस पर	तकिया लगाए हुए	15	सोने के तारों से बुने हुए	तख़्तों पर	

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (67) उन दोनों (बागात) में मेवे औ खजूर के दरख़्त और अनार होंगे। (68) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (69) उन में खूब सीरत, खूबसूरत (बीवियां) होंगी। (70) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (71) खेमों में पर्दा नशीन हूँ। (72) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (73) और उन से कब्ल उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी इन्सान ने और न किसी जिन्न ने। (74) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (75) सब्ज़, खूबसूरत, नफीस मसन्दों पर तकिया लगाए हुए। (76) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (77) तुम्हारे साहिबे जलाल, एहसान करने वाले रब का नाम बरकत वाला है। (78) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है जब वाक़े हो जाएगी वाक़े होने वाली (कियामत)। (1) उस के वाक़े होने में कुछ झूट नहीं। (2) (किसी को) पस्त करने वाली (किसी को) बुलन्द करने वाली। (3) जब ज़मीन सख़्त ज़लज़ले से लरज़ने लगेगी। (4) और पहाड़ टूट फूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे। (5) फिर परागन्दा गुबार हो जाएंगे। (6) और तुम हो जाओगे तीन गिरोह। (7) तो दाएं हाथ वाले (सुबहानल्लाह) क्या हैं दाएं हाथ वाले! (8) और बाएं हाथ वाले (अफ़्सोस) क्या हैं बाएं हाथ वाले! (9) और सबक़त ले जाने वाले (माशा अल्लाह) सबक़त ले जाने वाले हैं! (10) यही हैं (अल्लाह के) मुक़र्रब। (11) नेमतों वाले बागात में। (12) बड़ी जमाअ़त पहलों में से। (13) और थोड़े पिछलों में से। (14) सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर। (15) तकिया लगाए हुए उस पर आमने सामने (बैठे हुए)। (16)

उन के इर्द गिर्द लड़के फिरंगे हमेशा (लड़के ही) रहने वाले। (17) आबखोरों और सुराहियों के साथ और साफ शराब के पियालों (के साथ)। (18) न उस से उन्हें दर्द सर होगा और न उन की अक्लों में फूतूर आएगा। (19) और मेवे जो वह पसंद करेंगे। (20) और परिन्दों का गोश्त जो वह चाहेंगे। (21) और बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें, (22) जैसे मोती (के दाने) सीपी में छुपे हुए। (23) उस की जज़ा जो वह करते थे। (24) वह उस में न बेहूदा बात सुनेंगे और न गुनाह की बात। (25) मगर “सलाम सलाम”, मतलब कि ठीक ठीक बात होगी। (26) और दाएं हाथ वाले (सुबहानल्लाह) क्या हैं दाएं हाथ वाले! (27) बेरियों में बेखार वाली। (28) और तह दर तह केले। (29) और दराज़ साया। (30) और गिरता हुआ पानी (झरने)। (31) और कसीर मेवे। (32) न (वह) ख़तम होंगे और न (उन्हें) कोई रोक टोक (होगी)। (33) और ऊँचे ऊँचे फर्श। (34) वेशक हम ने उन्हें खूब उठान दी। (35) पस हम उन्हें कुंवारी बना देंगे, (36) महबूब, हम उम्र। (37) दाएं हाथ वालों के लिए। (38) बहुत से अगलों में से, (39) और बहुत से पिछलों में से। (40) और बाएं हाथ वाले (अफ्सोस) क्या हैं बाएं हाथ वाले! (41) गर्म हवा और खौलते हुए पानी में। (42) और धुएँ के साए में। (43) न कोई ठंडक और न कोई फर्हत। (44) वेशक वह उस से कबल नेमत में पले हुए थे। (45) और वह भारी गुनाह पर अड़े हुए थे। (46) और वह कहते थे: क्या जब हम मर गए और (मिट्टी में मिल कर) मिट्टी हो गए और हड्डियां (हो गए) क्या हम दोबारा ज़रूर उठाए जाएंगे? (47) क्या हमारे बाप दादा भी? (48) आप (स) कह दें: वेशक पहले और पिछले। (49) ज़रूर जमा किए जाएंगे एक दिन जिस का वक़्त मुक़र्रर है। (50) फिर वेशक तुम ऐ झुटलाने वाले गुमराह लोगो! (51)

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وَلَدَانِ مُخَلَّدُونَ ١٧ بَاكُوبٍ وَأَبَارِيْقُ وَكَاسٍ							
और पियाले	और सुराहियां	कटोरों के साथ	17	हमेशा रहने वाले	लड़के	उन के	इर्द गिर्द फिरंगे
مِّنْ مَّعِينٍ ١٨ لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ١٩ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا							
उस से जो	और मेवे	19	और न उन की अक्ल में फूतूर आया	उस से	न उन्हें दर्द सर होगा	18	साफ शराब से-के
يَتَخَيَّرُونَ ٢٠ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ٢١ وَحُورٌ عِينٌ ٢٢ كَأَمْثَالِ							
जैसे	22	और बड़ी आँखों वाली हूरें	21	वह चाहेंगे	वह जो	और परिन्दों का गोश्त	20
اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ٢٣ جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ٢٤ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا							
उस में	वह न सुनेंगे	24	जो वह करते थे	उस की	जज़ा	23	(सीपी में) छुपे हुए
لَعْنًا وَلَا تَأْنِيماً ٢٥ إِلَّا قِيْلًا سَلَامًا سَلَامًا ٢٦ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ٢٧ مَا							
क्या	और दाएं हाथ वाले	26	सलाम सलाम	कलाम	मगर	25	और न गुनाह की बात
أَصْحَابُ الْيَمِينِ ٢٧ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ٢٨ وَطَلْحٍ مَّنْضُودٍ ٢٩ وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ٣٠							
30	लमबा-दराज़	और साया	29	तह दर तह और केले	28	बेखार वाली	27
وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ٣١ وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ٣٢ لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ٣٣							
33	और न कोई रोक टोक	न ख़तम होने वाला	32	कसीर	और मेवे	31	गिरता हुआ
وَفُرْشٍ مَّرْفُوعَةٍ ٣٤ إِنَّا أَنْشَأْنَهُمْ إِنْشَاءً ٣٥ فَجَعَلْنَاهُمْ أَبْكَارًا ٣٦							
36	कुंवारी (जमा)	पस हम ने उन्हें बनाया	35	खूब उठान	उन्हें उठान दी	वेशक हम	और फर्श (जमा)
عُزْبًا أَتْرَابًا ٣٧ لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ ٣٨ ثَلَاثَةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ٣٩ وَثَلَاثَةٌ							
और बहुत से	39	अगलों में से	बहुत से	38	दाएं हाथ वालों के लिए	37	महबूब हम उम्र
مِّنَ الْآخِرِينَ ٤٠ وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ٤١ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ٤١ فِي سَمُومٍ							
गर्म हवा	में	41	बाएं हाथ वाले	क्या	और बाएं हाथ वाले	40	पिछलों में से
وَحَمِيمٍ ٤٢ وَظِلٍّ مِّنْ يَحْمُومٍ ٤٣ لَا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ٤٤ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ							
इस से कबल	थे	वेशक वह	44	और न फर्हत	न कोई ठंडक	43	धुआँ से-के
مُتَرَفِّينَ ٤٥ وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ٤٦							
46	गुनाह भारी	पर	अड़े हुए	और वह थे	45	नेमत में पले हुए	
وَكَانُوا يَقُولُونَ ٤٧ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ٤٨ إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ٤٩ أَوْ أَبَاؤُنَا							
ओर क्या हमारे बाप दादा	47	ज़रूर दोबारा उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियां	मिट्टी हो गए	हम मर गए	क्या जब
الْأَوَّلُونَ ٤٨ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ٤٩ لَمَجْمُوعُونَ ٥٠ إِلَى							
तरफ-पर	ज़रूर जमा किए जाएंगे	49	और पिछले	पहले	वेशक	आप (स) कह दें	48
مِيقَاتٍ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ٥٠ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَنتُمُ الصَّالُّونَ الْمُكْذِبُونَ ٥١							
51	झुटलाने वाले	गुमराह लोग	ऐ	वेशक तुम	फिर	50	एक मुक़र्रर दिन

لَا كُلُّونَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ رَّقُومٍ ﴿٥٣﴾ فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٥٣﴾							
53	पेट (जमा)	उस से	फिर भरना होगा	52	थोहर का	दरख़्त	से
فَشْرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ﴿٥٤﴾ فَشْرِبُونَ شُرْبَ الْهَيْمِ ﴿٥٥﴾							
55	पयासे ऊँट की तरह पीना	सो पीना होगा	54	खीलता हुआ पानी	से	उस पर	सो पीना होगा
هَذَا نُزْلُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنَكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ﴿٥٧﴾							
57	तुम तसदीक करते	सो क्यों नहीं	हम ने पैदा किया	56	रोज़े जज़ा	उन की मेहमानी	यह
أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُمْنُونَ ﴿٥٨﴾ ءَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ﴿٥٩﴾							
59	पैदा करने वाले	हम	या	तुम उसे पैदा करते हो	क्या तुम	जो तुम डालते हो	भला तुम देखो तो
نَحْنُ قَدَرْنَا بَيْنَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٦٠﴾ عَلَىٰ							
60	उस से आजिज़	और नहीं हम	मौत	तुम्हारे दरमियान	हम ने मुक़रर किया	हम	पर
أَنْ تُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمْ							
61	तुम नहीं जानते	जो	में	और हम पैदा कर दें तुम्हें	तुम जैसे	कि हम बदल दें	और यकीनन तुम जान चुके हो
النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ﴿٦٣﴾ ءَأَنْتُمْ							
63	जो तुम बोते हो	भला तुम देखो तो	62	तुम ग़ौर करते	तो क्यों नहीं	पैदाइश पहली	क्या तुम
تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا							
64	काशत करने वाले	हम	या	उस की काशत करते हो	अगर हम चाहें	अलबत्ता हम उसे कर दें	रेज़ा रेज़ा
فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٦٥﴾ إِنَّا لَمُعْرِضُونَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾							
67	महरूम रह जाने वाले	हम	बल्कि	66	तावान पड़ जाने वाले	वेशक हम	फिर तुम हो जाओ
أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرِبُونَ ﴿٦٨﴾ ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنْ							
68	तुम पीते हो	जो	पानी	भला तुम देखो तो	तुम ने उसे उतारा	से	क्या तुम
الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا							
69	उतारने वाले	अगर	हम चाहें	हम कर दें उसे	कड़वा	बादल	या हम
فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾ أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧١﴾ ءَأَنْتُمْ							
70	तो क्यों तुम शुक्र नहीं करते	भला तुम देखो तो	आग	जो	तुम सुलगाते हो	71	क्या तुम
أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُونَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً							
72	पैदा करने वाले	या हम	उस के दरख़्त	तुम ने पैदा किए	हम ने उसे बनाया	हम	नसीहत
وَمَتَاعًا لِلْمُقْوِينَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾							
73	हाज़त मंदों के लिए	और सामान	पस तू पाकीज़गी बयान कर	नाम से - की	अज़मत वाला	अपने रब	74
فَلَا أُقْسِمُ بِمَوْعِدِ النُّجُومِ ﴿٧٥﴾ وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لِّوَيْتٍ يُعْطَمُ ﴿٧٦﴾							
75	सितारे (जमा)	मुक़ाम की	सो मैं क़सम खाता हूँ	और वेशक यह	एक क़सम है	अगर तुम जानो (ग़ौर करो)	76

अलबत्ता तुम थोहर के दरख़्त से खाने वाले हो। (52)

पस उस से पेट भरना होगा। (53)

सो उस पर पीना होगा खीलता हुआ पानी। (54)

सो पीना होगा पयासे ऊँट की तरह। (55)

रोज़े जज़ा उन की यह मेहमानी होगी। (56)

हम ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम क्यों तसदीक नहीं करते? (57)

भला देखो तो! जो (नुतफ़ा) तुम (औरतों के रहम में) डालते हो। (58)

क्या तुम उसे पैदा करते हो या हम हैं पैदा करने वाले? (59)

हम ने तुम्हारे दरमियान मौत (का वक़्त) मुक़रर किया है, और हम उस से आजिज़ नहीं। (60)

कि हम बदल दें तुम्हारी शक़्लें और हम पैदा कर दें तुम्हें (ऐसे आलम) में जिस को तुम नहीं जानते। (61)

और यकीनन तुम जान चुके हो पहली पैदाइश तो तुम क्यों ग़ौर नहीं करते? (62)

भला तुम देखो तो जो तुम बोते हो। (63)

क्या तुम उस की काशत करते हो या हम हैं काशत करने वाले? (64)

अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम उसे कर दें रेज़ा रेज़ा, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ। (65)

(कि) वेशक हम तादान पड़ जाने वाले हो गए। (66)

बल्कि हम महरूम रह जाने वाले हैं। (67)

भला तुम देखो तो पानी जो तुम पीते हो। (68)

क्या तुम ने उसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले? (69)

अगर हम चाहें तो हम उसे कड़वा (खारी) कर दें, तो तुम क्यों शुक्र नहीं करते? (70)

भला तुम देखो तो जो आग तुम सुलगाते हो, (71)

क्या तुम ने उस के दरख़्त पैदा किए या हम हैं पैदा करने वाले? (72)

हम ने उसे याद दिलाने वाली बनाया और मुसाफ़िरों के लिए सामाने ज़िन्दगी। (73)

पस तू अपने अज़मत वाले रब के नाम की पाकीज़गी बयान कर। (74)

सो मैं सितारों के मुक़ाम की क़सम खाता हूँ। (75)

और वेशक यह एक बड़ी क़सम है अगर तुम ग़ौर करो। (76)

79	सिवाए पाक	उसे हाथ नहीं लगाते	78	पोशीदा	एक किताब	में	77	कुरआन है गिरामी क़द्र	वेशक यह
(79)	يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يُمْسِكُوا بِأَنَّكُم مِّنْكُمْ	أَقْبِهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ	(80)	تَنزِيلًا مِّنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ	81	يُؤْ هِي تَالِنِ	80	تَمَامِ جَهَانِ	उतारा हुआ
(81)	وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْكُمْ تُكَذِّبُونَ	فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ	(82)	وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ	83	هَلَكُ كُو	82	كِي تُم	और तुम बनाते हो
(82)	وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ	وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ	(83)	لَا تُبْصِرُونَ	84	तुम उसे लौटा लो	86	तुम उसे लौटा लो	तुम नहीं देखते
(83)	إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ	فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ	(84)	فَرَوْحٌ	85	तो राहत	88	मुकर्रब लोग	अगर तुम
(84)	وَرِيحَانٌ	وَجَنَّتْ نَعِيمٍ	(85)	وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ أَصْحَابِ الْيَمِينِ	90	और खुशबूदार फूल	90	दाएं हाथ वाले	और बाग
(85)	فَسَلِّمْ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ	وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ	(86)	فَسَلِّمْ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ	91	और अलबत्ता	91	दाएं हाथ वालों	से
(86)	فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ	وَتَصْلِيَةٌ جَمِيمٍ	(87)	إِنَّ	92	तो मेहमानी	92	गुमराह (जमा)	तो सलामती
(87)	هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ	فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ	(88)	هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ	95	यकीनी बात	95	यकीनी बात	अलबत्ता यह
(88)	آيَاتُهَا ٢٩ ﴿٥٧﴾ سُوْرَةُ الْحَدِيدِ ﴿٥٧﴾	رُكُوعَاتُهَا ٤	(57)	سُورَةُ الْحَدِيدِ	89	यकीनी बात	89	यकीनी बात	अलबत्ता यह
(89)	سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ	وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ	(90)	لَهُ مُلْكٌ	91	तो मेहमानी	92	गुमराह (जमा)	तो सलामती
(90)	وَالسَّمُوتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ	وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ	(91)	هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ	92	और ज़मीन	92	गुमराह (जमा)	तो सलामती
(91)	وَالْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ	وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ	(92)	هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ	93	और ज़मीन	93	गुमराह (जमा)	तो सलामती

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ								
वही	जिस ने	पैदा किया	आस्मानों	और ज़मीन	में	छः (6)	दिन	फिर उस ने करार पकड़ा
عَلَى الْعَرْشِ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ								
अर्श पर	वह जानता है	जो दाख़िल होता है	में	ज़मीन	और जो निकलता है	उस से	और जो उतरता है	
مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا								
आस्मानों से	और जो चढ़ता है	उस में	और वह	तुम्हारे साथ	जहाँ कहीं	तुम हो	और अल्लाह	उसे जो
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤﴾ لَهُ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ								
तुम करते हो	देखने वाला	4	उसी के लिए	बादशाहत आस्मानों	और ज़मीन	और अल्लाह की तरफ़	लौटना	
الْأُمُورِ ﴿٥﴾ يُوَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَهُوَ								
तमाम काम	5	वह दाख़िल करता है	रात	दिन में	और दाख़िल करता है	दिन	और रात में	और वह
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٦﴾ آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا								
जानने वाला	दिलों की बात को	6	तुम ईमान लाओ	अल्लाह पर	और उस के रसूल	और खर्च करो	उस से जो	
جَعَلَكُمْ مُسْتَحْلِفِينَ فِيهِ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا								
उस ने तुम्हें बनाया	जांनशीन	उस में	पस जो लोग	वह ईमान लाए	तुम में से	और उन्होंने ने खर्च किया	और उन्होंने ने	
لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٧﴾ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالرَّسُولِ يَدْعُوكُمْ								
उन के लिए	बड़ा अजर	7	और क्या (हो गया है) तुम्हें	तुम ईमान नहीं लाते	अल्लाह पर	और रसूल	वह तुम्हें बुलाते हैं	
لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾								
कि तुम ईमान लाओ	अपने रब पर	और यकीनन वह ले चुका है	तुम से अहद	अगर तुम हो	ईमान वाले	8		
هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدَةٍ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ								
वही है जो	नाज़िल फ़रमाता है	पर	अपना बन्दा	वाज़ेह आयात	ताकि वह तुम्हें निकाले	से		
الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٩﴾								
अन्धेरों से	रोशनी की तरफ़	और वेशक अल्लाह	तुम पर	शफ़क़त करने वाला	निहायत मेहरबान	9		
وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمُوتِ								
और क्या (हो गया है) तुम्हें	तुम खर्च नहीं करते	में	अल्लाह का रास्ता	और अल्लाह के लिए मीरास	आस्मानों			
وَالْأَرْضِ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتِلٌ								
और ज़मीन	बराबर नहीं	तुम में से	जिस ने खर्च किया	पहले	फ़तह	और क़िताल किया		
أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدُ وَقَاتِلُوا								
यह लोग	बड़े	दरजे	से	जिन्होंने ने खर्च किया	बाद में	और उन्होंने ने क़िताल किया		
وَكَلَّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٠﴾								
और हर एक	वादा किया अल्लाह ने	अच्छा	और अल्लाह	उस से जो तुम करते हो	बाख़बर	10		

वही जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को छः दिन में, फिर उस ने अर्श पर क़रार पकड़ा, वह जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होता है और जो उस से निकलता है, और जो आस्मानों से उतरता है और जो उस में चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहाँ कहीं (भी) तुम हो, और जो तुम करते हो अल्लाह है उसे देखने वाला। (4)

उसी के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, और अल्लाह की तरफ़ है तमाम कामों का लौटना। (5)

वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और वह है खूब जानने वाला दिलों की बात (तक) को। (6)

तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान लाओ और उस (माल) में से खर्च करो जिस में उस ने तुम्हें जांनशीन बनाया है, पस तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने खर्च किया, उन के लिए बड़ा अजर है। (7)

और तुम्हें क्या हो गया? कि तुम ईमान नहीं लाते अल्लाह और उस के रसूल (स) पर, जबकि वह तुम्हें बुलाते हैं कि तुम अपने रब पर ईमान ले आओ, और वह यकीनन तुम से अहद ले चुका है अगर तुम ईमान वाले हो। (8)

वही है जो अपने बन्दे पर वाज़ेह आयात नाज़िल फ़रमाता है, ताकि वह तुम्हें निकाले अन्धेरों से रोशनी की तरफ़, और वेशक अल्लाह तुम पर शफ़क़त करने वाला मेहरबान है। (9)

और तुम्हें क्या हो गया? कि तुम खर्च नहीं करते अल्लाह के रास्ते में, और अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की मीरास (बाकी रह जाने वाला सब), तुम में से बराबर नहीं वह जिस ने खर्च किया और क़िताल किया फ़तह (मक्का) से पहले, यह लोग दरजे में (उन) से बड़े हैं जिन्होंने ने बाद में खर्च किया और उन्होंने ने क़िताल किया, और अल्लाह ने हर एक से अच्छा वादा किया है और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (10)

कौन है जो अल्लाह को कर्ज़ दे? कर्ज़ हसना (अच्छा कर्ज़), पस वह उस को दोगुना बढ़ादे और उस के लिए बड़ा अम्दा अजर है। (11) जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उन का नूर उन के सामने और उन के दाएं दौड़ता होगा, तुम्हें आज खुशखबरी है बागात की जिन के नीचे बहती है नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (12) जिस दिन कहेंगे मुनाफ़िक् मर्द और मुनाफ़िक् औरतें उन लोगों को जो ईमान लाए, हमारी तरफ़ निगाह करो, हम तुम्हारे नूर से (कुछ) हासिल कर लें, कहा जाएगा: अपने पीछे लौट जाओ, पस (वहां) नूर तलाश करो। फिर उन के दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, उस का एक दरवाज़ा होगा, उस के अन्दर रहमत और उस के बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा। (13) वह (मुनाफ़िक्) उन (मुसलमानों) को पुकारेंगे: क्या हम तुम्हारे साथ न थे? वह कहेंगे: हाँ (क्यों नहीं!) लेकिन तुम ने अपनी जानों को फ़ितने में डाला, और तुम इन्तिज़ार करते और शक करते थे और तुम्हें तुम्हारी झूटी आज़ूओं ने धोके में डाला यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया और अल्लाह के बारे में तुम्हें धोका देने वाले (शैतान) ने धोके में डाला। (14) सो आज न तुम से कोई फ़िदया लिया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने कुफ़ किया, तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, यह तुम्हारी ख़बर गीरी करने वाली और बुरी लौटने की जगह है। (15) क्या मोमिनों के लिए अभी वक़्त नहीं आया? कि उन के दिल अल्लाह की याद के लिए झुक जाएं और (उस के लिए) जो हक़ तज़ाला की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, और वह उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें इस से क़ब्ल किताब दी गई, फिर एक लम्बी मुदत उन पर गुज़र गई तो उन के दिल सख़्त हो गए, और उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (16) (खुब) जान लो कि अल्लाह ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है। तहकीक़ हम ने तुम्हारे लिए निशानियां बयान कर दी हैं ताकि तुम समझो। (17)

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضْعِفُهُ لَهُ وَلَهُ							
और उस के लिए		उस को	पस बढ़ादे वह उस को दोगुना	कर्ज़ हसना	कर्ज़ दे अल्लाह को	कौन है जो	
أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١١﴾ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى نُورُهُمْ							
उन का नूर	दौड़ता होगा	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	तुम देखोगे	जिस दिन	11	अजर बड़ा उम्दा
بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرُكُمُ الْيَوْمَ جَنَّتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا							
उन के नीचे	बहती है	बागात	आज	खुशखबरी तुम्हें	और उन के दाएं	उन के सामने	
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾ يَوْمَ يَقُولُ							
जिस दिन कहेंगे	12	कामयाबी बड़ी	वह-यह	यह	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें
الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انْظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ							
से	हम हासिल कर लें	हमारी तरफ निगाह करो	वह ईमान लाए	उन लोगों को जो	और मुनाफिक औरतें	मुनाफिक मर्द (जमा)	
نُورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ							
उन के दरमियान	फिर मारी (खड़ी कर दी) जाएगी	नूर	फिर तुम तलाश करो	अपने पीछे	लौट जाओ तुम	कहा जाएगा	तुम्हारा नूर
بِسُورٍ لَهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿١٣﴾							
13	अज़ाब	उस की तरफ से	और उस के बाहर	रहमत	उस में	उस के अन्दर	एक दरवाज़ा
يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ							
अपनी जानों को	तुम ने फितने में डाला	और लेकिन तुम	हाँ	वह कहेंगे	तुम्हारे साथ	क्या हम न थे	वह उन्हें पुकारेंगे
وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبِطُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ							
अल्लाह का हुक्म	आ गया	यहां तक कि	तुम्हारी झूटी आज़ूएं	और तुम्हें धोके में डाला	और तुम शक करते थे	और तुम इन्तिज़ार करते	
وَعَرَّكُم بِاللَّهِ الْغُرُورُ ﴿١٤﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ							
से	और न	कोई फिदया	तुम से	न लिया जाएगा	सो आज	14	धोका देने वाला
الَّذِينَ كَفَرُوا مَاؤُكُمْ النَّارُ هِيَ مَوْلُكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٥﴾							
15	लौटने की जगह	और बुरी	तुम्हारी मौला	यह	जहन्नम	ठिकाना तुम्हारा	कुफ़ किया
أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ							
और जो नाज़िल हुआ	अल्लाह की याद के लिए	उन के दिल	झुक जाएं	कि	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए (मोमिन)	क्या नज़्दीक (वक़्त) नहीं आया	
مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ							
तो दराज़ हो गई	इस से क़ब्ल	जिन्हें किताब दी गई	उन लोगों की तरह	और वह न हो जाएं	हक़	से	
عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿١٦﴾ اَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ							
कि अल्लाह	तुम जान लो	16	फ़ासिक् (नाफरमान)	उन में से	और कसीर	उन के दिल	फिर सख्त हो गए
يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٧﴾							
17	समझो	ताकि तुम	निशानियां	तुम्हारे लिए	तहकीक़ हम ने बयान कर दी	उस के मरने के बाद	ज़मीन ज़िन्दा करता है

إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَعْفَ لَهُمْ							
वह दो चन्द कर दिया जाएगा उन के लिए	हसना (अच्छा)	क़र्ज़	और जिन्होंने ने क़र्ज़ दिया अल्लाह को	और ख़ैरात करने वाली औरतें	ख़ैरात करने वाले मर्द	वेशक	
وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ (18) وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ							
वही	यही लोग	और उस के रसूल (जमा)	अल्लाह पर	ईमान लाए	और जो लोग	18	वड़ा उम्दा अजर और उन के लिए
الصَّادِقُونَ وَالشُّهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ							
और उन का नूर	उन का अजर	उन के लिए	नज़्दीक अपने रब के	और शहीद (जमा)	सिद्दीक (जमा)		
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ (19) اَعْلَمُوا أَنَّمَا							
इस के सिवा नहीं	तुम जान लो	19	दोज़ख़ वाले	यही लोग	हमारी आयतों को झुटलाया	और जिन्होंने ने कुफ़ किया	
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُمْ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ							
और कसूरत की खाहिश	वाहम	और फ़ख़र करना	और ज़ीनत	और कूद	खेल	दुनिया की ज़िन्दगी	
فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيَجُ							
फिर वह ज़ोर पकड़ती है	उस की पैदावार	काशतकार	भली लगी	वारिश की तरह	और औलाद	मालों में	
فَتَرْبُهُ مُضْفَرًا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ							
और मग़फ़िरत	सख़्त अज़ाब	और आख़िरत में	चूरा चूरा	वह हो जाती है	फिर	ज़र्द	सो तू उस को देखता है
مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ (20)							
20	धोके का सामान	मगर - सिर्फ़	दुनिया की ज़िन्दगी	और नहीं	और रज़ा मन्दी	अल्लाह की तरफ़ से	
سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ							
आस्मान	जैसी चौड़ाई (बुसज़त)	उस की चौड़ाई (बुसज़त)	और जन्नत	अपने रब की तरफ़ से	मग़फ़िरत	तरफ़	तुम दौड़ो
وَالْأَرْضِ ۚ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ							
अल्लाह का फ़ज़ल	यह	और उस के रसूलों	अल्लाह पर	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	वह तैयार की गई	और ज़मीन
يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ (21) مَا أَصَابَ مِنْ مُّصِيبَةٍ							
कोई मुसीबत	नहीं पहुँचती	21	बड़े	फ़ज़ल वाला	और अल्लाह	जिसे वह चाहे	वह उस को देता है
فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا ۚ إِنَّ							
वेशक	कि हम पैदा करें उस को	उस से कब्ल	किताब में	मगर	तुम्हारी जानों में	और न	ज़मीन में
ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ (22) لَّكَيْلًا تَأْسُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا							
और न तुम खुश हो	जो तुम से जाती रहे	पर	ताकि तुम ग़म न खाओ	22	आसान	अल्लाह पर	यह
بِمَا آتَاكُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ (23) الَّذِينَ يَبْخُلُونَ							
बुख़ल करते हैं	जो लोग	23	फ़ख़र करने वाले	इतराने वाले	हर एक (किसी)	पसंद नहीं करता	और उस पर जो उस ने तुम्हें दिया
وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ (24)							
24	सज़ावारे हम्द	वह बेनियाज़	तो वेशक अल्लाह	सुँह फेर ले	और जो	बुख़ल का	लोग और हुक्म (तरगीब) देते हैं

वेशक ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें, और जिन्होंने ने अल्लाह को क़र्ज़ हसना (अच्छा क़र्ज़) दिया, वह उन के लिए दो चन्द कर दिया जाएगा, और उन के लिए बड़ा अजरा अजर है। (18) और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए, यही लोग हैं अपने रब के नज़्दीक सिद्दीक (सच्चे) और शहीद, उन के लिए उन का अजर है और उन का नूर, और जिन्होंने ने कुफ़ किया और हमारी आयतों को झुटलाया, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (19) तुम (खूब) जान लो, इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी (महज़ज़) खेल कूद है, और एक ज़ीनत और वाहम फ़ख़र (खुद सताई) करना और कसूरत की खाहिश करना मालों में और औलाद में, वारिश की तरह कि काशतकार को उस की पैदावार भली लगी, फिर वह ज़ोर पकड़ती है, पस तू उस को देखता है ज़र्द, फिर वह चूरा चूरा हो जाती है, और आख़िरत में सख़्त अज़ाब भी है और मग़फ़िरत भी है अल्लाह की तरफ़ से और रज़ा मन्दी, और दुनिया की ज़िन्दगी धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं। (20) तुम दौड़ो मग़फ़िरत की तरफ़ अपने रब की, और उस जन्नत की तरफ़ जिस की बसज़त आस्मानों और ज़मीन की बसज़त जैसी (बराबर) है, उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो ईमान लाए अल्लाह और उस के रसूलों पर, यह अल्लाह का फ़ज़ल है, वह उस को देता है जिसे वह चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है। (21) कोई मुसीबत नहीं पहुँचती ज़मीन में और न तुम्हारी जानों में मगर किताब में (दर्ज) है, इस से पहले कि हम उस को पैदा करें, वेशक यह अल्लाह पर आसान है। (22) ताकि तुम उस पर ग़म न खाओ जो तुम से जाती रहे और न खुश हो जाओ उस पर जो उस ने तुम्हें दिया, और अल्लाह किसी इतराने वाले, फ़ख़र करने वाले को पसंद नहीं करता। (23) जो लोग बुख़ल करते हैं और तरगीब देते हैं लोगों को बुख़ल की, और जो सुँह फेर ले तो वेशक अल्लाह बेनियाज़, सज़ावारे हम्द (सतोदा सिफ़ात) है। (24)

तहकीक हम ने अपने रसूलों को भेजा वाज़ेह दलाइल के साथ और हम ने उन के साथ उतारी किताब और मीज़ाने अदल ताकि लोग ईसाफ़ पर काइम रहें, और हम ने लोहा उतारा, उस में सख़्त ख़तरा (बला की सख़्ती) है और लोगों के लिए कई फ़ायदे हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले कि कौन उस की मदद करता है और उस के रसूलों की, बिन देखे, वेशक अल्लाह क़व्वी, ग़ालिब है। (25) और तहकीक हम ने नूह (अ) और इब्राहीम (अ) को भेजा और हम ने उन की औलाद में नुबूवत और किताब रखी। सो उन में से कुछ हिदायत याफ़ता है, और उन में से अक़्सर नाफ़रमान हैं। (26) फिर हम ने उन के क़दमों के निशानात पर (उन के पीछे) अपने रसूल लाए, और उन के पीछे हम ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को लाए और हम ने उसे इंजील दी, और जिन लोगों ने उस की पैरवी की उन के दिलों में नमी और मुहब्बत डाल दी। और तरके दुनिया (जिस की रस्म) खुद उन्होंने ने निकाली हम ने उन पर वाजिब न की थी, मगर (उन्होंने ने) अल्लाह की रज़ा चाहने के लिए (इख़्तियार की) तो उस को न निवाहा (जैसे) उस के निवाहने का हक़ था, तो उन में से जो लोग ईमान लाए हम ने उन्हें उन का अजर दिया, और अक़्सर उन में से नाफ़रमान हैं। (27) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, वह अपनी रहमत से (सवाब के) दो हिस्से अता करेगा और तुम्हारे लिए ऐसा नूर कर देगा कि तुम उस के साथ चलोगे और वह वख़श देगा तुम्हें, और अल्लाह वख़शने वाला मेहरबान है। (28) ताकि अहले किताब जान लें कि वह अल्लाह के फ़ज़ल में से किसी शै पर कुदरत नहीं रखते, और यह कि फ़ज़ल अल्लाह के हाथ में है, वह उसे देता है जिस को वह चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है। (29)

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ						
किताब	उन के साथ	और हम ने उतारी	वाज़ेह दलाइल के साथ	अपने रसूलों	तहकीक हम ने भेजा	
وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ						
उस में	लोहा	और हम ने उतारा	ईसाफ़ पर	लोग	ताकि काइम रहें	और मीज़ाने (अदल)
بَأْسٍ شَدِيدٍ وَمَنْفَعٍ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ						
मदद करता है उस की	कौन	और ताकि मालूम कर ले अल्लाह	लोगों के लिए	और फ़ायदा	लड़ाई (ख़तरा) सख़्त	
وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا						
नूह (अ)	और तहकीक हम ने भेजा	25	ग़ालिब	क़व्वी	वेशक अल्लाह	और उस के रसूल
وَأَبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النَّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ فَمِنْهُمْ مُّهُتَدٍ						
हिदायत याफ़ता	सो उन में से कुछ	और किताब	नुबूवत	उन की औलाद में	और हम ने रखी	और इब्राहीम (अ)
وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا						
और हम उन के पीछे लाए	अपने रसूल	उन के क़दमों के निशानात पर	हम उन के पीछे लाए	फिर	26	नाफ़रमान उन में से और अक़्सर
بِعِيسَىٰ ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ						
वह लोग जिन्होंने ने	दिलों में	और हम ने डाल दी	इंजील	और हम ने उसे दी	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)
اتَّبَعُوهُ رَافِقَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا						
हम ने वाजिब नहीं की	जो उन्होंने ने खुद निकाली	और तरके दुनिया	और रहमत	नमी	उस की पैरवी की	
عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا						
उस को निवाहने का हक़	उस को निवाहा	तो न	अल्लाह की रज़ा	चाहना	मगर	उन पर
فَاتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٢٧﴾						
27	नाफ़रमान	उन में से	और अक़्सर	उन का अजर	उन में से	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए तो हम ने दिया
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ						
वह तुम्हें अता करेगा	उस के रसूलों पर	और ईमान लाओ	डरो अल्लाह से तुम	जो लोग ईमान लाए	ऐ	
तुम्हें	और वह वख़शदेगा	उस के साथ	तुम चलोगे	ऐसा नूर	तुम्हारे लिए	और अपनी रहमत से दो हिस्से
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْلًا يَعْلَمُ أَهْلُ الْكِتَابِ إِلَّا يَفْقِرُونَ						
कि वह कुदरत नहीं रखते	अहले किताब	ताकि जान लें	28	मेहरबान	वख़शने वाला	और अल्लाह
عَلَىٰ شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ						
वह देता है उसे	अल्लाह के हाथ में	फ़ज़ल	और यह कि	अल्लाह का फ़ज़ल	से	किसी शै पर
مَنْ يَّشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾						
29	बड़ा	फ़ज़ल वाला		और अल्लाह	जिस को वह चाहता है	

آيَاتُهَا ٢٢ ﴿٥٨﴾ سُورَةُ الْمُجَادِلَةِ ﴿رُكُوعَاتُهَا ٣﴾												
रुकुआत 3			(58) सूरतुल मुजादिला इख़तिलाफ़ करने वाली				आयात 22					
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ												
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है												
قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا												
अपने खावन्द के बारे में		आप (स) से बहस करती थी		वह औरत जो		बात		सुन ली अल्लाह ने		यकीनन		
وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿١﴾												
1	देखने वाला	सुनने वाला	वेशक अल्लाह	तुम दोनों की गुफ्तगू		सुनता था	और अल्लाह	अल्लाह	के पास	और शिकायत करती थी		
الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْكُمْ مَنْ نَسَاهُمْ مَا هُنَّ أُمَّهَاتُهُمْ إِنَّ أُمَّهَاتُهُمْ												
उन की माँएँ		नहीं	उन की माँएँ	वह नहीं	अपनी वीवियों से		तुम में से		ज़िहार करते हैं	जो लोग		
إِلَّا إِلَيْنَا وَلَدَنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا مِنَ الْقَوْلِ وَزُورًا												
और झूट		बात से		नामाकूल		अलबत्ता कहते हैं		और वेशक वह		जिन्होंने ने जना है उन्हें	सिर्फ वह औरतें	
وَأَنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٢﴾ وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْ نَسَاهُمْ ثُمَّ												
फिर	अपनी वीवियों से			ज़िहार करते हैं		और जो लोग	2	बख़्शने वाला	अलबत्ता माफ़ करने वाला		और वेशक अल्लाह	
يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَا ذَلِكُمْ												
यह		कि एक दूसरे को हाथ लगाएँ		इस से क़व्ल		एक गुलाम	तो आज़ाद करना लाज़िम है		उस से जो उन्होंने ने कहा (कौल)		वह रुज़ूअ करलें	
ثَوَعُظُونَ بِهِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٣﴾ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ												
तो रोज़े		न पाए		तो जो कोई	3	बाख़बर		उस से जो तुम करते हो		और अल्लाह	उस से - की	तुम्हें नसीहत की जाती है
شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَا فَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَاطْعَامُ												
तो खाना खिलाए		उसे मक़दूर न हो		फिर - जिस	कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएँ		इस से क़व्ल		लगातार		दो महीने	
سِتِّينَ مَسْكِينًا ذَلِكَ لِثُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ												
अल्लाह की हदें		और यह		और उस का रसूल		अल्लाह पर		यह इस लिए कि तुम ईमान रखो		मसाकीन को		साठ (60)
وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ												
अल्लाह और उस का रसूल		वह मुख़ालिफ़त करते हैं		जो लोग		वेशक	4	दर्दनाक अज़ाब		और न मानने वालों के लिए		
كُتِبُوا كَمَا كُتِبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ												
वाज़ेह आयतें		और यकीनन हम ने नाज़िल की			उन से पहले		वह लोग जो		जैसे ज़लील किए गए		वह ज़लील किए जाएंगे	
وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿٥﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمُ												
तो वह उन्हें आगाह करेगा		सब		उन्हें उठाएगा अल्लाह		जिस दिन	5	ज़िल्लत का		अज़ाब		और काफ़िरों के लिए
بِمَا عَمِلُوا أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٦﴾												
6	निगरान		हर शौ पर			और अल्लाह	और वह उसे भूल गए थे		उसे गिन रखा था अल्लाह ने		वह जो उन्होंने ने किया	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है यकीनन अल्लाह ने उस औरत (खौलह^१) की बात सुन ली जो आप (स) से अपने शौहर के बारे में बहस करती थी और अल्लाह के पास शिकायत करती थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ्तगू सुनता था। वेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (1)

तुम में से जो लोग अपनी वीवियों से ज़िहार करते हैं (उन्हें माँ कह देते हैं) तो वह उन की माँएँ नहीं (हो जाती), उन की माँएँ वही हैं जिन्होंने ने उन्हें जना है, और वेशक वह एक नामाकूल बात और झूट कहते हैं, और वेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (2)

और जो लोग अपनी वीवियों से ज़िहार करते हैं (उन्हें माँएँ कह देते हैं) फिर वह अपने कौल से रुज़़अ कर लें तो (उन पर) लाज़िम है आज़ाद करना एक गुलाम, इस से क़व्ल कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएँ (वाहम इख़तिलात करें), यह है जिस की तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (3)

जो कोई (गुलाम) न पाए तो वह लगातार दो महीने रोज़े (रखे) इस से क़व्ल कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएँ (इख़तिलात करें), फिर जिस को (उस का भी) मक़दूर न हो तो साठ (60) मस्कीनों को खाना खिलाए, यह इस लिए है कि तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान रखो, और यह अल्लाह की (मुक़रर कर्दा) हदें हैं, और न मानने वालों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (4)

वेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करते हैं वह ज़लील किए जाएंगे जैसे ज़लील किए गए वह लोग जो उन से पहले थे, और यकीनन हम ने वाज़ेह आयतें नाज़िल की हैं, और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (5)

जिस दिन (जिला) उठाएगा अल्लाह उन सब को, तो जो कुछ उन्होंने ने किया वह उन्हें आगाह करेगा, उसे अल्लाह ने गिन (महफूज़) रखा था और वह उसे भूल गए थे, और अल्लाह हर शै पर निगरान है। (6)

क्या आप (स) ने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है। तीन लोगों में कोई सरगोशी नहीं होती मगर वह उन में चौथा होता है और न पाँच (की सरगोशी) मगर वह उन में छटा होता है, और खाह उस से कम हों या ज़ियादा मगर जहाँ कहीं वह हों वह (अल्लाह) उन के साथ होता है, फिर वह उन्हें बतला देगा क़ियामत के दिन जो कुछ उन्होंने ने किया, वेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (7)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें सरगोशी से मना किया गया (मगर) वह फिर वही करते हैं जिस से उन्हें मना किया गया और वह गुनाह और सरकशी की और रसूल (स) की नाफ़रमानी (के बारे में) बाहम सरगोशी करते हैं, और जब वह आप (स) के पास आते हैं तो आप (स) को सलाम दुआ देते हैं उस लफ़्ज़ से जिस से अल्लाह ने आप को दुआ नहीं दी, और वह अपने दिलों में कहते हैं कि अल्लाह हमें उस की क्यों सज़ा नहीं देता जो हम कहते हैं। उन के लिए काफी है जहन्नम, वह उस में डाले जाएंगे, सो (यह कैसा) बुरा ठिकाना है! (8) ऐ ईमान वालो! जब तुम बाहम सरगोशी करो तो गुनाह और सरकशी की और रसूल (स) की नाफ़रमानी (के बारे में) सरगोशी न करो, और (बल्कि) नेकी और परहेज़गारी की सरगोशी करो, और अल्लाह से डरो जिस के पास तुम जमा किए जाओगे। (9) इस के सिवा नहीं कि सरगोशी शैतान (की तरफ़) से है, ताकि वह उन लोगों को गुमगीन कर दे जो ईमान लाए, और वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर उन का कुछ नहीं बिगाड़ सकता, और मोमिनो को अल्लाह पर (ही) भरोसा करना चाहिए। (10) ऐ मोमिनो! जब तुम्हें कहा जाए कि तुम मजलिसों में खुल कर बैठो तो तुम खुल कर बैठ जाया करो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी बख़शेगा, और जब कहा जाए कि तुम उठ खड़े हो तो उठ जाया करो, तुम में से जो लोग ईमान लाए और जिन लोगों को इल्म अता किया गया अल्लाह बुलन्द कर देगा उन के दरजे, और तुम जो करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (11)

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَا يَكُونُ مِنْ								
कोई	नहीं होती	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	वह जानता है	कि अल्लाह	क्या आप ने नहीं देखा
تَجَوَّى ثَلَاثَةً إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةَ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَى								
और न (खाह) कम	उन में छटा	मगर वह	पाँच की	और न	उन में चौथा	मगर वह	तीन लोगों में	सरगोशी
مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ آيْنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا								
जो कुछ उन्होंने ने किया	वह उन्हें बतला देगा	फिर	वह हों	जहां कहीं	उन के साथ	मगर वह	और न ज़ियादा	उस से
يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا								
वह जिन्हें मना किया गया	तरफ-को	क्या तुम ने नहीं देखा	7	जानने वाला	तमाम-हर शै का	वेशक अल्लाह	क़ियामत के दिन	
عَنِ النَّجْوَى ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْأَيْمِ وَالْعُدْوَانِ								
और सरकशी	गुनाह से-की	वह बाहम सरगोशी करते हैं	उस से	जिस से मना किया गया उन्हें	वह (वही) करते हैं	फिर	सरगोशी से	
وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ								
उस (लफ्ज़) से अल्लाह ने	आप को दुआ नहीं दी	जिस से	आप को सलाम दुआ देते हैं	वह आते हैं आप (स) के पास	और जब	रसूल	और नाफ़रमानी	
وَيَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ								
जहन्नम	उन के लिए काफी है	उस की जो हम कहते हैं	हमें अज़ाब देता अल्लाह	क्यों नहीं	अपने दिलों में		वह कहते हैं	
يَصْلَوْنَهَا فَبُئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٨﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ								
तुम बाहम सरगोशी करो	जब	ईमान वालो	ऐ	8	ठिकाना	सो बुरा	वह डाले जाएंगे उस में	
فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْأَيْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا								
और सरगोशी करो	रसूल (स)	और नाफ़रमानी	और सरकशी	गुनाह की	तो सरगोशी न करो			
بِالْبُرِّ وَالْتَقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩﴾ إِنَّمَا النَّجْوَى								
सरगोशी	इस के सिवा नहीं	9	तुम जमा किए जाओगे	उस की तरफ-पास	वह जो	और अल्लाह से डरो	और परहेज़गारी	नेकी की
مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا								
बग़ैर	कुछ	वह उन का बिगाड़ सकता	और नहीं	ईमान लाए	उन लोगों को जो	ताकि वह गुमगीन करे	शैतान से	
بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا								
मोमिनो!		ऐ	10	मोमिन (जमा)	तो भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	अल्लाह के हुक्म के	
إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ								
कुशादगी बख़शेगा अल्लाह	तो तुम खुल कर बैठ जाया करो	मजलिसों में			तुम खुल कर बैठो	तुम्हें	जब कहा जाए	
لَكُمْ وَإِذَا قِيلَ انْشُرُوا فَانْشُرُوا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا								
जो लोग ईमान लाए		बुलन्द कर देगा अल्लाह	तो उठ जाया करो	तुम उठ खड़े हो	और जब कहा जाए	तुम्हें		
مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١﴾								
11	बाख़बर	तुम करते हो	उस से	और अल्लाह	दरजे	इल्म अता किया गया	और जिन लोगों को	तुम में से

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ						
पहले	तो तुम दे दो	रसूल (स)	तुम कान में बात करो	जब	मोमिनो	ऐ
نَجْوَكُمْ صَدَقَةٌ ذَلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطَهَرُ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ						
तो वेशक अल्लाह	तुम न पाओ	फिर अगर	और ज़ियादा पाकीज़ा	बेहतर तुम्हारे लिए	यह	कुछ सदका अपनी सरगोशी
غَفُورٌ رَّحِيمٌ (١٢) ءَأَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوِكُمْ						
अपनी सरगोशी	पहले	कि तुम दे दो	क्या तुम डर गए	12	रहम करने वाला	बख़्शने वाला
صَدَقْتُ فَإِذَا لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ						
नमाज़	तो काइम करो तुम	तुम पर	और दरगुज़र फ़रमाया अल्लाह ने	तुम न कर सके	सो जब	सदकात
وَاتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ (١٣)						
13	उस से जो तुम करते हो	बाख़बर	और अल्लाह	अल्लाह और उसका रसूल (स)	और तुम इताअत करो	और अदा करो ज़कात
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا						
और न	तुम में से	न वह	उन पर	अल्लाह ने गुज़ब किया	उन लोगों से	जो लोग दोस्ती करते हैं
مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ (١٤) أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا						
अज़ाब	उनके लिए	तैयार किया अल्लाह ने	14	जानते हैं	हालाकि वह	झूट पर
شَدِيدًا إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (١٥) اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً						
ढाल	अपनी कसमें	उन्होंने बना लिया	15	वह करते थे	जो कुछ	बुरा
فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ (١٦) لَنْ تَغْنَى عَنْهُمْ						
उन से - को	हरगिज़ न बचा सकेंगे	16	ज़िल्लत का	अज़ाब	तो उन के लिए	अल्लाह का रास्ता
أَمْوَالَهُمْ وَلَا أَوْلَادَهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ						
दोज़ख़ वाले - जहन्नमी	यही लोग	कुछ-ज़रा	अल्लाह से	उन की औलाद	और न	उन के माल
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (١٧) يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ						
उस के लिए	तो वह कसमें खाएंगे	सब	उन्हें उठाएगा अल्लाह	जिस दिन	17	हमेशा रहेंगे
كَأَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ						
वही	वेशक वह	याद रखो	किसी शै पर	कि वह	और वह गुमान करते हैं	तुम्हारे लिए- सामने
الْكَاذِبُونَ (١٨) اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ						
अल्लाह की याद	तो उस ने उन्हें भुला दी	शैतान	उन पर	ग़ालिब आ गया	18	झूटे
أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ (١٩)						
19	घाटा पाने वाले	वही	शैतान का गिरोह	वेशक	याद रखो	शैतान का गिरोह
إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ (٢٠)						
20	ज़लील तरीन लोग	में	यही लोग	और उस के रसूल की	मुख़ालिफ़त करते हैं अल्लाह की	जो लोग

ऐ मोमिनो! जब तुम रसूल (स) से कान में (निजी) बात करो तो तुम अपनी सरगोशी से पहले कुछ सदका दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर और ज़ियादा पाकीज़ा है, फिर अगर तुम (मक़दूर) न पाओ तो वेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (12)

क्या तुम उस से डर गए कि अपनी सरगोशी से पहले सदका दो, सो जब तुम न कर सके और अल्लाह ने तुम पर दरगुज़र फ़रमाया तो तुम नमाज़ काइम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करो, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (13)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जो उन लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह ने गुज़ब किया, वह न तुम में से हैं और न उन में से हैं, और वह जान बूझ कर झूट पर कसम खा जाते हैं। (14)

अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अज़ाब तैयार किया है, वेशक वह बुरे काम करते थे। (15)

उन्होंने ने अपनी कसमों को ढाल बना लिया, पस उन्होंने ने (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोका तो उन के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (16)

उन्हें उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह से हरगिज़ ज़रा भी न बचा सकेंगे। यही लोग जहन्नमी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (17)

जिस दिन अल्लाह उन सब को (दोबारा) उठाएगा तो उस के लिए (उस के हुज़ूर) कसमें खाएंगे जैसे वह तुम्हारे सामने कसमें खाते हैं, और वह गुमान करते हैं कि वह किसी शै (भली राह) पर हैं, याद रखो! वेशक वही झूटे हैं। (18)

ग़ालिब आगया है उन पर शैतान, तो उस ने उन्हें अल्लाह की याद भुला दी, यही लोग शैतान की गिरोह हैं, खूब याद रखो, वेशक शैतान के गिरोह ही घाटा पाने वाले हैं। (19)

वेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करते हैं, यही लोग ज़लील तरीन लोगों में से हैं। (20)

फैसला कर दिया अल्लाह ने कि मैं और मेरे रसूल (स) ज़रूर ग़ालिब आएंगे, वेशक अल्लाह क़बी (तवाना) ग़ालिब है। (21)

तुम न पाओगे उन लोगों को जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर कि वह उन से दोस्ती रखते हों जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की, ख़ाह वह उन के बाप दादा हों या उन के बेटे हों, या उन के भाई हों या उन के कुंवें वाले हों, यही लोग हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान सबत कर दिया और उन की मदद की अपने ग़ैबी फ़ैज़ से, और वह उन्हें (उन) बागात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, राज़ी हुआ अल्लाह उन से, और वह उस से राज़ी, यही लोग हैं अल्लाह का गिरोह, ख़ूब याद रखो! अल्लाह के गिरोह वाले ही (दो ज़हान में) कामयाब होने वाले हैं। (22)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो भी आस्मानों में और जो भी ज़मीन में है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (1)

वही है जिस ने निकाला अहले किताब के काफ़िरों को उन के घरों से पहले ही इज़्तिमाए लशकर पर, तुम्हें गुमान (भी) न था कि वह निकलेंगे और वह ख़याल करते थे कि उन के किले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब (ऐसी जगह से आया) जिस का उन्हें गुमान (भी) न था, और अल्लाह ने उन के दिलों में रोब डाला, और वह अपने हाथों से और मोमिनों के हाथों से अपने घर बरबाद करने लगे, तो ऐ (बसीरत की) आँखों वालो इब्रत पकड़ो। (2)

और अगर अल्लाह ने उन पर ज़िला वतन होना लिख रखा न होता तो वह उन्हें दुनिया में अज़ाब देता, और उन के लिए आखिरत में जहन्नम का अज़ाब है। (3)

كَتَبَ اللَّهُ لَاغَلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا									
कौम (लोग)	तुम न पाओगे	21	ग़ालिब	कबी	वेशक अल्लाह	और मेरे रसूल	मैं	मैं ज़रूर ग़ालिब आऊँगा	लिख दिया (फैसला कर दिया) अल्लाह
يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ									
और उस के रसूल की	मुख़ालिफ़त की अल्लाह की	जो - जिस	और दोस्ती रखते हों	और आख़िरत का दिन			अल्लाह पर	वह ईमान रखते हैं	
وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۖ أُولَئِكَ									
यही लोग	उन का घराना	या	उन के भाई	या	उन के बेटे	या	उन के बाप दादा	वह हों	खाह
كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ									
बागात	और वह दाख़िल करेगा उन्हें	अपने से	रूह (अपने ग़ैबी फ़ैज़ से)	और उन की मदद की	ईमान	लिख दिया (सबत कर दिया) उन के दिलों में			
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا									
और वह राज़ी	उन से	राज़ी हुआ अल्लाह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती है		
عَنْهُ ۖ أُولَئِكَ حِزْبُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾									
22	कामयाब होने वाले	वही	अल्लाह का गिरोह	ख़ूब याद रखो कि वेशक	अल्लाह का गिरोह	यही लोग	उस से		
آيَاتُهَا ٢٤ ﴿٥٩﴾ سُورَةُ الْحَشْرِ ﴿٢٤﴾ رُكُوعَاتُهَا ٣									
(59) सूरतुल हशर जमा करना या होना रुकुआत 3 आयात 24									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾									
1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की	
هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ									
उन के घरों	से	अहले किताब	से - के	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)			निकाला	वही है जिस ने	
لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۖ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا أَنَّهُمْ مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ									
उन के क़िले	उन्हें बचा लेंगे	कि वह	और वह ख़याल करते थे	कि वह निकलेंगे	तुम्हें गुमान न था	पहले इज्तिमाए (लशकर) पर			
مِّنَ اللَّهِ فَآتَهُمُ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَذَفَ									
और उस ने डाला	उन्हें गुमान न था			जहां से	तो उन पर आया अल्लाह		अल्लाह से		
فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ ۖ									
मोमिनों	और हाथों	अपने हाथों से	अपने घर	वह बरबाद करने लगे	रोब	उन के दिलों में			
فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ ﴿٢﴾ وَلَوْ لَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ									
उन पर	अल्लाह ने लिख रखा होता	यह कि	और अगर न	2	ऐ आँखों वाले			तो तुम इब्रत पकड़ो	
الْجَلَاءَ لَعَذَبُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿٣﴾									
3	जहन्नम का अज़ाब	आख़िरत में			और उन के लिए	दुनिया में	तो वह उन्हें अज़ाब देता	जिला वतन होना	

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ يُشَاقِّ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ							
तो वेशक अल्लाह	मुख़ालिफ़त करे अल्लाह की	और जो	और उस का रसूल (स)	उन्होंने ने मुख़ालिफ़त की अल्लाह की	इस लिए कि वह	यह	
شَدِيدُ الْعِقَابِ ٤ مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِّينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً							
खड़ा	तुम ने उस को छोड़ दिया	या	दरख़्त के तने	से	जो तुम ने काट डाले	4	सज़ा देने वाला सख़्त
عَلَىٰ أَصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْرِجَ الْفَاسِقِينَ ٥ وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ							
दिलवाया अल्लाह ने	और जो	5	नाफ़रमानों	और ताकि वह रुस्वा करे	तो अल्लाह के हुक्म से	उस की जड़ों पर	
عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ							
और लेकिन (बल्कि) अल्लाह	ऊंट	और न	घोड़े	उन पर	तुम ने दौड़ाए थे	तो न उन से	अपने रसूल (स) को
يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٦							
6	कुदरत रखता है	हर शै	पर	और अल्लाह	जिस पर वह चाहता है	पर	अपने रसूलों मुसल्लत फ़रमा देता है
مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ							
तो अल्लाह के लिए और रसूल (स) के लिए	वसतियों वाले	से	अपने रसूल (स) को	जो दिलवादे अल्लाह			
وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ كَىٰ							
ताकि	और मुसाफ़ि़रों	और मिसकीनों	और यतीमों	और करावतदारों के लिए			
لَا يَكُونُ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمَا اتَّكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ							
तो वह ले लो	रसूल (स)	तुम्हें अता फ़रमाए	और जो	तुम में से - तुम्हारे	मालदारों	दरमियान हाथों हाथ लेना (गर्दिश)	न रहे
وَمَا نَهَكُمُ عَنْهُ فَأَنْتَهُوْا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ٧							
7	सख़्त सज़ा देने वाला	वेशक अल्लाह	और तुम डरो अल्लाह से	तो तुम बाज़ रहो	उस से	तुम्हें मना करे	और जिस
لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ							
और अपने मालों	अपने घरों से	वह जो निकाले गए	मुहाजि़रों	मोहताजों के लिए			
يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ							
और उस का रसूल	और वह मदद करते हैं अल्लाह की	और रज़ा	अल्लाह का - से	फ़ज़ल	वह चाहते हैं		
أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّدِيقُونَ ٨ وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ							
और ईमान	इस घर	मुक़ीम रहे	और जो लोग	8	सच्चे	वह और यही लोग	
مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ							
अपने सीनों (दिलों)	में	और वह नहीं पाते	उन की तरफ़	हिज़्रत की	जिस	वह मुहब्बत करते हैं	उन से क़व्व
حَاجَةً مِّمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ							
उन्हें	और ख़ाह हो	अपनी जानों	पर	और वह तरजीह देते हैं	दिया गया उन्हें	उस की	कोई हाज़त
خَصَاصَةً ٩ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٩							
9	फ़लाह पाने वाले	वह	तो यही लोग	अपनी ज़ात	बुख़ल	वचाया और जो - जिस	तंगी

यह इस लिए कि उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की, और जो अल्लाह की मुख़ालिफ़त करे तो वेशक अल्लाह (उस को) सख़्त सज़ा देने वाला है। (4)

जो तुम ने दरख़्तों के तने काट डाले या उन्हें उन की जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया तो (यह) अल्लाह के हुक्म से था और ताकि वह नाफ़रमानों को रुस्वा कर दे। (5)

और अल्लाह ने अपने रसूल (स) को उन (वनू नज़ीर) से जो (माल) दिलवाया तो न तुम ने उन पर घोड़े दौड़ाए थे और न ऊंट, बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है मुसल्लत फ़रमा देता है, और अल्लाह हर शै पर कुदरत रखता है। (6)

अल्लाह ने वसतियों वालों से जो (माल) अपने रसूल (स) को दिलवाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल (स) के लिए और (रसूल स के) करावतदारों के लिए, और यतीमों और मिसकीनों और मुसाफ़ि़रों के लिए ताकि (दोलत) न रहे तुम्हारे मालदारों के दरमियान (ही) गर्दिश करती, और तुम्हें रसूल (स) जो अता फ़रमाए वह ले लो, और वह तुम्हें जिस से मना करें उस से तुम बाज़ रहो, और तुम अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है। (7)

मोहताज मुहाजि़रों के लिए (ख़ास तौर पर) जो निकाले गए अपने घरों से और अपने मालों से (महरूम किए गए) वह अल्लाह का फ़ज़ल और (उस की) रज़ा चाहते हैं और वह मदद करते हैं अल्लाह और उस के रसूल (स) की, यही लोग सच्चे हैं। (8)

और जो लोग (अनुसार) ईमान ला कर इस घर (दारुलहिज़्रत मदीना) में उन से क़व्व मुक़ीम हैं वह (उन से) मुहब्बत करते हैं जिन्होंने ने उनकी तरफ़ हिज़्रत की, और जो उन्हें (मुहाजि़रीन को) दिया गया अपने दिलों में उस की कोई हाज़त नहीं पाते और वह उन्हें तरजीह देते हैं अपनी जानों पर ख़ाह (ख़ुद) उन्हें तंगी (ज़रूरत) हो, और जिस ने अपनी ज़ात को बुख़ल से वचाया तो यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (9)

और जो लोग उन के बाद आए, वह कहते हैं: ऐ हमारे रब! हमें और हमारे भाइयों को बख्श दे वह जिन्होंने ईमान लाने में हम से सबक़्त की और हमारे दिलों में कोई कीना न होने दे उन लोगों के लिए जो ईमान लाए, ऐ हमारे रब! वेशक तू शफ़क़्त करने वाला, रहम करने वाला। (10)

क्या आप (स) ने मुनाफ़िकों को नहीं देखा? वह अपने भाइयों को कहते हैं जो काफ़िर हुए अहले किताब में से: अलबत्ता अगर तुम निकाले (जिला वतन किए) गए तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और तुम्हारे बारे में कभी हम किसी का कहा नहीं मानेंगे और अगर तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि वेशक वह झूठे है। (11)

और अगर वह जिला वतन किए गए तो यह न निकलेंगे उन के साथ, और अगर उन से लड़ाई हुई तो यह उन की मदद न करेंगे और अगर मदद करेंगे (भी) तो वह यकीनन पीठ फेरेंगे (भाग जाएंगे), फिर (कहीं भी) वह मदद न किए जाएंगे। (12)

यकीनन उन के दिलों में अल्लाह से बढ़ कर तुम्हारा डर है, यह इस लिए कि वह ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं। (13)

वह इकट्ठे हो कर तुम से न लड़ेंगे मगर वस्तियों में किला बन्द हो कर या दीवारों (फ़सील) के पीछे से, आपस में उनकी लड़ाई बहुत सख़्त है, तुम उन्हें इकट्ठे गुमान करते हो हालांकि उन के दिल अलग अलग हैं, यह इस लिए है कि वह ऐसे लोग हैं जो अक्ल नहीं रखते। (14)

इन का हाल उन लोगों जैसा है जो क़रीबी ज़माने में इन से क़व्ल हुए, उन्होंने अपने काम का बवाल चख लिया और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (15)

शैतान के हाल जैसा, जब उस ने इन्सान से कहा कि तू कुफ़ इख़्तियार कर, फिर जब उस ने कुफ़ किया तो उस ने कहा: वेशक मैं तुझ से लातअल्लुक हूँ, तहकीक़ मैं तमाम जहानों के रब अल्लाह से डरता हूँ। (16)

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا						
और हमारे भाइयों को	हमें बख़्शदे	ऐ हमारे रब	वह कहते हैं	उन के बाद	वह आए	और जो लोग
الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ						
उन लोगों के लिए जो	कोई कीना	हमारे दिलों में	और न होने दे	ईमान में	हम से सबक़्त की	वह जिन्होंने
آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٠﴾ أَلَمْ تَر إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا						
वह लोग जिन्होंने ने निफ़ाक़ किया (मुनाफ़िक़)	तरफ़ - को	क्या आप ने नहीं देखा	10	रहम करने वाला	शफ़क़्त करने वाला	वह ईमान लाए
يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ						
अलबत्ता अगर	अहले किताब	से	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	अपने भाइयों को	वह कहते हैं	
أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ						
और अगर	कभी	किसी का	तुम्हारे बारे में	और हम न मानेंगे	तुम्हारे साथ	तो हम ज़रूर निकल जाएंगे
قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١١﴾ لَئِنْ أُخْرِجُوا						
वह जिला वतन किए गए	अगर	11	अलबत्ता झूठे है	वेशक वह	गवाही देता है	और अल्लाह तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे
لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ						
वह उन की मदद करेंगे	और अगर	वह उन की मदद न करेंगे	उन से लड़ाई हुई	और अगर	उन के साथ	वह न निकलेंगे
لَيُؤْتِنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٢﴾ لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً						
डर	बहुत ज़ियादा	यकीनन तुम-तुम्हारा	12	वह मदद न किए जाएंगे	फिर	तो वह यकीनन फेरेंगे
فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾						
13	कि वह समझते नहीं	ऐसे लोग	इस लिए कि वह	यह	अल्लाह से	उन के सीनों (दिलों) में
لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرَى مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ						
पीछे से	या	क़िला बन्द	वस्तियों में	मगर	इकट्ठे सब मिल कर	वह तुम से न लड़ेंगे
جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ						
हालांकि उन के दिल	तुम गुमान करते हो उन्हें	इकट्ठे	बहुत सख़्त	उन के आपस में	उन की लड़ाई	दीवारें
شَتَّىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾ كَمْثَلِ الَّذِينَ						
जो लोग	हाल जैसा	14	वह अक्ल नहीं रखते	ऐसे लोग	इस लिए कि वह	यह
مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ						
अज़ाब	और उन के लिए	अपने काम	बवाल	उन्होंने ने चख लिया	क़रीबी ज़माना	इन से क़व्ल
أَلِيمٌ ﴿١٥﴾ كَمْثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ						
तो जब उस ने कुफ़ किया	तू कुफ़ इख़्तियार कर	इन्सान से	उस ने कहा	जब	शैतान	हाल जैसा
قَالَ إِنِّي بِرِئَاءٍ مِّنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾						
16	तमाम जहानों	रब	अल्लाह	तहकीक़ मैं डरता हूँ	तुझ से	लातअल्लुक वेशक मैं

١٦

२
६
५

فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ						
और यह	उस में	वह हमेशा रहेंगे	आग में	बेशक वह दोनों	उन दोनों का अन्जाम	पस हुआ
جَزَاءُ الظَّالِمِينَ (17) يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ						
और चाहिए कि देखे	तुम अल्लाह से डरो	ईमान वाले	ऐ	17	ज़ालिमों	जज़ा-सज़ा
نَفْسٍ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ						
बाख़बर	बेशक अल्लाह	और तुम डरो अल्लाह से	कल के लिए	क्या उस ने आगे भेजा	हर शख्स	
بِمَا تَعْمَلُونَ (18) وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ						
तो (अल्लाह ने) भुला दिया उन्हें	जिन्होंने ने अल्लाह को भुला दिया	उन लोगों की तरह	और न हो जाओ तुम	18	उस से जो तुम करते हो	
أَنْفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ (19) لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ						
दोःख वाले	बराबर नहीं	19	नाफ़रमान (जमा)	वह	यही लोग	खुद उन्हें
وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ (20)						
20	मुराद को पहुँचने वाले	वही है	जन्नत वाले	और जन्नत वाले		
لَوْ أَنزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خَاشِعًا						
दबा हुआ	तो तुम देखते उस को	पहाड़ पर	क़ुरआन	यह	अगर हम नाज़िल करते	
مُتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا						
हम बयान करते हैं	मिसालें	और यह	अल्लाह का ख़ौफ़	से	टुकड़े टुकड़े हुआ	
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ (21) هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ						
नहीं कोई माबूद	वह जिस	वह अल्लाह	21	ग़ौर ओ फ़िक्र करें	ताकि वह	लोगों के लिए
إِلَّا هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ (22)						
22	रहम करने वाला	वह बड़ा मेहरबान	और आशकारा	जानने वाला पोशीदा का	उस के सिवा	
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ أَلَمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ						
सलामती वाला	निहायत पाक	बादशाह	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	वह जिस	वह अल्लाह
الْمُؤْمِنُ الْمُهِمِّنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَنَ اللَّهِ						
पाक है अल्लाह	बड़ाई वाला	जब्वार	ग़ालिब	निगहवान	अमन देने वाला	
عَمَّا يُشْرِكُونَ (23) هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ						
ईजाद करने वाला	ख़ालिक्	वह अल्लाह	23	वह शरीक करते हैं	उस से जो	
الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ يُسَبِّحُ لَهُ						
उस की	पाकीज़गी बयान करता है	अच्छे	नाम (जमा)	उस के लिए	सूरतें बनाने वाला	
مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (24)						
24	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	जो

२
६
१

पस दोनों का अन्जाम (यह है) कि वह दोनों आग में होंगे, वह हमेशा उस में रहेंगे, और यह सज़ा है ज़ालिमों की। (17)

ऐ ईमान वाले! तुम अल्लाह से डरो और चाहिए कि देखे (सोचे) हर शख्स कि उस ने कल के लिए क्या आगे भेजा है! और तुम अल्लाह से डरो, बेशक जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (18)

और तुम न हो जाओ उन लोगों की तरह जिन्होंने ने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने (ऐसा कर दिया) कि उन्होंने ने खुद अपने आप को भुला दिया, यही नाफ़रमान लोग हैं। (19)

बराबर नहीं दोःख वाले और जन्नत वाले, जन्नत वाले ही मुराद को पहुँचने वाले हैं। (20)

अगर हम नाज़िल करते यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर तो तुम उस को अल्लाह के ख़ौफ़ से दबा (झुका) फटा पड़ता देखते, और यह मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (21)

वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, जानने वाला पोशीदा का और आशकारा का, वह बड़ा मेहरबान, रहम करने वाला है। (22)

वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं (वह हकीकी) बादशाह है, (हर ऐब से) निहायत पाक है। सलामती, अमन देने वाला, निगहवान, ग़ालिब, ज़बरदस्त, बड़ाई वाला, अल्लाह पाक है उस से जो वह शरीक करते हैं। (23)

वह अल्लाह है - ख़ालिक्, ईजाद करने वाला, सूरतें बनाने वाला, उस के लिए अच्छे नाम हैं, उस की पाकीज़गी बयान करता है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (24)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ऐ ईमान वालो! तुम मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उन की तरफ दोस्ती का पैगाम भेजते हो जब कि तुम्हारे पास जो हक आया है वह उस के मुन्किर हो चुके हैं, वह रसूल (स) को और तुम्हें भी जिला वतन करते हैं (महज़ इस लिए) कि तुम अल्लाह अपने रब पर ईमान लाते हो, अगर तुम निकलते हो मेरे रास्ते में जिहाद के लिए और मेरी रज़ा चाहने के लिए (तो ऐसा मत करो), तुम उन की तरफ छुपा कर भेजते हो दोस्ती (का पैगाम), और मैं खूब जानता हूँ वह जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और तुम में से जो कोई यह करेगा तो (जान लो) कि तहकीक वह सीधे रास्ते से भटक गया। (1)

अगर वह तुम्हें पाएँ (तुम पर दस्तरस पा लें) तो वह तुम्हारे दुश्मन हो जाएँ और तुम पर खोलें बुराई के साथ अपने हाथ और अपनी ज़वानें (दस्तराज़ी और ज़वान दराज़ी करें) और वह चाहते हैं कि काश तुम काफ़िर हो जाओ। (2)

तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देंगे तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद क़ियामत के दिन, अल्लाह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर देगा, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखता है। (3)

वेशक तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना इब्राहीम (अ) और उन लोगों में है जो उन के साथ थे, जब उन्होंने ने अपनी कौम को कहा: वेशक हम तुम से बेज़ार हैं और उन से जिन की तुम अल्लाह के सिवा वन्दगी करते हो, हम तुम्हें नहीं मानते, और ज़ाहिर हो गई हमारे और तुम्हारे दरमियान अ़दावत और दुश्मनी हमेशा के लिए, यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान ले आओ सिवाए इब्राहीम (अ) का अपने बाप से यह कहना कि मैं ज़रूर मग़फ़िरत मांगूंगा तुम्हारे लिए, और अल्लाह के आगे मैं तुम्हारे लिए कुछ भी इख़्तियार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हम ने तुझ पर भरोसा किया और तेरी तरफ़ हम ने रुज़ूअ किया और तेरी तरफ़ वापसी है। (4)

آيَاتُهَا ١٣ ❁ (٦٠) سُورَةُ الْمُتَمَتِّحَةِ ❁ زُكُوعَاتُهَا ٢									
रुकुआत 2					आयात 13				
(60) सूरतुल मुमतहिना जिस (औरत) की जाँच करनी है									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ									
तुम पैगाम भेजते हो	दोस्त	और अपने दुश्मन	मेरा दुश्मन	तुम न बनाओ	ईमान वालो	ऐ			
إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ									
वह निकालते (जिला बतन करते) है रसूल (स) को	हक से	उस के जो तुम्हारे पास आया	और वह मुन्किर हो चुके हैं	दोस्ती से - का	उन की तरफ़				
وَإِيَّاكُمْ أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي									
मेरे रास्ते में	जिहाद के लिए	तुम निकलते हो	अगर	तुम्हारा रब	अल्लाह पर	कि तुम ईमान लाते हो	और तुम्हें भी		
وَابْتَغَاءَ مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا									
और जो	तुम छुपाते हो	वह जो	और मैं खूब जानता हूँ	दोस्ती का पैगाम	उन की तरफ़	तुम छुपा कर (भेजते हो)	मेरी रज़ा	और चाहने के लिए	
أَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ (١) إِنْ									
अगर	1	रास्ता	सीधा	वह भटक गया	तो तहकीक	तुम में से	यह करेगा	और जो	तुम ज़ाहिर करते हो
يَشْقُقُوكُمْ يُكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُم									
और अपनी ज़वानें	अपने हाथ	तुम पर	और वह खोलें	दुश्मन	तुम्हारे	वह हो जाएं	वह तुम्हें पाएं		
بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ (٢) لَنْ نَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ									
तुम्हारी औलाद	और न	तुम्हारे रिश्ते	तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देंगे	2	काश तुम काफिर हो जाओ	और वह चाहते हैं	बुराई के साथ		
يَوْمَ الْقِيَمَةِ يَفْصَلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (٣) قَدْ كَانَتْ لَكُمْ									
तुम्हारे लिए	वेशक है	3	देखता है	जो तुम करते हो	और अल्लाह	वह (अल्लाह) फैसला कर देगा तुम्हारे दरमियान	क़ियामत के दिन		
أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِى إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءُؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا									
हमारे दरमियान	और ज़ाहिर हो गई	तुम्हारे	हम मुन्किर हैं	अल्लाह के सिवा	तुम बन्दगी करते हो	और उन से जिन की	तुम से	वेशक हम लातअल्लुक	
وَبَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ									
वाहिद	अल्लाह पर	तुम ईमान ले आओ	यहां तक कि	हमेशा के लिए	और बुग़ज़ (दुश्मनी)	अ़दावत	और तुम्हारे दरमियान		
إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَا اسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ (٤)									
अल्लाह से - के आगे	तुम्हारे लिए	मैं इख़्तियार रखता	और नहीं	तुम्हारे लिए	अलवत्ता मैं ज़रूर मग़फ़िरत माँगूंगा	अपने बाप से	इब्राहीम (अ)	मगर कहना	
4	वापसी	और तेरी तरफ़	हम ने रुज़ूअ किया	और तेरी तरफ़	हम ने भरोसा किया	तुझ पर	ऐ हमारे रब	कुछ भी	

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفِرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ									
तू ही	बेशक तू	ऐ हमारे रब	हमें	और बख़्श दे	कुफ़ किया (काफ़िर)	उन के लिए जिन्होंने	आज़माइश (तख़्तए मशक़)	हमें न बना	ऐ हमारे रब
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٥﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا									
उम्मीद रखता है	उस के लिए जो	बेहतरीन	चाल (नमूना)	उन में	तुम्हारे लिए	तहकीक (यकीनन) है	5	हिक्मत वाला	ग़ालिब
اللَّهُ وَالْيَوْمَ الْآخِرُ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٦﴾									
6	सतौदा सिफ़ात	वह बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	रूग़दानी करेगा	और जो - जिस	और आख़िरत का दिन	अल्लाह		
عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوَدَّةً									
दोस्ती	उन से	तुम अ़दावत रखते हो	उन लोगों के	और दरमियान	तुम्हारे दरमियान	वह कर दे	कि	करीब है कि अल्लाह	
وَاللَّهُ قَدِيرٌ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧﴾ لَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ									
जो लोग	से	तहकीक मना नहीं करता अल्लाह	7	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह	कुदरत रखने वाला	और अल्लाह	
لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ									
कि तुम दोस्ती करो उन से	तुम्हारे घर (जमा)	से	और उन्होंने ने तुम्हें नहीं निकाला			दीन में	तुम से नहीं लड़ते		
وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٨﴾ إِنَّمَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ									
से	तुम्हें मना करता है अल्लाह	इस के सिवा नहीं	8	इंसाफ़ करने वाले	महबूब रखता है	बेशक अल्लाह	उन से	और तुम इंसाफ़ करो	
الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا									
और उन्होंने ने मदद की	तुम्हारे घर	से	और उन्होंने ने तुम्हें निकाला			दीन में	तुम से लड़ें	जो लोग	
عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٩﴾									
9	ज़ालिम (जमा)	वह	तो वही लोग	और जो उन से दोस्ती रखेगा		कि तुम दोस्ती करो उन से	तुम्हारे निकालने पर		
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ									
तो उन का इम्तिहान कर लिया करो	मुहाजिर औरतें	मोमिन औरतें		जब तुम्हारे पास आएँ		ईमान वालो	ऐ		
اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ									
तो तुम उन्हें वापस न करो	मोमिन औरतें		तुम उन्हें जान लो	पस अगर	उन के ईमान को		अल्लाह ख़ुब जानता है		
إِلَى الْكُفَّارِ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ وَاتُّوهُم									
तुम उन को देदो	उन औरतों के लिए	वह हलाल है	और न वह मर्द	उन के लिए	हलाल	वह औरतें नहीं	काफ़िरो	तरफ़	
مَا أَنْفَقُوا وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ									
उन के मेहर	तुम उन्हें देदो	जब	कि तुम उन औरतों से निकाह कर लो		तुम पर	और कोई गुनाह नहीं	जो उन्होंने ने खर्च किया		
وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسَلُّوا مَا أَنْفَقْتُمْ وَلَيْسَلُوا									
और चाहिए कि वह मांग लें	जो तुम ने खर्च किया		और तुम मांग लो		काफ़िर औरतें	शादी की रिश्ता	और तुम न कब्ज़ा रखो		
مَا أَنْفَقُوا ذَلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾									
10	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे दरमियान	वह फैसला करता है	अल्लाह का हुक्म	यह	जो उन्होंने ने खर्च किया	

ऐ हमारे रब! हमें न बना फ़ितना काफ़िरों के लिए और हमें बख़श दे ऐ हमारे रब! बेशक तू ही ग़ालिब हिक्मत वाला है। (5)

यकीनन तुम्हारे लिए उन में बेहतरीन नमूना है (यानि) उस के लिए जो उम्मीद रखता है अल्लाह (से मुलाक़ात) की और आख़िरत के दिन की, और जिस ने रूग़दानी की तो बेशक अल्लाह बेनियाज़ सतौदा सिफ़ात है। (6)

करीब है कि अल्लाह तुम्हारे दरमियान और उन लोगों के दरमियान दोस्ती कर दे जिन से तुम अ़दावत रखते हो, और अल्लाह क़ुदरत रखने वाला है, और अल्लाह बख़शने वाला, रहम करने वाला है। (7)

अल्लाह तुम्हें मना नहीं करता उन लोगों से जो तुम से दीन (के बारे में) नहीं लड़ें और उन्होंने ने तुम्हें नहीं निकाला तुम्हारे घरों से, कि तुम उन से दोस्ती करो और उन से इंसाफ़ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को महबूब रखता है। (8)

इस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें मना करता है कि जो लोग तुम से (दीन के बारे में) लड़ें और उन्होंने ने तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में (निकालने वालों की) मदद की, तुम उन से दोस्ती करो, और जो उन से दोस्ती रखेगा तो वही लोग ज़ालिम हैं। (9)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे पास मोमिन मुहाजिर औरतें आएँ तो उन का इम्तिहान कर लिया करो, अल्लाह ख़ुब जानता है उन के ईमान को, पस अगर तुम उन्हें जान लो कि मोमिन हैं तो तुम उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न करो, वह (मोमिन मुहाजिरात) हलाल नहीं हैं उन (काफ़िरों) के लिए और वह (काफ़िर) उन औरतों के लिए हलाल नहीं, और तुम उन (काफ़िर शोहरों) को देदो जो उन्होंने ने खर्च किया हो और तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम उन मुहाजिर औरतों से निकाह कर लो जब तुम उन्हें उन के मेहर देदो, और तुम काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो और तुम (कुफ़ार से) मांग लो जो तुम ने खर्च किया हो, और चाहिए कि वह (काफ़िर) तुम से मांग लें जो उन्होंने ने खर्च किया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (10)

और अगर कुपफ़ार की तरफ़ (रह जाने से) तुम्हारी वीवियों में से कोई तुम्हारे हाथ से निकल जाए तो कुपफ़ार को (इस तरह से) सज़ा दो (कि जो औरतें मदीना आ गईं उन के मेहर वापस देने के वजाए अपने पास रख कर) उन को दो जिन की औरतें जाती रही, जिस क़द्र उन्होंने ने खर्च किया हो, और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो। (11)

ऐ नबी (स)! जब आप (स) के पास आएँ मोमिन औरतें इस पर वैज़त करने के लिए कि वह अल्लाह के साथ किसी शौ को शरीक न करेंगी और न चोरी करेंगी, और न ज़िना करेंगी, और न वह क़त्ल करेंगी अपनी औलाद को, और न बुहतान लाएंगी जो उन्होंने ने अपने हाथों और अपने पाऊँ के दरमियान गढ़ा हो, और न वह आप (स) की नाफ़रमानी करेंगी नेक कामों में तो आप (स) उन से वैज़त ले लें, और उन के लिए अल्लाह से मग़फ़िरत मांगें, वेशक अल्लाह बख़शने वाला, रहम करने वाला है। (12)

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों से दोस्ती न रखो जिन पर अल्लाह ने ग़ज़ब किया, वह आख़िरत से ना उम्मीद हो चुके हैं जैसे क़ब्रों में पड़े हुए काफ़िर मायूस हैं। (13)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ग़ालिव हिक्मत वाला है। (1)

ऐ ईमान वालो! तुम क्यों कहते हो वह जो तुम करते नहीं? (2)

अल्लाह के नज़्दीक बड़ी नापसंदीदा बात है कि तुम वह कहो जो तुम करते नहीं। (3)

वेशक अल्लाह उन लोगों को दोस्त रखता है जो उस के रास्ते में सफ़ वस्ता हो कर लड़ते हैं गोया कि वह एक इमारत है सीसा पिलाई हुई। (4)

وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعاقِبْتُمْ فَاتُوا							
पस दो	तो उन (कुपफ़ार) को सज़ा दो	कुपफ़ार की तरफ़	तुम्हारी वीवियाँ	से	कोई	तुम्हारे हाथ से निकल जाए	और अगर
الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَا أَنْفَقُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ (١١)							
वह जिस	और डरो अल्लाह से	जो उन्होंने ने खर्च किया	उस क़द्र	उन की औरतें	जाती रही	उन को जिन की	
आप से वैज़त करने के लिए	मोमिन औरतें	आप के पास आएँ	जब	ऐ नबी (स)	11	ईमान रखते हो	उस पर तुम
عَلَى أَنْ لَا يُشْرِكَنَّ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقَنَّ وَلَا يَزْنِيَنَّ							
और न ज़िना करेंगी	और न चोरी करेंगी	किसी शौ को	अल्लाह के साथ	वह शरीक न करेंगी	इस पर कि		
وَلَا يَقْتُلَنَّ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِيَنَّ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ							
जो उन्होंने ने गढ़ा हो	बुहतान से	और न लाएंगी	अपनी औलाद	और न वह क़त्ल करेंगी			
بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعَهُنَّ							
तो आप (स) उन से वैज़त ले लें	नेक कामों में	और न आप (स) की नाफ़रमानी करेंगी	और अपने पाऊँ	अपने हाथों के दरमियान			
وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (١٢)							
ईमान वालो	ऐ	12	रहम करने वाला	बख़शने वाला	वेशक अल्लाह	उन के लिए अल्लाह से	और मग़फ़िरत मांगें
لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَسْؤُوا مِنْ							
से	वह ना उम्मीद हो चुके	उन पर	अल्लाह ने ग़ज़ब किया	वह लोग	तुम दोस्ती न रखो		
الْآخِرَةِ كَمَا يَبْسُ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ (١٣)							
13	क़ब्रों वाले (मुर्दे)	से	काफ़िर (जमा)	मायूस हैं	जैसे	आख़िरत	
آيَاتُهَا ١٤ ﴿٦١﴾ سُورَةُ الصَّفِّ ﴿١٣﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢							
रुक़ात 2 (61) सूरतुस सफ़ सफ़ (मोरचा बंदी) आयात 14							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
سَبَّحَ اللَّهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (١)							
1	हिक्मत वाला	ग़ालिव	और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ (٢)							
नापसंदीदा	बड़ी	2	तुम करते नहीं	जो	तुम कहते हो	क्यों	ईमान वालो ऐ
عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ (٣)							
दोस्त रखता है	वेशक अल्लाह	3	तुम करते नहीं	जो	तुम कहो	कि	अल्लाह के नज़्दीक
الَّذِينَ يَقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَانَتْهُمْ بُنْيَانٌ مَرْصُوصٌ (٤)							
4	सीसा पिलाई हुई	एक इमारत	गोया कि वह	सफ़ वस्ता हो कर	उस के रास्ते में	जो लोग लड़ते हैं	

٢
٨

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ لِقَوْمِهِ يَقَوْمٍ لِمَ تُؤْذُونَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ٥ وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَبْنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ٦ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ٧ لِيُظْفَرُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ٨ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ٩ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ١٠ تَوَمَّنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٌ طَيِّبٌ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ١٢ وَأُخْرَى تُحِبُّونَهَا نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ وَبَشِيرٌ الْمُؤْمِنِينَ ١٣								
और जब	कहा	मूसा (अ)	अपनी कौम से	ऐ मेरी कौम	क्यों	तुम मुझे ईज़ा पहुँचाते हो	और यकीनन तुम जान चुके हो	कि मैं
अल्लाह का रसूल	तुम्हारी तरफ़	पस जब	उन्होंने ने कज रवी की	अल्लाह ने कज कर दिए	उन के दिल	और अल्लाह	हिदायत नहीं देता	
लोग	नाफरमान (जमा)	5	और जब	कहा	ईसा (अ)	मरयम (अ) का बेटा	ऐ बनी इस्राईल	वेशक मैं
अल्लाह का रसूल	तुम्हारी तरफ़	तसदीक करने वाला	उस की जो	मुझ से पहले	से	तौरत	और खुशखबरी देने वाला	
एक रसूल की	वह आएगा	मेरे बाद	उस का नाम	अहमद	फिर जब	वह आए उन के पास	वाज़ेह दलाइल के साथ	उन्होंने ने कहा
यह	खुला जादू	6	और कौन	बड़ा ज़ालिम	उस से जो	वह बुहतान बान्धे	अल्लाह पर	और वह
बुलाया जाता है	इस्लाम की तरफ़	और अल्लाह	हिदायत नहीं देता	ज़ालिम लोगों	7	वह चाहते हैं		
कि बुझादें	अल्लाह का नूर	अपने फूँकों से	और अल्लाह	पूरा करने वाला	अपना नूर	और खाह	काफिर नाखुश हों	8
तमाम	और खाह नाखुश हों	मुश्रिक (जमा)	9	ऐ	ईमान वालो	क्या	मैं तुम्हें बतलाऊँ	तिजारत पर
तुम्हें नजात दे	से	दर्दनाक अज़ाब	10	तुम ईमान लाओ	अल्लाह पर	और उसका रसूल (स)	और तुम जिहाद करो	
में	अल्लाह का रास्ता	अपने मालों से	और अपनी जानों	यह	तुम्हारे लिए बेहतर	अगर		
तुम जानते हो	11	वह बख़्श देगा	तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	और वह तुम्हें दाखिल करेगा	बागात	जारी है	उन के नीचे से
नहरें	और मकानात	पाकीज़ा	में	बागात	हमेशा	यह	कामयाबी	12
और एक और	तुम उसे बहुत चाहते हो	मदद	अल्लाह से	और फतह	करीब	और मोमिनों को खुशखबरी दें	13	

और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपनी कौम से कहा: ऐ मेरी कौम! तुम मुझे क्यों ईज़ा पहुँचाते हो? और यकीनन तुम जान चुके हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, पस जब उन्होंने ने कज रवी की तो अल्लाह ने उन के दिलों को कज कर दिया, और अल्लाह हिदायत नहीं देता नाफ़रमान लोगों को। (5) और (याद करो) जब मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) ने कहा: ऐ बनी इस्राईल! वेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारी तरफ़, उस की तसदीक करने वाला जो मुझ से पहले तौरत (आई) और एक रसूल (स) की खुशख़बरी देने वाला जो मेरे बाद आएगा जिस का नाम अहमद (स) होगा, फिर जब वह उन के पास वाज़ेह दलाइल के साथ आए तो उन्होंने ने कहा यह तो खुला जादू है। (6) और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धे जबकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता है, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (7) वह चाहते हैं कि अल्लाह का नूर अपने फूँकों से बुझादें, और अल्लाह अपना नूर पूरा करने वाला है खाह काफ़िर नाख़ुश हों। (8) वही है जिस ने अपने रसूल (स) को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे और खाह मुश्रिक नाख़ुश हों। (9) ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बतलाऊँ? जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से नजात दे। (10) तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर और तुम अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (11) वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बागात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे से नहरें बहती हैं। और हमेशा के बागात में पाकीज़ा मकानात हैं, यह बड़ी कामयाबी है। (12) और वह दूसरी जिसे तुम बहुत चाहते हो (यानि) अल्लाह से मदद और करीबी फ़तह, और आप (स) मोमिनों को खुशख़बरी दीजिए। (13)

ऐ ईमान वालो! तुम हो जाओ
अल्लाह के मददगार जैसे मरयम (अ)
के बेटे इसा (अ) ने हवारियों को
कहा कि कौन है अल्लाह की तरफ
मेरा मददगार? तो कहा हवारियों
ने कि हम अल्लाह के मददगार हैं,
पस बनी इस्राईल का एक गिरोह
ईमान ले आया और कुफ़ किया
एक गिरोह ने, तो हम ने उन के
दुश्मनों पर ईमान वालों की मदद
की, सो वह ग़ालिब हो गए। (14)
अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरबान, रहम करने वाला है
जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है
अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता
है, जो बादशाह हकीकी, कमाल
दरजा पाक, ग़ालिब, हिक्मत वाला
है। (1)
वही है जिस ने अनपढ़ों में एक
रसूल (स) उन ही में से भेजा,
वह उन्हें उस की आयतें पढ़ कर
सुनाता है और उन्हें (बुराइयों से)
पाक करता है और उन्हें सिखाता है
किताब और दानिशमन्दी की बातें,
और वेशक यह लोग उस से पहले
खुली गुमराही में थे। (2)
और उन के अलावा (उन को भी)
जो अभी उन से नहीं मिले, वह
ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (3)
यह अल्लाह का फ़ज़ल है, वह जिस
को चाहता है उसे देता है, और
अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है। (4)
उन लोगों की मिसाल जिन पर
तौरते लादी (उतारी) गई, फिर
उन्होंने ने उसे उठाया गधे की तरह
जो किताबें लादे हुए हैं (उस पर
कारबन्द न हुए), उन लोगों की
हालत बुरी है जिन्होंने ने अल्लाह की
आयतों को झुटलाया, और अल्लाह
ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं
देता। (5)
आप (स) फ़रमा दें: ऐ यहूदियो! अगर
तुम्हें घमंड है कि तुम दूसरे लोगों के
अलावा (सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम) अल्लाह
के दोस्त हो तो मौत की तमन्ना
करो अगर तुम सच्चे हो। (6)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ							
मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	कहा	जैसे	अल्लाह के मददगार	तुम हो जाओ	ईमान वालो	ऐ
لِلْحَوَارِيِّنَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ							
अल्लाह के मददगार	हम	हवारिय्यों	कहा	अल्लाह की तरफ़	मेरा मददगार	कौन	हवारिय्यों को
فَأَمَنْتَ طَائِفَةٌ مِّنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَكَفَرَتْ طَائِفَةٌ							
एक गिरोह	और कुफ़ किया	बनी इस्राईल		से-का	एक गिरोह	तो ईमान लाया	
فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ﴿١٤﴾							
14	ग़ालिब	सो वह हो गए	उन के दुश्मनों पर	ईमान वाले	तो हम ने मदद की		
آيَاتُهَا ١١ ﴿٦٢﴾ سُورَةُ الْجُمُعَةِ ﴿٢﴾ زُكُوعَاتُهَا ٢							
रुक़आत 2		(62) सूरतुल जुमुअह जुमा			आयात 11		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
يُسَبِّحُ اللَّهَ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ							
ग़ालिब	कमाल पाक	बादशाह हकीकी	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो कुछ	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की
الْحَكِيمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ							
उस की आयतें	उन्हें	पढ़ कर सुनाता है	उन में से	एक रसूल (स)	अनपढ़ों में	उठाया (भेजा)	वही जिस ने
1		हिक्मत वाला					
وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ							
अलबत्ता गुमराही में	इस से कब्ल	और तहकीक़ वह थे	हिक्मत (दानिशमन्दी की बातें)	किताब	और उन्हें सिखाता है	और वह उन्हें पाक करता है	
مُبِينٍ ﴿٢﴾ وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣﴾ ذَلِكَ							
यह	3	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	उन से	कि वह अभी नहीं मिले	उन के
2		और अलावा					
فَضَّلَ اللَّهُ يُونُسَ مِنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٤﴾ مَثَلُ							
मिसाल	4	बड़े	फ़ज़ल वाला	और अल्लाह	वह चाहता है	जिस को	अल्लाह का फ़ज़ल
الَّذِينَ حَمَلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا							
किताबें	वह लादे हुए हैं	गधा	मिसाल की तरह	उन्होंने ने न उठाया उसे	फिर	तौरात	उन पर लादी गई
जिन लोगों पर							
بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي							
हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	अल्लाह की आयतों को	उन्होंने ने झुटलाया	जिन्होंने ने	वह लोग	मिसाल (हालत)	बुरी
الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٥﴾ فَلْ يَأْيُهَا الَّذِينَ هَادَوْا ۚ إِنَّ زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ							
कि तुम	तुम्हें ज़अम (घमंड) है	अगर	यहूदियो	ऐ	आप (स) फरमा दें	5	ज़ालिम लोगों
أَوْلِيَاءَ لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوْا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦﴾							
6	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत	तो तुम तमन्ना करो	दूसरे लोगों के अलावा	से अल्लाह के लिए दोस्त

وَلَا يَتَمَنَّوْنَ اَبَدًا بِمَا قَدَّمْتَ اَيْدِيَهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٧﴾								
7	ज़ालिमों को	खूब जानता है	और अल्लाह	उन के हाथों ने	भेजा आगे	उसके सबब जो	कभी भी	और वह उस की तमन्ना न करेंगे
قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَآئِهٖ مُلْقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ								
तुम लौटाए जाओगे	फिर	तुम्हें मिलने वाली	तो वेशक वह	उस से	तुम भागते हो	जिस से	वेशक मौत	आप (स) फरमा दें
اِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾ يٰۤاَيُّهَا								
ऐ	8	तुम करते थे	उस से जो	फिर वह तुम्हें आगाह कर देगा	और ज़ाहिर	तरफ़ (सामने) जानने वाला पोशीदा		
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِذَا نُودِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلَىٰ								
तरफ़	तो तुम लपको	जुमा का दिन	से - की	नमाज़ के लिए	पुकारा जाए	जब	ईमान वाले	
ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوْا الْبَيْعَ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩﴾ فَاِذَا								
फिर जब	9	तुम जानते हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह	खरीद ओ फ़रोख्त	और तुम छोड़ दो
اَللّٰهُ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩﴾ فَاِذَا								
अल्लाह का फज़ल	से	और तुम तलाश करो	ज़मीन में	तो तुम फैल जाओ	नमाज़	पूरी हो चुके		
وَاذْكُرُوْا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠﴾ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً								
तिजारात	वह देखते हैं	और जब	10	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	वक़्सूरत	और तुम याद करो अल्लाह को	
اَوْ لَهٰوًا اِنْفَضُّوْا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قٰبِلًا قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ								
अल्लाह के पास	जो	फ़रमा दें	खड़ा	और आप (स) को छोड़ जाते हैं	उस की तरफ़	वह दौड़ जाते हैं	खेल तमाशा	या
خَيْرٌ مِّنَ اللّٰهِوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١﴾								
11	रिज़्क देने वाला	बेहतर	और अल्लाह	तिजारात	और से	खेल तमाशा	से	बेहतर
آيٰتُهَا ۝ ۱۱ ﴿ ٦٣ ﴾ سُورَةُ الْمُنْفِقُوْنَ ۝ رُكُوْعَاتُهَا ۲								
रुक़ाअत 2			(63) सूरतुल मुनाफ़िकून			आयात 11		
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ								
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है								
اِذَا جَآءَكَ الْمُنْفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ								
वह जानता है	और अल्लाह	अलबत्ता अल्लाह के रसूल	वेशक आप (स)	हम गवाही देते हैं	वह कहते हैं	मुनाफ़िक़	जब आप (स) के पास आते हैं	
اِنَّكَ لَرَسُوْلُهُ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنْفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١﴾ اِتَّخَذُوْا								
उन्होंने ने पकड़ा (बना लिया)	1	अलबत्ता झूटे	मुनाफ़िक़ (जमा)	वेशक	गवाही देता है	और अल्लाह	अलबत्ता उसके रसूल (स)	यकीनन आप (स)
اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢﴾								
2	वह करते हैं	बुरा जो	वेशक वह	अल्लाह का रास्ता	से	पस वह रोकते हैं	ढाल	अपनी क़समों को
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٣﴾								
3	नहीं समझते	पस वह	उन के दिल	पर	तो सुहर लगादी गई	फिर उन्होंने ने कफ़ किया	ईमान लाए	इस लिए कि वह यह

और उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा है वह कभी भी मौत की तमन्ना न करेंगे, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है। (7) आप (स) फ़रमा दें: वेशक जिस मौत से तुम भागते हो वह यकीनन तुम्हें मिलने वाली है (आ पकड़ेगी) फिर तुम उस के सामने लौटाए जाओगे जो जानने वाला है पोशीदा और ज़ाहिर का, फिर वह तुम्हें उस से आगाह कर देगा जो तुम करते थे। (8) ऐ ईमान वाले! जब पुकारा जाए (अज़ान दी जाए) जुमा के दिन नमाज़ (जुमा) के लिए तो तुम (फ़ौरन) अल्लाह की याद के लिए लपको और खरीद ओ फ़रोख़्त छोड़ दो, यह बेहतर है तुम्हारे लिए अगर तुम जानते हो। (9) फिर जब नमाज़ पूरी हो चुके तो तुम ज़मीन में फैल जाओ और तलाश करो अल्लाह का फ़ज़ल (रोज़ी) और तुम अल्लाह को वक़्सूरत याद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (10) और जब वह देखते हैं तिजारात या खेल तमाशा तो वह उस की तरफ़ दौड़ जाते हैं और आप (स) को खड़ा छोड़ जाते हैं, आप (स) फ़रमा दें कि जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है खेल तमाशा से और तिजारात से, और अल्लाह सब से बेहतर रिज़्क देने वाला। (11) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है जब मुनाफ़िक़ आप (स) के पास आते हैं तो कहते हैं: हम गवाही देते हैं कि वेशक आप अल्लाह के रसूल (स) हैं और अल्लाह जानता है कि यकीनन आप (स) उस के रसूल हैं, और अल्लाह गवाही देता है कि वेशक मुनाफ़िक़ झूटे हैं। (1) उन्होंने ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है, पस वह (दूसरों को भी) रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से, वेशक बुरा है जो वह करते हैं। (2) यह इस लिए है कि वह ईमान लाए, फिर उन्होंने ने कुफ़ किया तो मुहर लगा दी गई उन के दिलों पर, पस वह नहीं समझते। (3)

और जब आप (स) उन्हें देखें तो उन के जिस्म आप (स) को खुशनुमा मालूम हों, और अगर वह बात करें तो आप (स) उन की बातों को (ग़ौर से) सुनें, गोया कि वह लकड़ियां हैं दीवार (के सहारे) लगाई हुई, वह हर बुलन्द आवाज़ को अपने ऊपर गुमान करते हैं, वह दुश्मन हैं, पस आप (स) उन से बचें, अल्लाह उन्हें ग़ारत करे, वह कहां फिरे जाते हैं। (4)

और जब उन से कहा जाए कि आओ, बख़्शिश की दुआ करें अल्लाह के रसूल (स) तुम्हारे लिए तो वह अपने सरो को फेर लेते हैं और आप (स) उन्हें देखें तो वह मुँह फेर लेते हैं और वह बड़ा ही तकव्वुर करने वाले हैं। (5)

उन पर (उन के हक़ में) बराबर है कि आप (स) उन के लिए बख़्शीश मांगें या न मांगें, अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा, बेशक अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (6)

वही लोग हैं जो कहते हैं कि तुम उन लोगों पर खर्च न करो जो अल्लाह के रसूल (स) के पास हैं यहां तक कि वह मुन्तशिर हो जाएं, और आस्मानों और ज़मीन के खज़ाने अल्लाह के लिए हैं और लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं। (7)

वह कहते हैं: अगर हम मदीने की तरफ़ लौट कर गए तो इज़ज़तदार (मुनाफ़िक़) निहायत ज़लील को वहां से निकाल देगा, और इज़ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल (स) और मोमिनों के लिए है और लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं जानते। (8)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें, और जो यह करेंगे तो वही लोग ख़सारे में पड़ने वाले हैं। (9)

और हम ने तुम्हें जो दिया है उस में से खर्च करो उस से क़ब्ल कि आजाए तुम में से किसी को मौत तो वह कहे कि ऐ मेरे रब! तू ने मुझे क्यों एक करीबी मुदत तक मोहलत न दी? तो मैं सदका करता और मैं नेकोकारों में से होता। (10)

और जब उस की अज़ल आगई तो अल्लाह हरगिज़ किसी को ढील न देगा, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (11)

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَانَتْهُمْ							
गोया कि वह	उन की बातें	आप सुनें	और अगर वह बात करें	उन के जिस्म	तो आप को खुशनुमा मालूम हों	आप (स) उन्हें देखें	और जब
خُشِبَ مُسْتَدَّةٌ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صِيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۖ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرَهُمْ ۖ							
पस आप (स) उन से बचें	दुश्मन	वह	अपने ऊपर	हर बुलन्द आवाज़	वह गुमान करते हैं	दीवार से लगाई हुई	लकड़ियां
فَاتْلَهُمْ ۖ اللَّهُ أَلَىٰ يُؤْفَكُونَ ۖ (٤) وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ							
तुम्हारे लिए	बख़्शिश की दुआ करें	तुम आओ	कहा जाए उन से	और जब	4	वह फिरे जाते हैं	उन्हें मारे (ग़ारत करे) अल्लाह
رَسُولُ اللَّهِ لَوْوَا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۖ (٥)							
5	बड़ा ही तकव्वुर करने वाले हैं	और वह	वह रुकते हैं	और आप (स) उन्हें देखें	अपने सरो को	वह फेर लेते हैं	अल्लाह के रसूल
سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۖ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۖ							
उन को	हरगिज़ नहीं बख़्शेगा अल्लाह	उन के लिए	आप (स) न बख़्शिश मांगें	या	उन के लिए	आप (स) बख़्शिश मांगें	उन पर बराबर
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۖ (٦) هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا							
न खर्च करो तुम	वह कहते हैं	वह लोग जो	वही	6	नाफ़रमान लोग	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह
عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُّوا ۖ وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ							
आस्मानों	और अल्लाह के लिए खज़ाने	वह मुन्तशिर हो जाएं	यहां तक कि	अल्लाह के रसूल	पास	जो	पर
وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۖ (٧) يَقُولُونَ لَنْ رَّجِعَنَا							
अगर हम लौट कर गए	वह कहते हैं	7	वह नहीं समझते	मुनाफ़िक़ (जमा)	और लेकिन	और ज़मीन	
إِلَى الْمَدِينَةِ لِيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۖ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ							
और उसके रसूल (स) के लिए	और अल्लाह के लिए इज़ज़त	निहायत ज़लील	वहां से	इज़ज़तदार	ज़रूर निकाल देगा	मदीने की तरफ़	
وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۖ (٨) يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا							
ईमान वालो	ऐ	8	नहीं जानते	मुनाफ़िक़ (जमा)	और लेकिन	और मोमिनों के लिए	
لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۖ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ							
यह	करेगा	और जो	अल्लाह की याद	से	और न तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल	तुम्हें ग़ाफ़िल न कर दें
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۖ (٩) وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ							
उस से क़ब्ल	जो हम ने तुम्हें दिया	से	और तुम खर्च करो	9	ख़सारा पाने वाले	वह	तो वही लोग
أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ							
तक	तू ने मुझे मोहलत दी	क्यों न	ऐ मेरे रब	तो वह कहे	मौत	तुम में से किसी को	कि आजाए
أَجَلٍ قَرِيبٍ ۖ فَاصْدَقْ وَآكُنْ مِنَ الصّٰلِحِينَ ۖ (١٠) وَلَنْ يُؤَخَّرَ اللَّهُ							
और हरगिज़ ढील न देगा अल्लाह	10	नेकोकारों	से	और मैं होता	तो मैं सदका करता	एक करीब की मुदत	
نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجْلُهَا ۖ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۖ (١١)							
11	तुम करते हो	उस से जो	बाख़बर	और अल्लाह	उस की अज़ल	जब आगई	किसी को

آيَاتُهَا ١٨ ﴿٦٤﴾ سُورَةُ التَّغَابُنِ ﴿٢﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢							
रुकुआत 2				(64) सूरतुत तगाबुन		आयात 18	
हार जीत							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ							
और उसी के लिए	बादशाही	उसी के लिए	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की
الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ							
तुम्हें पैदा किया	वही जिस ने	1	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	तमाम तारीफें
فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢﴾							
2	देखने वाला	तुम करते हो	उस को जो	और अल्लाह	कोई मोमिन	और तुम में से	कोई काफिर तो तुम में से
خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ							
तुम्हें सूरतें दी	तो बहुत अच्छी	और तुम्हें सूरतें दी	हक के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया	
وَالِيهِ الْمَصِيرُ ﴿٣﴾ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ							
और जानता है	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	वह जानता है	3	वापसी	और उसी की तरफ़
مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤﴾							
4	दिलों के भेद	जानने वाला	और अल्लाह	और जो तुम ज़ाहिर करते हो	जो तुम छुपाते हो		
أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهُمْ							
अपने काम	बवाल	तो उन्होंने ने चख लिया	इस से क़ब्ल	जिन लोगों ने कुफ़ किया	ख़बर	क्या नहीं आई तुम्हारे पास	
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٥﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ							
उन के रसूल	आते थे उनके पास	इस लिए कि वह	यह	5	अज़ाब दर्दनाक	और उन के लिए	
بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَبَشَرٌ يَهْدُونَنَا فَكَفَرُوا وَتَوَلَّوْا وَاسْتَغْنَى							
और बेनियाज़ी फ़रमाई	और वह फिर गए	तो उन्होंने ने कुफ़ किया	वह हिदायत देते हैं हमें	क्या बशर	तो वह कहते	वाज़ेह निशानियों के साथ	
اللَّهُ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٦﴾ زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَّنْ يُبْعَثُ							
वह हरगिज़ न उठाए जाएंगे	कि	वह काफिर हुए	उन लोगों ने जो	दावा किया	6	सतौदा सिफ़ात	और अल्लाह
قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ							
जो तुम करते थे	फिर अलबतता तुम्हें ज़रूर जतलाया जाएगा	अलबतता तुम ज़रूर उठाए जाओगे	मेरे रब की क़सम	हाँ	फ़रमा दें		
وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧﴾ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ							
और उस के रसूल (स)	अल्लाह पर	पस तुम ईमान लाओ	7	आसान	अल्लाह पर	और यह	
وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٨﴾							
8	वाख़बर	जो तुम करते हो उस से	और अल्लाह	हम ने नाज़िल किया	वह जो	और नूर	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो भी आस्मानों में और जो भी ज़मीन में है, उसी के लिए है वादशाही और उसी के लिए है तमाम तारीफें, और वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (1) वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम में से कोई काफ़िर है और तुम में से कोई मोमिन है, और अल्लाह जो तुम करते हो उस का है देखने वाला। (2) उस ने आस्मानों और ज़मीन को हक़ (दुरुस्त तदबीर) के साथ पैदा किया और तुम्हें सूरतें दीं तो तुम्हें बहुत ही अच्छी सूरतें दीं, और उसी की तरफ़ वापसी है। (3) वह जानता है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और अल्लाह दिलों के भेद जानने वाला है। (4) क्या तुम्हारे पास उन लोगों की ख़बर नहीं आई जिन्होंने इस से पहले कुफ़ किया, तो उन्होंने ने बवाल चख लिया अपने काम का, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (5) यह इस लिए हुआ कि उन के पास रसूल वाज़ेह निशानियों के साथ आते थे तो वह कहते थे: क्या बशर हिदायत देते हैं हमें? तो उन्होंने ने कुफ़ किया और फिर गए, और अल्लाह ने बेनियाज़ी फ़रमाई और अल्लाह बेनियाज़ सतौदा सिफ़ात (सज़ावारे हमद) है। (6) उन लोगों ने दावा किया जो काफ़िर हुए कि वह हरगिज़ (दोबारा) नहीं उठाए जाएंगे। आप (स) फ़रमा दें, हाँ! क्यों नहीं! मेरे रब की कसम! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें जतला दिया जाएगा जो तुम करते थे, और यह अल्लाह पर आसान है। (7) पस तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान ले आओ और उस नूर पर जो हम ने नाज़िल किया है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से वाख़बर है। (8)

जिस दिन वह तुम्हें जमा करेगा (यानि) क़ियामत के दिन, यह हार जीत का दिन है, और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छे काम करे तो वह (अल्लाह) उस से उस की बुराइयां दूर कर देगा और उसे (उन) बागात में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (9)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, उस में हमेशा रहेंगे और यह है बुरी पलटने की जगह। (10)

कोई मुसीबत नहीं पहुँचती मगर अल्लाह के इज़्ज़न से, और जो शख्स अल्लाह पर ईमान लाता है वह उस के दिल को हिदायत देता है, और अल्लाह हर शै को जानने वाला है। (11)

और तुम अल्लाह की इताअत करो और रसूल (स) की इताअत करो, फिर अगर तुम फिर गए तो इस के सिवा नहीं कि हमारे रसूल (स) के ज़िम्मे साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। (12)

अल्लाह - उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस मोमिनों को अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए। (13)

ऐ ईमान वालो! बेशक तुम्हारी बाज़ वीवियां और तुम्हारी बाज़ औलाद तुम्हारे (दीन के) दुश्मन हैं, पस तुम उन से बचो, और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो और तुम वख़श दो तो बेशक अल्लाह वख़शने वाला, मेहरवान है। (14)

इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आज़माइश हैं, और अल्लाह के पास बड़ा अजर है। (15)

पस जहां तक हो सके तुम अल्लाह से डरो और सुनो और इताअत करो और खर्च करो (यह) तुम्हारे हक़ में बेहतर है, और जो अपने नफ़्स की बख़्ख़ीली से बचा लिया गया तो यही लोग फ़लाह (दो ज़हान में कामयाबी) पाने वाले हैं। (16)

अगर तुम अल्लाह को कर्ज़ हसना दोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे दो चन्द कर देगा और तुम्हें वख़शदेगा, और अल्लाह कद्र शनास, बुर्दवार है। (17)

(वह) जानने वाला है पोशीदा और ज़ाहिर का, ग़ालिब, हिक्मत वाला। (18)

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ							
अल्लाह पर	वह ईमान लाए	और जो	खोने या पाने (हार जीत) का दिन	यह	जमा होने (क़ियामत) के दिन	वह जमा करेगा तुम्हें	जिस दिन
وَيَعْمَلُ صَالِحًا يُكْفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي							
जारी है	बागात	और वह उसे दाखिल करेगा	उस की बुराइयां	उस से	वह दूर कर देगा	अच्छे	और वह काम करे
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ٩							
9	बड़ी कामयाबी	यह	हमेशा	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا							
उस में	हमेशा रहेंगे	दोज़ख़ वाले	यही लोग	हमारी आयतों को	और उन्होंने ने झुटलाया	और जिन लोगों ने कुफ़ किया	
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ١٠ مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ							
और जो	अल्लाह के इज़्ज़न से	मगर	कोई मुसीबत	नहीं पहुँची	10	पलटने की जगह (ठिकाना)	और बुरी
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ١١ وَأَطِيعُوا اللَّهَ							
और तुम इताअत करो अल्लाह की	11	जानने वाला	हर शै को	और अल्लाह	उस का दिल	हिदायत देता है	वह ईमान लाता है
وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلْغُ الْمُبِينُ ١٢							
12	साफ़ साफ़ पहुँचा देना	हमारे रसूल (स) पर - ज़िम्मे	तो इस के सिवा नहीं	फिर गए तुम	फिर अगर	और इताअत करो रसूल (स) की	
اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ١٣ يَا أَيُّهَا							
ऐ	13	ईमान वाले	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	अल्लाह
الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ١٤							
पस तुम उन से बचो	तुम्हारे लिए	दुश्मन	और तुम्हारी औलाद	तुम्हारी वीवियां	से	बेशक	ईमान वालो
وَأَنْ تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ١٥ إِنَّمَا							
इस के सिवा नहीं	14	मेहरवान	वख़शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और तुम वख़श दो	और तुम दरगुज़र करो	तुम माफ़ कर दो और अगर
أَمْوَالِكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ١٥ فَاتَّقُوا اللَّهَ							
पस तुम डरो अल्लाह से	15	बड़ा अजर	उस के पास	और अल्लाह	आज़माइश	और तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल
مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ ١٦							
तुम्हारे हक़ में	बेहतर	और तुम खर्च करो	और तुम इताअत करो	और तुम सुनो	जहां तक तुम से हो सके		
وَمَنْ يُوقِ شَحْحَ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ١٦							
अगर	16	फ़लाह पाने वाले	वह	तो यही लोग	अपनी जान	बख़्ख़ीली बचा लिया गया	और जो
تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضْعِفَهُ لَكُمْ وَيَغْفِرَ لَكُمْ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	और वह तुम्हें वख़श देगा	तुम्हारे लिए	वह उसे दो चन्द करदेगा	कर्ज़ हसना	तुम कर्ज़ दोगे अल्लाह को		
شُكُورٌ حَلِيمٌ ١٧ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ١٨							
18	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और ज़ाहिर	ग़ैब का जानने वाला	17	बुर्दवार	कद्र शनास

التَّغَابُنِ
١٥

ع
١٦

۲ رُكُوعَاتُهَا ❀ (٦٥) سُورَةُ الطَّلَاقِ ❀ آيَاتُهَا ۱۲							अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
रुक़ात 2				(65) सूरतुत तलाक़				आयात 12					
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ													
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है													
يَأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا													
और तुम शुमार रखो		उन की इदत के लिए		तो उन्हें तलाक़ दो		औरतों		तुम तलाक़ दो		जब		ऐ नबी (स)	
الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ													
और न वह (खुद) निकलें		उन के घरों		से		तुम न निकालो उन्हें		तुम्हारा रब		और तुम डरो अल्लाह से		इदत	
إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَدَّ													
आगे निकलेगा		और जो		अल्लाह की हुदूद		और यह		खुली		वेहयाई		यह कि वह करें मगर	
حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ													
उस के बाद		वह पैदा कर दे		सुम्किन है कि अल्लाह		तुम्हें ख़बर नहीं		अपनी जान		तो तहकीक़ उस ने जुल्म किया		अल्लाह की हुदूद	
أَمْرًا ۝۱ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ													
तुम उन्हें जुदा कर दो		या		अच्छे तरीक़े से		तो उन को रोक लो		अपनी मीज़ाद		वह पहुँच जाएँ		फिर जब 1 कोई और बात	
بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَى عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ذَلِكُمْ													
यही है		गवाही अल्लाह के लिए		और तुम काइम करो		अपने में से		दो (2) इसाफ़ पसंद		और तुम गवाह कर लो		अच्छे तरीक़े से	
يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ													
वह अल्लाह से डरता है		और जो		और अख़िरत का दिन		अल्लाह पर		जो ईमान रखता है		जिस की नसीहत की जाती है			
يَجْعَلُ لَهُ مَخْرَجًا ۝۲ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ													
वह भरोसा करता है		और जो		उसे गुमान नहीं होता		जहाँ से		और वह उसे रिज़क़ देता है		2		नजात की राह वह उस के लिए निकाल देता है	
عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۝۳ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝۴													
3		अन्दाज़ा		हर बात के लिए		वेशक कर रखा है अल्लाह		अपना काम		पहुँचने (पूरा करने) वाला		वेशक अल्लाह उस के लिए काफी है तो वह अल्लाह पर	
وَإِذَا يَسْرَنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِنْ نِّسَائِكُمْ إِنْ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ													
तो उन की इदत		अगर तुम्हें शुबाह हो		तुम्हारी वीवियां		से		हैज़		से		ना उम्मीद हो गई हों और जो औरतें	
ثَلَاثَةَ أَشْهُرٍ وَإِذَا لَمْ يَحْضَنْ وَأُولَاثُ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ													
कि वज़़ हो जाएँ		उन की इदत		और हमल वालियां		उन्हें हैज़ नहीं आया		और जो		महीने		तीन	
حَمْلَهُنَّ ۝۴ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلُ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۝۵ ذَلِكُمْ أَمْرُ اللَّهِ													
अल्लाह के हुक्म		यह		4		आसानी		उस के काम में		उस के लिए		वह कर देगा अल्लाह से डरेगा और जो उम्ल हमल	
أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ ۝۵ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَكْفِرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ۝۶													
5		अजर		उस को		और बड़ा देगा		उस की बुराइयां		उस से		वह दूर कर देगा अल्लाह से डरेगा और जो तुम्हारी तरफ़ उस ने यह उतारा है	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है
ऐ नबी (स)! जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो उन्हें उन की इदत के लिए तलाक़ दो और तुम इदत का शुमार रखो, और तुम डरो अल्लाह से जो तुम्हारा रब है, तुम उन्हें उन के घरों से न निकालो और न वह खुद निकलें, मगर यह कि वह खुली वेहयाई की मुरतकिब हों, और यह अल्लाह की हुदूद हैं, और जो अल्लाह की हदों से आगे निकलेगा (तजावुज़ करेगा) तो तहकीक़ उस ने अपनी जान पर जुल्म किया, तुम्हें ख़बर नहीं कि शायद अल्लाह उस के बाद (रुज़़ की) कोई और बात (सबील) पैदा कर दे। (1)
फिर जब वह पहुँच जाएँ अपनी मीज़ाद तो उन्हें अच्छे तरीक़े से रोक लो या उन्हें अच्छे तरीक़े से जुदा (रुज़़त) कर दो, और अपने में से दो (2) इसाफ़ पसंद गवाह कर लो और तुम (सिर्फ़) अल्लाह के लिए गवाही दो, यही है जिस की (हर उस शख्स को) नसीहत की जाती है जो अल्लाह और अख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, और जो अल्लाह से डरता है तो वह उस के लिए नजात (मुख़लिसी) की राह निकाल देता है। (2)
और वह उसे रिज़क़ देता है जहाँ से उसे गुमान (भी) नहीं होता, और जो अल्लाह पर भरोसा करता है तो वह उस के लिए काफी है, वेशक अल्लाह अपने काम पूरे करने वाला है, वेशक अल्लाह ने हर बात के लिए अन्दाज़ा मुक़रर किया है। (3)
और जो हैज़ से ना उम्मीद हो गई हों तुम्हारी वीवियों में से, अगर तुम्हें शुब्हा हो तो उन की इदत तीन महीने है और (यही हुकुम कमसिन के लिए भी है) जिन्हें हैज़ नहीं आया। और हमल वालियों की इदत उन के वज़़ हमल (बच्चा जनने) तक है और जो अल्लाह से डरेगा तो वह उस के लिए उस के काम में आसानी कर देगा। (4)
यह अल्लाह के हुक्म हैं, उस ने तुम्हारी तरफ़ उतारे हैं और जो अल्लाह से डरेगा वह उस की बुराइयां उस से दूर फ़रमा देगा और उस को बड़ा अजर देगा। (5)

तुम जहां रहते हो उन्हें तुम अपनी इसतिताअत के मुताबिक (वहां) रखो, और तुम उन्हें तंग करने के लिए ज़रर (तक्लीफ़) न पहुँचाओ, और अगर वह हमल से हों तो उन पर खर्च करो यहां तक कि वज़ज़ हमल हो जाए (बच्चा पैदा हो जाए), फिर अगर वह तुम्हारे लिए (तुम्हारी खातिर) दूध पिलाए तो उन्हें उन की उज़रत दो, और तुम आपस में माकूल तरीके से मश्वरा कर लिया करो। और अगर तुम बाहम कशमकश करोगे तो उस को कोई दूसरी दूध पिला देगी। (6) चाहिए कि वस्अत वाला अपनी वस्अत के मुताबिक खर्च करे और जिस पर तंग कर दिया गया हो उस का रिज़क़ (आमदनी) तो अल्लाह ने जो उसे दिया है उस में से खर्च करना चाहिए, अल्लाह किसी को तक्लीफ़ नहीं देता (मुकल्लफ़ नहीं ठहराता) मगर (उसी क़द्र) जितना उस ने उसे दिया है, जल्द कर देगा अल्लाह तंगी के बाद आसानी। (7) और कितनी ही वसतियां हैं जिन्होंने अपने रब के हुक्म से और उस के रसूलों से सरकशी की और हम ने सख़्ती से उन का हिसाब लिया और हम ने उन्हें बहुत बड़ा अज़ाब दिया। (8) फिर उन्होंने ने अपने काम का बवाल चखा और उन के काम का अन्जाम ख़सारा (घाटा) हुआ। (9) अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अज़ाब तैयार किया है, पस तुम अल्लाह से डरो ऐ अक्ल वालो - ईमान वालो! तहकीक़ अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की है। (10) और रसूल (स) (भेजा) जो तुम पर पढ़ता है अल्लाह की रोशन आयतें ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए वह उन्हें निकाले तारीकियों से नूर की तरफ़, और जो अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे अमल करेगा तो वह उसे उन बागात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह रहेंगे उन में हमेशा हमेशा, बेशक अल्लाह ने उस के लिए बहुत अच्छी रोज़ी रखी है। (11) अल्लाह वह है जिस ने सात (7) आस्मान पैदा किए और ज़मीन भी उन की तरह, उन के दरमियान हुक्म उतरता है ताकि वह जान लें कि अल्लाह हर शै पर कुदरत रखता है और यह कि अल्लाह ने हर शै का इल्म से अहाता किया हुआ है। (12)

أَسْكِنُوهُمْ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وَجْدِكُمْ وَلَا تَضَارُّوهُمْ لِنَصِيقُوا											
कि तुम तंग करो		और तुम उन्हें ज़रर न पहुँचाओ		अपनी इसतिताअत के मुताबिक		तुम रहते हो		जहां		तुम उन्हें रखो	
عَلَيْهِمْ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتٍ حَمْلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ											
उन के हमल		यहां तक कि वज़अ हो जाए		उन पर		तो खर्च करो तुम		हमल वालियां (हमल से)		वह हों और अगर उन्हें	
فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاتُّوهُنَّ أَجُورَهُنَّ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ وَإِنْ											
और अगर		माकूल तरीके से		और तुम बाहम मश्वरा कर लिया करो आपस में		उन की उज़रत		तो तुम उन्हें दो		तुम्हारे लिए वह दूध पिलाएं फिर अगर	
تَعَاسَرْتُمْ فَسْتَزِضْ لَهُ أُخْرَى ۖ لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهِ وَمَنْ											
और जो		अपनी वस्अत		से - मुताबिक		वस्अत वाला		चाहिए कि खर्च करे		6 कोई दूसरी उस को तो दूध पिलादेगी तुम बाहम कशमकश करोगे	
قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا											
जिस क़द्र उस ने उसे दिया		मगर		किसी को		तक्लीफ़ नहीं देता अल्लाह		उसे अल्लाह ने दिया		उस में तो उसे खर्च करना चाहिए उस का रिज़क़ उस पर तंग कर दिया गया	
سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۖ وَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ											
से		उन्होंने ने सरकशी की		वसतियां		और कई		7 आसानी		तंगी के बदले जल्द कर देगा अल्लाह	
أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَهَا حِسَابًا شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا ثُكْرًا											
8		बहुत बड़ी		अज़ाब		और हम ने उन्हें अज़ाब दिया		सख्ती से		हिसाब तो हम ने उन का हिसाब लिया और उस के रसूलों अपने रब के हुक्म	
فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ۖ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ											
उन के लिए		अल्लाह ने तैयार किया है		9		ख़सारा		उन का काम		अन्जाम और अपना काम ववाल फिर उन्होंने ने चखा	
عَذَابًا شَدِيدًا فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ ۗ الَّذِينَ آمَنُوا											
ईमान वालो		ऐ अक्ल वालो				पस तुम डरो अल्लाह से		सख्त		अज़ाब	
قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۖ رَّسُولًا يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ											
रोशन		अल्लाह की आयतें		तुम पर		वह पढ़ता है		रसूल		10 नसीहत (किताब) तुम्हारी तरफ़ तहकीक़ नाज़िल की अल्लाह ने	
لِيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَمَنْ											
और जो		नूर की तरफ़		तारीकियों से		और उन्होंने ने अच्छे अमल किए		जो ईमान लाए		ताकि वह निकाले	
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيَعْمَلُ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ											
नहरें		उन के नीचे से		बहती है		बागात		वह उसे दाख़िल करेगा		अच्छे और वह अल्लाह पर ईमान लाएगा	
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ۖ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ											
पैदा किए		अल्लाह वह जिस ने		11		रोज़ी		उस के लिए		बेशक बहुत अच्छी रखी अल्लाह ने हमेशा उन में वह हमेशा रहेंगे	
سَبْعَ سَمُوتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِيَتَعْلَمُوا											
ताकि वह जान लें		उन के दरमियान		हुक्म		उतरता है		उन की तरह		और ज़मीन से (भी) सात आस्मान	
أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا											
12		इल्म से		हर शै		अहाता किया हुआ है		और यह कि अल्लाह		कुदरत रखता है हर शै पर कि अल्लाह	

ع ١٢

ع ١٣

ع ١٨

آيَاتُهَا ۱۲ ﴿٦٦﴾ سُورَةُ التَّحْرِيمِ ﴿٢﴾ زُكُوعَاتُهَا ۲									
रुकुआत 2				(66) सूरतुत तहरीम हराम करना			आयात 12		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ									
खुशनुदी	चाहते हुए	तुम्हारे लिए	जो अल्लाह ने हलाल किया	तुम क्यों हराम ठहराते हो?	ऐ नबी (स)				
أَزْوَاجِكَ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١﴾ قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ									
खोलना (कफ़ारा)	तुम्हारे लिए	तहकीक़ मुक़र्रर कर दिया अल्लाह ने	1	मेहरवान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	अपनी वीवियों		
أَيْمَانِكُمْ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٢﴾ وَإِذْ									
और जब	2	हिक्मत वाला	जानने वाला	और वह	तुम्हारा कारसाज़	और अल्लाह	तुम्हारी क़समें		
أَسْرَ النَّبِيِّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ									
और उस को ज़ाहिर कर दिया	उस ने ख़बर कर दी उस बात की	फिर जब	एक बात	अपनी बीवी	बाज़ (एक)	तक-से	नबी (स) ने राज़ की बात कही		
اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ									
वह बात	उस (बीवी) को जतलाई	फिर जब	बाज़ से	और एराज़ किया	उस का कुछ	उस (नबी) ने ख़बर दी	उस पर	अल्लाह	
قَالَتْ مَنْ أَنْبَاكَ هَذَا قَالَ نَبَاَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ﴿٣﴾ إِنْ تَتُوبَا									
अगर तुम दोनों तौबा करो	3	ख़बर रखने वाला	इल्म वाला	मुझे ख़बर दी	फ़रमाया	इस	किस ने आप (स) को ख़बर दी	वह बोली	
إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ									
तो वेशक अल्लाह	उस पर	तुम एक दूसरी की मदद करोगी	और अगर	तुम्हारे दिल	तो यकीनन कज हो गए			अल्लाह के सामने	
هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ									
उस के बाद (उन के अलावा)	और फ़रिश्ते	मोमिन (जमा)	और नेक	और जिब्राईल (अ)	उस का रफ़ीक़	वह			
ظَهِيْرٌ ﴿٤﴾ عَسَىٰ رَبُّهُ إِنْ طَلَّقَكُنَّ أَنْ يُبَدِّلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا									
बेहतर	बीवियां	कि उन के लिए बदल दे	अगर वह तुम्हें तलाक़ दे दें	उन का रब	क़रीब है	4	मददगार		
مَنْكُنَّ مُسْلِمَاتٍ مُّؤْمِنَاتٍ قَنِيْتٍ تَابِتٍ غِبْدَتٍ سَبِيْحَةٍ									
रोज़ेदार	इबादत गुज़ार	तौबा करने वालियां	फ़रमांवरदारी करने वालियां	ईमान वालियां	इताअत गुज़ार	तुम से			
ثَيِّبٍ وَأَبْكَارًا ﴿٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ									
और अपने घर वालों को	अपने आप को	तुम बचाओ	ईमान वालो	ऐ	5	और कुंवारियां	शौहर दीदा		
نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاطٌ شِدَادٌ									
ज़ोर आवर	दुरुश्त खू	फरिश्ते	उस पर	और पत्थर	आदमी	उस का ईंधन	आग		
لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٦﴾									
6	उन्हें हुक्म दिया जाता है	जो	और वह करते हैं	वह हुक्म देता है उन्हें	जो	वह नाफरमानी नहीं करते अल्लाह की			

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है
ऐ नबी (स)! जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल किया है तुम उसे क्यों हराम ठहराते हो? अपनी बीवियों की खुशनुदी चाहते हुए, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरवान है। (1)
तहकीक़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़समें का कफ़ारा मुक़र्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है, और वह जानने वाला हिक्मत वाला है। (2)
और जब नबी (स) ने अपनी एक बीवी से एक राज़ की बात कही, फिर जब उस (बीवी) ने उस बात की (किसी और को) ख़बर कर दी और अल्लाह ने ज़ाहिर कर दिया उस (नबी स) पर, उस ने उस का कुछ (हिस्सा बीवी को) बताया और बाज़ से एराज़ किया, फिर उस बीवी को वह बात जतलाई तो वह पूछी कि आप (स) को किस ने ख़बर दी इस (बात) की? आप (स) ने फ़रमाया: मुझे इल्म वाले, ख़बर रखने वाले ने ख़बर दी। (3)
(ऐ बीवियों!) अगर तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबा करो (तो बेहतर है क्योंकि) तुम्हारे दिल यकीनन कज हो गए, अगर उस (नबी स) की (ईज़ा रसानी) पर तुम एक दूसरी की मदद करोगी तो वेशक अल्लाह उस का रफ़ीक़ है और जिब्राईल (अ) और नेक मोमिनीन, और फ़रिश्ते (भी) उन के अलावा मददगार है। (4)
अगर वह तुम्हें तलाक़ दे दें तो क़रीब है कि उस का रब उस के लिए बीवियां बदल दे तुम से बेहतर इताअत गुज़ार, ईमान वालियां, फ़रमांवरदारी करने वालियां, तौबा करने वालियां, इबादत गुज़ार, रोज़ेदार, शौहर दीदा और कुंवारियां। (5)
ऐ ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हैं, उस पर दुरुश्त खू, ज़ोर आवर फ़रिश्ते (मुअय्यन) हैं, अल्लाह जो उन्हें हुक़्म देता है उस की नाफ़रमानी नहीं करते और वह करते हैं जो उन्हें हुक़्म दिया जाता है। (6)

ऐ काफ़िरो! आज तुम उज़्र न करो (बहाने न बनाओ) इस के सिवा नहीं कि तुम्हें उस का बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे। (7) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के आगे तौबा करो खालिस (सच्ची) तौबा, उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम से दूर कर देगा तुम्हारे गुनाह और वह तुम्हें उन बागात में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी (स) को और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए, उन का नूर उन के सामने और उन के दाएं दौड़ता होगा, और वह दुआ करते होंगे: ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर दे और हमारी मग़फ़िरत फ़रमा दे, वेशक तू हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (8)

ऐ नबी (स) जिहाद कीजिए काफ़िरो और मुनाफ़िकों से और उन पर सख्ती कीजिए, और उन का ठिकाना जहन्नम है, और वह (बहुत) बुरी जगह है। (9) बयान की अल्लाह ने काफ़िरो के लिए नूह (अ) की बीबी और लूत (अ) की बीबी की मिसाल, वह दोनों दो बन्दों के मातहत थीं हमारे सालेह बन्दों में से, सो उन्होंने ने अपने शौहरों से ख़ियानत की तो अल्लाह के आगे उन दोनों के कुछ काम न आ सके, और कहा गया तुम दोनों जहन्नम में दाखिल हो जाओ दाखिल होने वालों के साथ। (10) और अल्लाह ने मोमिनों के लिए फ़िराऊन की बीबी की मिसाल पेश की, जब उस (बीबी) ने कहा: ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बनादे और मुझे फ़िराऊन और उस के अमल से बचा ले और मुझे ज़ालिमों की कौम से बचा ले। (11) और (दूसरी मिसाल) इमरान (अ) की बेटी मरयम (अ), जिस ने हिफ़ाज़त की अपनी शर्मगाह की, सो हम ने उस में अपनी रूह फूँकी, और उस ने तसदीक की अपने रब की बातों की और उस की किताबों की और वह फ़रमावरदारी करने वालियों में से थी। (12)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْرُونَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا ۚ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنْكُم سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُم جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ۖ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتِمِّمْ لَنَا نُورَنَا وَاعْفِرْ لَنَا ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٨﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَأْوَهُم جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٩﴾ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتِ نُوحٍ وَامْرَأَتِ لُوطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتُهُمَا فَلَمْ يُغْنِ عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّٰخِلِينَ ﴿١٠﴾ وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتِ فِرْعَوْنَ ۖ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنَ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١١﴾ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُّوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا وَكُتِبَ فِيهَا وَكَانَتْ مِنَ الْقَانِتِينَ ﴿١٢﴾							
ऐ	जिन लोगों ने कुफ़ किया	तुम उज़्र न करो	आज	इस के सिवा नहीं कि तुम्हें बदला दिया जाएगा जो			
तुम करते थे	7	ऐ	ईमान वालो	तुम तौबा करो	अल्लाह के आगे	तौबा	खालिस
उम्मीद है	तुम्हारा रब	कि वह दूर कर देगा	तुम से	तुम्हारी बुराइयां (गुनाह)	और वह दाखिल करेगा तुम्हें	बागात	जारी है
उन के नीचे	नहरें	उस दिन	रुस्वा न करेगा अल्लाह	नबी (स)	और जो लोग ईमान लाए	उस के साथ	
उन का नूर	दौड़ता होगा	उन के सामने	और उन के दाहिने	वह कहते (दुआ करते) होंगे	ऐ हमारे रब	पूरा कर दे हमारे लिए	
हमारा नूर	और हमारी मग़फ़िरत फ़रमादे	वेशक तू	पर	हर शै	कुदरत रखने वाला	8	ऐ नबी (स)
काफ़िरो	और मुनाफ़िकों	और सख्ती कीजिए	उन पर	और उन का ठिकाना	जहन्नम	और बुरी	
जगह	9	बयान की अल्लाह ने	मिसाल	काफ़िरो के लिए	नूह (अ) की बीबी		
और लूत (अ) की बीबी	और दोनों थे	मातहत	दो बन्दे	से	हमारे बन्दे	दो सालेह	
सो उन्होंने ने उन दोनों से ख़ियानत की	तो उन दोनों के काम न आया	उन के	अल्लाह से-आगे	कुछ	कहा गया	और	तुम दोनों दाखिल हो जाओ जहन्नम
साथ	दाखिल होने वाले	10	और बयान की अल्लाह ने	मिसाल	मोमिनों के लिए	फ़िराऊन की बीबी	
जब	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	मेरे लिए बना दे	अपने पास	एक घर	जन्नत में	और मुझे बचा ले
फ़िराऊन	और उस का अमल	मुझे बचा ले	से	ज़ालिमों की कौम	11	और मरयम	
इमरान की बेटी	वह जिस ने	हिफ़ाज़त की	अपनी शर्मगाह	सो हम ने फूँकी	उस में	अपनी रूह से	
और उस ने तसदीक की	बातों की	अपना रब	और उस की किताबों	और वह थी	से	फ़रमावरदारी करने वालियां	12

٢ رُكُوعَاتُهَا ﴿٦٧﴾ سُورَةُ الْمُلِكِ ﴿٦٧﴾ سूरतुल मुल्क							٣٠ آيَاتُهَا						
रुकुआत 2			(67) सूरतुल मुल्क बादशाही			आयात 30							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ													
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है													
تَبْرَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ													
हर शौ		पर	और वह	बादशाही	उस के हाथ में	वह जिस	बड़ी बरकत वाला						
قَدِيرٌ ١) الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَوَةَ لِيَبْلُوكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ													
सब से बेहतर		तुम में से कौन	ताकि वह आजमाए तुम्हें	और ज़िन्दगी	मौत	पैदा किया	वह जिस	1	कुदरत रखने वाला				
عَمَلًا ٢) وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ٣) الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ طِبَاقًا													
एक के ऊपर एक		सात आस्मान		जिस ने बनाए		2	बख़्शने वाला	ग़ालिब	और वह	अमल में			
مَا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِنْ تَفُوتٍ فَارْجِعِ الْبَصَرَ													
निगाह		फिर लौटा		कोई फर्क		रहमान (अल्लाह)		बनाना (तख़लीक)	में	तू न देखेगा			
هَلْ تَرَىٰ مِنْ فُطُورٍ ٣) ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ													
तेरी तरफ़		वह लौट आएगी	दोबारा	निगाह	तू दोबारा लौटा	फिर	3	कोई शिगाफ़		क्या तू देखता है?			
الْبَصَرَ خَاسِنًا وَهُوَ حَسِيرٌ ٤) وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا													
आस्माने दुनिया			और यकीनन हम ने आरास्ता किया		4	थकी मान्दा		और वह	ख़ार हो कर		निगाह		
بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ													
उन के लिए		और हम ने तैयार किया		शैतानों के लिए		मारने का औज़ार		और हम ने उसे बनाया		चिरागों से			
عَذَابِ السَّعِيرِ ٥) وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ													
जहनन्म का अज़ाब			उन के रब की तरफ़ से		जिन्होंने ने कुफ़ किया		और उन लोगों के लिए		5	दहकती आग (जहनन्म) का अज़ाब			
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ٦) إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهيقًا وَهِيَ													
और वह		चीखना चिल्लाना	उस का	वह सुनेंगे	उस में	जब वह डाले जाएंगे		6	लौटने की जगह		और बुरी		
تَفُورٌ ٧) تَكَادُ تَمَيِّزُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ													
वह उन से पूछेंगे		कोई गिरोह	डाला जाएगा उस में		जब भी	ग़ज़ब से		क़रीब है कि फट पड़े		7	जोश मार रही होगी		
خَزْنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ٨) قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا													
सो हम ने झुटलाया		डराने वाला	ज़रूर आया हमारे पास		हाँ	वह कहेंगे	8	कोई डराने वाला		क्या नहीं आया तुम्हारे पास	उस के दारोगा		
وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ٩) إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ													
9	बड़ी	गुमराही में		मगर (सिर्फ)	नहीं तुम		कुछ		नहीं नाज़िल की अल्लाह ने		और हम ने कहा		
وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ١٠)													
10	दोज़खियों			में		हम न होते		या हम समझते		हम सुनते		अगर	और वह कहेंगे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है बड़ी बरकत वाला है वह जिस के हाथों में है बादशाही, और वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला। (1) वह जिस ने पैदा किया मौत और ज़िन्दगी को, ताकि वह तुम्हें आजमाए कि तुम में से कौन है अमल में सब से बेहतर, और वह ग़ालिब बख़्शने वाला है। (2) जिस ने सात आस्मान बनाए एक के ऊपर एक, तू अल्लाह की तख़लीक में कोई फर्क न देखेगा, फिर निगाह लौटा कर (देख) क्या तू कोई शिगाफ़ (दराड़) देखता है। (3) फिर दोबारा निगाह लौटा कर (देख) वह तेरी तरफ़ ख़ार हो कर थकी मान्दी लौट आएगी। (4) और यकीनन हम ने आरास्ता किया आस्माने दुनिया को चिरागों से और हम ने उसे शैतानों के लिए मारने का औज़ार बनाया और हम ने उन के लिए जहनन्म का अज़ाब तैयार किया है। (5) और जिन लोगों ने कुफ़ किया उन के लिए उन के रब की तरफ़ से जहनन्म का अज़ाब है, और (यह) बुरी लौटने की जगह है। (6) जब वह उस में डाले जाएंगे तो वह सुनेंगे उस का चीखना चिल्लाना और वह जोश मार रही होगी। (7) क़रीब है कि ग़ज़ब से फट पड़े, जब भी उस में कोई गिरोह डाला जाएगा, उन से उस के दारोगा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था? (8) वह कहेंगे: हाँ (क्यों नहीं) हमारे पास ज़रूर डराने वाला आया, सो हम ने झुटलाया और हम ने कहा कि अल्लाह ने कुछ नाज़िल नहीं किया, तुम सिर्फ़ बड़ी गुमराही में हो। (9) और वह कहेंगे: अगर हम सुनते या हम समझते तो हम दोज़खियों में न होते। (10)

सो उन्होंने ने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया, पस लानत है दोज़खियों के लिए। (11)

वेशक जो लोग बिन देखे अपने रब से डरते हैं उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (12)

और तुम अपनी बात छुपाओ या उस को बुलन्द आवाज़ से कहो, वह वेशक जानने वाला है दिलों के भेद को। (13)

क्या जिस ने पैदा किया वही न जानेगा? और वह वारीक वीन बड़ा बाख़बर है। (14)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को किया मुसख़्बर ताकि तुम उस के रास्तों में चलो और उस के रिज़्क में से खाओ, और उसी की तरफ़ जी उठ कर जाना है। (15)

क्या तुम (उस से) बेख़ौफ़ हो? जो आस्मान में है कि वह तुम्हें ज़मीन में धंसा दे तो नागहां वह हिलने लगे। (16)

क्या तुम (उस से) बेख़ौफ़ हो जो आस्मानों में है कि वह तुम पर पत्थरों की वारिश भेज दे? सो तुम जल्द जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है? (17)

और ज़रूर उन लोगों ने झुटलाया जो इन से पहले थे तो (याद करो) कैसा हुआ मेरा अज़ाब! (18)

क्या उन्होंने ने अपने ऊपर परिन्दों को पर फैलाते और सुकेड़ते नहीं देखा, उन्हें (कोई) नहीं थाम सकता अल्लाह के सिवा, वेशक वह हर चीज़ का देखने वाला। (19)

भला तुम्हारा वह कौन सा लशकर है जो तुम्हारी मदद करे अल्लाह के सिवा, काफ़िर नहीं मगर (महज़) धोके में है। (20)

भला कौन है वह जो तुम्हें रिज़्क दे अगर वह अपना रिज़्क रोकले? बल्कि वह सरकशी और फ़रार में ढीट बने हुए है। (21)

पस जो शख्स अपने मुँह के बल गिरता हुआ (औन्धा) चलता है ज़ियादा हिदायत याफ़ता है या वह जो सीधे रास्ते पर सीधा चलता है? (22)

فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ (١١) إِنَّ الَّذِينَ

जो लोग	वेशक	11	दोज़खियों के लिए	तो दूरी (लानत)	अपने गुनाहों का	सो उन्होंने ने एतिराफ़ कर लिया

يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ (١٢) وَأَسْرُوا

और तुम छुपाओ	12	बड़ा	और अजर	बख़्शिश	उन के लिए	बिन देखे	अपना रब	डरते हैं

قَوْلَكُمْ أَوْ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ (١٣) أَلَا يَعْلَمُ

क्या नहीं जानेगा	13	सीनों (दिलों) के भेद	जानने वाला	वेशक वह	उस को	या बुलन्द आवाज़ से कहो	अपनी बात

مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ (١٤) هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُم

तुम्हारे लिए	वह जिस ने किया	वही	14	बड़ा बाख़बर	वारीक वीन	और वह	जिस ने पैदा किया

الْأَرْضَ ذُلُولًا فَأَمْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ وَإِلَيْهِ

और उसी की तरफ़	उस के रिज़्क से	सो तुम खाओ	उस के रास्तों में	ताकि तुम चलो	मुसख़्बर	ज़मीन

النُّشُورُ (١٥) ءَأَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ

तुम्हें	कि वह धंसा दे	आस्मान में	जो	क्या तुम बेख़ौफ़ हो	15	जी उठ कर जाना

الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ (١٦) أَمْ أَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ

कि	आस्मान में	जो	क्या तुम बेख़ौफ़ हो	16	वह जुम्बिश करे	तो नागहां	ज़मीन

يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرٍ (١٧) وَلَقَدْ كَذَّبَ

और पक्का झुटलाया	17	मेरा डराना	कैसा	सो तुम जल्द जान लोगे	पत्थरों की वारिश	तुम पर	वह भेजे

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرٍ (١٨) أَوَلَمْ يَرَوْا

क्या नहीं देखा उन्होंने ने	18	मेरा अज़ाब	हुआ	तो कैसा	इन से कब्ल	से	वह लोग जो

إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَفٌّ وَيَقْبَضْنَ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَنُ (٢٠)

रहमान (अल्लाह)	सिवा	नहीं थाम सकता उन्हें	और सुकेड़ते	पर फैलाते	अपने ऊपर	परिन्दों को

إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ (١٩) أَمِنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَكُمْ

तुम्हारा	लशकर	वह	जो	भला कौन है वह?	19	देखने वाला	हर शै को	वेशक वह

يَنْصُرُكُمْ مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِنَّ الْكُفْرُورَ إِلَّا فِي غُرُورٍ (٢٠)

20	धोके में	मगर	काफ़िर (जमा)	नहीं	अल्लाह के सिवा	से	वह मदद करे तुम्हारी

أَمِنْ هَذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ بَلْ لَجُّوا

बल्कि जमे हुए	अपना रिज़्क	वह रोक ले	अगर	वह जो रिज़्क दे तुम्हें	भला कौन है

فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ (٢١) أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَى وَجْهِهِ

अपने मुँह के बल	गिरता हुआ	वह चलता है	पस क्या जो	21	और भागते हैं	सरकशी

أَهْدَىٰ أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (٢٢)

22	सीधा रास्ता	पर	बराबर (सीधा)	चलता है	या वह जो	ज़ियादा हिदायत याफ़ता

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ						
और आँखें	कान	तुम्हारे लिए	और उस ने बनाए	वह जिस ने पैदा किया तुम्हें	फरमा दें वही	
وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ						
वह जिस ने फैलाया तुम्हें	वही	फरमा दें	23	जो तुम शुक्र करते हो	बहुत कम	और दिल (जमा)
فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ						
यह वादा	कब	और वह कहते हैं	24	तुम उठाए जाओगे	और उसी की तरफ	ज़मीन में
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا						
मैं	और इस के सिवा नहीं	अल्लाह के पास	इस के सिवा नहीं कि इल्म	फरमा दें	25	सच्चे
نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا						
जिन्होंने ने कुफ़ किया	बुरे (सियाह) हो जाएंगे चेहरे	नज़्दीक आता	वह उसे देखेंगे	फिर जब	26	साफ़ डराने वाला
وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِه تَدْعُونَ ﴿٢٧﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ						
किया तुम ने देखा	फरमा दें	27	तुम मांगते	उस को	तुम थे	वह जो
إِنْ أَهْلَكْنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا ۖ فَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ						
काफ़िरों	पनाह देगा	तो कौन	या वह रहम फरमाए हम पर	मेरे साथ	और जो	मुझे हलाक कर दे अल्लाह
مِنْ عَذَابِ الْإِيمِ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ أَمَّنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ						
और उसी पर	उस पर	हम ईमान लाए	वही रहमान	फरमा दें	28	दर्दनाक अज़ाब से
تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ						
फरमा दें	29	खुली गुमराही	मैं	कौन वह	सो तुम जल्द जान लोगे	हम ने भरोसा किया
أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا ۖ فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَعِينٍ ﴿٣٠﴾						
30	रवां पानी	ले आएगा तुम्हारे पास	तो कौन	नीचे उतरा हुआ	तुम्हारा पानी	क्या तुम ने देखा (भला देखो)
آيَاتُهَا ٥٢ ﴿٦٨﴾ سُورَةُ الْقَلَمِ ﴿٦٨﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢						
2 रुक़आत (68) सूरतुल क़लम आयत 52						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ﴿١﴾ مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ						
अपना रब	नेमत (फज़ल) से	नहीं आप (स)	1	वह लिखते हैं	और जो	नून क़सम है क़लम की
بِمَجْنُونٍ ﴿٢﴾ وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ﴿٣﴾ وَإِنَّكَ لَعَلَى						
यकीनन-पर	और वेशक आप (स)	3	ख़तम न होने वाला	अलवत्ता अजर	और वेशक आप के लिए	2 मजनून
خُلِقِ عَظِيمٍ ﴿٤﴾ فَسْتَبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ ﴿٥﴾ بِأَيْسِكُمُ الْمَفْتُونُ ﴿٦﴾						
6	दीवाना	तुम में से कौन?	5	और वह भी देख लेंगे	आप (स) जल्द देख लेंगे	4 अख़्लाक़ का ऊँचा मुक़ाम

आप (स) फ़रमा दें: वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया और उस ने बनाए तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल, तुम बहुत कम शुक्र करते हो। (23)

आप (स) फ़रमा दें: वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ तुम उठाए जाओगे। (24) और वह कहते हैं कि यह वादा कब (पूरा होगा?) अगर तुम सच्चे हो। (25)

आप (स) फ़रमा दें: इस के सिवा नहीं कि इल्म अल्लाह के पास है, और इस के सिवा नहीं कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (26)

फिर जब वह उसे नज़्दीक आता देखेंगे तो उन लोगों के चेहरे सियाह हो जाएंगे जिन्होंने ने कुफ़ किया और कहा जाएगा कि यह है वह जो तुम मांगते थे। (27)

आप (स) फ़रमा दें: भला देखो तो अगर अल्लाह हलाक कर दे मुझे और (उन्हें) जो मेरे साथ है या हम पर रहम फरमाए तो काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचाएगा? (28)

आप (स) फ़रमा दें: वही रहमान है, हम ईमान लाए उस पर और उसी पर हम ने भरोसा किया, सो तुम जल्द जान लोगे कि कौन खुली गुमराही में है? (29)

आप (स) फ़रमा दें: भला देखो तो अगर हो जाए तुम्हारा पानी नीचे को उतरा हुआ (ख़ुशक) तो कौन ले आएगा तुम्हारे पास (सूत का) रवां पानी? (30)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है नून। क़सम है क़लम की और जो वह लिखते हैं। (1)

आप (स) अपने रब के फज़ल से मजनून नहीं हैं। (2) और वेशक आप (स) के लिए अजर है ख़तम न होने वाला। (3)

और वेशक आप (स) अख़्लाक़ के ऊँचे मुक़ाम पर हैं। (4) पस आप (स) जल्द देख लेंगे और वह भी देख लेंगे (5) (कि) तुम में से कौन दीवाना है? (6)

वेशक आप (स) का रब उस को खूब जानता है जो गुमराह हुआ उस की राह से और वह खूब जानता है हिदायत याफता लोगों को। (7)

पस आप (स) झुटलाने वालों का कहा न मानें। (8)

वह चाहते हैं कि काश आप (स) नमी करें तो वह (भी) नमी करें। (9)

और आप (स) बेवक़अत बात बात पर कसमें खाने वाले का कहा न मानें। (10)

ऐब निकालने वाला चुलियां लगाते फिरने वाला। (11)

माल में बुख़ल करने वाला, हद से बढ़ने वाला गुनाहगार। (12)

सख़्त खू, उस के बाद बद असल। (13)

इस लिए कि वह माल वाला और औलाद वाला है। (14)

जब उसे हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वह कहता है: यह अगले लोगों की कहानियां हैं। (15)

हम जल्द दाग़ देंगे उस की नाक पर। (16)

वेशक हम ने उन्हें आजमाया जैसे हम ने आजमाया था बाग़ वालों को, जब उन्होंने ने कसम खाई कि हम सुबह होते उस का फल ज़रूर तोड़ लेंगे। (17)

और उन्होंने ने “इन्शा अल्लाह” न कहा। (18)

पस उस (बाग़) पर तेरे रब की तरफ़ से एक अज़ाब फिर गया और वह सोए हुए थे। (19)

तो वह (बाग़) सुबह को रह गया जैसे एक कटा हुआ खेत। (20)

तो वह सुबह होते एक दूसरे को पुकारने लगे। (21)

कि सुबह सवेरे अपने खेत पर चलो अगर तुम काटने वाले हो (अगर तुम्हें खेती काटनी है)। (22)

फिर वह चले और वह आपस में चुपके चुपके कहते थे। (23)

कि आज वहां तुम पर कोई मिस्कीन दाख़िल न होने पाए। (24)

और वह सुबह सवेरे चले (इस ज़अम के साथ) कि वह बख़ीली पर कादिर है। (25)

फिर जब उन्होंने ने उसे देखा तो वह बोले कि वेशक हम राह भूल गए हैं। (26)

बल्कि हम महरूम (बद नसीब) हो गए हैं। (27)

कहा उन के बेहतरीन आदमी ने: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम तस्वीह क्यों नहीं करते? (28)

वह बोले: पाक है हमारा रब, वेशक हम ज़ालिम थे। (29)

पस एक दूसरे को अपनाया बाज़ पर बाज़ मलामत करते हुए। (30)

वह बोले हाए हमारी खराबी! वेशक हम (ही) सरकश थे। (31)

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ

वेशक आप (स) का रब	वह खूब जानता है	उस को जो	वह गुमराह हुआ	उस की राह से	और वह खूब जानता है

بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٧﴾ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٨﴾ وَذُوا لَوْ تَذَهْنُ

हिदायत याफता लोगों को	7	पस आप (स) कहा न मानें	झुटलाने वालों	8	वह चाहते हैं	काश आप नमी करें

فَيَذَهْنُونَ ﴿٩﴾ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٍ مَّشَّاءٍ

तो वह भी नमी करें	9	और आप (स) कहा न मानें	बात बात पर कसमें खाने वाला	10	वे वक़अत	ऐब निकालने वाला	फिरने वाला

بِنَوْمٍ ﴿١١﴾ مِّنَاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾ عُثْلٍ بَعْدَ ذَلِكَ زَنِيمٍ ﴿١٣﴾

चुली लिए	11	रोकने (बुख़ल करने) वाला	माल में	हद से बढ़ने वाला	गुनाहगार	12	सख़्त खू	उस के बाद बद असल	13

أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ﴿١٤﴾ إِذَا تُثْلَى عَلَيْهِ أَيْثُنَا قَالَ

इस लिए कि वह है	माल वाला	और औलाद वाला	14	जब	पढ़ कर सुनाई जाती है उसे	हमारी आयतें	वह कहता है

أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٥﴾ سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرُطُومِ ﴿١٦﴾ إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا

कहानियां	अगले लोग	15	हम जल्द दाग़ देंगे उस को	सूँड (नाक) पर	16	वेशक हम ने आजमाया उन्हें	जैसे

بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾

हम ने आजमाया	बाग़ वालों को	जब उन्होंने ने कसम खाई	हम ज़रूर तोड़ लेंगे उस का फल	सुबह होते	17

وَلَا يَسْتَنْبِئُونَ ﴿١٨﴾ فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿١٩﴾

और उन्होंने ने इन्शा अल्लाह न कहा	18	पस फिर गया	उस पर	एक फिरने वाला (अज़ाब)	तेरे रब की तरफ़ से	और वह	सोए हुए थे	19

فَاصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادُوا مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾ أَنْ اغْدُوا عَلَيَّ

तो वह सुबह को रह गया	जैसे कटा हुआ खेत	20	तो एक दूसरे को पुकारने लगे	सुबह होते	21	सुबह सवेरे चलो	पर

حَرِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَرِمِينَ ﴿٢٢﴾ فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ﴿٢٣﴾

अपने खेत	अगर तुम हो	काटने वाले	22	फिर वह चले	और वह	आपस में चुपके चुपके कहते थे	23

أَنْ لَا يَدْخُلْنَهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مَّسْكِينٌ ﴿٢٤﴾ وَغَدُوا عَلَى حَرْدٍ

कि	वहां दाख़िल न होने पाए	आज	तुम पर	कोई मिस्कीन	24	और वह सुबह सवेरे चले	बख़ीली पर

فَدِرِينَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَصَّالُونَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ

वह कादिर है	25	फिर जब	उन्होंने ने उसे देखा	वह बोले	वेशक हम राह भूल गए हैं	26	बल्कि हम

مَحْرُومُونَ ﴿٢٧﴾ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٨﴾

महरूम हो गए हैं	27	कहा	उन का सब से अच्छा	क्या मैं ने नहीं कहा था	तुम से	तुम तस्वीह क्यों नहीं करते	28

قَالُوا سُبْحَنَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٩﴾ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ

वह बोले	पाक है	हमारा रब	वेशक हम थे	ज़ालिम (जमा)	29	पस अपनाया	उन का बाज़ (एक)

عَلَى بَعْضٍ يَتَلَامُؤْنَ ﴿٣٠﴾ قَالُوا يَؤِيلَنَّا إِنَّا كُنَّا طَغِينِ ﴿٣١﴾

बाज़ (दूसरे) पर	एक दूसरे को मलामत करते हुए	30	वह बोले	हाए हमारी खराबी	वेशक हम थे	सरकश (जमा)	31

عَسَى رَبُّنَا أَنْ يُبَدِّلَنَا خَيْرًا مِّنْهَا إِنَّا إِلَى رَبِّنَا رَاغِبُونَ ﴿٣٢﴾									
32	रागिब (रजुअ करने वाले)	अपने रब की तरफ़	बेशक हम	इस से	बेहतर	हमें बदले में दे	कि	हमारा रब	उम्मीद है
كَذَلِكَ الْعَذَابُ وَلَئِنَّ الْعَذَابَ الْأَخْرَجَ أَكْبَرُ لَوْ									
काश!	सब से बड़ा	अलबत्ता आखिरत का अज़ाब				अज़ाब	यू होता है		
كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٣٤﴾									
34	नैमतों के बागात	उन के रब के पास	परहेज़गारों के लिए	बेशक	33	वह जानते होते			
أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٦﴾									
36	तुम फैसला करते हो	कैसा	क्या हुआ तुम्हें	35	मुजरिमों की तरह	मुसलमानों	तो क्या हम करदेंगे		
أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٧﴾ إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿٣٨﴾									
38	अलबत्ता जो तुम पसंद करते हो	उस में	तुम्हारे लिए	बेशक	37	तुम पढ़ते हो	उस में	कोई किताब	क्या तुम्हारे पास
أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ إِنَّ لَكُمْ									
तुम्हारे लिए	बेशक	क़ियामत के दिन	तक	पहुँचने वाला	हम पर (हमारे ज़िम्मे)	कोई पुख्ता अ़हद	क्या तुम्हारे लिए		
لَمَّا تَحْكُمُونَ ﴿٣٩﴾ سَلَهُمْ أَيُّهُمْ بِذَلِكَ زَعِيمٌ ﴿٤٠﴾ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ									
शरीक (जमा)	या उन के	40	ज़ामिन (ज़िम्मेदार)	इस का	उन में से कौन	तू उन से पूछ	39	तुम फैसला करते हो	अलबत्ता जो
فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ									
खोल दिया जाएगा	जिस दिन	41	सच्चे	वह है	अगर	अपने शरीकों	तो चाहिए कि वह लाएं		
عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٤٢﴾									
42	तो वह न कर सकेंगे			सिज्दों के लिए		और वह बुलाए जाएंगे	पिंडली	से	
خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُفُهُمْ ذِلَّةٌ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ									
बुलाए जाते थे		और तहकीक़	ज़िल्लत	उन पर छाई हुई	उन की आँखें	झुकी हुई			
إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَلِيمُونَ ﴿٤٣﴾ فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبُ									
और वह जो झुटलाता है		पस मुझे छोड़ दो तुम	43	सही सालिम (जमा)	जब कि वह	सिज्दे के लिए			
بِهَذَا الْحَدِيثِ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٤﴾ وَأُمْلِي									
और मैं ढील देता हूँ	44	वह जानते न होंगे	इस तरह	जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता खींचेंगे		इस बात को			
لَهُمْ إِنْ كِيدِي مَتِينٌ ﴿٤٥﴾ أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَّغْرَمٍ									
तावान	से	कि वह	कोई अजर	क्या आप (स) मांगते हैं उन से	45	बड़ी क़वी	मेरी खुफिया तदवीर	बेशक	उन को
مُثْقَلُونَ ﴿٤٦﴾ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُمُونَ ﴿٤٧﴾ فَاصْبِرْ									
पस आप (स) सब्र करें	47	लिख लेते हैं	कि वह	इल्मे ग़ैब	उन के पास	या	46	बोझल (दबे जाते) हैं	
لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَى وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٤٨﴾									
48	ग़म से भरा हुआ	और वह	जब उस ने पुकारा	मछली वाले (यूनस अ) की तरह		और न हों आप (स)	अपना रब	हुक़म के लिए	

उम्मीद है कि हमारा रब हमें इस से बेहतर बदले में दे, बेशक हम अपने रब की तरफ रजुअ करने वाले हैं। (32)

यू होता है अज़ाब! और आखिरत का अज़ाब अलबत्ता सब से बड़ा है। काश! वह जानते होते। (33)

बेशक परहेज़गारों के लिए उन के रब के हां नैमतों के बागात हैं। (34) तो क्या हम कर देंगे मुसलमानों को मुजरिमों की तरह (महरूम)? (35) तुम्हें क्या हुआ? तुम कैसा फैसला करते हो? (36)

क्या तुम्हारे पास कोई (आस्मानी) किताब है कि उस में से तुम पढ़ते हो। (37) कि बेशक उस में तुम्हारे लिए (होगा) जो तुम पसंद करते हो। (38)

क्या तुम्हारे लिए हमारे ज़िम्मे कोई पुछता अहद है क़ियामत के दिन तक कि बेशक तुम्हारे लिए (होगा) जो तुम फैसला करो। (39)

तू उन से पूछ कि उन में से कौन इस का ज़ामिन है? (40)

या उन के शरीक हैं (जिन्होंने ने इस का ज़िम्मा लिया है)? तो चाहिए कि वह अपने शरीकों को लाएं अगर वह सच्चे हैं। (41)

जिस दिन पिंडली से खोल दिया जाएगा और वह सिज्दों के लिए बुलाए जाएंगे तो वह न कर सकेंगे। (42)

उन की आँखें झुकी हुई (होंगी) और उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी, और इस से क़व्ल वह सिज्दों के लिए बुलाए जाते थे जब कि (सही) सालम थे (और वह इन्कार करते थे)। (43)

पस जो इस बात को झुटलाता है तुम उस को मुझ पर छोड़ दो। हम जल्द उन्हें इस तरह आहिस्ता आहिस्ता खींचेंगे कि वह जानते न होंगे। (44)

और मैं उन्हें ढील देता हूँ, बेशक मेरी खुफिया तदवीर बड़ी कवी है। (45)

क्या आप (स) उन से कोई अजर मांगते हैं? कि वह (उस) तावान (के बोझ) से दबे जाते हैं। (46) या उन के पास इल्मे ग़ैब है? कि वह लिख लेते हैं। (47)

पस आप (स) अपने रब के हुक्म के लिए सब्र करें और आप (स) यूनस (अ) की तरह न हो जाएँ, जब उस ने (अल्लाह तआला को) पुकारा और वह ग़म से भरा हुआ था। (48)

अगर उस के रब की नेमत ने उस को न संभाला होता तो अलबत्ता वह चटियल मैदान में बदहाल डाला जाता और उस का हाल अब्तर रहता। (49) पस उस के रब ने उसे बरगुज़ीदा किया तो उसे नेकोकारों में से कर लिया। (50)

और तहकीक करीब है (ऐसा लगता है) के काफ़िर आप (स) को फुसला देंगे अपनी निगाहों से जब वह किताबे नसीहत को सुनते हैं और वह कहते हैं कि बेशक यह दीवाना है। (51) हालांकि यह नहीं, मगर तमाम जहानों के लिए (सिर्फ और सिर्फ) नसीहत। (52)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है सचमुच होने वाली क़ियामत! (1) क्या है क़ियामत? (2) और तुम क्या समझे कि क्या है क़ियामत? (3)

समूद और आद ने खड़खड़ाने वाली (क़ियामत) को झुटलाया। (4) पस जो समूद (थे) वह बड़ी ज़ोर दार आवाज़ से हलाक किए गए। (5) और जो आद (थे) तो वह हलाक किए गए हवा से तुन्द ओ तेज़ हद से ज़ियादा बढ़ी हुई। (6) उस (अल्लाह) ने उस (आन्धी) को उन पर लगातार सात रात और आठ दिन मुसल्लत कर दिया। पस तू उस कौम को उस में (यूँ) गिरी हुई देखता गोया कि वह खजूर के खोखले तने है। (7)

तो क्या तू उन का कोई बक़िया देखता है? (8) और फिरऔन आया और उस से पहले के लोग और उलटी हुई वस्तियों वाले ख़ताओं के साथ। (9) सो उन्होंने ने अपने रब के रसूल (अ) की नाफ़रमानी की तो उन्हें सख़्त गिरिफ़्त ने आ पकड़ा। (10)

बेशक जब पानी तुग़्यानी पर आया हम ने तुम्हें कश्ती में सवार किया, (11)

ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और याद रखने वाला कान उसे याद रखे। (12)

لَوْلَا أَنْ تَدْرَكَهُ نِعْمَةٌ مِّن رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾						
49	मलामत ज़दा (अबतर हाल)	और वह	अलबत्ता वह डाला जाता चटियल मैदान में	उस के रब का	नेमत	अगर न उस को पाया (संभाला) होता
فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٥٠﴾ وَإِنْ يَكَادُ						
	और तहकीक करीब है	50	नेकोकारों से	पस उस को कर लिया	उस का रब	पस उस को बरगुज़ीदा किया
الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ						
	और वह कहते हैं	(किताब) नसीहत	वह सुनते हैं	जब	अपनी निगाहों से	कि वह आप (स) को फुसला देंगे
إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٥٢﴾						
52	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	मगर	हालांकि यह नहीं	51	दीवाना अलबत्ता
آيَاتُهَا ٥٢ ﴿٦٩﴾ سُورَةُ الْحَاقَّةِ ﴿٦٩﴾ زُكُوعَاتُهَا ٢						
रुकुआत 2 (69) सूरतुल हाक्का ज़रूर होने वाली (क़ियामत) आयात 52						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है						
الْحَاقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَا أَذْرَكَ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٣﴾						
3	क्या है क़ियामत?	तुम समझे	और क्या	2	क्या है क़ियामत?	1 सचमुच होने वाली (क़ियामत)
كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَمَا ثَمُودُ فَأَهْلِكُوا						
	वह हलाक किए गए	समूद	पस जो	4	खड़खड़ाने वाली को	और आद
بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَمَا عَادٌ فَأَهْلِكُوا بَرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾						
6	हद से ज़ियादा बढ़ी हुई	तुन्द ओ तेज़	हवा से	तो वह हलाक किए गए	आद	और जो
سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَنِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا						
	लगातार	दिन	और आठ	सात रात	उन पर	उस ने उस को मुसख़्ख़र किया
فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾						
7	खोखले	खजूर	तने	गोया वह	उस में गिरी हुई	फिर तू देखता उस कौम को
فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ						
	और उस के पहले लोग	फिरऔन	और आया	8	कोई बक़िया	उन का
وَالْمُؤْتَفِكْتُ بِالْخَطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ						
	अपने रब के रसूल की	सो उन्होंने ने नाफ़रमानी की	9	ख़ताओं के साथ	और उलटी हुई वस्तियों वाले	
فَآخَذَهُمْ أَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ						
	हम ने तुम्हें सवार किया	पानी	तुग़्यानी पर आया	बेशक जब	10	सख़्त
فِي الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ﴿١٢﴾						
12	याद रखने वाला	कान	और उसे याद रखे	यादगार	तुम्हारे लिए	ताकि हम उस को बनाएं

وقل لا اثم

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۚ وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ						
जमीन	और उठाई जाएगी	13	यकवारगी	फूंक	सूर में	पस जब फूंकी जाएगी
وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۚ فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۚ						
15	वह होने वाली	हो पड़ेगी	पस उस दिन	14	यकवारगी	पस रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे और पहाड़
وَأَنْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۚ وَالْمَلَكُ عَلَى أَرْجَائِهَا						
उस के किनारों	पर	और फ़रिश्ते	16	विलकुल कमज़ोर	उस दिन	पस वह आस्मान और फट जाएगा
وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَةٌ ۚ يَوْمَئِذٍ						
जिस दिन	17	आठ	उस दिन	अपने ऊपर	तुम्हारे रब का अ़र्श	और वह उठाएंगे
تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۚ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ						
दिया गया	पस जिस को	18	(कोई चीज़) पोशीदा	तुम से (तुम्हारी)	न पोशीदा रहेगी	तुम पेश किए जाओगे
كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۚ يَقُولُ هَآؤُمُ أَفْرُؤُوا كِتَابَهُ ۚ إِنَّي ظَنَنْتُ						
मैं वेशक समझता था	19	मेरा आमाल नामा	लो पढ़ो	तो वह कहेगा	उस के दाएं हाथ में	उस की किताब (आमाल नामा)
أَنِّي مُلْقٍ حِسَابِيهِ ۚ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۚ						
21	पसदीदा ज़िन्दगी	में	पस वह	20	अपने हिसाब से	कि मैं मिलूंगा
فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۚ قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ۚ كُلُوا وَاشْرَبُوا						
और तुम पियो	तुम खाओ	23	करीब	जिस के मेवे	22	वहिशते बरी में
هَنِيئًا ۖ بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۚ وَأَمَّا مَنْ						
जो-जिस	और रहा	24	गुज़रे हुए अय्याम	में	उस के बदले जो तुम ने भेजा	मज़े से
أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ ۚ يَقُولُ يَلَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابَهُ						
25	मेरा आमाल नामा	मुझे न दिया जाता	ऐ काश	तो वह कहेगा	उस के बाएं हाथ में	उस का आमाल नामा दिया गया
وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيهِ ۚ يَلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۚ						
27	क़िस्सा चुका देने वाली	(मौत) होती	ऐ काश	26	क्या है मेरा हिसाब	और मैं न जानता
مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيهِ ۚ هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيهِ ۚ خُذُوهُ						
तुम उस को पकड़ो	29	मेरी बादशाही	मुझ से	जाती रही	28	मेरा माल मेरे काम न आया
فَعُلُّوهُ ۚ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۚ ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا						
जिस की पैमाइश	एक ज़न्जीर में	फिर	31	उसे डाल दो	जहन्नम	फिर 30 पस उसे तौक पहनाओ
سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ						
ईमान नहीं लाता था	वेशक वह	32	पस तुम उस को जकड़ दो	हाथ	सत्तर (70)	
بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۚ وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۚ						
34	मोहताज	खिलाना	पर	और वह रगवत न दिलाता था	33	बुजुर्ग ओ बरतर अल्लाह पर

पस जब फूंकी जाएगी सूर में यकवारगी फूंक। (13) और उठाए जाएंगे ज़मीन और पहाड़, पस वह यकवारगी रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे। (14) पस उस दिन वह होने वाली हो पड़ेगी, (15) और आस्मान फट जाएगा, पस वह उस दिन विलकुल कमज़ोर होगा। (16) और फ़रिश्ते (होंगे) उस के किनारों पर, और आठ फ़रिश्ते तुम्हारे रब का अ़र्श उठाए हुए होंगे। (17) जिस दिन तुम पेश किए जाओगे तुम्हारी कोई चीज़ पोशीदा न रहेगी। (18) पस जिस को उस का आमाल नामा उस के दाएं हाथ में दिया जाएगा वह (दूसरों को) कहेगा: लो पढ़ो मेरा आमाल नामा। (19) वेशक मैं यकीन रखता था कि मैं अपने हिसाब से मिलूंगा। (20) पस वह पसदीदा ज़िन्दगी में होगा, (21) आली मुक़ाम जन्नत में, (22) जिस के मेवे करीब (झुके हुए) हैं। (23) तुम मज़े से खाओ पियो उस के बदले जो तुम ने (दुनिया के) गुज़रे हुए दिनों में भेजा है। (24) और रहा वह जिस को उस का आमाल नामा उस के बाएं हाथ में दिया गया तो वह कहेगा ऐ काश! मुझे न दिया जाता मेरा आमाल नामा, (25) और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है? (26) ऐ काश! मौत ही क़िस्सा चुका देने वाली होती। (27) मेरा माल मेरे काम न आया। (28) मेरी बादशाही मुझ से जाती रही। (29) (फ़रिश्तों को हुक्म होगा) तुम उस को पकड़ो, उसे तौक पहनाओ, (30) फिर उसे जहन्नम में डाल दो। (31) फिर एक ज़न्जीर में जिस की पैमाइश सत्तर (70) हाथ है, पस तुम उस को जकड़ दो। (32) वेशक वह अल्लाह बुजुर्ग ओ बरतर पर ईमान नहीं लाता था। (33) और वह (दूसरों को भी) रगवत न दिलाता था मिसकीन को खिलाने की। (34)

पस आज यहां उस का कोई दोस्त नहीं। (35)

और पीप के सिवा (उस के लिए) कोई खाना नहीं। (36)

उसे खताकारों के सिवा कोई न खाएगा। (37)

पस मैं उस की कसम खाता हूँ जो तुम देखते हो। (38)

और जो तुम नहीं देखते। (39)

वेशक यह रसूले करीम का कलाम है। (40)

और यह किसी शायर का कलाम नहीं, तुम बहुत कम ईमान लाते हो। (41)

और न कौल है किसी काहिन का, बहुत कम तुम नसीहत पकड़ते हो। (42)

तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से उतारा हुआ। (43)

और अगर वह हम पर बना कर लाता कुछ बातें। (44)

तो यकीनन हम उस का दायां हाथ पकड़ लेते। (45)

फिर अलबत्ता हम उस की रोगे गर्दन काट देते। (46)

सो तुम में से नहीं कोई भी उस से रोकने वाला। (47)

और वेशक यह (कुरआन) परहेज़गारों के लिए अलबत्ता नसीहत है। (48)

और वेशक हम ज़रूर जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं। (49)

और वेशक यह हसरत है काफ़िरों पर। (50)

और वेशक यह यकीनी हक़ है। (51)

पस पाकीज़गी बयान करो अपने अज़मत वाले रब के नाम की। (52)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

एक मांगने वाले (मुन्किरे अज़ाब से) अज़ाब मांगा (जो) वाक़े होने वाला है। (1)

काफ़िरों के लिए, उसे कोई दफ़ा करने वाला नहीं, (2)

दरजात के मालिक अल्लाह की तरफ़ से। (3)

उस की तरफ़ रूहुल अमीन (जिब्राईल अ) और फ़रिश्ते एक दिन में चढ़ते हैं जिस की तादाद पचास हज़ार बरस की है। (4)

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُنَا حَمِيمٌ ۝ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ

से	मगर-सिवा	और न खाना	35	कोई दोस्त	यहां	आज	पस नहीं उस का

غَسِيلٍ ۝ لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخِطِئُونَ ۝ فَلَا أَفْسِمُ

पस मैं कसम खाता हूँ	37	खताकारों	सिवा	उसे न खाएगा	36	पीप

بِمَا تُبْصِرُونَ ۝ وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ۝ إِنَّهُ لَقَوْلُ

अलबत्ता कलाम	वेशक यह	39	तुम नहीं देखते	और जो	38	उस की जो तुम देखते हो

رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ۝

41	तुम ईमान लाते हो	बहुत कम	किसी शायर का कलाम	और यह नहीं	40	रसूले करीम

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَذْكُرُونَ ۝ تَنْزِيلٌ مِّنْ

से	उतारा हुआ	42	तुम नसीहत पकड़ते हो	बहुत कम	किसी काहिन का	और न कौल है

رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ۝

44	बातें (अक़वाल)	कुछ	हम पर	बना कर लाता	और अगर	43	तमाम जहानों का रब

لَاخِذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۝ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝ فَمَا

सो नहीं	46	रोगे (गर्दन)	उस की	हम अलबत्ता काट देते	फिर	45	दायां हाथ	उस का	तो यकीनन हम पकड़ लेते

مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَتَذْكُرَةٌ لِلْمُتَّقِينَ ۝

48	परहेज़गारों के लिए	अलबत्ता एक नसीहत	और वेशक यह	47	रोकने वाला	उस से	कोई भी	तुम में से

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

50	काफ़िरों पर	हसरत	और वेशक यह	49	झुटलाने वाले	तुम में से	कि	अलबत्ता जानते हैं	और वेशक हम

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

52	अज़मत वाला	अपना रब	नाम के साथ	पस पाकीज़गी बयान करो	51	यकीनी हक़	और वेशक यह

آيَاتُهَا ۴۴ ﴿۷۰﴾ سُورَةُ الْمَعَارِجِ ﴿۷۰﴾ زُكُوعَاتُهَا ۲

रुक़ात 2 (70) सूरतुल मज़ारिज ऊपर चढ़ने की सीढ़ियाँ आयात 44

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۝ لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ

नहीं उसे	काफ़िरों के लिए	1	अज़ाब वाक़े होने वाला	एक मांगने वाला	मांगा

دَافِعٌ ۝ مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۝ تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ

फ़रिश्ते	चढ़ते हैं	3	सीढ़ियों (दरजात) का मालिक	अल्लाह की तरफ़ से	2	कोई दफ़ा करने वाला

وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۝

4	साल	पचास हज़ार (50000)	जिस की मिक़दार	एक दिन में	उस की तरफ़	और रूहुल अमीन

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ﴿٥﴾ إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ﴿٦﴾ وَنَرَاهُ قَرِيبًا ﴿٧﴾ يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ﴿٨﴾ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿٩﴾ وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ﴿١٠﴾ يُبْصَرُونَ ﴿١١﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ وَلَا يُمْسِكُهُمْ أَصَابُهُمْ وَلَا يَنْصَلِفُ عَنْهُمْ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٢﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا يُبْدِي إِلَهُكَ إِلَهًا مِثْلَهُ ۚ وَلَا تُؤْمِنُ بِالْإِلَهِ الْغَيْبِ ۖ لَا يَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ فِئَةٌ وَلَا عَصَا ۚ فَنُصِرْكَ إِلَىٰ مَا لَا يُغْنِي عَنْكَ قُوَّتُكَ وَلَا يَصْلَحُ لَكَ تُجَارٌ وَلَا حِجَابٌ ۚ أَلَمْ يَكُنْ عَلَىٰ سِدْرٍ مِّنَ الْأَعْيَانِ مُنِيبًا ۚ فَلَوْلَا دُعَاؤُكَ إِلَىٰ عَصَاكَ فَأَنشَرْنَاكِ ۖ فَاجْزِي الْأَعْيَانَ حَقًّا ۖ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تُنكَرُ ﴿١٣﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿١٤﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿١٥﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿١٦﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿١٧﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿١٨﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿١٩﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٢٠﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٢١﴾ وَاصْبِرْ لِحُकْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٢٢﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٢٣﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٢٤﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٢٥﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٢٦﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٢٨﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٢٩﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٣٠﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٣١﴾							
और हम उसे देखते हैं	6	दूर	उसे देख रहे हैं	वेशक वह	5	सबरे जमील	पस आप (स) सबर करें
पहाड़	और होंगे	8	पिघले हुए तांबे की तरह	आस्मान	जिस दिन होगा	7	करीब
खाहिश करेगा	वह देख रहे होंगे उन्हें	10	किसी दोस्त	कोई दोस्त	और न पूछेगा	9	जैसे रंगीन ऊन
मुजरिम	अपने बेटों को	उस दिन	अज्ञाव से	काश वह फिदये में देदे	मुजरिम	11	
और जो	उस को जगह देता था	वह जो	और अपने कुंवे को	12	और अपने भाई को	और अपनी बीवी को	
उधेड़ने वाली	15	भड़कती हुई आग	वेशक यह	हरगिज़ नहीं	14	यह उसे बचाले	फिर सब को ज़मीन में
18	फिर उसे बन्द रखा	और (माल) जमा किया	17	और मुँह फेर लिया	पीठ फेरी	जिस ने	वह बुलाती है
और जब	20	घबरा उठने वाला	उसे बुराई पहुँचे	जब	19	पैदा किया गया बड़ा वेसबुरा	वेशक इन्सान
अपनी नमाज़	पर	वह	वह जो	22	नमाज़ियों	सिवाए	21
24	मालूम (मुकर्रर)	हक़	उन के मालों में	और वह जो	23	हमेशा (पाबन्दी) करते हैं	
26	रोज़े जज़ा को	सच मानते हैं	और वह जो	25	और महरूम (न मांगने वाले)	मांगने वालों के लिए	
उन के रब का अज्ञाव	वेशक	27	डरने वाले	अपने रब के अज्ञाव से	वह	और वह जो	
29	हिफाज़त करने वाले	अपनी शर्मगाहों की	वह	और वह जो	28	वे खौफ़ होने की बात नहीं	
30	कोई मलामत नहीं	पस वह वेशक	उन के दाएँ हाथ की मिल्क (बान्दीयाँ)	जो	या	अपनी बीवीयों से	सिवाए
31	हद से बढ़ने वाले	वह	तो वही लोग	उस के सिवा	फिर जो चाहे		

पस आप (स) (उन बातों पर) सबर करें सबरे जमील। (5) वेशक वह उसे दूर देख (समझ) रहे हैं। (6) और हम उसे करीब देखते हैं। (7) जिस दिन आस्मान पिघले हुए तांबे की तरह होगा। (8) और पहाड़ (धुन्की हुई) रंगीन ऊन की तरह होंगे। (9) और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। (10) हालाँकि वह उन्हें देख रहे होंगे, मुजरिम (गुनाहगार) खाहिश करेगा कि काश वह फिदये में देदे उस दिन के अज्ञाव (से छूटने के लिए) अपने बेटों को, (11) अपनी बीवी को, और अपने भाई को। (12) और अपने कुंवे को जो उस को जगह देता था। (13) और जो ज़मीन में है सब (तमाम अहले ज़मीन) को, फिर यह उसे बचाले। (14) हरगिज़ नहीं, वेशक यह भड़कती हुई आग है। (15) खाल उधेड़ने वाली। (16) वह (उसे) बुलाती है जिस ने पीठ फेरी और मुँह फेर लिया, (17) और माल जमा किया फिर उसे बन्द रखा। (18) वेशक इन्सान बड़ा वेसबुरा (कम हिम्मत) पैदा किया गया है। (19) जब उसे कोई बुराई पहुँचे तो घबरा उठने वाला है। (20) और उसे आसाइश पहुँचे तो बुखल करने वाला है। (21) उन नमाज़ियों के सिवा। (22) जो अपनी नमाज़ पर पाबन्दी करते हैं। (23) और जिन के मालों में एक हिस्सा (हक़) मुकर्रर है। (24) मांगने वालों और महरूम के लिए। (25) और वह जो रोज़े जज़ा औ सज़ा को सच मानते हैं। (26) और वह जो अपने रब के अज्ञाव से डरने वाले हैं। (27) वेशक उन के रब का अज्ञाव वेखौफ़ होने की चीज़ नहीं। (28) और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले हैं, (29) सिवाए अपनी बीवीयों से या अपनी बान्दीयों से, पस वेशक उन के (पास जाने) पर कोई मलामत नहीं। (30) फिर जो उस के सिवा चाहे तो वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (31)

और वह जो अपनी अमानतों और अपने अहद की हिफाज़त करने वाले हैं। (32)

और वह जो अपनी गवाहियों पर काइम रहने वाले हैं। (33)

और वह जो अपनी नमाज़ों की हिफाज़त करने वाले हैं। (34)

यही लोग (वहिशत के) बागात में मुकर्रम ओ मुअज़्ज़ होंगे। (35)

तो काफ़िरों को क्या हुआ कि वह आप (स) की तरफ़ दौड़ते आ रहे हैं। (36)

दाएं से और बाएं से गिरोह दर गिरोह। (37)

क्या उन में से हर कोई लालच रखता है कि वह (वहिशत की) नेमतों वाले बागात में दाख़िल किया जाएगा। (38)

हरगिज़ नहीं, वेशक हम ने पैदा किया उन्हें उस चीज़ से जिसे वह खुद जानते हैं। (39)

पस नहीं, मैं मशरिफ़ों और मशरिफ़ों के रब की क़सम खाता हूँ। वेशक हम अलबत्ता कादिर हैं। (40)

इस पर कि हम बदल दें उन से बेहतर और नहीं हम आजिज़ किए जाने वाले। (41)

पस उन्हें छोड़ दें कि बेहूदगियों में पड़े रहें और वह खेलें कूदें यहां तक कि वह अपने उस दिन से मिलें जिस का उन से वादा किया जाता है। (42)

जिस दिन वह कबों से जल्दी जल्दी (इस तरह) निकलेंगे गोया के वह निशाने की तरफ़ लपक रहे हैं। (43)

झुकी होंगी उन की आँखें, उन पर ज़िल्लत छा रही होगी, यह है वह दिन जिस का उन से वादा किया जा रहा है। (44)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

वेशक हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा कि

डराओ अपनी क़ौम को उस से क़ब्ल कि उन पर दर्दनाक अज़ाब आजाए। (1)

उस ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! वेशक मैं तुम्हारे लिए साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (2)

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رُغْمُونَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِينَ

और वह जो	32	रिआयत (हिफाज़त) करने वाले	और अपने अहद	अपनी अमानतों	वह	और वह जो

هُمْ بِشَهَدَتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ

अपनी नमाज़ों की	वह	और वह जो	33	काइम रहने वाले	वह अपनी गवाहियों पर

يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾ فَمَالِ

तो क्या हुआ	35	मुकर्रम ओ मुअज़्ज़	बागात में	यही लोग	34	हिफाज़त करने वाले

الَّذِينَ كَفَرُوا قَبْلَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ

और बाएं से	दाएं से	36	दौड़ते आ रहे हैं	आप (स) की तरफ़	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)

عَزِيزِينَ ﴿٣٧﴾ أَيُّظْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ

बाग़	कि वह दाख़िल किया जाएगा	उन में से	हर कोई	क्या तमअ (लालच) रखता है	37	गिरोह दर गिरोह

نَعِيمٍ ﴿٣٨﴾ كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ فَلَا أُقْسِمُ

पस नहीं, मैं क़सम खाता हूँ	39	वह जानते हैं	उस से जो	वेशक हम ने पैदा किया उन्हें	हरगिज़ नहीं	38	नेमतों वाला

بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا لَقَدِرُونَ ﴿٤٠﴾ عَلَىٰ أَنْ تُبَدِّلَ

कि हम बदल दें	पर	40	अलबत्ता कादिर हैं	वेशक हम	और मशरिफ़ों	मशरिफ़ों के रब की

حَيْرًا مِّنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤١﴾ فَذَرْنَاهُمْ يَخُوضُوا

बेहूदगियों में पड़े रहें	पस उन्हें छोड़ दें	41	आजिज़ किए जाने वाले	और नहीं हम	उन से	बेहतर

وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ يُخْرِجُونَ

जिस दिन वह निकलेंगे	42	उन से वादा किया जाता है	वह जिस का	अपने दिन से	यहां तक कि वह मिलें	और वह खेलें

مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَانَتْهُمْ إِلَىٰ نُصْبٍ يُؤْفَضُونَ ﴿٤٣﴾ خَاشِعَةً

झुकी हुई	43	लपक रहे हों	निशाने की तरफ़	गोया कि वह	जल्दी जल्दी	कबों से

أَبْصَارُهُمْ تَرَهَقْتُهُمْ ذَلَّةٌ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

44	उन से वादा किया जा रहा है	वह जिस का	यह है वह दिन	ज़िल्लत	उन पर छा रही होगी	उन की आँखें

آيَاتُهَا ٢٨ ﴿٧١﴾ سُورَةُ نُوحٍ ﴿٧١﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2

(71) सूरह नूह

आयात 28

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ

उस से क़ब्ल	अपनी क़ौम को	कि डराओ	उस की क़ौम की तरफ़	नूह (अ)	वेशक हम ने भेजा

أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١﴾ قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾

2	साफ़ साफ़ डराने वाला	तुम्हारे लिए	वेशक मैं	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	1	दर्दनाक अज़ाब	कि उन पर आए

اِنْ اَعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَاطِيعُونَ ﴿٣﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ						
कि	तुम अल्लाह की इबादत करो	और उस से डरो	और मेरी इताअत करो	3	वह बख़्शदेगा	तुम्हें
مَنْ ذُنُوبَكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلَىٰ اَجَلٍ مُّسَمًّى اِنَّ اَجَلَ اللَّهِ						
तुम्हारे गुनाह	और तुम्हें मोहलत देगा	तक	वक़ते मुक़र्ररा	वेशक	अल्लाह का मुक़र्रर कर्दा वक़त	
اِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾ قَالَ رَبِّ						
जब आजाएगा	वह टलेगा नहीं	काश	तुम जानते	4	उस ने कहा	ऐ मेरे रब
اِنِّی دَعَوْتُ قَوْمِی لَیْلًا وَنَهَارًا ﴿٥﴾ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِی						
वेशक मैं ने बुलाया	अपनी कौम को	रात	और दिन	5	तो उन में ज़ियादा न किया	मेरा बुलाना
اِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾ وَاِنِّی کُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا اَصَابِعَهُمْ						
भागने के सिवा	6	और वेशक मैं	जब भी	मैं ने उन को बुलाया	ताकि तू बख़्शदे	उन्हें
فِی اِذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِیَابَهُمْ وَاَصْرُرُوْا وَاسْتَکْبَرُوْا						
अपने कानों में	और उन्होंने ने लपेट लिए	उपने कपड़े	और अड़ गए वह	और उन्होंने ने तकव्वुर किया		
اسْتَکْبَرًا ﴿٧﴾ ثُمَّ اِنِّی دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ﴿٨﴾ ثُمَّ اِنِّی اَعْلَنْتُ						
बड़ा तकव्वुर	7	फिर	वेशक मैं ने बुलाया उन्हें	बुलन्द	वाआवाज़े	8
لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ﴿٩﴾ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّکُمْ						
उन्हें	और मैं ने पोशीदा समझाया	उन्हें	छुपा कर	9	पस मैं ने कहा	तुम बख़्शिश मांगो
اِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ﴿١٠﴾ یُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَیْکُمْ مِّدْرَارًا ﴿١١﴾						
वेशक वह	है बड़ा बख़्शने वाला	10	वह भेजेगा	आस्मान	तुम पर	11
وَیُمْدِدْکُمْ بِاَمْوَالٍ وَبَنِیْنَ وَیَجْعَلَ لَّکُمْ جَنَّتٍ						
और मदद देगा तुम्हें	मालों के साथ	और बेटों	और वह बनाएगा	तुम्हारे लिए	बागात	
وَیَجْعَلَ لَّکُمْ اَنْهَارًا ﴿١٢﴾ مَا لَّکُمْ لَا تَرْجُونَ لِلّٰهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾						
और वह बनाएगा	तुम्हारे लिए	नहरें	12	क्या हुआ तुम्हें	तुम एतिकाद नहीं रखते अल्लाह के लिए	13
وَقَدْ خَلَقْکُمْ اَطْوَارًا ﴿١٤﴾ اَلَمْ تَرَوْا کَیْفَ خَلَقَ اللّٰهُ						
उस ने पैदा किया तुम्हें	तरह तरह	14	क्या तुम नहीं देखते	कैसे	अल्लाह ने पैदा किए	
سَبْعَ سَمُوْتٍ طَبَاقًا ﴿١٥﴾ وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِیْهِنَّ نُورًا						
सात आस्मान	एक के ऊपर एक	15	और उस ने बनाया	चाँद	उन में	एक नूर
وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ﴿١٦﴾ وَاللّٰهُ اَنْتَبَتْکُمْ مِّنَ الْاَرْضِ						
और उस ने बनाया	सूरज	चिराग	16	और अल्लाह	उस ने उगाया तुम्हें	ज़मीन से
نَبَاتًا ﴿١٧﴾ ثُمَّ یُعِیْدْکُمْ فِیْهَا وَیُخْرِجْکُمْ اِخْرَاجًا ﴿١٨﴾						
सब्ज़े की तरह	17	फिर	वह लौटाएगा तुम्हें	उस में	और फिर तुम्हें निकालेगा	18

कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो और मेरी इताअत करो, (3)

वह बख़्शदेगा तुम्हें तुम्हारे गुनाह और (मौत के) वक़ते मुक़र्ररा तक तुम्हें मोहलत देगा। वेशक अल्लाह का मुक़र्रर कर्दा वक़त जब आजाएगा तो वह टलेगा नहीं,

काश तुम जानते। (4)

उस ने कहा कि ऐ मेरे रब! वेशक मैं ने बुलाया अपनी कौम को रात और दिन। (5)

तो उन में ज़ियादा न किया मेरा बुलाना सिवाए भागने के। (6)

और वेशक जब भी मैं ने उन्हें बुलाया ताकि तू उन्हें बख़्शदे, उन्होंने ने अपनी उंगलियां अपने कानों में दे लीं और उन्होंने ने अपने ऊपर कपड़े लपेट लिए और वह अड़ गए और उन्होंने ने बड़ा तकव्वुर किया। (7)

फिर वेशक मैं ने उन्हें बा आवाज़े बुलन्द बुलाया। (8)

फिर वेशक मैं ने उन्हें अलानिया (भी) समझाया और उन्हें छुपा कर पोशीदा (भी) समझाया। (9)

पस मैं ने कहा कि तुम अपने रब से बख़्शिश मांगो, वेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है। (10)

वह आस्मान से तुम पर मुसलसल वारिश भेजेगा। (11)

और तुम्हें मालों और बेटों से मदद देगा और बनाएगा तुम्हारे लिए बागात और वह बनाएगा तुम्हारे लिए नहरें। (12)

तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह के लिए वक़ार (अज़मत) का एतिकाद नहीं रखते? (13)

और यकीनन उस ने पैदा किया तुम्हें तरह तरह से। (14)

क्या तुम नहीं देखते कि कैसे अल्लाह ने सात आस्मान ऊपर तले बनाए? (15)

और उस ने उन में चाँद को एक नूर बनाया और उस ने सूरज को चिराग (के मानिंद रोशन) बनाया। (16)

और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से सब्ज़े की तरह उगाया (पैदा किया)। (17)

फिर वह तुम्हें उस में लौटाएगा और तुम्हें दोबारा (उस से) निकालेगा। (18)

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया। (19)

ताकि तुम चलो फ़िरो उस के कुशादा रास्तों में। (20)

नूह (अ) ने कहा कि ऐ मेरे रब! वेशक उन्होंने ने मेरी नाफ़रमानी की और (उस की) पैरवी की जिस को उस के माल ने ज़ियादा नहीं किया और न उस की औलाद ने ख़सारे के सिवा। (21)

और उन्होंने ने बड़ी बड़ी चालें चलीं। (22)

और उन्होंने ने कहा कि तुम हरगिज़ न छोड़ना अपने माबूदाने (बातिल) को और हरगिज़ न छोड़ना वद और न सुवाज़ और न यगूस और यड़क और नस्र (बुतों) को। (23)

और उन्होंने ने गुमराह किया बहुतों को, और ज़ालिमों को न ज़ियादा कर गुमराही के सिवा। (24)

अपनी ख़ताओं के सबब वह गर्क किए गए, फिर वह आग में दाख़िल किए गए तो उन्होंने ने अपने लिए अल्लाह के सिवा न पाया कोई मददगार। (25)

और नूह (अ) ने कहा कि ऐ मेरे रब! तू न छोड़ ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला। (26)

वेशक अगर तू ने उन्हें छोड़ दिया तो वह तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और न ज़नेंगे बदकार नाशुक्र (औलाद) के सिवा। (27)

ऐ मेरे रब! मुझे बख़्शदे और मेरे माँ बाप को और उसे जो दाख़िल हुआ मेरे घर में ईमान ला कर, और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को, और ज़ालिमों को हलाकत के सिवा न बढ़ा। (28)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है आप (स) फ़रमा दें: मुझे वहि की गई है कि जिन्नात की एक जमाअत ने उसे (कुरआन को) सुना तो उन्होंने ने कहा कि वेशक हम ने एक अज़ीब कुरआन सुना है। (1)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾ لِّتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا									
और	उस ने	तुम्हारे लिए	ज़मीन	फ़र्श	19	ताकि तुम चलो	उस के	रास्ते	
فِجَاجًا ﴿٢٠﴾ قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَنْ									
कुशादा	20	कहा	नूह (अ)	ऐ मेरे रब	वेशक उन्होंने ने	मेरी नाफ़रमानी की	और उन्होंने ने	जो-जिस	
لَّمْ يَزِدَّهُ مَالُهُ وَوَلَدَهُ إِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾ وَمَكْرُؤًا مَّكَرًا كَبِيرًا ﴿٢٢﴾									
नहीं ज़ियादा किया	उस का माल	और उस की औलाद	सिवा ख़सारा	21	और उन्होंने ने चालें चलीं	चालें	बड़ी बड़ी	22	
وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا									
और उन्होंने ने कहा	तुम हरगिज़ न छोड़ना	अपने माबूद	और हरगिज़ न छोड़ना	वद	और न सुवाअ				
وَلَا يَغُوثٌ وَيَعُوقٌ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا وَلَا تَزِدِ									
और न यगूस	और यड़क	और नस्र	23	और तहकीक उन्होंने ने गुमराह किया	बहुत	और न ज़ियादा कर			
الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ﴿٢٤﴾ مِمَّا خَطِيئَتِهِمْ أُغْرِقُوا فَأُدْخِلُوا									
ज़ालिमों	गुमराही के सिवा	24	व सबब	अपनी ख़ताएं	वह गर्क किए गए	फिर वह दाख़िल किए गए			
نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ﴿٢٥﴾ وَقَالَ									
आग	तो न	उन्होंने ने पाया	अपने लिए	अल्लाह के सिवा	कोई मददगार	25	और कहा		
نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾									
नूह (अ)	ऐ मेरे रब	तू न छोड़	ज़मीन पर	काफ़िरों में से	कोई बसने वाला	26			
إِنَّكَ إِن تَذَرَهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا									
वेशक तू	अगर	उन्हें छोड़ दिया	वह गुमराह करेंगे	तेरे बन्दे	और न जनंगे	सिवाए	बदकार		
كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ									
नाशुक्रे	27	ऐ मेरे रब	मुझे बख़्शदे	और मेरे माँ बाप को	और उसे जो	दाख़िल हुआ			
بَيْتِي مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ									
मेरे घर	ईमान ला कर	और मोमिन मर्दों को	और मोमिन औरतों	और न बढ़ा	ज़ालिमों				
إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾									
			हलाकत के सिवा	28					
آيَاتُهَا ٢٨ ﴿٧٢﴾ سُورَةُ الْجِنِّ ﴿٢٨﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢									
आयात 28 (72) सूरतुल जिन्न रुक़ूआत 2									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ﴿١﴾									
आप कह दें कि मुझे वहि की गई	मेरी तरफ	कि इसे सुना	एक जमाअत जिन्नात की	तो उन्होंने ने कहा	वेशक हम ने सुना	कुरआन	एक अजीब	1	

١٠

٢٨

يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا (٢)						
2	किसी को	और हम हरगिज़ शरीक न ठहराएंगे अपने रब के साथ	उस पर	तो हम ईमान लाए	हिदायत की तरफ	वह रहनुमाई करता है
وَأَنَّهُ تَعَالَى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا (٣)						
3	और न औलाद	बीबी	उस ने नहीं बनाया	हमारा रब	शान	बड़ी बुलंद और यह कि
وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا (٤) وَأَنَا ظَنَّنَا						
और यह कि हम ने गुमान किया	4	खिलाफ़े हक़ बातें	अल्लाह पर	हम में से बेवकूफ़	कहते थे	और यह कि
أَنْ لَّنْ تَقُولَ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا (٥) وَأَنَّهُ كَانَ						
थे	और यह कि	5	झूट	अल्लाह पर	और ज़िन्न	इन्सान हरगिज़ न कहेंगे कि
رَجَالٌ مِّنَ الْإِنْسِ يَعُوذُونَ بِرَجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ						
तो उन्होंने ने (जिन्नात का) बढ़ा दिया	जिन्नात से	लोगों से	पनाह लेते (थे)	इन्सानों में से	कुछ आदमी	
رَهَقًا (٦) وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَنْ لَّنْ يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا (٧)						
7	किसी को	रसूल बना कर भेजेगा अल्लाह	कि हरगिज़ न	जैसे तुम ने गुमान किया था	उन्होंने ने गुमान किया	और यह कि वह 6 तक़बुर
وَأَنَا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَهَا مِلَّتٍ حَرَسًا شَدِيدًا						
सख़्त	पहरेदार	भरा हुआ	तो हम ने उसे पाया	आस्मान	और यह कि हम ने छुआ (टटोला)	
وَشُهَبًا (٨) وَأَنَا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ						
पस जो	सुनने के लिए	ठिकाने	उस के	हम बैठा करते थे	और यह कि 8	और शोले
يَسْتَمِعُ الْآنَ يَجِدُ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا (٩) وَأَنَا لَا نَدْرِي						
नहीं जानते	और यह कि हम	9	घात लगाया हुआ	शोला	वह पाता है अपने लिए	अब सुनता है
أَشَرُّ أَرِيدَ بَمَنْ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ						
उन का रब	उन से	या इरादा फ़रमाया है	जो ज़मीन में	उन के साथ	इरादा किया गया	आया बुराई
رَشَدًا (١٠) وَأَنَا مِنَ الصَّالِحُونَ وَمِمَّا دُونَ ذَلِكَ كُنَّا						
हम थे	उस के अ़लावा	और हम में से	नेकोकार (जमा)	हम में से	और यह कि 10	हिदायत
طَرَائِقَ قَدَدًا (١١) وَأَنَا ظَنَنَّا أَنْ لَّنْ نُعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ						
ज़मीन में	हरा सकेंगे अल्लाह को	कि हम हरगिज़ न	हम समझते थे	और यह कि 11	मुख़्तलिफ़	राहें
وَلَنْ نُعْجِزَهُ هَرَبًا (١٢) وَأَنَا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَى آمَنَّا بِهِ						
हम ईमान ले आए उस पर	हिदायत	जब हम ने सुनी	और यह कि 12	भाग कर	और हम उस को हरगिज़ न हरा सकेंगे	
فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا (١٣) وَأَنَا مِمَّا						
हम में से	और यह कि 13	और न किसी जुल्म	किसी नुक्सान	तो उसे ख़ौफ़ न होगा	अपने रब पर ईमान लाए	सो जो
الْمُسْلِمُونَ وَمِمَّا الْقَسِطُونَ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا (١٤)						
14	भलाई	उन्होंने ने क़स्द किया	तो वही है	पस जो इसलाम लाया	और हम में से	मुसलमान (जमा)

वह रहनुमाई करता है हिदायत की तरफ़, तो हम उस पर ईमान ले आए, और हम अपने रब के साथ हरगिज़ किसी को शरीक न ठहराएंगे। (2) और यह कि हमारे रब की शान बड़ी बुलंद है। उस ने नहीं बनाया किसी को अपनी बीबी और न औलाद। (3) और यह कि हम में से बेवकूफ़ कहते थे अल्लाह पर खिलाफ़े हक़ बातें। (4) और यह कि हम ने गुमान किया कि हरगिज़ इन्सान और ज़िन्न अल्लाह पर (अल्लाह की शान में) झूट न कहेंगे। (5) और यह कि इन्सानों में से कुछ आदमी जिन्नात के लोगों से पनाह लेते थे और उन्होंने ने जिन्नात का तक़बुर और बढ़ा दिया। (6) और उन्होंने ने गुमान किया जैसे तुम ने गुमान किया था कि हरगिज़ अल्लाह किसी को रसूल बना कर न भेजेगा। (7) और यह कि हम ने टटोला आस्मानों को तो हम ने उसे सख़्त पहरेदारों और शोलों से भरा हुआ पाया। (8) और यह कि हम उस के ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे। पस अब जो सुनता है (सुनना चाहता है) वह (वहां) अपने लिए घात लगाया हुआ शोला पाता है। (9) और यह कि हम नहीं जानते कि जो ज़मीन में है आया उन के साथ बुराई का इरादा किया गया है या उन से (अल्लाह ने) हिदायत का इरादा फ़रमाया है। (10) और यह कि हम में से (कुछ) नेकोकार हैं और हम में से (कुछ) उस के अ़लावा हैं, हम मुख़्तलिफ़ राहों पर हैं। (11) और यह कि हम समझते हैं कि हम अल्लाह को हरगिज़ न हरा सकेंगे ज़मीन में और न हरगिज़ हम उस को भाग कर हरा सकेंगे। (12) और यह कि हम ने हिदायत सुनी तो हम उस पर ईमान ले आए, सो जो अपने रब पर ईमान लाए तो उसे न किसी नुक्सान का ख़ौफ़ होगा और न किसी जुल्म का। (13) और यह कि हम में से (कुछ) मुसलमान (फ़रमांवरदार) हैं और हम में से (कुछ) गुनाहगार हैं। पस जो इसलाम लाया तो वही है जिन्होंने ने भलाई का क़स्द किया। (14)

और रहे गुनाहगार तो वह जहन्नम का ईंधन हुए। (15)

और (मुझे बहि की गई है) कि अगर वह काइम रहते हैं सीधे रास्ते पर तो हम उन्हें वाफिर पानी पिलाते। (16)

ताकि हम उन्हें उस में आजमाएं, और जो अपने रब की याद से मुंह मोड़ेगा वह उसे सख्त अज़ाब में दाखिल करेगा। (17)

और यह कि मसजिदें अल्लाह के लिए हैं तो तुम अल्लाह के साथ किसी की बन्दगी न करो। (18)

और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का बन्दा कि वह उस (अल्लाह) की इबादत करे तो क़रीब था कि वह उस पर हल्का दर हल्का हो जाए। (19)

आप (स) फ़रमा दें कि मैं सिर्फ अपने रब की इबादत करता हूँ और मैं शरीक नहीं करता किसी को उस के साथ। (20)

आप (स) फ़रमा दें कि वेशक मैं तुम्हारे लिए इख्तियार नहीं रखता किसी ज़र्र का और न किसी भलाई का। (21)

आप (स) फ़रमा दें कि वेशक मुझे हरगिज़ पनाह न देगा अल्लाह से कोई भी, और मैं उस के सिवा कोई जाए पनाह न पाऊँगा। (22)

मगर (मेरा काम है) अल्लाह की तरफ़ से उस का कहा और पैग़ाम पहुँचाना और जो नाफ़रमानी करेगा अल्लाह की और उस के रसूल (स) की तो वेशक उस के लिए

जहन्नम की आग है, ऐसे लोग उस में हमेशा हमेशा रहेंगे। (23)

यहां तक कि जब वह देखेंगे जो उन्हें वादा दिया जाता है तो वह जान लेंगे कि किस का मददगार कमज़ोर तरीन है और तादाद में कम तर है। (24)

आप (स) फ़रमा दें: मैं नहीं जानता कि आया क़रीब है जो तुम्हें वादा दिया जाता है या उस के लिए मेरा रब कोई मुद्दे (दराज़) मुक़र्र कर देगा। (25)

(वह) ग़ैब का जानने वाला है, अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता, (26)

सिवाए (उस के) जिसे वह पसंद करता है रसूलों में से, फिर वेशक उस के आगे और उस के पीछे मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते चलाता है, (27)

وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝۱۵ وَأَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوا							
वह काइम रहते	और यह कि अगर	15	ईंधन	जहन्नम का	तो वह हुए	गुनाहगार (जमा)	और रहे
عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَهُمْ مَّاءً غَدَقًا ۝۱۶ لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ							
उस में	ताकि हम उन्हें आजमाएं	16	वाफिर	पानी	तो अलबत्ता हम उन्हें पिलाते	(सीधे) रास्ते पर	
وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝۱۷							
17	सख्त	अज़ाब	वह उसे दाखिल करेगा	अपने रब की याद	से	रूगदानी करेगा	और जो
وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۝۱۸ وَأَنَّهُ							
और यह कि	18	किसी की	अल्लाह के साथ	तो तुम न पुकारो (बन्दगी न करो)	मसजिदें अल्लाह के लिए	और यह कि	
لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝۱۹							
19	हल्का दर हल्का	उस पर	वह हो जाए	क़रीब था	कि वह उस की इबादत करे	अल्लाह का बन्दा	जब खड़ा हुआ
قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝۲۰ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ							
इख्तियार नहीं रखता	वेशक मैं	फ़रमा दें	20	उस के साथ किसी को	और मैं शरीक नहीं करता	सिर्फ मैं अपने रब की इबादत करता हूँ	फ़रमा दें इस के सिवा नहीं
لَكُمْ صَرًا وَلَا رَشَدًا ۝۲۱ قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ							
अल्लाह से	मुझे हरगिज़ पनाह न देगा	वेशक मुझे	फ़रमा दें	21	और न किसी भलाई	किसी ज़र्र	तुम्हारे लिए
أَحَدُهُ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝۲۲ إِلَّا بَلَاغًا							
मगर (पैग़ाम) पहुँचाना	22	कोई जाए पनाह	उस के सिवा	और मैं हरगिज़ न पाऊँगा	कोई		
مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَتِهِ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ							
तो वेशक उस के लिए	और उस के रसूल की	नाफ़रमानी करे अल्लाह की	और जो	और उस के पैग़ामात	अल्लाह की तरफ़ से		
نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۝۲۳ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا							
जब वह देखेंगे	यहां तक कि	23	हमेशा हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	जहन्नम की आग	
مَا يُوعَدُونَ فَيَسْعَلُمُونَ مَنْ أضعف ناصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ۝۲۴							
24	तादाद में	और कम तर	मददगार	कमज़ोर तरीन	किस	तो वह अनक़रीब जान लेंगे	जो उन्हें वादा दिया जाता है
قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقْرَبُ مَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ							
या कर देगा	जो तुम्हें वादा दिया जाता है	आया क़रीब है	मैं जानता	नहीं	फ़रमा दें		
لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۝۲۵ عِلْمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ							
अपने ग़ैब पर	वह ज़ाहिर नहीं करता	ग़ैब का जानने वाला	25	मुद्दत	मेरा रब	उस के लिए	
أَحَدًا ۝۲۶ إِلَّا مَنْ ارْتَضَىٰ مِنْ رَّسُولٍ فَإِنَّهُ							
तो वेशक वह	रसूलों में से	वह पसंद करता है	जिस को	सिवाए	26	किसी को	
يَسْأَلُكَ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۝۲۷							
27	मुहाफ़िज़ (फ़रिश्ते)	और उस के पीछे से	उस के आगे से	चलाता है			

۱۹
۱۱

لَيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا رَسُولَ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ							
जो उन के पास	और उस ने अहाता किया हुआ है	अपने रब के	पैगामात	उन्होंने ने तहकीक पहुँचा दिए	कि	ता कि वह मालूम कर ले	
وَاحْطَى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾							
	28	गिनती में	हर शै	और उस ने शुमार कर रखी है			
آيَاتُهَا ٢٠ ﴿٧٣﴾ سُورَةُ الْمُزْمَلِ ﴿٢٨﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢							
रुकुआत 2		(73) सूरतुल मुज्जमिल कपड़ों में लिपटने वाले			आयात 20		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
يَا أَيُّهَا الْمُزْمِلُ ﴿١﴾ قُمْ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢﴾ نِصْفَهُ أَوْ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ﴿٣﴾ أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ﴿٤﴾							
कम कर लें	या	उस का निस्फ	2	थोड़ा	मगर	रात में किया म करें	ऐ कपड़ों में लिपटने वाले (मुहम्मद स)
उस में से	थोड़ा	3	या ज़ियादा कर लें	उस पर-से	और ठहर ठहर कर पढ़ें	कुरआन	तरतील के साथ
إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ﴿٥﴾ إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ							
रात	उठना	वेशक	5	एक भारी कलाम	आप (स)	वेशक हम अनकरीब डाल देंगे	
هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ﴿٦﴾ إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا							
शुगल	दिन में	वेशक आप (स) के लिए	6	वात/ तिलावत	और ज़ियादा दुरुस्त	यह सख्त (नफ्स को) रोन्दने वाला	
طَوِيلًا ﴿٧﴾ وَادْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ﴿٨﴾							
तवील	7	और आप (स) याद करें	अपने रब का नाम	और	और आप (स) याद करें	उस की तरफ	(सब से) छूट कर
رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ﴿٩﴾							
रब मशरिफ का		और मग़रिब	नहीं कोई माबूद	उस के सिवा	पस पकड़ लो (बना लो) उस को	कारसाज़	9
وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ﴿١٠﴾							
और आप (स) सबर करें	पर	जो वह कहते हैं	और उन्हें छोड़ दें	किनारा कश हो कर	अच्छी तरह	10	
وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولَى النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ﴿١١﴾ إِنَّ							
और मुझे छोड़ दो	और झुटलाने वालों	खुशहाल लोगों	और उन को मोहलत दें	थोड़ी	वेशक	11	
لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ﴿١٢﴾ وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٣﴾ يَوْمَ							
हमारे हां	अज़ाब	और दहकती आग	12	और खाना	गले में अटक जाने वाला	और अज़ाब	दर्दनाक
13							जिस दिन
تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ﴿١٤﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا							
कांपेगी	ज़मीन	और पहाड़	और हो जाएंगे	पहाड़	रेत के तोड़े	रेज़ा रेज़ा	14
إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ﴿١٥﴾							
तुम्हारी तरफ	एक रसूल	गवाही देने वाला	तुम पर	जैसे हम ने भेजा	फिरऔन की तरफ	एक रसूल	15

ता कि वह मालूम कर ले कि उन्होंने ने पहुँचा दिए हैं अपने रब के पैगामात और उस ने अहाता किया हुआ है जो कुछ उन के पास है और हर चीज़ को गिनती में शुमार कर रखा है। (28)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ऐ मुज्जमिल (कपड़ों में लिपटने वाले मुहम्मद स)! (1)

रात में किया म करें मगर थोड़ा। (2)

उस (रात) का निस्फ हिस्सा या उस में से थोड़ा कम कर लें। (3)

या (कुछ) ज़ियादा कर लें उस से, और कुरआन तरतील के साथ ठहर ठहर कर पढ़ें। (4)

वेशक हम आप (स) पर अनकरीब एक भारी कलाम (कुरआने करीम) डालेंगे (नाज़िल करेंगे)। (5)

वेशक रात का उठना नफ्स को रोन्दने वाला है और (कुरआन) पढ़ने के लिए ज़ियादा दुरुस्त है। (6)

वेशक आप (स) के लिए दिन में बहुत काम है। (7)

और आप (स) अपने रब के नाम का ज़िक्र करें और सब से कट कर (अलग हो कर) उस के हो जाएं। (8)

(वह) मशरिफ़ ओ मग़रिब का रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस आप (स) उस को कारसाज़ बनालें। (9)

और आप (स) सबर करें उस पर जो वह कहते हैं और अच्छी तरह किनारा कश हो कर आप (स) उन्हें छोड़ दें। (10)

और मुझे और झुटलाने वाले खुशहाल लोगों को छोड़ दें (समझ लेने दें) और उन को थोड़ी मोहलत दे दें। (11)

वेशक हमारे हां अज़ाब है और दहकती आग। (12)

और खाना है गले में अटक जाने वाला और अज़ाब है दर्दनाक। (13)

जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कांपेंगे और पहाड़ रेज़ा रेज़ा (हो कर) रेत के तोड़े हो जाएंगे। (14)

वेशक हम ने भेजा तुम्हारी तरफ एक रसूल (मुहम्मद स) गवाही देने वाला तुम पर जैसे हम ने भेजा था फिरऔन की तरफ एक रसूल (मूसा अ)। (15)

पस फिरऔन ने रसूल का कहा न माना तो हम ने उसे (फिरऔन को) बड़े ववाल की पकड़ में पकड़ लिया। (16)

अगर तुम ने कुफ़ किया तो उस दिन कैसे बचोगे? जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा। (17)

उस से आस्मान फट जाएगा, उस का वादा पूरा हो कर रहने वाला है। (18)

वेशक यह (कुरआन) नसीहत है, जो कोई चाहे इख्तियार कर ले (इस के ज़रीए) अपने रब की तरफ़ राह। (19)

वेशक आप (स) का रब जानता है कि आप (स) (कभी) दो तिहाई रात के क़रीब क़ियाम करते हैं और (कभी) आधी रात और (कभी) उस का तिहाई हिस्सा और जो आप (स) के साथी हैं उन में से एक जमाअत (भी), और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है, उस ने जाना कि तुम हरगिज़ निवाह न कर सकोगे तो उस ने तुम पर इनायत फ़रमाई, पस तुम कुरआन में जिस क़द्र आसानी से हो सके पढ़ लिया करो, उस ने जाना कि अलबत्ता तुम में से कोई बीमार होंगे और दूसरे रोज़ी तलाश करते हुए ज़मीन में सफ़र करेंगे और कई दूसरे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, पस उस में से जिस क़द्र आसानी से हो सके तुम पढ़ लिया करो और तुम नमाज़ काइम करो और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह को इख़लास से कर्ज़ हसना दो, और कोई नेकी जो तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के हाँ बेहतर और अजर में अज़ीम तर पाओगे, और तुम अल्लाह से बख़्शिश मांगो, वेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है। (20)

فَعَصَى فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذَاً وَبِئْسَ							
16	बड़े ववाल	पकड़	तो हम ने उसे पकड़ लिया	रसूल	फिरऔन	पस कहा न माना	
فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ							
बच्चों को		कर देगा	उस दिन	अगर तुम ने कुफ़ किया	तुम बचोगे	तो कैसे	
شَيْبًا ۚ (17) السَّمَاءُ مُمْطِرٌ بِهِ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا							
18	पूरा हो कर रहने वाला	उस का वादा	है	उस से	फट जाएगा	आस्मान	17
بُورًا ۚ إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَى رَبِّهِ سَبِيلًا							
19	राह	अपने रब की तरफ़	इख्तियार कर ले	चाहे	तो जो	नसीहत	वेशक यह
إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَى مِنْ ثُلُثِي اللَّيْلِ							
दो तिहाई (2/3) रात के		क़रीब	क़ियाम करते हैं	कि आप (स)	वह जानता है	वेशक आप (स) का रब	
وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	जो आप (स) के साथ		से	और एक जमाअत	और उस का तिहाई (1/3)	और आधी (1/2) रात	
يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ عِلْمَ أَنْ لَّنْ نُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ							
तो उस ने तुम पर इनायत की		कि तुम हरगिज़ (वक़्त का) शुमार न कर सकोगे		उस ने जाना	रात और दिन	अन्दाज़ा फ़रमाता है	
فَأَقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ عِلْمَ أَنْ سَيَكُونُ							
कि अलबत्ता होंगे		उस ने जाना	कुरआन से	जिस क़द्र आसानी से हो सके	तो तुम पढ़ा करो		
مِّنْكُمْ مَّرْضًى ۖ وَآخِرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ							
ज़मीन में		वह सफ़र करेंगे		और दूसरे	बीमार	तुम में से कोई	
يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۖ وَآخِرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ							
अल्लाह की राह में		वह जिहाद करेंगे		और कई दूसरे	अल्लाह का फ़ज़ल (रोज़ी)	से	तलाश करते हुए
فَأَقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ							
नमाज़		और काइम करो		उस से	जिस क़द्र आसानी से हो सके	पस पढ़ लिया करो	
وَاتُوا الزَّكَاةَ وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا وَمَا تُقَدِّمُوا							
तुम आगे भेजोगे	और जो	कर्ज़ हसना (इख़लास से)		और अल्लाह को कर्ज़ दो	और अदा करते रहो ज़कात		
لِأَنفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرًا							
वह बेहतर		अल्लाह के हां	तुम उसे पाओगे	कोई नेकी	अपने लिए		
وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۖ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ							
बख़्शने वाला	वेशक अल्लाह	और तुम बख़्शिश मांगो अल्लाह से			अजर में	और अज़ीम तर	
رَحِيمٌ (20)							
		20	निहायत रहम करने वाला				

٢ رُكُوعَاتُهَا ﴿٧٤﴾ سُورَةُ الْمَدَّثَرِ ﴿٥٦﴾ آيَاتُهَا						
रुकुआत 2		(74) सूरतुल मुद्दसिर कपड़े में लिपटे हुए			आयात 56	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
يٰٓأَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿١﴾ قُمْ فَأَنْذِرْ ﴿٢﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ﴿٣﴾ وَثِيَابَكَ						
और अपने कपड़े	3	और अपने रब की बड़ाई बयान करो	2	फिर डराओ	खड़े हो जाओ	1 ऐ कपड़ों में लिपटे हुए (मुहम्मद (स))
فَطَهِّرْ ﴿٤﴾ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿٥﴾ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ﴿٦﴾						
सो पाक करो	4	और पलीदी	सो दूर रहो	5	और एहसान न रखो	ज़ियादा लेने (की गरज़ से)
وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ﴿٧﴾ فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ﴿٨﴾ فَذَلِكَ يَوْمَئِذٍ						
और अपने रब के लिए	7	सब्र करो	फिर जब फूँका जाएगा	सूर में	8	तो वह उस दिन
يَوْمَ عَسِيرٌ ﴿٩﴾ عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ﴿١٠﴾ ذَرْنِي وَمَنْ						
दिन	वड़ा दुश्वार	9	काफिरों पर	न आसान	10	मुझे छोड़ दो
خَلَقْتُ وَحِيدًا ﴿١١﴾ وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا ﴿١٢﴾ وَبَنِينَ						
मैं ने पैदा किया	अकेला	11	और मैं ने दिया	उसे	बहुत सारा माल	12 और बेटे
شُهُودًا ﴿١٣﴾ وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ﴿١٤﴾ ثُمَّ يَطْمَعُ						
सामने हाज़िर रहने वाले	13	और हमवार किया	उस के लिए	खूब हमवार	14	फिर वह तमअ करता है
أَنْ أَزِيدَ ﴿١٥﴾ كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِأَيْتِنَا عَنِيدًا ﴿١٦﴾ سَأَرْهُقَهُ						
कि (और) ज़ियादा दूँ	15	हरगिज़ नहीं	वेशक वह है	हमारी आयात का	इनाद रखने वाला (मुखालिफ)	16 अब उस से चढ़वाऊँगा
صَعُودًا ﴿١٧﴾ إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾						
बड़ी चढ़ाई	17	वेशक उस ने सोचा	और उस ने अन्दाज़ा किया	18	सो वह मारा जाए	कैसा उस ने अन्दाज़ा किया
ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢०﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢१﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢२﴾						
फिर वह मारा जाए	20	कैसा उस ने अन्दाज़ा किया	फिर उस ने देखा	21	फिर उस ने तेवरी चढ़ाई	और मुँह बिगाड़ लिया 22
ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢३﴾ فَقَالَ إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ						
फिर उस ने पीठ फेर ली	और उस ने तकबुर किया	23	तो उस ने कहा	नहीं यह	मगर (सिर्फ़) जादू	
يُؤْتَرُ ﴿٢٤﴾ إِنْ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾ سَأُصْلِيهِ						
अगलों से नक़ल किया जाता है	24	नहीं यह	मगर (सिर्फ़)	आदमी का कलाम	25	अनकरीब उसे डाल दूँगा
سَقَرٌ ﴿٢٦﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرٌ ﴿٢٧﴾ لَا تُبْقِي						
सक़र (जहनन्म)	26	और तुम क्या समझे?	सक़र क्या है	27	वह न बाकी रखेगी	
وَلَا تَذُرْ ﴿٢٨﴾ لَوَاحَةً لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣०﴾						
और न छोड़ेगी	28	झुलस देने वाली	आदमी को	29	उस पर हैं उन्नीस (19) दारोगा	30

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है
ऐ कपड़ों में लिपटे हुए
(मुहम्मद (स))! (1)
खड़े हो जाओ, फिर डराओ, (2)
और अपने रब की बड़ाई बयान करो, (3)
और अपने कपड़े पाक रखो, (4)
और पलीदी से दूर रहो। (5)
और ज़ियादा लेने की गरज़ से एहसान न रखो, (6)
और अपने रब की (रज़ा जूई) के लिए सब्र करो। (7)
फिर जब सूर फूँका जाएगा। (8)
तो वह दिन बड़ा दुश्वार दिन होगा। (9)
काफिरों पर आसान न होगा। (10)
मुझे और उसे छोड़ दो जिसे मैं ने अकेला पैदा किया। (11)
और मैं ने उसे दिया बहुत सारा माल, (12)
और सामने हाज़िर रहने वाले बेटे, (13)
और हमवार किया उस के लिए (सरदार बनने का रास्ता) खूब हमवार, (14)
फिर वह लालच करता है कि और ज़ियादा दूँ। (15)
हरगिज़ नहीं, वेशक वह हमारी आयात का मुखालिफ़ है। (16)
अब उसे कठिन चढ़ाई चढ़वाऊँगा। (17)
वेशक उस ने सोचा और कुछ बात बनाने की कोशिश की, (18)
सो वह मारा जाए कि कैसी बात बनाने की कोशिश की, (19)
फिर वह मारा जाए कि कैसी बात बनाने की कोशिश की। (20)
फिर उस ने देखा, (21)
फिर उस ने तेवरी चढ़ाई और मुँह बिगाड़ लिया, (22)
फिर उस ने पीठ फेर ली और उस ने तकबुर किया। (23)
पस उस ने कहा: यह तो सिर्फ़ एक जादू है (जो) अगलों से चला आता है, (24)
यह तो सिर्फ़ एक आदमी का कलाम है। (25)
अनकरीब मैं उसे सक़र में डाल दूँगा। (26)
और तुम क्या जानो कि सक़र क्या है? (27)
(वह है आग) न बाकी रखेगी और न छोड़ेगी, (28)
आदमी को झुलस देने वाली है, (29)
उस पर उन्नीस (19) दारोगा (मुक़र्रर) हैं। (30)

और हम ने दोज़ख़ के दारोगे सिर्फ़ फ़रिश्ते बनाए हैं, और हम ने उन की तादाद सिर्फ़ एक फ़ित्ना बनाया उन लोगों के लिए जो काफ़िर हुए ताकि अहले किताब यकीन कर लें और ईमान ज़ियादा हो उन का जो ईमान लाए और वह लोग शक न करें जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) और मोमिन, और ताकि वह लोग जिन के दिलों में रोग है और काफ़िर कहें कि क्या इरादा किया है अल्लाह ने इस मिसाल (बात) से? इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और वह जिसे चाहता है हिदायत देता है, (कोई) नहीं जानता तेरे रब के लशकरों को खुद उस के सिवा, और यह नहीं मगर आदमी के लिए नसीहत। (31)

नहीं नहीं! कसम है चाँद की, (32) और रात की जब वह पीठ फेरे। (33) और सुबह की जब वह रोशन हो। (34)

वेशक वह (दोज़ख़) बड़ी चीज़ों में एक है, (35)

लोगों को डराने वाली। (36) तुम में से जो कोई चाहे आगे बढ़े या वह पीछे रहे। (37)

हर शख्स अपने आमाल के बदले गिरवी है। (38)

मगर दाहिनी हाथ वाले (नेक लोग)। (39)

बागात में (होंगे), वह पूछेंगे। (40) गुनाहगारों से, (41)

तुम्हें जहन्नम में क्या चीज़ ले गई? (42)

वह कहेंगे कि हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे। (43)

और हम मोहताजों को खाना न खिलाते थे। (44)

और हम बेहूदा बातों में लगे रहने वालों के साथ बेहूदा बातों में धंस्ते रहते थे, (45)

और हम रोज़े जज़ा ओ सज़ा को झुटलाते थे। (46)

यहां तक कि हमें मौत आ गई। (47) सो उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश ने नफ़ा न दिया। (48)

तो उन्हें क्या हुआ कि वह नसीहत से मुँह फेरते हैं? (49)

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُم

उन की तादाद	और हम ने नहीं रखी	फ़रिश्ते	मगर (सिर्फ़)	दोज़ख़ के दारोगे	और हम ने नहीं बनाए

إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ

किताब दी गई (अहले किताब)	वह लोग जिन्हें	ताकि वह यकीन कर लें	काफ़िर हुए	उन लोगों के लिए जो	मगर (सिर्फ़) आजमाइश

وَيَزِدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ

वह लोग जिन्हें	और शक न करें	ईमान	जो लोग ईमान लाए	और ज़ियादा हो

أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلَيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ

रोग	जिन के दिलों में	वह लोग	और ताकि वह कहें	और मोमिन (जमा)	किताब दी गई

وَالْكُفَرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ

अल्लाह गुमराह करता है	इसी तरह	मिसाल	इस	इरादा किया अल्लाह ने	क्या	और काफ़िर (जमा)

مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ

लशकरों	और नहीं जानता	जिसे वह चाहता है	और हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है

رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَى لِلْبَشَرِ (٣١) كَلَّا وَالْقَمَرِ (٣٢)

32	कसम है चाँद की	नहीं नहीं	31	आदमी के लिए	मगर नसीहत	और नहीं यह	सिवाए वह (खुद)	तेरे रब के

وَاللَّيْلِ إِذَا دُبِرَ (٣٣) وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ (٣٤) إِنَّهَا لِأَحَدَى

एक है	वेशक यह	34	जब वह रोशन हो	और सुबह	33	जब वह पीठ फेरे	और रात

الْكُبَرِ (٣٥) نَذِيرًا لِلْبَشَرِ (٣٦) لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ

कि वह आगे बढ़े	तुम में से	और जो कोई चाहे	36	लोगों को	डराने वाली	35	बड़ी (आफ़त)

أَوْ يَتَأَخَّرَ (٣٧) كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهينَةً (٣٨) إِلَّا

मगर	38	गिरवी	उस ने कमाया (आमाल)	उस के बदले जो	हर शख्स	37	या पीछे रहे

أَصْحَابَ الْيَمِينِ (٣٩) فِي جَنَّتٍ يَتَسَاءَلُونَ (٤٠) عَنِ الْمُجْرِمِينَ (٤١)

41	गुनाहगारों	से	40	वह पूछेंगे	बागात में	39	दाहिनी तरफ वाले

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرٍ (٤٢) قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ (٤٣)

43	नमाज़ पढ़ने वाले	से	हम न थे	वह कहेंगे	42	जहन्नम में	क्या (चीज़) तुम्हें ले गई

وَلَمْ نَكُ نَطْعُمُ الْمَسْكِينِ (٤٤) وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَاصِصِينَ (٤٥)

45	बेहूदा बातों के साथ लगे रहने वाले	और हम धंस्ते रहते थे (बेहूदा बातों में)	44	मोहताजों	हम खाना खिलाते	और न थे हम

وَكُنَّا نَكْذِبُ بِيَوْمِ الدِّينِ (٤٦) حَتَّى آتَيْنَا الْيَقِينَ (٤٧) فَمَا تَنْفَعُهُمْ

और उन्हें नफ़ा न दिया	47	मौत	हमें आ गई	यहां तक कि	46	रोज़े जज़ा ओ सज़ा को	और हम झुटलाते थे

شَفَاعَةُ الشَّفَاعِينَ (٤٨) فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ (٤٩)

49	मुँह फेरते हैं	नसीहत	से	तो उन्हें क्या हुआ	48	सिफ़ारिश करने वाले	सिफ़ारिश

۱۵

عند التّقاضی ۱۶

كَانَهُمْ حُمْرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَارَتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيدُ						
चाहता है	बल्कि	51	शेर से	भागें जाते हैं	50	भागें हुए
كُلُّ أَمْرٍ مِنْهُمْ أَنْ يُؤْتَى صُحُفًا مُّنْشَرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا بَلْ						
बल्कि	हरगिज़ नहीं	52	खुले हुए	सहीफें	कि वह दिए जाएं	उन में से
لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّا إِنَّهُ تَذَكُّرٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَاءَ						
सो जो चाहे	54	नसीहत	वेशक यह	हरगिज़ नहीं	53	आखिरत
ذَكَرَهُ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ هُوَ						
वही	अल्लाह चाहे	मगर यह कि	और वह याद न रखेंगे	55	इसे याद रखे	
أَهْلُ التَّقْوَى وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾						
	56	और मग़फ़िरत करने के लाइक	डरने के लाइक			
آيَاتُهَا ٤٠ ﴿٧٥﴾ سُورَةُ الْقِيَمَةِ ﴿رُكُوعَاتُهَا ٢﴾						
रुक़आत 2		(75) सूरतुल क़ियामह			आयात 40	
क़ियामत						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
لَا أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَمَةِ ﴿١﴾ وَلَا أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾						
2	मलामत करने वाला (ज़मीर)	नफ्स की	और नहीं, मैं कसम खाता हूँ	1	क़ियामत के दिन की	नहीं, मैं कसम खाता हूँ
أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَلَّنْ نَجْمَعَ عِظَامَهُ ﴿٣﴾ بَلَىٰ قَدَرِينَ						
क्यों नहीं, हम क़ादिर हैं	3	उस की हड्डियाँ	कि हम जमा न कर सकेंगे	इन्सान	क्या गुमान करता है	
عَلَىٰ أَنْ نُسَوِّيَ بَنَانَهُ ﴿٤﴾ بَلْ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ						
कि गुनाह करता रहे	इन्सान	बल्कि चाहता है	4	उस के पोर पोर	कि हम दुरुस्त करें	पर
أَمَامَهُ ﴿٥﴾ يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ ﴿٦﴾ فَاِذَا						
पस जब	6	रोज़े क़ियामत	कब?	और पूछता है	5	अपने आगे को भी
بَرْقِ الْبَصْرِ ﴿٧﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿٩﴾						
9	सूरज और चाँद	और जमा कर दिए जाएंगे	8	चाँद	और गरहन लग जाएगा	7
يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفْرُ ﴿١٠﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾						
11	नहीं कोई बचाओ	हरगिज़ नहीं	10	कहाँ भागने की जगह	आज के दिन	इन्सान
إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ﴿١٢﴾ يُنَبِّئُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ						
आज के दिन	इन्सान	वह जतला दिया जाएगा	12	ठिकाना	आज के दिन	तेरे रब की तरफ
بِمَا قَدَّمَ وَآخَرَ ﴿١٣﴾ بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ﴿١٤﴾						
14	बाख़बर	अपनी जान (हालत) पर	बल्कि इन्सान	13	और उस ने पीछे छोड़ा	वह जो उस ने आगे भेजा

गोया कि वह जंगली गधे हैं, (50) भागे जाते हैं शेर से। (51) बल्कि उन में से हर आदमी चाहता है कि उसे दिए जाएं सहीफें खुले हुए। (52) हरगिज़ नहीं, बल्कि वह आखिरत से नहीं डरते। (53) हरगिज़ नहीं, वेशक यह नसीहत है। (54) सो जो चाहे इसे याद रखे। (55) और वह याद न रखेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही है डरने के लाइक और मग़फ़िरत करने के लाइक। (56) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है मैं क़ियामत के दिन की कसम खाता हूँ। (1) और अपने ऊपर मलामत करने वाले नफ्स की कसम खाता हूँ। (2) क्या इन्सान गुमान करता है कि हम हरगिज़ जमा न कर सकेंगे उस की हड्डियाँ। (3) क्यों नहीं? कि हम इस पर क़ादिर हैं कि उस के पोर पोर दुरुस्त कर दें। (4) बल्कि इन्सान चाहता है कि आगे भी गुनाह करता रहे। (5) वह पूछता है कि रोज़े क़ियामत कब होगा? (6) पस जब आँखें चुंधिया जाएंगी, (7) और चाँद को गरहन लग जाएगा, (8) और सूरज और चाँद जमा कर दिए जाएंगे। (9) इन्सान कहेगा कि कहाँ है आज के दिन भागने की जगह? (10) हरगिज़ नहीं, कोई बचाओ की जगह नहीं। (11) आज के दिन तेरे रब की तरफ़ ठिकाना है। (12) जतला दिया जाएगा इन्सान आज के दिन जो उस ने आगे भेजा और जो उस ने पीछे छोड़ा। (13) बल्कि इन्सान अपनी जान पर बाख़बर है। (14)

अगरचे अपने उज़र (हीले) ला डाले (पेश करे)। (15)

आप (स) कुरआन के साथ अपनी ज़वान को हरकत न दें कि उस को जल्द याद कर लें। (16)

वेशक उस का जमा करना और उस का पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है। (17)

पस जब हम उसे (फ़रिश्ते की ज़वानी) पढ़ें तो आप (स) ध्यान से सुनें उस के पढ़ने को। (18)

फिर वेशक उस का बयान करना हमारे ज़िम्मे है। (19)

हरगिज़ नहीं, बल्कि (ऐ काफ़िरो!) तुम दुनिया से मुहब्बत रखते हो, (20)

और आख़िरत को छोड़ देते हो। (21)

उस दिन बहुत से चेहरे बारौनक होंगे, (22)

अपने रब की तरफ़ देखते होंगे। (23)

और बहुत से चेहरे उस दिन बिगड़े हुए होंगे, (24)

वह ख़याल करते होंगे कि उन से कमर तोड़ने वाला (मामला) किया जाएगा। (25)

हाँ हाँ, जब (जान) हंसुली तक पहुँच जाए। (26)

और कहा जाए कि कौन है झाड़ फूंक करने वाला? (27)

और वह गुमान करे कि यह जुदाई की घड़ी है। (28)

और एक पिंडली दूसरी पिंडली से लिपट जाए (पाऊँ में हरकत न रहे)। (29)

उस दिन (तुझे) अपने रब की तरफ़ चलना है। (30)

न उस ने (अल्लाह-रसूल की) तस्दीक की और न उस ने नमाज़ पढ़ी। (31)

बल्कि उस ने झुटलाया और मुँह मोड़ा। (32)

फिर वह अपने घर वालों की तरफ़ अकड़ता हुआ चला गया। (33)

अफ़सोस है तुझ पर अफ़सोस। (34)

फिर अफ़सोस है तुझ पर फिर अफ़सोस। (35)

क्या इन्सान गुमान करता है कि वह यूँही छोड़ दिया जाएगा। (36)

क्या वह मनी का एक नुत्फ़ा (क़तरा) न था जो (रहमे मादर में) टपकाया गया, (37)

फिर वह जमा हुआ खून हुआ, फिर उस ने उसे पैदा किया, फिर उसे दुरुस्त (अनदाम) किया, (38)

फिर उस से मर्द और औरत की दो किस्में बनाई। (39)

क्या वह इस पर कादिर नहीं कि मुर्दे को ज़िन्दा करे? (40)

وَلَوْ أَلْقَى مَعَاذِيرَهُ ﴿١٥﴾ لَا تُحَرِّكُ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ﴿١٦﴾						
अगरचे ला डाले	अपने उज़र	15	आप (स) हरकत न दें इस (कुरआन) के साथ	अपनी ज़वान को	कि जल्द (याद कर लें) उस को	16
إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ﴿١٧﴾ فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ						
वेशक हम पर (हमारे ज़िम्मे)	उस का जमा करना	और उस का पढ़ाना	17	पस जब हम उसे पढ़ें	तो आप (स) पैरवी करें	
قُرْآنَهُ ﴿١٨﴾ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ﴿١٩﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ						
उस के पढ़ने को	18	उस का बयान	19	हरगिज़ नहीं बल्कि	तुम मुहब्बत रखते हो	
الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾ وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ﴿٢١﴾ وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاصِرَةٌ ﴿٢٢﴾						
जल्दी हासिल होने वाली चीज़	20	और तुम छोड़ देते हो	आख़िरत	21	बहुत से चेहरे	उस दिन
إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ						
अपने रब की तरफ़	देखते	23	और बहुत से चेहरे	उस दिन	बिगड़े हुए	24
أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾ كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾						
कि	उन से किया जाएगा	कमर तोड़ने वाला	25	हाँ हाँ जब	पहुँच जाए	हंसुली तक
وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ﴿٢٧﴾ وَظُنَّ أَنَّهٗ الْفِرَاقَ ﴿٢٨﴾ وَالتَّفَّتِ						
और कहा जाए	कौन झाड़ फूंक करने वाला	27	और वह गुमान करे कि यह	जुदाई	28	और लिपट जाए
السَّاقِ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾						
एक पिंडली	दूसरी पिंडली से	29	अपने रब की तरफ़	उस दिन	चलना	30
فَلَا صَدَقَ وَلَا صَلَّىٰ ﴿٣١﴾ وَلَكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٣٢﴾						
न उस ने तस्दीक की	और न उस ने नमाज़ पढ़ी	31	और लेकिन (बल्कि)	झुटलाया	और मुँह मोड़ा	32
ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ﴿٣٣﴾ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿٣٤﴾						
फिर चला गया वह	अपने घर वालों की तरफ़	अकड़ता	33	अफ़सोस तुझ पर	पस अफ़सोस	34
ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿٣٥﴾ أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُشْرَكَ						
फिर	अफ़सोस तुझ पर	फिर अफ़सोस	35	क्या वह गुमान करता है?	इन्सान	कि वह छोड़ दिया जाएगा
سُدًى ﴿٣٦﴾ أَلَمْ يَكُ نَاطِقًا مِّنْ مَّيْمَنِي يُمْنِي ﴿٣٧﴾						
सुहमिल (यूँ ही)	क्या न था?	नुत्फ़ा	से-का	मनी	टपकाया गया	37
ثُمَّ كَانَ عِلْقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ						
फिर वह हुआ	जमा हुआ खून	फिर उस ने पैदा किया	फिर उसे दुरुस्त कर दिया	38	फिर बनाए	उस से
الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٣٩﴾ أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ						
मर्द और औरत	39	क्या नहीं	वह	कादिर	पर	
أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ﴿٤٠﴾						
	कि वह ज़िन्दा करे	सुर्दे (जमा)	40			

آيَاتُهَا ٣١ ﴿٧٦﴾ سُورَةُ الدَّهْرِ ﴿٧٦﴾ زُكُوعَاتُهَا ٢						
रुकुआत 2		(76) सूरतुद दहर ज़माना			आयात 31	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ﴿١﴾						
1	काविले ज़िक्र	न था कुछ	ज़माना से (में)	एक वक़्त	इन्सान पर	यकीनन आय (गुज़रा)
إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ						
तो हम ने उसे बनाया	हम उसे आज़माएं	मख़लूत	नुतफ़े से	इन्सान	वेशक हम ने पैदा किया	
سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٢﴾ إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا						
और खाह	खाह शुक्र करने वाला	राह	वेशक हम ने उसे दिखाई	2	सुनता देखता	
كَفُورًا ﴿٣﴾ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَالًا وَوَسَعِيرًا ﴿٤﴾						
4	और दहकती आग	और तौक	ज़न्जीरें	काफ़िरों के लिए	वेशक हम ने तैयार किया	3 नाशुक्रा
إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ﴿٥﴾						
5	काफूर की	उस में मिलावट होगी	प्याले से	पिएंगे	नेक बन्दे	वेशक
عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ﴿٦﴾ يُوفُونَ						
वह पूरी करते हैं	6	नालियां	उस से जारी करते हैं	अल्लाह के बन्दे	उस से पीते हैं	एक चश्मा
بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ﴿٧﴾ وَيُطْعَمُونَ						
और वह खिलाते हैं	7	फैली हुई	उस की बुराई	होगी	उस दिन से	और वह डरते हैं अपनी (नज़्रें)
الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ﴿٨﴾ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ						
हम तुम्हें खिलाते हैं	इस के सिवा नहीं	8	और कैदी	और यतीम	मिस्कीन	उस की मुहब्बत पर खाना
لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ﴿٩﴾ إِنَّا نَخَافُ						
वेशक हम डरते हैं	9	और न शुक्रिया	कोई जज़ा	तुम से	हम नहीं चाहते	रज़ाए इलाही के लिए
مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ﴿١٠﴾ فَوَقَّهْمُ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّهْمُ						
उस दिन	बुराई	पस उन्हें बचा लिया अल्लाह ने	10	निहायत सख़्त	मुँह बिगाड़ने वाला	दिन अपने रब से
12	और रेशमी लिबास	जन्नत	उन के सबर पर	और उन्हें बदला दिया	11 और खुश दिली	ताज़गी और उन्हें अज़ा की
مُتَكَبِّرِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرْابِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ﴿١٣﴾						
13	और न सर्दी	धूप	उस में	वह न देखेंगे	तख़्तों पर	उस में तकिया लगाए होंगे
وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذُلَّتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ﴿١٤﴾						
14	झुका कर	उस के गुच्छे	और नज़्दीक कर दिए गए होंगे	उन के साए	उन पर	और नज़्दीक हो रहे होंगे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है यकीनन इन्सान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त गुज़रा है कि वह कुछ (भी) काविले ज़िक्र न था। (1) वेशक हम ने इन्सान को पैदा किया मखलूत नुतफ़े से (कि) हम उसे आजमाएं तो हम ने उसे सुनता देखता बनाया। (2) वेशक हम ने उसे राह दिखाई (अब वह) खाह शुक्र करने वाला बने खाह नाशुक्रा। (3) वेशक हम ने काफ़िरों (नाशुक्रों) के लिए ज़न्जीरें और तौक और दहकती आग तैयार कर रखी है। (4) वेशक पिएंगे नेक बन्दे प्याले से (वह मशरूब) जिस में काफूर की मिलावट होगी। (5) एक चश्मा जिस से अल्लाह के बन्दे पीते हैं, उस से नालियां जारी करते हैं। (6) वह पूरी करते हैं अपनी नज़रें और वह उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई फैली (आम) होगी। (7) और वह उस की मुहब्बत पर खाना खिलाते हैं मोहताज को, और यतीम और कैदी को। (8) (और कहते हैं) इस के सिवा नहीं कि हम तुम्हें रज़ाए इलाही के लिए खिलाते हैं। हम तुम से न जज़ा चाहते हैं और न शुक्रिया। (9) वेशक हम डरते हैं अपने रब की तरफ़ से एक दिन जो मुँह बिगाड़ने वाला निहायत सख़्त है। (10) पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी अज़ा की और खुश दिली। (11) और उन्हें बदला दिया उन के सबर पर जन्नत और रेशमी लिबास। (12) उस में तख़्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे, वह न देखेंगे उस में धूप (की तेज़ी) न सदी (की शिदत)। (13) उन पर उस के साए नज़्दीक हो रहे होंगे और उस के गुच्छे झुका कर नज़्दीक कर दिए गए होंगे। (14)

और उन पर दौर होगा चाँदी के बरतनों का और शीशे के प्याले होंगे, (15) शीशे चाँदी के। (साकियों ने) उन का मुनासिब अन्दाज़ा किया होगा। (16) और उन्हें उस में ऐसा जाम पिलाया जाएगा जिस में अदरक की मिलावट होगी। (17) उस में एक चश्मा है जिस का नाम सल्सवील है। (18) और गर्दिश करेंगे उन पर हमेशा नौउम्र रहने वाले लड़के, जब तू उन्हें देखे तो उन्हें बिखरे हुए मोती समझे। (19) और जब तू देखेगा तो वहां (जन्नत में) बड़ी नेमत और बड़ी सल्तनत देखेगा। (20) उन के ऊपर की पोशाक सब्ज़ वारीक रेशम और अतलस की होगी और उन्हें कंगन पहनाए जाएंगे चाँदी के और उन का रब उन्हें निहायत पाक एक मशरूब पिलाएगा। (21) वेशक यह तुम्हारी जज़ा है, और तुम्हारी कोशिश मकबूल हुई। (22) वेशक हम ने आप (स) पर कुरआन थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल किया। (23) पस आप (स) अपने रब के हुक्म के लिए सवर करें, और आप (स) कहा ना मानें उन में से किसी गुनाहगार नाशुक्रे का। (24) और आप (स) अपने रब का नाम सुबह ओ शाम याद करते रहें। (25) और रात के किसी हिस्से में आप (स) उस को सिज्दा करें और उस की पाकीज़गी बयान करें रात के बड़े हिस्से में। (26) वेशक यह मुन्किर दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और एक भारी दिन (रोज़े क़ियामत को) अपने पीछे (पसे पुशत) छोड़ देते हैं। (27) हम ने उन्हें पैदा किया और हम ने उन के जोड़ मज़बूत किए, और हम जब चाहें (उन की जगह) उन जैसे और लोग बदल कर ले आएँ। (28) वेशक यह नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह इख्तियार कर ले। (29) और तुम नहीं चाहोगे सिवाए जो अल्लाह चाहे, वेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (30)

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِانِيَةٍ مِّنْ فِصَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا ﴿١٥﴾							
और दौर होगा	उन पर	बरतनों का	चाँदी के	और प्याले	होंगे	शीशे के	15
قَوَارِيرًا مِّنْ فِصَّةٍ قَدَرُوهَا تَقْدِيرًا ﴿١٦﴾ وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا							
शीशे	चाँदी के	उन्होंने उन का अन्दाज़ा किया होगा	मुनासिब अन्दाज़ा	16	और उन्हें पिलाया जाएगा	उस में	ऐसा जाम
كَانَ مِرَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ﴿١٧﴾ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّى سَلْسَبِيلًا ﴿١٨﴾ وَيُطُوفُ							
होगी	उस की मिलावट	अदरक	17	एक चश्मा उस में	नाम होगा जिस का	सल्सबील	18
عَلَيْهِمْ وَلَدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۖ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا							
उन पर	लड़के	हमेशा (नौ उम्र) रहने वाले	जब तू उन्हें देखे	तू उन्हें समझे	मोती		
مَنْشُورًا ﴿١٩﴾ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلَكًا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾							
बिखरे हुए	19	और जब तू देखेगा	वहां	तू देखेगा	बड़ी नेमत	और बड़ी सल्तनत	20
عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُّوْا أَسَاوِرَ							
उन के ऊपर की पोशाक	वारीक रेशम	सब्ज़	और दबीज़ रेशम (अतलस)	और उन्हें पहनाए जाएंगे	कंगन		
مِّنْ فِصَّةٍ ۖ وَسَقَّاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿٢١﴾ إِنَّ هَذَا كَانَ							
चाँदी के	पिलाएगा	और उन्हें	उन का रब	एक शराब (मशरूब)	नियाहत पाक	21	वेशक यह है
لَكُمْ جَزَاءٌ وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُورًا ﴿٢٢﴾ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ							
तुम्हारे लिए	जज़ा	और हुई	तुम्हारी कोशिश	मशकूर (मकबूल)	22	वेशक हम	हम ने नाज़िल किया
الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا							
कुरआन	बतदरीज	23	पस सवर करें	अपने रब के हुक्म के लिए	और आप (स) कहा न मानें	उन में से	किसी गुनाहगार
أَوْ كَفُورًا ﴿٢٤﴾ وَادْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ							
या नाशुक्रे का	24	और आप (स) ज़िक्र करें	अपने रब का नाम	सुबह	और शाम	25	और रात के (किसी हिस्से में)
فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ هَؤُلَاءِ يُحِبُّونَ							
पस आप (स) सिज्दा करें	उस को	और उस की पाकीज़गी बयान करें रात का बड़ा हिस्सा	26	वेशक यह (मुन्किर) लोग	मुहब्बत रखते हैं		
الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ							
दुनिया	और छोड़ देते हैं	अपने पीछे	एक दिन	भारी	27	हम ने उन्हें पैदा किया	
وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَلَهُمْ تَبْدِيلًا ﴿٢٨﴾							
और हम ने मज़बूत किए	उन के जोड़	और जब हम चाहें	हम बदल दें	उन जैसे लोग	बदल कर	28	
إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٢٩﴾							
वेशक यह	नसीहत	पस जो चाहे	इख्तियार करे	अपने रब की तरफ़	राह	29	
وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾							
और तुम नहीं चाहोगे	सिवाए	जो	अल्लाह चाहे	वेशक अल्लाह	है	जानने वाला	हिक्मत वाला
30							

فَرَفَضَ حَقُّهُ فِي الْوَصْلِ فِيهِمَا - وَوَقَّفَ عَلَى الْأَوَّلِ بِالْأَلْفِ وَعَلَى الثَّانِي بِغَيْرِ الْاَلْفِ ۱۲

ع ۱۹

يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ					
उस ने तैयार किया है उन के लिए		और (रहे) ज़ालिम		अपनी रहमत में	
				वह जिसे चाहे	
				वह दाखिल करता है	
عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣١﴾					
		31		दर्दनाक अज़ाब	
آيَاتُهَا ٥٠ ﴿ ٧٧ ﴾ سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ ﴿ ٢ ﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢					
रुकुआत 2		(77) सूरतुल मुर्सलात		आयात 50	
		भेजी जाने वालियाँ			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ					
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है					
وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ﴿١﴾ فَالْعَصْفِ عَصْفًا ﴿٢﴾ وَالنَّشْرِ					
बादल उठा कर लाने वाली हवाओं की कसम		2		शिद्दत से	
		फिर तुन्द ओ तेज़ चलने वाली हवाओं की कसम		1	
				दिल खुश करने वाली	
				हवाओं की कसम	
نَشْرًا ﴿٣﴾ فَالْفَرْقِ فَرْقًا ﴿٤﴾ فَالْمُلْقِ ذِكْرًا ﴿٥﴾ عَذْرًا					
हुज्जत तमाम करने को		5		ज़िक्र (दिलों में अल्लाह की याद)	
		फिर डालने वाली हवाओं की कसम		4	
		वांट कर		फिर फाड़ने वाली हवाओं की कसम	
				3	
				फैलाने वाली	
أَوْ نُذْرًا ﴿٦﴾ إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٍ ﴿٧﴾ فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ ﴿٨﴾					
8		सितारे मिटाए जाएं (बेनूर हो जाएं)		पस जब	
		7		ज़रूर होने वाला	
		तुम्हें वादा दिया जाता है		बेशक जो	
		6		या डराने को	
وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾ وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾ وَإِذَا الرُّسُلُ					
और जब रसूल (जमा)		10		उड़ते फिरें	
		और जब पहाड़		9	
		फट जाए		और जब आस्मान	
أُقِيتَ ﴿١١﴾ لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ﴿١٢﴾ لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٣﴾ وَمَا أَدْرَاكَ					
और तुम क्या समझे?		13		फैसले का दिन	
		12		मुलतवी रखा गया है	
		किस दिन के लिए		11	
		वक़्त पर जमा किए जाएंगे			
مَا يَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾ وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٥﴾ أَلَمْ نُهْلِكْ					
क्या हम ने हलाक नहीं किया?		15		झुटलाने वालों के लिए	
		उस दिन		14	
		खराबी		क्या है फैसले का दिन?	
الْأَوَّلِينَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ نَتَّبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ﴿١٧﴾ كَذَلِكَ					
इसी तरह		17		पिछलों को	
		हम उन के पीछे चलाते हैं		16	
		फिर		पहले लोगों को?	
نَفَعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿١٨﴾ وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٩﴾					
19		झुटलाने वालों के लिए		उस दिन	
		खराबी		18	
		मुजरिमों के साथ		हम करते हैं	
أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ﴿٢٠﴾ فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿٢١﴾					
21		एक महफूज़ जगह		में	
		फिर हम ने उसे रखा		20	
		हकीर		पानी से	
		क्या हम ने नहीं पैदा किया तुम्हें			
إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢٢﴾ فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَدِرُونَ ﴿٢٣﴾ وَيَلَّ					
खराबी		23		अन्दाज़ा करने वाले	
		तो कैसा अच्छा		फिर हम ने अन्दाज़ा किया	
		22		उस क़दर जो मालूम है	
		तक			
يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٤﴾ أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾					
25		समेटने वाली		ज़मीन	
		क्या हम ने नहीं बनाया		24	
		झुटलाने वालों के लिए		उस दिन	

वह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाखिल करता है, और रहे ज़ालिम तो उन के लिए उस ने दर्दनाक अज़ाब तैयार किया है। (31) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है दिल खुश करने वाली हवाओं की कसम, (1) फिर शिद्दत से तुन्द ओ तेज़ चलने वाली हवाओं की कसम, (2) बादलों को उठा कर लाने वाली फैलाने वाली हवाओं की कसम, (3) फिर बांट कर फाड़ने वाली हवाओं की कसम, (4) फिर (दिलों में अल्लाह की) याद डालने वाली हवाओं की कसम। (5) हुज्जत तमाम करने को या डराने को। (6) वेशक जो तुम्हें वादा दिया जाता है वह ज़रूर वाक़े होने वाला है। (7) फिर जब सितारे बेनूर हो जाएं। (8) और जब आस्मान फट जाए। (9) और जब पहाड़ उड़ते फिरें (पारा पारा हो कर)। (10) और जब सारे रसूल वक्ते (मुअय्यन) पर जमा किए जाएं। (11) (उन का मामला) किस दिन के लिए मुलतवी रखा गया है? (12) फैसले के दिन के लिए। (13) और तुम क्या समझे कि फैसले का दिन क्या है? (14) उस दिन खराबी है झुटलाने वालों के लिए। (15) क्या हम ने हलाक नहीं किया पहले लोगों को? (16) फिर पिछलों को उन के पीछे चलाते हैं। (17) इसी तरह हम मुज्रिमों के साथ करते हैं। (18) उस दिन खराबी है झुटलाने वालों के लिए। (19) क्या हम ने तुम्हें हकीर पानी से नहीं पैदा किया? (20) फिर हम ने उसे एक महफूज़ जगह में रखा, (21) एक वक्ते मुअय्यन तक। (22) फिर हम ने अन्दाज़ा किया तो (हम) कैसा अच्छा अन्दाज़ा करने वाले हैं। (23) उस दिन खराबी है झुटलाने वालों के लिए। (24) क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? (25)

ज़िन्दों को और मुर्दों को। (26)
और हम ने उस में ऊँचे ऊँचे
पहाड़ रखे और हम ने तुम्हें मीठा
पानी पिलाया। (27)
खराबी है उस दिन झुटलाने वालों
के लिए। (28)
(हुक्म होगा) तुम चलो उस की तरफ
जिस को तुम झुटलाते थे। (29)
तुम चलो तीन शाखों वाले साए की
तरफ। (30)
न गहरा साया और न वह तपिश
से बचाए। (31)
वेशक वह महल जैसे (ऊँचे) शोले
फेंकती है, (32)
गोया कि वह ऊँट है ज़र्द। (33)
खराबी है उस दिन झुटलाने वालों
के लिए। (34)
उस दिन न वह बोल सकेंगे, (35)
और न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि
वह उज़र खाही करें। (36)
खराबी है उस दिन झुटलाने वालों
के लिए। (37)
यह फैसले का दिन है, हम ने
तुम्हें जमा किया और पहले लोगों
को। (38)
फिर अगर तुम्हारे पास कोई दाओ
है तो मुझ पर दाओ करो। (39)
खराबी है उस दिन झुटलाने वालों
के लिए। (40)
वेशक परहेज़गार सायों और
चश्मों में होंगे। (41)
और मेवों में जो वह चाहेंगे। (42)
(हम फरमाएंगे) तुम खाओ और
पियो मज़े से (बाफ़रागत) उस के
बदले जो तुम करते थे। (43)
वेशक हम इसी तरह नेकोकारों को
जज़ा देते हैं। (44)
खराबी है उस दिन झुटलाने वालों
के लिए। (45)
तुम खाओ और फाइदा उठा लो
थोड़ा (किसी क़द्र) बेशक तुम
मुज़्रिम हो। (46)
खराबी है उस दिन झुटलाने वालों
के लिए। (47)
और जब उन से कहा जाता है कि
तुम रुकूअ करो तो वह रुकूअ नहीं
करते। (48)
खराबी है उस दिन झुटलाने वालों
के लिए। (49)
तो इस के बाद वह कौन सी बात
पर ईमान लाएंगे? (50)

أَحْيَاءَ وَأَمْوَاتًا ۚ وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شِمَخَاتٍ ۚ						
ऊँचे ऊँचे	पहाड़ (जमा)	उस में	और हम ने रखे	26	और मुर्दों को	ज़िन्दों को
وَأَسْقَيْنَكُم مَّاءً فُرَاتًا ۚ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۚ						
28	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	खराबी	27	पानी मीठा	और हम ने पिलाया तुम्हें
إِنطَلِقُوا إِلَى مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۚ إِنطَلِقُوا إِلَى ظِلٍّ						
साए की तरफ	तुम चलो	29	तुम झुटलाते	जिस को तुम थे	तरफ	तो तुम चलो
ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ۚ لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ۚ						
31	शोला (तपिश)	से	और न वह बचाए	न गहरा साया	30	शाखें तीन वाला
إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۚ كَأَنَّهُ جِمْلَتٌ صُفْرٌ ۚ وَيْلٌ						
खराबी	33	ज़र्द	ऊँट (जमा)	गोया कि	32	महल जैसे शोले फेंकती वेशक वह
يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۚ هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ۚ وَلَا يُؤَدِّنُ						
और न इजाज़त दी जाएगी	35	वह न बोल सकेंगे	उस दिन	34	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन
لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۚ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۚ						
37	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	खराबी	36	कि वह उज़र खाही करें	उन्हें
هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنَكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ						
है तुम्हारे पास	फिर अगर	38	और पहले लोगों को	हम ने जमा किया तुम्हें	फैसले का दिन	यह
كَيْدٌ فَكِيدُونَ ۚ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۚ						
40	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	खराबी	39	तो तुम मुझ पर दाओ कर लो	कोई दाओ
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلٍّ وَعُيُونٍ ۚ وَفَوَاكِهٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۚ						
42	वह चाहेंगे	जो	और मेवे	41	और चश्मों सायों में	वेशक परहेज़गार (जमा)
كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّا كَذَلِكَ						
वेशक हम इसी तरह	43	करते थे	उस के बदले जो तुम	मज़े से	औत तुम पियो	तुम खाओ
نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۚ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۚ كُلُوا						
तुम खाओ	45	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	खराबी	44	नेकोकारों को जज़ा देते हैं
وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا ۚ إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ ۚ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ						
उस दिन	खराबी	46	मुज़्रिम (जमा)	वेशक तुम	थोड़ा	और तुम फाइदा उठाओ
لِّلْمُكَذِّبِينَ ۚ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ۚ وَيْلٌ						
खराबी	48	वह रुकूअ नहीं करते	तुम रुकूअ करो	उन से कहा जाए	और जब	झुटलाने वालों के लिए
يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۚ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۚ						
50	वह ईमान लाएंगे	इस के बाद	बात	तो कौन सी	49	झुटलाने वालों के लिए उस दिन

آيَاتُهَا ٤٠ ﴿٧٨﴾ سُورَةُ النَّبَاِ ﴿رُكُوعَاتُهَا ٢﴾									
रुकुआत 2		(78) सूरतुन नबा				आयात 40			
ख़बर									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ﴿١﴾ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيمِ ﴿٢﴾ الَّذِي هُمْ									
वह	जो - जिस	2	बड़ी ख़बर (क़ियामत)	से (बावत)	1	आपस में पूछते हैं	क्या - किस		
فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ﴿٣﴾ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ﴿٤﴾ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ﴿٥﴾ أَلَمْ									
क्या नहीं	5	अनकरीब जान लेंगे	फिर हरगिज़ नहीं	4	अनकरीब जान लेंगे	हरगिज़ नहीं	3	इख़तिلاف करते हैं	उस में
نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهْدًا ﴿٦﴾ وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ﴿٧﴾ وَخَلَقْنٰكُمْ									
और हम ने तुम्हें पैदा किया	7	कीलें	और पहाड़	6	बिछोना	ज़मीन	हम ने बनाया		
أَزْوَاجًا ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿٩﴾ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ﴿١٠﴾									
10	ओढ़ना (पर्दा)	रात	और हम ने बनाया	9	आराम (राहत)	तुम्हारी नींद	और हम ने बनाया	8	जोड़े जोड़े
وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾									
12	मज़बूत (आस्मान)	सात	तुम्हारे ऊपर	और हम ने बनाए	11	कमाने का वक़्त	दिन	और हम ने बनाया	
وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ﴿١٣﴾ وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرِ									
पानी भरी बदलियाँ	से	और हम ने उतारी	13	चमकता हुआ	चिराग़	और हम ने बनाया			
مَاءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾ لِّنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ﴿١٥﴾ وَجَعَتِ الْآفَافُ ﴿١٦﴾ إِنْ									
वैशक	16	और बाग़ पत्तों में लिपटे हुए	15	और सब्ज़ी	दाना (अनाज)	उस से	ताकि हम निकालें	14	बारिश मूसलाधार
يَوْمَ الْفُصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ﴿١٧﴾ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ									
सूर में	फूँका जाएगा	दिन	17	मुक़र्रर वक़्त	है	फैलसे का दिन			
فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ﴿١٨﴾ وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ﴿١٩﴾									
19	दरवाज़े	तो हो जाएंगे	आस्मान	और खोला जाएगा	18	गिरोह दर गिरोह	फिर तुम चले आओगे		
وُسِّيرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾ إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ									
है	दोज़ख़	वैशक	20	सराब	तो हो जाएंगे	पहाड़	और चलाए जाएंगे		
مِرْصَادًا ﴿٢١﴾ لِّلطَّغِينِ مَابًا ﴿٢٢﴾ لَّبِثِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ﴿٢٣﴾									
23	मुद्दतों	उस में	वह रहेंगे	22	ठिकाना	सरकशों के लिए	21	घात	
لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾ إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾									
25	और बहती पीप	गर्म पानी	मगर	24	पीने की चीज़	और न	ठण्डक	उस में	न चखेंगे
جَزَاءً وَفَاقًا ﴿٢٦﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾									
27	हिसाब	तबक्को नहीं रखते थे			वैशक वह	26	पूरा	बदला	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है लोग आपस में किस के बारे में पूछते हैं? (1) बड़ी खबर (कियामत) के बारे में, (2) जिस में वह इखतिलाफ़ कर रहें हैं। (3) हरगिज़ नहीं, अनकरीब वह जान लेंगे, (4) फिर हरगिज़ नहीं, अनकरीब वह जान लेंगे। (5) क्या हम ने ज़मीन को नहीं बनाया बिछोना (फर्श)? (6) और पहाड़ों को कीलें, (7) और हम ने तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया, (8) और तुम्हारे लिए नीद को बनाया आराम (राहत), (9) और हम ने रात को ओढ़ना (पर्दा) बनाया, (10) और हम ने दिन को कमाने का वक़्त बनाया। (11) और हम ने बनाए तुम्हारे ऊपर सात मजबूत (आस्मान), (12) और हम ने चमकता हुआ चिराग़ (आफ़ताब) बनाया, (13) और हम ने पानी भरी बदलियों से उतारी मूसलाधार बारिश, (14) ताकि हम उस से अनाज और सब्ज़ी निकालें, (15) और पत्तों में लिपटे हुए (घने) बाग़। (16) वैशक फ़ैसले का दिन एक मुक़र्रर वक़्त है, (17) जिस दिन सूर फूँका जाएगा, फिर तुम गिरोह दर गिरोह चले आओगे, (18) और आस्मान खोला जाएगा तो (उस में) दरवाज़े हो जाएंगे, (19) और पहाड़ चलाए जाएंगे तो सराब हो जाएंगे। (20) वैशक दोज़ख़ घात है। (21) सरकशों का ठिकाना, (22) और उस में रहेंगे मुद्दतों, (23) न उस में ठण्डक (का मज़ा) चखेंगे न पीने की चीज़, (24) मगर गर्म पानी और बहती पीप, (25) (यह) पूरा पूरा बदला होगा। (26) वैशक वह हिसाब की तबक्को न रखते थे, (27)

और हमारी आयतों को झुटलाते थे झूट जान कर। (28)

और हम ने हर चीज़ गिन कर लिख रखी है, (29)

अब मज़ा चखो, पस हम तुम पर हरगिज़ न बढ़ाते जाएंगे मगर अज़ाब। (30)

वेशक परहेज़गारों के लिए कामयाबी है, (31)

बागात और अंगूर, (32)

और नौजवान औरतें हम उम्र, (33)

और छलकते हुए प्याले। (34)

वह उस में न सुनेंगे कोई बेहूदा बात और न झूट (खुराफात)। (35)

यह बदला है तुम्हारे रब का इन्आम हिसाब से (काफ़ी), (36)

रब आस्मानों का और ज़मीन का और जो कुछ उन के दरमियान है, बहुत मेहरबान, वह उस से बात करने की कुदरत नहीं रखते। (37)

जिस दिन रूह (जिब्रील (अ) और फ़रिश्ते सफ़ बान्धे खड़े होंगे, न बोल सकेंगे मगर जिस को रहमान ने इजाज़त दी और बोलेगा ठीक बात। (38)

यह दिन बरहक़ है, पस जो कोई चाहे अपने रब के पास ठिकाना बनाए। (39)

वेशक हम ने तुम्हें करीब आने वाले अज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन आदमी देख लेगा जो उस के हाथों ने आगे भेजा, और काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी होता। (40)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है क़सम है डूब कर खींचने वाले (फ़रिश्तों) की, (1)

और खोल कर छुड़ाने वालों की, (2)

और तेज़ी से तैरने वालों की, (3)

फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की, (4)

फिर हुक्म के मुताबिक़ तदबीर करने वालों की। (5)

जिस दिन कांपने वाली कांपे, (6)

और उस के पीछे आए पीछे आने वाली। (7)

कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे, (8)

وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا (۲۸) وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا (۲۹)							
और झुटलाते थे	हमारी आयतें	झूट जान कर	28	और हर चीज़	हम ने गिन रखी है	लिख कर	29
فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا (۳۰) إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا (۳۱)							
अब मज़ा चखो	हरगिज़ नहीं	बढ़ाते जाएंगे	मगर	अज़ाब	वेशक	परहेज़गारों के लिए	31
حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا (۳۲) وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا (۳۳) وَكَأْسًا دِهَاقًا (۳۴)							
बागात	और अंगूर	32	और नौजवान औरतें	हम उम्र	33	और प्याले	34
لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَابًا (۳۵) جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءٌ							
न सुनेंगे	उस में	बेहूदा	और न झूट (खुराफात)	35	यह बदला	से	इन्आम
حِسَابًا (۳۶) رَبِّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَنُ							
हिसाब से (काफ़ी)	36	रब	आस्मानों	और ज़मीन	और जो उन के दरमियान	बहुत मेहरबान	
لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا (۳۷) يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ							
वह कुदरत नहीं रखते	उस से	बात करना	37	दिन	खड़े होंगे रूह	और फ़रिश्ते	
صَفًّا لَا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ صَوَابًا (۳۸)							
सफ़ बान्धे	न बोल सकेंगे	मगर	जो-जिस	इजाज़त दी	उस को	रहमान	और ठीक बात बोलेगा
ذَلِكَ الْيَوْمِ الْحَقِّ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَآبًا (۳۹)							
यह	दिन	बरहक़	पस जो	चाहे	बनाए	अपने रब के पास	ठिकाना
إِنَّا أَنْذَرْنَكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا							
वेशक हम ने डरा दिया तुम्हें	अज़ाब	करीब के	जिस दिन	देख लेगा	आदमी	जो	
قَدَّمَتْ يَدَهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَلَيْتَنِي كُنْتُ تُرْبًا (۴۰)							
आगे भेजा उस के हाथ	और कहेगा	काफ़िर	काश मैं	होता	मिट्टी	40	
آيَاتُهَا ٤٦ ﴿ ٧٩ ﴾ سُورَةُ النَّازِعَاتِ ﴿ ٢ ﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢							
سُورَةُ النَّازِعَاتِ (79) सूरतुन नाज़िआत							
आयात 46							
खींचने वाले							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
وَالنَّازِعَاتِ غُرُقًا (۱) وَالنَّشِيطِ نَشْطًا (۲) وَالسَّابِقِ سَبَقًا (۳)							
क़सम है खींचने वाले	डूब कर	1	और छुड़ाने वाले	खोल कर	2	और तैरने वाले	तेज़ी से
فَالسَّابِقِ سَبَقًا (۴) فَالْمُدَبِّرَاتِ أَمْرًا (۵) يَوْمَ تَرْجُفُ							
फिर आगे बढ़ने वाले	दौड़ कर	4	फिर तदबीर करने वाले	हुक्म के मुताबिक़	5	दिन	कांपे
الرَّاجِفَةِ (۶) تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ (۷) قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ (۸)							
कांपने वाली	उस के पीछे आए	6	पीछे आने वाली	7	कितने दिल	उस दिन	धड़कने वाले
8							

तो यकीनन उस का ठिकाना जहन्नम है। (39)

और जो अपने रब (के सामने) खड़ा होने से डरा और उस ने रोका अपने दिल को खाहिश से, (40)

तो यकीनन उस का ठिकाना जन्नत है। (41)

वह आप (स) से पूछते हैं क़ियामत के बावत कि कब (होगा) उस का क़ियामत? (42)

तुम्हें क्या काम उस के ज़िक्र से? (43)

तुम्हारे रब की तरफ़ है उस की इन्तिहा। (44)

आप (स) सिर्फ़ डराने वाले हैं उस को जो उस से डरे। (45)

गोया वह जिस दिन उस को देखेंगे (ऐसा लगेगा कि) वह नहीं ठहरे मगर एक शाम या उस की एक सुबह। (46)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है तेवरी चढ़ाई और मुँह मोड़ लिया, (1)

कि उस के पास एक अंधा आया। (2)

और आप (स) को क्या ख़बर कि शायद वह संवर जाता, (3)

या नसीहत मान जाता कि नसीहत करना उसे नफ़ा पहुँचाता। (4)

और जिस ने बेपरवाई की। (5)

आप (स) उस के लिए फ़िक्र करते हैं। (6)

और आप (स) पर (कोई इल्ज़ाम) नहीं अगर वह न संवरे। (7)

और जो आप (स) के पास दौड़ता हुआ आया, (8)

और वह डरता है, (9)

तो आप (स) उस से तगाफ़ूल करते हैं। (10)

हरगिज़ नहीं, यह तो (किताबे) नसीहत है। (11)

सो जो चाहे इस से नसीहत कुबूल करे। (12)

वाइज़ज़त औराक़ में, (13)

बुलन्द मरतबा, इन्तिहाई पाकीज़ा, (14)

लिखने वाले हाथों में, (15)

बुजुर्ग़ नेकोकार। (16)

इन्सान मारा जाए कि कैसा नाशुक्रा है। (17)

उस (अल्लाह) ने उसे किस चीज़ से पैदा किया? (18)

एक नुत्फ़ा से उस को पैदा किया, फिर उस की तक्दीर मुकर्रर की, (19)

फिर उस की राह आसान कर दी, (20)

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۖ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ									
अपने रब	खड़ा होना	डरा	जो	और जो	39	ठिकाना	वह	जहन्नम	तो यकीनन
وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ۖ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۖ									
41	ठिकाना	वह	जन्नत	यकीनन	40	खाहिश	से	जी, दिल	और रोका
يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۖ فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرِهَا ۖ									
43	उस का ज़िक्र	से	तू	क्या	42	उस का ठहरना (क़ियामत)	कब	क़ियामत (बावत)	वह आप (स) से पूछते हैं
إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ۖ إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرٌ مَّنْ يَّخْشَاهَا ۖ									
45	उस से डरे	जो	डराने वाले	आप (स)	सिर्फ़	44	उस की इन्तिहा	तुम्हारा रब	तरफ़
كَانَهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ۖ									
46	उस की सुबह	या	एक शाम	मगर	ठहरे वह	नहीं	देखेंगे उस को	दिन	गोया वह
آيَاتُهَا ۖ (۸۰) سُورَةُ عَبَسَ ۖ زُكُوعُهَا ۖ									
रुकुअ 1 (80) सूरह अबासा आयात 42									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
عَبَسَ وَتَوَلَّىٰ ۖ (۱) أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَىٰ ۖ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهِ									
शायद वह	ख़बर आप (स) को	और क्या	2	एक अंधा	आया उस के पास	कि	1	और मुँह मोड़ लिया	तेवरी चढ़ाई
يَزْرِي ۖ (۳) أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعُهُ الذِّكْرَىٰ ۖ (۴) أَمَّا مَنْ اسْتَعْصَىٰ ۖ									
5	बेपरवाई की	जिस	जो	4	नसीहत करना	उसे नफ़ा पहुँचाता	नसीहत मानता	या	3 संवर जाता
فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّىٰ ۖ (۶) وَمَا عَلَيْكَ إِلَّا يَزْرِي ۖ (۷) وَأَمَّا مَنْ									
जो	और जो	7	वह संवरे	अगर न	आप (स) पर	और नहीं	6	फ़िक्र करते हैं	उस के लिए तो आप (स)
جَاءَكَ يَسْعَىٰ ۖ (۸) وَهُوَ يَخْشَىٰ ۖ (۹) فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ۖ (۱۰) كَلَّا									
हरगिज़ नहीं	10	तगाफ़ूल करते हैं	उस से	तो आप	9	डरता है	और वह	8	दौड़ता आया आप के पास
إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۖ (۱۱) فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ۖ (۱۲) فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۖ (۱۳)									
13	वाइज़ज़त	सहीफ़े (औराक़)	में	12	इस से नसीहत कुबूल करे	चाहे	सो जो	11	नसीहत यह तो
مَرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۖ (۱۴) بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۖ (۱۵) كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۖ (۱۶)									
16	नेकोकार	बुजुर्ग़	15	लिखने वाले	हाथों में	14	इन्तिहाई पाकीज़ा	बुलन्द मरतबा	
قُتِلَ الْإِنْسَانُ ۖ مَا أَكْفَرَهُ ۖ (۱۷) مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۖ (۱۸)									
18	उसे पैदा किया	चीज़	किस	से	17	कैसा नाशुक्रा	इन्सान	मारा जाए	
مِنْ تُطْفَةِ خَلَقَهُ فَقَدَرَهُ ۖ (۱۹) ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۖ (۲۰)									
20	उस को आसान कर दिया	राह	फिर	19	फिर उसकी तक्दीर मुकर्रर की	उसको पैदा किया	नुत्फ़ा	से	

ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ (٢١) ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ (٢٢) كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا									
फिर	उसे मुर्दा	कब्र	फिर उसे कब्र	21	फिर	जब	चाहा	उसे निकाला	22
जो	पूरा	अभी तक	हरगिज़ नहीं	22	उसे	निकाला	चाहा	जब	फिर
أَمَرَهُ (٢٣) فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامِهِ (٢٤) أَنَا صَبَبْنَا الْمَاءَ									
उस को हुक्म दिया	23	पस चाहिए कि देखे	इन्सान	तरफ़ (को)	अपना खाना	24	कि हम	ऊपर से डाला	पानी
जो	उस ने	हरगिज़	पूरा न किया	जो	उस ने	हरगिज़	पूरा न किया	जो	उस ने
صَبَّا (٢٥) ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا (٢٦) فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا (٢٧)									
गिरता हुआ	25	फिर	फाड़ा (चीरा)	ज़मीन	फाड़ कर	26	फिर हम ने उगाया	उस में	गल्ला
हम ने ऊपर से गिरता हुआ पानी डाला,	25	हम ने ऊपर से गिरता हुआ पानी डाला,	25	हम ने ऊपर से गिरता हुआ पानी डाला,	25	हम ने ऊपर से गिरता हुआ पानी डाला,	25	हम ने ऊपर से गिरता हुआ पानी डाला,	25
وَعِنْبًا وَقَضْبًا (٢٨) وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا (٢٩) وَحَدَائِقَ غُلْبًا (٣٠) وَفَاكِهَةً									
और अंगूर	और तरकारी	28	और जैतून	और खजूर	29	और बागात	घने	30	मेवा
وَأَبَا (٣١) مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ (٣٢) فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاحَّةُ (٣٣)									
और चारा	31	सामान (खाना)	तुम्हारे लिए	और तुम्हारे चौपायों के लिए	32	फिर जब	आए	कान फोड़ने वाली	33
يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ (٣٤) وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ (٣٥) وَصَاحِبَتِهِ									
जिस दिन	भागगा	आदमी	से	अपना भाई	34	और अपनी माँ	और अपना बाप	35	और अपनी वीवी
وَبَنِيهِ (٣٦) لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ (٣٧)									
और अपने बेटे	36	वास्ते हर एक	आदमी	उन से	उस दिन	हालत (फ़िक्र)	उसे काफी होगी	37	
وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ (٣٨) ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ (٣٩) وَوُجُوهٌ									
बहुत चेहरे	उस दिन	चमकते	38	हँसते	खुशियां मनाते	39	और बहुत चेहरे		
يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ (٤٠) تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ (٤١) أُولَئِكَ هُم									
उस दिन	उन पर	गुबार	40	छाई हुई	सियाही	41	यही लोग	वह	
الْكَفَرَةُ الْفَجْرَةُ (٤٢)									
		काफ़िर	गुनाहगार	42					
آيَاتُهَا ٢٩ ﴿ (٨١) سُورَةُ التَّكْوِيرِ ﴾ رُكُوعُهَا ١									
رُكُوعُ 1 (81) सूरतुत तकवीर लपेटना आयात 29									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ (١) وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ (٢) وَإِذَا الْجِبَالُ									
जब	सूरज	लपेट दिया जाएगा	1	और जब	सितारे	मांद पड़ जाएंगे	2	और जब	पहाड़
سَيِّرَتْ (٣) وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ (٤) وَإِذَا الْوُحُوشُ									
चलाए जाएंगे	3	और जब	दस माह की गाभन ऊँटनियां	छुटी फिरंगी	4	और जब	वहशी जानवर		
حُشِرَتْ (٥) وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ (٦) وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ (٧)									
इकटठे किए जाएंगे	5	और जब	दर्या	भड़काए जाएंगे	6	और जब	जानें	जोड़दी जाएंगी	7

फिर उस को मुर्दा किया, फिर उसे कब्र में पहुँचाया। (21)
 फिर जब चाहा उसे दोबारा उठा खड़ा करे, (22)
 उस ने हरगिज़ पूरा न किया जो (अल्लाह ने) उस को हुक्म दिया। (23)
 पस चाहिए कि इन्सान देख ले अपने खाने को, (24)
 हम ने ऊपर से गिरता हुआ पानी डाला, (25)
 फिर ज़मीन को फाड़ कर चीरा, (26)
 फिर हम ने उस में उगाया गल्ला, (27)
 और अंगूर और तरकारी। (28)
 और जैतून और खजूर। (29)
 और बागात घने, (30)
 और मेवा और चारा, (31)
 खोराक तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के लिए। (32)
 फिर जब आए कान फोड़ने वाली। (33)
 उस दिन भागेगा आदमी अपने भाई से, (34)
 और अपनी माँ और अपने बाप, (35)
 और अपनी वीवी और अपने बेटे से। (36)
 उस दिन उन में से हर एक आदमी को (अपनी) फ़िक्र दूसरो से बेपरवा कर देगी। (37)
 उस दिन बहुत से चेहरे चमकते होंगे, (38)
 हँसते और खुशियां मनाते। (39)
 और उस दिन बहुत से चेहरों पर गुबार होगा। (40)
 सियाही छाई हुई (होगी)। (41)
 यही लोग हैं काफ़िर गुनाहगार। (42)
 अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है
 जब सूरज लपेट दिया जाएगा, (1)
 और जब सितारे मांद पड़ जाएंगे, (2)
 और जब पहाड़ चलाए जाएंगे, (3)
 और जब दस माह की गाभन ऊँटनियां छुटी फिरंगी, (4)
 और जब वहशी जानवर इकटठे किए जाएंगे, (5)
 और जब दर्या भड़काए जाएंगे, (6)
 और जब जानें (जिस्मों से) जोड़दी जाएंगी, (7)

और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई (ज़िन्दा दरगोर) लड़की से पूछा जाएगा। (8) वह किस गुनाह में मारी गई? (9) और जब आमाल नामे खोले जाएंगे, (10) और जब आस्मान की खाल खींच ली जाएगी, (11) और जब जहन्नम भड़काई जाएगी, (12) और जब जन्नत करीब लाई जाएगी, (13) हर शख्स जान लेगा जो कुछ वह लाया है। (14) सो मैं कसम खाता हूँ (सितारे की) पीछे हट जाने वाले, (15) सीधे चलने वाले, (16) छुप जाने वाले, (17) और रात की जब वह फैल जाए, (17) और सुबह की जब वह दम भरे (नमूदार हो), (18) वेशक यह (कुरआन) कलाम है इज़्ज़त वाले कासिद (फरिश्ते) का, (19) कुव्वत वाला, अर्श के मालिक के नज़दीक बुलन्द मरतबा। (20) सब उस की इताअत करते हैं, फिर अमानतदार है। (21) और तुम्हारे रफ़ीक़ (मुहम्मद स) कुछ दीवाने नहीं, (22) और उस (मुहम्मद स) ने उस (फरिश्ते) को खुले (आस्मान) के किनारे पर देखा। (23) और वह (स) ग़ैब पर बुख़ल करने वाले नहीं। (24) और यह (कुरआन) शैतान मर्दूद का कहा हुआ नहीं, (25) फिर तुम किधर जा रहे हो? (26) यह नहीं है मगर (कितावे) नसीहत तमाम ज़हानों के लिए, (27) तुम में से जो भी चाहे कि सीधा रास्ता चले। (28) और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह चाहे तमाम ज़हानों का रब। (29) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है जब आस्मान फट जाएगा, (1) और जब सितारे झड़ पड़ेंगे, (2) और जब दर्या उबल पड़ेंगे, (3) और जब क़ब्रें कुरेदी जाएंगी, (4) हर शख्स जान लेगा कि उस ने आगे क्या भेजा और पीछे (क्या) छोड़ा? (5)

وَإِذَا الْمَوْءِدَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾ وَإِذَا الصُّحُفُ									
आमाल नामे	और जब	9	मारी गई	गुनाह	किस	8	पूछा जाएगा	ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की	और जब
نُشِرَتْ ﴿١٠﴾ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾									
12	भड़काई जाएगी	जहन्नम	और जब	11	खाल खींच ली जाएगी	आस्मान	और जब	10	खोले जाएंगे
وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾									
14	वह लाया	जो कुछ	हर शख्स	जान लेगा	13	करीब लाई जाएगी	जन्नत	और जब	
فَلَا أَقْسِمُ بِالْخُنُثِ ﴿١٥﴾ الْجَوَارِ الْكُنُثِ ﴿١٦﴾ وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾									
17	फैल जाए	जब	और रात	16	छुप जाने वाले	सीधे चलने वाले	15	पीछे हट जाने वाले	सो मैं कसम खाता हूँ
وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾ ذِي قُوَّةٍ									
कुव्वत वाला	19	इज्जत वाला	कासिद	कलाम	वेशक यह	18	दम भरे	जब	और सुबह
عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾ مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾									
21	वहां का अमानतदार	सब का माना हुआ	20	बुलन्द मरतबा	अर्श के मालिक	नज़दीक			
وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ رَأَاهُ بِالْأَفْقِ الْمُبِينِ ﴿٢٣﴾									
23	खुला	उफुक (किनारे) पर	और उस ने उस को देखा है	22	दीवाना	तुम्हारा रफ़ीक़	और नहीं		
وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٢٤﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ									
शैतान	कहा हुआ	और नहीं	24	बुखल करने वाला	ग़ैब पर	और नहीं वह			
رَّجِيمٍ ﴿٢٥﴾ فَإِنَّ تَذْهَبُونَ ﴿٢٦﴾ إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٢٧﴾									
27	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	मगर	नहीं यह	26	तुम जा रहे हो	फिर किधर	25	मर्दद
لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ﴿٢٨﴾ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا									
मगर	और तुम न चाहोगे	28	सीधा चले	कि	तुम से	चाहे	लिए-जो		
أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾									
	29	तमाम जहान	रब	अल्लाह	चाहे	यह कि			
آيَاتُهَا ١٩ ﴿سُورَةُ الْإِنْفِطَارِ﴾ ﴿رُكُوعُهَا ١﴾									
रुकुअ 1 (82) सूरतुल इफितार फट जाना आयात 19									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَشَرَتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا الْبِحَارُ									
दर्या	और जब	2	झड़ पड़ेंगे	सितारे	और जब	1	फट जाएगा	आस्मान	जब
فُجِرَتْ ﴿٣﴾ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ﴿٤﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ﴿٥﴾									
5	और पीछे छोड़ा	उस ने आगे भेजा	क्या	हर शख्स	जान लेगा	4	कुरेदी जाएगी	कब्रें	और जब
							3	उबल पड़ेंगे (बह निकलेंगे)	

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ (۶) الَّذِي خَلَقَكَ						
ऐ	इन्सान	किस चीज़ ने	अपने	करिम	6	जिस ने
تُذِيعُ مَا شَاءَ رَبُّكَ (۸) كَلَّا بَلْ						
फिर तुझे	फिर बराबर	7	में	जिस सूरत	चाहा	तुझे
ठीक किया	किया	8	जोड़ दिया	बलकि	हरगिज़ नहीं	वल्कि
تُكَذِّبُونَ بِالَّذِينَ (۹) وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ (۱۰) كِرَامًا كَتَبِينَ (۱۱)						
तुम झुटलाते	जज़ा ओ सज़ा	9	और	तुम पर	निगहवान	10
हो	का दिन	11	लिखने	इज़्ज़त	वाले	वाले
يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ (۱۲) إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ (۱۳) وَإِنَّ						
वह जानते हैं	जो तुम करते हो	12	वेशक	नेक लोग	में	जन्नत
और	वेशक	13	और	वह नहीं	15	रोज़े जज़ा ओ सज़ा
الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ (۱۴) يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ (۱۵) وَمَا هُمْ						
गुनाहगार	में	14	जहन्नम	डाले जाएंगे	उस में	रोज़े जज़ा ओ सज़ा
عَنْهَا بِغَائِبِينَ (۱۶) وَمَا آذْرُكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ (۱۷) ثُمَّ مَا						
उस से	गाइब	16	और तुम्हें क्या ख़बर	क्या	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	17
उस में	होने वाले	क्या	फिर	क्या	उस से	क्या
آذْرُكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ (۱۸) يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ						
तुम्हें ख़बर	क्या	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	18	जिस दिन	मालिक न होगा	कोई
और	तुम्हें	किसी शख्स	के लिए	कोई	शख्स	किसी शख्स
شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ (۱۹)						
कुछ	और हुक्म	उस दिन	अल्लाह	के लिए	19	
آيَاتُهَا ۚ (۸۳) سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ ۝ زُكُوعُهَا ۝						
36 آيَاتُهَا ۚ (۸۳) سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ ۝ زُكُوعُهَا ۝						
36 آيَاتُهَا ۚ (۸۳) سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ ۝ زُكُوعُهَا ۝						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ (۱) الَّذِينَ إِذَا أَكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ (۲)						
ख़राबी	कमी करने	1	वह जो	जब माप	पर	लोग
वालों के लिए	कर लें	2	कि	कर लें	पूरा भर लें	
وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ (۳) أَلَا يَظُنُّ أُولَئِكَ أَنَّهُمْ						
और	माप कर दें	या	तोल कर दें	घटा कर दें	3	क्या
जब	वह	माप कर दें	तोल कर दें	घटा कर दें	3	ख़याल
वह	माप कर दें	तोल कर दें	घटा कर दें	3	ख़याल	करते
مَبْعُوثُونَ (۴) لِيَوْمٍ عَظِيمٍ (۵) يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ						
उठाए जाने वाले हैं	4	एक दिन	बड़ा	5	दिन	लोग
रब के	सामने	लोग	खड़े होंगे	दिन	5	रब के
الْعَالَمِينَ (۶) كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينَ (۷) وَمَا آذْرُكَ						
तमाम जहान	6	हरगिज़ नहीं	आमाल	वदकार	अलवत्ता	सिज्जीन
तमाम जहान	6	हरगिज़ नहीं	आमाल	वदकार	अलवत्ता	सिज्जीन
مَا سِجِّينَ (۸) كِتَابٌ مَّرْقُومٌ (۹) وَيْلٌ لِّلْمُكَذِّبِينَ (۱۰)						
क्या है सिज्जीन	8	एक	लिखी हुई	9	ख़राबी	उस दिन
क्या है सिज्जीन	8	एक	लिखी हुई	9	ख़राबी	उस दिन

ऐ इन्सान तुझे अपने रब्बे करीम के बारे में किस चीज़ ने धोका दिया। (6)

जिस ने तुझे पैदा किया, फिर ठीक किया, फिर बराबर किया, (7)

सिज सूरत में चाहा तुझे जोड़ दिया। (8)

हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम जज़ा ओ सज़ा के दिन (क़ियामत) को झुटलाते हो, (9)

और वेशक तुम पर निगहवान (मुकर्रर) है, (10)

इज़्ज़त वाले, (आमाल) लिखने वाले। (11)

जो तुम करते हो वह जानते हैं। (12)

वेशक नेक लोग जन्नत में होंगे। (13)

और वेशक गुनाहगार जहन्नम में होंगे। (14)

उस में जज़ा ओ सज़ा (क़ियामत) के दिन डाले जाएंगे। (15)

और वह उस से गाइब न हो सकेंगे। (16)

और तुम्हें क्या ख़बर कि रोज़े जज़ा ओ सज़ा क्या है? (17)

फिर तुम्हें क्या ख़बर कि रोज़े जज़ा ओ सज़ा क्या है? (18)

जिस दिन कुछ नहीं कर सकेगा कोई शख्स किसी शख्स के लिए, उस दिन हुक्म अल्लाह ही का होगा। (19)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

ख़राबी है कमी करने वालों के लिए, (1)

जो (लोहों से) माप कर लें तो पूरा भर कर लें, (2)

और जब (दूसरों को) माप कर या तोल कर दें तो घटा कर दें। (3)

क्या यह लोग ख़याल नहीं करते कि वह उठाए जाने वाले हैं। (4)

एक बड़े दिन, (5)

जिस दिन लोग खड़े होंगे तमाम जहानों के रब के सामने। (6)

हरगिज़ नहीं, वेशक वदकारों का आमाल नामा सिज्जीन में है। (7)

और तुझे क्या ख़बर कि सिज्जीन क्या है? (8)

एक लिखी हुई किताब। (9)

उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए, (10)

जो लोग झुटलाते हैं
 रोज़े जज़ा ओ सज़ा को। (11)
 और उसे नहीं झुटलाता मगर हद
 से बढ़ जाने वाला गुनाहगार, (12)
 जब पढ़ी जाती हैं उस पर हमारी
 आयतें तो कहे: यह पहलों की
 कहानियां हैं। (13)
 हरगिज़ नहीं, बल्कि जंग पकड़ गया
 है उन के दिलों पर (उस के सबब)
 जो वह कमाते थे। (14)
 हरगिज़ नहीं, वह उस दिन
 अपने रब की दीद से रोक दिए
 जाएंगे। (15)
 फिर वेशक वह जहन्नम में दाखिल
 होने वाले हैं। (16)
 फिर कहा जाएगा कि यह वही है
 जिस को तुम झुटलाते थे। (17)
 हरगिज़ नहीं, वेशक नेक लोगों
 का आमाल नामा “इल्लियीन” में
 है। (18)
 और तुझे क्या ख़बर कि इल्लियीन
 क्या है? (19)
 एक किताब है लिखी हुई। (20)
 (उसे) देखते हैं (अल्लाह के) मुर्करव
 (नज़्दीक वाले)। (21)
 वेशक नेक बन्दे नेमतों में होंगे। (22)
 तख्त्तों (मुसन्दों) पर (बैठे) देखते
 होंगे, (23)
 तू उन के चेहरों पर नेमत की
 तरौताज़गी पाएगा। (24)
 उन्हें पिलाई जाती है ख़ालिस शराब
 मुहर बन्द, (25)
 उस की मुहर मुश्क पर जमी हुई
 (से लगी हुई), और चाहिए कि
 बाज़ी ले जाने की तमन्ना रखने
 वाले इस में बाज़ी ले जाने की
 कोशिश करें। (26)
 और उस में मिलावट है तस्नीम
 की, (27)
 यह एक चश्मा है जिस से मुर्करव
 पीते हैं। (28)
 वेशक जिन लोगों ने जुर्म किया
 (गुनाहगार) वह मोमिनों पर हैंसते
 थे। (29)
 और जब उन से हो कर गुज़रते तो
 आँख मारते। (30)
 और जब अपने घर वालों की
 तरफ़ लौटते तो हैंसते (बातें बनाते)
 लौटते। (31)
 और जब उन्हें देखते तो कहते:
 वेशक यह लोग गुमराह हैं, (32)
 और वह उन पर निगहबान
 बना कर नहीं भेजे गए। (33)

الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بَيُّومَ الدِّينِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ							
जो लोग	झुटलाते हैं	रोज़े जज़ा ओ सज़ा को	11	और नहीं झुटलाता	उस को	मगर	हर
مُعْتَدٍ اِثْمٍ ﴿١٢﴾ اِذَا تُتْلَى عَلَيْهِ اٰیٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ							
हद से बढ़ जाने वाला	गुनाहगार	12	जब	पढ़ी जाती	उस पर	हमारी आयतें	कहानियां
الْاَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوْبِهِمْ مَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾							
पहलों	13	हरगिज़ नहीं	बल्कि	जंग पकड़ गया है उन के दिल पर	जो	वह कमाते थे	14
كَلَّا اِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمِذٍ لَّمْ حٰجِبُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّهُمْ							
हरगिज़ नहीं	वेशक वह	से	अपना रब	उस दिन	देखने से महरूम रखे जाएंगे	15	फिर
لِّصَالُوْا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهٖ تُكْذِبُوْنَ ﴿١٧﴾							
दाखिल होने वाले	जहन्नम	16	फिर	कहा जाएगा	यह	वह जो कि	तुम थे
كَلَّا اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيْنَ ﴿١٨﴾ وَمَا اَدْرٰكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾							
हरगिज़ नहीं वेशक	आमाल नामा	नेक लोग	अलवत्ता में	इल्लियीन	18	और क्या	तुझे ख़बर
كِتٰبٍ مَّرْقُوْمٍ ﴿٢٠﴾ يَشْهَدُهٗ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾							
एक किताब	लिखी हुई	20	देखते हैं	नज़्दीक वाले	21	वेशक	नेक बन्दे
عَلٰى الْاَرَابِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِى وُجُوْهِهِمْ							
पर	तख्त्त (जमा)	देखते होंगे	23	तू पहचान लेगा	में	उन के चेहरे	
نَضْرَةِ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتْمُهٗ							
तर ओ ताज़गी नेमत की	24	उन्हें पिलाई जाती है	से	ख़ालिस शराब	मुहर लगी हुई	25	उस की मुहर
مِسْكٍ ۖ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَفِسُوْنَ ﴿٢٦﴾							
मुश्क	और में	उस	चाहिए कि रगवत (कोशिश) करें	रगवत करने वाले	26		
وَمَزٰجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾							
उस की आमेज़िश	से	तस्नीम	27	एक चश्मा	पीते हैं	उस से	मुर्करव
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾							
वेशक	वह लोग जो	जुर्म किया उन्होंने ने	थे	से (पर)	जो ईमान लाए (मोमिन)	हैंसते	29
وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا انْقَلَبُوْا اِلٰى							
और जब	गुज़रते	उन से	आँख मारते	30	और जब	वह लौटते	तरफ़
اَهْلِهِمْ اِنْقَلَبُوْا فَكِيْهِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا رَاوْهُمُ قَالُوْا اِنَّ							
अपने घर वाले	लौटते	हैंसते (बातें बनाते)	31	और जब	उन्हें देखते	कहते	वेशक
هٰؤُلَاءِ لَضَالُّوْنَ ﴿٣٢﴾ وَمَا اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾							
यह लोग	गुमराह (जमा)	32	और नहीं भेजे गए	उन पर	निगहबान	33	

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾ عَلَى						
पर	34	हँसते हैं	काफिर (जमा)	से (पर)	ईमान वाले	पस आज
الْأَرَابِكِ ۖ يَنْظُرُونَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثَوْبَ الْكُفَّارِ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾						
36	जो वह करते थे	काफिर (जमा)	सबाव मिल गया	क्या	35	देखते हैं
آيَاتُهَا ٢٥ ﴿٨٤﴾ سُورَةُ الْإِنْشِقَاقِ ﴿٨٤﴾ رُكُوعُهَا ١						
رुकुअ 1 (84) सूरतुल इशिकाक फट जाना आयात 25						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾ وَإِذْ أَنْتَ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا						
और जब	2	और इसी लाइक है	अपने रब का	और सुन लेगा	1	फट जाएगा
الْأَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَإِذْ أَنْتَ						
और सुन लेगा	4	और खाली हो जाएगी	जो उस में	और निकाल डालेगी	3	फैलादी जाएगी
لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ						
अपने रब की तरफ	आगे बढ़ने वाला	बेशक तू	इन्सान	ऐ	5	और इसी लाइक है
كَدْحًا فَمُلْقِيهِ ﴿٦﴾ فَمَا مِنْ أُوتَىٰ كِتَابَهُ بِإِمِينَةٍ ﴿٧﴾						
7	उस के दाएं हाथ में	उस का आमाल नामा	दिया गया	जो	पस	6
فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ﴿٨﴾ وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ						
अपने लोग	तरफ	और लौटेगा	8	आसान	हिसाब	हिसाब लिया जाएगा
مَسْرُورًا ﴿٩﴾ وَأَمَا مِنْ أُوتَىٰ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ						
पस अनकरीब	10	उस की पुश्त	पीछे	उस का आमाल नामा	दिया गया	जो
يَدْعُوا ثُبُورًا ﴿١١﴾ وَيَصْلِي سَعِيرًا ﴿١٢﴾ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ						
अपने लोग	में	था	बेशक वह	12	आग	और दाखिल होगा
مَسْرُورًا ﴿١٣﴾ إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَحُورَ ﴿١٤﴾ بَلَىٰ ۚ إِنَّ رَبَّهُ						
बेशक उस का रब	क्यों नहीं	14	हरगिज़ न लौटेगा	कि	गुमान किया	बेशक वह
كَانَ بِهِ بَصِيرًا ﴿١٥﴾ فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَاللَّيْلِ وَمَا						
और जो	और रात	16	शाम की सुखी	सो मैं कसम खाता हूँ	15	देखने वाला
وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا						
सो क्या	19	दर्जा	से	एक दर्जा	तुम को ज़रूर चढ़ता है	18
لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾ وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ﴿٢١﴾						
21	वह सिज्दा नहीं करते	कुरआन	उन पर	पढ़ा जाता है	और जब	20

पस आज ईमान वाले काफिरों पर हँसते हैं। (34)

तख्तों (मसहरियों) पर बैठे देखते हैं। (35)

क्या मिल गया काफिरों को बदला उस का जो वह करते थे। (36)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

जब आस्मान फट जाएगा, (1)

और अपने रब का (हुक्म) सुन लेगा और वह इसी लाइक है, (2)

और जब ज़मीन फैला दी जाएगी, (3)

और जो कुछ उस में है उसे निकाल डालेगी और खाली हो जाएगी, (4)

और अपने रब का (हुक्म) सुन लेगी और वह इसी लाइक है। (5)

ऐ इन्सान, बेशक तू चले जा रहा है अपने रब की तरफ मशक्कत उठाते, फिर उस को मिलना है। (6)

पस जिस को उस का आमाल नामा दाएं हाथ में दिया गया, (7)

पस उस से अनकरीब आसान हिसाब लिया जाएगा, (8)

और वह अपने लोगों की तरफ खुश खुश लौटेगा। (9)

और वह जिस को उस का आमाल नामा उस की पीठ पीछे दिया गया, (10)

वह अनकरीब मौत मांगेगा, (11)

और जहन्नम में जा पड़ेगा। (12)

बेशक वह अपने लोगों में खुश ओ खुर्रम था। (13)

उस ने गुमान किया था कि वह हरगिज़ न लौटेगा। (14)

क्यों नहीं? उस का रब बेशक उसे देखता था। (15)

सो मैं कसम खाता हूँ शाम की सुखी की, (16)

और रात की और जो सिमट आती है। (17)

और चाँद की जब मुकम्मल हो जाए, (18)

तुम को दर्जा व दर्जा ज़रूर चढ़ना है। (19)

सो उन्हें क्या हो गया है कि वह ईमान नहीं लाते? (20)

और जब उन पर कुरआन पढ़ा जाता है तो वह सिज्दा नहीं करते। (21)

बल्कि जिन लोगों ने कुफ़ किया (मुन्किर) वह झुटलाते हैं, (22) और अल्लाह खूब जानता है जो वह (दिलों में) भर रखते हैं, (23) सो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी सुना। (24) सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे काम किए, उन के लिए ख़तम न होने वाला अजर है। (25)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है बुर्जों वाले आस्मान की क़सम, (1) और वादा किए हुए दिन की, (2) और देखने वाले की और देखी जाने वाली चीज़ की। (3)

हलाक कर दिए गए ख़न्दकों वाले, (4) (उन ख़न्दकों वाले) जिन में ईंधन की आग थी, (5)

जब वह उस पर बैठे थे, (6) और जो मोमिनों के साथ करते थे (अपनी आँखों से) देखते थे। (7) और उन्होंने ने (मोमिनों से) बदला नहीं लिया मगर इस बात का कि वह ईमान लाए अल्लाह पर जो ग़ालिब है तारीफ़ों वाला, (8)

जिस की वादशाहत है आस्मानों और ज़मीन में, और अल्लाह हर चीज़ पर वाख़बर है। (9)

वेशक जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को तकलीफ़ें दी, फिर उन्होंने ने तौबा न की तो उन के लिए जहन्नम का अज़ाब है और उन के लिए जलने का अज़ाब है, (10)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे जारी हैं नहरें, यह बड़ी कामयाबी है। (11)

वेशक तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। (12)

वेशक वही पहली बार पैदा करता है और (वही) लौटाता है। (13)

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ﴿٢٢﴾ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ﴿٢٣﴾								
23	भर रखते हैं	जो	खूब जानता है	और अल्लाह	22	झुटलाते हैं	जिन लोगों ने कुफ़ किया (मुन्किर)	बल्कि
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٤﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا								
उन्होंने ने काम किए		जो लोग ईमान लाए		सिवाए	24	दर्दनाक	अज़ाब की	सो उन्हें खुशख़बरी सुनाओ
الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٢٥﴾								
25	न ख़तम होने वाला			अजर		उन के लिए	अच्छे	
آيَاتُهَا ٢٢ ﴿٨٥﴾ سُورَةُ الْبُرُوجِ ﴿٨٥﴾ زُكُوعُهَا ١								
रुकुअ 1			(85) सूरतुल बुरूज			आयात 22		
تारे और सय्यारे								
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ								
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है								
وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ﴿١﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ﴿٢﴾ وَشَاهِدٍ								
और देखने वाले	2	वादा किए हुए		और दिन की		1	बुर्जाँ वाला क़सम आस्मान की	
وَمَشْهُودٍ ﴿٣﴾ قُلِ اصْحَابُ الْأُحْدُودِ ﴿٤﴾ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ﴿٥﴾								
5	ईंधन वाली	आग	4	गढ़े वाले		हलाक कर दिए गए	3	और देखी जाने वाली
إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ﴿٦﴾ وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ								
वह करते थे		जो	पर	और वह	6	बैठे थे	उस पर	जब वह
بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ﴿٧﴾ وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ								
अल्लाह पर	वह ईमान लाए	कि	मगर	उन से	और नहीं बदला लिया	7	देखते	मोमिनों के साथ
الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿٨﴾ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ								
और ज़मीन	आस्मान (जमा)	वादशाहत		उस के लिए	वह जो कि	8	तारीफ़ों वाला	ग़ालिब
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ								
मोमिन मर्द (जमा)	तक्लीफ़ें दी	वह जो	वेशक	9	सामने (वाख़बर)	चीज़	हर	पर और अल्लाह
وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ								
अज़ाब	और उन के लिए	जहन्नम	अज़ाब	तो उन के लिए	उन्होंने ने तौबा न की	फिर	और मोमिन औरतें	
الْحَرِيقِ ﴿١٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ								
बागात	उन के लिए	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए		वेशक	10	जलना
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ﴿١١﴾ إِنَّ								
वेशक	11	बड़ी	कामयाबी	यह	नहरें	उन के नीचे	से	जारी है
بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ﴿١٢﴾ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ﴿١٣﴾								
13	और लौटाता है	पहली बार पैदा करता है	वही	वेशक वह	12	बड़ी सख्त	तुम्हारा रब	पकड़

وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ﴿١٤﴾ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ﴿١٥﴾ فَعَالٌ لِّمَا									
जो	कर डालने वाला	15	बड़ी बुजुर्गी वाला	अर्श वाला (मालिक)	14	मुहब्बत वाला	बख़्शने वाला	और वह	
يُرِيدُ ﴿١٦﴾ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ﴿١٧﴾ فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ﴿١٨﴾									
18	और समूद	फ़िरऔन	17	लशकर (जमा)	वात	तुझ को आई (पहुँची)	क्या	16	वह चाहे
بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ﴿١٩﴾ وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ﴿٢٠﴾									
20	घेरे हुए	उन को हर तरफ़	से	और अल्लाह	19	झुटलाना	मैं उन्होंने ने कुफ़ किया	वह जो कि	बल्कि
بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ﴿٢١﴾ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ﴿٢٢﴾									
22	महफूज़	लौहे	में	21	बड़ी बुजुर्गी वाला	कुरआन	यह		बल्कि
آيَاتُهَا ١٧ ﴿ ٨٦ ﴾ سُورَةُ الطَّارِقِ ﴿ ١ ﴾ رُكُوعُهَا ١									
(86) सूरतुत तारिक चमकता हुआ सितारा आयात 17									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾									
2	क्या है तारिक	और तुम ने क्या समझा	1	और रात को आने वाली की	कसम है आस्मान की				
النَّجْمِ الثَّاقِبِ ﴿٣﴾ إِنَّ كُلَّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾									
4	निगहवान	उस पर	मगर	जान	कोई नहीं	3	चमकता हुआ	सितारा	
فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾ خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾									
6	उछलता हुआ	पानी	से	पैदा किया गया	5	पैदा किया गया है	किस चीज़ से	इन्सान	चाहिए कि देखे
يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ﴿٧﴾ إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ									
उस को दोबारा लौटाना	पर	वेशक वह	7	और सीना	पीठ	दरमियान	से	निकलता है	
لَقَادِرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ﴿٩﴾ فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ									
कुव्वत	से	तो न उस के लिए	9	राज़	जांचे जाएंगे	दिन	8	कादिर	
وَلَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾ وَالْأَرْضِ									
और ज़मीन की	11	बारिश वाला	कसम आस्मान की	10	मददगार	और न			
ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾ إِنَّهُ لَقَوْلُ فَصْلٍ ﴿١٣﴾ وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾									
14	बेहूदा बात	यह	और नहीं	13	फ़ैसला कर देने वाला	कलाम	वेशक यह	12	फट जाने वाली
إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ﴿١٥﴾ وَأَكِيدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾ فَمَهْلِ الْكَافِرِينَ									
काफ़िर (जमा)	पस ढील दो	16	एक तदवीर	और मैं तदवीर करता हूँ	15	तदवीर	तदवीर करते हैं	वेशक वह	
أَمْهَلُهُمْ رُؤْيَدًا ﴿١٧﴾									
		17	थोड़ी	ढील दो उन्हें					

और वही बख्शने वाला मुहब्बत करने वाला है, (14) अर्श का मालिक बड़ी बुजुर्गी वाला, (15) जो चाहे कर डालने वाला। (16) क्या तुम्हारे पास लशकरो की बात (खबर) पहुँची, (17) फिरऔन और समूद की। (18) बल्कि जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर) झुटलाने में (लगे हुए हैं), (19) और अल्लाह उन्हें हर तरफ़ से घेरे हुए है। (20) बल्कि यह कुरआन बड़ी बुजुर्गी वाला है, (21) लौहे महफूज़ में (लिखा हुआ)। (22) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कसम है आस्मान की और “तारिक” (रात को आने वाले) की। (1) और तुम ने क्या समझा कि “तारिक” क्या है? (2) चमकता हुआ सितारा। (3) कोई जान नहीं जिस पर (कोई) निगहवान न हो। (4) और इन्सान को चाहिए कि देखे वह किस चीज़ से पैदा किया गया है? (5) वह पैदा किया गया उछलते हुए पानी से, (6) जो निकलता है पीठ और सीने के दरमियान से। (7) वेशक वह (अल्लाह) उस को दोबारा लौटाने पर कादिर है। (8) जिस दिन (लोगों के) राज़ जांचे जाएंगे। (9) तो न उसे (इन्सान को) कोई कुव्वत होगी और न मददगार। (10) कसम आस्मान की, बारिश वाला। (11) और ज़मीन की, फट जाने वाली। (12) वेशक यह कलाम है फैसला कर देने वाला, (13) और यह हंसी मज़ाक़ नहीं। (14) वेशक वह (उल्टी उल्टी) तदवीरें करते हैं, (15) और मैं (भी) एक तदवीर करता हूँ। (16) पस ढील दो काफ़िरों को थोड़ी ढील। (17)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है पाकीज़गी बयान कर अपने सब से बुलन्द रब के नाम की, (1) जिस ने पैदा किया फिर ठीक किया, (2) और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया फिर राह दिखाई, (3) और जिस ने चारा उगाया, (4) फिर उसे खुश्क सियाह कर दिया। (5) हम जल्द आप (स) को पढ़ाएंगे, फिर आप (स) न भूलेंगे, (6) मगर जो अल्लाह चाहे, बेशक वह जानता है ज़ाहिर भी और पोशीदा भी। (7) और हम आप (स) को आसान तरीक़े की सहूलत देंगे। (8) पस आप (स) समझा दें अगर समझाना नफ़ा दे। (9) जो डरता है वह जल्द समझ जाएगा, (10) और उस से बदबख्त पहलू तही करेगा, (11) जो बहुत बड़ी आग में दाख़िल होगा। (12) फिर न मरेगा वह उस में और न जिएगा। (13) यकीनन उस ने फ़लाह पाई जो पाक हुआ, (14) और उस ने अपने रब का नाम याद किया, फिर नमाज़ पढ़ी। (15) बल्कि तुम दुन्यवी ज़िन्दगी को तरजीह देते हो। (16) और (जबकि) आख़िरत बेहतर और बाकी रहने वाली है। (17) बेशक यह पहले सहीफ़ों में (भी कही गई थी), (18) इब्राहीम (अ) और मूसा (अ) के सहीफ़ों में। (19) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है क्या तुम्हारे पास ढांपने वाली (क़ियामत) की बात पहुँची। (1) कितने ही मुँह उस दिन ज़लील ओ आजिज़ होंगे, (2) अमल करने वाले, मुशक़क़त उठाने वाले। (3) दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे, (4) खौलते हुए चश्मे से (पानी) पिलाए जाएंगे, (5) न उन के लिए खाना होगा मगर ख़ार दार घास से, (6) जो न मोटा करेगी और न भूक से बेनियाज़ करेगी। (7)

آيَاتُهَا ١٩ ﴿٨٧﴾ سُورَةُ الْأَعْلَى ﴿٨٨﴾ سُورَةُ الْغَاشِيَةِ ﴿٨٩﴾ زُكُوعُهَا ١																	
रुकुअ 1					(87) सूरतुल आला					आयात 19							
					सब से बुलन्द												
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ																	
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है																	
سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ﴿١﴾ الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّى ﴿٢﴾ وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى ﴿٣﴾ وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَى ﴿٥﴾																	
पाकीज़गी बयान कर		नाम		अपना रब		सब से बुलन्द		1		जिस ने		पैदा किया		2		और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया	
फिर राह दिखाई		3		और जिस ने		निकाला (उगाया)		चारा		4		फिर उसे कर दिया		खुश्क		सियाह	
سَنُقَرِّبُكَ فَلَا تَنْسَى ﴿٦﴾ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَى ﴿٧﴾ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَى ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ إِنْ نَفَعَتِ الذِّكْرَى ﴿٩﴾ سَيَذَكِّرُ مَنْ يَخْشَى ﴿١٠﴾ وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَى ﴿١٢﴾																	
हम जल्द पढ़ाएंगे आप (स) को		6		मगर जो		अल्लाह चाहे		बेशक वह		जानता है		ज़ाहिर		और जो			
पोशीदा		7		और हम आप (स) को सहूलत देंगे		आसान तरीक़ा		8		पस समझा दें		अगर		नफ़ा दे		समझाना	
जल्द समझ जाएगा		9															
مَنْ يَخْشَى ﴿١٠﴾ وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَى ﴿١٢﴾																	
जो		10		और पहलू तही करेगा उस से		बद बख्त		11		जो		दाख़िल होगा		आग		बहुत बड़ी	
जो		12															
ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ﴿١٣﴾ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَالْآخِرَةَ خَيْرٌ ﴿١٧﴾ إِنَّ هَذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَى ﴿١٨﴾ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ﴿١٩﴾																	
फिर		न मरेगा वह		उस में		और न जिएगा		13		यकीनन उस ने फ़लाह पाई		जो		पाक हुआ		14	
और याद किया		नाम															
رَبِّهِ فَصَلَّى ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَالْآخِرَةَ خَيْرٌ ﴿١٧﴾ إِنَّ هَذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَى ﴿١٨﴾ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ﴿١٩﴾																	
अपना रब		फिर नमाज़ पढ़ी		15		बल्कि		बढ़ाते हो (तरजीह)		ज़िन्दगी		दुनिया		16		आर आख़िरत	
बेहतर																	
وَأَبْقَى ﴿١٧﴾ إِنَّ هَذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَى ﴿١٨﴾ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ﴿١٩﴾																	
और बाकी रहने वाली		17		बेशक यह		में		पहले सहीफ़े		18		सहीफ़े		इब्राहीम (अ)		और मूसा (अ)	
19																	
آيَاتُهَا ٢٦ ﴿٨٨﴾ سُورَةُ الْغَاشِيَةِ ﴿٨٩﴾ زُكُوعُهَا ١																	
रुकुअ 1					(88) सूरतुल ग़ाशिया					आयात 26							
					छा जाने वाली												
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ																	
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है																	
هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾ وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿٢﴾ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾ تَصْلَى نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾ تُسْقَى مِنْ عَيْنٍ آنِيَةٍ ﴿٥﴾ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ صَرِيحٍ ﴿٦﴾ لَا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ﴿٧﴾																	
क्या तुम्हारे पास आई		बात		ढांपने वाली		1		कितने मुँह		उस दिन		ज़लील ओ आजिज़		2		अमल करने वाले	
मुशक़क़त उठाने वाले		3		दाख़िल होंगे		आग		दहकती हुई		4		पिलाए जाएंगे		से		चश्मा	
खौलता हुआ		5		नहीं													
لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ صَرِيحٍ ﴿٦﴾ لَا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ﴿٧﴾																	
उन के लिए		खाना		मगर		से		ख़ारदार घास		6		न मोटा करेगी		न बेनियाज़ करेगी		से	
भूक		7															

وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ نَاعِمَةٌ ۝ ۸ ۝ لَسَعِيهَا رَاضِيَةٌ ۝ ۹ ۝ فِي جَنَّةٍ							
बाग	में	9	खुश खुश	अपनी कोशिश से	8	तर ओ ताज़ा	उस दिन
عَالِيَةٍ ۝ ۱۰ ۝ لَا تَسْمَعُ فِيهَا لِأَغْيَةٍ ۝ ۱۱ ۝ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝ ۱۲ ۝ فِيهَا							
उस में	12	बहता हुआ	चश्मा	उस में	11	बेहूदा बकवास	उस में
سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ۝ ۱۳ ۝ وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ۝ ۱۴ ۝ وَنَمَارِقُ							
और गद्दे	14	चुने हुए	और कटोरे	13	ऊँचे ऊँचे	तख्त	
مَصْفُوفَةٌ ۝ ۱۵ ۝ وَزَرَائِي مَبْثُوثَةٌ ۝ ۱۶ ۝ أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبْلِ							
ऊँट	तरफ	क्या वह नहीं देखते?	16	बिखरे हुए	और कालीन	15	तरतीब से लगे हुए
كَيْفَ خُلِقَتْ ۝ ۱۷ ۝ وَالْإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝ ۱۸ ۝ وَالْإِلَى الْجِبَالِ							
पहाड़ (जमा)	और तरफ	18	बुलन्द किया गया	कैसे	आस्मान	और तरफ	17
كَيْفَ نُصِبَتْ ۝ ۱۹ ۝ وَالْإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝ ۲० ۝							
20	बिछाई गई	कैसे	ज़मीन	और तरफ	19	खड़े किए गए	कैसे
فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝ ۲१ ۝ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيِّرٍ							
22	दारोगा	उन पर	नहीं आप	21	समझाने वाले	आप	सिर्फ
إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ۝ ۲३ ۝ فَيَعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝ ۲४ ۝							
24	बड़ा	अज़ाब	पस उसे अज़ाब देगा अल्लाह	23	और कुफ़ किया	मुँह मोड़ा	जो-मगर जिस
إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۝ ۲५ ۝ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۝ ۲६ ۝							
26	उन का हिसाब	हम पर	बेशक	फिर	25	उन का लौटना	हमारी तरफ
آيَاتُهَا ۲۰ ۝ ﴿ ۸۹ ۝ سُورَةُ الْفَجْرِ ۝ ﴾ ۝ زُكُوعُهَا ۱							
रुकुअ 1 (89) सूरतुल फ़ज्र आयत 30 सुबह सवेरा							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
وَالْفَجْرِ ۝ ۱ ۝ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝ २ ۝ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝ ३ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا							
जब	और रात की	3	और ताक की	और जुफ्त की	2	दस	और रातों की
يَسْرِ ۝ ४ ۝ هَلْ فِي ذَلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرِ ۝ ۵ ۝ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ							
मामला किया	कैसा	क्या तुम ने नहीं देखा	5	हर अक्लमन्द के नज़दीक	क़सम	इस	में
رَبُّكَ بِعَادٍ ۝ ۶ ۝ إِرْمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝ ۷ ۝ الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا							
उस जैसा	नहीं पैदा किया गया	वह जो	7	सुतूनों वाले	इरम	6	आद के साथ
فِي الْبِلَادِ ۝ ۸ ۝ وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝ ९ ۝							
9	वादी में	काटे (तराशे) सख्त पत्थर	जिन्होंने ने	और समूद	8	शहरों में	

कितने ही मुँह उस दिन तर ओ ताज़ा होंगे। (8) अपनी कोशिश (कमाई) से खुश खुश, (9) बुलन्द बाग में, (10) उस में वह न सुनेंगे बेहूदा बकवास, (11) उस में एक बहता हुआ चश्मा है। (12) उस में ऊँचे ऊँचे तख्त हैं, (13) और आबखोरे चुने हुए, (14) और गद्दे तरतीब से लगे हुए, (15) और कालीन बिखरे हुए (फैले हुए)। (16) क्या वह नहीं देखते? ऊँट की तरफ कि वह कैसे पैदा किए गए। (17) और आस्मान की तरफ कि कैसे बुलन्द किया गया? (18) और पहाड़ों की तरफ कि कैसे खड़े किए गए? (19) और ज़मीन की तरफ कि कैसे बिछाई गई? (20) पस आप समझाते रहें, आप (स) सिर्फ समझाने वाले हैं। (21) आप (स) उन पर दारोगा नहीं, (22) मगर जिस ने मुँह मोड़ा और कुफ़ किया (मुनक्किर हो गया), (23) पस अल्लाह उसे अज़ाब देगा बहुत बड़ा अज़ाब। (24) बेशक उन्हें हमारी तरफ लौटना है, (25) फिर बेशक हम पर (हमारा काम) है उन का हिसाब लेना। (26) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है क़सम फ़ज्र की, (1) और दस रातों की, (2) और जुफ्त और ताक की, (3) और रात की जब वह चले। (4) क्या इस में (इन चीज़ों की) क़सम हर अक्लमन्द के नज़दीक मोतबर है? (5) क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने क्या मामला किया आद के साथ, (6) इरम के सुतूनों वाले, (7) उस जैसी क़ौम दुनिया के मुल्कों में पैदा नहीं की गई। (8) और समूद के साथ जिन्होंने ने वादी में सख्त पत्थर तराशे, (9)

और कीलों वाले फ़िराइन के साथ, (10)

जिन्होंने शहरों में सरकशी की, (11)

फिर उन शहरों में बहुत फ़साद किया। (12)

पस उन पर तुम्हारे रब ने अज़ाब का कोड़ा बरसा दिया। (13)

वेशक तुम्हारा रब घात में है। (14)

पस इन्सान को जब उस का रब आज़माए, फिर उस को इज़्ज़त दे और नेमत दे, तो वह कहे कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी। (15)

और जब उसे आज़माए और उसे रोज़ी अन्दाज़े से (तंग कर के) दे तो वह कहे कि मेरे रब ने मुझे ज़लील किया। (16)

हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते, (17)

और रग़बत नहीं देते मिस्कीन को खाना खिलाने की, (18)

और तुम माले मीरास समेट समेट कर खाते हो, (19)

और माल से मुहब्बत करते हो बहुत ज़ियादा मुहब्बत। (20)

हरगिज़ नहीं, जब ज़मीन कूट कूट कर पस्त कर दी जाए, (21)

और आए तुम्हारा रब और (आएँ) फ़रिश्ते क़तार दर क़तार। (22)

और उस दिन जहन्नम लाई जाए, उस दिन इन्सान सोचेगा और उसे कहां सोचना (नफ़ा) देगा? (23)

कहेगा ऐ काश! मैं ने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए पहले (नेक अमल) भेजा होता। (24)

पस उस दिन उस जैसा अज़ाब कोई न देगा, (25)

न उस जैसा बान्धना कोई बान्ध कर रखेगा। (26)

ऐ रहे मुत्मइन (इत्मीनान वाली)। (27)

लौट चल अपने रब की तरफ़, वह तुझ से राज़ी, तू उस से राज़ी, (28)

पस दाख़िल हो जा मेरे बन्दों में। (29)

और दाख़िल हो जा मेरी जन्नत में। (30)

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ (١٠) الَّذِينَ طَعَوْا فِي الْبِلَادِ (١١)						
और फ़िराइन	कीलों वाला	10	वह जिन्होंने ने	सरकशी की	शहरों में	11
فَاكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ (١٢) فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ						
बहुत किया	उस में	फ़साद	12	पस बरसा दिया	उन पर	तुम्हारा रब कोड़ा
عَذَابٍ (١٣) إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ (١٤) فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا						
अज़ाब	13	वेशक	तुम्हारा रब	घात में	14	पस जो इन्सान जब
مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَآكَرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ (١٥)						
उस को आज़माए	उस का रब	उस को इज़्ज़त दे	और उसे नेमत दे	तो वह कहे	मेरा रब	मुझे इज़्ज़त दी 15
وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي						
और जब	उसे आज़माए	उसे अन्दाज़े से देता है	उस पर	उस का रिज़्क	तो वह कहे	मेरा रब
أَهَانَنِ (١٦) كَلَّا بَلْ لَا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ (١٧) وَلَا تَحْضُونَ						
मुझे ज़लील किया	16	हरगिज़ नहीं, बल्कि	इज़्ज़त नहीं करते	यतीम	17	और रग़बत नहीं देते
عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ (١٨) وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا (١٩)						
पर	खाना	मिस्कीन	18	और तुम खाते हो	माले मीरास	खाना समेट कर 19
وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا (٢٠) كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ						
और मुहब्बत करते हो	माल	मुहब्बत	बहुत	20	हरगिज़ नहीं जब	पस्त कर दी जाएगी ज़मीन
دَكًّا دَكًّا (٢١) وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا (٢٢) وَجِئَاءَ						
कूट कूट कर	21	और आएगा	तुम्हारा रब	और (आएँ) फ़रिश्ते	क़तार दर क़तार	22 और लाई जाए
يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّى لَهُ						
उस दिन	जहन्नम में	उस दिन	सोचेगा	इन्सान	और कहां	उस के लिए
الذِّكْرَى (٢٣) يَقُولُ يَلِيَتَنِي قَدَمْتُ لِحَيَاتِي (٢٤) فَيَوْمَئِذٍ						
सोचना	23	वह कहेगा	ऐ काश	मैं ने पहले भेजा होता	अपनी ज़िन्दगी के लिए	24 पस उस दिन
لَا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ (٢٥) وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ						
अज़ाब न देगा	उस का अज़ाब	कोई	25	और न बान्ध कर रखे	उस का बान्धना	
أَحَدٌ (٢٦) يَا أَيُّهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِي إِلَىٰ						
कोई	26	ऐ	नफ्स	मुत्मइन	लौट चल	तरफ़
رَبِّكَ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً (٢٨) فَادْخُلِي فِي عِبْدِي (٢٩)						
अपने रब	राज़ी	वह तुझ से राज़ी	28	पस दाख़िल हो	में	मेरे बन्दे 29
وَادْخُلِي جَنَّتِي (٣٠)						
और दाख़िल हो	मेरी जन्नत	30				

آيَاتُهَا ٢٠ ﴿٩٠﴾ سُورَةُ الْبَلَدِ ﴿٩١﴾ رُكُوعُهَا ١									
रुकुअ 1		(90) सूरतुल बलद					आयात 20		
शहर									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
لَا أُقْسِمُ بِهَذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾ وَوَالِدِ									
और	वालिद की	2	शहर	इस	हलाल	कर लिया गया	और	आप (स)	1
وَمَا وَلَدٌ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ ﴿٤﴾ أَيْحَسِبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ									
हरगिज़	बस	नहीं	चलेगा	कि	क्या वह गुमान	करता है	4	मुशक्कत में	इन्सान
عَلَيْهِ أَحَدٌ ﴿٥﴾ يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُبَدًا ﴿٦﴾ أَيْحَسِبُ أَنْ لَمْ يَرَوْا									
उस को	नहीं	देखा	कि	क्या वह गुमान	करता है	6	ढेरों	माल	उड़ा दिया
أَحَدٌ ﴿٧﴾ أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيْنَاهُ									
और हम ने	उसे	दिखाए	9	और	दो होंट	और ज़वान	8	दो आँखें	उस के लिए
التَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾ فَكُّ									
छुड़ाना	12	अक्वा	क्या	तुम	समझे	और	क्या	11	घाटी
رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ أَوْ إِطْعَمٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾									
गर्दन	(असीर)	13	या	खाना	खिलाना	में	दिन	भूक वाले	14
أَوْ مَسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا									
और वाहम	वसीयत की	जो ईमान लाए		से	हो	फिर	16	खाक नशीन	मिस्कीन
بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْمِيمَنَةِ ﴿١٨﴾									
18	सीधे हाथ वाले			(खुश नसीब)		वह (यही)	लोग	17	रहम खाने की
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤَصَّدَةٌ ﴿٢٠﴾									
20	मूंदी (बन्द)	की हुई	आग	उन पर	19	वाएँ हाथ वाले		(बद बख्त)	वह
وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ﴿١﴾ وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَّهَا ﴿٢﴾ وَالنَّهَارِ إِذَا									
जब	और	दिन की	2	उस के पीछे	निकले	जब	और	चाँद की	1
جَلَّهَا ﴿٣﴾ وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ﴿٤﴾ وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا ﴿٥﴾									
5	उसे	बनाया	और	जिस	और	आस्मान की	4	उसे	ढांप दे
वह रोशन करदे									

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है नहीं, मैं इस शहर की कसम खाता हूँ, (1) और आप (स) को इस शहर में हलाल कर लिया गया है, (2) और (कसम खाता हूँ) वालिद की और औलाद की, (3) तहकीक हम ने इन्सान को मुशक्कत में (गिरफ्तार) पैदा किया। (4) क्या वह गुमान करता है कि उस पर हरगिज़ किसी का बस नहीं चलेगा? (5) वह कहता है कि मैं ने ढेरों माल उड़ा दिया। (6) क्या वह गुमान करता है कि उस को किसी ने नहीं देखा? (7) क्या हम ने नहीं बनाई? उस की दो आँखें, (8) और ज़वान और दो होंट, (9) और हम ने उसे दो रास्ते दिखाए। (10) पस वह दाखिल न हुआ “अक्वा” (घाटी) में। (11) और तुम क्या मझे कि “अक्वा” क्या है? (12) गर्दन छुड़ाना (असीर का आज़ाद कराना)। (13) या खाना खिलाना भूक वाले दिन में, (14) क़राबतदार (रिशतेदार) यतीम को, (15) या खाक नशीन मिस्कीन को। (16) फिर हो उन लोगों में से जो ईमान लाए और उन्होंने ने वाहम वसीयत की सब्र की और वाहम रहम खाने की। (17) यही लोग हैं खुश नसीब। (18) और जिन लोगों ने हमारी आयतों का इन्कार किया वह बदबख्त लोग हैं। (19) उन पर आग मूंदी हुई है (उन्हें आग में बन्द कर दिया गया है)। (20) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कसम है सूरज की और उस की रोशनी की, (1) और चाँद की जब उस के पीछे से निकले। (2) और दिन की जब वह उसे रोशन कर दे, (3) और रात की जब वह उसे ढाँप ले, (4) और कसम है आस्मान की और जिस ने उसे बनाया, (5)

और ज़मीन की और जिस ने उसे फैलाया, (6)
और इन्सान की और जिस ने उसे दुरुस्त किया, (7)
फिर डाली उस के दिल में उस के गुनाह और परहेज़गारी (की समझ)। (8)
तहकीक कामयाब हुआ जिस ने उस को पाक किया, (9)
और तहकीक नामुराद हुआ जिस ने उसे खाक में मिलाया। (10)
समूद ने अपनी सरकशी (कि वजह) से झुटलाया, (11)
जब उन का वदबख्त उठ खड़ा हुआ। (12)
तो उन से अल्लाह के रसूल ने कहा: (खबरदार हो) अल्लाह की ऊँटनी और उस के पानी पीने की बारी से। (13)
फिर उन्होंने ने उस को झुटलाया और उस की कूँचे काट डाली, फिर उन के रब ने उन पर उन के गुनाह के सबब हलाकत डाली, फिर उन्हें बराबर कर दिया, (14)
और वह उस के अन्जाम से नहीं डरता। (15)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है रात की कसम जब वह ढांप ले, (1)
और दिन की जब वह रोशन हो, (2)
और उस की जो उस ने नर ओ मादा पैदा किए। (3)
वेशक तुम्हारी कोशिशें मुख्तलिफ़ है। (4)
सो जिस ने दिया और परहेज़गारी इख्तियार की, (5)
और अच्छी बात को सच जाना, (6)
पस हम अन्नकरीब उस के लिए आसानी (की तौफीक) कर देंगे। (7)
और जिस ने बुख़ल किया और वेपरवाह रहा। (8)
और झुटलाया अच्छी बात को, (9)
पस हम अन्नकरीब उस के लिए दुश्वारी (ग़लत रास्ता) आसान कर देंगे। (10)
और उस का माल उस को फ़ाइदा न देगा जब वह नीचे गिरेगा। (11)
वेशक हमारा ज़िम्मा है राह दिखाना। (12)
और वेशक दुनिया ओ आख़िरत हमारे हाथ में है। (13)
पस मैं तुम्हें डराता हूँ भड़कती हुई आग से। (14)
उस में सिर्फ़ वदबख्त दाख़िल होगा, (15)
जिस ने झुटलाया और मुँह मोड़ा। (16)
और अन्नकरीब उस से परहेज़गार बचा लिया जाएगा। (17)
जो अपना माल देता है (अपना दिल) पाक साफ़ करने को। (18)

وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَّهَا ۖ وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۖ فَالْهَمَّهَا فَجُورَهَا ۖ وَتَقْوَاهَا ۖ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ۖ									
और ज़मीन की	और जिस	उसे फैलाया	6	और नफ्स (इन्सान) की	और जिस	उसे दुरुस्त किया	7	उस के दिल में डाली	उस का गुनाह
وَتَقْوَاهَا ۖ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ۖ									
और उस की परहेज़गारी	8	कामयाब हुआ	जो	उस को पाक किया	9	और तहकीक नामुराद हुआ	जो	उसे खाक में मिलाया	10
كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۖ إِذِ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا ۖ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۖ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا ۖ فَدَمْدَمَ									
झुटलाया	समूद	अपनी सरकशी	11	जब	उठ खड़ा हुआ	उस का वद बख्त	12	तो कहा	उन से
رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۖ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا ۖ فَدَمْدَمَ									
अल्लाह का रसूल	अल्लाह की ऊँटनी	और उस की पानी की बारी	13	फिर उस को झुटलाया	फिर उस की कूचे काट डाली	फिर हलाकत डाली			
عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذُنُوبِهِمْ فَسَوَّاهَا ۖ وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۖ									
उन पर	उन का रब	उन के गुनाह के सबब	उन को बराबर कर दिया	14	और वह नहीं डरता	उस का अन्जाम	15		
آيَاتُهَا ۖ سُوْرَةُ اللَّيْلِ ۖ زُكُوْعُهَا ۖ									
आयात 21									
रुकुअ 1									
(92) सूरतुल लैल रात									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى ۖ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى ۖ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ									
रात की कसम	जब	वह ढांप ले	1	और दिन की	जब वह रोशन हो	2	और जो उस ने पैदा किया	नर	
وَالْأُنْثَى ۖ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّى ۖ فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى ۖ									
और मादा	3	वेशक	तुम्हारी कोशिश	4	सो जो	जिस	दिया	और परहेज़गारी इख्तियार की	5
وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى ۖ فَسَنِيْسِرُهُ لِيُسْرَى ۖ وَأَمَّا									
और सच जाना	और अच्छी बात को	6	पस अन्नकरीब उसे आसान कर देंगे	आसानी	7	और जो			
مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى ۖ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى ۖ فَسَنِيْسِرُهُ									
जिस ने बुख़ल किया	और वेपरवाह रहा	8	और झुटलाया	अच्छी बात को	9	पस अन्नकरीब उसे आसान कर देंगे			
لِلْعُسْرَى ۖ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّى ۖ إِنَّ عَلَيْنَا									
दुश्वारी-सख्ती	10	और न फाइदा देगा	उस को	उस का माल	जब नीचे गिरेगा वह	11	वेशक हम पर (हमारा ज़िम्मा)		
لِلْهُدَى ۖ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَى ۖ فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا									
अलबत्ता राह दिखाना	12	और वेशक हमारे लिए	आख़िरत	और दुनिया	13	पस मैं तुम्हें डराता हूँ	आग		
تَلْظَى ۖ لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۖ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۖ									
भड़कती हुई	14	न दाख़िल होगा उस में	मगर	इन्तिहाई वद बख्त	15	जिस ने झुटलाया	और मुँह मोड़ा	16	
وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۖ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّى ۖ									
और अन्नकरीब उस से बचा लिया जाएगा	बड़ा परहेज़गार	17	जो	देता है	अपना माल	पाक करने को	18		

١
٢١
١٢

وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَى إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِهِ										
रज़ा	चाहता है	सिर्फ	19	बदला दी जाए	नेमत	से	उस पर	और नहीं किसी के लिए		
رَبِّهِ الْأَعْلَى (٢٠) وَلَسَوْفَ يَرْضَى (٢١)										
		21	राज़ी होगा	और अनकरीब	20	बुलन्द ओ बरतर	अपना रब			
آيَاتُهَا ١١ ﴿٩٣﴾ سُورَةُ الضُّحَى ﴿٩٤﴾ رُكُوعُهَا ١										
रुकुअ 1			(93) सूरतुध धुहा			आयात 11				
			रोज़े रोशन							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है										
وَالضُّحَى (١) وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَى (٢) مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى (٣)										
3	बेज़ार हुआ	और न	आप का रब	आप (स) को नहीं छोड़ा	2	छाजाए	जब	और रात की	1	कसम है धूप चढ़ने की (आफ़ताब)
وَلَاخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَى (٤) وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَى (٥) أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَى (٦) وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهْدَى (٧) وَوَجَدَكَ عَابِلًا فَأَعْنَى (٨) فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ (٩)										
आप का रब	आप (स) को अता करेगा	और अनकरीब	4	पहली	से	आप (स) के लिए	बेहतर	और आखिरत		
وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ (١٠) وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ (١١)										
11	सो इज़हार करें	अपना रब	नेमत	और जो	10	तो न झिड़कें	सवाल करने वाला	और जो		
آيَاتُهَا ٨ ﴿٩٤﴾ سُورَةُ الشَّرْحِ ﴿٩٥﴾ رُكُوعُهَا ١										
रुकुअ 1			(94) सूरतुश शर्ह			आयात 8				
			खोलना							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है										
أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ (١) وَوَضَعْنَا عَنكَ وَزْرَكَ (٢)										
2	आप (स) का बोझ	आप (स) से	और हम ने उतार दिया	1	आप (स) का सीना	आप (स) के लिए	खोल दिया	क्या नहीं		
الَّذِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ (٣) وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ (٤) فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا (٥) إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا (٦) فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ (٧)										
साथ	पस वेशक	4	आप (स) का ज़िक्र	आप (स) के लिए	और हम ने बुलन्द किया	3	आप (स) की पुश्त	तोड़ दी	जो - जिस	
وَالْعُسْرِ يُسْرًا (٥) إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا (٦) فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ (٧)										
7	मेहनत करें	आप (स) फारिग हों	पस जब	6	आसानी	साथ दुश्वारी	वेशक	5	आसानी	दुश्वारी
وَالْيَ إِلَى رَبِّكَ فَارْغَبْ (٨)										
			8	रग़बत करें	अपना रब	और तरफ				

और किसी का उस पर एहसान नहीं कि जिस का बदला दे, (19) सिर्फ अपने बुजुर्ग ओ बरतर रब की रज़ा चाहता है। (20) और अनकरीब राज़ी होगा। (21) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है क़सम है आफ़ताव की रोशनी की, (1) और रात की जब वह छाजाए, (2) आप (स) के रब ने आप (स) को नहीं छोड़ा और न वेज़ार हुआ। (3) और आखिरत आप (स) के लिए पहली (हालत) से बेहतर है। (4) और अनकरीब आप (स) को आप का रब अता करेगा, पस आप (स) राज़ी हो जाएंगे। (5) क्या आप (स) को यतीम नहीं पाया? पस ठिकाना दिया, (6) और आप (स) को बेख़बर पाया तो हिदायत दी, (7) और आप (स) को मुफ़लिस पाया तो ग़नी कर दिया। (8) पस जो यतीम हो उस पर क़हर न करें, (9) और जो सवाल करने वाला हो उसे न झिड़कें। (10) और जो आप (स) के रब की नेमत है उसे इज़हार करें। (11) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है क्या हम ने आप (स) का सीना नहीं खोल दिया? (1) और आप (स) से आप का बोझ उतार दिया। (2) जिस ने तोड़ दी (झुका दी) आप (स) की पुश्त, (3) और हम ने आप (स) का ज़िक्र बुलन्द किया। (4) पस वेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (5) वेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (6) पस जब आप (स) फ़ारिग हों तो (इबादत में) मेहनत करें। (7) और अपने रब की तरफ़ रग़बत करें (दिल लगाएं)। (8)

١
٢١
١٩

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कसम है अंजीर की और जैतून की, (1)

और तूरे सीना की, (2)

और इस अमन वाले शहर की, (3)

अलवत्ता हम ने इन्सान को बेहतरीन साख्त में पैदा किया। (4)

फिर उसे सब से नीची (पस्त तरीन) हालत में लौटा दिया, (5)

सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए तो उन के लिए खतम न होने वाला अजर है। (6)

पस कौन झुटलाएगा आप (स) को इस के बाद रोजे जज़ा ओ सज़ा के मामले में? (7)

क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है? (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है पढ़िए अपने रब के नाम से जिस ने (सब को) पैदा किया, (1)

इन्सान को जमे हुए खून से पैदा किया, (2)

पढ़िए और आप (स) का रब सब से बड़ा करीम है, (3)

जिस ने क़लम से सिखाया, (4)

इन्सान को सिखाया जो वह न जानता था। (5)

हरगिज़ नहीं, इन्सान सरकशी करता है। (6)

इस वजह से कि वह अपने आप को वे नियाज़ देखता है। (7)

वेशक अपने रब की तरफ़ लौटना है। (8)

क्या तुम ने उसे देखा जो रोकता है। (9)

एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़े। (10)

भला देखो, अगर (वह बन्दा) हिदायत पर हो, (11)

या परहेज़गारी का हुक्म देता हो। (12)

भला देखो, अगर (यह रोकने वाला) झुटलाता और मुँह मोड़ता हो। (13)

क्या उस ने न जाना कि अल्लाह देख रहा है? (14)

हरगिज़ नहीं, अगर वाज़ न आया तो पेशानी के वालों से (पकड़ कर) हम ज़रूर घसीटेंगे। (15)

झूटी गुनाहगार पेशानी। (16)

तो बुला ले अपनी मजलिस (जत्थे) को, (17)

آيَاتُهَا ٨ ﴿٩٥﴾ سُورَةُ التَّيْنِ ﴿٩٦﴾ رُكُوعُهَا ١									
आयात 8			(95) सूरतुत तीन				रुकुअ 1		
			अंजीर						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
وَالَّتَيْنِ وَالزَّيْتُونِ ١ وَطُورِ سَيْنِينَ ٢ وَهَذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ٣									
कसम है अंजीर की	1	और तूरे सीना की	2	और इस	शहर	अमन वाला	3		
لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ٤ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَفَلِينَ ٥ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ٦									
अलवत्ता हम ने पैदा किया	इन्सान	में	बेहतरीन	सांचा (साख्त)	4	फिर	हम ने उसे लौटा दिया	सब से नीचा	
नीचों वाला	5	सिवाए जो लोग	ईमान लाए	और अमल किए	नेक	तो उन के लिए	अजर	न	खतम होने वाला
فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالذِّينِ ٧ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمَ الْحَكَمِينَ ٨									
पस कौन आप (स) को झुटलाएगा	इस के बाद	दीन के मामले में	7	क्या नहीं अल्लाह	सब से बड़ा हाकिम	तमाम हाकिम	8		
آيَاتُهَا ١٩ ﴿٩٦﴾ سُورَةُ الْعَلَقِ ﴿٩٧﴾ رُكُوعُهَا ١									
आयात 19			(96) सूरतुल अलक				रुकुअ 1		
			जमा हुआ खून						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ١ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ٢									
पढ़िए	नाम से	अपना रब	जिस ने	पैदा किया	1	पैदा किया	इन्सान	से	जमा हुआ खून
اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ٣ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ٤ عَلَّمَ الْإِنْسَانَ									
पढ़िए	और आप का रब	बड़ा करीम	3	वह जिस ने	सिखाया	क़लम से	4	सिखाया	इन्सान
مَا لَمْ يَعْلَمْ ٥ كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَّا ٦ أَنْ رَأَاهُ اسْتَغْنَى ٧ إِنَّ									
जो न	वह जानता था	5	वह	हरगिज़ नहीं वेशक	इन्सान	सरकशी करता है	6	कि अपने तई देखे	वेशक
إِلَىٰ رَبِّكَ الرَّجْعَىٰ ٨ أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ٩ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ١٠									
तरफ़	अपना रब	लौटना है	8	क्या आप ने देखा	वह जो	रोकता है	9	एक बन्दा	जब
أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَىٰ الْهُدَىٰ ١١ أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ١٢ أَرَأَيْتَ إِنْ									
भला देखो	अगर	हो	पर	हिदायत	11	या हुक्म देता	12	भला देखो	अगर
كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ١٣ أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ١٤ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ١٥									
झुटलाता	और मुँह मोड़ता	13	क्या न जाना	कि अल्लाह	देख रहा है	14	हरगिज़ नहीं	अगर	न वाज़ आया
لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ١٥ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ١٦ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ١٧									
हम ज़रूर घसीटेंगे	पेशानी के वालों से	15	पेशानी	झूटी	गुनाहगार	16	तो वह बुला ले	अपनी मजलिस	17

हम बुलाते हैं प्यादों को। (18)

नहीं नहीं, उस की बात न मानें और आप (स) सिज्दा करें और (अपने रब की) नज्दीकी हासिल करें। (19)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

वेशक हम ने यह (कुरआन) उतारा लैलतुलक़द्र में। (1)

और आप क्या जानें कि “लैलतुलक़द्र” क्या है? (2)

लैलतुलक़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है, (3)

इस में उतरते हैं फ़रिश्ते और रूह (रूहुल अमीन) अपने रब के हुक्म से हर काम (के इन्तिज़ाम के लिए)। (4)

तुलअ़ फ़ज़्र तक, यह रात सलामती (ही सलामती) है। (5)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जिन लोगों ने कुफ़्र किया अहले किताब और मुश्रिकों में से, बाज़ आने वाले न थे यहां तक कि उन के पास खुली दलील आए, (1)

अल्लाह का रसूल पाक सहीफ़े पढ़ता हुआ, (2)

जिस में रास्त और दुरुस्त तहरीरें लिखी हुई हों। (3)

और अहले किताब फ़िर्का फ़िर्का न हुए मगर उस के बाद कि उन के पास आगई खुली दलील। (4)

और उन्हें सिर्फ़ यह हुक्म दिया गया था कि वह अल्लाह की इबादत करें उस के लिए ख़ालिस करते हुए दीन (बन्दगी) यक़ रूख़ हो कर, और नमाज़ काइम करें और ज़कात अदा करें, और यही मज़बूत दीन है। (5)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया अहले किताब और मुश्रिकों में से, वह जहन्नुम की आग में हमेशा रहेंगे, यही लोग बदतरीन मख़लूक हैं। (6)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अमल किए नेक, यही लोग बेहतरीन मख़लूक है। (7)

उन की ज़ज़ा उन के रब के पास हमेशा रहने वाले बागात हैं, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह अल्लाह से राज़ी हुए, यह उस के लिए है जो अपने रब से डरे। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है जब ज़मीन ज़लज़ले से हिला दी जाएगी, (1)

और अपने बोझ बाहर निकाल डालेगी, (2)

और कहेगा इन्सान कि इस को क्या हो गया? (3)

उस दिन वह अपने हालात बयान करेगी, (4)

क्योंकि तेरे रब ने उसे हुक्म भेजा होगा। (5)

उस दिन लोग मुख्तलिफ़ गिरोहों में बाहर निकलेंगे ताकि उन के आमांल उन्हें दिखाए जाएं। (6)

पस जिस ने की होगी एक ज़रा बराबर नेकी वह उसे देख लेगा। (7)

और जिस ने की होगी एक ज़रा बराबर बुराई वह उसे देख लेगा। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है क़सम है दौड़ने वाले, हांपते हुए घोड़ों की, (1)

(सुम) झाड़ कर चिंगारियां उड़ाने वालों की, (2)

सुबह के वक़्त (शब खून मार कर) ग़ारतगिरी करने वालों की, (3)

फिर उस (दौड़ने) से गर्द उड़ाने वालों की, (4)

फिर उस (गर्द की आड़) से मज्मा में घुस जाने वालों की, (5)

वेशक इन्सान अपने रब का नाशुक्रा है। (6)

और वेशक वह उस पर गवाह है। (7)

और वेशक वह माल की मुहब्बत में सख़्त है। (8)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ﴿٧﴾									
वेशक	जो लोग ईमान लाए	और उन्होंने ने अमल किए नेक	यही लोग	वह	बेहतरीन	मखलूक	7		
جَزَاؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ﴿٨﴾									
उन की जज़ा	पास	उन का रब	बागात	हमेशा रहने वाले	बहती है	उन के नीचे से	नहरें	हमेशा रहेंगे	
उस में	हमेशा हमेशा	उन से	राज़ी हुआ अल्लाह	और वह राज़ी	उस से	यह	उस के लिए जो	डरे	अपना रब
آيَاتُهَا ٨ ﴿٩٩﴾ سُورَةُ الزَّلْزَالِ ﴿١٠٠﴾ رُكُوعُهَا ١									
8 आयत (99) सूरतुज़ ज़िलज़ाल भौचाल, ज़लज़ला रुकुअ 1									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿١﴾ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ﴿٢﴾									
जब	हिला डाली जाए	ज़मीन	उस का ज़लज़ला	1	और बाहर निकाल डाले	ज़मीन	अपने बोझ	2	
وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ﴿٣﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ﴿٤﴾ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ﴿٥﴾ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ﴿٦﴾ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ﴿٧﴾									
और कहेगा	इन्सान	इसे क्या हो गया?	3	उस दिन	बयान करेगी	अपनी ख़बरें (हालात)	4	क्यों कि	
وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ﴿٨﴾									
तेरा रब	हुक्म भेजा	उस को	5	उस दिन	बाहर निकलेंगे	लोग	मुख्तलिफ़ गिरोहों	ताकि दिखाए	
उन के आमांल	6	पस जिस ने	की होगी	बराबर	एक ज़रा	नेकी	उस को देखेगा	7	
وَالْعَدِيَّتِ صَبْحًا ﴿١﴾ فَالْمُورِيَّتِ قَدْحًا ﴿٢﴾ فَالْمُغِيرَتِ صَبْحًا ﴿٣﴾									
क़सम है दौड़ने वाले घोड़ों की	हांपने वाले	1	चिंगारियां उड़ाने वाले	(सुम) झाड़ कर	2	ग़ारतगिरी करने वाले	सुबह को	3	
فَآثَرْنَ بِهِ نَفْعًا ﴿٤﴾ فَوَسَطْنَ بِهِ جَمْعًا ﴿٥﴾ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ									
फिर उड़ाए	उस से	गर्द	4	फिर जा घुसें	उस से	मज्मा	5	वेशक	इन्सान
नाशुक्रा	6	और वेशक वह उस पर	गवाह	7	और वेशक वह	मुहब्बत में	माल ओ दौलत	अलबत्ता सख्त	8
لَكُنُودٌ ﴿٦﴾ وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ﴿٧﴾ وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ﴿٨﴾									

﴿٩﴾ وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ﴿١٠﴾												
10	सीने (दिल)	में	जो	और सामने आजाएगा	9	कब्रों	में	जो	उठाए जाएंगे	जब	वह जानता	पस क्या नहीं
إِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ﴿١١﴾												
		11	खूब बाख़बर	उस दिन	उन से	उन का रब	वेशक					
آيَاتُهَا ١١ ﴿سُورَةُ الْقَارِعَةِ﴾ ﴿١٠١﴾ ﴿رُكُوعُهَا ١﴾												
रुकुअ 1				﴿101﴾ सूरतुल कारिआ खड़खड़ाने वाली				आयात 11				
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ												
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है												
﴿٣﴾ الْقَارِعَةُ ﴿١﴾ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٢﴾ وَمَا أَذْرَكَ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٣﴾												
3	क्या है खड़खड़ाने वाली	तुम समझे	और क्या	2	क्या है खड़खड़ाने वाली	1	खड़खड़ाने वाली					
يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ﴿٤﴾ وَتَكُونُ الْجِبَالُ												
पहाड़	और होंगे	4	बिखरे हुए	परवानों की तरह	लोग	होंगे	जिस दिन					
كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ﴿٥﴾ فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ﴿٦﴾												
6	उस के वज़न	भारी हुए	जो	पस जो	5	धुन्की हुई	रंगीन ऊन की मानिंद					
فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ﴿٧﴾ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ﴿٨﴾												
8	उस के वज़न	हल्के हुए	जो	और जो	7	पसंदीदा	ऐश ओ आराम	में	सो वह			
فَأَمُّهُ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾ وَمَا أَذْرَكَ مَا هِيَ ﴿١٠﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾												
11	दहकती हुई	आग	10	क्या है वह?	और तुम क्या समझे	9	हाविया	तो उस का ठिकाना				
آيَاتُهَا ٨ ﴿سُورَةُ التَّكْوِيْنِ﴾ ﴿١٠٢﴾ ﴿رُكُوعُهَا ١﴾												
रुकुअ 1				﴿102﴾ सूरतुल तकासुर कसूरत की खाहिश				आयात 8				
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ												
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है												
أَلْهَكُمُ التَّكْوِيْنُ ﴿١﴾ حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ﴿٢﴾ كَلَّا سَوْفَ												
अनकरीब	हरगिज़ नहीं	2	कब्रें	तुम ने ज़ियारत की	यहां तक कि	1	कसूरत की खाहिश	तुम्हें ग़फ़लत में रखा				
تَعْلَمُونَ ﴿٣﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ												
काश तुम जानते	हरगिज़ नहीं	4	तुम जान लोगे	जल्द	हरगिज़ नहीं	3	तुम जान लोगे					
عِلْمَ الْيَقِيْنِ ﴿٥﴾ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ﴿٦﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ﴿٧﴾												
7	यकीन की आँख	ज़रूर उसे देखोगे	फिर	6	जहन्नम	तुम ज़रूर देखोगे	5	इल्मे यकीन				
ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾												
	8	नेमतें	से (बावत)	उस दिन	तुम ज़रूर पूछे जाओगे	फिर						

क्या वह नहीं जानता कि जब उठाए जाएंगे मुर्दे जो कब्रों में हैं? (9) और हासिल कर लिया जाएगा जो सीनों में है। (10) वेशक उन का रब उस दिन उन से खूब बाख़बर होगा। (11) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है खड़खड़ाने वाली, (1) क्या है खड़खड़ाने वाली? (2) और तुम क्या समझे कि क्या है खड़खड़ाने वाली? (3) जिस दिन होंगे लोग परवानों की तरह बिखरे हुए, (4) और पहाड़ होंगे धुन्की हुई रंगीन ऊन की तरह। (5) पस जिस के (नेक) वज़न भारी हुए, (6) सो वह पसंदीदा आराम में होगा। (7) और जिस के वज़न हल्के हुए, (8) तो उस का ठिकाना “हाविया” होगा। (9) और तुम क्या समझे कि वह क्या है? (10) वह आग है दहकती हुई। (11) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है तुम्हें हसूले कसूरत की खाहिश ने ग़फ़लत में रखा, (1) यहां तक कि तुम कब्रों तक पहुंच जाते हो। (2) हरगिज़ नहीं, तुम जल्द जान लोगे, (3) फिर हरगिज़ नहीं, तुम जल्द जान लोगे। (4) हरगिज़ नहीं, काश तुम इल्मे यकीन से जानते होते। (5) तुम ज़रूर देखोगे जहन्नम को। (6) फिर तुम उसे ज़रूर यकीन की आँख से देखोगे। (7) फिर तुम उस दिन ज़रूर पूछे जाओगे (सवाल जवाब होगा) नेमतों की बावत। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरवान, रहम करने वाला है
जमाने की कसम, (1)
वेशक इन्सान खसारे में है, (2)
सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए
और उन्होंने ने नेक अमल किए और
एक दूसरे को हक की वसीयत की
और सब्र की वसीयत (तलकीन)
की। (3)

अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरवान, रहम करने वाला है
खराबी है हर ताना ज़न ऐब लगाने
वाले के लिए, (1)
जिस ने माल जमा किया और उसे
गिन गिन कर रखा, (2)
वह गुमान करता है कि उस का
माल उसे हमेशा रखेगा, (3)
हरगिज़ नहीं, वह ज़रूर “हुत्मा”
में डाला जाएगा। (4)

और तुम क्या समझे कि “हुत्मा”
क्या है? (5)
अल्लाह की आग भड़काई हुई, (6)
जो दिलों तक जा पहुँचेगी। (7)
वेशक वह उन पर ढांक कर बन्द
करदी जाएगी। (8)
लम्बे लम्बे सुतूनों में। (9)

अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरवान, रहम करने वाला है
क्या आप (स) ने नहीं देखा कि आप
के रब ने क्या सुलूक किया हाथी
वालों से? (1)
क्या उन का दाओ नहीं कर दिया
वेकार? (2)
और उन पर झुंड के झुंड परिन्दे
भेजे (3)
वह उन पर कंकरियां फेंकते थे
पकी हुई मिट्टी की। (4)
पस उन को खाए हुए भूसे के
मानिंद कर दिया। (5)

آيَاتُهَا ٣ ﴿١٠٣﴾ سُورَةُ الْعَصْرِ ﴿١﴾ رُكُوعُهَا ١									
1 रुकुअ		(103) सूरतुल अस्र				3 आयात			
जमाना									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
وَالْعَصْرِ ﴿١﴾ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ﴿٢﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿٣﴾									
जो लोग ईमान लाए	सिवाए	2	खसारा	में	इन्सान	वेशक	1	जमाने की कसम	
3	सब्र की	और वसीयत की	हक की	और एक दूसरे को वसीयत की	और उन्होंने ने अमल किए नेक				
آيَاتُهَا ٩ ﴿١٠٤﴾ سُورَةُ الْهُمَزَةِ ﴿١﴾ رُكُوعُهَا ١									
1 रुकुअ		(104) सूरतुल हुमाज़ा				9 आयात			
ताना ज़न									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ﴿١﴾ الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ﴿٢﴾									
2	उसे गिन गिन कर रखा	माल	जमा किया	जिस	1	ऐब जू	ताना ज़न	वास्ते - हर	खराबी
يَحْسِبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ﴿٣﴾ كَلَّا لَيُبَدِّلَنَ فِي الْحُطْمَةِ ﴿٤﴾ وَمَا									
और क्या	4	“हुत्मा”	में	ज़रूर डाला जाएगा	हरगिज़ नहीं	3	उसे हमेशा रखेगा	उस का माल	कि वह गुमान करता है
أَذْرَكَ مَا الْحُطْمَةُ ﴿٥﴾ نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ ﴿٦﴾ الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى									
पर	जा पहुँचे वह	जो कि	6	भड़काई हुई	अल्लाह की आग	5	“हुत्मा” क्या है?	तुम समझे	
الْأَفِيدَةِ ﴿٧﴾ إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّوْصَدَةٌ ﴿٨﴾ فِي عَمَدٍ مُمَدَّدَةٍ ﴿٩﴾									
9	लम्बे लम्बे	सुतून	में	8	बन्द की हुई	उन पर	वेशक वह	7	दिल (जमा)
آيَاتُهَا ٥ ﴿١٠٥﴾ سُورَةُ الْفِيلِ ﴿١﴾ رُكُوعُهَا ١									
1 रुकुअ		(105) सूरतुल फील				5 आयात			
हाथी									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ﴿١﴾ أَلَمْ يَجْعَلْ									
कर दिया उस ने	क्या नहीं	1	हाथी वालों के साथ	तुम्हारा रब	किया	कैसा	क्या तुम ने नहीं देखा		
كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ﴿٢﴾ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ﴿٣﴾									
3	झुंड के झुंड	परिन्दे	उन पर	और भेजे	2	गुमराही में (वेकार)	उन का दाओ		
تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ﴿٥﴾									
5	खाए हुए	भूसे की तरह	पस उन को कर दिया	4	संगे गिल	से	कंकरियां	फेंकते थे	

١
ع
٢٨

١
ع
٢٩

١
ع
٣٠

آيَاتُهَا ٤ ﴿ ١٠٦ ﴾ سُورَةُ قُرَيْشٍ ﴿ ١ رُكُوعُهَا ١﴾

(106) सूरह कुरैश

कुरैश का कबीला

आयात 4

रुकुअ 1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

لَا يَلِفُ قُرَيْشٍ ﴿ ١﴾ الْفِيهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ﴿ ٢﴾

2	और गर्मी	सर्दी	सफर	उन का मानूस करना	1	कुरैश	मानूस करने के सबब

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ﴿ ٣﴾ الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُوعٍ

भूक	से-में	उन्हें खाना दिया	जो-जिस	3	घर	इस	रब	पस चाहिए कि वह इबादत करें

وَأَمْنَهُمْ مِنْ خَوْفٍ ﴿ ٤﴾

	4	खौफ	से-में	और उन्हें अमन दिया			

آيَاتُهَا ٧ ﴿ ١٠٧ ﴾ سُورَةُ الْمَاعُونِ ﴿ ١ رُكُوعُهَا ١﴾

(107) सूरतुल माऊन

रोज़ाना इस्तेमाल की छोटी चीज़ें

आयात 7

रुकुअ 1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْإِيمَانِ ﴿ ١﴾ فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ الْيَتِيمَ ﴿ ٢﴾

2	यतीम	धक्के देता है	जो कि	यही है वह	1	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	झुटलाता है	वह जो कि	क्या तुम ने देखा

وَلَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿ ٣﴾ فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ﴿ ٤﴾

4	नमाज़ियों के लिए	पस खराबी	3	मिस्कीन	खाना	पर	रगवत दिलाता	और नहीं

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ﴿ ٥﴾ الَّذِينَ هُمْ

वह	जो कि	5	गाफिल (जमा)	अपनी नमाज़	से	वह	जो कि

يُرَاءُونَ ﴿ ٦﴾ وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ﴿ ٧﴾

	7	आम ज़रूरत की चीज़	रोकते हैं (नहीं देते)	6	दिखावा करते हैं		

آيَاتُهَا ٣ ﴿ ١٠٨ ﴾ سُورَةُ الْكَوثرِ ﴿ ١ رُكُوعُهَا ١﴾

(108) सूरतुल कौसर

वे शुमार भलाइयाँ

आयात 3

रुकुअ 1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ﴿ ١﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ

अपने रब के लिए	पस नमाज़ पढ़ें	1	कौसर	हम ने आप (स) को अता किया	वेशक हम		

وَأَنْحَرُ ﴿ ٢﴾ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ﴿ ٣﴾

3	दुम कटा-नामुराद-वे नसल	वह	आप (स) का दुश्मन	वेशक	2	और कुरबानी दें	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

मेहरवान, रहम करने वाला है

कुरैश को मानूस करने के सबब, (1)

उन्हें सर्दी गर्मी के सफ़र से मानूस करने के सबब। (2)

पस चाहिए कि वह इबादत करें इस घर के रब की, (3)

जिस ने उन्हें खाना दिया भूक में, और अमन दिया खौफ में। (4)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

क्या तुम ने उस शख्स को देखा जो रोज़े जज़ा ओ सज़ा को झुटलाता है? (1)

वही है जो यतीम को धक्के देता है, (2)

और नहीं उकसाता मिस्कीन को खाना खिलाने पर। (3)

पस खराबी है उन नमाज़ियों के लिए, (4)

जो अपनी नमाज़ों से लापरवाह है, (5)

जो दिखावा करते हैं, (6)

और आम ज़रूरत की चीज़ (भी मांगी) नहीं देते। (7)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

वेशक हम ने आप (स) को “कौसर” अता किया। (1)

पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ें और कुरबानी दें। (2)

वेशक आप (स) का दुश्मन ही नामुराद है। (3)

अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरवान, रहम करने वाला है
कह दीजिए: ऐ काफ़िरो! (1)
मैं इबादत नहीं करता जिन की तुम
इबादत करते हो, (2)
और न तुम इबादत करने वाले हो
उस की जिस की मैं इबादत करता
हूँ। (3)
और न मैं इबादत करने वाला हूँ
जिन की तुम ने इबादत की, (4)
और न तुम इबादत करने वाले हो
उस की जिस की मैं इबादत करता
हूँ। (5)
तुम्हारे लिए तुम्हारा दिन और मेरे
लिए मेरा दिन। (6)
अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरवान, रहम करने वाला है
जब अल्लाह की मदद आजाए और
फ़तह (हो जाए)। (1)
और आप (स) देखें कि लोग दाख़िल
हो रहे हैं अल्लाह के दिन में फ़ौज
दर फ़ौज। (2)
पस अपने ख़ब की तारीफ़ के साथ
पाकी बयान करें और उस से
बख़्शिश तलब करें, वेशक़ वह बड़ा
तौबा कुबूल करने वाला है। (3)
अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरवान, रहम करने वाला है
अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए
और वह हलाक हुआ। (1)
उस के काम न आया उस का माल
और जो उस ने कमाया। (2)
अनक़रीब दाख़िल होगा शोले
मारती हुई आग में। (3)
और उस की बीवी लादने वाली
ईधन, (4)
उस की गर्दन में खज़ूर की छाल
की रस्सी होगी। (5)

۞ آیَاتُهَا ۶ ۞ (۱۰۹) سُورَةُ الْكَافِرُونَ ۞ زُكُوعُهَا ۱									
1 रुकुअ			(109) सूरतुल काफिरून कुफ़ करने वाले				6 आयात		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
قُلْ يَٰأَيُّهَا الْكَافِرُونَ ﴿١﴾ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٢﴾									
कह दीजिए	ऐ	काफ़िरो	1	मैं इबादत नहीं करता	जिस की तुम इबादत करते हो	2			
وَلَا أَنْتُمْ عِبَادُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿٣﴾ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ﴿٤﴾									
और न	तुम	इबादत करने वाले	जिस की मैं इबादत करता हूँ	और न	मैं इबादत करने वाला	जिस की तुम ने इबादत की	4		
وَلَا أَنْتُمْ عِبَادُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿٥﴾ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ﴿٦﴾									
और न तुम	इबादत करने वाले	जिस की मैं इबादत करता हूँ	5	तुम्हारे लिए	तुम्हारा दिन	और मेरे लिए	मेरा दिन	6	
۞ آیَاتُهَا ۳ ۞ (۱۱۰) سُورَةُ النَّصْرِ ۞ زُكُوعُهَا ۱									
3 आयात			(110) सूरतुन नसर मदद				1 रुकुअ		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ﴿١﴾ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ﴿٢﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ									
जब	आजाए	अल्लाह की मदद	और फ़तह	1	और आप (स) देखें	लोग	दाख़िल हो रहे हैं	में	
إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ﴿٣﴾									
	वेशक वह	है	बड़ा तौबा कुबूल करने वाला	3					
۞ آیَاتُهَا ۵ ۞ (۱۱۱) سُورَةُ تَبَّتْ ۞ زُكُوعُهَا ۱									
5 आयात			(111) सूरह तब्वत आग की लपट, शोला				1 रुकुअ		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ﴿١﴾ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ﴿٢﴾ سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ﴿٣﴾ وَأَمْرَاتُهُ خَمَالَهٖ									
टूट गए	दोनों हाथ	अबू लहब	और वह हलाक हुआ	1	न	काम आया	उस के	उस का माल	और जो
الْحَطَبِ ﴿٤﴾ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ﴿٥﴾									
उस ने कमाया	2	अनकरीब दाख़िल होगा	आग	शोले मारती	3	और उस की बीवी	लादने वाली		
लकड़ी (ईंधन)	4	में	उस की गर्दन	रस्सी	से	खजूर	5		

آيَاتُهَا ٤ ﴿١١٢﴾ سُورَةُ الْإِخْلَاصِ ﴿١﴾ رُكُوعُهَا ١	अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है
1 रक़ुअ सुर्तुल इख़लास (112) 4 आयात ख़ालिस	कह दीजिए: वह अल्लाह एक है, (1)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	अल्लाह बेनियाज़ है, (2)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है	न उस ने (किसी को) जना और न (किसी ने) उस को जना, (3)
قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ (١) اللَّهُ الصَّمَدُ (٢) لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ (٣) وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ (٤)	और उस का कोई हमसर नहीं। (4)
कह दीजिए वह अल्लाह एक 1 और नही 3 और न वह जना गया 4 कोई हमसर उस का है	अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है
1 रक़ुअ सुर्तुल फ़लक (113) 5 आयात सुबह	कह दीजिए: मैं पनाह में आता हूँ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	सुबह के रव की, (1)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है	उस के शर से जो उस ने पैदा किया, (2)
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ (١) مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (٢) وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ (٣) وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ (٤) وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ (٥)	और अन्धेरे के शर से जब कि वह छा जाए, (3)
कह दीजिए मैं पनाह में आता हूँ रव की सुबह 1 से शर जो उस ने पैदा किया 2 फूँके मारने वालीयाँ शर और से 3 छा जाए जब अन्धेरा शर और से 4 गिरहें में 5 वह हसद करे जब हसद करने वाले और शर से 4 गिरहें में 5	और शर से हसद करने वाले के जब वह हसद करे। (5)
1 रक़ुअ सुर्तुल ऩास (114) 6 आयात लोग	अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	लोगों के रव की, (1)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है	लोगों के वादशाह की, (2)
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ (١) مَلِكِ النَّاسِ (٢) إِلَهِ النَّاسِ (٣) مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ (٤) الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ (٥) مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ (٦)	लोगों के माबूद की, (3)
कह दीजिए मैं पनाह में आता हूँ रव की लोग 1 वादशाह लोग 2 माबूद लोग 3 लुप कर हमला करने वाले वस्वसा डालने वाले शर से 4 जो वस्वसा डालता है में 5 और इन्सान जिन्न (जमा) से 5 लोग सीने (दिल) 6	वस्वसा डालने वाले, पलट पलट कर हमला करने वाले के शर से, (4)
1 रक़ुअ सुर्तुल ऩास (114) 6 आयात लोग	जो वस्वसा डालता है लोगों के दिलों में, (5)
1 रक़ुअ सुर्तुल ऩास (114) 6 आयात लोग	जिन्नो में से और इन्सानों में से। (6)
1 रक़ुअ सुर्तुल ऩास (114) 6 आयात लोग	जिन्नो में से और इन्सानों में से। (6)